

# बाल-शब्दसागर

अ

अ

अँकाना

अ-संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का पहला अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है, व्यंजनों का उच्चारण इस अक्षर की सहायता के बिना अलग नहीं हो सकता।

अंक-संज्ञा पुं० [वि० अंक्य] १. चिह्न। निशान। २. लेख। अक्षर। लिखा-वट। ३. संख्या का चिह्न; जैसे—१, २, ३। ४. भाग्य। ५. डिठौना। दाग। घन्घा। ६. नौ की संख्या। ७. नाटक का एक अंश जिसके अंत में जबनिका गिरा दी जाती है। ८. गोद। ९. अंग। देह। १०. पाप। दुःख। ११. बार। दफा। मर्तया। अंकगणित-संज्ञा पुं० १, २, ३ आदि संख्याओं का हिसाब। संख्या की सीमांसा।

अंकटाई-संज्ञा पुं० कंकड़ का छोटा टुकड़ा।

संज्ञा स्त्री० अंकटी।

अंकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. कटिया। हुक। २. तीर का मुड़ा हुआ फल। टेढ़ी गांसी। ३. बेल। खता। ४. लग्गी।

अंकन-संज्ञा पुं० [वि० अंकनीय, अंकित,

अंक्य] १. चिह्न करना। निशान करना। लिखना। २. शंख, चक्र या त्रिशूल के चिह्न गरम धातु से बाहु पर छपवाना। ३. गिनती करना।

अंकपाली-संज्ञा स्त्री० घाय। दाई।

अंकमाल-संज्ञा पुं० गले लगना। भेंट।

अंकमालिका-संज्ञा स्त्री० १. छोटी माला। २. आलिंगन। भेंट।

अँकरा-संज्ञा पुं० एक खर जो गेहूँ के पौधों के बीच जमता है।

संज्ञा स्त्री० अँकरी।

अँकरोरी, अँकरोरी-संज्ञा स्त्री० कंकड़ या खपड़े का बहुत छोटा टुकड़ा।

अँकवार-संज्ञा स्त्री० गोद। छाती।

यौ०—भेंट अँकवार = आलिंगन। मिलना।

अंकचिन्ता-संज्ञा स्त्री० दे० “अंक-गणित”।

अँकाई-संज्ञा स्त्री० १. अंदाज़। अटकल। तख्मीना। २. फसल में से ज़मींदार और कारस्तकार के हिस्सों का ठहराव।

अँकाना-कि० स० मुख्य निर्धारित



कराना । अंदाज़ करना । परखाना ।  
अंकाव-संज्ञा पुं० [हिं० अंकना] कृतने  
या अंकने का काम । कुताई । अंदाज़ ।  
अंकित-वि० [सं०] १. चिह्नित ।  
निरात किया हुआ । २. लिखित ।  
अंकुड़ा-संज्ञा पुं० लोहे का टेढ़ा काँटा  
या छड़ । गाय-बैल के पेट का दर्द  
या मरोड़ ।

अंकुड़ी-संज्ञा स्त्री० टेढ़ी कँटिया या छड़ ।  
अंकुड़ीवार-वि० जिसमें अंकुड़ी या  
कँटिया लगी हो । जिसमें अटकाने के  
लिये हुक लगा हो । हुकदार ।  
संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपीदा ।  
गड़ारी ।

अंकुर-संज्ञा पुं० [सं०] [कि० अंकुरना,  
वि० अंकुरित] १. अंकुर । गाभ ।  
अंगुसा । २. डाम । कछा । फनखा ।  
कोपल । आख । ३. फली । नोक ।  
४. रुधिर । ५. रोया । ६. जल । ७.  
मांस के बहुत छोटे लाल दाने जो  
घाव भरते समय उत्पन्न होते हैं ।  
अंगूर । भराव ।

अंकुरना, अंकुराना-कि० अ०  
‘अंकुर फोड़ना’ । जमना ।  
अंकुरित-वि० जिसमें अंकुर हो  
गया हो ।

अंकुरा-संज्ञा पुं० १. हाथी को अंकने  
का दो-मुँहा माला । अक्रिस । २.  
दवाव । रेफ ।

अंकुराग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] महावत ।  
हाथीवार ।

अंकुसी-संज्ञा स्त्री० टेढ़ी या झुकी कील  
जिसमें कोई चीज़ लटकाई या फँसाई  
जाय । हुक ।

अंकोर-संज्ञा पुं० १. अंक । गोद । २.  
भेंट । घूस । रिश्वत । ३. खुराक या

कलेवा जो खेत में काम करनेवालों  
के पास भेजा जाता है ।

अंकोरी-संज्ञा स्त्री० १. गोद । अंक ।  
२. आलिंगन ।

अंकोल-संज्ञा पुं० एक पहाड़ी पेड़ ।

अखड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० “आख” ।

अख-मीचनी-संज्ञा स्त्री० दे० “आख-  
मिचौली” ।

अखिया-संज्ञा स्त्री० १. हथौड़ी से ठोंक  
ठोंककर नक्काशी करने की कृत्तम या  
रुष्पा । २. दे० “आख” ।

अखुआ-संज्ञा पुं० [कि० अखुआना]  
बीज से फूटकर निकली हुई टेढ़ी  
नोक जिसमें से पहली पत्तियाँ निक-  
लती हैं । अंकुर । डाम । कवला ।  
कोपल ।

अखुआना-कि० अ० अंकुर फोड़ना  
या फँकना । उगना । जमना ।

अंग-संज्ञा पुं० १. शरीर । २. भाग ।  
खंड । ३. भेद । प्रकार । बपाय । ४.  
अनुकूल पक्ष । सहायक । पक्ष का  
तरफदार । ५. बंगाल में भागलपुर  
के आस-पास का प्रदेश जिसकी राज-  
धानी चंपापुरी थी । ६. एकसेवाधन ।  
प्रिय । ७. छः की संख्या । ८. नाटक  
में अप्रधान रस । ९. सेना के चार  
विभाग; यथा—हाथी, घोड़े, रथ और  
पैदल । योग के आठ विधान । १०.  
राजनीति के सात अंग ।

वि० अप्रधान । खटा ।

अंगज-वि० शरीर से उत्पन्न ।

संज्ञा पुं० १. पुत्र । बेटा । लड़का ।  
२. पत्नी । बाल । केश । रोम ।  
३. काम, क्रोध आदि विकार । ४.  
साहित्य में काव्यिक अनुभाव । ५.  
कामदेव । मद । ६. रोग ।

# बाल-शब्दसागर

अर्थात्  
हिंदी-शब्दसागर  
का

बालकोपयोगी संस्करण

संकलनकर्ता  
श्यामसुंदरदास

प्रकाशक  
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३५

प्रथम संस्करण ]

[ मूल्य २ ]



अंगजा-संज्ञा स्त्री० कन्या । पुत्री ।

अंगड़-खंगड़-वि० १. मचा-खुचा ।

गिरा-पड़ा । २. टूटा-फूटा ।

संज्ञा पुं० लकड़ी, लोहे आदिका टूटा-फूटा सामान ।

अंगड़ाई-संज्ञा स्त्री० देह टूटना । वृद्धन टूटना ।

अंगड़ाना-क्रि० अ० देह तोड़ना । सुस्ती से पेंडाना ।

अंगण-संज्ञा पुं० आंगन । सदन ।

अंगत्राण-संज्ञा पुं० शरीर को ढकने-वाला । अंगरखा । कुरता । कवच ।

अंगद-संज्ञा पुं० १. बाहु पर पहनने का एक गड़ना । याजुर्गद । २. बालि का पुत्र जो रामचंद्रजी की सेना में था ।

अंगदान-संज्ञा पुं० १. पीठ दिखलाना । युद्ध से भागना । २. अनुदान । तन-समर्पण ।

अंगना-संज्ञा पुं० दे० "आंगन" ।

अंगना-संज्ञा स्त्री० अच्छे अंगवाली स्त्री । कामिनी ।

अंगनाई-संज्ञा स्त्री० दे० "आंगन" ।

अंगनैया-संज्ञा स्त्री० दे० "आंगन" ।

अंगन्यास-संज्ञा पुं० शास्त्र के मंत्रों को पढ़ते हुए एक एक अंग को छूना ।

अंगमंग-संज्ञा पुं० अंग का खंडित होना । स्त्रियों की मोहित करने की चेष्टा । अंगमंगी ।

वि० जिसका कोई अवयव कटा या टूटा हो । अपाहङ्ग । लँगड़ा लूला । छुंज ।

अंगमंगी-संज्ञा स्त्री० १. चेष्टा । २. स्त्रियों की मोहित करने की क्रिया ।

अंगभाव-संज्ञा पुं० संगीत में नेत्र, श्रुती और हाथ पैर आदि अंगों से मनोविकार का प्रकाश ।

अंगभूत-वि० १. अंग से उत्पन्न । २.

अंतर्गत । भीतर ।

संज्ञा पुं० पुत्र । बेटा ।

अंगमर्द-संज्ञा पुं० हड्डियों में दर्द, हड्ड-फूटन । हाथ-पैर दबानेवाला नौकर ।

अंगरक्षा-संज्ञा स्त्री० शरीर की रक्षा । देह का वचाव ।

अंगरखा-संज्ञा पुं० एक पहनावा जो घुटनों के नीचे तक खंभा होता है और जिसमें बांधने के लिये बंद टँके रहते हैं । चपकन ।

अंगरा-संज्ञा पुं० दहकता हुआ को-यला । अंगारा ।

अंगराग-संज्ञा पुं० १. चंदन आदि का लेप । उमटन । २. वस्त्र और आभूषण । ३. शरीर की शोभा के लिये महाविर आदि रंगने की सामग्री ।

४. स्त्रियों के शरीर के पाँच अंगों की सजावट ।

अंगराना-क्रि० अ० दे० "अंग-दाना" ।

अंगरेज-संज्ञा पुं० [ वि० अंगरेजी ] इंगलैंड देश का निवासी ।

अंगरेजी-वि० अंगरेजों का । इंगलैंड देश का । विलायती ।

संज्ञा स्त्री० अंगरेज लोगों की बोली । इंगलैंड-निवासियों की भाषा ।

अंगवना-क्रि० अ० १. अंगीकार करना । स्वीकार करना । २. ओढ़ना । सहना । बडाना ।

अंगवारा-संज्ञा पुं० गाँव के एक छोटे भाग का मालिक । रेत की जोताई में एक दूसरे की सहायता ।

अंगविकृति-संज्ञा स्त्री० अपसंसार । मुगी या भिरगी रोग । मूच्छा रोग ।



अंगविज्ञेय-संज्ञा पुं० चमकना । मट-  
कना ।

अंगविद्या-संज्ञा स्त्री० सांमुद्रिक विद्या ।

अंगशोष-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें  
शरीर सूखता है । सुखंडी रोग ।

अंगसिहरी-संज्ञा स्त्री० उबर आने के  
पहले देह की बँपवँपी । जूही ।

अंगहार-संज्ञा पुं० नृत्य । नाच । चम-  
कना । मटकना ।

अंगहीन-वि० जिसका कोई एक अंग  
न हो ।

संज्ञा पुं० कामदेव का एक नाम ।

अंगांगिभाष-संज्ञा पुं० अंश का संपूर्ण  
के साथ संबंध । अलंकार में संवर का  
एक भेद ।

अंगा-संज्ञा पुं० अंगारखा । चपकन ।

अंगाकड़ी-संज्ञा स्त्री० अंगारों पर रेंकी  
हुई माटी रोटी । लिट्टी । घाटी ।

अंगार-संज्ञा पुं० [सं०] दहवता हुआ  
कोयला ।

अंगारक-संज्ञा पुं० १. अंगारा । २.  
संगल ग्रह । ३. भृंगराज । ४. कट-  
सूर्या का पेड़ ।

अंगारपुष्प-संज्ञा पुं० इंगुदी वृक्ष ।  
हिं गोठ का पेड़ ।

अंगारमणि-संज्ञा पुं० मूंगा ।

अंगारवल्लरी-संज्ञा स्त्री० गुंजा । धुंधली  
या चिरमटी ।

अंगारा-संज्ञा पुं० दे० "अंगार" ।

अंगारिणी-संज्ञा स्त्री० १. अँगीठी ।  
घोरसी । आतिशदान । २. ऐसी दिशा  
जिस पर हूँ हूँ सूर्य की लाली  
छाई हो ।

अंगारी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा अंगारा ।  
२. चिनगारी । † ३. लिट्टी । घाटी ।

अंगाकड़ी । † ४. घोरसी ।

अंगारी-संज्ञा स्त्री० १. ईख के सिर पर  
की पत्ती । २. गँदेरी । गड़ी । गन्ने  
के छोटे कटे टुकड़े ।

अंगिया-संज्ञा स्त्री० छियों की चोली ।  
कुरती । कंचुकी ।

अंगिरस-संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन  
ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते  
हैं । २. गृहस्पति । ३. कटीला गोद ।

अंगिरा-संज्ञा पुं० दे० "अंगिरस" ।

अंगी-संज्ञा पुं० १. देहधारी । २.  
प्रधान । मुख्य । ३. चौदह विद्याएँ ।

अंगीकार-संज्ञा पुं० स्वीकार । मंजूर ।

अंगीकृत-वि० स्वीकृत । मंजूर ।

अंगीठा-संज्ञा पुं० बड़ी अँगीठी । बड़ी  
घोरसी । आग रखने का धरतन ।

अंगीठी-संज्ञा स्त्री० आग रखने का धर-  
तन । आतिशदान ।

अंगुरा-संज्ञा पुं० दे० "अंगुल" ।

अंगुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "वैंगली" ।

अंगुल-संज्ञा पुं० अठ जौ की लंबाई ।

अंगुलिघ्राण-संज्ञा पुं० गोह के चमड़े  
का घना हुआ दस्ताना जिसे घ्राण  
चलाते समय वैंगलियों में पहनते हैं ।

अंगुलिपर्व-संज्ञा पुं० वैंगलियों की पार ।

अंगुली-संज्ञा स्त्री० † १. वैंगली । २.  
हाथी के सूँढ़ का अगला भाग ।

अंगुस्तरी-संज्ञा स्त्री० अँगूठी । सुँदरी ।

अंगुस्ताना-संज्ञा पुं० १. वैंगली पर  
पहनने की छोटे या पीतल की एक  
टोपी । २. आरसी । हाथ के

अँगूठे की एक प्रकार की सुँदरी ।

अंगुष्ठ-संज्ञा पुं० हाथ या पैर की  
सबसे मोटी वैंगली । अँगूठा ।

अँगुसी-संज्ञा स्त्री० १. हल का फाल ।  
२. सोनारों की बकनाल या टेढ़ी नली ।

## भूमिका

काशी-नागरी-प्रेचारिणी सभा जिन दिनों 'हिंदी-शब्दसागर' के बृहत् और प्रामाणिक कोष का प्रणयन करा रही थी वन्हीं दिनों मुझे उसके एक संविष्ट संस्करण की आवश्यकता का अनुभव हो गया था। 'शब्दसागर' के बृहदाकार में ही उसे संविष्ट करने की प्रेरणा निहित है और उसकी प्रामाणिकता एक ऐसी इष्ट नींव है जिस पर हिंदी-भाषा-कोष के छोटे-बड़े अनेक भवन बनाए जा सकते हैं तथा वे अपनी इष्टता के कारण शताब्दियों तक हिंदी-भाषी जनता के भाषा-भवन का काम दे सकते हैं। मेरे सामने प्रश्न इतना ही था कि उक्त संविष्ट संस्करण का स्वरूप क्या हो और वह सिद्धांत तथा व्यवहार की किन दृष्टियों को सम्मुख रखकर प्रस्तुत किया जाय।

'हिंदी-शब्दसागर' में मूल शब्द की संख्या प्रायः एक लाख तक पहुँची है, जो भारतीय भाषाओं के कोषों की तुलना में सबसे बड़ी हुई कही जा सकती है। इस संख्या के द्वारा हिंदी अपनी राष्ट्र-भाषा बनने की योग्यता को एक ओर सिद्ध कर-सकी और दूसरी ओर वह संसार की अन्य उन्नत भाषाओं के समकक्ष रखे जाने का पुष्ट प्रमाण भी दे सकी। 'हिंदी-शब्दसागर' के द्वारा इन दोनों ही उन्नत लक्ष्यों की पूर्ति हुई। इन दोनों ही लक्ष्यों का महत्त्व राष्ट्रीय और जातीय सम्यता तथा संस्कृति की दृष्टि से कितना बड़ा है, यह वे अच्छी तरह समझ सकते हैं जो भाषा के विस्तार, सांदर्य और वृद्धि को उस देश के और उस समाज के विकास का मापदंड मानते हैं। यहाँ उसकी अधिक व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं। प्रसन्नता की बात है कि 'हिंदी-शब्दसागर' का महत्त्व भारतीय और विदेशी विद्वानों ने बहुत कुछ समझ लिया है और समय की गति के साथ अधिकाधिक समझते जायेंगे।

अंगूठा-संज्ञा पुं० मनुष्य के हाथ की सबसे छोटी और मोटी उँगली। पहली उँगली।

अंगूठी-संज्ञा स्त्री० सुंदरी। मुद्रिका। छुल्ला।

अंगूर-संज्ञा पुं० दास। दाषा।

अंगूरी-वि० १. अंगूर से बना हुआ।

२. अंगूर के रंग का।

संज्ञा पुं० हलका हरा रंग।

अंगेजना-कि० सं० १. सहना। पर-दारत करना। उठाना। २. श्रीगीकार करना। स्वीकार करना।

अंगेठी-संज्ञा स्त्री० दे० "अंगीठी"।

अंगेना-कि० सं० १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. सहना। परदारत करना।

अंगोछना-कि० अ० गीले कपड़े से देह पोंछना।

अंगोछा-संज्ञा पुं० देह पोंछने का कपड़ा। तौलिया। गमछा।

अंगोछी-संज्ञा स्त्री० १. देह पोंछने के लिये छोटा कपड़ा। २. छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक तक जाय।

अंगौरा-संज्ञा पुं० मछुरा।

अंगौरिया-संज्ञा पुं० वह हलवाहा जिसे कुछ मजदूरी न देकर हल-बैल उधार देते हैं।

अंग्रस-संज्ञा पुं० पाप। पातक।

अघिया-संज्ञा स्त्री० आटा या मैदा चालने की छत्तनी। अंगिया।

अंग्रि-संज्ञा पुं० पैर। चरण। पाँव।

अंग्रिय-संज्ञा पुं० पेड़। वृक्ष।

अंचरा-संज्ञा पुं० दे० "अंचल"।

अंचल-संज्ञा पुं० १. साड़ी का छोर।

अंचल। पछा। छोर। दे० "अंचल"। २. किनारा। तट।

अंचला-संज्ञा पुं० १. दे० "अंचल"।

२. कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधु लोग धोती के स्थान पर लपेटे रहते हैं।

अंचित-वि० पूजित। आराधित।

अंचुर-संज्ञा पुं० १. मुँह के भीतर का एक रोग जिसमें कंठ से उमर आते हैं। २. अचर। ३. टोना। जादू।

अंज-संज्ञा पुं० दे० "कंज"।

अंजन-संज्ञा पुं० १. सुरमा। काजल।

२. स्थाही। ३. छिगली। ४. नदी।

५. एक पर्वत। ६. छेप। ७. माया।

अंजनकेश-संज्ञा पुं० दीपक। दीया।

अंजन-शलाका-संज्ञा स्त्री० अंजन या सुरमा लगाने की सलाई।

अंजनसार-वि० सुरमा लगा हुआ।

अंजनहारी-संज्ञा स्त्री० १. आँख की पलक के किनारे की फुन्नी। चिल्ली।

२. एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जिसे कुम्हारी या चिल्ली भी कहते हैं।

अंजना-संज्ञा स्त्री० १. केशरी नामक श्वेदर की स्त्री जिसके गर्भ से हनुमान् उत्पन्न हुए थे। २. चिल्ली।

अंजनानंदन-संज्ञा पुं० अंजना के पुत्र हनुमान्।

अंजनी-संज्ञा स्त्री० १. हनुमान् की माता अंजना। २. कुटली। ३. आँख की पलक की फुडिया। चिल्ली।

अंजलपंजर-संज्ञा पुं० देह का घेद। शरीर का जोड़। छटरी। पसती।

अंजलि, अंजली-संज्ञा स्त्री० १. दोनों हथेलियों को मिठाकर बनाया हुआ संयुक्त। २. वतनी वस्तु जिसकी एक औंठुली में आवे। दो पसर। ३.

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि अँगरेजी तथा कुछ पारचाय भाषाओं के बड़े बड़े कोषों में शब्दों की संख्या 'हिंदी-शब्दसागर' की अपेक्षा द्विगुणित और त्रिगुणित भी है, परंतु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो इसका एक प्रधान कारण इनमें विज्ञान की अनेकानेक शाखाओं के सहस्रों पारिभाषिक शब्दों की बहुलता ही है। नित्यप्रति व्यवहार में आनेवाले अथवा कवियों और साहित्यिकों के द्वारा प्रयुक्त होनेवाले शब्दों की संख्या की तुलना में 'हिंदी-शब्दसागर' किसी भी विदेशी भाषा के सम्मुख संकुचित नहीं हो सकता। इस बात को पुष्ट करने के लिये भी शब्दसागर के एक संक्षिप्त संस्करण की—जिसे व्यावहारिक तथा छात्रकोपयोगी संस्करण भी कहा जा सकता है—आवश्यकता समझ पड़ती थी। अतः इस संस्करण का संपादन करते हुए मैंने मूल शब्दसागर के शब्दों को कम करने की उतनी चेष्टा नहीं की जितनी शब्दों के पर्यायों और छात्र-णिक प्रयोगों ( मुहावरों ) को घटा देने तथा शब्दों की व्युत्पत्ति छोड़ देने का उपक्रम किया है। इस कार्य में मुझे सभा की ओर से प्रकाशित, श्रीयुक्त रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित, 'संक्षिप्त हिंदी-शब्दसागर' का आधार और आधार स्वीकार करना चाहिए। वर्माजी के 'संक्षिप्त हिंदी-शब्दसागर' और प्रस्तुत संस्करण में मुख्य अंतर यही है कि इसमें शब्दों की संख्या उससे विशेष न्यून न होनी हुई भी इसका आकार लगभग उसका आधा कर दिया गया है।

मेरा यह विश्वास है कि व्यावहारिक दृष्टि से यह क्रिया हानि-कारिणी नहीं हुई वरन् यह साधारण जनता और विद्यार्थियों के लिये अधिक प्राय और अभीष्ट हुई है। साथ ही यह बात भी ध्यान में रखी गई है कि जहाँ 'संक्षिप्त हिंदी-शब्दसागर' कॉलेज के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है वहाँ यह संस्करण विशेष-कर स्कूली विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये प्रस्तुत किया गया है।

हथेलियों से दान देने के लिये निकाला हुआ अन्न ।

अंजलिगत-वि० १. अंजली में आया हुआ । २. हाथ में आया हुआ ।

अंजलिपुट-संज्ञा पुं० अंजली ।

अंजलिबद्ध-वि० हाथ जोड़े हुए ।

अंजघाना-क्रि० स० अंजन लगवाना । सुरमा लगवाना ।

अंजही-संज्ञा स्त्री० वह बाजार जहाँ अन्न बिकता है । अनाज की मंडी ।

अंजाना-क्रि० स० अंजन लगवाना । सुरमा लगवाना ।

अंजाम-संज्ञा पुं० १. समाप्ति । पूर्ति । अंत । २. फल ।

अंजित-वि० अंजन लगाए हुए ।

अंजीर-संज्ञा पुं० एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है ।

अंजुरी, अंजुली-संज्ञा स्त्री० दे० "अंजलि" ।

अंजोर-संज्ञा पुं० दे० "अंजाला" ।

अंजोरना-क्रि० स० १. घटोरना ।

२. छीनना । हरण करना । ३. प्रकाशित करना । घालना । जैसे—दीपक अंजोरना ।

अंजोरा-वि० दे० "अंजाला" ।

अंजोरी-संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश ।

रोशनी । चमक । बजाफा । २. चंद्रनी । चंद्रिका ।

अंभा-संज्ञा पुं० नागा । तातीला छुट्टी ।

अंटना-क्रि० अ० १. समाना । २.

ठीक चिपकना । ३. भर जाना । ढँक जाना । ४. पूरा पड़ना । ५. पूरा होना । खपना ।

अंटा-संज्ञा पुं० [ सं० अंट ] १. बड़ी

। गोली । गोळा । २. सूत या रेशम का लच्छा । ३. बड़ी कौड़ी । ४.

विलियर्ड का अंगरेजी खेल ।

अंटा गुड़गुड़-वि० नरों में चूर ।

वेहोश । बेसुध । अचेत ।

अंटाघर-संज्ञा पुं० वह घर जिसमें गोली का खेल खेला जाय ।

अंटाचित्त-क्रि० वि० पीठ के बल ।

सीधा । पीठ ज़मीन पर किए हुए ।

अंटिया-संज्ञा स्त्री० घास, खर या पतली लकड़ियों आदि का बँधा हुआ छोटा गट्टा । गडिया ।

अंटियाना-क्रि० स० १. बँगलियों के बीच में छिपाना । हथेली में छिपाना । २. गुप्त करना । छुपाना ।

अंटी-संज्ञा स्त्री० १. बँगलियों के बीच का स्थान या अंतर । घाई । २. घोसी

की वह लपेट जो धमर पर रहती है ।

गाँठ । ३. जघ कोई लकड़ा अंजज

या अपवित्र वस्तु को छू लेता है,

तब और लकड़े छूत से बचने के लिये

ऐसी सुत्रा बनाते हैं । ४. सूत या

रेशम का लच्छा । सूत लपेटने की

लकड़ी । ५. सुरकी ।

अंटी-संज्ञा स्त्री० १. चीर्षा । गुटली ।

बीज । २. गाँठ । गिरह । ३. गिलटी ।

कढ़ापन ।

अंड-संज्ञा पुं० १. अंडा । २. अंड-

कोश । फोता । ३. ब्रह्मांड । लोक-

मंडल । विश्व । ४. कश्मूरी का नाफ़ा ।

मृगनाभि । ५. पिंड । शरीर ।

अंडकटाह-संज्ञा पुं० ब्रह्मांड । विश्व ।

अंडकोश-संज्ञा पुं० १. फोता । २.

ब्रह्मांड । लोकमंडल । संपूर्ण विश्व ।

३. सीमा । हद्द । ४. फलका छिलक

इस प्रकार हिंदी-शब्दसागर का यह व्यावहारिक संस्करण जिन उद्देशों को सम्मुख रखकर प्रस्तुत किया गया है, आशा है, उनकी पूर्ति इससे हो सकेगी। इसका नाम 'पाल-शब्दसागर' इस आशय से रखा गया है कि यह मूल 'शब्दसागर' की सबसे जघु और सबसे नवीन संतान है और इसका उपयोग विशेषतः स्कूली विद्यार्थियों द्वारा ही सबसे अधिक किए जाने की संभावना है। परंतु सिद्धांत और व्यवहारोपयोगिता के विचार से इसे संपूर्ण हिंदी जनता की वस्तु बनाने की चेष्टा भी की गई है।

श्यामसुंदरदास



अंडज-संज्ञा पुं० अंडे से उत्पन्न होने-  
वाले जीव; जैसे-सर्प, पक्षी, मछली  
इत्यादि ।

अंडयंड-संज्ञा स्त्री० १. बे सिर-पैर की  
धात । अनाप-शनाप । व्यर्थ की  
धात । २. गाली ।

अंडस-संज्ञा स्त्री० बटिनाई । मुखिल ।  
असुविधा ।

अंडा-संज्ञा पुं० [ वि० अंडेल ] १. वह  
गोल वस्तु जिसमें दो पक्षी, जलचर  
और सरीसृप आदि अंडज जीवों के  
बच्चे फूटकर निकलते हैं । २. बैजा ।  
अंडाकार-वि० अंडे के आकार का ।  
लंबाई छिपे हुए गोल ।

अंडाकृति-संज्ञा स्त्री० अंडेका आकार ।  
अंडी-संज्ञा स्त्री० १. रेंढ़ी । २. रेंढ़या  
परंड का पेड़ । ३. एक प्रकार का  
रेशमी कपड़ा ।

अंडुआ-संज्ञा पुं० दे० "अंडि" ।

अंडुआना-कि० सं० षधिया करना ।  
बघड़े के अरकोण को कुचलना ।

अंडुआ पैल-संज्ञा पुं० १. बिना  
षधियाया हुआ पैल । सड़ । ३.  
सुस्त आदमी ।

अंडेल-वि० जिसके पेट में अंडे हों ।  
अंडेवाली ।

अंत-संज्ञा पुं० [ वि० अंतिम, अंत्य ] १.  
संमाप्ति । आखीर । अवसान । इति ।  
२. सीमा । हृद । ३. अंतकाल ।  
मृत्यु । ४. फल । मतीजा । ५. प्रलय ।  
६. मन । ७. भेद । रहस्य ।

अंतक-संज्ञा पुं० १. अंत करनेवाला ।  
२. यमराज । काल । ३. सन्निपात ।  
ज्वर का एक भेद । ४. ईश्वर, जो

प्रलय में सबका संहार करता है । ५.  
शिव ।

अंतकारी-संज्ञा पुं० अंत करनेवाला ।  
मार डालनेवाला ।

अंतक्रिया-संज्ञा स्त्री० अंत्येष्टि कर्म ।  
मरने के पीछे का क्रिया-कर्म ।

अंतग-संज्ञा पुं० जानकारी में पूरा ।  
निपुण ।

अंतगति-संज्ञा स्त्री० अंतिम दशा ।  
मृत्यु । मौत ।

अंतड़ी-संज्ञा स्त्री० अंत ।

अंतपाल-संज्ञा पुं० १. द्वारपाल ।  
छोड़ीदार । २. राज्य की सीमा पर  
का पहरेदार ।

अंतरंग-वि० भीतरी । घनिष्ठ । जि-  
गरी । दिली ।

अंतर-संज्ञा पुं० १. फर्क । भेद । २.  
फासना । दूरी । दो वस्तुओं के बीच  
में का स्थान । ३. छोट । आड़ ।  
परदा । दो वस्तुओं के बीच में पड़ी  
हुई चीज़ । ४. छिद । छेद ।

संज्ञा पुं० हृदय । अंतःकरण ।  
अंतरजामी-संज्ञा पुं० दे० "अंत-  
यामी" ।

अंतरदिशा-संज्ञा स्त्री० दो दिशाओं के  
बीच की दिशा । कोण ।

अंतरपट-संज्ञा पुं० १. परदा । आड़ ।  
छोट । २. विवाह-मंडप में मृत्यु की  
आहुति के समय अग्नि और चरक्या  
के बीच में डाला हुआ परदा । ३.  
कपड़मिट्टी । कपड़ीरी । ४. गीली मिट्टी  
का खेप देकर खपेटा हुआ कपड़ा ।

अंतरसंचारी-संज्ञा पुं० संचारी भाव ।  
(साहित्य)

अंतरस्थ-वि० भीतर का । अंदर का ।  
भीतर रहनेवाला ।



अंतरा-संज्ञ पु० १. अंका । मागा ।  
 २. यह ज्वर जो एक दिन नागा घेरकर  
 आता है ।  
 अंतरा-कि० वि० १. मध्य । २. नि-  
 षट । ३. अतिरिक्त । सिवाय । ४.  
 प्रत्येक । ५. बिना ।  
 संज्ञ पु० किसी गीत में स्थायी या टेक  
 के अतिरिक्त बाकी और पद या चरण ।  
 अंतरात्मा-संज्ञा स्त्री० १. जीवार्मा ।  
 २. अंतःकरण ।  
 अंतराय-संज्ञा पुं० विज्ञा । बाधा ।  
 अंतराल-संज्ञा पुं० १. घेरा । मंडल ।  
 २. मध्य । बीच ।  
 अंतरिक्ष-संज्ञा पुं० १. पृथिवी और  
 सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान ।  
 आकाश । अधर । शून्य । २. स्वर्ग-  
 लोक ।  
 अंतरित-वि० भीतर किया हुआ ।  
 छिपा हुआ ।  
 अंतरीप-संज्ञा पुं० १. द्वीप । टापू । २.  
 पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र  
 में दूर तक चला गया हो ।  
 अंतरीय-संज्ञा पुं० कमर में पहनने का  
 वस्त्र । धोती ।  
 अंतरीटा-संज्ञा पुं० साढ़ी के नीचे पह-  
 नने का महीन कपड़ा ।  
 अंतर्गत-वि० १. भीतर आया हुआ ।  
 समाया हुआ । २. भीनरी । छिपा  
 हुआ । गुप्त ।  
 अंतर्गति-संज्ञा स्त्री० १. मन का भाव ।  
 २. हार्दिक इच्छा । कामना ।  
 अंतर्गृही-संज्ञा स्त्री० तीर्थस्थान के भीतर  
 पड़नेवाले प्रधान स्थलों की यात्रा ।  
 अंतर्जानु-वि० हाथों को घुटनों के  
 बीच किए हुए ।

अंतर्दशा-संज्ञा स्त्री० फलित ज्योतिष के  
 अनुसार मनुष्य के जीवन में ग्रहों के  
 नियत भोगकाल ।  
 अंतर्ज्ञान-संज्ञा पुं० ज्ञान । छिपाव ।  
 वि० छिपा हुआ । गुप्त ।  
 अंतर्निविष्ट-वि० १. भीतर बैठा  
 हुआ । २. मन में जमा हुआ । हृदय  
 में बैठा हुआ ।  
 अंतर्वोध-संज्ञा पुं० आत्मज्ञान । आत्मा  
 की पहचान ।  
 अंतर्भावना-संज्ञा स्त्री० १. ध्यान ।  
 सोच-विचार । चिंता । २. गुणनफल  
 के अंतर से संख्याओं को ठीक करना ।  
 अंतर्भूत-वि० अंतर्गत । शामिल ।  
 संज्ञा पुं० जीवार्मा । प्राण । जीव ।  
 अंतर्मुख-वि० जिसका मुँह भीतर की  
 ओर हो । भीतर मुँहवाला । जिसका  
 छिद्र भीतर की ओर हो । जैसे, अंत-  
 मुख फोड़ा ।  
 अंतर्गामी-वि० १. भीतर जानेवाला ।  
 २. अंतःकरण में स्थिर होकर प्रेरणा  
 करनेवाला । ३. भीतर की बात जा-  
 ननेवाला ।  
 संज्ञा पुं० ईश्वर । परमात्मा । परमेश्वर ।  
 अंतर्लक्ष्य-संज्ञा पुं० वह श्रिकोण क्षेत्र  
 जिसके भीतर लक्ष्य गिरा हो ।  
 अंतर्लौकिक-वि० भीतर छिपा हुआ ।  
 दूया हुआ । गुप्त । विलीन ।  
 अंतर्वेत्ती-वि० स्त्री० १. गर्भवती । हा-  
 मिला । २. भीतरी । अंदर रहनेवाली ।  
 अंतर्गामी-संज्ञा पुं० शास्त्रज्ञ । पंडित ।  
 विद्वान् ।  
 अंतर्विकार-संज्ञा पुं० शरीर का धर्म ।  
 जैसे भूख, प्यास, पीड़ा इत्यादि ।  
 अंतर्वेद-संज्ञा पुं० [ वि० अंतर्वेद ] १.

## संकेताक्षरों का विवरण

|                           |                      |
|---------------------------|----------------------|
| अ० = अरबी भाषा            | प्रत्य० = प्रत्यय    |
| अनु० = अनुकरण शब्द        | प्रे० = प्रेरणार्थक  |
| अल्पा० = अल्पार्थक प्रयोग | फा० = फारसी भाषा     |
| अव्य० = अव्यय             | घट्ट० = घट्टवचन      |
| वप० = वपसर्ग              | भाव० = भाववाचक       |
| क्रि० = क्रिया            | वि० = विशेषण         |
| क्रि० अ० = क्रिया अकर्मक  | व्या० = व्याकरण      |
| क्रि० वि० = क्रिया-विशेषण | सं० = संस्कृत        |
| क्रि० स० = क्रिया सकर्मक  | सर्व० = सर्वनाम      |
| दे० = देशो                | स्त्री० = स्त्रीलिंग |
| पु० = पुल्लिंग            | हि० = हिंदी          |

० यह चिह्न सूचित करता है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है ।

† यह चिह्न सूचित करता है कि इस शब्द का प्रयोग प्रातिफ है ।

‡ यह चिह्न सूचित करता है कि शब्द का यह रूप प्राच्य है ।

देश जिसके अंतर्गत यज्ञों की चेदियां हैं। २. गंगा और यमुना के बीच का देश। प्रजापति। ३. दो नदियों के बीच का देश। दोआब।

अंतर्घटी-वि० अंतर्घट का निवासी। गंगा यमुना के दोआब में बसने वाला।

अंतर्घटिक-संज्ञा पुं० अंतःपुर-रचक।

अंतर्हित-वि० गुप्त। छिपा हुआ।

अंतर्घर्ष-संज्ञा पुं० अंतिम घर्ष का। शूरा।

अंतर्शय्या-संज्ञा स्त्री० १. सृष्टुशय्या। २. रमणान। मरघट। ३. सृष्टु।

अंतस्-संज्ञा पुं० अंतःकरण। हृदय। चित।

अंतस्द-संज्ञा पुं० शिष्य। चेला।

अंतस्थ-वि० [ विशेष अंतर्स्थित ] १.

भीतर का। भीतरी। २. बीच में स्थित। मध्य का। मध्यवर्ती। बीच-याला। ३. य, र, ल, व, ये चारों वर्ण।

अंतस्नान-संज्ञा पुं० वह स्नान जो यज्ञ समाप्त होने पर किया जाता है।

अंतस्सलिल-वि० जिसके जल का प्रवाह बाहर न देख पड़े, भीतर हो। जैवे-अंतस्सलिला सरस्वती।

अंतस्सलिला-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती नदी। २. फत्तगू नदी।

अंतावरी-संज्ञा स्त्री० अंतर्घटी। आंतों का समूह।

अंतिम-वि० [ सं० ] १. जो अंत में हो।

अंत का। आखिरी। सबके पीछे का।

२. चरम। सबसे बढ़कर। हृदय के का।

अंतैर, अंतैवर-संज्ञा पुं० अंतःपुर। ज्ञानखाना।

अंतैवासी-संज्ञा पुं० १. गुरु के समीप रहनेवाला। शिष्य। २. ग्राम के बाहर रहनेवाला। चांडाल। अंत्यज।

अंतःकरण-संज्ञा पुं० १. वह भीतरी इंद्रिय जो संकल्प, विकल्प, निरवय, स्मरण तथा सुख-दुःखादि का अनुभव करती है। मन। २. विवेक। नैतिक बुद्धि।

अंतःपट्टी-संज्ञा स्त्री० १. किसी चित्र-पट में नदी, पर्वत, नगर आदि का दिखाया हुआ दृश्य। २. नाटक का परदा।

अंतःपुर-संज्ञा पुं० ज्ञानखाना। ज्ञानाना। भीतरी महल। निवास। हरम।

अंतःपुरिक-संज्ञा पुं० अंतःपुर का रचक। कंबुकी।

अंतःराष्ट्रीय-वि० दे० "सार्वराष्ट्रीय"।

अंत्य-वि० अंत का। अंतिम। आखिरी। सबसे पिछला।

संज्ञा पुं० १. वह जिसकी गणना अंत में हो। २. दस सागर की संख्या (१०००,०००,०००,०००,०००)। यम।

अंत्यकर्म-संज्ञा पुं० अंत्येष्टि क्रिया।

अंत्यज-संज्ञा पुं० वह जो अंतिम वर्ण में उत्पन्न हो। शूद्र।

अंत्यवर्ण-संज्ञा पुं० १. अंतिम वर्ण। शूद्र। २. अंत का अक्षर 'ह'।

अंत्या-संज्ञा स्त्री० चांडाली। चांडाल की स्त्री। चांडालिनी।

अंत्याक्षर-संज्ञा पुं० १. किसी शब्द या पद के अंत का अक्षर। २. वर्णमाला का अंतिम अक्षर 'ह'।

अंत्याक्षरी-संज्ञा स्त्री० किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अंतिम अक्षर से



आरंभ होनेवाला दूसरा श्लोक पढ़ना ।

अंत्यानुप्रास—संज्ञा पुं० पद्य के चरखों के अंतिम अक्षरों का मेल । तुक । अंत्येष्टि—संज्ञा पुं० मृतक का शवदाह से सपिंडन तक कर्म । क्रिया-कर्म ।

अंत्री—संज्ञा स्त्री० अंतदी ।

अंदर—क्रि० वि० भीतर ।

अंदरसा—संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई ।

अंदरी—वि० भीतरी ।

अंदरुनी—वि० भीतरी । भीतर का ।

अंदाज़—संज्ञा पुं० १. अटकल । नाप-जोख । कृत । तख्मीन । २. सौर । तज्ञ । ३. मटक ।

अंदाज़न—क्रि० वि० [फा०] १. अंदाज़ से । अटकल से । २. लगभग । करीब ।

अंदाज़ा—संज्ञा पुं० [फा०] अटकल । अनुमान । कृत ।

अंधु, अंधुक—संज्ञा पुं० पैर में पहनने का छियों का एक गहना । पाजेब ।

अंधुआ—संज्ञा पुं० हाथियों के पिछले पैर में डालने के लिये लकड़ी का बना कटिदार यंत्र ।

अंधेरा—संज्ञा पुं० १. सोच । २. संशय । संदेह । ३. खटका । आशंका । ४. हरज । हानि । ५. असमंजस । आगा-पीछा । पसोपेश ।

अंध—वि० [सं०] [संज्ञा अंधता] १. नेत्रहीन । बिना आँख का । अंधा । २. अज्ञानी । अज्ञानकार । ३. असावधान । ग्राफिल । ४. उन्मत्त । मत्वाला । मस्त ।

संज्ञा पुं० १. अंधा । २. जल । ३. दल । ४. चमगादड़ । ५. अंधेरा ।

अंधकार । ६. कवियों के वधि हुए पद्य के विरुद्ध चलने का काव्यसंघर्षी दोष ।

अंधक—संज्ञा पुं० १. नेत्रहीन मनुष्य । अंधा । २. कश्यप और दिति का पुत्र एक दैत्य ।

अंधकार—संज्ञा पुं० [सं०] अंधेरा ।

अंधकूप—संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधा फूँआ । २. एक नरक का नाम ।

अंधखोपड़ी—संज्ञा स्त्री० जिसके मस्तिष्क में बुद्धि न हो । मूख । भौंदा ।

अंधड़—संज्ञा पुं० गढ़ लिए हुए बड़े मोर्के की वायु । आंधी । तूफान ।

अंधतमस—संज्ञा पुं० महा अंधकार । गहिरा अंधेरा । गाढ़ा अंधेरा ।

अंधतामिस्र—संज्ञा पुं० घोर अंधकार-युक्त नरक । बड़ा अंधेरा-नरक ।

अंधधुंध—संज्ञा स्त्री० दे० “अंधा-धुंध” ।

अंधपरंपरा—संज्ञा पुं० बिना समझे बूके पुरानी आदत का अनुकरण ।

अंधवाई—संज्ञा स्त्री० अंधी । तूफान ।

अंधरा—वि० दे० “अंधा” ।

अंधरी—संज्ञा स्त्री० १. अंधी । अंधी स्त्री । २. पहिए की पुट्टियों अर्थात् गोलाई को पूरा करनेवाली धनुषाकार लकड़ियों की शूल ।

अंधा—संज्ञा पुं० [स्त्री० अंधी] बिना आँख का जीव । वह जिसको कुछ सूझता न हो । दृष्टिरहित जीव ।

वि० १. बिना आँख का । २. विचाररहित । भले-बुरे का विचार न रखनेवाला ।

अंधाधुंध—संज्ञा स्त्री० १. बड़ा अंधेरा । घोर अंधकार । २. अंधेरा । गढ़बढ़ । अन्याय । धोमाधोमी ।

वि० अधिकता से । बहुतायत से ।  
अधियारा-संज्ञा पुं० वि० दे० "अधेरा" ।

अधियारा-संज्ञा पुं० वि० दे० "अधेरा" ।

अधियारी-संज्ञा स्त्री० उपद्रवी घोड़ों, शिकारी पक्षियों और चीतों की आँख पर बाँधी जानेवाली पट्टी ।

अधेर-संज्ञा पुं० १. अन्याय । अत्याचार । २. उपद्रव । गड़बड़ ।

अधेर-खाता-संज्ञा पुं० हिसाब-किताब और व्यवहार में गड़बड़ी । अन्याय । कुप्रबंध ।

अधेरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अधेरी ] अधकार । तम । दुँध ।

अधेरा उजाला-संज्ञा पुं० कागज मोड़कर बनाया हुआ लड़कों का एक खिलौना ।

अधेरिया-संज्ञा स्त्री० १. अधेरी रात । काली रात । २. अधेरा पक्ष । अधेरा पाल ।

संज्ञा स्त्री० ऊँख की पहली गोदाई ।

अधेरी-संज्ञा स्त्री० १. अधकार । तम । प्रकाश का अभाव । २. अधेरी रात । काली रात । ३. आँधी । अधड़ । ४.

घोड़ों या बैलों की आँख पर डालने का परदा ।

अधौटी-संज्ञा स्त्री० बैल या घोड़े की आँख बंद करने का टुकड़ा या परदा ।

अध्यार-संज्ञा पुं० दे० "अधेरा" ।

अध्यारी-संज्ञा स्त्री० दे० "अधेरी" ।

अध-संज्ञा स्त्री० दे० "अधा" ।

संज्ञा पुं० आम का पेड़ ।

अधक-संज्ञा पुं० १. आँख । २. पिता ।

अधर-संज्ञा पुं० १. वस्त्र । कपड़ा । २. स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार

की एकरंगी किनारेदार धोती । ३.

आकाश । आसमान । ४. कपास ।

५. एक सुगंधित वस्तु । ६. एक इष्ट ।

७. अवरक । ८. अमृत । ९. धातल ।

मेघ । (क०)

अधर डंवर-संज्ञा पुं० सूर्यास्त के समय की लाली ।

अधरवेलि-संज्ञा स्त्री० आकाश वेल ।

अधरई-संज्ञा स्त्री० आम का पगीचा ।

आम की थारी ।

अधरीन-संज्ञा पुं० अधोध्या का एक सूर्यवंशी परम वैष्णव राजा ।

अधरीफ-संज्ञा पुं० [ सं० ] देवता ।

अधष्ठ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अधष्ठा ] १.

पंजाब के मध्यभाग का पुराना नाम ।

२. माक्षण-पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न एक जाति । (स्मृति) ३.

महावत । हाथीवान । फीलवान ।

अधा-संज्ञा स्त्री० १. माता । जननी ।

२. पार्वती । देवी । दुर्गा । ३. काशी

के राजा इंद्रधनु की उन तीन कन्याओं

में सबसे बड़ी जिन्हें भीष्म पितामह

अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हरण

कर लाए थे ।

अधापोली-संज्ञा स्त्री० अमावस । अम-

रस ।

अधार-संज्ञा पुं० ढेर । समूह ।

अधारी-संज्ञा स्त्री० १. हाथी की पीठ

पर रखने का ढाँचा जिसके ऊपर एक

छुज्जेदार मंडप होता है । २. छत्ता ।

अधालिका-संज्ञा स्त्री० १. माता । माँ ।

२. काशी के राजा इंद्रधनु की उन

तीन कन्याओं में से सबसे छोटी जिन्हें

भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये

हर लाए थे ।

अधिका-संज्ञा स्त्री० १. माता । माँ ।



अगौरा-संज्ञ पुं० अख के ऊपर का पतला नीरस भाग ।

अगौहैं-क्रि० वि० आगे की ओर ।

अग्नि-संज्ञा स्त्री० १. आग । ताप और प्रकाश । २. वेद के तीन प्रधान देव-ताओं में से एक । ३. जठराग्नि । पाचन-शक्ति । ४. तीन की संख्या ।

अग्निकर्म-संज्ञा पुं० १. अग्निहोत्र । इवन । २. शवदाह ।

अग्निक्रीड-संज्ञा पुं० समंदर नाम का कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है ।

अग्निकुमार-संज्ञा पुं० कार्तिकेय ।

अग्निकुल-संज्ञा पुं० अग्नियों का एक कुल या वंश ।

अग्निकोण-संज्ञा पुं० पूर्व और दक्षिण का कोना ।

अग्निक्रिया-संज्ञा स्त्री० शव का अग्नि-दाह । मुर्दा जलाना ।

अग्निक्रीड़ा-संज्ञा स्त्री० आतिशबाजी ।

अग्निगम-संज्ञा पुं० सूर्यकांत मणि । आतिशी घीरा ।

वि० जिसके भीतर अग्नि हो ।

अग्निजिह्व-संज्ञा पुं० देवता ।

अग्निजिह्वा-संज्ञा स्त्री० आग की लपट ।

अग्निज्वाला-संज्ञा स्त्री० आग की लपट ।

अग्निदाह-संज्ञा पुं० १. जलाना । २. शवदाह । मुर्दा जलाना ।

अग्निदीपक-वि० जठराग्नि को बढ़ाने-वाला ।

अग्निदीपन-संज्ञा पुं० पाचन-शक्ति की बढ़नी ।

अग्निपरीक्षा-संज्ञा स्त्री० १. जलती हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ पानी, तेल या लोहा छुलाकर

किसी व्यक्ति के दोषों या निंदोप होने की जांच । २. सोने चांदी आदि को आग में तपाकर परखना ।

अग्निपुराण-संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक ।

अग्निमाद्य-संज्ञा पुं० भूख न लगने का रोग । मंदाग्नि ।

अग्निमुख-संज्ञा पुं० १. देवता । २. ग्रेत । ३. ब्राह्मण । ४. चीते का पेट ।

अग्निचंश-संज्ञा पुं० अग्निकुल ।

अग्निशाला-संज्ञा स्त्री० वह घर जिसमें अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित हो ।

अग्निशिखा-संज्ञा स्त्री० आग की लपट ।

अग्निसंस्कार-संज्ञा पुं० १. तपाना । जलाना । २. शुद्धि के लिये अग्नि-स्पर्श करना । ३. मृतक का दाह-कर्म ।

अग्निहोत्र-संज्ञा पुं० वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया ।

अग्निहोत्री-संज्ञा पुं० अग्निहोत्र करने-वाला ।

अग्न्यस्त्र-संज्ञा पुं० वह अस्त्र जिससे आग निकले ।

अग्न्य-वि० दे० "अज्ञ" ।

अग्न्यारी-संज्ञा स्त्री० १. अग्नि में धूप आदि सुगंध-द्रव्य देना । धूपदान ।

२. अग्निकुंड ।

अग्र-संज्ञा पुं० आगे का भाग ।

अग्रला हिस्सा ।

क्रि० वि० आगे ।

वि० १. प्रथम । २. श्रेष्ठ । उत्तम ।

अग्रगण्य-वि० जिसकी गिनती सबसे पहले हो । प्रधान । श्रेष्ठ ।

अग्रज-संज्ञा पुं० १. पढ़ाई माई । २. अग्रज । ३. ब्राह्मण ।

० वि० श्रेष्ठ । उत्तम ।

२. दुर्गा । भगवती । देवी । पार्वती ।  
 ३. जैनियों की एक देवी । ४. काशी  
 के राजा इंद्रधुम्न की उन तीन कन्याओं  
 में मझली जिन्हें भीष्म अपने भाई  
 विचित्रवीर्य के लिये हर लाए थे ।  
 अचिकेय-संज्ञा पुं० १. अचिका के पुत्र ।  
 २. गणेश । ३. कार्तिकेय । ४. छत-  
 राष्ट्र ।

अँविया-संज्ञा स्त्री० आम का छोटा कच्चा  
 फल जिसमें जाली न पड़ी हो । टिकोरा ।  
 अँविरथा-वि० वृथा । व्यर्थ ।

अँधु-संज्ञा पुं० १. जल । पानी । २.  
 सुगंधवाला । ३. चार की संख्या ।  
 अँधुज-संज्ञा पुं० १. जल से उत्पन्न  
 वस्तु । २. कमल । ३. घेंत । ४.  
 घज्र । ५. ग्रहा । ६. शंख ।

अँधुद-वि० जो जल वे ।  
 संज्ञा पुं० १. बादल । २. मोघा ।

अँधुधर-संज्ञा पुं० बादल ।

अँधुधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

अँधुनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

अँधुप-संज्ञा पुं० १. समुद्र । सागर ।  
 २. वहण ।

अँधुपति-संज्ञा पुं० १. समुद्र । २.  
 वहण ।

अँधुभृत-संज्ञा पुं० १. बादल । २.  
 समुद्र ।

अँधुराशि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

अँधुरुह-संज्ञा पुं० कमल ।

अँधुचाह-संज्ञा पुं० बादल ।

अँधुशायी-संज्ञा पुं० विष्णु ।

अँघोह-संज्ञा पुं० भीड़-भाड़ । जमघट ।  
 कुंड ।

अँभ-संज्ञा पुं० १. जल । पानी । २.  
 पितर लोक । ३. देव । ४. असुर ।

५. पितर ।

अँभोज-वि० जल से उत्पन्न ।

संज्ञा पुं० १. कमल । २. सारस पक्षी ।

३. कपूर । ४. चंद्रमा । ५. शंख ।

अँभोधर-संज्ञा पुं० बादल । मेघ ।

अँभोनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र । सागर ।

अँभोराशि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

अँभोरुह-संज्ञा पुं० कमल ।

अँवरा-संज्ञा पुं० दे० "अँविला" ।

अंश-संज्ञा पुं० १. भाग । विभाग ।

२. भाज्य अंक । ३. भिन्न की लकीर

के ऊपर की संख्या । ४. कला । ५.

वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग

जिसे एकाई मानकर कोण या चाप

का प्रमाण यतलाया जाता है । ६.

कंधा ।

अंशक-संज्ञा पुं० १. भाग । टुकड़ा ।

२. हिस्सेदार । साझीदार । पट्टीदार ।

अंशपत्र-संज्ञा पुं० वह कागज़ जिसमें

पट्टीदारों का अंश या हिस्सा लिखा

हो ।

अंशावतार-संज्ञा पुं० वह अवतार

जिसमें परमात्मा की शक्ति का कुछ

भाग ही आया हो । वह जो पूर्णा-

वतार न हो ।

अंशी-वि० [स्त्री० अंशिनी] १. अवतारी ।

२. अंशधारी ।

संज्ञा पुं० हिस्सेदार । साझीदार । अव-

यवी ।

अंशु-संज्ञा पुं० १. किरण । प्रभा । २.

लता का कोई भाग । ३. सूत । ताना ।

अंशुक-संज्ञा पुं० १. पतला या महीन

कपड़ा । २. रेशमी कपड़ा । ३. उप-

रना । दुपट्टा । ४. ओढ़नी ।

अंशुमान्-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २.

अयोध्या के एक सूर्यवंशीय राजा ।

अग्रजन्मा-संज्ञा पुं० १. बड़ा भाई ।

२. ग्राह्य । ३. गृह्य ।

अग्रणी-वि० अग्रगण्य । श्रेष्ठ ।

अग्रशोची-संज्ञा पुं० आगे विचार करनेवाला । दूरदर्शी ।

अग्रसर-संज्ञा पुं० १. आगे जाने-वाला व्यक्ति । अग्रगण्य । २. आरंभ करनेवाला । ३. मुखिया । प्रधान व्यक्ति ।

अग्रहायण-संज्ञा पुं० अग्रहम । मार्गशीर्ष मास ।

अग्राशन-संज्ञा पुं० भोजन का वह अंश जो देवता के लिये पहले निकाल दिया जाता है ।

अग्राह्य-वि० १. न ग्रहण करने योग्य । २. त्याज्य । ३. न मानने लायक ।

अग्रिम-वि० १. अगाऊ । पेशगी । २. आगामी । ३. प्रधान ।

अघ-संज्ञा पुं० १. पाप । पातक । २. दुःख । ३. व्यसन । ४. अघासुर ।

अघट-वि० १. जो घटित न हो । २. दुर्घट । कठिन । ३. जो टिक न घटे । ये मेल ।

वि० १. जो कम न हो । अक्षय । २. एकरस ।

अघटित-वि० १. जो घटित न हुआ हो । २. असंभव । न होने योग्य । ३. अवश्य होनेवाला । अमिट । अनिवार्य ।

वि० [हिं० घटना] बहुत अधिक । जो घटकर न हो ।

अघात-संज्ञा पुं० दे० "आघात" । वि० खूब अधिक ।

अघाता-क्रि० अ० १. भोजन से तृप्त होना । २. संतुष्ट होना । ३. प्रसन्न होना । ४. थकना ।

अघारि-संज्ञा पुं० १. पाप का शत्रु । पापनाशक । २. श्रीकृष्ण ।

अघासुर-संज्ञा पुं० कंस का सेनापति यद्यपि जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।

अघी-वि० पापी । पातकी ।

अघोर-वि० १. अरुणत घोर । बहुत भयंकर । २. सौम्य । सुहावना ।

संज्ञा पुं० १. शिव का एक रूप । २. एक सम्प्रदाय जिसके अनुयायी मयमांस का व्यवहार करते हैं और मलमूत्र आदि से घृणा नहीं करते ।

अघोरनाथ-संज्ञा पुं० शिव ।

अघोरपंथ-संज्ञा पुं० अघोरियों का मत । औषड् सम्प्रदाय ।

अघोरी-संज्ञा पुं० [ औ० अघोरिन् ] अघोर मत का अनुयायी । औषड् वि० घृणित । घिनौना ।

अघौघ-संज्ञा पुं० पापों का समूह ।

अचंभा-संज्ञा पुं० १. आश्चर्य । अचरज । विस्मय । २. अचरज की बात ।

अचंभित-वि० आश्चर्यान्वित । चकित । विस्मित ।

अचंभोः-संज्ञा पुं० दे० "अचंभा" ।

अचक्र-वि० भरपूर । बहुत ।

संज्ञा पुं० चक्रावृत्ति । विस्मय ।

अचक्रन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लंबा श्रंगा ।

अचक्रा-संज्ञा पुं० अनजान ।

अचर-वि० न चलनेवाला । स्थावर । जड़ ।

अचरज-संज्ञा पुं० आश्चर्य । अचंभा । तज्जुष्य ।

अचल-वि० १. जो न चले । २. चिरस्थायी । सब दिन रहनेवाला ।

३. ध्रुव । ४. जो नष्ट न हो ।

संज्ञा पुं० पर्वत । पहाड़ ।

अंशुमाली-संज्ञा पुं० सूर्य्य ।

अंस-संज्ञा पुं० दे० "अंश" ।

अंसुआ, अंसुआ-संज्ञा पुं० दे० "अंसु" ।

अंह-संज्ञा पुं० १. पाप । दुःख । अपराध । २. दुःख । व्याकुलता । ३. विम । बाधा ।

अंहडा-संज्ञा पुं० सौलने का घाट । घटखरा ।

अ-अप० संज्ञा और विशेषण शब्दों से पहिले लगाकर यह उनके अर्थों में फेर-फार करता है । जिस शब्द के पहले यह लगाया जाता है, उस शब्द के अर्थ का प्रायः अभाव सूचित करता है । जैसे—अधर्म, अन्याय, अचल । कहीं कहीं यह अक्षर शब्दके अर्थ को दूषित भी करता है । जैसे—अभाग, अकाल । एधर से आरंभ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले जब इस अक्षर को लगाना होता है, तब उसे "अन" कर देते हैं । जैसे—अनेक, अनीश्वर ।

संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु । २. विराट । ३. अग्नि । ४. विश्व । ५. ब्रह्मा । ६. ईश्वर । ७. ललाट । ८. वायु । ९. कुबेर । १०. अमृत । ११. कीर्ति । १२. सरस्वती ।

वि० १. रक्षक । २. उपन्न करने-वाला ।

अउर-संज्ञा० दे० "और" ।

अकंटक-वि० १. बिना काटे का । २. निर्विघ्न । बिना रोक-टोक का । ३. शत्रु-रहित ।

अकंपन-वि० [ वि० अव्यपित, अव्यव्य ] न कांपनेवाला । स्थिर ।

अक-संज्ञा पुं० १. पाप । २. दुःख ।

अकच्छ-वि० १. नंगा । २. व्यभिचारी । परस्त्रीगामी । ३. परेशान । पराहित ।

अकड़-संज्ञा स्त्री० १. ऐंठ । तनाव । २. घमंड । अहंकार । शेखी । ३. ठिठई । ४. हठ ।

अकड़ना-क्रि० अ० [संज्ञा अकाड़, अकड़ाव] १. ऐंठना । २. ठिठुरना । सुन्न होना । ३. तनना । ४. शेखी करना । ५. ठिठई करना । ६. हठ करना । ७. चिटकना ।

अकड़वाज-वि० ऐंठदार । शेखीवाज । अभिमानी ।

अकड़वाजी-संज्ञा स्त्री० ऐंठ । शेखी । अभिमान ।

अकड़ाव-संज्ञा पुं० ऐंठन । खिंचाव ।

अकड़-संज्ञा पुं० दे० "अकड़वाज" ।

अकड़त-वि० दे० "अकड़वाज" ।

अकट-वि० सारा । समूचा ।

क्रि० वि० बिलकुल । सरासरी ।

अकथ-वि० दे० "अकथ" ।

अकथ-वि० १. जो कहा न जा सके ।

अकथनीय । २. न कहने योग्य ।

अकथनीय-वि० न कहे जाने योग्य ।

अकथ्य-वि० न कहने योग्य ।

अकथक-संज्ञा पुं० आशंका । आगा-पीछा । मोच-विचार । भय । डर ।

अकनना-क्रि० स० कान लगाकर सुनना । आहट लेना ।

अकना-क्रि० अ० ऊपना । घबराना ।

अकथक-संज्ञा स्त्री० १. निरर्थक वाक्य ।

अनाप शनाप । २. घबराहट । खटका ।

वि० [ सं० अवाक् ] मौचका ।

अचला-वि० स्त्री० जो न चले ।

स्थिर । ठहरी हुई ।

संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

अचला सप्तमी-संज्ञा स्त्री० माघ शुक्ल  
सप्तमी ।

अचघन-संज्ञा पुं० १. आचमन । पीने  
की क्रिया । २. भोजन के पीछे हाथ-  
मुँह धोकर कुत्ता करना ।

अचाका-कि० वि० अचानक ।  
सहसा ।

अचानक-कि० वि० एकपासी ।  
सहसा । अकस्मात् ।

अचाट-संज्ञा पुं० मसालों के साथ  
तेल में कुछ दिन रखकर खटा किया  
हुआ फल या तरकारी । कचूर ।

० संज्ञा पुं० दे० "आचार" ।

संज्ञा पुं० चिरोजी का पेड़ ।

अचारज-संज्ञा पुं० दे० "आचार्य" ।

अचारी-संज्ञा पुं० १. आचार-विचार  
से रहनेवाला आदमी । २. रामानुज  
संप्रदाय का वैष्णव ।

संज्ञा स्त्री० छिले हुए कच्चे आम की  
धूप में सिकाई काँक ।

अचित-वि० चिंतारहित । निश्चित ।  
येफ़िक ।

अचितनीय-वि० जो ध्यान में न आ  
सके । अज्ञेय । दुर्बोध ।

अचितित-वि० १. जिसका चिंतन  
न किया गया हो । बिना-सोचा  
विचारा । २. आकस्मिक । ३.  
निश्चित । येफ़िक ।

अचित्य-वि० १. जिसका चिंतन न हो  
सके । २. जिसका अंदाज़ा न हो  
सके । अतुल । ३. आशा से अधिक ।  
४. आकस्मिक ।

अचित्-संज्ञा पुं० जड़ प्रकृति ।

अचिर-कि० वि० शीघ्र । जल्दी ।

अचीता-वि० [ स्त्री० अचीती ] १.

जिसका पहले से अनुमान न हो ।

आकस्मिक । २. घटित ।

वि० [ सं० अचित् ] निश्चित । येफ़िक ।

अचूक-वि० [ सं० अच्युत ] १. जो

अवश्य फल दिलावे । २. ठीक । पक्का ।

कि० वि० १. सफ़ाई से । कौशल

से । २. ज़रूर ।

अचेत-वि० १. बेसुध । बेहोश । २.

व्याकुल । ३. अनजान । बेख़बर ।

४. नासमझ । मूढ़ । ० २. जड़ ।

० संज्ञा पुं० जड़ प्रकृति । जड़त्व ।

माया । अज्ञान ।

अचेतन-वि० १. जिसमें सुख-दुःख

आदि के अनुभव की शक्ति न हो ।

चेतना रहित । जड़ । २. मूर्च्छित ।

अचेतन्य-संज्ञा पुं० वह जो ज्ञान-

स्वरूप न हो । अनात्मा । जड़ ।

अचोना-संज्ञा पुं० आचमन करने

या पीने का बरतन । कटोरा ।

अच्छ-वि० स्वच्छ । निर्मल ।

संज्ञा पुं० दे० "अक्ष" ।

अच्छुत-संज्ञा पुं० दे० "अक्षत" ।

अच्छरी-संज्ञा पुं० दे० "अक्षर" ।

अच्छरा, अच्छरी-संज्ञा स्त्री०

अप्सरा ।

अच्छा-वि० उत्तम । बढ़िया । उमदा ।

अच्छाई-संज्ञा स्त्री० अच्छापन । उत्त-

मता ।

अच्छोहिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षो-

हिनी" ।

अच्युत-वि० [ सं० ] १. जो गिरा न

हो । २. अटल । स्थिर । ३. नित्य ।

अविनाशी । ४. जो विचलित न हो ।

अकथकाना-कि० अ० चकित होना ।  
घबराना ।

अकथरी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई । २. लकड़ी पर की एक नक्काशी ।

अकथाल-संज्ञा पुं० दे० "इकथाल" ।

अकर-वि० १. न करने योग्य । कठिन । २. बिना हाथ का । ३. बिना कर या महसूल का ।

अकरकरा-संज्ञा पुं० एक पैधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है ।

अकरण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अकरणीय] १. कर्म का अभाव । २. कर्म का न किए हुए के समान या फल-रहित होना । ३. इंद्रियों से रहित, ईश्वर । परमात्मा ।

वि० न करने योग्य । कठिन ।  
० वि० [सं० अकरण] बिना कारण का ।

अकरणीय-वि० [सं०] न करने योग्य ।

अकरा-वि० १. न मोल लेने योग्य । महंगा । २. खरा । छेड़ । उत्तम ।

अकरास-संज्ञा स्त्री० [हि० अकरस] रंगझाई । देह हटना ।

संज्ञा स्त्री० आलस्य । सुदृती ।  
अकरासू-वि० स्त्री० गर्भवती ।

अकरी-संज्ञा स्त्री० हल में लगा लकड़ी का चाँगा जिसमें धीज डालते जाते हैं ।

अकर्त्ता-वि० कर्म का न करनेवाला । कर्म से अलग ।

अकर्त्तृक-संज्ञा पुं० बिना कर्त्ता का । जिसका कोई कर्त्ता या रचयिता न हो ।

अकर्म-संज्ञा पुं० १. न करने योग्य कार्य । बुरा काम । २. कर्म का अभाव ।

अकर्मक-संज्ञा पुं० वह क्रिया जिसे

किसी कर्म की आवश्यकता न हो ।  
( व्या० )

अकर्मण्य-वि० कुछ काम न करने-वाला । आलसी ।

अकर्मी-संज्ञा पुं० [स्त्री० अकर्मिणी] बुरा कर्म करनेवाला । पापी । अपराधी ।

अकलंक-वि० निष्कलंक । दोषरहित ।  
† संज्ञा पुं० देण्ड ।

अकलंकित-वि० निष्कलंक । निर्दोष ।

अकल-वि० १. जिसके खंड न हों । समूचा । २. परमात्मा का एक विशेषण ।

वि० विकल । व्याकुल । बेचैन ।  
संज्ञा स्त्री० दे० "अकल" ।

अकचन-संज्ञा पुं० आक । मदार ।

अकस-संज्ञा पुं० चैर । द्वेप ।

अकसना-कि० सं० १. अकस रखना । चैर करना । २. बराबरी करना ।

अकसर-कि० वि० प्रायः । बहुधा ।  
कि० वि० । वि० (प्रत्य०) अकेले ।

बिना किसी के साथ ।  
अकसीर-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह

रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे । रसायन । कीमिया ।  
२. वह ओषधि जो प्रत्येक रोग को नष्ट करे ।

वि० अग्र्यर्थ । अत्यंत गुणकारी ।

अकस्मात्-कि० वि० १. अचानक ।  
एकबारगी । सहसा । २. दैव-योग से ।

अकह-वि० दे० "अकथ" ।

अकांड-वि० बिना शाखा का ।  
कि० वि० अकस्मात् । सहसा ।

अकांडतांडव-संज्ञा पुं० व्यर्थ की  
चञ्चल-फूट । व्यर्थ की बकवाद । वित-  
डावाद ।

संज्ञा पुं० विष्णु ।

अछुक-वि० बिना छुका हुआ ।

धृत । भूखा ।

अछुत-कि० वि० [ 'आदना' का कृदंत रूप ] रहते हुए । सम्मुख । सामने ।

अछुना-कि० अ० विद्यमान रहना ।

अछय-वि० दे० "अचय" ।

अछरा-संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा" ।

अछरी-संज्ञा स्त्री० दे० "अचरा" ।

अछरौटी-संज्ञा स्त्री० वर्णमाला ।

अछुवानी-संज्ञा स्त्री० अजवाइन, सेंड तथा मेवों को पीसकर वी में पकाया हुआ मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है ।

अछाम-वि० १. मोटा । २. बड़ा ।

भारी । ३. हट-पुट । चलवान् ।

अछूत-वि० १. जो छुआ न गया हो ।

अस्पृष्ट । २. जो काम में न लाया

गया हो । नया । ताज़ा । ३. जिसे

अपवित्र मानकर लोग न छूएँ ।

अस्पृश्य । ( आधुनिक )

अछूता-वि० [ स्त्री० अछूती ] १. जो

छुआ न गया हो । अस्पृष्ट । २. जो

काम में न लाया गया हो । नया ।

कोरा । ताज़ा ।

अछेद्य-वि० १. जिसका छेदन न हो

सके । अभेद्य । २. अविनाशी ।

अछेच-वि० छिद्र या दूषण-रहित ।

निर्दोष । वेदांग ।

अछेह-वि० १. निरंतर । लगातार ।

२. बहुत अधिक । ज्यादा ।

अछोप-वि० १. आच्छादन-रहित ।

नंगा । २. तुच्छ । दीन ।

अछोह-संज्ञा पुं० १. शोभ का अभाव ।

शान्ति । स्थिरता । २. दया-शून्यता ।

निर्दयता ।

अछोही-वि० दे० "अछोह" ।

अज-वि० जिसका जन्म न हो ।

अजन्मा । स्वयंभू ।

संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा । २. विष्णु । ३.

शिव । ४. कामदेव । ५. सूर्यवंशीय

एक राजा जो दशरथ के पिता थे ।

६. चकरा । ७. भेड़ा । ८. माया ।

शक्ति ।

कि० वि० अज । अभी तक ।

(यह शब्द "हूँ" के साथ आता है ।)

अजगर-संज्ञा पुं० बहुत मोटी जाति

का साँप जो अपने शरीर के भारी-

पन के लिये प्रसिद्ध है ।

अजगरी-संज्ञा स्त्री० अजगर की स्त्री

बिना परिश्रम की जी वेका ।

वि० १. अजगर का सा । २. बिना

परिश्रम का ।

अजगव-संज्ञा पुं० शिवजी का धनुष ।

पिनाक ।

अजगुत-संज्ञा पुं० [ सं० अजुक्त, पुं०

हिं० अजुगति ] १. युक्ति-विरुद्ध बात ।

अचंभे की बात । २. अनुचित बात ।

असंगत बात ।

वि० १. आश्चर्यजनक । २. असंगत ।

अजद्धा-संज्ञा पुं० दे० "अजगर" ।

अजनवी-वि० १. अपरिचित । २.

नया आया हुआ । परदेसी । ३.

अनजान । नावाकिफ़ ।

अजन्म-वि० दे० "अजन्मा" ।

अजन्मा-वि० जो जन्म के बंधन में

न आवे । अनादि । नित्य ।

अजपा-वि० १. जिसका उच्चारण न

किया जाय । २. जो न जपे या भजे ।

संज्ञा पुं० उच्चारण न किया जानेवाला

तांत्रिकों का एक मंत्र ।

अजब-वि० विलक्षण । अद्भुत ।

अकाज-संज्ञ पुं० [ कि० अज्ञाना, वि० अज्ञानी ] १. नुकसान । हर्ज । विघ्न । विगाढ़ । २. दुष्कर्म । खोटा काम । कि० वि० व्यर्थ । विना काम । निष्प्रयोजन ।

अकाजना०-कि० अ० १. हानि होना । २. गत होना । मरना । कि० सं० हानि करना ।

अकाट्य-वि० जिसका खंडन न हो सके । दृढ़ । मजबूत ।

अकाम-वि० बिना कामना का । इच्छाविहीन ।

कि० वि० [ सं० अकाम् ] बिना काम के । व्यर्थ ।

अकाय-वि० १. बिना शरीरवाला । २. शरीर न धारण करनेवाला । जन्म न लेनेवाला । ३. निराकार ।

अकार-संज्ञ पुं० "अ" अक्षर । अकारज-संज्ञ पुं० कार्पकी हानि । नुकसान । हर्ज ।

अकारण-वि० १. बिना कारण का । २. जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो । स्वयंभू ।

कि० वि० बिना कारण के । ये समय । अकारण-कि० वि० ये काम । फुल्ल । घृषा ।

अकाल-संज्ञ पुं० १. दुष्काल । दुर्भिक्ष । मंदगी । कुसमय । कि० प्र०-पढ़ना ।

२. घाटा । कमी । अकालकुसुम-संज्ञ पुं० १. बिना समय या शतु में फूला हुआ फूल । ( अशुभ ) २. ये समय की चीज़ ।

अकालमृत्यु-संज्ञ स्त्री० ये समय की मृत्यु । असामयिक मृत्यु । थोड़ी

अवस्था में मरना ।

अकाली-संज्ञ पुं० नानकपंथी साधू जो सिर में चक्र के साथ काले रंग की पगड़ी बांधे रहते हैं ।

अकास-संज्ञ पुं० दे० "आकाश" । अकासयानी-संज्ञ स्त्री० दे० "आकाश-वाणी" ।

अकासवेल-संज्ञ स्त्री० अक्षर-वेलि । अक्षरवेल ।

अकासी-संज्ञ स्त्री० १. चील । २. ताड़ी ।

अकिंचन-वि० [ सं० ] निर्धन । कंगाल ।

अकिल-संज्ञ स्त्री० दे० "अकल" ।

अकिलदाढ़-संज्ञ पुं० पूरी अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दाढ़ ।

अकीर्ति-संज्ञ स्त्री० अप्रश । अप्रश । पदनामी ।

अकुंठ-वि० [ सं० ] १. सीढ़ण । चोखा । २. सरा । उत्तम ।

अकुताना०-कि० अ० दे० "उक्ताना" ।

अकुल-वि० [ सं० ] १. जिसके कुल में कोई न हो । २. धुरे या नीच कुल का ।

संज्ञ पुं० धुरा कुल । नीच कुल ।

अकुलाना-कि० अ० १. जल्दी करना । २. धराना । ३. मग होना ।

अकुलीन-वि० तुच्छ वंश में उत्पन्न । कमीना ।

अकृत-वि० [ सं० अकृति० कृता ] जो कृता न जा सके । बहुत अधिक ।

अकृत-वि० १. बिना किया हुआ । २. विगाढ़ा हुआ । ३. जो किसी का बनाया न हो । स्वयंभू । ४. निक-



विचित्र । अनोखा ।

अज्ञमाना-क्रि० सं० दे० "आज्ञ-माना" ।

अजय-संज्ञा पुं० पराजय । हार ।

वि० जो जीता न जा सके । अजेय ।

अजया-संज्ञा स्त्री० विजया । भाग ।

० संज्ञा स्त्री० बकरी ।

अजर-वि० १. जरा-रहित । जो बूढ़ा न हो । २. जो सदा एकरस रहे ।

वि० जो न पचे । जो न हज़म हो ।

अजराल-वि० पलवान् ।

अजयायन-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसके सुगंधित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं । यवानी ।

अजस-संज्ञा पुं० अपयश । अपकीर्ति । बदनामी ।

अजसी-वि० अपयशी । बदनाम । निष्ठा ।

अजस्र-क्रि० वि० सदा । हमेशा ।

असहृद-क्रि० वि० हृद से ज्यादा । बहुत अधिक ।

अजा-वि० स्त्री० जिसका जन्म न हुआ हो । जन्म-रहित ।

संज्ञा स्त्री० १. बकरी । २. शक्ति । दुर्गा ।

अजात-वि० जो पैदा न हुआ हो । जन्म-रहित । अजन्मा ।

अजातशत्रु-वि० जिसका कोई शत्रु न हो । शत्रुविहीन ।

अजाती-वि० जाति से निराला हुआ ।

अजान-वि० [ सं० अज्ञान ] १. जो न जाने । अतजान । २. अपरिचित ।

संज्ञा पुं० अज्ञानता ।

संज्ञा पुं० नमाज़ की पुकार जो मसजिदों में होती है । याँग ।

अजामिल-संज्ञा पुं० पुराणों के अनुसार एक पापी ब्राह्मण जो मरते

समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम पुकारने से तर गया था ।

अजायक-वि० बेजा । अनुचित ।

अजायव-संज्ञा पुं० अजब का बहुवचन । विलक्षण पदार्थ या व्यापार ।

अजायवखाना-संज्ञा पुं० वह भवन जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ रखते हैं । अद्भुत-यस्तु-सम्प्राप्त । म्यूजियम ।

अजार-संज्ञा पुं० दे० "आज़ार" ।

अजिआरा-संज्ञा पुं० आजी या दादी के पिता का घर ।

अजित-वि० जो जीता न गया हो । संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. शिव । ३. बुद्ध ।

अजितेन्द्रिय-वि० [ सं० ] जो इंद्रियों के चश में हो ।

अजिर-संज्ञा पुं० १. आँगन । सहन । २. वायु । हवा ।

अजी-अव्य० संशोधन शब्द । जी ।

अजीत-वि० दे० "अजित" ।

अजीव-वि० विलक्षण । विचित्र ।

अजीरन-संज्ञा पुं० दे० "अजीर्ण" ।

अजीर्ण-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. अपच ।

बदहज़मी । २. बहुतायत । जैसे—

बुद्धि का अजीर्ण । (व्यंग्य)

अजुगुत-संज्ञा पुं० दे० "अजगुत" ।

अजूक-अव्य० दे० "अजी" ।

अजूया-वि० अद्भुत । अनोखा ।

अजेय-वि० जिसे कोई जीत न सके ।

अजोग-वि० दे० "अयोग्य" ।

अजोता-संज्ञा पुं० क्षेत्र की परिधि ।

( इस दिन खेल नहीं नाचे जाते । )

अजौ-क्रि० वि० अवधी । अब तक ।

अज्ञ-वि० संज्ञा पुं० अज्ञानी । जड़ ।

ग्मा । बेकाम । १. घुरा । मंदा ।  
अकेला-वि० [खी० अकेला] १. जिसके  
साथ कोई न हो । तनहा । २.  
अद्वितीय । निराला ।

संज्ञा पुं० एकांत । निर्जन स्थान ।

अकेले-क्रि० वि० १. किसी साथी के  
बिना । २. सिर्फ । केवल ।

अकोतर सौं-वि० सौ के ऊपर  
एक । एक सौ एक ।

अकोसना-क्रि० सं० दे० "को-  
सना" ।

अकौआ-संज्ञा पुं० १. आक ।  
मदार । २. गले में का कौआ । टंटी ।

अकखड़-वि० [ हिं० अक + खड़ा ]

१. किसी का कहना न माननेवाला  
सद्धत । २. बिगड़ैल । ३. निर्भय ।

४. असभ्य । ५. रजड़ । ६. खरा ।

अकखड़पन-संज्ञा पुं० [ हिं० अकखड़ +  
पन ] १. अशिष्टता । २. क्रमता । ३.  
स्पष्टवादिता ।

अकखर-संज्ञा पुं० दे० "अकर" ।

अकखो मवखो-संज्ञा पुं० दीपक की  
लौ तक हाथ ले जाकर घट्टे के मुँह  
पर 'अकखोमवखो' कहते हुए फेरना ।  
(भजर से बंधाने के लिये)

अक्रम-वि० अंड-वेड । बे सिलसिले ।

संज्ञा पुं० क्रम का अभाव । व्यतिक्रम ।

अक्रिय-वि० १. जो कर्म न करे ।  
क्रिया रहित । २. निश्चेष्ट । जड़ ।

अक्रूर-वि० जो क्रूर न हो । सरल ।

संज्ञा पुं० श्वफल्क का पुत्र एक यादव  
जो श्रीकृष्ण का चाचा लगता था ।

अकल-संज्ञा खी० बुद्धि । समझ ।  
ज्ञान । प्रज्ञा ।

अकलमंद-संज्ञा पुं० बुद्धिमान् । चतुर ।

अकलमंदी-संज्ञा खी० समझदारी ।  
चतुराई ।

अक्लिष्ट-वि० १. कष्ट-रहित । २.  
सुगम ।

अक्ष-संज्ञा पुं० [ खी० अक्ष ] १.

खेलने का पासा । २. चौसर । ३.

वह कक्षित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के

भीतरी केंद्र से होती हुई उसके

आर-पार दोनों ध्रुवों पर निकली

है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई

मानी गई है । ४. तराज की डोढ़ी ।

५. आँख । ६. रुद्राक्ष ।

अक्षकीड़ा-संज्ञा खी० पासे का खेल ।

चौसर । चौपड़ ।

अक्षत-वि० बिना टूटा हुआ । अखंड-

वित्त । समूचा ।

संज्ञा पुं० १. बिना टूटा हुआ चावल

जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया

जाता है । २. धान का लावा ।

३. जौ ।

अक्षतयोनि-वि० खी० ( कन्या )

जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो ।

अक्षता-वि० खी० जिसका पुरुष से

संयोग न हुआ हो ( स्त्री ) ।

संज्ञा खी० वह पुनर्भू स्त्री जिसने

पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न

किया हो ।

अक्षपाद-संज्ञा पुं० १. न्यायशास्त्र के

प्रवर्तक गौतम ऋषि । २. तार्किक ।

नैयायिक ।

अक्षम-वि० [ संज्ञा अक्षमता ] १. अस-

मर्थ । अशक्त । २. असहिष्णु ।

अक्षय-वि० जिसका क्षय न हो ।

अविनाशी ।

अक्षय तृतीया-संज्ञा खी० वैशाख

अज्ञता-संज्ञा स्त्री० मूर्खता । नादानी ।  
 अज्ञा-संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा" ।  
 अज्ञात-वि० [सं०] बिना जाना हुआ ।  
 अप्रकट ।  
 अज्ञात-वि० बिना जाने । अनजान में ।  
 अज्ञातवास-संज्ञा पुं० ऐसे स्थान का  
 निवास जहाँ कोई पता न पा सके ।  
 अज्ञान-संज्ञा पुं० जड़ता । मूर्खता ।  
 वि० मूर्ख । जड़ । नासमझ ।  
 अज्ञानता-संज्ञा स्त्री० जड़ता । मूर्खता ।  
 अविद्या । नासमझी ।  
 अज्ञानी-वि० मूर्ख । नासमझ ।  
 अज्ञेय-वि० जो समझ में न आ सके ।  
 अज्योति-वि० दे० "अज्ञोति" ।  
 अटंघर-संज्ञा पुं० अटाखा । ढेर । राशि ।  
 अट-संज्ञा स्त्री० शर्त । कैद । प्रतिबंध ।  
 अटक-संज्ञा स्त्री० [क्रि० अटकना । वि०  
 अटकाऊ] १. रोक । रुकावाट । अड़चन ।  
 २. संकोच । हिचक । ३. सिंधनदी ।  
 अटकन-घटकन-संज्ञा पुं० [देश०]  
 छोटे लड़कों का एक खेल ।  
 अटकना-क्रि० अ० रुकना । ठहरना ।  
 अड़ना ।  
 अटकरना-क्रि० स० अंदाज़ करना ।  
 अटकल लगाना ।  
 अटकल-संज्ञा स्त्री० १. अनुमान ।  
 कल्पना । २. अंदाज़ । कृत ।  
 अटकलना-क्रि० स० अटकल लगाना ।  
 अनुमान करना ।  
 अटकल पट्छू-संज्ञा पुं० मोटा  
 अंदाज़ । कल्पना ।  
 वि० ख्याली । अटपटाग ।  
 अटका-संज्ञा पुं० अंदाज़ । अनुमान से ।  
 अटका-संज्ञा पुं० लगनाथ जी को  
 चढ़ाया हुआ मात और धन ।  
 अटकाना-क्रि० स० १. रोकना । २.

फँसाना । ३. पूरा करने में बिलंब  
 करना ।  
 अटकाव-संज्ञा पुं० १. रोक । रुका-  
 वट । २. बाधा । विघ्न ।  
 अटखट-वि० अटसट । अंडवंड ।  
 अटन-संज्ञा पुं० घुमना । फिरना ।  
 अटना-क्रि० अ० घुमना । फिरना ।  
 अट अट करना । अट करना ।  
 छेकना ।  
 अटपट-वि० [स्त्री० अटपटी] १. विकट ।  
 कठिन । २. दुर्गम । दुस्तर । ३.  
 गूढ़ । जटिल । ४. अटपटाग ।  
 अटपटाना-क्रि० अ० [दि० अटपट]  
 अटकना । लड़खड़ाना ।  
 अटपटी-संज्ञा स्त्री० अज्ञेय । जो  
 समझ में न आवे ।  
 अटल-वि० जो न टले । स्थिर ।  
 नित्य । चिरस्थायी । अघ । पक्का ।  
 अटवी-संज्ञा स्त्री० वन । जंगल ।  
 अटा-संज्ञा स्त्री० घर के ऊपर की  
 कोठरी । अटारी ।  
 संज्ञा पुं० अटाखा । ढेर । राशि ।  
 समूह ।  
 अटारी-संज्ञा स्त्री० घर के ऊपर की  
 कोठरी या छत । चौधारा । कोठा ।  
 अटालि-संज्ञा पुं० बुर्ज । धरहरा ।  
 अटाला-संज्ञा पुं० १. डेर । सामान ।  
 असबाब । २. कसाइयों की बस्ती ।  
 अटूट-वि० १. न टूटने योग्य । मज-  
 बूत । २. जिसका पतन न हो ।  
 अजैय । ३. अखंड । ४. बहुत अधिक ।  
 अटेरन-संज्ञा पुं० [क्रि० अटेरना] १.  
 सूत की आँटी घमाने का लकड़ी का  
 एक यंत्र । २. घोड़े को फावा या  
 चक्र देने की एक रीति ।  
 अटेरना-क्रि० स० १. अटेरन से सूत

शुद्ध तृतीया । आधा तीज ।  
(स्नान-दान)

अक्षय नवमी-संज्ञा स्त्री० कार्तिक  
शुद्धा नवमी । (स्नान दान आदि)  
अक्षयवट-संज्ञा पुं० प्रयाग और गया  
में एक वरगढ़ का पेड़, पौराणिक  
जिसका नाश प्रलय में भी नहीं  
मानते ।

अक्षय्य-वि० अक्षय । अविनाशी ।

अक्षर-वि० अविनाशी । नित्य ।  
संज्ञा पुं० १. अकारादि वर्ण । हरफ ।  
२. आरम्भ । ३. ग्रन्थ । ४. आकाश ।  
५. धर्म । ६. तपस्या । ७. मोक्ष ।  
८. जल ।

अक्षरशः-क्रि० वि० एक एक अक्षर ।  
बिलकुल । सभ ।

अक्षरेखा-संज्ञा स्त्री० वह सीधी रेखा  
जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केंद्र  
से होकर दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से  
गिरे ।

अक्षरौटी-संज्ञा स्त्री० १. वर्णमाला ।  
२. खेल । ३. वे पद्य जो क्रम से  
वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ  
होते हैं ।

अक्षांश-संज्ञा पुं० १. भूगोल पर  
दक्षिणी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर  
के ३६० समान भागों पर से होती  
हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व पश्चिम  
मानी गई हैं । २. वह कोण जहाँ  
पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष  
से कटता है । ३. भूमध्य रेखा और  
किसी नियत स्थान के बीच में या-  
म्पोत्तर का पूर्ण झुकाव या अंतर ।

अक्षि-संज्ञा स्त्री० अक्ष । नेत्र ।

अक्षुण्ण-वि० बिना दूटा हुआ ।

समूचा ।

अक्षोट-संज्ञा पुं० अक्षुरोट ।

अक्षोनी-संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षो-  
हिणी" ।

अक्षोभ-संज्ञा पुं० क्षोभ का अभाव ।  
शांति ।

वि० १. शांत । २. मोहरहित । ३.  
निडर ।

अक्षौहिणी-संज्ञा स्त्री० पूरी चतुरं-  
गिणी सेना जिसमें १,०३,३५०  
पैदल, ६५,६,१० घोड़े, २१,८,७०  
रथ और २१,८,७० हाथी होते थे ।

अकस-संज्ञा पुं० १. प्रतिविम्ब छाया ।  
२. तसवीर ।

अकसर-क्रि० वि० दे० "अकसर" ।

अखंड-वि० १. जिसके टुकड़े न हों ।  
२. लगातार । ३. बेरोक । निरिष्ट ।

अखंडनीय-वि० १. जिसके टुकड़े न  
हो सकें । २. जिसके विरुद्ध न कहा  
जा सके । पुष्ट । युक्तियुक्त ।

अखंडल-वि० १. अखंड । २.  
समूचा ।

संज्ञा पुं० दे० "अखंडल" ।

अखंडित-संज्ञा पुं० मछ । फलवान्  
पुरुष ।

अखती, अखतीज-संज्ञा स्त्री० दे०  
"अक्षय तृतीया" ।

अखनी-संज्ञा स्त्री० मांस का रस ।  
शोरवा ।

अखबार-संज्ञा पुं० समाचारपत्र ।  
संवादपत्र । खबर का कागज़ ।

अखरना-क्रि० स० खलना । घुसा  
लगाना ।

अखरा-वि० मूला । घनावटी ।

की अटी घनाना । २. मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना ।

अटोक-वि० घिना रोक-टोक का ।

अट्टसट्ट-संज्ञा पुं० [ अनु० ] अनाप-शनाप । व्यर्थ की बात ।

अट्टहास-संज्ञा पुं० जोर की हँसी ।

अट्टालिका-संज्ञा स्त्री० अटारी । कोठा ।

अट्टी-संज्ञा स्त्री० अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन । लच्छा ।

अट्टा-संज्ञा पुं० ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रंग की आठ छूरियाँ हों ।

अट्टाईस-वि० बीस और आठ ।

अट्टानवे-वि० एक संख्या । नब्बे और आठ ।

अट्टायन-वि० पचास और आठ ।

अट्टासी-वि० दे० "अठासी" ।

अठ-वि० दे० "आठ" । (समास में) ।

अठई-संज्ञा स्त्री० अष्टमी तिथि ।

अठकौसल-संज्ञा पुं० १. गोष्ठी ।

पंचायत । २. सलाह । मंत्रणा ।

अठखेली-संज्ञा स्त्री० विनोद । क्रीड़ा । बुलबुलापन ।

अठत्तर-वि० दे० "अठहत्तर" ।

अठथी-संज्ञा स्त्री० आठ आने का चाँदी का सिक्का ।

अठपहला-वि० [ सं० अष्टपदल ] आठ कोनेवाला ।

अठमासा-संज्ञा पुं० दे० "अठर्वासा" ।

अठमासी-संज्ञा स्त्री० [ हिं० आठ + मासा ] आठ मासों का सोने का सिक्का । सावरिन । गिनी ।

अठलाना-क्रि० अ० १. षूँठ दिखलाना । इतराना । २. चौबला करना । ३. मस्ती दिखाना ।

अठर्वासा-वि० [ सं० अष्टमास ] वह

गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो जाय ।

संज्ञा पुं० १. सीमित संस्कार । २. वह खेत जो असाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय ।

अठवारा-संज्ञा पुं० आठ दिन का समय । सप्ताह । हफ्ता ।

अठहत्तर-वि० सत्तर और आठ । ७८ ।

अठाई-वि० उत्पाती । नटखट ।

अठान-संज्ञा पुं० १. अयोग्य या दुष्कर कर्म । २. चैर । शत्रुता ।

अठाना-क्रि० स० सताना । पीड़ित करना ।

क्रि० स० मचाना । ठानना ।

अठारह-वि० दस और आठ ।

अठासी-वि० अस्सी और आठ ।

अठिलाना-क्रि० अ० दे० "अठलाना" ।

अठेल-वि० बलवान् । जोरावर ।

अठोतरी-संज्ञा स्त्री० एक सौ आठ दानों की उपमात्रा ।

अड़ंगा-सं० टाँग अड़ाना । रुकावट ।

अड़ङ-वि० दे० "अड़ङ्ग" ।

अड़-संज्ञा पुं० [ सं० हठ ] हठ । जिद ।

अड़ग-वि० न दिगंनेवाला ।

अड़गड़ा-संज्ञा पुं० १. बैलगादियों के ठहरने का स्थान । २. बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान ।

अड़गोड़ा-संज्ञा पुं० लकड़ी का टुकड़ा जिसे नटखट चौपायों के गले में बाँधते हैं ।

अड़चन-संज्ञा स्त्री० कठिनाई । दिक्कत ।

अड़तालीस-वि० चालीस और आठ ।

अड़तीस-वि० तीस और आठ ।

संज्ञा पुं० भूसी मिला हुआ जौ का आटा ।

अखरावट, अखरावटी—संज्ञा स्त्री० दे० “अचरीटी” ।

अखरोट—संज्ञा पुं० एक फलदार ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफ़ग़ानिस्तान तक होता है ।

अखाड़ा—संज्ञा पुं० १. कुश्ती खड़ने या कसरत करने के लिये बनाई हुई चौखूँटी जगह । २. साधुओं की सांप्रदायिक मंडली । जमायत । ३. तमाशा दिखानेवालों और गाने-बजानेवालों की मंडली । ४. सभा । दरबार ।

अखिल—वि० १. संपूर्ण । २. सर्वानुपूर्ण । अखंड ।

अखीर—संज्ञा पुं० १. अंत । छेवर । २. समाप्ति ।

अखूट—वि० जो न घटे या चुके । अक्षय । बहुत ।

अखैधर—संज्ञा पुं० अक्षयवट ।

अखोह—संज्ञा पुं० ऊँची-नीची या ऊँच-छाबड़ भूमि ।

अखौट } १. जाँते या चक्री के बीच  
अखौटा } की खूँटी । किल्ली । २. लकड़ी या लोहे का डंडा जिस पर गदारी घूमती है ।

अख्खाह!—अन्व० उठेग या आश्चर्य-सूचक शब्द ।

अखितयार—संज्ञा पुं० दे० “इखितयार” ।

अख्यान—संज्ञा पुं० दे० “आख्यान” ।

अग—वि० १. न चलनेवाला । स्थावर । २. टेढ़ा चलनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. पेड़ । वृक्ष । २. पर्वत । ३. सूर्य । ४. सर्प ।

अगज—वि० पर्वत से उत्पन्न ।

संज्ञा पुं० १. शिलाजीत । २. हाथी ।

अगडधत्ता—वि० १. लंघा-तड़ंगा । ऊँचा । २. श्रेष्ठ ।

अगडवगड—वि० थंड बंड ।

संज्ञा पुं० १. ये सिर पैर की बात । प्रलाप । २. थंड बंड काम ।

अगड़ा—संज्ञा पुं० अनाजों की घाल जिसमें से दाना काढ़ लिया गया हो ।

अगण—संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण ।

अगणनीय—वि० १. न गिनने योग्य । सामान्य । २. अनगिनत ।

अगणित—वि० जिसकी गणना न हो ।

अगण्य—वि० १. न गिनने योग्य । २. सामान्य । तुच्छ । ३. असंख्य । येशुमार ।

अगति—संज्ञा स्त्री० १. बुरी गति । दुर्दशा । खराबी । २. मृत्यु के पीछे की बुरी दशा । नरक । ३. स्थिरता ।

अगतिक—वि० जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो । अशरण्य ।

अगती—वि० [सं० अगति] बुरी गति-वाला । पापी ।

वि० स्त्री० अगाऊ । पेशगी ।

कि० वि० आगे से । पहले से ।

अगम—वि० [सं० अगम्य] १. जहाँ कोई जा न सके । २. विकट । कठिन । ३. बुद्धि के परे । दुर्बोध । ४. अपाह ।

संज्ञा पुं० दे० “आगम” ।

अगमन—कि० वि० आगे । पहले ।

अगमानी—संज्ञा पुं० अगुआ । नायक । सरदार ।

संज्ञा स्त्री० दे० “अगवानी” ।

अङ्गदार-वि० १. अङ्गियल । २. ँङ्गदार । ३. मस्र ।

अङ्गना-कि० अ० १. रुकना । ठहरना । २. हठ करना ।

अङ्गवंग-वि० पुं० १. टेढ़ा-मेढ़ा । २. कठिन । दुर्गम । ३. विलक्षण ।

अङ्गर-वि० निडर । धैर्यपूर्ण ।

अङ्गसठ-वि० साठ और आठ की संख्या ।

अङ्गहुल-संज्ञा पुं० देवीकूल । जग या जगत् पुष्प ।

अङ्गाङ्ग-संज्ञा पुं० चौपायों के रहने का हाता ।

अङ्गान-संज्ञा स्त्री० १. रुकने की जगह । २. पड़ाव ।

अङ्गाना-कि० सं० टिकाना । रोकना । ठहराव । अटकाना ।

अङ्गार-संज्ञा पुं० १. समूह । ढेर । २. ईंधन का ढेर जो बेचने के लिये रक्खा हो ।

० वि० टेढ़ा । तिरछा । आड़ा ।

अङ्गयल-वि० १. अङ्कुर चलने वाला । २. सुस्त । मंथर । ३. हठी ।

अङ्गी-संज्ञा स्त्री० १. जिद्द । २. शक ।

अङ्गलना-कि० सं० जल आदि ढालना । उड़लना ।

अङ्गसा-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके फूल और पत्ते कास, श्वास आदि की औषध हैं ।

अङ्गोल-वि० १. जो हिले नहीं । अटल । स्थिर । २. सम्पन्न । ठकमारा ।

अङ्गोस पङ्गोस-संज्ञा पुं० आस पास । करीब ।

अङ्गा-संज्ञा पुं० [ सं० अङ्ग = कँची जगह ] १. टिकने की जगह । २.

मिलने या इकट्ठा होने की जगह ।

३. केंद्र स्थान । कवृत्तों की छतरी ।

अङ्गतिथा-संज्ञा पुं० १. वह दुकानदार जो ग्राहकों या महाजनो को माल खरीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता है । आड़त करनेवाला । २. दलाल ।

अङ्गचना-कि० सं० आज्ञा देना । काम में लगाना ।

अङ्गकना-कि० अ० १. ठोकर खाना । २. सहारा लेना ।

अङ्गैया-संज्ञा पुं० १. २३ सेर की तौल या घाट । २. दाईं गुने का पहाड़ा ।

अङ्गिमा-संज्ञा स्त्री० अष्ट सिद्धियों में पहली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते ।

अङ्गु-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छोटा टुकड़ा या कण । २. अत्यंत सूक्ष्म मात्रा । वि० १. अति सूक्ष्म । अत्यंत छोटा । २. जो दिखाई न दे ।

अङ्गुवादी-संज्ञा पुं० १. नैयायिक । २. रामानुज का अनुयायी ।

अङ्गुचीक्षण-संज्ञा पुं० सूक्ष्मदर्शक यंत्र । सुर्दृष्टि ।

अतंद्गिफ-वि० १. आलस्य-रहित । २. व्याकुल । बेचैन ।

अतः-कि० वि० इस वजह से । इस-लिये ।

अतएव-कि० वि० इसलिये । इस हेतु से । इस वजह से ।

अतनु-वि० शरीर-रहित । बिना देह का ।

संज्ञा पुं० अर्नग । कामदेव ।

अतर-संज्ञा पुं० फूलों की 'सुगंधि' का सार । निर्यास । पुष्पसार ।

अग्रम्य-वि० १. जहाँ कोई न जा सके। अवघट। २. कठिन। मुश्किल। ३. बहुत। अत्यंत। ४. जिसमें बुद्धि न पहुँचे। ५. बहुत गहरा।

अगर-संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है।

अग्र्य० यदि। जो।

अगरई-वि० श्यामता लिए हुए सुनहले सड़ती रंग का।

अगरचे-अग्र्य० गोकि। यद्यपि।

अगरचत्ती-संज्ञा स्त्री० सुगंध के निमित्त जलाने की पतली सीक या पत्ती।

अगरा-वि० १. अगला। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. अधिक।

अगरु-संज्ञा पुं० अगर लकड़ी। ऊद।

अगल अगल-क्रि० वि० इधर उधर। दोनों ओर। आसपास।

अगला-वि० [ स्त्री० अगली ] १. आगे का। सामने का। २. पहले का। ३. पुराना। ४. आगामी। आने वाला। ५. दूसरा।

संज्ञा पुं० १. अगुआ। २. चतुर आदमी। ३. पुरखा।

अगवाई-संज्ञा स्त्री० अगवानी। अग्र्यर्पण।

संज्ञा पुं० आगे चलनेवाला।

अगवाई-संज्ञा पुं० घर के आगे का भाग। "पिछवाई" का उलटा।

अगवान-संज्ञा पुं० [ सं० अग्र + वान ] विवाह में कन्या पक्ष के लोग जो बरात को आगे से जाकर लेते हैं। संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगवानी-संज्ञा स्त्री० १. यतिथि के निकट पहुँचने पर उससे सादर मिलना। अग्र्यर्पण। पेशवाई। २.

विवाह में बरात को आगे से लेने की रीति।

० संज्ञा पुं० अगुआ। नेता।

अगवाई-संज्ञा स्त्री० १. हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है।

२. पैदावार में हलवाहे का भाग।

अगसार-क्रि० वि० आगे।

अगरुत-संज्ञा पुं० दे० "अगरु"।

अग्रस्त्य-संज्ञा पुं० १. एक ऋषि जिन्होंने समुद्र सोखा था। २. एक तारा। ३. एक पेड़ जिसके फूल अर्धचंद्राकार लाल या सफेद होते हैं।

अग्रह-वि० १. हाथ में न आने लायक। चंचल। २. जो वर्णन और चिंतन के बाहर हो। ३. कठिन। मुश्किल।

अग्रहन-संज्ञा पुं० [ वि० अग्रहनिश, अग्रहनी ] हेमन्त ऋतु का पहला महीना। मार्गशीर्ष। अगसिर।

अग्रहनी-संज्ञा स्त्री० वह फसल जो अग्रहन में काटी जाती है।

अग्रहुँड़-क्रि० वि० आगे। आगे की ओर।

अगाऊ-क्रि० वि० अग्रिम। पेशगी।

० वि० अगला। आगे का।

० क्रि० वि० आगे। पहले। प्रथम।

अगाड़ी-संज्ञा पुं० १. कच्चा। तरी।

२. यात्री का वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।

अगाड़ी-क्रि० वि० १. आगे। २. पूर्व। पहले।

अगाध-वि० १. अघाह। २. बहुत। ३. समझ में न आने योग्य।

संज्ञा पुं० छेद। गड्ढा।

अगार-संज्ञा पुं० दे० "आगार"।



अतरदान-संज्ञा पुं० हव-रखने का  
चादी का घरतन ।

अतरसों-क्रि० वि० १. परसों के आगे  
का दिन । २. परसों से पहले का  
दिन ।

अतर्कित-वि० आकस्मिक । ये सोचा  
समझा, जो विचार में न आया हो ।

अतर्क्य-वि० जिस पर तर्क-वितर्क न  
हो सके ।

अतल-संज्ञा पुं० सात पातालों में  
दूसरा पाताल ।

अतलस-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
रेशमी कपड़ा ।

अतलस्पर्शी-वि० अथाह ।

अतसी-संज्ञा स्त्री० अलसी ।

अति-वि० बहुत । अधिक ।

संज्ञा स्त्री० अधिकता । ज्यादासी ।

अतिकाय-वि० स्थूल । मोटा ।

अतिकाल-संज्ञा पुं० विलंब ।

अतिक्रम-संज्ञा पुं० नियम या मर्यादा  
का उल्लंघन । विपरीत व्यवहार ।

अतिक्रमण-संज्ञा पुं० हट के बाहर  
जाना । बढ़ जाना ।

अतिक्रान्त-वि० [ सं० ] हट के बाहर  
गया हुआ । स्पृहीत ।

अतिथि-संज्ञा पुं० १. घर में आया  
हुआ अज्ञातपूर्व व्यक्ति । अग्न्यागत ।

मेहमान । पाहुन । २. अग्नि ।

अतिथियज्ञ-संज्ञा पुं० अतिथि का  
आदर-सत्कार । अतिथिपूजा ।

अतिपातक-संज्ञा पुं० पुरुष के लिये  
माता, बेटा और पत्नी के साथ और  
स्त्री के लिये पुत्र, पिता और दामाद  
के साथ गमन ।

अतियल-वि० प्रबल । प्रचंड ।

अतिमुक्त-वि० विषयवासना-रहित ।

अतिरंजन-संज्ञा पुं० बढ़ा चढ़ाकर  
कहने की रीति । अत्युक्ति ।

अतिरथी-संज्ञा पुं० वह जो अकेले  
बहुतों के साथ लड़ सके ।

अतिरिक्त-क्रि० वि० सियाय । अलावा ।  
छोड़कर ।

वि० १. शेषवचा हुआ । २. अलग ।  
जुदा । भिन्न ।

अतिरोग-संज्ञा पुं० यक्ष्मा । क्षयी ।

अतिवाद-संज्ञा पुं० १. सच्ची बात ।

२. कड़ई बात । ३. डींग । शोषी ।

अतिवृष्टि-संज्ञा स्त्री० छः ईदियों में से  
एक । अत्यंत वर्षा ।

अतिशय-वि० बहुत । ज्यादा ।

अतिशयोक्त-संज्ञा स्त्री० एक अलंकार  
जिसमें किसी वस्तु को बहुत बढ़ा-  
कर वर्णन करते हैं ।

अतिसंघ-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा या आज्ञा  
का भंग करना ।

अतिसंधान-संज्ञा पुं० विश्वासघात ।  
धोखा ।

अतिसार-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें  
खाया हुआ पदार्थ अंतर्द्वियों में  
से पतले दस्तों के रूप में निकल  
जाता है ।

अतीन्द्रिय-वि० जिसका अनुभव  
इंद्रियों द्वारा न हो । अगोचर ।  
अव्यक्त ।

अतीत-वि० १. गत । बीता हुआ ।  
२. जुदा । अलग । ३. मृत । मरा  
हुआ ।

क्रि० वि० परे । बाहर ।

संज्ञा पुं० सेन्यासी । यति । साधु ।

अतीघ-वि० बहुत । आरंभ ।

अतीस-संज्ञा पुं० [ सं० ] एक पहाड़ी

क्रि० वि० आगे । पहले ।

अगास-संज्ञा पुं० द्वार के आगे का चवूतरा ।

अगाह-वि० अथाह । बहुत गहरा ।

क्रि० वि० आगे से । पहले से ।

वि० विदित । प्रकट ।

अगाही-संज्ञा स्त्री० किसी बात के होने का पहले से संकेत या सूचना ।

अगिन-संज्ञा स्त्री० [ क्रि० अगियाना ]  
१. आग । २. गौरैया या बया के आकार की एक छोटी चिड़िया । ३. अगिया घास ।

अगिनघोट-संज्ञा पुं० वह बड़ी नाव जो भाप के इंजन के जोर से चलती है । स्टीमर । धूर्वाकश ।

अगिनित-वि० दे० "अगणित" ।

अगियाना-क्रि० अ० अंग का तप घटाना । जलन या दाहयुक्त होना ।

अगिया बैताल-संज्ञा पुं० १. चिकित्सादिक के दो बैतालों में से एक ।

२. मुँह से लुक या लपट निकालने-वाला भूत । ३. बहुतक्रोधी आदमी ।

अगियार, अगियारी-संज्ञा स्त्री० आग में सुगंध-द्रव्य डालने की पूजनविधि ।

धूप देने की क्रिया ।

अगिया सन-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की घास । २. एक कीड़ा । ३. एक चर्मरोग जिसमें झलकते हुए फोले निकलते हैं ।

अगिला-वि० दे० "अगला" ।

अगुआ-संज्ञा पुं० १. आगे चलने-वाला । नेता । २. मुखिया । ३. मार्ग बतानेवाला । ४. विवाह की बातचीत ठीक करनेवाला ।

अगुआई-संज्ञा स्त्री० सरदारी ।

अगुआना-क्रि० स० अगुआ धनाना ।

क्रि० अ० आगे होना । बढ़ना ।

अगुण-वि० १. रज, तम आदि गुण से रहित । निर्गुण । २. निर्गुणी । मूर्ख ।

संज्ञा पुं० अवगुण । दोष ।

अगुह-वि० १. हलका । २. जिसने गुरु से उपदेश न पाया हो ।

संज्ञा पुं० १. अगर वृक्ष । ऊद । २. शीशम ।

अगुवा-संज्ञा पुं० दे० "अगुआ" ।

अगूठना-क्रि० स० १. ढाकना । २. घेरना ।

अगूठा-घेरा ।

अगूढ़-वि० १. जो छिपा न हो । २. स्पष्ट । प्रकट । ३. सहज । आसान ।

अगूठा-क्रि० वि० आगे । सामने ।

अगोचर-वि० जिसका अनुभव इंद्रियों को न हो ।

अगोट-संज्ञा पुं० [सं० अग्र + हि० ओट]  
१. ओट । आवरण । २. आश्रय । आधार ।

अगोटना-क्रि० स० १. रोकना । २. पहरें में रखना । कैद करना । ३. छिपाना ।

क्रि० स० १. अंगीकार करना । २. चुनना ।

क्रि० अ० १. रकना । ठहरना । २. फैसना ।

अगोरना-क्रि० स० १. राह देखना । २. रखवाली या चौकसी करना । ३. रोकना ।

अगोरिया-संज्ञा पुं० रखवाली करने-वाला । रखवाला ।

अगौढ़ा-संज्ञा पुं० पेशगी । अगाऊ ।

अगौनी-क्रि० वि० आगे ।

संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी" ।

पैधा जिसकी जड़ दवाओं में काम आती है। विपा। अतिविपा।  
 अतीसार-संज्ञा पुं० दे० "अतिसार"।  
 अतुराई-संज्ञा स्त्री० १. आतुरता। जल्दी। २. चंचलता।  
 अतुल-वि० [सं०] १. जिसकी तौल या अंदाज न हो सके। बहुत अधिक। २. अनुपम। बेजोड़।  
 संज्ञा पुं० तिल का पेड़।  
 अतुलनीय-वि० अपरिमित। अपार। अनुपम।  
 अतुलित-वि० १. बिना तौला हुआ। २. बहुत अधिक।  
 अतुल्य-वि० १. असमान। २. अनुपम। बेजोड़।  
 अतुल-वि० दे० "अतुल"।  
 अतुल-वि० [मज्ञा अतुल] १. जो तृप्त या संतुष्ट न हो। २. भूखा।  
 अतुल-संज्ञा स्त्री० मन न भरने की दशा।  
 अच-संज्ञा स्त्री० अति। अधिकता। ज्यादाती।  
 अचार-संज्ञा पुं० १. इत्र या तेल बेचनेवाला। गंधी। २. यूनानी दवा बनाने और बेचनेवाला।  
 अच-संज्ञा पुं० दे० "अच"।  
 अत्यंत-वि० बहुत अधिक। इतने से ज्यादा।  
 अत्यंतिक-वि० १. समीपी। नजदीकी। २. बहुत घूमनेवाला।  
 अत्यमल-संज्ञा पुं० इमली।  
 वि० बहुत खटा।  
 अत्याचार-संज्ञा पुं० १. अन्याय। ज्यादाती। २. दुराचार। पाप।  
 अत्याचारी-वि० अन्यायी। निडुर। जालिम।

अत्याज्य-वि० १. न छोड़ने योग्य। २. जो छोड़ा न जा सके।  
 अत्युक्ति-संज्ञा स्त्री० घड़ा चढ़ाकर वर्णन करने की शैली।  
 अत्र-कि० वि० यहाँ। इस जगह।  
 संज्ञा पुं० "अत्र" का अपभ्रंश।  
 अत्रक-वि० १. यहाँ का। २. इस लोक का। ऐहिक।  
 अत्रि-संज्ञा पुं० १. सप्तर्षियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। २. एक तारा जो सप्तर्षि-मंडल में है।  
 अथर्क-संज्ञा पुं० वह भोजन जो जैन लोग सूर्यास्त के पहले करते हैं।  
 अथक-वि० जो न थके। अर्थात्।  
 अथच-अव्य० और। और भी।  
 अथना-कि० अ० अस्त होना। डूबना।  
 अथरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अथरी] मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बरतन। नाँद।  
 अथर्व-संज्ञा पुं० चौपा घेद।  
 अथर्वन्-संज्ञा पुं० दे० "अथर्व"।  
 अथर्वनी-संज्ञा पुं० कर्मकांडी। यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।  
 अथर्वना-कि० अ० १. अस्त होना। डूबना। २. लुप्त होना। गायब होना।  
 अथवा-अव्य० एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा। किंवा।  
 अथाई-संज्ञा स्त्री० १. बैठने की जगह बैठक। चौधारा। २. मंडली। समा। जमावड़ा।  
 अथाह-वि० १. जिसकी याह न

हो। बहुत गहरा। २. बहुत अधिक। ३. गंभीर। गूढ़।  
 संज्ञा पुं० १. गहराई। २. जलाशय।  
 ३. समुद्र।  
 अघोर-वि० अधिक। ज्यादा।  
 बहुत।  
 अदंड-वि० १. सजा से घरी। २. जिस पर कर या महसूल न लगे।  
 ३. स्वेच्छाचारी। ४. बर्हड।  
 संज्ञा पुं० वह भूमि जिसकी माल-  
 गुजारी न लगे। मुआफ़ी।  
 अदंड्य-वि० जिसे दंड न दिया  
 जा सके। सजा से घरी।  
 अदंत-वि० १. जिसे दांत न हो।  
 २. बहुत थोड़ी अवस्था का। दुष-  
 मुर्ता।  
 अदग-वि० १. वेदाग। शुद्ध। २.  
 निःपराध। निर्दोष। ३. अदृता।  
 अलुप्त। साफ़।  
 अदत्ता-संज्ञा स्त्री० शविवाहिता कन्या।  
 अद्व-संज्ञा स्त्री० सेव्या। गिनती।  
 अदन-संज्ञा पुं० १. पैगंघरी मंती के  
 अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ  
 ईश्वर ने आदम को बनाकर रक्खा  
 था। २. एक पंदराह।  
 अदना-वि० १. तुच्छ। २. मामूली।  
 अदव-संज्ञा पुं० शिष्टाचार। क़ायदा।  
 अदवदाफर-क्रि० वि० देक बांध-  
 कर। अवश्य। जरूर।  
 अदम-वि० बहुत। अधिक।  
 अदम पैरवी-संज्ञा स्त्री० किसी मुक-  
 द्दमे में जरूरी कारवाई न करना।  
 अदम्य-वि० जिसका दमन न हो  
 सके। प्रचंड।  
 अदय-वि० दया-रहित।  
 अदरफ-संज्ञा पुं० एक बीधा जिसकी

तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गटि  
 औषध और मसाले के काम में  
 आती है।  
 अदर्शन-संज्ञा पुं० लोप। विनाश।  
 अदर्शनीय-वि० १. जो देखने लायक  
 न हो। २. कुरूप।  
 अदल-संज्ञा पुं० न्याय। इत्ताफ़।  
 अदल बदल-संज्ञा पुं० उलट पुलट।  
 अद्यान-संज्ञा स्त्री० चारपाई के पीताने  
 विनायक को खोंचकर कढ़ी रखने के  
 लिये उसके छेड़ों में पड़ी हुई रस्ती।  
 ओनचन।  
 अदहन-संज्ञा पुं० आग पर चढ़ा  
 हुआ वह गरम पानी जिसमें दाक,  
 चावल आदि पकाते हैं।  
 अदात-वि० जिसे दांत न आए हों।  
 अदांत-वि० १. जो इंद्रियों का दमन  
 न कर सके। २. बर्हड।  
 अदा-वि० चुकता। बेदाक।  
 संज्ञा स्त्री० हाव भाव।  
 अदान-वि० अनजान। नादान।  
 नासमझ।  
 अदालत-संज्ञा स्त्री० [ वि० बदालती ]  
 न्यायालय। कचदरी।  
 अदालत दीवानी-संज्ञा स्त्री० वह  
 अदालत जिसमें संपत्ति या स्वा-  
 संघी बातों का निर्णय होता है।  
 अदालत माल-संज्ञा स्त्री० वह अदा-  
 लत जिसमें जमान और मालगुजारी  
 संबंधी मुकद्दमे दायर किए जाते हैं।  
 अदालती-वि० १. अदालत का। २.  
 जो अदालत करे। मुकद्दमा लड़ने-  
 वाला।  
 अदावत-संज्ञा स्त्री० शत्रुता। दुरमनी।  
 घैर। विरोध।  
 अदावती-वि० जो अदावत रखे।

अनोखापन-संज्ञा पुं० [ प्रत्य० ] १. अनूठापन । विलक्षणता । २. सुंदरता ।

अनौचित्य-संज्ञा पुं० उचित बात का अभाव ।

अन्न-संज्ञा पुं० १. अनाज । धान्य । दाना । गन्ना । २. पकाया हुआ अन्न । भोजन ।

वि० दूसरा । विरुद्ध ।

अन्नकूट-संज्ञा पुं० एक उत्सव जो कालिक शृङ्खल प्रतिपदा से पूर्वैमा पर्वत किसी दिन होता है ।

अन्नक्षेत्र-संज्ञा पुं० दे० "अन्नक्षेत्र" ।

अन्नजल-संज्ञा पुं० १. दाना-पानी । खाना-पानी । खान-पान । २. आव-दाना । जीविका ।

अन्नपूर्णा-संज्ञा स्त्री० अन्न की अधिष्ठात्री देवी । दुर्गा का एक रूप ।

अन्नप्राशन-संज्ञा पुं० बच्चों को पहले पहल अन्न चटाने का संस्कार ।

अन्नमय कौश-संज्ञा पुं० पंचकोशों में से प्रथम । स्थूल शरीर । (वेदांत)

अन्नसत्र-संज्ञा पुं० वह स्नान जहाँ भूखों को मुफ्त भोजन दिया जाता है ।

अन्ना-संज्ञा स्त्री० दाई । घाय ।

अन्य-वि० दूसरा । भिन्न । गैर ।

अन्यत्र-वि० और जगह । दूसरी जगह ।

अन्यथा-वि० १. विपरीत । उलटा । २. असत्य ।

अन्य० नहीं तो ।

अन्यपुरुष-संज्ञा पुं० व्याकरण में यह पुरुष जिसके संबंध में कुछ कहा जाय । जैसे—'यह', 'वह' ।

अन्यमनस्क-वि० जिसका जीन लगता हो । उदास ।

अन्याय-संज्ञा पुं० [वि० अन्यायी] न्याय-विरुद्ध आचरण । अनीति ।

अन्यायी-वि० अन्याय करनेवाला । जालिम ।

अन्योक्ति-संज्ञा स्त्री [ सं० ] वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय ।

अन्योन्य-सर्व० परस्पर । आपस में ।

अन्योन्याश्रय-संज्ञा पुं० [ वि० अन्योन्याश्रित ] परस्पर का सहारा । एक दूसरे की अपेक्षा ।

अन्वय-संज्ञा पुं० [ वि० अन्वयी ] १. परस्पर संबंध । २. संयोग । मेल । ३. पदों के शब्दों को वाक्य-रचना के नियमानुसार यथास्थान रखने का कार्य । ४. वंश । खानदान ।

अन्वित-वि० युक्त । शामिल ।

अन्वीक्षण-संज्ञा पुं० १. विचार । २. खोज ।

अन्वीक्षा-संज्ञा स्त्री० ध्यानपूर्वक देखना ।

अन्वेपक-वि० [ स्त्री० अन्वेपिका ] खोजने-वाला ।

अन्वेपण-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अन्वेपणा ] अनुसंधान । खोज । ढूँढ़ । तलाश ।

अन्वेपी-वि० [ स्त्री० अन्वेपिणी ] खोजने-वाला ।

अन्हवाना-क्रि० सं० स्नान कराना ।

अप-संज्ञा पुं० जल । पानी ।

अपर्ण-वि० [ सं० अपर्ण ] १. अंगहीन । २. लंगड़ा । लूना ।

अप-उप० [ सं० ] उलटा । विरुद्ध । घुरा । अधिक ।

सर्व० 'आप' का संबंध रूप । (पौनिक में) जैसे—अपस्वार्थ । अपकाजी ।

अधि-एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है।

अधिक-वि० १. बहुत। ज्यादा।

२. घचा हुआ। फालतू।

अधिकता-संज्ञा स्त्री० बहुतायत। विशेषता।

अधिक मास-संज्ञा पुं० मलमास। लौंड का महीना।

अधिकरण-संज्ञा पुं० १. आधार। आसरा। सहारा। २. व्याकरण में सातवाँ कारक।

अधिकांग-वि० जिसे कोई अवयव अधिक हो। जैसे—घाँघुर।

अधिकांश-संज्ञा पुं० अधिक भाग। ज्यादा हिस्सा।

वि० बहुत।

क्रि० वि० १. ज्यादातर २. प्रायः।

अधिकाई-संज्ञा स्त्री० १. ज्यादाती। बहुतायत। २. बढ़ाई। महिमा।

अधिकार-संज्ञा पुं० १. कार्यभार। प्रभुत्व। २. स्वत्व। हक। ३. कटुता। ४. शक्ति। ५. योग्यता।

वि० पुं० अधिक।

अधिकारी-संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिकारिणी]

१. स्वामी। मालिक। २. हकदार।

३. योग्यता या समता रखनेवाला।

अधिकृत-वि० अधिकार में आया हुआ।

संज्ञा पुं० अधिकारी। अध्यक्ष।

अधिगत-वि० १. पाया हुआ। २. जाना हुआ।

अधित्यका-संज्ञा स्त्री० पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ऊँचा पहाड़ी मैदान।

अधिदेव-संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिदेवी]  
इष्टदेव। कुलदेव।

अधिदैव-वि० [सं०] दैविक। आकस्मिक।

अधिनायक-संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिनायिका] सरदार। मुखिया।

अधिप-संज्ञा पुं० स्वामी। मालिक।

अधिपति-संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिपती] नायक। अफसर। मुखिया।

अधिमास-संज्ञा पुं० दे० “अधिक मास”।

अधिया-संज्ञा स्त्री० आधा हिस्सा।

संज्ञा पुं० गाँव में आधी पट्टी का मालिक।

अधियाना-क्रि० सं० आधा करना।

अधियार-संज्ञा पुं० [स्त्री० अधियारिणी]

१. किसी जायदाद में आधा हिस्सा। २. आधे का मालिक।

अधियारी-संज्ञा स्त्री० किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी।

अधिरथ-संज्ञा पुं० [सं०] रथ हाँकनेवाला। गाड़ीवान।

अधिराज-संज्ञा पुं० राजा। याद-शाह।

अधिरोहण-संज्ञा पुं० चढ़ना। सवार होना।

अधिवास-संज्ञा पुं० [वि० अधिवासित] रहने की जगह।

अधिवासी-संज्ञा पुं० निवासी। रहनेवाला।

अधिवेशन-संज्ञा पुं० बैठक। सम्मेलन।

अधिष्ठाता-संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिष्ठात्री]

१. अध्यक्ष। मुखिया। प्रधान। २. ईश्वर।

अधिष्ठान-संज्ञा पुं० [वि० अधिष्ठित]  
१. वासस्थान। रहने का स्थान। २.

अपकर्त्ता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अपकर्त्री ] १. हानि पहुँचानेवाला । २. पापी ।

अपकर्म-संज्ञा पुं० बुरा काम ।

अपकर्ष-संज्ञा पुं० १. नीचे को खींचना । गिराना । २. अपमान ।

अपकाजी-वि० स्वार्थी । मतलबी ।

अपकार-संज्ञा पुं० बुराई । नुकसान । अहित ।

अपकारक-वि० [ सं० ] अपकार करनेवाला ।

अपकारी-वि० [ सं० अपकारि ] [ स्त्री० अपकारिणी ] हानिकारक ।

अपकीरति-संज्ञा स्त्री० दे० "अपकीर्ति" ।

अपकीर्ति-संज्ञा स्त्री० अपयश । अयश । बदनामी । निंदा ।

अपकृत-वि० [ सं० ] जिसका अपकार किया गया हो ।

अपकृष्ट-वि० [ संज्ञा अपकृष्टा ] १. गिरा हुआ । पतित । २. बुरा । खराब ।

अपक्रम-संज्ञा पुं० क्रमभंग । गड़बड़ । उलट-पलट ।

अपकथ-वि० [ सं० ] [ संज्ञा अपकथा ] १. बिना पका हुआ । २. अनम्यस्त ।

अपघात-संज्ञा पुं० [ वि० अपघातक, अपघाती ] १. हत्या । हिंसा । २. विश्वासघात ।

संज्ञा पुं० आत्महत्या ।

अपक्ष-संज्ञा पुं० [ सं० ] अजीर्ण ।

अपचार-संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अपचारी ] १. अनुचित धर्त्ताव । २. बुराई । ३. निंदा । अपयश । ४. कुपथ्य ।

अपचाल-संज्ञा पुं० कुचाल ।

अपहर-संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा" ।

अपजस-संज्ञा पुं० दे० "अपयश" ।

अपटनी-संज्ञा पुं० दे० "अपटन" ।

अपठ-वि० १. अपढ़ा जो पढ़ा न हो । २. मूर्ख ।

अपठर-संज्ञा पुं० भय । शंका ।

अपढ़-वि० बिना पढ़ा । मूर्ख ।

अपत-वि० १. पत्रहीन । बिना पत्तों का । २. नग्न ।

वि० अधम । नीच ।

वि० निर्लज्ज ।

अपति-वि० स्त्री० बिना पति की । विधवा ।

वि० [ सं० अ + पति = गति ] पापी । दुष्ट ।

संज्ञा स्त्री० १. दुर्गति । २. अनादर ।

अपत्य-संज्ञा पुं० संतान । औलाद ।

अपथ-संज्ञा पुं० धीहड़ राह ।

अपथ्य-वि० जो पथ्य न हो । स्वास्थ्य-नाशक ।

संज्ञा पुं० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार ।

अपद-संज्ञा पुं० बिना पैर के रेंगनेवाले जंतु । जैसे—साँप, केलुआ आदि ।

अपद्रव्य-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. निरुद्ध वस्तु । २. बुरा धन ।

अपन-सर्व० दे० "अपना" । "हम" ।

अपनपी-संज्ञा पुं० अपनायत । आत्मीयता ।

अपनयन-संज्ञा पुं० [ वि० अपनीत ] दूर करना । हटाना ।

अपना-सर्व० [ क्रि० अपनाना ] निजका । ( तीनों पुरुषों में )

संज्ञा पुं० आत्मीय । स्वजन ।

अपनाना-क्रि० सं० १. अपने अनुकूल करना । २. अपना बनाना । ३. अपने अधिकार में करना ।

वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। जैसे रज्जु में सर्प और शुक्ति में रजत का। ३. अधिकार। शासन। राजसत्ता।

अधिष्ठित-वि० १. ठहरा हुआ। स्थापित। २. निर्वाचित। नियुक्त। अधीन-वि० १. आश्रित। मातहत। २. अवलंबित। सुनहसर।

संज्ञा पुं० दास। सेवक। अधीनता-संज्ञा स्त्री० १. परवशता। २. बेवसी।

अधीर-वि० पुं० [संज्ञा अधीरता] १. धैर्यरहित। घबराया हुआ। २. प्रेचैन। ३. उतावला। ४. असंतोषी।

अधीश, अधीश्वर-संज्ञा पुं० [स्त्री० अधीश्वरी] मालिक। स्वामी।

अधूत-संज्ञा पुं० १. निर्भय। निडर। २. बोट। ३. वचका।

अधूरा-वि० [स्त्री० अधूरी] अपूर्ण। जो पूरा न हो।

अधेड़-वि० ठरती जवानी का।

अधेला-संज्ञा पुं० आधा पैसा।

अधेली-संज्ञा स्त्री० रुपए का आधा सिक्का। अडशी।

अधे-अन्व० दे० "अधः"।

अधोगति-संज्ञा स्त्री० पतन। अवनति।

अधोगामी-वि० [स्त्री० अधोगामिनी] नीचे जानेवाला।

अधोमुख-वि० १. नीचे मुँह किए हुए। २. औंधा। उल्टा।

क्रि० वि० औंधा। मुँह के पक्ष।

अधोवायु-संज्ञा पुं० अधोवायु। गुदा की वायु। पाद। गोत्र।

अध्यक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वामी। मालिक। २. सरदार। मुखिया।

अध्ययन-संज्ञा पुं० पठन-पाठन।

अध्यवसाय-संज्ञा पुं० लगातार उद्योग।

अध्यवसायी-वि० [स्त्री० अध्यवसायिनी] लगातार उद्योग करनेवाला। उद्योगी।

अध्यात्म-संज्ञा पुं० ब्रह्मविचार। ज्ञानतरंग।

अध्यापक-संज्ञा पुं० [स्त्री० अध्यापिका] शिक्षक। गुरु।

अध्यापकी-संज्ञा स्त्री० पढ़ाने का काम। मुदरिंसी।

अध्यापन-संज्ञा पुं० पढ़ाने का कार्य।

अध्याय-संज्ञा पुं० १. ग्रंथ-विभाग। २. पाठ। सर्ग। परिच्छेद।

अध्यारोप-संज्ञा पुं० [सं०] झूठी कल्पना। अन्य में अन्य वस्तु का भ्रम।

अध्यास-संज्ञा पुं० अध्यारोप। मिथ्या-ज्ञान।

अध्याहार-संज्ञा पुं० १. तर्क-वितर्क। २. अस्पष्ट वाक्य को स्पष्ट करने की क्रिया।

अध्यूढा-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले।

अध्वर-संज्ञा पुं० यज्ञ।

अध्वर्यु-संज्ञा पुं० यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़नेवाला ब्राह्मण।

अन्-अन्व० अभाव या निषेधसूचक अव्यय। जैसे—अनंत, अनधिकार।

अनंग-वि० [क्रि० अनंगना] बिना शरीर का।

संज्ञा पुं० कामदेव।

अनंगकीड़ा-संज्ञा स्त्री० [सं०] रति। संभोग।

अनंगना-क्रि० अ० [सं०] शरीर की सुघ्र छोड़ना। सुघ्रदुघ्र भुलाना।

अनंगारि-संज्ञा पुं० शिव।

अनंगी-वि० [स्त्री० अनंगिनी] अंग-



अपनापन-संज्ञा पुं० १. अपनायत ।  
 २. आत्माभिमान ।  
 अपनायत-संज्ञा स्त्री० आत्मीयता ।  
 अपनापन ।  
 अपमंश-संज्ञा पुं० [वि० अपमंशित] १.  
 पतन । २. विकृति । ३. विगढ़ा हुआ  
 शब्द ।  
 वि० विकृत । विगढ़ा हुआ ।  
 अपमान-संज्ञा पुं० अनादर । बेइज्जती ।  
 अपमानित-वि० निन्दित ।  
 अपमानिनी-वि० [स्त्री० अपमानिनी] निरा-  
 दर करनेवाला ।  
 अपमृत्यु-संज्ञा स्त्री० कुमृत्यु । अकाल-  
 मृत्यु ।  
 अपयश-संज्ञा पुं० १. अपकीर्ति । २.  
 कलंक ।  
 अपरंच-अन्य० १. और भी । २.  
 फिर भी ।  
 अपरंपार-वि० जिसका पारावार न  
 हो । असीम । बेहद ।  
 अपर-वि० [स्त्री० अपरा] १. पहला ।  
 पूर्व का । २. पिछला । ३. अन्य ।  
 दूसरा ।  
 अपरता-संज्ञा स्त्री० परायापन ।  
 संज्ञा स्त्री० भेद-भाव-शून्यता । अपना-  
 पन ।  
 ० † वि० स्वार्थी ।  
 अपरती-संज्ञा स्त्री० १. स्वार्थी । २.  
 बेईमानी ।  
 अपरना-संज्ञा स्त्री० दे० "अपणा" ।  
 कि० सं० परीक्षा लेना । टोह लेना ।  
 अपरलोक-संज्ञा पुं० परलोक । स्वर्ग ।  
 अपरांत-संज्ञा पुं० पश्चिम का देश ।  
 अपरा-संज्ञा स्त्री० १. लौकिक विद्या ।  
 पदार्थविद्या । २. पश्चिम दिशा ।

अपराजिता-संज्ञा स्त्री० १. विष्णुकांता  
 लता । कोयल । २. दुर्गा ।  
 अपराध-संज्ञा पुं० [वि० अपराधी] १.  
 दोष । कसूर । २. भूल । चूक ।  
 अपराधी-वि० पुं० [सं० अपराधिन्]  
 [स्त्री० अपराधिनी] दोषी ।  
 अपराह-संज्ञा पुं० [सं०] दोषहर के  
 पीछे का काल ।  
 अपरिग्रह-संज्ञा पुं० [सं०] १. दान  
 का न लेना । दान-त्याग । २. विराग ।  
 अपरिचित-वि० [सं०] जिससे  
 परिचय न हो । अनजान ।  
 अपरिच्छिन्न-वि० जिसका विभाग न  
 हो सके ।  
 अपरिपक्व-वि० जो पका न हो । कच्चा ।  
 अपरिमित-वि० असीम । बेहद ।  
 अपरिमेय-वि० येअंदाज । अकृत ।  
 अपरिहार्य-वि० १. जो किसी उपाय  
 से दूर न किया जा सके । २. जिसके  
 बिना काम न चले ।  
 अपरूप-वि० [सं०] अदृशकल । भद्दा ।  
 अपर्णा-संज्ञा स्त्री० पार्यंती ।  
 अपलक्षण-संज्ञा पुं० कुलक्षण ।  
 अपवर्ग-संज्ञा पुं० मोक्ष । निर्वाण ।  
 अपघश-वि० अपने अधीन । अपने  
 वश का ।  
 अपवाद-संज्ञा पुं० वह नियम जो  
 व्यापक नियम से विरुद्ध हो ।  
 अपवादक, अपवादी-वि० [सं०] १.  
 निन्दक । २. विरोधी । बाधक ।  
 अपवारण-संज्ञा पुं० [वि० अपवास्ति]  
 १. रोक । आड़ । २. हटाने या दूर  
 करने का कार्य ।  
 अपविद्ध-वि० त्यागा हुआ ।  
 संज्ञा पुं० वह पुत्र जिसकी उसके माता-

रहित । बिना देह का ।  
 संश पुं० १. ईश्वर । २. कामदेव ।  
 अनंत-वि० जिसका अंत या पार न हो । असीम ।  
 संश पुं० १. विष्णु । २. शेषनाग ।  
 ३. लक्ष्मण । ४. घलराम । ५. आकाश । ६. बाहु का एक गहना ।  
 ७. सूत का गंडा जिसे भादों सुदी चतुर्दशी या अनंत-व्रत के दिन बाहु में पहनते हैं ।  
 अनंतचतुर्दशी-संश स्त्री० साद्र शुक्ल चतुर्दशी ।  
 अनंतर-क्रि० वि० १. पीछे । उपरांत ।  
 २. लगातार ।  
 अनन्ता-वि० स्त्री० जिसका अंत या पारावार न हो ।  
 संश स्त्री० १. पृथ्वी । २. पार्वती ।  
 ३. कलियारी । ४. अनंतमूल । ५. दूध । ६. पीपर । ७. अनंतसूत्र ।  
 अनन्म-वि० बिना पानी का ।  
 ० वि० निर्विघ्न । बाधा रहित ।  
 अन०-क्रि० वि० बिना । धरैर ।  
 वि० अभ्य । दूसरा ।  
 अनअहिवात-संश पुं० वैधव्य ।  
 अनश्रुतु-संश स्त्री० १. विरुद्ध अश्रु ।  
 येमौसिम । २. अश्रु के विरुद्ध कार्य ।  
 अनक-संश पुं० दे० "आनक" ।  
 अनकना-क्रि० सं० सुनना ।  
 अनकहा-वि० [ स्त्री० अनकही ] बिना कहा हुआ ।  
 अनख-संश पुं० १. क्रोध । २. दुःख ।  
 ३. ईर्ष्या । ४. मूकट । ५. छिटीना ।  
 वि० बिना नख का ।  
 अनखना-क्रि० अ० क्रोध करना ।  
 रुष्ट होना । रिसाना ।  
 अनखाना-क्रि० अ० क्रोध करना ।

रिसाना । रुष्ट होना ।  
 क्रि० सं० अप्रसन्न करना । नाराज़ करना ।  
 अनखी-वि० क्रोधी । जो जल्दी नाराज़ हो ।  
 अनगढ़-वि० १. बिना गढ़ा हुआ ।  
 २. स्वयंभू । ३. बेढाल ।  
 अनगन-वि० [ स्त्री० अनगनी ] अगणित । बहुत ।  
 अनगवना-क्रि० अ० रुककर देर करना । जान बूझकर विलंब करना ।  
 अनगाना-क्रि० अ० दे० "अनगवना" ।  
 अनगिन-वि० दे० "अनगिनत" ।  
 अनगिनत-वि० जिसकी गिनती न हो । असंख्य ।  
 अनगैरी-वि० गैर । पराया ।  
 अनधैरी-वि० बिना झुलाया हुआ ।  
 अनिमंत्रित ।  
 अनघोर-संश पुं० अंधेर । अत्याचार । ज्यादाती ।  
 अनजान-वि० १. अज्ञानी । नादान ।  
 २. अपरिचित ।  
 अनट-संश पुं० उपद्रव । अनीति ।  
 अन्याय ।  
 अनत-क्रि० वि० और कहीं । दूसरी जगह में ।  
 अनति [सं०] कम । थोड़ा ।  
 अनदेखा-वि० पुं० [ स्त्री० अनदेखी ] बिना देखा हुआ ।  
 अनधिकार-संश पुं० [सं०] १. अधिकार का अभाव । २. बेवसी । लाचारी । ३. अयोग्यता ।  
 वि० १. अधिकाररहित । २. अयोग्य ।  
 अनधिकारी-वि० १. जिसे अधिकार न हो । २. अयोग्य ।

पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्रवत् पाला हो। (स्मृति)  
 अपव्यय-संज्ञा पुं० निरर्थक, व्यय।  
 फजूलखर्ची।  
 अपव्ययी-वि० अधिक खर्च करने-वाला। फजूलखर्च।  
 अपशकुन-संज्ञा पुं० कुसगुन। असगुन।  
 अपशब्द-संज्ञा पुं० १. अशुद्ध शब्द।  
 २. गाली।  
 अपसर्जन-संज्ञा पुं० विसर्जन। त्याग।  
 अपसोस-संज्ञा पुं० दे० "अफ-सोस"।  
 अपस्नान-संज्ञा पुं० [ वि० अपस्नात ]  
 वह स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं। मृतक-स्नान।  
 अपस्मार-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें रोगी कांपकर पृथ्वी पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है। मिरगी।  
 अपस्वार्थी-वि० मतलबी। खुद्गरज।  
 अपहत-वि० १. नष्ट किया हुआ।  
 मारा हुआ। २. दूर किया हुआ।  
 अपहरण-संज्ञा पुं० [ वि० अपहरणीय,  
 अपहत, अपहर्ता ] १. छीनना। हर लेना।  
 २. चोरी। ३. छिपाव। संगोपन।  
 अपहर्ता-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छीनने-वाला। हर लेनेवाला। २. चोर।  
 अपहास-संज्ञा पुं० [ सं० ] उपहास।  
 अपह्व-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. छिपाव।  
 दुराव। २. मिस। बहाना। टाल-मटोल।  
 अपहृति-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दुराव।  
 छिपाव। २. बहाना। टाल-मटोल।  
 अपांग-संज्ञा पुं० [ सं० ] आँख का कोना। आँख की कोर। कटाच।  
 वि० अंगहीन। अंगभंग।

अपात्र-वि० [ सं० ] १. अयोग्य।  
 २. कुपात्र।  
 अपादान-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. ध्या-  
 करण में पश्चिर्वा कारक जिससे एक  
 वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का  
 प्रारंभ सूचित होता है। इसका चिह्न  
 'से' है। जैसे—"घर से"। २.  
 अलगाव।  
 अपान-संज्ञा पुं० १. आरमभाव। २.  
 आपा। ३. सुध। होश।  
 ४. सर्व० दे० "अपना"।  
 अपार-वि० सीमारहित। अनेक।  
 अपाव-संज्ञा पुं० अन्याय। उपद्रव।  
 अपावन-वि० पुं० [ स्त्री० अपावनी ]  
 अपवित्र। अशुद्ध।  
 अपाहिज-वि० १. अंगभंग। २. काम  
 करने के अयोग्य। ३. आलसी।  
 अपि-अव्य० १. भी। ही। २. निश्चय।  
 ठीक।  
 अपितु-अव्य० १. किंतु। २. बल्कि।  
 अपील-संज्ञा स्त्री० निवेदन।  
 अपुत्र-वि० निःसंतान। पुत्रहीन।  
 अपूत-वि० अपवित्र। अशुद्ध।  
 ३. पुत्रहीन। निपूता।  
 ४. संज्ञा पुं० कुपूत। घुरा लड़का।  
 अपूर-वि० पूरा। भरपूर।  
 अपूरना-कि० सं० १. भरना। २.  
 फूँकना। बजाना। (शंख)  
 अपूरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अपूरी ] भरा  
 हुआ। फैला हुआ। व्याप्त।  
 अपूर्ण-वि० १. जो पूर्ण या भरा न  
 हो। २. अपूरा।  
 अपूर्णभूत-संज्ञा पुं० व्याकरण में क्रिया  
 का वह भूत काल जिसमें क्रिया की  
 समाप्ति न पाई जाय। जैसे—वह खाता  
 था।

अनध्याय-संज्ञा पुं० १. वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने का निषेध हो। (अमावस्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा।)  
२. छुट्टी का दिन।

अनआस-संज्ञा पुं० रामबाँस की तरह का एक छोटा पैधा जिसके डंठल के अंकुरों की गाँठ खटमीठी और खाने योग्य होती है।

अनन्य-वि० [ स्त्री० अनन्या ] अन्य से संबंध न रखनेवाला। एकनिष्ठ। एक ही में लीन। जैसे, अनन्य भक्त। संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम।

अनन्यित-वि० १. असंबद्ध। पृथक्।  
२. अंबयंड।

अनपच-संज्ञा पुं० अजीर्ण। बद्धज्वरी।  
अनपढ़-वि० बेपढ़ा। मूर्ख। निराचर।

अनपेक्ष-वि० बेपरवा।

अनपेक्षित-वि० जिसकी परवा न हो। जिसकी चाह न हो।

अनयन-संज्ञा पुं० बिगाड़। विरोध। खटपट।

० वि० भिन्न भिन्न। नाना। विविध।

अनविधा-वि० बिना बेधा या छेद किया हुआ। जैसे, अनविधा मोती।

अनवील-वि० १. न थोड़नेवाला।  
२. चुप्पा। ३. गूँगा।

अनवीलता-वि० गूँगा। बेजुबान। (पशु)

अनव्याहा-वि० [ स्त्री० अनव्याही ] अविवाहित। कर्षा।

अनमल-संज्ञा पुं० सुराई। हानि। अहित।

अनमिष्ट-वि० [ स्त्री० अनमिष्टा, संज्ञा अनमिष्टता ] १. अज्ञ। मूर्ख। २. अपरिचित।

अनभिज्ञता-संज्ञा स्त्री० अज्ञता। अनादीपन।

अनभ्यस्त-वि० १. जिसका अभ्यास न किया गया हो। २. जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व।

अनभ्यास-संज्ञा पुं० अभ्यास का अभाव। मश्क न होना।

अनमन, अनमना-वि० उदास। अस्वस्थ।

अनमिख-वि०, संज्ञा पुं० दे० "अनिमिष"।

अनमिल-वि० बेमेल। बेजोड़। असंबद्ध।

अनमीलना-कि० स० अखिल होना।

अनमेल-वि० १. बेजोड़। असंबद्ध।  
२. बिना मिठावट का। विशुद्ध।

अनमोल-वि० १. अमूल्य। २. मूल्यवान्। ३. सुंदर। उत्तम।

अनय-संज्ञा पुं० १. अमंगल। २. अन्याय।

अनरस-संज्ञा पुं० १. रसहीनता। शुष्कता। २. हवाई। ३. मनसेटाव। अनवन।

अनरसा-वि० अनमना। मंदा। धीमार।

अनराता-वि० १. बिना रँगा हुआ। सादा। २. प्रेम में न पड़ा हुआ।

अनरीति-संज्ञा स्त्री० कुरीति। कुचाल।

अनरूप-वि० १. कुरूप। पदसूरत। २. असमान।

अनर्गल-वि० १. बेरोक। बेबंदक। २. व्यर्थ। अंबयंड। ३. लगातार।

अनर्घ-वि० १. बहुमूल्य। कीमती। २. कम कीमत का। सस्ता।

अपूर्व-वि० १. जो पहले न रहा हो ।  
 २. अद्भुत । ३. उत्तम । अष्ट ।  
 अपेक्षा-संज्ञा स्त्री० [ वि० अपेक्षित ] १.  
 आकांक्षा । इच्छा । २. आवश्यकता ।  
 ३. आश्रय । ४. तुलना । मुकामिला ।  
 अपेक्षाकृत-अव्य० मुकामिले में ।  
 तुलना में ।  
 अपेक्षित-वि० जिसकी अपेक्षा हो ।  
 जिसकी आवश्यकता हो ।  
 अपेय-वि० न पीने योग्य ।  
 अपेल-वि० जो हटे या टूटे नहीं ।  
 अटल ।  
 अप्रकृत-वि० १. अस्वाभाविक । २.  
 यनायटी ।  
 अप्रतिम-वि० १. प्रतिभाशून्य । २.  
 स्फूर्तिशून्य । ३. मतिहीन । निर्बुद्धि ।  
 ४. लजीला ।  
 अप्रतिम-वि० अद्वितीय । अनुपम ।  
 अप्रमेय-वि० १. जो नाश न जा  
 सके । २. जो प्रमाण से न सिद्ध हो  
 सके ।  
 अप्रयुक्त-वि० जो काम में न लाया  
 गया हो ।  
 अप्रसन्न-वि० १. असंतुष्ट । नाराज ।  
 २. खिन्न । दुःखी । उदास ।  
 अप्रसिद्ध-वि० जो प्रसिद्ध न हो ।  
 अविद्यमान ।  
 अप्रस्तुत-वि० जो प्रस्तुत या  
 मौजूद न हो ।  
 संज्ञा पुं० उपमान ।  
 अप्राकृत-वि० अस्वाभाविक । असा-  
 धारण्य ।  
 अप्राप्त्यवहार-वि० [ सं० ] सोलह  
 वर्ष से कम का (बालक) । नाचा-  
 लिया ।  
 अप्राप्य-वि० जो प्राप्त न हो सके ।

अप्रामाणिक-वि० [ स्त्री० अप्रामाणिकी ]  
 १. जो प्रमाण से सिद्ध न हो । २.  
 ऊटपटांग ।  
 अप्रासंगिक-वि० प्रसंग-विरुद्ध ।  
 अप्रिय-वि० पुं० अरुचिकर ।  
 अप्सरा-संज्ञा स्त्री० १. वेश्याओं की  
 एक जाति । २. स्वर्ग की वेरिया ।  
 इंद्र की सभा में नाचनेवाली देवा-  
 गना । ३. परी ।  
 अफगान-संज्ञा पुं० अफगानिस्तान का  
 रहनेवाला । काबुली ।  
 अफगून-संज्ञा स्त्री० दे० "अफीम" ।  
 अफरा-संज्ञा पुं० अजीर्ण या वायु से  
 पेट फूलना ।  
 अफराना-कि० अ० भोजन से वृत्त  
 करना ।  
 अफुचाह-संज्ञा स्त्री० उड़ती लहर ।  
 किं वदंती । गप्प ।  
 अफसर-संज्ञा पुं० अधिकारी ।  
 हाकिम ।  
 अफसाना-संज्ञा पुं० किस्सा । कहानी ।  
 कथा ।  
 अफसोस-संज्ञा स्त्री० शोक । रंज ।  
 पछतावा ।  
 अफीम-संज्ञा स्त्री० पोस्त के डेढ़ का  
 गोद जो कड़ुआ, मादक और विष  
 होता है ।  
 अफीमची-संज्ञा पुं० वह पुरुष जिसे  
 अफीम खाने की लत हो ।  
 अव-कि० वि० इस समय । इस क्षण ।  
 इस घड़ी ।  
 अवधू-वि० अज्ञानी । अवोध ।  
 संज्ञा पुं० स्यामी । विरामी ।  
 अवध्य-वि० [ स्त्री० अवध्या ] १. जिसे

अनर्थ-संज्ञा पुं० १. बलदा मतलब ।  
२. बुझसान । ३. बिपद् । अनिष्ट ।  
अनर्थक-वि० [ सं० ] व्यर्थ । बेमत-  
लब । बेफायदा ।

अनल-संज्ञा पुं० १. अग्नि । आग । २.  
तीन की संख्या ।

अनल्प-वि० धहुत । अधिक ।

अनलमुख-संज्ञा पुं० १. देवता । २.  
धातुमुख ।

अनलस-वि० आलस्यरहित । कुर्तों-  
ला । चैतन्य ।

अनघच्छिन्न-वि० अखंडित । अटूट ।

अनघट-संज्ञा पुं० पैर के थेंगूटे में पह-  
नने का एक प्रकार का छल्ला ।

संज्ञा पुं० कोणहू के बैल की आँखों के  
ठकन । ढोका ।

अनघद्य-वि० [ सं० ] निर्दोष ।

अनघधान-संज्ञा पुं० असावधानी ।

अनघधि-वि० असीम । बेहद ।

क्रि० वि० सदैव । हमेशा ।

अनघरत्त-क्रि० वि० [ सं० ] निरंतर ।  
हमेशा ।

अनघासना-क्रि० वि० नए घरतन  
को पहले पहल काम में लाना ।

अनघासा-संज्ञा पुं० कटी हुई फसल  
का एक बड़ा मुट्ठा या पूला । आँसा ।

अनघासी-संज्ञा स्त्री० एक विस्वे का  
द्वैत भाग । बिस्वासी का भीसर्वा  
हिस्सा ।

अनशन-संज्ञा पुं० उपवास । अन्न-  
त्याग । निराहार मत ।

अनश्वर-वि० नष्ट न होनेवाला ।

अन-सखरी-संज्ञा स्त्री० पक्की रसोई ।  
घी में पका हुआ भोजन ।

अनसुना-वि० बेसुना । बिना सुना  
हुआ ।

अनसूया-संज्ञा स्त्री० १. पराए गुण में  
दोष न देखना । २. ईर्ष्या का  
अभाव । ३. अग्नि मुनि की स्त्री ।

अनहद-नाद-संज्ञा पुं० दे० "धना-  
हत" ।

अनहित-संज्ञा पुं० १. अहित ।  
बुराई । २. शत्रु ।

अनहोता-वि० १. दरिद्र । गरीब ।  
२. अलौकिक । अचभे का ।

अनहोनी-वि० स्त्री० न होनेवाली ।  
अलौकिक ।

संज्ञा स्त्री० अलौकिक धातु ।

अनाफानी-संज्ञा स्त्री० सुनी अनसुनी  
करना ।

अनाखर-वि० बेढोल । घेंढंगा ।

अनागत-वि० न आया हुआ ।  
अनुपस्थित ।

क्रि० वि० अचानक । सहसा ।

अनाचार-संज्ञा पुं० १. दुराचार ।  
निंदित आचरण । २. कुरीति ।  
कुप्रथा ।

अनाज-संज्ञा पुं० अन्न । दाना । गहू ।

अनाड़ी-वि० १. नासन्नक । २. जो  
निपुण न हो । अकुशल ।

अनात्म-वि० आत्मरहित । जड़ ।  
संज्ञा पुं० आत्मा का विरोधी पदार्थ ।

अचित् । जड़ ।

अनाथ-वि० १. बिना मालिक का ।  
२. असहाय । ३. दीन । दुखी ।

अनाथालय-संज्ञा पुं० वह स्थान  
जहाँ दीन दुखियों और असहायों का  
पालन हो । यतीमखाना ।

अनाथाश्रम-संज्ञा पुं० दे० "अनाथा-  
लय" ।

अनादर-संज्ञा पुं० आदर का अभाव ।  
निरादर ।

अभिनिवेश-संज्ञा पुं० १. प्रवेश । २. मनोयोग । ३. तत्परता ।

अभिनीत-वि० १. निकट लाया हुआ । २. सुसज्जित । ३. अभिनय किया हुआ । खेला हुआ । ( नाटक ) ।

अभिनेता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अभिनेत्री ] अभिनय करनेवाला व्यक्ति । स्वर्ग दिखानेवाला पुरुष । नट । ऐक्टर ।

अभिनेय-वि० खेलने योग्य (नाटक) ।

अभिन्न-वि० [संज्ञा अभिप्रेता] जो भिन्न न हो । एकसय ।

अभिप्राय-संज्ञा पुं० [ वि० अभिप्रेत ] आशय । मतलब ।

अभिमाचक-वि० १. अभिभूत या पराजित करनेवाला । २. रक्षक । सरपरस्त ।

अभिभूत-वि० १. पराजित । हराया हुआ । २. विचलित ।

अभिमत-वि० १. मनोनीत । वांछित । २. सम्मत । राय के मुताबिक ।

संज्ञा पुं० १. मत । सम्मति । राय । २. विचार । ३. मनचाही बात ।

अभिमति-संज्ञा स्त्री० १. अभिमान । गर्व । अहंकार । २. राय । विचार ।

अभिमन्यु-संज्ञा पुं० अर्जुन के पुत्र का नाम ।

अभिमान-संज्ञा पुं० वि० [अभिमानि] अहंकार ।

अभिमानि-वि० [ स्त्री० अभिमानिनी ] घमंडी ।

अभिमुख-क्रि० वि० सामने ।

अभियुक्त-वि० [ स्त्री० अभियुक्ता ] जिस पर अभियोग चलाया गया हो ।

अभियोक्ता-वि० [ स्त्री० अभियोक्ता ] अभियोग, वपस्थित करनेवाला ।

वादी । मुद्दे ।

अभियोग-संज्ञा पुं० १. किसी के किए हुए दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन । नालिश । २. मुकदमा ।

अभियोगी-वि० अभियोग चलानेवाला । नालिश करनेवाला । फुरियादी ।

अभिरना-क्रि० भ० [ सं० अभि + रण = युद्ध ] १. भिड़ना । २. टक्का । ३. मिथाना ।

अभिराम-वि० [ स्त्री० अभिरामा ] मनोहर ।

अभिरुचि-संज्ञा स्त्री० चाह । पसंद ।

अभिलषित-वि० वांछित । चाहा हुआ ।

अभिलाखना-क्रि० सं० इच्छा करना । चाहना ।

अभिलाखा-संज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाषा" ।

अभिलाष-संज्ञा पुं० इच्छा ।

अभिलाषा-संज्ञा स्त्री० कामना । चाह ।

अभिलाषी-वि० [ स्त्री० अभिलाषिणी ] इच्छा करनेवाला । आकांक्षी ।

अभिवंदन-संज्ञा पुं० १. प्रणाम । २. स्तुति ।

अभिवादन-संज्ञा पुं० १. वंदना । २. स्तुति ।

अभिव्यंजक-वि० प्रकट करनेवाला ।

अभिव्यक्त-वि० प्रकट या ज़ाहिर किया हुआ ।

अभिव्यक्ति-संज्ञा स्त्री० प्रकाशन ।

अभिशाप-संज्ञा पुं० १. शाप । २. मिथ्या दोषारोपण ।

अभिपंग-संज्ञा पुं० १. पराजय । २. निंदा । ३. झूठा दोषारोपण ।

अनादि-वि० जिसका आदि न हो ।  
जो सप्त दिन से हो ।

अनादृत-वि० जिसका अनादर हुआ हो । अपमानित ।

अनाना-कि० सं० मँगाना ।

अनाप-शनाप-संज्ञ पुं० १. ऊट-पटांग । २. निरर्थक बकवाद ।

अनाम-वि० [ सं० ] [ स्त्री० अनामा ]  
१. बिना नाम का । २. अमसिद्ध ।

अनामय-वि० १. रोगरहित । तंदु-  
रुक्त । २. निर्दोष ।

संज्ञ पुं० १. तंदुरुस्ती । २. कुशल-  
चेम ।

अनामिका-संज्ञ स्त्री० कनिष्ठा और  
मध्यमा के बीच की हँगली ।

अनायास-कि० वि० बिना प्रयास ।  
अचानक ।

अनार-संज्ञ पुं० एक पेड़ और उसके  
फल का नाम । दाढ़िम ।

अनारदाना-संज्ञ पुं० १. खट्टे अनार का  
सुखाया हुआ दाना । २. रामदाना ।

अनार्य-संज्ञ पुं० १. वह जो आर्य  
न हो । २. ग्लेच्छ ।

अनावश्यक-वि० [संज्ञ अनावश्यकता]  
जिसकी आवश्यकता न हो ।

अनावृत-वि० जो ढँका न हो ।  
खुला ।

अनावृष्टि-संज्ञ स्त्री० वर्षा का अभाव ।  
सूखा ।

अनाश्रय-वि० निराश्रय । अनाथ ।  
दीन ।

अनाश्रित-वि० बेसहारा ।

अनास्था-संज्ञ स्त्री० १. अस्था का  
अभाव । २. अनादर ।

अनाहत-वि० जिस पर आघात न  
हुआ हो ।

संज्ञ पुं० १. शब्दयोग में वह शब्द  
जो दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों  
कानों को बन्द करने से सुनाई देता  
है । २. हठ-योग के अनुसार शरीर  
के भीतर के छः चक्रों में से एक ।

अनाहार-संज्ञ पुं० भोजन का अभाव  
या त्याग ।

वि० निराहार । जिसने कुछ खाया  
न हो ।

अनाहत-वि० बिना धुलाया हुआ ।

अनिच्छा-संज्ञ स्त्री० इच्छा का  
अभाव । अरुचि ।

अनिच्छित-वि० १. जिसकी इच्छा  
न हो । अनचाहा । २. अरुचिकर ।

अनिद्य-वि० पुं० [ सं० ] जो निंदा  
के योग्य न हो । उत्तम ।

अनित्य-वि० [ स्त्री० अनित्या- ] संज्ञा  
अनित्यत्व, अनित्यता ] १. जो सप्त दिन  
न रहे । २. नश्वर ।

अनिद्र-वि० निद्रारहित । जिसे नींद  
न आवे ।

संज्ञ पुं० नींद न आने का रोग ।

अनिमा-संज्ञ स्त्री० दे० "अग्निमा" ।

अनिमिष, अनिमेष-वि० स्थिर इष्टि ।

टकटकी के साथ ।

कि० वि० १. बिना पलक गिराए ।

एक टक । २. निरंतर ।

अनियंत्रित-वि० बिना रोक टोक का ।

अनियमित-वि० [ सं० ] १. नियम-  
रहित । अव्यवस्थित । २. अनिश्चित ।

अनियारा-वि० [ स्त्री० अनियारी ]  
नुकीला । पैना । धारदार । तीक्ष्ण ।

अनिरुद्ध-वि० [ सं० ] जो रोक हुआ  
न हो । परोक्ष ।



४. आलिंगन । २. शपथ । ६. भूत-  
प्रेत का आवेश । ७. शोक ।

अभिपिक्त-वि० [ स्त्री० अभिपिक्ता ]

जिसका अभिप्रेत हुआ हो ।

अभिप्रेक-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. जल

से सिंचन । छिड़काव । २. मंत्र से

जल छिड़ककर राजपद पर बैठाना ।

अभिसंधि-संज्ञा स्त्री० १. बंधना ।

घोषा । २. कुक्क । पड्यंत्र ।

अभिसरण-संज्ञा पुं० १. आगे जाना

२. प्रिय से मिलने के लिये जाति ।

अभिसार-संज्ञा पुं० [ वि० अभि

अभिसारी ] प्रिय से मिलने जाना ।

नायिका या नायक का एक ही तिथि

में जाना ।

अभिसारिका-संज्ञा स्त्री० देवी ।

संकेत-स्थान में प्रिय-स्कार । अप-

लिये स्वयं जाय या अंग । भाग ।

अभिसारिणी-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. जिसके

सारिका । व्यवय हो । २. कुल ।

अभिसारि-संज्ञा पुं० १. सा-

मि-रघक-वि० आराधना करने-

वाला ।

अवराधन-संज्ञा पुं० उपासना । पूजा ।

अवरुद्ध-वि० रुधा या रुका हुआ ।

अवरुद्ध-वि० ऊपर से नीचे आया

हुआ । उतरा हुआ ।

अवरेखना-कि० सं० [ सं० अव-

लेखन ] १. रेखना । लिखना । २.

देखना । कल्पना करना ।

अचरेय-संज्ञा पुं० तिरछी चाल ।

यी०—अचरेयदार = तिरछी काट का ।

१. पेच । उलम्बन ।

अचरोध-संज्ञा पुं० १. रुकावट । २.

घेर लेना । ३. अनुरोध ।

अरोधक-वि० रोकनेवाला ।

अरोधी-वि० [ स्त्री० अवरोधिनी ]

अवरोध करनेवाला ।

अवरोह-संज्ञा पुं० १. उतार । २.

अवनति ।

अवरोहण-संज्ञा पुं० [ वि० अवरोहक,

अवरोहित, अवरोही ] नीचे की ओर

जाना ।

० कि० सं० रोकना ।

अवरोही (स्वर)-संज्ञा पुं० वह स्वर-

साधन जिसमें पहले पढ़न का उच्चा-

रण हो, फिर निपाद से पढ़न तक

क्रमानुसार उतरते हुए स्वर निकलें ।

विलोम । आरोही का उल्टा ।

अघर्ष-वि० १. घर्षरहित । २. घुरे रंग

का । ३. घर्ष-धर्म-रहित ।

अघर्ष्य-वि० जो घर्षण के योग्य

न हो ।

अवलंघना-कि० सं० लांघना ।

अवलंघ-संज्ञा पुं० आश्रय ।

अवलंघन-संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० ]

अवलंबित, अवलंबी ] १. आधार ।

२. धारण । ग्रहण ।

अवलंबित-वि० [ सं० ] १. सहारे

पर स्थिर । २. निर्भर ।

अवलंबी-वि० पुं० [ स्त्री० अवलंबिनी ]

१. सहारा देनेवाला । २. सहारा

देनेवाला ।

अवली-संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति । २.

समूह । कुंड ।

अवलीक-वि० पापशून्य । शुद्ध ।

अवलेखना-कि० सं० [ सं० अवलेखन ]

खोदना । सुरचना ।

अवलेप-संज्ञा पुं० [ सं० अवलेपन ] उच-

टन । लेप ।

संश पुं० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिनको ऊषा व्याही थी ।

अनिर्दिष्ट-वि० १. जो बताया न गया हो । २. अनिश्चित । ३. असीम ।

अनिर्वचनीय-वि० जिसका वर्णन न हो सके ।

अनिल-संश पुं० वायु । हवा ।

अनिलकुमार-संश पुं० हनुमान् ।

अनिवार्य-वि० १. जिसका निवारण न हो । २. जिसके बिना काम न चल सके ।

अनिष्ट-वि० जो हृष्ट न हो । अन-भिज्ञपित ।

संश पुं० अमंगल । अहित । बुराई । खराबी ।

अनी-संश स्त्री० १. नाक । सिरा । फोर । २. किसी चीज़ का अगला सिरा ।

संश स्त्री० [ सं० अनीक = समूह ] १. समूह । कुंड । दल । २. सेना । फौज ।

संश स्त्री० श्लानि ।

अनीक-संश पुं० [ सं० ] सेना । फौज ।

अनीति-संश स्त्री० [ सं० ] १. अन्याय । २. शरारत । ३. अंधेरे ।

अनीश-वि० [ स्त्री० अनीशा ] १. बिना मालिक का । २. अनाथ । ३. सपसे अछे ।

संश पुं० १. विष्णु । २. जीव । माया ।

अनीश्वरवाद-संश पुं० १. ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास । नास्तिकता । २. मीमांसा ।

अनीश्वरवादी-वि० १. ईश्वर को न माननेवाला । नास्तिक । २. मीमांसक ।

अनु-उप० एक उपसर्ग । जिस शब्द के पहले यह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों का संयोग करता है—१. पीछे । जैसे-अनुगामी । २. सदृश । जैसे-अनुकूल । अनुरूप । ३. साथ । जैसे-अनुपान । ४. प्रत्येक । जैसे-अनुक्षण । ५. बारंबार । जैसे-अनुशीलन ।

अनुकंपा-संश स्त्री० दया । कृपा । अनुकरण-संश पुं० [ वि० अनुकरणीय, अनुकूल ] देखादेखी कार्य । नकल ।

अनुकूल-वि० १. मुआफ़िक । २. पक्ष में रहनेवाला । सहायक । ३. प्रसन्न ।

अनुकूलना-कि० सं० १. हितकर होना । २. प्रसन्न होना ।

अनुरुत-वि० अनुकरण या नकल किया हुआ ।

अनुरुति-संश स्त्री० देखा-देखी कार्य । नकल ।

अनुक्त-वि० [ स्त्री० अनुक्ता ] अकथित । बिना कहा हुआ ।

अनुक्रम-संश पुं० क्रम । सिलसिला ।

अनुक्रमणिका-संश स्त्री० १. क्रम । सिलसिला । २. सूची ।

अनुक्षण-कि० वि० १. प्रतिक्षण । २. लगातार । निरंतर ।

अनुग, अनुगत-संश पुं० सेवक । नौकर ।

अनुगमन-संश पुं० १. पीछे चलना । २. विधवा का मृत पति के साथ जल भरना ।

अनुगामी-वि० [ स्त्री० अनुगामिनी ] १. पीछे चलनेवाला । २. आज्ञाकारी ।

अनुगृहीत-वि० जिस पर अनुग्रह किया गया हो ।

अवलेपन-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. लगाना । पोतना । २. लेप । ३. घमंड ।

अवलेह-संज्ञा पुं० [ अवलेह्य ] १. लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो । २. चटनी ।

अवलोकन-संज्ञा पुं० [ वि० अवलोकित, अवलोकनीय ] १. देखना । २. जाच-पड़ताल ।

अवलोकनि-संज्ञा स्त्री० [ सं० अवलोकन ] १. आँख । २. चितवन ।

अवश-वि० विघश । लाचार ।

अवशिष्ट-वि० शेष । बाकी ।

अवशेष-वि० बचा हुआ । शेष ।  
संज्ञा पुं० [ सं० ] [ वि० अवशिष्ट ]  
१. बची हुई वस्तु । २. अंत ।

अवश्य-कि० वि० निश्चय करके । निःसंदेह ।

वि० [ सं० ] [ स्त्री० अवस्था ] जो घरा में न आ सके ।

अवश्यमेव-कि० वि० अवश्य ही । जरूर ।

अवसन्न-वि० [ सं० ] विषाद-प्राप्त । दुःखी ।

अवसर-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. समय । २. फुरसत ।

अवसाद-संज्ञा पुं० १. नाश । चय । २. विषाद । ३. थकावट ।

अवसान-संज्ञा पुं० १. विराम । ठहराव । २. समाप्ति ।

अवसेवन-संज्ञा पुं० १. सौंचना । पानी देना । २. पसीजना । ३. शरीर का पसीना थपवा रक्त निकालना ।

अवस्था-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. दशा । २. समय । ३. आयु । ४. स्थिति ।

अवस्थान-संज्ञा पुं० १. स्थान । २. ठहराव ।

अवस्थित-वि० विद्यमान । मौजूद ।

अवस्थिति-संज्ञा स्त्री० स्थिति ।

अवहेलना-संज्ञा स्त्री० अघज्ञा । तिरस्कार । बेपरवाही ।

अवहेलित-वि० जिसकी अवहेलना हुई हो ।

अर्चा-संज्ञा पुं० दे० "आर्चा" ।

अर्चांतर-वि० अंतर्गत । मध्यवर्ती ।  
संज्ञा पुं० मध्य । बीच ।

अर्चाई-संज्ञा स्त्री० १. आगमन । २. गहिरी जोताई ।

अर्चाक-वि० १. लुप । मौन । २. स्तंभिते ।

अर्चामुख-वि० [ सं० ] १. अधो-मुख । २. लज्जित ।

अर्चाची-संज्ञा स्त्री० दक्षिण दिशा ।

अर्चाच्य-वि० १. जो कुछ कहने योग्य न हो । २. जिससे बात करना उचित न हो । नीच ।

संज्ञा पुं० कुवास्थ । गाली ।

अर्घार-संज्ञा पुं० नदी के इस पार का किनारा । 'पार' का उलटा ।

अर्घारजा-संज्ञा पुं० वह पट्टी जिसमें प्रत्येक असामी की जात आदि लिखी जाती है ।

अर्घारना-कि० सं० १. रोकना । मना करना । २. दे० "घारना" ।  
संज्ञा स्त्री० किनारा । मोड़ ।

अर्वास्-संज्ञा पुं० दे० "आवास" ।

अवि-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. सूर्य । २. मंदार ।

अविकल-वि० [ सं० ] १. ज्यों का त्यों । २. निश्चल । शांत ।

अविकल्प-वि० [ सं० ] निश्चित ।

अनुग्रह-संज्ञा पुं० [वि० अनुगृहीत, अनु-  
ग्राही, अनुग्राहक] कृपा । दया ।

अनुग्राहक-वि० [स्त्री० अनुग्राहिका]  
अनुग्रह करनेवाला ।

अनुचर-संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुचरी] १.  
दास । नौकर । २. साथी ।

अनुचित-वि० अयुक्त । नासुनासिव ।

अनुज-वि० जो पीछे सपन्न हुआ हो ।  
संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई ।

अनुज्ञा-संज्ञा स्त्री० आज्ञा । हुक्म ।

अनुताप-संज्ञा पुं० [वि० अनुताप] १.

जलन । २. दुःख । ३. पछतावा ।

अनुवाच-वि० [सं०] छोटा । तुच्छ ।

अनुदिन-कि० वि० नित्यप्रति । प्रति-  
दिन ।

अनुनय-संज्ञा पुं० विनय । विनती ।

अनुनासिक-वि० जो (अधर) मुँह  
और नाक से थोड़ा जाय । जैसे—क,  
ख, ग ।

अनुपम-वि० [संज्ञा अनुपमता] येजोड़ ।

अनुपयुक्त-वि० अयोग्य । बेठीक ।

अनुपयोगिता-संज्ञा स्त्री० निरर्थकता ।

अनुपयोगी-वि० बेकाम । व्यर्थ का ।

अनुपस्थित-वि० जो सामने मौजूद  
न हो ।

अनुपस्थिति-संज्ञा स्त्री० गैरमौजूदगी ।

अनुपात-संज्ञा पुं० गणित की शैक्षणिक  
क्रिया ।

अनुपातक-संज्ञा पुं० ब्रह्महत्या के समान  
पाप । जैसे,—चोरी, मूठ खेलना ।

अनुपान-संज्ञा पुं० वह वस्तु जो औपध  
के साथ या ऊपर से खाई जाय ।

अनुप्रास-संज्ञा पुं० वह शब्दालंकार  
जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर चार  
बार आता है । वर्णवृत्ति । वर्णमैत्री ।

अनुभव-संज्ञा पुं० [वि० अनुभवी]  
वह ज्ञान जो साक्षात् करने से प्राप्त हो ।  
तजर्बा ।

अनुभवी-वि० अनुभव रखनेवाला ।

अनुभाव-संज्ञा पुं० १. काव्य में रस के  
चार योजकों में से एक । २. चित्त के  
भाव को प्रकाश करनेवाली कटाक्ष,  
रोमांच आदि चेष्टाएँ ।

अनुभूत-वि० १. जिसका अनुभव या  
साक्षात् ज्ञान हुआ हो । २. परीक्षित ।

अनुभूति-संज्ञा स्त्री० अनुभव ।

अनुमति-संज्ञा स्त्री० आज्ञा । इजाजत ।

अनुमान-संज्ञा पुं० [वि० अनुमित]  
अटकल । अंदाज़ा ।

अनुमित-वि० अनुमान किया हुआ ।

अनुमिति-संज्ञा स्त्री० अनुमान ।

अनुमेय-वि० अनुमान के योग्य ।

अनुमोदन-संज्ञा पुं० १. प्रसन्नता का  
प्रकाशन । २. समर्थन ।

अनुयायी-वि० [स्त्री० अनुयायिनी]  
पीछे चलनेवाला ।

संज्ञा पुं० अनुचर । सेवक । दास ।

अनुरंजन-संज्ञा पुं० १. अनुराग । २.  
दिलबहलाव ।

अनुराग-संज्ञा पुं० प्रीति । प्रेम ।

अनुरागी-वि० [स्त्री० अनुरागिनी] अनु-  
राग रखनेवाला । प्रेमी ।

अनुराध-संज्ञा पुं० विनती । विनय ।

अनुराधा-संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में  
१७वाँ नक्षत्र ।

अनुरूप-वि० १. तुल्यरूप का । समाना  
२. योग्य ।

अनुरोध-संज्ञा पुं० १. रुकावट । २.  
प्रेरणा । ३. विनयपूर्वक किसी बात  
के लिये हठ ।

अधिकार-वि० [सं०] विकार-रहित ।  
 संज्ञा पुं० [सं०] विकार का अभाव ।  
 अधिकारी-वि० [स्त्री० अविहारिणी] जिसमें विकार न हो ।  
 अधिकृत-वि० पुं० जो बिगड़ा या बदला न हो ।  
 अधिगत-वि० जो जाना न जाय ।  
 अधिबल-वि० अचल । स्थिर । अटल ।  
 अधिच्छिन्न-वि० अहट । लगातार ।  
 अधिच्छेद-वि० जिसका विच्छेद न हो ।  
 अधिज्ञात-वि० अनजाना ।  
 अधिज्ञेय-वि० पुं० जो जाना न जा सके ।  
 अधिद्यमान-वि० [सं०] १. अनुपस्थित । २. असत् ।  
 अधिद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध ज्ञान । मिथ्या ज्ञान । २. माया का एक भेद । ३. कर्मकांड । ४. सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति । जड़ ।  
 अधिधि-वि० विधि-विरुद्ध । नियम के विपरीत ।  
 अधिनय-संज्ञा पुं० दिखाई । उड़ड़ता ।  
 अधिनश्य-वि० जिसका नाश न हो । जो बिगड़े नहीं । चिरस्थायी ।  
 अधिनाश-संज्ञा पुं० विनाश का अभाव । अशय ।  
 अधिनाशी-वि० पुं० [स्त्री० अधिनाशिनी] १. अशय । २. नित्य ।  
 अधिनीत-वि० [सं०] [स्त्री० अधिनीता] १. उद्धत । २. सरकश । ३. दीठ ।  
 अधिमत्त-वि० [वि० अधिमाज्य] १. मिला हुआ । २. जो घाटा न गया हो ।  
 अधिमुक्त-वि० पुं० जो विमुक्त न हो । बद्ध ।

संज्ञा पुं० [सं०] १. कनपटी । २. काशी ।  
 अधिरत-वि० १. निरंतर । २. लगा हुआ ।  
 कि० वि० [सं०] १. निरंतर । २. नित्य ।  
 अधिरति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निवृत्ति का अभाव । २. विषयासक्ति ।  
 अधिरल-वि० १. मिला हुआ । २. घना । सघन ।  
 अधिराम-वि० [सं०] विना विश्राम लिए हुए ।  
 अधिवाहित-वि० पुं० [स्त्री० अधिवाहिता] जिसका व्याह न हुआ हो । कुंआरा ।  
 अधिवेक-संज्ञा पुं० [सं०] विवेक का अभाव । अधिचार । अज्ञान ।  
 अधिवेकी-वि० १. अज्ञानी । विवेक-रहित । २. मूढ़ ।  
 अधिभ्रात-वि० १. जो रुके नहीं । २. जो धके नहीं ।  
 अधिश्वसनीय-वि० जिस पर विश्वास न किया जा सके ।  
 अधिश्वास-संज्ञा पुं० विश्वास का अभाव ।  
 अधिश्वासी-वि० १. जो किसी पर विश्वास न करे । २. जिस पर विश्वास न किया जाय ।  
 अधिषय-वि० [सं०] जो मन या इंद्रिय का विषय न हो ।  
 अधिहङ्-वि० जो खंडित न हो । अखंड ।  
 अधीरा-वि० स्त्री० १. पुत्र और पति-रहित (स्त्री) । २. स्वतंत्र (स्त्री) ।  
 अधेक्षण-संज्ञा पुं० [वि० अधेक्षित, अधेक्षणीय] अवलोकन । देखना ।

**अनुलेपन**-संज्ञा पुं० १. लेपन । २. वयटन करना । घटना खगाना । ३. लीपना ।

**अनुलोम**-संज्ञा पुं० १. ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम । उतार का सिलसिला । २. संगीत में सुरों का उतार । अवरोही ।

**अनुलोम विवाह**-संज्ञा पुं० उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से किसी नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह ।

**अनुवाद**-संज्ञा पुं० १. पुनरुक्ति । २. भाषांतर । उद्धा ।

**अनुवादक**-संज्ञा पुं० अनुवाद या भाषांतर करनेवाला । उद्धा करनेवाला ।

**अनुवादित**-वि० अनुवाद किया हुआ ।

**अनुशासक**-संज्ञा पुं० १. आज्ञा या आदेश देनेवाला । २. शिक्षक । ३. देश या राज्य का प्रबंध करनेवाला ।

**अनुशासन**-संज्ञा पुं० १. आज्ञा । २. उपदेश । शिक्षा ।

**अनुशीलन**-संज्ञा पुं० १. चिंतन । मनन । २. अभ्यास ।

**अनुपंग**-संज्ञा पुं० [वि० आनुपंगिक] १. कव्वा । दया । २. संबंध । लगाव । प्रसंग ।

**अनुपट्टप**-संज्ञा पुं० ३२ अक्षरों का एक वर्ण छंद ।

**अनुष्ठान**-संज्ञा पुं० १. कार्य का आरंभ । २. फल के निमित्त किसी देवता की आराधना ।

**अनुसंधान**-संज्ञा पुं० [सं०] खोज । हूँद । सहकीकात ।

**अनुसरण**-संज्ञा पुं० पीछे या साथ चलना ।

**अनुसार**-वि० [सं०] अनुकूल । समान ।

**अनुस्वार**-संज्ञा पुं० १. स्वर के पीछे उच्चारण होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण, जिसका चिह्न (ं) है । २. स्वर के ऊपर की चिंदी ।

**अनुहरतः**-वि० १. अनुसार । अनु-रूप । २. उपयुक्त । योग्य ।

**अनुहार**-वि० [सं०] १. समान । २. अनुसार । अनुकूल ।

**संज्ञा स्त्री०** १. भेद । प्रकार । २. मुखानी । ३. सादर्य ।

**अनुहारना**-कि० सं० तुल्य करना । समान करना ।

**अनुहारी**-वि० [स्त्री० अनुहारिणी] अनुकरण या नकल करनेवाला ।

**अनूठा**-वि० [स्त्री० अनूठी] १. अनोखा । २. अधूरा । बढ़िया ।

**अनूढ़ा**-संज्ञा स्त्री० वह धिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो ।

**अनूदित**-वि० १. कहा हुआ । किया हुआ । २. तर्जुमा किया हुआ ।

**अनूप**-वि० १. जिसकी उपमा न हो । २. सुंदर ।

**अनृत**-संज्ञा पुं० मिथ्या । असत्य ।

**अनेक**-वि० एक से अधिक । बहुत ।

**अनेरा**-वि० [स्त्री० अनेरी] १. झूठ । २. झूठा । ३. अभ्यापी । ४. निकम्मा ।

कि० वि० व्यर्थ । फुजूल ।

**अनेक्य**-संज्ञा पुं० एका न होना । मत्त-भेद ।

**अनैसर्ग**-संज्ञा पुं० घुराई ।

वि० घुरा । खराप ।

**अनैसा**-वि० [हिं० अनैस] [स्त्री० अनैसी] अमिय ।

**अनैसे**-कि० वि० घुरे भाव से ।

**अनोखा**-वि० [स्त्री० अनोखी] अनूठा । निराला । विलक्षण ।

अवैतनिक-वि० [ सं० ] बिना वेतन या तनखुवाह के काम करनेवाला । थानरेरी ।

अवैदिक-वि० [ सं० ] वेद-विरुद्ध । अव्यक्त-वि० [ सं० ] अप्रत्यक्ष । अगोचर । अव्यक्त गणित-संज्ञा पुं० बीज-गणित । अव्यय-वि० १. जो विकार को प्राप्त न हो । सदा एकरस रहनेवाला । अक्षय । २. नित्य । आदि-अंत-रहित । संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, सब विभक्तियों और सब वचनों में समान रूप से प्रयोग हो । २. परब्रह्म । ३. शिव । ४. विष्णु ।

अव्ययीभाव-संज्ञा पुं० समास का एक भेद ( व्याकरण ) ।

अव्यर्थ-वि० १. जो व्यर्थ न हो । सफल । २. सार्थक । ३. अमोघ । अव्यवस्था-संज्ञा स्त्री० [ वि० अव्यवस्थित ] १. नियम का न होना । बेकायदगी । २. गड़बड़ ।

अव्यवस्थित-वि० १. शास्त्रादि-मर्यादा-रहित । २. अस्थिर ।

अव्यावृत्त-वि० निरंतर । लगातार । अटूट ।

अव्याहत-वि० १. बेरोक । २. सत्य ।

अव्युत्पन्न-वि० १. अनादी । २. व्याकरण शास्त्रानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके ।

अव्युत्पन्न-वि० [ अ० ] १. पहला । २. उत्तम ।

संज्ञा पुं० आदि । प्रारंभ ।

अशंक-वि० डेडर । निर्भय ।

अशकुन-संज्ञा पुं० घुरा शकुन । घुरा लक्षण ।

अशक्त-वि० [ संज्ञा अशक्ति ] निर्बल ।

अशक्य-वि० असाध्य । न होने योग्य ।

अशुन-संज्ञा पुं० १. भोजन । २. खाने की क्रिया ।

अशरण-वि० जिसे कहीं शरण न हो । अनाथ ।

अशरफी-संज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. सोलह से पचीस रूपए तक का सोने का एक सिक्का । मोहर । २. पीले रंग का एक फूल ।

अशरफ-वि० [ अ० ] शरीफ । भद्र ।

अशक्ति-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १. अस्थिरता । चंचलता । २. क्षोभ । असंतोष ।

अशिक्षित-वि० [ सं० ] जिसने शिक्षा न पाई हो । अनपढ़ ।

अशिष्ट-वि० [ सं० ] उजड़ । बेहूदा ।

अशिष्टता-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] असाधुता । बेहूदगी ।

अशुचि-वि० [ अशुचि ] १. अपवित्र । २. गंदा ।

अशुद्ध-वि० [ सं० ] १. अपवित्र । २. बिना शोधा । ३. रूखत ।

अशुन-संज्ञा पुं० अश्विनी नक्षत्र ।

अशुभ-संज्ञा पुं० १. अमंगल । २. पाप ।

वि० [ सं० ] जो शुभ न हो । बुरा ।

अशेष-वि० [ सं० ] १. पूरा । समूचा । २. अनेक ।

अशोक-वि० [ सं० ] दुःख-शून्य ।

संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लंबी लंबी और किनारों पर लहरदार होती हैं ।

अशोक-घाटिका-संज्ञा स्त्री० [ सं० ]

१. शोक को दूर करनेवाला रम्य उद्यान । २. राघव का वह प्रसिद्ध घग्गीचा जिसमें उसने सीताजी को ले आकर रखा था ।

अशौच-संज्ञा पुं० [वि० अशुचि] अप-  
विश्रुता । अशुद्धता ।

अश्मकुट्ट-संज्ञा पुं० एक प्रकार के  
वानप्रस्थ जो केवल पत्थर से अन्न  
कूटकर पकाते थे ।

अश्रद्धा-संज्ञा स्त्री० [ वि० अश्रद्धेय ]  
अज्ञा का अभाव ।

अधात-वि० जो यका-मादा न हो ।  
क्रि० वि० लगातार । निरंतर ।

अधु-संज्ञा पुं० आँसू ।

अधुत-वि० १. जो सुना न गया हो ।  
२. जिसने कुछ देखा-सुना न हो ।

अधुपात-संज्ञा पुं० आँसू गिराना ।

अश्लिष्ट-वि० श्लेषशून्य ।

अश्लील-वि० फूहड़ । महा ।

अश्लीलता-संज्ञा स्त्री० फूहड़पन ।  
लज्जा का उल्लंघन ।

अश्लेषा-संज्ञा स्त्री० २० नक्षत्रों में से  
नवौं ।

अश्व-संज्ञा पुं० घोड़ा ।

अश्वकर्ण-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
शाल वृक्ष ।

अश्वगंधा-संज्ञा स्त्री० असगंध ।

अश्वतर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अश्वतरी ]  
१. नागराज । २. खड्ग ।

अश्वत्थ-संज्ञा पुं० पीपल ।

अश्वत्थामा-संज्ञा पुं० द्रोणाचार्य के  
पुत्र ।

अश्वपति-संज्ञा पुं० १. घुड़सवार ।  
२. रिसालदार ।

अश्वपाल-संज्ञा पुं० साईस ।

अश्वमेध-संज्ञा पुं० एक बड़ा यज्ञ  
जिसमें घोड़े के मस्तक पर अयपत्र  
बांधकर उसे भूमंडल में घूमने के  
लिये छोड़ देते थे । फिर उसको भार-

कर उसकी चर्चा से हवन किया  
जाता था ।

अश्वशाला-संज्ञा स्त्री० अस्तपल ।  
तवेला ।

अश्वारोही-वि० घोड़े का सवार ।

अश्विनी-संज्ञा स्त्री० १. घोड़ी । २.  
२० नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र ।

अश्विनीकुमार-संज्ञा पुं० [ सं० ] खट्वा  
की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न  
सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के  
वैद्य माने जाते हैं ।

अपाढ़-संज्ञा पुं० दे० "आपाढ़" ।

अष्ट-वि० [ सं० ] आठ ।

अष्टधाती-वि० १. अष्टधातुओं से  
बना हुआ । २. षड् । मज्ज्यत । ३.  
वर्णसंकर ।

अष्टधातु-संज्ञा स्त्री० आठ धातुएँ—  
सोना, चाँदी, ताँबा, रौंदा, गस्ता,  
सीसा, लोहा और पारा ।

अष्टपदी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
गीत जिसमें आठ पद होते हैं ।

अष्टप्रकृति-संज्ञा स्त्री० राज्य के आठ  
प्रधान कर्मचारी । यथा—सुमंत्र,  
पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य,  
प्राड्विवाक और प्रतिनिधि ।

अष्टभुजा-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] दुर्गा ।

अष्टम-वि० पुं० [ सं० ] आठवाँ ।

अष्टमी-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शुक्ल या कृष्ण  
पक्ष की आठवीं तिथि ।

अष्टांग-संज्ञा पुं० [ वि० अष्टांगी ]  
योग की क्रिया के आठ भेद—यम,

नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार,  
धारणा, ध्यान और समाधि ।

अष्टांगी-वि० आठ अंगोंवाला ।

अष्टाक्षर-संज्ञा पुं० आठ अक्षरों का  
मंत्र ।



वि० आनेवाला । आगामी ।

आगमज्ञानी-वि० भविष्य का जानने-वाला ।

आगमन-संज्ञा पुं० अवाई । आना ।

आगमवाणी-संज्ञा स्त्री० भविष्यवाणी ।

आगमविद्या-संज्ञा स्त्री० वेदविद्या ।

आगमसोची-वि० दूरदर्शी । अग्र-सोची ।

आगमी-संज्ञा पुं० ज्योतिषी ।

आगर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आगरी ] १.

खान । २. समूह । ३. कोष ।

संज्ञा पुं० घर । गृह ।

वि० [ सं० अग्र ] १. श्रेष्ठ । २. चतुर ।

आगरी-संज्ञा पुं० नमक बनानेवाला पुरुष । लोतिया ।

आगा-संज्ञा पुं० १. किसी चीज के

आगे का भाग । २. शरीर का

अगला भाग । ३. सेना या फौज

का अगला भाग । हरावल । ४. घर

के सामने का मैदान । ५. आगे

जानवाला समय । भविष्य ।

संज्ञा पुं० बाबुली । अफगान ।

आगान-संज्ञा पुं० वाद । प्रसंग ।

आगा-पीछा-संज्ञा पुं० १. हिचक ।

दुश्वाहा । २. परिणाम । नतीजा ।

आगामि, आगामी-वि० [ स्त्री०

आगामिनी ] आवी । होनेहार ।

आगार-संज्ञा पुं० १. घर । मकान ।

२. खजाना ।

आगाह-वि० जानकार ।

० संज्ञा पुं० आगम । होनेहार ।

आगाही-संज्ञा स्त्री० जानकारी ।

आगि-संज्ञा स्त्री० दे० "आग" ।

आगिल-वि० दे० "अगला" ।

आगी-संज्ञा स्त्री० दे० "आग" ।

आगे-कि० वि० १. और दूर पर ।

और बढ़कर । 'पीछे' का उलटा ।

२. सामने । ३. भविष्य में । ४.

अनंतर । ५. पूर्व । पहले ।

आग्नेय-वि० [ स्त्री० आग्नेयी ] १.

अग्नि-संरंधी । २. अग्नि से उत्पन्न ।

३. जिससे आग निकले । जलाने-

वाला ।

संज्ञा पुं० १. सुवर्ण । २. रक्त ।

रुधिर । ३. कृतिका नक्षत्र । ४.

अग्नि के पुत्र कार्तिकेय । ५. उजाला-

मुखी पर्यंत । ६. वह पदार्थ जिससे

आग भड़क उठे; जैसे—चारुद । ७.

प्राज्ञा । ८. अग्निकोण ।

आग्नेयारु-संज्ञा पुं० प्राचीन काल

के अश्वों का एक भेद जिनसे आग

निकलती थी या जिनके चलाने पर

आग बरसती थी ।

आग्नेयी-वि० स्त्री० १. अग्नि को

दीपन करनेवाली औषध । २. पूर्व

और दक्षिण के बीच की दिशा ।

आग्रह-संज्ञा पुं० १. अनुरोध । हठ ।

२. तत्परता ।

आग्रहायण-संज्ञा पुं० अग्रहन ।

आग्रही-वि० हठी । जिद्दी ।

आघात-संज्ञा पुं० १. धक्का । २.

मार । आवमण ।

आघ्राण-संज्ञा पुं० [ वि० आघ्रात, आघ्रेय ]

१. सूंघना । घास खेद । २.

अघाना । वृत्ति ।

आचमन-संज्ञा पुं० [ वि० आचमनीय,

आचमित ] १. जल पीना । २. पूजा

या धर्म-संबंधी कर्म के आरंभ में

दाहिने हाथ में थोड़ा सा जल लेकर

मंत्रपूर्वक पीना ।

आचमनी-संज्ञा स्त्री० एक छोटा

वि० [ सं० ] आठ अक्षरों का ।  
 अष्टाध्यायी-संज्ञा स्त्री० पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं ।  
 अष्टावक्र-संज्ञा पुं० १. एक ऋषि ।  
 २. टेढ़े-मेढ़े शरीरों का मनव्य ।  
 असंक्रांति-वि० दे० "अशकै" ।  
 असंक्रांति मास-संज्ञा पुं० अधिक मास । मलमास ।  
 असंख्य-वि० अनगिनत ।  
 असंग-वि० [ सं० ] १. अकेला । एकाकी । २. निर्विशेष ।  
 असंगत-वि० अयुक्त । बेठीक ।  
 असंगति-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] बेसिल-सिलापन । येमेल होने का भाव ।  
 असंयुद्ध-वि० [ सं० ] १. जो मेल में न हो । २. पृथक् । ३. अनमिल ।  
 असंभार-वि० १. जो संभालने योग्य न हो । २. अपार । बहुत बड़ा ।  
 असंभाव्य-वि० जिसकी संभावना न हो । अनहोना ।  
 असंभाष्य-वि० १. न कहे जाने योग्य । २. जिससे बातचीत करना शक्ति न हो । बुरा ।  
 असंयत-वि० [ सं० ] संयम-रहित ।  
 असंस्कृत-वि० [ सं० ] विना सुधारा हुआ । जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो ।  
 अस्-वि० इस प्रकार का । ऐसा ।  
 असकताना-कि० अ० आलस्य में पड़ना । आलसी होना ।  
 असंगंध-संज्ञा पुं० [ सं० अश्वगंधा ] एक सीधी, झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम में आती हैं । अश्वगंधा ।

असगुन-संज्ञा पुं० दे० "अशकुन" ।  
 असत्-वि० [ सं० ] १. अस्तित्व-विहीन । सत्ता-रहित । २. बुरा । ३. असाधु ।  
 असत्ता-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] सत्ता का अभाव । अनस्तित्व ।  
 असत्य-वि० [ सं० ] मिथ्या । झूठ ।  
 असवर्ग-संज्ञा पुं० [ का० ] खुरासान की एक लंबी घास जिसके फूल रेशम रंगने के काम में आते हैं ।  
 असबाब-संज्ञा पुं० चीज । वस्तु । सामान ।  
 असमर्द्ध-संज्ञा स्त्री० अशिष्टता । बेहू-दगी । असभ्यता ।  
 असभ्य-वि० अशिष्ट । गँवार ।  
 असभ्यता-संज्ञा स्त्री० अशिष्टता ।  
 असमंजस-संज्ञा स्त्री० दुबधा । आगा-पीछा ।  
 असमंत-संज्ञा पुं० [ सं० असमंत ] चूल्हा ।  
 असम-वि० [ सं० ] १. जो सम या मुख्य न हो । २. ऊँचा-नीचा । ऊबड़-खाबड़ ।  
 असमय-संज्ञा पुं० विपत्ति का समय । कि० वि० कुअवसर । बे मौका ।  
 असमर्थ-वि० [ सं० ] सामर्थ्य-हीन । दुर्बल ।  
 असमशुर-संज्ञा पुं० कामदेव ।  
 असम्मत-वि० [ सं० ] १. जो राजी न हो । २. जिस पर किसी की राय न हो ।  
 असमान-वि० [ सं० ] जो समान या मुख्य न हो ।  
 असमाप्त-वि० [ सं० ] दे० "असमान" ।  
 असमाप्त-वि० [ सं० ] असमाप्ति अपूर्ण । अधूरा ।

चम्मच जिससे आचमन करते हैं ।  
 आचरज-संज्ञा पुं० दे० "अचरज" ।  
 आचरण-संज्ञा पुं० [ वि० आचरणीय,  
 आवरित ] १. अनुष्ठान । २. व्यव-  
 हार । चाल-चलन ।  
 आचरणीय-वि० व्यवहार करने  
 योग्य । करने योग्य ।  
 आचरण-संज्ञा पुं० दे० "आचरण" ।  
 आचरना-कि० अ० आचरण  
 करना । व्यवहार करना ।  
 आचरित-वि० किया हुआ ।  
 आचार-संज्ञा पुं० व्यवहार । चलन ।  
 आचारज-संज्ञा पुं० दे० "आ-  
 चार्य्य" ।  
 आचारवान्-वि० [ स्त्री० आचारवती ]  
 पवित्रता से रहनेवाला । शुद्ध  
 आचार का ।  
 आचार-विचार-संज्ञा पुं० आचार  
 और विचार । रहने की सफाई ।  
 आचारी-वि० [ स्त्री० आचारिणी ]  
 आचारवान् । चरित्रवान् ।  
 संज्ञा पुं० रामानुज सम्प्रदाय का  
 वैष्णव ।  
 आचार्य्य-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आचार्याणी ]  
 गुरु ।  
 आच्छन्न-वि० १. ढका हुआ ।  
 आवृत । २. छिपा हुआ ।  
 आच्छादक-संज्ञा पुं० ढाँकनेवाला ।  
 आच्छादन-संज्ञा पुं० [ वि० आच्छादित,  
 आच्छन्न ] १. ढकना । २. घस ।  
 आच्छादित-वि० ढका हुआ । छिपा  
 हुआ ।  
 आक्षिप्त-वि० १. मौजूदगी में ।  
 सामने । २. अतिरिक्त ।  
 आक्षान्त-वि० दे० "अच्छा" ।  
 आक्षेप-वि० अच्छी तरह ।

आक्षेप-संज्ञा पुं० दे० "आक्षेप" ।  
 आज-कि० वि० वर्तमान दिन में ।  
 अब ।  
 आजकल-कि० वि० इन दिनों । वर्त-  
 मान दिनों में ।  
 आजन्म-कि० वि० जन्म भर ।  
 आजमाइश-संज्ञा स्त्री० परीक्षा ।  
 आजमाना-कि० स० परीक्षा करना ।  
 परखना ।  
 आज्ञा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आज्ञा ] पिता-  
 मह । बाप का बाप ।  
 आज्ञा-वि० [ संज्ञा आज्ञादी, आज्ञादा ]  
 १. जो चढ़ न हो । बरी । २.  
 बेपरवाह । ३. स्वतंत्र । ४. निडर ।  
 आज्ञादी-संज्ञा स्त्री० स्वतंत्रता ।  
 आज्ञानु-वि० जाँच या घुटने तक  
 लंबा ।  
 आज्ञार-संज्ञा पुं० रोग । बीमारी ।  
 आजिज़-वि० १. दीन । २. ईरान ।  
 आजीवन-कि० वि० जीवन-पर्यंत ।  
 आजीविका-संज्ञा स्त्री० वृत्ति । रोज़ी ।  
 आज्ञा-संज्ञा स्त्री० १. आदेश । २.  
 अनुमति ।  
 आज्ञाकारी-वि० [ स्त्री० आज्ञाकारिणी ]  
 १. आज्ञा माननेवाला । २. सेवक ।  
 आज्ञापक-वि० [ स्त्री० आज्ञापिका ] १.  
 आज्ञा देनेवाला । २. प्रभु ।  
 आज्ञापत्र-संज्ञा पुं० हुक्मनामा ।  
 आज्ञापन-संज्ञा पुं० [ वि० आज्ञापित ]  
 सूचित करना । जताना ।  
 आज्ञापालक-वि० [ स्त्री० आज्ञापालिका ]  
 १. आज्ञाकारी । २. दास ।  
 आज्ञापित-वि० जताया हुआ ।  
 आज्ञापालन-संज्ञा पुं० आज्ञा के  
 अनुसार काम करना ।  
 आटना-कि० स० तोपना । दबाना ।

असयाना-वि० १. सीधा-साधा ।

२. अनादी ।

असर-संज्ञ पुं० प्रभाव ।

असरार-कि० वि० निरंतर । लगा-  
तार । परावर ।

असल-वि० [अ०] १. सचा । खरा ।

२. वच ।

संज्ञ पुं० १. जड़ । बुनियाद । २.

मूल धन ।

असलियत-संज्ञा स्त्री० तथ्य । सार ।

असली-वि० १. सचा । खरा । २.

शुद्ध ।

असचारो-संज्ञा पुं० दे० "सचार" ।

असह-वि० दे० "असह्य" ।

असहनशील-वि० [ संज्ञा असहन-  
शीलता ] १. जिसमें सहन करने की  
शक्ति न हो । २. चिढ़चिढ़ा ।

हुनक-मिजाज ।

असहनीय-वि० न सहने योग्य ।

असहयोग-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. मिल-

कर काम न करना । २. आधुनिक

राजनीति में प्रभावा उसके किसी

पक्ष का राज्य से असंतोष प्रकट

करने के लिये उसके कामों से

विरक्त रहना ।

असहाय-वि० जिसे कोई सहाय न हो ।

असहिष्णु-वि० [ संज्ञा असहिष्णुता ]

चिढ़चिढ़ा ।

असही-वि० दूसरे को देखकर अबने-

पाता ।

असह्य-वि० जो बरदाश्त न हो सके ।

असा-संज्ञा पुं० १. सोटा । डंडा ।

२. चांदी या सोने से मढ़ा हुआ

सोटा ।

असाढ़-संज्ञा पुं० दे० "आपाढ़" ।

असाढ़ी-वि० आपाढ़ का ।

संज्ञा स्त्री० १. वह फसल जो आपाढ़

में बोई जाय । खरीफ । २.

आपाढ़ी पृष्णि मा ।

असाधारण-वि० जो साधारण न

हो । असामान्य ।

असाध्य-वि० [ सं० ] न होने योग्य ।

कठिन ।

असामयिक-वि० [ सं० ] जो नियत

समय से पहले या पीछे हो ।

असामर्थ्य-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] शक्ति

का अभाव ।

असामान्य-वि० असाधारण ।

असामी-संज्ञा पुं० १. व्यक्ति । प्राणी ।

२. जिससे किसी प्रकार का लेन-

देन हो ।

संज्ञा स्त्री० नौकरी । जगह ।

असार-वि० [ संज्ञा असारता ] १. सार-

रहित । निःसार । २. तुच्छ ।

असालतनू-कि० वि० स्वयं । खुद ।

असावरी-संज्ञा स्त्री० छत्तीस रागिनिदो

में से एक ।

असि-संज्ञा स्त्री० सतवार । खड्ग ।

असित-वि० १. काला । २. दुष्ट ।

बुरा ।

असिद्ध-वि० [ सं० ] १. जो सिद्ध

न हो । २. कच्चा ।

असिद्धि-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] १.

अप्राप्ति । २. कष्टापन ।

असी-संज्ञा स्त्री० एक नदी जो काशी

के दक्षिण गंगा से मिली है ।

असीम-वि० [ सं० ] सीमा-रहित ।

बे-हद ।

असील-वि० दे० "असल" ।

असीस-संज्ञा स्त्री० दे० "आशिस" ।

असीसना-कि० सं० आशीर्वाद देना ।

दुआ देना ।

आटा-संज्ञा पुं० पिसान ।

आठ-वि० चार का दूना ।

आडंबर-संज्ञा पुं० [ वि० आडंबरी ]

१. ऊपरी घनावट । तड़क-भड़क ।

२. आच्छादन ।

आडंबर-वि० ढोंगी ।

आड़-संज्ञा स्त्री० १. छोट । परदा ।

२. रक्षा । आश्रय । ३. रोक ।

संज्ञा पुं० [ सं० अत = डंक ] बिच्छू या भिड़ आदि का डंक ।

संज्ञा स्त्री० [ सं० आलि = रेखा ] लंबी टिकली जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं ।

आड़न-संज्ञा स्त्री० ढाल ।

आड़ना-क्रि० स० १. रोकना ।

छुटना । २. बाँचना ।

आड़ी-संज्ञा स्त्री० ओर । तरफ़ ।

आड़त-संज्ञा स्त्री० किसी अन्य व्यापारी के माझ की बिक्री करा देने का व्यवसाय ।

आड़तिया-संज्ञा पुं० दे० "अड़तिया" ।

आढ्य-वि० [ सं० ] १. संपन्न । २.

युक्त । विशिष्ट ।

आणक-संज्ञा पुं० [ सं० ] एक रुपए का

सोलहवाँ भाग । आना ।

आतंक-संज्ञा पुं० १. रोषी दबदबा ।

२. भय ।

आततायी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आततायिनी ]

१. आग जलानेवाला । २. विष देनेवाला । ३. जमीन, धन या स्त्री हरनेवाला ।

आतप-संज्ञा पुं० १. धूप । २. गर्मी ।

आतपी-संज्ञा पुं० सूर्य ।

वि० धूप का । धूप-संबंधी ।

आत्मा-संज्ञा स्त्री० दे० "आत्मा" ।

आतश-संज्ञा स्त्री० आग । अग्नि ।

आतशक-संज्ञा पुं० [ वि० आतराकी ]

किरंग रोग । गर्मी ।

आतशदान-संज्ञा पुं० शौंगीठी ।

आतशपरस्त-संज्ञा पुं० अग्निपूजक ।

पारसी ।

आतशबाजी-संज्ञा स्त्री० बारूद के घने

हुप खिलाँनों के जलने का दृश्य ।

आतशी-वि० [ प्रा० ] अग्नि-संबंधी ।

आतिथ्य-संज्ञा पुं० मेहमानदारी ।

आतिथ-संज्ञा स्त्री० दे० "आतश" ।

आतिथ्य-संज्ञा पुं० उपादत्ती ।

आतुर-वि० [ संज्ञा आतुरता ] १.

व्याकुल । व्यग्र । २. दुःखी ।

क्रि० वि० शीघ्र । जल्दी ।

आतुरता-संज्ञा स्त्री० १. व्याकुलता ।

२. जल्दी ।

आतुरताई-संज्ञा स्त्री० दे० "आतुर-

ता" ।

आतुरी-संज्ञा स्त्री० १. घंघराहट ।

२. शीघ्रता ।

आत्म-वि० अपना ।

आत्मगौरव-संज्ञा पुं० अपनी बड़ाई

या प्रतिष्ठा का ध्यान ।

आत्मघात-संज्ञा पुं० अपने हाथों

अपने को मार डालने का काम ।

आत्मज्ञ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आत्मज्ञा ]

१. पुत्र । लड़का । २. कामदेव ।

आत्मज्ञ-संज्ञा पुं० जिसे निम्न स्वरूप

का ज्ञान हो ।

आत्मज्ञान-संज्ञा पुं० जीवात्मा और

परमात्मा के विषय में जानकारी ।

आत्मज्ञानी-संज्ञा पुं० आत्मा और

परमात्मा के संबंध में जानकारी

रखनेवाला ।

आत्मतुष्टि-संज्ञा स्त्री० आत्मज्ञान से

असः-संज्ञा पुं० दे० "अश्व" ।  
 असुविधा-संज्ञा स्त्री० बठिनाई ।  
 अद्वचन ।  
 असुर-संज्ञा पुं० [सं०] दैत्य । राक्षस ।  
 असुरारि-संज्ञा पुं० १. देवता । २. विष्णु ।  
 असूक्त-वि० १. अंधेरा । अंधकारमय ।  
 २. जिसका धारदार न दिखाई पड़े ।  
 अस्त-वि० विरुद्ध ।  
 अस्या-संज्ञा स्त्री० [ वि० असुयक ]  
 पराए गुण में दोष लगाना । इप्प्यां ।  
 डाह ।  
 असूर्यपश्या-वि० जिसको सूर्य भी  
 न देखे । परदे में रहनेवाली ।  
 असूल-संज्ञा पुं० दे० १. "बसूल"  
 और २. "बसूल" ।  
 असेसर-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो  
 जज को फौजदारी के मुकदमे में  
 राय देने के लिये चुना जाता है ।  
 असैला-वि० [ स्त्री० असैली ] रीति-  
 नीति के विरुद्ध कर्म करनेवाला ।  
 कुमार्गा ।  
 असोजा-संज्ञा पुं० आश्विन । क्वार  
 मास ।  
 असोस-वि० जो सूखे नहीं । न  
 सूखनेवाला ।  
 अस्तौघ-संज्ञा पुं० दुर्गेधि । बद्ध ।  
 अस्तंगत-वि० अस्त को प्राप्त ।  
 अस्त-वि० [ सं० ] १. छिया हुआ ।  
 २. हुआ हुआ (सूर्य, चंद्र आदि) ।  
 ३. नष्ट ।  
 संज्ञा पुं० [ सं० ] लोप । अदर्शन ।  
 अस्तयल-संज्ञा पुं० धुइसाल ।  
 अस्तमन-संज्ञा पुं० [ वि० अस्तमित ]  
 १. अस्त होना । २. सूर्यादि ग्रहों

का अस्त होना ।  
 अस्तमित-वि० [ सं० ] १. हुआ  
 हुआ । २. नष्ट । ३. मृत ।  
 अस्तर-संज्ञा पुं० [ फा० ] १. नीचे की  
 तह या पट्टा । भित्ति । २. वह  
 कपड़ा जिसे छिरिया घारीक साड़ी के  
 नीचे लगाकर पहनती हैं ।  
 अस्तरकारी-संज्ञा स्त्री० १. चुने की  
 लिपाई । कूड़ाई । २. गच्चकारी ।  
 पलस्तर ।  
 अस्तव्यस्त-वि० उलटा-पुलटा ।  
 अस्ताचल-संज्ञा पुं० वह कल्पित  
 पर्वत जिसके पीछे अस्त होने पर  
 सूर्य का छिप जाना कहा जाता है ।  
 अस्ति-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] भाव । सत्ता ।  
 अस्तित्व-संज्ञा पुं० [ सं० ] सत्ता  
 का भाव । विद्यमानता । होना ।  
 मौजूदगी ।  
 अस्तु-अव्य० [ सं० ] १. जो हो ।  
 चाह जो हो । २. खैर ।  
 अस्तुति-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] निंदा ।  
 बुराई ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "स्तुति" ।  
 अस्तुरा-संज्ञा पुं० घाल बनाने का  
 छुरा ।  
 अस्तेय-संज्ञा पुं० चोरी का त्याग ।  
 अस्त्र-संज्ञा पुं० १. वह हथियार जिसे  
 फेंककर शत्रु पर चलावे । २. वह  
 हथियार जिससे चिकित्सक घीर-फाड़  
 करते हैं ।  
 अस्त्रचिकित्सा-संज्ञा स्त्री० वैद्यक-  
 शास्त्र का वह अंश जिसमें घीर-फाड़  
 का विधान है ।  
 अस्त्रवेद-संज्ञा पुं० धनुर्वेद ।  
 अस्त्रशाला-संज्ञा स्त्री० वह स्थान  
 जहाँ अस्त्र-शस्त्र रखे जायें ।

[ उत्पन्न संतोष या आसंद ।

आत्मत्याग-संज्ञा पुं० दूसरों के हित के लिये अपना स्वार्थ छोड़ना ।

आत्मबोध-संज्ञा पुं० दे० "आत्म-ज्ञान" ।

आत्मभू-वि० १. अपने शरीर से उत्पन्न । २. आप ही आप उत्पन्न ।

संज्ञा पुं० ब्रह्मा । विष्णु । शिव ।

आत्मरक्षा-संज्ञा स्त्री० अपनी रक्षा या बचाव ।

आत्मविद्या-संज्ञा स्त्री० वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो । ब्रह्मविद्या ।

आत्मविस्मृति-संज्ञा स्त्री० अपने को भूल जाना ।

आत्मसंयम-संज्ञा पुं० अपने मन को रोकना । इच्छाओं का वश में रखना ।

आत्महत्या-संज्ञा स्त्री० अपने आपको मार डालना ।

आत्मा-पुं० [ वि० आत्मिक, आत्मीय ] १. जीव । चतुर्थ । २. देह ।

आत्माराम-संज्ञा पुं० आत्मज्ञान से सुख योगी ।

आत्मावलंबी-संज्ञा पुं० जो सब काम अपने यत्न पर करे ।

आत्मक-वि० [ स्त्री० आत्मिका ] १. आत्मा संबंधी । २. मानसिक ।

आत्मीय-वि० [ स्त्री० आत्मीया ] निज का । अपना ।

संज्ञा पुं० अपना संबंधी । रिश्तेदार ।

आत्मीयता-संज्ञा स्त्री० मैत्री ।

आत्मोत्सर्ग-संज्ञा पुं० दूसरे की भलाई के लिये अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना ।

आत्मोद्धार-संज्ञा पुं० मोक्ष ।

आत्यंतिक-वि० [ स्त्री० आत्यंतिकी ] जो बहुतायत से हो ।

आत्रेय-वि० १. अत्रि-संबंधी । २. अत्रि गोत्रवाला ।

आत्रेयी-संज्ञा स्त्री० एक सप्तस्विनी जो वेदांत में बड़ी निष्णात थी ।

आथर्वण-संज्ञा पुं० अथर्व वेद का ज्ञानेवाला शास्त्र ।

आथि-संज्ञा स्त्री० पूँजी ।

आदत्त-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. स्वभाव । २. अभ्यास ।

आदम-संज्ञा पुं० मनुष्यों का आदि प्रजापति ।

आदमजाद-संज्ञा पुं० मनुष्य ।

आदमियत-संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यत्व । २. सम्यक्ता ।

आदमी-संज्ञा पुं० १. मनुष्य । २. नौकर ।

आदर-संज्ञा पुं० सम्मान ।

आदरणीय-वि० आदर योग्य ।

आदर भाव-संज्ञा पुं० सत्कार ।

आदर्श-संज्ञा पुं० १. दर्पण । २. नमूना ।

आदान-प्रदान-संज्ञा पुं० लेना-देना ।

आदाव-संज्ञा पुं० नमस्कार । सलाम ।

आदि-वि० प्रथम ।

अव्य० वगैरह । आदिक ।

आदिक-अव्य० आदि । वगैरह ।

आदिकारण-संज्ञा पुं० मूल कारण ।

आदित्य-संज्ञा पुं० १. देवता । २. सूर्य ।

आदित्यचार-संज्ञा पुं० पुतवार ।

आदिम-वि० पहले का । पहला ।

आदिल-वि० न्यायी । न्यायवान् ।

अस्त्रागार-संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रशाला ।  
 अस्त्री-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अस्त्रिणी ]  
 अस्त्रधारी मनुष्य । हथियारबंद ।  
 अस्थि-संज्ञा स्त्री० हड्डी ।  
 अस्थिर-वि० चंचल । चलायमान ।  
 डाँवाढोल ।  
 ० वि० दे० "स्थिर" ।  
 अस्पताल-संज्ञा पुं० औषधालय ।  
 दवाखाना ।  
 अस्पृश्य-वि० [ सं० ] जो छूने योग्य  
 न हो ।  
 अस्फुट-वि० [ सं० ] जो स्पष्ट न हो ।  
 अस्त्र-संज्ञा पुं० १. कोना । २. रुधिर ।  
 अस्त्रप-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. राक्षस ।  
 २. मूल नक्षत्र । ३. जोक ।  
 वि० रक्त पीनेवाला ।  
 अस्वस्थ-वि० [ सं० ] रोगी ।  
 अस्थामाधिक-वि० [ सं० ] १. प्रकृति-  
 विरुद्ध । २. अनावदी ।  
 अस्वीकार-संज्ञा पुं० [ वि० अस्वीकृत ]  
 इनकार । नाहीं ।  
 अस्वीकृत-वि० ना-मंजूर किया हुआ ।  
 अस्ती-वि० सत्तर और दस की  
 संख्या । दस का अठगुना ।  
 अहं-सर्व० मैं ।  
 संज्ञा पुं० अहंकार । अभिमान ।  
 अहंकार-संज्ञा पुं० [ वि० अहंकारी ]  
 १. अभिमान । २. "मैं हूँ" या "मैं  
 करता हूँ" इस प्रकार की भावना ।  
 अहंकारी-वि० [ स्त्री० अहंकारिणी ]  
 अहंकार करनेवाला । धमंडी ।  
 अहंता-संज्ञा स्त्री० अहंकार । गर्व ।  
 अहंघाद-संज्ञा पुं० डींग मारना ।  
 अह-संज्ञा पुं० दिन ।  
 अर्थ० आरपय, खेद या क्लेश आदि

का सूचक शब्द ।  
 अहक-संज्ञा स्त्री० इच्छा ।  
 अहकना-कि० अ० लाजसा करना ।  
 प्रचल इच्छा करना ।  
 अहटाना-कि० अ० आहट लगाना ।  
 पता चलाना ।  
 कि० सं० आहट लेना । टोह लेना ।  
 कि० अ० दुखना ।  
 अहद-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा । वादा ।  
 अहदी-वि० पुं० आहसी ।  
 संज्ञा पुं० [ अ० ] अक्षर के समय  
 के एक प्रकार के सिपाही जिनसे  
 बड़ी आवश्यकता के समय काम  
 लिया जाता था और जो सप्त दिन  
 बैठे खाते थे ।  
 अहन्-संज्ञा पुं० दिन ।  
 अहना-कि० अ० होना । (अथ  
 यह किया केवल वसमान रूप  
 "अह" में ही होती जाती है ।)  
 अहनिसि-अर्थ० दे० "अहनिश" ।  
 अहमक-वि० बेवकूफ । मूर्ख ।  
 अहमिति-संज्ञा स्त्री० १. दे० अहं-  
 कार । २. अविद्या ।  
 अहमेय-संज्ञा पुं० गर्व । धमंड ।  
 अहरन-संज्ञा स्त्री० निहाई ।  
 अहरना-कि० सं० लकड़ी को छील-  
 कर सुझील करना ।  
 अहरा-संज्ञा पुं० १. कंठे का ढेर ।  
 २. वह स्थान जहाँ लोग उहरे ।  
 अहानश-कि० वि० रात-दिन ।  
 अहलकार-संज्ञा पुं० कर्मचारी ।  
 अहलमद-संज्ञा पुं० अदालत का वह  
 कर्मचारी जो मुकदमों की मिसिलें  
 रखता तथा अदालत के हुक्म के  
 अनुसार हुक्मनामे जारी करता है ।



आदी-वि० अग्र्यस्त ।  
 † संज्ञा स्त्री० यद्वरक ।  
 आदृत-वि० सम्मानित ।  
 आदेश-संज्ञा पुं० [वि० आदेशक, आदिष्ट]  
 १. आज्ञा । २. उपदेश ।  
 आदेश-संज्ञा पुं० दे० "आदेश" ।  
 आद्यंत-क्रि० वि० आदि से अंत तक ।  
 आद्य-वि० पहला ।  
 आद्या-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।  
 आद्योपांत-क्रि० वि० शुरू से आखीर तक ।  
 आद्या-संज्ञा स्त्री० दे० "आद्या" ।  
 आद्य-वि० आधा ।  
 आधा-वि० [ स्त्री० आधी ] दो धरा-  
 धर हिस्सों में से एक ।  
 आधान-संज्ञा पुं० १. स्थापन । २.  
 गिरवी या बंधक रखना ।  
 आधार-संज्ञा पुं० १. आश्रय । २.  
 बुनियाद ।  
 आधारी-वि० [ स्त्री० आधारिणी ] सहारा  
 रखनेवाला । सहारे पर रहनेवाला ।  
 आधासीसी-संज्ञा स्त्री० आधे सिर  
 की पीड़ा ।  
 आधिक-वि० आधा ।  
 क्रि० वि० आधे के लगभग । थोड़ा ।  
 आधिक्य-संज्ञा पुं० बहुतायत ।  
 आधिपत्य-संज्ञा पुं० प्रभुत्व ।  
 आधीन-वि० दे० "अधीन" ।  
 आधुनिक-वि० वर्तमान समय का ।  
 आध्यात्मिक-वि० आत्मा-संबंधी ।  
 आनंद-संज्ञा पुं० [वि० आनंदित, आनंदी]  
 हर्ष । प्रसन्नता ।  
 आनंद-घडाई-संज्ञा स्त्री० मंगल-  
 संस्कार ।  
 आनंदवन-संज्ञा पुं० कारी ।

आनंदित-वि० हर्षित । प्रसन्न ।  
 आनंदी-वि० १. हर्षित । २. प्रसन्न  
 रहनेवाला ।  
 आन-संज्ञा स्त्री० १. मर्यादा । २.  
 शपथ । ३. ढंग । ४. पठ ।  
 ० वि० [ सं० अन्य ] दूसरा । धीर ।  
 आनक-संज्ञा पुं० १. ढंका । २. गर-  
 जता हुआ धातल ।  
 आनकदुंदुभी-संज्ञा पुं० १. बड़ा  
 नगाड़ा । २. कृष्ण के पिता वसुदेव ।  
 आनन-संज्ञा पुं० १. मुख । २.  
 चेहरा ।  
 आनन फानन-क्रि० वि० अति शीघ्र ।  
 फौरन ।  
 आनना-वि० सं० खाना ।  
 आनधान-संज्ञा स्त्री० १. सज्जज ।  
 २. ठसक ।  
 आनयन-संज्ञा पुं० १. छाना । २.  
 उपनयन संस्कार ।  
 आनरेरी-वि० अवैतनिक ।  
 आनर्त्त-संज्ञा पुं० [ वि० आनर्त्तक ]  
 १. नृत्यशाला । २. युद्ध ।  
 आना-संज्ञा पुं० एक रूप का सोल-  
 हवा हिस्सा ।  
 क्रि० अ० १. आगमन करना । २.  
 जाकर खीटना ।  
 आनाफानी-संज्ञा स्त्री० १. न ध्यान  
 देने का कार्य । २. ढाल-मद्दल ।  
 आनि-संज्ञा स्त्री० दे० "आन" ।  
 आनुवंशिक-वि० वंशानुक्रमिक ।  
 आनुषंगिक-वि० गौण । अग्रधान ।  
 प्रासंगिक ।  
 आन्वीक्षिकी-संज्ञा स्त्री० १. आत्म-  
 विद्या । २. तर्कविद्या ।  
 आप-सर्व० स्वयं । खुद ।  
 आपगा-संज्ञा स्त्री० नदी ।

अहल्या-संज्ञा स्त्री० गौतम ऋषि की पत्नी ।

अहसान-संज्ञा पुं० १. किसी के साथ नेकी करना । २. कृतज्ञता ।

अहह-अव्य० आश्चर्य, खेद, क्लेश या शोक-सूचक एक शब्द ।

अहा-अव्य० प्रसन्नता-सूचक एक शब्द ।

अहाता-संज्ञा पुं० घेरा । हाता ।

अहारना-कि० सं० १. खाना । २. चपकाना । ३. कपड़े में माँड़ी देना । ४. दे० "गहरना" ।

अहाहा-अव्य० हर्ष-सूचक अव्यय ।

अहिंसा-संज्ञा स्त्री० किसी को दुःख न देना । किसी जीव को न सताना या न मारना ।

अहिंस्त्र-वि० जो हिंसा न करे ।

अहि-संज्ञा पुं० सर्प ।

अहित-वि० शत्रु । वैरी ।

संज्ञा पुं० घुराई । अकल्याण ।

अहिफेन-संज्ञा पुं० १. सर्प के मुँह की लार या फेन । २. अफीम ।

अहिवेल-संज्ञा स्त्री० नाग-वेल । पान ।

अहिवात-संज्ञा पुं० [वि० अहिवातो] स्त्री का सौभाग्य । सौभाग ।

अहिवाती-वि० स्त्री० सौभाग्यवती ।

अहीर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अहीरिन ] गजाला ।

अहीश-संज्ञा पुं० १. शेषनाग । २. शेष के अवतार लक्ष्मण और बलराम आदि ।

अहुठ-वि० साढ़े तीन । तीन और आधा ।

अहेतु-वि० १. बिना कारण का । २. व्यर्थ । फ़ज़ूल ।

अहेतुक-वि० दे० "अहेतु" ।

अहेर-संज्ञा पुं० १. शिकार । मृगया । २. वह जंतु जिसका शिकार किया जाय ।

अहेरी-संज्ञा पुं० शिकारी ।

अहो-अव्य० एक अव्यय ।

अहोरात्र-संज्ञा पुं० दिन-रात ।

अहोरा-यहोरा-संज्ञा पुं० विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन अपने घर लौट जाती है । हेराफेरी ।

## आ

आ-हिंदी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है ।

आँक-संज्ञा पुं० १. अंक । चिह्न । २. अदद । ३. अक्षर । ४. लकीर ।

आँकड़ा-संज्ञा पुं० १. अंक । अदद ।

आँकना-कि० सं० [ सं० अंकन ] १.

चिह्नित करना । २. अंदाज़ करना ।

आँकर-वि० १. गहरा । २. बहुत अधिक ।

वि० महँगा ।

आँकुस-संज्ञा पुं० दे० "अंकुश" ।

आँख-संज्ञा स्त्री० १. वह इंद्रिय

आपत्काल-संज्ञा पुं० १. विपत्ति ।

२. दुष्काल ।

आपत्ति-संज्ञा स्त्री० १. दुःख । २. विपत्ति । ३. वृद्ध ।

आपद्-संज्ञा स्त्री० विपत्ति ।

आपदा-संज्ञा स्त्री० दुःख ।

आपन, आपना ० †-सर्व० दे० "अपना" ।

आपन्न-वि० आपद्ग्रस्त ।

आपन्न-वि० अपने रूप से युक्त । साक्षात् ।

आपत्त-संज्ञा स्त्री० १. संबंध । नाता । २. एक दूसरे का साथ ।

आपा-संज्ञा पुं० १. अपना अस्तित्व । २. अहंकार । ३. होश-हवास ।

आपात-संज्ञा पुं० पतन ।

आपाततः-क्रि० वि० १. अकस्मात् । २. आश्चर्यकार ।

आपातलिका-संज्ञा स्त्री० एक छंद ।

आपाधापा-संज्ञा स्त्री० १. अपनी अपनी धुन । २. लाग-डाँट ।

आपापंथी-वि० मनमाने मार्ग पर चलनेवाला । कुपंथी ।

आपीठ-संज्ञा पुं० पूर्वापाठ नक्षत्र ।

आपीठ-संज्ञा पुं० सिर पर पहनने की चीज़ ।

आपुं-सर्व० दे० "आप" ।

आपुन-सर्व० दे० "अपना" । "आप" ।

आपुस-संज्ञा पुं० दे० "आपस" ।

आपूरना-क्रि० अ० भरना ।

आपेक्षिक-वि० १. अपेक्षा रखनेवाला । २. निर्भर रहनेवाला ।

आप्त-वि० १. प्राप्त । २. दत्त । संज्ञा पुं० आपि ।

आप्तकाम-वि० पूर्णकाम ।

आप्ति-संज्ञा स्त्री० प्राप्ति । लाभ ।

आप्यायन-संज्ञा पुं० [ वि० आप्यायित ] १. वृद्धि । २. तृप्ति । तर्पण ।

आप्लावन-संज्ञा पुं० [ वि० आप्लावित ] डुबाना । वोगना ।

आकृत-संज्ञा स्त्री० १. विपत्ति । २. दुःख ।

आफताब-संज्ञा पुं० [ वि० आफताबी ] सूर्य ।

आफताब-संज्ञा पुं० हाथ-मुँह धुलाने का एक प्रकार का गड्ढा ।

आफताबी-वि० सूर्य-संबंधी ।

आफू-संज्ञा स्त्री० अफीम ।

आव-संज्ञा स्त्री० १. चमक । २. पानी । छवि ।

संज्ञा पुं० पानी ।

आवकारी-संज्ञा स्त्री० १. शराब-खाना । २. मादक वस्तुओं से संबंध रखनेवाला सरकारी मुहकमा ।

आवताय-संज्ञा स्त्री० चमक-दमक ।

आवदस्त-संज्ञा पुं० सौचन । पानी छुना ।

आव-दाना-संज्ञा पुं० १. अन्न-जल । २. जीविका ।

आवदार-वि० चमकीला ।

आवदारी-संज्ञा स्त्री० कांति ।

आवद्ध-वि० १. बँधा हुआ । २. कैद ।

आवनूस-संज्ञा पुं० [ वि० आवनूसी ] एक जंगली पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत काली होती है ।

आवनूसी-वि० १. आपनूस का सा काला । २. आवनूस का घना हुआ ।

आवपाशी-संज्ञा स्त्री० सिंचाई ।

आवरवा-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बहुत महीन मलमल ।

जिससे प्राणियों को रूप अर्थात् वर्ण,  
विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता  
है। नेत्र। लोचन। २. दृष्टि।  
नजर। ध्यान। ३. विचार। विवेक।  
परख। शिनाखन। पहचान। ४.  
कुरादृष्टि। दया-भाष। ५. संतति।  
संतान। लड़का-बाला। ६. आँख  
के आकार का छेद या चिह्न। जैसे—  
सूई का छेद।

आँखड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० “आँख”।  
आँखफोड़ टिड्ढा—संज्ञा पुं० १. हरे  
रंग का एक कीड़ा या फतिया। २.  
कृमय। पे-मुराभत।

आँखमिचौली, आँखमीचली—संज्ञा  
स्त्री० लड़कों का एक खेल जिसमें एक  
लड़का किसी दूसरे लड़के को आँख  
भूँदकर बैठता है और बाकी लड़के  
धुंधर-धुंधर घिरते हैं जिन्हें उस आँख  
भूँदनेवाले लड़के को ढूँढ़कर छुना  
पड़ता है।

आँग—संज्ञा पुं० अंग।

आँगन—संज्ञा पुं० घर के भीतर का  
सड़न।

आँगिरस—संज्ञा पुं० [ सं० ] अंगिरा  
के पुत्र।

वि० अंगिरा-संबंधी। अंगिरा का।

आँगिया—संज्ञा स्त्री० दे० “अंगिया”।

आँगुरी—संज्ञा स्त्री० दे० “अँगुरी”।

आँच—संज्ञा स्त्री० १. गरमी। २.

आग की लपट। लौ। ३. आग।

४. आघात। चोट। ५. हानि।

आँचना—कि० स० लक्ष्मना।

आँचल—संज्ञा पुं० दे० “आँचल”।

आँचल—संज्ञा पुं० १. घोली, दुपट्टे  
आदि के दोनों छोरों पर का भाग।

पल्ला। छोर। २. साड़ी या  
ओढ़नी का वह भाग जो सामने  
छाती पर रहता है।

आँजना—कि० स० अंजन लगाना।  
आँजनेय—संज्ञा पुं० अंजना के पुत्र  
हनुमान्।

आँट—संज्ञा स्त्री० १. हथेली में तर्जनी  
और अँगूठे के बीच का स्थान। २.  
गिरह। गाँठ।

आँटना—कि० प्र० दे० “अँटना”।

आँटी—संज्ञा स्त्री० १. लंबे तृणों का  
छोटा गट्टा। २. सूत का लच्छा।

आँठी—संज्ञा स्त्री० १. दही, मलाई  
आदि वस्तुओं का लच्छा। २.  
गुठली। बीज।

आँत—संज्ञा स्त्री० प्राणियों के पेट के  
भीतर की लंबी नली। अंत्र।  
अंतर्दी।

आँतरा—संज्ञा पुं० दे० “अंतर”।

आँदोलन—संज्ञा पुं० [ सं० ] १. चार चार  
हिलना-डोलना। २. उथल-सुथल  
करनेवाला प्रयत्न। हलचल। धूम।

आँधी—संज्ञा स्त्री० बड़े वेग की हवा  
जिससे इतनी धूल उड़ती है कि चारों  
ओर धँपेरा छा जाय। अंधड़।

वि० आँधी की तरह संज्ञ।

आँध—संज्ञा पुं० ताप्ती नदी के किनारे  
का देश।

आँय-बाँय—संज्ञा स्त्री० अनाप-शनाप।  
अर्थ की बात।

आँव—संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना  
सफ़ेद जलदार मल जो अन्न न पचने  
से उत्पन्न होता है।

आँवठ—संज्ञा पुं० किनारा।

आँवला—संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके

आयु-संज्ञा स्त्री० इज्जत । मान ।  
 आय-हवा-संज्ञा स्त्री० जल-वायु ।  
 आवाद-वि० बसा हुआ ।  
 आवादकार-संज्ञा पुं० वे कारतकार  
 जो जंगल काटकर आवाद हुए हों ।  
 आवादी-संज्ञा स्त्री० १. बस्ती । २.  
 जनसंख्या ।  
 आचिदिक-वि० धार्मिक ।  
 आभरण-संज्ञा पुं० [ वि० आभरित ]  
 गहना ।  
 आभरण-संज्ञा पुं० दे० "आभरण" ।  
 आभा-संज्ञा स्त्री० चमक । कान्ति ।  
 आभार-संज्ञा पुं० १. धोका । २. पद-  
 सान । उपकार ।  
 आभारी-वि० उपकार माननेवाला ।  
 उपकृत ।  
 आभास-संज्ञा पुं० १. झलक । २.  
 पता ।  
 आभीर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आभीरी ] १.  
 घड़ी । ग्वाळ । गोप । २. ११  
 नात्राओं का एक छंद । ३. एक राग ।  
 आभीरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार रागिनी ।  
 आभूषण-संज्ञा पुं० [ वि० आभूषित ]  
 गहना । जेवर ।  
 आभूषण-संज्ञा पुं० दे० "आभूषण" ।  
 आभ्यन्तर-वि० भीतरी ।  
 आभ्यन्तरिक-वि० भीतरी ।  
 आमंत्रण-संज्ञा पुं० [ वि० आमंत्रित ]  
 बुलाना । न्योता ।  
 आमंत्रित-वि० १. बुलाया हुआ ।  
 २. निमंत्रित ।  
 आम-संज्ञा पुं० १. एक बड़ा पेड़  
 जिसका फल हिंदुस्तान का प्रधान  
 फल है । रसाख । २. इस पेड़  
 का फल ।

वि० साधारण । मामूली ।  
 आमड़ा-संज्ञा पुं० एक बड़ा पेड़  
 जिसके फल खट्टे और बड़े घेर के  
 बराबर होते हैं ।  
 आमद-संज्ञा स्त्री० १. अवाह । आग-  
 मन । आना । २. आय ।  
 आमदनी-संज्ञा स्त्री० आय ।  
 आमना सामना-संज्ञा पुं० मुकाबला ।  
 आमने सामने-कि० वि० एक दूसरे  
 के समक्ष ।  
 आमय-संज्ञा पुं० रोग ।  
 आमरकातिसार-संज्ञा पुं० आँव  
 और खट्टे के साथ दस्त होने का रोग ।  
 आमरख-संज्ञा पुं० दे० "आमरप" ।  
 आमरखना-कि० भ० दुःखपूर्वक  
 क्रोध करना ।  
 आमरण-कि० वि० जिंदगी भर ।  
 आमरस-संज्ञा पुं० दे० "अमरस" ।  
 आमर्दन-संज्ञा पुं० [ वि० आमर्दित ]  
 ज़ोर से मलना ।  
 आमर्प-संज्ञा पुं० १. क्रोध । २. अत-  
 इनधीलता ।  
 आमलक-संज्ञा पुं० [ स्त्री०, अवयव आम-  
 लकी ] आँवला ।  
 आमला-संज्ञा पुं० दे० "आँवला" ।  
 आमशूल-संज्ञा पुं० आँव के कारण  
 पेट में मरोड़ होने का रोग ।  
 आमातिसार-संज्ञा पुं० आँव के  
 कारण अधिक दस्तों का होना ।  
 आमात्य-संज्ञा पुं० दे० "अमात्य" ।  
 आमादा-वि० उद्यत । तत्पर ।  
 आमाशय-संज्ञा पुं० पेट के भीतर की  
 वह धैजी जिसमें भोजन किए हुए  
 पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं ।  
 आमिळ-संज्ञा पुं० दे० "आमिप" ।  
 आमिळ-संज्ञा पुं० १. काम करने-

गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं।

**आघलासार गंधक-संज्ञा** ली० खूब साफ़ की हुई गंधक जो पारदर्शक होती है।

**आर्घा-संज्ञा** पु० वह गड़ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

**आंशिक-वि०** अंश-संबंधी।

**आशुफ जल-संज्ञा** पु० वह जल जो दिन भर धूप में और रात भर चांदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय। (वैद्यक)

**आस-संज्ञा** पु० दे० "आसू"।

**आसी-संज्ञा** ली० भात्री। बौना। मिठाई जो इष्ट-मित्रों के यहाँ बाँटी जाती है।

**आसु-संज्ञा** पु० वह जल जो आँखों से शोक या पीड़ा के समय निकलता है। अश्रु।

**आहड़-संज्ञा** पु० बरतन।

**आर्हा-अव्य०** अस्वीकार या निषेध-सूचक एक शब्द। नहीं।

**आ-अव्य०** एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, व्याप्ति, थोड़े और अतिक्रमण के अर्थों में होता है।

उप० एक वपसर्ग जो प्रायः मूलार्थक धातुओं के पहले लगता है और उनके अर्थों में कुछ थोड़ी सी विशेषता कर देता है; जैसे—आरोहण, आर्कपन। जब यह 'गम्' (जाना), 'या' (जाना), 'दा' (देना) तथा 'नी' (ले जाना) धातुओं के पहले लगता है, तब उनके अर्थों को उलट देता है; जैसे—'गमन' से 'यागमन',

'नयन' से 'आनयन'; 'दान' से 'आदान'।

**आइंदा-वि०** आनेवाला। भविष्य। संज्ञा पु० [ फ़० ] भविष्य-काल। क्रि० वि० आगे। भविष्य में।

**आइ-संज्ञा** ली० आयु। जीवन। **आइना-संज्ञा** पु० दे० "आईना"।

**आईन-संज्ञा** पु० १. नियम। २. कानून।

**आईना-संज्ञा** पु० आरसी।

**आईनी-वि०** कानूनी। राजनियम के अनुकूल।

**आउ-संज्ञा** ली० जीवन। उन्न।

**आउज-संज्ञा** पु० ताशा।

**आकंपन-संज्ञा** पु० कपना।

**आफ-संज्ञा** पु० मदार। अकौथा।

**आफड़ा-संज्ञा** पु० दे० "आफ"।

**आक्वत-संज्ञा** ली० मरने के पीछे की अवस्था।

**आकर-संज्ञा** पु० १. खान। २. खजाना। ३. किस्म।

**आकरिक-संज्ञा** पु० खान खोदने-वाला।

**आकरी-संज्ञा** ली० खान खोदने का काम।

**आकर्ण-वि०** कान तक फैला हुआ।

**आकर्ष-संज्ञा** पु० [ सं० ] १ एक जगह के पदार्थ का घल से दूसरी जगह जाना। खिंचाव। २. पास का खेल। ३. चिसात। चौपड़।

**आकर्षक-वि०** आकर्षण करनेवाला। खींचनेवाला।

**आकर्षण-संज्ञा** पु० [ वि० आकर्षित, आकृष्ट ] किसी वस्तु का दूसरी वस्तु

वाला । कर्मचारी । २. हाकिम ।  
 ३. सिद्ध ।  
 आमिप-संज्ञा पुं० मांस ।  
 आमिपाशी-वि० [खी० आमिपारिणी]  
 मांसभक्षक ।  
 आमुख-संज्ञा पुं० नाटक की प्रस्तावना ।  
 आमोजना-कि० स० मिलाना ।  
 सानना ।  
 आमोद-संज्ञा पुं० [ वि० आमोदित,  
 आमोदी ] १. आनंद । हर्ष । २. दिल-  
 बहलाव ।  
 आमोद-प्रमोद-संज्ञा पुं० भोग-  
 विलास । हंसी-खुशी ।  
 आमोदित-वि० १. प्रसन्न । २. जी  
 बहला हुआ ।  
 आमोदी-वि० खुश रहनेवाला ।  
 आम्र-संज्ञा पुं० आम का पेड़ या फल ।  
 आयँती पायँती-संज्ञा स्त्री० सिर-  
 हाना । पायताना ।  
 आय-संज्ञा स्त्री० आमदनी । प्राप्ति ।  
 आयत्त-वि० विस्तृत । दीर्घ ।  
 'संज्ञा स्त्री० [ अ० ] ईजीज या कुरान  
 का वाक्य ।  
 आयतन-संज्ञा पुं० भवन ।  
 आयत्त-वि० अधीन ।  
 आयत्ति-संज्ञा स्त्री० अधीनता ।  
 आयस-संज्ञा पुं० [वि० आयसी] लोहा ।  
 आयसी-वि० लोहे का ।  
 'संज्ञा पुं० कवच । जिरहपकर ।  
 आयसु-संज्ञा स्त्री० आज्ञा । हुक्म ।  
 आया-कि० अ० आना का भूत-  
 कालिक रूप ।  
 'संज्ञा स्त्री० धार । धात्री ।  
 'अर्थ० क्या । कि ।  
 आयाते-संज्ञा पुं० देश में बाहर से

आया माल ।  
 आयाम-संज्ञा पुं० लंबाई । विस्तार ।  
 आयास-संज्ञा पुं० परिश्रम । मेहनत ।  
 आयु-संज्ञा स्त्री० उम्र ।  
 आयुध-संज्ञा पुं० हथियार । शस्त्र ।  
 आयुर्वेद-संज्ञा पुं० उम्र ।  
 आयुर्वेद-संज्ञा पुं० [ वि० आयुर्वेदीय ]  
 आयु-संबंधी शास्त्र । चिकित्सा-शास्त्र ।  
 आयुष्मान्-वि० [ स्त्री० आयुष्मती ]  
 दीर्घजीवी । चिरजीवी ।  
 आयुष्य-संज्ञा पुं० उम्र ।  
 आयोजन-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आयोजना ।  
 वि० आयोजित ] १. किसी कार्य में  
 लगाना । २. प्रबंध । ३. सामान ।  
 आरंभ-संज्ञा पुं० शुरू ।  
 आरंभना-कि० अ० शुरू होना ।  
 कि० स० आरंभ करना ।  
 आर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का विना  
 साफ़ किया निकुट लोहा । २. कोना ।  
 आरक-वि० लाल ।  
 आरज-वि० दे० "आर्य" ।  
 आरजा-संज्ञा पुं० रोग ।  
 आरजू-संज्ञा स्त्री० १. इच्छा । २.  
 अनुनय । विनय । विनती ।  
 आरण्य-वि० वन का ।  
 आरण्यक-वि० [स्त्री० आरण्यकी] वन  
 का । जंगली ।  
 आरत-वि० दे० "आर्त" ।  
 आरति-संज्ञा स्त्री० १. विरक्ति । २.  
 दे० "आर्ति" ।  
 आरती-संज्ञा स्त्री० १. किसी मूर्ति  
 के ऊपर दीपक को घुमाना । २.  
 वह पात्र जिसमें कपूर या घी की  
 बत्ती रखकर आरती की जाती है ।

के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा ले लाया जाना ।

**आकर्षण शक्ति**-संज्ञा स्त्री० भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं ।

**आकर्षित**-वि० खींचा हुआ ।

**आकलन**-संज्ञा पुं० [ वि० आकलनीय, आकलित ] १. ग्रहण । २. संग्रह । ३. गिनती करना ।

**आकली**-संज्ञा स्त्री० आकुलता । ये-चैनी ।

**आकस्मिक**-वि० जो बिना किसी कारण के हो ।

**आकांक्षा**-संज्ञा स्त्री० इच्छा । अभिलाषा ।

**आकांक्षित**-वि० १. इच्छित । २. अपेक्षित ।

**आकांक्षी**-वि० [ स्त्री० आकांक्षिणी ] इच्छा करनेवाला ।

**आकार**-संज्ञा पुं० १. स्वरूप । २. ढील-ढील । ३. बनावट ।

**आकारी**-वि० [ स्त्री० आकारिणी ] आह्वान करनेवाला । बुलानेवाला ।

**आकाश**-संज्ञा पुं० अंतरिक्ष । आसमान ।

**आकाशकुसुम**-संज्ञा पुं० १. आकाश का फूल । २. अनहोनी पात ।

**आकाशगंगा**-संज्ञा स्त्री० बहुत से छोटे छोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला है ।

**आकाशचारी**-वि० आकाशमें फिरनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. सूर्यादि ग्रह । नक्षत्र । २. वायु । ३. पृथ्वी । ४. देवता ।

**आकाशदीया**-संज्ञा पुं० वह दीपक जो कार्तिक में हिंदू लोग कडील में रखकर एक ऊँचे घाँस के सिरे पर बाँधकर जलाते हैं ।

**आकाशचेल**-संज्ञा स्त्री० दे० "अमर-चेल" ।

**आकाशमापित**-संज्ञा पुं० नाटक के अभिनय में घुसा का ऊपर की ओर देखकर किसी प्रश्न को इस तरह कहना माना वह उससे किया जा रहा है और फिर उसका उत्तर देना ।

**आकाशमंडल**-संज्ञा पुं० खगोल ।

**आकाशलोचन**-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति या गति देखी जाती है । मानमंदिर । अद्वैतघेरी ।

**आकाशवाणी**-संज्ञा स्त्री० [ सं० ] वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोलें ।

**आकाशवृत्ति**-संज्ञा स्त्री० ऐसी आस-दनी जो बँधी न हो ।

**आकाशी**-संज्ञा स्त्री० वह चाँदनी जो धूप आदि से बचने के लिये तानी जाती है ।

**आकिल**-वि० बुद्धिमान् ।

**आकीर्ण**-वि० व्याप्त । पूर्ण ।

**आकुंचन**-संज्ञा पुं० सिकुड़ना ।

**आकुंठन**-संज्ञा पुं० [ वि० आकुंठित ] १. गुठला या कुंद होना । २. कक्षा ।

**आकुल**-वि० [ संज्ञा आकुलता ] व्यथित । घबराया हुआ ।

**आकुलता**-संज्ञा स्त्री० [ वि० आकुलित ] १. व्याकुलता । २. व्याप्ति ।

**आकुलित**-वि० १. व्याकुल । घबराया हुआ । २. व्याप्त ।



आरन-संज्ञा पुं० जंगल ।

आरपार-संज्ञा पुं० यह छोर और यह छोर ।

क्रि० वि० एक तल से दूसरे तल तक ।

आरब्ध-वि० आरंभ किया हुआ ।

आरस-संज्ञा पुं० दे० "अलिप्त" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "आरसी" ।

आरसी-संज्ञा स्त्री० आईना ।

आरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री०, अरा० आरे ]

लोहे की दाँतीदार पट्टी जिससे रेतकर लकड़ी चीरी जाती है ।

आराति-संज्ञा पुं० शत्रु । वैरी ।

आराधक-वि० [ स्त्री० आराधिका ] उपासक । पूजा करनेवाला ।

आराधन-संज्ञा पुं० सेवा । पूजा ।

आराधना-संज्ञा स्त्री० पूजा । उपासना ।

आराम-संज्ञा पुं० [ सं० ] बाग । उपवन ।

संज्ञा पुं० [ फा० ] १. चैन । सुख ।

२. वृत्तापन । ३. विश्राम । दम लेना ।

आराम कुरसी-एक प्रकार की लंबी कुरसी ।

आराम-तलब-वि० १. सुख चाहनेवाला । सुकुमार । २. सुस्त । आलसी ।

आरी-संज्ञा स्त्री० [ हि० आरा का अण् ] लकड़ी चीरने का बड़ई का एक औजार । छेया आरा ।

आरुढ़-वि० [ सं० ] १. बढ़ा हुआ । २. दृढ़ । ३. तत्पर ।

आरोग्य-वि० रोग-रहित । स्वस्थ ।

आरोग्यता-संज्ञा स्त्री० स्वास्थ्य ।

आरौघना-क्रि० स० रोकना ।

आरोप-संज्ञा पुं० स्थापित करना ।

आरोपण-संज्ञा पुं० १. स्थापित करना । २. रोपना ।

आरोपना-क्रि० स० स्थापित करना ।

आरोपित-वि० १. स्थापित किया हुआ । २. रोपा हुआ ।

आरोह-संज्ञा पुं० १. चढ़ाव । २. आक्रमण । ३. सवारी ।

आरोहण-संज्ञा पुं० चढ़ना । सवार होना ।

आरोही-वि० [ स्त्री० आरोहिणी ] चढ़नेवाला ।

संज्ञा पुं० १. संगीत में यह स्वर-साधन जो पढ़न से लेकर निपाद्य तक उत्तरोत्तर बढ़ता जाय । २. सवार ।

आत्त-वि० १. पीड़ित । २. दुखी । ३. अस्वस्थ ।

आत्त ता-संज्ञा स्त्री० १. पीड़ा । २. दुःख ।

आर्त्तनाद-संज्ञा पुं० दुःख-सूचक शब्द ।

आर्त्त स्वर-संज्ञा पुं० दुःख-सूचक शब्द ।

आर्थिक-वि० धन-संबंधी । द्रव्य-संबंधी ।

आर्द्र-वि० गीला ।

आर्द्रा-संज्ञा स्त्री० १. सत्ताईस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र । २. वह समय जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है ।

आर्य्य-वि० श्रेष्ठ । पूज्य ।

संज्ञा पुं० मनुष्यों की एक जाति जिसने संसार में बहुत पहले सम्यक्ता प्राप्त की थी ।

आर्य्यपुत्र-संज्ञा पुं० पति को पुकारने का संबोधन ।

आकृति-संज्ञा स्त्री० घनावट । गढ़न ।  
आक्रन्दन-संज्ञा पुं० रोना । चिल्लाना ।  
आक्रमण-संज्ञा पुं० १. हमला ।  
चढ़ाई । २. आघात पहुँचाने के  
लिये किसी पर खपटना ।

आक्रमित-वि० [ स्त्री० आक्रमिता ]  
जिस पर आक्रमण किया गया हो ।  
आक्रांत-वि० १. जिस पर आक्रमण  
हो । २. वशीभूत । पराजित ।

आक्रोश-संज्ञा पुं० क्रोध । शाप  
देना ।

आक्षिप्त-वि० १. फेंका हुआ । २.  
निन्दित ।

आक्षेप-संज्ञा पुं० [ सं० ] १. फेंकना ।  
२. दोष लगाना ।

आक्षेपक-वि० [ स्त्री० आक्षेपिका ] १.  
फेंकनेवाला । २. आक्षेप करनेवाला ।  
निन्दक ।

आखत-संज्ञा पुं० अक्षत ।  
आखन-क्रि० वि० प्रतिक्षण । हर  
बड़ी ।

आखना-क्रि० स० कहना ।  
क्रि० स० [ सं० आकांक्षा ] चाहना ।  
क्रि० स० [ हि० आँख ] देखना ।  
साकना ।

आखर-संज्ञा पुं० अक्षर ।  
आखा-संज्ञा पुं० क्रीने कपड़े से मढ़ी  
हुई मैदा चालने की चालनी ।  
वि० पूरा । अक्षय ।

आखिर-वि० अंतिम । पीछे का ।  
संज्ञा पुं० अंत ।  
क्रि० वि० अंत में । अंत को ।

आखरी-वि० अंतिम । पिछला ।  
आखु-संज्ञा पुं० मूसा । चूहा ।  
आखुपाया-संज्ञा पुं० १. चुंबक

पथर । २. संखिया ।  
आखेट-संज्ञा पुं० अहेर । शिकार ।  
आखेटक-वि० [ सं० ] शिकारी ।  
अहेरी ।  
आखेटी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० आखेटिनी ]  
शिकारी । अहेरी ।

आख्या-संज्ञा स्त्री० १. नाम । २.  
कीर्ति ।  
आख्यात-वि० प्रसिद्ध । विख्यात ।  
आख्याति-संज्ञा स्त्री० नामवरी ।  
ख्याति । शहरत ।

आख्यान-संज्ञा पुं० १. धर्मन । २.  
कथा । कहानी ।  
आख्यायिका-संज्ञा स्त्री० १. कथा ।  
कहानी । २. वह कल्पित कथा  
जिससे कुछ शिक्षा निकले ।

आगंतुक-वि० १. जो आवे । २.  
जो इधर-उधर से घूमता-फिरता  
था जाय ।

आग-संज्ञा स्त्री० १. तेज और प्रकाश  
का पुंज जो उष्णता की पराकाष्ठा  
पर पहुँची हुई वस्तुओं में देखा  
जाता है । अग्नि । २. जलन ।  
ताप । ३. कामाग्नि । ४. डाह ।  
ईर्ष्या ।

वि० १. जलता हुआ । बहुत गरम ।  
२. जो गुण में उष्ण हो ।

आगत-वि० [ स्त्री० आगता ] आया  
हुआ ।

आगतपतिका-संज्ञा स्त्री० वह नायिका  
जिसका पति परदेश से लौटा हो ।

आगत स्वागत-संज्ञा पुं० आव-  
भगत ।

आगम-संज्ञा पुं० १. अवाह । आग-  
मन । २. भविष्य काल । ३. वेद ।  
४. शास्त्र ।

आर्य-समाज-संज्ञा पुं० एक धार्मिक समाज या समिति जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद थे ।

आर्या-संज्ञा स्त्री० १. पार्वती । २. सास । ३. दादी । पितामही । ४. एक अर्द्ध मासिक छंद ।

आर्या-धर्त-संज्ञा पुं० उत्तरीयभारत ।

आर्प-वि० अपि-संबंधी । अपि-कृत ।

आलंकारिक-वि० १. अलंकार-संबंधी । २. अलंकारयुक्त । ३. अलंकार जाननेवाला ।

आलंघ-संज्ञा पुं० आश्रय । सहारा ।

आलंघन-संज्ञा पुं० १. सहारा । २. रस में यह वस्तु जिसके अलंघ से रसकी उत्पत्ति होती है । ३. साधन ।

आलकसा-संज्ञा पुं० दे० "आलस्य" ।

आलथी पालथी-संज्ञा स्त्री० बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी पैड़ी बाएँ जंघे पर और बाईं पैड़ी दाहिने जंघे पर रखते हैं ।

आलपीन-संज्ञा स्त्री० एक हुंड़ीदार सूई जिससे कागज़ आदि के टुकड़े जोड़ते या नाथी करते हैं ।

आलम-संज्ञा पुं० १. संसार । २. अवस्था । ३. जन-समूह ।

आलमारी-संज्ञा स्त्री० दे० "अलमारी" ।

आलय-संज्ञा पुं० १. घर । २. स्थान ।

आलस-वि० आलसी । सुस्त ।

आलसी-वि० सुस्त । काहिल ।

आलस्य-संज्ञा पुं० सुस्ती । काहिली ।

आला-संज्ञा पुं० ताक । ताखा ।

आलान-संज्ञा पुं० यंघन ।

आलाप-संज्ञा पुं० बातचीत । तान ।

आलापक-वि० १. बात-चीत करने-वाला । २. गानेवाला ।

आलापना-क्रि० स० गाना । सुर खींचना । तान खटाना ।

आलापी-वि० १. बोलनेवाला । २. आलाप करनेवाला । तान लगाने-वाला । गानेवाला ।

आलिंगन-संज्ञा पुं० गले से लगाना । परिरंभण ।

आलिंगना-क्रि० स० भेंटना । लपटाना । गले लगाना ।

आलि-संज्ञा स्त्री० १. सखी । सहेली । २. विच्छ । ३. अमरी । ४. पंक्ति ।

आलिम-वि० विद्वान् । पंडित ।

आली-संज्ञा स्त्री० सखी । वि० उद्य । छेद्य ।

आलीशान-वि० भव्य । भड़कीला । शगदार । विशाल ।

आलू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कंद जो बहुत खाया जाता है ।

आलूचा-संज्ञा पुं० १. एक पेड़ जिसका फल पंजाब इत्यादि में बहुत खाया जाता है । २. इस पेड़ का फल । भोटिया बदाम । गर्दालू ।

आलुखारा-संज्ञा पुं० आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल ।

आलेख-संज्ञा पुं० लिखावट । लिपि ।

आलेख्य-संज्ञा पुं० चित्र । तस्यीर ।

आलोक-संज्ञा पुं० १. प्रकाश । २. धमक ।

आलोचक-वि० १. देखनेवाला । २. जो आलोचना करे ।

आलोचन-संज्ञा पुं० १. दर्शन । २. गुण-दोष का विचार ।

आलोचना-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के गुण-दोष का विचार ।

आलोड़न-संज्ञा पुं० १. मथना । हिजेरना । २. विचार ।

आलोड़ना-कि० सं० १. मथना । २. हिलोरना ।

आल्हा-संज्ञ पुं० १. महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था । २. बहुत लंबा-झीड़ा वर्णन । ३. आल्हखंड पुस्तक ।

आव-संज्ञा स्त्री० आयु ।

आवन-संज्ञा पुं० आगमन । आना ।

आवभगत-संज्ञा स्त्री० आदर-सरकार ।

आवरण-संज्ञा पुं० १. ढकना । २. वह कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो ।

आवर्त्त-संज्ञा पुं० १. पानी का भँवर ।

२. वह वादक जिससे पानी न बरसे ।

आवर्त्तन-संज्ञा पुं० १. खकर देना ।

फिराव । घुमाव । २. मथना । हिलाना ।

आवश्यक-वि० १. जिसे अवश्य होना चाहिए । जरूरी । २. प्रयोजनीय । जिसके बिना काम न चले ।

आवश्यकता-संज्ञा स्त्री० १. जरूरत । अपेक्षा । २. प्रयोजन । मतलब ।

आवश्यक्रीय-वि० जरूरी ।

आवाँ-संज्ञा पुं० गड़वा जिसमें कुम्हार मिट्टी के घरतन पकाते हैं ।

आवागमन-संज्ञा पुं० आना-जाना ।

आवाज़-संज्ञा स्त्री० १. शब्द । ध्वनि । नाद । २. बोली । वाणी । स्वर ।

आवाज़ा-संज्ञा पुं० [फा०] बोली-ठोली । ताना । व्यंग्य ।

आवाजाही-संज्ञा स्त्री० आना-जाना ।

आधारणी-संज्ञा स्त्री० आचारापन ।

आचारजा-संज्ञा पुं० जमा-सूच्य की किताब ।

आचारा-वि० १. व्यर्थ । धधर-धधर फिरनेवाला । निकम्मा । २. वे ठौर

ठिकाने का । उठलू । ३. धदमाश । सुचा ।

आचारागर्द-वि० व्यर्थ । धधर-धधर घूमनेवाला । उठलू । निकम्मा ।

आघास-संज्ञा पुं० १. रहने की जगह । निवास-स्थान । २. मकान । घर ।

आवाहन-संज्ञा पुं० १. मंत्र द्वारा किसी देवता को बुलाने का कार्य ।

२. निमंत्रित करना । बुलाना ।

आविद्ध-वि० १. छिड़ा हुआ । भेदा हुआ । २. फँसा हुआ ।

आविष्कर्त्ता-वि० आविष्कार करने-वाला ।

आविष्कार-संज्ञा पुं० [वि० आविष्कारक, आविष्कर्त्ता, आविष्कृत] कोई ऐसी वस्तु संसार करना जिसके घटाने की युक्ति पहले किसी को न मालूम रही हो ।

आविष्कारक-वि० दे० "आविष्कर्त्ता" ।

आविष्कृत-वि० १. पता लगाया हुआ । २. ईजाद किया हुआ ।

आवृत्त-वि० छिपा हुआ । ढका हुआ ।

आवृत्ति-संज्ञा स्त्री० १. बार बार किसी बात का अभ्यास । २. पढ़ना ।

आवेग-संज्ञा पुं० १. चित्त की प्रवृत्ति । मन की झोंक । जोश । २. धधराहट ।

आवेदक-वि० निवेदन करनेवाला ।

आवेदन-संज्ञा पुं० अपनी दशा को सूचित करना । निवेदन । अर्जी ।

आवेदनपत्र-संज्ञा पुं० अर्जी ।

आवेश-संज्ञा पुं० १. दौरा । २. प्रवेश । ३. जोश । ४. मृगी रोग ।

आवेष्टन-संज्ञा पुं० १. छिपाने या ढँकने का कार्य । २. छिपाने, लपे-

उच्चार-संज्ञा पुं० विरक्ति। उदासीनता।  
उच्चारन-संज्ञ पुं० दे० "उच्चारन"।  
उच्चारना-कि० स० उच्चारन करना।  
जी हटाना।

उच्चाहना-कि० स० लगी या सटी  
हुई चीज़ को धलंग करना।

उच्चारना-कि० स० १. ऊँचा करना।  
जरूर उठाना। २. उठाना।

उच्चार-संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।

उच्चारना-कि० स० उच्चारण करना।  
कि० स० दे० "उच्चारना"।

उचित-वि० योग्य। ठीक। सुनासिध।

उचेलना-कि० स० दे० "उकेलना"।

उच्चाही-वि० ऊँचा उठा हुआ।

उच्च-वि० १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

उच्चता-संज्ञा स्त्री० १. ऊँचाई। २.  
श्रेष्ठता।

उच्चाण-संज्ञा पुं० कंड, तालु, जिह्वा  
आदि से शब्द निकलना। मुँह से  
शब्द फूटना।

उच्चाट-संज्ञा पुं० १. उखाड़ने या

नोचने की क्रिया। २. धनमनापन।

उच्चाटन-संज्ञा पुं० १. लगी या सटी  
हुई चीज़ को धलंग करना। २.  
किसी के चित्त को कहीं से हटाना।  
३. विरक्ति।

उच्चार-संज्ञा पुं० मुँह से शब्द निका-  
लना। कथन।

उच्चारण-संज्ञा पुं० कंड, ओष्ठ,  
जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों  
का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निका-  
लना।

उच्चारना-कि० स० मुँह से निका-  
लना। बोलना।

उच्चारित-वि० जिसका उच्चारण किया  
गया हो। बोला या कहा हुआ।

उच्चार्य-वि० उच्चारण के योग्य।

उच्चैःश्रवा-प्रेषा पुं० खड़े कान और  
सात मुँह का इंद्र या सूर्य का सफेद  
घोड़ा जो समुद्र-मग्न के समय  
निरुद्धा था।

वि० ऊँचा सुननेवाला। महारा।

उच्छ्व-वि० दबा हुआ। छुप्त।

उच्छलना-कि० स० दे० "उकलना"।

उच्छ्व-संज्ञा पुं० दे० "उत्सव"।

उच्छ्व-संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।

उच्छाद-संज्ञा पुं० दे० "उच्छाद"।

उच्छ्व-वि० १. कटा हुआ। खंडित।

२. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।

उच्छ्व-वि० १. जूठा। २. दूसरे का  
बर्ता हुआ।

संज्ञा पुं० १. जूठी वस्तु। २. शहद।

उच्छ्व-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खाँसी  
जो गले में पानी इत्यादि के रुकने से  
आने लगती है।

उच्छ्व-वि० १. झंडवैड।

२. स्वेच्छाचारी। ३. बर्बाद।

उच्छ्व-उच्छ्व-संज्ञा पुं० १.

उखाड़-पखाड़। खंडन। २. नाश।

उच्छ्व-वि० १. साँस केता  
हुआ। २. विकसित। प्रफुल्लित।

३. जीवित।

उच्छ्व-प्रेषा पुं० १. ऊपर को  
खींची हुई साँस। उसास। २. सर्पित।

उच्छ्व-संज्ञा पुं० १. गोद। २. हृदय।  
छाती।

उच्छ्व-कि० स० जथा हटना।  
घेत में आना।

उच्छ्व-कि० स० दे० "उकलना"।

उच्छ्व-संज्ञा स्त्री० १. खेच-कूद।

२. हलचल।

दने या हँकने की वस्तु ।

आशंका-संज्ञा स्त्री० १. डर । भय ।

२. शक । संदेह । ३. अनिष्ट की भावना ।

आशाना-संज्ञा स्त्री० १. जिससे ज्ञान-पहचान हो । २. प्रेमी ।

आशानाई-संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान-पहचान । २. प्रेम । प्रीति । दोस्ती । ३. अनुचित संबंध ।

आशय-संज्ञा पुं० १. अभिप्राय । मत-लक्ष । तात्पर्य । २. धासना । ह्वाँसा । ३. उद्देश्य । नीयत ।

आशा-संज्ञा स्त्री० १. उम्मीद । २. अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के जोड़े बहुत निश्चय से उपपन्न संतोष । ३. विश्वास ।

आशिक-संज्ञा पुं० प्रेम करनेवाला मनुष्य । अनुरक्त पुरुष । आसक्त ।

आशिष-संज्ञा स्त्री० आशीर्वाद । धात्सीस । दुआ ।

आशीर्वाद-संज्ञा पुं० आशिष । दुआ ।

आशु-क्रि० वि० शीघ्र । जल्द ।

आशुतोष-वि० शीघ्र संतुष्ट होने-वाला ।

संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

आश्चर्य्य-संज्ञा पुं० अचंभा । विस्मय । तश्चज्जुष ।

आश्चर्यित-वि० चकित ।

आश्रम-संज्ञा पुं० १. ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान । तपोवन । २. विश्राम-स्थान । ठहरने की जगह । ३. ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ्य, घनप्रस्थ, संन्यास आदि चार आश्रम ।

आश्रमी-वि० १. आश्रम-संबंधी । २. आश्रम में रहनेवाला ।

आश्रय-संज्ञा पुं० १. आश्रम ।

सहारा । २. शरण । पनाह ।

आश्रयी-वि० आश्रय लेने-या पाने-वाला ।

आश्रित-वि० १. सहारे पर टिका हुआ । २. भरोसे पर रहनेवाला ।

आश्लेषा-संज्ञा पुं० श्लेषा नक्षत्र ।

आश्वास, आश्वासन-संज्ञा पुं० दिज्ञासा । तसल्ली । सांत्वना ।

आश्विन-संज्ञा पुं० बवार का मंहीना

आपाढ़-संज्ञा पुं० असाढ़ ।

आपाढ़ा-संज्ञा पुं० पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।

आपाढ़ी-संज्ञा स्त्री० आपाढ़ मास की पूर्णिमा । गुरुपूजा ।

आसंग-संज्ञा पुं० १. संग । २. संबंध । ३. आसक्ति ।

आस-संज्ञा स्त्री० १. आशा । २. लालसा । ३. भरोसा ।

आसक्त-संज्ञा स्त्री० आलस्य ।

आसकती-वि० दे० "आलसी" ।

आसक्त-वि० १. अनुरक्त । लिप्त । २. आशिक । लुब्ध ।

आसक्ति-संज्ञा स्त्री० १. अनुरक्ति । लिप्तता । २. लगन । चाह । प्रेम ।

आसते-क्रि० वि० धीरे धीरे ।

आसन-संज्ञा पुं० १. स्थिति । बैठने की विधि । २. वह वस्तु जिस पर बैठे ।

आसनी-संज्ञा स्त्री० छोटा आसन । छोटा विद्युत्त ।

आसन्न-वि० निकट आया हुआ ।

आसन्नभूत-संज्ञा पुं० भूतकालिक जिससे क्रिया की

ने उसकी समी-

कराना । ३. पचे हुए माल को निकलवाना ।

उगचना-कि० स० दे० "उगाना" ।

उगसाना-कि० स० दे० "उकसाना" ।

उगाना-कि० स० जमाना । अंकुरित करना ।

उगार, उगाल-संज्ञा पुं० पीक, थूक । खखार ।

उगालदान-संज्ञा पुं० थूकने या खखार आदि गिराने का परतन । पीकदान ।

उगाहना-कि० स० वसूल करना ।

उगाही-संज्ञा स्त्री० १. रुपया-पैसा वसूल करने का काम । वसूली ।

२. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा ।

उगिलना-कि० स० दे० "उगलना" ।

उग्र-वि० प्रचंड । तेज ।

संज्ञा पुं० १. महादेव । २. परसनाग विष ।

उग्रता-संज्ञा स्त्री० तेज़ी । प्रचंडता ।

उघटना-कि० अ० १. ताल देना ।

"सम परतान तोड़ना । २. दूधी-दुधार्ह घात को उभाड़ना । ३. कभी के किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार बार कहकर ताना देना ।

उघटा-वि० किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला । एहसान जतानेवाला ।

संज्ञा पुं० उघटने का कार्य ।

उघड़ना-कि० अ० १. आधार का हटना । २. भंडा फूटना ।

उघरना-कि० अ० दे० "उघड़ना" ।

उघाड़ना-कि० स० १. आधार का

हटाना । २. आधार रहित करना ।

३. मंगा करना । ४. गुप्त घात को खोलना ।

उधारना-कि० स० दे० "उघाड़ना" ।

उचकना-संज्ञा पुं० ईंट, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज़ को एक ओर ऊँचा करते हैं ।

उचकना-कि० अ० १. ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल पड़ी उठाकर खड़ा होना । २. उछलना । फूटना ।

कि० स० उछलकर खेना । लपककर छीनना ।

उचका-कि० वि० अचानक । सहसा ।

उचकाना-कि० स० उठाना । ऊपर करना ।

उचका-संज्ञा पुं० [जी०] १. उचककर चीज़ से भागनेवाला आदमी । ठग ।

२. बदमाश ।

उचटना-कि० अ० १. उचड़ना । २. अलग होना । ३. भड़कना । ४. विरफ होना ।

उचटाना-कि० स० १. उघाड़ना । २. अलग करना । ३. उदासीन करना । ४. भड़काना ।

उचड़ना-कि० अ० सटी या जगी हुई चीज़ का अलग होना ।

उचना-कि० अ० १. उचकना । २. उठना ।

कि० स० ऊँचा करना । उठाना ।

उचनि-संज्ञा स्त्री० उभाड़ ।

उचरगा-संज्ञा पुं० पतिंगा ।

उचरना-कि० स० उधारण करना । खोलना ।

कि० अ० मुँह से शब्द निकलना ।

कि० अ० दे० "उचड़ना" ।

आस-पास-कि० वि० चारों ओर।  
निकट। इधर-उधर।

आसमान-संज्ञा पुं० [वि० आसमानी]  
१. आकाश। २. स्वर्ग।

आसमानी-वि० १. आकाश-संबंधी।  
२. आकाश के रंग का। हलका नीला।  
संज्ञा स्त्री० तादी।

आसमुद्र-कि० वि० समुद्र-पर्यंत।  
आसरा-संज्ञा पुं० १. सहारा। धक्का-  
लंब। २. भरोसा। ३. शरण।  
पनाह। ४. प्रतीक्षा।

आसा-संज्ञा स्त्री० दे० "आशा"।  
आसाइश-संज्ञा स्त्री० आराम। सुख।  
चैन।

आसान-वि० सहज।  
आसानी-संज्ञा स्त्री० सरलता। सुधीता।  
आसार-संज्ञा पुं० चिह्न। लक्षण।  
आसावरी-संज्ञा स्त्री० श्री राग की एक  
रागिनी।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का कवुतर।  
आसिख-संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।  
आसिन-संज्ञा पुं० दे० "आश्विन"।  
आसीन-वि० बैठा हुआ। विराजमान।  
आसीस-संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।  
आसु-कि० वि० दे० "आशु"।

आसुर-वि० असुर-संबंधी।  
आसुरी-वि० असुर-संबंधी। राक्षसी।  
संज्ञा स्त्री० राक्षस की स्त्री।

आसुदा-वि० १. संतुष्ट। २. संपन्न।  
आसेव-[वि० आसेवी] भूत प्रेत की  
वाधा।

आसोज-संज्ञा पुं० आश्विन मास।  
कार का महीना।

आसी-कि० वि० इस वर्ष।  
आस्तिक-वि० ईश्वर के अस्तित्व को  
माननेवाला।

आस्तिकता-संज्ञा स्त्री० ईश्वर में  
विश्वास।

आस्तीन-संज्ञा स्त्री० पहनने के कपड़े  
का वह भाग जो बांह को ढँकता  
है। बाँही।

आस्था-संज्ञा स्त्री० १. पूज्य बुद्धि।  
श्रद्धा। २. सभा। बैठक।

आस्पद-संज्ञा पुं० १. स्थान। २.  
कार्य। ३. पद। प्रतिष्ठा। ४. वंश।  
जाति।

आस्थ-संज्ञा पुं० सुँह।  
आस्वाद-संज्ञा पुं० रस। स्वाद।  
आस्वादन-संज्ञा पुं० स्वाद लेना।  
आह-अभ्य० पीड़ा, शोक, खेद और  
ग्लानि-सूचक अव्यय।

संज्ञा स्त्री० दुःख या क्लेश-सूचक  
शब्द। ठंडी साँस।  
आहट-संज्ञा स्त्री० यह शब्द जो चलने  
में पैर तथा दूसरे अंगों से होता है।  
खटका।

आहत-वि० धायाल। जखमी।  
आहन-संज्ञा पुं० लोहा।  
आहर-संज्ञा पुं० समय।  
संज्ञा पुं० युद्ध। लड़ाई।

आहरण-संज्ञा पुं० १. छीनना। हर  
लेना। २. किसी पदार्थ को एक  
स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।  
३. ग्रहण।

आहवन-संज्ञा पुं० यज्ञ करना। होम  
करना।

आर्हा-संज्ञा स्त्री० १. हक। दुहाई।  
घोषणा। २. पुकार।

आहा-अभ्य० आश्चर्य और दर्प-सूचक  
अव्यय।

आहार-संज्ञा पुं० १. खाना। २. खाने  
की वस्तु।



उच्चाट-संज्ञा पुं० विरक्ति। उदासीनता।  
उच्चाटन-संज्ञा पुं० दे० "उच्चाटन"।  
उच्चाटना-कि० स० उच्चाटन करना।  
जी हटाना।

उच्चाड़ना-कि० स० लगी या सटी  
हुई चीज़ को अलग करना।

उच्चाणा-कि० स० १. ऊँचा करना।  
करार उठाना। २. उठाना।

उच्चार-संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।

उच्चारना-कि० स० उच्चारण करना।  
कि० स० दे० "उच्चाड़ना"।

उचित-वि० योग्य। ठीक। सुनासिध।

उचेलना-कि० स० दे० "उकेलना"।

उचाही-वि० ऊँचा उड़ा हुआ।

उच्च-वि० १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

उच्चता-संज्ञा स्त्री० १. ऊँचाई। २.  
श्रेष्ठता।

उच्चाण-संज्ञा पुं० कंड, तालु, जिह्वा  
आदि से शब्द निकलना। मुँह से  
शब्द फूटना।

उच्चाट-संज्ञा पुं० १. उखाड़ने या  
नोचने की क्रिया। २. घनमनापन।

उच्चाटन-संज्ञा पुं० १. लगी या सटी  
हुई चीज़ को अलग करना। २.  
किसी के चित्त को कहीं से हटाना।  
३. विरक्ति।

उच्चार-संज्ञा पुं० मुँह से शब्द बिका-  
लना। कपन।

उच्चारण-संज्ञा पुं० कंड, थोछ,  
जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों  
का व्यक्त और विभक्त ध्वनि बिका-  
लना।

उच्चारना-कि० स० मुँह से बिका-  
लना। बोलना।

उच्चारित-वि० जिसका उच्चारण किया  
गया हो। बोला या कहा हुआ।

उच्चार्य-वि० उच्चारण के योग्य।

उच्चैःश्रवा-संज्ञा पुं० खड़े कान और  
सात मुँह का इंद्र या सूर्य का सफेद  
घोड़ा जो समुद्र-मयन के समय  
निकला था।

वि० ऊँचा सुननेवाला। महारा।

उच्छन्न-वि० दशा हुआ। लुप्त।

उच्छलना-कि० स० दे० "उछलना"।

उच्छव-संज्ञा पुं० दे० "उत्तव"।

उच्छवि-संज्ञा पुं० दे० "उत्तवि"।

उच्छाद-संज्ञा पुं० दे० "उच्छाद"।

उच्छिन्न-वि० १. कटा हुआ। क्षेपित।

२. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।

उच्छृष्ट-वि० १. जूड़ा। २. दूसरे का  
बर्ता हुआ।

संज्ञा पुं० १. जूड़ी वस्तु। २. गड़द।

उच्छू-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खाँसी  
जो गले में पानी इत्यादि के रुकने से  
थाने लगती है।

उच्छृंखल-वि० १. झंडवंड।

२. स्वेच्छाचारी। ३. बड़बड़।

उच्छेद, उच्छेदन-संज्ञा पुं० १.

उखाड़-पखार। खंडन। २. नारा।

उच्छ्वसित-वि० १. साँस जेता  
हुआ। २. विकसित। प्रफुल्लित।

३. जीवित।

उच्छ्वास-संज्ञा पुं० १. ऊपर को

खींची हुई साँस। वसास। २. साँस।

उच्छंग-संज्ञा पुं० १. गोद। २. हृदय।  
छाती।

उच्छफना-कि० स० नशा हटाना।

चेत में आना।

उच्छरना-कि० स० दे० "उच्छलना"।

उच्छल-कूद-संज्ञा स्त्री० १. खेव-कूद।

२. हलचल।

टने या टँकने की वस्तु ।

आशंका-संज्ञा स्त्री० १. डर । भय ।  
२. शक । संदेह । ३. अनिष्ट की भावना ।

आशाना-संज्ञा स्त्री० १. जिससे जान-पहचान हो । २. प्रेमी ।

आशानाई-संज्ञा स्त्री० १. जान-पहचान । २. प्रेम । प्रीति । दोस्ती ।  
३. अनुचित संबंध ।

आशय-संज्ञा पुं० १. अभिप्राय । मत-लक्ष । तात्पर्य । २. वासना । इच्छा । ३. उद्देश्य । नीयत ।

आशा-संज्ञा स्त्री० १. उम्मीद । २. अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के योग्य बहुत निश्चय से उत्पन्न संतोष । ३. विश्वास ।

आशिक-संज्ञा पुं० प्रेम करनेवाला मनुष्य । अनुरक्त पुरुष । आसक्त ।

आशिष-संज्ञा स्त्री० आशीर्वाद । आसीस । दुआ ।

आशीर्वाद-संज्ञा पुं० आशिष । दुआ ।

आशु-क्रि० वि० शीघ्र । जल्द ।

आशुतोष-वि० शीघ्र संतुष्ट होने-वाला ।

संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

आश्चर्य्य-संज्ञा पुं० अचंभा । विस्मय । तन्मज्जुत्र ।

आश्चर्यित-वि० चकित ।

आश्रम-संज्ञा पुं० १. ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान । तपो-वन । २. विद्वान्-स्थान । ठहरने की जगह । ३. महाचर्य्य, गृहस्थ्य, घनप्रस्थ, संन्यास आदि चार आश्रम ।

आश्रमी-वि० १. आश्रम-संबंधी । २. आश्रम में रहनेवाला ।

आश्रय-संज्ञा पुं० १. आचार ।

सहारा । २. शरण । पनाह ।

आश्रयी-वि० आश्रय लेने या पाने-वाला ।

आश्रित-वि० १. सहारे पर टिका हुआ । २. भरोसे पर रहनेवाला ।

आश्लेषा-संज्ञा पुं० श्लेषा नक्षत्र ।

आश्वास, आश्वासन-संज्ञा पुं० दिखासा । तसल्ली । सांत्वना ।

आश्चन-संज्ञा पुं० बवार का महीना ।

आपाढ़-संज्ञा पुं० असाढ़ ।

आपाढ़ार-संज्ञा पुं० पूर्वापाढ़ा और उत्तरापाढ़ा नक्षत्र ।

आपाढ़ी-संज्ञा स्त्री० आपाढ़ मास की पूर्णिमा । गुरुपूजा ।

आसंग-संज्ञा पुं० १. संग । २. संबंध । ३. आसक्ति ।

आस-संज्ञा स्त्री० १. आशा । २. लालसा । ३. भरोसा ।

आसक्त-संज्ञा स्त्री० आलस्य ।

आसकती-वि० दे० "आलसी" ।

आसक्त-वि० १. अनुरक्त । लिप्त । २. आशिक । लुब्ध ।

आसक्ति-संज्ञा स्त्री० १. अनुरक्ति । लिप्तता । २. लगन । चाह । प्रेम ।

आसते-क्रि० वि० धीरे धीरे ।

आसन-संज्ञा पुं० १. स्थिति । बैठने की विधि । २. वह वस्तु जिस पर बैठे ।

आसनी-संज्ञा स्त्री० छोटा आसन । छोटा बिलौना ।

आसन्न-वि० निकट आया हुआ ।

आसन्नभूत-संज्ञा पुं० भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमान में उसकी समी-

पता पाई जाय ।

उछलना-कि० अ० १. वेग से ऊपर उठना और गिरना । २. कूदना । ३. अत्यंत प्रसन्न होना ।

उछलवाना-कि० स० उछलने में प्रवृत्त करना ।

उछलाना-कि० स० उछालने में प्रवृत्त करना ।

उछाटना-कि० स० उछाटना । उदासीन करना । विरक्त करना ।

कि० स० छाटना । चुनना ।

उछारना-कि० स० दे० "उछालना" ।

उछाल-संज्ञा स्त्री० १. सहसा ऊपर उठने की क्रिया । २. कै । वमन । ३. पानी का छीटा ।

उछालना-कि० स० ऊपर की ओर फेंकना ।

उछाड़-संज्ञा पुं० १. शसाह । २. उत्सव । ३. जैन लोगों की रथ-यात्रा । ४. झुंझा ।

उछाला-संज्ञा पुं० १. जोश । उद्योग । २. वमन । कै ।

उछड़ना-कि० अ० १. उखड़ना । पुखड़ना । २. गिर-पड़ जाना । ३. बरबाद होना ।

उछड़वाना-कि० स० किसी को उछाड़ने में प्रवृत्त करना ।

उछड़-वि० १. धड़ मूख । असम्य । २. बहड़ ।

उछड़पन-संज्ञा पुं० बहड़ता । अशिष्टता । असम्यता ।

उछड़क-सूख । उछड़ ।

उछरत-संज्ञा स्त्री० १. मजदूरी । २. किराया ।

उछरना-कि० अ० दे० "उछड़ना" ।

उछराना-कि० स० साफ कराना ।

कि० अ० सफेद या साफ होना ।

उजलत-संज्ञा स्त्री० जलदी ।

उजलवाना-कि० स० गहने या अस्त्र आदि का साफ करवाना ।

उजला-वि० १. श्वेत । २. स्वच्छ । साफ ।

उजागर-वि० १. प्रकाशित । २. प्रसिद्ध ।

उजाड़-संज्ञा पुं० १. उजड़ा हुआ स्थान । २. निर्जन स्थान । ३. जंगल ।

वि० १. गिरा-पड़ा । २. निर्जन ।

उजाड़ना-कि० स० १. गिराना-पड़ाना । २. मष्ट करना ।

उजारा-संज्ञा पुं० दे० "उजाड़" ।

उजारा-संज्ञा पुं० उजाला ।

वि० प्रकाशवान् । कांतिमान् ।

उजालना-कि० स० १. चमकाना । निखारना । २. प्रकाशित करना । ३. जलाना ।

उजाला-संज्ञा पुं० प्रकाश ।

वि० प्रकाशवान् ।

उजाली-संज्ञा स्त्री० चांदनी ।

उजास-संज्ञा पुं० चमक । प्रकाश ।

उजियर-वि० दे० "उजला" ।

उजियरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "उजाली" ।

उजियार-संज्ञा पुं० दे० "उजाला" ।

उजियारना-कि० स० १. प्रकाशित करना । २. जलाना ।

उजियारा-संज्ञा पुं० दे० "उजाला" ।

उजियाला-संज्ञा पुं० दे० "उजाला" ।

उजीर-संज्ञा पुं० दे० "उज्जीर" ।

उजेर-संज्ञा पुं० दे० "उजाला" ।

उजेला-संज्ञा पुं० प्रकाश । चांदनी ।

वि० प्रकाशवान् ।

इंद्रगोप-संज्ञा पुं० धीरवहूटी नाम का कीड़ा ।

इंद्रजव-संज्ञा पुं० कुड़ा । कौरैया का धीज ।

इंद्रजाल-संज्ञा पुं० मायाकर्म । जादू-गरी । तिलस्म ।

इंद्रजाली-वि० इंद्रजाल करनेवाला । जादूगर ।

इंद्रजित्-वि० इंद्र को जीतनेवाला ।

संज्ञा पुं० रावण का पुत्र, मेघनाद ।

इंद्रजीत-संज्ञा पुं० दे० "इंद्रजित्" ।

इंद्रदमन-संज्ञा पुं० मेघनाद का एक नाम ।

इंद्रधनुष-संज्ञा पुं० सात रंगों का बना हुआ एक अद्भुत जो वर्षा-काल में सूर्य के विशद दिशा में आकाश में देख पड़ता है ।

इंद्रनील-संज्ञा पुं० नीलम ।

इंद्रप्रस्थ-संज्ञा पुं० एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था ।

इंद्रलोक-संज्ञा पुं० स्वर्ग ।

इंद्रवधू-संज्ञा स्त्री० धीरवहूटी ।

इंद्राणी-संज्ञा स्त्री० १. इंद्र की पत्नी । २. बड़ी इलायची । ३. इंद्रायन ।

इंद्रायन-संज्ञा पुं० एक लता जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर स्थान में बहुत कड़वा होता है । इनारु ।

द्रायुध-संज्ञा पुं० १. वज्र । २. इंद्र-धनुष ।

द्रासन-संज्ञा पुं० इंद्र का सिंहासन ।

द्रिय-संज्ञा स्त्री० १. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है । २. शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है । ३. वे अंग या

अवयव जिनसे भिन्न भिन्न कर्म किए जाते हैं ।

इंद्रियजित्-वि० जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो । जो विषयासक्तन हो ।

इंद्रियनिग्रह-संज्ञा पुं० इंद्रियों के वेग को रोकना ।

इंद्रो-संज्ञा स्त्री० दे० "इंद्रिय" ।

इंसाफ-संज्ञा पुं० १. न्याय । २. निर्णय ।

इ-संज्ञा पुं० कामदेव ।

इफटा-वि० एकत्र । जमा ।

इफता-संज्ञा स्त्री० दे० "एकता" ।

इफताई-संज्ञा स्त्री० १. एक होने का भाव । एकत्व । २. अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या बान ।

इफतान-वि० एकरस । एक सा । स्थिर ।

इफतार-वि० बराबर । एकरस ।

कि० वि० लगातार ।

इफतारा-संज्ञा पुं० १. सितार के ढंग का एक धाजा जिसमें केवल एक ही तार रहता है । २. एक प्रकार का हाथ से बुना जानेवाला कपड़ा ।

इफतीस-वि० तीस और एक ।

संज्ञा पुं० तीस और एक की संख्या । ३१ ।

इफत्र-कि० वि० दे० "एकत्र" ।

इफवाल-संज्ञा पुं० दे० "एकवाल" ।

इफराम-संज्ञा पुं० १. इनाम । २. हज्जत ।

इफरार-संज्ञा पुं० १. प्रतिज्ञा । २. कोई काम करने की स्वीकृति ।

इफला-वि० दे० "अकेला" ।

इफलीता-संज्ञा पुं० वह लड़का जो अपने माँ-बाप का अकेला हो ।

इफला-वि० १. एकरा । एक पक्ष का । २. अकेला ।

उज्जरा-वि० दे० "उज्ज्वल" ।

उज्जल-कि० वि० नदी के चढ़ाव की ओर ।

० वि० दे० "उज्ज्वल" ।

उज्जयिनी-संज्ञा स्त्री० मालवा देश की प्राचीन राजधानी ।

उज्जैन-संज्ञा पुं० दे० "उज्जयिनी" ।

उज्जारा-संज्ञा पुं० दे० "उज्जाला" ।

उज्ज-संज्ञा पुं० १. बाघ । विरोध ।

२. किसी बात के विरुद्ध विनय-पूर्वक कुछ कथन ।

उज्जदारी-संज्ञा स्त्री० किसी ऐसे मामले में उज्ज पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आशा प्राप्त की हो या प्राप्त करना चाहता हो ।

उज्ज्वल-वि० [ संज्ञा उज्ज्वलता ] १. प्रकाशवान् । २. निर्मल । ३.

येदाग । ४. सफेद ।

उज्ज्वलता-संज्ञा स्त्री० १. क्रांति । चमक । २. स्वच्छता । ३. सफेदी ।

उज्ज्वलन-संज्ञा पुं० [ वि० उज्ज्वलित ] १. प्रकाश । २. स्वच्छ करने का कार्य ।

उज्ज्वला-संज्ञा स्त्री० पारह अवर्षों की एक वृत्ति ।

उभकना-कि० भ० १. उचकना । २. चौकना ।

उभलना-कि० स० ढालना । डँडेलना ।

कि० भ० उभड़ना । वढ़ना ।

उठंगन-संज्ञा पुं० एक घास जिसका साग खाया जाता है । चौपतिया ।

उठकना-कि० स० अनुमान करना ।

उठुज-संज्ञा पुं० मोपड़ी ।

उठंगन-संज्ञा पुं० १. आड़ । टेक ।

२. बैठने में पीठ को सहारा देने-वाली वस्तु ।

उठंगना-कि० भ० १. किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना । टेक लगाना । २. छोटना । पढ़ रहना ।

३. (किवाड़) मिड़ाना या बंद करना ।

उठना-कि० भ० १. ऊँचा होना । २.

जागना । ३. सड़सा आरंभ होना ।

४. उभड़ना । ५. उफाना । ६.

किसी दूकान या कारखाने का काम बंद होना । ७. खर्च होना । ८.

बिड़ना या भाड़े पर जाना । ९.

गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना या अलंग पर आना ।

उठलू-वि० [ हि० उठना + लू (प्रत्य०) ] १. एक स्थान पर न रहनेवाला ।

२. आचारा ।

उठाना-कि० स० उठाने का काम दूसरे से कराना ।

उठाईगीरा-वि० १. आँख बचाकर चीजों को चुरा लेनेवाला । २. बदमाश ।

उठान-संज्ञा स्त्री० १. उठना । २. बड़ने का ढंग । ३. खर्च ।

उठाना-कि० स० १. लेटे हुए प्राणी को बैठाना । २. नीचे से ऊपर ले जाना । ३. धारण करना । ४.

जागना । ५. आरंभ करना । ६. खर्च करना । ७. किशाये पर देना ।

उठाव-संज्ञा पुं० "उठान" ।

उठौआ-वि० दे० "उठौवा" ।

उठौनी-संज्ञा स्त्री० १. उठाने की क्रिया । २. उठाने की मजदूरी या पुरस्कार । ३. वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिये पेशगी दिया जाय ।

४. धनियाँ या दूकानदारों के साथ उधार का लेन-देन ।

आहार-विहार-संज्ञा पुं० खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन-सहन।

आहारी-वि० खानेवाला। भक्षक।

आहार्य-वि० १. ग्रहण किया हुआ।

२. खाने योग्य।

आहित-वि० १. स्थापित। २. धरोहर या गिराँ रखा हुआ।

आहिस्ता-क्रि० वि० धीरे से। धीरे धीरे। शनैः शनैः।

आहुत-संज्ञा पुं० १. आतिथ्य-सत्कार।

२. भूतयज्ञ।

आहुति-संज्ञा स्त्री० १. मंत्र पढ़कर देवता के लिये द्रव्य को यज्ञ में डालना। होम। हवन। २. हवन में डालने की सामग्री। ३. होम-द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञकुंड में डाली जाय।

आहूत-वि० आह्वान किया हुआ। निमंत्रित।

आह्निक-वि० दैनिक।

आह्लाद-संज्ञा पुं० आनंद। हर्ष।

आह्वान-संज्ञा पुं० [सं०] १. बुलाना।

२. बुलावा।

## इ

इ-वर्णमाला में स्वर के अंतर्गत तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालु और म्रयल विवृत है। ई इसका दीर्घ रूप है।

इंगला-संज्ञा स्त्री० इड़ा नाम की एक नदी।

इंगलिस्तान-संज्ञा पुं० इंगलैंड।

इंगित-संज्ञा पुं० अभिप्राय को किसी

घेष्टा द्वारा प्रकट करना। इशारा।

इंगुदी-संज्ञा स्त्री० हिंगोट का पेड़।

इंगुरौटी-संज्ञा स्त्री० इंगुर या सिंदूर

रखने की ढिविया। सिंघोरा।

इच्च-संज्ञा स्त्री० एक फुट का चारहवाँ हिस्सा।

इंचना-क्रि० अ० दे० "खिंचना"।

इंजन-संज्ञा पुं० रेलवे ट्रेन में वह गाड़ी जो भाप के जोर से सब गाड़ियों को खींचती है।

इंजीनियर-संज्ञा पुं० १. कलों का बनाने या चलानेवाला। २. वह अफसर जिसके निरीक्षण में सरकारी सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं।

इंजील-संज्ञा स्त्री० ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।

इंतकाल-संज्ञा पुं० मृत्यु।

इंतजाम-संज्ञा पुं० प्रबंध।

इंतजार-संज्ञा पुं० प्रतीक्षा।

इंदिरा-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

इंदीवर-संज्ञा पुं० नील-कमल।

इंद्र-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।

इंद्र-वि० [सं०] १. ऐश्वर्यवान्। २.

श्रेष्ठ। बड़ा।

संज्ञा पुं० १. एक वैदिक देवता। २. देवताओं का राजा।

इंद्रकील-संज्ञा पुं० मंदराचल।

उठौघा-वि० जिसका कोई स्थान नियत न हो।

उड़कू-वि० उड़नेवाला।

उड़न-संज्ञा स्त्री० उड़ने की क्रिया। उड़ान।

उड़नखटोला-संज्ञा पुं० उड़नेवाला खटोला। विमान।

उड़नछू-वि० चंपत। गायब।

उड़ना-क्रि० अ० १. आकाशमार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. छितराना। ३. फहराना। ४. भागना। ५. छापता होना। ६. रुँच होना। ७. धीमा पड़ना। ८. चक्का देना।

उड़घ-संज्ञा पुं० रागों की एक जाति। उड़घाना-क्रि० स० उड़ाने में प्रवृत्त करना।

उड़सना-क्रि० अ० १. दिखार या धारपाई ठठाना। २. नष्ट होना।

उड़ाऊ-वि० १. उड़नेवाला। २. रुँच करनेवाला।

उड़ाफा, उड़ाकू-वि० उड़नेवाला। जो उड़ सकता हो।

उड़ान-संज्ञा स्त्री० १. उड़ने की क्रिया। २. उड़ान।

उड़ाना-क्रि० स० १. किसी उड़नेवाली वस्तु को उड़ने में प्रवृत्त करना। २. हवा में फैलाना। ३. घुराना। ४. रुँच करना। ५. मारना।

उड़ायक-वि० उड़ानेवाला।

उड़ास-संज्ञा स्त्री० वास-स्थान।

उड़ासना-क्रि० स० १. बिखर ठठाना। २. बजाटना।

उड़िया-वि० उड़ीसा देश का रहनेवाला।

उड़धर-संज्ञा पुं० गूँधर। ऊमर।

उड़ु-संज्ञा स्त्री० १. मछुआ। तारा। २. पपी। चिड़िया। ३. बेवट। ४. जल।

उड़प-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. नाव। ३. बड़ा गरुड़।

उड़पति-संज्ञा पुं० चंद्रमा।

उड़राज-संज्ञा पुं० चंद्रमा।

उड़स-संज्ञा पुं० खटमल।

उड़नी-संज्ञा स्त्री० जुगनु।

उड़यन-संज्ञा पुं० उड़ना।

उड़ीयमान-वि० [स्त्री० उड़ीयमती] उड़नेवाला। उड़ता हुआ।

उड़फना-क्रि० अ० १. उड़ना। २. टूट लगाना।

उड़फाना-क्रि० स० १. किसी के सहारे खड़ा करना। २. भिड़ाना।

उड़रना-क्रि० अ० विवाहिता स्त्री का पर-पुरुष के साथ निवृत्त जाना।

उड़री-संज्ञा स्त्री० रखेली स्त्री।

उड़ाना-क्रि० स० दे० "घोड़ाना"।

उड़ाघनी-संज्ञा स्त्री० दे० "घोड़नी"।

उतंक-संज्ञा पुं० १. एक ऋषि जो वेद-मुनि के शिष्य थे। २. एक ऋषि जो गौतम के शिष्य थे।

वि० ऊँचा।

उतंग-वि० १. ऊँचा। २. झेप।

उतंग-क्रि० वि० वहाँ। उधर। उस ओर।

उतना-वि० उस मात्रा का। उस कदर।

उतर-संज्ञा पुं० दे० "उत्तर"।

उतरन-संज्ञा स्त्री० पड़ने-हुए पुराने कपड़े।

उतरना-क्रि० अ० १. ऊँचे स्थान से समतल पर नीचे आना। २. अवनति पर होना। ३. शरीर में किसी जोड़

ई

ई-हिंदी-वर्णमाला का चौथा अक्षर और 'इ' का दीर्घ रूप जिसके वचाराण्य का स्थान तालु है।

ईशुर-संज्ञा पुं० गंधक और पारे से घटित एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुंदर होती है। सिंगरफ।

ईद-संज्ञा स्त्री० १. साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखंडा लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार बड़ाई जाती है। २. धातु का चौखंडा ढाला हुआ टुकड़ा। ३. ताय का एक रंग।

ईटा-संज्ञा पुं० दे० "ईट"।

ईं हरी-संज्ञा स्त्री० कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे भरा घड़ा या योम बड़ाते समय सिर पर रख लेते हैं। गेंहूरी।

इधन-संज्ञा पुं० जलाने की लकड़ी या फंडा। जलावन।

ईदिया-संज्ञा पुं० [ वि० ईपणीय, ईधिन, ईद्य ] १. दर्शन। २. आस। ३. विचार।

ईख-संज्ञा स्त्री० गछा। ऊख।

ईखना-कि० स० देखना।

ईखन-संज्ञा पुं० आस।

ईखना-कि० स० इच्छा करना। चाहना।

ईछा-संज्ञा स्त्री० इच्छा।

ईजाद-संज्ञा स्त्री० आविष्कार।

ईठ-संज्ञा पुं० मित्र। सखा।

ईठना-कि० स० इच्छा करना।

ईद-संज्ञा स्त्री० [वि० ईदी] ज़िद। हठ।

ईति-संज्ञा स्त्री० खेती को हानि पहुँचाने-वाले उपद्रव जोखः प्रकार के हैं।

ईद-संज्ञा स्त्री० मुसलमानों का एक त्यौहार जो रोज़ा खतम होने पर होता है।

ईदश-क्रि० वि० इस प्रकार। ऐसे।

वि० इस प्रकार का। ऐसा।

ईप्सा-संज्ञा स्त्री० इच्छा। अभिज्ञापा।

ईप्सित-वि० चाहा हुआ।

ईमान-संज्ञा पुं० १. धर्म-विश्वास। २. अक्षी नीयत। ३. धर्म। ४. साथ।

ईमानदार-वि० १. विश्वास रखने-वाला। २. विश्वासपात्र। ३. सच्चा।

ईरखा-संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।

ईरान-संज्ञा पुं० [फा०] फारस देश।

ईरणा-संज्ञा स्त्री० ईर्षा। डाह।

ईर्षा-संज्ञा स्त्री० डाह। हसद।

ईर्षालु-वि० ईर्षा करनेवाला।

ईश-संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. राजा।

३. ईश्वर। ४. महादेव।

ईशता-संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व।

ईशान-संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. शिव।

३. ग्यारह की संख्या। ४. ग्यारह रुद्रों में से एक। ५. पूरव और उत्तर के बीच का कोना।

ईश्वर-संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. पर-

मेश्वर। भगवान्। ३. महादेव। शिव।

ईश्वरप्रणिधान-संज्ञा पुं० ईश्वर में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति रखना।

ईश्वरीय-वि० १. ईश्वर-संबंधी। २. ईश्वर का।

ईषत्-वि० थोड़ा। कम।

ईपना-संज्ञा स्त्री० प्रबल इच्छा।



यादूरी का अपनी जगह से हट जाना ।  
 ४. भाव का कम होना । ५. घेरा करना । ६. नकल होना । ७. धारण की हुई वस्तु का अलग होना ।  
 कि० स० नदी, नाले या पुष्प का पार करना ।  
 उत्तरधाना-कि० स० उतारने का काम करना ।  
 उत्तराई-संज्ञा स्त्री० १. ऊपर से नीचे आने की क्रिया । २. नदी के पार उतारने का महसूल । ३. ढालू जमीन ।  
 उत्तराना-कि० प्र० १. पानी के ऊपर आना । २. उफान खाना ।  
 उत्तान-वि० पीठ को जमीन पर लगाए हुए । चित ।  
 उतायल-वि० जख्मी ।  
 उतार-संज्ञा पुं० १. उतारने की क्रिया । २. क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति । ३. उतारने योग्य स्थान ।  
 उतारन-संज्ञा स्त्री० १. वह पहनावा जो पहनने से पुराना हो गया हो । २. निझावर ।  
 उतारना-कि० स० १. ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना । २. सीपना । ३. पहनी हुई चीज़ को अलग करना । ४. उड़ाना । घेरा देना । ५. बाजे आदि की कसल को ढीला करना ।  
 कि० स० नदी-नाले के पार पहुँचाना ।  
 उतारा-संज्ञा पुं० [ हि० उतरना ] १. टिकने का कार्य । २. पढ़ाव । ३. नदी पार करने की क्रिया ।  
 उतारु-वि० तत्पर ।  
 उताल-कि० वि० शीघ्र ।  
 संज्ञा स्त्री० शीघ्रता ।  
 उताली-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता ।

कि० वि० जख्मी से ।  
 उतावल-कि० वि० जख्मी जख्मी । शीघ्रता से ।  
 उतावली-वि० [ स्त्री० उतावली ] १. जख्मी मचानेवाला । २. ध्यम ।  
 उतावली-संज्ञा स्त्री० १. शीघ्रता । २. ध्यमता ।  
 उत्तुण-वि० वृष्टय ।  
 उत्कंठा-संज्ञा स्त्री० [ वि० उत्कंठित ] प्रबल इच्छा ।  
 उत्कंठित-वि० चाव से भरा हुआ ।  
 उत्कंठिता-संज्ञा स्त्री० संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करने-वाली नायिका ।  
 उत्कट-वि० तीव्र । उग्र ।  
 उत्कर्ष-संज्ञा पुं० बढ़ाई ।  
 उत्कर्षता-संज्ञा स्त्री० बढ़ाई ।  
 उत्कल-संज्ञा पुं० बड़ीसा देश ।  
 उत्कीर्ण-वि० लिखा हुआ । खुदा हुआ ।  
 उत्कुण-संज्ञा पुं० खटमल ।  
 उत्कृष्ट-वि० उत्तम । श्रेष्ठ ।  
 उत्कृष्टता-संज्ञा स्त्री० श्रेष्ठता । यद्वपन ।  
 उत्कौल-संज्ञा पुं० घूँस । रिशवत ।  
 उत्तंग-वि० दे० "उत्तंग" ।  
 उत्तंस-संज्ञा पुं० दे० "प्रवर्तन" ।  
 उत्त-संज्ञा पुं० १. आश्रय । २. संदेह ।  
 उत्त-वि० १. खूब तथा हुआ । २. दुःखी ।  
 उत्तम-वि० [ स्त्री० उत्तमा ] श्रेष्ठ । सर्वसे मत्ता ।  
 उत्तमतया-कि० वि० अच्छी तरह से । मत्ती भाँति से ।  
 उत्तमता-संज्ञा स्त्री० श्रेष्ठता ।  
 उत्तमत्व-संज्ञा पुं० अद्वयपन ।  
 उत्तमपुरुष-संज्ञा पुं० व्याकरण में वह

इलायची-संज्ञा स्त्री० एक सदावहार पेड़ जिसके फल के बीजों में यड़ी तीक्ष्ण सुगंध होती है।

इलाही-संज्ञा पुं० ईश्वर। खुदा।  
वि० दैवी। ईश्वरीय।

इलजाम-संज्ञा पुं० आरोप। दोषा-रोपण।

इलितजा-संज्ञा स्त्री० निवेदन।

इलम-संज्ञा पुं० विद्या। ज्ञान।

इल्लत-संज्ञा स्त्री० १. रोग। बीमारी।  
२. संकट। ३. दोष।

इल्ला-संज्ञा पुं० छोटी कड़ी कुंसी जो चमड़े के ऊपर निकलती है।

इल्ली-संज्ञा स्त्री० चींटी के घों के वह रूप जो अंडे से निकलते ही होता है।

इव-अव्य० उपमावाचकशब्द। समान।  
नाहूँ। तरह।

इशारा-संज्ञा पुं० १. सैन। संकेत।  
२. संक्षिप्त कथन। ३. धारीक सहारा। ४. गुप्त प्रेरणा।

इश्क-संज्ञा पुं० सुखव्यथ। प्रेम।

इश्तहार-संज्ञा पुं० विज्ञापन।

इष्ट-वि० १. चाहा हुआ। २. पूजित।  
संज्ञा पुं० अग्निहोत्रादि शुभ कर्म।

इष्टा-संज्ञा स्त्री० इष्ट का भाव।

इष्टदेव, इष्टदेवता-संज्ञा पुं० आराध्य देव। पूज्य देवता।

इष्टि-संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. यज्ञ।  
इस्-सर्व० 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप। जैसे—इसको।

इसर्पज-संज्ञा पुं० समुद्र में एक प्रकार के अत्यंत छोटे कीड़ों के पेटों से घना हुआ मुलायम रुई की तरह का सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है। मुर्दा बादल।

इसपात-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा लोहा।

इसवगोल-संज्ञा पुं० फारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा में काम आते हैं।

इसलाम-संज्ञा पुं० [ वि० इस्लामिया ]  
मुसलमानी धर्म।

इसलाह-संज्ञा स्त्री० संशोधन।

इसे-सर्व० 'यह' का कर्म कारक और संप्रदान कारक का रूप।

इस्तमरारी-वि० सब दिन रहने-वाला। निर्य।

इस्तिरी-संज्ञा स्त्री० कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरज़ियों का औज़ार।

इस्तीफा-संज्ञा पुं० नौकरी छोड़ने की दस्तखत। त्यागपत्र।

इस्तेमाल-संज्ञा पुं० प्रयोग। उपयोग।

इह-कि० वि० इस जगह। यहाँ।

इहाँ-कि० वि० दे० "यहाँ"।

सर्पनाम जो घोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है ।

उत्तमर्ण-संज्ञा पुं० महाजन ।

उत्तमोत्तम-वि० अच्छे से अच्छा ।

उत्तर-संज्ञा पुं० १. दक्षिण दिशा के सामने की दिशा । २. जवाब । ३. बदला ।

वि० १. पिछला । बाद का । २. ऊपर का ।

क्रि० वि० पीछे । बाद ।

उत्तर-कोशल-संज्ञा पुं० अयोध्या के आस-पास का देश । अवध ।

उत्तरक्रिया-संज्ञा स्त्री० आयेष्टि क्रिया ।

उत्तरदाता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उत्तरदात्री ] जवाबदेह । जिम्मेदार ।

उत्तरदायित्व-संज्ञा पुं० जवाबदेही । जिम्मेदारी ।

उत्तरदायी-वि० [ स्त्री० उत्तरदायिनी ] जवाबदेह । जिम्मेदार ।

उत्तरपथ-संज्ञा पुं० देवयान ।

उत्तरमीमांसा-संज्ञा स्त्री० वेदांत-दर्शन ।

उत्तरा-संज्ञा स्त्री० अभिमन्यु की स्त्री जिससे परीक्षित उत्पन्न हुए थे ।

उत्तराखंड-संज्ञा पुं० भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरीय भाग ।

उत्तराधिकार-संज्ञा पुं० किसी के मरने के पीछे उसके धनादिकास्वत्व । वरासत ।

उत्तराधिकारी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उत्तराधिकारिणी ] वह जो किसी के मरने पर उसकी संपत्ति का मालिक हो ।

उत्तरामास-संज्ञा पुं० अश्विंज जवाब ।

उत्तरायण-संज्ञा पुं० सूर्य की मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर गति ।

उत्तरार्द्ध-संज्ञा पुं० पीछे का अर्द्ध भाग ।

उत्तरीय-संज्ञा पुं० चदर । थोढ़ना ।

वि० १. ऊपरवाला । २. उत्तर दिशा का ।

उत्तरोत्तर-क्रि० वि० एक के पीछे एक ।

उत्ता-वि० दे० "उतना" ।

उत्तान-वि० चित ।

उत्ताप-संज्ञा पुं० [ वि० उत्तप्त, उत्तापित ] १. गर्मी । २. कष्ट । ३. शोक ।

उत्तीर्ण-वि० १. पार गया हुआ । २. परीक्षा में कृत-कार्य ।

उत्तुंग-वि० बहुत ऊँचा ।

वि० बढ़हवास ।

उत्तेजक-वि० प्रेरक ।

उत्तेजन-संज्ञा पुं० दे० "उत्तेजना" ।

उत्तेजना-संज्ञा स्त्री० [ वि० उत्तेजित, उत्तेजक ] १. प्रेरणा । प्रोत्साहन । २. योगों का तीव्र करने की क्रिया ।

उत्थान-संज्ञा पुं० १. उठने का कार्य । २. उन्नति ।

उत्थापन-संज्ञा पुं० ऊपर उठाना ।

उत्पत्ति-संज्ञा स्त्री० [ वि० उत्पन्न ] १. जन्म । २. सृष्टि । ३. आरंभ ।

उत्पन्न-वि० [ स्त्री० उत्पन्ना ] जन्मा हुआ । पैदा ।

उत्पल-संज्ञा पुं० कमल ।

उत्पाटन-संज्ञा पुं० [ वि० उत्पाटित ] उखाड़ना ।

उत्पात-संज्ञा पुं० १. उपद्रव । २. हलचल । ३. ऊधम । दंगा ।

उत्पाती-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उत्पातिनी ] उपद्रवी । नटखट ।

उत्पादक-वि० [ स्त्री० उत्पादिका ] उत्पन्न करनेवाला ।

उच्चार-संज्ञा पुं० विरक्ति। उदासीनता।  
 उच्चारन-संज्ञा पुं० दे० "उच्चारण"।  
 उच्चारना-कि० स० उच्चारण करना।  
 जी हटाना।

उच्चारना-कि० स० लगी या सटी  
 हुई चीज को अलग करना।

उच्चारना-कि० स० १. ऊँचा करना।  
 ऊपर उठाना। २. उठाना।

उच्चार-संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।

उच्चारना-कि० स० उच्चारण करना।  
 कि० स० दे० "उच्चारण"।

उचित-वि० योग्य। ठीक। सुनासिब।

उच्छेदना-कि० स० दे० "उच्छेदना"।

उच्चाई-वि० ऊँचा उठा हुआ।

उच्च-वि० १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

उच्चता-संज्ञा स्त्री० १. ऊँचाई। २.  
 श्रेष्ठता।

उच्चारण-संज्ञा पुं० कंड, तालु, जिह्वा  
 आदि से शब्द निकलना। मुँह से  
 शब्द फूटना।

उच्चार-संज्ञा पुं० १. उखाड़ने या  
 नाचने की क्रिया। २. अनमनापन।

उच्चारन-संज्ञा पुं० १. लगी या सटी  
 हुई चीज को अलग करना। २.  
 किसी के चित्त को कहीं से हटाना।  
 ३. विरक्ति।

उच्चार-संज्ञा पुं० मुँह से शब्द निकालना। कथन।

उच्चारण-संज्ञा पुं० कंड, थोछ,  
 जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों  
 का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना।

उच्चारना-कि० स० मुँह से निकालना। योजना।

उच्चारित-वि० जिसका उच्चारण किया  
 गया हो। बोला या कहा हुआ।

उच्चार्य-वि० उच्चारण के योग्य।

उच्चैःश्रवा-संज्ञा पुं० खड़े कान और  
 सात मुँह का हँस या सूर्य का सफेद  
 घोड़ा जो समुद्र-मग्न के समय  
 निकला था।

वि० ऊँचा सुननेवाला। पहरा।

उच्छ्व-वि० दृश हुआ। सुप्त।

उच्छलना-कि० स० दे० "उच्छलना"।

उच्छ्व-संज्ञा पुं० दे० "उत्सव"।

उच्छ्व-संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।

उच्छ्व-संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।

उच्छ्व-वि० १. कटा हुआ। संहित।

२. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।

उच्छ्व-वि० १. जूठा। २. दूसरे का  
 बर्ता हुआ।

संज्ञा पुं० १. जूठी वस्तु। २. शब्द।

उच्छ्व-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खाँसी  
 जो गले में पानी इत्यादि के रुकने से  
 आने लगती है।

उच्छ्व-खल-वि० १. धड़बड़।

२. स्वेच्छाचारी। ३. उर्द।

उच्छ्वेद, उच्छ्वेदन-संज्ञा पुं० १.  
 उखाड़-पखाड़। खंडन। २. नाश।

उच्छ्वसित-वि० १. साँस खेता  
 हुआ। २. विकसित। प्रफुल्लित।  
 ३. जीवित।

उच्छ्ववास-संज्ञा पुं० १. ऊपर की  
 खोंची हुई साँस। उसास। २. साँस।

उच्छ्व-संज्ञा पुं० १. गोद। २. हृदय।  
 छाती।

उच्छ्व-कि० स० मथा। हटना।  
 चेत में आना।

उच्छ्व-कि० स० दे० "उच्छलना"।

उच्छल-कूद-संज्ञा स्त्री० १. लेख-कूद।  
 २. हलचल।

उत्पादन-संज्ञा पुं० [ वि० उत्पादित ]

उत्पन्न करना । पैदा करना ।

उत्पीड़न-संज्ञा पुं० [ वि० उत्पीडित ]

तकलीफ देना । सताना ।

उत्प्रेक्षा-संज्ञा स्त्री० [ वि० उत्प्रेक्ष्य ]

उद्भावना । आरोप ।

उत्फुल्ल-वि० विकसित ।

उत्सर्ग-संज्ञा पुं० [ वि० उत्सर्गी, औत्सर्गीय, उत्सर्ग्य ] १. त्याग । २. दान । ३.

समाप्ति ।

उत्सर्जन-संज्ञा पुं० [ वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट ]

१. त्याग । २. दान ।

उत्सर्च-संज्ञा पुं० १. मंगल-कार्य ।

धूम-धाम । २. पर्य । ३. आनंद ।

उत्साह-संज्ञा पुं० [ वि० उत्साहित, उत्साही ] १. उमंग । जोश । २.

हिम्मत । (धीररस का स्थायी भाव)

उत्साही-वि० हौसखोवाला ।

उत्सुक-वि० उत्कण्ठित ।

उत्सुकता-संज्ञा स्त्री० आकुलता ।

इच्छा ।

उत्थपना-वि० स० १. उठाना । २.

उजाड़ना ।

उथलना-वि० भ० १. उगमगमाना ।

२. उलटना ।

उथल-पुथल-संज्ञा स्त्री० उलट-पुलट ।

उथला-वि० कम गहरा । छिड़छा ।

उद्धत-वि० जिनके दांत न जमे हों ।

उद्-उप० एक उपमगं जो शब्दों के

पहले लगकर उनमें अर्थों की विशेषता

करता है ।

उद्ध-संज्ञा पुं० जल । पानी ।

उद्धकिया-संज्ञा स्त्री० तिलोद्भलि ।

उद्धकना-वि० भ० कूटना ।

उद्गार-संज्ञा पुं० दे० "उद्गार" ।

उद्गारना-वि० स० १. बाहर

निकालना । २. उभाड़ना ।

उद्गम-वि० १. उद्गत । २. उद्भूत ।

उद्घट्टना-वि० स० उद्घट्ट होना ।

उद्घाटना-वि० स० खोलना ।

उद्ध्य-संज्ञा पुं० सूर्य ।

उद्धि-संज्ञा पुं० १. समुद्र । २. मेघ ।

उद्धिसुत-संज्ञा पुं० १. समुद्र से

उत्पन्न पदार्थ । २. चंद्रमा । ३.

अमृत । ४. शंख । ५. कमल ।

उद्धिसुता-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।

उद्दय-वि० [ वि० उद्गत ] १.

उजाड़ । २. क्षान्नापदोश ।

उद्वासना-वि० स० १. भगा देना ।

२. उजाड़ना ।

उद्मदना-वि० भ० पागल होना ।

उद्माद-संज्ञा पुं० दे० "उद्माद" ।

उद्दय-संज्ञा पुं० [ वि० उद्गत ] ऊपर

घाना । प्रकट होना ।

उद्दयगिरि-संज्ञा पुं० उदयाचल ।

उदयाचल-संज्ञा पुं० पुराणांनुसार पूर्व

दिशा का एक पर्यंत जहाँ से सूर्य

निरुल्लास है ।

उदयाग्नि-संज्ञा पुं० उदयाचल ।

उद्द-संज्ञा पुं० १. पेट । २. मध्य ।

उद्घना-वि० भ० दे० "उद्घना" ।

उद्घात-वि० १. ऊँचे स्वर से उच्चा-

रण किया हुआ । २. दयावान् ।

संज्ञा पुं० दान ।

उद्दायन-संज्ञा पुं० याग ।

उद्दार-वि० [ संज्ञा उद्धारता ] १. दाता ।

२. बड़ा । ३. ऊँचे दिल का ।

उद्दारचरित-वि० शीलवान् ।

उद्दारचेता-वि० जिसका चित्त उद्दार

हो ।

उद्दारता-संज्ञा स्त्री० १. दानशीलता ।

२. उच्च विचार ।

कराना । ३. पचे हुए माल को निकलवाना ।

उगधना-कि० स० दे० “उगाना” ।

उगसाना-कि० स० दे० “उकसाना” ।

उगाना-कि० स० जमाना । अंकुरित करना ।

उगार, उगाल-संज्ञा पुं० पीक । थूक । खलार ।

उगालदान-संज्ञा पुं० थूकने या खलार आदि गिराने का परतन । पीकदान ।

उगाहना-कि० स० वसूल करना ।

उगाही-संज्ञा स्त्री० १. रुपया-पैसा वसूल करने का काम । वसूली ।

२. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा ।

उगिलना-कि० स० दे० “उगलना” ।

उग्र-वि० प्रचंड । तेज ।

संज्ञा पुं० १. महादेव । २. वरसनाग विष ।

उग्रता-संज्ञा स्त्री० तेजी । प्रचंडता ।

उघटना-कि० अ० १. ताल देना ।

सम परताना तोड़ना । २. दूरी-दूराई घात को उभाड़ना । ३. कमी के किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार बार कहकर ताना देना ।

उघटा-वि० किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला । एहसान जतानेवाला ।

संज्ञा पुं० उघटने का कार्य ।

उघड़ना-कि० अ० १. आवरण का हटाना । २. भंडा फूटना ।

उघरना-कि० अ० दे० “उघड़ना” ।

उघाड़ना-कि० स० १. आवरण का

हटाना । २. आवरण रहित करना ।

३. नंगा करना । ४. गुप्त घात को खोलना ।

उघारना-कि० स० दे० “उगाहना” ।

उचकन-संज्ञा पुं० हूँट, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज़ को एक ओर ऊँचा करते हैं ।

उचकना-कि० अ० १. ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल पड़ी उठाकर खड़ा होना । २. उछलना । कूदना ।

कि० स० उछलकर लेना । खपककर छीनना ।

उचका-कि० वि० अचानक । सहसा ।

उचकाना-कि० स० उठाना । ऊपर करना ।

उचका-संज्ञा पुं० [जो०] १. उचककर चीज़ ले भागनेवाला आदमी । डाग । २. बदमाश ।

उचटना-कि० अ० १. उचड़ना । २. अलग होना । ३. भड़कना । ४. विरक्त होना ।

उचटाना-कि० स० १. उचाड़ना । २. अलग करना । ३. उदासीन करना । ४. भड़काना ।

उचड़ना-कि० अ० सटी या लगी हुई चीज़ का अलग होना ।

उचना-कि० अ० १. उचकना । २. उठाना ।

कि० स० ऊँचा करना । उठाना ।

उचनि-संज्ञा स्त्री० उभाड़ ।

उचरना-संज्ञा पुं० पत्तिगा ।

उचरना-कि० स० उच्चारण करना ।

खोलना ।

कि० अ० मुँह से शब्द निकलना ।

१० कि० अ० दे० “उचड़ना” ।

उद्वाह-संज्ञा पुं० विवाह ।  
 उद्वाहन-संज्ञा पुं० [वि० उद्वाहनीय, उद्वाही, उद्वाहित, उद्वाह ] १. ऊपर ले जाना । २. विवाह ।  
 उद्भिन्न-वि० १. आकुल । घबराया हुआ । २. व्यग्र ।  
 उद्भिन्नता-पंज्ञा स्त्री० १. आकुलता । घबराहट । २. व्यग्रता ।  
 उद्देश-संज्ञा पुं० [वि० उद्दिष्ट] १. घबराहट । २. आदेश । जोश ।  
 उधड़ना-क्रि० अ० खुलना ।  
 उधर-क्रि० वि० उस ओर ।  
 उधरना-क्रि० स० १. मुक्त होना । २. दे० "उधड़ना" ।  
 उधराना-क्रि० अ० १. तितर-वितर होना । २. ऊधम मथाना ।  
 उधार-संज्ञा पुं० १. ऋण । २. मँगनी । ३. उधार । छुटकारा ।  
 उधारक-वि० दे० "उद्धारक" ।  
 उधारना-क्रि० स० उधार करना । मुक्त करना ।  
 उधारी-वि० [स्त्री० उधारिणी] उधार करनेवाला ।  
 उधेड़ना-क्रि० स० १. उचाड़ना । २. सिलाई खोलना । ३. छिनाराना ।  
 उधेड़ुन-संज्ञा स्त्री० सोच-विचार ।  
 उन-सर्व० "उस" का बहुवचन ।  
 उनचास-वि० आनीस और नौ ।  
 उनतीस-वि० बीस और नौ ।  
 उनमद-वि० उन्मत्त ।  
 उनमना-वि० दे० "अनमना" ।  
 उनमाथना-क्रि० स० [वि० उन्माथी] मथना । खिलोड़न करना ।  
 उनमाथी-वि० मथनेवाला ।  
 उनमान-संज्ञा पुं० दे० "अनुमान" । संज्ञा पुं० नाप ।

वि० तुल्य ।  
 उनमानना-क्रि० स० अनुमान करना ।  
 उनमुना-वि० [स्त्री० उनमुनी] माना चुपचाप ।  
 उनमूलना-क्रि० स० उखाड़ना ।  
 उनरना-क्रि० अ० १. उठना । २. कूदते हुए चलना ।  
 उनयान-संज्ञा पुं० दे० "अनुमान" ।  
 उनसठ-वि० पचास और नौ ।  
 उनहत्तर-वि० साठ और नौ ।  
 उनहार-वि० सट्टा । समान ।  
 उनहारि-संज्ञा स्त्री० समानता । सादृश्य ।  
 उनाना-क्रि० स० मुकाना ।  
 क्रि० अ० आज्ञा मानना ।  
 उनींदा-वि० [ स्त्री० उनींदी ] ऊँचता हुआ ।  
 उन्नइस-वि० दे० "उन्नीस" ।  
 उन्नत-वि० १. ऊँचा । २. बढ़ा हुआ । ३. श्रेष्ठ ।  
 उन्नति-संज्ञा स्त्री० १. ऊँचाई । २. वृद्धि ।  
 उन्नायक-वि० [ स्त्री० उन्नायिका ] उन्नत करनेवाला ।  
 उन्नासी-वि० सत्तर और नौ ।  
 उन्निद्र-वि० १. निद्रा-रहित । २. खिला हुआ ।  
 उन्नीस-वि० दस और नौ ।  
 उन्मत्त-वि० [संज्ञा उन्मत्तता] १. मत्त-वाला । २. पागल ।  
 उन्मत्तता-संज्ञा स्त्री० मत्तवालापन । पागलपन ।  
 उन्माद-संज्ञा पुं० [वि० उन्मादक, उन्मादी] पागलपन । विचिन्तता ।  
 उन्मादक-वि० १. पागल करनेवाला । २. नशा करनेवाला ।

उन्मादन-संज्ञा पुं० उन्मत्त ।  
 उन्मादी-वि० [ स्त्री० उन्मादिनी ] उन्मत्त ।  
 पागल ।  
 उन्मार्ग-संज्ञा पुं० [ वि० उन्मार्गी ] १.  
 कुमार्ग । २. गुरा-दंग ।  
 उन्मीलन-संज्ञा पुं० [ वि० उन्मीलक,  
 उन्मीलनीय, उन्मीलित ] खिलना ।  
 उन्मीलना-कि० स० खोलना ।  
 उन्मीलित-वि० खुला हुआ ।  
 उन्मुख-वि० [ स्त्री० उन्मुखा ] १. ऊपर  
 मुँह किए । २. उत्सुक । ३. तैयार ।  
 उन्मूलक-वि० समूल नष्ट करनेवाला ।  
 उन्मूलन-संज्ञा पुं० [ वि० उन्मूलनीय,  
 उन्मूलित ] अड़ से उखाड़ना ।  
 उन्मेष-संज्ञा पुं० [ वि० उन्मिषित ] १.  
 खिलना । २. थोड़ा प्रकाश ।  
 उप-उप० एक उपसर्ग । यह जिन  
 शब्दों के पहले लगता है, उनमें विशेष-  
 पता करता है ।  
 उपकरण-संज्ञा पुं० सामग्री ।  
 उपकरना-कि० ॥ उपकार करना ।  
 भलाई करना ।  
 उपकर्त्ता-संज्ञा पुं० दे० "उपकारक" ।  
 उपकार-संज्ञा पुं० १. हितसाधन ।  
 भलाई । २. लाभ ।  
 उपकारक-वि० [ स्त्री० उपकारिका ]  
 उपकार करनेवाला ।  
 उपकारिता-संज्ञा स्त्री० भलाई ।  
 उपकारी-वि० [ स्त्री० उपकारिणी ]  
 उपकार करनेवाला ।  
 उपकृत-वि० जिसके साथ उपकार  
 किया गया हो ।  
 उपकृत-संज्ञा स्त्री० उपकार ।  
 उपक्रम-संज्ञा पुं० १. किसी कार्य को  
 आरंभ करने के पहले का आयोजन ।  
 तैयारी । २. भूमिका ।

उपक्रमणिका-महात्मी विर्मा पुस्तक  
 के आदि में दी हुई विषय-सूची ।  
 उपग्रह-संज्ञा पुं० १. गिरफ्तार । २.  
 वह छोटा ग्रह जो शयन चंद्र ग्रह के  
 चारों ओर घूमता है ।  
 उपघात-संज्ञा पुं० १. नाश करने की  
 क्रिया । २. अशक्ति । ३. रोग ।  
 उपचय-संज्ञा पुं० १. वृद्धि । २. संचय ।  
 उपचार-संज्ञा पुं० १. व्यवहार । २.  
 दवा । ३. सेवा ।  
 उपचारक-वि० [ स्त्री० उपचारिका ]  
 १. सेवा करनेवाला । २. चिकित्सा  
 करनेवाला ।  
 उपचारना-कि० स० व्यवहार में  
 लाना ।  
 उपचारी-वि० [ स्त्री० उपचारिणी ]  
 उपचार करनेवाला ।  
 उपज-संज्ञा स्त्री० उत्पत्ति । पैदावार ।  
 उपजना-कि० ॥ उत्पन्न होना ।  
 उपजाऊ-वि० जिसमें अच्छी उपज हो ।  
 उपजाना-कि० स० उत्पन्न करना ।  
 उपजीवन-संज्ञा पुं० [ वि० उपजीवी,  
 उपजीवक ] जीविका ।  
 उपजीवी-वि० [ स्त्री० उपजीविनी ]  
 दूसरे के सहारे पर गुज़र करनेवाला ।  
 उपटन-संज्ञा पुं० दे० "उपटन" ।  
 उपटाना-कि० स० उधटन लगवाना ।  
 उपटारना-कि० स० हटाना ।  
 उपट्टना-कि० ॥ उलटना ।  
 उपत्यका-संज्ञा स्त्री० पर्वत के पास  
 की भूमि ।  
 उपदिशा-संज्ञा स्त्री० कोण ।  
 उपदिष्ट-वि० १. जिसे उपदेश दिया  
 गया हो । २. जिसके विषय में उप-  
 देश दिया गया हो ।  
 उपदेश-संज्ञा पुं० शिक्षा । सीख ।



ऊदल-संज्ञा पुं० महोदये के मुख्य सामंतों में से एक धीर ।

ऊधम-संज्ञा पुं० उपद्रव । उत्पात ।

ऊधमी-वि० [स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला । उत्पाती ।

ऊन-संज्ञा पुं० भेड़ पकरी आदि का शेर्या ।

वि० [स्त्री० ऊनी] १. कम । थोड़ा । २. तुच्छ । नाचीज़ ।

ऊनता-संज्ञा स्त्री० कमी । न्यूनता ।

ऊना-वि० कम ।

ऊनी-वि० कम । न्यून ।

संज्ञा स्त्री० उदासी । रंज । खेद ।

वि० ऊन का बना हुआ वस्त्र आदि ।

ऊपर-क्रि० वि० [वि० ऊपरी] १. ऊँचाई पर । २. आधार पर ।

ऊपरी-वि० १. ऊपर का । २. बाहर का । ३. दिक्पिथा ।

ऊय-संज्ञा स्त्री० घपराहट ।

संज्ञा स्त्री० उरमाह । उर्मग ।

ऊयट-संज्ञा पुं० कठिन मार्ग । अटपट रास्ता ।

वि० ऊयड़-खायड़ । ऊँचा-नीचा ।

ऊयड़-खायड़-वि० ऊँचा-नीचा ।

ऊयना-क्रि० प्र० उक्ताना । घबराना ।

ऊमक-संज्ञा स्त्री० झोंक । वेग ।

ऊरज-वि० संज्ञा पुं० दे० "ऊर्ज" ।

ऊरघ-वि० दे० "ऊर्घ" ।

ऊरु-संज्ञा पुं० जंघा ।

ऊरुस्तंभ-संज्ञा पुं० एक घात रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं ।

ऊर्ज-वि० घलवान् । शक्तिमान् ।

संज्ञा पुं० [वि० ऊर्जखल, ऊर्जस्वी] १.

थल । शक्ति । २. कार्तिक मास ।

ऊर्जस्वी-वि० १. घलवान् । २. तेजवान् ।

ऊर्ण-संज्ञा पुं० भेड़ या पकरी के दाँत । ऊन ।

ऊर्ध्व-क्रि० वि० ऊपर ।

वि० १. ऊँचा । २. खड़ा ।

ऊर्ध्वगति-संज्ञा स्त्री० मुक्ति ।

ऊर्ध्वगामी-वि० १. ऊपर को जानेवाला । २. मुक्त । निर्वाण-प्राप्त ।

ऊर्ध्वपुंड्र-संज्ञा पुं० खड़ा तिलक । वैष्णवी तिलक ।

ऊर्ध्वरेता-वि० महाचारी ।

ऊर्ध्वलोक-संज्ञा पुं० १. आकाश । २. वैकुण्ठ । स्वर्ग ।

ऊर्ध्वश्वास-संज्ञा पुं० १. ऊपर को चढ़ती हुई साँस । २. श्वास की कमी या तंगी ।

ऊर्मि, ऊर्मी-संज्ञा स्त्री० १. खहर । तरंग । २. पीड़ा ।

ऊल-जलूल-वि० १. बेसिर-पैर का । २. धनाही ।

ऊपा-संज्ञा स्त्री० १. सवेरा । २. अरुणोदय ।

ऊपाकाल-संज्ञा पुं० सवेरा ।

ऊष्म-संज्ञा पुं० गरमी ।

वि० गरम ।

ऊष्मा-संज्ञा स्त्री० ग्रीष्मकाल ।

ऊसर-संज्ञा पुं० वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और कुछ उत्पन्न न हो ।

ऊह-अव्य० ओह ।

संज्ञा पुं० अनुमान ।

ऊहापोह-संज्ञा पुं० तर्क-वितर्क ।

उपदेशक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपदेशिका ]  
शिक्षा देनेवाला ।

उपदेश्य-वि० उपदेश के योग्य ।

उपदेष्टा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपदेष्ट्री ] उप-  
देश देनेवाला । शिक्षक ।

उपदेशना-क्रि० स० उपदेश करना ।

उपद्रव-संज्ञा पुं० [ वि० उपद्रवी ] उत्पात ।  
विप्लव ।

उपद्रवी-वि० १. ऊधम मचानेवाला ।  
२. नटखट ।

उपधरना-क्रि० प्र० धरतीकार करना ।

उपधान-संज्ञा पुं० [ वि० उपधृत ] १.  
ऊपर रखना । २. तक्षिण ।

उपनना-क्रि० प्र० पैदा होना ।

उपनय-संज्ञा पुं० १. समीप से जाना ।  
२. उपनयन-संस्कार ।

उपनयन-संज्ञा पुं० [ वि० उपनीत, उप-  
नेता, उपनेतव्य ] यज्ञोपवीत संस्कार ।

उपनाम-संज्ञा पुं० दूसरा नाम ।

उपनिधि-संज्ञा स्त्री० धरोहर । याती ।

उपनिविष्ट-वि० दूसरे स्थान से आकर  
बसा हुआ ।

उपनिवेश-संज्ञा पुं० एक स्थान से  
दूसरे स्थान पर जा बसना ।

उपनिषद्-संज्ञा स्त्री० वेद की शाखाओं  
के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें  
आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है ।

उपनीत-वि० जिसका उपनयन संस्कार  
हो गया हो ।

उपनेता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपनेत्री ] १.  
लानेवाला । २. उपनयन करानेवाला ।

आचार्य्य ।

उपन्यास-संज्ञा पुं० [ वि० उपन्यस्त ]  
कथा । नावल ।

उपपत्ति-संज्ञा पुं० वह पुरुष जिससे  
किसी दूसरे की स्त्री प्रेम

उपपत्ति-संज्ञा स्त्री० १. हेतु द्वारा  
किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय ।

२. हेतु ।

उपपातक-संज्ञा पुं० छोटा पाप ।

उपपादन-संज्ञा पुं० [ वि० उपपादित,  
उपपन्न, उपपादनीय, उपपाप ] १. सिद्ध  
करना । २. संसादन ।

उपपुराण-संज्ञा पुं० १८ मुख्य पुराणों  
के अतिरिक्त और छोटे पुराण ।

उपभुक्त-वि० १. काम में लाया  
हुआ । २. जूठा ।

उपभोक्ता-वि० [ स्त्री० उपभोक्त्री ]  
उपभोग करनेवाला ।

उपभोग-संज्ञा पुं० १. धर्तना । २.  
किसी वस्तु का व्यवहार । उसका  
सुख ।

उपमंत्री-संज्ञा पुं० वह मंत्री जो प्रधान  
मंत्री के नीचे हो ।

उपमा-संज्ञा स्त्री० १. तुलना । मिज्ञान ।

२. एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तु-  
ओं के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें  
समान बतलाया जाता है ।

उपमाता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपमाती ]  
उपमा देनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० दूध पिलानेवाली दाई ।

उपमान-संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिससे  
उपमा दी जाय । २. २६ मात्राओं  
का एक छंद ।

उपमित-वि० जिसकी उपमा दी  
गई हो ।

उपमिति-संज्ञा स्त्री० उपमा या सादृश्य  
से होनेवाला ज्ञान ।

उपमेय-वि० जिसकी उपमा दी जाय ।

१० योग्य ।

संज्ञा स्त्री० यथार्थता ।

अनु

अनु-एक स्वर जो वर्णमाला का सातवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है।

संज्ञा स्त्री० १. देवमाता। २. निंदा।

अनुक-संज्ञा स्त्री० वेदमंत्र।

संज्ञा पुं० दे० "अनुवेद"।

अनुत्-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अन्व ] १. भालू। २. तारा।

अनुत्पत्ति-संज्ञा पुं० चंद्रमा।

अनुवेद-संज्ञा पुं० चार वेदों में से एक।

अनुवेदी-वि० अनुवेद का जानने या पढ़नेवाला।

अनुवा-संज्ञा स्त्री० वेदमंत्र।

अनुवृ-संज्ञा पुं० दे० "अनुवृ"।

अनुनु-वि० १. सीधा। २. सरल।

अनुनुता-संज्ञा स्त्री० १. सीधापन। २. सज्जनता।

अनुण-संज्ञा पुं० [ वि० अणु ] कर्ज। उधार।

अनुणी-वि० १. कर्जदार। २. अनुगृहीत।

अनुतु-संज्ञा स्त्री० १. प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो दो महीनों के विभाग जो छः हैं। २. रजोदर्शन के उपरान्त वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भ-धारण के योग्य

होती हैं।

अनुचर्या-संज्ञा स्त्री० अनुश्रुतों के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।

अनुमती-वि० स्त्री० राजस्वला। मासिक धर्मयुक्ता।

अनुमता-संज्ञा पुं० वसंत ऋतु।

अनुमती-वि० स्त्री० दे० "अनुमती"।

अनुस्नान-संज्ञा पुं० [ वि० स्त्री० अनुस्नाता ] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।

अनुत्विज-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अनुत्विजा ] यज्ञ करनेवाला।

अनुद-वि० संपन्न। समृद्ध।

अनुद्धि-संज्ञा स्त्री० १. समृद्धि। २. आर्या छंद का एक भेद।

अनुद्धि-सिद्धि-संज्ञा स्त्री० समृद्धि और सफलता।

अनुनिया-वि० अणु।

अनुभु-संज्ञा पुं० देवता।

अनुपम-संज्ञा पुं० १. बिल। २. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। ३. जैन-देवता।

अनुपि-संज्ञा पुं० वेद-मंत्रों का प्रकाश करनेवाला। साधु।

अनुप्यमूक-संज्ञा पुं० दक्षिण का एक पर्वत।

अनु

अनु-संस्कृत वर्णमाला का ग्यारहवाँ और नागरी वर्णमाला का आठवाँ स्वर वर्ण। यह अ और इ के योग

से बना है; इसी लिये यह कंठ-तालव्य है।

अनु-पंच-संज्ञा पुं० १. उल्लसन।

उपयोग-संज्ञा पुं० [वि० उपयोगी, उपयुक्त]

१. व्यवहार । २. आवश्यकता ।

उपयोगिता-संज्ञा स्त्री० काम में आने की योग्यता ।

उपयोगी-वि० [स्त्री० उपयोगिनी] १.

काम में आनेवाला । २. लाभकारी ।

उपरत-वि० १. विरक्त । २. मरा हुआ ।

उपरति-संज्ञा स्त्री० १. विरति । २.

श्रुत्यु ।

उपरत्न-संज्ञा पुं० कम दाम के रत्न ।

उपरना-संज्ञा पुं० हुपट्टा ।

†कि० अ० उखाड़ना ।

उपरफट, उपरफट्ट-वि० १. ऊपरी ।

२. ब्रे टिकाने का ।

उपरांत-कि० वि० अनंतर । बाद ।

उपराग-संज्ञा पुं० १. रंग । २.

वासना । ३. चंद्र या सूर्य ग्रहण ।

उपरा-चढ़ी-संज्ञा स्त्री० चढ़ा-ऊपरी ।

उपराज-संज्ञा पुं० राजप्रतिनिधि ।

०संज्ञा स्त्री० दे० "उपज" ।

उपराजना-कि० स० पैदा करना ।

उपराना-कि० अ० ऊपर आना ।

कि० स० उठाना ।

उपराहना-कि० अ० प्रशंसा करना ।

उपराही-कि० वि० दे० "ऊपर" ।

वि० बढ़कर । भेष्ट ।

उपरि-कि० वि० ऊपर ।

उपरी-उपरा-संज्ञा पुं० चढ़ा-ऊपरी ।

उपरोक्त-वि० ऊपर कहा हुआ ।

उपरोध-संज्ञा पुं० १. रुकावट । २.

ढकना ।

उपरोधक-संज्ञा पुं० १. बाधा डालने-

वाला । २. भीतर की कोठरी ।

उपयुक्त-वि० ऊपर कहा हुआ ।

उपल-संज्ञा पुं० १. पथर । २. शीला ।

३. रत्न । ४. मेघ ।

उपलक्षक-वि० अनुमान करनेवाला ।

तादनेवाला ।

उपलक्षण-संज्ञा पुं० [वि० उपलक्षक,

उपलक्षित] संकेत ।

उपलक्ष्य-संज्ञा पुं० १. संकेत । चिह्न ।

२. उद्देश्य ।

उपलब्ध-वि० पाया हुआ ।

उपलब्धि-संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति । २.

बुद्धि ।

उपला-संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० उपली]

कड़ा । गोहरा ।

उपलेप-संज्ञा पुं० १. लेप लगाना ।

लीपना । २. वह वस्तु जिससे लेप

करें ।

उपलेपन-संज्ञा पुं० [वि० उपलेपित,

उपलेप्य, उपलिप्य] लीपने या लेप

लगाने का कार्य ।

उपला-संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० उपली]

किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग,

पक्ष या सह ।

उपवन-संज्ञा पुं० १. बाग । २. छोटा

जंगल ।

उपवस्थ-संज्ञा पुं० गाँव । बस्ती ।

उपवास-संज्ञा पुं० भोजन का छूटना ।

फाका ।

उपवासी-वि० [स्त्री० उपवासिनी]

उपवास करनेवाला ।

उपविष-संज्ञा पुं० हलका विष ।

उपविष्ट-वि० बैठा हुआ ।

उपवीत-संज्ञा पुं० [वि० उपवीती] १.

जनेऊ । २. उपनयन ।

उपवेशन-संज्ञा पुं० [वि० उपवेशित,

उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. बैठना ।

२. स्थित होना । जमना ।

उपशिष्य-संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य ।

उपसंपादक-संज्ञा पुं० [स्त्री० उपसंपादिका]

२. घात ।

पंजिन-संश पुं० दे० "इंजन" ।

पँडा-पँडा-वि० बलटा-सीधा ।

पड्डी-संश स्त्री० १. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो थंडी के पत्ते खाता है । २. थंडी । सूगा ।

संश स्त्री० दे० "पदी" ।

पँडुआ-संश पुं० [ स्त्री० मल्पा० पँडुई ] गेंडुरी ।

प-संश पुं० विष्णु ।

अव्य० एक अव्यय जिपका प्रयोग सेवोधन या बुलाने के लिये करते हैं ।  
० सर्व० यह ।

एकंग-वि० अकेला ।

एकंगा-वि० [ स्त्री० एकंगी ] एक ओर का ।

एकत-वि० दे० "एकत" ।

एक-वि० १. एकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या । २. अद्वितीय ।  
३. कोई । ४. मुख्य ।

एकचक्र-संश पुं० १. सूर्य का चक्र ।  
२. सूर्य ।

वि० चक्रवर्ती ।

एकछुत्र-वि० जिसमें कहीं और किसी दूसरे का राज्य या अधिकार न हो ।  
कि० वि० एकाधिपत्य के साथ ।

संश पुं० यह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है ।  
वि० एक ही ।

एकड़-संश पुं० पृथिवी की एक माप ।

एकतः-कि० वि० एक ओर से ।

एकतरफा-वि० १. एक ओर का ।  
२. पक्षपातमूलक ।

एकता-संश स्त्री० १. मेल । २. समानता ।

वि० बेजोड़ ।

एकतान-वि० १. एकाम्रचित । २. मिलकर एक ।

एकतारा-संश पुं० एक तार का सितार या चाना ।

एकतालीस-वि० चालीस और एक ।

एकतीस-वि० गिनती में तीस और एक ।

एकत्र-कि० वि० एकट्ठा ।

एकत्रित-वि० दे० "एकत्र" ।

एकनयन-वि० काना ।

संश पुं० १. कौवा । २. कुवेर ।

एकनिष्ठ-वि० एक ही पर ध्यान रखने-वाला ।

एकग्री-संश स्त्री० निश्चल धातु का एक आने मुख्य का सिक्का ।

एकवारगी-कि० वि० १. एक ही दफे में । २. अचानक ।

एकवाल-संश पुं० १. प्रताप । २. भाव्य ।

एकभुक्त-वि० जो रात-दिन में केवल एक बार भोजन करे ।

एकमत-वि० एक राय के ।

एकमात्रक-वि० एक मात्रा का ।

एकमुखी-वि० एक मुँहवाला ।

एकरंग-वि० १. समान । २. जो चारों ओर एक सा हो ।

एकरदन-संश पुं० गणेश ।

एकरस-वि० एक रस का ।

एकरार-संश पुं० १. स्वीकार । २. प्रतिज्ञा ।

एकरूप-वि० समान आकृति का ।

एकरूपता-संश स्त्री० समानता ।

एकला-वि० दे० "थकेला" ।

एकलिंग-संश पुं० शिव का एक नाम ।

उपदेशक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपदेशिका ]  
शिक्षा देनेवाला ।

उपदेश्य-वि० उपदेश के योग्य ।

उपदेश-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपदेशी ] उप-  
देश देनेवाला । शिक्षक ।

उपदेशना-कि० सं० उपदेश करना ।

उपद्रव-संज्ञा पुं० [ वि० उपद्रवी ] उत्पात ।  
विप्लव ।

उपद्रवी-वि० १. ऊपम मचानेवाला ।  
२. नटखट ।

उपधरना-कि० अ० अंगीकार करना ।

उपधान-संज्ञा पुं० [ वि० उपधृत ] १.  
ऊपर रखना । २. संकलन ।

उपनना-कि० अ० पैदा होना ।

उपनय-संज्ञा पुं० १. समीप से जाना ।  
२. उपनयन-संस्कार ।

उपनयन-संज्ञा पुं० [ वि० उपनीत, उप-  
नेता, उपनेतृ ] यज्ञोपवीत संस्कार ।

उपनाम-संज्ञा पुं० दूसरा नाम ।

उपनिधि-संज्ञा स्त्री० धरोहर । धाती ।

उपनिधि-वि० दूसरे स्थान से आकर  
बसा हुआ ।

उपनिवेश-संज्ञा पुं० एक स्थान से  
दूसरे स्थान पर जा बसना ।

उपनिषद्-संज्ञा स्त्री० वेद की शाखाओं  
के ब्राह्मणों के वै अंतिम भाग जिनमें  
आत्मा, परमात्मा आदिकानिरूपण है ।

उपनीत-वि० जिसका उपनयन संस्कार  
हो गया हो ।

उपनेता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपनेत्री ] १.  
लानेवाला । २. उपनयन करानेवाला ।

आचार्य ।

उपन्यास-संज्ञा पुं० [ वि० उपन्यस्त ]  
कथा । नावेल ।

उपपत्ति-संज्ञा पुं० वह पुरुष जिससे  
किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे ।

उपपत्ति-संज्ञा स्त्री० १. हेतु द्वारा  
किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय ।  
२. हेतु ।

उपपातक-संज्ञा पुं० छोटा पाप ।

उपपादन-संज्ञा पुं० [ वि० उपपादित,  
उपपन्न, उपपादनीय, उपपाय ] १. सिद्ध  
करना । २. संपादन ।

उपपुराण-संज्ञा पुं० १८ मुख्य पुराणों  
के अतिरिक्त और छोटे पुराण ।

उपभुक्त-वि० १. काम में लाया  
हुआ । २. जूठा ।

उपभोक्ता-वि० [ स्त्री० उपभोक्त्री ]  
उपभोग करनेवाला ।

उपभोग-संज्ञा पुं० १. धर्तना । २.  
किसी वस्तु का व्यवहार । उसका  
सुख ।

उपमंत्री-संज्ञा पुं० वह मंत्री जो प्रधान  
मंत्री के नीचे हो ।

उपमा-संज्ञा स्त्री० १. तुलना । मित्रान ।

२. एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तु-  
ओं के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें  
समान बतलाया जाता है ।

उपमाता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपमात्री ]  
उपमा देनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० दूध पिलानेवाली दाई ।

उपमान-संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिससे  
उपमा दी जाय । २. २३ मात्राओं  
का एक छंद ।

उपमित-वि० जिसकी उपमा दी  
गई हो ।

उपमिति-संज्ञा स्त्री० उपमा या सादृश्य  
से होनेवाला ज्ञान ।

उपमेय-वि० जिसकी उपमा दी जाय ।

उपयुक्त-वि० योग्य ।

उपयुक्तता-संज्ञा स्त्री० उपार्थता ।

एकलौता-वि० [स्त्री० एकलौती] अपने माँ-बाप का एक ही (छद्दा) ।

एकवचन-संज्ञा पुं० व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता है ।

एकवेणी-वि० १. जो (स्त्री) एक ही चोटी बनाकर बालों को किसी प्रकार समेट ले । २. विधवा ।

एकसठ-वि० सठ और एक ।

एकसाँ-वि० बराबर । समान ।

एकहत्तर-वि० सत्तर और एक ।

एकहत्था-वि० जो एक ही के हाथ में हो ।

एकहरी-वि० [ स्त्री० एकहरी ] एक परत का ।

एकांग-वि० जिसे एक ही अंग हो ।

एकांगी-वि० १. एकतरफा । २. जिद्दी ।

एकांत-वि० निर्जन ।

संज्ञा पुं० निराखा ।

एकांतता-संज्ञा स्त्री० अकेलापन ।

एकांतवास-संज्ञा पुं० [ वि० एकांत-वासी ] निर्जन स्थान या अकेले में रहना ।

एका-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

संज्ञा पुं० मेल ।

एकार्द्र-संज्ञा स्त्री० १. एक का भाव । २. अंकों की गिनती में पहले अंक का स्थान ।

एकाएक-क्रि० वि० अकस्मात् ।

एकाकार-संज्ञा पुं० एकमय होना । वि० समान ।

एकाकी-वि० [ स्त्री० एकाकिनी ] अकेला ।

एकाक्षि-वि० काना ।

संज्ञा पुं० १. कौआ । २. शुक्राचार्य ।

एकाक्षरी-वि० एक अक्षर का ।

एकाग्र-वि० [ संज्ञा एकाग्रता ] चंचलता-रहित ।

एकाग्रचित्त-वि० स्थिरचित्त ।

एकाग्रता-संज्ञा स्त्री० अचंचलता ।

एकात्मता-संज्ञा स्त्री० एकता ।

एकादश-वि० ग्यारह ।

एकादशी-संज्ञा स्त्री० प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन है ।

एकाधिपत्य-संज्ञा पुं० पूर्ण प्रभुत्व ।

एकार्थक-वि० समानार्थक ।

एकीकरण-संज्ञा पुं० [ वि० एकीकृत ] मिलाकर एक करना ।

एकीभूत-वि० मिश्रित ।

एकोतरसो-वि० एक सौ एक ।

एकोद्दिष्ट (आद्ध)-संज्ञा पुं० वह आद्ध जो एक के उद्देश से किया जाय ।

एकौभाँ-वि० अकेला ।

एक्का-वि० अकेला ।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की दो पहिए की गाड़ी जिसमें एक बैल या घोड़ा जोता जाता है । २. ताश या गंजीफ़े का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो । एककी ।

एक्कावान-संज्ञा पुं० एक्काहकनेवाला ।

एक्की-संज्ञा स्त्री० १. वह बैलगाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय ।

२. ताश या गंजीफ़े का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो । यक्का ।

एक्यानवे-वि० नब्बे और एक ।

एक्यावन-वि० पचास और एक ।

एक्यासी-वि० अरसी और एक ।

एखनी-संज्ञा स्त्री० मांस का रस या शोरबा ।

एड्ड-संज्ञा स्त्री० पड़ी ।

एड्डी-संज्ञा स्त्री० टखनी के पीछे पैर की गद्दी का निकला हुआ भाग ।

एतद्-सर्व० यह ।

उपयोग-संज्ञा पुं० [वि० उपयोगी, उपयुक्त]

१. व्यवहार । २. आवश्यकता ।

उपयोगिता-संज्ञा स्त्री० काम में आने की योग्यता ।

उपयोगी-वि० [ स्त्री० उपयोगिनी ] १.

काम में आनेवाला । २. लाभकारी ।

उपरत-वि० १. विरक्त । २. मरा हुआ ।

उपरति-संज्ञा स्त्री० १. विरति । २. शूल ।

उपरत्न-संज्ञा पुं० कम दाम के रत्न ।

उपरना-संज्ञा पुं० दुपट्टा ।

† कि० अ० उलाड़ना ।

उपरफट, उपरफट्ट-वि० १. ऊपरी । २. वे ठिकाने का ।

उपरांत-कि० वि० अनंतर । बाद ।

उपराग-संज्ञा पुं० १. रंग । २. वासना । ३. चंद्र या सूर्य ग्रहण ।

उपरा-चट्टी-संज्ञा स्त्री० चट्टा-ऊपरी ।

उपराज-संज्ञा पुं० राजप्रतिनिधि । संज्ञा स्त्री० दे० "उपज" ।

उपराजना-कि० सं० पैदा करना ।

उपराना-कि० अ० ऊपर आना ।

कि० सं० उठाना ।

उपराहना-कि० अ० प्रशंसा करना ।

उपराही-कि० वि० दे० "ऊपर" । वि० बढ़कर । श्रेष्ठ ।

उपरि-कि० वि० ऊपर ।

उपरी-उपरा-संज्ञा पुं० चट्टा-ऊपरी ।

उपरोक्त-वि० ऊपर कहा हुआ ।

उपरोध-संज्ञा पुं० १. रुकावट । २. दकना ।

उपरोधक-संज्ञा पुं० १. बाधा डालनेवाला । २. भीतर की कोठरी ।

उपर्युक्त-वि० ऊपर कहा हुआ ।

उपल-संज्ञा पुं० १. पत्थर । २. मोला । ३. रत्न । ४. मेघ ।

उपलक्षक-वि० अनुमान करनेवाला । ताड़नेवाला ।

उपलक्ष्य-संज्ञा पुं० [ वि० उपलक्ष्य, उपलक्षित ] संकेत ।

उपलक्ष्य-संज्ञा पुं० १. संकेत । चिह्न । २. दृश्य ।

उपलब्ध-वि० पाया हुआ ।

उपलब्धि-संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति । २. बुद्धि ।

उपला-संज्ञा पुं० [ स्त्री०, भल्पा० उपली ] कंडा । गोहरा ।

उपलेप-संज्ञा पुं० १. लेप लगाना । लीपना । २. वह वस्तु जिससे लेप करें ।

उपलेपन-संज्ञा पुं० [ वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त ] लीपने या लेप लगाने का कार्य ।

उपल्ला-संज्ञा पुं० [ स्त्री०, भल्पा० उपल्ली ] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त या तह ।

उपवन-संज्ञा पुं० १. बाग । २. छोटा जंगल ।

उपवसथ-संज्ञा पुं० गाँव । बस्ती ।

उपवास-संज्ञा पुं० भोजन का छूटना । फाका ।

उपवासी-वि० [ स्त्री० उपवासिनी ] उपवास करनेवाला ।

उपविष-संज्ञा पुं० हलका विष ।

उपविष्ट-वि० बैठा हुआ ।

उपवीत-संज्ञा पुं० [ वि० उपवीती ] १. जनेऊ । २. उपनयन ।

उपवेशन-संज्ञा पुं० [ वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट ] १. बैठना । २. स्थित होना । जमना ।

उपशिष्य-संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य ।

उपसंपादक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उपसंपादिका ]



एतद्देशीय-वि० इस देश का ।  
 एतद्वार-संज्ञा पुं० विरवास ।  
 एतराज-संज्ञा पुं० विरोध ।  
 एतधार-संज्ञा पुं० दे० "इतवार" ।  
 एता-वि० [ स्त्री० एती ] इतना ।  
 एतादृश-वि० ऐसा ।  
 एतिक-वि० स्त्री० इतनी ।  
 एरंड-संज्ञा पुं० रेंड । रेंदी ।  
 एलची-संज्ञा पुं० राजदूत ।  
 एला-संज्ञा स्त्री० इलायची ।  
 एर्घ-कि० वि० ऐसा ही ।

एव-अव्य० १. एक निश्चयार्थक  
 शब्द । ही । २. भी ।  
 एघज-संज्ञा पुं० घदला ।  
 एघज़ी-संज्ञा स्त्री० स्थानापन्न पुरुष ।  
 एह-सर्व० यह ।  
 वि० यह ।  
 एहसान-संज्ञा पुं० उपकार ।  
 एहसानमंद-वि० कृतज्ञ ।  
 एहि-सर्व० इसको ।  
 एहो-अव्य० हे । ऐ ।

## पे

पे-संस्कृत वर्णमाला का बारहवाँ  
 अक्षर हिंदी या देवनागरी वर्णमाला  
 का नवौं स्वर वर्ण जिसका उच्चारण-  
 स्थान कंठ और तालु है ।

पे-अव्य० १. एक अव्यय जिसका  
 प्रयोग अच्छी तरह न सुनी या  
 समझी हुई बात को फिर से कह-  
 खाने के लिये होता है । २. एक  
 आरचपसूचक अव्यय ।

पेँचना-कि० स० खींचना ।

पेँचा ताना-वि० जिसकी पुतली  
 ताकने में दूसरी ओर को खिंचती  
 हो । मंगा ।

पेँचातानी-संज्ञा स्त्री० खींचा-खींची ।

पेँछना-कि० स० झाड़ना ।

पेँठ-संज्ञा स्त्री० १. अकड़ । २. गर्व ।

पेँठन-संज्ञा स्त्री० झपेट ।

पेँठना-कि० स० १. मरोड़ना । २.  
 झेंसना ।

कि० अ० १. अकड़ना । २. धमंड  
 करना । ३. टराना ।

पेँठवाना-कि० स० पेँठने का काम  
 दूसरे से करवाना ।

पेँड़-संज्ञा पुं० १. पेँठ । गर्व । २.  
 पानी का अंधार ।

वि० निकम्मा ।

पेँड़दार-वि० धमंडी ।

पेँड़ना-कि० अ० पेँठना ।

कि० स० पेँठना ।

पेँड़वैँड़-वि० टेढ़ा ।

पेँड़ा-वि० [ स्त्री० पेँड़ी ] टेढ़ा ।

पेँठा हुआ ।

पेँड़ाना-कि० अ० अँगड़ाई खेना ।  
 यदन तोड़ना ।

उभयतः-कि० वि० दोनों ओर से ।  
 उभरना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 उभरौहा-वि० उभरा हुआ ।  
 उभाड़-संज्ञा पुं० उठान । ऊँचापन ।  
 उभाड़ना-कि० स० उत्तेजित करना ।  
 उभिड़ना-कि० अ० हिचकना ।  
 उभै-वि० दे० "उभय" ।  
 उभंग-संज्ञा स्त्री० चित्त का उभाड़ ।  
 मौज ।  
 उभंगना-कि० अ० दे० "उसगना" ।  
 उमँड़ना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 उमग-संज्ञा स्त्री० दे० "उमंग" ।  
 उमगना-कि० अ० १. उमड़ना । २.  
 उछास में होना ।  
 उमचना-कि० अ० हुमचना ।  
 उमड़-संज्ञा स्त्री० बाढ़ ।  
 उमड़ना-कि० अ० १. उतराकर बह  
 चलना । २. उठकर फैलना । ३.  
 जोश में आना ।  
 उमड़ाना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 कि० स० "उमड़ना" का प्रेरणार्थक  
 रूप ।  
 उमड़ा-वि० दे० "उमड़ा" ।  
 उमर-संज्ञा स्त्री० अवस्था ।  
 उमरा-संज्ञा पुं० प्रतिष्ठित लोग ।  
 उमराव-संज्ञा पुं० दे० "उमरा" ।  
 उमस-संज्ञा स्त्री० वह गरमी जो हवा  
 न चलने पर होती है ।  
 उमड़ना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 उमा-संज्ञा स्त्री० शिव की स्त्री, पार्वती ।  
 उमाकना-कि० अ० नष्ट करना ।  
 उमाकिनी-वि० स्त्री० खोदकर फेंक  
 देनेवाली ।  
 उमाचना-कि० स० उभाड़ना ।

उमाद-संज्ञा पुं० दे० "उन्माद" ।  
 उमापति-संज्ञा पुं० शिव ।  
 उमाह-संज्ञा पुं० बरसाह ।  
 उमेठन-संज्ञा स्त्री० मरोड़ ।  
 उमेठना-कि० स० पेंठना । मरोड़ना ।  
 उमेड़ना-कि० स० दे० "उमेठना" ।  
 उमेलना-कि० स० मकट करना ।  
 उम्दगी-संज्ञा स्त्री० अच्छापन । भल  
 पन । खूबी ।  
 उम्दा-वि० अच्छा । भला ।  
 उम्मत-संज्ञा स्त्री० जमाअत ।  
 उम्मीद, उम्मेद-संज्ञा स्त्री० आशा  
 भरोसा । आसरा ।  
 उम्मेदवार-संज्ञा पुं० आसरा रखने  
 वाला ।  
 उम्मेदवारी-संज्ञा स्त्री० आशा  
 आसरा ।  
 उम्न-संज्ञा स्त्री० अवस्था ।  
 उर-संज्ञा पुं० हृदय ।  
 उरग-संज्ञा पुं० साँप ।  
 उरगना-कि० स० स्वीकार करना ।  
 उरगारि-संज्ञा पुं० गरुड़ ।  
 उरगिनी-संज्ञा स्त्री० सपिंघी ।  
 उरझना-कि० अ० दे० "उलझना" ।  
 उरव-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भस्पा ] उरदी  
 एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियाँ  
 के बीज या दाने की दाज होती  
 हैं । माष ।  
 उरध-कि० वि० दे० "ऊर्ध्व" ।  
 उरधारना-कि० स० दे० "उधेड़ना" ।  
 उरवसी-संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वशी" ।  
 उरवी-संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी" ।  
 उरमना-कि० अ० लटकना ।  
 उरमाना-कि० स० लटकाना ।  
 उरमाल-संज्ञा पुं० रुमाल ।  
 उरस-वि० फीका नीरस ।

पेंद्रजालिक-वि० इन्द्रजाल करने-  
वाला । मायावी ।

पेंद्री-संज्ञा स्त्री० १. इन्द्राणी । २.  
इन्द्रायणी ।

पे-संज्ञा पुं० शिव ।

अव्य० एक संवोधन ।

पेय-संज्ञा पुं० पुरुष ।

पेगुन-संज्ञा पुं० दे० "अवगुण" ।

पेच्छिक-वि० जो अपनी इच्छा  
पर हो ।

पेत्तहासिक-वि० इतिहास-संबंधी ।

पेन-संज्ञा पुं० दे० "अयन" ।

वि० ठीक ।

पेनक-संज्ञा स्त्री० आंस में लगाने  
का चरमा ।

पेपन-संज्ञा पुं० हल्दी के साथ मीठा  
पिसा चावल जिससे देवताओं की  
पूजा में धापा लगाने हैं ।

पेय-संज्ञा पुं० [ वि० पेी ] दोष ।

पेवी-वि० नटखट ।

पेया-संज्ञा स्त्री० १. घड़ी-घड़ी स्त्री ।  
२. दाढ़ी ।

पेयार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पेयाय ] धूर्त ।

पेयारी-संज्ञा स्त्री० चालाकी । धूर्तता ।

पेयाश-वि० [ संज्ञा पेयाशी ] विषयी ।

पेयाशी-संज्ञा स्त्री० भोग-विलास ।

पेरा गैरा-वि० १. अजनबी । २.  
तुच्छ ।

पेरापति-संज्ञा पुं० दे० "पेरावत" ।

पेरावत-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पेरावती ] इन्द्र  
का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है ।

पेरावती-संज्ञा स्त्री० पेरावत हाथी की  
इथिनी ।

पेल-संज्ञा पुं० [ हिं० भदिला ] १. पाड़ ।  
२. अधिकता ।

पेश-संज्ञा पुं० आराम ।

पेश्वर्य-संज्ञा पुं० विभूति ।

पेश्वर्यचान्-वि० [ स्त्री० पेश्वर्यवती ]  
धर्मवशाली । संपन्न ।

पेसा-वि० दे० "पेसा" ।

पेसा-वि० [ स्त्री० पेसी ] इस प्रकार का ।

पेसे-कि० वि० इस ढंग से ।

पेहिक-वि० सांसारिक ।

## श्री

श्री-संस्कृत वर्णमाला का तेरहवाँ  
और हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर-  
वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ  
और कंठ है ।

श्री-अव्य० हाँ । अच्छा ।

श्रीलुना-कि० स० निज़ावर करना ।

श्रीकार-संज्ञा पुं० १. परमात्मा का  
सूचक "श्री" शब्द । २. सोहेन वि-  
धिया ।

श्रींगना-कि० स० गाड़ो की धुरी में  
चिहनाई लगाना जिससे पहिया  
आसानी से फिरे ।

श्रींठ-संज्ञा पुं० होंठ ।

श्रींड़ा-वि० गहरा ।

संज्ञा पुं० गढ़ा ।

श्री-संज्ञा पुं० ब्रह्मा ।

अव्य० १. एक संवोधन-सूचक शब्द ।  
२. ओह ।

संज्ञा पुं० छाती ।

उरसना-कि० अ० वयल-पुण्यल करना ।

उरसिज-संज्ञा पुं० स्नान ।

उरहना-संज्ञा पुं० दे० "उखाहना" ।

उराहना-संज्ञा पुं० दे० "उखाहना" ।

उरिण; उरिन-कि० दे० "उरुण" ।

उरु-वि० विलोप्य ।

० संज्ञा पुं० जंघा । जाँघ ।

उरुवा-संज्ञा पुं० वस्त्र की जाति की एक विधिया । रुखा ।

उरुत-संज्ञा पुं० धड़ती । वृद्धि ।

उरेखना-कि० स० दे० "अवरेखना" ।

उरह-संज्ञा पुं० चित्रकारी ।

उरेहना-कि० स० खींचना । रचना ।

उरोज-संज्ञा पुं० स्नान ।

उर्द-संज्ञा पुं० दे० "उरद" ।

उर्दू-संज्ञा स्त्री० वह हिंदी जिसमें अरबी, फ़ारसी के शब्द अधिक हो और जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय ।

उर्ध्व-वि० ऊर्ध्व ।

उर्फ-संज्ञा पुं० उपनाम ।

उर्मि-संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि" ।

उर्वरा-संज्ञा स्त्री० उपजाऊ भूमि ।

वि० स्त्री० उपजाऊ ।

उर्वी-संज्ञा स्त्री० पृथिवी ।

उर्वीजा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी से उत्पन्न, सोता ।

उर्वीधर-संज्ञा पुं० १. शेष । २. पर्यंत ।

उर्स-संज्ञा पुं० १. सुसज्जमानों में पीर छादि के मरने के दिन का कृत्य ।

२. सुसज्जमान साधुओं की निर्वाण-तिथि ।

उलंग-वि० नेगा ।

उलंघन-संज्ञा पुं० दे० "उल्लंघन" ।

उलंघना, उल्लंघना-कि० स० १.

नाशना । २. अवज्ञा करना ।

उलचना-कि० स० दे० "उल्लिचना" ।

उलङ्गना-कि० स० १. छितराना ।

२. उल्लिचना ।

उलम्हन-संज्ञा स्त्री० १. गाँठ । २.

चकर ।

उलम्हना-कि० अ० १. फँसना । २.

खड़ना-झगड़ना ।

उलम्हा-संज्ञा पुं० दे० "उल्लम्हन" ।

उलम्हाना-कि० स० फँसाना । अट-

काना ।

उलम्हाव-संज्ञा पुं० अटकाव । फँसान ।

उलम्हाई-वि० अटकाने या फँसाने-

वाला ।

उलटना-कि० अ० पलटना ।

कि० स० १. पटकना । २. उत्तर-

प्रत्युत्तर करना । ३. फँ करना ।

उलट-पलट (पुलट)-संज्ञा स्त्री०

अदल-बदल । गड़बड़ी ।

उलट-फेर-संज्ञा पुं० परिवर्तन ।

उलटा-वि० [स्त्री० उलटी] १. चौड़ा

२. कम-विरुद्ध । ३. विरुद्ध ।

संज्ञा पुं० बेसन से बननेवाला एक

पकवान ।

उलटाना-कि० स० १. पलटाना ।

लौटाना । २. फेरना ।

उलटा-पलटा (पुलटा)-वि० ऊपर

का ऊपर । अडपेड ।

उलटा-पलटी-संज्ञा स्त्री० फेरफार ।

अदल-बदल ।

उलटाव-संज्ञा पुं० पलटाव । फेर ।

उलटी-संज्ञा स्त्री० १. घमन । कै ।

२. कलाबाजी ।

उलटी सरसों-संज्ञा स्त्री० वह सरसों

श्रोक-संज्ञा पुं० घर ।

संज्ञा स्त्री० कै ।

श्रोकना-कि० अ० १. कै करना । २. भस् की तरह चिछाना ।

श्रोकपति-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. चंद्रमा ।

श्रोकाई-संज्ञा स्त्री० कै ।

श्रोकारांत-वि० जिसके अंत में "ओ" अक्षर हो ।

श्रोखदा-संज्ञा पुं० दे० "श्रोपध" ।

श्रोखली-संज्ञा स्त्री० ऊखल ।

श्रोग-संज्ञा पुं० घर । चंदा ।

श्रोघ-संज्ञा पुं० समूह ।

श्रोछा-वि० १. छुद्र । २. छिछला ।

श्रोछापन-संज्ञा पुं० नीचता । छुद्रता ।

श्रोज-संज्ञा पुं० १. प्रताप । २. प्रकाश ।

श्रोजस्विता-संज्ञा स्त्री० तेज । कान्ति ।

श्रोजस्वी-वि० [ स्त्री० श्रोजस्विनी ] शक्तियान् । प्रभावशाली ।

श्रोमल-संज्ञा पुं० श्रोट । आढ़ ।

श्रोम्मा-संज्ञा पुं० १. सरजूपारी, मयिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति । २. भूत-प्रेत म्माड़नेवाला ।

श्रोम्माई-संज्ञा स्त्री० श्रोम्मा की वृत्ति ।

श्रोट-संज्ञा स्त्री० आढ़ ।

श्रोटना-कि० स० १. कपास को धरली में दबाकर रुई और विनोली को अलग करना । २. अपनी ही बात कहते जाना ।

श्रोटनी, श्रोटी-संज्ञा स्त्री० कपास श्रो-टने की धरली ।

श्रोटगाना-कि० अ० १. सहारा लेना । २. भोड़ा श्राराम करना ।

श्रोटगाना-कि० स० १. सहारे से टिकाना । २. किवाड़ बंद करना ।

श्रोद्ध-संज्ञा पुं० वह राग जिसमें पाँच ही स्वर हों ।

श्रोद्धना-कि० स० १. शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना । २. अपने ऊपर लेना ।

संज्ञा पुं० श्रोद्धने का वस्त्र ।

श्रोद्धनी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के श्रोद्धने का वस्त्र ।

श्रोद्धरा-संज्ञा पुं० बहाना ।

श्रोद्धना-कि० स० ढाँकना ।

श्रोत-श्रोत-वि० बहुत मिला-जुला ।

श्रोद-संज्ञा पुं० नमी ।

वि० गीला ।

श्रोदन-संज्ञा पुं० पका हुआ चावल ।

श्रोदरना-कि० अ० विदीर्ण होना ।

श्रोदा-वि० गीला ।

श्रोदारना-कि० स० विदीर्ण करना ।

श्रोनचन-संज्ञा स्त्री० वह रस्ती जो चारपाई के पायतान की ओर घुनाघट को खींचकर कड़ा रखने के लिये लगी रहती है ।

श्रोनचना-कि० स० चारपाई के पाय-ताने की खाली जगह में लगी हुई रस्ती को घुनाघट कड़ा रखने के लिये खींचना ।

श्रोनघना-कि० अ० दे० "रन-घना" ।

श्रोप-संज्ञा स्त्री० चमक ।

श्रोपना-कि० स० चमकाना ।

श्रोफ-अव्य० श्रोह ।

श्रोम्-संज्ञा पुं० प्रणव मंत्र । आंकार ।

श्रो-संज्ञा स्त्री० तरफ ।

संज्ञा पुं० घोर ।

श्रोराणा-कि० अ० समाप्त होना ।

श्रोराहना-संज्ञा पुं० दे० "व्वा-हना" ।

उभयतः-कि० वि० दोनों ओर से ।  
 उभरना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 उभरौंहा-वि० उभरा हुआ ।  
 उभाड़-संज्ञ पुं० उठान । ऊँचापन ।  
 उभाड़ना-कि० स० उल्लेखित करना ।  
 उभिड़ना-कि० अ० हिचकना ।  
 उमै-वि० दे० "उमय" ।  
 उमंग-संज्ञ स्त्री० चित्त का उभाड़ ।  
 मोक्ष ।  
 उमंगना-कि० अ० दे० "उमगना" ।  
 उमैड़ना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 उमग-संज्ञ स्त्री० दे० "उमंग" ।  
 उमगना-कि० अ० १. उमड़ना । २.  
 उछाल में होना ।  
 उमचना-कि० अ० हुमचना ।  
 उमड़-संज्ञ स्त्री० धाड़ ।  
 उमड़ना-कि० अ० १. उतराकर बह  
 चलना । २. उठकर फैलना । ३.  
 जोश में आना ।  
 उमड़ाना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 कि० स० "उमड़ना" का प्रेरणार्थक  
 रूप ।  
 उमड़ा-वि० दे० "उमड़ा" ।  
 उमर-संज्ञ स्त्री० अवस्था ।  
 उमरा-संज्ञ पुं० प्रतिष्ठित लोग ।  
 उमरावा-संज्ञ पुं० दे० "उमरा" ।  
 उमस-संज्ञ स्त्री० धड़ गरमी जो हवा  
 न चलने पर होती है ।  
 उमहना-कि० अ० दे० "उमड़ना" ।  
 उमा-संज्ञ स्त्री० शिव की स्त्री, पार्वती ।  
 उमाफना-कि० अ० नष्ट करना ।  
 उमाकिनी-वि० स्त्री० खोदकर फेंक  
 देनेवाली ।  
 उमाचना-कि० स० उमाड़ना ।

उमाद-संज्ञ पुं० दे० "उन्माद" ।  
 उमापति-संज्ञ पुं० शिव ।  
 उमाह-संज्ञ पुं० बसाह ।  
 उमेठन-संज्ञ स्त्री० मरोड़ ।  
 उमेठना-कि० स० पेंठना । मरोड़ना ।  
 उमेड़ना-कि० स० दे० "उमेठना" ।  
 उमेलना-कि० स० प्रकट करना ।  
 उम्दगी-संज्ञ स्त्री० अच्छापन । भला-  
 पन । खयी ।  
 उम्दा-वि० अच्छा । भला ।  
 उम्मत-संज्ञ स्त्री० जमाअत ।  
 उम्मीद, उम्मेद-संज्ञ स्त्री० आशा ।  
 भरोसा । आसरा ।  
 उम्मेदवार-संज्ञ पुं० आसरा रखने-  
 वाला ।  
 उम्मेदवारी-संज्ञ स्त्री० आशा ।  
 आसरा ।  
 उम्न-संज्ञ स्त्री० अवस्था ।  
 उर-संज्ञ पुं० हृदय ।  
 उरग-संज्ञ पुं० सर्प ।  
 उरगना-कि० स० स्वीकार करना ।  
 उरगारि-संज्ञ पुं० गरुड़ ।  
 उरगिनी-संज्ञ स्त्री० सर्पिणी ।  
 उरकना-कि० अ० दे० "उल्लङ्घना" ।  
 उरद-संज्ञ पुं० [ स्त्री० अम्पा० उरदी ]  
 एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों  
 के बीज या दाने की दाह होती  
 है । माप ।  
 उरध-कि० वि० दे० "ऊर्ध्व" ।  
 उरधारना-कि० स० दे० "उधेड़ना" ।  
 उरवसी-संज्ञ स्त्री० दे० "उर्वशी" ।  
 उरवी-संज्ञ स्त्री० दे० "उर्वी" ।  
 उरमना-कि० अ० लटकना ।  
 उरमाना-कि० स० लटकाना ।  
 उरमाल-संज्ञ पुं० रुमाल ।  
 उरस-वि० पीछा नीरस ।

ओल-संज्ञ पु० सूरन ।

वि० गीला ।

ओलती-संज्ञ स्त्री० ओरी ।

ओला-संज्ञ पु० गिरते हुए मेह के जमे हुए गोले । परपर ।

वि० बहुत सदे ।

ओलियाना-कि० स० गोद में भरना ।

कि० स० घुसाना ।

ओली-संज्ञ स्त्री० १. गोद । २. घंचल ।

ओपधि-संज्ञ स्त्री० जड़ी-बूटी जो दवा में काम आवे ।

ओपधिपति, ओपधीश-संज्ञ पु०

१. चंद्रमा । २. कपूर ।

ओष्ठ-संज्ञ पु० होंठ ।

ओष्ठ्य-वि० छोट संघी ।

ओस-संज्ञ स्त्री० शीत ।

ओसाना-कि० स० दापे हुए गुरखे को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और मूसा अलग अलग हो जाय । परसाना ।

ओसार-संज्ञ पु० फैलाव । विस्तार ।

ओसारा-संज्ञ पु० [ स्त्री० भत्ता० ओसारी ] दालान ।

ओह-भण्य० आश्चर्य, दुःख या बेपरवाई का सूचक शब्द ।

ओहदा-संज्ञ पु० पद ।

ओहदेदार-संज्ञ पु० पदाधिकारी ।

ओहार-संज्ञ पु० परदा ।

ओहो-भण्य० आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द ।

## औ

औ-संस्कृत षष्ठ्यमात्रा का चौदहवाँ और हिंदी षष्ठ्यमात्रा का ग्यारहवाँ स्वर षष्ठ्य । इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है । यह थ + ओ के संयोग से बना है ।

औंगा-वि० गूंगा ।

औंगी-संज्ञ स्त्री० चुप्पी । गूंगापन ।

औंगना-कि० स० गाड़ी के पहिए की घुरी में तेल देना ।

औंधना, औंधाना-कि० भ० रूपकी खेना ।

औंधाई-संज्ञ स्त्री० रूपकी ।

कि० स० ढालना ।

औंठ-संज्ञ स्त्री० उठा या उभड़ा हुआ किनारा ।

औंधना-कि० भ० उलटा होना ।

कि० स० उलटा कर देना ।

औंधा-वि० [ स्त्री० औंधा ] उलटा ।

औंधाना-कि० स० उलटना ।

औं-भण्य० दे० "और" ।

औकात-संज्ञ पु० बहुत समय ।

संज्ञ स्त्री० एक हैसियत ।

औगत-संज्ञ स्त्री० दुर्दशा ।

वि० दे० "अवगत" ।

औगी-संज्ञ स्त्री० रस्ती घटकर बनाया हुआ कोड़ा । पैना ।

संज्ञ स्त्री० जानवरों को फँसाने का गड्ढा जो घास-फूस से ढँका रहता है ।

औगुन-संज्ञ पु० दे० "अवगुण" ।

औघट-वि० दे० "अवघट" ।

संज्ञा पुं० छाती ।  
 उरसना-कि० अंशयल-पुण्यल करना ।  
 उरसिज-संज्ञा पुं० स्नान ।  
 उरहना-संज्ञा पुं० दे० "उजाहना" ।  
 उराहना-संज्ञा पुं० दे० "उजाहना" ।  
 उरिण, उरिन-वि० दे० "उक्कण" ।  
 उर-वि० विस्रोत ।

० संज्ञा पुं० जंघा । जाँघ ।  
 उरथा-संज्ञा पुं० उरल की जाति की एक चिड़िया । रुद्रा ।  
 उरुत-संज्ञा पुं० बढ़ती । वृद्धि ।  
 उरेखना-कि० स० दे० "अवरे-खना" ।  
 उरह-संज्ञा पुं० चित्रकारी ।  
 उरेहना-कि० स० खींचना । रचना ।  
 उरोज-संज्ञा पुं० स्नान ।  
 उर्द-संज्ञा पुं० दे० "उरद" ।

उदू-संज्ञा स्त्री० वह हिंदी जिसमें अरबी, फ़ारसी के शब्द अधिक हों और जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय ।

उर्ध्व-वि० ऊर्ध्व ।  
 उर्फ-संज्ञा पुं० उपनाम ।  
 उर्मि-संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि" ।  
 उर्वरा-संज्ञा स्त्री० उपजाऊ भूमि ।  
 वि० स्त्री० उपजाऊ ।

उर्वी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।  
 उर्वीजा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी से उत्पन्न, सोता ।

उर्वाधर-संज्ञा पुं० १. शेष । २. पर्यंत ।  
 उर्से-संज्ञा पुं० १. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य ।  
 २. मुसलमान साधुओं की निर्वाण-तिथि ।

उलंग-वि० नंगा ।  
 उलंघन-संज्ञा पुं० दे० "उलंघन" ।

उलंघना, उलंघना-कि० स० १. नाचना । २. अवज्ञा करना ।  
 उलवना-कि० स० दे० "उलीचना" ।  
 उलझना-कि० स० १. धितराना ।  
 २. उलीचना ।  
 उलमन-संज्ञा स्त्री० १. गाँठ । २. चकर ।

उलमना-कि० स० १. फँसना । २. खड़ना-फगड़ना ।  
 उलमा-संज्ञा पुं० दे० "उलमन" ।  
 उलमाना-कि० स० फँसाना । अट-काना ।

उलमाव-संज्ञा पुं० अटकाव । फँसान ।  
 उलमाही-वि० अटकाने या फँसाने-वाला ।

उलटना-कि० स० पलटना ।  
 कि० स० १. पटकना । २. उत्तर-प्रत्युत्तर करना । ३. कौ करना ।  
 उलट-पलट (पुलट)-संज्ञा स्त्री० अदल-बदल । गड़बड़ ।

उलट-फेर-संज्ञा पुं० परिवर्तन ।  
 उलटा-वि० [स्त्री० उलटी] १. चौंका ।  
 २. क्रम-विरुद्ध । ३. विरुद्ध ।  
 संज्ञा पुं० येसन से बननेवाला एक पकवान ।

उलटाना-कि० स० १. पलटाना ।  
 लौटाना । २. फेरना ।  
 उलटा-पलटा (पुलटा)-वि० इधर का उधर । अडबड़ ।

उलटा-पलटी-संज्ञा स्त्री० फेरफार ।  
 अदल-बदल ।

उलटाव-संज्ञा पुं० पलटाव । फेर ।  
 उलटी-संज्ञा स्त्री० १. धमन । कैं ।  
 २. कलाबाजी ।

उलटी सरसों-संज्ञा स्त्री० वह सरसों



श्रीघट्ट-संज्ञा पुं० [ स्त्री० श्रीघट्टिन ]

अधारी ।

वि० अंड-बंड ।

श्रीघट्ट-वि० १. अंडबंड । २. अनोखा ।

श्रीचक्र-कि० वि० अचानक ।

श्रीचट्ट-संज्ञा स्त्री० अंडस ।

कि० वि० अचानक ।

श्रीचित्त-संज्ञा पुं० उपयुक्तता ।

श्रीज्ञार-संज्ञा पुं० इथियार ।

श्रीटना-कि० सं० खोलना ।

श्रीटाना-कि० सं० दे० "श्रीटना" ।

श्रीढर-वि० मनमौजी ।

श्रीतरना-कि० अ० दे० "अव-  
तरना" ।

श्रीतार-संज्ञा पुं० दे० "अवतार" ।

श्रीतुल्य-संज्ञा पुं० उत्सुकता ।

श्रीथरा-वि० दे० "उपला" ।

श्रीदरिक-वि० १. उदर-संबंधी । २.  
पेट ।

श्रीदार्प-संज्ञा पुं० उदारता ।

श्रीदंथर-वि० १. उदंथर या गूलर  
का बना हुआ । २. ताँबे का बना  
हुआ ।

संज्ञा पुं० गूलर की लकड़ी का बना  
हुआ पशुपात्र ।

श्रीदुत्य-संज्ञा पुं० बज्रहृपन ।

श्रीद्योगिक-वि० उद्योग-संबंधी ।

श्रीध-संज्ञा पुं० दे० "अधध" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "अधधि" ।

श्रीधि-संज्ञा स्त्री० दे० "अधधि" ।

श्रीनि-संज्ञा स्त्री० दे० "अधनि" ।

श्रीना-पाना-वि० योद्धा-युद्ध ।

श्रीपचारिक-वि० उपचार-संबंधी ।

श्रीपनिवेशिक-वि० उपनिवेश-संबंधी ।

श्रीपन्यासिक-वि० १. उपन्यास-

संबंधी । २. अद्भुत ।

संज्ञा पुं० उपन्यास-लेखक ।

श्रीम-संज्ञा स्त्री० अथर्वम तिथि ।

श्रीर-अथर्व दो शब्दों या वाक्यों को  
जोड़नेवाला शब्द ।

वि० १. दूसरा । २. अधिक ।

श्रीरत-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

श्रीलाद-संज्ञा स्त्री० १. संतान । २.  
वंश-परंपरा ।

श्रीला-श्रीला-वि० मनमौजी ।

श्रीलिया-संज्ञा पुं० पहुँचे हुए फकीर ।

श्रीघल-वि० १. पहला । २. सर्वश्रेष्ठ ।

संज्ञा पुं० धारम ।

श्रीपध-संज्ञा पुं० स्त्री० दया ।

श्रीसत-संज्ञा पुं० बराबर का परता ।

सामान्य ।

वि० साधारण ।

श्रीसर-संज्ञा पुं० दे० "अधसर" ।

श्रीसान-संज्ञा परिणाम ।

संज्ञा पुं० सुध-युध ।

क

क-हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन  
वर्ण । इसका उच्चारण कंठ से  
होता है ।

कं-संज्ञा पुं० जल ।

कंक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कंका, कंकी ]  
सफेद खील ।

ऊ

ऊ-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का छठा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

ऊँगा-संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ"।

ऊँगा-संज्ञा पुं० चिचड़ा।

ऊँघ-संज्ञा स्त्री० बँघाई।

ऊँघना-संज्ञा स्त्री० ऊँघ। कपकी।

ऊँघना-क्रि० भ० कपकी लेना।

ऊँचा-वि० दे० "ऊँच"।

ऊँचा-वि० [स्त्री० ऊँची] जो दूर तक ऊपर की ओर गया हो। उन्नत।

ऊँचाई-संज्ञा स्त्री० १. ऊपर की ओर का विस्तार। चढ़ाई। २. गौरव।

ऊँचे-क्रि० वि० १. ऊपर की ओर। २. ओर से।

ऊँछना-क्रि० भ० कंघी करना।

ऊँट-संज्ञा पुं० [स्त्री० ऊँटी] एक ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ ढाढ़ने के काम में आता है।

ऊँटघान-संज्ञा पुं० ऊँट चलानेवाला।

ऊँडा-संज्ञा पुं० १. वह बरतन जिसमें घन रखकर भूमि में गाढ़ दें।

२. सहलाना।

वि० गहरा। गंभीर।

ऊँदरा-संज्ञा पुं० चूहा।

ऊँह-अव्य० नहीं।

ऊ-संज्ञा पुं० १. महादेव। २. चंद्रमा।

‡ अव्य० भी।

‡ सर्व० वह।

ऊआयाई-वि० झंझट।

ऊक-संज्ञा पुं० १. दूधता हुआ तारा। २. जलन।

संज्ञा स्त्री० मूल। चूक।

ऊकना-क्रि० भ० १. चूकना।

२. मूल करना।

क्रि० स० मूल जाना।

क्रि० स० जलाना।

ऊख-संज्ञा पुं० ईख। गन्ना।

ऊखल-संज्ञा पुं० ओखली।

ऊगना-क्रि० भ० दे० "उगना"।

ऊज-संज्ञा पुं० उपद्रव। ऊधम।

ऊजड़-वि० दे० "उजाड़"।

ऊजर-वि० दे० "उजला"।

वि० उजाड़।

ऊजरा-वि० दे० "उजला"।

ऊटक नाटक-संज्ञा पुं० व्यर्थ का काम।

ऊटना-क्रि० भ० १. बरसाहित होना। २. सर्व-वितर्क करना।

ऊटपटांग-वि० १. अटपट। २. व्यर्थ।

ऊड़ना-क्रि० स० दे० "ऊड़ना"।

ऊड़-वि० [स्त्री० ऊड़ी] विवाहित।

ऊड़ना-क्रि० भ० तर्क करना।

क्रि० भ० विवाह करना। व्याहना।

ऊड़ा-संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री।

ऊत-वि० १. निःसंतान। २. उजड़।

ऊतिमा-वि० दे० "उत्तम"।

ऊद-संज्ञा पुं० अगर का पेड़ या लकड़ी।

संज्ञा पुं० ऊदविलाव।

ऊदवल्ली-संज्ञा स्त्री० अगर की बची जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।

ऊदविलाव-संज्ञा पुं० नेवले के आकार का, पर उससे घड़ा, एक जंतु जो जल और स्थल दोनों में रहता है।

ओल-संज्ञा पुं० सूरन ।

वि० गीला ।

ओलती-संज्ञा स्त्री० ओरी ।

ओला-संज्ञा पुं० गिरते हुए मेह के जमे हुए गोले । पत्थर ।

वि० बहुत सदे ।

ओलियाना-कि० स० मोद में भरना ।

कि० स० घुसाना ।

ओली-संज्ञा स्त्री० १. गोद । २. थंचल ।

ओपधि-संज्ञा स्त्री० जड़ो-भूरी जो दवा में काम आवे ।

ओपधिपति, ओपधीश-संज्ञा पुं०

१. चंद्रमा । २. कपूर ।

ओष्ठ-संज्ञा पुं० होंठ ।

ओष्ठ्य-वि० ओंठ संबंधी ।

ओस-संज्ञा स्त्री० शीत ।

ओसाना-कि० स० दाँवे हुए गुब्बे को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा थलग थलग हो जाय । धरसाना ।

ओसार-संज्ञा पुं० फैलाव । विस्तार ।

ओसापा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भस्पा० ओसारी ] दाढान ।

ओह-भव्य० आश्चर्य, दुःख या बेपरवाई का सूचक शब्द ।

ओहदा-संज्ञा पुं० पद ।

ओहदेदार-संज्ञा पुं० पदाधिकारी ।

ओहार-संज्ञा पुं० परदा ।

ओहो-भव्य० आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द ।

## औ

औ-संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण । इसके उच्चारण का स्थान फंठ और ओष्ठ है । यह अ + ओ के संयोग से बना है ।

औंगा-वि० गूँगा ।

औंगी-संज्ञा स्त्री० चुप्पी । गूँगापन ।

औंगना-कि० स० गाढ़ी के पहिए की धुरी में तेल देना ।

औंधना, औंधाना-कि० अ० ऋपकी लेना ।

औंधाई-संज्ञा स्त्री० ऋपकी ।

कि० स० ढालना ।

औंठ-संज्ञा स्त्री० उठा या उमड़ा हुआ किनारा ।

औंधना-कि० अ० उलटा होना ।

कि० स० उलटा कर देना ।

औंधा-वि० [ स्त्री० औंधो ] उलटा ।

औंधाना-कि० स० उलटना ।

औं-भव्य० दे० "और" ।

औकात-संज्ञा पुं० बहु० समय ।

संज्ञा स्त्री० एक० हैसियत ।

औगत-संज्ञा स्त्री० दुर्दशा ।

वि० दे० "अवगत" ।

औगी-संज्ञा स्त्री० रस्सी घटकर घनाया हुआ कोड़ा । पैना ।

संज्ञा स्त्री० जानवरों को फँसाने का

उपकरण ।

श्रीघट्ट-संज्ञा पुं० [ स्त्री० श्रीघटिन ]  
अघोरी ।

वि० अंड-बंड ।

श्रीघर-वि० १. अंडबंड । २. अनास्ता ।

श्रीचक्र-कि० वि० अघानक ।

श्रीचट्ट-संज्ञा स्त्री० अंडस ।

कि० वि० अघानक ।

श्रीचित्त-संज्ञा पुं० अयुक्तता ।

श्रीज्ञार-संज्ञा पुं० इविषार ।

श्रीटना-कि० सं० खोलाना ।

श्रीटाना-कि० सं० दे० "श्रीटना" ।

श्रीढर-वि० मनमौजी ।

श्रीतरना-कि० अ० दे० "अव-  
तरना" ।

श्रीतार-संज्ञा पुं० दे० "अवतार" ।

श्रीतल्लय-संज्ञा पुं० असुकता ।

श्रीथरा-वि० दे० "अथरा" ।

श्रीदरिक-वि० १. उदर-संबंधी । २.  
पेट ।

श्रीदार्प-संज्ञा पुं० अदारता ।

श्रीदुपर-वि० १. उदुंवर या गूलर  
का बना हुआ । २. ताँबे का बना  
हुआ ।

संज्ञा पुं० गूलर की छकड़ी का बना  
हुआ यज्ञपात्र ।

श्रीद्वय-संज्ञा पुं० अमृदुपन ।

श्रीद्योगिक-वि० अयोग-संबंधी ।

श्रीघ-संज्ञा पुं० दे० "अवध" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।

श्रीधि-संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।

श्रीनि-संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।

श्रीना-पीना-वि० बोधा-घट्ट ।

श्रीपचारिक-वि० अपचार-संबंधी ।

श्रीपनिवेशिक-वि० अपनिवेश-संबंधी ।

श्रीपन्यासिक-वि० १. अपन्यास-  
संबंधी । २. अनुत्त ।

संज्ञा पुं० अपन्यास-लेखक ।

श्रीम-संज्ञा स्त्री० अवम तिथि ।

श्रीर-अव्य० दो शब्दों या वाक्यों को  
जोड़नेवाला शब्द ।

वि० १. दूसरा । २. अधिक ।

श्रीरत-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

श्रीलाद-संज्ञा स्त्री० १. सेतान । २.  
दंश-परंपरा ।

श्रीला-मौला-वि० मनमौजी ।

श्रीलिया-संज्ञा पुं० पहुँचे हुए फकीर ।

श्रीचल-वि० १. पहला । २. सर्वश्रेष्ठ ।  
संज्ञा पुं० आरंभ ।

श्रीपध-संज्ञा पुं० स्त्री० दवा ।

श्रीसत-संज्ञा पुं० बराबर का परता ।  
सामान्य ।

वि० साधारण ।

श्रीसर-संज्ञा पुं० दे० "अवसर" ।

श्रीसान-संज्ञा परिणाम ।

संज्ञा पुं० सुध-बुध ।

क

क-हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन  
वर्ण । इसका उच्चारण कंठ से  
होता है ।

कं-संज्ञा पुं० जल ।

कंक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कंका, कंकी ]  
सफेद चील ।

कनयः-संज्ञा पुं० दे० "कनक" ।

कनरस-संज्ञा पुं० गाना-बजाना सुनने का आनंद ।

कनरसिया-संज्ञा पुं० गाना-बजाना सुनने का शौकीन ।

कनसार-संज्ञा पुं० ताम्रपत्र पर खेखे खोदनेवाला ।

कनसुई-संज्ञा स्त्री० आइट ।

कनस्तर-संज्ञा पुं० टोन का चौखूँटा पीपा ।

कनहार-संज्ञा पुं० मछुआह ।

कनात-संज्ञा स्त्री० मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेरकर आद करतें हैं ।

कनारी-संज्ञा स्त्री० १. मदरास प्रांत के कनारा नामक प्रदेश की भाषा ।  
२. कनारा का निवासी ।

कनिश्वारी-संज्ञा स्त्री० कनक-चंषा का पेड़ ।

कनिका-संज्ञा स्त्री० दे० "कणिका" ।

कनिया-संज्ञा स्त्री० गोद ।

कनियाना-क्रि० भ० आँख बचाकर निकल जाना ।

क्रि० भ० पतंग का किसी ओर झुक जाना ।

† क्रि० भ० गोद लेना ।

कनिष्ठ-वि० [ स्त्री० कनिष्ठा ] १. सबसे छोटा । २. जो पीछे उत्पन्न हुआ हो ।

कनिष्ठा-वि० स्त्री० १. सबसे छोटी ।  
२. हीन ।

संज्ञा स्त्री० १. दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी या पीछे की विवाहिता स्त्री । २. छोटी बँगली ।

कनिष्ठिका-संज्ञा स्त्री० कानी बँगली ।

कनी-संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा ।

कनीनिका-संज्ञा स्त्री० १. आँख की

पुतली । २. कन्या ।

कनेठा-वि० काना ।

कनेठी-संज्ञा स्त्री० कान मरोड़ने की सजा ।

कनेर-संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसमें छाल या पीछे सुंदर फूल लगते हैं ।

कनौजिया-संज्ञा पुं० कान्यकुब्ज प्रायण ।

कनौड़ा-वि० १. काना । २. अपंग ।  
३. कलंकित ।

संज्ञा पुं० छीत दास ।

कन्ना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कन्नी ] १. पतंग का वह डोरा जिसका एक छोर काँप और उड़ने के मेल पर और दूसरा पुच्छजे के कुछ ऊपर बांधा जाता है । २. किनारा ।

कन्नी-संज्ञा स्त्री० [ हि० कन्ना ] १. पतंग या कनकौबे के दोनों छोर के किनारे । २. वह घग्गी जो पतंग की कन्नी में हमलिये बांधी जाती है कि वह सीधी उड़े !

कन्यका-संज्ञा स्त्री० १. बचारी लड़की ।  
२. पुत्री ।

कन्या-संज्ञा स्त्री० १. बचारी लड़की ।  
२. पुत्री ।

कन्याकुमारी-संज्ञा स्त्री० भारत के दक्षिण में रामेश्वर के निकट का एक अंतरीप ।

कन्यादान-संज्ञा पुं० विवाह में घर को कन्या देने की रीति ।

कन्याधन-संज्ञा पुं० वह स्त्री-धन जो स्त्री को अविवाहिता या कन्या-अवस्था में मिला हो ।

कन्यारासी-वि० जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्या राशि में हो ।

कन्हई, कन्हैया-संज्ञा पुं० १. श्री-

ओल-संज्ञ पुं० सूरन ।

वि० गीला ।

ओलती-संज्ञ स्त्री० ओरी ।

ओला-संज्ञ पुं० गिरते हुए मेह के जमे हुए गोले । परयर ।

वि० बहुत सदै ।

ओलियाना-कि० स० गोद में भरना ।

कि० स० घुसाना ।

ओली-संज्ञ स्त्री० १. गोदा । २. अंचल ।

ओपधि-संज्ञ स्त्री० जड़ो-बूटी जो दवा में काम आवे ।

ओपधिपति, ओपधीश-संज्ञ पुं०

१. चंद्रमा । २. कपूर ।

ओष्ठ-संज्ञ पुं० होंठ ।

ओष्ठ्य-वि० आँठ संबंधी ।

ओस-संज्ञ स्त्री० शीत ।

ओसाना-कि० स० दाँये हुए गरुखे को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और मूसा अलग अलग हो जाय । घरसाना ।

ओसार-संज्ञ पुं० फैलाव । विस्तार ।

ओसारा-संज्ञ पुं० [ स्त्री० भस्पा० ओसारी ] दालान ।

ओह-अव्य० आश्चर्य, दुःख या वेपरवाई का सूचक शब्द ।

ओहदा-संज्ञ पुं० पद ।

ओहदेदार-संज्ञ पुं० पदाधिकारी ।

ओहार-संज्ञ पुं० परदा ।

ओहो-अव्य० आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द ।

## औ

औ-संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण । इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है । यह अ + ओ के संयोग से बना है ।

औंगा-वि० गूंगा ।

औंगी-संज्ञ स्त्री० चुप्पी । गूंगापन ।

औंगना-कि० स० गाड़ी के पहिए की घुरी में तेल देना ।

औंधना, औंधाना-कि० अ० ऋपकी लेना ।

औंधाई-संज्ञ स्त्री० ऋपकी ।

कि० स० ढालना ।

औंठ-संज्ञ स्त्री० उठा या उभड़ा हुआ किनारा ।

औंधना-कि० अ० उलटा होना ।

कि० स० उलटा कर देना ।

औंधा-वि० [ स्त्री० औंधी ] उलटा ।

औंधाना-कि० स० उलटाना ।

औं-अव्य० दे० "और" ।

औकात-संज्ञ पुं० बहुत समय ।

संज्ञ स्त्री० एक हैसियत ।

औगत-संज्ञ स्त्री० दुर्दशा ।

वि० दे० "अवगत" ।

औगी-संज्ञ स्त्री० रस्सी घटकर घनाया हुआ कोड़ा । पैना ।

संज्ञ स्त्री० जानवरों को फँसाने का गड़बा जो घास-फूस से ढँका रहता है ।

औगुन-संज्ञ पुं० दे० "अवगुण" ।

औघट-वि० दे० "अवघट" ।

कृष्ण । २. प्रिय व्यक्ति ।

कपट-संज्ञा पुं० [वि० कपटी] छल ।

कपटना-क्रि० सं० काटकर थलगा करना ।

कपटी-वि० धूर्त ।

कपड़छान, कपड़छान-संज्ञा पुं० किसी पिसी हुई बुझनी को कपड़े में छानने का कार्य ।

कपड़हार-संज्ञा पुं० बख्शागार ।

कपड़ा-संज्ञा पुं० १. वस्त्र । २. पहनावा ।

कपर्द, कपर्दक-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपर्दि] १. ( शिव का ) जटाजूट । २. कौड़ी ।

कपर्दिका-संज्ञा स्त्री० कौड़ी ।

कपर्दिनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

कपर्दी-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपर्दिनी] शिव ।

कपाट-संज्ञा पुं० किवाड़ ।

कपाटा-संज्ञा पुं० दे० "कपाल" ।

कपाल-संज्ञा पुं० [ वि० कपाली, कपालिका ] १. खोपड़ी । २. मस्तक । ३. भाग्य ।

कपालक-वि० दे० "कपालिक" ।

कपालक्रिया-संज्ञा स्त्री० मृतक-संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को घास या लकड़ी से फोड़ देते हैं ।

कपालिका-संज्ञा स्त्री० खोपड़ी । संज्ञा स्त्री० काली ।

कपालिनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

कपाली-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपालिनी] १. शिव । २. भैरव । ३. ठीकरा लेकर भीख मांगनेवाला ।

कपास-संज्ञा स्त्री० [ वि० कपासी ] एक पौधा जिसके ढेंड़ से रूई निक-

लती है ।

कपासी-वि० कपास के फूल के रंग का ।

संज्ञा पुं० बहुत हलका पीला रंग ।

कपिञ्जल-संज्ञा पुं० १. पपीहा । २. तीतर ।

वि० पीले रंग का ।

कपि-संज्ञा पुं० १. बंदर । २. हाथी । ३. सूर्य ।

कपित्थ-संज्ञा पुं० कैय का पेड़ या फल ।

कपिध्वज-संज्ञा पुं० अर्जुन ।

कपिल-वि० १. भूरा । २. सफेद । संज्ञा पुं० १. अग्नि । २. कुत्ता । ३. चूहा । ४. महादेव । ५. सूर्य ।

कपिलधस्तु-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का जन्मस्थान ।

कपिला-वि० स्त्री० १. भूरे रंग की । २. सफेद रंग की । ३. भोली-भाली ।

संज्ञा स्त्री० सफेद रंग की गाय ।

कपिश-वि० मरमैला ।

कपिशा-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का मद्य । २. कसाई ।

कपीश-संज्ञा पुं० धानरों का राजा ।

कपूत-संज्ञा पुं० बुरा लक्ष्मण ।

कपूती-संज्ञा स्त्री० पुत्र के अयोग्य आचरण ।

कपूर-संज्ञा पुं० एक सफेद रंग का जमा हुआ सुसंघित द्रव्य जो दार-चीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है । काफूर ।

कपूरी-वि० कपूर का घना हुआ ।

संज्ञा पुं० १. कुछ हलका पीला रंग । २. एक प्रकार का कड़वा पान ।

कपोत-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपोतिका, कपोती]

श्रीघड़-संज्ञा पुं० [ स्त्री० श्रीघड़िन ]  
अघोरी ।

वि० श्रीड-बंड ।

श्रीघर-वि० १. श्रीड-बंड । २. अनासा ।

श्रीचक्र-कि० वि० अचानक ।

श्रीचक्र-संज्ञा स्त्री० श्रीडस ।

कि० वि० अचानक ।

श्रीचित्त-संज्ञा पुं० उपयुक्तता ।

श्रीज्ञार-संज्ञा पुं० हथियार ।

श्रीटना-कि० सं० खालाना ।

श्रीटाना-कि० सं० दे० "श्रीटना" ।

श्रीहर-वि० मनमौजी ।

श्रीतरना-कि० अ० दे० "अव-  
तरना" ।

श्रीतार-संज्ञा पुं० दे० "अवतार" ।

श्रीतुल्य-संज्ञा पुं० समुक्तता ।

श्रीथरा-वि० दे० "अथरा" ।

श्रीदरिद्र-वि० १. उदर-संबंधी । २.  
पेह ।

श्रीदार्थ-संज्ञा पुं० उदारता ।

श्रीदंष्टर-वि० १. उदुंष्टर या गूलर  
का घना हुआ । २. ताँबे का घना  
हुआ ।

संज्ञा पुं० गूलर की लकड़ी का घना  
हुआ यज्ञांग ।

श्रीदत्त-संज्ञा पुं० उज्जुपन ।

श्रीयोगिक-वि० उद्योग-संबंधी ।

श्रीध-संज्ञा पुं० दे० "अध" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।

श्रीधि-संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।

श्रीनि-संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।

श्रीना-पौना-वि० थोड़ा-पहुत ।

श्रीपचारिक-वि० उपचार-संबंधी ।

श्रीपनिवेशिक-वि० उपनिवेश-संबंधी ।

श्रीपन्यासिक-वि० १. उपन्यास-  
संबंधी । २. अद्भुत ।

संज्ञा पुं० उपन्यास-लेखक ।

श्रीम-संज्ञा स्त्री० अवमति ।

श्रीर-अन्व० दे० शब्दों या वाक्यों को  
जोड़नेवाला शब्द ।

वि० १. दूसरा । २. अधिक ।

श्रीरत-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

श्रीलाद-संज्ञा स्त्री० १. संज्ञान । २.  
वंश-परंपरा ।

श्रीला-मौला-वि० मनमौजी ।

श्रीलिया-संज्ञा पुं० पहुँचे हुए फकीर ।

श्रीवल-वि० १. पहला । २. सर्वश्रेष्ठ ।  
संज्ञा पुं० आरंभ ।

श्रीपथ-संज्ञा पुं० स्त्री० दूध ।

श्रीसत-संज्ञा पुं० बराबर का परता ।  
सामान्य ।

वि० साधारण ।

श्रीसर-संज्ञा पुं० दे० "अवसर" ।

श्रीसान-संज्ञा परिणाम ।

संज्ञा पुं० सुध-शुध ।

क

क-हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन  
वर्ण । इसका अक्षरणा कंठ से  
होता है ।

क-संज्ञा पुं० जल ।

कंक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कंका, कंकी ]  
सफेद चीख ।



१. कचूतर । २. पची ।  
 कपोतव्रत-संज्ञा पुं० चुपचाप दूसरे  
 के अत्याचारों को सहना ।  
 कपोती-संज्ञा स्त्री० कचूतरी ।  
 वि० कपोत के रंग का ।  
 कपोल-संज्ञा पुं० गाल ।  
 कपोलकल्पना-संज्ञा स्त्री० मनमग्नता ।  
 कपोलकल्पित-वि० बनाबटी ।  
 कफ-संज्ञा पुं० पलंगम ।  
 कफ-संज्ञा पुं० कमीश या कुत्ते की  
 धाँसोन के आगे की दोहरी पट्टी  
 जिसमें घटन लगते हैं ।  
 कफन-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिसमें मुर्दा  
 लपेटकर गाढ़ा या फूँका जाता है ।  
 कफनखसोट-वि० कंजूस ।  
 कफनाना-क्रि० स० गाढ़ने या जलाने  
 के लिये मुर्दे को कफन में लपेटना ।  
 कफनी-संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो मुर्दे  
 के गले में डालते हैं ।  
 कफस-संज्ञा पुं० १. पिंजरा । २.  
 बंदीगृह ।  
 कथंध-संज्ञा पुं० रुंड । बिना सिर का  
 घड़ ।  
 कथ-क्रि० वि० किस समय ? किस  
 वृत्त ? (प्रश्नसूचक) ।  
 कचूठो-संज्ञा स्त्री० लड़कों का एक खेल  
 जिसे वे दो दल बनाकर खेलते हैं ।  
 कथर-संज्ञा स्त्री० दे० "कच" ।  
 कथरा-वि० [ स्त्री० कथरी ] सफेद रंग  
 पर काले, लाल, पीले आदि दाग-  
 वाला ।  
 कवरिस्तान-संज्ञा पुं० दे० "कवि-  
 स्तान" ।  
 कवाड़-संज्ञा पुं० [ संज्ञा कवाड़ी ] संगड़-  
 संगड़ ।  
 कवाड़ा-संज्ञा पुं० मकड़ । धखेड़ा ।

कवाड़िया-संज्ञा पुं० १. तुच्छ व्यव-  
 साय करनेवाला पुरुष । २. कगदालू  
 आदमी ।  
 कवाड़ी-संज्ञा पुं० वि० दे० "कवा-  
 डिया" ।  
 कवाय-संज्ञा पुं० सीखों पर भूना हुआ  
 मांस ।  
 कवायी-वि० १. कृशाय सेवनेवाला ।  
 २. मांसाहारी ।  
 कवार-संज्ञा पुं० व्यापार ।  
 कवारना-क्रि० स० उगाड़ना ।  
 कवाल-संज्ञा पुं० वह दस्तावेज़ जिसके  
 द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधि-  
 कार में चली जाय ।  
 कवाहत-संज्ञा स्त्री० १. खराबी । २.  
 दिवकृत ।  
 कवीर-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध भक्त  
 जो जुलाहे थे । २. एक प्रकार का  
 अश्लील गीत या पद जो होली में  
 गाया जाता है ।  
 वि० श्रेष्ठ । बढ़ा ।  
 कवीरपंथी-वि० कवीरके संप्रदाय का ।  
 कवीला-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।  
 कबुलवाना, कबुलाना-क्रि० स०  
 कबूल करना ।  
 कचूतर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कचूतरी ] रुंड  
 में रहनेवाला परेवा की जाति का  
 एक प्रसिद्ध पची ।  
 कचूल-संज्ञा पुं० स्वीकार ।  
 कचूलना-क्रि० स० स्वीकार करना ।  
 कचूलियत-संज्ञा स्त्री० वह दस्तावेज़  
 जो पट्टा खेनेवाला पट्टे की स्वीकृति  
 में ठेका या पट्टा देनेवाले को लिख दे ।  
 कब्ज़-संज्ञा पुं० १. ग्रहण । २. दस्त का  
 साफ न होना ।  
 कब्ज़ा-संज्ञा पुं० १. दस्ता । २.

कंपित-वि० कंपित हुआ ।

कंपू-संज्ञा पुं० छावनी ।

कंपल-संज्ञा पुं० [खो० मत्स्या० कमली]

जन का बना हुआ मोटा कपड़ा ।

कंपु, कंपुक-संज्ञा पुं० १. शंख । २. घोंघा । ३. हाथी ।

कंपल-संज्ञा पुं० दे० "कमल" ।

कंपलगद्दा-संज्ञा पुं० कमल का बीज ।

कंस-संज्ञा पुं० १. काँसा । २. प्याला ।

३. मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का जो श्रीकृष्ण का मामा था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।

कई-वि० अनेक ।

कफड़ी-संज्ञा स्त्री० जमीन पर फैलने-वाली एक थैल जिसमें लंबे लंबे फल लगते हैं ।

कफहरा-संज्ञा पुं० 'क' से 'ह' तक वर्णमाला ।

ककुम-संज्ञा पुं० १. एक राग । २. एक छंद ।

कक्का-संज्ञा पुं० दे० "काका" ।

कक्का-संज्ञा पुं० १. काँख । २. छाँट ।

३. कछार । ४. कखरवार । ५. दर्जा ।

कक्का-संज्ञा स्त्री० १. परिधि । २. ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग । ३. श्रेणी ।

कक्खौरी-संज्ञा स्त्री० काँख का फोड़ा ।

कगर-संज्ञा पुं० कुछ ऊँचा किनारा ।

कि० वि० किनारे पर ।

कगर-संज्ञा पुं० १. ऊँचा किनारा ।

२. नदी का करारा ।

कच-संज्ञा पुं० १. घाल । २. सूखा फोड़ा या जखम ।

संज्ञा पुं० घँसने या घुमने का शब्द ।

कचका-संज्ञा स्त्री० कुचल जाने की चोट ।

कचकच-संज्ञा स्त्री० बकवाद । मरुमरु ।

कचकचाना-कि० अ० १. कचकच शब्द करना । २. दाँत पीसना ।

कचदिला-वि० कच्चे दिल का ।

कचनार-संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ जिसमें सुंदर फूल लगते हैं ।

कचपच-संज्ञा पुं० गिचपिच ।

कचपची-संज्ञा स्त्री० १. कृत्तिका नक्षत्र । २. चमकीले बुंदे जिन्हें क्षिराभाये आदि पर चिरकाती हैं ।

कचपेंदिया-वि० १. पेंदी का कमज़ोर । २. घात का कच्चा ।

कचर-कचर-संज्ञा पुं० १. कच्चे फल के खाने का शब्द । २. बकवाद ।

कचरकूट-संज्ञा पुं० १. मारकूट । २. खूब पेट भर भोजन ।

कचरना-कि० स० १. रेंदिना । २. खन्न खाना ।

कचरी-संज्ञा स्त्री० कचरी के फल के तले हुए डुकड़े ।

कचलोदा-संज्ञा पुं० लोह ।

कचलान-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लक्षण जो काँच की भट्टियों में जमे हुए चार से बनता है ।

कचहरी-संज्ञा स्त्री० न्यायालय ।

कचाई-संज्ञा स्त्री० कच्चापन ।

कचायँध-संज्ञा स्त्री० कच्चेपन की महक ।

कचारना-कि० स० कपड़ा धोना ।

कचालू-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की अरुई । बेंडा । २. एक प्रकार की चाट ।

कचीची-संज्ञा स्त्री० जख्म । दाढ़ ।

कचूमर-संज्ञा पुं० १. कुचलकर बनाया

किवाड़ या सड़क में जड़े जानेवाले लोहे या पीतल की चद्दर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े । ३. अधिकार ।

कब्जादार-संज्ञा पुं० [ भाव० संज्ञा कब्जादारी ] १. वह अधिकारी जिसका कब्जा हो । २. दखीलदार असामी । वि० जिसमें कब्जा लगा हो ।

कब्जियत-संज्ञा स्त्री० पालाने का साफ न आना ।

कब्ज-संज्ञा स्त्री० १. वह गड्ढा जिसमें सुसज्जमान, हँसाई आदि अपने सुदे गाढ़ने हैं । २. वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है ।

कब्जिस्तान-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ सुदे गाढ़े जाते हैं ।

कभी-क्रि० वि० किसी समय ।

कभी-क्रि० वि० दे० "कभी" ।

कमंगर-संज्ञा पुं० १. कमान बनाने वाला । २. जोड़ की उखड़ी हुई हड्डी को असली जगह पर बैठानेवाला ।

† वि० दक्ष ।

कमंगरी-संज्ञा स्त्री० १. कमान बनाने का पेशा या हुनर । २. हड्डी बैठाने का काम ।

कमंडल-संज्ञा पुं० दे० "कमंडलु" ।

कमंडली-वि० १. साधु । २. पालंछी ।

कमंडलु-संज्ञा पुं० सन्यासियों का जलपात्र, जो धातु, मिट्टी, तुमड़ो, दरियाई नारियल आदि का होता है ।

कमंद-संज्ञा पुं० दे० "कंबंध" ।

संज्ञा स्त्री० १. पाश । २. फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चार ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं ।

कम-वि० थोड़ा ।

क्रि० वि० बहुत नहीं ।

कमअसल-वि० बेगला ।

कमच्छा-संज्ञा स्त्री० दे० "कामाख्या" ।

कमजोर-वि० दुर्बल ।

कमजोरी-संज्ञा स्त्री० निर्वलता । दुर्बलता ।

कमठ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कमठी ] १. कलुषा । २. साधुर्यों का तुषा । ३. घास ।

कमठा-संज्ञा पुं० धनुष ।

कमठी-संज्ञा पुं० कलुई ।

संज्ञा स्त्री० घास की पतली लचीली धज्जो ।

कमती-संज्ञा स्त्री० कमी ।

वि० कम ।

कमना-क्रि० अ० कम होना ।

कमनीय-वि० १. कामना करने योग्य । २. मनोहर ।

कमनैत-संज्ञा पुं० तीरंदाज ।

कमनैती-संज्ञा स्त्री० तीर चलाने की विद्या ।

कमवखत-वि० भाग्यहीन ।

कमवखती-संज्ञा स्त्री० बदनसीबी ।

कमर-संज्ञा स्त्री० शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे और पेड़ तथा चूतड़ के ऊपर होता है ।

कमरकोट, कमरकोटा-संज्ञा पुं० १.

वह छोटी दीवार जो किलों और चार-दीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कंगूरे और छेद होते हैं ।

२. रक्षा के लिये घेरी हुई दीवार ।

कमरख-संज्ञा स्त्री० १. एक पेड़ जिसके फाँकवाले लंबे लंबे फल, खटे होते हैं और खाए जाते हैं । कमरंग । २.

इस पेड़ का फल ।

कमरखी-वि० जिसमें कमरख के पेसी उमड़ी हुई फाँकें हों ।

हुआ अचार । २. कुचली हुई वस्तु ।  
कचोना-कि० सं० चुभाना ।

कचोरा-संज्ञा पुं० [ खी० कचोरी ]  
कटोरा ।

कचौड़ी, कचौरी-संज्ञा स्त्री० एक  
प्रकार की पूरी जिसके भीतर उरद  
आदि की पीठी भरी जाती है ।

कच्चा-वि० १. हरा और बिना रस  
का । अपक्व । २. जो पुष्ट न हुआ  
हो । ३. कमजोर । ४. जो प्रामाणिक  
तौर या माप से कम हो ।

संज्ञा पुं० १. वह दूर दूर पर पड़ा  
हुआ तागे का डोम जिस पर दरजी  
बलिया करते हैं । २. मसविदा ।

कच्चा चिट्ठा-संज्ञा पुं० १. वह घृतांत  
जो ज्यों का त्यों कहा जाय । २.  
गुप्त मेद ।

कच्चा माल-संज्ञा पुं० वह द्रव्य  
जिससे व्यवहार की चीजें बनती हैं ।

कच्चा हाथ-संज्ञा पुं० अनम्य हाथ ।

कच्ची-वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग ।  
संज्ञा स्त्री० दे० "कच्ची रसोई" ।

कच्ची चीनी-संज्ञा स्त्री० वह चीनी जो  
खूब साफ न की गई हो ।

कच्ची वही-संज्ञा स्त्री० वह वही जिसमें  
ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप  
से निश्चित न हो ।

कच्ची रसोई-संज्ञा स्त्री० केवल पानी  
में पकाया हुआ अन्न ।

कच्ची सड़क-संज्ञा स्त्री० वह सड़क  
जिसमें कंकड़ आदि न पिटा हो ।

कच्ची सिलाई-संज्ञा स्त्री० दूर दूर पर  
पड़ा हुआ डोम या टीका और  
लंगर ।

कच्चे-पक्के दिन-संज्ञा पुं० दो अतुथों

की संधि के दिन ।

कच्चे बच्चे-संज्ञा पुं० बहुत छोटे  
छोटे बच्चे । बहुत से लड़के-बाले ।  
कच्छ-संज्ञा पुं० १. जलमय देश ।

२. कछार ।

[ वि० कच्छी ] गुजरात के समीप एक  
प्रदेश ।

संज्ञा पुं० धोती की लाँग ।

० संज्ञा पुं० कलुआ ।

कच्छप-संज्ञा पुं० [ खी० कच्छपी ]  
कलुआ ।

कच्छपी-संज्ञा स्त्री० कलुई ।

कच्छी-वि० १. कच्छ देश का । २.  
कच्छ देश में उपपन्न ।

कच्छू-संज्ञा पुं० कलुआ ।

कलुआहा-संज्ञा पुं० राजपूतों की एक  
जाति ।

कछार-संज्ञा पुं० समुद्र या नदी के  
किनारे की तर और नीची भूमि ।

कलुआ-वि० दे० "कुछ" ।

कलुआ-संज्ञा पुं० [ खी० कलुआ ] एक  
जल-जंतु जिसके ऊपर पक्षी कच्ची  
ढाल की तरह खोपड़ी होती है ।

कलुफ-वि० कुछ ।

कजरा-संज्ञा पुं० १. दे० "काजल" ।

२. काली आखोंवाला घैल ।

कजरई-संज्ञा स्त्री० कालापन ।

कजरारा-वि० [ खी० कजरारे ]  
काजलवाला ।

कजरोट्टा-संज्ञा पुं० दे० "कज-  
लौटा" ।

कजलाना-कि० अ० काळा पढ़ना ।  
कि० सं० अजिना ।

कजली-संज्ञा स्त्री० १. कालिख । २.  
एक प्रकार का गीत जो बरसात में  
गाया जाता है ।

कमरचंद-संज्ञा पुं० १. पटुका । २. पेटी ।

वि० कमर कैसे तैयार । मुस्तैद ।

कमरा-संज्ञा पुं० १. कोठरी । २. कोठोप्राप्ति का वह औज़ार जिसके मुँह पर लेंच या प्रतिबिम्ब उतारने का गोल शीशा लगा रहता है ।

संज्ञा पुं० दे० "कंबल" ।

कमरिया-संज्ञा पुं० यौना हाथी ।

संज्ञा स्त्री० दे० "कमली" ।

कमरी-संज्ञा स्त्री० दे० "कमली" ।

कमल-संज्ञा पुं० १. पानी में होने-वाला एक पौधा जो अपने सुंदर फूलों के लिये प्रसिद्ध है । २. इस पौधे का फूल । ३. कमल के आकार का एक मोस-पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है । बलोमा । ४. जल ।

कमलगट्टा-संज्ञा पुं० कमल का धीज ।

कमलज-संज्ञा पुं० प्रह्ला ।

कमलनयन-वि० [ स्त्री० कमलनयनी ]

जिसकी आँखें कमल की पंखड़ी की तरह धड़ी और सुंदर हों ।

संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. राम । ३. कृष्ण ।

कमलनाभ-संज्ञा पुं० विष्णु ।

कमलनाल-संज्ञा स्त्री० कमल की डंढी जिसके ऊपर फूल रहता है । शृणाल ।

कमलयोनि-संज्ञा पुं० प्रह्ला ।

कमला-संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी । २. धन । ऐश्वर्य्य । ३. संतरा ।

कमलाक्ष-संज्ञा पुं० १. कमल का धीज । २. दे० "कमलनयन" ।

कमलापति-संज्ञा पुं० विष्णु ।

कमलालया-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।

कमलासन-संज्ञा पुं० १. प्रह्ला । २.

योग का एक आसन । पद्मासन ।

कमलिनी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा कमल ।

२. वह साक्षात् जिसमें कमल हों ।

कमली-संज्ञा पुं० प्रह्ला ।

संज्ञा स्त्री० छोटा कंबल ।

कमयाना-क्रि० स० कमाने का काम दूसरे से कराना ।

कमसिन-वि० [ संज्ञा कमसिनी ] कम उद्य का ।

कमसिनी-संज्ञा स्त्री० खट्कपन ।

कमाई-संज्ञा स्त्री० १. कमाया हुआ धन । २. व्यवसाय ।

कमाऊ-वि० कमानेवाला ।

कमान-संज्ञा स्त्री० धनुष ।

कमाना-क्रि० स० काम-काज करके रुपया पैदा करना ।

क्रि० प्र० मेहनत मजदूरी करना ।

क्रि० स० [ हि० कम ] कम करना । घटाना ।

कमानियार-संज्ञा पुं० तीरंदाज ।

कमानी-संज्ञा स्त्री० [ वि० कमानीदार ]

१. मुकाई हुई लोहे की लचीली तीली । २. कमान के आकार की कोई भुकी हुई लकड़ी जिसके दोनों सिरों के बीच में रस्ती, तार या बाल बँधा हो ।

कमाल-संज्ञा पुं० १. परिपूर्णता ।

२. कुशलता ।

वि० १. पूरा । २. सर्वोत्तम ।

कमालियत-संज्ञा स्त्री० १. परिपूर्णता । २. निपुणता ।

कमासुत-वि० कमाई करनेवाला ।

कमी-संज्ञा स्त्री० १. न्यूनता । २. हानि ।

कमीज़-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कुर्ता जिसमें कली और चौथगले

फजलौटा-संज्ञा पुं० [खी० अल्पा० कज-  
लौटा] फजल रखने की लोहे की  
डंडीदार डिविया।

फझा-संज्ञा स्त्री० मात।

फजाक-संज्ञा पुं० लुटेरा।

फजाकी-संज्ञा स्त्री० १. लुटेरापन।

२. धुल-कपट।

फजिया-संज्ञा पुं० झगड़ा।

फजी-संज्ञा स्त्री० देड़ापन।

फजल-संज्ञा पुं० [वि० कज्जलित]

धजन। फजल।

फज्जाफ-संज्ञा पुं० दे० "कजाक"।

फटफ-संज्ञा पुं० सेना।

फटफई-संज्ञा स्त्री० फौज।

फटफट-संज्ञा स्त्री० १. दौतों के बजने  
का शब्द। २. लड़ाई-झगड़ा।

फटफटाना-क्रि० भ० दौत पीसना।

फटफाई-संज्ञा स्त्री० सेना।

फटखना-वि० काट खानेवाला।

फटघरा-संज्ञा पुं० काठ का वह घर  
जिसमें जंगला लगा हो।

फटती-संज्ञा स्त्री० विक्री।

फटना-क्रि० भ० १. किसी धारदार  
चीज़ की धाव से दो टुकड़े होना।

२. किसी धारदार चीज़ से घाव  
होना। ३. कतरा जाना।

फटनांसी-संज्ञा पुं० नीलकंठ।

फटनी-संज्ञा स्त्री० १. काटने का  
थाज़ार। २. काटने का काम।

फटरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी  
लाव जो चरखियों के सहारे  
चलती है।

फटरा-संज्ञा पुं० छोटा चौकोर घाज़ार।

फटवा-वि० जो फाटकर घना हो।

फटहर-संज्ञा पुं० दे० "कटहल"।

कटहरा-संज्ञा पुं० दे० "कटघरा"।

कटहल-संज्ञा पुं० १. एक सदायहार  
घना पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ  
के मोटे और भारी फल लगते हैं।

२. इस पेड़ का फल जो खाया  
जाता है।

कटहा-वि० [स्त्री० कटही] काट  
खानेवाला।

कटा-संज्ञा पुं० मार-काट। बध।

कटाईक-वि० काटनेवाला।

कटाई-संज्ञा स्त्री० काटने का काम।

कटाकट-संज्ञा पुं० १. कटकट शब्द।

२. लड़ाई।

कटाकटी-संज्ञा स्त्री० मार-काट।

कटाक्ष-संज्ञा पुं० १. तिरछी नज़र।

२. व्यंग्य।

कटासि-संज्ञा स्त्री० घास-फूस की आग  
जिसमें लोग जल मरते थे।

कटाछुनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कटा-  
कटी"।

फटान-संज्ञा स्त्री० काटने की क्रिया,  
भाव या दंग।

फटाना-क्रि० स० काटने का काम  
दूसरे से कराना।

फटार-संज्ञा स्त्री० [स्त्री० अल्पा० कटारी]  
एक बालिशत का छोटा तिकोना  
और दुधारा हथियार।

फटाव-संज्ञा पुं० काट। कतर-वर्धित।

फटावदार-वि० जिस पर खोद या  
फाटकर चित्र और खेल-बूटे बनाए  
गए हों।

फटावनी-संज्ञा पुं० १. कटाई करने  
का काम। २. कतरन।

फटास-संज्ञा पुं० एक प्रकार का घन-  
विलाव।

फटाह-संज्ञा पुं० १. कड़ाह। २.

नहीं होते ।

कमीना-वि० [ खी० कमीनी ] नीच ।

कमेरा-संज्ञा पुं० मजदूर ।

कमोला-संज्ञा पुं० वध-स्थान ।

कमोदिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी" ।

कमोरा-संज्ञा पुं० [ खी० कमोरी, कमोरिया ] घड़ा ।

कया-संज्ञा स्त्री० दे० "काया" ।

क्याम-संज्ञा पुं० १. ठहराव । २. विश्राम-स्थान ।

क्यामत-संज्ञा स्त्री० १. मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मूर्ते बैठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का बोखा रखा जायगा । २. मलय ।

क्यास-संज्ञा पुं० [ वि० क्यासी ] अनुमान ।

करक-संज्ञा पुं० १. मस्तक । २. नारियल की छोपड़ी । ३. पंजर ।

करज-संज्ञा पुं० १. कंजा । २. एक छोटा जंगली पेड़ ।

संज्ञा पुं० सुर्गा ।

करजा-संज्ञा पुं० दे० "कंजा" ।

वि० खाकी ।

करंड-संज्ञा पुं० १. सहद का छत्ता ।

२. तलवार । ३. डंडा ।

संज्ञा पुं० कुरुल पत्थर जिस पर रखकर हथियार तेज किए जाते हैं ।

कर-संज्ञा पुं० १. हाथ । २. हाथी की सूँड़ । ३. सूर्य या चंद्रमा की किरण । ४. मालगुजारी । महसूल ।

प्रत्य० संबंधकारक का चिह्न । का ।

करक-संज्ञा पुं० १. कर्मंडलु । २. धनार ।

संज्ञा स्त्री० कस्तक ।

करकच-संज्ञा पुं० समुद्री नमक ।

करकट-संज्ञा पुं० कूड़ा । भाइन ।

करकना-क्रि० अ० दे० "कड़कना" ।

वि० [ खी० करकरी ] खुरखुरा ।

करकराहट-संज्ञा स्त्री० खुरखुराहट ।

करकस-वि० दे० "कर्कश" ।

करखा-संज्ञा पुं० १. दे० "कड़खा" ।

२. एक प्रकार का छंद ।

संज्ञा पुं० दे० "कालिख" ।

करगता-संज्ञा पुं० सोने, चाँदी या सुत की करघनी ।

करग्रह-संज्ञा पुं० व्याह ।

करघा-संज्ञा पुं० कपड़ा धुनने का यंत्र ।

करचंग-संज्ञा पुं० १. ताश देने का एक बाजा । २. डफ ।

करछा-संज्ञा पुं० [ खी० करछी ] यड़ी करछी ।

करछाल-संज्ञा स्त्री० बछाल ।

करज-संज्ञा पुं० १. नख । २. डँगली ।

करजोड़ी-संज्ञा स्त्री० हरयाजोड़ी नाम की ओपधि ।

करटक-संज्ञा पुं० कौआ ।

करटी-संज्ञा पुं० हाथी ।

करण-संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है और जिसका चिह्न 'से' है । २. हथियार । ३. क्रिया ।

४. हेतु ।

संज्ञा पुं० दे० "कर्ण" ।

करणीय-वि० करने योग्य ।

करतब-संज्ञा पुं० [ वि० करतबी ] १. कार्य । २. कला ।

करतबी-वि० काम करनेवाला ।

कटुप की खोपड़ी ।  
 कटि-संज्ञा स्त्री० कमर ।  
 कटिजेघ-संज्ञा स्त्री० करघनी ।  
 कटिवेध-संज्ञा पुं० १. कमरवेद । २. गरमी-मरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक ।  
 कटिवद्ध-वि० १. कमर बाँधे हुए । २. तैयार ।  
 काटसूत्र-संज्ञा पुं० कमर में पहनने का डोरा ।  
 कटौला-वि० [स्त्री० कटीली] तीक्ष्ण । वि० १. कटिदार । २. नुकीला ।  
 कटु-वि० दुःख लगनेवाला ।  
 कटुता-नशा स्त्री० कड़वापन ।  
 कटुरव-संज्ञा पुं० कड़वापन ।  
 कटुक्ति-संज्ञा स्त्री० अप्रिय बात ।  
 कटेरी-संज्ञा स्त्री० भटकरीया ।  
 कटेया-संज्ञा पुं० काटनेवाला ।  
 कटोरदान-संज्ञा पुं० पीतल का एक छलनदार धरतन जिसमें तैयार भोजन आदि रखते हैं ।  
 कटोरा-नशा पुं० खुले मुँह, नीची दीवार और चौड़ी पेंदी का एक छोटा धरतन ।  
 कटोरी-संज्ञा स्त्री० छोटा कटोरा ।  
 कटौती-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को देते हुए उसमें से कुछ चँदा हट्का या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना ।  
 कट्टर-वि० अंधविश्वासी ।  
 कट्टहा-संज्ञा पुं० महापात्र ।  
 कट्टा-वि० इटा-वट्टा ।  
 कट्टा-संज्ञा पुं० जमीन की एक भाग जो पाँच हाथ चार अंगुल की होती है ।  
 कठ-संज्ञा पुं० लकड़ी ।  
 कठफेला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

केला जिसका फल रूखा और फीका होता है ।  
 कठपुतली-संज्ञा स्त्री० १. काठ की गुड़िया या मूर्ति जिसको तार द्वारा नचाते हैं । २. वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे ।  
 कठड़ा-संज्ञा पुं० १. कटहरा । २. कठौता ।  
 कठफोड़या-संज्ञा पुं० लाकी रंग की एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है ।  
 कठबंधन-संज्ञा पुं० काठ की वह वेड़ी जो हाथी के पैर में डाली जाती है ।  
 कठवाप-संज्ञा पुं० सौतेला वाप ।  
 कठमलिया-संज्ञा पुं० १. काठ की भाला या कंठी, पहननेवाला वैष्णव । २. सूडा संत ।  
 कठमस्त-वि० सड-मुसंड ।  
 कठमस्ती-संज्ञा स्त्री० मुसंडापन ।  
 कठरा-संज्ञा पुं० दे० "कटहरा" या "कटवरा" ।  
 कठिन-वि० १. कड़ा । २. दुष्कर ।  
 कठिनता-संज्ञा स्त्री० १. कठोरता । २. असाध्यता ।  
 कठिनाई-संज्ञा स्त्री० मुशकिल ।  
 कठियाना-कि० प्र० सूखकर कड़ा हो जाना ।  
 कठुवाना-कि० प्र० सूखकर काठ की तरह कड़ा होना ।  
 कठुमर-संज्ञा पुं० जंगली गूलर ।  
 कठोर-वि० कठिन । निष्ठुर ।  
 कठोरता-संज्ञा स्त्री० १. कड़ाई । २. निर्दयता ।  
 कठोरपन-संज्ञा पुं० कठोरता ।  
 कठौता-संज्ञा पुं० काठ का एक बड़ा और चौड़ा धरतन ।



करतल-संज्ञा पुं० [ स्त्री० करतली ]  
हथेली ।

करतली-संज्ञा स्त्री० १. हथेली । २.  
ताली ।

करता-संज्ञा पुं० दे० "कर्ता" ।

करतार-संज्ञा पुं० ईश्वर ।

†संज्ञा पुं० दे० "करताल" ।

करतासी-संज्ञा स्त्री० दे० "कर-  
ताली" ।

वि० ईश्वरीय ।

करताल-संज्ञा पुं० १. ताली वजना ।  
२. मँजीरा ।

करतूत-संज्ञा स्त्री० १. कर्म । २.  
हुनर ।

करतूति-संज्ञा स्त्री० दे० "करतूत" ।

करद-वि० कर देनेवाला ।

करधनी-संज्ञा स्त्री० १. सोने या चाँदी  
का, कमरमें पहनने का, एक गहना ।  
२. कई लड़ों का सूत जो कमर में  
पहनना जाता है ।

करन-संज्ञा पुं० दे० "कर्य" ।

करनधार-संज्ञा पुं० दे० "कर्य-  
धार" ।

करनफूल-संज्ञा पुं० कान का एक  
गहना ।

करनवेध-संज्ञा पुं० घर्चों के कान  
छेदने का संस्कार या रीति ।

करना-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें  
सफेद फूल लगते हैं । सुदर्शन ।

संज्ञा पुं० विजौरे की तरह का एक बड़ा  
नीयू ।

० संज्ञा पुं० करनी ।

कि० सं० १. संपादित करना । २.  
रखना । ३. धनाना ।

करनाई-संज्ञा स्त्री० तुरही ।

करनाटक-संज्ञा पुं० मद्रास प्रांत का

एक भाग ।

करनाटकी-संज्ञा पुं० १. करनाटक  
प्रदेश का निवासी । २. कलावाज ।

करनाल-संज्ञा पुं० १. नरसिंहा । २.  
एक प्रकार का बड़ा डोल । ३. एक  
प्रकार की तोप ।

करनी-संज्ञा स्त्री० १. कर्म । २. मृतक  
संस्कार । ३. दीवार पर पद्या या  
गारा लगाने का औजार ।

करपट-संज्ञा स्त्री० खोपड़ी ।

वि० कंजूस ।

करपलई-संज्ञा स्त्री० दे० "कर-  
पल्ली" ।

करपल्लवी-संज्ञा स्त्री० वैगलियों के  
संकेत से शब्दों को प्रकट करने की  
विद्या ।

करपीड़न-संज्ञा पुं० बियाह ।

करपृष्ठ-संज्ञा पुं० हथेली के पीछे का  
भाग ।

करवरना-कि० भ० कुलवृत्ताना ।

करवला-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ  
ताड़िए दफन हैं ।

करवृत्त-संज्ञा पुं० हथियार छटकाने के  
लिये घोड़े की ज़ीन या चारजामे में  
टँकी हुई रस्ती या तसमा ।

करम-संज्ञा पुं० [ स्त्री० करमी ] १. ह-  
थेली के पीछे का भाग । २. ऊँट का  
पछा । ३. हाथी का पछा । ४. कमर ।

करभोर-संज्ञा पुं० हाथी की सूँढ़ के  
ऐसा जंघा ।

वि० सुंदर जाँघवाली ।

करम-संज्ञा पुं० १. कर्म । २. भाग्य ।

करमफला-संज्ञा पुं० यंद-गोभी । पात-  
गोभी ।

करमचंद-संज्ञा पुं० कर्म । भाग्य ।

करमट्टा-वि० कंजूस ।

कड़क-संज्ञा स्त्री० १. कठोर शब्द ।

२. घञ्ज । ३. फसक ।

कड़कड़-संज्ञा पुं० घोर शब्द ।

कड़कड़ाता-वि० [ स्त्री० कड़कड़ाती ]

कड़कड़शब्दकरता हुआ। कड़कड़े का।

कड़कड़ाना-क्रि० अ० कड़ कड़ शब्द होना । -

क्रि० स० घी, तेल आदि को खूब सपाना ।

कड़कड़ाहट-संज्ञा स्त्री० गरज ।

कड़कना-क्रि० अ० १. कड़कड़ शब्द होना । २. डाँटना ।

कड़क विजली-संज्ञा स्त्री० १. कान का एक गहना । २. तोड़ेदार पट्टक ।

कड़घड़ा-वि० जिसके कुछ घाल सफेद और कुछ काले हो ।

कड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कड़ी ] १. हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा । २.

लोहे या और किसी धातु का छड़ा या कुंडा । ३. एक प्रकार का वस्त्र ।

वि० [ स्त्री० कड़ी ] १. घठोर । २. कसा हुआ । ३. कम गीला । ४. प्रचंड ।

कड़ाई-संज्ञा स्त्री० कठोरता ।

कड़ाका-संज्ञा पुं० १. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द । २. फाँका ।

कड़ाहा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कड़ाही ] आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल घरतन ।

कड़ाही-संज्ञा स्त्री० छोटा कड़ाहा ।

कड़ी-संज्ञा स्त्री० १. जंजीर या सिकड़ी की लड़ी का एक छड़ा । २. गीत का एक पद ।

संज्ञा स्त्री० छोटी घरन ।

संज्ञा स्त्री० झंडस ।

कड़ीदार-वि० छुरेदार ।

कड़ुआ-वि० [ स्त्री० कड़ई ] १. कटु ।

२. गुस्सिल ।

कड़ुआ तेल-संज्ञा पुं० सरसों का तेल ।

कड़ुआना-क्रि० अ० कड़ुआ लगना ।

कड़ुआहट-संज्ञा स्त्री० कड़ुआपन ।

कड़लाना-क्रि० स० घसीटना ।

कड़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही" ।

कड़ाना, कड़वाना-क्रि० स० निकलवाना ।

कड़ाघ-संज्ञा पुं० घटे वशीदे का काम ।

कट्टी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का साजिन जो पानी में घोले हुए येसन को आँच पर गाढ़ा करने से बनता है ।

कट्टैया-संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही" ।

† संज्ञा पुं० निकालनेवाला ।

कण-संज्ञा पुं० किनका ।

कणिका-संज्ञा स्त्री० किनका ।

कतई-अव्य० विरुद्ध । एकदम ।

कतना-क्रि० अ० काता जाना ।

कतरन-संज्ञा स्त्री० कपड़े, कागज आदि के वे छोटे रेशे टुकड़े जो काट-छाँट के पीछे बच रहते हैं ।

कतरना-क्रि० स० कँची या किसी औजार से काटना ।

कतरनी-संज्ञा स्त्री० १. कँची । २. काती ।

कतर-व्योम-संज्ञा स्त्री० १. काट-छाँट । २. युक्ति ।

कतरवाना-क्रि० स० दे० "कतराना" ।

कतरा-संज्ञा पुं० खंड ।

संज्ञा पुं० चिंदु ।

कतराई-संज्ञा स्त्री० कतरने का काम ।

कतराना-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु या

करमठा-वि० १. कर्मनिष्ठ । २. कर्मकाण्डी ।  
 करमाली-संज्ञ पुं० सूर्य ।  
 करमी-वि० कर्म करनेवाला ।  
 करमुहा-वि० १. काले मुँहवाला । २. कलंकी ।  
 कररना, करराना-क्रि० अ० १. घरमराकर टूटना । २. कर्कश शब्द करना ।  
 करल-संज्ञ पुं० कड़ाही ।  
 करवट-संज्ञ स्त्री० हाथ के पल खेटने की मुद्रा ।  
 करवत-संज्ञ पुं० आरा ।  
 करवटा-संज्ञ स्त्री० विपत्ति ।  
 करवरना-क्रि० अ० कलरव करना ।  
 करघा-संज्ञ पुं० बधना ।  
 करघा चौध-संज्ञ स्त्री० कार्तिक कृष्ण चतुर्थी ।  
 करघाना-क्रि० स० दूसरे को करने में प्रयुक्त करना ।  
 करघार-संज्ञ स्त्री० तलवार ।  
 करघाल-संज्ञ पुं० १. नख । २. तलवार ।  
 करघाली-संज्ञ स्त्री० छोटी तलवार ।  
 करघीर-संज्ञ पुं० १. कनेर का पेड़ । २. तलवार । ३. श्मशान ।  
 करघैया-वि० करनेवाला ।  
 करश्मा-संज्ञ पुं० चमत्कार ।  
 करप-संज्ञ पुं० १. मनमोटाव । २. ताव ।  
 करपना-क्रि० स० १. खींचना । २. सुखाना । ३. बुझाना ।  
 करसना-क्रि० स० दे० "करपना" ।  
 करसान-संज्ञ पुं० दे० "कृपाण" ।  
 करसायर, करसायल-संज्ञ पुं० काला हिरन ।

करसी-संज्ञ स्त्री० उपले या कंड़े का डुब्ड़ा ।  
 करहंत-संज्ञ पुं० दे० "करहंस" ।  
 करहु-संज्ञ पुं० ऊँट ।  
 संज्ञ पुं० फूल की कली ।  
 करकुल-संज्ञ पुं० पानी के किनारे की एक बड़ी चिड़िया । कूँज ।  
 करा-संज्ञ स्त्री० दे० "कला" ।  
 कराहत-संज्ञ पुं० एक प्रकार का काला साँप जो बहुत विषैला होता है ।  
 कराई-संज्ञ स्त्री० उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी ।  
 र-संज्ञ स्त्री० कालापन ।  
 संज्ञ स्त्री० करने या कराने का भाव ।  
 करात-संज्ञ पुं० चार जौ की एक तौल जो सोना, चाँदी या दवा तौलने के काम में आती है ।  
 कराना-क्रि० स० करने में लगाना ।  
 कराचा-संज्ञ पुं० शीशे का बड़ा परतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं ।  
 करामात-संज्ञ स्त्री० चमत्कार ।  
 करामाती-वि० करामात दिखानेवाला । सिद्ध ।  
 करार-संज्ञ पुं० ठहराव ।  
 करारना-क्रि० अ० कर्क का शब्द करना । कर्कश स्वर निकालना ।  
 करारा-संज्ञ पुं० १. नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने । २. टीला ।  
 वि० १. छूने में कटोर । कड़ा । २. तीक्ष्ण ।  
 करारापन-संज्ञ पुं० कड़ापन ।  
 कराल-वि० १. जिसके बड़े बड़े दाँत हों । २. डरावना ।  
 कराली-संज्ञ स्त्री० अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

व्यक्ति को धचाकर किनारे से निकल जाना ।

कि० स० कटाना ।

कतरी-संज्ञा स्त्री० कोवहू का पाट जिस पर आदमी बैठकर बैलों को हँकता है ।

कतल-संज्ञा पुं० घघ ।

कतलयाज-संज्ञा पुं० घघिक ।

कतलाम-संज्ञा पुं० सर्वसंहार ।

कतली-संज्ञा स्त्री० मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा ।

कतवार-संज्ञा पुं० कूड़ा करकट ।

का संज्ञा पुं० कातनेवाला ।

कतहूँ, कतहूँ-अव्य० कहीं, किसी स्थान पर ।

कता-संज्ञा स्त्री० १. यनावट । आकार । २. वज्र ।

कताई-संज्ञा स्त्री० १. कातने की क्रिया । २. कातने की मजदूरी ।

कताना-कि० स० किसी अन्य से कातने का काम कराना ।

कतार-संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति । २. कुंड ।

कतारी-संज्ञा स्त्री० दे० "कतार" । संज्ञा स्त्री० ईख ।

कतिपय-वि० कई एक ।

कतौनी-संज्ञा स्त्री० कातने का काम या मजदूरी ।

कत्ता-संज्ञा पुं० घाँस चीरने का एक औजार ।

कत्ती-संज्ञा स्त्री० १. चाकू । २. सेनारों की कतरनी ।

कतई-वि० खैर के रंग का ।

कतथक-संज्ञा पुं० एक जाति जिसका काम गाना-बजाना और नाचना है ।

कत्था-संज्ञा पुं० खैर की लकड़ियों को

जमाकर सुखाया काढ़ा जो पान में खाया जाता है ।

कथंचित्-कि० वि० शायद ।

कथक-संज्ञा पुं० कथा या किस्सा कहनेवाला ।

कथकड्ड-संज्ञा पुं० बहुत कथा कहनेवाला ।

कथन-संज्ञा पुं० १. यखान । २. पात ।

कथनी-संज्ञा स्त्री० १. कथन । २. हुजत ।

कथनीय-वि० कहने योग्य ।

कथरी-संज्ञा स्त्री० शुद्धी ।

कथा-संज्ञा स्त्री० १. वह जो कहा जाय । २. धर्म-विषयक व्याख्यान ।

कथानक-संज्ञा पुं० कथा ।

कथावस्तु-संज्ञा स्त्री० प्लाट ।

कथा-घातार्त्ता-संज्ञा स्त्री० अनेक प्रकार की यातचीत ।

कथित-वि० कहा हुआ ।

कथोद्घात-संज्ञा पुं० १. प्रस्तावना ।

२. ( नाटक में ) सूत्रधार की बात, अथवा उसके मर्म को लेकर पहले-पहल पात्र का रंगभूमि में प्रवेश और अभिनय का आरंभ ।

कथोपकथन-संज्ञा पुं० यातचीत ।

कदंय-संज्ञा पुं० कदम ।

कद-संज्ञा पुं० ऊँचाई ।

कदन-संज्ञा पुं० १. मरण । २. यध ।

कदन्न-संज्ञा पुं० मोटा थल ।

कदम-संज्ञा पुं० एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोखर फल लगते हैं ।

कदम-संज्ञा पुं० १. पैर । पाँव । २. पग ।

कदमवाज-वि० कदम की चाल चलनेवाला (घोड़ा) ।

वि० डरावनी ।

कराव, करावा-संज्ञ पुं० एक प्रकार का विवाह या सगाई ।

कराह-संज्ञ पुं० कराहने का शब्द । पीड़ा का शब्द ।

\* संज्ञ पुं० दे० "कड़ाह" ।

कराहना-कि० अ० व्यथासूचक शब्द मुँह से निकालना । आह आह करना ।

कारद-संज्ञ पुं० १. उत्तम या बड़ा हाथी । २. देरावत हाथी ।

करि-संज्ञ पुं० हाथी ।

करिखा-संज्ञ पुं० दे० "कालिख" ।

करिणी-संज्ञ स्त्री० हथिनी ।

करिया-संज्ञ पुं० १. पतवार । २. मछाह ।

कां वि० काला । स्वाम ।

करिल-संज्ञ पुं० कोपल ।

वि० काला ।

करिवदन-संज्ञ पुं० गणेश ।

करिहावा-संज्ञ स्त्री० कमर ।

करी-संज्ञ पुं० हाथी ।

संज्ञ स्त्री० कड़ी ।

० १. कली । २. पंद्रह मात्राओं का एक छंद ।

करीना-संज्ञ पुं० दे० "कैराना" ।

करीना-संज्ञ पुं० बंग ।

करीय-कि० वि० समीप ।

करीम-वि० कृपासु ।

संज्ञ पुं० ईश्वर ।

करीर-संज्ञ पुं० १. घाँस का नया कट्टा ।

२. करील का पेड़ । ३. घंटा ।

करील-संज्ञ पुं० एक बँटीली, मोड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होती ।

करीश-संज्ञ पुं० मञ्जर ।

करीप-संज्ञ पुं० सूखा गोबर जो

जंगलों में मिलता है ।

करुआ-वि० दे० "कडुआ" ।

करुआई-संज्ञ स्त्री० दे० "कडुआ-पत्र" ।

करुण-संज्ञ पुं० १. दे० "करुणा" । (यह काव्य के नौ रसों में से है ।)

२. एक मुद्र का नाम । ३. परमेश्वर । वि० करुणायुक्त ।

करुणा-संज्ञ स्त्री० १. दया । २. शोक ।

करुणादृष्टि-संज्ञ स्त्री० दयादृष्टि ।

करुणानिधान, करुणानिधि-वि० जिसका हृदय करुणा से भरा हो ।

बहुत बड़ा दयासु ।

करुणामय-वि० बहुत दयावान् ।

करुना-संज्ञ स्त्री० दे० "करुणा" ।

करर-वि० "कडुआ" ।

करवा-संज्ञ पुं० दे० "करवा" ।

संज्ञ पुं० दे० "कडुआ" ।

करु-वि० दे० "कडुआ" ।

करुला-संज्ञ पुं० हाथ में पहनने का बड़ा ।

करेजा-संज्ञ पुं० दे० "करेजा" ।

करेणु-संज्ञ पुं० हाथी ।

करेणुकर-संज्ञ स्त्री० हथिनी ।

करेसू-संज्ञ पुं० पानी में की एक घात जिसका साग खाया जाता है ।

करेर-वि० बँटोर ।

करेल-संज्ञ पुं० १. एक छोटी देवता जिसके चरे कडुए फल सरकारी काम में आते हैं । २. माला ।

हुमेल की लंबी श्रिया जो पड़े देवता के बीच में लगाई जाती है ।

करेली-संज्ञ स्त्री० जंगली करेल जिसके फल छोटे होते हैं ।

करैत-संज्ञ पुं० काका फनदार सजा

कदर-संज्ञा स्त्री० मान ।  
 कदरई-संज्ञा स्त्री० कायरता ।  
 कदरदान-वि० कदर करनेवाला ।  
 कंदरवानी-संज्ञा स्त्री० गुणग्राहकता ।  
 कदराई-संज्ञा स्त्री० कायरपन ।  
 कदराना-कि० भ० डरना ।  
 कदर्थ-संज्ञा पुं० कूड़ा-करकट ।  
 कदर्थना-संज्ञा स्त्री० [ वि० कदर्थित ]  
 दुर्गति ।

कदर्थित-वि० दुर्गति-प्राप्त ।  
 कदर्थ-वि० [ संज्ञा कदर्थता ] कंजूस ।  
 कदलो-संज्ञा स्त्री० केला ।  
 कदा-कि० वि० कब । किस समय ।  
 कदाचार-संज्ञा पुं० [ वि० कदाचार ]  
 धुरी चाल ।

कदाचित्-कि० वि० कभी । शायद ।  
 कदापि-कि० वि० कभी । हर्गिज ।  
 कदी-वि० हठी । जिद्दी ।  
 कदीम-वि० पुराना ।  
 कदीमी-वि० पुराना ।  
 कदुज-संज्ञा पुं० सर्प ।  
 कदू-संज्ञा पुं० लौकी ।  
 कदू फश-संज्ञा पुं० लोहे, पीतल आदि  
 की छेददार चौड़ी जिस पर कदू को  
 रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं ।  
 कान-संज्ञा पुं० बहुत छोटा टुकड़ा ।  
 कानक-संज्ञा पुं० १. सोना । २. धनूरा ।  
 संज्ञा पुं० गेहूँ ।  
 कानकफशिपु-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्य-  
 कशिपु" ।

कानकचंपा-संज्ञा स्त्री० मध्यम आकार  
 का एक पेड़ ।  
 कानकटा-वि० जिसका कान कटा हो ।  
 कानकनी-वि० [ स्त्री० कनकनी ] जिस-  
 से कनकनाहट उत्पन्न हो ।

कनकनाना-कि० भ० [ संज्ञा कनकना-  
 हट ] चुनचुनाना ।  
 कनकनाहट-संज्ञा स्त्री० कनकनी ।  
 कनकफल-संज्ञा पुं० १. धतूरेका फल ।  
 २. जमालगोटा ।  
 कनकाचल-संज्ञा पुं० १. सेने का  
 पर्वत । २. सुमेरु पर्वत ।  
 कनकी-संज्ञा स्त्री० छोटा कण ।  
 कनकौवा-संज्ञा पुं० गुह्यो ।  
 कनखजूरा-संज्ञा पुं० गोजर ।  
 कनखियाना-कि० सं० कनखी या  
 तिरछी नज़र से देखना ।  
 कनखी-संज्ञा स्त्री० १. पुनर्जी को आँख  
 के कोने पर ले जाकर ताकने की  
 सुझा । २. आँख का इशारा ।  
 कनखैया-संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी" ।  
 कनखोदनी-संज्ञा स्त्री० कान की मैल  
 निकालने की सजाई ।  
 कनगुरिया-संज्ञा स्त्री० सयसे छोटी  
 बँगली ।  
 कनछेदन-संज्ञा पुं० हिंदुओं का एक  
 संस्कार जिसमें बच्चों का कान छेदा  
 जाता है । कर्णवेध ।  
 कनटोप-संज्ञा पुं० कानों को ढँकने-  
 वाली टोपी ।  
 कनपटी-संज्ञा स्त्री० कान और आँख  
 के बीच का स्थान ।  
 कनफुंका-वि० [ स्त्री० कनफुंकी ]  
 कान फूँकनेवाला । दोहा देनेवाला ।  
 कनफुसकी-संज्ञा स्त्री० दे० "काना-  
 फूसी" ।  
 कनमनाना-कि० भ० १. सोए हुए  
 प्राणी का कुछ आहट पाकर हिलना-  
 डोलना या सचेष्ट होना । २. किसी  
 बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा  
 करना ।

जो बहुत विपैला होता है ।  
करैल-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की काली  
मिट्टी जो प्रायः तालों के किनारे  
मिलती है ।

संज्ञा पुं० १. घाँस का नरम कड़ा ।  
२. डोम-कौआ ।

करैला-संज्ञा पुं० दे० "करैला" ।

करैली मिट्टी-संज्ञा स्त्री० दे० "करैल" ।

करोटी-संज्ञा स्त्री० दे० "करवट" ।

करोड़-वि० सै लाख की संख्या,  
१००००००० ।

करोड़पती-वि० वह जिसके पास  
करोड़ों रुपए हों । बहुत धन धनी ।

करोड़ी-संज्ञा पुं० रोकड़िया ।

करोदना-क्रि० स० खुरचना ।

करोना-क्रि० स० खुरचना ।

करोला-संज्ञा पुं० करवा ।

करोला-वि० [ स्त्री० करौली ] कुछ  
काला ।

करौजी-संज्ञा स्त्री० दे० "कलौजी" ।

करौट-संज्ञा स्त्री० दे० "करवट" ।

करौदा-संज्ञा पुं० १. एक कँटीला  
झाड़ जिसके बेर के से सुंदर छोटे  
फल खटाई के रूप में खाए जाते  
हैं । २. एक छोटी कँटीली अंगली  
झाड़ी जिसमें मटर के बराबर फल  
लगते हैं ।

करौदिया-वि० करौदे के समान हल-  
की स्याही लिए हुए खुलता खाल ।

करौत-संज्ञा पुं० [ स्त्री० करौती ] लकड़ी  
धीरे का आरा ।

संज्ञा स्त्री० रखेली स्त्री ।

करौता-संज्ञा पुं० दे० "करौत" ।

करौती-संज्ञा स्त्री० आरी ।

संज्ञा स्त्री० कराया ।

करौला-संज्ञा पुं० शिकारी ।

करौली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
सीधी छुरी ।

कर्क-संज्ञा पुं० १. केकड़ा । २. अग्नि ।  
३. दर्पण ।

कर्कट-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कर्कटी, कर्कटा ]  
१. केकड़ा । २. कर्क राशि । ३. एक  
प्रकार का सारस । ४. लौकी ।

कर्कटी-संज्ञा स्त्री० १. कलुई । २.  
ककड़ी । ३. साँप ।

कर्कर-संज्ञा पुं० केकड़ा ।

वि० १. कड़ा । २. खुरखुरा ।

कर्कश-संज्ञा पुं० १. ऊँख । २. खड्ग ।  
वि० १. कठोर । कड़ा । जैसे—कर्कश  
स्वर । २. खुरखुरा । ३. क्रूर ।

कर्कशता-संज्ञा स्त्री० कठोरता ।

कर्कशा-वि० स्त्री० लड़ाकी ।

कर्कोट-संज्ञा पुं० १. बेल का पेड़ ।  
२. खेखसा ।

कश्चूर-संज्ञा पुं० १. सेना । २. कचूर ।  
कज्ञ, कर्जा-संज्ञा पुं० ज्ञान ।

कर्जदार-वि० उधार लेनेवाला ।

कर्ण-संज्ञा पुं० १. कान । २. नाव की  
पतवार । ३. समकोण त्रिभुज में  
समकोण के सामने की रेखा ।

कर्णकटु-वि० कान को अप्रिय ।

कर्णकुहर-संज्ञा पुं० कान का छेद ।

कर्णधार-संज्ञा पुं० १. मछाह । २.  
पतवार ।

कर्णनाद-संज्ञा पुं० कान में सुनाई  
पड़ती हुई गूँज ।

कर्णमूल-संज्ञा पुं० कनपेड़ा रोग ।

कर्णवेध-संज्ञा पुं० कनछेदन ।

कर्णाट-संज्ञा पुं० १. दक्षिण का एक  
देश । २. संपूर्ण जाति का एक रंग ।

कर्णाटक-संज्ञा पुं० दे० "कर्णाट" ।

कर्णाटी-संज्ञा स्त्री० १. संपूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी । २. कर्णाट देश की स्त्री । ३. कर्णाट देश की भाषा । ४. शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग ही के अक्षर आते हैं ।

कर्णिका-संज्ञा स्त्री० १. कान का करन-फूल । २. हाथ की चिचली डँगली । ३. कृष्ण ।

कर्णिका-संज्ञा पुं० कनिशरी या कनकचंपा का पेड़ ।

कर्णी-संज्ञा पुं० बाण ।

कर्त्तन-संज्ञा पुं० काटना ।

कर्त्तनी-संज्ञा स्त्री० कैंची ।

कर्त्तरी-संज्ञा स्त्री० १. कैंची । कतरनी । २. कटारी । ३. ताल देने का एक षाजा ।

कर्त्तव्य-वि० करने के योग्य ।

संज्ञा पुं० धर्म ।

कर्त्तव्यता-संज्ञा स्त्री० कर्त्तव्य का भाव ।

कर्त्तव्यमूढ-वि० जिसे यह न सुझाई दे कि क्या करना चाहिए ।

कर्त्ता-संज्ञा पुं० [स्त्री० कर्त्री] १. करनेवाला । २. बनानेवाला । ३. ईश्वर ।

४. व्याकरण में छः कारकों में से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है ।

कर्त्तार-संज्ञा पुं० १. करनेवाला । २. ईश्वर ।

कर्त्तृक-वि० किया हुआ ।

कर्त्तृत्व-संज्ञा पुं० कर्त्ता का भाव ।

कर्त्तृवाचक-वि० कर्त्ता का बोध करानेवाला ।

कर्त्तृवाच्य क्रिया-संज्ञा स्त्री० वह क्रिया जिसमें कर्त्ता का बोध प्रधान

रूप से हो ।

कर्द्दम-संज्ञा पुं० १. कीचड़ । २. मांस । ३. पाप ।

कर्पट-संज्ञा पुं० लता ।

कर्पटी-संज्ञा पुं० [स्त्री० कर्पटिनी] चि-यड़े-गुदड़े पहननेवाला । भिलारी ।

कर्पट-संज्ञा पुं० १. कपाल । २. खप्पर ।

कर्परी-संज्ञा स्त्री० खपरिया ।

कर्पास-संज्ञा पुं० कपास ।

कर्पूर-संज्ञा पुं० कपूर ।

कर्पूर-संज्ञा पुं० १. सोना । २. धतूरा । वि० चितकुरा ।

कर्म-संज्ञा पुं० १. कार्य । करनी । २. व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े ।

३. भाग्य । ४. क्रिया-कर्म ।

कर्मकर-संज्ञा पुं० दे० "कर्मकार" ।

कर्मकांड-संज्ञा पुं० १. धर्म-संबंधी कृत्य । २. वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो ।

कर्मकांडी-संज्ञा पुं० यज्ञादि कर्म या धर्म-संबंधी कृत्य करानेवाला ।

कर्मकार-संज्ञा पुं० १. कर्मकर । २. सेवक ।

कर्मक्षेत्र-संज्ञा पुं० १. कार्य करने का स्थान । २. भारतवर्ष ।

कर्मचारी-संज्ञा पुं० १. कार्यकर्त्ता । २. अमला ।

कर्मठ-वि० काम में चतुर ।

कर्मण्य-वि० वि० कर्म द्वारा ।

कर्मण्य-वि० उद्योगी ।

कर्मण्यता-संज्ञा स्त्री० कार्य-कुशलता ।

कर्मधारय समास-संज्ञा पुं० वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण हो ।



कागजी-वि० १. कागज का बना हुआ । २. लिखित ।  
 कागदा-संज्ञा पुं० दे० "कागज" ।  
 कागभुसुड-संज्ञा पुं० दे० "काक-मुशुडि" ।  
 कागर-संज्ञा पुं० दे० "कागज" ।  
 संज्ञा पुं० चिड़ियों के वे रुई के संमुलायन पर जो रुद्ध जाते हैं ।  
 कागरी-वि० शुष्क ।  
 काच-लघण-संज्ञा पुं० काला नेत्र ।  
 काची-संज्ञा स्त्री० दुधखनेकी हड्डी ।  
 काछ-संज्ञा पुं० १. पेड़ और जगि के जोड़ पर का सया उसके भीचे तक का स्थान । २. घोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोला जाता है । लांग ।  
 काछना-कि० सं० १. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते हुए भाग को जगि पर से ले जाकर पीछे बसकर बांधना । २. बनाना ।  
 कि० सं० हुपेली या चम्मच आदि से तरल पदार्थ को विनारे की ओर खींचकर ठाना ।  
 काछनी-संज्ञा स्त्री० बसकर और कुछ ऊपर बढ़ाकर पहनी हुई घोती जिसकी दोनों छगि पीछे खोली जाती हैं । बछनी ।  
 काछा-संज्ञा पुं० कसकर और कुछ ऊपर बढ़ाकर पहनी हुई घोती जिसकी दोनों छगि पीछे खोली जाती हैं । बछनी ।  
 काछी-संज्ञा पुं० सरकारी खोने और बेचनेवाला आदमी ।  
 काछे-कि० वि० निकट ।  
 काज-संज्ञा पुं० काय ।  
 संज्ञा पुं० वह छेद जिसमें बटन ढाल-

कर फँसाया जाता है ।  
 काजर-संज्ञा पुं० दे० "काजल" ।  
 काजल-संज्ञा पुं० वह कालिख जो दीपक के धुएँ के जमने से लग जाती है और आँखों में लगाई जाती है ।  
 काजी-संज्ञा पुं० मुख्यमानों के धर्म और रीति-नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी ।  
 काजू भोजू-वि० ऐसी दिखावस्तु जो अधिक दिनों तक काम न आ सके ।  
 काट-संज्ञा स्त्री० १. काटने की क्रिया या भाव । २. तराश । ३. कुरती में पेंच का तोड़ ।  
 काटना-कि० सं० १. वस्तु के दो खंड करना । २. किसी भाग को कम करना । ३. बघ करना ।  
 काटू-संज्ञा पुं० १. काटनेवाला । २. भयानक ।  
 काठ-संज्ञा पुं० लकड़ी ।  
 काठड़ा-संज्ञा पुं० [को० काठड़ी] कठौता काटिंग-संज्ञा पुं० दे० "कटिंग" ।  
 काढ़ना-कि० सं० १. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर करना । निकालना । २. खोलकर दिखाना । ३. किसी वस्तु को किसी वस्तु से अलग करना । ४. छकड़ी, परपर, बपड़े आदि पर खेल-गूटे बनाना । ५. लघार देना । ६. पकाना ।  
 काढ़ा-संज्ञा पुं० सोपधियों को पानी में डबाल या थोटाकर बनाया हुआ शरबत ।  
 कातना-कि० सं० चरखा चलाना ।  
 कातर-वि० १. अधीर । २. भयभीत । ३. डरपोक ।  
 संज्ञा स्त्री० कोहू में लकड़ी का पद पड़ता जिस पर हाँकनेवाला बैठता है ।

कर्मना-कि० वि० दे० "कर्मणा" ।

कर्मनाशा-संज्ञा स्त्री० एक नदी जो  
घासा के पास रांगा में मिलती है ।

कर्मनिष्ठ-वि० क्रियावान् ।

कर्मभू-संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मभू" ।

कर्ममोक्ष-संज्ञा पुं० १. कर्मफल । २.  
पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम ।

कर्ममास-संज्ञा पुं० सावन मास ।

कर्मयुग-संज्ञा पुं० कलियुग ।

कर्मयोग-संज्ञा पुं० चित्त शुद्ध करने-  
वाला शास्त्र-विहित कर्म ।

कर्मरेख-संज्ञा स्त्री० भाग्यकी लिखन ।

कर्मघात्य क्रिया-संज्ञा स्त्री० यह क्रिया  
जिसमें कर्म मुख्य होकर कर्त्ता के रूप  
से आया हो ।

कर्मघाद-संज्ञा पुं० १. मीमांसा, जि-  
समें कर्म प्रधान है । २. कर्मयोग ।

कर्मघादी-संज्ञा पुं० कर्मकांड के  
प्रधान माननेवाला । मीमांसक ।

कर्मधान-वि० दे० "कर्मनिष्ठ" ।

कर्मविपाक-संज्ञा पुं० पूर्व जन्म के  
किं पुं शुभ और अशुभ कर्मों का  
भला और बुरा फल ।

कर्मशील-संज्ञा पुं० १. कर्मवान् । २.  
पराधीन ।

कर्मशूर-संज्ञा पुं० शयोगी ।

कर्मसंन्यास-संज्ञा पुं० १. कर्म का  
त्याग । २. कर्म के फल का त्याग ।

कर्मसाक्षी-वि० जिसके सामने कोई  
काम हुआ हो ।

संज्ञा पुं० वे देवता जो प्राणियों के  
कर्मों को देखते रहते हैं और उनके  
साक्षी रहते हैं; जैसे—सूर्य, चंद्र,  
अग्नि ।

कर्महीन-वि० १. जिससे शुभ कर्म

न घन पड़े । २. अभागा ।

कर्मिष्ठ-वि० १. कर्म करनेवाला ।

२. दे० "कर्मनिष्ठ" ।

कर्मी-वि० [स्त्री० कर्मिणी] कर्म करने-  
वाला ।

कर्मेन्द्रिय-संज्ञा स्त्री० वह शक्ति जिससे  
कोई क्रिया की जाती है ।

वि० कड़ा ।

कर्त्तव्य-वि० कर्म कदा होना ।

कर्प-संज्ञा पुं० १. सोलह मासों का  
एक मान । २. खिंचाव ।

कर्पक-संज्ञा पुं० १. खींचनेवाला ।  
२. हल जोतनेवाला ।

कर्पण-संज्ञा पुं० [ वि० कर्पित, कर्पक,  
कर्पणीय, कर्प्य ] १. खींचना । २.  
जोतना ।

कर्पना-वि० स० खींचना ।

कलंक-संज्ञा पुं० १. दाग । २.  
लांछन । ३. दोष ।

कलंकित-वि० लांकित ।

कलंकी-वि० [स्त्री० कलंकीनी] दोषी ।

संज्ञा पुं० कठिण अवतार ।

कलंदर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के  
मुसलमान साधु जो संसार से विरक्त  
रहते हैं । २. रीझ और बंदर नचाने-  
वाला ।

कलंद-संज्ञा पुं० १. शर । २. कर्दध ।

कल-संज्ञा पुं० १. अव्यक्त मधुर ध्वनि ।  
२. धीर्य ।

वि० सुंदर ।

संज्ञा स्त्री० १. आराम । २. संतोष ।

कि० वि० १. आनेवाला दिन । २.  
धीठा हुआ दिन ।

संज्ञा स्त्री० युक्ति । दंष्ट्र ।

कलई-संज्ञा स्त्री० १. रंग । २.

कातरता-संज्ञा स्त्री० [वि० कातर] १. अधीरता । २. डरपोकपन ।  
 काता-संज्ञा पुं० काता हुआ सूत ।  
 तागा ।  
 कातिक-संज्ञा पुं० कात्तिक ।  
 कातिल-वि० घातक ।  
 काती-संज्ञा स्त्री० कैंची ।  
 कात्यायनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।  
 कादंबरी-संज्ञा स्त्री० १. कोयल । २. सरस्वती ।  
 कादंबिनी-संज्ञा स्त्री० मेघमाला ।  
 कादर-वि० डरपोक ।  
 कान-संज्ञा पुं० १. सुनने की इंद्रिय ।  
 श्रवण । २. सोने का एक गहना जो कान में पहना जाता है ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "कानि" ।  
 कानन-संज्ञा पुं० १. जंगल । २. घर ।  
 काना-वि० [स्त्री० कानी] जिसकी एक आँख फूट गई हो ।  
 वि० घे फल आदि जिनका कुछ भाग कीटों ने खा लिया हो ।  
 कानाकानी-संज्ञा स्त्री० काना-फूसी ।  
 कानाफूसी-संज्ञा स्त्री० वह घात जो कान के पास जाकर धीरे से कही जाय ।  
 कानाघाती-संज्ञा स्त्री० दे० "काना-फूसी" ।  
 कानी-वि० स्त्री० एक आँखवाली ।  
 वि० स्त्री० सबसे छोटी ।  
 कानीहाउस-संज्ञा पुं० वह घर जिसमें किसी की हानि करनेवाले पशु पकड़कर बंद किए जाते हैं ।  
 कानून-संज्ञा पुं० [वि० कानूनी] राज-नियम । विधि ।  
 कानूनगो-संज्ञा पुं० माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के कागज़ों

की जाँच करता है ।  
 कानूनी-वि० १. जो कानून जाने ।  
 २. अदालती । ३. हुजती ।  
 कान्यकुब्ज-संज्ञा पुं० १. प्राचीन समय का एक प्रांत जो वर्तमान समय के कन्नौज के आस-पास था ।  
 २. इस देश का निवासी । ३. इस देश का ब्राह्मण ।  
 कान्ह-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 कान्हड़ा-संज्ञा पुं० एक राग ।  
 कान्हूर-संज्ञा पुं० श्रीकृष्णजी ।  
 कापालिक-संज्ञा पुं० शैव मत के तान्त्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते और मद्य मांसादि खाते हैं ।  
 कापाली-संज्ञा पुं० [स्त्री० कापालिनी] शिव ।  
 कापुरुष-संज्ञा पुं० कायर ।  
 काफिर-वि० १. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला ।  
 २. निर्दय ।  
 काफ़ी-वि० पर्याप्त । पूरा ।  
 काफूर-संज्ञा पुं० [वि० काफूरी] कपूर ।  
 काफूरी-वि० १. काफूर का । २. काफूर के रंग का ।  
 संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत हलका रंग जिसमें हरेपनकी झलक रहती है ।  
 काव-संज्ञा स्त्री० यही रिकाषी ।  
 कावर-वि० चितकपरा ।  
 कावा-संज्ञा पुं० अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं ।  
 काबिज़-वि० १. अधिकारी । २. दस्त रोकनेवाला ।  
 काचिल-वि० [संज्ञा काविलीयत] योग्य ।  
 काविलीयत-संज्ञा स्त्री० योग्यता ।

सुखम्मा । ३. तड़क, भड़क । ४. घूने का लेप । सफेदी ।

कलईदार-वि० जिस पर कजई या रंगों का लेप चढ़ा हो ।

कलकठ-संज्ञा पुं० [स्रो० कलकठ] कोकिल ।

वि० मीठी ध्वनि करनेवाला ।

कलक-संज्ञा पुं० १. येवैनी । २. रंज ।

कलकना-कि० अ० चिह्नाना ।

कलकल-संज्ञा पुं० १. करने आदि के जल के गिरने का शब्द । २. कोला-हल ।

संज्ञा स्त्री० झगडा ।

कलकूजिका-वि० स्त्री० मधुर ध्वनि करनेवाली ।

कलगी-संज्ञा स्त्री० १. शहरभुगं आदि चिह्नों के सुंदर पंख जिन्हें पगड़ी या ताम पर लगाते हैं । २. मोती या सोने का बना हुआ सिर का एक गहना । ३. चिह्नों के सिर पर की चोटी । ४. इमारत का शिखर ।

कलझा-संज्ञा पुं० यही डाँड़ी का चमच या यही कलझी ।

कलझी-संज्ञा स्त्री० यही डाँड़ी का चमच जिससे थटलोई की दाख आदि चलाते या निकालते हैं ।

कलजिम्मा-वि० [स्त्री० कलजिम्मी] १. जिसकी जीम काली हो । २. जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः ठीक घटें ।

कलभँचा-वि० साँवला ।

कलत्र-संज्ञा पुं० स्त्री० पत्नी ।

कलदार-वि० जिसमें कल लगी हो । संज्ञा पुं० सरकारी रुपया ।

कलधूत-संज्ञा पुं० चाँदी ।

कलघौत-संज्ञा पुं० १. सोना । २. चाँदी ।

कलन-संज्ञा पुं० [वि० कलित] १. उलट करना । २. आचरण ।

कलप-संज्ञा पुं० १. कल्प । २. सिद्धांत ।

कलपना-कि० अ० विज्ञाप करना । कि० स० काटना ।

० संज्ञा स्त्री० दे० “कल्पना” ।

कलपाना-कि० स० दुःखी करना ।

कलफ-संज्ञा पुं० १. पतली सेई जिसे रुपई पर उनकी तरह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते हैं । २. चेहरे पर का काला धब्बा ।

कलत्रल-संज्ञा पुं० उपाय ।

संज्ञा पुं० शोर-गुल ।

कलवूत-संज्ञा पुं० १. डाँचा । २. क्रमा ।

कलम-संज्ञा पुं० स्त्री० १. लेखनी । २. किपी पेड़ की टहनੀ जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैदा होने के लिये काटी जाय । ३. पे शाख जो हजामत बनवाने में कम-पटियों के पास छोड़ दिए जाते हैं । ४. बालों की कूची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भाते हैं ।

कलमकसाई-संज्ञा पुं० वह जो कुछ लिख-पढ़कर लोगों की हानि करे ।

कलमकारी-संज्ञा स्त्री० कजम से किया हुआ काम ।

कलमतराश-संज्ञा पुं० चाकू ।

कलमदान-संज्ञा पुं० कजम, दावात आदि रखने का ढिन्चा या छोटा संदूक ।

कलमना-कि० स० काटना ।

कलमलना-कि० अ० कुलबुलाना ।

कावुक-संज्ञा स्त्री० कवूतरी का दरवा।  
 कावुल-संज्ञा पुं० [ वि० कावुली ] १.  
 एक नदी जो अफगानिस्तान से आ-  
 कर अटक के पास सिंधु नदी में  
 गिरती है। २. अफगानिस्तान की  
 राजधानी।  
 कावुली-वि० कावुल का।  
 संज्ञा पुं० कावुल का निवासी।  
 कावू-संज्ञा पुं० वश।  
 काम-संज्ञा पुं० [ वि० कामुक, कामी ] १.  
 इच्छा। २. कामदेव। ३. सहवास  
 या मैथुन की इच्छा।  
 संज्ञा पुं० १. व्यापार। २. प्रयोजन।  
 ३. नवकाशी।  
 कामकला-संज्ञा स्त्री० १. मैथुन। रति।  
 २. कामदेव की स्त्री।  
 कामकाजी-वि० काम करनेवाला।  
 कामगार-संज्ञा पुं० दे० "कामदार"।  
 काम-चलाऊ-वि० जिससे किसी प्र-  
 कार काम निकल सके। जो बहुत  
 से शर्शों में काम दे जाय।  
 कामचारी-वि० १. जहाँ चाहे वहाँ  
 भिचरनेवाला। २. कामुक।  
 कामचोर-वि० आलसी।  
 कामज-वि० वासना से उत्पन्न।  
 कामजित-वि० काम को जीतनेवाला।  
 संज्ञा पुं० महादेव।  
 कामज्वर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
 ज्वर जो स्त्रियों और पुरुषों को अत्यंत  
 दुःखकर्य पाठन करने से हो जाता है।  
 कामडिया-संज्ञा पुं० कामदेव के मत  
 के अनुयायी चमार साधु।  
 कामतरु-संज्ञा पुं० दे० "कल्पवृक्ष"।  
 कामता-संज्ञा पुं० चित्रकूट।  
 कामद-वि० [ स्त्री० कामद ] मनोरथ  
 पूरा करनेवाला।

कामद मयि-संज्ञा पुं० चिंतामयि।  
 कामदहन-संज्ञा पुं० कामदेव को  
 जलानेवाले शिव।  
 कामदा-संज्ञा स्त्री० कामधेनु।  
 कामदार-संज्ञा पुं० भ्रमला।  
 वि० जिस पर कलावत् आदि के  
 खेल-कूटे बने हैं।  
 कामदुहा-संज्ञा स्त्री० कामधेनु।  
 कामदेव-संज्ञा पुं० १. स्त्री-पुरुष के  
 संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता।  
 २. वीर्य।  
 कामधाम-संज्ञा पुं० काम-काज।  
 कामधेनु-संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार एक  
 गाय जिससे जो कुछ मांगा जाय,  
 वही मिलता है।  
 कामना-संज्ञा स्त्री० इच्छा।  
 कामधाण-संज्ञा पुं० कामदेव के धाण,  
 जो पाँच हैं।  
 कामयाव-वि० सफल।  
 कामयावी-संज्ञा स्त्री० सफलता।  
 कामरिपु-संज्ञा पुं० शिव।  
 कामरी-संज्ञा स्त्री० कमली।  
 कामरू-संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।  
 कामरूप-संज्ञा पुं० आसाम का एक  
 जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान  
 है।  
 कामल-संज्ञा पुं० कमल रोग।  
 कामला-संज्ञा पुं० दे० "कामल"।  
 कामली-संज्ञा स्त्री० कमली।  
 कामवती-संज्ञा स्त्री० काम या संयोग  
 की वासना रखनेवाली स्त्री।  
 कामवान्-वि० [ स्त्री० कामवती ] काम  
 या संयोग की इच्छा करनेवाला।  
 कामशर-संज्ञा पुं० दे० "कामबाण"।  
 कामशास्त्र-संज्ञा पुं० वह विद्या या  
 ग्रंथ जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर

कलमा-संज्ञा पुं० १. वाक्य । २. वह वाक्य जो सुसलमान धर्म का मूल मंत्र है ।

कलमी-वि० १. लिखित । २. जो कलम लगाने से सपष्ट हुआ हो ।

कलमुहूर्त-वि० १. जिसका मुँह काला हो । २. कलंकित । ३. अभाग्य ।

कलरघ-संज्ञा पुं० मधुर शब्द ।

कलधरिया-संज्ञा स्त्री० शराब की दुकान ।

कलधार-संज्ञा पुं० एक जाति जो शराब बनाती और बेचती है ।

कलधिक-संज्ञा पुं० तरबूज ।

कलश-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कलश० बलश ] १. बड़ा । २. मंदिर, चैत्य आदि का शिखर । ३. छोटी ।

कलशी-संज्ञा स्त्री० १. गगरी । २. मंदिर का छोटा बँगूरा ।

कलस-संज्ञा पुं० दे० "बलश" ।

कलसा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कलसा० कलसी ] १. गगरा । २. मंदिर का शिखर ।

कलसी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा गगरा । २. छोटा शिखर या बँगूरा ।

कलहंस-संज्ञा पुं० १. हंस । २. राज-हंस । ३. श्रेष्ठ राजा । ४. परमात्मा ।

५. चतुरियों की एक शाखा ।

कलह-संज्ञा पुं० [ वि० कलहकारी, कलही ] विवाद ।

कलहकारी-वि० [ स्त्री० कलहकारिणी ] झगड़ा करनेवाला ।

कलहप्रिय-संज्ञा पुं० नारद । [ वि० कलहप्रिया ]

कलहातरिता-संज्ञा स्त्री० वह नायिका जो नायक या पति का अपमान करके पीछे पड़ताती है ।

कलहारी-वि० स्त्री० लड़ाकी ।

कलही-वि० [ स्त्री० कलहिनी ] - झग-दाल ।

कलह-वि० बड़ा । दीर्घाकार ।

कलाकुर-संज्ञा पुं० दे० "कराकुल" ।

कला-संज्ञा स्त्री० १. अंश । २. हुनर । ३. शोभा । ४. तेज । ५. खेल ।

कलाई-संज्ञा स्त्री० हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है ।

संज्ञा स्त्री० १. सूत का लच्छा । २. हाथी के गले में बाँधने का बलावा ।

कलाकंद-संज्ञा पुं० खोप और मिथ्री की बनी बरफी ।

कलाकौशल-संज्ञा पुं० १. विस्ती कला की निपुणता । कारीगरी । २. शिल्प ।

कलावा-संज्ञा पुं० हाथी की गर्दन पर वह स्थान जहाँ महावत बैठता है ।

कलाधर-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. शिव ।

कलानिधि-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

कलाप-संज्ञा पुं० १. समूह । कुंड । २. तरबूज । ३. चंद्रमा ।

कलापक-संज्ञा पुं० समूह ।

कलापिनी-संज्ञा स्त्री० १. रात्रि । २. मोरनी ।

कलापी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कलापिनी ] १. मोर । २. कोकिल ।

वि० तरबूजवंद ।

कलावत्त-संज्ञा पुं० [ वि० कलावत्नी ] सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय ।

कलावाज-वि० बट प्रिया करनेवाला ।

कलावाजी-संज्ञा स्त्री० सिर नीचे करके चलत जाना ।

कलाभृत्-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो ।

कामसखा-संज्ञा पुं० वसंत ।

कामाक्षी-संज्ञा स्त्री० दंष्ट्र के अनुसार देवी की एक मूर्ति ।

कामातुर-वि० काम के वेग से व्याकुल ।

कामिनी-संज्ञा स्त्री० १. कामवती स्त्री । २. मदिरा ।

कामी-वि० [स्त्री० कामिनी] १. कामना रखनेवाला । २. विपयी ।

कामुक-वि० [स्त्री० कामुका] १. इच्छा करनेवाला । चाहनेवाला । २. [स्त्री० कामुकी] विपयी ।

कामोद्दीपक-वि० जिससे मनुष्य को सहवास की इच्छा अधिक हो ।

कामोद्दीपन-संज्ञा पुं० सहवास की इच्छा का उत्तेजन ।

काम्य-वि० १. जिसकी इच्छा हो । २. जिससे कामना की सिद्धि हो ।

संज्ञा पुं० वह यज्ञ या कर्म जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय ।

काय-संज्ञा स्त्री० शरीर ।

कायथ-संज्ञा पुं० दे० "कायस्थ" ।

कायदा-संज्ञा पुं० नियम ।

कायम-वि० ठहरा हुआ ।

कायम-मुकाम-वि० पवड़ी ।

कायर-वि० डरपोक ।

कायरता-संज्ञा स्त्री० डरपोकपन ।

कायल-वि० कुल करनेवाला ।

कायस्थ-वि० काय में स्थित ।

संज्ञा पुं० एक जाति का नाम ।

काया-संज्ञा स्त्री० शरीर ।

कायाकल्प-संज्ञा पुं० औषध के प्रभाव

से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त करने की क्रिया ।

काया-पलट-संज्ञा स्त्री० भारी हेर-फेर ।

कायिक-वि० शरीर-संबंधी ।

कारंड, कारंडव-संज्ञा पुं० हंस या घुस्र की जाति का एक पक्षी ।

कार-संज्ञा पुं० १. क्रिया । २. पनाने-वाला ।

संज्ञा पुं० कार्य्य ।

वि० दे० "काला" ।

कारक-वि० [स्त्री० कारिका] करनेवाला । संज्ञा पुं० व्याकरण में संज्ञा या सर्व-नाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है ।

कारखाना-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाती है । २. व्यवसाय ।

कारगर-वि० १. प्रभावजनक । २. उपयोगी ।

कारगुजार-वि० [संज्ञा कारगुजारी] अपना कर्तव्य अच्छी तरह पूरा करने-वाला ।

कारगुजारी-संज्ञा स्त्री० कर्तव्यपालन ।

कारचोव-संज्ञा पुं० [वि० संज्ञा कारचोवी] वसीदे का काम करनेवाला ।

कारचोवी-वि० जुरदोजी का । संज्ञा स्त्री० जुरदोजी ।

कारजा-संज्ञा पुं० दे० "कार्य्य" ।

कारण-संज्ञा पुं० घजह ।

कारतूस-संज्ञा पुं० मोली-घातुं भरी एक नली जिसे दौड़ेवाली और रिवाल-वर बंदूकों में भरकर चलाते हैं ।

कारन-संज्ञा पुं० दे० "कारण" । संज्ञा स्त्री० करुण स्वर ।

कलाम-संज्ञा पुं० १. वचन । २. कपन । ३. उग्र ।

कलार-संज्ञा पुं० दे० "कलत्र" ।

कलाल-संज्ञा पुं० [खी० कलाली] मद्य बेचनेवाला ।

कलावंत-संज्ञा पुं० १. गवैया । २. नट ।

वि० कलाओं का जाननेवाला ।

कलावती-वि० स्त्री० १. जिसमें कला हो । २. शोभावाली ।

कलाघान्-वि० [स्त्री० कलावती] कला-कुशल ।

कलिंग-संज्ञा पुं० १. मटमैले रंग की एक चिड़िया । २. तरयूज । ३. एक समुद्र-तटस्थ देश जिसका विस्तार गोदावरी और चैतण्यी नदी के बीच में था ।

वि० कलिंग देश का ।

कलिङ्ग-संज्ञा पुं० १. यहड़ । २. सूर्य ।

कलिङ्गा-संज्ञा स्त्री० यमुना नदी ।

कलिङ्गी-संज्ञा स्त्री० दे० "कालिङ्गी" ।

कलि-संज्ञा पुं० १. यहड़े का फल या बीज । २. कलह । ३. पाप । ४. चार युगों में से चौथा युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता रहती है ।

वि० काळा ।

कलिका-संज्ञा स्त्री० कली ।

कलिकाल-संज्ञा पुं० कलियुग ।

कलिमल-संज्ञा पुं० पाप ।

कलिया-संज्ञा पुं० भूतकर, रसेदार प-काया हुआ मांस ।

कलियाना-क्रि० प्र० १. कली लेना ।

कलियों से युक्त होना । २. चिड़ियों का नया पंख निकलना ।

कलियारी-संज्ञा स्त्री० एक पैधा जिसकी जड़ में विष होता है ।

कलियुग-संज्ञा पुं० चार युगों में से चौथा युग । वर्तमान युग ।

कलियुगी-वि० १. कलियुग का ।

२. कुप्रवृत्तिवाला ।

कलिचर्य-वि० जिसका करना कलियुग में निषिद्ध हो ।

कलिहारी-संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी" ।

कलिदा-संज्ञा पुं० तरयूज ।

कली-संज्ञा स्त्री० बिना लिखा फूल ।

संज्ञा स्त्री० परयर या सीप आदि का फुका हुआ टुकड़ा जिससे घूना बनाया जाता है ।

कलीट-वि० काला कलूटा ।

कलील-संज्ञा पुं० थोड़ा ।

कलीसिया-संज्ञा पुं० ईसाइयों या यहूदियों की धर्ममंडली ।

कलुष-संज्ञा पुं० दे० "कलुप" ।

कलुप-संज्ञा पुं० [वि० कलुपित, कलुपी] १. मलिनता । २. पाप ।

वि० मलिन ।

कलुपार्-संज्ञा स्त्री० बुद्धि की मलिनता ।

कलुपित-वि० १. दूषित । २. धुँध ।

कलुपी-वि० स्त्री० पापिनी । गेदी ।

वि० पुं० मलिन ।

कलूटा-वि० [स्त्री० कलूटी] काला ।

कलेऊ-संज्ञा पुं० दे० "कलेवा" ।

कलेजा-संज्ञा पुं० १. हृदय । २. छाती । ३. साहस ।

कलेजी-संज्ञा स्त्री० घकरे आदि के कलेजे का मांस ।

कलेयर-संज्ञा पुं० शरीर ।

कलेवा-संज्ञा पुं० १. जलपान । २.

विवाह के अंतर्गत एक रीति जिसमें घर संसाराद में भोजन करने जाता है ।



कारनिस-संज्ञा स्त्री० कंगर ।  
 कारपरदाज्ञ-वि० कारिंदा ।  
 कारघार-संज्ञा पुं० [वि० कारवारी] काम-  
 काज ।  
 कारवारी-वि० कामकाजी ।  
 संज्ञा पुं० कारिंदा ।  
 काररवाई-संज्ञा स्त्री० १. करतूल ।  
 २. कार्य-तत्परता ।  
 कारसाज-वि० [ संज्ञा कारसाजी ] काम  
 पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला ।  
 कारसाजी-संज्ञा स्त्री० १. काम पूरा  
 बनाने की युक्ति । २. चालबाजी ।  
 कारस्तानी-संज्ञा स्त्री० कारसाजी ।  
 कारा-संज्ञा स्त्री० कैद ।  
 कारागार, कारागृह-संज्ञा पुं० कैद-  
 खाना ।  
 कारावास-संज्ञा पुं० कैद ।  
 कारिंदा-संज्ञा पुं० कर्मचारी ।  
 कारिका-संज्ञा स्त्री० किसी सूत्र की  
 व्याख्या ।  
 कारिख-संज्ञा स्त्री० दे० "काखिख" ।  
 कारित-वि० कराया हुआ ।  
 कारी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कारिणी ] करने-  
 वाला ।  
 वि० घातक ।  
 कारीगर-संज्ञा पुं० [ संज्ञा कारीगरी ]  
 शिल्पकार ।  
 वि० निपुण ।  
 कारीगरी-संज्ञा स्त्री० १. अच्छे अच्छे  
 काम बनाने की कला । २. मनोहर  
 रचना ।  
 कारुणिक-वि० कृपालु ।  
 कारुण्य-संज्ञा पुं० दया ।  
 कारोबार-संज्ञा पुं० दे० "कारेबार" ।  
 कार्तिक-संज्ञा पुं० एक चांद्र मास जो  
 बवार और अगहन के बीच में पड़ता है ।

कार्पण्य-संज्ञा पुं० कंजूसी ।  
 कामुक-संज्ञा पुं० घनुष ।  
 कार्य-संज्ञा पुं० काम ।  
 कार्यकर्त्ता-संज्ञा पुं० कर्मचारी ।  
 कार्य कारण-भाव-संज्ञा पुं० कार्य  
 और कारण का संबंध ।  
 कार्यार्थी-वि० कार्य की सिद्धि चाहने-  
 वाला ।  
 कार्यालय-संज्ञा पुं० दफ्तर । कारखाना ।  
 कारवाई-संज्ञा स्त्री० दे० "काररवाई" ।  
 काल-संज्ञा पुं० १. समय । २. यम-  
 राज । ३. दुर्भिक्ष । ४. [स्त्री० काली]  
 शिव का एक नाम ।  
 कलकंड-संज्ञा पुं० १. शिव । २. नील-  
 कंड ।  
 कालकूट-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
 अत्यंत भयंकर विष ।  
 कालकोठरी-संज्ञा स्त्री० १. जेलखाने  
 की बहुत तंग और छोटी कोठरी  
 जिसमें कैद-तनहाई वाले कैदी रखे  
 जाते हैं । २. कलकच के फोटे-  
 विलियम नामक किले की एक तंग  
 कोठरी जिसमें लोकापवाद के अनु-  
 सार सिराजुद्दीखाने बहुत से अंगरेजों  
 को कैद किया था ।  
 कालक्षेप-संज्ञा पुं० समय बिताना ।  
 कालचक्र-संज्ञा पुं० समय का हेर-  
 फेर ।  
 कालज्ञ-संज्ञा पुं० ज्योतिषी ।  
 कालज्ञान-संज्ञा पुं० १. स्थिति और  
 अवस्था की जानकारी । २. सूर्य का  
 समय जान लेना ।  
 कालदंड-संज्ञा पुं० यमराज का दंड ।  
 कालधर्म-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २.  
 समयानुसार धर्म ।

कलेंस-संज्ञा पुं० दे० "कलेश" ।

कलैया-संज्ञा स्त्री० कलावाड़ी ।

कलोल-संज्ञा पुं० आमोद-प्रमोद ।

कलोलना-कि० अ० आमोद-प्रमोद करना ।

कलौजी-संज्ञा स्त्री० १. एक पीचा ।

२. इसकी कलियों के महीन काले दाने जो मसाले के काम में आते हैं । मंगरेला ।

कलौस-वि० कालापन लिए ।

संज्ञा पुं० कालापन ।

कलिक-संज्ञा पुं० विष्णु के दसवें अवतार का नाम जो सेभल (सुरादायाद) में एक कुमारी कन्या के गम से होगा ।

कल्प-संज्ञा पुं० काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमें १४ मन्वन्तर या ४३२-०००००० वर्ष होते हैं ।

वि० समान ।

कल्पक-संज्ञा पुं० नाई ।

वि० रचनेवाला ।

कल्पवृक्ष-संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष ।

कल्पद्रुम-संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष ।

कल्पना-संज्ञा स्त्री० अनुमान ।

कल्पधास-संज्ञा पुं० माघ में महीने भर गंगा-तट पर सैयम के साथ रहना ।

कल्पवृत्ति-संज्ञा पुं० पुराणानुसार देव-लोक का एक अविनश्वर वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला माना जाता है ।

कल्पसूत्र-संज्ञा पुं० वह सूत्र-ग्रंथ जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो ।

कल्पांत-संज्ञा पुं० प्रलय ।

कल्पित-वि० १. जिसकी कल्पना की गई हो । २. मनमाना । ३. नकली ।

कल्प्य-संज्ञा पुं० १. सपेरा । २. शराब ।

कल्याण-संज्ञा पुं० कलवार ।

कल्याण-संज्ञा पुं० मंगल । शुभ ।

वि० अच्छा ।

कल्याणी-वि० १. कल्याण करने-वाली । २. सुंदरी ।

कल्याण-संज्ञा पुं० दे० "कल्याण" ।

कल्लातोड़-वि० मुँहतोड़ ।

कल्लादराज-वि० [ संज्ञा कल्लादराजी ] मुँहजोर ।

कल्लाना-कि० अ० चमड़े के ऊपर ही ऊपर कुल जलन लिए हुए एक प्रकार की पीड़ा होना ।

कलोल-संज्ञा पुं० १. तरंग । २. मीठा ।

कलोलिनी-संज्ञा स्त्री० नदी ।

कलदा-कि० वि० दे० "कल" ।

कल्हरना-कि० अ० मुनना ।

कल्हारना-कि० स० कड़ाही में भूना या तलना ।

कि० अ० दुःख से कराहना ।

कवच-संज्ञा पुं० [ वि० कवची ] १. आवरण । २. जिरह यकृत ।

कघर-संज्ञा पुं० कौर ।

कघरी-संज्ञा स्त्री० चोटी ।

कघर्ग-संज्ञा पुं० [ वि० कघर्गीय ] क से ह तक के अक्षरों का समूह ।

कघल-संज्ञा पुं० १. कौर । २. कुड़ी ।

कघलित-वि० खापा हुआ ।

कचाम-संज्ञा पुं० चाशनी ।

कचायद-संज्ञा स्त्री० लड़नेवाले सिपाहियों की युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया ।

कवि-संज्ञा पुं० कविता रचनेवाला ।

कविका-संज्ञा स्त्री० लगाम ।

कविता-संज्ञा स्त्री० काव्य ।

कालनिशा-संज्ञा स्त्री० १. दिवाली की रात । २. थेंपेरी भयावनी रात ।

कालपाश-संज्ञा पुं० यमपाश ।

कालपुरुष-संज्ञा पुं० १. ईश्वर का विराट् रूप । २. काल ।

कालवर्जर-संज्ञा पुं० वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो ।

कालव्रत-संज्ञा पुं० चमारों का वह काठ का साँचा जिस पर चढ़ाकर वे जूता सीते हैं ।

कालभैरव-संज्ञा पुं० शिव के मुख्य गणों में से एक ।

कालयापन-संज्ञा पुं० दिन कारना ।

कालरात्रि-संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि" ।

कालरात्रि-संज्ञा स्त्री० १. थेंपेरी और भयावनी रात । २. प्रलय की रात । ३. मृत्यु की रात्रि । ४. दिवाली की भयावस्या ।

कालवाचक, कालघाची-वि० समय का ज्ञान करानेवाला ।

काला-वि० [स्त्री० काली] १. स्याह । २. बुरा ।

काला-कलूटा-वि० बहुत काला ।

कालाक्षरो-वि० अर्धत विद्वान् ।

कालाग्नि-संज्ञा पुं० प्रलयकाल की अग्नि ।

कालाघोर-संज्ञा पुं० १. बहुत भारी चोर । २. बुरे से बुरा आदमी ।

कालातीत-वि० जिसका समय बीत गया हो ।

काला नमक-संज्ञा पुं० सज्जी के योग से घना हुआ एक प्रकार का पाचक लवण ।

काला पहाड़-संज्ञा पुं० बहुत भारी और भयानक ।

कालापानी-संज्ञा पुं० १. देश-निकाले का दूँद । २. पेंडमन और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश-निकाले के कैदी भेजे जाते हैं । ३. शराब ।

कालाभुजंग-वि० बहुत काला ।

कालिंग-वि० कलिंग देश का । संज्ञा पुं० १. कलिंग देश का निवासी । २. हाथी । ३. सर्प ।

कालिं दी-संज्ञा स्त्री० १. कलिंद पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी । २. एक वैष्णव संप्रदाय ।

कालिङ्ग-कि० वि० दे० "कल" ।

कालिक-वि० समय-संबंधी ।

कालिका-संज्ञा स्त्री० १. काली । २. कालापन । ३. मेघ । ४. मदिरा ।

कालिकापुराण-संज्ञा पुं० एक उप-पुराण जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य आदि का वर्णन है ।

कालि काला-कि० वि० कदाचित् ।

कालिल-संज्ञा स्त्री० स्याही ।

कालिय-संज्ञा पुं० १. तीन या लकड़ी का गोल बाँचा जिस पर चढ़ाकर टोपियाँ दुरुस्त की जाती हैं । २. शरीर ।

कालिमा-संज्ञा स्त्री० १. कालापन । २. थेंपेरा ।

काली-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । २. पार्वती ।

काली घटा-संज्ञा स्त्री० घने काले धातुओं का समूह ।

काली जीरी-संज्ञा स्त्री० एक ओषधि जो एक पेड़ की बोड़ी के आसपास बीज हैं ।

कालोदह-संज्ञा पुं० वृंदावन में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें काली नामक बाघ रहता था ।

कवितार्-संज्ञा स्त्री० दे० "कविता"।

कवित्व-संज्ञा पुं० कविता।

कवित्व-संज्ञा पुं० काव्य-रचना-शक्ति।

कविनासा-संज्ञा स्त्री० दे० "कर्म-नासा"।

कविपुत्र-संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ कवि।

२. भाट। ३. यमाली वैद्यों की उपाधि।

कविराय-संज्ञा पुं० दे० "कविराज"।

कविलास-संज्ञा पुं० १. कैलास।

२. स्वर्ग।

कवेली-संज्ञा पुं० कौए का बच्चा।

कश-संज्ञा पुं० [स्त्री० कशा] चाबुक।

संज्ञा पुं० १. खिंचाव। २. झुक।

कश-मकश-संज्ञा स्त्री० खींचातानी।

कशा-संज्ञा स्त्री० रस्सी।

कशीदा-संज्ञा पुं० कपड़े पर खुई और तागे से निहाले हुए धेज-बूटे।

कश्चित्-वि० कोई।

कश्मी-संज्ञा स्त्री० १. नौका। २. शतरंज का एक मोहरा।

कश्मीर-संज्ञा पुं० पंजाब के उत्तर हिमालय से घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य और उर्वरता के लिये संसार में प्रसिद्ध है।

कश्मीरी-वि० कश्मीर का।

संज्ञा स्त्री० कश्मीर देश की भाषा।

संज्ञा पुं० [स्त्री० कश्मीरिन] कश्मीर देश का निवासी।

कश्यप-संज्ञा पुं० १. कश्यप। २.

सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।

कपाय-वि० १. कसैला। २. गेरू के रंग का।

संज्ञा पुं० कसैली वस्तु।

कष्ट-संज्ञा पुं० क्लेश।

कष्टसाध्य-वि० जिसका करना कठिन हो।

कष्टी-वि० पीड़ित।

कस-संज्ञा पुं० घल।

संज्ञा पुं० सार।

कि० वि० कैसे।

कसक-संज्ञा स्त्री० पुराना घेर।

कसकना-कि० प्र० दृढ़ करना।

कसकुट-संज्ञा पुं० कसा।

कसन-संज्ञा स्त्री० १. कसने की क्रिया या रंग। २. कसने की रस्सी।

संज्ञा स्त्री० दुःख।

कसना-कि० प्र० १. जकड़कर बांधना।

२. पुरजों को दृढ़ करके बैठाना। ३.

साज रखकर सवारी के लिये तैयार करना। ४. दूध दूधकर भरना।

कि० प्र० १. जकड़ जाना। २. बैठना।

कि० प्र० परखना।

कसनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कसन"।

कसनी-संज्ञा स्त्री० १. रस्सी जिससे कोई वस्तु बांधी जाय। २. कसैली।

३. जाँच।

कसथल-संज्ञा पुं० घल।

कसवा-संज्ञा पुं० [वि० कसवाती] बड़ा गाँव।

कसवी-संज्ञा स्त्री० घेरवा।

कसम-संज्ञा स्त्री० शपथ।

कसमसाना-कि० प्र० खलबलाना।

कसमसाहट-संज्ञा स्त्री० कुजडुलाहट।

कसर-संज्ञा स्त्री० १. कमी। २. द्वय।

कसरत-संज्ञा स्त्री० [वि० कसरती] व्यायाम। मेहनत।

कसरती-वि० १. कसरत करनेवाला।

२. कसरत से पुष्ट और खलवान् बनाया हुआ।

कसवाना-कि० प्र० कसने का काम

कालीन-वि० काल-संबंधी ।  
 कालीन-संज्ञ पु० गल्लीचा ।  
 कालीमिर्च-संज्ञ स्त्री० गोल मिर्च ।  
 काली शीतला-संज्ञ स्त्री० एक प्रकार की शीतला या चेचक जिसमें काले दाने निकलते हैं ।  
 काल्पनिक-संज्ञ पु० कल्पना करने-वाला ।  
 वि० कल्पित ।  
 कालहा-कि० वि० दे० "कल" ।  
 काया-संज्ञ पु० घोड़े को एक घुत्त में चकर देने की क्रिया ।  
 काव्य-संज्ञ पु० वह वाक्य या वाक्य-रचना जिससे चित्त किसी रस या मनावेग से पूर्ण हो ।  
 काव्यलिंग-संज्ञ पु० एक व्यंग्यलंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य के अर्थ द्वारा या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय ।  
 काश-संज्ञ पु० एक प्रकार की घास ।  
 काशिका-वि० स्त्री० मकार करने-वाली ।  
 संज्ञ स्त्री० काशीपुरी ।  
 काशीकरघट-संज्ञ पु० काशीस्थ एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग धारे के नीचे कटकर अपने प्राण देना बहुत धुण्य समझते थे ।  
 काशीफल-संज्ञ पु० कुम्हड़ा ।  
 काश्त-संज्ञ स्त्री० १. खेती । २. जमींदार को कुछ वापिक खजान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व ।  
 काश्तकार-संज्ञ पु० १. किसान । २. वह जिसने जमींदार को खजान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो ।

काश्तकारी-संज्ञ स्त्री० खेती-चारी ।  
 काश्मरी-संज्ञ स्त्री० गंभारी का पेड़ ।  
 काश्मीर-संज्ञ पु० एक देश का नाम । दे० "कश्मीर" ।  
 काश्मीरा-संज्ञ पु० एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा ।  
 काश्यप-वि० कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का । कश्यप-संबंधी ।  
 कापाय-वि० १. हड़, पहेड़े आदि कसेली वस्तुओं में रंगा हुआ । २. गेरुआ ।  
 काण्ड-संज्ञ पु० छकड़ी ।  
 काण्डा-संज्ञ स्त्री० हड़ ।  
 कास-संज्ञ पु० खाँसी ।  
 संज्ञ पु० काँस ।  
 कासा-संज्ञ पु० व्याला ।  
 कासार-संज्ञ पु० १. सालास । २. दे० "कसार" ।  
 कासिद-संज्ञ पु० हरकारा ।  
 काहँ-प्रत्य० दे० "कहूँ" ।  
 काहुँ-कि० वि० क्या ?  
 काहिँ-सर्व० किसको ?  
 काहिल-वि० थालसी ।  
 काहिली-संज्ञ स्त्री० सुस्ती ।  
 काही-वि० कालापन लिए हुए हरा ।  
 काहुँ-सर्व० दे० "काहूँ" ।  
 काहूँ-सर्व० किसी ।  
 संज्ञ पु० गोभीकी तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं ।  
 काहेँ-कि० वि० क्यों ?  
 किं-अव्य० दे० "किम्" ।  
 किंकर-संज्ञ पु० [स्त्री० किंकी] दास ।  
 किंकर्त्तव्य-विमूढ़-वि० घबराया हुआ ।  
 किंकिणी-संज्ञ स्त्री० करघनी ।

दूसरे से कराना ।

कसाई-संज्ञ पुं० [ स्त्री० कसाइन ]

वधिक ।

वि० निर्दय ।

कसाना-क्रि० स० स्वाद में कसैला हो जाना । काँसे के योग से खट्टी चीज़ का बिगड़ जाना ।

क्रि० स० दे० "कसवाना" ।

कसार-संज्ञ पुं० पँजीरी ।

कसाव-संज्ञ पुं० कसैलापन ।

कसावट-संज्ञ स्त्री० खिंचावट ।

कसीदा-संज्ञ पुं० दे० "कशीदा" ।

कसीदा-संज्ञ पुं० बर्द या फारसी भाषा की एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति या निंदा की जाती है ।

कसूँभा-वि० कुसुम के रंग का । लाल ।

कसूर-संज्ञ पुं० अपराध ।

कसूरमंद, कसूरवार-वि० दोषी ।

कसेरा-संज्ञ पुं० [ स्त्री० कसेरिन ] काँसे, फूल आदि के चरतन ढालने और बेचनेवाला ।

कसेरू-संज्ञ पुं० एक प्रकार के मोथे की गँठेली जड़ जो मीठी होती है ।

कसैला-वि० [ स्त्री० कसैली ] कपाय स्वादवाला ।

कसैली-संज्ञ स्त्री० सुपारी ।

कसोरा-संज्ञ पुं० कटोरा ।

कसौटी-संज्ञ स्त्री० १. एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है । २. परीक्षा ।

कस्तूर-संज्ञ पुं० कस्तूरी-मृग ।

कस्तूरा-संज्ञ पुं० कस्तूरी मृग ।

कस्तूरिका-संज्ञ स्त्री० कस्तूरी ।

कस्तूरिया-संज्ञ पुं० कस्तूरी-मृग ।

वि० कस्तूरी-मिश्रित ।

कस्तूरी-संज्ञ स्त्री० एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है ।

कस्तूरी-मृग-संज्ञ पुं० बहुत ठंडे पहाड़ी स्थानों में होनेवाला एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है ।

कहँ-प्रत्य० कर्म और सम्प्रदान का चिह्न 'को' ।

क्रि० वि० दे० "कहाँ" ।

कहत-संज्ञ पुं० दुभिज्ञ ।

कहता-संज्ञ पुं० कहनेवाला पुरुष ।

कहन-संज्ञ स्त्री० १. कथन । २. कहावत ।

कहना-क्रि० स० वर्णन करना ।

संज्ञ पुं० कथन ।

कहनावत-संज्ञ स्त्री० कहावत ।

कहनूत-संज्ञ स्त्री० कहावत ।

कहलना-क्रि० अ० १. कसमसाना । २. दहलना ।

कहलवाना-क्रि० स० दे० "कहलाना" ।

कहलाना-क्रि० स० १. दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना । २. संदेसा भेजना ।

क्रि० अ० कमस या गरमी से व्याकुल या शिथिल होना ।

कहघाँ-क्रि० वि० दे० "कहाँ" ।

कहघा-संज्ञ पुं० एक पेड़ का बीज जिसके चूर को चाय की तरह पीते हैं ।

कहवाना-क्रि० स० दे० "कहलाना" ।

कहवैया-वि० कहनेवाला ।

कहाँ-क्रि० वि० किस जगह ।

किंगरी-संज्ञा स्त्री० छोटा चिकारा ।  
 किचन-संज्ञा पुं० थोड़ी घस्तु ।  
 किचित्-वि० कुछ ।  
 किजलक-संज्ञा पुं० १. कमल । २.  
 कमल के फूल का पराग ।  
 वि० कमल के फेसर के रंग का ।  
 किनु-अव्य० लेकिन ।  
 किन्दती-संज्ञा स्त्री० अकूयाह ।  
 किधा-अव्य० अथवा ।  
 किशुक-संज्ञा पुं० पखाश ।  
 कि-सर्व० क्या ?  
 अव्य० एक संयोजक शब्द जो कहना,  
 देना इत्यादि कुछ क्रियाओं के  
 बाद उनके विषय-वर्णन के पहले  
 आता है ।  
 किफियाना-क्रि० भ० रोना ।  
 किचकिच-संज्ञा स्त्री० चक्काद ।  
 किचकिचाना-क्रि० भ० दाँत पीसना ।  
 किचकिचाहट-संज्ञा स्त्री० किचकिचाने  
 का भाव ।  
 किचकिची-संज्ञा स्त्री० किचकिचाहट ।  
 किचड़ाना-क्रि० भ० ( माँस का )  
 कीचड़ से भरना ।  
 किछुाँ-वि० दे० "कुछ" ।  
 किटकिटाना-क्रि० भ० क्रोध से दाँत  
 पीसना ।  
 किट्ट-संज्ञा पुं० १. धातु की मैल । २.  
 तेल आदि में नीचे बैठे हुए मैल ।  
 किताँ-क्रि० वि० कहाँ ।  
 कितफाँ-वि०, क्रि० वि० कितना ।  
 कितना-वि० [ स्त्री० कितनी ] किस  
 परिमाण, मात्रा या संख्या का ?  
 क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा  
 में ? कहाँ तक ? २. अधिक। बहुत  
 ज्यादा ।

किता-संज्ञा पुं० १. व्योम । २. हंग ।  
 किताघ-संज्ञा स्त्री० [ वि० किताबी ] पुस्तक ।  
 किताबी-वि० किताब के आधार का ।  
 कितिकाँ-वि० दे० "कितक",  
 "कितना" ।  
 कितेफाँ-वि० कितना ।  
 कितौ-अव्य० दे० "कित" ।  
 कितोँ-वि० [ स्त्री० कितो ] कितना ।  
 क्रि० वि० कितना ।  
 किधर-क्रि० वि० किस ओर ।  
 किधौँ-अव्य० अथवा ।  
 किन-सर्व० 'किस' का बहुवचन ।  
 क्रि० वि० क्यों न ।  
 संज्ञा पुं० चिह्न ।  
 किनका-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अन्त्या० किनकी ]  
 १. अन्न का टूटा हुआ दाना । २.  
 चावल आदि की छुई ।  
 किनहा-वि० ( फल ) जिसमें कीड़े  
 पड़े हों । फटा ।  
 किनार-संज्ञा पुं० दे० "किनारा" ।  
 किनारदार-वि० ( कपड़ा ) जिसमें  
 किनारा बना हो ।  
 किनारा-संज्ञा पुं० १. अधिक लंबाई  
 और कम चौड़ाईवाली वस्तु के ये  
 दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त  
 होती हो । २. तीर ।  
 किनारे-क्रि० वि० १. तट पर । २.  
 अलग ।  
 किधर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० किधरी ] १.  
 एक प्रकार के देवता जिनके मुख  
 घोड़े के समान होता है । २. गाने-  
 बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति ।  
 किधरी-संज्ञा स्त्री० किधर की स्त्री ।  
 किफायत-संज्ञा स्त्री० कमखर्ची ।  
 किफायती-वि० सँभालकर खर्च करने-  
 वाला ।

कहा-संज्ञा पुं० कथन ।  
 कि० वि० किस प्रकार ।  
 कहाना-कि० सं० दे० "कहलाना" ।  
 कहानी-संज्ञा स्त्री० कथा ।  
 कहार-संज्ञा पुं० एक जाति जो पानी  
 भरने और सोली ठठाने का काम  
 करती है ।  
 कहावत-संज्ञा स्त्री० मसल ।  
 कहा-सुना-संज्ञा पुं० भूल-चूक ।  
 कहा-सुनी-संज्ञा स्त्री० वाद-विवाद ।  
 कहिया-कि० वि० किस दिन ।  
 कहीं-कि० वि० १. किसी अनिश्चित  
 स्थान में । २. बहुत बढ़कर ।  
 कहुँ-कि० वि० दे० "कहाँ" ।  
 कहुँ-कि० वि० दे० "कहाँ" ।  
 काँइया-वि० वात्साक ।  
 काँइ-अभ्य० क्यों ।  
 सब० क्या ।  
 काँकरा-संज्ञा पुं० दे० "कंकड़" ।  
 काँकरी-संज्ञा स्त्री० छोटा कंकड़ ।  
 काँक्षणीय-वि० इच्छा करने योग्य ।  
 काँक्षा-संज्ञा स्त्री० [ वि० कांक्षित ]  
 इच्छा ।  
 काँक्षी-वि० [ स्त्री० कांक्षिणी ] चाहने-  
 वाला ।  
 काँख-संज्ञा स्त्री० बगल ।  
 काँखना-कि० अ० १. भ्रम या पीड़ा  
 से डँह-आँह आदि शब्द मुँह से निकाल-  
 नाला । २. मल या मूत्र को निकाल-  
 ने के लिये पेट की वायु को दबाना ।  
 काँगड़ा-संज्ञा पुं० पंजाब प्रांत का एक  
 पहाड़ी प्रदेश ।  
 काँगड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
 छोटी धौंसी जिसे जाड़े में कश्मीरी  
 लोग गले में लटकाए रहते हैं ।

काँच-संज्ञा स्त्री० लॉग ।  
 संज्ञा पुं० शीशा ।  
 काँचन-संज्ञा पुं० [ वि० काँचनीय ] १.  
 सोना । २. धवरा ।  
 काँचनचंगा-संज्ञा पुं० हिमालय की  
 एक चोटी ।  
 काँचली-संज्ञा स्त्री० साँप की  
 केशुली ।  
 काँसा-वि० दे० "कच्चा" ।  
 काँजी-संज्ञा स्त्री० मट्टे या दही का  
 पानी । द्राघ ।  
 काँटा-संज्ञा पुं० दे० "काँटा" ।  
 काँटा-संज्ञा पुं० [ वि० काँटीला ] १.  
 कंटक । २. लोहे की मुकी हुई धँकु-  
 दियों का गुच्छा जिससे कपड़े में गिरे  
 बरतन निकालते हैं । ३. सराजू की  
 डाँड़ी पर वह सूई जिससे दोनों  
 पल्लों के बराबर होने की सूचना  
 मिलती है । ४. पंजे के आकार का,  
 धातु का बना हुआ, एक औजार  
 जिससे धेगरेज लोग खाना खाते हैं ।  
 काँटी-संज्ञा स्त्री० कील ।  
 काँड़-संज्ञा पुं० १. पोर । २. शाखा ।  
 काँड़ना-कि० सं० १. रीँदना । २.  
 कूटना । ३. खूब मारना ।  
 काँड़ी-संज्ञा स्त्री० लकड़ी का बड़ा डंडा ।  
 काँत-संज्ञा पुं० पति ।  
 काँता-संज्ञा स्त्री० १. प्रिया । २. पत्नी ।  
 काँतासक्ति-संज्ञा स्त्री० भक्ति का एक  
 भेद जिसमें भक्त ईश्वर को अपना  
 पति मानकर पत्नी भाव से उसकी  
 भक्ति करता है । माधुर्य भाव ।  
 काँति-संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति । २.  
 सौंदर्य ।  
 काँथरि-संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी" ।



किमारवाज़-संज्ञा पुं० जुआरी ।

किशला-संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज़ पढ़ते हैं ।

किशलानुमा-संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाज़ों पर अरब मस्जिदों करते थे ।

किम्-वि०, सर्व० १. क्या ? २. कौन सा ?

किमालु-संज्ञा पुं० दे० "केराच" ।

किमाम-संज्ञा पुं० शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत ।

किमाश-संज्ञा पुं० तर्ज़ ।

किमि-क्रि० वि० कैसे ?

किम्मत-संज्ञा स्त्री० बुद्धि ।

कियत्-वि० कितना ।

कियासी-संज्ञा स्त्री० ब्यारी ।

किरका-संज्ञा पुं० कंकड़ ।

किरकिरा-वि० कँकरीला ।

किरकिराना-क्रि० भ० किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना ।

किरकिराहट-संज्ञा स्त्री० धाँस में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा ।

किरकिरी-संज्ञा स्त्री० धूल या तिनके आदि का कण जो धाँस में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है ।

किरच-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सीधी तलवार जो नौक के बल सीधी भेकी जाती है ।

किरण-संज्ञा स्त्री० किरन ।

किरणमाली-संज्ञा पुं० सूर्य ।

किरन-संज्ञा स्त्री० रोशनी की खीर ।

किरपा-संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा" ।

किरण-संज्ञा पुं० दे० "कृपा" ।

किरमाली-संज्ञा पुं० तख्तवार ।

किरमिच-संज्ञा पुं० एक प्रकार का महीन टाट सा मोटा चिलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते, बैग आदि बनते हैं ।

किरण-क्रि० भ० १. क्रोध से दाँत पीसना । २. किरं किरं शब्द करना ।

किरिची-संज्ञा स्त्री० १ वह बैज्ञानिकी जिस पर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है । २. माल-गाड़ी का डब्बा ।

किरात-संज्ञा पुं० [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराता] एक प्राचीन जंगली जाति ।

किराना-संज्ञा पुं० दे० "केराना" ।  
क्रि० भ० दे० "केराना" ।

किरानी-संज्ञा पुं० दे० "केरानी" ।

किराया-संज्ञा पुं० मारदा ।

किरायेदार-संज्ञा पुं० कुछ दाम देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में लानेवाला ।

किरासन-संज्ञा पुं० मिट्टी का तेल ।

किरिच-संज्ञा स्त्री० दे० "किरच" ।

किरिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "किरण" ।

किरिम-संज्ञा पुं० दे० "कृमि" ।

किरिया-संज्ञा स्त्री० १. शरण ।  
२. स्तुतिकर्म ।

किरीट-संज्ञा पुं० एक प्रकार का शिरोभूषण जो मारये पर बाँधा जाता था ।

किरोलना-क्रि० भ० करोदना । सुरचना ।

किलक-संज्ञा स्त्री० किलकने या हर्ष-ध्वनि करने की क्रिया ।

किलकना-क्रि० भ० किलकार मारना ।

किलकार-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि ।

किलकारी-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि ।

किलकिला-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि ।

कादना-कि० ध० रोना ।  
 काँदा-संज्ञ पुं० एक गुल्म जिसमें  
 प्याज की तरह गाँठ पड़ती है ।  
 काँदो-संज्ञ पुं० कीचड़ ।  
 काँधा-संज्ञ पुं० दे० "कंधा" ।  
 काँधना-कि० स० उठाना ।  
 काँधर, काँधा-संज्ञ पुं० दे०  
 "कान्ह" ।  
 काँप-संज्ञ स्त्री० बौस आदि की पतली  
 लचीली सीली ।  
 काँपना-कि० भ० हिलना ।  
 काँपोज-वि० कंघोज देश का ।  
 काँप काँप, काँध काँध-संज्ञ पुं० १.  
 काँवे का शब्द । २. व्यर्थ का शोर ।  
 काँवर-संज्ञ स्त्री० बहूँगी ।  
 काँवरा-वि० घबराया हुआ ।  
 काँवरिया-संज्ञ पुं० काँवर लेकर  
 चलनेवाला तीर्थयात्री ।  
 काँवरू-संज्ञ पुं० दे० "कामरूप" ।  
 काँस-संज्ञ पुं० एक प्रकार की लंबी  
 घास ।  
 काँसा-संज्ञ पुं० [ वि० काँसी ] कस-  
 कूट ।  
 काँसागर-संज्ञ पुं० काँसे का काम  
 करनेवाला ।  
 काँस्य-संज्ञ पुं० काँसा ।  
 का-प्रत्य० संवेद्य या पृथी का चिह्न ।  
 काई-संज्ञ स्त्री० १. जल या सीढ़ में  
 होनेवाली एक प्रकार की महीन घास  
 या सूक्ष्म घनस्पति-जाल । २. मल ।  
 काऊ-कि० वि० कभी ।  
 सर्व० कोई ।  
 काक-संज्ञ पुं० कौआ ।  
 संज्ञ पुं० काग ।  
 काक-गोलक-संज्ञ पुं० कौवे की आँख

की पुतली, जो एक ही दोनों आँखों  
 में धूमती हुई कही जाती है ।  
 काकदंत-संज्ञ पुं० कोई असंभव बात ।  
 काकबध्या-संज्ञ स्त्री० वह स्त्री जिसे  
 एकसंतति के वंशरांत दूसरी न हुई हो ।  
 काकयलि-संज्ञ स्त्री० धातु के समय  
 भोजन का वह भाग जो कौआ को  
 दिया जाता है ।  
 काकभुशुटि-संज्ञ पुं० एक ब्राह्मण  
 जो होमशकेशाप से कौआ हो गए  
 थे और राम के बड़े भक्त थे ।  
 काकरी-संज्ञ स्त्री० दे० "कंकड़ी" ।  
 काकरेजा-संज्ञ पुं० काकरेजी रंग का  
 कपड़ा ।  
 काकरेजी-संज्ञ पुं० एक रंग जो लाल  
 और काले के मेल से बनता है ।  
 कोकची ।  
 वि० काकरेजी रंग का ।  
 काका-संज्ञ पुं० [ स्त्री० काकी ] चाचा ।  
 काकाक्षिगोलकन्याय-संज्ञ पुं० एक  
 शब्द या वाक्य को उलट-फेरकर दो  
 भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना ।  
 काकी-संज्ञ स्त्री० कौए की मादा ।  
 संज्ञ स्त्री० [ हि० काका ] चाची । चची ।  
 काकु-संज्ञ पुं० व्यंग्य ।  
 काकुल-संज्ञ पुं० जड़क ।  
 काग-संज्ञ पुं० कौआ ।  
 संज्ञ पुं० घेतल या शीशी की डाढ़  
 जो इस पेड़ की छाल से बनती है ।  
 कागज-संज्ञ पुं० [ वि० कागजी ] १.  
 सन, रुई, पट्टा आदि को सड़ाकर  
 बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर  
 अक्षर लिखे या छापे जाते हैं । २.  
 दस्तावेज़ । ३. समाचारपत्र ।  
 कागजात-संज्ञ पुं० कागज-पत्र ।

किंगरी-संज्ञा स्त्री० छोटा चिकारा ।

किचन-संज्ञा पुं० थोड़ी वस्तु ।

किचित्-वि० कुछ ।

किजलक-संज्ञा पुं० १. कमल । २. कमल के फूल का पराग ।

वि० कमल के केसर के रंग का ।

किन्तु-अव्य० लेकिन ।

किधदंती-संज्ञा स्त्री० अफवाह ।

किधा-अव्य० अथवा ।

किशुक-संज्ञा पुं० पत्तार ।

कि-सर्व० क्या ?

अव्य० एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना इत्यादि कुछ क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है ।

किकियाना-क्रि० अ० रोना ।

किचकिच-संज्ञा स्त्री० थकपाव ।

किचकिचाना-क्रि० अ० दाँत पीसना ।

किचकिचाहट-संज्ञा स्त्री० किचकिचाने का भाव ।

किचकिची-संज्ञा स्त्री० किचकिचाहट ।

किचड़ाना-क्रि० अ० ( आँख का ) कीचड़ हो भरना ।

किछुा-वि० दे० "कुछ" ।

किटकिटाना-क्रि० अ० क्रोध से दाँत पीसना ।

किट्ट-संज्ञा पुं० १. धातु की मैल । २. तेल आदि में नीचे बैठे हुए मैल ।

कित्-क्रि० वि० कहाँ ।

कितफा-वि०, क्रि० वि० कितना ।

कितना-वि० [ स्त्री० कितनी ] किस परिमाण, मात्रा या संख्या का ?

क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा में ? कहाँ तक ? २. अधिक। बहुत ज्यादा ।

किता-संज्ञा पुं० १. व्योत । २. ढंग ।

किताब-संज्ञा स्त्री० [ वि० किताबी ] पुस्तक ।

किताबी-वि० किताब के आधार का ।

कितिक-वि० दे० "कितक"; "कितना" ।

कितेफा-वि० कितना ।

कितो-अव्य० दे० "कित" ।

कितो-वि० [ स्त्री० कितो ] कितना ।

क्रि० वि० कितना ।

किधर-क्रि० वि० किस ओर ।

किधो-अव्य० अथवा ।

किन-सर्व० 'किस' का बहुवचन ।

क्रि० वि० क्यों न ।

संज्ञा पुं० चिह्न ।

किनका-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भस्मा० किनकी ]

१. अन्न का टूटा हुआ दाना । २. चावल आदि की खुद्दी ।

किनहारा-वि० ( फल ) जिसमें कीड़े पड़े हों । कच्चा ।

किनार-संज्ञा पुं० दे० "किनारा" ।

किनारदार-वि० ( कपड़ा ) जिसमें किनारा बना हो ।

किनारा-संज्ञा पुं० १. अधिक लंबाई और कम चौड़ाईवाली वस्तु के दो दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त होती हो । २. तीर ।

किनारे-क्रि० वि० १. तट पर । २. अलग ।

किशर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० किशरी ] १.

एक प्रकार के देवता जिन क मुख घोट के समान होता है । २. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति ।

किशरी-संज्ञा स्त्री० किशर की स्त्री ।

किफायत-संज्ञा स्त्री० कम खर्ची ।

किफायती-वि० संभालकर खर्च करने-वाला ।

किमारवाज़-संज्ञा पुं० जुयारी ।

किबला-संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज़ पढ़ते हैं ।

किबलानुमा-संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाज़ों पर अरब मल्लाह करते हैं ।

किम्-वि०, सर्व० १. क्या ? २. कौन सा ?

किमालु-संज्ञा पुं० दे० "केवाँच" ।

किमाम-संज्ञा पुं० शब्द के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत ।

किमाश-संज्ञा पुं० तर्ज़ ।

किमि-कि० वि० कैसे ?

किम्मत-संज्ञा स्त्री० युक्ति ।

कियत्-वि० कितना ।

कियारी-संज्ञा स्त्री० बयारी ।

किरका-संज्ञा पुं० कंकड़ ।

किरकिरा-वि० कँकरीला ।

किरकिराना-कि० भ० किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना ।

किरकिराहट-संज्ञा स्त्री० आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा ।

किरकिरी-संज्ञा स्त्री० धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है ।

किरच-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है ।

किरण-संज्ञा स्त्री० किरन ।

किरणमाली-संज्ञा पुं० सूर्य ।

किरन-संज्ञा स्त्री० रोशनी की बक्री ।

किरपा-संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा" ।

किरपान-संज्ञा पुं० दे० "कृपाण" ।

किरमाला-संज्ञा पुं० तलवार ।

किरमिव-संज्ञा पुं० एक प्रकार का महीन टाट सा मोटा घिलावती कपड़ा जिससे परदे, झूते, बैग आदि बनते हैं ।

किरपाना-कि० भ० १. कोच से दाँत पीसना । २. किर किर शब्द करना ।

किराँची-संज्ञा स्त्री० १ बड़ पैशगादी जिस पर थनाज, भूसा आदि लादा जाता है । २. माल-गादी का डब्बा ।

किरात-संज्ञा पुं० [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] एक प्राचीन जंगली जाति ।

किराना-संज्ञा पुं० दे० "केराना" ।

कि० भ० दे० "केराना" ।

किरानी-संज्ञा पुं० दे० "केरानी" ।

किराया-संज्ञा पुं० भाड़ा ।

किरायेदार-संज्ञा पुं० कुछ दाम देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में खानेवाला ।

किरासन-संज्ञा पुं० मिट्टी का तेल ।

किरिच-संज्ञा स्त्री० दे० "किरच" ।

किरिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "किरण" ।

किरिम-संज्ञा पुं० दे० "कृमि" ।

किरिया-संज्ञा स्त्री० १. शपथ । २. श्रुतकर्म ।

किरीट-संज्ञा पुं० एक प्रकार का शिरोभूषण जो माथे पर बाँधा जाता था ।

किरोलना-कि० भ० करोटना । खुरचना ।

किलक-संज्ञा स्त्री० किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया ।

किलकना-कि० भ० किलकार मारना ।

किलकार-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि ।

किलकारी-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि ।

किलकिला-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि ।

की वसूली के लिये सरकार द्वारा ज़ब्त किया जाना ।

कुर्मी-संज्ञा पुं० दे० "कुनवी" ।

कुलंग-संज्ञा पुं० मुर्गा ।

कुलंजन-संज्ञा पुं० १. अदक की तरह का एक पौधा जिसकी जड़ गरम और दीपन होती है । २. पान की जड़ ।

कुल-संज्ञा पुं० वंश ।

वि० समस्त ।

कुलकना-कि० भ० आनंदित होना ।

कुलकुलक-संज्ञा पुं० अपने वंश की कीर्ति में ध्वजा लगानेवाला ।

कुलकानि-संज्ञा स्त्री० कुल की मर्यादा ।

कुलकुलाना-कि० भ० कुल कुल शब्द करना ।

कुलक्षणा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुलक्षणी ] पुरा लक्षण ।

वि० [ स्त्री० कुलक्षणा ] पुरे लक्षणवाला ।

कुलच्छन-संज्ञा पुं० दे० "कुलचय" ।

कुलच्छनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुलचणी" ।

कुलट-वि० पुं० [ स्त्री० कुलटा ] बद्ध-चलन ।

कुलटा-वि० स्त्री० क्षिणाढ । ( स्त्री ) संज्ञा स्त्री० वह परकीया भायिका जो बहुत पुरुषों से प्रेम रखती हो ।

कुलधर्म-संज्ञा पुं० कुल-परंपरा से चला आता हुआ कर्त्तव्य ।

कुलपति-संज्ञा पुं० १. घर का मालिक । २. वह अपि जो दस हजार विधायियों को शिक्षा दे ।

कुलफा-संज्ञा पुं० साला ।

कुलफत-संज्ञा स्त्री० चिंता ।

कुलफा-संज्ञा पुं० एक साग ।

कुलफी-संज्ञा स्त्री० १. पैंच । २. टीन आदि का चाँगा जिसमें दूध आदि भरकर चफ़े लगाते हैं ।

कुलबुल-संज्ञा पुं० [ संज्ञा कुलबुलाहट ] छोटे छोटे जीवों के हिलने डोलने की आहट ।

कुलबुलाना-कि० भ० १. डोलना । २. चंचल होना ।

कुलचोरना-वि० कुलमें दाग लगानेवाला ।

कुलघनू-संज्ञा स्त्री० कुलवती स्त्री । मर्यादा से रहनेवाली स्त्री ।

कुलधंत-वि० [ स्त्री० कुलधती ] कुलीन ।

कुलवान्-वि० [ स्त्री० कुलवती ] कुलीन ।

कुलह-संज्ञा स्त्री० १. टोपी । २. शिकारी चिड़ियों की आँखों पर का दकन ।

कुलहा-संज्ञा पुं० दे० "कुलह" ।

कुलही-संज्ञा स्त्री० कनटोप ।

कुलांगार-संज्ञा पुं० कुल का नाश करनेवाला ।

कुलाच, कुलाट-संज्ञा स्त्री० क्षुलाप ।

कुलाया-संज्ञा पुं० लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किया हुआ जू से जकड़ा रहता है ।

कुलाल-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुलाली ] १. कुम्हार । २. जंगली मुर्गा ।

कुलाहल-संज्ञा पुं० दे० "कोलाहल" ।

कुलिंग-संज्ञा पुं० पक्षी ।

कुलिक-संज्ञा पुं० १. शिल्पकार । २. कुल का प्रधान पुरुष ।

कुलिश-संज्ञा पुं० १. हीरा । २. चन्न

कुली-संज्ञा पुं० मजदूर ।

कुलीन-वि० [ संज्ञा कुलीनता ] १.

संज्ञा पुं० मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया ।  
 किलकिलाना—कि० अ० १. हँसना करनेवाला । २. हल्लागुला करना ।  
 किलकिलाहट—संज्ञा स्त्री० किलकिलाने का शब्द या भाव ।  
 किलनी—संज्ञा स्त्री० पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक कीड़ा ।  
 किलविलाना—कि० अ० दे० "कुल-बुलाना" ।  
 किलवाना—कि० स० कील लगवाना या जड़वाना ।  
 किला—संज्ञा पुं० दुर्ग ।  
 किलाना—कि० स० दे० "विल्लपाना" ।  
 किलाघंटी—संज्ञा स्त्री० दुर्ग-निर्माण ।  
 किलाचा—संज्ञा पुं० हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्ता जिसमें पैर फँसा-पर महाघत उसे चलाता है ।  
 किलोला—संज्ञा पुं० दे० "कलोल" ।  
 किल्लत—संज्ञा स्त्री० १. कमी । २. तंगी ।  
 किल्ला—संज्ञा पुं० बहुत बड़ी कील या मेख । खूँटा ।  
 किल्ली—संज्ञा स्त्री० १. कील । २. किसी कल या पेंच की मुटिया जिसे घुमाने से वह चले ।  
 किलिप—संज्ञा पुं० पाप ।  
 किघाड़—संज्ञा पुं० [ स्त्री० किवाड़ी ] कपाट ।  
 किशमिश—संज्ञा स्त्री० [ वि० किशमिशी ] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर ।  
 किशमिशी—वि० १. जिसमें किशमिश हो । २. किशमिश के रंग का ।  
 संज्ञा पुं० एक प्रकार का अमौशा रंग ।  
 किशलय—संज्ञा पुं० नया निकला हुआ पत्ता । कोमल पत्ता ।

किशोर—संज्ञा पुं० [ स्त्री० किशोरी ] १. ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक । २. पुत्र ।  
 किशत—संज्ञा स्त्री० शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना । शह ।  
 किशती—संज्ञा स्त्री० १. नाव । २. शतरंज का एक मोहरा । हाथी ।  
 किष्किंधा—संज्ञा स्त्री० किष्किंध पर्वत-श्रेणी ।  
 किस—सर्व० 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है ।  
 किसव—संज्ञा पुं० दे० "कसब" ।  
 किसयत—संज्ञा स्त्री० वह धैर्य जिसमें नाई अपने वस्तु, कूँची आदि रखते हैं ।  
 किसमत—संज्ञा स्त्री० दे० "किस्मत" ।  
 किसलय—संज्ञा पुं० दे० "किशलय" ।  
 किसान—संज्ञा पुं० खेतिहर ।  
 किसानी—संज्ञा स्त्री० खेती ।  
 किसी—सर्व०, वि० "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है ; जैसे—किसी ने ।  
 किस्म—सर्व० दे० "विस्ती" ।  
 किस्त—संज्ञा स्त्री० कई बार करके ज़रूर या देना चुकाने का ढंग ।  
 किस्तबंदी—संज्ञा स्त्री० थोड़ा-थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग ।  
 किस्तदार—कि० वि० किस्त करके ।  
 किस्म—संज्ञा स्त्री० १. भेद । तरह । २. ढंग ।  
 किस्मत—संज्ञा स्त्री० मारबन्ध ।  
 किस्मतचर—वि० माग्यवान् ।  
 किस्सा—संज्ञा पुं० कहानी ।

१. अच्छे घराने का । २. पवित्र ।

कुलुफा-संज्ञा पुं० ताला ।

कुलेल-संज्ञा स्त्री० क्रीड़ा ।

कुलेलना-कि० अ० क्रीड़ा करना ।

कुल्या-संज्ञा स्त्री० नहर ।

कुल्ला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुली ] मुँह को साफ करने के लिये उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया ।

कुली-संज्ञा स्त्री० दे० "कुला" ।

कुल्हड़-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुल्हिया ] पुरवा ।

कुल्हाड़ी-संज्ञा स्त्री० [ हि० कुल्हाड़ा का स्त्री० अत्था० ] छोटा कुल्हाड़ा ।

कुल्हिया-संज्ञा स्त्री० छोटा पुरवा या कुल्हड़ ।

कुवल्य-संज्ञा पुं० कमल ।

कुवाच्य-वि० जो कहने योग्य न हो । गदा ।

संज्ञा पुं० गाली ।

कुघार-संज्ञा पुं० [ वि० कुघारी ] आश्विन का महीना ।

कुविचार-संज्ञा पुं० बुरा विचार ।

कुविचारी-वि० [ स्त्री० कुविचारिणी ] बुरे विचारवाला ।

कुचेर-संज्ञा पुं० एक देवता जो पक्षों के राजा तथा ईद की ना निधियों के भंडारी समझे जाते हैं ।

कुश-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुशा, कुशी ] १. काँस की तरह की एक घास जिसका पक्षों में उपयोग होता था । २. राम-चंद्र का एक पुत्र ।

कुशल-वि० [ स्त्री० कुशला ] १. चतुर । २. राजी-खुशी ।

कुशल-लैम-संज्ञा पुं० राजी-खुशी ।

कुशलता-संज्ञा स्त्री० १. चतुराई । २. योग्यता ।

कुशलाई, कुशलात-संज्ञा स्त्री० कल्याण ।

कुशाग्र-वि० तीव्र ।

कुशादा-वि० [ संज्ञा कुशादगी ] विस्मृत ।

कुशासन-संज्ञा पुं० कुश का बना हुआ आसन ।

कुशिक-संज्ञा पुं० विश्वामित्र ।

कुशीनार-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ शाल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध का निर्वाण हुआ था ।

कुशीलव-संज्ञा पुं० १. कवि । २. नट ।

कुशता-संज्ञा पुं० भस्म ।

कुशती-संज्ञा स्त्री० मछ-युद्ध ।

कुशतीबाज-वि० कुशती लड़नेवाला ।

कुष्ठ-संज्ञा पुं० कौड़ ।

कुष्ठी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुष्ठिनी ] कौड़ी ।

कुप्पांड-संज्ञा पुं० कुल्हड़ा ।

कुसंग-संज्ञा पुं० दे० "कुसंगति" ।

कुसंगति-संज्ञा स्त्री० बुरी का संग ।

कुसंस्कार-संज्ञा पुं० चित्त में बुरी बातों का भ्रमना । बुरी वासना ।

कुसगुन-संज्ञा पुं० असगुन ।

कुसमय-संज्ञा पुं० १. बुरा समय । २. अनुपयुक्त अवसर ।

कसल-वि० दे० "कुशल" ।

कुसलाई-संज्ञा स्त्री० निपुणता ।

कसलाई-संज्ञा स्त्री० कुशलता ।

कसली-वि० दे० "कुशली" ।

संज्ञा पुं० आम की गुठली ।

कुसवारी-संज्ञा पुं० १. रेशम का जंगली कीड़ा । २. रेशम का कोया ।

की-अप० हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग रूप ।

कीक-संज्ञा पुं० चीत्कार ।

कीकना-क्रि० प्र० की की करके चिल्लाना । चीत्कार करना ।

कीकर-संज्ञा पुं० चपूत ।

कीच-संज्ञा पुं० कीचड़ ।

कीचड़-संज्ञा पुं० १. पानी मिली हुई धूल या मिट्टी । २. भाँख का सफ़ेद मल ।

कीट-संज्ञा पुं० कीड़ा ।

संज्ञा स्त्री० मक्का ।

कीड़ा-संज्ञा पुं० छोटा उड़ने या रेंगने वाला जंतु ।

कीड़ी-संज्ञा स्त्री० छोटा कीड़ा ।

कीनना-क्रि० स० खरीदना ।

कीप-संज्ञा स्त्री० वह भाँगी जिसे तंग सुई के धरतन में इसलिये लगाते हैं जिसमें द्रव पदार्थ उसमें ढालते समय बाहर न गिरे ।

कीमत-संज्ञा स्त्री० दाम ।

कीमती-वि० बहुमूल्य ।

कीमिया-संज्ञा स्त्री० रसायन ।

कीर-संज्ञा पुं० १. सुग्गा । २. घड़ेलिया ।

कीरति-संज्ञा स्त्री० दे० "कीर्ति" ।

कीर्त्तन-संज्ञा पुं० १. गुणकथन । २. कृष्णजीला-संबंधी भजन और कथा आदि ।

कीर्त्तनिया-संज्ञा पुं० कीर्त्तन करने वाला ।

कीर्त्ति-संज्ञा स्त्री० १. पुण्य । २. यश ।

कीर्त्तिमान्-वि० यशस्वी ।

कीर्त्तिस्तंभ-संज्ञा पुं० १. वह स्तंभ जो किसी की कीर्त्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय । २. वह कार्य या वस्तु जिससे किसी की

कीर्त्ति स्थायी हो ।

कील-संज्ञा स्त्री० १. काँटा । २. नाक में पहनने का एक छोटा आभूषण । लोह ।

कीलक-संज्ञा पुं० खूँटी ।

कीलन-संज्ञा पुं० घंघन ।

कीलना-क्रि० स० १. कील लगाना ।

२. बश में करना ।

कीला-संज्ञा पुं० बड़ी कील ।

कीलाल-संज्ञा पुं० १. अमृत । २. जल ।

कीलित-वि० जिसमें कील लड़ी हो ।

कीली-संज्ञा स्त्री० किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील जिस पर वह चक्र घूमता है ।

कीश-संज्ञा पुं० यंदर ।

कुँअर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुँअरि ] १. लड़का । २. राजकुमार ।

कुँअर-विलास-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान या चावल ।

कुँआरा-वि० [ स्त्री० कुँआरी ] विन व्याहा ।

कुँई-संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी" ।

कुँकुम-संज्ञा पुं० १. केसर । २. रोखी जिसे खिची माये में लगाती हैं ।

कुँकुमा-संज्ञा पुं० मिरली की कुप्पी या ऐसा बना हुआ लाल का पोला गोला जिसके भीतर गुज़ाल भरकर होखी के दिनों में दूसरों पर मारते हैं ।

कुँज-संज्ञा पुं० वह स्थान जो वृक्ष, खता आदि से मंडप की तरह ढका हो ।

संज्ञा पुं० वे भूटे जो दुरालो के कोनों पर बनाए जाते हैं ।



कुसाइत-संज्ञा स्त्री० बुरा सुहृत्-।  
कुसीद-संज्ञा पुं० [वि० कुसीदिक] १.  
सूद। २. व्याज पर दिया हुआ  
घन।

कुसुंय-संज्ञा पुं० एक बड़ा वृक्ष जिसकी  
लकड़ी जाठ और गाड़ियाँ बनाने के  
काम में आती है।

कुसुंभ-संज्ञा पुं० कुसुम। घरे।

कुसुंभी-वि० कुसुम के रंग का।  
लाल।

कुसुम-संज्ञा पुं० [वि० कुसुमित] १.  
फूल। २. आँख का एक रोग।  
३. रजोदर्शन।

संज्ञा पुं० दे० "कुसुंय"।

संज्ञा पुं० एक पेधा जिसमें पीले फूल  
लगते हैं।

कुसुमपुर-संज्ञा पुं० पटना नगर का  
एक प्राचीन नाम।

कुसुमचाण-संज्ञा पुं० कामदेव।

कुसुमस्तवक-संज्ञा पुं० दंडक छंद  
का एक भेद।

कुसुमशर-संज्ञा पुं० कामदेव।

कुसुमांजलि-संज्ञा स्त्री० पुष्पांजलि।

कुसुमाकर-संज्ञा पुं० १. वसंत। २.  
अप्यय का एक भेद।

कुसुमायुध-संज्ञा पुं० कामदेव।

कुसुमावलि-संज्ञा स्त्री० फूलों का  
गुच्छ। फूलों का समूह।

कुसुमित-वि० फूला हुआ।

कुसुत-संज्ञा पुं० १. बुरा सूत। २.  
कुप्रबंध।

कुसेसय-संज्ञा पुं० दे० "कुशेशय"।

कुहक-संज्ञा पुं० १. घोखा। २. धूर्त।

३. सुर्ग की कूक।

कुहकना-कि० अ० पक्षी का मधुर  
स्वर में बोलना।

कुहनी-संज्ञा स्त्री० हाथ और पाद के  
जोड़ की हड्डी।

कुहप-संज्ञा पुं० राक्षस।

कुहर-संज्ञा पुं० छेद।

कुहरा-संज्ञा पुं० जल के सूक्ष्म कणों  
का समूह जो ठंडक पाकर वायु की  
भाप में जमने से उत्पन्न होता है।

कुहराम-संज्ञा पुं० १. रोना-पीटना।  
२. हलचल।

कुहाना-कि० अ० रिसाना।

कुहारा-संज्ञा पुं० दे० "कुहड़ा"।

कुहासा-संज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।

कुही-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की शिकारी  
चिड़िया। कुहर।

कुहुक-संज्ञा पुं० पक्षियों का मधुर  
स्वर। पीक।

कुहुकना-कि० अ० पक्षियों का मधुर  
स्वर में बोलना।

कुह-संज्ञा स्त्री० १. समवास्या, जिसमें  
चंद्रमा बिलकुल दिखाई न दे।

२. मोर या कौयल की बोलती।

कूँच-संज्ञा स्त्री० मोटी नस जो पंखों  
के ऊपर या टखने के नीचे होती है।

कूँचना-कि० अ० दे० "कुचलना"।

कूँचा-संज्ञा पुं० [स्त्री० कूँची] फाड़।

कूँची-संज्ञा स्त्री० १. कूँचा। छोटा

फाड़। २. कूटी हुई मूँज या घावों

का गुच्छा जिससे चीज़ों की मूँज

साफ़ करते या उन पर रंग फेरते

हैं। ३. चित्रकार की रंग भरने

की कलम।

कूँज-संज्ञा पुं० कौंच पत्ती।

कूँड़-संज्ञा पुं० मिट्टी या लोहे का

गहरा धरतन, जिससे सिंघाई के

कुंजकुटीर—संज्ञा स्त्री० कुंजगृह ।

कुंजगली—संज्ञा स्त्री० १. बगीचे में लताओं से छाया हुआ पथ । २. पतली तंग गली ।

कुंजड़ा—संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुंजड़ी, कुंजड़िन ] एक जाति जो सरकारी बेती और बेचती है ।

कुंजर—संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुंजरा, कुंजरी ] हाथी ।

वि० श्रेष्ठ ।

कुंजयिहारी—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

कुंजी—संज्ञा स्त्री० १. चाभी । २. टीका ।

कुंठ—वि० १. जो पोखा या तीक्ष्ण न हो । २. मूर्ख ।

कुंठत—वि० मंद ।

कुंठ—संज्ञा पुं० १. चौड़े मुँह का एक गहरा घतन । २. बहुत छोटा तालाब ।

कुंठरा—संज्ञा पुं० कुंडी । मटका ।

कुंठल—संज्ञा पुं० १. घाली । २. छंद में वह मात्रिक गण जिसमें दो मात्राएँ हों, पर एक ही अक्षर हो । ३. बाईस मात्राओं का एक छंद ।

कुंठलाकार—वि० गोल ।

कुंठलिका—संज्ञा स्त्री० कुंठलिया छंद ।

कुंठलिया—संज्ञा स्त्री० एक मात्रिक छंद जो एक दोहे और एक दोहा के योग से घनता है ।

कुंठली—संज्ञा स्त्री० जन्म-काल के ग्रहों की स्थिति पतानेवाला एक चक्र जिसमें बारह घर होते हैं ।

संज्ञा पुं० १. सर्प । २. विष्णु ।

कुंठा—संज्ञा पुं० बड़ा मटका ।

संज्ञा पुं० दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोड़ा जिसमें साँकल

फँसाई जाती है और ताला लगाया जाता है ।

कुंडी—संज्ञा स्त्री० पत्थर या मिट्टी का, कटोरे के आकार का, बरतन जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं ।

संज्ञा स्त्री० जंजीर की कड़ी ।

कुंत—संज्ञा पुं० भाला ।

कुंतल—संज्ञा पुं० केश ।

कुंता—संज्ञा स्त्री० दे० "कुंती" ।

कुंती—संज्ञा स्त्री० युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता ।

संज्ञा स्त्री० घरछी ।

कुंथना—क्रि० अ० मारा-पीटा जाना ।

कुंद—संज्ञा पुं० १. जूही की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं । २. कनेर का पेड़ । ३. कमल । वि० गुठला ।

कुंदन—संज्ञा पुं० बहुत अच्छे और साफ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर लड़िए नगीने जड़ते हैं ।

वि० स्वच्छ ।

कुंदरू—संज्ञा पुं० एक खेल जिसमें चार-पाँच श्रृंगुल लंबे फल लगते हैं जिनकी सरकारी होती है ।

कुंदलता—संज्ञा स्त्री० छन्धीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति ।

कुंदा—संज्ञा पुं० १. लकड़ी का बड़ा, मोटा और बिना धीरा हुआ टुकड़ा जो प्रायः जलाने के काम में आता है । २. बंदूक का चौड़ा पिछला भाग । ३. घेंटा ।

संज्ञा पुं० १. डैना । २. कुश्ती का एक पेंच ।

संज्ञा पुं० खोवा ।

कुंदी—संज्ञा स्त्री० १. कपड़ों की सिकुड़न

लिये कुएँ से पानी निकालते हैं ।

कूड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कूँडा ] १. पानी रखने का मिट्टी का गहरा घरतन । २. गमला । ३. रोशनी करने की बड़ी हाँड़ी ।

कूँडी-संज्ञा स्त्री० १. पथरी । २. छोटी नौद ।

कूथना-क्रि० अ० काँखना ।  
क्रि० स० मारना ।

कूई-संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी ।

कूक-संज्ञा स्त्री० १. लंबी सुरीली ध्वनि । २. मोर या कोयल की बोली ।

संज्ञा स्त्री० घड़ी या घात्रे आदि में कुंजी देने की क्रिया ।

कूकना-क्रि० अ० कोयल या मोर का बोखना ।

क्रि० स० कमानी कसने के लिये घड़ी या घात्रे में कुंजी भरना ।

कूकरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कूकरी ] कुत्ता ।

कूकर-कौर-स्त्री०, पुं० १. वह जूठा भोजन जो कुत्ते के आगे डाला जाता है । २. तुच्छ वस्तु ।

कूका-संज्ञा पुं० सिक्कों का एक पंच ।

कूच-संज्ञा पुं० प्रस्थान ।

कूचा-संज्ञा पुं० छोटा रास्ता । गली ।

कूज-संज्ञा स्त्री० ध्वनि ।

कूजन-संज्ञा पुं० [ वि० कूजित ] मधुर शब्द बोखना (पक्षियों का) ।

कूजना-क्रि० अ० कोमल और मधुर शब्द करना ।

कूजा-संज्ञा पुं० १. मिट्टी का पुरवा ।

२. मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार मिस्री ।

कूजित-वि० जो बोला या कहा

गया हो । ध्वनित ।

कूट-संज्ञा पुं० १. पहाड़ की ऊँची चोटी । २. गुरु अर्थ की पहली ।

वि० झूठा ।

संज्ञा स्त्री० कूट नाम की ओपधि ।

संज्ञा स्त्री० काटने, कूटने या पीटने आदि की क्रिया ।

कूटता-संज्ञा स्त्री० १. फठिनाई । २. झल ।

कूटना-क्रि० स० १. किसी चीज़ को तोड़ने आदि के लिये उस पर बार बार कोई चीज़ पटकना । २. मारना ।

कूटनीति-संज्ञा स्त्री० दक्षिण-पंच की नीति या चाल । घात ।

कूटयुद्ध-संज्ञा पुं० वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय ।

कूटसाक्षी-संज्ञा पुं० झूठा गवाह ।

कूटस्थ-वि० १. आला दर्जे का । २. अविनाशी । ३. गुप्त ।

कूट-संज्ञा पुं० एक पैधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है । काफर ।

कूड़ा-संज्ञा पुं० १. कतवार । २. निकम्मी चीज़ ।

कूड़ाखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता हो ।

कूढ़-संज्ञा पुं० योगे की वह रीति जिसमें हल्की गद्दारी में चीज डाला जाता है ।

वि० नासमझ ।

कूटमग्न-वि० मंदबुद्धि ।

कूत-संज्ञा स्त्री० वस्तु की संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान ।

कूतना-क्रि० स० अनुमान करना ।

थीर रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उसे मोगरी से कूटने की क्रिया । २. खूब मारना ।

कुंदुर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीला गोंद जो दवा के काम आता है ।

कुंदेरना-क्रि० स० खुरचना ।

कुंदेरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुंदेरी ] खरादनेवाला ।

कुंभ-संज्ञा पुं० १. मिट्टी का घड़ा । २. हाथी के सिर के दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग । ३. ज्योतिष में दसवीं राशि । ४. एक पर्व जो प्रति चारहवें वर्ष पड़ता है ।

कुंभकर्ण-संज्ञा पुं० एक राक्षस जो रावण का भाई था ।

कुंभकार-संज्ञा पुं० १. कुम्हार । २. सुर्गा ।

कुंभज, कुंभजात-संज्ञा पुं० १. घड़े से उत्पन्न पुरुष । २. अगस्त्य मुनि ।

कुंभसंभव-संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि ।

कुंभिका-संज्ञा स्त्री० १. जलकुंभी । २. वेश्या ।

कुंभिलाना-क्रि० भ० दे० "कुम्हलाना" ।

कुंभी-संज्ञा पुं० हाथी ।

संज्ञा स्त्री० छोटा घड़ा ।

कुंभीनस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुंभीनता ]

१. क्रूर साँप । २. रावण ।

कुंभीर-संज्ञा पुं० नक्र या नाक नामक जल-जंतु ।

कुंघर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुंघरि ] १.

जड़का । २. राजपुत्र ।

कुंघरेटा-संज्ञा पुं० बालक ।

कुंघारा-वि० [ स्त्री० कुंघारी ] विन

व्याहा ।

कुँ हकुँ ह-संज्ञा पुं० केसर ।

कु-उप० एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगाकर उसके अर्थ में "नीच", "कुत्सित" आदिका भाव बढ़ाता है ।

कुआँ-संज्ञा पुं० कूप । हँदारा ।

कुआर-संज्ञा पुं० [ वि० कुआरी ] आश्विन ।

कुइयाँ-संज्ञा स्त्री० छोटा कुआँ ।

कुई-संज्ञा स्त्री० दे० "कुइयाँ" ।

संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी ।

कुकटी-संज्ञा स्त्री० कपास की एक जाति जिसकी रुई खलाई लिए देती है ।

कुकड़ना-क्रि० भ० सिकुड़कर रह जाना ।

कुकड़ी-संज्ञा स्त्री० कच्चे सूत का छपेटा द्वारा बछड़ा जो कातकर तकड़े पर से उतारा जाता है ।

कुकरी-वि०-वन-मुरगी ।

कुकरींघा-संज्ञा पुं० पालक से मिलता-जुलता एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों से कड़ी गंध निकलती है ।

कुकर्म-संज्ञा पुं० बुरा या खोटा काम ।

कुकर्मी-वि० बुरा काम करनेवाला । पापी ।

कुकुर-संज्ञा पुं० कुत्ता ।

कुकुरखाँसी-संज्ञा स्त्री० वह सूखी खाँसी जिसमें कफ न गिरे ।

कुकुरदंत-संज्ञा पुं० [ वि० कुकुरदंता ]

वह दाँत जो किसी किसी को साधारण दाँतों के अतिरिक्त और वनसे कुछ नीचे आधा निकलता है तथा जिसके कारण होंठ कुछ उठ जाता है ।

कुकुरमुत्ता-संज्ञा पुं० एक प्रकार की खुमी जिसमें से बुरी गंध निकलती है ।

कृद-संज्ञा स्त्री० कृदने की क्रिया या भाव ।

कृदना-क्रि० प्र० १. उखलना । २. धीव में सहसा आ मिलना या दखल देना ।

क्रि० सं० लाँघ जाना ।

कृप-संज्ञा पुं० कुर्मा ।

कृपमंडक-संज्ञा पुं० १. कृप में रहने-वाला मेढक । २. बहुत थोड़ी जान-कारी का मनुष्य ।

कृयङ-संज्ञा पुं० देवपुत्र ।

कृयरी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुयरी" ।

कूर-वि० १. निर्दय । २. भयंकर ।

कूरता-संज्ञा स्त्री० १. निर्दयता । २. मूर्खता ।

कूरपन-संज्ञा पुं० दे० "कूरता" ।

कूरम-संज्ञा पुं० दे० "कूर्म" ।

कूरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कूरी ] १. ढेर । २. भाग ।

कूर्चिका-संज्ञा स्त्री० १. फूँची । २. कुंजी ।

कूर्म-संज्ञा पुं० १. कच्छप । २. पृथिवी ।

३. विष्णु का दूसरा अवतार ।

कूर्मपुराण-संज्ञा पुं० अठारह मुख्य पुराणों में से एक ।

कूल-संज्ञा पुं० १. किनारा । २. समीप ।

३. बड़ा नाव । ४. तालाब ।

कूलहा-संज्ञा पुं० कमर में पेड़ के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ ।

कूचत-संज्ञा स्त्री० यज्ञ ।

कूचर-संज्ञा पुं० १. रथ का वह भाग जिस पर जूआ बाँधा जाता है ।

२. रथ में रथी के बैठने का स्थान ।

३. कुपड़ा ।

कूपमांड-संज्ञा पुं० कुम्हड़ा ।

कूह-संज्ञा स्त्री० १. चिघाड़ । २. चीख ।

कृच्छ्र-संज्ञा पुं० कष्ट ।

वि० कष्टसाध्य ।

कृत-वि० १. किया हुआ । २. बनाया हुआ ।

संज्ञा पुं० १. सतयुग । २. चार की संख्या ।

कृतकार्य-वि० सफल-मनोरथ ।

कृतकृत्य-वि० कृतार्थ ।

कृतज्ञ-वि० [ संज्ञा कृतज्ञता ] किए हुए उपकार को न माननेवाला ।

कृतज्ञी-वि० दे० "कृतज्ञ" ।

कृतज्ञ-वि० [ संज्ञा कृतज्ञता ] किए हुए उपकार को माननेवाला ।

कृतज्ञता-संज्ञा स्त्री० किए हुए उपकार को मानना । एहसानमंदी ।

कृतयुग-संज्ञा पुं० सतयुग ।

कृतविद्य-वि० पंडित ।

कृतांत-संज्ञा पुं० १. अंत करने-वाला । २. यम ।

कृतार्थ-वि० १. सफल-मनोरथ । २. सतुष्ट ।

कृति-संज्ञा स्त्री० १. करवत । २. कार्य ।

कृती-वि० १. कुशल । २. साधु ।

कृत्ति-संज्ञा स्त्री० १. मृगधर्म । २. चमड़ा ।

कृत्तिवास-संज्ञा पुं० महादेव ।

कृत्य-संज्ञा पुं० कर्म ।

कृत्या-संज्ञा स्त्री० १. अभिचार । २. दुष्टा या ककशा स्त्री ।

कृत्रिम-वि० नकली ।

कृदंत-संज्ञा पुं० वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने ।

रूपण-संज्ञा पुं० [वि० रूपणता] कंजूस ।

रूपणता-संज्ञा स्त्री० कंजूसी ।

कुकुही०—संज्ञा स्त्री० धनसुर्गी ।  
 कुकुकुट—संज्ञा पुं० सुर्गा ।  
 कुकुर—संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुकुरी ]  
 कुत्ता ।  
 कुक्ष—संज्ञा पुं० पेट ।  
 कक्षि—संज्ञा स्त्री० १. पेट । २. कोख ।  
 संज्ञा पुं० १. एक दानव । २. राजा  
 षडि ।  
 कुखेत—संज्ञा पुं० घुरा स्थान ।  
 कुख्यात—वि० निदिष्ट ।  
 कुख्याति—संज्ञा स्त्री० निंदा ।  
 कुगति—संज्ञा स्त्री० दुर्गति ।  
 कुघात—संज्ञा पुं० कुधवसर ।  
 कुच—संज्ञा पुं० स्तन ।  
 कुचकुचाना—क्रि० स० छगातार  
 फेंचना ।  
 कुचना०—क्रि० भ० सिकुटना ।  
 कुचक—संज्ञा पुं० पङ्कसंघ ।  
 कुचक्री—संज्ञा पुं० पङ्कसंघ रचनेवाला ।  
 कुचलना—क्रि० स० १. मसलना ।  
 २. पैरों से रेंदना ।  
 कुचला—संज्ञा पुं० एक वृक्ष जिसके  
 विपरीत धीज औषध के काम में  
 आते हैं ।  
 कुचाल—संज्ञा स्त्री० १. घुरा आचरण ।  
 २. पदमाशी ।  
 कुचाली—संज्ञा पुं० कुमारी ।  
 कुचाह—संज्ञा स्त्री० अशुभ बात ।  
 कुचील०—वि० मैला-कुचैला ।  
 कुचीला०—वि० दे० "कुचैला" ।  
 कुचेष्ट—वि० घुरी घेष्टायाला ।  
 कुचेष्टा—संज्ञा स्त्री० [ वि० कुचेष्ट ] घुरी  
 घेष्टा ।  
 कुचैन०—संज्ञा स्त्री० कष्ट ।  
 वि० व्याकुल ।  
 कुचैला—वि० [ स्त्री० कुचैली ] १.

जिसका कपड़ा मैला हो । २. मैला ।  
 कुच्छित्त०—वि० दे० "कुस्मित" ।  
 कुछु—वि० १. घोड़ा सा । २. कोई ।  
 कुजंज०—संज्ञा पुं० घुरा यंत्र ।  
 कुज—संज्ञा पुं० १. मंगल ग्रह । २. वृक्ष ।  
 कुजा—संज्ञा स्त्री० १. जानकी । २.  
 कात्यायिनी ।  
 कुजाति—संज्ञा स्त्री० घुरी जाति ।  
 संज्ञा पुं० घुरी जाति का आदमी ।  
 कुजोग०—संज्ञा पुं० १. कुसंग । २.  
 घुरा अवसर ।  
 कुजोगी०—वि० असंयमी ।  
 कुट०—संज्ञा पुं० मार ।  
 कुट—संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुटी ] १. घर ।  
 २. कोट ।  
 संज्ञा पुं० कूटा हुआ टुकड़ा ।  
 कुटका—संज्ञा पुं० [ स्त्री० भगपा० कुटकी ]  
 छोटा टुकड़ा ।  
 कुटज—संज्ञा पुं० १. कुरैया । २.  
 भगस्य मुनि ।  
 कुटनहारी—संज्ञा स्त्री० घान कूटनेवाली  
 स्त्री ।  
 कुटना—संज्ञा पुं० १. छियों को बहका-  
 कर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला ।  
 वृत्त । २. चुगलखोर ।  
 संज्ञा पुं० वह हथियार जिससे कुटाई  
 की जाय ।  
 क्रि० भ० कूटा जाना ।  
 कुटनापा—संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन" ।  
 कुटनी—संज्ञा स्त्री० १. छियों को बह-  
 काकर उन्हें पर-पुरुष से मिलाने-  
 वाली स्त्री । २. दो व्यक्तियों में झगड़ा  
 करानेवाली ।  
 कुटवाना—क्रि० स० कूटने की क्रिया  
 दूसरे से कराना ।

कृपनाई-संज्ञा स्त्री० दे० "कृपणता"।

कृपा-संज्ञा स्त्री० [वि० कृपालु] दया।

कृपाण-संज्ञा पुं० तलवार।

कृपापात्र-संज्ञा पुं० कृपा का अधि-  
कारी।

कृपायतन-संज्ञा पुं० अत्यंत कृपालु।

कृपालु-वि० दे० "कृपालु"।

कृपालु-वि० कृपा करनेवाला।

कृपिण-वि० दे० "कृपण"।

कृमि-संज्ञा पुं० [वि० कृमिल] छोटा  
कीड़ा।

कृमिज-वि० कीड़ों से वरपक्ष।

कृमिरोग-संज्ञा पुं० आमाशय और  
पक्वाशय में कीड़े उपजने का  
रोग।

कृश-वि० १. दुबला-पतला। २.  
छोटा।

कृशानु-संज्ञा पुं० अग्नि।

कृशित-वि० दुबला-पतला।

कृशोदरी-वि० स्त्री० पतली कमर-  
वाली (स्त्री)।

कृषक-संज्ञा पुं० किसान।

कृषि-संज्ञा स्त्री० [वि० कृष्य] खेती।

कृष्ण-वि० काला।

संज्ञा पुं० [स्त्री० कृष्णा] १. यदुवंशी  
धनुर्देव के पुत्र जो विष्णु के प्रधान  
अवतारों में हैं। २. अथर्ववेद के  
अंतर्गत एक उपनिषद्। ३. औंधेरा  
पक्ष।

कृष्णचंद्र-संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण" (१)।

कृष्णपक्ष-संज्ञा पुं० औंधेरा पक्ष।

कृष्णसार-संज्ञा पुं० काला हिरन।

कृष्णा-संज्ञा स्त्री० १. द्वीपदी। २.

पीपल। पिप्पली। ३. दक्षिण देश

की एक नदी। ४. कृष्णा

कृष्णाष्टमी-संज्ञा स्त्री० भादों के कृष्ण-

पक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण  
का जन्म हुआ था।

कृष्य-वि० खेती करने योग्य (भूमि)।

कैं-कैं-संज्ञा स्त्री० १. चिड़ियों का  
कष्टसूचक शब्द। २. मगाड़ा या  
असंतोष-सूचक शब्द।

कैंचली-संज्ञा स्त्री० सर्प आदि के  
शरीर पर का फिल्लोदार चमड़ा जो  
हर साल गिर जाता है।

कैंचुआ-संज्ञा पुं० सूत के आकार  
का एक बरसाती कीड़ा जो एक  
पालिशत खाता होता है।

कैंचुली-संज्ञा स्त्री० दे० "कैंचली"।

केंद्र-संज्ञा पुं० ठीक मध्य का बिंदु।

२. मुख्य या प्रधान स्थान।

केंद्री-वि० केंद्र में स्थित।

कै-प्रत्य० संयधसूचक "का" विभक्ति  
का बहुवचन रूप।

कै-सर्व० कौन ?

कैउ-सर्व० कोई।

कैकड़ा-संज्ञा पुं० पानी का एक कीड़ा।

कैकय-संज्ञा पुं० १. प्यास और  
शास्मली नदी की दूसरी ओर के  
देश का प्राचीन नाम। २. [स्त्री०  
कैकयी] कैकय देश का राजा या  
निवासी। ३. दशरथ के प्रशुर  
और कैकेयी के पिता।

कैकयी-संज्ञा स्त्री० दे० "कैकेयी"।

कैका-संज्ञा स्त्री० मोर की बोलों।

कैकी-संज्ञा पुं० मोर। मयूर।

कैचित्-सर्व० कोई कोई।

कैड़ा-संज्ञा पुं० नया पीधा।

कैत-संज्ञा पुं० १. घर। २. स्थान।

३. ध्वजा।

कैतक-संज्ञा पुं० कैवदा।

वि० १. कितने। २. बहुत।

कुटाई-संज्ञा स्त्री० १. कूटने का काम ।  
२. कूटने की मजदूरी ।

कुटिया-संज्ञा स्त्री० मोपड़ी ।

कुटिल-वि० [ स्त्री० कुटिला ] १. घक ।  
२. कपटी ।

संज्ञा पुं० शङ ।

कुटिलता-संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ापन ।  
२. झूठ ।

कुटिलाई-संज्ञा स्त्री० दे० "कुटिलता" ।

कुटी-संज्ञा स्त्री० मोपड़ी ।

कुटीचर-संज्ञा पुं० दे० "कुटीचक" ।  
संज्ञा पुं० कपटी ।

कुटीर-संज्ञा पुं० दे० "कुटी" ।

कुटुंब-संज्ञा पुं० परिवार ।

कुटुंबी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुटुंबिनी ]  
१. परिवारवाला । २. संबंधी ।

कुटुम्भी-संज्ञा पुं० दे० "कुटुंब" ।

कुटुम्ब-संज्ञा स्त्री० अनुचित हठ ।

कुटुम्ब-संज्ञा स्त्री० खराब आदत ।

कुटुनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुटनी" ।

कुट्टी-संज्ञा स्त्री० १. चारे को छोटे  
छोटे टुकड़ों में काटने की क्रिया । २.  
मैत्री-मंग ।

कुठला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अत्पा०  
कुठली ] अनाज रखने का मिट्टी का  
बड़ा घरतन ।

कुठाई-संज्ञा स्त्री० दे० "कुठाव" ।

कुठाव-संज्ञा स्त्री० घुरी ठौर ।

कुठाट-संज्ञा पुं० १. घुरा साज । २.  
घुरा आयोजन ।

कुठार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुठारी ] १.  
कुल्हाड़ी । २. परशु ।

कुठारी-संज्ञा स्त्री० १. कुल्हाड़ी । २.  
नाश करनेवाला ।

कुठाहर-संज्ञा पुं० १. घुरा स्थान ।  
२. घुरा अवसर ।

कुठौर-संज्ञा पुं० घुरी जगह ।

कुड़कुड़ाना-कि० प्र० मन ही मन  
कुड़ना ।

कुड़कुड़ी-संज्ञा स्त्री० मूख या अजीबों  
से होनेवाली पेट की गुदगुड़ाहट ।

कुड़बुड़ाना-कि० प्र० कुड़कुड़ाना ।

कुडौल-वि० भद्दा ।

कुडंग-संज्ञा पुं० घुरा डंग । कुचाल ।  
घुरी रीति ।

वि० १. घुरे डंग का । घेडंगा । भद्दा ।  
घुरा । २. घुरी तरह का ।

कुडंगा-वि० [ स्त्री० कुडंगी ] घेडंगा ।

कुड़न-संज्ञा स्त्री० चिड़ ।

कुड़ना-कि० प्र० १. मन ही मन  
खीझना या चिड़ना । २. झलना ।

कुडव-वि० बेडव ।

कुड़ाना-कि० स० चिड़ाना ।

कुणप-संज्ञा पुं० १. शव । २. परछा ।

कुणपाशी-संज्ञा पुं० मुर्दा खानेवाला  
जंतु ।

कुतका-संज्ञा पुं० १. मोटा डंडा ।  
२. भोग-घोटना ।

कुतना-कि० प्र० कूता जाना ।

कुतप-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. अग्नि ।

कुतरना-कि० स० दांत से छोटा सा  
टुकड़ा काट लेना ।

कुतर्क-संज्ञा पुं० घुरा तर्क । विर्तंडा ।

कुतर्की-संज्ञा पुं० व्यर्थ तर्क करने-  
वाला ।

कुतचार-संज्ञा पुं० दे० "कोत-  
वाल" ।

कुतघाल-संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल" ।

कुतिया-संज्ञा स्त्री० कुत्ती ।



केतकर-संज्ञा स्त्री० दे० "केतकी"।  
केतकी-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जिसमें काँड़ के चारों ओर लवंग के से लंबे कटिदार पत्ते निकले होते हैं और कोश में पेड़ मंजरी के रूप में बहुत सुगंधित फूल लगते हैं।

केतन-संज्ञा पुं० १. दिमंत्रण। २. ध्वजा। ३. घर।

केता-वि० [ स्त्री० केती ] कितना।  
केतिक-वि० कितना।

केतु-संज्ञा पुं० १. निशान। २. पताका। ३. पुण्ड्र ल तारा। ४. एक पुरा ग्रह।

केतुमान्-वि० १. तेजवान्। २. ध्वजावाला।

केतुवृक्ष-संज्ञा पुं० पुराणानुसार मेरु के चारों ओर के पर्यंतों पर के वृक्षों का नाम। ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल और शरगद।

केतो-वि० [ स्त्री० केती ] कितना।  
केदार-संज्ञा पुं० १. कियारी। २. शिवलिंग। ३. दे० "केदारनाथ"।

केदारनाथ-संज्ञा पुं० हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग है।

केन-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध उपनिषद्।  
केयूर-संज्ञा पुं० बाँह में पहनने का सुवर्णदं।

केरा-प्रत्य० [ स्त्री० केरी ] का।  
केरल-संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत का एक देश। फनारा। २. [ स्त्री० केरली ] केरल देश-वासी पुरुष।

केराना-संज्ञा पुं० नमक, मसाला, हल्दी आदि चीजों जो पंसारियों के यहाँ मिलती हैं।

केरानी-संज्ञा पुं० १. वह जिसके माता पिता में से कोई एक युरो-पियन और दूसरा हिंदुस्तानी हो। २. फलकं।

केरावा-संज्ञा पुं० मटर।

केरोसिन-संज्ञा पुं० मिट्टी का तेल।

केला-संज्ञा पुं० गरम जगहों में होने-वाला एक पेड़ जिसके पत्ते गज सवा गज लंबे और फल छंये, गूदेदार और भीठे होते हैं।

केलि-संज्ञा स्त्री० १. खेल। २. रति। ३. हँसी।

केलकला-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती की धीणा। २. रति।

केवका-संज्ञा पुं० वह मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है।

केवट-संज्ञा पुं० एक संकर जाति जो आज़कल नाव चलाने तथा मिट्टी छोढ़ने का काम करती है।

केवटी दाल-संज्ञा स्त्री० रो या अधिक प्रकार की, एक में मिली हुई, दाल।

केवड़ी-वि० हलका पीला और हरा मिला हुआ सफेद।

केवड़ा-संज्ञा पुं० १. सफेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। २. इस पौधे का फूल। ३. इसके फूल से बतारा हुआ सुगंधित जल।

केवल-वि० १. एकमात्र। २. शुद्ध। श्रेष्ठ।

किं वि० मात्र। सिर्फ।

केवलारमा-संज्ञा पुं० १. पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। २. शुद्ध स्वभाववाला मनुष्य।

केवली-संज्ञा पुं० मुक्ति का अधिकारी साधु।

- कुतुब-संज्ञा पुं० ध्रुव तारा ।  
 कुतुबनुमा-संज्ञा पुं० वह यंत्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है । दिग्दर्शक यंत्र ।  
 कुतूहल-संज्ञा पुं० [ वि० कुतूहली ] १. किसी वस्तु के देखने या किसी बात के सुनने की प्रवृत्ति इच्छा । २. आश्चर्य्य ।  
 कुतूहली-वि० जिसे वस्तुओं को देखने या जानने की अधिक उत्सुकता हो ।  
 कुत्ता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुती ] १. कूकुर । २. कुत्त ।  
 कुत्सा-संज्ञा स्त्री० निंदा ।  
 कुरिसत-वि० १. नीच । २. निन्दित ।  
 कुक्कना-क्रि० भ० दे० "कूदना" ।  
 कुदधारा-संज्ञा पुं० ब्रह्म-कूद ।  
 कुदरत-संज्ञा स्त्री० १. शक्ति । २. ईश्वरी शक्ति ।  
 कुदरती-वि० ईश्वरीय ।  
 कुदरीन-वि० बद्धरत ।  
 कुदायि-संज्ञा पुं० कुयात ।  
 कुदाई-वि० छली ।  
 कुदान-संज्ञा पुं० घुरा दान ।  
 संज्ञा स्त्री० कूदने की क्रिया ।  
 कुदाना-क्रि० स० कूदने में प्रवृत्त करना ।  
 कुदाल-संज्ञा स्त्री० [ स्त्री० भत्ता० कुदली ] मिट्टी खोदने और खेत गोदने का एक औज़ार ।  
 कुदिन-संज्ञा पुं० आपत्ति का समय ।  
 कुदिष्टि-संज्ञा स्त्री० दे० "कुरष्टि" ।  
 कुदृष्टि-संज्ञा स्त्री० घुरी नज़र ।  
 कुदेव-संज्ञा पुं० प्राक्षणा ।  
 संज्ञा पुं० राक्षस ।  
 कुद्रव-संज्ञा पुं० कोढ़ो ।

- कुधर-संज्ञा पुं० १. पहाड़ । २. शेष-नाग ।  
 कुधातु-संज्ञा स्त्री० १. घुरी धातु । २. लोहा ।  
 कुनकुना-वि० आधा गरम ।  
 कुनप-संज्ञा पुं० दे० "कुणप" ।  
 कुनधा-संज्ञा पुं० कुट्टम ।  
 कुनधी-संज्ञा पुं० कुामी ।  
 कुनचा-संज्ञा पुं० चर्तन आदि खरादनेवाला मनुष्य ।  
 कुनह-संज्ञा स्त्री० [ वि० कुनही ] द्वेप ।  
 कुनही-वि० द्वेप रखनेवाला ।  
 कुनाम-संज्ञा पुं० चदनामी ।  
 कुनैन-संज्ञा स्त्री० सिंकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो अंगरेज़ी चिकित्सा में ज्वर के लिये अत्यन्त उपयोगी माना जाता है ।  
 कुपंथ-संज्ञा पुं० घुरा मार्ग ।  
 कुपड़-वि० चनपड़ ।  
 कुपथ-संज्ञा पुं० घुरा रास्ता ।  
 ० संज्ञा पुं० वह भोजन जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो ।  
 कुपथ्य-संज्ञा पुं० वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य को हानिकारक हो ।  
 कुपना-क्रि० भ० दे० "कोपना" ।  
 कुपाठ-संज्ञा पुं० घुरी सजाह ।  
 कुपात्र-वि० अपयोग्य ।  
 कुपार-संज्ञा पुं० समुद्र ।  
 कुपित-वि० क्रुद्ध ।  
 कुपुत्र-संज्ञा पुं० दुष्ट पुत्र ।  
 कुप्पा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भत्ता० कुप्पी ] चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का चर्तन जिसमें घी, तेल आदि रखे जाते हैं ।  
 कुप्पी-संज्ञा स्त्री० छोटा कुप्पा ।

कैचाँच-संज्ञा स्त्री० दे० "कैँच" ।

कैचा-संज्ञा पुं० १. कमल । २. केतकी ।  
संज्ञा पुं० बहाना ।

कैचाड़ा-संज्ञा पुं० दे० "किचाड़" ।

कैश-संज्ञा पुं० १. किरण । २. वरुण ।  
३. सूर्य । ४. सिर का घाल ।

कैशकर्म-संज्ञा पुं० घाल काढ़ने और  
गूँथने की कला ।

कैशपाश-संज्ञा पुं० घालों की लट ।

कैशरंजन-संज्ञा पुं० भंगरैया ।

कैशर-संज्ञा पुं० दे० "केसर" ।

कैशराज-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का  
सुजंगा पक्षी । २. भंगरैया ।

कैशरी-संज्ञा पुं० दे० "केसरी" ।

कैशध-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. कृष्ण-  
चंद्र ।

कैशविन्यास-संज्ञा पुं० घालों की  
सजावट ।

कैशांत-संज्ञा पुं० मुंडन ।

कैशिनी-संज्ञा स्त्री० यह स्त्री जिसके  
सिर के घाल सुंदर और बड़े हों ।

कैशी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कैशिनी ] १.  
घोड़ा । २. सिंह ।

वि० १. प्रकाशवाला । २. अच्छे  
घालोंवाला ।

कैस-संज्ञा पुं० दे० "केस" ।

संज्ञा पुं० १. किसी चीज़ के रखने का  
ठाना या घर । २. मुकुटमा । ३.  
दुर्घटना ।

कैसर-संज्ञा पुं० १. घाल की तरह  
पतले पतले सींके या सूत जो फूलों  
के बीच में रहते हैं । २. एक पौधा  
जिसका केसर स्थायी सुगंध के लिये  
प्रसिद्ध है । ३. नागकेसर ।

कैसरिया-वि० १. केसर के रंग का ।  
पीला । २. केसर-मिश्रित ।

कैसरी-संज्ञा पुं० १. सिंह । २. घोड़ा ।

कैसारी-संज्ञा स्त्री० दुबिया मटर ।

कैहरी-संज्ञा पुं० १. सिंह । २. घोड़ा ।

कैहि-वि० किसको ।

कैहि-कि० वि० किसी प्रकार ।

कैही-सर्व० कोई ।

कैचा-वि० ऐँचाताना ।

संज्ञा पुं० पड़ी कैँची ।

कैँची-संज्ञा स्त्री० कतरनी ।

कैँ-वि० कितना ।

अभ्य० अभय ।

संज्ञा स्त्री० खट्टी ।

कैकस-संज्ञा पुं० राक्षस ।

कैकयी-संज्ञा स्त्री० १. कैकय गोत्र में  
उत्पन्न स्त्री । २. राजा दशरथ की  
रानी ।

कैटभारि-संज्ञा पुं० विष्णु ।

कैतध-संज्ञा पुं० १. घोखा । २. जुआ ।  
वि० १. धोखेबाज़ । २. जुआरी ।

कैतून-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घारीक  
लस जो कपड़ों में लगाई जाती है ।

कैथ, कैथा-संज्ञा पुं० एक कँटीला पेड़  
जिसमें थेल के आकार के कसैले और  
खट्टे फल लगते हैं ।

कैथिन-संज्ञा स्त्री० कापस्थ जाति की  
स्त्री ।

कैथी-संज्ञा स्त्री० एक लिपि या लिखा-  
वट जो शीघ्र लिखी जाती है ।

कैद-संज्ञा स्त्री० [ वि० कैदी ] १. बंधन ।  
२. कारावास ।

कैदक-संज्ञा स्त्री० कागज़ का बंद या  
पट्टी जिसमें कागज़ आदि रखे जाते हैं ।

कैदखाना-संज्ञा पुं० जेलखाना ।

कै द तनहाई-संज्ञा स्त्री० कालकोठरी ।

कुम्ह-संज्ञा पुं० सुसलमानी मत से  
मिश्र अन्य मत ।

कुचंड-संज्ञा पुं० घनुष ।

कुयजा-संज्ञा स्त्री० दे० "कुब्जा" या  
"कुयरी" ।

कुचड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुचड़ी ] वह  
पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई या  
झुक गई हो ।  
वि० टेढ़ा ।

कुयड़ी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "कुयरी" ।  
२. वह छड़ी जिसका सिरा झुका  
हुआ हो ।

कुयरी-संज्ञा स्त्री० टेढ़िया ।

कुयाक-संज्ञा पुं० दे० "कुत्राक्य" ।

कुयानि-संज्ञा स्त्री० कुटेब ।

कुयानी-संज्ञा पुं० घुरा व्यापार ।

कुयुद्धि-वि० दुवृद्धि ।

संज्ञा स्त्री० मूर्खता ।

कुचैला-संज्ञा स्त्री० घुरा समय ।

कुब्ज-वि० [ स्त्री० कुब्जा ] कुचड़ा ।

संज्ञा पुं० एक वायुरोग जिसमें छाती  
या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है ।

कुमंठी-संज्ञा स्त्री० पतली लचीली  
टहनी ।

कुमक-संज्ञा स्त्री० १. सहायता । २.  
पक्षपात ।

कुमकी-वि० कुमक का । कुमक से  
संबंध रखनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में सहा-  
यता करने के लिये सिसाई हुई  
हथनी ।

कुमकुम-संज्ञा पुं० केसर ।

कुमार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुमारी ] १.  
पाँच वर्ष की अवस्था का बालक ।

२. पुत्र । ३. सुवराज ।

वि० बिना व्याह ।

कुमारगो-संज्ञा पुं० दे० "कुमार्ग" ।

कुमारतंत्र-संज्ञा पुं० वैद्यक का वह  
भाग जिसमें बच्चों के रोगों का  
निदान और चिकित्सा हो ।

कुमारिका-संज्ञा स्त्री० कुमारी ।

कुमारी-संज्ञा स्त्री० चारह वर्ष तक  
की अवस्था की कन्या ।

वि० स्त्री० बिना व्याहरी ।

कुमार्ग-संज्ञा पुं० [ वि० कुमार्गी ] घुरा  
मार्ग ।

कुमार्गी-वि० [ स्त्री० कुमार्गीनी ] बद-  
चलन ।

कुमुख-वि० पुं० [ स्त्री० कुसुखी ] जिसका  
चंहरा देखने में अच्छा न हो ।

कुमुद-संज्ञा पुं० १. कुई । २. जल  
कमल । ३. दक्षिण-पश्चिम कोण का  
दिशाज ।

कुमुदबंधु-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

कुमुदिनी-संज्ञा स्त्री० कुई ।

कुमुदिनीपति-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

कुमेरु-संज्ञा पुं० दक्षिणी ध्रुव ।

कुम्हड़ा-संज्ञा पुं० एक फेंटनेवाली  
बेल जिसके फलों की तरकारी  
होती है ।

कुम्हड़ौरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
चरी जो पीसी में कुम्हड़े के टुकड़े  
मिलाकर बनाई जाती है ।

कुम्हलाना-कि० भ० मुरझाना ।

कुम्हार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुम्हारिन ]  
मिट्टी के बरतन बनानेवाला ।

कुम्हीं-संज्ञा स्त्री० जलकुम्भी ।

कुरंग-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कुरंगी ] हिरन ।  
संज्ञा पुं० घुरा लक्षण ।

कैद महज़-संज्ञा स्त्री० सादी कैद ।  
 कैद सख्त-संज्ञा स्त्री० वह कैद जिसमें  
 कैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े ।  
 कैदी-संज्ञा पुं० बंदी ।  
 कैदी-अन्व० अपवा ।  
 कैफ-संज्ञा पुं० नशा ।  
 कैफियत-संज्ञा स्त्री० १. समाचार ।  
 २. ब्योरा ।  
 कैफी-वि० मतवाला ।  
 कैर-संज्ञा स्त्री० तीर का फल ।  
 कैरा-संज्ञा स्त्री० अव्यय कितनी  
 बार ।  
 कैरब-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कैरी ] १.  
 कुसुद । २. सफ़ेद कमल । ३. शत्रु ।  
 कैरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कैरी ] भूरा  
 (रंग) ।  
 वि० १. कैरे रंग का । २. कंजा ।  
 कैलास-संज्ञा पुं० १. हिमालय की  
 एक चोटी जो तिब्बत में रावण ह्व  
 से उत्तर और है । २. शिवलोक ।  
 कैवत-संज्ञा पुं० केवट ।  
 कैवल्य-संज्ञा पुं० १. शुद्धता । २.  
 मोक्ष । ३. एक उपनिषद् ।  
 कैसर-संज्ञा पुं० सम्राट् ।  
 कैसा-वि० [ स्त्री० कैसी ] किस प्रकार  
 का ?  
 कैसे-क्रि० वि० किस प्रकार से ?  
 कोफण-संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत  
 का एक प्रदेश । २. वक्त देश का  
 निवासी ।  
 कोचना-क्रि० स० चुमाना । गोदना ।  
 कोचा-संज्ञा पुं० दे० "क्रीच" ।  
 संज्ञा पुं० यहलियों की वह लंबी छद्  
 जिसके सिरे पर वे चिट्ठियाँ फँसाने  
 का साता लगाए रहते हैं ।

कोछुना-क्रि० स० दे० "कोछियाना" ।  
 कोछियाना-क्रि० स० ( स्त्रियों की )  
 साड़ी का वह भाग चुनना जो पह-  
 नने में पेट के नीचे खोसा जाता है ।  
 क्रि० स० ( स्त्रियों के ) अंचल के कोने  
 में कोई चीज़ भरकर कमर में  
 खोस लेना ।  
 कोढ़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कोढ़ी ]  
 घातु का वह छुला या कड़ा जिसमें  
 कोई वस्तु घटकाई जाती है ।  
 वि० जिसमें कोढ़ा लगा हो ।  
 कोपर-संज्ञा पुं० छोटा अधपका या  
 डाल का पका आम ।  
 कोपल-संज्ञा स्त्री० मई और सुहा-  
 यम पत्नी ।  
 कोहड़ा-संज्ञा पुं० दे० "कुम्हड़ा" ।  
 कोहड़ीरी-संज्ञा स्त्री० कुम्हड़े या  
 पंटे की बनाई हुई थरी ।  
 को-सर्व० कोन ?  
 प्रत्य० कर्म और संप्रदान की विभक्ति ।  
 कोआ-संज्ञा पुं० १. रेशम के कीड़े  
 का घर । २. दूसर नामक रेशम का  
 कीड़ा । ३. कटहल के गूदेदार पत्ते  
 हुए बीजकोप ।  
 कोइरी-संज्ञा पुं० साग, तरकारी  
 आदि घोलने और बेचनेवाली जाति ।  
 काछी ।  
 कोइली-संज्ञा स्त्री० वह कच्चा आम  
 जिसमें काला दाम पड़ जाता है  
 और एक विशेष प्रकार की सुगंध  
 आती है ।  
 कोई-सर्व०, वि० ऐसा एक ( मनुष्य  
 या पदार्थ ) जो अज्ञात हो ।  
 क्रि० वि० कुरीब कुरीब ।  
 कोउ-सर्व० दे० "कोई" ।  
 कोउका-सर्व० कोई एक ।

वि० यदरंग ।  
**कुरंगिन**-संश स्त्री० हिरनी ।  
**कुरंड**-संश पुं० एक खनिज पदार्थ,  
 जिसके चूर्ण को लाल आदि में  
 मिलाकर हथियार तेज़ करने की सान  
 बनाते हैं ।  
**कुरकी**-संश स्त्री० दे० "कुर्की" ।  
**कुरकुर**-संश पुं० खरी वस्तु के दब-  
 कर टूटने का शब्द ।  
**कुरकुरा**-वि० [ स्त्री० कुरकुरी ] खरा  
 थोर करारा जिसे तोड़ने पर कुरकुर  
 शब्द हो ।  
**कुरकरी**-संश स्त्री० पतली मुजापम  
 हड्डी ।  
**कुरता**-संश पुं० [ स्त्री० कुरती ] एक  
 पहनावा जो सिर डालकर पहना  
 जाता है ।  
**कुरना**-कि० प्र० दे० "कुरलना" ।  
**कुर्याम**-वि० जो निद्राघोर या बलि-  
 दान किया गया हो ।  
**कुरवानी**-संश स्त्री० बलिदान ।  
**कुरर**-संश पुं० गिद्ध की जाति का  
 एक पक्षी ।  
**कुररा**-संश पुं० [ स्त्री० कुररी ] कर्ना-  
 कुल । कर्ष ।  
**कुररी**-संश स्त्री० १. भार्या छंद का  
 एक भेद । २. 'कुररा' का स्त्रीलिंग ।  
**कुरय**-वि० घुरी धोली धोखनेवाला ।  
**कुरसी**-संश स्त्री० १. एक प्रकार की  
 कँची चौकी जिसमें पीछे की ओर  
 सहारे के लिये पट्टी लगी रहती है ।  
 २. पुरत ।  
**कुरसीनामा**-संश पुं० शृंगार ।  
**कुरान**-संश पुं० शरबी मापा की एक  
 पुस्तक जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है ।

**कुराह**-संश स्त्री० [ वि० कुराही ] १.  
 घुरी राह । २. घुरी चाल ।  
**कुराही**-वि० कुमार्गी ।  
 संश स्त्री० दुराचार ।  
**करिया**-संश स्त्री० १. कुटी । २.  
 बहुत छोटा गाँव ।  
**कुरियाल**-संश स्त्री० चिड़ियों का मौज  
 में बैठकर पंख खुलाना ।  
**कुरी**-संश स्त्री० वंश ।  
 संश स्त्री० टुकड़ा ।  
**कुरीति**-संश स्त्री० घुरी रीति ।  
**कुर**-संश पुं० एक सोमवंशी राजा  
 जिसके वंश में पांडु और धृतराष्ट्र  
 हुए थे ।  
**करई**-संश स्त्री० मैनी ।  
**करुलेत्र**-संश पुं० एक बहुत प्राचीन  
 तीर्थ जो अंगाले और दिछी के बीच  
 में है । महाभारत का युद्ध यहीं  
 हुआ था ।  
**करुलेता**-संश पुं० दे० "करुलेत्र" ।  
**करुख**-वि० नाराज़ ।  
**करूप**-वि० [ स्त्री० करूपा ] बधसूरत ।  
**करूपता**-संश स्त्री० बधसूरती ।  
**कुरेदना**-कि० प्र० खोदना ।  
**कुरैया**-संश स्त्री० सुंदर फूलोंवाला  
 एक जंगली पेड़ जिसके धीज "इंद-  
 जा" कहलाते हैं ।  
**कुरैना**-कि० प्र० ढेर लगाना ।  
**कुर्क**-वि० [ संश कुर्की ] जून्त ।  
**कुर्क-अमीन**-संश पुं० वह सरकारी  
 कर्मचारी जो अदालत के आज्ञा-  
 नुसार जायदाद की कुर्की करता है ।  
**कुर्की**-संश स्त्री० कज़ दार या अपराधी  
 की जायदाद का ऋण या जुरमाने

कोऊ।०-सर्व० दे० "कोई" ।  
 कोक-संज्ञ पु० [ स्त्री० कोकी ] १.  
 चकवा पक्षी । २. विष्णु । ३.  
 मेंढक ।  
 कोककला-संज्ञ स्त्री० रति-विद्या ।  
 कोकदेव-संज्ञ पु० कोकशास्त्र या  
 रतिशास्त्र का रचयिता एक पंडित ।  
 कोकनद-संज्ञ पु० १. झाल कमल ।  
 २. झाल कुमुद ।  
 कोकनी-संज्ञ पु० एक प्रकार का रंग ।  
 वि० छोटा ।  
 कोकशास्त्र-संज्ञ पु० कामशास्त्र ।  
 कोकावेरी, कोकावेली-संज्ञ स्त्री०  
 नीली कुमुदिनी ।  
 कोकिल-संज्ञ स्त्री० कोयल चिड़िया ।  
 कोकिला-संज्ञ स्त्री० कोयल ।  
 कोकीन, कोकेन-संज्ञ स्त्री० कोका  
 नामक द्रव्य की पत्तियों से तैयार  
 की हुई एक प्रकार की मादक  
 औषधि या विष जिसे लगाने से  
 शरीर सुन्न हो जाता है ।  
 कोको-संज्ञ स्त्री० कौआ । लड़कों  
 को पहकाने का शब्द ।  
 कोख-संज्ञ स्त्री० १. उदर । २.  
 गर्भाशय ।  
 कोच-संज्ञ पु० एक प्रकार की औष-  
 दिया बढ़िया घोड़ा-गाड़ी । २. गद्दे-  
 दार बढ़िया पलंग, बेंच या कुर्सी ।  
 कोचघान-संज्ञ पु० घोड़ा-गाड़ी  
 हाँकनेवाला ।  
 कोजागर-संज्ञ पु० आश्विन भास  
 की पूर्णिमा ।  
 कोट-संज्ञ पु० दुर्ग ।  
 संज्ञ पु० समूह ।  
 संज्ञ पु० अँगरेजी दंग का एक

पहनावा ।  
 कोटपाल-संज्ञ पु० दुर्ग की रक्षा  
 करनेवाला ।  
 कोटर-संज्ञ पु० १. पेड़ का खोखला  
 भाग । २. दुर्ग के आस-पास का  
 वह कृत्रिम वन जो रक्षा के लिये  
 लगाया जाता है ।  
 कोटि-संज्ञ स्त्री० १. घनुष का सिरा ।  
 २. अस्त्र की नोक या धार । ३.  
 भेणी । ४. समूह ।  
 वि० करोड़ ।  
 कोटिक-वि० १. करोड़ । २. अन-  
 गिनत ।  
 कोटिशः-कि० वि० अनेक प्रकार से ।  
 वि० बहुत अधिक ।  
 कोठरी-संज्ञ स्त्री० छोटा कमरा ।  
 कोठा-संज्ञ पु० १. बड़ी कोठरी । २.  
 घटारी । ३. उदर ।  
 कोठार-संज्ञ पु० भंडार ।  
 कोठारी-संज्ञ पु० वह अधिकारी जो  
 भंडार का प्रबंध करता हो । भंडारी ।  
 कोठिला-संज्ञ पु० दे० "कुठला" ।  
 कोठी-संज्ञ स्त्री० १. बड़ा पक्का मकान ।  
 २. घँगला । ३. गर्भाशय ।  
 संज्ञ स्त्री० सब घाँसों का समूह जो  
 एक साथ मंडलाकार उगते हैं ।  
 कोठीवाल-संज्ञ पु० १. महाजन । २.  
 बड़ा व्यापारी ।  
 कोड़ना-कि० सं० खोदना ।  
 कोड़ा-संज्ञ पु० चालुक ।  
 कोढ़ी-संज्ञ स्त्री० धीस का समूह ।  
 कोढ़-संज्ञ पु० [ वि० कोढ़ी ] एक प्रकार  
 का रक्त और त्वचा-संबंधी रोग जो  
 संक्रामक और घिनौना होता है ।  
 कोढ़ी-संज्ञ पु० [ स्त्री० कोढ़िन ] कोढ़  
 रोग से पीड़ित मनुष्य ।

कोण-संज्ञ पुं० १. एक बिंदु पर मिलती या फटती हुई दो ऐसी रेखाओं के बीच का अंतर जो मिलकर एक न हो जाती हो। कोना। २. दो दिशाओं के बीच की दिशा।

कोतल-संज्ञ पुं० सजा-मजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो।

कोतवाल-संज्ञ पुं० पुलिस का इंस्पेक्टर।

कोतवाली-संज्ञ स्त्री० वह मकान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय हो।

कोता-वि० [ स्त्री० कोती ] छोटा।

कोताह-वि० छोटा।

कोताही-संज्ञ स्त्री० श्रुति।

कोयला-संज्ञ पुं० १. पड़ा पैला। २. पेट।

कोदंड-संज्ञ पुं० १. धनुष। २. धनु राशि। ३. औह।

कोदा-संज्ञ स्त्री० दिशा।

कोदेर, कोदेर-संज्ञ पुं० एक कदम जो प्रायः सारे भारतवर्ष में होता है।

कोना-संज्ञ पुं० १. अंतराल। २. नुकीला सिर।

कोप-संज्ञ पुं० [ वि० कुपित ] क्रोध।

कोपना-कि० प्र० क्रोध करना।

कोपमवन-संज्ञ पुं० वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रुठकर जा रहे।

कोपर-संज्ञ पुं० डाल का पका हुआ धाम। टपका।

कोपल-संज्ञ पुं० वृष आदि की नई मुलायम पत्ती।

कोपि-सर्व० कोई।

कोपी-वि० कोपी।

कोप्ता-संज्ञ पुं० कूटे हुए, मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

कोपी-संज्ञ स्त्री० दे० "गोमी"।

कोमल-वि० १. मृदु। २. सुंदर।

३. स्वर का एक भेद। (संगीत)

कोमलता-संज्ञ स्त्री० १. मृदुलता।

२. मधुरता।

कोमला-संज्ञ स्त्री० वह वृत्ति या अधर-योजना जिसमें कोमल पद हों और प्रसाद गुण हो।

कोय-सर्व० दे० "कोई"।

कोयल-संज्ञ स्त्री० बहुत सुंदर गोलने-वाली काले रंग की एक छोटी चिड़िया।

कोयला-संज्ञ पुं० १. जली हुई लकड़ी का मुका हुआ अंगारा जो बहुत काला होता है। २. एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो कोयले के रूप का होता और जलाने के काम में आता है।

कोया-संज्ञ पुं० कटहल का गूदेदार बीजकोश जो खाया जाता है।

कोर-संज्ञ स्त्री० १. किनारा। २. द्वेप। ३. पंक्ति।

कोरक-संज्ञ पुं० कली।

कोर-कसर-संज्ञ स्त्री० १. देव और कमी। २. कमी-बेशी।

कोरमा-संज्ञ पुं० भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा मिलकुल नहीं होता।

कोरहन-संज्ञ पुं० एक प्रकार का धान।

कोरा-वि० [ स्त्री० कोरी ] १. नया। २. खाली। ३. वेदांग। ४. मूल।

संज्ञ पुं० बिना किनारे की रेशमी घोती।

संज्ञ पुं० मोद।

कोरापन-संज्ञ पुं० नवीनता। अद्वैतापन।



खतियौनी-संज्ञा स्त्री० १. खाता । २.

खतियाने का काम ।

खतम-वि० दे० "खतम" ।

खत्री-संज्ञा पुं० [खी० खतरानी] हिंदुओं में एक जाति ।

खदयदाना-क्रि० भ० चपसने का शब्द होना ।

खदाम-संज्ञा स्त्री० खान ।

खदिर-संज्ञा पुं० १. खैर का पेड़ । २. कष्टा ।

खदेरना-क्रि० स० दूर करना ।

खदह, खदर-संज्ञा पुं० खादी । गाढ़ा ।

खद्योत-संज्ञा पुं० १. जुगनू । २. सूर्य ।

खन-वि०-संज्ञा पुं० दे० "खण" ।

खनक-संज्ञा पुं० १. ज़मीन खोदने-वाला । २. खान । ३. भूतत्त्व-शास्त्र ज्ञाननेवाला ।

संज्ञा स्त्री० धातुखंडों के टकराने या यजने का शब्द ।

खनकना-क्रि० भ० खनखनाना ।

खनकाना-क्रि० स० धातुखंड आदि से शब्द उत्पन्न करना ।

खनखनाना-क्रि० भ० खनकना ।

क्रि० स० खनकाना ।

खनना-वि०-संज्ञा पुं० खोदना ।

खनिज-वि० खान से खोदकर निकाला हुआ ।

खपड़ा-संज्ञा पुं० १. पट्टी के आकार का मिट्टी का पका टुकड़ा जो मकान छाने के काम आता है । २. टीकरा ।

३. कलुष की पीठ पर का कड़ा ढक्कन ।

खपड़ी-संज्ञा स्त्री० १. नाँद की तरह का मिट्टी का छोटा घरतन । २. दे० "खोपड़ी" ।

खपड़ैल-संज्ञा स्त्री० दे० "खपरैल" ।

खपत, खपती-संज्ञा स्त्री० १. समाई ।

२. माल की कटती या यिक्री ।

खपना-क्रि० भ० [संज्ञा खपत] १. कटना । २. निभना ।

खपरिया-संज्ञा स्त्री० मूरे रंग का एक खनिज पदार्थ ।

खपरैल-संज्ञा स्त्री० खपड़े से छाई हुई छत ।

खपाना-क्रि० स० १. काम में लाना । २. निभाना ।

खपुष्प-संज्ञा पुं० १. आकाश-कुसुम । २. असंभव पात ।

खप्पर-संज्ञा पुं० १. ससले के आकार का कोई पात्र । २. खोपड़ी ।

खफगी-संज्ञा स्त्री० १. अमसद्यता । २. क्रोध ।

खफा-वि० १. अमसन्न । २. क्रुद्ध ।

खफोफ-वि० १. थोड़ा । २. हलका ।

खयर-संज्ञा स्त्री० १. समाचार । २. खेत । ३. पता ।

खयरदार-वि० होशियार ।

खपरदारी-संज्ञा स्त्री० सावधानी ।

खेयीस-संज्ञा पुं० वह जो हुट्ट और भयंकर हो ।

खुश्त-संज्ञा पुं० [वि० ख़ुश्ती] पागलपन ।

खुश्ती-वि० खनकी ।

खमरना-वि०-संज्ञा पुं० १. मिश्रित करना । २. उथल-पुथल मचाना ।

खम-संज्ञा पुं० टेढ़ापन ।

खमदम-संज्ञा पुं० पुरुषार्थ ।

खमा-संज्ञा स्त्री० दे० "चमा" ।

खमीर-संज्ञा पुं० १. गूँघे हुए आटे का सड़ाव । २. कटहल, अनन्नास आदि का सड़ाव जो तंबाकू में डाला जाता है ।

कोरी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कोरिन ] हिंदू  
जुलाहा ।

कोल-संज्ञा पुं० १. सूअर । २. गोद ।  
३. एक जंगली जाति ।

कोलाहल-संज्ञा पुं० शोर ।

कोली-संज्ञा स्त्री० गोद ।

संज्ञा पुं० कोरी ।

कोल्ह-संज्ञा पुं० दानों से तेल या  
गन्ने से रस निकालने का यंत्र ।

कोविद-वि० [ स्त्री० कोविदा ] पंडित ।

कोविदार-संज्ञा पुं० कचनार ।

कोश-संज्ञा पुं० १. डिब्बा । २.

आवरण । ३. संचित धन । ४. वह  
ग्रंथ जिसमें अर्थ या पर्याय के  
सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों ।

कोशकार-संज्ञा पुं० १. श्याम बनाने-

वाला । २. शब्द-कोश बनानेवाला ।

कोशपाल-संज्ञा पुं० खजाने की रक्षा

करनेवाला ।

कोशल-संज्ञा पुं० १. सरयू या घाघरा

नदी के दोनों तटों पर का देश ।

२. उपर्युक्त देश में बसनेवाली

चण्डिय जाति । ३. अयोध्या नगर ।

कोशागार-संज्ञा पुं० खजाना ।

कोशिश-संज्ञा स्त्री० प्रयत्न ।

कोप-संज्ञा पुं० दे० "कोश" ।

कोपाध्यक्ष-संज्ञा पुं० खजानची ।

कोष्ठ-संज्ञा पुं० १. पेट का भीतरी

हिस्सा । २. भंडार ।

कोष्ठक-संज्ञा पुं० किसी प्रकार की

दीवार, छकीर या और किसी वस्तु

से बिरा स्थान । खाना । कोठा ।

कोष्ठयुद्ध-संज्ञा पुं० कृत्रिमयुद्ध ।

कोष्ठी-संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री ।

कोस-संज्ञा पुं० दूरी की एक नाप ।

दे० मील की दूरी ।

कोसना-क्रि० सं० शाप के रूप में  
गालियाँ देना ।

कोसा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशम ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० कोसिया ] मिट्टी का

बड़ा दीया ।

कोसा-काटी-संज्ञा स्त्री० पददुश्चा ।

कोसिला-संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या" ।

कोहड़ोरी-संज्ञा स्त्री० उर्द की पीठी

और कुम्हड़े के गूदे से बनाई

हुई घरी ।

कोह-संज्ञा पुं० पर्वत ।

क्रोध ।

कोहनी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुहनी" ।

कोहनूर-संज्ञा पुं० भारत की किसी

खान से निकला हुआ एक बहुत

बड़ा प्राचीन और प्रसिद्ध हीरा ।

कोहवर-संज्ञा पुं० वह स्थान या घर

जहाँ विवाह के समय कुल-देवता

स्थापित किए जाते हैं ।

कोहान-संज्ञा पुं० ऊँट की पीठ पर

का डिब्बा या कूबड़ ।

कोहाना-क्रि० अ० रुठना ।

कोहिस्तान-संज्ञा पुं० पहाड़ी देश ।

कोहो-वि० क्रोध करनेवाला ।

वि० पहाड़ी ।

कौंच-संज्ञा स्त्री० केवाँच ।

कौल-संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच" ।

कौंध-संज्ञा स्त्री० बिजली की चमक ।

कौंधना-क्रि० अ० बिजली का

चमकना ।

कौला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का मीठा

नींबू या संगतरा ।

कौश्रा-संज्ञा पुं० दे० "कौचा" ।

कौश्राना-क्रि० अ० १. भौचका

होना । २. अशानक कुछ बड़बड़ा

सठना ।

खमीरा-वि० पुं० [ खी० खमीरी ]  
खमीर घटाकर बनाया या खमीर  
मिलाया हुआ ।

खय-संज्ञा स्त्री० दे० "खय" ।

खयानत-संज्ञा स्त्री० १. घरोहर रखी  
हुई वस्तु न देना अथवा कम देना ।  
२. बेईमानी ।

खयाल-संज्ञा पुं० दे० "ख्याल" ।

खर-संज्ञा पुं० १. गधा । २. खर ।  
३. वृष ।  
वि० कड़ा ।

खरक-संज्ञा पुं० १. बाड़ा । २.  
पशुओं के चरने का स्थान ।

खरकना-क्रि० प्र० १. दे० "खड़-  
कना" । २. सरकना ।

खरका-संज्ञा पुं० तिनका ।

खरग-संज्ञा पुं० दे० "खग्न" ।

खरगोश-संज्ञा पुं० खरहा ।

खरच-संज्ञा पुं० दे० "खर्च" ।

खरचना-क्रि० प्र० १. व्यय करना ।  
२. व्यवहार में लाना ।

खरचा-संज्ञा पुं० दे० १. "खरका" ।  
२. दे० "खर्च" ।

खरतली-वि० १. खरा । २. साफ़ ।

खरदूषण-संज्ञा पुं० खर और दूषण  
नामक राक्षस जो रावण के भाई थे ।

खरधार-संज्ञा पुं० तेज़ धारवाला  
शस्त्र ।

खरव-संज्ञा पुं० सौ अरब की संख्या ।

खरबूजा-संज्ञा पुं० ककड़ी की जाति  
का एक प्रसिद्ध मोल फल ।

खरभरी-संज्ञा पुं० १. शोर । २.  
हलचल ।

खरभराना-क्रि० प्र० १. खरभर  
शब्द करना । २. शोर करना । ३.  
व्याकुल होना ।

खरमास-संज्ञा पुं० दे० "खरवास" ।

खरल-संज्ञा पुं० पाथर की कुँड़ी जि-  
समें श्रोतपथियाँ कुटी जाती हैं । खल ।

खरवास-संज्ञा पुं० [ हि० खर + मास ]  
पूँस और चैत का महीना जय कि  
सूर्य धन और मीन का होता है ।  
( इनमें मांगलिक कार्य करना  
वर्जित है । )

खरसा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का एक-  
वान ।

खरसान-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
सान जिस पर हथियार तेज़ किए  
जाते हैं ।

खरहरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ब्रह्मा० खर-  
हरी ] १. अरहर के डंठलों से बना  
हुआ झाड़ू । २. घोड़े के रोएँ साफ़  
करने के लिये दाँतीदार कधी ।

खरहा-संज्ञा पुं० खरगोश जंतु ।

खरा-वि० १. तेज़ । २. अच्छा । ३.  
सँकेर कड़ा किया हुआ । ४. सच्चा ।  
५. बहुत । अधिक । ज्यादा ।

खराई-संज्ञा स्त्री० खरापन ।

खराद-संज्ञा पुं० एक शीज़ार जिस पर  
घड़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह  
चिकनी और सुडौल की जाती है ।  
संज्ञा स्त्री० गढ़न ।

खरादना-क्रि० प्र० १. खराद पर  
चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ़ और  
सुडौल करना । २. काट-छाँटकर  
सुडौल बनाना ।

खरादी-संज्ञा पुं० खरादनेवाला ।

खरापन-संज्ञा पुं० १. खरा का भाव ।  
२. सत्यता ।

खराब-वि० बुरा ।

खराबी-संज्ञा स्त्री० बुराई ।

खरायँध-संज्ञा स्त्री० १. चार की सी

कौटिल्य-संज्ञा पुं० १. देहापन । २. चाणक्य का एक नाम ।

कौटुविक-वि० कुटुम्ब-संबन्धी ।

कौड़ा-संज्ञा पुं० धड़ी कीड़ी ।

संज्ञा पुं० जाड़े के दिनों में तापने के लिये जलाई हुई धाग ।

कौड़िया-वि० कीड़ी के रंग का ।

संज्ञा पुं० कौड़िला पक्षी ।

काड़ियाला-वि० कीड़ी के रंग का ।

संज्ञा पुं० १. कोकई रंग । २. एक प्रकार का विपैला सर्प । ३.

कौड़िला पक्षी ।

कौड़िला-संज्ञा पुं० मछली खानेवाली एक चिड़िया ।

कौड़ी-संज्ञा स्त्री० १. समुद्र का एक

कीड़ा जो घोघे की तरह एक अस्थि-

कोश के अंदर रहता है और जिसका

अस्थिकोश सबसे कम मूल्य के सिक्के

की तरह काम आता है । २. जंघे,

कान या गले की गिरदी ।

कौराप-संज्ञा पुं० रावस ।

कौतिगर्भ-संज्ञा पुं० दे० "कौतुक" ।

कौतुक-संज्ञा पुं० [ वि० कौतुकी ] १.

कुतूहल । २. आश्चर्य ।

कौतुकिया-संज्ञा पुं० १. कौतुक करने-

वाला । २. विवाह-संबन्ध कराने-

वाला, नाक या पुरोहित ।

कौतुकी-वि० १. कौतुक करनेवाला ।

२. विवाह-संबन्ध करानेवाला ।

कौतूहल-संज्ञा पुं० दे० "कुतूहल" ।

कीन-सर्व० एक प्रश्रववाचक सधैनाम

जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की

विज्ञासा करता है ।

कौपीन-संज्ञा पुं० काष्ठा ।

कौम-संज्ञा स्त्री० वर्षा । जाति ।

कौमार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कौमारी ]

कुमार अवस्था ।

कौमारी-संज्ञा स्त्री० १. किसी पुरुष

की पहली स्त्री । २. पार्वती ।

कौमी-वि० कौम का ।

कौमुदी-संज्ञा स्त्री० १. चांदनी । २.

कुमुदिनी ।

कौमोदी, कौमोदकी-संज्ञा स्त्री०

विष्णु की गदा ।

कौर-संज्ञा पुं० प्रास । निवाला ।

कौरना-वि० स० सेंकना ।

कौरव-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कौरवि ]

कौरवी ] कुरु-वंशज ।

वि० [ स्त्री० कौरवी ] कुरु-संबन्धी ।

कौरवपति-संज्ञा पुं० दुर्योधन ।

कौरी-संज्ञा स्त्री० गोद ।

कौल-संज्ञा पुं० उत्तम कुल में उत्पन्न ।

संज्ञा पुं० कौर ।

कौल-संज्ञा पुं० १. कथन । पाक्य ।

२. प्रतिज्ञा ।

कौवा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कौवी ] १. एक

बड़ा काका पक्षी जो अपने कर्णश

स्वर और चालाकी के लिये प्रसिद्ध

है । काक । २. काइया ।

कौवाल-संज्ञा पुं० कौवाली गानेवाला ।

कौवाली-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का

भगवत्प्रेम-संबन्धी गीत जो सूक्तियों

की मञ्जलियों में होता है । २. इस

धुन में गाई जानेवाली कोई गणज्ञ ।

३. कौवाली का पेशा ।

कौशल-संज्ञा पुं० १. कुशलता । २.

कोशल देश का निवासी ।

कौशलेय-संज्ञा पुं० रामचंद्र ।

कौशल्या-संज्ञा स्त्री० रामचंद्र की

माता ।

गंध । २. मूत्र की सी दुर्गंध ।  
 खरारि-संज्ञा पुं० रामचंद्र ।  
 खरिया-संज्ञा स्त्री० १. घास, भूसा  
 बांधने की पतली रस्सी से घनी हुई  
 जाली । पाली । २. मोली ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया" ।  
 खरियाना-कि० स० १. मोली में  
 डालना । २. हस्तगत करना ।  
 खरिदान-संज्ञा पुं० दे० "खलियान" ।  
 खरी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "खड़िया" ।  
 २. "खली" ।  
 खरीता-संज्ञा पुं० [स्त्री० भस्मा० खरीती]  
 पैली ।  
 खरीद-संज्ञा स्त्री० १. मोल लेने की  
 क्रिया । २. खरीदी हुई चीज़ ।  
 खरीदना-कि० स० मोल लेना ।  
 खरीदार-संज्ञा पुं० मोल लेनेवाला ।  
 खरीफ-संज्ञा स्त्री० वह फसल जो  
 आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय ।  
 खरोच-संज्ञा स्त्री० १. छिलने का  
 चिह्न । खराय । २. एक पकवान ।  
 खरोचना-कि० स० छीलना ।  
 खरोपूरी, खरोपूरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रा-  
 चीन लिपि जो फारसी की तरह दा-  
 हिने से बाएँ को लिखी जाती थी ।  
 खरोटी-संज्ञा स्त्री० दे० "खरोच" ।  
 खरोहा-वि० कुछ नमकीन ।  
 खर्च-संज्ञा पुं० व्यय ।  
 खर्चा-संज्ञा पुं० दे० "खर्च" ।  
 खर्चिला-वि० बहुत खर्च करनेवाला ।  
 खजूर-संज्ञा पुं० खजूर ।  
 खपर-संज्ञा पुं० १. तसजे के आकार  
 का मिट्टी का यस्तन । २. खोपड़ा ।  
 खर्व-वि० १. जिसका थेंग भाग या  
 अपूर्ण हो । २. छोटा ।

संज्ञा पुं० सौ अरब की संख्या ।  
 खर्चा-वि० दे० "खर्चा" ।  
 खर्चा-संज्ञा पुं० वह खंवा कागज़ जिसमें  
 कोई भारी हिसाब या विवरण  
 लिखा हो ।  
 खर्चाटा-संज्ञा पुं० वह शब्द जो सेते  
 समय नाक से निकलता है ।  
 खल-वि० १. फर । २. दुष्ट ।  
 खलक-संज्ञा पुं० दुनिया ।  
 खलड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "खाल" ।  
 खलता-संज्ञा स्त्री० दुष्टता ।  
 खलना-कि० भ० घुरा लगना ।  
 खलवल-संज्ञा स्त्री० हलचल ।  
 खलवलाना-कि० भ० १. खोजना ।  
 २. विचलित होना ।  
 खलवली-संज्ञा स्त्री० १. हलचल ।  
 २. घबराहट ।  
 खलल-संज्ञा पुं० रोक ।  
 खलास-वि० १. छूटा हुआ । २.  
 समाप्त ।  
 खलासी-संज्ञा स्त्री० मुक्ति ।  
 संज्ञा पुं० जहाज़ पर का नौकर ।  
 खलाल-संज्ञा पुं० दाँव खोदने का  
 खरका ।  
 खलित-वि० १. चंचल । २.  
 गिरा हुआ ।  
 खलियान-संज्ञा पुं० १. वह स्थान  
 जहाँ फसल काटकर रखी और घर-  
 साई जाती है । २. ढेर ।  
 कि० स० खाली करना ।  
 खली-संज्ञा स्त्री० तेल निकाल लेने  
 पर तेबहन की बची हुई सीढ़ी ।  
 खलीता-संज्ञा पुं० दे० "खरीता" ।  
 खलीफा-संज्ञा पुं० १. अभ्यर्थ । २.  
 कोई बड़ा व्यक्ति ।

कौशांधी-संज्ञा स्त्री० एक बहुत प्राचीन नगरी जिसे कुरु के पुत्र कौशांध ने बसाया था। वस्तुपट्टन।  
 कौशिक-संज्ञा पुं० १. ईद्र। २. विश्वामित्र। ३. कोषाध्यक्ष।  
 कौशिकी-संज्ञा स्त्री० चंडिका।  
 कौशेय-वि० रेशमी।  
 कौपीतकी-संज्ञा स्त्री० ऋग्वेद की एक शाखा।  
 कौस्तुभ-संज्ञा पुं० पुराणानुसार समुद्र से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षःस्थल पर पहने रहते हैं।  
 कथा-सर्व० एक प्रश्नवाचक शब्द जो प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है।  
 वि० कितना ?  
 कि० वि० किस लिये ?  
 अभ्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द।  
 कयारी-संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी"।  
 कयो-कि० वि० किस कारण ?  
 क्रंदन-संज्ञा पुं० १. रोना। २. युद्ध के समय वीरों का आह्वान।  
 क्रम-संज्ञा पुं० १. शैली। २. सिल-सिला।  
 क्रमनासा-संज्ञा स्त्री० दे० "कर्म-नाशा"।  
 क्रमशः-कि० वि० १. सिलसिलेवार।  
 २. धीरे धीरे।  
 क्रमिक-कि० वि० क्रम-युक्त।  
 क्रय-संज्ञा पुं० खरीदने का काम।  
 क्रयी-संज्ञा पुं० मोल लेनेवाला।  
 क्रय्य-वि० जो बिक्री के लिये रखा जाय।  
 कृत्य-संज्ञा पुं० मांस।  
 कृत्याद-संज्ञा पुं० १. मांस खानेवाला जीव। २. राक्षस।

क्रांत-वि० १. दबा या ढका हुआ।  
 २. जिस पर आक्रमण हुआ हो।  
 क्रांति-संज्ञा स्त्री० उलट-फेर।  
 क्रांतिमंडल-संज्ञा पुं० वह वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।  
 क्रांतिवृत्त-संज्ञा पुं० सूर्य का मार्ग।  
 किचयना-संज्ञा पुं० चांद्रायण व्रत।  
 किमि-संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।  
 किमिजा-संज्ञा स्त्री० खाह।  
 क्रियमाण-संज्ञा पुं० वह जो किया जा रहा हो।  
 क्रिया-संज्ञा स्त्री० १. कर्म। २. व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय। ३. नित्यकर्म।  
 क्रियाचतुर-संज्ञा पुं० क्रिया या घात में चतुर नायक।  
 क्रियानिष्ठ-वि० संभ्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करनेवाला।  
 क्रियार्थ-संज्ञा पुं० वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि-वाक्य।  
 क्रियावान्-वि० कर्मनिष्ठ।  
 क्रिया-विशेषण-संज्ञा पुं० आधुनिक व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध हो।  
 क्रिस्तान-संज्ञा पुं० ईसाई।  
 क्रिस्तानी-वि० ईसाइयों का।  
 क्रिटी-संज्ञा पुं० दे० "किरीट"।  
 क्रोडा-संज्ञा स्त्री० खेल-कूद।  
 क्रीत-वि० खरीदा हुआ।  
 क्रुद्ध-वि० क्रोध में भरा हुआ।  
 कूर-वि० [ स्त्री० कूरा ] १. निर्दय।  
 जालिम। २. तीक्ष्ण।

खल्लड़-संज्ञा पुं० १. ओपधि कूटने का खल। २. चमड़ा।

खल्व-संज्ञा पुं० वह रोग जिसके कारण सिर के घाल झड़ जाते हैं।

खलवाट-संज्ञा पुं० गंज रोग जिसमें सिर के घाल झड़ जाते हैं।

वि० गंजा।

खधाना-क्रि० स० दे० "खिलाना"।

ख्वास-संज्ञा पुं० [खी० खवासिन] राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार।

ख्वासी-संज्ञा स्त्री० १. खिदमतगारी। २. नौकरी।

खवैया-संज्ञा पुं० खानेवाला।

खस-संज्ञा स्त्री० गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़।

खसकंता-संज्ञा स्त्री० खसकने का काम।

खसकना-क्रि० भ० सरकना।

खसकाना-क्रि० स० हटाना।

खसखस-संज्ञा स्त्री० पोस्ते का दाना।

खसखसा-वि० भुरभुरा।

खसखाना-संज्ञा पुं० खस की दृष्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।

खसखास-संज्ञा स्त्री० दे० "खसखस"।

खसना-क्रि० भ० खसकना।

खसम-संज्ञा पुं० १. पति। २. स्वामी।

खसरा-संज्ञा पुं० हिसाब-किताब का कषा चिट्ठा।

संज्ञा पुं० एक प्रकार की खुजली।

खसाना-क्रि० स० गिराना।

खसिया-वि० १. बधिया। २. नपुंसक। ३. धकरा।

खसी-संज्ञा पुं० धकरा।

खसोट-संज्ञा स्त्री० धुरी तरह उखाड़ने या नाचने की क्रिया।

खसोटना-क्रि० स० १. नाचना। २. छीनना।

खसोटी-संज्ञा स्त्री० दे० "खसोट"।

खस्ता-वि० भुरभुरा।

खस्सी-संज्ञा पुं० धकरा।

वि० बधिया।

ख्वा-संज्ञा पुं० दे० "खान"।

ख्वाखरा-वि० सुराखदार।

ख्वाग-संज्ञा पुं० कटा।

संज्ञा स्त्री० घुटि। कमी।

ख्वागना-क्रि० भ० कम होना।

ख्वागड़, ख्वागड़ा-वि० १. जिसके ख्वाग हो। २. धक्काड़।

ख्वागी-संज्ञा स्त्री० कमी।

ख्वाचा-संज्ञा स्त्री० १. संधि। २. खींचकर घनाया हुआ निशान।

ख्वाचा-संज्ञा पुं० [खी० खोचो] कपास।

ख्वाड़-संज्ञा स्त्री० कपड़ों का कुर।

ख्वाड़ना-क्रि० स० १. तोड़ना। २. चपाना।

ख्वाड़ा-संज्ञा पुं० खड्ग (भय)। संज्ञा पुं० भाग।

ख्वाभा-संज्ञा पुं० खंभा।

ख्वाचा-संज्ञा पुं० चौड़ी खाई।

ख्वासना-क्रि० भ० कफ या और कोई अटक की हुई चीज़ निकालने के लिये वायु को शब्द के साथ कंठ से बाहर निकालना।

ख्वासी-संज्ञा स्त्री० १. कफ अथवा अन्य पदार्थ को बाहर फेंकने के लिये शब्द के साथ हवा निकालने की क्रिया।

२. अधिक खांसने का रोग।

खाई-संज्ञा स्त्री० वह नहर जो किसी

प्ररता-संज्ञा स्त्री० १. निर्दयता । २. दुष्टता ।

प्रता-संज्ञा पुं० खरीदनेवाला ।

प्रोङ्-संज्ञा पुं० १ आलिङ्गन में दोनों बांहों के बीच का भाग । २. गोद ।

प्रोङ्गपत्र-संज्ञा पुं० वह पत्र जो किसी पुस्तक या समाचारपत्र में उसकी पूर्ति के लिये ऊपर से लगाया जाय । परिशिष्ट ।

प्रोध-संज्ञा पुं० कोप । गुस्सा ।

प्रोधित-वि० कुपित ।

प्रोधी-वि० [ स्त्री० प्रोधिनी ] प्रोध करनेवाला ।

प्रोश-संज्ञा पुं० कोस ।

प्रौच-संज्ञा पुं० फर्कल नामक पक्षी ।

प्रांत-वि० थका हुआ ।

प्रांति-संज्ञा स्त्री० १. परिधम । २. पकावट ।

क्लिष्ट-वि० १. दुखी । २. कठिन ।

क्लिष्टता-संज्ञा स्त्री० क्लिष्ट का भाव ।

क्लिष्टत्व-संज्ञा पुं० क्लिष्ट का भाव ।

प्लीव-वि० पुं० १. नपुंसक । २. डरपोक ।

प्लीवता-संज्ञा स्त्री० प्लीव का भाव ।

प्लीवत्व-संज्ञा पुं० नपुंसकता ।

प्लेद-संज्ञा पुं० १. गीजापन । २. पसीना ।

प्लेदक-संज्ञा पुं० पसीना लानेवाला ।

प्लेश-संज्ञा पुं० दुःख । व्याधि । वेदना ।

प्लेशित-वि० दुःखित ।

पवचित्-क्रि० वि० कोई ही ।

पवणित-वि० शब्द करता हुआ ।

पवाथ-संज्ञा पुं० काढ़ा ।

पवारपन-संज्ञा पुं० कुमारपन ।

पवारा-संज्ञा पुं० वि० [ स्त्री० पारी ] जिसका विवाह न हुआ हो ।

पवारापन-संज्ञा पुं० दे० "पवारपन" ।

प्रांतव्य-वि० क्षम्य ।

प्राण-संज्ञा पुं० [ वि० प्राणिक ] १. काल या समय का सबसे छोटा भाग ।

२. अवसर । ३. समय ।

प्राणप्रमा-संज्ञा स्त्री० विजली ।

प्राणभंगुर-वि० शीघ्र या प्राण भर में नष्ट होनेवाला । अनित्य ।

प्राणिक-वि० प्राणभंगुर ।

प्रात-वि० प्रातः जगा हुआ ।

संज्ञा पुं० १. प्रातः । २. मारना ।

प्रात-विप्रात-वि० प्रायल ।

प्रातमण-संज्ञा पुं० कटने या चोट लगने के बाद पका हुआ स्थान ।

प्राति-संज्ञा स्त्री० १. हानि । २. नाश ।

प्रात्र-संज्ञा पुं० १. बल । २. चरित्र ।

प्रात्रकर्म-संज्ञा पुं० चरित्रोचित कर्म ।

प्रात्रधर्म-संज्ञा पुं० चरित्रों का धर्म ।

प्रात्रपति-संज्ञा पुं० राजा ।

प्रात्रयोग-संज्ञा पुं० ज्योतिष में राजयोग ।

प्रात्रवेद-संज्ञा पुं० धनुर्वेद ।

प्रात्रिय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रात्रिया, प्रात्रिया ] हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण ।

प्रात्री-संज्ञा पुं० दे० "चरित्र" ।

प्राणक-वि० निर्लज्ज ।

संज्ञा पुं० १. दिगंधर यती । २. वैद्व सन्यासी ।

क्षपा-संज्ञा स्त्री० रात ।

क्षपाकर-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. कपूर ।

क्षपाचर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० क्षपाचरी ] निशाचर ।



गाँव या महल आदि के चारों ओर  
रक्षा के लिये खोदी गई हो।

खाऊ-वि० पेट।

खाक-संज्ञा स्त्री० १. धूल। २. कुड़  
नहीं।

खाका-संज्ञा पुं० १. टाँचा। २. मसौदा।

खाकी-वि० भूरा।

खागना-क्रि० प्र० खुभना।

खाज-संज्ञा स्त्री० खुजली।

खाजा-संज्ञा पुं० १. भक्ष्य वस्तु। २.  
एक प्रकार की मिठाई।

खाजी-संज्ञा स्त्री० भोजन की वस्तु।

खाट-संज्ञा स्त्री० चारपाई।

खाड़-संज्ञा पुं० गड़ड़ा।

खाड़ी-संज्ञा स्त्री० समुद्र का वह भाग  
जो तीन ओर स्थल से घिरा हो।

खात-संज्ञा पुं० १. खोदना। २.  
तालाब। ३. गड़ड़ा।

खातमा-संज्ञा पुं० १. अंत। २. मृत्यु।

खाता-संज्ञा पुं० बखार।

संज्ञा पुं० १. वह घड़ी या किताब  
जिसमें मितिवार और ब्योरेवार हि-  
साब लिखा हो। २. विभाग।

खातिर-संज्ञा स्त्री० आदर।

† अर्थ० वास्ते।

खातिरखाह-अर्थ०, क्रि० वि० इच्छा-  
नुसार।

खातिरजमा-संज्ञा स्त्री० सेतोप।

खातिरदारी-संज्ञा स्त्री० सम्मान।

खातिरी-संज्ञा स्त्री० १. सम्मान। २.  
तसल्ली।

खाद-संज्ञा स्त्री० पौध।

खादक-वि० खानेवाला।

खादन-संज्ञा पुं० [ वि० खादित, खान,  
खादनीय ] भोजन।

खादर-संज्ञा पुं० नीची जमीन।

खादित-वि० खाया हुआ।

खादी-वि० खानेवाला।

संज्ञा स्त्री० खहर।

खादुक-वि० हिंसाळ।

खाद्य-वि० खाने योग्य।

संज्ञा पुं० भोजन।

खाद्यु-संज्ञा पुं० भोज्य पदार्थ।

खान-संज्ञा पुं० भोजन।

संज्ञा स्त्री० १. खानि। २. खानाना।

संज्ञा पुं० १. सरदार। २. पठानों की  
बपाधि।

खानक-संज्ञा पुं० खान खोदनेवाला।

खानगी-वि० धरेलू।

संज्ञा स्त्री० केवल कसब करानेवाली।  
तुच्छ बेरया।

खानदान-संज्ञा पुं० वंश।

खानदानी-वि० १. ऊँचे वंश का।  
२. पुरतनी।

खान-पान-संज्ञा पुं० १. अन्न-पानी।  
२. खाना-पीना।

खानसामा-संज्ञा पुं० धौलरेजों, मुसल-  
मानों आदि का भंडारी या रसोइया।

खाना-क्रि० प्र० भोजन करना।

खाना-संज्ञा पुं० १. घर। २. बेट।

खानातलाशी-संज्ञा स्त्री० किसी खोई  
या चुराई हुई चीज के लिये मकान  
के अंदर खान-खीन करना।

खानायदोश-वि० जिसका घर-घार  
न हो।

खानि-संज्ञा स्त्री० १. दे० "खान"।  
२. ओर। ३. प्रकार।

खानिक-संज्ञा स्त्री० दे० "खानि"।

खाय-संज्ञा पुं० दे० "खाय"।

खाम-संज्ञा पुं० १. चिट्ठी का लिफाफा।  
२. संधि।

० वि० घटा हुआ।

क्षपानाथ-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
क्षम-वि० योग्य ।  
क्षमा पुं० बल ।  
क्षमणीय-वि० क्षमा करने योग्य ।  
क्षमता-संज्ञा स्त्री० योग्यता ।  
क्षमा-संज्ञा स्त्री० मुद्राफ्री ।  
क्षमालु-वि० क्षमाशील ।  
क्षमावान्-वि० पुं० [ स्त्री० क्षमावती ]  
क्षमा करनेवाला ।  
क्षमाशील-वि० माफ करनेवाला ।  
क्षमितव्य-वि० क्षमा करने योग्य ।  
क्षमी-वि० माफ करनेवाला ।  
वि० समर्थ ।  
क्षम्य-वि० माफ करने योग्य ।  
क्षय-संज्ञा पुं० [ भाव० क्षयित्व ] १.  
ह्रास । २. प्रलय । ३. यक्ष्मा नामक  
रोग ।  
क्षयिष्णु-वि० क्षय या नष्ट होनेवाला ।  
क्षयी-वि० १ क्षय होनेवाला । २.  
जिसे क्षय या यक्ष्मा रोग हो ।  
संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
संज्ञा स्त्री० यक्ष्मा ।  
क्षय्य-वि० क्षय होने के योग्य ।  
क्षर-वि० नाशवान् ।  
संज्ञा पुं० १. जल । २. मेघ ।  
क्षरण-संज्ञा पुं० रस रसकर चूना ।  
क्षांत-वि० [ स्त्री० क्षांता ] क्षमा करने-  
वाला ।  
क्षाति-संज्ञा स्त्री० १. सहिष्णुता ।  
२. क्षमा ।  
क्षात्र-वि० क्षत्रियों का ।  
संज्ञा पुं० क्षत्रियपन ।  
क्षाम-वि० [ स्त्री० क्षामा ] क्षीण ।  
क्षार-संज्ञा पुं० १. खार । २. नमक ।  
३. राख ।

वि० १. खरखशील । २. खारा ।  
क्षारलवण-संज्ञा पुं० खारी नमक ।  
क्षिति-संज्ञा स्त्री० पृथिवी ।  
क्षितिज-संज्ञा पुं० दृष्टि की पहुँच पर  
वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश  
और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान  
पड़ते हैं ।  
क्षिप्त-वि० १. फेंका हुआ । २.  
पतित । ३. चंचल ।  
क्षिप्र-वि० वि० शीघ्र ।  
वि० तेज ।  
क्षिप्रहस्त-वि० शीघ्र या तेज काम  
करनेवाला ।  
क्षीण-वि० दुबला-पतला ।  
क्षीण चंद्र-संज्ञा पुं० कृष्ण पक्ष की  
अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी  
तक का चंद्रमा ।  
क्षीणता-संज्ञा स्त्री० १. निर्बलता ।  
२. दुबलापन ।  
क्षीर-संज्ञा पुं० १. दूध । २. पानी ।  
३. खीर ।  
क्षीरज-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २.  
शंख । ३. कमल । ४. वही ।  
क्षीरजा-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।  
क्षीरधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।  
क्षीरनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।  
क्षीरसागर-संज्ञा पुं० पुराणानुसार  
सात समुद्रों में से एक, जो दूध से  
भरा हुआ माना जाता है ।  
क्षीरोद-संज्ञा पुं० क्षीर समुद्र ।  
क्षुरण-वि० १. क्षम्यस्त । २. खंडित ।  
क्षुत्-संज्ञा स्त्री० भूख ।  
क्षुद्र-वि० १. कृष्ण । २. नीच ।  
३. अल्प ।  
क्षुद्रघंटिका-संज्ञा स्त्री० १. घुँघरुदार  
करघनी । २. घुँघरू ।

खामखाह, खामखाही-कि० वि०  
दे० "ख्वाहमख्वाह" ।

खामना-कि० स० किसी पात्र का  
मुँह बंद करना ।

खामोश-वि० चुप ।

खामोशी-संज्ञा स्त्री० मौन ।

खार-संज्ञा पुं० १. दे० "चार" । २.  
सजी । ३. खोना । ४. धूल ।

खार-संज्ञा पुं० १. कटा । २. डाह ।

खारा-वि० पुं० [ स्त्री० खारी ] चार  
या नमक के स्वाद का ।

संज्ञा पुं० १. जालीदार पैदा । २.  
भाषा ।

खारिक-संज्ञा पुं० खेहारा ।

खारिज-वि० १. निकाला हुआ । २.  
मिन्न । ३. जिस ( अभियोग ) की  
सुनाई न हो ।

खारिश-संज्ञा स्त्री० खुजली ।

खारी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का चार  
खण्ड ।

वि० जिसमें खार हो ।

खारुआ, खारुआ-संज्ञा पुं० १. छाल  
से बना हुआ एक प्रकार का रंग ।  
२. इस रंग से रंगा हुआ मोटा  
कपड़ा ।

खाल-संज्ञा स्त्री० चमड़ा ।

संज्ञा स्त्री० नीची भूमि ।

खालसा-वि० १. जिस पर केवल  
एक का अधिकार हो । २.  
राज्य का ।

संज्ञा पुं० सिकखों की एक विशेष  
मंडली ।

खाला-वि० [ स्त्री० खाली ] नीचा ।

खाला-संज्ञा स्त्री० मौसी ।

खालिस-वि० शुद्ध ।

खाली-वि० १. जो भरा न हो ।

२. विहीन । ३. व्यर्थ ।

कि० वि० सिफ़ ।

खादि-संज्ञा पुं० १. पति । २.  
मालिक ।

खास-वि० १. मुख्य । २. आत्मीय ।  
३. स्वयं ।

खासगी-वि० निज का ।

खासा-वि० पुं० [ स्त्री० खासी ] १.  
अच्छा । २. स्वस्थ । ३. सुंदर ।  
४. भरपूर ।

खासियत-संज्ञा स्त्री० १. स्वभाव ।  
२. सिफ़त ।

खिँचना-कि० प्र० १. घसीटा जाना ।  
२. तनना । ३. प्रवृत्त होना । ४.  
चित्रित होना ।

खिँचवाना-कि० स० खींचने का  
काम दूसरे से कराना ।

खिँचाई-संज्ञा स्त्री० १. खींचने की  
क्रिया । २. खींचने की मजदूरी ।

खिँचाना-कि० स० दे० "खिँच-  
वाना" ।

खिँचाव-संज्ञा पुं० "खिँचना" का  
भाव ।

खिँडाना-कि० स० छितराना ।

खिन्नड़वार-संज्ञा पुं० मकर-संक्रांति ।

खिचड़ी-संज्ञा स्त्री० १. एक में मिलाया  
या पकाया हुआ दाल और चावल ।  
२. एक ही में मिले हुए दो या  
अधिक प्रकार के पदार्थ । ३. मकर  
संक्रांति ।

वि० मिला-जुला ।

खिजलाना-कि० प्र० चिढ़ना ।

कि० स० चिढ़ाना ।

खिज्ञाय-संज्ञा पुं० सफेद धालों को

जुद्धता-संज्ञा स्त्री० नीचता ।  
 जुद्धप्रकृति-वि० शोड़े या खोटे  
 स्वभाववाला ।  
 जुद्धबुद्धि-वि० दुष्ट या नीच बुद्धि-  
 वाला ।  
 जुद्धाशय-वि० नीच-प्रकृति ।  
 जुधा-संज्ञा स्त्री० [वि० क्षुधित, क्षुण्ण]  
 भूख ।  
 जुधातुर-वि० भूखा ।  
 जुधावत-वि० दे० "जुधावान्" ।  
 जुधावान्-वि० [ स्त्री० जुधावती ]  
 भूखा ।  
 क्षुधित-वि० भूखा ।  
 क्षुप-संज्ञा पुं० वैधा ।  
 क्षुब्ध-वि० १. चंचल । २. व्याकुल ।  
 क्षुभित-वि० क्षुब्ध ।  
 क्षुर-संज्ञा पुं० १. क्षुरा । २. पशुओं के  
 पाँव का छुर ।  
 क्षुरम्-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का  
 पाण । २. क्षुरपा ।  
 क्षुरिका-संज्ञा स्त्री० १. क्षुरी । २. एक  
 यजुर्वेदीय वपनिपद् ।  
 क्षुरी-संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षुरिनी] १. नाई ।  
 २. वह पशु जिसके पाँव में छुर हो ।  
 संज्ञा स्त्री० क्षुरी ।  
 क्षेत्र-संज्ञा पुं० वह स्थान जो रेखाओं  
 से घिरा हुआ हो ।  
 क्षेत्रगणित-संज्ञा पुं० क्षेत्रों के मापने  
 और उनका क्षेत्रफल निकालने की  
 विधि बतानेवाला गणित ।  
 क्षेत्रज्ञ-संज्ञा पुं० १. जीवात्मा । २.  
 परमात्मा । ३. किसान ।  
 वि० जानकार ।  
 क्षेत्रपति-संज्ञा पुं० १. खेतिहर । २.

जीवात्मा । ३. परमात्मा ।  
 क्षेत्रपाल-संज्ञा पुं० १. खेत का रख-  
 वाला । २. क्षीरपाल ।  
 क्षेत्रफल-संज्ञा पुं० रकबा ।  
 क्षेत्रविद्-संज्ञा पुं० जीवात्मा ।  
 क्षेत्री-संज्ञा पुं० खेत का मालिक ।  
 क्षेत्र-संज्ञा पुं० फेंकना ।  
 क्षेत्रक-वि० १. फेंकनेवाला । २.  
 मिश्रित ।  
 संज्ञा पुं० ऊपर से या पीछे से मिलाया  
 हुआ श्रृंग ।  
 क्षेत्रण-संज्ञा पुं० फेंकना ।  
 क्षेत्रफरी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की  
 चीज जिसका गला सफेद होता है ।  
 २. एक देवी ।  
 क्षेत्र-संज्ञा पुं० १. क्षुरा । २. कुशल ।  
 क्षौणि-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।  
 क्षौणिप-संज्ञा पुं० राजा ।  
 क्षौणी-संज्ञा स्त्री० दे० "क्षौणि" ।  
 क्षौम-संज्ञा पुं० [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १.  
 विचलता । २. व्याकुलता । ३. रंज ।  
 क्षौमण्य-वि० क्षोभित करनेवाला ।  
 संज्ञा पुं० काम के पाँच भागों में से  
 एक ।  
 क्षोभित-वि० १. व्याकुल । २. भय-  
 भीत । ३. क्रुद्ध ।  
 क्षोमी-वि० व्याकुल ।  
 क्षोम-संज्ञा पुं० दे० "क्षोम" ।  
 क्षौणि, क्षौणी-संज्ञा स्त्री० पृथिवी ।  
 क्षौम-संज्ञा पुं० वज्र ।  
 क्षौर-संज्ञा पुं० हजामत ।  
 क्षौरिक-संज्ञा पुं० नाई ।  
 चमा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

काला करने की औपधि ।

खिम्भ-संज्ञा स्त्री० दे० "खीम्भ",  
"खीज" ।

खिम्भना-कि० अ० दे० "खीजना" ।

खिम्भाना-कि० स० चिढ़ाना ।

खिड़की-संज्ञा स्त्री० खरोखा ।

खिताय-संज्ञा पुं० पदवी ।

खिदमत-संज्ञा स्त्री० सेवा ।

खिन्न-वि० बढ़ासीन ।

खिपना-कि० अ० १. खपना । २.  
निमग्न होना ।

खियाना-कि० अ० रगड़ से घिस  
जाना ।

† कि० वि० दे० "खिलाना" ।

खिरनी-संज्ञा स्त्री० एक ऊँचा पेड़  
और उसके फल जो खाए जाते हैं ।

खिराज-संज्ञा पुं० कर ।

खिलअत-संज्ञा स्त्री० राजा की और  
से दी गई उपाधि या उपहार ।

खिलकौपी-संज्ञा स्त्री० खिलवाड़ ।

खिलखिलाना-कि० अ० खिल खिल  
शब्द करके हँसना । जोर से हँसना ।

खिलना-कि० अ० १. विकसित  
होना । २. प्रसन्न होना ।

खिलचत-संज्ञा स्त्री० एकत ।

खिलवाड़-संज्ञा पुं० दे० "खेबवाड़" ।

खिलयाना-कि० स० दूसरे से भोजन  
कराना ।

कि० स० प्रकुलित कराना ।

कि० स० दे० "खेबवाना" ।

खिलाई-संज्ञा स्त्री० खाने या खिलाने  
का काम ।

संज्ञा स्त्री० यह दाईं या मझदूरनी जो  
घाँों को खेलाती हो ।

खिलाड़ी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० खिलाड़िन ]  
खेलेवाला ।

खिलाना-कि० स० खेल करना ।

कि० स० भोजन कराना ।

कि० स० विकसित करना ।

खिलाफ-वि० विरुद्ध ।

खिलौना-संज्ञा पुं० कोई मूर्ति जिससे  
बालक खेलते हैं ।

खिल्ली-संज्ञा स्त्री० हँसी ।

† संज्ञा स्त्री० १. पान का चीड़ा । २.  
कीज ।

खिसकना-कि० अ० दे० "खसकना" ।

खिसाना-कि० अ० दे० "खिसि-  
याना" ।

खिसारा-संज्ञा पुं० घाटा ।

खिसियाना-कि० अ० १. शरमाना ।  
२. खफा होना ।

खिसी-संज्ञा स्त्री० खज्जा ।

खिसौहाँ-वि० १. खजित सा । २.  
कुढ़ा या रिसाया सा ।

खोंच-संज्ञा स्त्री० खोंचना का भाव ।

खोंच-तान-संज्ञा स्त्री० खोंचाखोंची ।

खाचना-कि० स० [ प्रे० खिचवाना ]  
१. घसीटना । २. पंचना । ३. भा-  
कपित करना । ४. चिघ्रित करना ।

खोंचाखोंची, खोंचातानी-संज्ञा स्त्री०  
दे० "खोंचतान" ।

खीज-संज्ञा स्त्री० खुँकलाहट ।

खीजना-कि० अ० खुँकलाना ।

खीम्भ-संज्ञा स्त्री० दे० "खीज" ।

खीम्भना-कि० अ० दे० "खीजना" ।

खीन-वि० चीथ ।

खीर-संज्ञा स्त्री० दूध में पकाया हुआ  
चावल ।

खीरा-संज्ञा पुं० ककड़ी की जाति का  
एक लंबा फल ।

खील-संज्ञा स्त्री० जावा ।

† संज्ञा स्त्री० दे० "कीज" ।

ख-हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कर्ण का दूसरा अक्षर ।  
 खंख-वि० १. छुछा । २. बजाइ ।  
 खंखरा-संज्ञा पुं० तबिये का बड़ा देग जिसमें चावल आदि पकाया जाता है ।  
 वि० जिसमें बहुत से छेद हों ।  
 खंखार-संज्ञा पुं० दे० "खंखार" ।  
 खंग-संज्ञा पुं० १. तखवार । २. गंडा ।  
 खंगहा-वि० जिसे खंग या निकले हुए दाँत हों ।  
 संज्ञा पुं० गैंडा ।  
 खंगालना-क्रि० स० १. थोड़ा घोना ।  
 २. खाली कर देना ।  
 खंगी-संज्ञा स्त्री० कमी ।  
 खंघारना-क्रि० स० दे० "खंगालना" ।  
 खंचना-क्रि० प्र० चिह्नित होना ।  
 खंचाना-क्रि० स० १. चिह्न बनाना ।  
 २. जख्मी जख्मी लिखना ।  
 खंजड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "खंजरी" ।  
 खंजन-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् से लेकर शीत काल तक दिखाई देता है ।  
 खंजर-संज्ञा पुं० कटार ।  
 खंजरी-संज्ञा स्त्री० डफली की तरह का एक छोटा बाजा ।  
 खंजरीट-संज्ञा पुं० खंजन ।  
 खंड-संज्ञा पुं० १. भाग । २. देश ।  
 ३. चीनी ।  
 वि० १. अपूर्ण । २. छोटा ।  
 खंडन-संज्ञा पुं० [वि० खंडनीय, खंडित] १. भंजन । २. किसी बात को अर्थ प्रमाणित करना ।

खंडनीय-वि० १. तोड़ने फोड़ने लायक । २. खंडन करने योग्य ।  
 खंडपरशु-संज्ञा पुं० १. महादेव । २. विष्णु । ३. परशुराम ।  
 खंडपुरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की भरी हुई मीठी पुरी ।  
 खंडवानी-संज्ञा स्त्री० खाँड़ का रस । शरयत ।  
 खंडसाल-संज्ञा स्त्री० खाँड़ या शकर बनाने का कारखाना ।  
 खंडहर-संज्ञा पुं० किसी दूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग ।  
 खंडित-वि० १. टूटा हुआ । २. अपूर्ण ।  
 खंडिया-संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा ।  
 खंडौरा-संज्ञा पुं० मिसरी का छड्डू । थोड़ा ।  
 खंता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० खंती ] १. कुदाल । २. फावड़ा ।  
 खंदक-संज्ञा स्त्री० १. शहर या किले के चारों ओर की खाई । २. बड़ा गड्ढा ।  
 खंदा-संज्ञा पुं० खोदनेवाला ।  
 खंघवाना-क्रि० स० खाली कराना ।  
 खंम-संज्ञा पुं० दे० "खंभा" ।  
 खंभा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० खंभिया ] १. स्तंभ । २. बड़ी लाट । पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा ।  
 खंभार-संज्ञा पुं० १. अंदेश । २. डर ।  
 खंभिया-संज्ञा स्त्री० छोटा पतला खंभा ।  
 ख-संज्ञा पुं० आसमान ।  
 खकखा-संज्ञा पुं० कूहकहा ।

खीला—संज्ञा पुं० काँटा।  
 खीली—संज्ञा स्त्री० पान का बीड़ा।  
 खीसा—वि० जट।  
 संज्ञा स्त्री० १. अप्रसन्नता। २. क्रोध।  
 संज्ञा स्त्री० खजा।  
 खीसा—संज्ञा पुं० [ स्त्री० अत्था० खीसी ]  
 पैला।  
 खुख—वि० खाली।  
 खुखड़ी—संज्ञा स्त्री० १. तक्रुप पर चढ़ा-  
 कर लपेटा हुआ सूत या ऊन। २.  
 नेपाली छुरी।  
 खुगीर—संज्ञा पुं० चारजामा।  
 खुचर, खुचुर—संज्ञा स्त्री० झूठ सूट  
 अवगुण दिखलाने का कार्य।  
 खुजलाना—क्रि० स० खुजली मिटाने  
 के लिये नख आदि को श्रृंग पर  
 फेरना। सहलाना।  
 क्रि० अ० किसी श्रृंग में सुरसुरी या  
 खुजली मालूम होना।  
 खुजलाहट—संज्ञा स्त्री० सुरसुरी। खु-  
 जली।  
 खुजली—संज्ञा स्त्री० १. खुजलाहट।  
 २. एक रोग जिसमें शरीर बहुत  
 खुजलाता है।  
 खुजाना—क्रि० स०, क्रि० अ० दे०  
 "खुजलाना"।  
 खुटका—संज्ञा स्त्री० खटका।  
 खुटकना—क्रि० स० किसी वस्तु को  
 ऊपर से तोड़ या मोच लेना।  
 खुटका—संज्ञा पुं० दे० "खटका"।  
 खुटचाल—संज्ञा स्त्री० १. दुष्टता।  
 २. खराब चाल-चलन।  
 खुटचाली—वि० १. दुष्ट। २. बद-  
 चलन।  
 खुटना—क्रि० अ० खुलना।  
 क्रि० अ० समाप्त होना।

खुटपन, खुटपना—संज्ञा पुं० खोटापन।  
 खुटाई—संज्ञा स्त्री० खोटापन।  
 खुट्टी, खुट्टी—संज्ञा स्त्री० १. पाखाने  
 में पैर रखने के पायदान। २. पाखाना  
 फिरने का गड्ढा।  
 खुत्थी, खुत्थी—संज्ञा स्त्री० १. खूँथी।  
 २. घाती।  
 खुद—अव्य० स्वयं।  
 खुदगरज—वि० स्वार्थी।  
 खुदगरजी—संज्ञा स्त्री० स्वार्थपरता।  
 खुदना—क्रि० अ० खोदा जाना।  
 खुदरा—संज्ञा पुं० फुटकर चीज़।  
 खुदवाई—संज्ञा स्त्री० खुदवाने की  
 क्रिया, भाव या मजदूरी।  
 खुदवाना—क्रि० स० खोदने का काम  
 कराना।  
 खुदा—संज्ञा पुं० ईश्वर।  
 खुदाई—संज्ञा स्त्री० १. ईश्वरता।  
 २. सृष्टि।  
 खुदाई—संज्ञा स्त्री० खोदने का भाव,  
 काम या मजदूरी।  
 खुदी—संज्ञा पुं० अहंकार।  
 खुद्दी—संज्ञा स्त्री० चावल, दाल आदि  
 के बहुत छोटे छोटे टुकड़े।  
 खुनखुना—संज्ञा पुं० धुनधुना। झुन-  
 झुना।  
 खुनस—संज्ञा स्त्री० [ वि० खुनसी ]  
 क्रोध।  
 खुनसाना—क्रि० अ० क्रोध करना।  
 खुनसी—वि० क्रोधी।  
 खुफिया—वि० गुप्त।  
 खुमना—क्रि० स० घुमना।  
 खुमी—संज्ञा स्त्री० कान में पहनने की  
 लॉग।  
 खुमान—वि० दीर्घजीवी।

खखार-संज्ञा पुं० कफ ।  
 खखारना-कि० अ० थूक या कफ  
 बाहर करने के लिये गले से शब्द  
 सहित वायु निकालना ।  
 खखेदना-कि० स० भगाना ।  
 खग-संज्ञा पुं० १. पक्षी । २. बाण ।  
 खगना-कि० अ० घुमना ।  
 खगपति-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २.  
 गरुड ।  
 खगेश-संज्ञा पुं० गरुड ।  
 खगोल-संज्ञा पुं० १. आकाश-मंडल ।  
 २. खगोल विद्या ।  
 खगोल विद्या-संज्ञा स्त्री० ज्योतिष ।  
 खगोल-संज्ञा पुं० सप्तवार ।  
 खग्रास-संज्ञा पुं० ऐसा ग्रहण जिसमें  
 सूर्य या चंद्र का सारा मंडल  
 ढँक जाय ।  
 खचन-संज्ञा पुं० [ वि० खक्ति ] १.  
 धाँधने या जड़ने की क्रिया । २.  
 धंकित करने या होने की क्रिया ।  
 खचना-कि० अ० १. जड़ना ।  
 २. धंकित होना ।  
 कि० स० १. जड़ना । २. धंकित  
 करना ।  
 खचर-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. मेघ ।  
 ३. पक्षी । ४. बाण ।  
 वि० आकाश में चलनेवाला ।  
 खचरा-वि० १. दोगला । २. दुष्ट ।  
 खचाखच-कि० वि० उठाउस ।  
 खचित-वि० खींचा हुआ ।  
 खचर-संज्ञा पुं० गधे और घोड़े के  
 संयोग से उत्पन्न एक पशु ।  
 खज-वि० खाने योग्य ।  
 खजहजा-संज्ञा पुं० खाने योग्य  
 उत्तम फल या मेवा ।  
 खज़ानची-संज्ञा पुं० कोशाध्यक्ष ।

खज़ाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ  
 धन या और कोई चीज़ संग्रह करके  
 रखी जाय ।  
 खजुली-संज्ञा स्त्री० दे० "खुजली" ।  
 खजूर-संज्ञा पुं० स्त्री० १. ताड़ की  
 जाति का एक पेड़ जिसके फल खाए  
 जाते हैं । २. एक प्रकार की मिठाई ।  
 खजूरी-वि० खजूर का ।  
 खट-संज्ञा पुं० ठोंकने-पीटने की  
 आवाज़ ।  
 खटक-संज्ञा स्त्री० खटका ।  
 खटफना-कि० अ० १. 'खटखट'  
 शब्द होना । २. रह रहकर पीड़ा  
 होना । ३. खलना । ४. परस्पर  
 झगड़ा होना ।  
 खटफा-संज्ञा पुं० १. 'खटखट' शब्द ।  
 २. डर । ३. चिंता ।  
 खटकीड़ा-संज्ञा पुं० दे० "खटमल" ।  
 खटखट-संज्ञा स्त्री० १. ठोंकने-पीटने  
 का शब्द । २. झूझ । झुमेला ।  
 ३. लड़ाई ।  
 खटखटाना-कि० स० खटखटाना ।  
 खटना-कि० स० घन कमाना ।  
 कि० अ० काम-धंधे में खगना ।  
 खटपट-संज्ञा स्त्री० १. अनश्न । २.  
 ठोंकने-पीटने या टकराने का शब्द ।  
 खटपाटी-संज्ञा स्त्री० खाट की पाटी ।  
 खटबुना-संज्ञा पुं० चारपाई आदि  
 बुननेवाला ।  
 खटमल-संज्ञा पुं० उच्चायी रंग का  
 एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुर्सियों  
 आदि में उत्पन्न होता है । खटकीड़ा ।  
 खटमिट्टा-वि० कुछ खटा और कुछ  
 मीठा ।  
 खटराग-संज्ञा पुं० झूझ ।



खुमार-संज्ञा पुं० दे० "खुमारी" ।  
 खुमारी-संज्ञा स्त्री० १. मद । २. नशा उतरने के समय की हल्की थकावट । ३. वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है ।  
 खुमी-संज्ञा स्त्री० १. सोने की कील जिसे लोग दंतों में जड़वाते हैं । २. धातु का पोला छला जो हाथी के दांत पर चढ़ाया जाता है ।  
 खुरंड-संज्ञा स्त्री० सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी ।  
 खुर-संज्ञा पुं० साँगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप जो बीच से फटी होती है ।  
 खुरफा-संज्ञा स्त्री० सोच ।  
 खुरखुर-संज्ञा स्त्री० वह शब्द जो गले में कफ आदि रहने के कारण सिस खेते समय होता है ।  
 खुरखुरा-वि० खरदरा ।  
 खुरखुराना-क्रि० भ० गले में कफ के कारण घरघराहट होना ।  
 क्रि० भ० खुरखुरा मालूम होना ।  
 खुरचन-संज्ञा स्त्री० वह वस्तु जो खुरचकर निकाली जाय ।  
 खुरचना-क्रि० भ० करना ।  
 खुरचाल-संज्ञा स्त्री० दे० "खुटचाल" ।  
 खुरजी-संज्ञा स्त्री० बड़ा धैला ।  
 खुरपफा-संज्ञा पुं० चौपायों का एक रोग जिसमें उनके मुँह और खुरों में दाँने निकल आते हैं ।  
 खुरपा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० खुरपी] घास छीलने का औजार ।  
 खुरमा-संज्ञा पुं० १. छोहना । २. एक प्रकार का पकवान या मिठाई ।  
 खुराफ-संज्ञा स्त्री० भोजन ।

खुराफा-संज्ञा स्त्री० वह धन जो खुराक के लिये दिया जाय ।  
 खुराफात-संज्ञा स्त्री० १. बेहूदा और रही बाँस । २. गाली-गलौज ।  
 खुरी-संज्ञा स्त्री० टाप का चिह्न ।  
 खुर्द-वि० छोटा ।  
 खुर्दवीन-संज्ञा स्त्री० वह वंश जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी देख पड़ती है ।  
 खुर्द खुर्द-क्रि० वि० नष्ट-भष्ट ।  
 खुर्दा-संज्ञा पुं० छोटी मोटी चीज़ ।  
 खुर्राट-वि० १. बुरा । २. चालाक ।  
 खुलना-क्रि० भ० १. आवरण का पूर होना । २. छेद होना । ३. आरंभ होना । खाना हो जाना । ४. प्रकट हो जाना । ५. भेद पताना ।  
 खुलवाना-क्रि० स० खोलने का काम दूसरे से कराना ।  
 खुला-वि० पुं० १. बंधन-रहित । २. स्पष्ट ।  
 खुलासा-संज्ञा पुं० सारांश ।  
 वि० १. खुला हुआ । २. साफ़ साफ़ ।  
 खुल्लमखुल्ला-क्रि० वि० खुले आन ।  
 खुश-वि० प्रसन्न ।  
 खुशखबरी-संज्ञा स्त्री० अच्छी खबर ।  
 खुशदिल-वि० १. सदा प्रसन्न रहने वाला । २. मसखरा ।  
 खुशबू-संज्ञा स्त्री० सुगंधि ।  
 खुशामद-संज्ञा स्त्री० चापलूसी ।  
 खुशामदी-वि० चापलूस ।  
 खुशामदी टट्ट-संज्ञा पुं० वह जिसका काम खुशामद करना हो ।  
 खुशी-संज्ञा स्त्री० आनंद ।  
 खुशक-वि० १. सूखा । २. केवल ।  
 खुशकी-संज्ञा स्त्री० १. रुखापन । २. स्थूल या भूमि ।

खटाई-संज्ञा स्त्री० १. खटपन । २. खट्टी चीज़ ।

खटाखट-संज्ञा पुं० ठोंकने, पीटने, चलाने आदि का लगातार शब्द ।

कि० वि० जल्दी जल्दी ।

खटाना-कि० अ० खटा होना ।

कि० अ० निर्वाह देना । गुज़ारा होना ।

खटापट्टी-संज्ञा स्त्री० दे० "खटपट" ।

खटाव-संज्ञा पुं० निर्वाह ।

खटास-संज्ञा स्त्री० खटपन ।

खटकि-संज्ञा पुं० [खी० खटकिन] एक छोटी जाति जिसका काम फल, सरकारी आदि बेचना है ।

खटिया-संज्ञा स्त्री० खटोली ।

खट्टी-वि० जिस पर विज्ञान न हो ।

खट्टोलना-संज्ञा पुं० दे० "खटोला" ।

खटोला-संज्ञा पुं० [खी० अल्पा० खटोली] छोटी खाट ।

खट्टा-वि० तुर्य । अम्ल ।

खट्टी-संज्ञा स्त्री० खट्टा चीज़ ।

खट्ट-संज्ञा पुं० कमानेवाला ।

खट्वांग-संज्ञा पुं० १. धारपाई का पाया या पाटी । २. शिब का एक अस्त्र ।

खटवा-संज्ञा स्त्री० खटिया ।

खट्टेक-संज्ञा स्त्री० दे० "खटक" ।

खटफना-कि० अ० दे० "खटफना" ।

खड़खड़ाना-कि० अ० कड़ी वस्तुओं का परस्पर शब्द के साथ टकराना ।  
कि० स० कड़े वस्तुओं का परस्पर टकराना ।

खड़खाड़िया-संज्ञा स्त्री० पालकी ।

खड़ग-संज्ञा पुं० दे० "खड्ग" ।

खड़जी-संज्ञा पुं० दे० "खड़गी" ।

खड़बड़-संज्ञा स्त्री० १. खट खट शब्द ।  
२. उलट-फेर ।

खड़बड़ाना-कि० अ० घबराना ।  
कि० स० किसी वस्तु को उलट पुलटकर "खड़बड़" शब्द उत्पन्न करना ।

खड़बड़ाहट-संज्ञा स्त्री० "खड़बड़ाना" का भाव ।

खड़बड़ी-संज्ञा स्त्री० व्यतिक्रम ।

खड़मंडल-संज्ञा पुं० गड़बड़ ।

खड़ा-वि० [खी० खरी] १. ऊपर की उठा हुआ । २. स्थिर । ३. प्रस्तुत ।  
४. आरंभ । ५. जो बखाड़ा या काटा न गया हो ।

खड़ाऊँ-संज्ञा स्त्री० काठ के तले का खुला अंश ।

खड़िया-संज्ञा स्त्री० खरिया ।

खड़ीयोली-संज्ञा स्त्री० वर्तमान हिंदी गद्य की भाषा ।

खड़ग-संज्ञा पुं० एक प्रकार की तलवार ।

खड़गी-संज्ञा पुं० वह जिसके पास खड्गे हो ।

खड़ू, खड़्वा-संज्ञा पुं० गड़्वा ।

खत-संज्ञा पुं० पाव ।

खत-संज्ञा पुं० १. पत्र । २. हजामत ।

खतना-संज्ञा पुं० सुन्नत ।

खतम-वि० पूर्ण ।

खतर, खतरा-संज्ञा पुं० डर ।

खता-संज्ञा स्त्री० कसूर ।

खतावार-वि० दोषी ।

खति-संज्ञा स्त्री० दे० "खति" ।

खतियाना-कि० स० आय-व्यय और क्रय-विक्रय आदि को खते में अलग अलग मह में लिखना ।

खुसाल, खुसाल-वि० धानेदित ।

खूँखार-वि० १. भयंकर । २. निर्दय ।

खूँट-संज्ञा पुं० छोर ।

संज्ञा स्त्री० फात की मैल ।

खूँटना-क्रि० स० टोकना ।

खूँटा-संज्ञा पुं० पशु घाघने के लिये  
जमीन में गड़ी लकड़ी या मेख ।

खूँटी-संज्ञा स्त्री० छोटी गड़ी लकड़ी ।

खूँद-संज्ञा स्त्री० [ हि० खूँदना ] घोड़ी  
जगह में घोड़े का हृधर-उधर चलते  
या पैर पटकते रहना ।

खूँदना-क्रि० भ० १. उछल-कूद  
करना । २. कुचलना ।

खूँटना-क्रि० भ० घँद हो जाना ।  
क्रि० स० रोक-टोक करना ।

खूँद, खूँदड़, खूँदरी-संज्ञा पुं० किसी  
वस्तु को छान लेने या साफ़ कर लेने  
पर निकम्मा पचा हुआ भाग ।

खून-संज्ञा पुं० १. रक्त । २. वध ।

खून-खराया-संज्ञा पुं० मार-काट ।

खूनी-वि० १. हत्यारा । २. अत्याचारी ।

खूब-वि० [ संज्ञा खूबी ] अच्छा ।

क्रि० वि० अच्छी तरह से ।

खूबसूरत-वि० सुंदर ।

खूबसूरती-संज्ञा स्त्री० सुंदरता ।

खूबी-संज्ञा स्त्री० १. भलाई । २. गुण ।

खूसट-संज्ञा पुं० उखल ।

वि० मनहूस ।

खुष्टीय-वि० ईसाई ।

खेकसा, खेखसा-संज्ञा पुं० परबल  
के आकार का एक रोपुंदार फल या  
तरकारी ।

० संज्ञा पुं० शिकार ।

खेदकी-संज्ञा पुं० मछुरी ।

संज्ञा पुं० शिकारी ।

खेड़ा-संज्ञा पुं० छोटा गाँव ।

खेड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का देशी  
लोहा ।

खेत-संज्ञा पुं० १. अनाज आदि की  
फसल उत्पन्न करने के योग्य जेतने-  
बोने की ज़मीन । २. समर-भूमि ।

खेतिहर-संज्ञा पुं० किसान ।

खेती-संज्ञा स्त्री० १. किसानी । २.

खेत में बोई हुई फसल ।

खेती-थारी-संज्ञा स्त्री० किसानी ।

खेद-संज्ञा पुं० [ वि० खेदित, खिन्न ] दुःख ।

खेदना-क्रि० स० खदेरना ।

खेदा-संज्ञा पुं० १. किसी धनैले पशु  
को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर  
एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम ।  
२. शिकार ।

खेना-क्रि० स० १. नाव के डोहों को  
चलाना जिसमें नाव चले । २.  
फाटना ।

खेप-संज्ञा स्त्री० १. लदान । २. गाड़ी  
आदि की एक बार की यात्रा ।

खेपना-क्रि० स० बिताना ।

खेम-संज्ञा पुं० दे० 'खेम' ।

खेमटा-संज्ञा पुं० १. बारह मात्राओं  
का एक ताल । २. इस ताल पर  
होनेवाला गाना या नाच ।

खेसा-संज्ञा पुं० तंबू । डेरा ।

खेल-संज्ञा पुं० १. मन बहलाने या  
व्यायाम करने के लिये हृधर-उधर  
उछल-कूद । २. मीमांसा ।

खेलक-संज्ञा पुं० खेलाड़ी ।

खेलना-क्रि० भ० [ प्रि० खेलना ] मीमांसा  
करना ।

क्रि० स० मन बहलाने का काम करना ।

खेलवाड़-संज्ञा पुं० तमाशा ।

खेलाड़ी-वि० १. खेलनेवाला । २. विनोदी ।

संज्ञा पुं० यह जो खेले ।

खेलाड़ी-संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी" ।

खेवफ-संज्ञा पुं० मछाह ।

खेवट-संज्ञा पुं० पटवारी का एक कागज जिसमें हर एक पट्टीदार का हिस्सा लिखा रहता है ।

संज्ञा पुं० मछाह ।

खेवा-संज्ञा पुं० १. नाव का किराया । २. नाव द्वारा नदी पार करने का काम । ३. पार ।

खेवाई-संज्ञा स्त्री० १. नाव खेने का काम । २. नाव खेने की मजदूरी ।

खेस-संज्ञा पुं० बहुत मोटे सूत की लंबी चादर ।

खेसारी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मटर ।

खेह-संज्ञा स्त्री० धूल ।

खेचना-क्रि० स० दे० "खीचना" ।

खैर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का वृक्ष । २. कथा ।

संज्ञा स्त्री० कुशल ।

अव्य० १. कुछ चिंता नहीं । २. अच्छा ।

खैरखाह-वि० [ संज्ञा खैरखाही ] भलाई चाहनेवाला ।

खैरा-वि० खैर के रंग का ।

खैरात-संज्ञा स्त्री० [ वि० खैराती ] दान ।

खैरियत-संज्ञा स्त्री० कुशल-प्रेम ।

खोंच-संज्ञा स्त्री० १. खरीट । २. कांटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना ।

खोंचा-संज्ञा पुं० बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंघा घोंस ।

खोंट-संज्ञा स्त्री० खोंटने या नाचने की क्रिया ।

खोंटना-क्रि० स० किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना ।

खोंडा-वि० जिसका कोई अंग भंग हो ।

खोंता-संज्ञा पुं० चिड़ियों का घोंसला ।

खोंसना-क्रि० स० अटकाना ।

खोआ-संज्ञा पुं० दे० "खोआ" ।

खोई-संज्ञा स्त्री० रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े ।

खोखला-वि० पोला ।

खोगीर-संज्ञा पुं० दे० "खुगीर" ।

खोज-संज्ञा स्त्री० अनुसंधान ।

खोजना-क्रि० स० खोज करना ।

खोट-संज्ञा स्त्री० दोष ।

खोटा-वि० [ स्त्री० खोटी ] जिसमें कोई ऐय हो ।

खोटई-संज्ञा स्त्री० १. डुराई । २. छल ।

खोटापन-संज्ञा पुं० दुर्गता ।

खोड़रा-संज्ञा पुं० पुराने पेड़ में खोखला भाग या गड्ढा ।

खोद-संज्ञा पुं० खुद में पहनने का जोड़े का टोप ।

खोदना-क्रि० स० १. खनना । २. नकाराई करना । ३. गढ़ाना । ४. बसकाना ।

खोद चिनोदा-संज्ञा स्त्री० छान-चीन ।

खोदघाना-क्रि० स० खोदने का काम दूसरे से करवाना ।

खोदाई-संज्ञा स्त्री० १. खोदने का काम । २. खोदने की मजदूरी ।

खोना-क्रि० स० खोना ।

क्रि० प्र० किसी वस्तु का कहीं भूल से छूट जाना ।

गर्भाधान-संज्ञा पुं० १. मनुष्य के सोलह संस्कारों में से पहला संस्कार जो गर्भ में आने के समय ही होता है। २. गर्भ की स्थिति।

गर्भाशय-संज्ञा पुं० स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।

गर्भिणी-वि० स्त्री० जिसे गर्भ हो।

गर्भित-वि० १. गर्भयुक्त। २. पूर्ण।

गर्व-संज्ञा पुं० अहंकार।

गर्वाना-क्रि० प्र० गर्व करना।

गर्विता-संज्ञा स्त्री० वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।

गर्वी-वि० घमंडी।

गर्वीला-वि० [स्त्री० गर्वीली] घमंड से भरा हुआ।

गर्हण-संज्ञा पुं० निंदा।

गर्हित-वि० जिसकी निंदा की जाय।

गर्हा-वि० गर्हणीय।

गल-संज्ञा पुं० गला।

गलगंज-संज्ञा पुं० शोरगल।

गलगंजना-क्रि० प्र० शोर करना।

गलगंड-संज्ञा पुं० घेघा।

गलगंजना-क्रि० प्र० गाल बजाना।

गलगुथना-वि० मोटा।

गलमह-संज्ञा पुं० १. मछली का काटा। २. वह आपत्ति जो कठिनाता से टले।

गलत-वि० [संज्ञा स्त्री० गलती] १. अशुद्ध। २. असत्य।

गलतफहमी-संज्ञा स्त्री० भ्रम।

गलती-संज्ञा स्त्री० भूल।

गलन-संज्ञा पुं० १. गिरना। २. गलना।

गलना-क्रि० प्र० किसी पदार्थ के घनत्व का कम या नष्ट होना।

गलफांसी-संज्ञा स्त्री० १. गले की फांसी। २. जंजाल।

गलवांही-संज्ञा स्त्री० गले में बहिः डाटना।

गलमदरी-संज्ञा स्त्री० गाल बजाना।

गलमुच्छा-संज्ञा पुं० गालों पर के धड़ाएँ हुए बाल।

गलघाना-क्रि० प्र० गलाने का काम दूसरे से कराना।

गला-संज्ञा पुं० १. गरदन। २. गले का स्वर। ३. धँगरले, कुरसे आदि की काट में गले पर का भाग। गरीयान।

गलाना-क्रि० प्र० १. किसी वस्तु के संयोजक अणुओं को पृथक् पृथक् करके उसे नरम, मीठा या द्रव्य करना। २. धीरे धीरे सुप्त करना।

गलानि-संज्ञा स्त्री० दे० "गलानि"।

गलित-वि० १. गिरा हुआ। २. गला हुआ।

गलित कुष्ठ-संज्ञा पुं० वह कौड़ जिसमें श्रेय गल गलकर गिरने लगते हैं।

गली-संज्ञा स्त्री० कूड़ा।

गलीचा-संज्ञा पुं० कालीन।

गलीज़-वि० मैला।

संज्ञा पुं० १. कूड़ा-करकट। २. पाखाना।

गलेवाज़-वि० जिसका गला अष्टा हो।

गल्प-संज्ञा स्त्री० १. उर्लिंग। २. छोटी कहानी।

गल्ला-संज्ञा पुं० शोर।

संज्ञा पुं० मुँड।

गल्ला-संज्ञा पुं० [वि० गल्लर] १. पैदावार। २. यत्न।

गध-संज्ञा स्त्री० १. घात। २. मतलब।

गधन-संज्ञा पुं० १. प्रस्थान। २. गीना।

खोन्चा-संज्ञ पुं० बड़ी परात या धातु जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं ।

खोपड़ा-संज्ञ पुं० १. कपाल । २. सिर ।

खोपड़ी-संज्ञ स्त्री० सिर ।

खोया-संज्ञ पुं० खोवा ।

खोर-संज्ञ स्त्री० १. सँकरी गली । २. चौपायों को चारा देने की नाँद । संज्ञ स्त्री० स्नान ।

खोरना-क्रि० अ० नहाना ।

खोरा-संज्ञ पुं० [ स्त्री० खोरिया ] फटेरा ।  
+ वि० लँगड़ा ।

खोराक-संज्ञ स्त्री० दे० "खुराक" ।

खोरि-संज्ञ स्त्री० संग गली ।  
संज्ञ स्त्री० ऐश्व ।

खोल-संज्ञ पुं० गिलाफ़ ।

खोलना-क्रि० स० १. छिपाने या रोफनेवाली वस्तु को हटाना । २. छेद करना । ३. किसी क्रम को चढ़ाना या जारी करना ।

खोली-संज्ञ स्त्री० आवरण ।

खोह-संज्ञ स्त्री० गुहा ।

खोन्चा-संज्ञ पुं० सादे छः का पहनावा ।

खोफ-संज्ञ पुं० [ वि० खोफनाक ] डर ।

खौर-संज्ञ स्त्री० १. टीका । २. खियों का सिर का एक गहना ।

खौरना-क्रि० स० चंदन का टीका

लगाना ।

खौरहा-वि० [ स्त्री० खौरही ] १.

जिसके सिर के बाल मढ़ गए हों ।

२. जिसके शरीर में खौरा या खुजली का रोग हो । (पशु)

खौरा-संज्ञ पुं० एक प्रकार की बुरी खुजली ।

वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो ।

खौलना-क्रि० अ० उबलना ।

खौलाना-क्रि० स० गरम करना ।

ख्यात-वि० प्रसिद्धि ।

ख्याति-संज्ञ स्त्री० प्रसिद्ध ।

ख्याल-संज्ञ पुं० [ वि० ख्याली ] १.

ध्यान । २. स्मरण । ३. विचार ।

ख्याली-वि० कल्पित ।

वि० खेल या कौतुक करनेवाला ।

खिष्टान-संज्ञ पुं० ईसाई ।

खिष्टीय-वि० १. ईसाई । २. ईसाई धर्म-संबंधी ।

खीष्ट-संज्ञ पुं० [ वि० खिष्टीय ] हज़रत ईसा मसीह ।

ख्याजा-संज्ञ पुं० १. मालिक । २.

जैचे दर्जे का मुसलमान फकीर । ३.

रनिवास का नपुंसक भृत्य ।

ख्याय-संज्ञ पुं० १. नाँव । २. स्वप्न ।

ख्याह-मध्य० अथवा ।

ख्याहिश-संज्ञ स्त्री० [ वि० ख्याहिशमेद ] इफ़्का ।

गवचनचार-संज्ञा पुं० चर के घर पधू  
के जाने की रस्म ।

गवचनना०-कि० अ० जाना ।

गवना-संज्ञा पुं० दे० "गौना" ।

गवय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गवयी ] १. नील  
गाय । २. एक छुंद ।

गवाक्ष-संज्ञा पुं० छोटी खिड़की ।

गघारा-वि० १. पसंद । २. सख ।

गघाह-संज्ञा पुं० [ संज्ञा गवाही ] १. वह  
अनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात्  
देखा हो । २. साक्षी ।

गवाही-संज्ञा स्त्री० साक्षी का प्रमाण ।

गघेयणा-संज्ञा स्त्री० खोज ।

गघेयी-वि० [ स्त्री० गवेयिणी ] खोजने-  
वाला ।

गवैया-वि० गानेवाला ।

गघैहा-वि० प्रामीण ।

गव्य-वि० गो से उत्पन्न ।

संज्ञा पुं० १. गायों का कुँड । २.  
पंचगव्य ।

गश-संज्ञा पुं० मूच्छा ।

गशत-संज्ञा पुं० [ वि० गशी ] टहलना ।

गशती-वि० घूमनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० अभिचारिणी ।

गसीला-वि० [ स्त्री० गसीली ] १. गंठा  
हुआ । २. गफ ।

गस्सा-संज्ञा पुं० ग्रास ।

गह-संज्ञा स्त्री० १. पकड़ । २. झूठ ।

गहगह-वि० प्रफुल्लित ।

कि० वि० घमाघम ।

गहगहा-वि० १. प्रफुल्लित । २. घमा-  
घम ।

गहगहाना-कि० अ० आनंद से फूलना ।

गहगहे-कि० वि० बड़ी प्रफुल्लता के  
साथ ।

गहन-वि० १. गंभीर । २. दुर्गम ।

संज्ञा पुं० गहराई ।

† संज्ञा पुं० १. ग्रहण । २. घंघक ।

संज्ञा स्त्री० पकड़ने का भाव ।

गहन-संज्ञा पुं० १. धामूपण । २.  
रेहन ।

कि० स० पकड़ना ।

गहनि-संज्ञा स्त्री० हठ ।

गहवर-वि० १. दुर्गम । २. व्या-  
कुल ।

गहवरना-कि० अ० भावेण से भरना ।

गहर-संज्ञा स्त्री० देर ।

संज्ञा पुं० दुर्गम ।

गहरना-कि० अ० देर लगाना ।

कि० अ० रुकड़ना ।

गहरघार-संज्ञा पुं० एक उग्रिय वंश ।

गहरा-वि० [ स्त्री० गहरी ] १. गंभीर ।

२. जिसका विस्तार नीचे की ओर

अधिक हो । ३. बहुत अधिक । ४.

गाढ़ा ।

गहराई-संज्ञा स्त्री० गहरापन ।

गहराना-कि० अ० गहरा होना ।

कि० स० गहरा करना ।

कि० अ० दे० "गहरना" ।

गहरावा-संज्ञा पुं० गहराई ।

गहलौत-संज्ञा पुं० उग्रियों का एक  
वंश ।

गहाई-संज्ञा स्त्री० गहने का भाव ।

गहाना-कि० स० घराना ।

गहीला-वि० [ स्त्री० गहीली ] घमंडी ।

गहेजुआ-संज्ञा पुं० छहूँदर ।

गहेला-वि० [ स्त्री० गहेली ] १. हठी ।

२. अहंकारी ।

गहैया-वि० पकड़नेवाला ।

गहर-संज्ञा पुं० १. अंधकारमय और

गूढ़ स्थान । २. बिजल ।

ग-व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ है ।  
 गंग-संज्ञा स्त्री० गंगा नदी ।  
 गंगा-संज्ञा स्त्री० भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी ।  
 गंगा-जमनी-वि० मिटा-जुला ।  
 गंगाजल-संज्ञा पुं० गंगा का पानी ।  
 गंगाजली-संज्ञा स्त्री० १. यह सुराही या शीशी जिसमें धात्री गंगाजल भरकर ले जाते हैं । २. धातु की सुराही ।  
 गंगाधर-संज्ञा पुं० शिव ।  
 गंगापुत्र-संज्ञा पुं० १. भीष्म । २. एक प्रकार के धातुयुक्त जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं ।  
 गंगालाभ-संज्ञा पुं० मृत्यु ।  
 गंगासागर-संज्ञा पुं० १. एक तीर्थ जो उस स्थान पर है जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है । २. एक प्रकार की बड़ी टॉटीदार म्हासी ।  
 गंगादक-संज्ञा पुं० गंगाजल ।  
 गंज-संज्ञा पुं० १. सिर के बाल उड़ने का रोग । २. सिर में छोटी छोटी फुनसियों का रोग ।  
 संज्ञा स्त्री० १. खड़ावा । २. डेर । ३. बाज़ार ।  
 गंजन-संज्ञा पुं० १. अघञ् । २. पीड़ा ।  
 गंजना-कि० स० अघञ् करना ।  
 गंजा-संज्ञा पुं० गंज रोग ।  
 वि० जिसको गंज रोग हो ।  
 गंजी-संज्ञा स्त्री० डेर ।  
 संज्ञा स्त्री० घनियायन ।  
 संज्ञा पुं० दे० "गंजेड़ी" ।  
 गंजीफा-संज्ञा पुं० एक खेल जो आठ रंग के १६ पत्तों से खेला जाता है ।

गंजेड़ी-वि० गुंजा पीनेवाला ।  
 गंठजोड़ा, गंठबंधन-संज्ञा पुं० विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं ।  
 गंड-संज्ञा पुं० १. गाल । २. गाँठ ।  
 गंडक-संज्ञा पुं० १. गले में पहनने का जंतर या गंडा । २. गंडकी नदी का तटस्थ देश, तथा वहाँ के निवासी ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "गंडकी" ।  
 गंडकी-संज्ञा स्त्री० गंगा में गिरनेवाली उत्तर-भारत की एक नदी ।  
 गंडमाला-संज्ञा स्त्री० कंडमाला ।  
 गंडस्थल-संज्ञा पुं० कनपटी ।  
 गंडा-संज्ञा पुं० गाँठ ।  
 संज्ञा पुं० पैले, कौड़ी के गिनने में चार चार की संख्या का समूह ।  
 संज्ञा पुं० आड़ी लकीरों की पंक्ति ।  
 गंडासा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अस्था० गेंवासी ] चौपायों के चारे या घास के टुकड़े काटने का हथियार ।  
 गंडेरी-संज्ञा स्त्री० ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा ।  
 गंदगी-संज्ञा स्त्री० १. मैलापन । २. अपवित्रता ।  
 गंदना-संज्ञा पुं० लहसुन या प्याज की तरह का एक मसाला ।  
 गंदला-वि० मंडा-कुचला ।  
 गंदा-वि० [ स्त्री० गंदी ] १. मैला । २. अशुद्ध ।  
 गंदुम-संज्ञा पुं० गेहूँ ।  
 गंदुमी-वि० गेहूँ के रंग का ।  
 गंध-संज्ञा स्त्री० १. महक । २. लेश ।  
 गंधक-संज्ञा स्त्री० [ वि० गंधकी ] एक पीला जलनेवाला खनिज पदार्थ ।



वि० दुर्गम ।

गांग-वि० गंगा-संबंधी ।

गांगेय-संज्ञा पुं० १. भीष्म । २. कात्तिकेय । ३. कसेरु ।

गांज-संज्ञा पुं० राशि ।

गांजना-कि० स० राशि लगाना ।

गांजा-संज्ञा पुं० मांग की जाति का एक पौधा जिसकी कली का धुआँ पीते हैं ।

गाँठ-संज्ञा स्त्री० [ वि० गँदीला ] १. गिरह । २. गठरी । ३. जोड़ ।

गाँठगोभी-संज्ञा स्त्री० गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में खरबूजे की सी गोल गाँठ होती है ।

गाँठना-कि० स० १. गाँठ खगाना । २. मिलाना ।

गाँढर-संज्ञा स्त्री० मूँज की तरह की एक घास ।

गाँडा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गँदी ] १. किसी पेड़, पौधे या डंडल का छोटा कटा खंड । २. हँस का छोटा कटा टुकड़ा ।

गाँधीय-संज्ञा पुं० अर्जुन का धनुष ।

गांधना-कि० स० गूँथना ।

गांधर्व-वि० गंधर्व-संबंधी ।

संज्ञा पुं० १. गान-विद्या । २. आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी हथूँडा से प्रेमपूर्वक मिलकर पति-पत्निवत् रहते हैं ।

गांधर्व वेद-संज्ञा पुं० १. सामवेद का उपवेद । २. संगीत-शास्त्र ।

गांधी-संज्ञा स्त्री० गुजराती वैश्यों की एक जाति ।

गांधीय्य-संज्ञा पुं० गंधीरता ।

गाँव, गाँव-संज्ञा पुं० खेड़ा ।

गाँस-संज्ञा स्त्री० १. घैर । २. गाँठ । ३. निगरानी ।

गाँसना-कि० स० १. गूँथना । २. एकद में करना ।

गाँसी-संज्ञा स्त्री० तीर या बरछी का फल ।

गागर, गागरी-संज्ञा स्त्री० दे० "गगरी" ।

गाछ-संज्ञा पुं० पौधा ।

गाज-संज्ञा स्त्री० १. शेर । २. यिजली । संज्ञा पुं० फेन ।

गाजना-कि० भ० १. गरजना । २. हर्षित होना ।

गाजर-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसका कंद मीठा होता है ।

गाड़ी-संज्ञा पुं० १. मुसलमानों में वह चीर पुरुष जो धर्म के लिये विधर्मियों से युद्ध करे । २. बहादुर ।

गाड़-संज्ञा स्त्री० गढ़वा ।

गाड़ना-कि० स० १. तोपना । २. जमाना । ३. घँसाना ।

गाढरी-संज्ञा स्त्री० भेड़ ।

गाड़ा-संज्ञा पुं० बैलगाड़ी ।

गाड़ी-संज्ञा स्त्री० एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल असबाब या आदमियों को पहुँचाने के लिये एक यंत्र ।

गाड़ीघान-संज्ञा पुं० गाड़ी हँकनेवाला ।

गाढ़-वि० १. अधिक । २. घना । ३. विकट ।

संज्ञा पुं० कठिनाई ।

गाढ़ा-वि० [ स्त्री० गाड़ी ] १. ठस । मोटा । २. घनिष्ठ । ३. कठिन ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा ।

गाढ-संज्ञा पुं० शरीर ।

गात्र-संज्ञा पुं० शरीर ।

गंधविलाव-संज्ञा पुं० नेवले की तरह का एक जंतु जिसकी गिलटी से सुगंधित घेप निकलता है।

गंधमार्जार-संज्ञा पुं० गंधविलाव।

गंधमादन-संज्ञा पुं० १. एक पुराण-प्रसिद्ध पर्वत। २. भौरा।

गंधर्व-संज्ञा पुं० १. देवताओं का एक भेद। ये गाने में निपुण कहे गए हैं। २. मृग। ३. घोड़ा। ४. प्रेत। ५. एक जाति जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्यावृत्ति करती हैं।

गंधर्वविद्या-संज्ञा स्त्री० संगीत।

गंधर्वविवाह-संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक। वह संबंध जो घर और वधू अपने मन से कर लेते हैं।

गंधर्ववेद-संज्ञा पुं० संगीत शास्त्र जो चार उपवेदों में से एक है।

गंधाना-क्रि० स० गंध देना।

गंधाविरोजा-संज्ञा पुं० चीर नामक वृक्ष का गोंद।

गंधार-संज्ञा पुं० दे० "गांधार"।

गंधी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गंधिनी, गंधिन ]

१. सुगंधित तैल और दूध आदि घेचनेवाला। २. गंधिया घास।

गंभीर-वि० १. गहरा। २. घना। ३. गूढ़।

गंधै-संज्ञा स्त्री० १. घात। २. मतलब।

गंधई-संज्ञा स्त्री० [ वि० गंधैय ] गाँव की बस्ती।

गंधरमसला-संज्ञा पुं० गंधारों की कहावत या वक्ति।

गंधाना-क्रि० स० १. काटना। २. खोना।

गंधार-वि० [ स्त्री० गंधारी, गंधारिनी ]

वि० गंधार, गंधारी ] १. गाँव का रहनेवाला। २. मूर्ख।

गंधारी-संज्ञा स्त्री० १. देहातीपन। २. मूर्खता। ३. गंधार स्त्री।

वि० १. गंधार का सा। २. भद्दा।

गंधारु-वि० दे० "गंधारी"।

गंस्त-संज्ञा पुं० १. द्वेष। २. ताना। तीर की नोक।

संज्ञा स्त्री० तीर की नोक।

गई करना-क्रि० म० छोड़ देना।

गईयहोर-वि० खोई हुई वस्तु को पुनः देने अथवा बिगड़े हुए काम को बनानेवाला।

गङ्ग-संज्ञा स्त्री० गाय।

गगन-संज्ञा पुं० १. आकाश। २. शून्य स्थान। ३. छप्पय छंद का एक भेद।

गगनचर-संज्ञा पुं० पक्षी।

गगनभेदी, गगनस्पर्शी-वि० बहुत ऊँचा।

गगरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गगरा ] फलसा।

गच-संज्ञा पुं० १. किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के घँसने का शब्द। २. चूने, सुरखी का मसाला, जिससे ज़मीन पक्की की जाती है। ३. पक्का फर्श।

गचकारी-संज्ञा स्त्री० गच का काम।

गछुना-क्रि० म० चलना।

क्रि० स० १. चलाना। २. अपने ज़िम्मे लेना।

गज-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गजो ] हाथी।

गङ्ग-संज्ञा पुं० छंवाई मापने की एक माप जो सोलह गिरह या तीन फुट की होती है।

गाथ-संज्ञा पुं० यथ ।

गाथा-संज्ञा स्त्री० १. स्तुति । २. कथा ।

गादी-संज्ञा स्त्री० गाड़ी चीज ।

गादा-संज्ञा पुं० अधपका अन्न ।

गाध-संज्ञा पुं० स्थान ।

वि० [स्त्री० गाधा] १. जो बहुत गहरा न हो । २. थोड़ा ।

गाधि-संज्ञा पुं० विश्वामित्र के पिता का नाम ।

गान-संज्ञा पुं० [वि० गेय, गेय्य] संगीत ।

गाना-क्रि० स० १. ताल, स्वर के नियम के अनुसार शब्द का उच्चारण करना । २. वर्णन करना ।

संज्ञा पुं० १. गाने की क्रिया । २. गीत ।

गाफिल-वि० [संज्ञा गफलत] बेसुध ।

गामा-संज्ञा पुं० कौशल । नया कला ।

गाभिन, गाभिनी-वि० स्त्री० गर्भिणी ।

गाम-संज्ञा पुं० गाँव ।

गामी-वि० [स्त्री० गामिनी] १. चलने-वाला । २. संभोग करनेवाला ।

गाय-संज्ञा स्त्री० १. सींगवाला एक मादा जैपाया जो दूध के लिये प्रसिद्ध है । २. बहुत सीधा मनुष्य ।

गायक-संज्ञा पुं० [स्त्री० गायकी] गाने-वाला ।

गायत्री-संज्ञा स्त्री० १. एक वैदिक छंद । २. एक वैदिक मंत्र जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक महत्त्व का माना जाता है ।

गायन-संज्ञा पुं० [स्त्री० गायिनी] १. गवैया । २. गान । ३. कार्तिकेय ।

गायध-वि० लुप्त ।

गायिनी-संज्ञा स्त्री० १. गानेवाली स्त्री । २. एक मात्रिक छंद । ३. गुफा ।

संज्ञा स्त्री० दे० "गाली" ।

गारत-वि० नष्ट ।

गारद-संज्ञा स्त्री० सिपाहियों का कुंड जो रक्षा के लिये नियत हो । पहरा ।

गारना-क्रि० स० निचाढ़ना ।  
वि० स० १. गलाना । २. नष्ट करना ।

गारा-संज्ञा पुं० मिट्टी यथवा धूने, सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है ।

गारी-संज्ञा स्त्री० दे० "गाली" ।

गारुड-संज्ञा पुं० १. सर्प का विष उतारने का मंत्र । २. सुवर्ण ।  
वि० गारुड-संबंधी ।

गारुडी-संज्ञा पुं० मंत्र से सर्प का विष उतारनेवाला ।

गार्गी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

गार्हस्थ्य-संज्ञा पुं० गृहस्थाश्रम ।

गाल-संज्ञा पुं० १. कपोल । २. बक-वाद करने की लत ।

गालगूला-संज्ञा पुं० व्यर्थ घात ।

गालमसूरी-संज्ञा स्त्री० एक पकवान या मिठाई ।

गाला-संज्ञा पुं० पूनी ।

संज्ञा पुं० थंड थंड बकने का स्वभाव ।

गालिय-वि० जीतनेवाला ।

गालिम-वि० दे० "गालिब" ।

गाली-संज्ञा स्त्री० दुर्घचन ।

गाली-गलौज-संज्ञा स्त्री० तूटू मैं मैं ।

गाली-गुफता-संज्ञा पुं० दे० "गाली-गलौज" ।

गालना, गालहना-क्रि० प्र० घात करना ।

गालू-वि० १. व्यर्थ डोंग मारनेवाला । २. बकवादी ।

गाध-संज्ञा पुं० गाँव ।

गावकुशी-संज्ञा स्त्री० गोवध ।

गजक-संज्ञा पुं० १. घाट । २. जलपान ।  
 गजगति-संज्ञा स्त्री० हाथी की सी मंद चाल ।  
 गजगमन-संज्ञा पुं० हाथी की सी मंद चाल ।  
 गजगामिनी-वि० स्त्री० हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली ।  
 गजगाह-संज्ञा पुं० हाथी की मूल ।  
 गजगीन-संज्ञा पुं० दे० "गजगमन" ।  
 गजदंत-संज्ञा पुं० १. हाथी का दाँत । २. वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों । ३. दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत ।  
 गजदान-संज्ञा पुं० हाथी का मद ।  
 गजनाल-संज्ञा स्त्री० बड़ो तोप जिसे हाथी खींचते थे ।  
 गजपिप्पली-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी मंजरी औषध के काम आती है ।  
 गजपीपल-संज्ञा स्त्री० दे० "गजपिप्पली" ।  
 गज्जय-संज्ञा पुं० १. कोप । २. आपत्ति । ३. अंधेर । ४. विख-चण वात ।  
 गजर्थाक, गजयाग-संज्ञा पुं० हाथी का अंकुश ।  
 गजमुक्ता-संज्ञा स्त्री० प्राचीनों के अनुसार एक मोती जिसका हाथी के मस्त्रक से निकलना प्रसिद्ध है ।  
 गजमोती-संज्ञा पुं० दे० "गजमुक्ता" ।  
 गजरा-संज्ञा पुं० १. फूलों की घनी गुथी हुई माला । २. एक गहना जो कलाई में पहना जाता है ।  
 गजराज-संज्ञा पुं० बड़ा हाथी ।  
 गजल-संज्ञा स्त्री० फारसी और उर्दू

में एक प्रकार की कविता ।  
 गजवदन-संज्ञा पुं० गणेश ।  
 गजवान-संज्ञा पुं० महावत ।  
 गजशाला-संज्ञा स्त्री० फूलखाना ।  
 गजाधर-संज्ञा पुं० दे० "गदाधर" ।  
 गजानन-संज्ञा पुं० गणेश ।  
 गजी-संज्ञा स्त्री० गाढ़ा ।  
 संज्ञा स्त्री० हथिनी ।  
 गर्जद्-संज्ञा पुं० १. घेराघत । २. गजराज ।  
 गटकना-कि० स० १. निगलना । २. हड़पना ।  
 गटगट-संज्ञा पुं० निगलने या घूँट घूँट पीने में गले से शपथ शब्द ।  
 गटपट-संज्ञा स्त्री० १. धनिष्ठता । २. सहवास ।  
 गट्ट-संज्ञा पुं० किसी वस्तु के निगलने में गले से होनेवाला शब्द ।  
 गट्टा-संज्ञा पुं० कलाई ।  
 गट्टर-संज्ञा पुं० बड़ी गठरी ।  
 गट्टा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पां गट्टी, गठिया ] गट्टर ।  
 गठन-संज्ञा स्त्री० घनावट ।  
 गठना-कि० प्र० १. सटना । २. अनुकूल होना । ३. अधिक मेल-मिलाप होना ।  
 गठरी-संज्ञा स्त्री० कपड़े में गाँठ देकर बाँधा हुआ सामान ।  
 गठवाना-कि० स० १. गठाना । २. जुड़वाना ।  
 गठाघ-संज्ञा पुं० दे० "गठन" ।  
 गठित-वि० गठा हुआ ।  
 गठिया-संज्ञा स्त्री० १. योन्त लादने का योन्त या दोहरा पैला । २. बड़ो गठरी । ३. एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है ।

गावतकिया-संज्ञा पुं० मसनद ।

गावदी-वि० घेवकफ ।

गावदुम-वि० जो ऊपर से बैज की पूँछ की तरह पतला होता थाया हो ।

गाह-संज्ञा पुं० १. ग्राहक । २. पकड़ ।

१. ग्राह ।

गाहक-संज्ञा पुं० १. खरीददार ।

२. कदर करनेवाला ।

गाहकी-संज्ञा स्त्री० १. विक्री । २.

ग्राहक ।

गाहन-संज्ञा पुं० [ वि० गाहित ] खान ।

गाहना-कि० स० खूबकर खाह लेना ।

गाहा-संज्ञा स्त्री० कपा ।

गाही-संज्ञा स्त्री० फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान ।

गिजना-कि० अ० किसी चीज़ का बलते धुकाटे जाने के कारण क्षय हो जाना ।

गिजाई-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का घर-साठी कीड़ा ।

संज्ञा स्त्री० गीजने का भाव ।

गिड-संज्ञा पुं० गजा ।

गिचपिच-वि० [ अनु० ] अस्पष्ट ।

गिचिर पिचिर-वि० दे० "गिच-पिच" ।

गिजगिजा-वि० ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न मालूम हो ।

गिजा-संज्ञा स्त्री० भोजन ।

गिटकिरी-संज्ञा स्त्री० तान खेने में विशेष प्रकार से स्वर का कर्षण ।

गिटपिट-संज्ञा स्त्री० विरयक शब्द ।

गिट्टी-संज्ञा स्त्री० ठीकरी ।

गिडगिडाना-कि० अ० अत्यंत मद्य होकर कोई पात या प्रार्थना करना ।

गिडगिडाहट-संज्ञा स्त्री० १. विनती ।

२. गिडगिडाने का भाव ।

गिद्ध-संज्ञा पुं० एक प्रकार का यदा मांसाहारी पक्षी ।

गिद्धराज-संज्ञा पुं० जटायु ।

गिनती-संज्ञा स्त्री० १. गणना । २. संख्या ।

गिनना-कि० स० १. गणना करना ।

२. गणित करना ।

गिनचाना-कि० स० दे० "गिनाना" ।

गिनाना-कि० स० गिनने का काम दूसरे से कराना ।

गिनी-संज्ञा स्त्री० सोने का एक सिक्का ।

गिन्नी-संज्ञा स्त्री० दे० "गिनी" ।

गिर-संज्ञा पुं० पहाड़ ।

गिरगिट-संज्ञा पुं० छिपकली की जाति का एक वंतु ।

गिरगिरी-संज्ञा स्त्री० लड़कों का एक खिलौना ।

गिरजा-संज्ञा पुं० ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर ।

गिरदा-संज्ञा पुं० १. घेरा । २. तकिया ।

गिरदाना-संज्ञा पुं० गिरगिट ।

गिरना-कि० अ० १. अपने स्थान से नीचे आ रहना । २. शक्ति या मूल्य आदि का कम या सदा होना । ३. दृटना ।

गिरस्त-संज्ञा स्त्री० पकड़ने का भाव ।

गिरस्तार-वि० जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो ।

गिरस्तारी-संज्ञा स्त्री० १. गिरफ्तार होने का भाव । २. गिरफ्तार होने की क्रिया ।

गिरमित-संज्ञा पुं० यदा बरसा

१ संज्ञा पुं० हकुरारनाम

गठियाना-क्रि० स० गठि देना ।

गठीला-वि० [ स्त्री० गठीली ] जिसमें बहुत सी गठि हैं ।

वि० १. चुस्त । २. मजबूत ।

गठौत, गठौती-संज्ञा स्त्री० १. मिश्रता । २. अभिसंधि ।

गड़-संज्ञा पुं० १. थोट । २. चहार-दीवारी ।

गड़गड़-संज्ञा स्त्री० १. बादल गरजने या गाढ़ी चलने का शब्द । २. पेट में भरी वायु के हिलने का शब्द ।

गड़गड़ा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का हुक्का ।

गड़गड़ाना-क्रि० भ० गरजना ।

क्रि० स० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना ।

गड़गड़ाहट-संज्ञा स्त्री० गड़गड़ाने का शब्द ।

गड़दार-संज्ञा पुं० वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ साथ भाला लिए हुए चलता है ।

गड़ना-क्रि० भ० १. घँसना । २. शरीर में चुभने की सी पीड़ा पहुँचाना । ३. दर्द करना । ४. दर्द होना ।

गड़प-संज्ञा स्त्री० पानी, कीचड़ आदि में किसी वस्तु के सहसा समाने का शब्द ।

गड़पना-क्रि० स० १. निगलना । २. हज़म करना ।

गड़प्पा-संज्ञा पुं० १. गड़वा । २. धोखा खाने का स्थान ।

गड़वड़-वि० [ वि० गड़वड़िया ] १. ऊँचा नीचा । २. थंडवंड ।

संज्ञा पुं० १. कुप्रबंध । २. उपद्रव ।

गड़वड़ाना-क्रि० भ० गड़वड़ी में पड़ना ।

क्रि० स० गड़वड़ी में डालना ।

गड़वड़िया-वि० गड़वड़ करनेवाला ।

गड़वड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "गड़वड़" ।

गड़रिया-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गढ़ेरिन ] एक जाति जो भेड़ों पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है ।

गड़हा-संज्ञा पुं० दे० "गड़वा" ।

गड़ा-संज्ञा पुं० ढेर ।

गड़ाना-क्रि० स० चुमाना ।

क्रि० स० गाड़ने का काम कराना ।

गड़ारी-संज्ञा स्त्री० घेरा ।

संज्ञा स्त्री० गंडा ।

संज्ञा स्त्री० घिरनी ।

गड़ारीदार-वि० १. जिस पर गंडे या घारियाँ पड़ी हों । २. घेरदार ।

गड़ई-संज्ञा स्त्री० पानी पीने का टोटी-दार छोटा बरतन ।

गड़ुघा-संज्ञा पुं० टोटीदार छोटा ।

गढ़ेरिया-संज्ञा पुं० दे० "गढ़रिया" ।

गड़-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गड़ो ] एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हों ।

† संज्ञा पुं० गड़वा ।

गड़वड़, गड़मड़-संज्ञा पुं० वपला ।

वि० थंडवंड ।

गड़वा-संज्ञा पुं० गड़हा ।

गढ़त-वि० कल्पित ।

गढ़-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गढ़ा ] १. खाई । २. किला ।

गढ़न-संज्ञा स्त्री० घनावट ।

गढ़ना-क्रि० स० १. रचना । २. दुरुस्त करना । ३. घात घनाना ।

गढ़पति-संज्ञा पुं० १. किलेदार । २. राजा ।

गढ़वाल-संज्ञा पुं० १. गढ़वाला । २.

गिरधाना-कि० स० गिराने का काम दूसरे से कराना ।  
 गिरवी-वि० बंधक ।  
 गिरवीदार-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बंधक रखी हो ।  
 गिरह-संज्ञा स्त्री० १. गाँठ २. एक गज का सोलहवाँ भाग ।  
 गिरहफट-वि० जब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट छेनेवाला । चाई ।  
 गिरा-संज्ञा स्त्री० १. बोलने की ताकत । २. धाखी । ३. सरस्वती देवी ।  
 गिराना-कि० स० १. अपने स्थान से नीचे डाल देना । २. लड़ाई में मार डालना ।  
 गिरापति-संज्ञा पुं० प्रहारा ।  
 गिराघट-संज्ञा स्त्री० गिरने की क्रिया, भाव या ढंग ।  
 गिरि-संज्ञा पुं० पर्वत ।  
 गिरिजा-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।  
 गिरिधर-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 गिरिधारन-दे० "गिरिधर" ।  
 गिरिधारी-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 गिरिनंदिनी-संज्ञा स्त्री० १. पार्वती । २. गंगा । ३. नदी ।  
 गिरिनाथ-संज्ञा पुं० महादेव ।  
 गिरिराज-संज्ञा पुं० १. बड़ा पर्वत । २. हिमालय ।  
 गिरिसुत-संज्ञा पुं० मैनाक पर्वत ।  
 गिरिसुता-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।  
 गिरीन्द्र-संज्ञा पुं० १. बड़ा पर्वत । २. हिमालय । ३. शिव ।  
 गिरीश-संज्ञा पुं० १. महादेव । २. हिमालय पर्वत । ३. कोई बड़ा पहाड़ ।  
 गिरैया-संज्ञा स्त्री० छोटा या पतला गेरावा ।  
 गिरो-वि० रेहन ।

गिर्द-अव्य० आसपास ।  
 गिर्दाघर-संज्ञा पुं० घूमनेवाला ।  
 गिळट-संज्ञा पुं० चाँदी की सफेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु ।  
 गिलटी-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें संधि-स्थान की गाँठें सूज जाती हैं ।  
 गिलना-कि० स० १. निगलना । २. मन ही मन में रखना ।  
 गिलबिलाना-कि० अ० अस्पष्ट बख़ा-रण से कुछ कहना ।  
 गिलहरी-संज्ञा स्त्री० चूहे की तरह का मोटी रोएँदार पूँछ का जंतु जो पेड़ों पर रहता है ।  
 गिला-संज्ञा पुं० बलाहना ।  
 गिलाफ-संज्ञा पुं० खोल ।  
 गिलाघा-संज्ञा पुं० गीली मिट्टी जिससे ईंट-पत्थर जोड़ते हैं । गारा ।  
 गिलास-संज्ञा पुं० पानी पीने का गोल लंबोत्तरा बरतन ।  
 गिलौरी-संज्ञा स्त्री० पानों का धीड़ा ।  
 गिलौरीदान-संज्ञा पुं० पानदान ।  
 गिल्टी-संज्ञा स्त्री० दे० "गिळटी" ।  
 गीजना-कि० स० किसी कोमल पदार्थ, विशेषतः कपड़े आदि, को इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाय ।  
 गीत-संज्ञा पुं० १. गाना । २. बड़ाई ।  
 गीता-संज्ञा स्त्री० १. भगवद्गीता । २. वृत्तांत ।  
 गीति-संज्ञा स्त्री० गान ।  
 गीतिका-संज्ञा स्त्री० १. एक मात्रिक छंद । २. गीत ।  
 गीदड़-संज्ञा पुं० सियार ।  
 नि० डरपोक ।  
 गीदी-वि० डरपोक ।

उत्तराखंड का एक प्रदेश।  
 गढ़ाई-संज्ञा स्त्री० १. गढ़ने की क्रिया या भाव। २. गढ़ने की मज़दूरी।  
 गढ़ाना-क्रि० स० गढ़वाना।  
 क्रि० अ० सुरिकल गुज़रना।  
 गढ़िया-संज्ञा पुं० गढ़नेवाला।  
 गढ़ी-संज्ञा स्त्री० छोटा क़िला।  
 गढ़ोई-संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।  
 गण-संज्ञा पुं० १. समूह। २. भेषी।  
 ३. दूत।  
 गणक-संज्ञा पुं० ज्योतिषी।  
 गणन-संज्ञा पुं० [ वि० गणनोप, गणित, गण्य ] १. गिनना। २. गिनती।  
 गणना-संज्ञा स्त्री० गिनती।  
 गणनायक-संज्ञा पुं० गणेश।  
 गणपति-संज्ञा पुं० १. गणेश। २. शिव।  
 गणराज्य-संज्ञा पुं० वह राज्य जो खुने हुए मुखियों या सरदारों के द्वारा चलाया जाता हो।  
 गणाधिप-संज्ञा पुं० १. गणेश। २. साधुओं का अधिरक्षि या महान।  
 गणिज्ञा-संज्ञा स्त्री० वेद्या।  
 गणित-संज्ञा पुं० हिसाब।  
 गणितज्ञ-वि० १. हिसाबी। २. ज्योतिषी।  
 गणेश-संज्ञा पुं० हिंदुओं के एक प्रधान देवता।  
 गण्य-वि० १. गिनने के योग्य। २. प्रतिष्ठित।  
 गत-वि० १. घीटा हुआ। २. रहित।  
 संज्ञा स्त्री० अवस्था।  
 गतका-संज्ञा पुं० १. लकड़ी खेखने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है। २. वह खेख जो फरी और गतके से खेला जाता है।  
 गतांक-वि० गथा घीना।

संज्ञा पुं० समाचार-पत्र का पिछला अंक।  
 गति-संज्ञा स्त्री० १. चाल। २. अवस्था।  
 ३. दंग। ४. मुक्ति। ५. पैर।  
 गत्ता-संज्ञा पुं० कागज़ के कई पत्रों को साटकर बनाई हुई दफ़ती।  
 गत्तालखाता-संज्ञा पुं० घटाखाता।  
 गथना-क्रि० स० १. एक में एक जोड़ना। २. बात बताना।  
 गद्-संज्ञा पुं० १. विष। २. श्रीकृष्ण-चंद्र का छोटा भाई।  
 संज्ञा पुं० वह शब्द जो किसी गुण-गुणी वस्तु पर या गुणगुणी वस्तु का आघात लगने से होता है।  
 गदका-संज्ञा पुं० दे० "गतका"।  
 गदकार-वि० पुं० [ स्त्री० गदकारी ] गुनगुना।  
 गद्गद्-वि० दे० "गद्गद्"।  
 गदना-क्रि० स० कहना।  
 गद्द-संज्ञा पुं० १. हलचल। २. चतया।  
 गद्गाना-क्रि० अ० १. ( फट आदि का ) एकने पर होना। २. जवानी में श्रमों का भरना।  
 क्रि० अ० गँदला होना।  
 वि० गदराया हुआ।  
 गद्दपन-संज्ञा पुं० मूर्खता।  
 गद्गहा-संज्ञा पुं० चिकित्सक।  
 संज्ञा पुं० [ स्त्री० गदही ] १. एक प्रसिद्ध चौपाया। २. मूर्ख।  
 गदा-संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक छोटे डंडे के छोर पर भारी लट्ट रहता था।  
 संज्ञा पुं० फुँकीर।  
 गदाई-वि० १. गुच्छ। २. चाहिशात।  
 गदाधर-संज्ञा पुं० विष्णु।  
 गदेल्ला-संज्ञा पुं० गद्ग।  
 गदोरी-संज्ञा स्त्री० हथेली।



गीघ-संज्ञा पुं० दे० "गिद्ध" ।

गीघना-कि० अ० एक बार कोई खाभ उठाकर सदा उसका हृद्युक्त रहना । परचना ।

गीर-संज्ञा स्त्री० घाणी ।

गीर्वाण-संज्ञा पुं० देवता ।

गीला-वि० [खी० गीली] भीगा हुआ ।

गीलापन-संज्ञा पुं० तरी ।

गुंगी-संज्ञा स्त्री० देसुही साप । चुक्रेड़ ।

गुंघा-संज्ञा पुं० कली ।

गुंज-संज्ञा स्त्री० भौरों के अनभनाने का शब्द । गुंजार ।

गुंजन-संज्ञा स्त्री० भौरों के गुंजने की क्रिया । अनभनाहट ।

गुंजना-कि० अ० भौरों का अनभनाना । मधुर ध्वनि निकालना ।

गुंजनिकेतन-संज्ञा पुं० भौरा ।

गुंजरना-कि० अ० १. भौरों का गुंजना । २. गरजना ।

गुंजा-संज्ञा स्त्री० धुँवची नामकी खता ।

गुंजाहश-संज्ञा स्त्री० १. अवकाश । २. समाई ।

गुंजान-वि० घना ।

गुंजायमान-वि० गुंजता हुआ ।

गुंजार-संज्ञा पुं० भौरों की गुंज । अनभनाहट ।

गुंढई-संज्ञा स्त्री० गुंढापन ।

गुंढली-संज्ञा स्त्री० १. कुंढली । २. हरी ।

गुंढा-वि० [ स्त्री० गुंढी ] बदमाश ।

गुंढापन-संज्ञा पुं० बदमाशी ।

गुंधना-कि० अ० १. तागों, बाल की खटों आदि का गुच्छेदार खड़ी

के रूप में बँधना । २. एक में बल्लभ कर मिलना ।

गुंधना-कि० अ० माँझा जाना ।

गुंधना-कि० अ० दे० "गुंधना" ।

गुंधवाना-कि० स० गुंधने का काम दूसरे से कराना ।

गुंधाई-संज्ञा स्त्री० १. गुंधने या माँझने की क्रिया या भाव । २. गुंधने या माँझने की मजदूरी ।

गुंधाघट-संज्ञा स्त्री० गुंधने या गुंधने की क्रिया या भाव ।

गुंफ-संज्ञा पुं० [वि० गुंफित] १. बल्लभ । २. गुच्छा । ३. दाढ़ी ।

गुंफन-संज्ञा पुं० [वि० गुंफित] बल्लभाव ।

गुंयज्ञ-संज्ञा पुं० गोल और ऊँची छत ।

गुंयज्ञदार-वि० जिस पर गुंयज्ञ हो ।

गुंधा-संज्ञा पुं० वह कड़ी गोल सृजन जो सिर पर चोट लगने से होती है ।

गुलमा ।

गुंभी-संज्ञा स्त्री० अंकुर ।

गुंधा-संज्ञा पुं० १. चिकनी सुपारी । २. सुपारी ।

गुंधर्या-संज्ञा पुं० साथी ।

संज्ञा स्त्री० सखी । ।

गुग्गुलु-संज्ञा पुं० एक कटिदार पेड़ जिसका गोंद सुगंध के लिये फलाने और दवा के काम में खाते हैं ।

गुग्गी-संज्ञा स्त्री० वह छोटा गड्ढा जो खदके गोली या गुग्गी-डंडा से खते समय बनाते हैं ।

वि० स्त्री० बहुत छोटी ।

गुच्छ, गुच्छक-संज्ञा पुं० १. गुच्छा । २. भाँड़ ।

गद्गद-वि० १. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण । २. प्रसन्न ।

गद्ग-संज्ञा पुं० १. मुलायम जगह पर किसी चीज़ के गिरने का शब्द । २. किसी गरिष्ठ या लहदी न पचनेवाली चीज़ के कारण पेट का भारीपन ।

गद्गर-वि० १. अधपका । २. मोटा गद्दा ।

गद्दा-संज्ञा पुं० भारी तोशक ।

गद्दी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा गद्दा । २. व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान । ३. किसी बड़े अधिकारी का पद ।

गद्दीनशीन-वि० १. सिंहासनारूढ़ । २. उत्तराधिकारी ।

गद्घ-संज्ञा पुं० वह खेल जिसमें मात्रा और धर्य की संख्या और स्थान आदि का कोई नियम न हो ।

गद्घा-संज्ञा पुं० दे० "गदहा" ।

गनः-संज्ञा पुं० दे० "गण" ।

गनगन-संज्ञा स्त्री० कपने या रोमांच होने की मुद्रा ।

गनगनाना-क्रि० भ० शीत आदि से रोमांच या कंप होना ।

क्रि० भ० गिना जाना ।

गनीमत-संज्ञा स्त्री० संतोष की बात ।

गन्ना-संज्ञा पुं० ईख ।

गण-संज्ञा स्त्री० [ वि० गण्य ] १. इधर उधर की बात, जिसकी सत्यता का निश्चय न हो । २. अफवाह ।

संज्ञा पुं० १. वह शब्द जो ऊट से निगलने, किसी नरम अथवा गीली वस्तु में घुसने आदि से होता है । २. निगलने या खाने की क्रिया ।

गणकना-क्रि० स० चटपट निगलना ।

गणद् बांध-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात ।

वि० अंड-बंड ।

गपना-क्रि० स० गप मारना ।

गपोहा-संज्ञा पुं० मिथ्या बात ।

गप्प-संज्ञा स्त्री० दे० "गप" ।

गप्पा-संज्ञा पुं० धोखा ।

गप्पी-वि० गप मारनेवाला ।

गप्फा-संज्ञा पुं० १. बड़ा कौर । २. छाम ।

गफ-वि० घना ।

गफुलत-संज्ञा स्त्री० १. असावधानी ।

२. भूल ।

गयन-संज्ञा पुं० किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा लेना ।

गयक-वि० १. पट्टा । २. सीधा ।

† संज्ञा पुं० दूल्हा ।

गवरून-वि० चारखाने की तरह का एक मोटा कपड़ा ।

गव्वर-वि० १. घर्मन्डी । २. मंद ।

गभस्ति-संज्ञा पुं० १. किरण । २. सूर्य ।

संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा ।

गभस्तिमान्-संज्ञा पुं० सूर्य ।

गभीरः-वि० दे० "गभीर" ।

गभुआर-वि० १. गभ का (वाल) । २. जिसका मुँडन न हुआ हो ।

३. नादान ।

गम-संज्ञा स्त्री० पहुँच ।

गम-संज्ञा पुं० १. दुःख । २. चिंता ।

गमक-संज्ञा पुं० घतलानेवाला ।

संज्ञा स्त्री० सुरांध ।

गमकना-क्रि० भ० महकना ।

गमखोर-वि० [संज्ञा घमखोरी] सहन-शील ।

गमन-संज्ञा पुं० [वि० गम्य] १. जाना ।

२. संभोग । ३. राह ।

४. क्रि० भ० सोच करना ।

गुच्छा-संज्ञा पुं० एक में लगी या  
बैची छोटी वस्तुओं का समूह ।

गुच्छेदार-वि० जिसमें गुच्छ हो ।

गुंजर-संज्ञा पुं० १. निकास । २. पीठ ।  
३. निर्वाह ।

गुंजरना-कि० भ० १. धीतना । २.  
किसी स्थान से होकर आना या  
जाना । ३. निर्वाह होना ।

गुंजर घसर-संज्ञा पुं० निर्वाह ।

गुजरात-संज्ञा पुं० [ वि० गुजराती ]  
भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम प्रांत का  
एक देश ।

गुजराती-वि० १. गुजरात का निवा-  
सी । २. गुजरात का बना हुआ ।  
संज्ञा स्त्री० १. गुजरात देश की भाषा ।  
२. छोटी इलायची ।

गुंजारना-कि० स० बिताना ।

गुंझारा-संज्ञा पुं० १. निर्वाह । २.  
वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाह के लिये  
दी जाय ।

गुंजारिश-संज्ञा स्त्री० निवेदन ।

गुंभिया-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
पकवान । कुसली ।

गुंफना-कि० भ० कवूतर की तरह  
गुंटरगुं करना ।

† कि० स० निगलना ।

गुंफा-संज्ञा पुं० छोटे आकार की गुफा ।

गुंटरगुं-संज्ञा स्त्री० कवूतरों की बोली ।

गुंठ-संज्ञा पुं० समूह ।

गुंठल-वि० १. ( फल ) जिसमें बड़ी  
गुंठली हो । २. जड़ । ३. गुंठली के  
आकार का ।

गुंठली-संज्ञा स्त्री० ऐसे 'फल' का बीज  
जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो ।

गड़-संज्ञा पुं० पकाकर जमाया हुआ

अन्न या खजूर का रस जो यद्यो 'गुंठली'  
में ही के रूप में होता है ।

गुड़गुड़-संज्ञा पुं० वह शब्द जो जड़  
में नली आदि के द्वारा हवा फूँकने  
से होता है ।

गुड़गुड़ाना-कि० भ० गुड़गुड़ शब्द  
होना ।

कि० स० हुका पीना ।

गुड़गुड़ाहट-संज्ञा स्त्री० गुड़गुड़ शब्द  
होने का भाव ।

गुड़गुड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार  
का हुका ।

गुड़धानी-संज्ञा स्त्री० वह जड़ जो  
मुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर  
पार्थे जाते हैं ।

गुड़रु-संज्ञा पुं० एक चिड़िया ।

गुंइहर-संज्ञा पुं० अड़हल का पेड़  
या फूट ।

गुंइहल-संज्ञा पुं० दे० "गुंइहर" ।

गुंइकेश-संज्ञा पुं० १. शिव । २.  
अर्जुन ।

गुंइया-संज्ञा स्त्री० कपड़ों की बनी  
हुई युतली जिससे जड़कियाँ  
खेजती हैं ।

गुंड़ी-संज्ञा स्त्री० पतंग ।

गुंड़ी-संज्ञा स्त्री० गुंठ । गिलोथ ।

गुंड़ा-संज्ञा पुं० गुंठवा ।

संज्ञा पुं० † बड़ी पतंग ।

गुंड़ी-संज्ञा स्त्री० पतंग ।

संज्ञा स्त्री० घुटने की हड्डी ।

गुंथ-संज्ञा पुं० [ वि० गुंथी ] १. सिक्का ।

२. हुनर । ३. असर । ४. विशेषता ।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक  
शब्दों के आगे लगकर बतानी ही  
बार और होना सूचित करता है ।

गमला-संज्ञ पुं० फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का बरतन ।

गमाना-क्रि० स० दे० "गमाना" ।

गमी-संज्ञ स्त्री० १. शोक की अवस्था या काल । २. वह शोक जो किसी मनुष्य के मरने पर उसके संबंधी करते हैं । ३. मृत्यु ।

गम्य-वि० १. जाने योग्य । २. साध्य ।

गम्यं-संज्ञ पुं० बड़ा हाथी ।

गम-संज्ञ पुं० १. घर । २. आकाश ।  
० संज्ञ पुं० हाथी ।

गया-संज्ञ पुं० बिहार या मगध का एक तीर्थ जहाँ हिंदू पिंडदान करते हैं ।

क्रि० म० 'जाना' क्रिया का भूत-कालिक रूप । प्रत्यानित हुआ ।

गयावाल-संज्ञ पुं० गया तीर्थ का पंडा ।

गर-संज्ञ पुं० १. रोग । २. विष ।

० संज्ञ पुं० गला ।

प्रत्य० (किसी काम को) बनाने या करनेवाला ।

गरक-वि० १. निमग्न । २. चरवादा ।

गरगज-संज्ञ पुं० किशो की दीवारों पर बना हुआ मुर्ज जिस पर चोपें रहती हैं ।

† वि० विशाल ।

गरगर-संज्ञ पुं० गरगड़ी ।

गरज-संज्ञ स्त्री० १. बहुत गंभीर शब्द । २. वादल या सिंहा का शब्द ।

गरज-संज्ञ स्त्री० १. मतलब । २. आवश्यकता । ३. चाह ।

भय० १. निदान । २. मतलब यह कि ।

गरजना-क्रि० म० बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना ।

वि० गरजनेवाला ।

गरजमंद-वि० [ संज्ञ गरजमंदी ] १. ज्वररतवाला । २. दृष्टुक ।

गरजी-वि० दे० "गरजमंद" ।

गरजू-वि० दे० "गरजमंद" ।

गरदन-संज्ञ स्त्री० १. घड़ और सिर को जोड़नेवाला घंग । गला । २. बरतन आदि का ऊपरी भाग ।

गरदनिर्वा-संज्ञ स्त्री० ( किसी को किसी स्थान से ) गरदन पकड़कर निकालने की क्रिया ।

गरदा-संज्ञ पुं० भूल ।

गरना-क्रि० म० १. दे० "गलना" । २. दे० "गढ़ना" ।

क्रि० म० बिचुड़ना ।

गरव-संज्ञ पुं० १. दे० "गर्व" । २. हाथी का मंद ।

गरव-गहेला-वि० गर्वीला ।

गरवना, गरवाना-क्रि० म० घमंड में आना ।

गरवीला-वि० जिसे गर्व हो ।

गरम-वि० १. गरम । २. सीढ़ण । ३. तेज । ४. उत्साह-पूर्ण ।

गरमागरमी-संज्ञ स्त्री० १. मुस्सैदी । २. कड़ा-मुनी ।

गरमाना-क्रि० म० १. गरम पड़ना । २. मस्ताना । ३. क्रोध करना ।

† क्रि० स० गरम करना ।

गरमाहट-संज्ञ स्त्री० गरमी ।

गरमी-संज्ञ स्त्री० १. गरमता । २. तेजी । ३. क्रोध । ४. मोक्ष अद्भुत ।

२. थातशक ।

गरराना-क्रि० म० गंभीर गरजना ।

गरल-संज्ञ पुं० विष ।

गुणक-संज्ञा पुं० वह श्रेक जिससे किसी श्रेक को गुणा करें।

गुणकारक- (फारी)-वि० लाभदायक।

गुणग्राहक-संज्ञा पुं० गुणियों का आदर करनेवाला मनुष्य।

गुणग्राही-वि० दे० "गुणग्राहक"।

गुणज्ञ-वि० १. गुण को पहचाननेवाला। २. गुणी।

गुणज्ञ-संज्ञा पुं० [ वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित ] १. गुणा करना। २. गिनना। ३. मनन करना।

गुणनफल-संज्ञा पुं० वह श्रेक या संख्या जो एक श्रेक को दूसरे श्रेक के साथ गुणा करने से आवे।

गुणना-क्रि० स० गुणन करना।

गुणधत्त-वि० दे० "गुणवान्"।

गुणधात्वक-वि० जो गुण को प्रकट करे।

गुणधान-वि० [ स्त्री० गुणधती ] गुणवाला।

गुणांक-संज्ञा पुं० वह श्रेक जिसको गुणा करना हो।

गुणा-संज्ञा पुं० [ वि० गुण्य, गुणित ] गुणित की एक क्रिया। उरध।

गुणाख्य-वि० गुणपूर्ण।

गुणानुवाद-संज्ञा पुं० गुण-कथन। प्रशंसा।

गुणित-वि० गुणा किया हुआ।

गुणी-वि० गुणवाला।

संज्ञा पुं० हुनरमंद।

गुण्य-संज्ञा पुं० वह श्रेक जिसको गुणा करना हो।

गुण्यमगुण्या-संज्ञा पुं० १. उल्लेख्य। २. सिद्धंत।

गुत्थी-संज्ञा स्त्री० गिरह।

गुथना-क्रि० अ० १. एक लट्ठी या गुच्छे में नापा जाना। २. भरी सिलाई होना।

गुथयाना-क्रि० स० गुथने का काम दूसरे से कराना।

गुदकार, गुदाकारा-वि० १. गूदेदार। २. गुदगुदा।

गुदगुदा-वि० १. गूदेदार। मांस से भरा हुआ। २. मुलायम।

गुदगुदना-क्रि० अ० हँसाने या छेड़ने के लिये किसी के तलबे, काँख आदि को सहलाना।

गुदगुदी-संज्ञा स्त्री० १. वह सुरसुरा-हट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर रेंगली आदि छू जाने से होती है। २. बरकड़ा।

गुदड़ी-संज्ञा स्त्री० फटे-पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ कपड़ा।

गुदना-संज्ञा पुं० दे० "गोदना"। क्रि० अ० चुभना।

गुदरना-क्रि० अ० गुजरना। क्रि० स० विवेचन करना।

गुदाना-क्रि० स० गोदने की क्रिया कराना।

गुदो-संज्ञा पुं० १. फल के बीज के भीतर का रूढ़। २. सिर का पिछला भाग। ३. दूधेली का मांस।

गुन-संज्ञा पुं० दे० "गुण"।

गुनगना-वि० दे० "कुनकुना"।

गुनगुनाना-क्रि० अ० १. गुनगुन शब्द करना। २. अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनना-क्रि० स० गिनना।

गरहनी-संज्ञा पुं० दे० "ग्रहण" ।  
 गराव-संज्ञा पुं० दोहरी रस्सी जो  
 चौपायों के गले में बांधी जाती है ।  
 गरा-संज्ञा पुं० दे० "गत्ता" ।  
 गराज-संज्ञा स्त्री० गरज ।  
 गराड़ी-संज्ञा स्त्री० चरखी ।  
 गराना-संज्ञा पुं० दे० "गलाना" ।  
 कि० सं० १. गारने का काम कराना ।  
 २. गारना ।  
 गरिमा-संज्ञा स्त्री० १. गुरुत्व । २.  
 महिमा । ३. अहंकार ।  
 गरियाना-संज्ञा पुं० अ० गाली देना ।  
 गरियार-वि० सुख ।  
 गरिष्ठ-वि० १. अत्यंत भारी । २.  
 जो जख्मी न पचे ।  
 गरी-संज्ञा स्त्री० नारियल के फल के  
 भीतर का सुलायम खाने योग्य गोला ।  
 गरीय-वि० १. नम्र । २. दरिद्र ।  
 गरीबी-संज्ञा स्त्री० १. दीनता । २.  
 दरिद्रता ।  
 गरीयस-वि० [ स्त्री० गरीयसी ] १.  
 बड़ा भारी । २. महान् ।  
 गरु, गरुडा-वि० [ स्त्री० गरु ]  
 १. भारी । २. गौरवशाली ।  
 गरुडाई-संज्ञा स्त्री० गुरुता ।  
 गरुड-संज्ञा पुं० १. विष्णु के वाहन  
 जो पक्षियों के राजा माने जाते हैं ।  
 २. बहुतों के मत से उकायपक्षी ।  
 गरुडगामी-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २.  
 श्रीकृष्ण ।  
 गरुडध्वज-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 गरुडपुराण-संज्ञा पुं० अठारह पुराणों  
 में से एक ।  
 गरुडाई-संज्ञा स्त्री० दे० "गरु-  
 डाई" ।

गरु-वि० भारी ।  
 गरुर-संज्ञा पुं० घमंड ।  
 गरुरी-वि० घमंडी ।  
 संज्ञा स्त्री० घमंड ।  
 गरवान-संज्ञा पुं० श्रंगे, कुरते आदि  
 में गले पर का भाग ।  
 गरेरना-कि० सं० घेरना ।  
 गरोह-संज्ञा पुं० कुंड ।  
 गर्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "गरज" ।  
 गर्जन-संज्ञा पुं० भीषण ध्वनि ।  
 गर्जना-कि० अ० दे० "गरजना" ।  
 गर्त्त-संज्ञा पुं० गड्ढा ।  
 गर्द-संज्ञा स्त्री० धूल ।  
 गर्दखोर, गर्दखोरा-वि० जो गर्द  
 या मिट्टी आदि पड़ने से जख्मी मैला  
 या खराब न हो ।  
 संज्ञा पुं० पाँव पोंछने का दाढ़ या  
 कपड़ा ।  
 गर्दम-संज्ञा पुं० गधा ।  
 गर्दिश-संज्ञा स्त्री० १. घुमाव । २.  
 विपत्ति ।  
 गर्भ-संज्ञा पुं० १. हमस । २. गर्भाशय ।  
 गर्भकेसर-संज्ञा पुं० फूलों में वे पतले  
 सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं ।  
 गर्भगृह-संज्ञा पुं० घर का मध्य भाग ।  
 गर्भनाल-संज्ञा स्त्री० फूलों के अंदर  
 की वह पतली नाल जिसके सिरे पर  
 गर्भकेसर होता है ।  
 गर्भपात-संज्ञा पुं० पेट में से बच्चे का  
 पूरी याद के पहले निकल जाना ।  
 गर्भधृती-वि० स्त्री० गर्भिणी ।  
 गर्भांक-संज्ञा पुं० नाटक के अंक का  
 एक भाग या दृश्य ।

गु नहगार-वि० १. पापी । २. दोषी ।  
 गु नही-संज्ञा पुं० गुनहगार ।  
 गु ना-संज्ञा पुं० १. एक प्रत्यय जो किसी संख्या में लगकर किसी वस्तु का वतनी ही बार घोर होना सूचित करता है । २. गुणा ।  
 गु नाह-संज्ञा पुं० १. पाप । २. दोष ।  
 गु नाही-संज्ञा पुं० "गुनहगार" ।  
 गु निया-संज्ञा पुं० गुणवान् ।  
 गु नी-वि०, संज्ञा पुं० दे० "गुणी" ।  
 गु पचुप-क्रि० वि० बहुत गुप्त रीति से ।  
 संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई ।  
 गु पुत-वि० दे० "गुप्त" ।  
 गु स-वि० १. क्षिपा हुआ । २. गूढ़ ।  
 संज्ञा पुं० वैश्यों का अछ ।  
 गु सचर-संज्ञा पुं० जासूस ।  
 गु सी-संज्ञा स्त्री० वह छद्मी जिसके अंदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार हो ।  
 गु फा-संज्ञा स्त्री० कंदरा । गुहा ।  
 गु धरैला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा कीड़ा ।  
 गु ध्यारा-संज्ञा पुं० वह धैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाश में उड़ाते हैं ।  
 गु म-संज्ञा पुं० १. गुप्त । २. सोया हुआ ।  
 गु मटा-संज्ञा पुं० वह गोल सूजन जो मथे या सिर पर चोट लगने से होती है ।  
 गु मटी-संज्ञा स्त्री० मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरों आदि की छत जो सधसे उपर उठी हुई होती है ।  
 गु मना-क्रि० अ० खो जाना ।  
 गु मनाम-वि० १. अप्रसिद्ध । २. जिसमें नाम न दिया हो ।

गु मर-संज्ञा पुं० १. अभिमान ।  
 कानाफूसी ।  
 गु मराह-वि० १. तुरे मार्ग में चलावाला । २. भूला भटका हुआ ।  
 गु मान-संज्ञा पुं० घमंड ।  
 गु माना-क्रि० स० दे० "गैमान" ।  
 गु मानी-वि० घमंडी ।  
 गु मास्ता-संज्ञा पुं० बड़े व्यापारी और के खरीदने और बेचने पर निमित्त मनुष्य । एजेंट ।  
 गु म्मट-संज्ञा पुं० गुंबद ।  
 संज्ञा पुं० दे० "गुमटा" ।  
 गु म्मा-वि० चुप्पा ।  
 गु र-संज्ञा पुं० युक्ति ।  
 संज्ञा पुं० दे० "गुरु" ।  
 गु रगा-संज्ञा पुं० [स्त्री० गुणी] १. चेहरा । २. टहलुआ । ३. गुप्तधर ।  
 गु रमुख-वि० जिसने गुरु से मंत्र लिखा हो । दीक्षित ।  
 गु राई-संज्ञा स्त्री० दे० "गोराई" ।  
 गु रिदा-संज्ञा पुं० गदा ।  
 गु रिया-संज्ञा स्त्री० वह दाना या मन्त्र जो माला का एक श्रेण हो ।  
 गु रु-वि० भारी ।  
 संज्ञा पुं० [स्त्री० गुरुमानी] आचार्य ।  
 गु रुथानी-संज्ञा स्त्री० गुरु की स्त्री ।  
 गु रुथाई-संज्ञा स्त्री० १. गुरु का धर्म । २. गुरु का काम । ३. चालाकी ।  
 गु रुकुल-संज्ञा पुं० गुरु, आचार्य । शिक्षक के रहने का स्थान जहाँ विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो ।  
 गु रुच-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मोटा घेरा जो पेड़ों पर चढ़ी मिलती और दवा के काम में आती है ।

गुरुजन-संज्ञा पुं० बड़े लोग ।  
 गुरुता-संज्ञा स्त्री० १. गुरुत्व । २. महत्त्व ।  
 गुरुत्व-संज्ञा पुं० १. भारीपन । २. महत्त्व ।  
 गुरुत्वाकर्षण-संज्ञा पुं० वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती हैं ।  
 गुरुदक्षिणा-संज्ञा स्त्री० वह दक्षिणा जो धिया पढ़ने पर गुरु को दी जाय ।  
 गुरुद्वारा-संज्ञा पुं० १. आचार्य या गुरु के रहने की जगह । २. सिक्खों का मंदिर ।  
 गुरुमार्ग-संज्ञा पुं० एक ही गुरु के शिष्य ।  
 गुरुमुख-वि० दीर्घित ।  
 गुरुमुखी-संज्ञा स्त्री० गुरु नानक की बनाई हुई एक प्रकार की लिपि ।  
 गुरुवार-संज्ञा पुं० बृहस्पति का दिन ।  
 गुरु-संज्ञा पुं० अध्यापक ।  
 गुरुरना-कि० स० घूरना ।  
 गुरुज-संज्ञा पुं० गदा ।  
 संज्ञा पुं० दे० "गुरुज" ।  
 गुरुज-संज्ञा पुं० गुजरात देश का निवासी ।  
 गुरुजरी-संज्ञा स्त्री० गुजरात देश की स्त्री ।  
 गुराना-कि० प्र० १. डराने के लिये घुर घुर की तरह गंभीर शब्द करना । २. प्रोध या धमिमान में बर्कश स्वर से बोलना ।  
 गुल-संज्ञा पुं० १. गुलाब का फूल । २. फूल । ३. छाप । ४. दीपक में घसी का वह अंग जो जलकर समर धाता है ।  
 संज्ञा पुं० कनपटी ।  
 गुल-संज्ञा पुं० शोर ।

गुलकंद-संज्ञा पुं० मिर्ची या चीनी में मिठाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पत्तरियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दख साफ खाने के लिये होता है ।  
 गुलकारी-संज्ञा स्त्री० बेलचूटे का काम ।  
 गुलखरू-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें नीचे रंग के फूल लगते हैं ।  
 गुलगुलाड़ा-संज्ञा पुं० शोर ।  
 गुलगुल-वि० नरम ।  
 गुलगुली-वि० दे० "गुलगुल" ।  
 संज्ञा पुं० एक सीठा पकवान ।  
 गुलगुलाना-कि० स० गूदेदार चीज को दबा या मलकर मुलायम करना ।  
 गुल्लुरा-संज्ञा पुं० वह भोग-विलास या चीन जो बहुत स्वच्छंदतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जाय ।  
 गुलज़ार-संज्ञा पुं० पाग ।  
 वि० दुरा-भरा ।  
 गुलभट्टी-संज्ञा स्त्री० १. बलभन की गाँठ । २. सिकुड़न ।  
 गुलथी-संज्ञा स्त्री० १. पानी ऐसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली या गोली । २. मांस की गाँठ ।  
 गुलदस्ता-संज्ञा पुं० सुंदर फूलों और पत्तियों का एक में बंधा समूह ।  
 गुलदावदी-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जो सुंदर गुच्छेदार फूलों के लिये लगाया जाता है ।  
 गुलदान-संज्ञा पुं० गुलदस्ता रखने का पात्र ।  
 गुलनार-संज्ञा पुं० १. बनार का फूल । २. बनार के फूल का सा गहरा लाल रंग ।  
 गुलबकावली-संज्ञा स्त्री० हल्दी की



२. पाकी निकासना ।  
 घटाघ-संज्ञ पुं० कमी ।  
 घटिका-संज्ञ स्त्री० छोटा घड़ा ।  
 घटित-वि० घना हुआ ।  
 घटिया-वि० सस्ता ।  
 घटिहा-वि० १. घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला । २. चालाक ।  
 ३. दुष्ट ।  
 घटी-संज्ञ स्त्री० १. कमी । २. हानि ।  
 घट्टा-संज्ञ पुं० शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगते लगते पड़ जाता है ।  
 घड़घड़ाना-कि० प्र० गड़गड़ाना ।  
 घड़घड़ाहट-संज्ञ स्त्री० घड़घड़ शब्द होने का भाव ।  
 घड़नई, घड़नैल-संज्ञ स्त्री० घाँस में घड़े बांधकर बनाया हुआ ढाँचा जिससे छोटी छोटी नदियाँ पार करते हैं ।  
 घड़ा-संज्ञ पुं० मिट्टी का पानी भरने का बरतन ।  
 घड़िया-संज्ञ स्त्री० मिट्टी का छोटा बरतन ।  
 घड़ियाल-संज्ञ पुं० वह घंटा जो पूजा में या समय की सूचना के लिये बजाया जाता है ।  
 संज्ञ पुं० ग्राह ।  
 घाड़याली-संज्ञ पुं० बंटा बजानेवाला ।  
 घड़ी-संज्ञ स्त्री० १. समय । २. समय-सूचक यंत्र ।  
 घड़ीदिशा-संज्ञ पुं० वह घड़ा और दिया जो घर के किसी के मरने पर घर में रखा जाता है ।  
 घड़ीसाश-संज्ञ पुं० घड़ी की मरम्मत करनेवाला ।  
 घड़ीची-संज्ञ स्त्री० पानी से भरा घड़ा

रखने की तिपाई ।  
 घटिया-संज्ञ पुं० घात करनेवाला ।  
 घटियाना-कि० सं० १. मतलब पार चढ़ाना । २. घुराना ।  
 घन-संज्ञ पुं० १. मेघ । २. जोहारों का घड़ा हथौड़ा जिससे वे गरम जोहा पीटते हैं । ३. समूह । ४. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनों का विस्तार ।  
 वि० १. घना । २. दृढ़ ।  
 घनगरज-संज्ञ स्त्री० बादल के गरजने की ध्वनि ।  
 घनघनाना-कि० प्र० घंटे की सी ध्वनि निकलना ।  
 कि० सं० घन घन शब्द करना ।  
 घनघनाहट-संज्ञ स्त्री० घन घन शब्द निकलने का भाव या ध्वनि ।  
 घनघोर-संज्ञ पुं० भीषण ध्वनि ।  
 वि० गहरा ।  
 घनचक्र-संज्ञ पुं० १. मूल । २. आवारागर्द ।  
 घनरथ-संज्ञ पुं० १. घनापन । २. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव ।  
 घननाद-संज्ञ पुं० मेघनाद ।  
 घनफल-संज्ञ पुं० लंबाई चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणनफल ।  
 घनमूल-संज्ञ पुं० गणित में किसी घन (राशि) का मूल यंत्र ।  
 घनश्याम-संज्ञ पुं० १. काला पादल । २. शीकृष्ण ।  
 घनसार-संज्ञ पुं० कपूर ।  
 घना-वि० [ स्त्री० घनी ] १. सघन । २. निकट का ।  
 घनात्मक-वि० जिसकी लंबाई, चौड़ाई

जाति का एक पौधा जिसमें सुंदर सफेद सुगंधित फूल लगते हैं।

गुलवदन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

गुलमेंहदी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार के फूल का पौधा।

गुललाला-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का फूल।

गुलशन-संज्ञा पुं० घाटिका।

गुलशब्बो-संज्ञा स्त्री० रजनीगंधा फूल।

गुलाब-संज्ञा पुं० एक झाड़ू या कंदीला पौधा जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं।

गुलाबजामुन-संज्ञा पुं० एक मिठाई।

गुलाबपाश-संज्ञा पुं० झारी के आकार का एक लंबा पात्र जिसमें गुलाबजल भरकर छिड़कते हैं।

गुलाबी-वि० १. गुलाब के रंग का।

२. गुलाब-संबंधी। ३. हलका।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका लाल रंग।

गुलाम-संज्ञा पुं० १. मोल लिया हुआ दास। २. नौकर।

गुलामी-संज्ञा स्त्री० १. दासत्व। २.

नौकरी। ३. पराधीनता।

गुलाल-संज्ञा पुं० एक प्रकार की लाल धुकनी या धूर्ण जिसे हिंदू होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं।

गुलाला-संज्ञा पुं० दे० "गुललाला"।

गुलिस्तान-संज्ञा पुं० बाग।

गुल्यंद-संज्ञा पुं० १. लंबी और प्रायः एक घालिस्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से घचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटते हैं। २. गले का एक गहना।

गुलेल-संज्ञा स्त्री० वह कमान या धनुष जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेला-संज्ञा पुं० १. मिट्टी की गोली जिसको गुलेल से फेंककर चिट्ठियों का शिकार किया जाता है। २. गुलेल।

गुल्फ-संज्ञा पुं० घुँदों के ऊपर की गाँठ।

गुल्म-संज्ञा पुं० १. ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो। २. सेना का एक समुदाय।

गुल्ला-संज्ञा पुं० मिट्टी की बनी हुई गोली जो गुलेल से फेंकते हैं।

संज्ञा पुं० शेर।

संज्ञा पुं० दे० "गुलेल"।

गुल्लाला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे के समान होता है।

गुल्ली-संज्ञा स्त्री० फल की गुठली।

गुसाई-संज्ञा पुं० दे० "गोसाई"।

गुस्ताख-वि० बड़ों का संकोच न रखनेवाला। अशिष्ट।

गुस्ताखी-संज्ञा स्त्री० धृष्टता।

गुस्ल-संज्ञा पुं० स्नान।

गुस्लखाना-संज्ञा पुं० स्नानागार।

गुस्सा-संज्ञा पुं० [वि० गुस्सावर, गुस्सेल] क्रोध।

गुस्सैल-वि० जिसे जल्दी क्रोध आवे।

गुह-संज्ञा पुं० १. कात्तिकेय। २.

अश्व। ३. विष्णु का एक नाम।

४. निषाद जाति का एक नायक जो राम का मित्र था। ५. गुफा।

संज्ञा पुं० मैला।

गुहना-वि० स० दे० "गूँयना"।

गुहराना-वि० स० पुकारना।

गुह्वाना-वि० स० गुहने का काम।

घाला-संज्ञा पुं० दे० "घलुआ" ।  
 घालक-संज्ञा पुं० [ खी० घालिका ]  
 मारने या नाश करनेवाला ।  
 घालना-कि० सं० १. डालना ।  
 २. चलाना । ३. बिगाड़ना ।  
 घालमेल-संज्ञा पुं० गड़-बड़ ।  
 घाव-संज्ञा पुं० शरीर । जखम ।  
 घावरिया-संज्ञा पुं० घावों की  
 चिकित्सा करनेवाला ।  
 घास-संज्ञा स्त्री० घृण ।  
 घिग्घी-संज्ञा स्त्री० १. हिचकी । २.  
 खेलने में वह रुकावट जो भय के  
 मारे पड़ती है ।  
 घिघियाना-कि० अ० गिड़गिड़ाना ।  
 घिचपिच-संज्ञा स्त्री० सँकरापन ।  
 वि० गिचपिच ।  
 घिन-संज्ञा स्त्री० १. अरुचि । २.  
 गंदी चीज़ देखकर जी मचलाने की  
 सी अवस्था ।  
 घिनाना-कि० अ० घृणा करना ।  
 घिनायना-वि० दे० "घिनौना" ।  
 घिनौना-वि० [ स्त्री० घिनौनी ] जिसे  
 देखने से घिन लगे ।  
 घिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "घिरनी" ।  
 घिया-संज्ञा स्त्री० कद्दू ।  
 घियातोर-संज्ञा स्त्री० नेबुवा ।  
 घिरना-कि० अ० १. घेरने में आना ।  
 २. चारों ओर इकट्ठा होना ।  
 घिरनी-संज्ञा स्त्री० १. गराही । २.  
 चक्र ।  
 घिराई-संज्ञा स्त्री० १. घेरने की क्रिया  
 या भाव । २. पशुओं को चराने  
 का काम या मजदूरी ।  
 घिराव-संज्ञा पुं० १. घेरने या घिरने  
 की क्रिया या भाव । २. घेरा ।

घिराना-कि० सं० १. घसीटना ।  
 २. गिड़गिड़ाना ।  
 घिसघिस-संज्ञा स्त्री० १. कार्य में  
 शिथिलता । २. अनिश्चय ।  
 घिसना-कि० सं० रगड़ना ।  
 कि० अ० रगड़ खाकर कम होना ।  
 घिसपिसा-संज्ञा स्त्री० घिसघिस ।  
 घिसवाना-कि० सं० रगड़वाना ।  
 घिसाई-संज्ञा स्त्री० घिसने की क्रिया,  
 भाव या मजदूरी ।  
 घिस्सा-संज्ञा पुं० १. घक्का । २. रस ।  
 घी-संज्ञा पुं० घृत ।  
 घुँईया-संज्ञा स्त्री० अरबी कंद ।  
 घुँघनी-संज्ञा स्त्री० भिंगोकर तला हुआ  
 चना, मटर या और कोई अन्न ।  
 घुघराहो-वि० दे० "घुँघराहो" ।  
 घुँघराहो-वि० [ स्त्री० घुँघराहो ] घूमे  
 हुए (बाग) ।  
 घुँघरू-संज्ञा पुं० १. किसी घात की  
 बनी हुई गोल पोली गुरिया जिसके  
 भीतर 'घन घन' बजने के लिये कंकड़  
 भर देते हैं । २. गुरियों का बना  
 हुआ पैर का गड़ना ।  
 घुँघुघारे-वि० दे० "घुँघराहो" ।  
 घुडो-संज्ञा स्त्री० १. कपड़े का गोल  
 चटन । २. कोई गोल गाँठ ।  
 घुग्घू-संज्ञा पुं० बल्लू पक्षी ।  
 घुघुआना-कि० अ० १. बल्लू पक्षी  
 का बोलना । २. बिल्ली का गुराना ।  
 घुटकना-कि० सं० १. घूँट घूँट करके  
 पीना । २. निगल जाना ।  
 घुटना-संज्ञा पुं० टाँग और जाँघ के  
 बीच की गाँठ ।  
 कि० अ० साँस का भीतर ही दब  
 जाना, बाहर न निकलना ।

करना। गुंधवाना ।  
 गुहा-संज्ञा स्त्री० गुफा ।  
 गुहाई-संज्ञा स्त्री० १. गुहने की क्रिया,  
 ढंग या भाव । २. गुहने की  
 मजदूरी ।  
 गुहार-संज्ञा स्त्री० रक्षा के लिये पुकार ।  
 दोहाई ।  
 गुहा-वि० १. गुप्त । २. गोपनीय ।  
 ३. गुह्य ।  
 गुह्यपति-संज्ञा पुं० कुयेर ।  
 गुना-वि० [ स्त्री० गुणी ] जो बोल  
 न सके ।  
 गुज-संज्ञा स्त्री० १. गुंजार । २.  
 प्रतिध्वनि । ३. लहू की कील ।  
 ४. कान की बालियों में छपेटा हुआ  
 पतला तार ।  
 गुंजना-क्रि० प्र० १. गुंजारना ।  
 २. प्रतिध्वनित होना ।  
 गुंधना-क्रि० स० दे० "गूंधना" ।  
 गुंधना-क्रि० स० माढ़ना ।  
 क्रि० स० पिरोना ।  
 गुजर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गुजरी, गुज-  
 रिया ] रवाला ।  
 गुजरी-संज्ञा स्त्री० १. गुजर जाति की  
 स्त्री । २. पैर में पहनने का एक  
 जेवर ।  
 गुह-वि० १. गुप्त । २. कठिन ।  
 गुहता-संज्ञा स्त्री० १. गुप्तता । २.  
 कठिनता ।  
 गुथना-क्रि० स० पिरोना ।  
 गुदड़-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गुदड़ी ] चिपड़ा ।  
 गुदा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गुदी ] फल के  
 भीतर का वह अंग जिसमें रस  
 आदि रहता है ।

गून-संज्ञा स्त्री० वह रस्सी जिससे  
 नाव खींचते हैं ।  
 गुमा-संज्ञा पुं० एक छोटा पीघा ।  
 गुलर-संज्ञा पुं० बट चर्चा का एक संज्ञा  
 पैदा जिसमें लड्डू के से गोल फल  
 लगते हैं ।  
 गुध्र-संज्ञा पुं० निध्र ।  
 गुह-संज्ञा पुं० [ वि० गृही ] १. घर ।  
 २. कुटुंब ।  
 गुहप, गुहपति-संज्ञा पुं० [ स्त्री०  
 गृहपती ] १. घर का मालिक । २.  
 अग्नि ।  
 गुहयुद्ध-संज्ञा पुं० १. घर के भीतर  
 का झगड़ा । २. किसी देश के भीतर  
 ही आपस में होनेवाली लड़ाई ।  
 गुहस्थ-संज्ञा पुं० १. घर-बारवाला ।  
 २. वह जिसके यहाँ खेती होती हो ।  
 गुहस्थाश्रम-संज्ञा पुं० चार आश्रमों  
 में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग  
 विवाह करके रहते और घर का  
 काम-काज देखते हैं ।  
 गुहस्थी-संज्ञा स्त्री० १. गृह-प्रवस्था ।  
 २. पेंती-बारी ।  
 गुहिणी-संज्ञा स्त्री० १. घर की मालि-  
 किन । २. स्त्री ।  
 गृही-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गृहिणी ] गृहस्थ ।  
 गृह्य-वि० गृह-संबंधी ।  
 गैडा-संज्ञा पुं० ईख के ऊपर का  
 पत्ता ।  
 संज्ञा पुं० घेरा ।  
 गैडना-क्रि० स० १. खेतों को मेंद  
 से घेरकर हद बांधना । २. घेरना ।  
 गैडा-संज्ञा पुं० १. ईख के ऊपर के  
 पत्ते । २. ईख ।

कि० अ० घोटा जाना ।

घुटघा-संज्ञ पुं० पायजामा ।

घुटघाना-कि० स० १. घोटने का काम कराना । २. बाज सुँड़ाना ।

घुटाई-संज्ञ स्त्री० घोटने या रगड़ने का भाव या क्रिया ।

घुटाना-कि० स० घोटने का काम दूसरे से कराना ।

घुट्टी-संज्ञ स्त्री० वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जाती है ।

घुड़कना-कि० स० डाँटना ।

घुड़की-संज्ञ स्त्री० फटकार ।

घुड़चढ़ा-संज्ञ पुं० सवार ।

घुड़नाल-संज्ञ स्त्री० एक प्रकार की तोप जो घोड़ों पर चढ़ती है ।

घुड़यहल-संज्ञ स्त्री० वह रथ जिसमें गोड़े जुते हैं ।

घुड़साल-संज्ञ स्त्री० अस्तपल ।

घुन-संज्ञ पुं० एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है ।

घुनघुना-संज्ञ पुं० दे० "घुनघुना" ।

घुनना-कि० अ० घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना ।

घुथा-वि० [ स्त्री० घुथी ] घुथा ।

घुमकड़-वि० बहुत घूमनेवाला ।

घुमटा-संज्ञ पुं० जी घूमना ।

घुमड़-संज्ञ स्त्री० बरसनेवाले घादलों की घेरधार ।

घुमड़ना-कि० अ० इकट्ठा होना ।

घुमरना-कि० अ० १. घेर शब्द करना । २. घूमना ।

घुमाना-कि० स० १. चारों ओर फिराना । २. प्रवृत्त करना ।

घुमाघ-संज्ञ पुं० १. घूमने या घुमाने

का भाव । २. फेर । ३. रास्ते का मोड़ ।

घुमाघदार-वि० चकरदार ।

घुरघुरा-संज्ञ पुं० मीनुर ।

घुरघुराना-कि० अ० गले से घुरघुर शब्द निकलना ।

घुरना-कि० अ० दे० "घुलना" । कि० अ० शब्द करना ।

घुर्मित-कि० वि० घूमता हुआ ।

घुलना-कि० अ० १. गलना । २. दुर्बल होना ।

घुलवाना-कि० स० गलवाना ।

कि० स० किसी द्रव पदार्थ में मिश्रित कराना ।

घुलाना-कि० स० १. गलाना । २. शरीर दुर्बल करना । ३. व्यतीत करना ।

घुलाघट-संज्ञ स्त्री० घुलने का भाव या क्रिया ।

घुसना-कि० अ० १. भीतर जाना । २. अनधिकार चर्चा या कार्य करना ।

घुसपैठ-संज्ञ स्त्री० पहुँच ।

घुसाना-कि० स० १. पैठाना । २. चुभाना ।

घुसेड़ना-कि० स० दे० "घुसाना" ।

घूँघट-संज्ञ पुं० १. वस्त्र का वह भाग जिससे कुल्हधू का मुँह ढँका रहता है । २. छोट ।

घूँघर-संज्ञ पुं० बालों में पड़े हुए घुल्ले या मरोड़ ।

घूँघरघाले-वि० झुरीले ।

घूँट-संज्ञ पुं० द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक चार में गले के नीचे उतारा जाय ।

गेंडुआ

गेंडुआ-संज्ञा पुं० १. तकिया । २. घड़ा गेंद ।

गेंडुरी-संज्ञा स्त्री० रस्सी का घना हुआ मेंडरा जिस पर घड़ा रखते हैं । ईडुरी ।  
गेंद-संज्ञा पुं० कपड़े, रबर या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं । फेंदुक ।

गेंदा-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं ।

गेंदुक-संज्ञा पुं० गेंद ।

गेंदुघा-संज्ञा पुं० तकिया ।

गेंदना-क्रि० स० १. लकीर से घेरना । २. परिक्रमा करना ।

गेय-वि० गाने के लायक ।

गेरना-क्रि० स० १. गिराना । २. ढालना ।

गेरआ-वि० गेरू के रंग का ।

गेरू-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लाख कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है ।

गेह-संज्ञा पुं० घर ।

गेहनी-संज्ञा स्त्री० घरवाली ।

गेही-संज्ञा पुं० गृहस्थ ।

गेहूँअन-संज्ञा पुं० मटमैले रंग का एक अत्यंत विषधर फनदार साँप ।

गेहूँआ-वि० गेहूँ के रंग का ।

गेहूँ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी घनती है ।

गेंडा-संज्ञा पुं० भैंसे के आकार का एक पशु जो ऐसे दलदलों और कछारों में रहता है जहाँ जंगल होता है ।

गैन-संज्ञा पुं० मार्ग ।

संज्ञा पुं० दे० "गगन" ।

गैय-संज्ञा पुं० परोक्ष ।

गैवी-वि० १. गुप्त । २. अजनबी ।

गैयर-संज्ञा पुं० हाथी ।

गैया-संज्ञा स्त्री० गाय ।

गैर-वि० अन्य ।

गैरत-संज्ञा स्त्री० लज्जा ।

गैरमामूली-वि० असाधारण ।

गैरमुनासिब-वि० अनुचित ।

गैरमुमकिन-वि० असंभव ।

गैरवाजिब-वि० अयोग्य ।

गैरहाज़िर-वि० अनुपस्थित ।

गैरहाज़िरी-संज्ञा स्त्री० अनुपस्थिति ।

गैरिक-संज्ञा पुं० १. गेरू । २. सोना ।

गैल-संज्ञा स्त्री० मार्ग ।

गोंठ-संज्ञा स्त्री० धोती की जपेट जो कमर पर रहती है । सुरी ।

गोंठना-क्रि० स० १. किसी वस्तु की नेक या कोर गुठली कर देना ।

२. गोम्मे या पुचे की कोर को मोड़ मोड़कर उमड़ी हुई लड़ी के रूप में करना ।

क्रि० स० धारों और से घेरना ।

गोंड़-संज्ञा पुं० एक असम्य जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है ।

गोड़ा-संज्ञा पुं० १. घाड़ा । २. पुरा ।

गोंद-संज्ञा पुं० पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव । लासा ।

गो-संज्ञा स्त्री० गाय ।

अन्य० यद्यपि ।

प्रत्य० कहनेवाला ।

गोईठा-संज्ञा पुं० ईधन के लिये सुखाया हुआ गोबर । बपला ।

गोइंदा-संज्ञा पुं० जासूस ।

गोइयाँ-संज्ञा पुं० स्त्री० साय में रहने-

घूटना-कि० स० द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना ।

घूटी-संज्ञा स्त्री० एक औषध जो छोटे बच्चों को नित्य पिलाई जाती है ।

घूसा-संज्ञा पुं० मुष्ठा ।

घूम-संज्ञा स्त्री० घूमने का भाव ।

घूमना-कि० अ० १. चारों ओर फिरना । २. सफर करना । ३. मँहराना । ४. मुड़ना ।

घूरना-कि० अ० बार बार आँख गड़ाकर घुरे भाव से देखना ।

घूरा-संज्ञा पुं० कूड़े-करफट का ढेर ।

घूस-संज्ञा स्त्री० चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु ।

संज्ञा स्त्री० रिश्वत ।

घृणा-संज्ञा स्त्री० नफरत ।

घृणित-वि० घृणा करने योग्य ।

घृत-संज्ञा पुं० घी ।

घेंघा-संज्ञा पुं० १. गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है । २. गले का एक रोग जिसमें गले में सूजन होकर बतौड़ा सा निकल आता है ।

घेर-संज्ञा पुं० घेरा ।

घेरधार-संज्ञा स्त्री० चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया ।

घेरना-कि० स० १. चारों ओर से छेकना । २. घुशामद करना ।

घेरा-संज्ञा पुं० १. चारों ओर की सीमा ।

२. परिधि का मान । ३. हाता । ४. सेना का किसी दुर्ग या गढ़ को चारों ओर से छेकने का काम ।

घेवर-संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई ।

घोंघा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घोंघी ] शंख की तरह का एक कीड़ा ।

वि० मूख ।

घोंटना-कि० स० घूँट घूँट करके पीना । हज़म करना ।

कि० स० दे० "घोटना" ।

घोपना-कि० स० घँसाना । घुमाना ।

घोंसला-संज्ञा पुं० घास, फूस आदि से बना हुआ वह स्थान जिसमें पशु रहते हैं ।

घोंसुआ-संज्ञा पुं० दे० "घोंसला" ।

घोखना-कि० स० रटना ।

घोट, घोटक-संज्ञा पुं० घोड़ा ।

घोटना-कि० स० १. चिकना या चमकीला करने के लिये बार बार रगड़ना । २. बारीक पीसने के लिये बार बार रगड़ना । ३. मरक करना । ४. ( गला ) इस प्रकार दवाना कि साँस रुक जाय ।

संज्ञा पुं० घोड़ने का औज़ार ।

घोटवाना-कि० स० घोड़ने का काम दूसरे से कराना ।

घोटा-संज्ञा पुं० वह वस्तु जिससे घोटा जाय ।

घोटार्ह-संज्ञा स्त्री० घोड़ने का काम या मज़दूरी ।

घोटाला-संज्ञा पुं० गढ़मढ़ ।

घोड़साला-संज्ञा स्त्री० दे० "घुड़-साल" ।

घोड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घोड़ी ] १. अश्व ।

२. वह पेंच या खटका जिसके दवाने से बंदूक में गोली चखती है । ३. शतरंज का एक मोहरा ।

घोड़िया-संज्ञा स्त्री० घोटी घोड़ी ।

घोड़ी-संज्ञा स्त्री० घोड़े की मादा ।

घोर-वि० १. भयानक । २. घना ।

संज्ञा स्त्री० गर्जन ।

घोरना-कि० अ० गरजना ।

घाला । साथी ।  
 गोई-संज्ञा स्त्री० दे० "गोहर्या" ।  
 गोऊा-वि० घुसानेवाला ।  
 गोकर्ण-संज्ञा पुं० १. हिंदुओं का एक शैव श्मशान जो मलाबार में है ।  
 २. इस स्थान में स्थापित शिवमूर्ति ।  
 वि० गऊ के से खंवे कानवाला ।  
 गोकुल-संज्ञा पुं० १. गौधों का कुंड ।  
 २. गोशाला ।  
 गोक्षर-संज्ञा पुं० दे० "गोखरू" ।  
 गोखा-संज्ञा पुं० दे० "गुरोखा" ।  
 गोघ्रास-संज्ञा पुं० पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा भाग जो भोजन या आद्यादिक के आरंभ में गौ के लिये निकाला जाता है ।  
 गोचर-संज्ञा पुं० १. वह विषय जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके । २. चरागाह ।  
 गोजर-संज्ञा पुं० कनकजरा ।  
 गोजी-संज्ञा स्त्री० १. गौ हाँकने की लकड़ी । २. लट्ट ।  
 गोमनघटी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों की साड़ी का अंश । पट्टा ।  
 गोमहा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अग्नि-गोमिया, गुमिया ] १. गुमिया नामक पकवान । २. खलीना ।  
 गोम-संज्ञा स्त्री० वह पट्टी या फीता जिसे किसी कपड़े के किनारे लगाते हैं । मगजी ।  
 संज्ञा स्त्री० मंडली ।  
 संज्ञा स्त्री० चौपड़ का मोहरा । गोटी ।  
 गोटा-संज्ञा पुं० पतला फीता जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है ।  
 गोटी-संज्ञा स्त्री० १. कंकड़, गेरू, पत्थर इत्यादि का छोटा गोला टुकड़ा जिससे खड़े के अनेक प्रकार के खेल

खेलेते हैं । २. चौपड़ खेलने का मोहरा । नरद । ३. एक खेल जो गोटीयों से खेला जाता है ।  
 गोठ-संज्ञा स्त्री० १. गोशाला । २. आद ।  
 गोड़ा-संज्ञा पुं० पैर ।  
 गोड़हत-संज्ञा पुं० गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार ।  
 गोड़ना-कि० स० मिट्टी खोदना और उलट पुलट देना जिसमें वह पोली और भुरभुरी हो जाय ।  
 गोड़ा-संज्ञा पुं० पलंग आदि का पाया ।  
 गोड़ाई-संज्ञा पुं० गोदने की क्रिया या मजदूरी ।  
 गोड़ासी-संज्ञा स्त्री० १. पैताना । २. जूता ।  
 गोड़िया-संज्ञा स्त्री० छोटा पैर ।  
 गोत-संज्ञा पुं० १. कुज । २. समूह ।  
 गोता-संज्ञा पुं० डुबरी ।  
 गोताखोर-संज्ञा पुं० डुबकी खानेवाला ।  
 गोतिया-वि० दे० "गोती" ।  
 गोती-वि० अपने गोत्र का ।  
 गोत्र-संज्ञा पुं० १. संतति । २. नाम । ३. क्षेत्र । ४. समूह । ५. वंश ।  
 गोद-संज्ञा स्त्री० १. कोरा । २. थंघड़ा ।  
 गोदनहारी-संज्ञा स्त्री० कंबड़ या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदने का काम करती है ।  
 गोदना-कि० स० चुमाना ।  
 संज्ञा पुं० तिल के आकार का काला चिह्न जो शरीर में नील या कोपड़े के पानी में दूबा हुई सुइयों से पाक कर बनता है ।  
 गोदा-संज्ञा पुं० बड़, पीपल या पाकर



घोलना-क्रि० सं० पानी या धौर किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिलाकर मिलाना ।

घोप-संज्ञा पुं० १. अहीर । २. आवाज़ ।

घोपणा-संज्ञा स्त्री० १. उच्च स्वर से

किसी बात की सूचना । २. हुम्मी ।

३. गर्जन ।

घोसी-संज्ञा पुं० थहीर ।

घोद-संज्ञा पुं० फलों का गुच्छा ।

घ्राण-संज्ञा स्त्री० [वि० घ्रेय] १. नाक ।

२. सुगंध ।

## ङ

ङ-वर्जन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अंतिम अक्षर । यह स्पर्श वर्ण है

और इसका उच्चारण-स्थान कंठ और मासिका है ।

## च

च-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का २२ वाँ अक्षर और छठा व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान तालु है ।

चक्रमण-संज्ञा पुं० दहलना ।

चंगा-संज्ञा स्त्री० ङफ के आकार का एक छोटा पात्र ।

संज्ञा स्त्री० पतंग ।

चंगा-वि० [ स्त्री० चंगी ] १. स्वस्थ ।

२. अच्छा ।

चंगु-संज्ञा पुं० १. चंगुल । २. पकड़ ।

चंगुल-संज्ञा पुं० १. चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा । २. हाथ के पंजों की वह स्थिति जो रँगलियों से किसी वस्तु को उठाने या खींचने के समर्थ होती है ।

चंगेर, चंगेरी-संज्ञा स्त्री० घाँस की छिड़ली इलिया ।

चंचरी-संज्ञा स्त्री० १. अमरी । २. छथीस मायाओं का एक छंद ।

चंचरीक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चंचरीकी ] अमर ।

चंचल-वि० [ स्त्री० चंचला ] १. अस्थिर ।

२. अधीर । ३. नटखट ।

चंचलता-संज्ञा स्त्री० १. अस्थिरता ।

२. शरारत ।

चंचलताई-संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता" ।

चंचला-संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी । २. यिजली ।

चंचलाई-संज्ञा स्त्री० दे० "चंचलता" ।

चंचु-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का शाक । २. मृग ।

संज्ञा स्त्री० चिड़ियों की चोंच ।

चंट-वि० खालाक ।

के पक्के फल ।

गोदान-संज्ञा पुं० गौ को विधिवत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया ।

गोदाम-संज्ञा पुं० वह बड़ा स्थान जहाँ बहुत सा दिग्गी का माल रखा जाता हो ।

गोदावरी-संज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी ।

गोदी-संज्ञा स्त्री० दे० "गोद" ।

गोधन-संज्ञा पुं० १. गौघों का समूह ।  
२. गौ रूपी संपत्ति ।

† संज्ञा पुं० गोवर्द्धन पर्वत ।

गोधूम-संज्ञा पुं० रोहू ।

गोधूति, गोधूती-संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि जंगल से चरकर लौटती हुई गौघों के खुरों से भूल उड़ने के कारण धुँधली जा आय ।

गोन-संज्ञा स्त्री० टाट, कंघल, चमड़े आदि का घना दोहरा घेरा जो बैलों की पीठ पर छादा जाता है ।

संज्ञा स्त्री० रस्ती जिसे नाव खींचने के लिये मरतूल में बाँधते हैं ।

गोना-कि० सं० छिपाना ।

गोनिया-संज्ञा स्त्री० दीवार या कोने आदि की सीध जाँचने का औज़ार ।  
संज्ञा पुं० स्वयं अपनी पीठ पर या बैलों पर छादकर घेरे डोनेवाला ।

गोनी-संज्ञा स्त्री० टाट का घेला ।

गोप-संज्ञा पुं० १. गौ की रक्षा करनेवाला । २. ग्वाला ।

संज्ञा पुं० गले में पहनने का एक आभूषण ।

गोपन-संज्ञा पुं० १. छिपावा । २. रक्षा ।

गोपना-कि० सं० छिपाना ।

गोपनीय-वि० छिपाने के लायक ।

गोपांगना-संज्ञा स्त्री० गोप जाति की स्त्री ।

गोपा-संज्ञा स्त्री० गाय पालनेवाली; अहीरिन ।

गोपाल-संज्ञा पुं० १. गौ का पालन-पोषण करनेवाला । २. अहीर । ३. श्रीकृष्ण ।

गोपाएमी-संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुद्ध अष्टमी ।

गोपिका-संज्ञा स्त्री० १. गोप की स्त्री । गोपी । २. अहीरिन ।

गोपी-संज्ञा स्त्री० १. ग्वालिनी । २. श्रीकृष्ण की प्रेमिका व्रज की गोप-जातीय स्त्रियाँ ।

गोपीचंदन-संज्ञा पुं० एक प्रकार की पीली मिट्टी ।

गोपीनाथ-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

गोपुर-संज्ञा पुं० १. नगर का द्वार । २. किले का फाटक । ३. फाटक । ४. स्तर ।

गोफन, गोफना-संज्ञा पुं० डेलर्वास ।

गोफा-संज्ञा पुं० नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता ।

गोवर-संज्ञा पुं० गौ का मल ।

गोवरगणेश-वि० १. भद्र । २. मूर्ख ।

गोवरी-संज्ञा स्त्री० कंड़ा ।

गोवरैला-संज्ञा पुं० दे० "गुवरैला" ।

गोभी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का शाक ।

गोमती-संज्ञा स्त्री० एक नदी ।

गोमय-संज्ञा पुं० गोबर ।

गोमुख-संज्ञा पुं० १. गौ का मुँह । २. वह शंख जिसका आकार गौ के मुँह के समान होता है ।

गोमुखी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की घैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं । २. गौ के मुँह के आकार

चंड-वि० [ खी० चंडा ] १. सेज । २. बलवान् ।  
 संज्ञा पुं० १. गरमी । २. कार्तिकेय ।  
 चंडकर-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 चंडता-संज्ञा खी० १. उग्रता । २. बल ।  
 चंडांशु-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 चंडाई-संज्ञा खी० १. शीघ्रता । २. अत्याचार ।  
 चंडाल-संज्ञा पुं० [ खी० चंडालिन, चंडालिनी ] चंडाल ।  
 चंडालिका-संज्ञा खी० दुर्गा ।  
 चंडालिनी-संज्ञा खी० १. चंडाल वर्य की स्त्री । २. दुष्टा स्त्री ।  
 चंडावल-संज्ञा पुं० १. सेना के पीछे का भाग । २. सेतरी ।  
 चंडिका-संज्ञा खी० दुर्गा ।  
 चंडू-संज्ञा पुं० अफीम का कियाम जिसका धुआँ नशे के लिये एक नली के द्वारा पीते हैं ।  
 चंडूखाना-संज्ञा पुं० वह घर जहाँ लोग चंडू पीते हैं ।  
 चंडूवाज़-संज्ञा पुं० चंडू पीनेवाला ।  
 चंडूल-संज्ञा पुं० खाकी रंग की एक छोटी चिट्ठिया ।  
 चंडोल-संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी ।  
 चंद-संज्ञा पुं० दे० "चंद्र" ।  
 वि० थोड़े से ।  
 चंदक-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. माथे पर पहनने का एक अर्द्धचंद्राकार गहना ।  
 चंदन-संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके छीर की सुगंधित लकड़ी का व्यवहार देव-पूजन आदि में होता है । २. चंदन की लकड़ी या टुकड़ा । ३. घिसे

हुए चंदन का लेप ।  
 चंदनगिरि-संज्ञा पुं० मलयाचल ।  
 चंदनहार-संज्ञा पुं० दे० "चंद्रहार" ।  
 चंदराना-कि० सं० १. घड़काना । २. जान बूझकर अनजान बनना ।  
 चंदला-वि० गंजा ।  
 चंदघा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा मंडप ।  
 संज्ञा पुं० गोल आकार की चकती ।  
 चंदा-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
 संज्ञा पुं० वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदिमियों से किसी कार्य के लिये लिया जाय ।  
 चंदिका-संज्ञा खी० दे० "चंद्रिका" ।  
 चंदिनि, चंदिनी-संज्ञा खी० चाँदनी ।  
 चंदिया-संज्ञा खी० खोपड़ी । सिर का मध्य भाग ।  
 चंदिर-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
 चंदेल-संज्ञा पुं० छत्रियों की एक शाखा जो किसी समय कालिंजर और महेष् में राज्य करती थी ।  
 चंद्र-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
 वि० सुंदर ।  
 चंद्रक-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. चाँदनी । ३. नाखून ।  
 चंद्रकला-संज्ञा खी० १. चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश । २. चंद्रमा की किरण या ज्योति । ३. माथे पर पहनने का एक गहना ।  
 चंद्रकांत-संज्ञा पुं० एक मणि या रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह चंद्रमा के सामने करने से पसी-जता है ।  
 चंद्रकांता-संज्ञा खी० १. चंद्रमा की स्त्री । २. रात्रि ।

का गंगोत्तरी का बह, स्थान जहाँ से  
गंगा निकलती है ।

गोमेध-संज्ञा पुं० एक यज्ञ जिसमें गौ  
से हवन किया जाता था ।

गोय-संज्ञा पुं० गेह ।

गोया-क्रि० वि० मानो ।

गोर-संज्ञा स्त्री० कृम ।

† वि० गौर ।

गोरखधंधा-संज्ञा पुं० कोई ऐसी चीज़  
या काम जिसमें बहुत क्लेश या  
बलभूत हो ।

गोरखनाथ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध  
शिवभूत या दृढपौर ।

गोरखपंथी-वि० गोरखनाथ के चलाए  
हुए संप्रदायवाला ।

गोरखा-संज्ञा पुं० इस देश का निवासी ।

गोरज-संज्ञा पुं० गौ के खुरों से बड़ी  
हुई धूल ।

गोरस-संज्ञा पुं० १. दूध । २. दधि ।  
३. मठा ।

गोरा-वि० सफ़ेद और स्वच्छ वर्ण-  
वाला ।

संज्ञा पुं० फिरंगी ।

गोराई-संज्ञा स्त्री० १. गोरापन ।  
२. सुंदरता ।

गोरिझा-संज्ञा पुं० बहुत बड़े आकार  
का एक प्रकार का वनमानुस ।

गोरी-संज्ञा स्त्री० सुंदर और गौर वर्ण  
की स्त्री । रूपवती स्त्री ।

गोरु-संज्ञा पुं० बैल ।

गोरोचन-संज्ञा पुं० पीले रंग का एक  
प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गौ के  
पित्त में से निकलता है ।

गोलंदाज़-संज्ञा पुं० तोप में गोला  
रखकर चलानेवाला ।

गोलंदर-संज्ञा पुं० १. गुंबद । २.

गोलाई ।

गोल-वि० जिसका घेरा या परिधि  
वृत्ताकार हो ।

संज्ञा पुं० वृत्त ।

संज्ञा पुं० मंडली ।

गोलक-संज्ञा पुं० १. गोलोक । २.

गोल पिंड । ३. विधवा का जारज

पुत्र । ४. मिट्टी का बड़ा कुंडा ।

५. फंड ।

गोलगप्पा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की  
महीन और करारी धी में तली  
फुलकी ।

गोलमाल-संज्ञा पुं० गड़बड़ ।

गोल मिर्च-संज्ञा स्त्री० काली मिर्च ।

गोला-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ का  
बड़ा गोल पिंड । २. छोड़े का वह  
गोल पिंड जिसे तोपों की सहायता  
से शत्रुओं पर फेंकते हैं । ३. वह  
मंडी जहाँ बनाज या किराने की बड़ी  
दुकानें हों ।

गोलाई-संज्ञा स्त्री० गोलापन ।

गोलाकार, गोलाकृति-वि० जिसका  
आकार गोल हो ।

गोलाई-संज्ञा पुं० पृथ्वी का आधा  
भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक  
वैसे बीचोबीच काटने से बनता है ।

गोली-संज्ञा स्त्री० छोटा गोलाकार  
पिंड ।

गोलोक-संज्ञा पुं० कृष्ण का निवास-  
स्थान जो सप्त लोको से ऊपर माना  
जाता है ।

गोचर्द्धन-संज्ञा पुं० घुंदावन का एक  
पवित्र पर्यंत ।

गोविंद-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

गोश-संज्ञा पुं० कान ।

गोशमाली-संज्ञा स्त्री० १. कान बने-

चंद्रग्रहण-संज्ञा पुं० चंद्रमा का ग्रहण ।

चंद्रचूड़-संज्ञा पुं० शिव ।

चंद्रजोत-संज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चंद्रधर-संज्ञा पुं० शिव ।

चंद्रप्रभा-संज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चंद्रविंदु-संज्ञा पुं० अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी ।

चंद्रविंश-संज्ञा पुं० चंद्रमा का मंडल ।

चंद्रमाल-संज्ञा पुं० शिव ।

चंद्रमणि-संज्ञा पुं० १. चंद्रकांत मणि ।

२. बल्लाळा छंद ।

चंद्रमा-संज्ञा पुं० चाँद । शशि ।

चंद्रमाललाम-संज्ञा पुं० महादेव ।

चंद्रमाला-संज्ञा स्त्री० २८ मात्राओं का एक छंद ।

चंद्रमौलि-संज्ञा पुं० शिव ।

चंद्रलोक-संज्ञा पुं० चंद्रमा का लोक ।

चंद्रवंश-संज्ञा पुं० चंद्रियों के दो आदि-कुलों में से एक जो पुरुवा से आरंभ हुआ था ।

चंद्रवार-संज्ञा पुं० सोमवार ।

चंद्रशेखर-संज्ञा पुं० शिव ।

चंद्रहार-संज्ञा पुं० गले में पहनने की एक प्रकार की माला । नौबत्ताहार ।

चंद्रहास-संज्ञा पुं० खड्ग ।

चंद्रिका-संज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चंद्रोदय-संज्ञा पुं० चंद्रमा का उदय ।

चंपई-वि० चंपा के फूल के रंग का ।

चंपक-संज्ञा पुं० चंपा ।

चंपत-वि० गायब ।

चपना-क्रि० भ० १. योक्त से दबना ।

२. उपकार आदि से दबना ।

चंपा-संज्ञा पुं० मगधोत्पन्न फल का एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के, कड़ी

महक के, फूल लगते हैं ।

चंपाकली-संज्ञा स्त्री० गले में पहनने का लियों का एक गहना ।

चंपल-संज्ञा स्त्री० नदी ।

संज्ञा पुं० पानी की गाढ़ ।

चँवर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भस्मा० चँवरी ]

१. हाँड़ी में लगा हुआ सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजाओं या देवमूर्तियों के सिर पर डुबाया जाता है । २. घोड़ों और हाथियों के सिर पर लगाने की कठगी ।

चवरटार-संज्ञा पुं० चँवर डुबानेवाला संवक ।

चउहट्ट-संज्ञा पुं० दे० "चौहट्ट" ।

चक्र-संज्ञा पुं० १. चक्रवाक पक्षी ।

२. चक्रा । ३. पट्टी । ४. अधिकार ।

वि० अधिक ।

वि० चक्रपकाया हुआ ।

चक्रई-संज्ञा स्त्री० सादा चक्रवा ।

चक्रचक्राना-क्रि० भ० १. किसी द्रव पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकलना ।

२. भीग जाना ।

चक्रचाना-क्रि० भ० चक्रार्चोप लगाना ।

चक्रचाल-संज्ञा पुं० चक्रार ।

चक्रचाध-संज्ञा पुं० चक्रार्चोप ।

चक्रचून-वि० चक्रनाचूर ।

चक्रचौध-संज्ञा स्त्री० दे० "चक्रार्चोप" ।

चक्रचौधना-क्रि० भ० चक्रार्चोप होना ।

क्रि० स० चक्रार्चोप उत्पन्न करना ।

चक्रचौह-संज्ञा स्त्री० दे० "चक्रार्चोप" ।

ठना । २. कड़ी चेतावनी ।  
 गोशा-संज्ञ पुं० १. कोना । २.  
 एकांत स्थान ।  
 गोशाला-संज्ञ स्त्री० गोश्यों के रहने  
 का स्थान ।  
 गोशत-संज्ञ पुं० मांस ।  
 गोष्ठ-संज्ञ पुं० १. गोशाला । २.  
 परामर्श । ३. दल ।  
 गोष्ठी-संज्ञ स्त्री० १. सभा । २.  
 यातचीत । ३. परामर्श ।  
 गोसाईं-संज्ञ पुं० १. गौश्यों का  
 स्वामी या अधिकारी । २. ईश्वर ।  
 ३. संन्यासियों का एक संप्रदाय ।  
 ४. साधु । ५. माजिक ।  
 गोसैयी-संज्ञ पुं० दे० "गोसाईं" ।  
 गोस्वामी-संज्ञ पुं० जितेंद्रिय ।  
 गोह-संज्ञ स्त्री० छिपकली की जाति  
 का एक जंगली जंतु ।  
 गोहन-संज्ञ पुं० १. साथी । २. संग ।  
 गोहरा-संज्ञ पुं० [स्त्री० अर्थात् गोहरी]  
 सुलाया हुआ गोबर ।  
 गोहराना-क्रि० प्र० पुकारना ।  
 गोहार-संज्ञ स्त्री० १. पुकार । २.  
 शोर ।  
 गोहारी-संज्ञ स्त्री० दे० "गोहार" ।  
 गौ-संज्ञ स्त्री० १. घात । २. प्रयोजन ।  
 ३. वंग ।  
 गौ-संज्ञ स्त्री० गाय ।  
 गौख-संज्ञ स्त्री० झरोखा ।  
 गौगा-संज्ञ पुं० १. शोर । २. अफवाह ।  
 गौचरी-संज्ञ स्त्री० गाय चराने का कर ।  
 गौड़-संज्ञ पुं० १. वंग देश का एक  
 प्राचीन विभाग । २. माहाराष्ट्र की एक  
 जाति । ३. गौड़ देश का निवासी ।  
 गौड़िया-वि० गौड़ देश का ।

गौण-वि० १. जो प्रधान या मुख्य न  
 हो । २. सहायक ।  
 गौणी-वि० स्त्री० साधारण ।  
 गौतम-संज्ञ पुं० १. एक ऋषि । २.  
 बुद्धदेव ।  
 गौतमी-संज्ञ स्त्री० ग्रहस्था ।  
 गौदुमा-वि० दे० "गावदुम" ।  
 गौनहाई-वि० स्त्री० जिसका गौना  
 हाल में हुआ हो ।  
 गौनहार-संज्ञ स्त्री० वह स्त्री जो हुल-  
 हिन के साथ बसकी ससुराल जाय ।  
 गौनहारिन, गौनहारी-संज्ञ स्त्री०  
 गाने का पेशा करनेवाली स्त्री ।  
 गौना-संज्ञ पुं० विवाह के बाद की  
 एक रसम जिसमें घर बधू को अपने  
 साथ घर ले आता है । द्विरागमन ।  
 गौर-वि० १. गोरे चमड़ेवाला । २.  
 श्वेत ।  
 संज्ञ पुं० दे० "गौड़" ।  
 गौर-संज्ञ पुं० १. सोच-विचार । २.  
 खयाल ।  
 गौरता-संज्ञ स्त्री० गोराई ।  
 गौरघ-संज्ञ पुं० १. बदप्पन । २.  
 सम्मान ।  
 गौरांग-संज्ञ पुं० १. विष्णु । २. चै-  
 तन्य महाप्रभु ।  
 गौरा-संज्ञ स्त्री० १. गोरे रंग की स्त्री ।  
 २. पार्वती । ३. हस्ती ।  
 गौरिया-संज्ञ स्त्री० काले रंग का एक  
 जलपक्षी ।  
 गौरी-संज्ञ स्त्री० १. गोरे रंग की स्त्री ।  
 २. पार्वती । ३. हस्ती ।  
 गौरीशंकर-संज्ञ पुं० १. महादेव ।  
 शिव । २. हिमालय पर्वत की सबसे  
 ऊँची चोटी का नाम ।

चकती-संज्ञा स्त्री० १. पट्टी । २. फटे-हटे स्थान को थैल करने के लिये लगी हुई पट्टी या घञ्जी ।

चक्का-संज्ञा पुं० १. रक्त-विकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग । २. ददोश ।

संज्ञा पुं० मोगल अमीर चंगताई खाँ जिसके वंश में बाघर आदि बादशाह थे ।

चक्का-कि० अ० १. चकित होना । २. चौंकना ।

चक्काचूर-वि० चूर चूर ।

चक्कपकाना-कि० अ० १. आश्चर्य से इधर-उधर ताकना । २. चौंकना ।

चक्कफेरी-संज्ञा स्त्री० परिक्रमा ।

चक्कथंड़ी-संज्ञा स्त्री० भूमि को कई भागों में विभक्त करना ।

चक्कमक-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा पथर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है ।

चक्कमा-संज्ञा पुं० धोखा ।

चक्करा-संज्ञा पुं० चक्रवाक पक्षी ।

चक्करवा-संज्ञा पुं० असमंजस ।

चक्कराना-कि० अ० १. चक्कर खाना । २. घबराना ।

कि० स० आश्चर्य में डालना ।

चक्कला-संज्ञा पुं० पथर या काठ का गोल पाटा जिस पर रोटी बेली जाती है ।

वि० [ स्त्री० चकली ] चौड़ा ।

चक्कली-संज्ञा स्त्री० १. धिरनी । २. होरसा ।

चक्कधा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चक्करी ] एक जल-पक्षी । सुरखाव ।

चक्कहा-संज्ञा पुं० पहिया ।

चक्का-संज्ञा पुं० पहिया ।

चकाचक-वि० लय-पथ ।

कि० वि० खूब ।

चकाचौध-संज्ञा स्त्री० तिलमिलानेवाला

चकाना-कि० अ० दे० "चक पकाना" ।

चकित-वि० १. विस्मित । २. चौंकना ।

चकोटना-कि० स० चुटकी काटना ।

चकोर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चकोरी ] एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खाने-वाला प्रसिद्ध है ।

चकौंध-संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध" ।

चक्र-संज्ञा पुं० १. चक्रवाक । २. कुम्हार का चाक ।

चक्र-संज्ञा पुं० १. मंडल । २. पहिए के ऐसा अंश । ३. फेर । ४. हैरानी । ५. सिर घूमना ।

चक्का-संज्ञा पुं० १. पहिया । २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु ।

चक्की-संज्ञा स्त्री० आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र । जूता ।

चक्क-संज्ञा पुं० पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु ।

चक्कधर-वि० जो चक्र धारण करे । संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान् । २. श्रीकृष्ण ।

चक्रधारी-संज्ञा पुं० दे० "चक्रधर" ।

चक्रपाणि-संज्ञा पुं० विष्णु ।

चक्रपूजा-संज्ञा स्त्री० तान्त्रिकों की एक पूजा-विधि ।

चक्रवर्ती-वि० [ स्त्री० चक्रवर्तिनी ] सार्व-भौम ।

चक्रवाक-संज्ञा पुं० चक्का पक्षी ।

चक्रघात-संज्ञा पुं० बवंडर ।

गौरैया-संज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया" ।

गौहर-संज्ञा पुं० मोती ।

ग्यानी-संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान" ।

ग्यारस-संज्ञा स्त्री० एकादशी तिथि ।

ग्यारह-वि० दस और एक ।

ग्रंथ-संज्ञा पुं० पुस्तक ।

ग्रंथकर्ता, ग्रंथकार-संज्ञा पुं० ग्रंथ की रचना करनेवाला ।

ग्रंथसुधक-संज्ञा पुं० अल्पज्ञ ।

ग्रंथसुधन-संज्ञा पुं० किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना ।

ग्रंथन-संज्ञा पुं० १. जोड़ना । २. गूँथना ।

ग्रंथ साहब-संज्ञा पुं० सिक्कों की धम्मे-पुस्तक ।

ग्रंथि-संज्ञा स्त्री० १. गाँठ । २. माया-जाल ।

ग्रंथित-वि० गूँथा हुआ ।

ग्रंथिवंधन-संज्ञा पुं० विवाह के समय घर और कन्या के कपड़ों के कोनों को परस्पर गाँठ देकर बाँधने की क्रिया ।

ग्रंथिल-वि० गाँठदार ।

ग्रसन-संज्ञा पुं० १. भक्षण । २. पकड़ । ३. ग्रहण ।

ग्रसना-क्रि० स० १. घुरी तरह पकड़ना । २. सताना ।

ग्रसित-वि० दे० "ग्रस्त" ।

ग्रस्त-वि० १. पकड़ा हुआ । २. पीड़ित ।

ग्रस्तास्त-संज्ञा पुं० ग्रहण लगने पर चंद्रमा या सूर्य का दिना मोड़ हुआ होना ।

ग्रस्तोदय-संज्ञा पुं० चंद्रमा या सूर्य का उस अवस्था में उदय होना जब कि वन पर ग्रहण लगा हो ।

ग्रह-संज्ञा पुं० १. वह तारा जो अपने

सौर जगत् में सूर्य की परिक्रमा करे ।

२. चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण ।

ग्रहण-संज्ञा पुं० १. सूर्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उसके मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने या छाया पड़ने से होता है । २. पकड़ने या लेने की क्रिया । ३. स्वीकार ।

ग्रहणीय-वि० ग्रहण करने के योग्य ।

ग्रहदशा-संज्ञा स्त्री० १. ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था । २. अभाग्य ।

ग्रहपति-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. शनि ।

ग्रह्येध-संज्ञा पुं० ग्रह की स्थिति आदि का जानना ।

ग्रांडील-वि० ऊँचे कूद का ।

ग्राम-संज्ञा पुं० गाँव ।

ग्रामणी-संज्ञा पुं० १. गाँव का मानिक । २. प्रधान ।

ग्रामदेवता-संज्ञा पुं० १. किसी गाँव में पूजा जानेवाला देवता । २. डोहराज ।

ग्रामीण-वि० देहाती ।

ग्राम्य-वि० १. ग्रामीण । २. घेवकूफ ।

ग्रास-संज्ञा पुं० १. कौर । २. पकड़ । ३. ग्रहण लगना ।

ग्रासना-क्रि० स० दे० "ग्रसना" ।

ग्राह-संज्ञा पुं० १. मगर । २. ग्रहण । ३. पकड़ना ।

ग्राहक-संज्ञा पुं० १. मोल लेनेवाला । २. चाहनेवाला ।

ग्राही-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ग्राहिणी ] वह जो ग्रहण करे ।

ग्राह्य-वि० लेने योग्य ।



चक्रवृद्धि-संज्ञा स्त्री० सुदं वर सुद ।  
चक्रव्यूह-संज्ञा पुं० प्राचीन काल के  
युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की  
रक्षा के लिये उसके चारों ओर कई  
घेरो में सेना की चक्रवत् व्यवस्था-  
कार स्थिति ।

चक्रायुध-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
चक्रित-वि० दे० "चकित" ।  
चक्री-संज्ञा पुं० वह जो चक्र धारण करे ।  
चक्षु-संज्ञा पुं० आँख ।  
चक्षुर्द्विज-संज्ञा स्त्री० आँख ।  
चक्षुष्य-वि० १. जो नेत्रों को हितकारी  
हो । २. सुंदर ।

चक्षुः-संज्ञा पुं० आँख ।  
संज्ञा पुं० मगड़ा ।  
चखना-कि० स० स्वाद घेना ।  
चखाचखी-संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट ।  
चखाना-कि० स० स्वाद दिखाना ।  
चगड़-वि० चतुर ।  
चगुताई-संज्ञा पुं० मुर्कों का एक  
प्रसिद्ध वंश जो चगुताई खाँ से  
चका था ।

चचा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चची ] चाप का  
भाई ।  
चचिया-वि० चाचा के बराबर का  
संबंध रखनेवाला ।  
चचेरा-वि० चाचा हो उपपन्न ।  
चचेड़ना-कि०-स० दाँत से खींच  
खींच या दबा दबाकर घूँसना ।  
चट-कि० वि० जल्दी से ।  
ा-संज्ञा पुं० दाग ।

संज्ञा स्त्री० १. वह शब्द जो किसी  
कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है । २.  
वह शब्द जो रँगलियों को मोड़कर  
दबाने से होता है ।  
वि० चाट पोछकर खाया हुआ ।

चटक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चटका ]  
गौरैया ।

संज्ञा स्त्री० चटकीलापन ।  
वि० चमकीला ।  
संज्ञा स्त्री० तेज़ी ।  
कि० वि० तेज़ी से ।  
वि० चटपटा ।

चटकदार-वि० दे० "चटकीला" ।  
चटकना-कि० भ० १. 'चट' शब्द  
करके टूटना या फूटना । २. स्थान  
स्थान पर फटना ।  
संज्ञा पुं० तमाचा ।

चटकनी-संज्ञा स्त्री० सिटकिनी ।  
चटक-मटक-संज्ञा स्त्री० घनाव-  
सिं गार । नाज़-नख़रा ।  
चटका-संज्ञा पुं० फुरती ।  
चटकाना-कि० स० १. ऐसा करना  
जिसमें कोई वस्तु चटक जाय । २.  
रँगलियों को खींचकर या मोड़ते हुए  
दबाकर चट चट शब्द निकालना ।  
चटकारा-वि० १. चमकीला । २.  
चंचल ।

वि० स्वाद से क्षीम चटकाने का  
शब्द ।  
चटकीला-वि० [ स्त्री० चटकीली ] १.  
भटकीला । २. मजेदार ।  
चटखना-कि० स०, संज्ञा पुं० दे०  
"चटकना" ।

चट चट-संज्ञा स्त्री० चटकने का शब्द ।  
चटचटाना-कि० भ० चट चट करते  
हुए टूटना या फूटना ।  
चटनी-संज्ञा स्त्री० १. चाटने की  
चीज । २. वह गीली चरपरी वस्तु  
जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को  
खाई जाय ।  
चटपट-कि० वि० शीघ्र ।

ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म" ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० गर्दन ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म" ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० १. गरमी की श्रुति ।  
 २. गरम ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० खेद । खिन्नता ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० एक पौधा और

उसकी फली । सुरभी ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा पुं० घड़ीर ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा पुं० दे० "ग्रीष्म" ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० १. ग्रीष्म की  
 स्त्री । २. गवार ।  
 ग्रीष्म-संज्ञा स्त्री० कि० स० मरोड़ना ।

## घ

घ-हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से  
 कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका  
 उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है ।  
 घघोलना-कि० स० १. हिलाकर  
 घोलना । २. पानी को हिलाकर  
 मैला करना ।  
 घट-संज्ञा पुं० १. घड़ा । २. मृतक  
 की क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल  
 में बाँधा जाता है ।  
 संज्ञा पुं० दे० "घंटा" ।  
 घंटा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्प० घंटी ] १.  
 घातु का एक पात्र । २. दिन रात  
 का चौबीसवाँ भाग ।  
 घंटिका-संज्ञा स्त्री० १. एक, बहुत  
 छोटा घंटा । २. घुँघुरू ।  
 घंटी-संज्ञा स्त्री० पीतल या फूल की  
 छोटी जोटिया ।  
 संज्ञा स्त्री० १. बहुत छोटा घंटा । २.  
 घंटी बजने का शब्द ।  
 घड़-संज्ञा स्त्री० गंभीर भँवर ।  
 वि० जिसकी याद न लग सके ।  
 घघरा-संज्ञा पुं० दे० "घाघरा" ।  
 घट-संज्ञा पुं० घड़ा ।  
 वि० कम ।

घटक-संज्ञा पुं० मध्यस्थ ।  
 घटती-संज्ञा स्त्री० १. कमी । न्यूनता ।  
 २. हीनता ।  
 घटना-कि० अ० कम होना ।  
 संज्ञा स्त्री० वारदात ।  
 घटघड़-संज्ञा स्त्री० कमी-बेशी ।  
 घटयोनि-संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि ।  
 घटघाना-कि० स० कम कराना ।  
 घटवाई-संज्ञा पुं० घाट का कर लेने-  
 वाला ।  
 संज्ञा स्त्री० कम करवाई ।  
 घटघार-संज्ञा पुं० १. घाट का महसूल  
 लेनेवाला । २. मछाह । केवट ।  
 घटसंभव-संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि ।  
 घट-स्थापन-संज्ञा पुं० किसी मंगल-  
 कार्य या पूजन आदि के पूर्व जल  
 भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना ।  
 घटा-संज्ञा स्त्री० समड़े हुए घादल ।  
 घटाई-संज्ञा स्त्री० हीनता । बेहज्जती ।  
 घटाकाश-संज्ञा पुं० घड़ों के अंदर की  
 खाली जगह ।  
 घटाटोप-संज्ञा पुं० बादलों की घटा  
 जो चारों ओर से घेरे हो ।  
 घटाना-कि० स० १. कम करना ।

चकती-संज्ञा स्त्री० १. पट्टी । २. फटे-टूटे स्थान को बंद करने के लिये लगी हुई पट्टी या घञ्जी ।

चकत्ता-संज्ञा पुं० १. रक्त-विकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग । २. दूदोरा ।

संज्ञा पुं० मोगल अमीर चंगताई खां जिसके वंश में बाघर आदि धादशाह थे ।

चकना-क्रि० अ० १. चकित होना । २. चौंकना ।

चकत्ताचूर-वि० चूर चूर ।

चकपकाना-क्रि० अ० १. आश्चर्य से हँस, उधर ताकना । २. चौंकना ।

चकफेरी-संज्ञा स्त्री० परिक्सा ।

चकधंदी-संज्ञा स्त्री० भूमि को कई भागों में विभक्त करना ।

चक्रमक-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है ।

चक्रमा-संज्ञा पुं० घोखा ।

चक्रर-संज्ञा पुं० चक्रवाक पक्षी ।

चक्रया-संज्ञा पुं० असमंजस ।

चक्रराना-क्रि० अ० १. चकर खाना । २. घघराना ।

क्रि० स० आश्चर्य में डालना ।

चकला-संज्ञा पुं० परधर या काठ का गोल पाटा जिस पर रोटी बेकी जाती है ।

वि० [ स्त्री० चकली ] चौड़ा ।

चकली-संज्ञा स्त्री० १. धिरनी । २. होरसा ।

चकवा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चकई ] एक जल-पक्षी । सुरसाय ।

चकहा-संज्ञा पुं० पहिया ।

चका-संज्ञा पुं० पहिया ।

चकाचक-वि० जय-पथ ।

क्रि० वि० स्वयं ।

चकाचौध-संज्ञा स्त्री० तिलमिलाहट ।

चकाना-क्रि० अ० दे० "चक-पकाना" ।

चकित-वि० १. विस्मित । २. चौकशा ।

चकोटन-क्रि० स० चुटकी काटना ।

चकोर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चकोरी ] एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और धरतार खाने-वाला प्रसिद्ध है ।

चकौंध-संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौध" ।

चक्र-संज्ञा पुं० १. चक्रवाक । २. कुम्हार का चाक ।

चक्रर-संज्ञा पुं० १. मंडल । २. पहिए के ऐसा भ्रमण । ३. फेर । ४. हैरानी । ५. सिर घूमना ।

चक्रा-संज्ञा पुं० १. पहिया । २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु ।

चक्की-संज्ञा स्त्री० आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र । जता ।

चक्र-संज्ञा पुं० पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु ।

चक्रधर-वि० जो चक्र धारण करे । संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान् । २. श्रीकृष्ण ।

चक्रधारी-संज्ञा पुं० दे० "चक्रधर" ।

चक्रपाणि-संज्ञा पुं० विष्णु ।

चक्रपूजा-संज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा-विधि ।

चक्रचर्त्ती-वि० [ स्त्री० चक्रचर्त्ती ] सार्व-भौम ।

चक्रवाक-संज्ञा पुं० चकवा पक्षी ।

चक्रघात-संज्ञा पुं० घबंड़ ।

चक्रवृद्धि-संज्ञा स्त्री० सुंदर सुंद ।  
चक्रव्यूह-संज्ञा पुं० प्राचीन काल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये उसके चारों ओर कई घेरो में सेना की चक्रदार या कुंडलाकार स्थिति ।

चक्रायुध-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
चक्रित-वि० दे० "चकित" ।  
चक्री-संज्ञा पुं० वह जो चक्र धारण करे ।  
चक्रु-संज्ञा पुं० झाल ।  
चक्रुटिद्रिय-संज्ञा स्त्री० झाल ।  
चक्रुष्य-वि० १. जो नेत्रों को हितकारी हो । २. सुंदर ।

चख-संज्ञा पुं० झाल ।  
संज्ञा पुं० भगड़ा ।  
चखना-कि० स० स्वाद लेना ।  
चखाचखी-संज्ञा स्त्री० जाग-डाँट ।  
चखाना-कि० स० स्वाद दिखाना ।  
चगड़-वि० चतुर ।  
चगताई-संज्ञा पुं० तुकों का एक प्रसिद्ध वंश जो चगताई खाँ से चलाया ।  
चचा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चची ] चाप का भाई ।

चचिया-वि० चाचा के भ्रातर का संबंध रखनेवाला ।  
चचेरा-वि० चाचा से उत्पन्न ।  
चचोड़ना-कि० स० दाँत से खींच खींच या दबा दबाकर चूसना ।  
चट-कि० वि० जल्दी से ।

०-संज्ञा पुं० दाग ।  
संज्ञा स्त्री० १. वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है । २. वह शब्द जो हँगलियों को भेड़कर दबाने से होता है ।  
वि० चाट पोछकर खाया हुआ ।

चटक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चटका ] गौरेया ।

संज्ञा स्त्री० चटकीलापन ।  
वि० चमकीला ।  
संज्ञा स्त्री० तेज़ी ।  
कि० वि० तेज़ी से ।  
वि० चटपटा ।

चटकदार-वि० दे० "चटकीला" ।  
चटकना-कि० भ० १. 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना । २. स्थान स्थान पर फटना ।  
संज्ञा पुं० समाधा ।

चटकनी-संज्ञा स्त्री० सिटकिनी ।  
चटक-मटक-संज्ञा स्त्री० घनाव-सिंघार । नाज़-मख़रा ।

चटका-संज्ञा पुं० फुरती ।  
चटकाना-कि० स० १. ऐसा करना जिसमें कोई वस्तु चटक जाय । २. हँगलियों को खींचकर या भेड़ते-हुए दबाकर चट चट शब्द निकालना ।  
चटकारा-वि० १. चमकीला । २. चंचल ।

वि० स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द ।

चटकीला-वि० [ स्त्री० चटकीली ] १. भटकीला । २. मज्जदार ।  
चटखना-कि० स०, संज्ञा पुं० दे० "चटकना" ।

चट चट-संज्ञा स्त्री० चटकने का शब्द ।  
चटचटाना-कि० भ० चट चट करते हुए टूटना या फूटना ।

चटनी-संज्ञा स्त्री० १. चाटने की चीज़ । २. वह गीली चरपरी वस्तु जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को खाई जाय ।

चटपट-कि० वि० शीघ्र ।

चर्चा-संज्ञा स्त्री० १. जिह्वा । २. बात-चीत ।

चर्चिका-संज्ञा स्त्री० चर्चा ।

चर्चित-वि० १. पोता हुआ । २. जिसकी चर्चा हो ।

चर्पट-संज्ञा पुं० १. चपट । २. हाथ की खुली हुई हथेली ।

चर्म-संज्ञा पुं० चमड़ा ।

चर्मकार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चर्मकारी ] चमार ।

चर्मचस्त्र-संज्ञा पुं० शिव ।

चर्य-वि० जो करने योग्य हो ।

चर्या-संज्ञा स्त्री० १. वह जो किया जाय । २. आचार ।

चराना-कि० म० १. चर चर शब्द करना । २. घाव पर सुजली या सुर-सुरी मिली हुई दलकी पीड़ा होना । ३. सुरकी ओर दखाई के कारण किसी धंग में तनाव होना ।

चरी-संज्ञा स्त्री० छगती हुई व्यंग्यपूर्ण बात ।

चर्चण-संज्ञा पुं० [ वि० चर्च ] १. चर्चाना । २. वह वस्तु जो चर्चाई जाय । ३. चर्चना ।

चर्चित-वि० चर्चाया हुआ ।

चल-वि० चंचल ।

संज्ञा पुं० १. पारा । २. पोहा छंद का एक भेद ।

चलकना-कि० म० दे० "चमकना" ।

चलचलाव-संज्ञा पुं० चलाचली ।

चलचाल-वि० चंचल ।

चलचूक-संज्ञा स्त्री० धोखा ।

चलता-वि० [ स्त्री० चलती ] १. चलता हुआ । २. प्रचलित । ३. चलाक ।

चलती-संज्ञा स्त्री० अधिकार ।

चलदल-संज्ञा पुं० पीपल का वृक्ष ।

चलन-संज्ञा पुं० १. चाल । २. रियाज । संज्ञा पुं० गति ।

चलनसार-वि० १. जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो । २. टिकाऊ ।

चलना-कि० म० १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना । २. निमना ।

३. टिकना । ४. जारी होना । ५. पाँचा जाना । ६. बर चलना ।

संज्ञा पुं० बड़ी चलनी ।

चलनि-संज्ञा स्त्री० दे० "चलन" ।

चलनी-संज्ञा स्त्री० दे० "चलनी" ।

चलपत्र-संज्ञा पुं० पीपल का वृक्ष ।

चलवाना-कि० स० १. चलाने का कार्य दूसरे से कराना । २. चलाने का काम कराना ।

चलचिचल-वि० उलझा-पुलझा ।

संज्ञा स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लंघन ।

चला-संज्ञा स्त्री० १. विजली । २. पृथ्वी । ३. लक्ष्मी ।

चलाऊ-वि० जो बहुत दिनों तक चले ।

चलाका-संज्ञा स्त्री० विजली ।

चलाचली-संज्ञा स्त्री० १. तैयारी । २. चलने की तैयारी या समय ।

चलान-संज्ञा स्त्री० १. भेजे जाने या चलने की क्रिया । २. भेजने या चलाने की क्रिया । ३. वह कामजु जिसमें किसी की सूचना के लिये भेजी हुई चीजों की सूची आदि हो ।

चलाना-कि० स० १. किसीको चलने में लगाना । २. गति देना । ३. आरंभ करना ।

चलायमान-वि० १. चलनेवाला । २. चंचल ।

चटपटा-वि० [स्त्री० चटपटी] मजेदार ।  
चटपटी-संज्ञा स्त्री० [ वि० चटपटिया ]

१. शीघ्रता । २. घबराहट ।

चटवाना-क्रि० स० दे० "चटाना" ।

चटसारणी-संज्ञा स्त्री० पाटशाळा ।

चटाई-संज्ञा स्त्री० तृण का ढासन ।

संज्ञा स्त्री० घाटने की क्रिया ।

चटाखा-संज्ञा पुं० खड़ी या और

विस्ती घड़ी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द ।

चटाना-क्रि० स० घाटने वा काम कराना ।

चटापटी-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता ।

चटाघन-संज्ञा पुं० अश्वप्राशन ।

चटोरा-वि० १. जिसे अच्छी अच्छी चीजें खाने की लत हो । २. लोभी ।

चटोरापन-संज्ञा पुं० अच्छी अच्छी चीजें खाने का व्यसन ।

चट्टा-वि० १. चाट पोंछकर खाया हुआ । २. समाप्त ।

चट्टा-संज्ञा पुं० चटियल मैदान ।

संज्ञा पुं० शरीर पर कुष्ठ आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता ।

चट्टान-संज्ञा स्त्री० पहाड़ी भूमि के अंतर्गत परपर का चिपटा बड़ा टुकड़ा ।

चट्टी-संज्ञा स्त्री० पड़ाव ।

संज्ञा स्त्री० स्तिपर ।

चट्टू-वि० चटोरा ।

संज्ञा पुं० परपर का बड़ा खरख ।

चढ़त-संज्ञा स्त्री० देवता की मूर्त ।

चढ़ना-क्रि० अ० १. नीचे से ऊपर को जाना । २. चढ़ाई करना । ३. तनना । ४. सवार होना । ५. कूज होना । ६. दर्ज होना । ७. उद्देग-जनक प्रभाव होना ।

चढ़वाना-क्रि० स० चढ़ाने का काम दूसरे से कराना ।

चढ़ाई-संज्ञा स्त्री० १. चढ़ने की क्रिया या भाव । २. ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि । ३. घाघा ।

चढ़ा-उत्तरी-संज्ञा स्त्री० बार बार चढ़ने उतरने की क्रिया ।

चढ़ा-ऊपरी-संज्ञा स्त्री० जाग-डिट ।

चढ़ाचढ़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी" ।

चढ़ाना-क्रि० स० १. चढ़ने में प्रवृत्त करना । २. ऐसा काम करना जिससे चढ़े । ३. पी जाना ।

चढ़ाव-संज्ञा पुं० १. चढ़ने की क्रिया या भाव । २. वृद्धि ।

चढ़ावा-संज्ञा पुं० १. वह गहना जो दूधरे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है । २. वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय । ३. दम ।

चणक-संज्ञा पुं० चना ।

चतुरंग-संज्ञा पुं० १. चतुरंगिणी सेना । २. शतरंज ।

चतुरंगिणी-वि० स्त्री० चार अंगों-वाली ।

चतुर-वि० पुं० [ स्त्री० चतुरा ] १. होशियार । २. धूर्त ।

चतुरई-संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई" ।

चतुरता-संज्ञा स्त्री० होशियारी ।

चतुरपनी-संज्ञा पुं० दे० "चतुराई" ।

चतुरस्र-वि० चौकोर ।

चतुराई-संज्ञा स्त्री० १. होशियारी । २. धूर्तता ।

चतुरानन-संज्ञा पुं० मत्स्या ।

चतुर्गुण-वि० १. चौगुना । २. चार

चलावा-संज्ञ पुं० १. चलने का भाव।  
 २. यात्रा।  
 चलावा-संज्ञ पुं० १. रीति। २. आ-  
 चरण।  
 चलित-वि० १. अस्थिर। २. चलता  
 हुआ।  
 चलैया-संज्ञ पुं० चलनेवाला।  
 चवन्नी-संज्ञ स्त्री० चार आने मूल्य का  
 चाँदी या निकल का सिक्का।  
 चवर्ग-संज्ञ पुं० [ वि० चवर्गीय ] च से  
 ज सकें के चारों का समूह।  
 चश्म-संज्ञ स्त्री० नेत्र।  
 चश्मदीद-वि० जो आँखों से देखा  
 हुआ हो।  
 चश्मा-संज्ञ पुं० कमानी में जड़ा हुआ  
 शीशे या पारदर्शी पथर के तालों  
 का जोड़ा, जो आँखों पर दृष्टि बढ़ाने  
 या ठंढक रखने के लिये पहना जाता है।  
 चप-संज्ञ पुं० आँख।  
 चपक-संज्ञ पुं० १. मद्य पीने का  
 पात्र। २. मधु।  
 चसक-संज्ञ स्त्री० हलका दर्द।  
 चसकना-कि० अ० टीसना।  
 चसका-संज्ञ पुं० १. शौक। २.  
 आदर।  
 चसना-कि० अ० चिपकना।  
 चस्पा-वि० चिपकाया हुआ।  
 चह-संज्ञ पुं० नदी के किनारे भाव पर  
 चढ़ने के लिये चबूतरा।  
 ० संज्ञ स्त्री० गड्ढा।  
 चहक-संज्ञ स्त्री० चिड़ियों का चह चह।  
 चहकना-कि० अ० १. चहचहाना।  
 २. उमंग या प्रसन्नता से अधिक  
 बोलना।  
 चहकारना-कि० अ० दे० "चह-  
 कना"।

चहचहा-संज्ञ पुं० १. 'चहचहाना'  
 का भाव। चहक। २. हँसी-दिल्ली।  
 वि० १. जिसमें चह चह शब्द हो।  
 २. आनंद और उमंग उत्पन्न करने-  
 वाला।  
 चहचहाना-कि० अ० चहकना।  
 चहना-कि० स० दे० "चाहना"।  
 चहनी-संज्ञ स्त्री० दे० "चाह"।  
 चहवन्ना-संज्ञ पुं० १. पानी भर रखने  
 का छोटा गड्ढा या हैज़। २. धन  
 गाढ़ने या छिपा रखने का छोटा तह-  
 खाना।  
 चहल-संज्ञ स्त्री० कीचड़।  
 संज्ञ स्त्री० आनंदोत्सव।  
 चहलकदमी-संज्ञ स्त्री० धीरेधीरे टह-  
 लना या घूमना।  
 चहल पहल-संज्ञ स्त्री० १. अबादानी।  
 २. रौनक।  
 चहला-संज्ञ पुं० कीचड़।  
 चहारदीवारी-संज्ञ स्त्री० किसी स्थान  
 के चारों ओर की दीवार।  
 चहारम-वि० चतुर्थांश।  
 चहुँ-वि० चार। चारों।  
 चहुधान-संज्ञ पुं० दे० "चौहान"।  
 चहुँटना-कि० अ० सटना।  
 चहेता-वि० [ स्त्री० चहेती ] प्यारा।  
 चाँई-वि० १. ठग। २. चालाक।  
 चाँक-संज्ञ पुं० काठ की वह थापी  
 जिससे खलियान में अन्न की राशि  
 पर ठप्पा लगाते हैं।  
 चाँकना-कि० स० १. खलियान में  
 अनाज की राशि पर मिट्टी, राख या  
 ठप्पे से छापा लगाना। २. सीमा घेरना।  
 चाँगला-वि० १. स्वस्थ। २. चतुर।  
 चाँचर, चाँचरि-संज्ञ स्त्री० वसंत ऋतु

गुणोंवाला । १. १५ मात्राओं

चतुर्थ-वि० चौथा ।

चतुर्थाश्रम-संज्ञा पुं० सन्यास ।

चतुर्थी-संज्ञा स्त्री० १. चौथी । २. यह गंगापूजन आदि कर्म जो विवाह के चौथे दिन होता है ।

चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० चौदस ।

चतुर्दिक्-संज्ञा पुं० चारों दिशाएँ ।

क्रि० वि० चारों ओर ।

चतुर्भुज-वि० [स्त्री० चतुर्भुजा] जिसकी चार भुजाएँ हों ।

संज्ञा पुं० विष्णु ।

चतुर्भुजा-संज्ञा स्त्री० १. एक देवी ।

२. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति ।

चतुर्भुजी-संज्ञा पुं० एक वैष्णव सम्प्रदाय ।

वि० चार भुजाओंवाला ।

चतुर्मुख-संज्ञा पुं० प्रभु ।

वि० चार मुखवाला ।

क्रि० वि० चारों ओर ।

चतुर्भुगी-संज्ञा स्त्री० चारों भुगों का समय ।

चतुर्धेद-संज्ञा पुं० १. परमेश्वर । २. चारों वेद ।

चतुर्धेदी-संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक जाति ।

चतुर्व्यूह-संज्ञा पुं० १. चार अनुव्यूहों अथवा पदार्थों का समूह । २. विष्णु ।

चतुष्कोण-वि० चौकोना ।

चतुष्टय-संज्ञा पुं० चार की संख्या ।

चतुष्पथ-संज्ञा पुं० चौराहा ।

चतुष्पद-संज्ञा पुं० चौपाया ।

वि० चार पैरोंवाला ।

चतुष्पदा-संज्ञा स्त्री० चौपया छंद ।

चतुष्पदी-संज्ञा स्त्री० १. १५ मात्राओं का चौपदे छंद । २. चारपद का गीत ।

चरचर-संज्ञा पुं० १. चौमुहानी । २. चक्करा ।

चहर-संज्ञा स्त्री० १. चादर । २. किसी धातु का लंथा-चौड़ा चौकर पत्र ।

चनफना-क्रि० अ० दे० "चटकना" ।

चनखना-क्रि० अ० छुफा होगा ।

चना-संज्ञा पुं० घूट ।

चपकन-संज्ञा स्त्री० १. थँगरखा । २. किवाड़, संदूक आदि में लोहे या पीतल का वह साज़ जिसमें ताला लगाया जाता है ।

चपकना-क्रि० अ० दे० "चिपकना" ।

चपटना-क्रि० अ० दे० "चिपकना" ।

चपटा-वि० दे० "चिपटा" ।

चपड़ा-संज्ञा पुं० १. साफ़ की हुई लाल का पत्तर । २. लाल रंग का एक कीड़ा या कृतिंगा ।

चपट-संज्ञा पुं० १. थपड़ । २. धक्का ।

चपना-क्रि० अ० दबना ।

चपनी-संज्ञा स्त्री० कठोरी ।

चपरगट्ट-वि० १. चौपटा । २. गुरथमशुष्य ।

चपरना-क्रि० अ० दे० "चुपड़ना" ।

चपरा-अभ्य० झटपट ।

चपरास-संज्ञा स्त्री० दफ़र या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी ।

चपरासी-संज्ञा पुं० व्यादा ।

चपल-वि० १. चंचल । २. धात्ताक ।

चपलता-संज्ञा स्त्री० १. चंचलता । २. छलता ।

चपला-वि० स्त्री० चंचला ।

संज्ञा स्त्री० १. छद्मी । २. विजली ।

३. जीम ।



में गाया जानेवाला एक राग ।  
 चाँचु-संज्ञा पुं० दे० "चाँच" ।  
 चाँटा-संज्ञा पुं० [खी० चाँदी] चिँटा ।  
 संज्ञा पुं० धूपद ।  
 चाँड़-वि० १. प्रयत्न । २. उग्र ।  
 संज्ञा स्त्री० १. भार सँभालने का खंभा ।  
 २. अधिकता ।  
 चाँडाल-संज्ञा पुं० [खी० चाँदाली, चाँद-  
 लिन] १. एक अत्यंत नीच जाति ।  
 २. पतित मनुष्य ।  
 चाँद-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. द्वितीया  
 के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण ।  
 संज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग ।  
 चाँदना-संज्ञा पुं० १. प्रकाश । २.  
 चाँदनी ।  
 चाँदनी-संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा का  
 प्रकाश । २. सफेद फूल । ३. ऊपर  
 तानने का सफेद कपड़ा ।  
 चाँदयाला-संज्ञा पुं० कान में पहनने  
 का एक गहना ।  
 चाँदमारी-संज्ञा स्त्री० दीवार या कपड़े  
 पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके  
 गोली चलाने का अभ्यास ।  
 चाँदी-संज्ञा स्त्री० एक सफेद धमकीली  
 धातु जिसके सिक्के, आभूषण और  
 बरतन इत्यादि बनते हैं ।  
 चाँद्र-वि० चंद्रमा-संबंधी ।  
 संज्ञा पुं० शदरक्ष ।  
 चाँद्र मास-संज्ञा पुं० कितना काल  
 जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक  
 परिभ्रमा करने में लगता है ।  
 चाँद्रायण-संज्ञा पुं० एक कठिन प्रत ।  
 चाँप-संज्ञा स्त्री० दयाव ।  
 चाँपना-क्रि० स० दवाना ।  
 चाँयँ चाँयँ-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बक-  
 वाद ।

चाँद, चाँउ-संज्ञा पुं० दे० "चाव" ।  
 चाक-संज्ञा पुं० १. कील पर धूमता  
 हुआ वह मंडलाकार पत्थर जिस पर  
 मिट्टी का बौदा रखकर कुम्हार घर-  
 तन बनाते हैं । २. पहिया ।  
 संज्ञा पुं० दरार ।  
 वि० दृढ़ ।  
 चाकचक-वि० चारों ओर से सुरक्षित ।  
 चाकचक्य-संज्ञा स्त्री० १. धमकमा-  
 हट । २. शोभा ।  
 चाकना-क्रि० स० १. हृद खींचना ।  
 २. पहचान के लिये किसी वस्तु पर  
 चिह्न डालना ।  
 चाकर-संज्ञा पुं० [खी० चाकरनी] नौकर ।  
 चाकरी-संज्ञा स्त्री० नौकरी ।  
 चाकी-संज्ञा स्त्री० दे० "चक्की" ।  
 संज्ञा स्त्री० चिजली ।  
 चाक-संज्ञा पुं० छुरी ।  
 चालुप-वि० चतु-संबंधी ।  
 संज्ञा पुं० व्याय में ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण  
 जिसका बोध नेत्रों द्वारा हो ।  
 चाखना-क्रि० स० दे० "चखना" ।  
 चाचा-संज्ञा पुं० [खी० चाची] काका ।  
 चाप का भाई ।  
 चाट-संज्ञा स्त्री० १. चटपटी । २.  
 चसका ।  
 चाटना-क्रि० स० १. जीम कगाकर  
 खाना । २. चट कर जाना ।  
 चाटु-संज्ञा पुं० खुशामद ।  
 चाटुकार-संज्ञा पुं० चापलूस ।  
 चाटुकारी-संज्ञा स्त्री० खुशामद ।  
 चाढ़ा-संज्ञा पुं० [खी० चाढ़ी] प्यारा ।  
 चाणक्य-संज्ञा पुं० राजनीति के आ-  
 चार्य्य एक मुनि जो पाटलीपुत्र के  
 सम्राट् चंद्रगुप्त के मंत्री थे और कीटिल  
 नाम से भी प्रसिद्ध हैं ।

चटपटा-वि० [स्त्री० चटपटी] मजेदार ।  
 चटपटी-संज्ञा स्त्री० [ वि० चटपटिया ]  
 १. शीघ्रता । २. घबराहट ।  
 चटघाना-क्रि० स० दे० "घटाना" ।  
 चटसार-संज्ञा स्त्री० पाटशाला ।  
 चटाई-संज्ञा स्त्री० तृण का ढासन ।  
 संज्ञा स्त्री० चाटने की क्रिया ।  
 चटाया-संज्ञा पुं० लकड़ी या और  
 किसी कड़ी वस्तु के जोर से दूटने  
 का शब्द ।  
 चटाना-क्रि० स० चाटने या काम  
 कराना ।  
 चटापटी-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता ।  
 चटाघन-संज्ञा पुं० अन्नप्राशन ।  
 चटोरा-वि० १. जिसे अच्छी अच्छी  
 चीजें खाने की लत हो । २. छोभी ।  
 चटोरापन-संज्ञा पुं० अच्छी अच्छी  
 चीजें खाने का व्यसन ।  
 चट्टा-वि० १. चाट रोझकर खाया  
 हुआ । २. समाप्त ।  
 चट्टा-संज्ञा पुं० चटियल मैदान ।  
 संज्ञा पुं० शरीर पर कुष्ठ आदि के  
 कारण निकला हुआ चकत्ता ।  
 चट्टान-संज्ञा स्त्री० पहाड़ी भूमि के  
 अंतर्गत परस्पर का चिपटा बड़ा टुकड़ा ।  
 चट्टी-संज्ञा स्त्री० पड़ाव ।  
 संज्ञा स्त्री० स्तलपर ।  
 चट्ट-वि० चटोरा ।  
 संज्ञा पुं० परस्पर का बड़ा खरब ।  
 चट्टत-संज्ञा स्त्री० देवता की भेंट ।  
 चट्टना-क्रि० प्र० १. नीचे से ऊपर  
 को जाना । २. चढ़ाई करना । ३.  
 तनना । ४. सवार होना । ५. कर्ज  
 होना । ६. दर्ज होना । ७. उद्देग-  
 जनक प्रभाव होना ।

चट्टघाना-क्रि० स० चट्टाने का काम  
 दूसरे से कराना ।  
 चट्टाई-संज्ञा स्त्री० १. चट्टने की क्रिया  
 या भाव । २. ऊँचाई की ओर ले  
 जानेवाली भूमि । ३. घावा ।  
 चट्टा-उतरी-संज्ञा स्त्री० धार धार  
 चट्टने उतरने की क्रिया ।  
 चट्टा-ऊपरी-संज्ञा स्त्री० छाग-डाँट ।  
 चट्टाचट्टी-संज्ञा स्त्री० दे० "चट्टा-  
 ऊपरी" ।  
 चट्टाना-क्रि० स० १. चट्टने में प्रवृत्त  
 करना । २. ऐसा काम करना जिससे  
 चट्टे । ३. पी जाना ।  
 चट्टाघ-संज्ञा पुं० १. चट्टने की क्रिया  
 या भाव । २. वृद्धि ।  
 चट्टाघा-संज्ञा पुं० १. वह गहना जो  
 दूल्हे की ओर से दुल्हिन को विवाह  
 के दिन पहनाया जाता है । २. वह  
 सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई  
 जाय । ३. दम ।  
 चणक-संज्ञा पुं० चना ।  
 चतुरंग-संज्ञा पुं० १. चतुरंगिणी सेना ।  
 २. शतरंज ।  
 चतुरंगिणी-वि० स्त्री० चार ओरों-  
 वाली ।  
 चतुर-वि० पुं० [ स्त्री० चतुरा ] १.  
 होशियार । २. धूर्त ।  
 चतुरई-संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई" ।  
 चतुरता-संज्ञा स्त्री० होशियारी ।  
 चतुरपनी-संज्ञा पुं० दे० "चतुराई" ।  
 चतुरस्र-वि० चौकोर ।  
 चतुराई-संज्ञा स्त्री० १. होशियारी ।  
 २. धूर्तता ।  
 चतुरानन-संज्ञा पुं० ग्रह्या ।  
 चतुर्गुण-वि० १. चतुर्गुण । २. चार

चातक-संश पुं० [खी० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।

चातरा-वि० दे० "चातुर"।

चातुर-वि० १. चतुराचर। २. चतुर।

चातुरी-संश स्त्री० चतुरता।

चातुर्य-संश पुं० चतुराई।

चात्रिका-संश पुं० दे० "चातक"।

चादर-संश स्त्री० १. कपड़े का लंबा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढ़ने के काम में आता है। २. चदर।

चाप-संश पुं० १. धनुष। २. वृत्त की परिधि का कोई भाग।

संश स्त्री० १. दयाध। २. पैरकी आहट।

चापना-कि० स० दबाना।

चापलता-संश स्त्री० दे० "चपलता"।

चापलूस-वि० खुशामदी।

चापलूसी-संश स्त्री० खुशामद।

चाय-संश स्त्री० १. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषध के काम में आती है। चाय्य। २. इस पौधे का फल।

संश स्त्री० डाढ़।

चायना-कि० स० १. चबाना। २. खाना।

चाची-संश स्त्री० कुंजी।

चावुक-संश पुं० कोड़ा।

चावुकसवार-संश पुं० [ संश चावुकसवारी ] घोड़े को चलना सिखानेवाला।

चाभना-कि० स० खाना।

चाभी-संश स्त्री० दे० "चायी"।

चाम-संश पुं० चमड़ा।

चामर-संश पुं० चँवर।

चामीकर-संश पुं० १. सोना २. धतूरा।

वि० सुनहरा।

चाय-संश स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा चीनी के साथ पीने की चाल अथवा प्रायः सर्पत्र है।

संश पुं० दे० "चाय"।

चायक-संश पुं० चाहनेवाला।

चार-वि० जो गिनती में दो और दो हो।

संश पुं० [ वि० चारित, चारी ] १.

गति। २. जासूस।

चारजामा-संश पुं० जूनि।

चारण-संश पुं० १. भाट। २. राज-

पूताने की एक जाति।

चारदीवारी-संश स्त्री० घेरा।

चारना-कि० स० चराना।

चारपाई-संश स्त्री० छाट।

चारचाग-संश पुं० चौखूँटा बगीचा।

चार्यारी-संश स्त्री० १. चार मित्रों की मंडली। २. चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिस पर खलीफाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है।

चारा-संश पुं० पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डंढल आदि।

संश पुं० बपाय।

चारिणी-वि० स्त्री० आचरण करने-वाली।

चारित-वि० चलाया हुआ।

चारित्र-संश पुं० १. आचार। २. संन्यास।

चारित्र्य-संश पुं० चरित्र।

चारी-वि० [ स्त्री० चारिणी ] १. चलने-वाला। २. आचरण करनेवाला।

संश पुं० पैदल सिपाही।

चारु-वि० सुंदर।

चारुता-संश स्त्री० सुंदरता।

गुणोंवाला ।  
 चतुर्थ-वि० चौथा ।  
 चतुर्थाश्रम-संज्ञा पुं० संन्यास ।  
 चतुर्थी-संज्ञा स्त्री० १. चौथी । २. वह  
 सप्ताहजन्म आदि कर्म जो वियाह  
 के चौथे दिन होता है ।  
 चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० चौदस ।  
 चतुर्दिक-संज्ञा पुं० चारों दिशाएँ ।  
 कि० वि० चारों ओर ।  
 चतुर्भुज-वि० [स्त्री० चतुर्भा] जिसकी  
 चार भुजाएँ हों ।  
 संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 चतुर्भुजा-संज्ञा स्त्री० १. एक देवी ।  
 २. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति ।  
 चतुर्भुजी-संज्ञा पुं० एक वैष्णव सम्प्र-  
 दाय ।  
 वि० चार भुजाओंवाला ।  
 चतुर्मुख-संज्ञा पुं० मन्ना ।  
 वि० चार मुखवाला ।  
 कि० वि० चारों ओर ।  
 चतुर्युगी-संज्ञा स्त्री० चारों युगों का  
 समय ।  
 चतुर्ध्वज-संज्ञा पुं० १. परमेश्वर । २.  
 चारों ध्वज ।  
 चतुर्ध्वदी-संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक  
 जाति ।  
 चतुर्व्यूह-संज्ञा पुं० १. चार मनुष्यों  
 अथवा पदार्थों का समूह । २.  
 विष्णु ।  
 चतुष्कोण-वि० चौकोना ।  
 चतुष्टय-संज्ञा पुं० चार की संख्या ।  
 चतुष्पथ-संज्ञा पुं० चौराहा ।  
 चतुष्पद-संज्ञा पुं० चौपाया ।  
 वि० चार पदोंवाला ।  
 चतुष्पदा-संज्ञा स्त्री० चौपाया, छंद ।

चतुष्पदी-संज्ञा स्त्री० १. १५ मात्राओं  
 का चौपद छंद । २. चारपद का गीत ।  
 चत्वर-संज्ञा पुं० १. चौमुहानी । २.  
 चबूतरा ।  
 चद्वर-संज्ञा स्त्री० १. चादर । २. किसी  
 धातु का लंबा-चौड़ा चौकोर पत्तर ।  
 चनकना-कि० अ० दे० "चटकना" ।  
 चनखना-कि० अ० छुका होना ।  
 चना-संज्ञा पुं० धृत ।  
 चपकन-संज्ञा स्त्री० १. धँगरना । २.  
 किराड़, संदूक आदि में छोड़े या  
 पीतल का वह साज जिसमें ताला  
 लगाया जाता है ।  
 चपकना-कि० अ० दे० "चिपकना" ।  
 चपटना-कि० अ० दे० "चिपकना" ।  
 चपटा-वि० दे० "चिपटा" ।  
 चपड़ा-संज्ञा पुं० १. साफ की हुई  
 छाल का पत्तर । २. छाल, रंग का  
 एक फीड़ा या फर्तिगा ।  
 चपत-संज्ञा पुं० १. धप्पड़ । २. धक्का ।  
 चपना-कि० अ० दपना ।  
 चपनी-संज्ञा स्त्री० कटोरी ।  
 चपरगट्ट-वि० १. चौपटा । २.  
 गुरुप्रगुरुरे ।  
 चपरना-कि० अ० दे० "चुपड़ना" ।  
 चपरा-अर्थ० रुटपट ।  
 चपरास-संज्ञा स्त्री० दफ्तर या मालिक  
 का नाम सुदी हुई पीतल आदि की  
 छोटी पटी ।  
 चपरासी-संज्ञा पुं० प्यादा ।  
 चपल-वि० १. चंचल । २. चालाक ।  
 चपलता-संज्ञा स्त्री० १. चंचलता ।  
 २. छुटता ।  
 चपला-वि० स्त्री० चंचला ।  
 संज्ञा स्त्री० १. छंदमी । २. पिजली ।  
 ३. जीम ।

चारहासिनी-वि० खी० सुंदर हंसने-  
वाली ।

संश खी० बैताली छंद का एक भेद ।

चाल-संश खी० १. गति । २. चलने  
का बंग । ३. आचरण । ४. परिपाटी ।  
५. छल ।

चालक-वि० चलानेवाला ।

संश पुं० धूर्त ।

चालचलन-संश पुं० आचरण ।

चाल-ढाल-संश खी० आचरण ।

चालन-संश पुं० १. चलाने की क्रिया ।  
२. गति ।

संश पुं० भूसी या चोकर जो धाटा  
चालने के पीछे रह जाता है ।

चालना-कि० सं० १. चलाना ।  
२. छलनी में रखकर छानना ।

कि० अ० चलना ।

चालयाज्ञ-वि० धूर्त ।

चाला-संश पुं० प्रस्थान ।

चालाक-वि० १. चतुर । २. धूर्त ।

चालाकी-संश खी० १. चतुराई ।  
२. धूर्तता ।

चालान-संश पुं० दे० "चलान" ।

चालिया-वि० दे० "चालयाज्ञ" ।

चाली-वि० चालिया ।

चालीस-वि० जो गिनती में बीस  
और बीस हो ।

चाँच चाँच-संश खी० दे० "चाँच  
चाँच" ।

चाच-संश पुं० १. प्रवल इच्छा । २.  
शोक ।

चावल-संश पुं० १. धान के दाने की  
गुठली । २. भात । ३. एक रस्ती का  
छाटवाँ भाग या उससे बराबर की  
तौल ।

चाशनी-संश खी० १. चीनी, मिर्ची  
या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा  
और मधु के समान लसीला किया  
हुआ रस । २. चसका ।

चाप-संश पुं० १. नीलकण्ठ पक्षी । २.  
बाढ़ा पक्षी ।

चासा-संश पुं० किसान ।

चाह-संश खी० १. इच्छा । २. प्रेम ।  
३. माँग ।

चाहक-संश पुं० चाहनेवाला ।

चाहत-संश खी० चाह ।

चाहना-कि० सं० १. प्रेम करना । २.  
कोशिश करना । ३. इच्छा करना ।  
संश खी० चाह ।

चाहि-अव्य० अनिवार्य ।

चाहिए-अव्य० शचित है ।

चाही-वि० खी० प्यारी ।

चाहे-अव्य० इच्छा हो ।

चिआँ-संश पुं० हमली का धीम ।

चिउँटा-संश पुं० एक कीड़ा जो मीठे  
के पास बहुत जाता है ।

चिउँटी-संश खी० चींटी ।

चिगना-संश पुं० १. किसी पक्षी का  
विशेषतः मुरगी का छोटा बच्चा ।  
२. छोटा बालक ।

चिघाड़-संश खी० १. चिहाड़ । २.  
हाथी की बोली ।

चिघाड़ना-कि० अ० १. चीखना ।  
२. हाथी का खेलना ।

चिचिनी-संश खी० १. हमली का  
पेड़ । २. हमली का फल ।

चिजा-संश पुं० [खी० चिगे] छद्म ।

चित-संश खी० दे० "चिंता" ।

चितक-वि० १. चिंतन करनेवाला ।  
२. सोचनेवाला ।

चटपटा-वि० [खी० चटपटी] मजेदार ।  
चटपटी-संज्ञा स्त्री० [ वि० चटपटिया ]

१. शीघ्रता । २. घबराहट ।

चटधाना-क्रि० स० दे० "चटाना" ।  
चटसार-संज्ञा स्त्री० पाटशाला ।

चटाई-संज्ञा स्त्री० तृण का ढासन ।  
संज्ञा स्त्री० चाटने की क्रिया ।

चटाका-संज्ञा पुं० लकड़ी या और  
किसी कड़ी वस्तु के जोर से टूटने  
का शब्द ।

चटाना-क्रि० स० चाटने वा काम  
कराना ।

चटापटी-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता ।

चटावन-संज्ञा पुं० अन्नप्राशन ।

चटोरा-वि० १. जिसे अच्छी अच्छी  
चीजें खाने की शक्त हो । २. जोभी ।

चटोरापन-संज्ञा पुं० अच्छी अच्छी  
चीजें खाने का व्यसन ।

चट्टा-वि० १. चाट पोंछकर खाया  
हुआ । २. समाप्त ।

चट्टा-संज्ञा पुं० चटियल मैदान ।

संज्ञा पुं० शरीर पर कुष्ठ आदि के  
कारण निकला हुआ चक्का ।

चट्टान-संज्ञा स्त्री० पहाड़ी भूमि के  
अंतर्गत परस्पर का चिपटा बड़ा टुकड़ा ।

चट्टी-संज्ञा स्त्री० पदाथ ।

संज्ञा स्त्री० स्तिलपर ।

चट्टू-वि० चटोरा ।

संज्ञा पुं० परस्पर का बड़ा खरज ।

चढ़त-संज्ञा स्त्री० देवता की भेंट ।

चढ़ना-क्रि० अ० १. नीचे से ऊपर  
को जाना । २. चढ़ाई करना । ३.

तनना । ४. सवार होना । ५. कूज  
होना । ६. दर्ज होना । ७. बह्वेग-  
जनक प्रभाव होना ।

चढ़वाना-क्रि० स० चढ़ाने का काम  
दूसरे से कराना ।

चढ़ाई-संज्ञा स्त्री० १. चढ़ने की क्रिया  
या भाव । २. ऊँचाई की ओर छे  
जानेवाली भूमि । ३. धावा ।

चढ़ा-उतरी-संज्ञा स्त्री० बार बार  
चढ़ने उतरने की क्रिया ।

चढ़ा-ऊपरी-संज्ञा स्त्री० छाग-डाँट ।

चढ़ाचढ़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-  
ऊपरी" ।

चढ़ाना-क्रि० स० १. चढ़ने में प्रवृत्त  
करना । २. ऐसा काम करना जिससे  
चढ़े । ३. पी जाना ।

चढ़ाव-संज्ञा पुं० १. चढ़ने की क्रिया  
या भाव । २. वृद्धि ।

चढ़ावा-संज्ञा पुं० १. वह गहना जो  
बूढ़े की ओर से तुलहिन को विवाह  
के दिन पहनाया जाता है । २. वह  
सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई  
जाय । ३. दम ।

चणक-संज्ञा पुं० चना ।

चतुरंग-संज्ञा पुं० १. चतुरंगिणी सेना ।  
२. शतरंज ।

चतुरंगिणी-वि० स्त्री० चार श्रेणी-  
वाली ।

चतुर-वि० पुं० [ स्त्री० चतुरा ] १.  
होशियार । २. धूर्त ।

चतुरई-संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई" ।

चतुरता-संज्ञा स्त्री० होशियारी ।

चतुरपना-संज्ञा पुं० दे० "चतुराई" ।

चतुरस्र-वि० चौकोर ।

चतुराई-संज्ञा स्त्री० १. होशियारी ।  
२. धूर्तता ।

चतुरानन-संज्ञा पुं० प्रह्ला ।

चतुर्गुण-वि० १. चैतुना । २. चार

चितन-संज्ञा पुं० ध्यान ।

चितना-क्रि० स० १. ध्यान करना ।

२. सोचना ।

संज्ञा स्त्री० १. ध्यान । २. चिंता ।

चितनीय-वि० चिंतन या ध्यान करने योग्य ।

चिंता-संज्ञा स्त्री० १. ध्यान । २. सोच ।

चितामणि-संज्ञा पुं० परमेश्वर ।

चितित-वि० जिसे चिंता हो ।

चित्य-वि० विचार करने योग्य ।

चिदी-संज्ञा स्त्री० टुकड़ा ।

चिक-संज्ञा स्त्री० घाँस या सरकंडे की तीलियों का घना हुआ ऊँभरीदार परदा ।

संज्ञा पुं० बृचर ।

संज्ञा स्त्री० झटका ।

चिकट-वि० मैला कुचैला ।

चिकटना-क्रि० अ० जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना ।

चिकन-संज्ञा पुं० महीन सूती कपड़ा जिस पर उभड़े हुए बूटे बने रहते हैं ।

चिकना-वि० [स्त्री० चिकनी] जो साफ और बराबर हो ।

चिकनाई-संज्ञा स्त्री० चिकनापन ।

चिकनाना-क्रि० स० चिकना करना ।

क्रि० अ० १. चिकना होना । २. मोटाना ।

चिकनापन-संज्ञा पुं० चिकनाहट ।

चिकनाहट-संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन" ।

चिकनिया-वि० छैला ।

चिकरना-क्रि० अ० चीत्कार करना ।

चिकारा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० चिकारी ] सारंगी की तरह का एक वाजा ।

चिकित्सक-संज्ञा पुं० वैद्य ।

चिकित्सा-संज्ञा स्त्री० [ वि० चिकित्सित, चिकित्स्य ] इलाज ।

चिकित्सालय-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ रोगियों की दवा हो । शफाखाना ।

चिकुटी-संज्ञा स्त्री० दे० "चिकोटी" ।

चिक्कार-संज्ञा पुं० दे० "चिक्काड़" ।

चिखुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "गिलहरी" ।

चिचान-संज्ञा पुं० पाज पसी ।

चिचियाना-क्रि० अ० दे० "चिछाना" ।

चिचुकना-क्रि० अ० दे० "चुचुकना" ।

चिचोड़ना-क्रि० स० दे० "चचोड़ना" ।

चिजारा-संज्ञा पुं० कारीगर ।

चिट-संज्ञा स्त्री० १. कागड़, कपड़े आदि का टुकड़ा । २. पुरजा ।

चिटफना-क्रि० अ० चिट चिट शब्द करना ।

चिटफाना-क्रि० स० किसी सूखी हुई चीज को तोड़ना या सड़काना ।

चिटनवीस-संज्ञा पुं० लेखक ।

चिट्ठा-वि० सफेद ।

संज्ञा पुं० मूठा घड़ावा ।

चिट्ठा-संज्ञा पुं० खाता ।

चिट्ठी-संज्ञा स्त्री० १. पत्र । २. कोई कागड़ जिस पर कुछ लिखा हो ।

३. किसी यात का आज्ञापत्र ।

चिट्ठी पत्री-संज्ञा स्त्री० १. पत्र । २. पत्र-व्यवहार ।

चिट्ठीरसा-संज्ञा पुं० हाकिया ।

चिड़चिड़ा-संज्ञा पुं० दे० "चिचड़ा" ।

वि० शीघ्र चिड़नेवाला ।

चिड़चिड़ाना-क्रि० अ० १. जलने

गुणोंवाला ।  
 चतुर्थ-वि० चौथा ।  
 चतुर्थाश्रम-संज्ञ पुं० संन्यास ।  
 चतुर्थी-संज्ञ स्त्री० १. चौथ । २. वह  
 गंगापूजन आदि कर्म जो विवाह  
 के चौथे दिन होता है ।  
 चतुर्दशी-संज्ञ स्त्री० चौदस ।  
 चतुर्दिक्-संज्ञ पुं० चारों दिशाएँ ।  
 कि० वि० चारों ओर ।  
 चतुर्भुज-वि० [स्त्री० चतुर्भुजा] जिसकी  
 चार भुजाएँ हों ।  
 संज्ञ पुं० विष्णु ।  
 चतुर्भुजा-संज्ञ स्त्री० १. एक देवी ।  
 २. ताम्रग्री रूपधारिणी महाशक्ति ।  
 चतुर्भुजी-संज्ञ पुं० एक वैष्णव सेम-  
 दाय ।  
 वि० चार भुजाओंवाला ।  
 चतुर्मुख-संज्ञ पुं० मन्ना ।  
 वि० चार मुखवाला ।  
 कि० वि० चारों ओर ।  
 चतुर्थ्युगी-संज्ञ स्त्री० चारों युगों का  
 समय ।  
 चतुर्वेद-संज्ञ पुं० १. परमेश्वर । २.  
 चारों वेद ।  
 चतुर्वेदी-संज्ञ पुं० ब्राह्मणों की एक  
 जाति ।  
 चतुर्व्यूह-संज्ञ पुं० १. चार मनुष्यों  
 अथवा पदार्थों का समूह । २.  
 विष्णु ।  
 चतुष्कैण-वि० चौकोना ।  
 चतुष्टय-संज्ञ पुं० चार की संख्या ।  
 चतुष्पथ-संज्ञ पुं० चौराहा ।  
 चतुष्पद-संज्ञ पुं० चौपाया ।  
 वि० चार पैरोंवाला ।  
 चतुष्पदा-संज्ञ स्त्री० चौपैया छंद ।

चतुष्पदी-संज्ञ स्त्री० १. १५ मात्राओं  
 का चौपई छंद । २. चारपद का गीत ।  
 चत्वर-संज्ञ पुं० १. चौमुहानी । २.  
 चवतरा ।  
 चदर-संज्ञ स्त्री० १. चादर । २. किसी  
 धातु का लंबा-चौड़ा चौकोर पत्तर ।  
 चनकना-कि० प्र० दे० "चटकना" ।  
 चनखना-कि० प्र० छुफा होना ।  
 चना-संज्ञ पुं० वृट् ।  
 चपकन-संज्ञ स्त्री० १. धँगरला । २.  
 कियाड़, संदूक आदि में लोहे या  
 पीतल का वह साज जिसमें ताँता  
 लगाया जाता है ।  
 चपकना-कि० प्र० दे० "चिपकना" ।  
 चपटना-कि० प्र० दे० "चिपकना" ।  
 चपटा-वि० दे० "चिपटा" ।  
 चपड़ा-संज्ञ पुं० १. साफ की हुई  
 लाल का पत्तर । २. लाल रंग का  
 एक कीड़ा या फतिगा ।  
 चपत-संज्ञ पुं० १. धप्पड़ । २. धक्का ।  
 चपना-कि० प्र० दबना ।  
 चपनी-संज्ञ स्त्री० कटोरी ।  
 चपरगट्ट-वि० १. चौपटा । २.  
 गुथमगुथ ।  
 चपरना-कि० प्र० दे० "चुपटना" ।  
 चपरा-अभ्य० छटपट ।  
 चपरास-संज्ञ स्त्री० दफ्तर या मालिक  
 का नाम सुदी हुई पीतल आदि की  
 छोटी पट्टी ।  
 चपरासी-संज्ञ पुं० प्याहा ।  
 चपल-वि० १. चंचल । २. चालाक ।  
 चपलता-संज्ञ स्त्री० १. चंचलता ।  
 २. छल ।  
 चपला-वि० स्त्री० चंचला ।  
 संज्ञ स्त्री० १. खट्ती । २. यिजली ।  
 ३. जीम ।



में चिड़चिड़ शब्द होना । २. चिड़ना ।

चिड़िया-संज्ञा स्त्री० १. पक्षी । २. ताश का एक रंग ।

चिड़ियाखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान या घर जिसमें अनेक प्रकार के पक्षी और पशु देखने के लिये रखे जाते हैं ।

चिड़िहार-संज्ञा पुं० दे० "चिड़ी-मार" ।

चिड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया" ।

चिड़ीमार-संज्ञा पुं० बहेलिया ।

चिड़-संज्ञा स्त्री० १. अग्रसन्नता । २. नफरत ।

चिड़ना-क्रि० प्र० अग्रसन्न होना ।

चिड़ाना-क्रि० स० १. अग्रसन्न करना । २. किसी को कुड़ाने के लिये मुँह धनाना, या इसी प्रकार की और कोई चेष्टा करना ।

चित्-संज्ञा स्त्री० चेतना ।

चित-संज्ञा पुं० मन ।

० संज्ञा पुं० चितवन ।

वि० पीठ के बग पड़ा हुआ ।

चितकपरा-वि० [ स्त्री० चितकपरो ] रंग-विरंगा ।

चितचोर-संज्ञा पुं० चित को चुराने-वाला । प्यारा ।

चितभंग-संज्ञा पुं० ध्यान न लगना ।

चितरना-क्रि० स० चित्र बनाना ।

चितला-वि० रंग-विरंगा ।

संज्ञा पुं० खलनऊ का एक प्रकार का खरपूजा ।

चितवन-संज्ञा स्त्री० ताकने का भाव या ढंग ।

चिता-संज्ञा स्त्री० चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर मुरदा जलाया जाता है ।

चिताना-क्रि० स० १. सावधान करना । २. स्मरण कराना ।

चितावनी-संज्ञा स्त्री० १. चिताने की क्रिया । २. वह बात जो सावधान करने के लिये कही जाय ।

चितेरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चितेरिन ] चित्रकार ।

चितैन-संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन" ।

चित्त-संज्ञा पुं० मन ।

चित्तचित्तेप-संज्ञा पुं० चित्त की चंचलता या अस्थिरता ।

चित्तचित्रम-संज्ञा पुं० आति ।

चित्तवृत्ति-संज्ञा स्त्री० चित्त की गति ।

चित्ती-संज्ञा स्त्री० छोटा धन्वा ।

संज्ञा स्त्री० वह कीड़ी जिसकी पीठ चिपटी और खुरदरी होती है और जिससे जूए के दाँव फँकते हैं ।

चित्र-संज्ञा पुं० [ वि० चित्रित ] तस्वीर । वि० श्रुत ।

चित्रकला-संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या ।

चित्रकार-संज्ञा पुं० चित्र बनानेवाला ।

चित्रकारी-संज्ञा स्त्री० चित्रविद्या ।

चित्रगत्त-संज्ञा पुं० एक यमराज जो पाप-पुण्य का सेखा रखते हैं ।

चित्रना-क्रि० स० चित्रित करना ।

चित्रमृग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चित्तीदार हिरन । चीतल ।

चित्ररथ-संज्ञा पुं० सूर्य ।

चित्रलोखा-संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की कबज या कुँची ।

चित्रविचित्र-वि० रंग-विरंगा ।

चित्रविद्या-संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या ।

चित्रशाला-संज्ञा स्त्री० १. वह घर जहाँ चित्र बनते हैं । २. वह घर

चपलाई-संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।

चपलाना-कि० अ० चलना।

कि० स० चलाना।

चपली-संज्ञा स्त्री० जूती।

चपाती-संज्ञा स्त्री० वह पतली रोटी जो हाथ से बेलकर बड़ाई जाती है।

चपाना-कि० स० दधाने का काम कराना।

चपेट-संज्ञा स्त्री० १. झोका। २. थप्पड़।  
३. दबाव।

चपेटना-कि० स० १. दधाना। २. डटना।

चपेटा-संज्ञा पुं० दे० "चपेट"।

चपेरना-संज्ञा पुं० दधाना।

चप्पल-संज्ञा पुं० वह जूता जिसकी पृथी पर दीवार न हो।

चप्पा-संज्ञा पुं० चौथा भाग।

चप्पी-संज्ञा स्त्री० धीरे धीरे हाथ-पैर दधाने की क्रिया।

चप्पू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का डंडा जो पतवार का भी काम देता है।

चयाना-कि० स० दर्ती से कुछलना।

चवूतरा-संज्ञा पुं० चौतरा।

चवेना-संज्ञा पुं० भूँजा।

चवेनी-संज्ञा स्त्री० जलपान का सामान।

चमोरना-कि० स० तर करना।

चमक-संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। २. लचक। चिक।

चमक-दमक-संज्ञा स्त्री० तड़क-भड़क।

चमकदार-वि० चमकीला।

चमकना-कि० अ० १. जगमगाना। २. दमकना। ३. लचक-झाना।

चमकाना-कि० स० चमकीला करना।

चमकी-संज्ञा स्त्री० कारखोबी में रुपहले या सुनहले तारों के छोटे छोटे गोले चिपटे टुकड़े।

चमकीला-वि० [ स्त्री० चमकीली ] १.

चमकनेवाला। २. शानदार।

चमकावल-संज्ञा स्त्री० १. चमकाने की क्रिया। २. मटकाने की क्रिया।

चमकौ-संज्ञा स्त्री० १. चमकने मटकने-वाली स्त्री। २. मगडालू स्त्री।

चमगादड़-संज्ञा पुं० एक बढ़नेवाला बड़ा जंतु जिसके चारों पैर परदार होते हैं।

चमचम-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की धँगला मिठाई।

चमचमाना-कि० अ० चमकना।

कि० स० चमकाना।

चमचा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चमची ] १. चम्मच। २. चिमटा।

चमड़ा-संज्ञा पुं० १. चर्म। त्वचा। २. खाल। ३. छात्र।

चमड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "चमड़ा"।

चमत्कार-संज्ञा पुं० [ वि० चमत्कारी, चमत्कृत ] १. आश्चर्य। २. करामात।

३. विचित्रता।

चमत्कारी-वि० [ स्त्री० चमत्कारिणी ] १. अद्भुत। २. चमत्कार या करामात दिलानेवाला।

चमत्कृत-वि० आश्चर्यित।

चमत्कृति-संज्ञा स्त्री० आश्चर्य।

चमन-संज्ञा पुं० १. हरी क्यारी। २. कुलवारी।

चमर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चमरी ] चँवर। चामर।

चमरख-संज्ञा स्त्री० मूँज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से होकर चरखे का तकड़ा घूमता है।

चमस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चमसी ] चम्मच।

चमाचम-वि० मलक के साथ।

जहाँ चित्र रखे हों या रंग-विरंग की सजावट हो।

चित्रसारी-संज्ञा स्त्री० वह घर जहाँ चित्र टंगे हों या दीवार पर बने हों।

चित्रांग-वि० [ स्त्री० चित्रांगी ] जिसके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ आदि हों। संज्ञा पुं० चीता।

चित्रा-संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।

चित्रिणी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

चित्रित-वि० १. चित्र में खींचा हुआ। २. जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों।

चिथड़ा-संज्ञा पुं० लता।

चिथाड़ना-कि० स० १. चीरना। फाड़ना। २. अपमानित करना।

चिदात्मा-संज्ञा पुं० प्रभु।

चिदानन्द-संज्ञा पुं० प्रभु।

चिनक-संज्ञा स्त्री० जलन।

चिनगारी-संज्ञा स्त्री० अग्निकण।

चिनगी-संज्ञा स्त्री० १. अग्निकण। २. चालाक लड़का।

चिनिया-वि० चीन देश का।

चिनिया केला-संज्ञा पुं० छोटी जाति का एक केला।

चिनिया घदाम-संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।

चिन्मय-वि० ज्ञानमय।

संज्ञा पुं० परमेश्वर।

चिन्हा-संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।

चिन्हाना-कि० स० पहचनवाना।

चिन्हानी-संज्ञा स्त्री० १. चीन्हने की वस्तु। २. हमारक।

चिन्हारी-संज्ञा स्त्री० ज्ञान-पहचान।

चिपकना-कि० अ० सटना।

चिपकाना-कि० स० लिपटाना।

चिपचिपा-वि० लसदार।

चिपचिपाना-कि० अ० लसदार मालूम होना।

चिपटना-कि० अ० दे० "चिपकना"।

चिपटा-वि० जिसकी सतह दबी और घराघर फैली हुई हो।

चिपड़ी, चिपरी-संज्ञा स्त्री० गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े। वपली।

चिबुक-संज्ञा पुं० ठोड़ी।

चिमटना-कि० अ० १. चिपकना। २. आलिंगन करना।

चिमटा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चिमटी ] चिमटी एक औजार जिससे वस्त्र पर की वस्तुओं को पकड़कर उठाते हैं, जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते।

चिमटाना-कि० स० १. चिपकाना। २. लिपटाना।

चिमटी-संज्ञा स्त्री० पकृत छोटा चिमटा।

चिरंजीव-वि० चिरंजीवी।

चिरंतन-वि० पुराना।

चिर-वि० बहुत दिनों तक रहनेवाला। कि० वि० बहुत दिनों तक।

चिरई-संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिरकना-कि० अ० थोड़ा थोड़ा मज निकासना या हगना।

चिरकाल-संज्ञा पुं० दीर्घ काल।

चिरकीन-वि० गंदा।

चिरकुट-संज्ञा पुं० चिपड़ा।

चिरचिटा-संज्ञा पुं० चिचड़ा।

चिरजीवी-वि० १. बहुत दिनों तक जीनेवाला। २. अमर।

चिरना-कि० अ० १. फटना। २. लकीर के रूप में घाव होना।

चिरमिटी-संज्ञा स्त्री० गुंजा।

चिरवाई-संज्ञा स्त्री० चिरवाने का भाव

धमार-संज्ञा पुं० [खी० चमारिन, चमारी]  
एक नीच जाति जो चमड़े का काम  
बनाती और झाड़ू देती है।

चमारी-संज्ञा स्त्री० १. चमार की स्त्री।  
२. चमार का काम।

चमू-संज्ञा स्त्री० १. सेना। २. नियत  
संख्या की सेना जिसमें ७२६ हाथी,  
७२६ रथ, २१८७ सवार और ३६४२  
पैदल होते थे।

चमेली-संज्ञा स्त्री० १. एक झाड़ी या  
ताता जो अपने सुगंधित फूलों के  
लिये प्रसिद्ध है। २. इस झाड़ी का  
फूल।

चमोटा-संज्ञा पुं० मोटे चमड़े का  
टुकड़ा जिस पर राइकर नाई छुरे  
की धार तैज करते हैं।

चमोटी-संज्ञा स्त्री० १. चाबुक। २.  
चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई  
छुरे की धार घिसते हैं।

चमौघा-संज्ञा पुं० चमराधा जूता।

चम्मच-संज्ञा पुं० एक प्रकार की  
छोटी हलकी कलछी।

चय-संज्ञा पुं० समूह।

चयन-संज्ञा पुं० संचय।

च संज्ञा पुं० दे० "चैत"।

चर-संज्ञा पुं० १. जासूस। २. दूत।  
३. वह जो चले।

चि० १. आप से आप चलनेवाला।  
२. अस्थिर।

चरक-संज्ञा पुं० १. दूत। २. जासूस।  
३. पथिक।

चरकटा-संज्ञा पुं० धारा काटकर लाने-  
वाला आदमी।

चरफा-संज्ञा पुं० १. जूझ। २. घोखा।

चरख-संज्ञा पुं० १. चाक। २. सूत  
कातने का चरखा।

चरखा-संज्ञा पुं० १. घूमनेवाला गोल  
चक्र। २. रहट। ३. झाड़े-बखेड़े  
या झंझट का काम।

चरखी-संज्ञा स्त्री० १. पहिए की तरह  
घूमनेवाली कोई वस्तु। २. छोटा  
चरखा। ३. चिरनी।

चरचना-कि० स० १. लेपना। २.  
भाँपना।

चरचराना-कि० अ० १. चर चर  
शब्द के साथ टूटना या जलना। २.  
बर्बाना।

कि० स० चरचर शब्द के साथ सोचना।

चरचा-संज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा"।

चरचारी-संज्ञा पुं० १. चर्चा चलाने-  
वाला। २. विद्वक।

चरजना-कि० अ० १. यहकाना।  
२. अनुमान करना।

चरण-संज्ञा पुं० १. पैर। २. किसी  
छंद या श्लोक आदि का एक पद।

चरणदासी-संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २.  
जूता।

चरणपादुका-संज्ञा स्त्री० लड़ाई।

चरणपीठ-संज्ञा पुं० चरणपादुका।

चरणामृत-संज्ञा पुं० १. वह पानी  
जिसमें किसी महारामा या बड़े के  
चरण धोए गए हों। पादोदक। २.  
एक में मिला हुआ दूध, दही, घी,  
शक्कर और शहद जिसमें किसी देव-  
मूर्ति को स्नान कराया गया हो।

चरणोदक-संज्ञा पुं० चरणामृत।

चरता-संज्ञा स्त्री० १. चर होने या  
चलने का भाव। २. पृष्ठी।

चरन-संज्ञा पुं० दे० "चरण"।

चरना-कि० स० पशुओं का घूम घूम-  
कर घास चारा आदि खाना।

कि० अ० घूमना फिरना।

कार्य या मजदूरी ।  
 चिरघाना-कि० स० चीरने का काम करना ।  
 चिरहटा-संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार" ।  
 चिराई-संज्ञा स्त्री० चीरने का भाव, किया या मजदूरी ।  
 चिराग-संज्ञा पुं० दीपक ।  
 चिराना-कि० स० फड़वाना ।  
 वि० पुराना ।  
 चिरायता-संज्ञा पुं० एक पैघा जो बहुत कड़वा होता है और दवा के काम में आता है ।  
 चिरायु-वि० बड़ी उम्रवाला ।  
 चिरिया-कि० संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया" ।  
 चिरिहार-संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार" ।  
 चिरौंजी-संज्ञा स्त्री० पिवाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी ।  
 चिलक-संज्ञा स्त्री० १. आभा । २. टीस ।  
 चिलकना-कि० भ० १. चमचमाना । २. रह रहकर दड़ उठना ।  
 चिलकाना-कि० स० चमकाना ।  
 चिलगोजा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का मेवा ।  
 चिलविला, चिलविला-वि० [ स्त्री० चिलविली ] चंचल ।  
 चिलम-संज्ञा स्त्री० कटोरी के आकार का नखीदार मिट्टी का एक बरतन जिस पर तर्थाङ्ग जलाकर धुआँ पीते हैं ।  
 चिलमची-संज्ञा स्त्री० देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुली आदि करते हैं ।  
 चिल्लाड़-संज्ञा पुं० जू की तरह का एक बहुत छोटा सफ़ेद कीड़ा ।

चिल्ल-पों-संज्ञा स्त्री० शोर-माल ।  
 चिल्ला-संज्ञा पुं० चालीस दिन का समय ।  
 संज्ञा पुं० १. एक जंगली पेड़ । २. बड़द या मूँग आदि की धी चुपड़-कर सेकी हुई रोटी ।  
 चिल्लाना-कि० भ० ज़ोर से घेलना ।  
 चिल्लाहट-संज्ञा स्त्री० १. चिल्लाने का भाव । २. हल्ला ।  
 चिहुँकना-कि० भ० दे० "चौकना" ।  
 चिहुँटना-कि० स० १. चुटकी काटना । २. चिपटना ।  
 चिहुँटी-संज्ञा स्त्री० चुटकी ।  
 चिह्न-संज्ञा पुं० निशान ।  
 चिह्नित-वि० चिह्न किया हुआ ।  
 चीँ, चीँची-संज्ञा स्त्री० पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द ।  
 ची चपड़-संज्ञा स्त्री० विरोध में कुड़ घेलना ।  
 चीँटा-संज्ञा पुं० दे० "चिँटा" ।  
 चीक-संज्ञा स्त्री० बहुत ज़ोर से चिल्लाने का शब्द ।  
 चीकट-संज्ञा पुं० खलछट ।  
 वि० बहुत मँड्रा ।  
 चीख-संज्ञा स्त्री० दे० "चीक" ।  
 चीखना-कि० स० स्वाद जानने के लिये, थोड़ी मात्रा में खाना ।  
 चीझ-संज्ञा स्त्री० १. वस्तु । २. महत्त्व की वस्तु ।  
 चीठी-संज्ञा स्त्री० दे० "चिट्ठी" ।  
 चीड़-संज्ञा पुं० एक बहुत ऊँचा पेड़ ।  
 चीतना-कि० स० [ वि० चीना ] १. सोचना । २. स्मरण करना ।  
 कि० स० चिन्तित करना ।

चरनी-संज्ञा स्त्री० चरागाह ।  
 चरपरा-वि० [स्त्री० चरपी] झालदार ।  
 चरपराहट-संज्ञा स्त्री० १. स्वाद की तीक्ष्णता । २. घाव आदि की जलन ।  
 चरफराना-क्रि० अ० दे० "तड़पना" ।  
 चरवाक, चरवाक-वि० १. चतुर । २. निडर ।  
 चरवी-संज्ञा स्त्री० सफ़ेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में और पशु से पौधों और वृक्षों में भी पाया जाता है ।  
 चरम-वि० अंतिम ।  
 चरमर-संज्ञा पुं० तनी या थीमड़ वस्तु के बचने या मुड़ने का शब्द ।  
 चरमराना-क्रि० अ० चरमर शब्द होना ।  
 क्रि० स० चरमर शब्द उत्पन्न करना ।  
 चरवाई-संज्ञा स्त्री० १. चराने का काम । २. चराने की मजदूरी ।  
 चरवाना-क्रि० स० चराने का काम दूसरे से कराना ।  
 चरवाहा-संज्ञा पुं० चरानेवाला ।  
 चरवाही-संज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई" ।  
 चरवाया-संज्ञा पुं० १. चरनेवाला । २. चरानेवाला ।  
 चरस-संज्ञा पुं० १. पुर । मोट । २. गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद या चैप, जिसका धुआँ नशे के लिये चिलम पर पीते हैं ।  
 संज्ञा पुं० बन-मोर ।  
 चरसा-संज्ञा पुं० १. चमड़े का थना हुआ पड़ा धैला । २. मोट ।  
 चरसी-संज्ञा पुं० १. चरस द्वारा खेत सींचनेवाला । २. वह जो चरस पीता हो ।

चराई-संज्ञा स्त्री० १. चरने का काम । २. चराने का काम या मजदूरी ।  
 चरागाह-संज्ञा पुं० वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हैं ।  
 चराचर-वि० १. जड़ और चेतन । २. जगत् ।  
 चराना-क्रि० स० १. पशुओं को चारा खिलाने के लिये खेतों या मैदानों में ले जाना । २. धातों में धहलाना ।  
 चरिदा-संज्ञा पुं० पशु ।  
 चरित-संज्ञा पुं० १. आचरण । २. कृत्य । ३. जीवनी ।  
 चरितनायक-संज्ञा पुं० वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय ।  
 चरितार्थ-वि० १. कृतार्थ । २. जो ठीक ठीक घटे ।  
 चरित्र-संज्ञा पुं० १. भूतता की चाल । २. नखरेवाजी ।  
 चरित्र-संज्ञा पुं० १. स्वभाव । २. करनी ।  
 चरित्रवान्-वि० [ स्त्री० चरित्रवती ] अच्छे चरित्रवाला ।  
 चरी-संज्ञा स्त्री० पशुओं के चरने की जमीन ।  
 चरु-संज्ञा पुं० [ वि० चरम्य ] हवन या यज्ञ की आहुति के लिये पकाया हुआ अन्न ।  
 चरुखला-संज्ञा पुं० सूत कातने का चरखा ।  
 चरेरा-वि० [ स्त्री० चरेरी ] कंकश ।  
 चरैया-संज्ञा पुं० १. चरानेवाला । २. चरनेवाला ।  
 चर्चक-संज्ञा पुं० चर्चा करनेवाला ।  
 चर्चन-संज्ञा पुं० १. चर्चा । २. लेपन ।

चीतल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर सफेद रंग की चित्तियाँ होती हैं।

चीता-संज्ञा पुं० बाघ की जाति का एक प्रसिद्ध हिंसक पशु।

† संज्ञा पुं० चित्त।

वि० सोचा या विचारा हुआ।

चीत्कार-संज्ञा पुं० चिल्लाहट।

चीथड़ा-संज्ञा पुं० दे० "चियड़ा"।

चीथना-क्रि० स० ठुकड़े ठुकड़े करना।

चीन-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध देश।

चीनना-क्रि० स० दे० "चीन्हना"।

चीना-संज्ञा पुं० चीन देशवासी।

वि० चीन देश का।

चीना यदाम-संज्ञा पुं० दे० "भूँग-फली"।

चीनिया-वि० चीन देश का।

चीनी-संज्ञा स्त्री० शक्कर।

वि० चीन देश का।

चीन्हा-संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।

चीन्हना-क्रि० स० पहचानना।

चीमड़-वि० जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।

चीर्या-संज्ञा पुं० दे० "चिर्या"।

चीर-संज्ञा पुं० १. वस्त्र। २. चियड़ा।

संज्ञा स्त्री० चीरने का भाव या क्रिया।

चीरना-क्रि० स० विदीर्ण करना।

चीरफाड़-संज्ञा स्त्री० १. चीरने-फाड़ने का काम या भाव। २. शस्त्र-चिकित्सा।

चील-संज्ञा स्त्री० गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया।

चीलर-संज्ञा पुं० दे० "चिलड़"।

चील्ह-संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।

चीस-संज्ञा स्त्री० दे० "टीस"।

चुंगल-संज्ञा पुं० चंगुल।

चुंगी-संज्ञा स्त्री० १. चुटकी भर चीज़।

२. वह महसूल जो शहर के भीतर आनेवाले बाहरी माज पर लगता हो।

चुंडित-वि० चुटियावाला।

चुंदी-संज्ञा स्त्री० चुटिया।

चुँधलाना-क्रि० प्र० चकाचौंध होना।

चुंधा-वि० [ स्त्री० चुंधी ] १. जिसे सुझाई न पड़े। २. छोटी छोटी आखोंवाला।

चुंधियाना-क्रि० प्र० दे० "चुँध-लाना"।

चुंयक-संज्ञा पुं० १. वह जो चुंबन करे। २. कामुक। ३. एक प्रकार का पर्यर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है।

चुंयन-संज्ञा पुं० [ वि० चुंबनीय, चुंबित ] प्रेम से दोनों से (किसी के) गाल आदि अंगों का स्पर्श।

चुंयना-क्रि० स० दे० "चूमना"।

चुंयित-वि० चूसा हुआ।

चुआई-संज्ञा स्त्री० चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।

चुआन-संज्ञा स्त्री० खाई।

चुआना-क्रि० स० टपकना।

चुकंदर-संज्ञा पुं० गाजर की तरह की एक जड़ जो तरकारी के काम में आती है।

चुक-संज्ञा पुं० दे० "चूक"।

चुकता-वि० अदा।

चुकती-वि० दे० "चुकता"।

चुकना-क्रि० प्र० १. समाप्त होना। २. निवटना। ३. मूल करना।

चुकाई-संज्ञा स्त्री० चुकने या चुकता होने का भाव।

चुकाना-क्रि० स० थड़ा करना ।  
 चुकड़-संज्ञा पुं० पुरवा ।  
 चुगद-संज्ञा पुं० १. खल पपी ।  
 २. मूल ।  
 चुगना-क्रि० स० चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना ।  
 चुगलखोर-संज्ञा पुं० पीठ पीछे शिकायत करनेवाला ।  
 चुगली-संज्ञा स्त्री० दूसरे की बिंदा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय ।  
 चुगार-संज्ञा स्त्री० चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया ।  
 चुगाना-क्रि० स० चिड़ियों को दाना या चारा डालना ।  
 चुचकारना-क्रि० स० चुमकारना ।  
 चुचकारी-संज्ञा स्त्री० चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव ।  
 चुचाना-क्रि० भ० निचुड़ना ।  
 चुटकी-संज्ञा पुं० कोड़ा ।  
 संज्ञा स्त्री० चुटकी ।  
 चुटकना-क्रि० स० कोड़ा या चाबुक मारना ।  
 क्रि० स० चुटकी से तोड़ना ।  
 चुटकी-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या छेने आदिकेलिये थंगूठे और पास की रँगली का मेख ।  
 चुटकुला-संज्ञा पुं० १. मजेदार बात ।  
 २. छटका ।  
 चुटफुटी-संज्ञा स्त्री० फुटकर वस्तु ।  
 चुटिया-संज्ञा स्त्री० शिपा । चुट्टी ।  
 चुटीला-वि० जिसे चोट या घाव लगा हो ।  
 संज्ञा पुं० घगल घगल की पतली चोटी ।  
 वि० सिर का ।  
 चुटैल-वि० धायल ।

चुड़िहारा-संज्ञा पुं० [स्त्री० चुड़िहारि] चुड़ी बेचनेवाला ।  
 चुड़ैल-संज्ञा स्त्री० १. भुतनी । डायन ।  
 २. दुष्टा ।  
 चुनचुनाना-क्रि० भ० कुछ जलन लिए हुए चुमने की सी पीड़ा होना ।  
 चुनन-संज्ञा स्त्री० शिकन ।  
 चुनना-क्रि० स० १. छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना । २. छान छानकर अलग करना । ३. सजाना ।  
 ४. दीवार उठाना । ५. कपड़े में चुनन या सिक्कड़न डालना ।  
 चुनरा-संज्ञा स्त्री० वह रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीच में छुंदकियाँ होती हैं ।  
 चुनघाना-क्रि० स० दे० "चुनाना" ।  
 चुनार-संज्ञा स्त्री० १. चुनने की क्रिया या भाव । २. दीवार की जोड़ाई या उसका ढंग । ३. चुनने की मजदूरी ।  
 चुनाना-क्रि० स० चुनने का काम दूसरे से कराना ।  
 चुनाय-संज्ञा पुं० १. चुनने का काम ।  
 २. बहुतों में से कुछ को किसी कार्य के लिये पसंद या नियुक्त करना ।  
 चुनिदा-वि० १. चुना हुआ । २. यद्विषय ।  
 चुनी-संज्ञा स्त्री० दे० "चुम्बी" ।  
 चुनौटी-संज्ञा स्त्री० चुना रखने की दिविया ।  
 चुनौती-संज्ञा स्त्री० १. उतेजना । २. खलकार ।  
 चुम्बी-संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा ।  
 चुप-वि० मौन ।  
 संज्ञा स्त्री० न धोलना ।  
 चुपका-वि० [स्त्री० चुपकी] मौन ।



छाँह-संज्ञा स्त्री० १. छाया । २. शरण ।  
 छाक-संज्ञा स्त्री० वृत्ति ।  
 छाकना-कि० प्र० अघाना ।  
 कि० प्र० हैरान होना ।  
 छाग-संज्ञा पुं० चकरा ।  
 छागल-संज्ञा पुं० १. चकरा । २.  
 बकरे की खाल की बनी हुई चीज़ ।  
 संज्ञा स्त्री० झामन ।  
 छाछ-संज्ञा स्त्री० मट्ठा ।  
 छाज-संज्ञा पुं० रूप ।  
 छाजन-संज्ञा पुं० धख ।  
 संज्ञा स्त्री० १. छप्पर । २. छवाई ।  
 छाजना-कि० प्र० [ वि० छाजित ]  
 योभा देना ।  
 छाता-संज्ञा पुं० दे० "छाता" ।  
 छाता-संज्ञा पुं० पड़ी छतरी ।  
 छाती-संज्ञा स्त्री० १. सीना । बड़-  
 खल । २. कलेजा । ३. स्तन ।  
 ४. हिम्मत ।  
 छात्र-संज्ञा पुं० शिष्य ।  
 छात्रवृत्ति-संज्ञा स्त्री० यह वृत्ति या  
 धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास  
 की वृत्ति में सहायता के लिये मिले ।  
 छात्रालय-संज्ञा पुं० विद्यार्थियों के  
 रहने का स्थान । बोर्डिंगहाउस ।  
 छादन-संज्ञा पुं० [ वि० छादित ] १.  
 छाने या ढकने का काम । २.  
 धावरण ।  
 छान-संज्ञा स्त्री० छप्पर ।  
 छानना-कि० प्र० १. चूने या सरस  
 पदार्थ को महीन कपड़े या छोर  
 किसी छेददार वस्तु के पार निकालना  
 जिसमें उसका कूड़ा-करकट  
 निकल जाय । २. विखराना । ३.  
 छेड़ना ।  
 छानवीन-संज्ञा स्त्री० जीव-पक्षता ।

छाना-कि० प्र० १. आच्छादित करना ।  
 २. विछाना ।  
 कि० प्र० फैलाना ।  
 छाप-संज्ञा स्त्री० यह चिह्न जो छापने  
 में पड़ता है ।  
 छापना-कि० प्र० १. स्वाही आदि  
 पुती वस्तु को दूसरी वस्तु पर रख-  
 कर उसकी आकृति चिह्नित करना ।  
 २. मुद्रित करना ।  
 छापा-संज्ञा पुं० १. साँचा जिस पर  
 गीली स्वाही आदि पोतकर उस पर  
 सुखे चिह्नों की आकृति किसी वस्तु  
 पर उतारते हैं । २. आक्रमण ।  
 छापाखाना-संज्ञा पुं० मुद्रालय । प्रेस ।  
 छाया-संज्ञा स्त्री० १. साया । २.  
 परछाई ।  
 छायापथ-संज्ञा पुं० आकाश-मार्ग ।  
 छाया-संज्ञा पुं० १. चारी नमक । २.  
 राख ।  
 छाल-संज्ञा स्त्री० बरकल ।  
 छालना-कि० प्र० छानना ।  
 छाला-संज्ञा पुं० १. छाल या चमड़ा ।  
 २. फफोला ।  
 छालिया, छाली-संज्ञा स्त्री० सुपारी ।  
 छावनी-संज्ञा स्त्री० १. छप्पर । २.  
 डेरा । ३. सेना के टहरने का स्थान ।  
 छावा-संज्ञा पुं० बच्चा ।  
 छिड़ाना-कि० प्र० छीनना ।  
 छि-प्रत्यय० पृष्ठा, तिरस्कार या ग्रहवि-  
 मूचक शब्द ।  
 छिकनी-संज्ञा स्त्री० नक़्क़िनी घास  
 जिसके फूल सूँघने से छींक आती है ।  
 छिगुनी-संज्ञा स्त्री० सयसे छोटी  
 रँगली ।  
 छिछकारना-कि० प्र० दे० "छिड़-  
 कना" ।

चुपड़ना-कि० स० पोतना । ।  
 चुपाना-कि० अ० चुप हो रहना ।  
 चुप्पा-वि० [ स्त्री० चुप्पी ] जो बहुत कम बोले ।  
 चुप्पी-संज्ञा स्त्री० मौन ।  
 चुयलाना-कि० स० स्वाद खेने के लिये मुँह में रखकर इधर-उधर हुलाना ।  
 चुभकना-कि० अ० गोता खाना ।  
 चुभकी-संज्ञा स्त्री० हुब्यी ।  
 चुभना-कि० अ० गड़ना ।  
 चुभलाना-कि० स० दे० "चुपलाना" ।  
 चुभाना, चुभोना-कि० स० घँसाना ।  
 चुभकार-संज्ञा स्त्री० पुचकार ।  
 चुभकारना-कि० स० पुचकारना ।  
 चुम्मा-संज्ञा पुं० दे० "चूमा" ।  
 चुर-संज्ञा पुं० मर्दि ।  
 ० वि० बहुत ।  
 चुरकी-संज्ञा स्त्री० चुटिया ।  
 चुरकुट, चुरकुस-वि० चकनाचूर ।  
 चुरना-कि० अ० सीकना ।  
 चुरमुर-संज्ञा पुं० खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द ।  
 चुरमुरा-वि० करारा ।  
 चुरमुराना-कि० अ० चुरमुर शब्द करके टूटना ।  
 कि० स० चुरमुर शब्द करके तोड़ना ।  
 चुरवाना-कि० स० पकाने का काम कराना ।  
 चुराना-कि० स० १. चोरी करना ।  
 २. छिपाना ।  
 कि० स० सिक्काना ।  
 चुरट-संज्ञा पुं० सिगार ।  
 चुल-संज्ञा स्त्री० चुजलाइट ।  
 चुलचुलाना-कि० अ० चुजलाइट होना ।

चुलचुली-संज्ञा स्त्री० चुजलाइट ।  
 चुलचुला-वि० [ स्त्री० चुलचुली ] चंचल ।  
 चुलचुलाना-कि० अ० १. चुलचुल करना । २. चंचल होना ।  
 चुलचुलापन-संज्ञा पुं० चंचलता ।  
 चुलचुलाहट-संज्ञा स्त्री० चंचलता ।  
 चुल्लू-संज्ञा पुं० गहरी की हुई हमेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें ।  
 चुवाना-कि० स० टपकाना ।  
 चुसकी-संज्ञा स्त्री० घूँट ।  
 चुसना-कि० अ० चूसा जाना ।  
 चुसनी-संज्ञा स्त्री० १. पशों का एक लिङ्गाना जिसे वे मुँह में डालकर चूसते हैं । २. दूध पिलाने की शीशी ।  
 चुसाना-कि० स० चूसने का काम दूसरे से कराना ।  
 चुस्त-वि० १. कसा हुआ । २. फुर-सीला ।  
 चुस्ती-संज्ञा स्त्री० १. फुरती । २. मज-बूती ।  
 चुहटी-संज्ञा स्त्री० चुटकी ।  
 चुहचुहा-वि० [ स्त्री० चुहचुही ] १. चुहचुहाता हुआ । २. रसीला ।  
 चुहचुहाता-वि० रंगीला ।  
 चुहचुहाना-कि० अ० चहचहाना ।  
 चुहटना-कि० स० रेंदना ।  
 चुहल-संज्ञा स्त्री० हँसी ।  
 चुहलवाज़-वि० दिल्लीयाज़ ।  
 चुहिया-संज्ञा स्त्री० चूहा का स्त्री और अल्पां रूप ।  
 चुहुटना-कि० स० दे० "चिमटना" ।  
 चूँ-संज्ञा पुं० चूँ शब्द ।  
 चूँकि-कि० वि० क्योंकि ।

छिछला-वि० [खी० छिछली] बयला ।  
छिछोरपन, छिछोरापन-संज्ञ पुं०  
नीचता ।

छिछोरा-वि० [खी० छिछोरी] ओछा ।  
छिटकना-क्रि० अ० चारों ओर  
बिखरना ।

छिटकाना-क्रि० स० चारों ओर  
फैलाना ।

छिड़कना-क्रि० स० द्रव पदार्थ को  
इस प्रकार फँकना कि उसके महीन  
महीन छँटे फैलकर इधर उधर पड़ें ।

छिड़कवाना-क्रि० स० छिड़कने का  
काम दूसरे से कराना ।

छिड़काई-संज्ञा स्त्री० १. छिड़काव ।  
२. छिड़कने की मजदूरी ।

छिड़काव-संज्ञा पुं० पानी आदि  
छिड़कने की क्रिया ।

छिड़ना-क्रि० अ० आरंभ होना ।

छितराना-क्रि० अ० बिखरना ।  
क्रि० स० बिखराना ।

छिदना-क्रि० अ० १. सुराखदार  
होना । २. चुभना ।

छिदाना-क्रि० स० १. छेद कराना ।  
२. चुभवाना ।

छिद्र-संज्ञा पुं० [वि० छिद्रित] १. छेद ।  
२. दोष ।

छिद्रान्वेषण-संज्ञा पुं० [वि० छिद्रान्वेषी]  
दोष ढूँढ़ना ।

छिद्रान्वेषी-वि० [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी]  
पराया दोष ढूँढ़नेवाला ।

छिन-संज्ञा पुं० दे० "चण" ।

छिनक-क्रि० वि० एक चण ।

छिनकना-क्रि० स० नाक का मल  
ज़ोर से साँस बाहर करके निकालना ।

छिनछवि-संज्ञा स्त्री० बिजली

छिनना-क्रि० अ० छीन लिया जाना ।  
क्रि० स० हरण करना ।

छिनाल-वि० स्त्री० व्यभिचारिणी ।

छिनाला-संज्ञा पुं० व्यभिचार ।

छिन्न-वि० क्षेडित ।

छिन्न भिन्न-वि० १. फटा कुटा । २.  
तितर बितर ।

छिपकली-संज्ञा स्त्री० बिस्तुइया ।

छिपना-क्रि० अ० छोट में होना ।

छिपाना-क्रि० स० [संज्ञा छिपाव] १.  
आवरण या छोट में करना । २.  
गुप्त रखना ।

छिपाव-संज्ञा पुं० छिपाने का भाव ।

छिमा-संज्ञा स्त्री० दे० "वसा" ।

छिया-संज्ञा स्त्री० १. घृणित वस्तु ।  
२. मल ।

वि० मैला ।

संज्ञा स्त्री० छोफरी ।

छिरकना-क्रि० स० दे० "छिड़-  
कना" ।

छिलका-संज्ञा पुं० एक परत की शोख  
जो फलों आदि पर होती है ।

छिलना-क्रि० अ० १. छिलके का  
अलग होना । २. ऊपरी चमड़े का

कुछ भाग कटकर अलग हो जाना ।

छोंक-संज्ञा स्त्री० नाक से शब्द के  
साथ सहसा निकलनेवाला वायु का

झोंका या स्फोट ।

छोंकना-क्रि० अ० नाक से वेग के  
साथ वायु निकालना ।

छोंट-संज्ञा स्त्री० १. छलकण । २. वह  
कपड़ा जिस पर रंग विरंग के धूल-  
बूटे छपे हों ।

छोंटना-क्रि० स० दे० "छितराना" ।

छोंटा-संज्ञा पुं० १. द्रव पदार्थ की

चूँदरी-संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी" ।

चूक-संज्ञा स्त्री० मूल ।

संज्ञा पुं० खाटाई ।

चूकना-क्रि० प्र० १. मूल करना ।

२. सुखवसर खो देना ।

चूची-संज्ञा स्त्री० स्तन ।

चूड़ांत-वि० चरम सीमा ।

क्रि० वि० धारपंत ।

चूड़ा-संज्ञा स्त्री० १. चोटी । २. पाँह

में पहनने का एक अलंकार ।

संज्ञा पुं० कड़ा ।

चूड़ाकरण-संज्ञा पुं० मुंडन ।

चूड़ाकर्म-संज्ञा पुं० चूड़ाकरण ।

चूड़ामणि-संज्ञा पुं० १. सिर में पह-

नने का शीशफूल नाम का गहना ।

२. सयमें भेष ।

चूड़ी-संज्ञा स्त्री० १. कोई मंडला-

कार पदार्थ । २. हाथ में पहनने

का एक वृत्ताकार गहना ।

चूड़ीदार-वि० जिसमें चूड़ी या छुरले

अथवा हत्ती आकार के घेरे पड़े हों ।

चून-संज्ञा पुं० आटा ।

चूनर, चूनरी-संज्ञा स्त्री० दे०

"चुनरी" ।

चूना-संज्ञा पुं० एक प्रकार का तीक्ष्ण

और सफेद चारभस्म जो पत्थर,

कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को

अद्वियों में घूँककर बनाया जाता है ।

क्रि० प्र० टपकना ।

चूनादानी-संज्ञा स्त्री० चुनौटी ।

चूनी-संज्ञा स्त्री० धसकण ।

चूमना-क्रि० प्र० १. चुम्मा लेना ।

घोसा लेना ।

चूमा-संज्ञा पुं० चुम्मा ।

चूर-संज्ञा पुं० चुकनी ।

वि० १. तन्मय । २. नरो में बहुत

बदमस्त ।

चूरन-संज्ञा पुं० दे० "चूर्ण" ।

चूरना-क्रि० प्र० १. टुकड़े टुकड़े

करना । २. सौदना ।

चूरमा-संज्ञा पुं० रोटी या पूरी को

चूर चूर करके घी, चीनी मिलाया

हुआ एक खाद्य पदार्थ ।

चूरा-संज्ञा पुं० चूर्ण ।

चूर्ण-संज्ञा पुं० १. चुकनी । २. चूरन ।

वि० नष्ट-भट्ट किया हुआ ।

चूर्णा-संज्ञा स्त्री० आर्या ऋषि का वसुवर्ष

भेद ।

चूर्णित-वि० चूर्ण किया हुआ ।

चूल-संज्ञा पुं० १. शिखा । २. थाल ।

चूल्हा-संज्ञा पुं० मिट्टी, लोहे आदि

का वह पात्र जिस पर, नीचे आग

जलाकर, भोजन पकाया जाता है ।

चूपण-संज्ञा पुं० चूसने की क्रिया ।

चूप्य-वि० चूसने के योग्य ।

चूसना-क्रि० प्र० १. जीभ और हाँठ

के संयोग से किसी पदार्थ का रस

पीना । २. किसी चीज़ का सार

भाग ले लेना ।

चूहड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चूहरी ]

चाँडाल ।

चूहर-संज्ञा पुं० दे० "चूहड़ा" ।

चूहा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चूहा ] चुहिया,

चूही आदि ] मूसा ।

चै-संज्ञा स्त्री० चिदियों के योद्धने का

शब्द ।

चै चै-संज्ञा स्त्री० १. चिदियों या

वर्षों के योद्धने का शब्द । २. व्यर्थ

की बकवाद ।

महीन घूँद जो ज़ोर से पड़ने से  
हथर उधर गिरे। २. छोटा दाग।

१. घंड़ की एक मात्रा।

छी-मध्य० घृणा-मूचकं शब्द।

छीका-संज्ञा पुं० सिकहर।

छीछालेदर-संज्ञा स्त्री० दुर्दशा।

छीज-संज्ञा स्त्री० घाटा।

छीजना-कि० अ० घटना।

छीति०-संज्ञा स्त्री० हानि।

छीती छान-वि० तितर पितर।

छीन-वि० दे० "छीन"।

छीनना-कि० स० दूसरे की वस्तु  
जबरदस्ती ले लेना।

छीना-भपटी-संज्ञा स्त्री० छीनकर  
किसी वस्तु को ले लेना।

छीप-वि० संज्ञ।

संज्ञा स्त्री० छाप।

छीमी-संज्ञा स्त्री० फली।

छीर-संज्ञा पुं० दे० "चीर"।

संज्ञा स्त्री० खोर।

छीलना-कि० अ० १. छिन्नका या  
छाज उतारना। २. जमी हुई वस्तु  
को खुरचकर अलग करना।

छीलर-संज्ञा पुं० तलैया।

छुआना-कि० स० दे० "छुलाना"।

छुआकृत-संज्ञा स्त्री० १. अस्पृश्यस्पर्श।

२. छूत-छात का विचार।

छूँमुदे-संज्ञा स्त्री० क्षमावृत्ति।

छुच्छी-संज्ञा स्त्री० पतली पोखी भल्ली।

छुट०-मध्य० छोड़कर।

छुटकाना०-कि० स० १. छोड़ना।

२. साथ न लेना। ३. छुटकारा देना।

छुटकारा-संज्ञा पुं० रिहाई।

छुटना०-कि० अ० दे० "छूटना"।

छुटपन-संज्ञा पुं० १. छोटाई। २.

अचपन।

छुटाना-कि० स० दे० "छुलाना"।

छुटा-वि० [स्त्री० छुट] जो बँधा न हो।

छुट्टी-संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। २.  
अवकाश।

छुड़वाना-कि० स० छोड़ने का काम  
दूसरे से कराना।

छुड़ाना-कि० स० १. बँधी, फँसी,  
उलझी या खगी हुई वस्तु को पृथक्  
करना। २. हटाना। ३. छोड़ने का  
काम कराना।

छुत्-संज्ञा स्त्री० भूल।

छुतिहा-वि० १. छूतवाला। २.  
कलंकित।

छुद्र-संज्ञा पुं० दे० "जुद्र"।

छुधा-संज्ञा स्त्री० दे० "जुधा"।

छुपना-कि० अ० दे० "छिपना"।

छुभित०-वि० विचलित।

छुभिताना०-कि० अ० चंचल होना।

छुरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अत्पा० छुरे]

१. एक हथियार। २. उल्लरा।

छुरी-संज्ञा स्त्री० चाकू।

छुलाना-कि० स० स्पर्श कराना।

छुलाना-कि० स० दे० "छुलाना"।

छुलना०-कि० अ० छु जाना।

कि० स० दे० "छूना"।

छुलारा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
खजूर।

छूँछा-वि० [स्त्री० छूँछी] खाछी।

छू-संज्ञा पुं० मंत्र पढ़कर फूँक मारने  
का शब्द।

छूट-संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। २.

वह रुपया जो देनदार से न लिया  
जाय।

छूटना-कि० अ० १. बँधी, फँसी या  
पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना।

घेंदुआ-संज्ञा पुं० चिद्विद्या का यथा ।

चे-पै-संज्ञा स्त्री० चिह्नाइट ।

चेकितान-संज्ञा पुं० महादेव ।

चेचक-संज्ञा स्त्री० शीतला रोग ।

चेट-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चेत्ये या चेटिका ]

१. दास । २. भाई ।

चेटक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चेटकी ] सेचक ।

चेटकनी-संज्ञा स्त्री० दे० "चेटक" ।

चेटकी-संज्ञा पुं० जादूगर ।

चेटी-संज्ञा स्त्री० दासी ।

चेत्-अव्य० यदि ।

चेत-संज्ञा पुं० १. होश । २. बुध ।

चेतन-वि० जिसमें चेतना हो ।

चेतनता-संज्ञा स्त्री० चैतन्य ।

चेतना-संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि । २. होश ।

कि० भ० होश में आना ।

कि० स० विचारना ।

चेतावनी-संज्ञा स्त्री० सतर्क होने की सूचना ।

चेर, चेरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चेरा ]

१. नौकर । २. चेला ।

चेराई-संज्ञा स्त्री० दासत्व ।

चेरी-संज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री० ।

चेल-संज्ञा पुं० कपड़ा ।

चेला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चेलिन, चेली ]

१. शिष्य । २. विद्यार्थी ।

चेलिन, चेली-संज्ञा स्त्री० "चेला" का स्त्री० रूप ।

चेष्टा-संज्ञा स्त्री० कोशिश ।

चेहरा-संज्ञा पुं० १. मुख । २.

किसी चीज़ का भगला भाग ।

चैत-संज्ञा पुं० फागुन के बाद और वैशाख से पहले का महीना ।

चैतन्य-संज्ञा पुं० १. चेतन आत्मा । २. ज्ञान ।

चैती-संज्ञा स्त्री० [ हि० चैत + ई (प्रत्य०) ]

१. रविवारी । २. एक-चलता गाना जो चैत में गाया जाता है ।

वि० चैत का ।

चैत्य-संज्ञा पुं० १. भक्तान । २. मंदिर ।

चैत्र-संज्ञा पुं० चैत ।

चैत्ररथ-संज्ञा पुं० कुबेर के वाग का नाम ।

चैन-संज्ञा पुं० आराम ।

चैल-संज्ञा पुं० कपड़ा ।

चैला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चल्पा० चैली ] कुएदाड़ी से चीरी हुई जकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है ।

चोंगा-संज्ञा पुं० कागज़, टीन आदि की बनी हुई नली ।

चोंच-संज्ञा स्त्री० टोंट ।

चोंडा-संज्ञा पुं० सिँचाई के लिये खोदा हुआ छोटा कुआँ ।

चोंथ-संज्ञा पुं० उसने गोबर का छेर जितना एक बार गिरे ।

चोंथना-कि० स० किसी चीज़ में से उसका कुछ अंश बुरी तरह नोचना ।

चोंधर-वि० १. जिसकी आँखें बहुत छोटी हों । २. मूर्ख ।

चोकर-संज्ञा पुं० गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा छानने के बाद बच जाता है ।

चोखा-संज्ञा स्त्री० तेज़ी ।

चोखा-वि० १. खरा । २. धारदार । संज्ञा पुं० भरता ।

चोगा-संज्ञा पुं० पैरों तक जटकता हुआ एक ढीला पहनावा ।

२. विछुड़ना । ३. रोप रहना । ४. धरखास्त होना ।

छूत-संज्ञा स्त्री० १. संसर्ग । २. अशुचि वस्तु को छूने का दोष या दूषण ।

छूना-क्रि० अ० स्पर्श होना ।

क्रि० स० स्पर्श करना ।

छोकना-क्रि० स० १. जगह खेना । २. रोकना ।

छोक-संज्ञा पुं० १. छेद । २. कटाव ।

छोकानुप्रास-संज्ञा पुं० वह अनुप्रास जिसमें ध्वनों का सादृश्य एक ही बार हो ।

छोटा-संज्ञा स्त्री० बाधा ।

छोड़-संज्ञा स्त्री० १. तंग करने की क्रिया । २. हँसी उठाना ।

छोड़ना-क्रि० स० १. कोचना । २. उठाना ।

छोड़ना-संज्ञा पुं० दे० "छेद" ।

छेद-संज्ञा पुं० छेदने ।

संज्ञा पुं० सुराख ।

छेदक-वि० छेदने या काटनेवाला ।

छेदन-संज्ञा पुं० चौर-फाड़ ।

छेदना-क्रि० स० येचना ।

छेना-संज्ञा पुं० फटे दूध का खोथा ।

छेनी-संज्ञा स्त्री० टीकी ।

छेम-संज्ञा पुं० दे० "चेम" ।

छेरी-संज्ञा स्त्री० घकरी ।

छेच-संज्ञा पुं० १. जड़म । २. होनहार दुःख ।

संज्ञा स्त्री० दे० "छेव" ।

छेचना-संज्ञा स्त्री० ताढ़ी ।

क्रि० स० काटना ।

क्रि० स० फेंकना ।

छे-वि० दे० "छः" ।

संज्ञा स्त्री० दे० "चय" ।

छैया-संज्ञा पुं० बघा ।

छैल-संज्ञा पुं० दे० "छैला" ।

छैल विकनिर्या-संज्ञा पुं० शीकीन ।

छैल छवीला-संज्ञा पुं० धाँका ।

छैला-संज्ञा पुं० धाँका ।

छोड़ा-संज्ञा पुं० दही मयने की मयानी ।

छोकड़ा-संज्ञा पुं० [ जो० छोकरी ] लड़का ।

छोकड़ापन-संज्ञा पुं० लड़कपन ।

छोकरा-संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा" ।

छोटा-वि० [जो० छोटी] १. जो बड़ाई या विस्तार में कम हो । २. जो अवस्था में कम हो । ३. तुच्छ ।

छोटाई-संज्ञा स्त्री० १. छोटापन । २. नीचता ।

छोटापन-संज्ञा पुं० १. जघुता । २. बचपन ।

छोटी इलायची-संज्ञा स्त्री० सफ़ेद या गुजराती इलायची ।

छोड़ना-क्रि० स० १. पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से थलग करना । २. मुआफ़ करना । ३. पढ़ा रहने देना ।

४. प्रस्थान कराना । ५. रोप रहना ।

६. किसी कार्य को या उसके किसी थग को भूल से न करना ।

छोड़वाना-क्रि० स० छोड़ने का काम दूसरे से कराना ।

छोड़ाना-क्रि० स० दे० "छुड़ाना" ।

छोनिप-संज्ञा पुं० दे० "चोनिप" ।

छोनी-संज्ञा स्त्री० दे० "चोणी" ।

छोप-संज्ञा पुं० १. प्रहार । २. छिपाव ।

छोपना-क्रि० स० ढकना ।

छोम-संज्ञा पुं० दे० "चोम" ।

छोमना-क्रि० अ० घुस्य होना ।

चोचला-संज्ञ पुं० १. हाव-भाव ।  
२. नहरा ।

चोट-संज्ञ स्त्री० १. आघात । २. घाव ।  
३. दफा ।

चोटा-संज्ञ पुं० राव का पसेव जो  
छानने से निकलता है ।

चोटारना-वि० चोट खाया हुआ ।

चोटारना-कि० अ० चोट करना ।

चोटी-संज्ञ स्त्री० १. शिखा । २. एक  
में गुंथे हुए छियों के सिर के बाल ।

१. सूत या ऊन आदि का डोरा  
जिससे छियाँ बाल बाँधती हैं । ३.

जूड़े में पहनने का एक आभूषण ।  
४. शिखर ।

चोटा-संज्ञ पुं० [ स्त्री० चोटी ] चोर ।

चोप-संज्ञ पुं० १. रुचि । २. उत्साह ।

चोपना-कि० अ० मुग्ध होना ।

चोपी-वि० इच्छा रखनेवाला ।

चोप-संज्ञ स्त्री० १. शामियाना खड़ा  
करने का बड़ा देभा । २. नगाड़ा

या सारा बजाने की छकड़ी । ३.  
सोने या चाँदी से मड़ा हुआ डंडा ।

चोपदार-संज्ञ पुं० १. वह नौकर  
जिसके पास चोप या आसा रहता  
है । २. द्वारपाल ।

चोर-संज्ञ पुं० १. चोरी करनेवाला ।  
२. खेल में वह लड़का जिससे दूसरे

लड़के दाँव खेते हैं ।  
वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का

ऊपर से देखने से पता न चले ।

चोरफट-संज्ञ पुं० चोर ।

चोरटा-संज्ञ पुं० दे० "चोटा" ।

चोर दरवाज़ा-संज्ञ पुं० गुप्त द्वार ।

चोर महल-संज्ञ पुं० वह महल जहाँ  
राजा आर रहैस अपनी अविवाहिता

चोरमिहोचनी-संज्ञ स्त्री० आँख-  
मिचौली का खेल ।

चोरी-संज्ञ स्त्री० १. चुराने की क्रिया ।  
२. चुराने का भाव ।

चोला-संज्ञ पुं० शरीर ।

चोली-संज्ञ स्त्री० धूम्रिया की तरह  
का छियों का एक पहनावा ।

चोपण-संज्ञ पुं० चूसना ।

चोप्य-वि० जो चूसने के योग्य हो ।

चौक-संज्ञ स्त्री० चौकने की क्रिया या  
भाव ।

चौकना-कि० अ० १. खुरदर होना ।  
२. चकित होना ।

चौकाना-कि० स० मड़काना ।

चौधियाना-कि० अ० चफाचोंध  
होना ।

चौराना-कि० स० १. चँधर  
हुलाना । २. झाड़ू देना ।

चौ-वि० चार ।

संज्ञ पुं० मोती तैलने का एक मान ।

चौआना-कि० अ० चकपकाना ।

चौक-संज्ञ पुं० १. चौकोर भूमि ।  
२. आँगन । ३. मंगल अवसरों पर

पूजन के लिये आटे, अपीर आदि  
की रेखाओं से बना हुआ चौखंडा

चेन्न । ३. शहर के बीच का बड़ा  
बाज़ार । ४. चौराहा ।

चौकड़ी-संज्ञ स्त्री० १. मंडली । २.  
चार घोड़ी की गाड़ी ।

चौकदार-वि० सावधान ।

चौकस-वि० १. सावधान । २. ठीक ।

चौकसी-संज्ञ स्त्री० सावधानी ।

चौका-संज्ञ पुं० १. पथर का चौकोर  
टुकड़ा । २. तारों का वह पत्ता जिसमें

चार घूरियाँ हों ।  
चौकी-संज्ञ स्त्री० १. चौकोर आसन



छोमित-वि० दे० "छोमित" ।

छोर-संज्ञा पुं० १. हृद । २. नोक ।

छोराना-कि० सं० १. रोबना ।  
२. छीनना ।

छोरा-संज्ञा पुं० [खी० छोरो] छोकड़ा ।

छोरा छोरो-संज्ञा स्त्री० छीना छीनी ।

छोलना-कि० सं० छीलना ।

छोह-संज्ञा पुं० ममता ।

छोहना-कि० प्र० घुग्घ होना ।

छोहाना-कि० प्र० प्रेम दिखाना ।

छोही-वि० प्रेमी ।

छोंक-संज्ञा स्त्री० बघार ।

छोंकना-कि० सं० १. बघारना । २.  
मसाले मिले हुए कढ़कड़ाते घी में  
कचो तरकारी आदि भूनने के लिये  
ढाबना ।

छोंकना-कि० प्र० जानघर का  
फूटना या फटना ।

छौना-संज्ञा पुं० [खी० छौनी] बघा ।

## ज

ज-हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन  
वर्ण जो चवग का तीसरा अक्षर है ।

जंग-संज्ञा स्त्री० [वि० जंग] जड़वाई ।

जंग-संज्ञा पुं० जोहे का सुरचा ।

जंगम-वि० चर ।

जंगल-संज्ञा पुं० [वि० जंगली] वन ।

जंगला-संज्ञा पुं० १. कटहरा । २.

बाखट या शिड़की जिसमें छद्  
लगी हो ।

जंगली-वि० १. जंगल-संबंधी । २.  
धनैका ।

जंगी-वि० १. सेना-संबंधी । २. बड़ा ।

जंघा-संज्ञा स्त्री० जाँघ । रान ।

जंघना-कि० प्र० १. जाँघ जाना ।

२. उचित या अर्था ठहरना । ३.  
जान पड़ना ।

जंघा-वि० जाँघ हुआ ।

जंजला-वि० बेकाम ।

जंजाल-संज्ञा पुं० झंझट ।

जंजाली-वि० झगड़ालू ।

जंजीर-संज्ञा स्त्री० [वि० जंजीरो]  
सिकड़ी ।

जंतर-संज्ञा पुं० १. यंत्र । २. चौकोर  
या लंबी तावीज़ जिसमें यंत्र या  
कोई टोटके की वस्तु रहती है ।

जंतर-मंतर-संज्ञा पुं० जादू-टोना ।

जंतरी-संज्ञा स्त्री० पत्रा । तिथि-पत्र ।

जंतसार-संज्ञा स्त्री० जाँता गाढ़ने का  
स्थान ।

जंता-संज्ञा पुं० [खी० जंती, जंतरी]  
यंत्र ।

वि० दंड देनेवाला ।

जंती-संज्ञा स्त्री० जंतरी ।

जंतु-संज्ञा पुं० प्राणी ।

जंतु-वि० जंतुनाशक ।

जंत्र-संज्ञा पुं० कला ।

जंत्रना-कि० सं० जकड़पंद करना ।  
संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा" ।



जंत्र मंत्र-संज्ञा पुं० दे० "जंतर-मंतर" ।

जंत्रित-वि० १. दे० "पंत्रित" । २. यद ।

जंत्री-संज्ञा पुं० बाजा ।

जंद-संज्ञा पुं० १. पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ । २. यह भाषा जिसमें पारसियों का एक धर्मग्रंथ है ।

जंदरा-संज्ञा पुं० १. यंत्र । २. जाति ।

जंपना-कि० सं० योलना ।

जंबु-संज्ञा पुं० लामुन ।

जंबुक-संज्ञा पुं० १. घड़ा जामुन । २. शृगाल ।

जंबुद्वीप-संज्ञा पुं० हिंदुस्तान ।

जंबू-संज्ञा पुं० १. लामुन । २. काश्मीर राज्य का एक प्रसिद्ध नगर ।

जंम-संज्ञा पुं० १. दाढ़ । २. जंभाई ।

जंभाई-संज्ञा स्त्री० बघासी ।

जंभाना-कि० अ० जंभाई खेना ।

जंभारि-संज्ञा पुं० १. ईद । २. यज्ञि । ३. वज्र ।

जई-संज्ञा स्त्री० एक यज्ञ ।

जईफ-वि० घृष्ट ।

जक-संज्ञा पुं० १. प्रेत । २. कंजूस आदमी ।

संज्ञा स्त्री० [ वि० भक्ता ] जिह ।

जक-संज्ञा स्त्री० १. हार । २. हानि ।

जकड़-संज्ञा स्त्री० फसकर बाधना ।

जकड़ना-कि० सं० कसकर बाधना ।

कि० अ० तनाव आदि के कारण श्रमों का हिलने झुलने के योग्य न रह जाना ।

जकना-कि० अ० १. चकपकाना । २. झुक में योलना ।

जक्रात-संज्ञा स्त्री० १. दान । २. कर ।

जकित-वि० चकित ।

जखम-संज्ञा पुं० घाव ।

जखमी-वि० घायल ।

जखीरा-संज्ञा पुं० १. कोप । २. संग्रह ।

जखम-संज्ञा पुं० दे० "जखम" ।

जग-संज्ञा पुं० संसार ।

जगजगा-वि० चमकीला ।

जगजगाना-कि० अ० जगमगाना ।

जगड्वाल-संज्ञा पुं० आडंबर ।

जगत-संज्ञा पुं० संसार ।

जगत-संज्ञा स्त्री० कूर्प के चारों ओर बना हुआ चक्षुः ।

संज्ञा पुं० दे० "जगत्" ।

जगतसेठ-संज्ञा पुं० बहुत पड़ा धनी ।

जगती-संज्ञा स्त्री० १. संसार । २. पृथ्वी ।

जगदंबा, जगदंबिका-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

जगदाधार-संज्ञा पुं० ईश्वर ।

जगदीश-संज्ञा पुं० परमेश्वर ।

जगदीश्वर-संज्ञा पुं० परमेश्वर ।

जगदीश्वरी-संज्ञा स्त्री० भगवती ।

जगद्गुरु-संज्ञा पुं० परमेश्वर ।

जगद्धात्री-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा की एक मूर्ति । २. सरस्वती ।

जगद्योनि-संज्ञा पुं० १. परमेश्वर । २. पृथ्वी ।

जगद्वंद्व-वि० संसार में पूज्य या श्रेष्ठ ।

जगना-कि० अ० १. नौद से उठना ।

२. सचेत होना ।

जगन्नाथ-संज्ञा पुं० १. ईश्वर । २.

विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है ।

जगन्नियंता-संज्ञा पुं० ईश्वर ।

जगन्माता-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

चौपथ-संज्ञ पु० चौराहा ।  
 चौपदा-संज्ञ पु० "चौपाया" ।  
 चौपहल-वि० जिसके चार पहल या पार्श्व हों ।  
 चौपाई-संज्ञ स्त्री० १६ मात्राओं का एक छंद ।  
 चौपाया-संज्ञ पु० चार पैरोंवाला पशु ।  
 चौपाल-संज्ञ पु० बैठक ।  
 चौपे-संज्ञ पु० [ स्त्री० चौपारन ] ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा ।  
 चौमंजिला-वि० चार मरातिष या खंडोंवाला ।  
 चौमसिया-वि० घर्षा के चार महीनों में होनेवाला ।  
 संज्ञ पु० चार मासे की घाट ।  
 चौमुख-क्रि० वि० चारों ओर ।  
 चौमुहानी-संज्ञ स्त्री० चौराहा ।  
 चौरंगा-वि० [ स्त्री० चौरंग ] चार रंगों का ।  
 चौर-संज्ञ पु० चोर ।  
 चौरस-वि० समतल ।  
 चौरस्ता-संज्ञ पु० दे० "चौराहा" ।  
 चौरा-संज्ञ पु० [ स्त्री० चौरा ] चोरी ।  
 चवूतरा ।

चौरासी-वि० अस्सी से चार अधिक ।  
 चौराहा-संज्ञ पु० चौमुहानी ।  
 चोरी-संज्ञ स्त्री० छोटा चवूतरा ।  
 चोरेठा-संज्ञ पु० पानी के साथ पीसा हुआ चावल ।  
 चौर्य-संज्ञ पु० चोरी ।  
 चौलाई-संज्ञ स्त्री० एक पौधा जिसका साग खाया जाता है ।  
 चौघा-संज्ञ पु० १. हाथ की चार उँगलियों का समूह । २. चार अंगुल की माप । ३. ताश का वह पक्ष जिसमें चार घूर्णियाँ हों ।  
 चौसर-संज्ञ पु० चौपद ।  
 चौहटा-संज्ञ पु० चौक ।  
 चौहद्दी-संज्ञ स्त्री० चारों ओर की सीमा ।  
 चौहरा-वि० चार परतवाला ।  
 चौहान-संज्ञ पु० चम्रियों की एक प्रसिद्द शाखा ।  
 चौहै-क्रि० वि० चारों ओर ।  
 च्युत-वि० गिरा हुआ ।  
 च्युति-संज्ञ स्त्री० १. रुढ़ना । २. चूक ।

छ

छ-हिंदी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थानतालु है ।  
 छटना-क्रि० भ० कटकर अलग होना ।  
 छटपाना-क्रि० स० १. फटवाना । २. छुनवाना ।

छँटाई-संज्ञ स्त्री० छँटने का काम, भाव या मजदूरी ।  
 छँड़ना-क्रि० स० १. छोड़ना । २. छँटना ।  
 छँड़ाना-क्रि० स० छँटाना ।  
 छंद-संज्ञ पु० १. पद्य । २. वह विषय

जगन्मोहिनी-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा ।

२. महामाया ।

जगमग-जगमगा-वि० १. प्रकाशित ।

२. चमकदार ।

जगमगाना-कि० अ० दमकना ।

जगमगाहट-संज्ञा स्त्री० चमक ।

जगवाना-कि० स० जगाने का काम दूसरे से कराना ।

जगह-संज्ञा स्त्री० १. स्थान । २. पद ।

जगाती-संज्ञा पुं० १. दान । २. कर ।

जगाती-संज्ञा पुं० वह जो कर वसूल करे ।

जगाना-कि० स० १. नौद त्यागने के लिये प्रेरणा करना । २. चेत में लाना ।

जघन-संज्ञा पुं० चूतड़ ।

जघन्य-वि० १. अतिम । २. निहट । संज्ञा पुं० शूद्र ।

जचना-कि० अ० दे० "जँवना" ।

जुझा-संज्ञा स्त्री० प्रभूता स्त्री ।

जजमान-संज्ञा पुं० दे० "यजमान" ।

जजिया-संज्ञा पुं० १. दंड । २. एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्मेवालों पर लगता था ।

जजोरा-संज्ञा पुं० टापू ।

जटना-कि० स० ठगना ।

० कि० स० जड़ना ।

जटल-संज्ञा स्त्री० गन्ध ।

जटा-संज्ञा स्त्री० एक में बलके हुए सिर के बहुत से पड़े पड़े घाल ।

जटाजूट-संज्ञा पुं० १. बहुत से लंबे बालों का समूह । २. शिव की जटा ।

जटाघर-संज्ञा पुं० शिव ।

जटाघारी-वि० जो जटा रखे हो । संज्ञा पुं० शिव ।

जटाना-कि० स० जटने का काम दूसरे से कराना ।

कि० अ० ठगा खाना ।

जटायु-संज्ञा पुं० रामायण का एक प्रसिद्ध गीध ।

जटित-वि० जड़ा हुआ ।

जटिल-वि० १. जटाबाला । २. दुर्बोध ।

जठर-संज्ञा पुं० पेट ।

वि० वृद्ध ।

जठराग्नि-संज्ञा स्त्री० पेट की वह गरमी जिससे भोजन पचता है ।

जड़-वि० १. जिसमें चेतनता न हो । २. मूर्ख ।

संज्ञा स्त्री० १. मूल । २. हेतु ।

जड़ता-संज्ञा स्त्री० १. अचेतना । २. मूर्खता ।

जड़त्व-संज्ञा पुं० १. अचेतन । २. मूर्खता ।

जड़ना-कि० स० १. एक चीज़ को दूसरी चीज़ में पैठाना । २. प्रहार करना । ३. जुगली खाना ।

जड़वाना-कि० स० जड़ने का काम दूसरे से कराना ।

जड़ाई-संज्ञा स्त्री० १. जड़ने का काम या भाव । २. जड़ने की मजदूरी ।

जड़ाऊ-वि० जिस पर नाग या रत्न आदि जड़े हों ।

जड़ाना-कि० स० दे० "जड़वाना" । १ कि० अ० शीत लगाना ।

जड़ाव-संज्ञा पुं० १. जड़ने का काम या भाव । २. जड़ाऊ काम ।

जड़ावर-संज्ञा पुं० गरम कपड़े ।

जड़ित-वि० जड़ा हुआ ।

जड़िया-संज्ञा पुं० कुंदनसाज ।

जड़ी-संज्ञा स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लाई जाय ।

जड़ आ-वि० दे० "जड़ाऊ" ।

जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो। ३. वंघन।

छंदोवद्ध-वि० जो पद्य के रूप में हो।

छंदोभंग-संज्ञा पुं० छंद-रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि के नियम का पालन न होने के कारण होता है।

छः-वि० गिनती में पाँच से एक अधिक।

छकड़ा-संज्ञा पुं० समाद।

छकड़ी-संज्ञा स्त्री० छः का समूह।

छफना-क्रि० भ० [संज्ञा छोक] तृप्त होना।

छफाना-क्रि० स० खिला-पिलाकर तृप्त करना।

क्रि० स० दिक् करना।

छक्का-संज्ञा पुं० १. छः का समूह या वह वस्तु जो छः अवयवों से बनी हो। २. तारा का वह पत्ता जिसमें छः धुटियाँ हों। ३. सुष।

छगड़ा-संज्ञा पुं० बकरा।

छगन-संज्ञा पुं० छोटा घघा।

वि० घघों के लिये एकप्यार का शब्द।

छगुनी-संज्ञा स्त्री० कानी बैंगली।

छहूँदर-संज्ञा पुं० चूहे की जाति का एक जंतु।

छजना-क्रि० भ० १. अच्छा खगना।

२. ठीक जँचना।

छजा-संज्ञा पुं० छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है।

छटफना-क्रि० भ० १. किसी वस्तु का दाब या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना। २. अलग अलग फिरना।

छटफाना-क्रि० भ० दाब या पकड़ से बलपूर्वक निकल जाने देना।

छटपटाना-क्रि० भ० १. तड़फड़ाना।

२. बेचैन होना।

छटपटी-संज्ञा स्त्री० घपराहट।

छटाक-संज्ञा स्त्री० एक सोल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है।

छटा-संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति। २. शोभा।

छठ-संज्ञा स्त्री० पद्य की छठी तिथि।

छठा-वि० [ स्त्री० छठी ] जो क्रम में पाँच और वस्तुओं के उपरांत हो।

छठी-संज्ञा स्त्री० जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार।

छड़-संज्ञा स्त्री० धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।

छड़ा-संज्ञा पुं० पैर में पहनने का एक गहना।

वि० अकेला।

छड़िया-संज्ञा पुं० बरमान।

छड़ी-संज्ञा स्त्री० पतली लाठी।

छत-संज्ञा स्त्री० ऊपर का खुला हुआ कोठा।

० संज्ञा पुं० घाव।

० क्रि० वि० रहते हुए।

छतगीर, छतगीरी-संज्ञा स्त्री० ऊपर तानी हुई चादनी।

छतनारी-वि० [ स्त्री० छतनारी ] विस्तृत।

छतरी-संज्ञा स्त्री० छाता।

छतियाँ-संज्ञा स्त्री० दे० “छाती”।

छतियाना-क्रि० स० छाती के पास ले जाना।

छतीसा-वि० [ स्त्री० छतीसी ] चतुर।

छत्ता-संज्ञा पुं० १. छाता। २. मधु-मक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर।

छत्र-संज्ञा पुं० १. छाता। २. राजाओं का उपहारा या सुनहरा छाता जो राजचिह्नों में से एक है।

छत्रक-संज्ञा पुं० छाता।

जत†-वि० जितना ।

जतन†-संज्ञा पुं० दे० "यत्न" ।

जतनी-संज्ञा पुं० १. यत्न करनेवाला ।

२. चतुर ।

जतलाना-क्रि० स० दे० "जताना" ।

जताना-क्रि० स० १. घतलाना । २.

आगाह करना ।

जती-संज्ञा पुं० दे० "यती" ।

जतेक†-क्रि० वि० जितना ।

जत्था-संज्ञा पुं० १. कुंड । २. फिरका ।

जथा-क्रि० वि० दे० "यथा" ।

संज्ञा पुं० दे० "जत्था" ।

संज्ञा स्त्री० पूँजी ।

जदा†-क्रि० वि० जब ।

अर्थ० यदि ।

जदपि-क्रि० वि० दे० "यद्यपि" ।

जदपि†-क्रि० वि० दे० "यद्यपि" ।

जन-संज्ञा पुं० १. लोक । २. दास ।

जनक-संज्ञा पुं० १. जन्मदाता । २.

पिता ।

जनकपुर-संज्ञा पुं० मिथिला की प्राचीन राजधानी ।

जनकौर-संज्ञा पुं० १. जनकपुर । २.

जनक राजा के भाई-बंधु ।

जनखा-वि० १. जिसके हाव-भाव आदि औरतों के से हो । २. हिजड़ा ।

जनता-संज्ञा स्त्री० १. जनन का भाव ।

२. जन-समूह ।

जनन-संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति । २. जन्म ।

जनना-क्रि० स० जन्म देना ।

जननि-संज्ञा स्त्री० दे० "जननी" ।

जननी-संज्ञा स्त्री० १. उत्पन्न करनेवाली । २. माता ।

जननैर्द्वय-संज्ञा स्त्री० भग ।

जनपद-संज्ञा पुं० आबाद देश ।

जनम-संज्ञा पुं० दे० "जन्म" ।

जनमना-क्रि० भ० जन्म लेना ।

जनमसँघाती†-संज्ञा पुं० १. वह

जिसका साथ जन्म से ही हो । २.

वह जिसका साथ जन्म भर रहे ।

जनमाना-क्रि० स० प्रसव कराना ।

जनमेजय-संज्ञा पुं० विष्णु ।

जनयिता-संज्ञा पुं० पिता ।

जनयित्री-संज्ञा स्त्री० माता ।

जनरथ-संज्ञा पुं० १. अक्काह । २.

लोफनिंदा । ३. शोर ।

जनवाई-संज्ञा स्त्री० दे० "जनाई" ।

जनधाना-क्रि० स० लड़का पैदा

कराना ।

† क्रि० स० सूचित कराना ।

जनघास-संज्ञा पुं० १. सर्वसाधारण

के ठहरने या दिक्ने का स्थान । २.

बरातियों के ठहरने का स्थान ।

जनघासा-संज्ञा पुं० दे० "जनघास" ।

जनधृति-संज्ञा स्त्री० अक्काह ।

जनसँख्या-संज्ञा स्त्री० आबादी ।

जनाई-संज्ञा स्त्री० १. जनानेवाली ।

२. जनाने की मजदूरी ।

जनाज़ा-संज्ञा पुं० १. शव । २. अरथी

या वह सड़क जिसमें लाश को रख-

कर गाढ़ने, जलाने आदि से जाते हैं ।

जनानखाना-संज्ञा पुं० स्त्रियों के रहने

का स्थान ।

जनाना-क्रि० स० १. दे० "जताना" ।

२. उत्पन्न कराना ।

जनाना-वि० [ स्त्री० जनानी ] १. स्त्री-

संबंधी । २. हीजड़ा । ३. निर्बल ।

संज्ञा पुं० १. जनखा । २. अंतःपुर ।

३. पत्नी ।

जनानापन-संज्ञा पुं० मेहरापन ।

जनाथ-संज्ञा पुं० महाशय ।

छत्रधारी-वि० जो छत्र धारण करे।

छत्रपति-संज्ञा पुं० राजा।

छत्रभंग-संज्ञा पुं० १. राजा का नाश।

२. अराजकता।

छत्री-संज्ञा पुं० दे० "चत्रिय"।

छद्-संज्ञा पुं० आवरण।

छदाम-संज्ञा पुं० पैसे का चौथाई भाग।

छद्म-संज्ञा पुं० १. छिपाव। २. छद्म।

छद्मवेश-संज्ञा पुं० [ वि० छद्मवेशी ]

पदका हुआ वेश।

छद्मी-वि० [ स्त्री० छद्मिनी ] १. बनाबटी

वेश धारण करनेवाला। २. छद्मी।

छुन-संज्ञा पुं० दे० "छण"।

छुनक-संज्ञा पुं० झनकार।

संज्ञा स्त्री० भद्रक।

० संज्ञा पुं० एक छण।

छुनकना-कि० भ० १. किसी सपत्नी

हुई धातु पर से पानी आदि की धूँद

का छुन छुन शब्द करके उड़ जाना।

२. चौकसा होकर भागना।

छुनकाना-कि० स० १. छुन छुन

शब्द करना। २. चौकाना।

छुनछुनाना-कि० भ० १. किसी सपत्नी

हुई धातु पर पानी आदि पड़ने के

कारण छुन छुन शब्द होना। २.

झनझनाना।

कि० स० छुन छुन का शब्द उत्पन्न

करना।

छुनछुवि०-संज्ञा स्त्री० विजली।

छुनवा०-संज्ञा स्त्री० दे० "छणवा"।

छुनना-कि० भ० १. किसी पदार्थ का

महीन छेदों में हो इस प्रकार नीचे

गिरना कि मैल, सीढ़ी आदि ऊपर

रख जाय। २. किसी मछे का पिटा

जाना।

छुनाना-कि० स० किसी दूसरे से

छानने का काम कराना।

छुनिक०-वि० दे० "छणिक"।

० संज्ञा पुं० छण भर।

छुन्न-संज्ञा पुं० किसी सपत्नी हुई स्त्री पर

पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द।

छुप-संज्ञा स्त्री० १. पानी में किसी वस्तु

के एकधारसी ज़ोर से गिरने का शब्द।

२. पानी के छोटों के ज़ोर से पड़ने

का शब्द।

छुपछुपाना-कि० भ० पानी पर कोई

वस्तु पटककर छुप छुप शब्द करना।

छुपना-कि० भ० १. छपा जाना। २.

यंत्रालय में किसी लेख आदि का

मुद्रित होना। ३. शीतला का टीका

लगना।

छुपरखट, छुपरखाट-संज्ञा स्त्री० मस-

हरीदार पलंग।

छुपरी०-संज्ञा स्त्री० झोपड़ी।

छुपाना-कि० स० दे० "छपाना"।

छुपाई-संज्ञा स्त्री० १. छापने का काम।

२. छापने की मजदूरी।

छुपाका-संज्ञा पुं० पानी पर किसी

वस्तु के ज़ोर से पड़ने का शब्द।

छुपाना-कि० स० छापने का काम

दूसरे से कराना।

छुप्पय-संज्ञा पुं० एक मात्रिक छंद

जिसमें छः चरण होते हैं।

छुप्पर-संज्ञा पुं० धान।

छुवि-संज्ञा स्त्री० दे० "छवि"।

छुवीला-वि० [ स्त्री० छुवीली ] शोभा-

युक्त।

छमछम-कि० वि० छम छम शब्द के

साथ।

छमछमाना-कि० भ० छम छम शब्द

करना।



जनाईन-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 जनाया-संज्ञा पुं० इत्तला ।  
 जनि-संज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति । २. पत्नी ।  
 ० अभ्य० मत ।  
 जनित-वि० उत्पन्न ।  
 जनिता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० जनित्री ] १. उत्पन्न करनेवाला । २. पिता ।  
 जनिर्या-संज्ञा स्त्री० प्रियतमा ।  
 जनी-संज्ञा स्त्री० १. दासी । २. स्त्री ।  
 वि० स्त्री० उत्पन्न या पदा की हुई ।  
 जनु-क्रि० वि० माने ।  
 जनेऊ-संज्ञा पुं० यज्ञोपवीत ।  
 जनेत-संज्ञा स्त्री० धरात ।  
 जनेघ-संज्ञा पुं० दे० "जनेऊ" ।  
 जनिया-वि० जाननेवाला ।  
 जन्म-संज्ञा पुं० १. पैदाइश । २. जीवन ।  
 जन्मकुंडली-संज्ञा स्त्री० वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले ।  
 जन्मना-क्रि० भ० जन्म लेना ।  
 जन्मपत्र-संज्ञा पुं० जन्मपत्री ।  
 जन्मपत्री-संज्ञा स्त्री० वह पत्र या खर्चा जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति आदि का ध्येरा रहता है ।  
 जन्मभूमि-संज्ञा स्त्री० वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो ।  
 जन्मस्थान-संज्ञा पुं० जन्मभूमि ।  
 जन्मांतर-संज्ञा पुं० दूसरा जन्म ।  
 जन्माना-क्रि० स० उत्पन्न करना ।  
 जन्माष्टमी-संज्ञा स्त्री० भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्ण-चंद्र का जन्म हुआ था ।

जन्मोत्सव-संज्ञा पुं० किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव तथा पूजन ।  
 अन्य-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अन्या ] १. जनसाधारण । २. अफवाह ।  
 वि० जन-संबंधी ।  
 अप-संज्ञा पुं० किसी मंत्र या वाक्य का चार चार धीरे धीरे पाठ करना ।  
 अप तप-संज्ञा पुं० पूजा-पाठ ।  
 अपना-क्रि० स० किसी वाक्य या शब्द को धीरे धीरे देर तक कहना या दोहराना ।  
 अपनी-संज्ञा स्त्री० माला ।  
 अपनीय-वि० अप करने योग्य ।  
 अपमाला-संज्ञा स्त्री० वह माछा जिससे लेकर लोग जप करते हैं ।  
 अपा-संज्ञा स्त्री० सक्षुती ।  
 अय-क्रि० वि० जिस समय ।  
 अयड़ा-संज्ञा पुं० कछा ।  
 अथर-वि० धलवान् ।  
 अथरई-संज्ञा स्त्री० ज्यादती ।  
 अथरदस्त-वि० [ संज्ञा अथरदस्ती ] धलवान् ।  
 अथरदस्ती-संज्ञा स्त्री० अत्याचार ।  
 क्रि० वि० धलपूर्वक ।  
 अथरन्-क्रि० वि० धलान् ।  
 अथरा-वि० धलवान् ।  
 अयह-संज्ञा पुं० हिंसा ।  
 अवहा-संज्ञा पुं० जीवट ।  
 अवान-संज्ञा स्त्री० १. जीम । २. चात । ३. प्रतिज्ञा । ४. मापा ।  
 अवानी-वि० मौखिक ।  
 अवून-वि० बुरा ।  
 अवन्त-संज्ञा पुं० किसी अपराध में राज्य के द्वारा हरण किया हुआ ।  
 अवन्ती-संज्ञा स्त्री० अवन्त होने की क्रिया ।

छमा—संज्ञा स्त्री० दे० “चमा” ।

छमाछम—क्रि० वि० लगातार छम छम शब्द के साथ ।

छमुख—संज्ञा पुं० पड़ानन ।

छया—संज्ञा पुं० दे० “चय” ।

छयना—क्रि० भ० चय को प्राप्त होना ।

छरफना—क्रि० भ० दे० “छल-कना” ।

छरछर—संज्ञा पुं० १. कणों या छरों के घेग से निकलने और गिरने का शब्द । २. सटसट ।

छरछराना—क्रि० भ० [संज्ञा छरछराहट] नमक आदि लगाने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना ।

छरना—क्रि० भ० चूना ।

छरा—संज्ञा पुं० छड़ा ।

छर्दन—संज्ञा पुं० कै करना ।

छादि—संज्ञा स्त्री० धमम । कै । उजड़ी ।

छर्ना—संज्ञा पुं० जोड़े या सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े जो बंदूक में चलाए जाते हैं ।

छल—संज्ञा पुं० १. वह व्यवहार जो दूसरे को धोखा देने के लिये किया जाता है । २. धूर्तता ।

छलफना—क्रि० भ० समझना ।

छलफाना—क्रि० स० किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को हिला-डुखाकर बाहर उछालना ।

छलछंद—संज्ञा पुं० [वि० छलछंदी] चालबाजी ।

छलछिद्र—संज्ञा पुं० कपट व्यवहार ।

छलना—क्रि० स० धोखा देना । संज्ञा स्त्री० धोखा ।

छलनी—संज्ञा स्त्री० चलनी ।

छलहाई—वि० स्त्री० छली ।

छलांग—संज्ञा स्त्री० कुदान ।

छलाई—संज्ञा स्त्री० कपट ।

छलाना—क्रि० स० धोखा दिखाना ।

छलिया, छली—वि० कपटी ।

छल्ला—संज्ञा पुं० मुँदरी ।

छलेदार—वि० जिसमें मंडलाकार चिह्न या घेरे बने हों ।

छयना—संज्ञा पुं० [स्त्री० छवनी] बच्चा ।

छया—संज्ञा पुं० मछड़ा ।

छवाई—संज्ञा स्त्री० १. छाने का काम

या भाव । २. छाने की मजदूरी ।

छवाना—क्रि० स० छाने का काम दूसरे से कराना ।

छवि—संज्ञा स्त्री० [वि० छवील] शोभा ।

छहरना—क्रि० भ० छितराना ।

छहराना—क्रि० भ० छितराना ।

छहरीला—वि० [स्त्री० छहरीली] छितरानेवाला ।

छहियाँ—संज्ञा स्त्री० दे० “छाँह” ।

छाँगुर—संज्ञा पुं० वह मनुष्य जिसके पंजे में छः उँगलियाँ हो ।

छाँट—संज्ञा स्त्री० १. कतरंग । २. अलग की हुई निरुम्मी यस्तु ।

[संज्ञा स्त्री० कै ।

छाँटना—क्रि० स० १. फाटकर अलग करना । २. अलग या दूर रखना ।

छाँड़ना—क्रि० स० दे० “छोड़ना” ।

छाँद—संज्ञा स्त्री० चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी । नाई ।

छाँदना—क्रि० स० रस्सी आदि से बाँधना ।

छाँवड़ा—संज्ञा पुं० [स्त्री० छाँवरी, छाँरी] छोटा बच्चा ।

जत्र-संज्ञा पुं० ज्यादती ।  
 जमघट-संज्ञा पुं० मनुष्यों की भीड़ ।  
 जमन-संज्ञा पुं० दे० "यवन" ।  
 जमना-क्रि० प्र० १. तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना । २. स्थिर होना । ३. एकत्र होना ।  
 क्रि० प्र० सगना ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "यमुना" ।  
 जमा-वि० १. एकत्र । २. जो धमा-नत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो ।  
 संज्ञा स्त्री० पूँजी ।  
 जमाई-संज्ञा पुं० दामाद ।  
 संज्ञा स्त्री० जमने या जमाने की क्रिया या भाव ।  
 जमा खर्च-संज्ञा पुं० आय और व्यय ।  
 जमात-संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यों का समूह । २. कच्चा ।  
 जमादार-संज्ञा पुं० [ संज्ञा जमादारी ] सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान ।  
 जमानत-संज्ञा स्त्री० ज़ामिनी ।  
 जमाना-क्रि० स० जमने में सहायक होना ।  
 जमाना-संज्ञा पुं० १. समय । २. मुदत । ३. दुनिया ।  
 जमानासाज़-वि० जो लोगों का रंग-रंग देखकर व्यवहार करता हो ।  
 जमायंदी-संज्ञा स्त्री० पटवारी का एक कागज़ जिसमें असाधियों के ख़गान की रकमें लिखी जाती हैं ।  
 जमामार-वि० दूसरों का धन दबा रखने या खो लेनेवाला ।  
 जमालगोटा-संज्ञा पुं० एक पीछे का बीज जो अरपंत रेचक होता है ।  
 जयपाल ।

जमाव-संज्ञा पुं० जमने का भाव ।  
 जमावट-संज्ञा स्त्री० जमने का भाव ।  
 जमाघड़ा-संज्ञा पुं० भीड़ ।  
 जमौकंद-संज्ञा पुं० सूरन ।  
 जमौदार-संज्ञा पुं० ज़मीन का मालिक ।  
 जमौदारी-संज्ञा स्त्री० ज़मौदार की वह ज़मीन जिसका वह मालिक हो ।  
 ज़मीन-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी । २. भूमि ।  
 जमुहाना-क्रि० प्र० दे० "जमाना" ।  
 जम्हाना-क्रि० प्र० दे० "जमाना" ।  
 जयंत-वि० [ स्त्री० जयंती ] विजयी ।  
 संज्ञा पुं० १. रुद्र । २. इंद्र के पुत्र का नाम ।  
 जयंती-संज्ञा स्त्री० १. विजय करने-वाली । २. ध्वजा । ३. वर्षगांठ का उत्सव । ४. जई ।  
 जय-संज्ञा स्त्री० जीत ।  
 जयना-क्रि० प्र० जीतना ।  
 जयमाल-संज्ञा स्त्री० १. वह माला जो विजयी को विजय पाने पर पहनाई जाय । २. वह माला जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने घरे हुए पुरुष के गले में डालती थी ।  
 जयस्तंभ-संज्ञा पुं० विजय का स्मारक स्तंभ ।  
 जया-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । २. पार्वती । ३. पताका ।  
 वि० जयकारिणी ।  
 जयी-वि० विजयी ।  
 जर-संज्ञा पुं० घृदावस्था ।  
 ज़र-संज्ञा पुं० १. सोना । २. धन ।  
 जरकस, जरकसी-वि० जिस पर सोने के तार आदि सगे हों ।  
 ज़रखेज़-वि० अपजाऊ ।

जलरठ-वि० १. कंकश । २. घृद । ३. जीर्ण ।

जलरद-वि० पीडा ।

जलरदा-संज्ञा पुं० १. चावलों का एक व्यंजन । २. पान में खाने की सुगंधित मुरती ।

जलरदालू-संज्ञा पुं० खूबानी ।

जलना-वि० संज्ञा स्त्री० दे० "जलन" ।

जलना-वि० संज्ञा स्त्री० दे० "जलन" ।

कि० सं० दे० "जड़ना" ।

जलनि-वि० संज्ञा स्त्री० दे० "जलन" ।

जलरय-संज्ञा स्त्री० १. आघात । २. गुप्ता ।

जलवीला-वि० मड़कीला और सुंदर ।

जलर-संज्ञा पुं० १. हानि । २. आघात ।

जल-संज्ञा स्त्री० बुझापा ।

जल-वि० थोड़ा ।

कि० वि० थोड़ा ।

जलप्रस्त-वि० घुड़हा ।

जलना-वि० संज्ञा स्त्री० दे० "जलाना" ।

जलायु-संज्ञा पुं० १. आक्ल । २. गर्माशय ।

जलायुज-संज्ञा पुं० वह प्राणी जो आक्ल या खेड़ी में लिपटा हुआ गर्म से बचता हो ।

जरिया-संज्ञा पुं० दे० "जड़िया" ।

जरिया-संज्ञा पुं० १. संयंत्र । २. हेतु ।

जरी-संज्ञा स्त्री० १. तारा नामक कपड़ा जो धादले से बुना जाता है ।

२. सेने के तारों आदि से बना हुआ काम ।

जरीब-संज्ञा स्त्री० वह जुंजीर जिससे भूमि नापी जाती है ।

जलर-वि० वि० अवश्य ।

जलरत-संज्ञा स्त्री० आवश्यकता ।

जलरु-वि० प्रयोजनीय ।

जरीटा-वि० जड़क ।

जलक-वि० संज्ञा स्त्री० जड़क-भड़कवाला ।

जलर-वि० जीर्ण ।

जल-संज्ञा पुं० लुकवा ।

जलर-संज्ञा पुं० [ संज्ञा जलर ] शस्त्र-चिकित्सक ।

जल-संज्ञा पुं० पानी ।

जलकर-संज्ञा पुं० जलशायी की उपज ।

जलकीड़ा-संज्ञा स्त्री० जल-चिह्नार ।

जलखावा-संज्ञा पुं० दे० "जलपान" ।

जलघड़ी-संज्ञा स्त्री० समय जानने का एक प्राचीन यंत्र जिसमें नदी में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी ।

जलचर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० जलचरी ] पानी में रहनेवाले जंतु ।

जलज-वि० जो जल में उत्पन्न हो ।

संज्ञा पुं० कमल ।

जलजला-संज्ञा पुं० भूकंप ।

जलजात-वि० दे० "जलज" ।

संज्ञा पुं० कमल ।

जल-हमरूमध्य-संज्ञा पुं० दो बड़े समुद्रों के बीच का उन्हें जोड़नेवाला पतला समुद्र ।

जलतरंग-संज्ञा पुं० एक राजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर घुमाया जाता है ।

जलद-वि० जल देनेवाला ।

संज्ञा पुं० मेघ ।

जलधर-संज्ञा पुं० बादल ।

जलधरी-संज्ञा स्त्री० वह यंत्र जिसमें शिबलिंग रहता है ।

जलधारा-संज्ञा स्त्री० पानी की धार ।

जुभा-संज्ञा स्त्री० जँभाई ।

जैवना-कि० स० खाना ।

जैा-सर्व० 'जो' का बहुवचन ।

जैइ, जैउ, जैऊा-सर्व० दे० "जो" ।

जैठ-संज्ञा पुं० १. ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है । २. [ स्त्री० जैठानी ] पति का बड़ा भाई ।

वि० बड़ा ।

जैठरा-वि० दे० "जैठ" ।

जैठा-वि० [ स्त्री० जैठी ] बड़ा ।

जैठाई-संज्ञा स्त्री० बड़ाई ।

जैठानी-संज्ञा स्त्री० जैठ या पति के बड़े भाई की स्त्री ।

जैठी-वि० जैठ का ।

जैठौत, जैठौता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० जैठौती ] जैठ या पति के बड़े भाई का पुत्र ।

जैठा-संज्ञा पुं० १. जीतनेवाला । २. विष्णु ।

वि० दे० "जितना" ।

जैतिक-कि० वि० जितना ।

जैते-वि० जितने ।

जैतो-कि० वि० जितना ।

जैय-संज्ञा पुं० दुरीक्षा । पाकेट । संज्ञा स्त्री० शोभा ।

जैयी-वि० १. जो जैय में रखा जा सके । २. बहुत छोटा ।

जैय-वि० जीतने योग्य ।

जैल-संज्ञा पुं० कारागार । बंदीगृह ।

जैलखाना-संज्ञा पुं० कारागार ।

जैधना-कि० स० दे० "जीमना" ।

जैधनार-संज्ञा स्त्री० १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना । भोज । २. रसोई ।

जैवर-संज्ञा पुं० गहना ।

जैवरी-संज्ञा स्त्री० रस्सी ।

जैहन-संज्ञा पुं० [ वि० जैशन ] बुद्धि ।

जैहल-संज्ञा पुं० दे० "जेल" ।

जैहलखाना-संज्ञा पुं० दे० "जेल" ।

जैहि-सर्व० १. जिसको । २. जिससे ।

जै-संज्ञा स्त्री० दे० "जय" ।

वि० जितने ।

जैन-संज्ञा पुं० १. भारत का एक धर्म-संप्रदाय । २. जैनी ।

जैनी-संज्ञा पुं० जैन मतावलंबी ।

जैनु-संज्ञा पुं० भोजन ।

जैयो-कि० स० दे० "जाना" ।

जैसा-वि० [ स्त्री० जैसी ] १. जिस प्रकार का । २. जितना । ३. समान ।

कि० वि० जितना ।

जैसे-कि० वि० जिस प्रकार से ।

जैसा-वि०, कि० वि० दे० "जैसा" ।

जो-कि० वि० दे० "जैसे" ।

जो-संज्ञा स्त्री० पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर में छिपटकर उनका रक्त घूसता है ।

जो-संज्ञा स्त्री० चांदनी ।

जो-सर्व० एक संबंधवाचक सर्वनाम । अव्यय यदि ।

जोअना-कि० स० दे० "जोअना" ।

जोइ-संज्ञा स्त्री० पत्नी ।

सर्व० दे० "जो" ।

जोउ-सर्व० दे० "जो" ।

जोखना-कि० स० खोजना ।

जोखा-संज्ञा पुं० हिसाब ।

जोखिम-संज्ञा स्त्री० खोकी ।

जोखों-संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम" ।

जोग-संज्ञा पुं० दे० "योग" ।

संज्ञा पुं० वादल ।

जलधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

जलन-संज्ञा स्त्री० १. दाह । २. डाह ।

जलना-क्रि० प्र० १. दग्ध होना ।

२. कुलसना । ३. ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुड़ना ।

जलनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

जलपाटल-संज्ञा पुं० काजल ।

जलपान-संज्ञा पुं० नारता ।

जलप्रपात-संज्ञा पुं० किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना ।

जलप्रवाह-संज्ञा पुं० पानी का बहाव ।

जलसाधन-संज्ञा पुं० पानी की बाढ़ जिससे आस-पास की भूमि जल में डूब जाय ।

जलयान-संज्ञा पुं० वह सवारी जो जल में काम आती हो ।

जलराशि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

जलवाना-क्रि० स० जलाने का काम दूसरे से कराना ।

जलशायी-संज्ञा पुं० विष्णु ।

जलसा-संज्ञा पुं० आनंद या उत्सव का समारोह ।

जलहरी-संज्ञा स्त्री० १. भर्षा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है ।

२. मिट्टी का जल भरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टांगा जाता है ।

जलाजल-संज्ञा पुं० गोटे आदि की झालर । झलाझल ।

जलातन-वि० १. झोधी । २. डाही ।

जलाधिप-संज्ञा पुं० वरुण ।

जलाना-क्रि० स० १. भस्म करना ।

२. कुलसाना । ३. किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना ।

जलापा-संज्ञा पुं० डाह या ईर्ष्या की जलन ।

जलाल-संज्ञा पुं० १. तेज । २. प्रभाव ।

जलावन-संज्ञा पुं० ईर्षन ।

जलाशय-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पानी जमा हो ।

जलाहल-वि० जलमय ।

जलील-वि० १. सुच्छ । २. अपमानित ।

जलू-संज्ञा पुं० सरसवयात्रा ।

जलेयी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई जो कुंडलाकार होती है ।

जलेश-संज्ञा पुं० १. वरुण । २. समुद्र ।

जलोका-संज्ञा स्त्री० जोंक ।

जलद-क्रि० वि० [ संज्ञा जल्दी ] शीघ्र ।

जलदयाज्ञ-वि० [ संज्ञा जलदशास्त्री ] जो किसी काम में बहुत जल्दी करता हो ।

जल्दी-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता ।

† क्रि० वि० दे० "जल्द" ।

जल्प-संज्ञा पुं० कथन ।

जल्पक-वि० बकवादी ।

जल्पन-संज्ञा पुं० बकवाद ।

जल्पना-क्रि० प्र० व्यर्थ बकवाद करना ।

जल्लाद-संज्ञा पुं० १. घातक । २. क्रूर व्यक्ति ।

जयनिका-संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका" ।

जवाँमर्दे-वि० [ संज्ञा जवाँमर्दी ] शूरवीर ।

जवाँ-संज्ञा पुं० जहसुन का दाना ।

जवाई-संज्ञा स्त्री० गमन ।

जवान-वि० युवा ।

जवानी-संज्ञा स्त्री० अजवायन ।

संज्ञा स्त्री० यौवन ।

जवाव-संज्ञा पुं० १. उत्तर । २. बदला ।

३. नौकरी छूटने की आशा ।

जवाबदावा-संज्ञा पुं० वह उत्तर जो

अव्य० के निकट ।

जोगड़ा-संज्ञा पुं० पाखंडी ।

जोगधना-क्रि० स० यत्न से रखना ।

जोगिन-संज्ञा स्त्री० १. जोगी की स्त्री ।

२. साधुनी । ३. पिशाचिनी ।

जोगिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "योगिनी" ।

जोगिया-वि० १. जोगी-संबंधी । २.

गेरु के रंग में रंगा हुआ ।

जोगीद्वी-संज्ञा पुं० १. पड़ा योगी ।

२. शिव ।

जोगी-संज्ञा पुं० वह जो योग करता हो ।

जोगेश्वर-संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण । २.

सिद्ध योगी ।

जोजन-संज्ञा पुं० दे० "वोजन" ।

जोटा-संज्ञा पुं० जोड़ा ।

जोटी-संज्ञा स्त्री० जोड़ी ।

जोड़-संज्ञा पुं० १. जोड़ने की क्रिया ।

२. टोटल । ३. गाँठ । ४. जोड़ा ।

५. समानता ।

जोड़न-संज्ञा स्त्री० वह पदार्थ जो दही

जमाने के लिये दूध में डाला

जाता है ।

जोड़ना-क्रि० स० १. दो चीजों को

मजबूती से एक करना । २. इकट्ठा

करना ।

जोड़घाँ-वि० वे दो वस्त्र जो एक ही

गर्भ से साथ उत्पन्न हुए हों ।

जोड़घाना-क्रि० स० जोड़ने का काम

दूसरे से कराना ।

जोड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० जोड़ी ] १.

दो समान पदार्थ । २. जूते । ३.

स्त्री और पुरुष ।

जोड़ार्ध-संज्ञा स्त्री० १. वस्तुओं को

जोड़ने की क्रिया या भाव । २.

जोड़ने की मजदूरी ।

जोड़ी-संज्ञा स्त्री० १. जोड़ा । २. दो

घोड़ों या दो बैलों की गाड़ी । ३.

दोनों मुगदर जिनसे कसरत करते हैं ।

जोतना-क्रि० स० १. किसी को ज़र-

दस्ती किसी काम में लगाना । २.

खेती के लिये हल चलाना ।

जोतार्ध-संज्ञा स्त्री० १. जोतने का

काम या भाव । २. जोतने की

मजदूरी ।

जोति, जोती-संज्ञा स्त्री० दे० "ज्योति" ।

ी संज्ञा स्त्री० जोतने घेने योग्य भूमि ।

जोधा-संज्ञा पुं० दे० "योद्धा" ।

जोनि-संज्ञा स्त्री० दे० "योनि" ।

जोपै-अव्य० यदि ।

जोवन-संज्ञा पुं० १. पौवन । २.

सुंदरता ।

जोम-संज्ञा पुं० शर्मा ।

जोया-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

सर्व० पुं० जो ।

क्रि० स० दे० "जोवना" ।

जोर-संज्ञा पुं० १. बल । २. वश ।

३. प्रयास ।

जोरदार-वि० जिसमें बहुत जोर हो ।

जोरना-क्रि० स० दे० "जोड़ना" ।

जोर-जोर-संज्ञा पुं० बहुत अधिक

जोर ।

जोराजोरी-संज्ञा स्त्री० ज़रदस्ती ।

क्रि० वि० ज़रदस्ती से ।

जोरावर-वि० [ संज्ञा जोरावरी ] बल-

वान् ।

जोरी-संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ी" ।

संज्ञा स्त्री० ज़रदस्ती ।

जोरु-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

जोलाहल-संज्ञा स्त्री० ज्वाला ।

जोली-संज्ञा स्त्री० घराबरी ।

वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर में प्रवि-  
वादी लिखकर अदाखत में देता है ।

जवाबदेह-वि० [ संज्ञा जवाबदेही ]  
उत्तरदाता ।

जघायी-वि० जिसका जवाब देना हो ।

जघारा-संज्ञा पुं० जौ के हरे अंकुर ।

जघाल-संज्ञा पुं० १. अघनति । २.  
जंजाल ।

जघास, जघासा-संज्ञा पुं० एक प्रकार  
का बँटीला पौधा ।

जघाहर-संज्ञा पुं० रत्न ।

जघाहरात-संज्ञा पुं० रत्न-समूह ।

जघैया-वि० जानेवाला ।

जशन-संज्ञा पुं० उत्सव ।

जस-वि० वि० जैसा ।

† संज्ञा पुं० दे० "यश" ।

जस्ता-संज्ञा पुं० एाकी रंग की एक  
प्रसिद्ध धातु ।

जह-कि० वि० दे० "जहाँ" ।

जहन्नुम-संज्ञा पुं० नरक ।

जहमत-संज्ञा स्त्री० १. श्राफत । २.  
मंजद ।

जहर-संज्ञा स्त्री० विष ।

जहरमोहरा-संज्ञा पुं० १. एक काला  
पत्थर जिसमें सवि का विष दूर  
करने का गुण माना जाता है । २.  
हरे रंग का एक विषम पत्थर ।

जहरीला-वि० विषैला ।

जहाँ-कि० वि० जिस स्थान पर ।

जहाँगीरी-संज्ञा स्त्री० १. हाथ में  
पहनने का एक जड़ाऊ गहना । २.  
एक प्रकार की घुड़ी ।

जहाँपनाह-संज्ञा पुं० संसार का  
रक्षक ।

जहाज़-संज्ञा पुं० समुद्र में चलनेवाली  
बड़ी नाव ।

जहाज़ी-वि० जहाज़ से संबंध रखने-  
वाला ।

जहान-संज्ञा पुं० संसार ।

जहालत-संज्ञा स्त्री० अज्ञान ।

जहाँ-अर्थ० जहाँ ही ।

अर्थ० दे० "ज्यों ही" ।

जहीन-वि० बुद्धिमान ।

जहेज़-संज्ञा पुं० वह धन-संपत्ति जो  
विवाह में कन्या पक्ष की ओर से  
वर को दी जाती है ।

जाँगड़ा-संज्ञा पुं० भाट ।

जाँगलू-वि० गँवार ।

जाँघ-संज्ञा स्त्री० घुटने और कमर के  
बीच का अंग ।

जाँघिया-संज्ञा पुं० काढ़ा ।

जाँच-संज्ञा स्त्री० १. परीक्षा । २.  
तहकीक़ात ।

जाँच-वि० दे० "जाचक" ।

जाँचना-कि० सं० १. परीक्षा करना ।  
२. माँगना ।

जात, जाँता-संज्ञा पुं० आटा पीसने  
की बड़ी चक्की ।

जाँच-वि० दे० "जामुन" ।

जाँचवान-संज्ञा पुं० सुग्रीव का मंत्री,  
एक भालू, जो राम की सेना में  
लड़ा था ।

जाँघर-वि० संज्ञा पुं० गमन ।

जाँ-सर्व० जिस ।

वि० मुनासिब ।

जाई-संज्ञा स्त्री० बेड़ी ।

जाकड़-संज्ञा पुं० माल इस शत पर  
खे धाना कि यदि वह पसंद न  
होगा, तो फेर दिया जायगा ।

जाग-संज्ञा स्त्री० जागने की क्रिया  
या भाव ।



जोचना-क्रि० सं० १. जोहना । २. डूँटना ।

जोश-संज्ञा पुं० १. उन्माद । २. मनो-वेग ।

जोशीला-वि० [खी० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो ।

जोय-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

जोपिता-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

जोपी-संज्ञा पुं० १. गुजराती, महाराष्ट्र और पंजाबी ब्राह्मणों में एक जाति । २. ज्योतिषी ।

जोहना-संज्ञा स्त्री० १. खोज । २. ईतबार ।

जोहनी-संज्ञा स्त्री० १. देखने या जोहने की क्रिया । २. तलाश ।

जोहना-क्रि० सं० १. देखना । २. डूँटना ।

जोहार-संज्ञा स्त्री० प्रणाम ।

जो-अव्य० यदि ।

क्रि० वि० दे० "ज्यों" ।

जो-संज्ञा पुं० १. गेहूँ की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीज या दाने की गिनती अनाजों में है । २. छः राई (खरदल) के बराबर एक तौल ।

अव्य० यदि ।

क्रि० वि० जब ।

जोड़ा-संज्ञा स्त्री० जोर ।

जोना-सर्व० जो ।

वि० जो ।

संज्ञा पुं० दे० "यवन" ।

जोपै-अव्य० अगर ।

जोहर-संज्ञा पुं० १. रत्न । २. विशेषता ।

संज्ञा पुं० राजपूतों में युद्ध समय की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या

गढ़ में शत्रु-प्रवेश का निश्चय होने पर उनकी स्त्रियाँ और धन्य दहकती हुई चिता में छल जाते थे ।

जोहरी-संज्ञा पुं० १. रत्न परखने या बेचनेवाला । २. पारखी ।

ज्ञात-वि० जाना हुआ ।

ज्ञाति-संज्ञा स्त्री० जानकारी ।

ज्ञात-वि० जाना हुआ ।

ज्ञातव्य-वि० जो जाना जा सके ।

ज्ञाता-वि० [ स्त्री० ज्ञात्री ] जानकार ।

ज्ञाति-संज्ञा पुं० १. एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य । २. भाई-भैया ।

संज्ञा स्त्री० दे० "जाति" ।

ज्ञान-संज्ञा पुं० जानकारी ।

ज्ञानगम्य-संज्ञा पुं० जो जाना जा सके ।

ज्ञानगोचर-वि० दे० "ज्ञानगम्य" ।

ज्ञानवान्-वि० ज्ञानी ।

ज्ञानवृद्ध-वि० जिसकी जानकारी अधिक हो ।

ज्ञानी-वि० जानकार ।

ज्ञानेन्द्रिय-संज्ञा स्त्री० आँख, कान, नाक, रसना, स्पर्श आदि पाँच इंद्रियाँ जो विषयों का बोध कराती हैं ।

ज्ञापन-संज्ञा पुं० [ वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य ] जताने या बताने का कार्य ।

ज्ञेय-वि० १. जानने योग्य । २. जो जाना जा सके ।

ज्या-संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी ।

ज्यादती-संज्ञा स्त्री० १. अधिकता ।

२. अत्याचार ।

ज्यादा-वि० अधिक ।

ज्यामिति-संज्ञा स्त्री० रेखाचित्र ।

ज्येष्ठ-वि० बड़ा ।

संज्ञा पुं० जेठ का महीना ।

ज्येष्ठता-संज्ञा स्त्री० १. बड़ाई । २. ज्येष्ठता ।

जारना-संज्ञ पुं० १. हथन । २. जलाने की क्रिया या भाव ।  
 जारना-क्रि० स० दे० "जलाना" ।  
 जारिणी-संज्ञ स्त्री० घटचलन औरत ।  
 जारो-वि० १. बहता हुआ । २. चलता हुआ ।  
 संज्ञ स्त्री० छिनाला ।  
 जालंधरो विद्या-संज्ञ स्त्री० माया ।  
 जालंध्र-संज्ञ पुं० झरोखे की जाली ।  
 जाल-संज्ञ पुं० १. तार या सूत आदि का पट जिसका व्यवहार मछलियों और चिड़ियों आदि को पकड़ने में होता है । २. किसी को फँसाने या बन्धन में करने की युक्ति ।  
 संज्ञ पुं० धोखा ।  
 जालदार-वि० जिसमें जाल की तरह पास पास बहुत से छेद हों ।  
 जालसाज-संज्ञ पुं० वह जो दूसरों को धोखा देने के लिये किसी प्रकार की झूठी कारवाही करे ।  
 जालसाजी-संज्ञ स्त्री० दगाबाजी ।  
 जाला-संज्ञ पुं० १. मकड़ी का बुना हुआ पतले तारों का जाल । २. घाँव का एक रोग ।  
 जालिका-संज्ञ स्त्री० १. जाली । २. समूह ।  
 जालिम-वि० जुलूम करनेवाला ।  
 जालिया-वि० जालसाज ।  
 जाली-संज्ञ स्त्री० १. छोटे छोटे छेदों का समूह । २. कच्चे आम के छंदर गुठली के ऊपर का तंतु-समूह ।  
 वि० नकली ।  
 जावफ-संज्ञ पुं० महावर ।  
 जावित्री-संज्ञ स्त्री० जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका जो औषध के काम में आता है ।

जासु-वि० जिसका ।  
 जासूस-संज्ञ पुं० भेदिया ।  
 जासूसी-संज्ञ स्त्री० गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना ।  
 ज़ाहिर-वि० प्रकट ।  
 ज़ाहिरदारी-संज्ञ स्त्री० वह बात या काम जो केवल दिखावे के लिये हो ।  
 ज़ाहिरा-क्रि० वि० देखने में ।  
 जाहिल-वि० मूर्ख ।  
 जाही-संज्ञ स्त्री० चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगंधित फूल ।  
 जिद-संज्ञ पुं० भूत ।  
 जिदगी-संज्ञ स्त्री० जीवन ।  
 जिदा-वि० जीवित ।  
 जिदादिल-वि० [ संज्ञ जिदादिली ]  
 खुश-मिज़ाज ।  
 जिधाना-क्रि० स० दे० "जिमाना" ।  
 जिस-संज्ञ स्त्री० १. प्रकार । २. सामग्री । ३. अनाज ।  
 जिसधार-संज्ञ पुं० पटवारियों का वह कागज़ जिसमें वे खेत में बोए हुए धान का नाम लिखते हैं ।  
 जिझाना-क्रि० स० दे० "जिजाना" ।  
 जिउ-संज्ञ पुं० दे० "जीव" ।  
 जिउका-संज्ञ स्त्री० दे० "जीविका" ।  
 जिउकिया-संज्ञ पुं० रोज़गारी ।  
 जिक-संज्ञ पुं० चर्चा ।  
 जिगर-संज्ञ पुं० [ वि० जिगरे ] कलेजा ।  
 जिगरा-संज्ञ पुं० साहस ।  
 जिगरी-वि० १. दिली । २. अत्यंत घनिष्ठ ।  
 जिज्ञासा-संज्ञ स्त्री० जानने की इच्छा ।  
 जिज्ञासु-वि० खोजी ।  
 जित-वि० जीतनेवाला ।

ज्यों-कि० वि० १. जिस प्रकार । २. जैसे ही ।

ज्योति-संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश । २. दृष्टि ।

ज्योतिर्मय-वि० प्रकाशमय ।

ज्योतिर्लिंग-संज्ञा पुं० महादेव ।

ज्योतिर्लोक-संज्ञा पुं० ध्रुवलोक ।

ज्योतिर्घिन्-संज्ञा पुं० ज्योतिषी ।

ज्योतिर्घिन्-संज्ञा स्त्री० ज्योतिष ।

ज्योतिश्चक्र-संज्ञा पुं० नक्षत्रों और राशियों का मंडल ।

ज्योतिष-संज्ञा पुं० वह विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है ।

ज्योतिषी-संज्ञा पुं० गणक ।

ज्योतिष्क-संज्ञा पुं० ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह ।

ज्योतिष्पथ-संज्ञा पुं० आकाश ।

ज्योतिष्युज-संज्ञा पुं० नक्षत्र-समूह ।

ज्योतिष्मती-संज्ञा स्त्री० १. माला । २. रात्रि ।

ज्योतिष्मान्-वि० प्रकाशयुक्त ।

संज्ञा पुं० सूर्य ।

ज्योत्स्ना-संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी । २. चाँदनी रात ।

ज्योनार-संज्ञा स्त्री० १. रसोई । २. भोज ।

ज्योरी-संज्ञा स्त्री० रस्सी ।

ज्योहत, ज्योहरा-संज्ञा पुं० आभूषण ।

ज्यौ-अव्य० जो ।

ज्यौतिष-वि० ज्योतिष-संबंधी ।

ज्वर-संज्ञा पुं० बुखार ।

ज्वलंत-वि० प्रकाशमान् ।

ज्वलन-संज्ञा पुं० १. जलन । २. अग्नि । ३. क्षपट ।

ज्वलित-वि० जला हुआ ।

ज्वानी-वि० दे० "जवान" ।

ज्वार-संज्ञा स्त्री० १. जोगहरी । शूंडी । २. समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव ।

ज्वार-भाटा-संज्ञा पुं० समुद्र के जल का चढ़ाव-बतार या लहर का बढ़ना और घटना जो चंद्रमा और सूर्य के आकर्षण से होता है ।

ज्वाल-संज्ञा पुं० क्षपट ।

ज्वाला-संज्ञा स्त्री० १. लपट । २. गरमी ।

ज्वालामुखी पर्वत-संज्ञा पुं० वह पर्वत जिसकी चोटी में से धूँआँ, राख तथा पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय समय पर निकलते हैं ।

जित-वि० जीता हुआ ।

संज्ञा पुं० जीत ।

०।क्रि० वि० जिधर ।

जितना-वि० [ खी० जितनी ] जिस मात्रा का ।

क्रि० वि० जिस मात्रा में ।

जितवैया-वि० जीतनेवाला ।

जिताना-क्रि० स० जीतने में सहायता करना ।

जितेंद्रिय-वि० जिसने अपनी इंद्रियों को यश में कर लिया हो ।

जितो-वि० जितना ।

क्रि० वि० जिस मात्रा में ।

जित्तर-वि० जेता ।

जिद-संज्ञा स्त्री० [ वि० जिदो ] हठ ।

जिद्दी-वि० हठी ।

जिधर-क्रि० वि० जिस ओर ।

जिन-संज्ञा पुं० जैनों के तीर्थंकर ।

वि० सर्वे "जिस" का बहुवचन ।

संज्ञा पुं० सुसलमान भूत ।

जिना-संज्ञा पुं० व्यभिचार ।

जिनाकार-वि० [ संज्ञा जिनाकारी ] व्यभिचारी ।

जिनि-अव्य० मत ।

जिन्हा-सर्व० दे० "जिन" ।

जिम्मा, जिम्मा-संज्ञा स्त्री० दे० "जिम्मा" ।

जिम्माना-क्रि० स० भोजन कराना ।

जिमि-क्रि० वि० जैसे ।

जिम्मा-संज्ञा पुं० जवाबदिही ।

जिम्मादार-संज्ञा पुं० दे० "जिम्मा-दार" ।

जिम्मादार-संज्ञा पुं० उत्तरदाता ।

जिम्मादारी-संज्ञा स्त्री० जवाबदिही ।

जिम्मेदार-संज्ञा पुं० दे० "जिम्मा-दार" ।

जिया-संज्ञा पुं० मन ।

जियन-संज्ञा पुं० जीवन ।

जियरा-संज्ञा पुं० जीव ।

जियान-संज्ञा पुं० घाटा ।

जियाना-क्रि० स० जिलाना ।

जिरगा-संज्ञा पुं० १. मुंड । २. मंडली ।

जिरह-संज्ञा स्त्री० १. हुजत । २. अदाखत के प्रस ।

जिरह-संज्ञा स्त्री० बकतर ।

जिरही-वि० कवचधारी ।

जिला-संज्ञा पुं० प्रांत ।

जिलाना-क्रि० स० १. जीवन देना ।

† २. पालना ।

जिलासाज़-संज्ञा पुं० इथिपारों आदि पर आप चढ़ानेवाला ।

जिलाह-संज्ञा पुं० अत्याचारी ।

जिल्द-संज्ञा स्त्री० [ वि० जिल्दी ] १. खाल । २. वह पट्टा या दफती जो किसी किताब के ऊपर उसकी रचा के लिये लगाई जाती है । ३. पुस्तक की एक प्रति ।

जिल्दबंद-संज्ञा पुं० जिल्द बांधनेवाला ।

जिल्दसाज़-संज्ञा पुं० दे० "जिल्द-बंद" ।

जिह्मत-संज्ञा स्त्री० १. अनादर । २. दुर्गति ।

जिवी-संज्ञा पुं० दे० "जीव" ।

जिवाना-क्रि० स० दे० "जिलाना" ।

जिस-वि० 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ धाने से प्राप्त होता है ।

सर्व० 'जो' का वह रूप जो उसे

भ

भ-हिंदी व्यंजन वर्णमाला का नववा  
और चववा का चौथा वर्ण जिसका  
व्यचारण-स्थान तालु है।

भक्षना-क्रि० भ० दे० "भोखना"।

भक्षार-संज्ञा स्त्री० भक्षनाहट का  
शब्द।

भक्षारना-क्रि० स० "भनभन" शब्द  
बोपन्न करना।

क्रि० भ० "भनभन" शब्द होना।

भक्षना-क्रि० भ० दे० "भोखना"।

भक्षानु-संज्ञा पुं० १. घनी और कठि-  
दार खाड़ी या पैघा। २. व्यर्थ की  
और रही चीजों का समूह।

भक्षट-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ का भगड़ा।

भक्षनामा-क्रि० भ० भक्षारना।

क्रि० स० भनभन शब्द करना।

भक्षरा-वि० [ स्त्री० भक्षरी ] जिसमें  
बहुत से छोटे छोटे छेद हों।

भक्षरी-संज्ञा स्त्री० १. किसी चीज में  
बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह।

२. दीवारों आदि में घनी हुई छोटी  
जाकीदार खिड़की।

भक्ष-संज्ञा पुं० वह तेज आंधी जिसके  
साथ वर्षा भी हो।

भक्षवात-संज्ञा पुं० दे० "भक्षा"।

भक्षी-संज्ञा स्त्री० घूटी कौड़ी।

भक्षीड़ना-क्रि० स० भक्षभोरना।

भक्ष-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भक्ष ]  
पताका। ध्वजा।

भक्षी-वि० १. जिसका मुँह न संस्कार  
न हुआ हो। २. सयन।

भक्ष-संज्ञा पुं० बखाल।

भक्षना-क्रि० भ० १. ढँकना। २.  
खजित होना।

भक्षरी-संज्ञा स्त्री० शोहार।

भक्षान-संज्ञा पुं० पहाड़ी सवारी के  
लिये एक प्रकार की खटोली।

भक्षाला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भक्षाली  
भक्षाली या भक्षालिया ] छाघड़ा।

भक्षार-वि० भक्षले रंग का।

भक्षराना-क्रि० भ० १. कुछ काला  
पड़ना। २. कुहलाना।

भक्ष-संज्ञा पुं० दे० "भक्ष"।

भक्षाना-क्रि० भ० १. भक्ष के रंग  
का हो जाना। २. भक्ष का भेद  
हो जाना।

क्रि० स० १. भक्ष के रंग का कर  
देना। २. भक्ष ठंडी करना।

भक्षना-क्रि० स० किसी को बहकाकर  
वसका धन आदि ले लेना।

भक्ष-संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ष"।

भक्ष-संज्ञा पुं० दे० "भक्ष"।

भक्ष-संज्ञा स्त्री० सनक।

संज्ञा स्त्री० दे० "भक्ष"।

वि० चमकीला।

भक्षभक्ष-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की हुजत।

भक्षभक्षा-वि० चमकीला।

भक्षभक्षाहट-संज्ञा स्त्री० चमक।

भक्षभेलना-क्रि० स० दे० "भक्ष-  
भोरना"।

भक्षभोर-संज्ञा पुं० भटका।

वि० भोकेदार।

भक्षभोरना-क्रि० स० किसी चीज  
को पकड़कर खूब हिलाना।

भक्षभोरा-संज्ञा पुं० भटका।

भक्षना-क्रि० भ० १. पकवा-  
करना। २. क्रोध में आकर अनुचित

विभक्ति लगाने के पहले प्राप्त होता है।

जिस्ता-संज्ञा पुं० १. दे० "जस्ता"।

२. दे० "दस्ता"।

जिस्म-संज्ञा पुं० शरीर।

जिह्वन-संज्ञा पुं० समझ।

जिहाद-संज्ञा पुं० मजहब की लड़ाई।

जिह्वा-संज्ञा स्त्री० जीभ।

जीगना-संज्ञा पुं० जुगनू।

जी-संज्ञा पुं० मन।

अव्य० एक सम्मान-सूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाया जाता है अथवा किसी बड़े के कथन, प्रश्न या संशोधन के उत्तर में संक्षिप्त प्रति-संशोधन के रूप में प्रयुक्त होता है।  
जीअ, जीउ-संज्ञा पुं० दे० "जी", "जीव"।

जीगन-संज्ञा पुं० दे० "जुगनू"।

जीजा-संज्ञा पुं० बड़ी बहिन का पति।

जीजी-संज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन।

जीत-संज्ञा स्त्री० विजय।

जीतना-क्रि० सं० विजय प्राप्त करना।

जीता-वि० १. जीवित। २. ताल या नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।

जीन-वि० जर्जर।

झीन-संज्ञा पुं० १. चारनामा। २. एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा।

झीनपोश-संज्ञा पुं० झीन के ऊपर ढकने का कपड़ा।

झीनसवारी-संज्ञा स्त्री० घोड़े पर झीन रखकर चढ़ने का कार्य।

जीना-क्रि० अ० जीवित रहना।

जीना-संज्ञा पुं० सीढ़ी।

जीमना-क्रि० सं० भोजन करना।

जीया-संज्ञा पुं० दे० "जी"।

जीयट-संज्ञा पुं० दे० "जीवट"।

जीयति-संज्ञा स्त्री० जीवन।

जीर-संज्ञा पुं० १. जीरा। २. केसर।

३. खड्डा।

संज्ञा पुं० जिह्व।

वि० जीर्ण।

जीरण-वि० दे० "जीर्ण"।

जीरा-संज्ञा पुं० १. दो हाथ के एक पैघा जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में खाते हैं। २. फूलों का केसर।

जीरी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का अगहनी घान जो कई बरसों तक रह सकता है।

जीर्ण-वि० बहुत दिनों का।

जीर्ण उवर-संज्ञा पुं० पुराना बुखार।

जीर्णता-संज्ञा स्त्री० १. बुढ़ापा। २. पुरानापन।

जीर्णोद्धार-संज्ञा पुं० मरम्मत।

जीवंत-वि० जीता जागता।

जीव-संज्ञा पुं० १. प्राणियों का चेतन तत्त्व। २. प्राण।

जीवक-संज्ञा पुं० १. प्राण धारण करनेवाला। २. सेवक।

जीवट-संज्ञा पुं० साहस।

जीवदान-संज्ञा पुं० प्राणदान।

जीवधारी-संज्ञा पुं० प्राणी।

जीवन-संज्ञा पुं० [वि० जीवित] जिंदगी।

जीवनधन-संज्ञा पुं० प्राणप्रिय।

जीवनवृत्ति-संज्ञा स्त्री० संजीवनी।

जीवनमूरि-संज्ञा स्त्री० १. जीवनवृत्ति।

२. अत्यंत प्रिय वस्तु।

जीवनी-संज्ञा स्त्री० जीवन भर का वृत्तान्त।

जीवनोपाय-संज्ञा पुं० जीविका।

जीवयोनि-संज्ञा स्त्री० जीव जंतु।

जीवरा-संज्ञा पुं० जीव।

जीवरि-संज्ञा पुं० जीवन।

घचन कहना ।

भक्ताभक्त-वि० उज्ज्वल ।

भक्तुराना-कि० अ० भूमना ।

कि० स० भूमने में प्रवृत्त करना ।

भक्तोरा-संज्ञ पुं० १. हवा का भौंका । २. भटका ।

भक्तोरना-कि० अ० हवा का भौंका मारना ।

भक्तोरा-संज्ञ पुं० हवा का भौंका ।

भक्तोला-संज्ञ पुं० दे० "भक्तोर" ।

भक्तड़-संज्ञ पुं० सेजु थापी ।

वि० दे० "भक्ती" ।

भक्ती-वि० १. बहुत थकथक करने वाला । २. सनकी ।

भक्तखना-कि० अ० दे० "भक्ती-खना" ।

भक्त-संज्ञ स्त्री० भक्ती करने का भाव या क्रिया ।

भक्तना-कि० अ० दे० "भक्ती-खना" ।

भक्ती-संज्ञ स्त्री० मछली ।

भक्तड़ना-कि० अ० भक्तड़ करना ।

भक्तड़ा-संज्ञ पुं० तकरार ।

भक्तड़ालू-वि० कलहप्रिय ।

भक्तड़ी-संज्ञ स्त्री० दे० "भक्तड़ालू" ।

भक्तरी-वि० दे० "भक्तड़ालू" ।

भक्तरी-संज्ञ स्त्री० दे० "भक्तड़ालू" ।

भक्तभर-संज्ञ स्त्री० कुछ चौड़े मुँह का पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन ।

भक्त-संज्ञ स्त्री० १. भटक । २. भुँकलाहट ।

भक्तक-संज्ञ स्त्री० दे० "भक्तक" ।

भक्तकना-कि० अ० १. भटकना । २. भुँकलाना ।

भक्तकाना-कि० स० भटकाना ।

भक्तकारना-कि० स० [भक्तकार] १.

डपटना । २. तुच्छ समझना ।

भट-कि० वि० सुरंत ।

भटकना-कि० स० १. भटका देना ।

२. ऐटना ।

भटका-संज्ञ पुं० भौंका ।

भटकारना-कि० स० दे० "भटकना" ।

भटपट-अव्य० सुरंत ।

भटिति-कि० वि० १. भट । २.

विना समझे धूमने ।

भट-संज्ञ स्त्री० दे० "भट्टी" ।

भट्टन-संज्ञ स्त्री० १. भट्टी हुई चीज ।

२. भट्टने की क्रिया या भाव ।

भट्टना-कि० अ० किसी चीज से उसके

छोटे छोटे धंगों का टूटकर गिरना ।

भट्टप-संज्ञ स्त्री० १. मुठनेड़ । २.

भावेश ।

भट्टपना-कि० अ० १. धाकतण

करना । २. भटकना ।

भट्टवाना-कि० स० झाड़ने का काम

दूमरे से कराना ।

भट्टभट्ट-कि० वि० लगातार ।

भट्टी-संज्ञ स्त्री० १. लगातार भट्टने

की क्रिया । २. छोटी बूँदों की लगा-

तार वर्षा ।

भट्ट-संज्ञ स्त्री० धातु से टुकड़े के

घजने की ध्वनि ।

भक्त-संज्ञ स्त्री० भक्तभक्त शब्द ।

भक्तकना-कि० अ० भक्तकार का शब्द

करना ।

भक्तकार-संज्ञ स्त्री० दे० "भक्तकार" ।

भक्तभक्तना-कि० अ० भक्तभक्त शब्द

होना ।

कि० स० भक्तभक्त शब्द उत्पन्न करना ।

भक्तभक्त-संज्ञ स्त्री० भक्तकार ।

कि० वि० भक्तभक्त शब्द सहित ।

जीघलोक-संज्ञा पुं० पृथ्वी ।  
 जीघहत्या; जीघहिसा-संज्ञा स्त्री०  
 प्राणियों का वध ।  
 जीघात्मा-संज्ञा पुं० आत्मा ।  
 जीविका-संज्ञा स्त्री० रोज़ी ।  
 जीवित-वि० जीता हुआ ।  
 जीवी-वि० १. जीनेवाला । २. जीविका  
 करनेवाला ।  
 जीवेश-संज्ञा पुं० परमात्मा ।  
 जीह-संज्ञा स्त्री० दे० "जीम" ।  
 जुविश-संज्ञा स्त्री० चाल । हरकत ।  
 जु-वि०, कि० वि० दे० "जो" ।  
 जुआ-संज्ञा पुं० रुपय पैसे की चाज़ी  
 लगाकर खेला जानेवाला खेल ।  
 जुआचोर-संज्ञा पुं० धोखेबाज़ ।  
 जुआरी-संज्ञा पुं० जुआ खेलनेवाला ।  
 जुई-संज्ञा स्त्री० छोटी जूँ ।  
 जुकाम-संज्ञा पुं० सरदी ।  
 जुग-संज्ञा पुं० १. युग । २. जोड़ा ।  
 ३. पुरत ।  
 जुगजुगाना-कि० अ० १. टिम-  
 टिमाना । २. समरना ।  
 जुगत-संज्ञा स्त्री० दवाय ।  
 जुगनी-संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू" ।  
 जुगनू-संज्ञा पुं० १. एक घरसाती  
 कीड़ा जिसका पिछला भाग चिन-  
 गारी की तरह चमकता है। खद्योत ।  
 २. पान के आकार की गले का एक  
 गहना ।  
 जुगल-वि० दे० "युगल" ।  
 जुगवना-कि० स० १. संचित रखना ।  
 २. हिफाज़त से रखना ।  
 जुगलना-कि० अ० चौपायों का पागुर  
 करना ।  
 जुगली-संज्ञा स्त्री० पागुर ।  
 जुगुत-संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत" ।

जुगुप्सा-संज्ञा स्त्री० [ वि० जुगुप्सित ]  
 १. निंदा । २. धृष्टा ।  
 जुम्मा-संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध" ।  
 जुम्माना-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ा देना" ।  
 जुम्मा-वि० युद्ध-संबंधी ।  
 जुम्मा-संज्ञा पुं० १. लड़ाका । २. युद्ध ।  
 जुट-संज्ञा स्त्री० १. जोड़ी । २. दल ।  
 जुटना-कि० अ० १. जुड़ना । २. एकत्र  
 होना । ३. कार्य में सम्मिलित होना ।  
 जुटाना-कि० स० जुटना का सकर्मक  
 रूप ।  
 जुट्टी-संज्ञा स्त्री० गद्दी ।  
 वि० जुटी या मिची हुई ।  
 जुठारना-कि० स० जूठा करना ।  
 जुठिहारा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० जुठिहारी ]  
 जूठा खानेवाला ।  
 जुड़ना-कि० अ० १. संयुक्त होना ।  
 २. एकत्र होना ।  
 जुड़पित्तो-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें  
 शरीर में जुजली उठती है और बढ़े  
 बढ़े चकते पड़ जाते हैं ।  
 जुड़वाई-वि० जुड़े हुए ।  
 संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो पक्ष ।  
 जुड़वाना-कि० स० उँढा करना ।  
 कि० स० दे० "जोड़वाना" ।  
 जुड़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई" ।  
 जुड़ाना-कि० अ० १. उँढा होना ।  
 २. गाँठ होना ।  
 कि० स० उँढा करना ।  
 जुड़ावना-कि० स० दे० "जुड़ाना" ।  
 जुत-वि० दे० "युक्त" ।  
 जुतना-कि० अ० १. नघना । २.  
 किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना ।  
 जुतघाना-कि० स० दूसरे से जोतने  
 का काम कराना ।



भक्षणाहट-संज्ञा स्त्री० भनभक्षणाहट ।  
 भक्ष-कि० वि० तुरंत ।  
 भक्षक-संज्ञा स्त्री० १. बहुत थोड़ा समय । २. पलक का गिरना । ३. हलकी नींद ।  
 भक्षकना-कि० भ० १. पलक का गिरना । २. ऊँचना । ( क० ) ३. भक्षटना ।  
 भक्षकाना-कि० स० पलकों को धार धार बंद करना ।  
 भक्षकी-संज्ञा स्त्री० १. हलकी नींद । २. आँख भक्षकने की क्रिया । ३. थोखा ।  
 भक्षट-संज्ञा स्त्री० भक्षटने की क्रिया या भाव ।  
 भक्षटना-कि० भ० टूटना ।  
 भक्षटाना-कि० स० किसी को भक्षटने में प्रवृत्त करना ।  
 भक्षट्टा-संज्ञा पुं० दे० "भक्षट" ।  
 भक्षटाल-संज्ञा पुं० संगीत में एक ताल ।  
 भक्षना-कि० भ० १. पलकों का गिरना । २. ऊँचना ।  
 भक्षाना-कि० स० १. भूँदना । २. झुकाना ।  
 भक्षित-वि० १. भक्ष हुआ । २. जिसमें नींद भरी हो । ३. बलित ।  
 भक्षेट-संज्ञा स्त्री० दे० "भक्षट" ।  
 भक्षेटना-कि० स० दबोचना ।  
 भक्षेटा-संज्ञा पुं० चपेट ।  
 भक्षपान-संज्ञा पुं० दे० "भक्षपान" ।  
 भक्षरा-वि० [ स्त्री० भवरी ] जिसके बहुत लंबे लंबे बिल्लरे हुए धातु हों ।  
 भक्षरीला-वि० कुछ बड़ा, चारों तरफ बिल्लरा और धूमा हुआ (पाल) ।  
 भक्षरीला-वि० दे० "भक्षरीला" ।

भक्ष-संज्ञा पुं० दे० "भक्ष" ।  
 भक्षिया-संज्ञा स्त्री० छोटा भक्ष ।  
 भक्षूकनार्-कि० भ० चमकना ।  
 भक्ष-संज्ञा पुं० गुच्छा ।  
 भक्षक-संज्ञा स्त्री० १. चमक का अनुकरण । २. प्रकाश । ३. नदरे की चाल ।  
 भक्षकना-कि० भ० १. चमकना । २. चमकना शब्द करना ।  
 भक्षकाना-कि० स० १. चमकाना । २. आभूषण या हथियार आदि धजाना और चमकाना ।  
 भक्षभक्ष-संज्ञा स्त्री० १. छमछम । २. पानी बरसने का शब्द ।  
 वि० जो खूब चमके ।  
 कि० वि० भक्षभक्ष शब्द के साथ ।  
 भक्षना-कि० भ० झुकना ।  
 भक्षका-संज्ञा पुं० १. पानी बरसने या गहनों के धजने का भक्षभक्ष शब्द । २. ठसक ।  
 भक्षभक्ष-कि० वि० १. चमक के साथ । २. भक्षभक्ष शब्द सहित ।  
 भक्षाना-कि० भ० झाना ।  
 भक्षेला-संज्ञा पुं० १. बल्लेदा । २. भीड़भाड़ ।  
 भक्षेलिया-संज्ञा पुं० भक्षेला ।  
 भक्ष-संज्ञा स्त्री० १. पानी गिरने का स्थान । २. करना । ३. कद्दी ।  
 भक्षभक्ष-संज्ञा स्त्री० छल के बहने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द ।  
 भक्षन-संज्ञा स्त्री० करने की क्रिया ।  
 भक्षना-कि० भ० १. दे० "भक्षना" । २. ऊँची-जगह से सेते का गिरना ।  
 संज्ञा पुं० सेता ।

जुताई-संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई" ।

जुतियाना-कि० स० जूता मारना ।

जुदा-वि० पृथक् ।

जुदाई-संज्ञा स्त्री० बिलोह ।

जुद्ध-संज्ञा पुं० दे० "युद्ध" ।

जुन्हाई-संज्ञा स्त्री० १. चांदनी । २. चंद्रमा ।

जुमला-वि० सब ।

संज्ञा पुं० पूरा वाक्य ।

जुमा-संज्ञा पुं० शुक्रवार ।

जुरअत-संज्ञा स्त्री० साहस ।

जुरभुरी-संज्ञा स्त्री० हरारत ।

जुरना-कि० स० दे० "जुड़ना" ।

जुरमाना-संज्ञा पुं० अर्थ-दंड ।

जुर्म-संज्ञा पुं० अपराध ।

जुराव-संज्ञा स्त्री० मोड़ा ।

जुलाव-संज्ञा पुं० दस्त लानेवाली दवा ।

जुलाहा-संज्ञा पुं० कपड़ा बुननेवाला ।

जुल्फ-संज्ञा स्त्री० सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर छटकते हैं ।

जुलम-संज्ञा पुं० अत्याचार ।

जुलूस-संज्ञा पुं० १. किसी उत्सव का समारोह । २. उत्सव और समा-रोह की यात्रा ।

जुस्तजू-संज्ञा स्त्री० तलाश ।

जुहाना-कि० स० संचित करना ।

जुही-संज्ञा स्त्री० दे० "जूही" ।

जू-संज्ञा स्त्री० एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है ।

जू-अव्य० जी ।

जूआ-संज्ञा पुं० १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है । २. हार-जीत का खेल ।

जूझ-संज्ञा स्त्री० युद्ध ।

जूझना-कि० अ० लड़ना ।

जूट-संज्ञा पुं० जटा की गाँठ ।

जूठन-संज्ञा स्त्री० वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो ।

जूठा-वि० [खी० जूठी । कि० जुठारना] किसी के खाने से घचा हुआ । उच्चिष्ट ।

संज्ञा पुं० दे० "जूठन" ।

जूड़ा-संज्ञा पुं० १. सिर के बालों की वह गाँठ जिसे खिया बालों को एक साथ लपेटकर ऊपर बाँधती हैं । २. चोटी । ३. बड़े के नीचे रखने की गेदुरी ।

जूड़ी-संज्ञा स्त्री० वह ज्वर जिसमें ज्वर आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है ।

जूता-संज्ञा पुं० पादभूषण ।

जूताखोर-वि० निर्लज्ज ।

जूती-संज्ञा स्त्री० छियों का जूता ।

जूना-संज्ञा पुं० समय ।

संज्ञा पुं० वृण ।

जूप-संज्ञा पुं० जूआ ।

संज्ञा पुं० दे० "यूप" ।

जूमना-कि० अ० झुकना होना ।

जूर-संज्ञा पुं० जोड़ ।

जूरना-कि० स० दे० "जोड़ना" ।

जूरा-संज्ञा पुं० दे० "जूड़ा" ।

जूस-संज्ञा पुं० रसा ।

जूही-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध स्नाइ या पीघा ।

जूंभ-संज्ञा पुं० [स्त्री० जूंभा । वि० जूंभक] जूंभाई ।

जूंभक-वि० जूंभाई खेनेवाला ।

जूंभण-संज्ञा पुं० जूंभाई खेना ।

संश पुं० एक प्रकारकी छलनी जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है ।  
वि० भरनेवाला ।

भरपाँ-संश स्त्री० १. भौंका । २. वेग ।

भरपना-कि० अ० १. भौंका देना । २. दे० "मढ़पना" ।

भरभर-कि० वि० १. भरभर शब्द सहित । २. लगातार ।

भर्रोखा-संश पुं० हवा या रोशनी के लिये दीवारों में बनी हुई मँकरीदार छोटी खिड़की ।

भल-संश पुं० जलन ।

भलफ-संश स्त्री० चमक ।

भलफवार-वि० चमकीला ।

भलकना-कि० अ० १. चमकना । २. आभास होना ।

भलकनि-संश स्त्री० दे० "भलक" ।

भलफा-संश पुं० फफोला ।

भलफाना-कि० स० १. चमकाना । २. कुछ आभास देना ।

भलभल-संश स्त्री० चमक ।

कि० वि० रह रहकर निकलनेवाली आभा के साथ ।

भलभलाना-कि० अ० चमकना ।

कि० स० चमकाना ।

भलभलाहट-संश स्त्री० चमक ।

भलना-कि० स० हवा करने के लिये कोई चीज़ हिलाना ।

कि० अ० इधर-उधर हिलाना ।

भलमल-संश पुं० १. अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा सजाला । २. चमक-दमक ।

कि० वि० दे० "भलभल" ।

भलमला-वि० चमकीला ।

भलमलाना-कि० अ० चमकमाना ।

कि० स० किसी स्थिर ज्योति या लो को हिलाना-झुलाना ।

भलभल-वि० स्वयं चमकमाना हुआ ।

भलभली-वि० चमकदार ।

संश स्त्री० भलभल का भाव ।

भलमला-संश स्त्री० चमक ।

वि० चमकीला ।

भल्ल-संश स्त्री० पागलपन ।

भल्ला-संश पुं० बड़ा टाकरा ।

† पागल ।

भल्लाना-कि० अ० चिढ़ना ।

कि० स० चिढ़ाना ।

भप-संश पुं० मछली ।

भपकेतु-संश पुं० कामदेव ।

भसना-कि० स० दे० "मँसना" ।

भहरना-कि० अ० १. मड़ने का

सा या भरभर शब्द करना । २.

शिथिल पड़ना । ढीला होना ।

कि० स० झिड़कना ।

भहराना-कि० अ० १. शिथिल हो-

कर या भरभर शब्द के साथ गिरना ।

२. झुलाना ।

भाँई-संश स्त्री० १. परछाईं । २.

धोखा । ३. हलके फाले धब्बे जो

रक्त-विकार से मनुष्यों के शरीर पर

पड़ जाते हैं ।

भाँफ-संश स्त्री० भाँकने की क्रिया

या भाव ।

भाँफना-कि० अ० १. ओट की दागल

में से देखना । २. इधर-उधर मुक-

कर देखना ।

भाँफनी-संश स्त्री० दे० "भाँकी" ।

भाँफा-संश पुं० दे० "भरोखा" ।

भाँकी-संश स्त्री० १. दर्शन । २.

भरोखा ।

जुभा-संज्ञा स्त्री० जुभाई ।

जुवना-कि० स० खाना ।

जो-सर्व० 'जो' का बहुवचन ।

जेड, जेउ, जेऊ-सर्व० दे० "जो" ।

जेठ-संज्ञा पुं० १. मोक्ष फल का वह मास जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है । २. [ स्त्री० जेठानी ] पति का बड़ा भाई ।

वि० बड़ा ।

जेठरा-वि० दे० "जेठ" ।

जेठा-वि० [ स्त्री० जेठी ] बड़ा ।

जेठाई-संज्ञा स्त्री० बड़ाई ।

जेठानी-संज्ञा स्त्री० जेठ या पति के बड़े भाई की स्त्री ।

जेठी-वि० जेठ का ।

जेठीत, जेठीता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० जेठीती ] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र ।

जेता-संज्ञा पुं० १. जीतनेवाला । २. विष्णु ।

वि० दे० "जितना" ।

जैतिक-कि० वि० जितना ।

जैते-वि० जितने ।

जैतो-कि० वि० जितना ।

जैय-संज्ञा पुं० खुरीदा । पाकेट ।

संज्ञा स्त्री० शोभा ।

जैयी-वि० १. जो जैय में रखा जा सके । २. बहुत छोटा ।

जैय-वि० जीतने योग्य ।

जेल-संज्ञा पुं० कारागार । बंदीगृह ।

जेलखाना-संज्ञा पुं० कारागार ।

जैयना-कि० स० दे० "जीमना" ।

जैयनार-संज्ञा स्त्री० १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना । भोज । २. रसोई ।

जेवर-संज्ञा पुं० गहना ।

जेवरी-संज्ञा स्त्री० रस्सी ।

जेहन-संज्ञा पुं० [ वि० जहान ] बुद्धि ।

जेहल-संज्ञा पुं० दे० "जेख" ।

जेहलखाना-संज्ञा पुं० दे० "जेख" ।

जेहि-सर्व० १. जिसको । २. जिससे ।

जै-संज्ञा स्त्री० दे० "जय" ।

[ वि० जितने ]

जैन-संज्ञा पुं० १. भारत का एक धर्म-संप्रदाय । २. जैनी ।

जैनी-संज्ञा पुं० जैन मतাবलंबी ।

जैनु-संज्ञा पुं० भोजन ।

जैवो-कि० स० दे० "जाना" ।

जैसा-वि० [ स्त्री० जैसी ] १. जिस प्रकार का । २. जितना । ३. समान ।

कि० वि० जितना ।

जैसे-कि० वि० जिस प्रकार से ।

जैसा-वि०, कि० वि० दे० "जैसा" ।

जो-कि० वि० दे० "जैसे" ।

जोंक-संज्ञा स्त्री० पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका रक्त चूसता है ।

जोंधीया-संज्ञा स्त्री० चांदनी ।

जो-सर्व० एक संबंधवाचक सर्वनाम ।

अव्य० यदि ।

जोयना-कि० स० दे० "जोयना" ।

जोह-संज्ञा स्त्री० पत्नी ।

सर्व० दे० "जो" ।

जोउ-सर्व० दे० "जो" ।

जोखना-कि० स० खोजना ।

जोखा-संज्ञा पुं० हिसाब ।

जोखिम-संज्ञा स्त्री० झोझी ।

जोखो-संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम" ।

जोग-संज्ञा पुं० दे० "योग" ।

भाखना-कि० प्र० दे० "भाखना"।

भागला-वि० दीला डाला।

भाभ-संज्ञा स्त्री० १. भाभ। २. भाभन।

भाभडी-संज्ञा स्त्री० दे० "भाभन"।

भाभन-संज्ञा स्त्री० पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। पैजनी।

भाभर-संज्ञा स्त्री० १. भाभन। २. छलनी।

वि० १. पुराना। २. छेदवाला।

भाभरी-संज्ञा स्त्री० १. भाभ पाजा। २. भाभन नामक गहना।

भाप-संज्ञा स्त्री० १. वह जिससे कोई चीज़ बाँकी जाय। २. नौद। ३. पद्म। संज्ञा पुं० उद्यल-पूद।

भापना-कि० स० पकड़कर दबा लेना।

भापना-कि० स० १. ठाँकना। २. मँपना। छजाना। शरमाना।

भापी-संज्ञा स्त्री० १. ठाँकने की टोकरी। २. मूँज की पिटारी।

भापली-संज्ञा स्त्री० १. मलक। २. धार की कनसी।

भापी-संज्ञा पुं० जली हुई ईंट जिससे रगड़कर मेल छुड़ाते हैं।

भासना-कि० स० ठगना।

भासा-संज्ञा पुं० धोखा-धड़ी।

भा-संज्ञा पुं० मयिब और गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

भास-संज्ञा पुं० पानी आदि का फेन।

भागड़ा-संज्ञा पुं० दे० "भागा"।

भाड़-संज्ञा पुं० वह छोटा पेड़ या पौधा जिसकी डालियाँ जड़ या जमीन के बहुत पास से निकलकर चारों ओर खूब छितराई हुई हों।

संज्ञा स्त्री० १. झाड़ने की क्रिया। २. फटकार।

भाड़खंड-संज्ञा पुं० जंगल।

भाड़ भंखाड़-संज्ञा पुं० १. कटिदार भाड़ियों का समूह। २. निकम्मी चीज़ें।

भाड़वार-वि० १. सघन। २. कँटीला।

भाड़न-संज्ञा स्त्री० १. वह जो झाड़ने पर निकले। २. वह कपड़ा जिससे कोई चीज़ झाड़ी जाय।

भाड़नर-कि० स० १. छुड़ाना। २. धपनी योग्यता दिखाने के लिये गड़ गड़वर घाते करना।

कि० स० १. किसी चीज़ पर पड़ी हुई गर्द आदि साफ करने के लिये वस्त्रों बड़ाकर मटकना देना। २. मटकना। ३. डाँटना।

भाड़ घुहार-संज्ञा स्त्री० सफाई।

भाड़ा-संज्ञा पुं० १. झाड़ फूँक। २. सजाशी। ३. मल। ४. पाखाना।

भाड़ी-संज्ञा स्त्री० १. पौधा। २. छोटे पेड़ों का समूह।

भाड़-संज्ञा पुं० १. बुदारी। २. पुच्छले तारा।

भापड़-संज्ञा पुं० थप्पड़।

भावर-संज्ञा पुं० दे० "भावा"।

भावा-संज्ञा पुं० टोकरा।

भायँ भायँ-संज्ञा स्त्री० १. झनकार। २. वह शब्द जो किसी मुनसान स्थान में हो।

भायँ भायँ-संज्ञा स्त्री० धकवाद।

भाड़ा-वि० १. केवल। २. समस्त। संज्ञा पुं० समूह।

संज्ञा स्त्री० १. दाह। २. ईर्ष्या। ३. शीर्ष।

भाटना-कि० स० १. घाल साफ करने के लिये कंधी करना। २.

जुताई-संज्ञा स्त्री० दे० "जेताई" ।

जुतियाना-कि० स० जूता मारना ।

जुदा-वि० पृथक् ।

जुदाई-संज्ञा स्त्री० बिलोह ।

जुद्ध-संज्ञा पुं० दे० "युद्ध" ।

जुन्हाई-संज्ञा स्त्री० १. चांदनी । २. चंद्रमा ।

जुमला-वि० सय ।

संज्ञा पुं० पूरा वाक्य ।

जुमा-संज्ञा पुं० शुक्रवार ।

जुरअत-संज्ञा स्त्री० साहस ।

जुरमुची-संज्ञा स्त्री० इरारत ।

जुरना-कि० स० दे० "जुड़ना" ।

जुरमाना-संज्ञा पुं० अर्थ-दंड ।

जुर्म-संज्ञा पुं० अपराध ।

जुराब-संज्ञा स्त्री० मोड़ा ।

जुलाब-संज्ञा पुं० वस्त्र लानेवाली दवा ।

जुलाहा-संज्ञा पुं० कपड़ा बुननेवाला ।

जुल्फ-संज्ञा स्त्री० सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर झटकते हैं ।

जुलम-संज्ञा पुं० भ्रष्टाचार ।

जुलूस-संज्ञा पुं० १. किसी वरसव का समारोह । २. वरसव और समा-रोह की यात्रा ।

जुस्तजू-संज्ञा स्त्री० तलाश ।

जुहाना-कि० स० संचित करना ।

जुही-संज्ञा स्त्री० दे० "जूही" ।

जू-संज्ञा स्त्री० एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है ।

जू-अव्य० जी ।

जूआ-संज्ञा पुं० १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है । २. हार-जीत का खेल ।

जूझ-संज्ञा स्त्री० युद्ध ।

जूझना-कि० अ० लड़ना ।

जूट-संज्ञा पुं० जूटा की गाँठ ।

जूठन-संज्ञा स्त्री० वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो ।

जूठा-वि० [स्त्री० जूठी । कि० जुठारना] किसी के खाने से बचा हुआ । अचिष्ट ।

संज्ञा पुं० दे० "जूठन" ।

जूड़ा-संज्ञा पुं० १. सिर के बालों की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ बालों को एक साथ लपेटकर ऊपर बाँधती हैं । २. घोड़ी । ३. घड़े के नीचे रखने की गेदुरी ।

जूड़ी-संज्ञा स्त्री० वह उबर जिसमें उबर थाने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है ।

जूता-संज्ञा पुं० पादप्राण ।

जूताखोर-वि० मिलजुल ।

जूती-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का जूता ।

जूनी-संज्ञा पुं० समय ।

संज्ञा पुं० तुण ।

जूप-संज्ञा पुं० जूभा ।

संज्ञा पुं० दे० "यूप" ।

जूमना-कि० अ० झकड़ा होना ।

जूर-संज्ञा पुं० जोड़ ।

जूरना-कि० स० दे० "जोड़ना" ।

जूरा-संज्ञा पुं० दे० "जूड़ा" ।

जूस-संज्ञा पुं० रस ।

जूही-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध मादक या पौधा ।

जूंभ-संज्ञा पुं० [स्त्री० जूंभा । वि० जूंभक] जूंभाई ।

जूंभक-वि० जूंभाई खेनेवाला ।

जूंभण-संज्ञा पुं० जूंभाई खेना ।

अलग करना ।

भाल-संज्ञा पुं० भाल नामक बाजा ।

संज्ञा पुं० भालने की क्रिया या भाव ।

संज्ञा स्त्री० चरपराहट ।

संज्ञा स्त्री० पानी की मढ़ी ।

भालना-क्रि० स० १. धातु की धनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना । २. पीने की चीजों को ठंडा करने के लिये चरफ या रोरे में रखना ।

भालर-संज्ञा स्त्री० भालर या किनारे के आकार की जटकती हुई कोई चीज ।

भिंगवा-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली ।

भिमोदी-संज्ञा स्त्री० एक रागिनी ।

भिमकना-क्रि० अ० दे० "भक्त-यना" ।

भिमकारना-क्रि० स० १. दे० "भक्तकारना" । २. दे० "भटकना" ।

भिड़कीना-क्रि० स० १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना । २. अलग फेंक देना ।

भिड़की-संज्ञा स्त्री० फटकार ।

भिनवा-संज्ञा पुं० महीन चावल का धान ।

भिपना-क्रि० अ० दे० "भैपना" ।

भिपाना-क्रि० स० लजित करना ।

भिरभिरा-वि० भँकरा । पतला ।

भिरना-क्रि० अ० दे० "भरना" ।

भिराना-क्रि० अ० दे० "भुराना" ।

भिलंगा-संज्ञा पुं० ऐसी खाट जिसकी बुनायद ढीली पड़ गई हो ।

भिलना-क्रि० अ० १. घलपूर्वक प्रवेश करना । २. सहज जाना ।

भिलमिल-संज्ञा स्त्री० हिलता हुआ प्रकाश ।

वि० रह रहकर चमकता हुआ ।

भिलमिला-वि० १. जो गफ या गाढ़ा न हो । २. चमकता हुआ ।

भिलमिलाना-क्रि० अ० रह रहकर चमकना ।

क्रि० स० हिलाना ।

भिल्लड़-वि० पतला और भँकरा ।

भिल्ली-संज्ञा पुं० भौंगुर ।

संज्ञा स्त्री० ऐसी पतली सह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े ।

भौंकना-क्रि० अ० दे० "भौंखना" ।

भौंखना-क्रि० अ० खीजना ।

संज्ञा पुं० भौंखने की क्रिया या भाव ।

भौंगा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की मछली । २. एक प्रकार का धान ।

भौंगुर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा परसाती कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में होता है ।

भौंसी-संज्ञा स्त्री० फुहार ।

भौंखना-क्रि० अ० दे० "भौंखना" ।

भौना-वि० १. पतला । २. दुबला ।

भौल-संज्ञा स्त्री० बहुत पड़ा तालाब ।

भौलर-संज्ञा पुं० छोटी भौल ।

भौवर-संज्ञा पुं० मछाह ।

भुँकलाना-क्रि० अ० खिन्नमाना ।

भुँह-संज्ञा पुं० गरोह ।

भुफना-क्रि० अ० १. निहुरना । २. नष्ट होना ।

भुफवाना-क्रि० स० भुफाने का काम दूसरे से कराना ।

भुफाना-क्रि० स० १. निहुराना । २. विनीत बनाना ।

भुफाव-संज्ञा पुं० १. डाल । २. प्रवृत्ति ।

मुठलाना-कि० स० १. मूठा बनाना ।

२. मूठ कहकर घोखा देना ।

मुठाई-संज्ञा स्त्री० असत्यता ।

मुठाना-कि० स० मूठा ठहराना ।

मुनक-संज्ञा पुं० नूपुर का शब्द ।

मुनकना-कि० अ० मुनमुन शब्द करना ।

मुनकारी-वि० [स्त्री० मुनकारी] पतला ।

मुनमुन-संज्ञा पुं० नूपुर आदि के घड़ने का शब्द ।

मुनमुना-संज्ञा पुं० घुनघुना ।

मुनमुनाना-कि० अ० मुनमुन शब्द होना ।

कि० स० मुनमुन शब्द उत्पन्न करना ।

मुनमुनी-संज्ञा स्त्री० हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट ।

मुपरी-संज्ञा स्त्री० दे० "मोपदी" ।

मुमका-संज्ञा पुं० छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक गहना ।

मुमाना-कि० स० किसी को मूमने में प्रवृत्त करना ।

मुरकुरी-संज्ञा स्त्री० कँपकँपी ।

मुरना-कि० अ० १. सूखना । २. घुलना ।

मुरधाना-कि० स० सुखाने का काम दूसरे से कराना ।

मुरसना-कि० अ० दे० "कुलसना" ।

मुराना-कि० स० सुखाना ।

कि० अ० सूखना ।

मुरी-संज्ञा स्त्री० सिकुड़न ।

मुलना-संज्ञा पुं० दे० "मूला" ।

वि० मूलनेवाला ।

मुलनी-संज्ञा स्त्री० तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे बिर्या

नाक की नथ में खटकाती हैं ।

मुलसना-कि० अ० मूँसना ।

कि० स० मूँसना ।

मुलसवाना-कि० स० मुलसने का काम दूसरे से कराना ।

मुलाना-कि० स० किसी को मूलने में प्रवृत्त करना ।

मुलाघना-कि० स० दे० "मुलाना" ।

मूँ मूल-संज्ञा स्त्री० दे० "मुँकलाहट" ।

मूँ सना-कि० अ०; कि० स० दे० "मुलसना" ।

मूँ कटी-संज्ञा स्त्री० छोटी माड़ी ।

मुका-संज्ञा पुं० दे० "मोका" ।

मूठ-संज्ञा पुं० वह बात जो पदार्थ न हो ।

मूठमूठ-कि० वि० व्यर्थ ।

मूठा-वि० १. असत्य । २. मूठ बोलनेवाला । ३. नकली ।

मूठों-कि० वि० [दि० मूठा] मूठ-मूठ ।

मूम-संज्ञा स्त्री० १. मूमने की क्रिया या भाव । २. ऊँघ ।

मूमक-संज्ञा पुं० १. गीत के साथ होनेवाला नृत्य । २. मूमर नामक पुरानी गीत ।

मूमका-संज्ञा पुं० १. दे० "मुमका" । २. दे० "मुमक" ।

मूमड़-संज्ञा पुं० दे० "मूमर" ।

मूमड़ भूमड़-संज्ञा पुं० डकोसला ।

मूमना-कि० अ० १. मूँके खाना ।

२. सिर और धड़ को बार बार आगे-पीछे और ऊपर-ऊपर दिखाना ।

मूमर-संज्ञा पुं० १. मूमक नाम का गीत । २. इस गीत के साथ होनेवाला नाच ।



टिप टिप-संज्ञा स्त्री० बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द।

टिपघाना-क्रि० स० टिपने का काम दूसरे से कराना।

टिप्पणी-संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।

टिप्पन-संज्ञा पुं० १. टीका। २. जन्मकुंडली।

टिप्पनी-संज्ञा स्त्री० टीका।

टिमटिमाना-क्रि० भ० चीय प्रकाश देना।

टिरफिस-संज्ञा स्त्री० विरोध।

टिराना-क्रि० भ० दे० "टराना"।

टिसुआ-संज्ञा पुं० आँसू।

टिहुनी-संज्ञा स्त्री० १. घुटना। २. कोहनी।

टिहुका-संज्ञा स्त्री० चीक।

टीक-संज्ञा स्त्री० १. गले में पहनने का एक गहना। २. माथे में पहनने का एक गहना।

टीकना-क्रि० स० टीका या तिलक लगाना।

टीका-संज्ञा पुं० १. तिलक। २. श्रेष्ठ पुरय। ३. राजपतिलक। ४. चिह्न। संज्ञा स्त्री० व्याख्या।

टीकाफार-संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।

टीन-संज्ञा पुं० १. राँगा। २. राँगे की फलहे की हुई छोटे की पसली बहर।

टीप-संज्ञा स्त्री० १. दशाव। २. स्मरण के लिये किसी बात को मटपट लिख लेने की क्रिया।

टीपन-संज्ञा स्त्री० जन्मपत्रो।

टीपना-क्रि० स० दमाना।

क्रि० स० क्षिपना।

टीम टाम-संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंघार।

टीला-संज्ञा पुं० पृथ्वी का कुछ बमरा हुआ भाग।

टीस-संज्ञा स्त्री० कसक।

टीसना-क्रि० भ० रह रहकर दर्द उठना।

टुंटा, टुंटा-वि० [ स्त्री० टुंटी ] १. हँटा। २. लूटा।

टुइयाँ-वि० नाटा।

टुफ-वि० थोड़ा।

टुकड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भत्ता० टुकड़ी ] १. खंड। २. भाग।

टुकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा। २. समुदाय।

टुछा-वि० टुच्छ।

टुटपूँजिया-वि० जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।

टुटूँ टूँ-संज्ञा स्त्री० पंहुकी या फाँसता के बोलने का शब्द।

वि० १. झकेला। २. दुबला-पतला।

टुनगा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टुनगी ] टहनी का अगला भाग।

टुरा-संज्ञा पुं० डकी।

टुगना-क्रि० स० थोड़ा सा काटकर खाना।

टुका-संज्ञा पुं० टुकड़ा।

टुकरा-संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा"।

टुकारा-संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। २. भिषा।

टुटी-संज्ञा स्त्री० १. खंड। २. टूटने का भाव।

टुं संज्ञा पुं० घाटा।

टुटना-क्रि० भ० १. टुकड़े टुकड़े होना। २. एकबारगी धावा करना।

टुटा-वि० खंडित।

मश पुं० दे० "टोटा"।

अलग करना ।  
 माल-संज्ञा पुं० माल नामक बाजा ।  
 संज्ञा पुं० मालने की क्रिया या भाव ।  
 संज्ञा स्त्री० चरपराहट ।  
 संज्ञा स्त्री० पानी की कड़ी ।  
 मालना-क्रि० स० १. धातु की घनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना । २. पीने की चीजों को रंढा करने के लिये धरफ या शोरे में रखना ।  
 मालर-संज्ञा स्त्री० मालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज ।  
 मालिगा-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली ।  
 मालिनी-संज्ञा स्त्री० एक रागिनी ।  
 मालिकना-क्रि० अ० दे० "मालकना" ।  
 मालिकारना-क्रि० स० १. दे० "मालकारना" । २. दे० "मालकना" ।  
 मालिकना-क्रि० स० १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक विगड़कर कोई बात कहना । २. अलग फेंक देना ।  
 मालिकी-संज्ञा स्त्री० फटकार ।  
 मालिगा-संज्ञा पुं० महीन चावल का धान ।  
 मालिपना-क्रि० अ० दे० "मालपना" ।  
 मालिपाना-क्रि० स० लज्जित करना ।  
 मालिरा-वि० मालिरा । पतला ।  
 मालिना-क्रि० अ० दे० "मालना" ।  
 मालिना-क्रि० अ० दे० "मालना" ।  
 मालिगा-संज्ञा पुं० ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो ।  
 मालिना-क्रि० अ० १. बलपूर्वक प्रवेश करना । २. सहज जाना ।

मिलमिल-संज्ञा स्त्री० द्विजता हुआ प्रकाश ।  
 वि० रह रहकर चमकता हुआ ।  
 मिलमिला-वि० १. जो गफ या गाढ़ा न हो । २. चमकता हुआ ।  
 मिलमिलाना-क्रि० अ० रह रहकर चमकना ।  
 क्रि० स० हिलाना ।  
 मिललड़-वि० पतला और मँकरा ।  
 मिलली-संज्ञा पुं० मींगुर ।  
 संज्ञा स्त्री० ऐसी पतली सह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े ।  
 मींफना-क्रि० अ० दे० "मींखना" ।  
 मींखना-क्रि० अ० खीजना ।  
 संज्ञा पुं० मींखने की क्रिया या भाव ।  
 मींगा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की मछली । २. एक प्रकार का धान ।  
 मींगुर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा धरसाती कीड़ा जो झेंधे घरों, खेतों और मैदानों में होता है ।  
 मींसी-संज्ञा स्त्री० फुहार ।  
 मींखना-क्रि० अ० दे० "मींखना" ।  
 मीना-वि० १. पतला । २. दुबला ।  
 मील-संज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा तालाब ।  
 मीलर-संज्ञा पुं० छोटी मील ।  
 मीवर-संज्ञा पुं० मछाह ।  
 मुंफलाना-क्रि० अ० लिफलाना ।  
 मुंड-संज्ञा पुं० गरोह ।  
 मुकना-क्रि० अ० १. निहुरना । २. नष्ट होना ।  
 मुकवाना-क्रि० स० मुकाने का काम दूसरे से कराना ।  
 मुकाना-क्रि० स० १. निहुराना । २. विनीत बनाना ।  
 मुकाव-संज्ञा पुं० १. ढाल । २. प्रवृत्ति ।

से लदे हुए पशुओं का कुँड । घन-  
जारों का कुँड ।

टाँय टाँय-संज्ञा स्त्री० १. टें-टें । २.  
घकचाह ।

टाट-संज्ञा पुं० १. सन या पटुए की  
रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा ।  
२. विरादरी या उसका अंग ।

टाटर-संज्ञा पुं० टटर ।

टान-संज्ञा स्त्री० तनाव ।

टानना-क्रि० स० दे० "तानना" ।

टाप-संज्ञा स्त्री० घोड़े के पैरों के जमीन  
पर पड़ने का शब्द ।

टापना-क्रि० अ० किसी वस्तु के लिये  
धुंधर-धुंधर हैरान फिरना ।

क्रि० स० कूदना ।

क्रि० अ० दे० "टपना" ।

टापा-संज्ञा पुं० साधा ।

टापू-संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग  
जिसके चारों ओर जल हो । द्वीप ।

टारना-क्रि० स० दे० "टालना" ।

टाल-संज्ञा स्त्री० जँचा । ढेर ।

संज्ञा स्त्री० टालने का भाव ।

टालटूल-संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल" ।

टालना-क्रि० स० १. हटाना । २.  
मुलतयी करना ।

टालमटूल-संज्ञा स्त्री० बहाना ।

टिकट-संज्ञा पुं० वह कागज़ का टुकड़ा  
जो किसी प्रकार का महसूल या  
फ़ीस चुकानेवाले को प्रमाण-पत्र के  
रूप में दिया जाय ।

टिकठी-संज्ञा स्त्री० १. शव ले जाने की  
रथी । २. दंड या फाँसी आदि देने  
का पुराना यंत्र-विशेष ।

टिकना-क्रि० अ० १. ठहरना । २.  
कुछ दिनों तक काम देना ।

टिकली-संज्ञा स्त्री० १. छोटी टिकिया ।

२. पत्ती या काँच की बहुत छोटी  
बिंदी ।

टिकस-संज्ञा पुं० महसूल ।

टिकार्दी-संज्ञा पुं० युवराज ।

संज्ञा स्त्री० टिकने का भाव ।

टिकाऊ-वि० मजबूत ।

टिकान-संज्ञा स्त्री० १. टिकने या ठह-  
रने का भाव । २. पड़ाव ।

टिकाना-क्रि० स० ठहराना ।

टिकाव-संज्ञा पुं० १. ठहराव । २.  
पड़ाव ।

टिकिया-संज्ञा स्त्री० गोल और चिपटा  
छोटा टुकड़ा ।

टिकुली-संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली" ।

टिकैत-संज्ञा पुं० १. युवराज । २.  
सरदार ।

टिकोरा-संज्ञा पुं० आम का छोटा  
और कच्चा फल ।

टिका-संज्ञा पुं० दे० "टीका" ।

टिकी-संज्ञा स्त्री० टिकिया ।

संज्ञा स्त्री० माथे पर की बिंदी ।

टिघलना-क्रि० अ० दे० "पिघलना" ।

टिचन-वि० तैयार ।

टिटकारना-क्रि० स० [संज्ञा टिटकारी]  
'टिक टिक' कहकर हाँकना ।

टिटिहरी-संज्ञा स्त्री० पानी के पास  
रहनेवाली एक छोटी चिड़िया । कुररी ।

टिटिम-संज्ञा पुं० [स्त्री० टिटिमी] टिटि-  
हरी ।

टिड्डी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा  
परदार कीड़ा ।

टिड्डी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बढ़ने-  
वाला कीड़ा जो बढ़ा भारी दल बाँध-  
कर चलता और पेड़ पौधों को बढ़ी  
हाथि पहुँचाता है ।

कुठलाना-क्रि० स० १. मूढ़ बनाना ।

२. मूढ़ कहकर धोखा देना ।

कुठार-संज्ञा स्त्री० असत्यता ।

कुठाना-क्रि० स० मूढ़ ठहराना ।

कुनक-संज्ञा पुं० नूपुर का शब्द ।

कुनकुना-क्रि० अ० कुनकुन शब्द करना ।

कुनकार-वि० [लो० कुनकारी] पतला ।

कुनकुन-संज्ञा पुं० नूपुर आदि के बजने का शब्द ।

कुनकुना-संज्ञा पुं० घुनघुना ।

कुनकुनाना-क्रि० अ० कुनकुन शब्द होना ।

क्रि० स० कुनकुन शब्द बरपन्न करना ।

कुनकुनी-संज्ञा स्त्री० हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट ।

कुपरी-संज्ञा स्त्री० दे० "कोपरी" ।

कुमका-संज्ञा पुं० छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक गहना ।

कुमाना-क्रि० स० किसी को भूमने में प्रवृत्त करना ।

कुरकुपी-संज्ञा स्त्री० कँपकँपी ।

कुरना-क्रि० अ० १. सूखना । २. घुलना ।

कुरयाना-क्रि० स० सुखाने का काम दूसरे से कराना ।

कुरसना-क्रि० अ० दे० "कुलसना" ।

कुराना-क्रि० स० सुखाना ।

क्रि० अ० सूखना ।

कुरी-संज्ञा स्त्री० सिकुड़न ।

कुलना-संज्ञा पुं० दे० "कुला" ।

वि० मूलनेवाला ।

कुलनी-संज्ञा स्त्री० तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे बियाँ

नाक की नथ में छटकाती हैं ।

कुलसना-क्रि० अ० भौंसना ।

क्रि० स० भौंसना ।

कुलसघाना-क्रि० स० कुलसने का काम दूसरे से कराना ।

कुलाना-क्रि० स० किसी को मूलने में प्रवृत्त करना ।

कुलाघना-क्रि० स० दे० "कुलाना" ।

कुँमल-संज्ञा स्त्री० दे० "कुँमलाइट" ।

कुँसना-क्रि० अ०, क्रि० स० दे० "कुलसना" ।

कुँकटी-संज्ञा स्त्री० छोटी माढ़ी ।

कुँका-संज्ञा पुं० दे० "कोँका" ।

कुँठ-संज्ञा पुं० वह बात जो यथार्थ न हो ।

कुँठमूठ-क्रि० वि० व्यर्थ ।

कुँठा-वि० १. असत्य । २. मूढ़ धोखनेवाला । ३. नकली ।

कुँठो-क्रि० वि० [दि० कुँठा] मूठ-मूठ ।

कुँम-संज्ञा स्त्री० १. भूमने की क्रिया या भाव । २. कैँष ।

कुँमक-संज्ञा पुं० १. गीत के साथ होनेवाला नृत्य । २. भूमर नामक पुरानी गीत ।

कुँमका-संज्ञा पुं० १. दे० "कुमका" । २. दे० "कुमक" ।

कुँमड़-संज्ञा पुं० दे० "भूमर" ।

कुँमड़ भामड़-संज्ञा पुं० ढकोसला ।

कुँमना-क्रि० अ० १. कोँके खाना ।

२. सिर और घड़ को चार चार आगे-पीछे घोर इधर-उधर दिखाना ।

भूमर-संज्ञा पुं० १. भूमक नाम का गीत । २. इस गीत के साथ होने-

वाला नाच ।

टिप टिप-संज्ञा स्त्री० बूँद बूँद करके  
गिरने या टपकने का शब्द ।

टिपवाना-क्रि० स० टिपने का काम  
दूसरे से कराना ।

टिप्पणी-संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी" ।

टिप्पन-संज्ञा पुं० १. टीका । २.  
जन्मकुंडली ।

टिप्पनी-संज्ञा स्त्री० टीका ।

टिमटिमाना-क्रि० अ० जीय प्रकाश  
देना ।

टिरफिस-संज्ञा स्त्री० विरोध ।

टिराना-क्रि० अ० दे० "टराना" ।

टिखुआ-संज्ञा पुं० चाँस ।

टिहुनी-संज्ञा स्त्री० १. घुटना । २.  
कोहनी ।

टिहूका-संज्ञा स्त्री० चीक ।

टीक-संज्ञा स्त्री० १. गले में पहनने  
का एक गहना । २. माथे में पहनने  
का एक गहना ।

टीकना-क्रि० स० टीका या तिलक  
लگانा ।

टीका-संज्ञा पुं० १. तिलक । २. छेद  
पुरुष । ३. राज्यतिलक । ४. चिह्न ।  
संज्ञा स्त्री० व्याख्या ।

टीकाकार-संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ का  
अर्थ या टीका लिखनेवाला ।

टीन-संज्ञा पुं० १. रंगा । २. रंगों  
की फलई की हुई जोड़े की पतली  
धर ।

टीप-संज्ञा स्त्री० १. दशाव । २. सम-  
रण के लिये किसी बात को अटपट  
लिख लेने की क्रिया ।

टीपन-संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री ।

टीपना-क्रि० स० टिपाना ।

क्रि० स० लिखना ।

टीम टाम-संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंघार ।

टीला-संज्ञा पुं० पृथ्वी का कुछ उभरा  
हुआ भाग ।

टीस-संज्ञा स्त्री० कसक ।

टीसना-क्रि० अ० रह रहकर ददे  
रटना ।

टुंटा, टुंडा-वि० [ स्त्री० टुंठो ] १.  
हूँटा । २. लूटा ।

टुइयाँ-वि० नाटा ।

टुक-वि० थोड़ा ।

टुकड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टुकड़ी ]  
१. खंड । २. भाग ।

टुकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा ।  
२. समुदाय ।

टुघा-वि० तुच्छ ।

टुटेपूजिया-वि० जिसके पाँस बहुत  
थोड़ा पूँजी हो ।

टुटरू टूँ-संज्ञा स्त्री० पंहुकी या फाँस  
के बोलने का शब्द ।

वि० १. झकेला । २. दुपला-पतला ।

टुनगा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टुनगी ] टहनी  
का भगला भाग ।

टुरा-संज्ञा पुं० डली ।

टुगना-क्रि० स० मोड़ा सा काटकर  
खाना ।

टुका-संज्ञा पुं० टुकड़ा ।

टुकारी-संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा" ।

टुका-संज्ञा पुं० १. टुकड़ा । २.  
मिषा ।

ट्टा-संज्ञा स्त्री० १. खंड । २. टूटने  
का भाव ।

संज्ञा पुं० घाटा ।

ट्टना-क्रि० अ० १. टुकड़े टुकड़े  
होना । २. एकबारगी घावा करना ।

ट्टा-वि० क्षणिक ।

संज्ञा पुं० दे० "टोटा" ।

भूरा-वि० सूखा ।

वि० खाली ।

संज्ञा स्त्री० जलन ।

भूरा-वि० १. सूखा । २. खाली ।

संज्ञा पुं० १. जलवृष्टि का अभाव ।

२. न्यूनता ।

भूरा-क्रि० वि० व्यर्थ ।

वि० दे० "भूर" ।

भूल-संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो शोभा के लिये चौपायों पर डाला जाता है ।

भूलन-संज्ञा पुं० हिं० डोला ।

भूलना-क्रि० अ० छटककर पार पार इधर-उधर हिलना ।

वि० भूलनेवाला ।

संज्ञा पुं० हिं० डोला ।

भूलरि-संज्ञा स्त्री० भूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका ।

भूला-संज्ञा पुं० १. हिं० डोला । २.

देहाती स्त्रियों का ढीला-ढाला कुरता ।

भैपना, भैपना-क्रि० अ० शरमाना ।

भैरा-संज्ञा स्त्री० १. विलंब । २. बखेड़ा ।

भैरना-क्रि० स० १. भैलना । २. शुरू करना ।

भैरा-संज्ञा पुं० मंझट ।

भैल-संज्ञा स्त्री० १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया ।

२. हलका धक्का या हिलोरा ।

संज्ञा स्त्री० विलंब ।

भैलना-क्रि० स० १. सहना । २. हेलना ।

भोंक-संज्ञा स्त्री० १. प्रवृत्ति । २. वेग । ३. दे० "भोंका" ।

भोंकना-क्रि० स० १. किसी वस्तु को आग में फेंकना । २. ढकेलना ।

भोंकघाना-क्रि० स० भोंकने का काम दूसरे से कराना ।

भोंका-संज्ञा पुं० १. झटका । २. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया ।

भोंकाई-संज्ञा स्त्री० भोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

भोंकी-संज्ञा स्त्री० १. उत्तरदायित्व । २. जोखिम ।

भोंटा-संज्ञा पुं० बड़े बड़े पातों का समूह ।

संज्ञा पुं० भोंका ।

भोंटी-संज्ञा स्त्री० दे० "भोंटा" ।

भोंपड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० भोंपड़ी ] कुटी ।

भोंपड़ी-संज्ञा स्त्री० छोटा भोंपड़ा ।

भोंपा-संज्ञा पुं० झटका ।

भोंपिंग-वि० झोंटवाला ।

भोरई-वि० रसेदार ।

भोरना-क्रि० स० झटका देकर हिलाना या कपाना ।

भोरि-संज्ञा स्त्री० दे० "भोली" ।

भोरी-संज्ञा स्त्री० भोली ।

भोल-संज्ञा पुं० शोरवा ।

संज्ञा पुं० पहने या ताने हुए कपड़ों आदि में वह अंश जो ढीला होने के कारण झूल या लटक जाता है ।

वि० १. ढीला । २. निकम्मा ।

संज्ञा पुं० गुलती ।

संज्ञा पुं० राख ।

भोलदार-वि० १. जिसमें रसा हो । २. ढीला-ढाला ।

भोला-संज्ञा पुं० भोंका ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० भोली ] १. कपड़े की बड़ी भोली या थैली । २. ढीला-ढाला ।

टूठना-कि० अ० संतुष्ट होना ।

टूठनि-संज्ञा स्त्री० संतोष ।

टूम-संज्ञा स्त्री० १. गहना । २. ताना ।

टै-संज्ञा स्त्री० तोते की बोली ।

टैट-संज्ञा स्त्री० मुरी ।

टैटर-संज्ञा पुं० रोग या चोट के कारण  
बाँख के डेले पर का उभरा हुआ  
मांस ।

टैटी-संज्ञा स्त्री० करील ।

संज्ञा पुं० हुआती ।

टैटुधा-संज्ञा पुं० १. गला । २. अँगूठा ।

टैटै-संज्ञा स्त्री० १. तोते की बोली ।

२. व्यर्थ की बकवाद ।

टेलफी-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को  
छुड़कने या गिरने से बचाने के लिये  
उसके नीचे लगाई हुई वस्तु ।

टेक-संज्ञा स्त्री० १. वह लकड़ी जो  
किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने  
के लिये नीचे से लगाई जाती है ।

२. आश्रय । ३. हठ । ४. आदत ।

टेकना-कि० स० सहारा लेना ।

टेकरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० टेकरी ]  
टीला ।

टेकान-संज्ञा स्त्री० टेक ।

टेकाना-कि० स० १. उठाकर ले जाने  
में सहारा देने के लिये धामना । २.  
बैठने बैठने में सहायता के लिये  
पकड़ना ।

टेकी-संज्ञा पुं० १. प्रतिज्ञा पर दृढ़  
रहनेवाला । २. हठी ।

टेकुआ-संज्ञा पुं० चारखे का सफ़ा ।

टेघरना-कि० अ० दे० "पिघलना" ।

टेढ़चिड़गा-वि० टढ़ा-मेढ़ा ।

टेढ़ा-वि० [ स्त्री० टेढ़ी ] १. बक । २.  
पेचीला ।

टेढ़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "टेढ़ापन" ।

टेढ़ापन-संज्ञा पुं० टेढ़ा होने का भाव ।

टेढ़े-कि० वि० घुमाव-फिराव के साथ ।

टेना-कि० स० १. हथियार को तेज़  
करने के लिये परपर आदि पर रंग-  
दना । २. मूँछ के घालों को खड़ा  
करने के लिये पेंटना ।

टेम-संज्ञा स्त्री० दिप की लौ ।

टेर-संज्ञा स्त्री० तान ।

टेरना-कि० स० ऊँचे स्वर से गाना ।

टेव-संज्ञा स्त्री० आदत ।

टैसू-संज्ञा पुं० पलाश ।

टैर्या-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिपटी  
छोटी कौड़ी ।

टोंटा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टेंटी ] पानी  
आदि ढालने के लिये बरतन में लगी  
हुई मली ।

टोका-संज्ञा स्त्री० टोकने की क्रिया या  
भाव ।

टोकना-कि० स० किसी को कोई काम  
करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर  
रोकना या पूछ साझ करना ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० टैकनी ] टोकरा ।

टोकरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टैकरी ] काया ।

टोकरी-संज्ञा स्त्री० छोटा टोकरा ।

टोटफा-संज्ञा पुं० टोना ।

टोट्टा-संज्ञा पुं० कारतूस ।

संज्ञा पुं० घाटा ।

टोनहा-वि० [ स्त्री० टैनही ] जार  
करनेवाला ।

टोनहाया-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टैनहारै ]  
जादू करनेवाला मनुष्य ।

टोना-संज्ञा पुं० जादू ।

† कि० स० छूना ।

भोली-संज्ञा स्त्री० १. कपड़े को मोड़कर घनाई हुई धैली। २. धाम धोष-ने का जाल।

संज्ञा स्त्री० राख।

भोलना-कि० स० जलाना।

भौर-संज्ञा पुं० कुंड।

भौरना-कि० अ० गूँजना।

भौराना-कि० अ० झूमना।

कि० अ० १. सविले रंग का हो जाना। २. मुरझाना।

भौरसना-कि० स० दे० "कुलसना"।

भौर-संज्ञा पुं० १. हुजत। २. डाँट-फटकार।

भौरना-कि० स० धोष लेना।

भौर-कि० वि० १. समीप। २. साथ।

भौरा-संज्ञा पुं० खचिया।

भौराना-कि० अ० गुराना।

## झ

झ-हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चर्या का पाँचवाँ वर्ण है।

इसका व्धारण-स्थान तालू और नासिका है।

## ट

ट-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका व्धारण-स्थान मूर्धा है।

ट-संज्ञा पुं० १. चार भागों की एक रौल। २. सिका। ३. छेनी।

ट-संज्ञा पुं० १. सुझमा। २. धातु की चीज़ में टँके से जोड़ लगाने का कार्य।

ट-कि० अ० १. टँका जाना। २. सिलना।

ट-संज्ञा पुं० दे० "टँकना"।

ट-संज्ञा स्त्री० टँकने की क्रिया, भाष या मज़दूरी।

ट-कि० स० १. टँकों से जोड़-वाना या सिलवाना। २. सिलाकर लगवाना।

ट-संज्ञा स्त्री० झनकार।

ट-कि० स० धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना।

ट-संज्ञा स्त्री० पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा कुंड या पड़ा परतन। टँका।

ट-संज्ञा पुं० दे० "टँकार"।

ट-संज्ञा पुं० दे० "टँकारना"।

ट-संज्ञा स्त्री० दे० "टँग"।

ट-कि० अ० छटकना।

संज्ञा पुं० थलगनी।



टोप-संज्ञा पुं० पड़ी टोपी ।  
 † संज्ञा पुं० घूँद ।  
 टोपा-संज्ञा पुं० यड़ी टोपी ।  
 † संज्ञा पुं० १. टोकरा । २. टाँका ।  
 टोपी-संज्ञा स्त्री० सिर पर का पहनावा ।  
 टोभ-संज्ञा पुं० टाँका ।  
 टोरना-†-क्रि० स० तोड़ना ।  
 टोरा-संज्ञा पुं० रवा ।

टोल-संज्ञा स्त्री० मंडली ।  
 टोला-संज्ञा पुं० [स्त्री० टोलिका] मड़ला ।  
 टोली-संज्ञा स्त्री० १. छोटा मड़ला ।  
 २. समूह ।  
 टोयना-†-क्रि० स० दे० "टोना" ।  
 टोह-संज्ञा स्त्री० १. खोज । २. खपरा ।  
 टोही-संज्ञा स्त्री० पता लगानेवाला ।  
 टोरना-क्रि० स० परसना ।

ठ

ठ-व्यंजन में वारहवाँ व्यंजन जिसके  
 वधारण का स्थान मूर्धा है ।  
 ठंठार-वि० खाली ।  
 ठंठ-संज्ञा स्त्री० शीत ।  
 ठंठई-संज्ञा स्त्री० दे० "ठंठाई" ।  
 ठंठक-संज्ञा स्त्री० शीत ।  
 ठंठा-वि० [ स्त्री० ठंठी ] १. सर्द । २.  
 थुका हुआ । ३. शांत ।  
 ठंठाई-संज्ञा स्त्री० १. वह दवा या  
 मसाला जिससे शरीर की गरमी शांत  
 होती और ठंठक जाती है । २. पिसी  
 हुई भाँग ।  
 ठक-संज्ञा स्त्री० ठोँकने का शब्द ।  
 ठक ठक-संज्ञा स्त्री० थलेड़ा ।  
 ठकठकाना-क्रि० स० खटखटाना ।  
 ठकुरासुहाती-संज्ञा स्त्री० छठोँछप्पो ।  
 ठकुराइन-संज्ञा स्त्री० १. मालकिन ।  
 २. चन्नाली । ३. नाहन ।  
 ठकुराई-संज्ञा स्त्री० १. सरदारी । २.  
 घदपन ।  
 ठकुरानी-संज्ञा स्त्री० १. ठाकुर या सर-

दार की स्त्री । २. स्वामिनी ।  
 ठकुरायत-संज्ञा स्त्री० मनुष्य ।  
 ठग-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ठगनी, ठगिन ]  
 १. वह लुटेरा जो छल और धूर्तता  
 से माल लूटता हो । २. छली ।  
 ठगई-संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना" ।  
 ठगण-संज्ञा पुं० १. मांभ्राओं का एक  
 गण ।  
 ठगना-क्रि० स० १. धोखा देकर माल  
 लूटना । २. धोखा देना ।  
 † क्रि० भ० धोखा खाना ।  
 ठगनी-संज्ञा स्त्री० ठग की स्त्री या ठगने-  
 वाली स्त्री ।  
 ठगपना-संज्ञा पुं० १. ठगने का भाव  
 या काम । २. धूर्तता ।  
 ठगवाना-क्रि० स० दूसरे से धोखा  
 दिखवाना ।  
 ठगविद्या-संज्ञा स्त्री० धोखेवाजी ।  
 ठगाना-क्रि० भ० ठगा जाना ।  
 ठगाही-संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना" ।  
 ठगिन, ठगिनी-संज्ञा स्त्री० १. लुटेरिन ।  
 २. ठग की स्त्री ।

भूरा-वि० सूखा ।

वि० खाली ।

संज्ञा स्त्री० जलन ।

भूरा-वि० १. सूखा । २. खाली ।

संज्ञा पुं० १. जलवृष्टि का अभाव ।

२. न्यूनता ।

भूरा-क्रि० वि० ध्वर्थ ।

वि० दे० "भूर" ।

भूल-संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो शोभा के लिये चौपायों पर डाला जाता है ।

भूलन-संज्ञा पुं० हिं डोला ।

भूलना-क्रि० अ० लटककर बार बार इधर-उधर हिलना ।

वि० झूलनेवाला ।

संज्ञा पुं० हिं डोला ।

भूलरि-संज्ञा स्त्री० झूलता हुआ छोटा गुच्छा या कुमका ।

भूला-संज्ञा पुं० १. हिं डोला । २. देहाती स्त्रियों का ढीला-ढाला कुरता ।

भौपना, भौपना-क्रि० अ० शरमाना ।

भौरा-संज्ञा स्त्री० १. विलम्ब । २. बखेड़ा ।

भौरना-क्रि० स० १. झेलना । २. शुरू करना ।

भौरा-संज्ञा पुं० संभट ।

भोल-संज्ञा स्त्री० १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया ।

२. हलका धक्का या हिलोरा ।

संज्ञा स्त्री० विलम्ब ।

भोलना-क्रि० स० १. सहना । २. हलना ।

भोंक-संज्ञा स्त्री० १. प्रवृत्ति । २. वेग । ३. दे० "भोंका" ।

भोंकना-क्रि० स० १. किसी वस्तु को आग में फेंकना । २. डकेलना ।

भोंकवाना-क्रि० स० भोंकने का काम दूसरे से कराना ।

भोंका-संज्ञा पुं० १. झटका । २. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया ।

भोंकाई-संज्ञा स्त्री० भोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

भोंकी-संज्ञा स्त्री० १. उत्तरदायित्व । २. जोखिम ।

भोटा-संज्ञा पुं० बड़े थड़े थालों का समूह ।

संज्ञा पुं० भोंका ।

भोंटी-संज्ञा स्त्री० दे० "भोंटा" ।

भोंपड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भत्पा० भोंपड़ी ] कुटी ।

भोंपड़ी-संज्ञा स्त्री० छोटा भोंपड़ा ।

भोंपा-संज्ञा पुं० झटका ।

भोंपिंग-वि० झोंटेवाला ।

भोरई-वि० रसेदार ।

भोरना-क्रि० स० झटका देकर हिलाना या कपाना ।

भोरि-संज्ञा स्त्री० दे० "भोली" ।

भोरी-संज्ञा स्त्री० भोली ।

भोल-संज्ञा पुं० शोरवा ।

संज्ञा पुं० पहने या ताने हुए कपड़ों आदि में वह अंश जो ढीला होने के कारण झूल या लटक जाता है ।

वि० १. ढीला । २. निष्क्रमा ।

संज्ञा पुं० गलती ।

संज्ञा पुं० राख ।

भोलदार-वि० १. जिसमें रसा हो ।

२. ढीला-ढाला ।

भोला-संज्ञा पुं० भोंका ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० भत्पा० भोली ] १.

कपड़े की बड़ी भोली या धैली । २.

ढीला-ढाला ।

ठगी-संज्ञा स्त्री० घोखा देकर भाज लूटने का काम या भाव ।

ठगोरी-संज्ञा स्त्री० टोना ।

ठट-संज्ञा पुं० १. सजावट । २. मीढ़ ।

ठटना-क्रि० स० १. ठहराना । २. सजाना ।

क्रि० अ० १. अड़ना । २. सजना ।

ठटनि-संज्ञा स्त्री० यनाव ।

ठटरी-संज्ञा स्त्री० १. अस्थिपंजर । २. खरिया । ३. किसी वस्तु का ढाँचा ।

४. चरथी ।

ठट्टा-संज्ञा पुं० यनाव ।

ठट्टी-संज्ञा स्त्री० ठटरी ।

ठट्टा-संज्ञा पुं० हँसी ।

ठठकना-क्रि० अ० १. ठिटकना ।

२. स्तम्भित हो जाना ।

ठठना-क्रि० अ० दे० "ठटना" ।

ठठरी-संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी" ।

ठठाना-क्रि० स० मारना ।

क्रि० अ० ज़ोर से हँसना ।

ठठिरिना-संज्ञा स्त्री० ठठे की स्त्री ।

ठठेर-मंजारिका-संज्ञा स्त्री० ठठे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे ।

ठठेरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी ]

धरतन बनानेवाला । कसेरा ।

ठठेरी-संज्ञा स्त्री० १. ठठे की स्त्री । २.

ठठे का काम ।

ठठोल-संज्ञा पुं० दिहली ।

ठठोली-संज्ञा स्त्री० हँसी ।

ठड्डा-वि० खड़ा ।

ठड्डा-वि० सड़ा ।

ठन-संज्ञा स्त्री० धातु पर आघात पड़ने या उसके घजने का शब्द ।

ठनक-संज्ञा स्त्री० चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात पड़ने का शब्द ।

ठनकना-क्रि० अ० ठनठनशब्द करना ।

ठनकाना-क्रि० स० घजाना ।

ठनकार-संज्ञा स्त्री० ठनठन शब्द ।

ठनगन-संज्ञा पुं० मंगल शवसरे पर नेगियों का अधिक पाने के लिये हठ ।

ठनठन मोपाल-संज्ञा पुं० १. छूँड़ी और निःसार वस्तु । २. निर्धन मनुष्य ।

ठनठनाना-क्रि० स० बजाना ।

क्रि० अ० ठनठन शब्द होना या बजना ।

ठनना-क्रि० अ० १. छिड़ना । २. ठहरना ।

ठनाका-संज्ञा पुं० ठनकार ।

ठपका-संज्ञा पुं० धक्का ।

ठप्पा-संज्ञा पुं० १. साँचा । २. साँचे के द्वारा बनाया हुआ बेलवूटा आदि ।

ठमक-संज्ञा स्त्री० १. रुकावट । २. लचक ।

ठमकना-क्रि० अ० १. रुकना । २.

ठसक के साथ रुक रुककर या हाव भाव दिखाते हुए चलना ।

ठमकाना, ठमकारना-क्रि० स० ठहराना ।

ठयना-क्रि० स० ठानना ।

क्रि० स० ठहराना ।

क्रि० अ० १. स्थित होना । २. जगना ।

ठर्रा-संज्ञा पुं० १. बहुत मोटा सूत ।

२. बड़ी अधपक्की ईंट । ३. महुए की निकट शराब ।

ठस-वि० १. ठोस । २. गफ । ३. मजबूत ।

ठसक-संज्ञा स्त्री० १. नखरा । २. शान ।

ठसकदार-वि० १. घमंडी । २. शानदार ।

ठसका-संज्ञा पुं० १. सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले । २. ठोकर ।

ठसाठस-क्रि० वि० खचाखच ।

ठस्सा-संज्ञा पुं० ठसक ।

टपाटप-कि० वि० एक . एक करके  
शीघ्रता से ।

टपाना-कि० स० फेंकना ।

टप-संज्ञा पुं० पानी रखने के लिये नाँद  
के आकार का एक खुला बड़ा घरतन ।

टमटम-संज्ञा स्त्री० दो ऊँचे ऊँचे पहियों  
की एक खुली हलकी गाड़ी ।

टमाटर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का खट्टा  
विलायती बैरान ।

टर-संज्ञा स्त्री० १. फटुई बोली । २.  
मेढ़क की बोली । ३. हठ ।

टरकना-कि० भ० खिसकना ।

टरकाना-कि० स० हटाना ।

टरटराना-कि० भ० १. बक बक  
करना । २. छिटाई से बोलना ।

टरा-वि० कटुवादी ।

टराना-कि० भ० अविनीत और कठोर  
स्वर से वक्तर देना ।

टलना-कि० भ० १. हटना । २.  
धीतना ।

टवाई-संज्ञा स्त्री० आवागमी ।

टस-संज्ञा स्त्री० किसी भारी चीज़ के  
खिसकने या टसकने का शब्द ।

टसक-संज्ञा स्त्री० फसक । टीस ।

टसकना-कि० भ० १. खिसकना ।  
२. टीस मारना ।

टसकाना-कि० स० हटाना ।

टसर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का घटिया,  
कड़ा और मोटा रेशम ।

टसुआ-संज्ञा पुं० भाँस ।

टहना-संज्ञा पुं० गृध्र की डाल ।

टहनी-संज्ञा स्त्री० डाली ।

टहल-संज्ञा स्त्री० सेवा ।

टहलना-कि० भ० १. धीरे धीरे  
चलना । २. सैर करना ।

टहलनी-संज्ञा स्त्री० दासी ।

टहलाना-कि० स० १. धीरे धीरे  
चलाना । २. सैर कराना ।

टहलुआ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टहलुई,  
टहलनी ] सेवक ।

टहलू-संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ" ।

टाँक-संज्ञा स्त्री० लिखावट ।

टाँकना-कि० स० १. एक वस्तु के  
साथ दूसरी वस्तु को कील आदि  
जड़कर जोड़ना । २. सीना । ३.  
चकी आदि को टाँकी से गड़बे करके  
सुरदरा करना । रेहना । ४. दर्ज  
करना । ५. मार खेना ।

टाँका-संज्ञा पुं० १. जोड़ मिळानेवाली  
कील या काँटा । २. सिलाई ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० टाँकी ] परपर  
काटने की चौड़ी छेनी ।

संज्ञा पुं० हाँड़ ।

टाँकी-संज्ञा स्त्री० छेनी ।

संज्ञा स्त्री० छोटा टाँका ।

टाँग-संज्ञा स्त्री० जीवों के चलने का  
अवयव ।

टाँगना-कि० स० लटकाना ।

टाँगा-संज्ञा पुं० यदी कुल्हाड़ी ।

टाँगी-संज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी ।

टाँच-संज्ञा स्त्री० १. भाँजी । २. टाँका ।

टाँचना-कि० स० टाँकना ।

टाँटी-संज्ञा पुं० खोपड़ी ।

टाँठ, टाँठा-वि० कड़ा ।

टाँड़-संज्ञा स्त्री० लकड़ी के खंभों पर  
बनाई हुई पाटन जिस पर चीज़ अस-  
थाव रखते हैं ।

संज्ञा पुं० बाहु में पहनने का  
छियों का एक गहना ।

टाँड़ा-संज्ञा पुं० व्यापार की वस्तुओं

ठहरना-क्रि० भ० १. धमना । २. चलना । ३. धिराना । ४. आसरा देखना । ५. पक्का होना ।

ठहराई-संज्ञा स्त्री० ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

ठहराना-क्रि० स० १. चलने से रोकना । २. त करना ।

ठहराव-संज्ञा पुं० १. स्थिरता । २. निश्चय ।

ठहरौमी-संज्ञा स्त्री० विवाह में टीके, बट्टे आदि के सेन देन का करार ।

ठहाका-संज्ञा पुं० जोर की हँसी ।

ठाई-संज्ञा स्त्री० १. स्थान । २. निरुद्ध ।

ठाँठ-संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "ठाँय" ।

ठाँठ-वि० जो खूबकर घिना रस का हो गया हो ।

ठाँय-संज्ञा पुं० १. स्थान । २. समीप । संज्ञा पुं० यंदूक छूटने का शब्द ।

ठाँच-संज्ञा पुं० स्थान ।

ठाँसना-क्रि० स० जोर से घुसाना या भरना ।

क्रि० भ० ठन ठन शब्द के साथ ठाँसना ।

ठाकुर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ठकुरान, ठकुरानी ] १. पूज्य व्यक्ति । २. जमींदार । ३. शत्रियों की उपाधि । ४. स्वामी । ५. भाइयों की उपाधि ।

ठाकुरद्वारा-संज्ञा पुं० मंदिर ।

ठाकुरवाड़ी-संज्ञा स्त्री० मंदिर ।

ठाकुरी-संज्ञा स्त्री० स्वामित्व ।

ठाट-संज्ञा पुं० १. लकड़ी या घाँस की फट्टियों का घना हुआ परदा । २. दर्चा । ३. सजावट । ४. आढेंघर ।

ठाटना-क्रि० स० १. रचना । २. सजाना ।

ठाट घाट-संज्ञा पुं० सजावट ।

ठाटर-संज्ञा पुं० १. टहर । २. ठहरी । ३. सजावट ।

ठाठा-संज्ञा पुं० दे० "ठाट" ।

ठाढ़ा-वि० खड़ा ।

ठान-संज्ञा स्त्री० १. काम का छिड़ना । २. पक्का हरावा ।

ठानना-क्रि० स० १. छेड़ना । २. ठहराना ।

ठाना-क्रि० स० ठानना ।

ठामा-संज्ञा पुं० स्त्री० स्थान ।

ठाला-संज्ञा पुं० पेकारी ।

वि० निठला ।

ठाली-वि० बेकास ।

ठाहरा-संज्ञा पुं० १. स्थान । २. डेरा ।

ठिंगना-वि० [ स्त्री० ठिंगनी ] नाटा ।

ठिकाना-संज्ञा पुं० १. स्थान । २. निर्वाह या आश्रय का स्थान । ३. हद्द ।

† क्रि० स० ठहराना ।

ठिठकना-क्रि० भ० चलते चलते एक-चारगी रुक जाना ।

ठिठरना-क्रि० भ० सरदी से पेंडना या सिकुड़ना ।

ठिठुरना-क्रि० भ० दे० "ठिठरना" ।

ठिनकना-क्रि० भ० यच्चों का धीरे में रुक रुककर रोना ।

ठिलना-क्रि० भ० १. टकेला जाना । २. घुसना ।

ठिलुआ-वि० निठला ।

ठीक-वि० १. यथार्थ । २. वचित । ३. अच्छा । ४. पक्का ।

क्रि० वि० जैसे चाहिये वैसे ।

संज्ञा पुं० निश्चय ।

ठीकरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भत्ता० ठीकरी ] सिटकी ।

ढंगारी-संज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी।  
 टंचा-वि० १. सूम। २. फडोर-हृदय।  
 वि० तैयार।

टंट टंट-संज्ञा पुं० १. मिथ्या प्रपंच।  
 २. काठ-कषाद।

टंटा-संज्ञा पुं० १. आडंबर। २. झगड़ा।  
 टक-संज्ञा स्त्री० स्थिर दृष्टि।

टकटका-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टकटकी ]  
 टकटकी।

टकटकाना-कि० सं० १. एक टक  
 ताकना। २. टकटक शब्द उत्पन्न  
 करना।

टकटकी-संज्ञा स्त्री० गद्दी हुई नज़र।  
 टकटोना; टकटोरना-कि० सं०  
 टटोलना।

टकटोहन-संज्ञा पुं० टटोलकर देखने  
 की क्रिया।

टकटोहना-कि० सं० दे० "टटो-  
 लना"।

टकराना-कि० भ० १. धक्का या ठोकर  
 लेना। २. मारा मारा फिना।  
 कि० सं० पटकना।

टकसाल-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ  
 सिक्के बनाए जाते हैं।

टकसाली-वि० टकसाल का।  
 संज्ञा पुं० टकसाल का अधिकारी।

टका-संज्ञा पुं० १. रुपया। २. अधम्रा।  
 ३. धन।

टकासी-संज्ञा स्त्री० टके या दो पैसे  
 की रुपय का सूद।

टकुआ-संज्ञा पुं० चरखे में का तकला  
 जिस पर सूत काता जाता है।

टकैत-वि० धनी।

टकर-संज्ञा स्त्री० १. ठोकर। २.  
 मुकाबिला।

टखना-संज्ञा पुं० पृथ्वी के ऊपर निकली  
 हुई हड्डी की गाँठ।

टधरना-कि० भ० दे० "पिघलना"।

टटका-वि० १. ताज़ा। २. नया।

टटोरना-कि० सं० दे० "टटोलना"।

टटोल-संज्ञा स्त्री० टटोलने का भाव  
 या क्रिया।

टटोलना-कि० सं० १. हँदने या  
 पता लगाने के लिये इधर-उधर हाथ  
 रखना। २. परखना।

टट्टर-संज्ञा पुं० घाँस की फट्टियों, सर-  
 कंडों आदि को जोड़कर बनाया हुआ  
 ढाँचा।

टट्टी-संज्ञा स्त्री० १. घाँस की फट्टियों  
 आदि को जोड़कर आद या रचा के  
 बिये बनाया हुआ ढाँचा। २. चिक।

३. पाखाना।

टट्ट-संज्ञा पुं० छोटे कद का घोड़ा।  
 टन-संज्ञा स्त्री० किसी धातुखंड पर  
 आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द।

टनकना-कि० भ० टन टन बजना।

टनटन-संज्ञा स्त्री० घंटे का शब्द।

टनाका-संज्ञा पुं० घंटा बजने का शब्द।

टनाटन-संज्ञा स्त्री० लगातार होने-  
 वाला टनटन शब्द।

टप-संज्ञा पुं० खुली गादियों में खगा  
 हुआ ओहार।

संज्ञा पुं० नाँद के आकार का पानी  
 रखने का खुला बरतन।

संज्ञा स्त्री० बूँद बूँद टपकने का शब्द।

टपक-संज्ञा स्त्री० १. टपकने का भाव।

२. बूँद बूँद गिरने का शब्द।

टपकना-कि० भ० १. बूँद बूँद  
 गिरना। २. ऊपर से सहसा आना।

३. झलकना।

टपकाना-कि० सं० चुभाना।

ठीकरी-संज्ञा स्त्री० मिट्टी के धरतन का फूटा टुकड़ा ।

ठीका-संज्ञा पुं० कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा ।

ठीकेदार-संज्ञा पुं० ठीका लेनेवाला ।

ठीहा-संज्ञा पुं० १. ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गड़ते हैं । २. लकड़ी गड़ने या चीरने का कुंदा । ३. सीमा ।

ठुंठ-संज्ञा पुं० सूखा हुआ पेड़ ।

ठुकना-कि० भ० पिटना ।

ठुड़ी-संज्ञा स्त्री० ठोड़ी ।

ठुमक-वि० जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं ।

ठुमकना-कि० भ० १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना । २. नाचने में पैर पटककर चलना जिसमें घुंघरू बजें ।

ठुमरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी शीर एक ही अंतरे में समाप्त होता है ।

ठुरी-संज्ञा स्त्री० वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले ।

ठुसना-कि० भ० कसकर मरा जाना ।

ठुसाना-कि० स० कसकर भरवाना ।

ठूठ-संज्ञा पुं० सूखा पेड़ ।

ठूसना-कि० स० दे० "ठूसना" ।

ठूसना-कि० स० १. खूब कसकर

भरना । २. घुसेड़ना ।

ठेंगना-वि० [स्त्री० ठेंगनी] छेदे छील का ।

ठेंगा-संज्ञा पुं० १. अँगूठा । २. सोटा ।

ठेंठी-संज्ञा स्त्री० १. कान की मेल । २. डाट ।

ठेंपी-संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी" ।

ठेका-संज्ञा पुं० तयला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल छाज दिया जाय ।

संज्ञा पुं० दे० "ठीका" ।

ठेकी-संज्ञा स्त्री० टेक ।

ठेठ-वि० १. निपट । २. शुद्ध ।

संज्ञा स्त्री० सीधी सादी बोली ।

ठेलना-कि० स० दकेलना ।

ठेला-संज्ञा पुं० १. धका । २. एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी डेल या दकेलकर चलाते हैं । ३. भीड़भाड़ ।

ठेलाठेल-संज्ञा स्त्री० धक्कमधक्का ।

ठेस-संज्ञा स्त्री० आघात ।

ठेन-संज्ञा स्त्री० जगह ।

ठोंक-संज्ञा स्त्री० प्रहार ।

ठोंकना-कि० स० १. पीटना । २. गाड़ना । ३. दायर करना । ४. थप-थपाना ।

ठोकर-संज्ञा स्त्री० ठेस ।

ठोठरा-वि० खाली ।

ठोड़ी-संज्ञा स्त्री० ठुड़ी ।

ठोरी-संज्ञा पुं० चौच ।

ठोस-वि० १. जो खोलला न हो । २. दृढ़ ।

ठोहना-कि० स० खोजना ।

ठौर-संज्ञा पुं० १. जगह । २. मौका ।

टिप टिप-संज्ञा स्त्री० वृँद वृँद करके  
गिरने या टपकने का शब्द ।

टिपवाना-क्रि० स० टीपने का काम  
दूसरे से कराना ।

टिप्पणी-संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी" ।

टिप्पन-संज्ञा पुं० १. टीका । २.  
जन्मकुंडली ।

टिप्पनी-संज्ञा स्त्री० टीका ।

टिमटिमाना-क्रि० भ० चीख प्रकाश  
देना ।

टिरफिस-संज्ञा स्त्री० विरोध ।

टिराना-क्रि० भ० दे० "टराना" ।

टिसुआ-संज्ञा पुं० आँसू ।

टिहुनी-संज्ञा स्त्री० १. घुटना । २.  
कोहनी ।

टिहुकी-संज्ञा स्त्री० चीक ।

टीक-संज्ञा स्त्री० १. गले में पहनने  
का एक गहना । २. माथे में पहनने  
का एक गहना ।

टीकना-क्रि० स० टीका या तिलक  
लगाना ।

टीका-संज्ञा पुं० १. तिलक । २. श्रेष्ठ  
पुरुष । ३. राज्यतिलक । ४. चिह्न ।  
संज्ञा स्त्री० व्याख्या ।

टीकाकार-संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ का  
अर्थ या टीका लिखनेवाला ।

टीन-संज्ञा पुं० १. राँगा । २. राँगे  
की फलाई की हुई छोटे की पतली  
धातुर ।

टीप-संज्ञा स्त्री० १. दवाव । २. हम-  
रण के लिये किसी बात को झटपट  
लिख लेने की क्रिया ।

टीपन-संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री ।

टीपना-क्रि० स० दमाना ।

क्रि० स० लिखना ।

टीम टाम-संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंघार ।

टीला-संज्ञा पुं० पृथ्वी का कुछ उभरा  
हुआ भाग ।

टीस-संज्ञा स्त्री० कसक ।

टीसना-क्रि० भ० रह रहकर ददें  
बठना ।

टुंटा, टुंडा-वि० [ स्त्री० डंढी ] १.  
हँडा । २. लूटा ।

टुइया-वि० नाटा ।

टुक-वि० थोड़ा ।

टुकड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० थप्पा० टुकरी ]  
१. खंड । २. भाग ।

टुकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. थोड़ा टुकड़ा ।  
२. समुदाय ।

टुछा-वि० मुच्छ ।

टुटेंपुंजिया-वि० जिसके पास बहुत  
थोड़ी पूँजी हो ।

टुटकू टूँ-संज्ञा स्त्री० पंडुकी या फाँसता  
के बोलने का शब्द ।

वि० १. झकेला । २. दुपत्ता-पतला ।

टुनगा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० टुनगी ] टहनी  
का अगला भाग ।

टुरा-संज्ञा पुं० डबी ।

टुगना-क्रि० स० थोड़ा सा काटकर  
खाना ।

टूका-संज्ञा पुं० टुकड़ा ।

टूकरी-संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा" ।

टूका-संज्ञा पुं० १. टुकड़ा । २.  
मिठा ।

टूटी-संज्ञा स्त्री० १. खंड । २. टूटने  
का भाव ।

संज्ञा पुं० घाटा ।

टूटना-क्रि० भ० १. टुकड़े टुकड़े  
होना । २. पड़पारगी धावा करना ।

टूटा-वि० खंडित ।

संज्ञा पुं० दे० "टोटा" ।



ह

ह-व्यंजनों में तरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण ।

हंक-संज्ञ पुं० कीड़ों के पीछे का जूहरीला कौटा जिसे वे जीवों के शरीर में घेसाते हैं ।

हंफना-कि० अ० गरजना ।

हंफा-संज्ञ पुं० एक प्रकार का नगाड़ा ।

हंगर-संज्ञ पुं० चोपाया ।

हंटल-संज्ञ पुं० छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा ।

हंठी-संज्ञ स्त्री० हंटल ।

हंड-संज्ञ पुं० १. डंडा । २. हाथ-पैर के पंजों के बल पर पड़कर धी जाने-वाली एक प्रकार की कसरत । ३. दंड ।

हंडपेल-संज्ञ पुं० कसरती ।

हंडा-संज्ञ पुं० मोटी छड़ी । सेटा ।

हंडिया-संज्ञ पुं० कर उगाहनेवाला ।

हंडी-संज्ञ स्त्री० १. छोटी लंबी पतली लकड़ी । २. डंडी ।

हंडोरना-कि० स० हंडना ।

हंथर-संज्ञ पुं० डकोसला ।

हंवांडोल-वि० दे० "डांवांडोल" ।

हंस-संज्ञ पुं० वह स्थान जहाँ विपैले कीड़े का दंत या डंक चुभा हो ।

हंकार-संज्ञ पुं० १. पेट की वायु का कंठ से शब्द के साथ निकल पड़ने का शारीरिक व्यापार जिससे पेट का भरा होना सूचित होता है । २. दहाड़ ।

हंकारना-कि० अ० १. डकार लेना ।

२. पथा जाना । ३. दहाड़ना ।

हंकैत-संज्ञ पुं० डाफ़ ।

हकैती-संज्ञ स्त्री० छापा ।

हग-संज्ञ पुं० १. कदम । २. गतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े ।

हगहगाना-कि० अ० १. हथर से हथर हिलना । २. लड़खड़ाना ।

हगना-कि० अ० १. हिलना ।

२. लड़खड़ाना ।

हगर-संज्ञ स्त्री० मार्ग ।

हगरना-कि० अ० चलना ।

हटना-कि० अ० अड़ना ।

हटाना-कि० स० भिड़ाना ।

हडियल-वि० डाढ़ीवाला ।

हपट-संज्ञ स्त्री० डाँट ।

हपटना-कि० स० डाँटना ।

हपोरसंख-संज्ञ पुं० १. डोंग मारने-वाला । २. मूख ।

हफ-संज्ञ पुं० डकला ।

हफला-संज्ञ पुं० दे० "डफ" ।

हफली-संज्ञ स्त्री० छोटा डफ ।

हवकीर्हा-वि० [ स्त्री० टवकीर्हा ] डब-डबाया हुआ ।

हवडवाना-कि० अ० अभपूर्ण होना ।

हवरा-संज्ञ पुं० [ स्त्री० टवरी ] कुंड

हथल-वि० दोहरा ।

संज्ञ पुं० थेंगरेड़ी राज्य का पैसा ।

हथोना-कि० स० दे० "हुथाना" ।

हथ्या-संज्ञ पुं० १. संपुट । २. रेंजगाड़ी में की एक गाड़ी ।

हमकना-कि० अ० पानी में डूबना उतराना ।

हमकौरी-संज्ञ स्त्री० सरद की पीछी की बरी ।

से लदे हुए पशुओं का झुंड । घन-  
जारों का झुंड ।

टाँय टाँय-संज्ञा स्त्री० १. टें टें । २.  
घकवाह ।

टाट-संज्ञा पुं० १. सन या पटुप की  
रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा ।  
२. धिरादरी या उसका अंग ।

टाटर-संज्ञा पुं० टटर ।

टान-संज्ञा स्त्री० तनाव ।

टानना-कि० स० दे० "तानना" ।

टाप-संज्ञा स्त्री० घोड़े के पैरों के ज़मीन  
पर पड़ने का शब्द ।

टापना-कि० अ० किसी वस्तु के लिये  
हथर-वधर हैरान फिरना ।

कि० स० कूदना ।

कि० अ० दे० "टपना" ।

टापा-संज्ञा पुं० काया ।

टापू-संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग  
जिसके चारों ओर जल हो । द्वीप ।

टारना-कि० स० दे० "टालना" ।

टाल-संज्ञा स्त्री० ऊँचा । ढेर ।

संज्ञा स्त्री० टालने का भाव ।

टालटूल-संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल" ।

टालना-कि० स० १. हटाना । २.  
मुलतवी करना ।

टालमटूल-संज्ञा स्त्री० घहाना ।

टिकट-संज्ञा पुं० वह कागज़ का टुकड़ा  
जो किसी प्रकार का महसूल या  
फ़ीस चुकानेवाले को प्रमाण-पत्र के  
रूप में दिया जाय ।

टिकटी-संज्ञा स्त्री० १. शय ले जाने की  
रथी । २. दंड या फाँसी आदि देने  
का पुराना यंत्र-विशेष ।

टिकना-कि० अ० १. ठहरना । २.  
कुछ दिनों तक काम देना ।

टिकली-संज्ञा स्त्री० १. छोटी टिकिया ।

२. पत्नी या कर्च की बहुत छोटी  
विंदी ।

टिकस-संज्ञा पुं० महसूल ।

टिकार्दी-संज्ञा पुं० युवराज ।

संज्ञा स्त्री० टिकने का भाव ।

टिकाऊ-वि० मजबूत ।

टिकान-संज्ञा स्त्री० १. टिकने या ठह-  
रने का भाव । २. पड़ाव ।

टिकाना-कि० स० ठहराना ।

टिकाव-संज्ञा पुं० १. ठहराव । २.  
पड़ाव ।

टिकिया-संज्ञा स्त्री० गोख और चिपटा  
छोटा टुकड़ा ।

टिकुली-संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली" ।

टिकैत-संज्ञा पुं० १. युवराज । २.  
सरदार ।

टिकोरा-संज्ञा पुं० आम का छोटा  
और कच्चा फल ।

टिका-संज्ञा पुं० दे० "टीका" ।

टिकी-संज्ञा स्त्री० टिकिया ।

संज्ञा स्त्री० माथे पर की विंदी ।

टिघलना-कि० अ० दे० "पिघलना" ।

टिचन-वि० सैयार ।

टिटकारना-कि० स० [संज्ञा टिटकारी]  
'टिक टिक' कहकर हाँकना ।

टिट्ठरी-संज्ञा स्त्री० पानी के पास  
रहनेवाली एक छोटी चिड़िया । कुररी ।

टिट्ठिम-संज्ञा पुं० [स्त्री० टिट्ठिमी] टिट-  
हरी ।

टिट्ठा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा  
परदार कीड़ा ।

टिड्डी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उड़ने-  
वाला कीड़ा जो बड़ा भारी दल बाँध-  
कर चलता और पेड़ पौधों को बड़ी  
हानि पहुँचाता है ।

ठीकरी-संज्ञा स्त्री० मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा ।

ठीका-संज्ञा पुं० कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा ।

ठीकेदार-संज्ञा पुं० ठीका लेनेवाला ।

ठीहा-संज्ञा पुं० १. ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ों का कुंदा जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, चढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं । २. लकड़ी गढ़ने या चीरने का कुंदा । ३. सीमा ।

ठुंठ-संज्ञा पुं० सूखा हुआ पेड़ ।

ठुफना-क्रि० भ० पीटना ।

ठुड़ी-संज्ञा स्त्री० ठोड़ी ।

ठुमक-वि० जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं ।

ठुमकना-क्रि० भ० १. धड़ों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना । २. नाचने में पैर पटककर चलना जिसमें धुंधुरे धड़ें ।

ठुमरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी छंद एक ही छंदरे में समाप्त होता है ।

ठुरी-संज्ञा स्त्री० वह भूना हुआ दाना जो भूने पर न खिले ।

ठुसना-क्रि० भ० कसकर भरा जाना ।

ठुसाना-क्रि० स० कसकर भरवाना ।

ठूठ-संज्ञा पुं० सूखा पेड़ ।

ठूसना-क्रि० स० दे० "ठुसना" ।

ठूसना-क्रि० स० १. खुरा

भरना । २. घुसेड़ना ।

ठेंगना-वि० [स्त्री० ठेंगनी] छोटे ढील का ।

ठेंगा-संज्ञा पुं० १. अँगूठा । २. सोंटा ।

ठेंठी-संज्ञा स्त्री० १. कान की मैल ।

२. डाट ।

ठेंपी-संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंडी" ।

ठेका-संज्ञा पुं० सबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय ।

संज्ञा पुं० दे० "ठीका" ।

ठेकी-संज्ञा स्त्री० टेक ।

ठेठ-वि० १. निपट । २. शुद्ध ।

संज्ञा स्त्री० सीधी सादी बोली ।

ठेलना-क्रि० स० ढकेलना ।

ठेला-संज्ञा पुं० १. धक्का । २. एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ढेल या ढकेलकर चलाते हैं । ३. भीड़भाड़ ।

ठेलाठेल-संज्ञा स्त्री० धक्कामधक्का ।

ठेस-संज्ञा स्त्री० आघात ।

ठेना-संज्ञा स्त्री० जगह ।

ठोक-संज्ञा स्त्री० प्रहार ।

ठोकना-क्रि० स० १. पीटना । २.

गाढ़ना । ३. दापर करना । ४. धप-धपाना ।

ठोकर-संज्ञा स्त्री० ठेस ।

ठोठरी-वि० खाली ।

ठोड़ी-संज्ञा स्त्री० ठुड़ी ।

ठोरा-संज्ञा पुं० चौंच ।

ठोस-वि० १. जो खोखला न हो ।

२. दृढ़ ।

ठोहना-वि० ढेर करना ।

ठौर-संज्ञा पुं० १. मकड़ा ।

ड

ड-व्यंजनों में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा ध्वनि ।

डफ-संज्ञा पुं० कीड़ों के पीछे का जहरीला काँटा जिसे ये जीवों के शरीर में घँसाते हैं ।

डफना-कि० भ० मरजना ।

डफा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का नगाड़ा ।

डंगर-संज्ञा पुं० घोषापा ।

डंठल-संज्ञा पुं० छोटे पीधों की पेढ़ी और शाखा ।

डंठी-संज्ञा स्त्री० डंठल ।

डंड-संज्ञा पुं० १. डंडा । २. हाथ-पैर के पंजों के मल पट पड़कर की जाने-वाली एक प्रकार की कसरत । ३. दंड ।

डंडपेल-संज्ञा पुं० कसरती ।

डंडा-संज्ञा पुं० मोटी छड़ी । सीटा ।

डंडिया-संज्ञा पुं० कर लगा देनेवाला ।

डंडी-संज्ञा स्त्री० १. छोटी लंबी पत्तली लकड़ी । २. डंडी ।

डंडोरना-कि० स० डूँढ़ना ।

डंघर-संज्ञा पुं० टकोसला ।

डंघांडोल-वि० दे० “डांघांडोल” ।

डंस-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ विपक्ष कीड़ों का दलित या डंक घुमा हो ।

डकार-संज्ञा पुं० १. पेट की वायु का कंठ से रास्ट के साथ निकल पड़ने का शारीरिक व्यापार जिससे पेट का भरा होना सूचित होता है । २. दहाड़ ।

डकारना-कि० भ० १. डकार सेना ।

२. पचा जाना । ३. दहाड़ना ।

डकैत-संज्ञा पुं० डाकू ।

डकैती-संज्ञा स्त्री० छापा ।

डग-संज्ञा पुं० १. कदम । २. उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े ।

डगडगाना-कि० भ० १. इधर से उधर हिलना । २. लड़खड़ाना ।

डगना-कि० भ० १. हिलना । २. लड़खड़ाना ।

डगर-संज्ञा स्त्री० मार्ग ।

डगरना-कि० भ० चलना ।

डटना-कि० भ० घड़ना ।

डटाना-कि० स० भिड़ाना ।

डदियल-वि० डाढ़ीवाला ।

डपट-संज्ञा स्त्री० डार ।

डपटना-कि० स० डारना ।

डपोरसंख-संज्ञा पुं० १. डोंग मारने-वाला । २. मूल ।

डफ-संज्ञा पुं० डफला ।

डफला-संज्ञा पुं० दे० “डफ” ।

डफली-संज्ञा स्त्री० छोटा डफ ।

डधकोहा-वि० [ स्त्री० डधकौरी ] डध-डबाया हुआ ।

डयदवाना-कि० भ० अभयपूर्ण होना ।

डवरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० डवरी ] कुँड़

डवल-वि० दोहरा ।

संज्ञा पुं० अंगरेजी राज्य का पैसा ।

डवोना-कि० स० दे० “दुवाना” ।

डव्या-संज्ञा पुं० १. संपुट । २. रेखगाड़ी में की एक गाड़ी ।

डभकना-कि० भ० पानी में डूबना उतराना ।

डभकौरी-संज्ञा स्त्री० उरद की पीठी की बरी ।

तन्मय-वि० लक्षणीन ।  
 तन्मयता-संज्ञा स्त्री० लीनता ।  
 तप-संज्ञा पुं० १. तपस्या । २. नियम ।  
 संज्ञा पुं० १. ताप । २. ऊँच ।  
 तपकना-क्रि० प्र० १. धड़कना ।  
 २. दे० "टपकना" ।  
 तपन-संज्ञा पुं० १. आँख । २. सूर्य ।  
 ३. मोक्ष ।  
 संज्ञा स्त्री० गरमी ।  
 तपना-क्रि० प्र० १. तप्त होना । २.  
 तप करना ।  
 तपनी-संज्ञा स्त्री० दे० "तपन" ।  
 तपनी-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ  
 बैठकर आग तापते हैं ।  
 तपश्चर्या-संज्ञा स्त्री० तपस्या ।  
 तपस्वी-संज्ञा पुं० तपस्वी ।  
 तपस्या-संज्ञा स्त्री० तप ।  
 तपस्विता-संज्ञा स्त्री० तपस्वी होने  
 की अवस्था या भाव ।  
 तपस्विनी-संज्ञा स्त्री० १. तपस्या  
 करनेवाली स्त्री । २. तपस्वी की स्त्री ।  
 ३. पतिव्रता या सती स्त्री ।  
 तपस्वी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तपस्विनी ] वह  
 जो तप करता है ।  
 तपा-संज्ञा पुं० तपस्वी ।  
 तपाक-संज्ञा पुं० १. आवेश । २.  
 योग ।  
 तपाना-क्रि० प्र० १. गरम करना ।  
 २. दुःख देना ।  
 तपायत-संज्ञा पुं० तपस्वी ।  
 तपिता-वि० तपा हुआ ।  
 तपिश-संज्ञा स्त्री० गरमी ।  
 तपी-संज्ञा पुं० तपस्वी ।  
 तपेदिक-संज्ञा पुं० राजपदमा ।  
 तपोधन-संज्ञा पुं० बड़ा तपस्वी ।

तपोबल-संज्ञा पुं०, तप का प्रभाव या  
 शक्ति ।  
 तपोभूमि-संज्ञा स्त्री० तपोवन ।  
 तपोवन-संज्ञा पुं० तपस्वियों के रहने  
 या तपस्या करने के योग्य वन ।  
 तप्त-वि० १. गरम । २. दुःखित ।  
 तप्तीह-संज्ञा स्त्री० १. छुरी । २.  
 दिछुमी । ३. हवाछोरी ।  
 तप्तील-संज्ञा स्त्री० १. यज्ञ । २.  
 टीका । ३. कैफियत ।  
 तप्तायत-संज्ञा पुं० १. अंतर । २.  
 दूरी ।  
 तय-भ्य० १. उस समय । २. इस  
 कारण ।  
 तयक-संज्ञा पुं० १. लोक । २. चाँदी,  
 सोने के पत्तों को पीटकर कागज की  
 तरह बनाया हुआ पतला चरक ।  
 तयक्राण्ट-संज्ञा पुं० तपकिया ।  
 तयदील-वि० [ संज्ञा तपशीली ] जो  
 बदला गया हो ।  
 तयल-संज्ञा पुं० बड़ा डोख ।  
 तयलची-संज्ञा पुं० वह जो तमला  
 बनाता हो ।  
 तयला-संज्ञा पुं० ताँबे देने का एक  
 प्रसिद्ध बाजा ।  
 तयलिया-संज्ञा पुं० दे० "तयलची" ।  
 तवाशीर-संज्ञा पुं० धंसलोचन ।  
 तवाह-वि० [ संज्ञा तवाही ] चरमाद ।  
 तवाही-संज्ञा स्त्री० नारा ।  
 तवीअत-संज्ञा स्त्री० १. चित । २.  
 बुद्धि ।  
 तवीअ-संज्ञा पुं० वैद्य ।  
 तमी-भ्य० १. उन्नी समय । २. इसी  
 वजह से ।  
 तमचा-संज्ञा पुं० पिस्तौल ।  
 तम-संज्ञा पुं० अधकार ।

डमरू-संज्ञा पुं० १. घमड़ा मढ़ा एक बाजा जो बीच में पतला रहता और दोनों सिरे की ओर घराघर चौड़ा होता जाता है। २. इस आकार की कोई वस्तु।

डमरूमध्य-संज्ञा पुं० घरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूमि-खंडों को मिलाता हो।

डर-संज्ञा पुं० भय।

डरना-क्रि० अ० भयभीत होना।

डरपाना-क्रि० स० दे० "डराना"।

डरपोक-वि० भीरु।

डरवाना-क्रि० स० दे० "डराना"।

डराडरी-संज्ञा स्त्री० दे० "डर"।

डराना-क्रि० स० डर दिखाना।

डरावना-वि० जिससे डर लगे।

डराघा-संज्ञा पुं० १. डराने के लिये कहीं हुई धात। २. खटखटा।

डरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

डरीला-वि० डरावला।

डरीला-वि० डरावना।

डल-संज्ञा पुं० टुकड़ा।

डलना-क्रि० अ० डाला जाना।

डलवाना-क्रि० स० डालने का काम दूसरे से कराना।

डला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० डली ] टुकड़ा।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० डलिया ] टोकरा।

डलिया-संज्ञा स्त्री० दीरी।

डली-संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा।

संज्ञा स्त्री० दे० "डलिया"।

डसन-संज्ञा स्त्री० डसने की क्रिया, भाव या दंग।

डसना-क्रि० स० डंक मारना।

डसाना-क्रि० स० दाँत से कटवाना।

डहकना-क्रि० स० ठगना।

क्रि० अ० धिलखना।

डहकाना-क्रि० स० खोना।

क्रि० अ० ठगा जाना।

क्रि० स० ठगना।

डहडहा-वि० [ स्त्री० डहडही ] हरा-भा।

डहन-संज्ञा पुं० पंख।

डहना-क्रि० अ० १. जलना। २. द्वेष करना।

क्रि० स० जलाना।

डहरी-संज्ञा स्त्री० रास्ता।

डहरना-क्रि० अ० चलना।

डहराना-क्रि० स० चलाना।

डाँकना-क्रि० स० काँटना।

डाँगर-वि० चौपाया।

वि० १. बहुत दुबला-पतला। २. मूर्ख।

डाँट-संज्ञा स्त्री० १. शासन। २. उपट।

डाँटना-क्रि० स० घुड़कना।

डाँठा-संज्ञा पुं० डंठल।

डाँड़-संज्ञा पुं० १. डंडा। २. नाव

खेने का धड़ा। ३. हृद। ४. जुर-

माना। ५. हरजाना।

डाँड़ना-क्रि० अ० जुरमाना करना।

डाँड़ा-संज्ञा पुं० १. डंडा। २. नाव

खेने का डाँड़। ३. हृद।

डाँड़ी-संज्ञा स्त्री० १. लंबी पतली

लकड़ी। २. सराजू की डंडी। ३.

पतली शाखा। ४. रेखा।

डाँधरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० डोंधी ]

लड़का।

डाँवाँडोल-वि० चंचल।

डाइन-संज्ञा स्त्री० १. भूतनी। २.

टोनहाई। ३. कुरूप और डरावनी

स्त्री।

डाक-संज्ञा पुं० १. राज्य की ओर से

चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था।

तमक-संज्ञा पुं० १. जोश । २. तेजी ।  
तमकना-क्रि० प्र० १. क्रोध का  
आवेश दिखलाना । २. दे० "तम-  
तमाना" ।

तमगा-संज्ञा पुं० पदक ।

तमचर-संज्ञा पुं० १. राक्षस । २.  
वहलू ।

तमचुरा-संज्ञा पुं० मुरगा ।

तमचौरा-संज्ञा पुं० दे० "तमचुर" ।

तमतमाना-क्रि० प्र० भूष या क्रोध  
आदि के कारण चेहरा लाल होना ।

तमता-संज्ञा स्त्री० १. तम का भाव ।  
२. धँघेरा ।

तमस-संज्ञा पुं० १. अंधकार । २.  
तमसा नदी ।

तमसा-संज्ञा स्त्री० दौस नदी ।

तमस्तुक-संज्ञा पुं० दस्तावेज़ ।

तमहीव-संज्ञा स्त्री० भूमिका ।

तमा-संज्ञा पुं० राहु ।

संज्ञा स्त्री० रात ।

० संज्ञा स्त्री० लोभ ।

तमाकू-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध  
पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में  
काम में लाए जाते हैं । २. सुरती ।

३. इन पत्तों से तैयार की हुई एक  
प्रकार की मीठी पिंड़ी जिसे चिलम  
पर जलाकर मुँह से धुआँ खींचते हैं ।

तमाखू-संज्ञा पुं० दे० "तमाकू" ।

तमाचा-संज्ञा पुं० धप्पड़ ।

तमादी-संज्ञा स्त्री० किसी घात की  
मुहत या मियाद गुज़र जाना ।

तमाम-वि० १. पूरा । २. समाप्त ।

तमारि-संज्ञा पुं० सूर्य ।

तमाल-संज्ञा पुं० एक बहुत ऊँचा  
सुंदर सदाबहार वृक्ष ।

तमाशवीन-संज्ञा पुं० तमाशा देखने-  
वाला ।

तमाशा-संज्ञा पुं० वह दृश्य जिसके  
देखने से मनोरंजन हो ।

तमी-संज्ञा स्त्री० रात ।

तमीचर-संज्ञा पुं० राक्षस ।

तमीझ-संज्ञा स्त्री० १. विवेक । २.  
बुद्धि । ३. अदय ।

तमीश-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

तमोगुण-संज्ञा पुं० प्रकृति के तीन  
भावों में से एक जो भारी और दकने-  
वाला तथा निकृष्ट माना गया है ।

तमोगुणी-वि० जिसकी वृत्ति में तमो-  
गुण हो ।

तमोमय-वि० १. तमोगुण-युक्त । २.  
अज्ञानी ।

तमोरा-संज्ञा पुं० पान ।

तमोरी-संज्ञा पुं० दे० "तंबोली" ।

तमोला-संज्ञा पुं० १. पान का पीड़ा ।  
२. दे० "तंबोला" ।

तमोली-संज्ञा पुं० दे० "तंबोली" ।

तय-वि० १. समाप्त । २. सुकरर ।  
३. फैसला ।

तरंग-संज्ञा स्त्री० १. पानी की लहर ।

२. संगीत में स्वरों का चढ़ाव  
उतार । ३. चित्त की तमंग ।

तरंगधती-संज्ञा स्त्री० नदी ।

तरंगिणी-संज्ञा स्त्री० नदी ।

वि० स्त्री० तरंगवाली ।

तरंगित-वि० नीचे ऊपर उठता हुआ ।

तरंगी-वि० [स्त्री० तरंगिणी] १.  
जिसमें लहर हो । २. मनमौजी ।

तर-वि० १. भीगा हुआ । २. हरा ।

३. माखदार ।

[क्रि० वि० तले ।

२. कागज़ पत्र आदि जो डाक से आये ।  
 संश पु० नीखाम की धोखी ।  
 डाकखाना-संश पु० वह सरकारी दफ्तर जहाँ लोग चिट्ठी-पत्री आदि छोड़ते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं ।  
 डाकगाड़ी-संश स्त्री० डाक ले जाने-वाली रेलगाड़ी जो और गाड़ियों से सेज़ चलती है ।  
 डाकघर-संश पु० दे० "डाकखाना" ।  
 डाकना-कि० स० फाँदना ।  
 डाक पैगला-वह मकान जो सरकार की ओर से परदेसियों के ठहरने के लिये बना हो ।  
 डाका-संश पु० घटमारी ।  
 डाकाज़नी-संश स्त्री० घटमारी ।  
 डाकिन-संश स्त्री० दे० "डाकिनी" ।  
 डाकिनी-संश स्त्री० डाइन ।  
 डाकू-संश पु० लुटेरा ।  
 डाट-संश स्त्री० १. टेक । २. काग ।  
 संश पु० दे० "डाँट" ।  
 डाटना-कि० स० १. भिदाकर टेकना ।  
 २. छेद या मुँह बंद करना ।  
 डाढ़-संश स्त्री० चपाने के चौड़े दाँत ।  
 डाढ़ना-कि० स० जलाना ।  
 डाढ़ा-संश स्त्री० १. आग । २. ताप ।  
 डाढ़ी-संश स्त्री० १. थोठ के नीचे का बमरा हुआ गोल भाग । चिबुक ।  
 २. दाढ़ी ।  
 डाघर-संश पु० १. गड़ही । २. मैला पानी ।  
 डाघा-संश पु० दे० "ढाँघा" ।  
 डामर-संश पु० हलचल ।  
 डामल-संश स्त्री० उत्र भर के लिये कैद ।

डायन-संश स्त्री० १. डाकिनी । २. कुरूप स्त्री ।  
 डार-संश स्त्री० दे० "डाल" ।  
 संश स्त्री० डलिया ।  
 डारना-कि० स० दे० "डालना" ।  
 डाल-संश स्त्री० शाखा ।  
 संश स्त्री० १. डलिया । २. करदा और गहना जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है ।  
 डालना-कि० स० १. फेंकना । २. छोड़ना । ३. घुसाना । ४. पहनना ।  
 डाली-संश स्त्री० डलिया ।  
 संश स्त्री० दे० "डाल" ।  
 डालना-संश पु० विज्ञान ।  
 डालना-कि० स० विज्ञान ।  
 ाकि० स० डसना ।  
 डाह-संश स्त्री० जलन ।  
 डाहना-कि० स० जलाना ।  
 डिगल-वि० नीच ।  
 संश स्त्री० राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली लिखते हैं ।  
 डिब-संश पु० १. झंडा । २. कीड़े का छोटा पंथा ।  
 डिभ-संश पु० १. छोटा पंथा । २. मूल ।  
 † संश पु० आड़ंबर ।  
 डिगना-कि० स० १. टलना । २. विचलित होना ।  
 डिगलाना-कि० स० दे० "डुग-मगाना" ।  
 डिगाना-कि० स० १. सरकाना । २. बात पर स्थिर न रखना ।  
 डिगगी-संश स्त्री० तालाप ।  
 † संश स्त्री० हिममत ।



प्रत्य० एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य गुण में सूचित करता है।

तराई-संज्ञा स्त्री० नद्य।

तरकश-संज्ञा पुं० भाया। तूणीर।

तरकसी-संज्ञा स्त्री० छोटा तरकस।

तरकारी-संज्ञा स्त्री० भाजी।

तरकी-संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का फूल के आकार का एक गहना।

तरकीब-संज्ञा स्त्री० रपाय।

तरबकी-संज्ञा स्त्री० वृद्धि।

तरखान-संज्ञा पुं० मकई।

तरखाना-कि० भ० तिरछी आँख से इशारा करना।

तरजनी-कि० भ० डाँटना।

तरजनी-संज्ञा स्त्री० दे० "तर्जनी"। संज्ञा स्त्री० मय।

तरजुमा-संज्ञा पुं० अनुवाद।

तरणि-संज्ञा पुं० १. नदी आदि पार करना। २. निस्तार।

संज्ञा स्त्री० दे० "तरणी"।

तरणिजा-संज्ञा स्त्री० सूर्य की कन्या, यमुना।

तरणितनूजा-संज्ञा स्त्री० सूर्य की पुत्री, यमुना।

तरणी-संज्ञा स्त्री० नौका।

तरतीय-संज्ञा स्त्री० सिलसिला।

तरदुदुद-संज्ञा पुं० सोच।

तरनतार-संज्ञा पुं० निस्तार।

तरनतारन-संज्ञा पुं० १. बद्धार।

२. भवसागर से पार करनेवाला।

तरना-कि० स० पार करना।

कि० भ० मुक्त होना।

तरनि-संज्ञा स्त्री० दे० "तरणि"।

तरनी-संज्ञा स्त्री० नाव।

तरपना-कि० भ० दे० "तड़पना"।

तरपर-कि० वि० १. नीचे ऊपर।

२. एक के पीछे दूसरा।

तरफ-संज्ञा स्त्री० १. घोर। २. किनारा।

तरफदार-वि० [संज्ञा तरफदारी] पक्ष में रहनेवाला।

तरफराना-कि० भ० दे० "तड़फड़ाना"।

तर-घतर-वि० भौंगा हुआ।

तरवूज-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बेत। २. इस बेत के बड़े गोल फल जो खाने के काम में आते हैं।

तरमीम-संज्ञा स्त्री० संशोधन।

तरल-वि० १. चंचल। २. बहने-वाला।

तरलता-संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. द्रवत्व।

तरलाई-संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. द्रवत्व।

तरबन-संज्ञा पुं० १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।

तरघर-संज्ञा पुं० दे० "तड़घर"।

तरघा-संज्ञा पुं० दे० "तलवा"।

तरघार-संज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"। संज्ञा पुं० दे० "तरवार"।

तरस-संज्ञा पुं० दया।

तरसना-कि० भ० किसी वस्तु को न पाकर बेचैन रहना।

तरसाना-कि० स० कोई वस्तु न देकर उसके लिये बेचैन करना।

तरह-संज्ञा स्त्री० प्रकार।

तरहटी-संज्ञा स्त्री० १. भीची भूमि।

२. पहाड़ की तराई।

तराई-संज्ञा स्त्री० पहाड़ के नीचे का सीढ़ीवाला मैदान।

डिठार, डिठियार-वि० जिसे सुझाई

डिठाना-संज्ञा पुं० फाजल का टीका जो लड़कों को नज़र से बचाने के लिये छगाते हैं।

डिठिया-संज्ञा स्त्री० छोटा दक्कनदार परतन।

डिठ्या-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का दक्कनदार छोटा परतन। २. रेलगाड़ी की एक गाड़ी।

डिमडिमी-संज्ञा स्त्री० डुगडुगिया या डुग्गी नाम का याजा।

डोंग-संज्ञा स्त्री० शोड़ी।

डीठ-संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. देखने की शक्ति। ३. ज्ञान।

डीठना-वि० अ० दिखाना देना।  
क्रि० स० १. दिखाना। २. जादूगर।

डीम डाम-संज्ञा स्त्री० डाट।

डील-संज्ञा पुं० १. कद। २. शरीर।

डीह-संज्ञा पुं० १. आमादी। २. बजड़े हुप गाँव का टीला।

डुगडुगी-संज्ञा स्त्री० डुग्गी।

डुग्गी-संज्ञा स्त्री० दे० "डुगडुगी"।

डुपटना-क्रि० स० चुनियाना।

डुवकी-संज्ञा स्त्री० गोता।

डुवाना-क्रि० स० गोता देना।

डुयोना-क्रि० स० दे० "डुवाना"।

डुलाना-क्रि० स० १. हिलाना। २. टहलाना।

डूँगर-संज्ञा पुं० टीला।

डूचना-क्रि० अ० १. गोता खाना।

२. अस्त होना। ३. चौपट होना।

डूँहसी-संज्ञा स्त्री० ककड़ी की तरह की एक तरकारी।

डेड़हा-संज्ञा पुं० पानी का सर्प।

डेढ़-वि० एक पूरा और उसका आधा।

डेड़ा-वि० दे० "डेढ़"।

संज्ञा पुं० वह पहाड़ जिसमें प्रत्येक संख्या की देड़गुनी संख्या चतुर्धाई जाती है।

डेर-संज्ञा पुं० १. पड़ाव। २. मकान।

डेराना-क्रि० अ० दे० "डाना"।

डेल-संज्ञा पुं० १. बरलू पत्ती। २. रोड़ा। ३. पत्तियों को बंध काने का डला।

डेली-संज्ञा स्त्री० डलिया।

डेवड़ा-वि०, संज्ञा पुं० दे० "ड्योड़ा"।

डेवड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "ड्योड़ी"।

डेहरी-संज्ञा स्त्री० दे० "दहलीज़"।

डीना-संज्ञा पुं० पंख।

डोंगर-संज्ञा पुं० पहाड़ी।

डोंगा-संज्ञा पुं० १. बिना पाल की नाव। २. पड़ी नाव।

डोंगी-संज्ञा स्त्री० छोटी नाव।

डोथ, डोथा-संज्ञा पुं० डुपकी।

डोम-संज्ञा पुं० [ स्त्री० डोमिनी, डोमनी ]

एक अस्पृश्य नीच जाति। शमशान पर शव को आग देना, सूप-डब्बे आदि बेचना इनका काम है।

डोम कौआ-संज्ञा पुं० घड़ा और बहुत काला कौआ।

डोमड़ा-संज्ञा पुं० दे० "डोम"।

डोमनी-संज्ञा स्त्री० डोम जाति की स्त्री।

डोमिन-संज्ञा स्त्री० डोम जाति की स्त्री।

डोर-संज्ञा स्त्री० डेरा।

डोरा-संज्ञा पुं० धागा।

डोरिया-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिसमें कुछ मोटे सूत की लंबी धारियाँ बनी हों।

तराजू-संज्ञा पुं० सीधी डाँड़ी के छोरों से बंधे हुए दो पलड़े जिनसे वस्तुओं की तौल मालूम करते हैं ।

तरावोर-वि० खूब मीठा हुआ ।

तरारा-संज्ञा पुं० १. उछाल । २. पानी की धार जो बराबर किसी वस्तु पर गिरे ।

तरावट-संज्ञा स्त्री० १. गीलापन । २. ठंडक । ३. शरीर की गरमी शांत करनेवाला आहार आदि ।

तराश-संज्ञा स्त्री० काटने का ढंग या भाव ।

तराशना-कि० स० काटना ।

तरिका-संज्ञा स्त्री० विजली ।

तरिबन-संज्ञा पुं० १. कान में पहनने की तरकी । २. कर्णफूल ।

तरिवर-संज्ञा पुं० दे० "तरवर" ।

तरिहता-कि० वि० नीचे ।

तरी-संज्ञा स्त्री० नाव ।

संज्ञा स्त्री० १. गीलापन । २. ठंडक । ३. तराई ।

संज्ञा स्त्री० कान का एक गहना ।

तरीका-संज्ञा पुं० १. ढंग । २. व्यवहार । ३. उपाय ।

तरु-संज्ञा पुं० वृक्ष ।

तरुण-वि० [ स्त्री० तरुणी ] युवा ।

तरुणाई-संज्ञा स्त्री० युवावस्था ।

तरुणाना-कि० भ० जवानी पर आना ।

तरुणी-संज्ञा स्त्री० युवती ।

तरुनी-संज्ञा पुं० दे० "वरुण" ।

तरुनई, तरुनाई-संज्ञा स्त्री० जवानी ।

तरुनापा-संज्ञा पुं० दे० "तरुनाई" ।

तरुवाई-संज्ञा स्त्री० शाखा ।

तरो-कि० वि० नीचे ।

तरेटी-संज्ञा स्त्री० दे० "तराई" ।

तरेरना-कि० स० क्रोधपूर्वक देखना ।

तरोवर-संज्ञा पुं० दे० "तरुवा" ।

तरेंसा-संज्ञा पुं० तट ।

तरोना-संज्ञा पुं० कान में पहनने का एक गहना ।

तर्क-संज्ञा पुं० १. दलील । २. ताना ।

तर्कना-कि० भ० तर्क करना ।

तर्कवितर्क-संज्ञा पुं० १. सोचविचार । २. बहस ।

तर्कश-संज्ञा पुं० तीररखने का धोंगा ।

तर्कशास्त्र-संज्ञा पुं० १. विवेचना करने के नियम और सिद्धांतों के खंडन-मंडन की शैली बतझानेवाली विद्या या शास्त्र । २. न्यायशास्त्र ।

तर्कभास-संज्ञा पुं० कुतर्क ।

तर्की-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तर्किनी ] तर्क करनेवाला ।

तर्ज-संज्ञा पुं० १. प्रकार । २. रीति ।

तर्जन-संज्ञा पुं० [ वि० तर्जित ] भय-प्रदर्शन ।

तर्जना-कि० भ० डाँटना ।

तर्जनी-संज्ञा स्त्री० अँगूठे और मध्यमा के बीच की डँगली ।

तर्जुमा-संज्ञा पुं० भाषांतर ।

तर्पण-संज्ञा पुं० [ वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी ] १. तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया । २. ऋषियों और पितरों को तुष्ट करने के लिये द्राघ या अरघ्य से पानी देना ।

तल-संज्ञा पुं० १. नीचे का भाग । २. पैदा ।

तलछट-संज्ञा स्त्री० तलौछ ।

तलना-कि० स० कड़कड़ाते हुए धी या सेल में ढाबकर पकाना ।

डोरियाना-कि० स० पशुओं को  
रस्ती से बाँधकर ले चलना ।

डोरिहार-संज्ञा पुं० [खी० डोरिहारिन]  
पट्टा ।

डोरी-संज्ञा स्त्री० रस्ती ।

डोल-संज्ञा पुं० ढोहे का एक गोल  
घरतन ।

वि० चंचल ।

डोलची-संज्ञा स्त्री० ढोटा डोल ।

डोलडोल-संज्ञा पुं० चलना फिरना ।

डोलना-कि० स० चलायमान होना ।

डोला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० डोली ] स्त्रियों  
के बैठने की एक बंद सवारी जिसे  
कहार डोते हैं । मियाना ।

डोलाना-कि० स० हिलाना ।

डोली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सवारी

जिसे कहार लेकर चलते हैं ।

डौंड़ी-संज्ञा स्त्री० १. ढिंढोरा । २.  
घोषणा ।

डौआ-संज्ञा पुं० काठ का चमचा ।

डौल-संज्ञा पुं० १. ढाँचा । २. युक्ति ।  
३. रंग ढंग ।

डौलियाना-कि० स० ढंग पर खाना ।

ड्योढ़ा-वि० डेढ़गुना ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें  
थंको की डेढ़गुनी संख्या पतलाई  
जाती है ।

ड्योढ़ी-संज्ञा स्त्री० चौखट ।

ड्योढ़ीदार-संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ी-  
वान" ।

ड्योढ़ीवान-संज्ञा पुं० द्वारपाल ।

## ढ

ढ-हिंदी वर्णमाला का बीसहवाँ  
अक्षर जो ध्वनि और दृश्य का बीधा  
अक्षर । इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा  
है ।

ढंग-संज्ञा पुं० १. शैली । २. तद्वीर ।

३. आचरण । ४. दशा ।

ढंगलाना-कि० स० लुढ़काना ।

ढंगी-वि० चालवाझ ।

ढँढोर-संज्ञा पुं० ज्वाला ।

ढँढोरची-संज्ञा पुं० ढँढोरा फेरनेवाला ।

ढँढोरना-कि० स० दे० "ढँढना" ।

ढँढोरा-संज्ञा पुं० १. झुगझुगी । २.  
बहु घोषणा जो डोल बजाकर की  
जाय ।

ढपना-कि० अ० दे० "ढकना" ।

ढकना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ढकनी ]  
ढकन ।

कि० अ० धिपना ।

कि० स० दे० "ढाँकना" ।

ढकनी-संज्ञा स्त्री० ढकन ।

ढका-संज्ञा पुं० बड़ा डोल ।

संज्ञा पुं० घक्का ।

ढकिल-संज्ञा स्त्री० वेग के साथ  
घावा ।

ढकेलना-कि० स० धक्के से हटाना ।

ढकोसना-कि० स० एकवारगी बहुत  
सा पीना ।

ढकोसला-संज्ञा पुं० पाखंड ।

ढकन-संज्ञा पुं० धाँकने की वस्तु ।

तलपट-वि० बरपाइ ।  
 तलफ-वि० नष्ट ।  
 तलफना-क्रि० प्र० दे० "बढ़पना" ।  
 तलय-संज्ञा स्त्री० १. खोज । २. माँग ।  
 ३. तनखाइ ।  
 तलयगार-वि० चाहनेवाला ।  
 तलयाना-संज्ञा पुं० यह स्वर्च जो गवाहों को तलय करने के लिये अदालत में दाखिल किया जाता है ।  
 तलयी-संज्ञा स्त्री० १. गुलाबट । २. माँग ।  
 तलवेली-संज्ञा स्त्री० आतुरता ।  
 तलमलाना-क्रि० प्र० दे० "तिल-मलाना" ।  
 तलचा-संज्ञा पुं० पादतल ।  
 तलघार-संज्ञा स्त्री० छोहे का एक लंबा धारदार हथियार । खज्ज ।  
 तलहटी-संज्ञा स्त्री० तराई ।  
 तला-संज्ञा पुं० १. पदा । २. जूते के नीचे का चमड़ा ।  
 तलाक-संज्ञा पुं० पति पत्नी का विधान-पूर्ण संवेच-ह्याग ।  
 तलाक-संज्ञा पुं० ताल ।  
 तलाश-संज्ञा स्त्री० खोज ।  
 तलाशना-क्रि० प्र० दे० "तलाशना" ।  
 तलाशी-संज्ञा स्त्री० गुम हुई या बिपाई हुई वस्तु को पाने के लिये देख-भाल ।  
 तली-संज्ञा स्त्री० १. पैदी । २. हाथ या पर की हमेली या सलवा ।  
 तले-क्रि० वि० नीचे ।  
 तलेटी-संज्ञा स्त्री० १. पैदी । २. तलहटी ।  
 तलैया-संज्ञा स्त्री० छोटा ताल ।  
 तलाछ-संज्ञा स्त्री० तलछट ।  
 तलख-वि० [ संज्ञा तल्ली ] कटुया ।  
 तल्प-संज्ञा पुं० १. सेज । २. अष्टादिका ।

तल्ला-संज्ञा पुं० थलर ।  
 तष-सर्व० तुम्हारा ।  
 तबज्जह-संज्ञा स्त्री० ध्यान ।  
 तबना-क्रि० प्र० तपना ।  
 तवा-संज्ञा पुं० १. छोहे का वह छिछुरा गोला भरतन जिस पर रोटी सेकते हैं । २. मिट्टी या खपड़े का गोला डिग्रा जिसे चिलम पर रखकर तमाखू पीते हैं ।  
 तवायफ-संज्ञा स्त्री० वेश्या ।  
 तवारीख-संज्ञा स्त्री० इतिहास ।  
 तवालत-संज्ञा स्त्री० भ्रमकट ।  
 तशरीफ-संज्ञा स्त्री० बढ़पन ।  
 तशरी-संज्ञा स्त्री० घाली के आकार का लिङ्गला हलका भरतन ।  
 तस-वि० सैसा ।  
 कि० वि० सैसा ।  
 तसकीन-संज्ञा स्त्री० तसवली ।  
 तसदीक-संज्ञा स्त्री० १. सचाई । २. समर्थन । ३. गवाही ।  
 तसला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तसली ] कटोरे के आकार का पर वससे बड़ा और गहरा भरतन ।  
 तसलीम-संज्ञा स्त्री० १. सजाम । २. किसी बात की स्वीकृति ।  
 तसल्ली-संज्ञा स्त्री० १. सांत्वना । २. धैर्य ।  
 तसवीर-संज्ञा स्त्री० चित्र ।  
 तस्कर-संज्ञा पुं० १. चोर । २. भ्रवण ।  
 तस्करता-संज्ञा स्त्री० चोरी ।  
 तस्कर-संज्ञा स्त्री० १. चोरी । २. चोर की स्त्री । ३. चोर स्त्री ।  
 तस्मात्-अव्य० इसलिये ।  
 तस्य-अव्य० उसका ।  
 तह, तहर्वा-क्रि० वि० दे० "तह" ।  
 तह-संज्ञा स्त्री० १. परत । २. तल ।

ढका-संज्ञा स्त्री० घड़ा ढोल ।

ढचर-संज्ञा पुं० आडंबर ।

ढनमनाना-कि० अ० खुदकना ।

ढपना-संज्ञा पुं० ढाकने की वस्तु ।

कि० अ० ढका होना ।

ढफा-संज्ञा पुं० दे० "ढफ" ।

ढव-संज्ञा पुं० १. ढंग । २. आदत ।

ढयना-कि० अ० ध्वस्त होना ।

ढरकना-कि० अ० ढलना ।

ढरकाना-कि० स० पानी गिराकर  
पहाना ।

ढरकी-संज्ञा स्त्री० जुलाहों का एक  
औज़ार जिससे वे लोग बाने का सूत  
फैकते हैं ।

ढरनि-संज्ञा स्त्री० १. पतन । २. गति ।

३. झुकाव ।

ढर्रा-संज्ञा पुं० १. मार्ग । २. शैली ।

३. युक्ति । ४. चाल-चलन ।

ढलकना-कि० अ० १. ढलना । २.

खुदकना ।

ढलकाना-कि० स० १. द्रव पदार्थ  
को आधार से नीचे गिराना । २.

खुदकना ।

ढलना-कि० अ० १. ढरकना । २.

प्रवृत्त होना । ३. ढाला जाना ।

ढलवाई-वि० जो साँचे में ढालकर  
घनाया गया हो ।

ढलवाना-कि० स० ढालने का काम  
दूसरे से कराना ।

ढलाई-संज्ञा स्त्री० १. ढालने का भाव  
या काम । २. ढालने की मजदूरी ।

ढहना-कि० अ० ध्वस्त होना ।

ढहरी-संज्ञा स्त्री० दे० "ढहरी" ।

संज्ञा स्त्री० मिट्टी का मटका ।

ढहवाना-कि० स० गिरवाना ।

ढहाना-कि० स० ध्वस्त कराना ।

ढाँकना-कि० स० इस प्रकार ऊपर  
फैलाना कि नीचे की वस्तु छिप जाय ।

ढाँचा-संज्ञा पुं० १. ढोल । २. इस  
प्रकार जोड़े हुए लकड़ी आदि के  
घल्ले कि उनके बीच में कोई वस्तु  
जमाई या जड़ी जा सके । ३. ढट्टी ।  
४. प्रकार ।

ढाँपना-कि० स० दे० "ढाँपना" ।

ढासना-कि० अ० सूखी खाली  
खासना ।

ढाई-वि० दो और आधा ।

ढाक-संज्ञा पुं० पलाश का पेड़ ।

संज्ञा पुं० लड़ाई का ढोल ।

ढाड़-संज्ञा स्त्री० १. चिगवाड़ । २.  
चिछाहट ।

ढाड़ना-कि० स० दे० "ढाड़ना" ।

ढाड़स-संज्ञा पुं० धैर्य ।

ढाढ़ी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दादिन ] एक  
प्रकार के मुसलमान गवैए ।

ढारना-कि० स० ध्वस्त करना ।

ढाघरी-वि० मटमैला ।

ढामक-संज्ञा पुं० ढोल आदिका शब्द ।

ढारना-कि० स० दे० "ढालना" ।

ढारस-संज्ञा पुं० दे० "ढाड़स" ।

ढाल-संज्ञा स्त्री० तलवार आदि का  
बार रोकने का गोल धक्का या धातु  
की फरी ।

संज्ञा स्त्री० १. उतार । २. ढंग ।

ढालना-कि० स० १. उँढ़लना । २.

साँचे में ढालकर कोई चीज़ घनाना ।

ढालवाई-वि० [ स्त्री० ढालवी ] ढालू ।

ढालू-वि० दे० "ढालवी" ।

ढिँढोरना-कि० स० मथना ।

ढिँढोरा-संज्ञा पुं० १. दुंगदुंगिया ।

२. घोषणा ।

ढिग-कि० वि० पास ।

तहकीक-संज्ञा स्त्री० दे० "तहकीकात"।  
 तहकीकात-संज्ञा स्त्री० जाँच।  
 तहखाना-संज्ञा पुं० वह कोठरी या घर जो ज़मीन के नीचे बना हो।  
 तहजीब-संज्ञा स्त्री० सम्यक्ता।  
 तहमत-संज्ञा स्त्री० लुंगी।  
 तहरीर-संज्ञा स्त्री० १. लिखावट। २. लेख-शैली। ३. लिखी हुई बात। ४. लिखाई।  
 तहरीरी-वि० लिखा हुआ।  
 तहलका-संज्ञा पुं० १. मौत। २. घर-घादी। ३. खलबली।  
 तहबीलदार-संज्ञा पुं० कोषाध्यक्ष।  
 तहस-तहस-वि० बरबाद।  
 तहसील-संज्ञा स्त्री० १. घसूली। २. वह थामदनी जो जगान घसूल करने से इकट्ठी हो।  
 तहसीलदार-संज्ञा पुं० १. फर घसूल करनेवाला। २. वह अफसर जो ज़मींदारों से सरकारी मालगुजारी घसूल करता और माज के छोटे मुकदमों का फैसला करता है।  
 तहसीलदारी-संज्ञा स्त्री० १. तहसीलदार या पद। २. तहसीलदार की कचहरी।  
 तहसीलना-क्रि० स० उगाहना।  
 तहर्ता-क्रि० वि० उस स्थान पर।  
 तहाना-क्रि० स० तह करना।  
 तहियाँ-क्रि० वि० तय।  
 तहियाना-क्रि० स० दे० "तहाना"।  
 तह्नी-क्रि० वि० उसी जगह।  
 तह्नी-क्रि० वि० दे० "तह्नी"।  
 तहगा-संज्ञा पुं० डीले डोचों की एक गाड़ जिसे घोड़ा खींचता है और जिस पर लोग प्रायः पीछे की ओर मुँह करके बैठते हैं।

तांडव-संज्ञा पुं० १. शिव का नृत्य। २. पुरुष का नृत्य।  
 तात-संज्ञा स्त्री० भेद, घकरी की श्रैतदी, या चौपायों के पुट्टों को घटकर बनाया हुआ सूत।  
 ताँता-संज्ञा पुं० धेयी।  
 ताँति-संज्ञा स्त्री० दे० "ताँत"।  
 ताँती-संज्ञा स्त्री० पंक्ति।  
 संज्ञा पुं० जुलाहा।  
 तांत्रिक-वि० [ स्त्री० तांत्रिकी ] तंत्र-संयोजी।  
 संज्ञा पुं० तंत्रशास्त्र का ज्ञानेवाला।  
 ताँया-संज्ञा पुं० जाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु।  
 ताँवूल-संज्ञा पुं० पान।  
 ताई-अभ्य० १. तक। २. पास। ३. लक्ष्य करके। ४. लिये।  
 ताई-संज्ञा स्त्री० जेठी चाची।  
 ताईद-संज्ञा स्त्री० १. पक्षपात। २. समर्थन।  
 ताऊ-संज्ञा पुं० बाप का बड़ा भाई।  
 ताऊन-संज्ञा पुं० प्लेग का रोग।  
 ताऊस-संज्ञा पुं० १. मोर। २. सांभरी से मिलता-जुलता एक धागा।  
 ताक-संज्ञा स्त्री० १. अवलोकन। २. टकटकी। ३. घात। ४. खोज।  
 ताक-संज्ञा पुं० ताखा।  
 ताकित-संज्ञा स्त्री० ज़ोर।  
 ताकतवर-वि० बलवान्।  
 ताफना-क्रि० स० देखना।  
 ता की-अभ्य० हसलिये कि जिससे।  
 ताकीद-संज्ञा स्त्री० खूब चेताकर कही हुई बात।  
 तागड़ी-संज्ञा स्त्री० १. करधनी। २. कमर में पहनने का रंगीन डोरा। ३. करगता।

संश खी० १. पास । २. सट । ३.  
कपड़े का किनारा ।  
ढिठाई-संश खी० १. पटता । २.  
अनुचित साहस ।  
ढिचरी-संश खी० वह ढिबिया जिसके  
मुँह पर बत्ती लगाकर मिट्टी का चेल  
जलाते हैं ।  
संश खी० कसे जानेवाले पेश के  
सिरे पर का छोड़े का छछा ।  
ढिलाई-संश खी० ढीला ।  
संश खी० ढीलने की क्रिया या भाव ।  
ढिलाना-कि० स० १. ढीलने का  
काम कराना । २. ढीला कराना ।  
‡ कि० स० ढीला करना ।  
ढीट-संश खी० रेखा ।  
ढीठ-वि० १. बेधदब । २. अनुचित  
साहस करनेवाला ।  
ढीठ्यो-संश पुं० दे० "ढीठ" ।  
ढील-संश खी० १. शिथिलता । २.  
बंधन को ढीला करने का भाव ।  
† संश पुं० पालों का कीड़ा ।  
ढीलना-कि० स० ढीला करना ।  
ढीला-वि० १. जो कसा या तना  
हुआ न हो । २. शिथिल ।  
ढीलापन-संश पुं० ढीला होने का  
भाव ।  
ढुँढ़ाना-कि० स० सलाश करना ।  
ढुँढ़िराज-संश पुं० गणेश ।  
ढुँढी-संश खी० बाँह । मुरक ।  
ढुकना-कि० प्र० घुमना ।  
ढुनमुनियाँ-संश खी० लुढ़कने की  
क्रिया या भाव ।  
ढुरना-कि० प्र० १. हुरफना । २.  
फिसल पड़ना । ३. अनुकूल होना ।  
ढुराना-कि० स० गिराकर बहाना ।  
ढुरी-संश खी० पगडंडी ।

ढुलकना-कि० प्र० लुढ़कना ।  
ढुलकाना-कि० स० दे० "लुढ़काना" ।  
ढुलना-कि० प्र० १. लुढ़कना । २.  
मुकना ।  
ढुलघाई-संश खी० ढोने का काम,  
भाव या मजदूरी ।  
संश खी० ढुलाने की क्रिया, भाव  
या मजदूरी ।  
ढुलाना-कि० स० १. ढरकाना । २.  
लुढ़काना ।  
कि० स० ढोने का काम कराना ।  
ढूँढ़-संश खी० खोज ।  
ढूँढ़ना-कि० स० खोजना ।  
ढूसर-संश पुं० बनियों की एक जाति ।  
ढूँह, ढूँहा-संश पुं० डेर ।  
ढेंक-संश खी० पानी के किनारे रहने-  
वाली एक चिड़िया ।  
ढेंकली-संश खी० १. सिंचाई के लिये  
कूप से पानी निकासने का एक यंत्र ।  
२. घान फूटने का लकड़ी का एक  
यंत्र । ठकी । ३. कलापाड़ी ।  
ढेंकी-संश खी० अनाज फूटने की  
ढेंकली ।  
ढेंढर-संश पुं० ढेंढर ।  
ढेंवुआ-संश पुं० पैसा ।  
ढेर-संश पुं० राशि ।  
† वि० अधिक ।  
ढेरी-संश खी० ढेर ।  
ढेलवाँस-संश खी० रस्सी का वह  
फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं ।  
ढेला-संश पुं० १. चक्का । २. डकड़ा ।  
ढैया-संश खी० १. दाईं सेर लौखने  
का घटखरा । २. दाईं गुने का पहाड़ा ।  
ढोंग-संश पुं० ढकोसला ।  
ढोंगवाड़ी-संश खी० पाखंड ।



तागना-क्रि० स० दूर दूर पर मोटी  
सिलाई करना ।

तागा-संज्ञा पुं० डोरा । धागा ।

ताज-संज्ञा पुं० १. राजमुकुट । २.

धामरे का ताजमहल ।

ताजगी-संज्ञा स्त्री० १. ताजापन । २.  
प्रकुलता ।

ताजदार-संज्ञा पुं० यादशाह ।

ताजन-संज्ञा पुं० कोड़ा ।

ताजमहल-संज्ञा पुं० धामरे का  
प्रसिद्ध मकबरा ।

ताजा-वि० [ स्त्री० ताजी ] १. हरा  
भरा । २. ( फल आदि ) जिसे  
पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई  
हो । ३. मुरत का बना ।

ताजिया-संज्ञा पुं० घाँस की कम-  
चियों आदि का मकबरे के आकार  
का मंडप जिसमें इनाम हुसेन की  
कब्र होती है ।

ताजी-वि० श्रम का ।

संज्ञा पुं० १. श्रम का मोड़ा । २.  
शिकारी कुत्ता ।

ताजीम-संज्ञा स्त्री० सम्मान-प्रदर्शन ।

ताड़-संज्ञा पुं० १. शाखा-रहित एक  
बड़ा और प्रसिद्ध पेड़ जो खंभे के  
रूप में ऊपर की ओर बढ़ता चला  
जाता है और केवल सिरे पर पत्ते  
धारण करता है । २. ताड़न ।

ताड़न-संज्ञा पुं० १. मार । २. डाँट-  
उपट ।

ताड़ना-संज्ञा स्त्री० १. प्रहार । २.  
डाँट-उपट ।

क्रि० स० १. मारना । २. डाँटना-  
उपटना ।

क्रि० स० मारना ।

ताड़ित-वि० जिस पर प्रहार

पड़ा हो ।

ताड़ी-संज्ञा स्त्री० ताड़ के डंठलों से  
निकाला हुआ नशीला रस जिसका  
व्यवहार मद्य के रूप में होता है ।

तात-संज्ञा पुं० १. पिता । २. पूज्य  
व्यक्ति । ३. प्यार का एक शब्द  
या सेवोपन जो भाई या मित्र और  
विशेषतः छोटे के लिये व्यवहृत  
होता है ।

† वि० गरम ।

ताता-वि० [ स्त्री० तातो ] तपा हुआ ।

तातायेई-संज्ञा स्त्री० माचने में पैर के  
गिरने आदि का अनुकरण शब्द ।

तातील-संज्ञा स्त्री० शुद्धी का दिन ।

तात्कालिक-वि० तत्काल या मुरत  
का ।

तात्पर्य-संज्ञा पुं० अर्थ ।

तात्त्विक-वि० तत्त्व-संबंधी ।

तायेई-संज्ञा स्त्री० दे० "तातायेई" ।

तादाद-संज्ञा स्त्री० संख्या ।

तान-संज्ञा स्त्री० १. खींच । २.  
आलाप ।

तानना-क्रि० स० १. फैलाने के लिये  
ओर से खींचना । २. मारने के  
लिये हाथ या कोई हथियार बढाना ।

तानपूरा-संज्ञा पुं० सितार के आकार  
का एक बाजा । तंधूरा ।

तानवाना-संज्ञा पुं० दे० "ताना-  
धाना" ।

ताना-संज्ञा पुं० १. कपड़े की बुना-  
वट में लंबाई के बल के सूत । २.  
दरी या कालीन बुनने का करघा ।

† क्रि० स० मूँदना ।

संज्ञा पुं० व्यंग्य ।

ताना-धाना-संज्ञा पुं० कपड़ा बुनने  
में लंबाई और चौड़ाई के बल

ढोंगी-वि० पाखंडी ।  
 ढोढी-संज्ञा स्त्री० नाभि ।  
 ढोटा-संज्ञा पुं० [स्त्री० ढोटी] १. पुत्र ।  
 २. लड़का ।  
 ढोढाना-संज्ञा पुं० दे० "ढोटा" ।  
 ढोना-क्रि० स० १. भार ले चलना ।  
 २. ढा ले जाना ।  
 ढोर-संज्ञा पुं० चौपाया ।  
 ढोरना-क्रि० स० ढरकाना ।  
 ढोरी-संज्ञा स्त्री० १. ढालने या ढर-  
 काने की क्रिया या भाष । २. रट ।  
 ढोल-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का

याजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मड़ा  
 होता है । २. कान का परदा ।  
 ढोलक-संज्ञा स्त्री० छोटा ढोल ।  
 ढोलनी-संज्ञा स्त्री० बच्चों का भूला ।  
 ढोलिनी-संज्ञा स्त्री० ढोल बजानेवाली  
 स्त्री ।  
 ढोलिया-संज्ञा पुं० [स्त्री० ढोलिनी] ढोल  
 बजानेवाला ।  
 ढोली-संज्ञा स्त्री० २०० पानों की गड्ढी ।  
 संज्ञा स्त्री० हँसी ।  
 ढोघ-संज्ञा पुं० डाली । नज़र ।  
 ढोंचा-संज्ञा पुं० साढ़े चार का पहाड़ा ।

## ण

ण-हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का  
 पंद्रहवाँ व्यंजन । इसका उच्चारण-  
 स्थान मूर्धा है ।

णगण-संज्ञा पुं० दो मात्राओं का  
 एक गण ।

## त

त-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का  
 बत्तीसवाँ व्यंजन, वर्ण का १६ वाँ  
 और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका  
 उच्चारण-स्थान दंत है ।

तंग-संज्ञा पुं० कसन ।  
 वि० १. कसा । २. हीरान । ३. सुखा ।  
 तंगदस्त-वि० [ संज्ञा तंगदस्ती ] १.  
 कंजूस । २. गरीब ।  
 तंगी-संज्ञा स्त्री० १. संकीर्णता । २.  
 निर्धनता । ३. कमी ।

तंजेघ-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की महीन  
 और चढ़िया मछल ।

तंड-संज्ञा पुं० नृत्य ।  
 तंडव-संज्ञा पुं० दे० "तांडव" ।  
 तंडुल-संज्ञा पुं० चावल ।  
 तंतमंत-संज्ञा पुं० दे० "तंत्रमंत्र" ।  
 तंतरी-संज्ञा पुं० वह जो तारवाले  
 बाजे बजाता हो ।  
 तंतुघादक-संज्ञा पुं० संघी ।  
 तंतुघाय-संज्ञा पुं० कपड़े बुननेवाला ।

कैलाप हुए सूत ।  
 ताना रीरी-संज्ञा स्त्री० साधारण गाना ।  
 तानी-संज्ञा स्त्री० कपड़े की बुनावट में लंबाई के घल के सूत ।  
 ताप-संज्ञा पुं० १. गरमी । २. आँच । ३. ज्वर ।  
 तापतिल्ली-संज्ञा स्त्री० प्लीहा रोग ।  
 तापन-संज्ञा पुं० १. ताप देनेवाला । २. सूर्य ।  
 तापना-क्रि० प्र० आग की आँच से अपने को गरम करना ।  
 कि० स० १. गरम करने के लिये जलाना । २. नष्ट करना ।  
 कि० स० तपाना ।  
 तापमान यंत्र-संज्ञा पुं० थर्मामीटर ।  
 तापस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तापसी ] १. तपस्वी । २. तेजपत्ता ।  
 तापसतक, तापसहुम-संज्ञा पुं० इंगुदी वृक्ष ।  
 तापसी-संज्ञा स्त्री० १. तपस्या करनेवाली स्त्री । २. तपस्वी की स्त्री ।  
 तपा-संज्ञा पुं० सुरगी का दारवा ।  
 तापित-वि० १. जो तपाया गया हो । २. दुःखित ।  
 तापी-वि० १. ताप देनेवाला । २. जिसमें ताप हो ।  
 संज्ञा पुं० बुद्धदेव ।  
 संज्ञा स्त्री० तापती नदी ।  
 तापेंद्र-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 ताप-संज्ञा स्त्री० १. ताप । २. चमक । ३. शक्ति ।  
 ताबड़तोड़-क्रि० वि० जगातार ।  
 ताबे-वि० वशीभूत ।  
 ताबेदार-वि० [ संज्ञा ताबेदार ] आज्ञाकारी ।

तामड़ा-वि० ताँबे के रंग का ।  
 तामरस-संज्ञा पुं० १. कमल । २. सेना ।  
 तामस-वि० [ स्त्री० तामसी ] तमोगुण से युक्त ।  
 तामसी-वि० स्त्री० तमोगुणवाली । संज्ञा स्त्री० अंधेरी रात ।  
 तामिल-संज्ञा स्त्री० [ देश० ] १. भारत के दक्षिण प्रांत की एक जाति जो आधुनिक मद्रास प्रांत के अधिकांश भाग में निवास करती है । २. द्राविड़ भाषा ।  
 तामील-संज्ञा स्त्री० पालन ।  
 ताम्र-संज्ञा पुं० ताँबा ।  
 ताम्रचूड़-संज्ञा पुं० सुरगा ।  
 ताम्रपत्र-संज्ञा पुं० ताँबे की चदर का यह टुकड़ा जिम पर प्राचीन काल में अक्षर खुदवाकर दानपत्र आदि लिखते थे ।  
 ताम्रपर्णी-संज्ञा स्त्री० १. तालाब । २. मद्रास की एक छोटी नदी ।  
 तायदादा-संज्ञा स्त्री० दे० "तादाद" ।  
 तायफा-संज्ञा पुं० स्त्री० १. वेश्याओं और समाजियों की मंडली । २. वेश्या ।  
 तायना-क्रि० स० तपाना ।  
 ताय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तारी ] बड़ा चाचा ।  
 तार-संज्ञा पुं० १. चाँदी । २. तपी हुई धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तारा । ३. टेलिग्राफ । ४. तार से बंधे हुए खूबर । ५. धराधर-चलता हुआ क्रम ।  
 तारक-संज्ञा पुं० १. तारा । २. वह जो पार बतारे ।  
 तारकश-संज्ञा पुं० धातु का तार

तंत्र-संज्ञा पुं० १. सूतः। २. आड़ने फूटने का मंत्र।

तंजी-संज्ञा स्त्री० १. सितार आदि बाजों में खगा हुआ तार। २. बाजा जिसमें बजाने के लिये तार जगे हो।

संज्ञा पुं० वह जो बाजा बजाता हो।

तंदुरुस्त-वि० नीरोग।

तंदुरुस्ती-संज्ञा स्त्री० स्वास्थ्य।

तंदुल-संज्ञा पुं० दे० "तंदुल"।

तंदेही-संज्ञा स्त्री० १. परिश्रम। २. प्रयत्न।

तंद्रा-संज्ञा स्त्री० १. बँधाई। २. हलकी बेहोशी।

तंद्रालु-वि० जिसे तंद्रा आती हो।

तंवाकू-संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।

तंबिया-संज्ञा पुं० तंबे या और किसी चीज का बना हुआ छोटा तसला।

तंबियाना-कि० प्र० १. तंबे के रंग का होना। २. तंबे के घरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में तंबे का स्वाद या गंध आ जाना।

तंबीह-संज्ञा स्त्री० १. नसीहत। २. तर्काद।

तंबू-संज्ञा पुं० शालियाना।

तंबूरची-संज्ञा पुं० संपूरा बजानेवाला।

तंबूरा-संज्ञा पुं० धीन या सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।

तंबूल-संज्ञा पुं० दे० "तांबूल"।

तंबोली-संज्ञा पुं० वह जो पान बेचता हो। बरई।

तथजुय-संज्ञा पुं० आश्चर्य।

तथल्लुक-संज्ञा पुं० बड़ा हलाका।

तथल्लुकदार-संज्ञा पुं० हलाकदार।

तथल्लुकदारी-संज्ञा स्त्री० तथल्लुकदार का पद या भाव।

तथल्लुक-संज्ञा पुं० संबंध।

तथल्लुका-संज्ञा पुं० दे० "तथल्लुक"।

तथस्सुय-संज्ञा पुं० धर्म या जाति-संबंधी पचपात।

तहसा-वि० दे० "वैसा"।

तह-प्रत्य० से।

प्रत्य० प्रति।

अभ्य० लिये।

तह-संज्ञा स्त्री० घाली के आकार की छिड़की कढ़ाही।

तउ-अभ्य० १. दे० "तह"। २. दे० "तौ"।

तऊ-अभ्य० तो भी।

तफ-अभ्य० पर्यंत।

संज्ञा स्त्री० दे० "टक"।

तफदीर-संज्ञा स्त्री० भाग्य।

तफदीरघर-वि० भाग्यवान्।

तकन-संज्ञा स्त्री० देखना।

तकना-कि० प्र० देखना।

तकमा-संज्ञा पुं० दे० "तमगा"।

तकरार-संज्ञा स्त्री० झुगत।

तकरीर-संज्ञा स्त्री० १. पाठधीत। २. वक्तृता।

तकला-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० तकली] १. चरखे में लोहे की वह सघाई जिस पर सूत लिपटता जाता है।

टेकुआ। २. रस्ती बनाने की टिकुरी।

तकलीफ-संज्ञा स्त्री० १. कष्ट। २. विपत्ति।

तकल्लुफ-संज्ञा पुं० शिष्टाचार।

तकसीम-संज्ञा स्त्री० १. बँटाई। २. भाग।

तफाई-संज्ञा स्त्री० ताकने की क्रिया या भाव।

खींचनेवाला ।

तारका-संज्ञा स्त्री० १. तारा । २. आँख की पुतली ।

तारकेश्वर-संज्ञा पुं० शिव ।

तारघर-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से तार की खर भेजी जाय ।

तारण-संज्ञा पुं० १. पार उतारने का काम । २. उद्धार । ३. उद्धार करनेवाला ।

तारन-संज्ञा पुं० दे० "तारण" ।

तारना-क्रि० स० पार लगाना ।

तारपीन-संज्ञा पुं० चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो प्रायः औषध के काम में आता है ।

तारवर्फी-संज्ञा पुं० चित्रकारी की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचानेवाला तार ।

तारा-संज्ञा पुं० १. सितारा । २. आँख की पुतली ।

ताराज-संज्ञा पुं० लूट-पाट ।

तारापथ-संज्ञा पुं० आकाश ।

तारामंडल-संज्ञा पुं० नक्षत्रों का समूह या घेरा ।

तारिणी-वि० स्त्री० तारनेवाली ।

तारी-संज्ञा स्त्री० दे० "ताली" ।

† संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़ी" ।

तारीख-संज्ञा स्त्री० १. तिथि । २. वह तिथि जिसमें पूर्व-काल के किसी वर्ष में कोई विशेष घटना हुई हो ।

तारीफ-संज्ञा स्त्री० १. लफ्फ । २. वर्णन । ३. प्रशंसा । ४. विशेषता ।

तारुण्य-संज्ञा पुं० जवानी ।

तारुण्य-संज्ञा पुं० १. तपस्या का जाननेवाला । २. तरुण्य ।

ताल-संज्ञा पुं० १. करतल । २. ताली । ३. नाचने गाने में उसके मध्यवर्ती

काल और क्रिया का परिमाण ।

४. जंघे या पाहु पर जोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया हुआ शब्द ।

संज्ञा पुं० तालाव ।

तालकेतु-संज्ञा पुं० १. भीम । २. बजराम ।

तालपर्णी-संज्ञा स्त्री० १. सौंफ । २. कपूरकचरी ।

तालमेल-संज्ञा पुं० ताल-सुर का मिलान ।

तालरस-संज्ञा पुं० ताड़ी ।

तालघन-संज्ञा पुं० १. ताड़ के पेड़ों का जंगल । २. मज का एक पद ।

तालव्य-वि० १. ताल-संघर्षी । २. ताल से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण ।

ताला-संज्ञा पुं० बोहे, पीतल आदि की वह कल जिसे बंद किया, संदूक आदि की कुंजी में फँसा देने से वह बिना कुंजी के नहीं खुल सकता ।

तालाब-संज्ञा पुं० जलाशय ।

तालिका-संज्ञा स्त्री० १. ताली । २. नयी या ताजा जिससे तालपत्र या कागज़ बँधे हो । ३. सूची ।

तालिब-संज्ञा पुं० हुँदनेवाला ।

तालिबुल्लम-संज्ञा पुं० विद्यार्थी ।

ताली-संज्ञा स्त्री० १. कुंजी । २. चाबी । ३. योड़ी । ४. करतल-ध्वनि ।

संज्ञा स्त्री० छोटा ताल ।

तालीम-संज्ञा स्त्री० शिक्षा ।

ताल-संज्ञा पुं० ताल ।

तालुका-संज्ञा पुं० दे० "तहसिलुका" ।

तालु-संज्ञा पुं० मुँह के भीतर की ऊपरी छत ।

तालेघर-वि० धनी ।

तदधीर-संज्ञा स्त्री० उपाय ।

तदा-क्रि० वि० उस समय ।

तदारुह-संज्ञा पुं० भागे हुए अपराधी  
आदि की खोज या किसी दुर्घटना  
के संवध में जाँच ।

तदीय-सर्व० उसका ।

तदुपरांत-क्रि० वि० उसके पीछे ।

तद्व-वि० वह ।

क्रि० वि० उस समय । तथ ।

तद्वगत-वि० १. उससे संवध रखने-  
वाला । २. उसके अंतर्गत ।

तद्वित-संज्ञा पुं० व्याकरण में एक  
प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत  
में लगाकर शब्द बनाते हैं ।

तद्वभष-संज्ञा पुं० संस्कृत का वह  
शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ  
परिवर्तित हो गया हो ।

तद्यपि-अव्य० तथापि ।

तद्रूप-वि० समान ।

तद्रूपता-संज्ञा स्त्री० सादृश्य ।

तद्वत्-वि० वही के जैसा ।

तन-संज्ञा पुं० शरीर ।

क्रि० वि० तरफ़ ।

० वि० दे० "तनिक" ।

तनकीह-संज्ञा स्त्री० जाँच ।

तनखाह-संज्ञा स्त्री० घेतन ।

तनगना-क्रि० अ० दे० "तिन-  
कना" ।

तनज्ञेय-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
चहुत महीन और बढ़िया मलमल ।

तनतनाना-क्रि० अ० १. शान  
दिखाना । २. क्रोध करना ।

तनना-क्रि० अ० १. खिंचाव या  
खुरकी आदि के कारण किसी  
पदार्थ का विस्तार बढ़ना । २.

पैठना ।

तनमय-वि० दे० "तन्मय" ।

तनय-संज्ञा पुं० बेटा ।

तनया-संज्ञा स्त्री० बेटा ।

तनघाना-क्रि० अ० तनाना ।

तनमुख-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
बढ़िया फूलदार कपड़ा ।

तनहा-वि० अकेला ।

क्रि० वि० अकेले ।

तनहार्-संज्ञा स्त्री० १. अकेलापन ।  
२. एकांत ।

तनाज्ञा-संज्ञा पुं० १. बखेड़ा । २.  
शत्रुता ।

तनाना-क्रि० अ० दे० "तनवाना" ।

तनाव-संज्ञा पुं० तनने का भाव या  
क्रिया ।

तनि, तनिक-वि० थोड़ा ।

क्रि० वि० ज़रा ।

तनी-क्रि० वि० दे० "तनिक" ।

तनु-वि० १. थोड़ा । २. कोमल ।  
संज्ञा स्त्री० शरीर ।

तनुका-क्रि० वि० दे० "तनिक" ।

तनुज-संज्ञा पुं० बेटा ।

तनुजा-संज्ञा स्त्री० लड़की ।

तनुता-संज्ञा स्त्री० लघुता ।

तनुत्राण-संज्ञा पुं० कवच ।

तनुधारी-वि० देहधारी ।

तनुज-संज्ञा पुं० दे० "तनुज" ।

तनेना-वि० [ स्त्री० तनेनी ] १. टेढ़ा ।  
२. क्रुद्ध ।

तने-संज्ञा पुं० दे० "तनय" ।

तनेया-संज्ञा स्त्री० बेटा ।

तनोज-संज्ञा पुं० १. रोमाँ । २.  
लड़का ।

तनोरुह-संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह" ।

तनाना-क्रि० अ० थकाना ।

ताल्लुक-संज्ञा पुं० दे० "तथल्लुक"।  
ताप-संज्ञा पुं० १. वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिये पहुँचाई जाय। २. शोखी की भौंक।

संज्ञा पुं० कागज का तपता।

तावत्-क्रि० वि० १. तब तक। २. वतनी दूर तक।

तावना-क्रि० सं० १. तपाना। २. जलाना।

ताव भाव-संज्ञा पुं० भौका।

तावरी-संज्ञा स्त्री० १. ताप। २. धूप। ३. धुआँ।

तावान-संज्ञा पुं० दूँड।

तावीज़-संज्ञा पुं० जंतर।

ताश-संज्ञा पुं० खेकने के लिये मोटे कागज के बीखूँटे टुकड़े जिन पर रंगों की चूड़ियाँ या तसवीरें चनी रहती हैं।

ताशा-संज्ञा पुं० चमड़ा मड़ा हुआ एक प्रकार का चागा।

तासीर-संज्ञा स्त्री० अक्षर।

ताहम-अभ्य० तो भी।

ताहि-सर्व० इसको।

तितिङी-संज्ञा स्त्री० हम्बती।

तिश्रा-संज्ञा स्त्री० दे० "तिया"।

तिकड़ी-संज्ञा स्त्री० तीन कड़ियोंवाला।

तिकोना-क्रि० वि० दे० "तिकोना"।

तिकोना-वि० जिसमें तीन कोने हों।

संज्ञा पुं० समोसा नाम का पकवान।

तिकोनिया-क्रि० दे० "तिकोना"।

तिक्खे-वि० तीखा।

तिक्क-वि० तीव्र।

तिक्कता-संज्ञा स्त्री० तित्ताई।

तिक्ता-वि० तीक्ष्ण।

तिक्ता-संज्ञा स्त्री० तैड़ी।

तिक्ताई-संज्ञा स्त्री० तीखापन।

तिखूँटा-वि० तिकोना।

तिगुना-वि० तीन बार अधिक।

तिग्म-वि० तीक्ष्ण।

संज्ञा पुं० १. यज्ञ। २. पिप्पली।

तिच्छ-वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तिच्छन-वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तिज्जारत-संज्ञा स्त्री० व्यापार।

तिजारी-संज्ञा स्त्री० हर तीसरे दिन जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।

तिड़ी यिड़ी-वि० तितर-बितर।

तित-क्रि० वि० १. तहाँ। २. उधर।

तितना-क्रि० वि० दे० "वतना"।

तितर बितर-वि० १. बिखरा हुआ।

२. अस्त-म्यस्त।

तितारा-संज्ञा पुं० सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार खगे रहते हैं।

वि० जिसमें तीन तार हों।

तितिया-संज्ञा पुं० १. ठकोसला। २.

उगसहार।

तितिह-वि० सहगरील।

तितिहा-संज्ञा स्त्री० महिष्णुता।

तितिजु-वि० चमारील।

तितिम्मा-संज्ञा पुं० चचा हुआ भाग।

तिते-वि० उतने।

तितेका-वि० उतना।

तिते-वि०, क्रि० वि० उतना।

तितरि-संज्ञा पुं० तीतर पक्षी।

तिथि-संज्ञा स्त्री० मिति। तारीख।

तिथिपत्र-संज्ञा पुं० पंचांग।

तिदरी-संज्ञा स्त्री० वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे या खिड़कियाँ हों।

तिधरा-क्रि० वि० दे० "उधर"।

तिना-सर्व० "तिस" का बहु०।

संज्ञा पुं० तिनका।

तिनकना-क्रि० अ० चिड़ना ।

तिनका-संज्ञा पुं० तृण ।

तिनगना-क्रि० अ० दे० "तिनकना" ।

तिनगरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पकवान ।

तिनपहला-वि० जिसमें तीन पहल या पारवें हों ।

तिनिश-संज्ञा पुं० सीसम की आवि का एक पेड़ ।

तिनूका-संज्ञा पुं० दे० "तिनका" ।

तिन्हू-सर्व० दे० "तिन" ।

तिपला-वि० जिसमें तीन पल्ले हों ।

तिपाई-संज्ञा स्त्री० तीन पायों की बैठने या घड़ा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी ।

तिपाड़-संज्ञा पुं० १. जो तीन पाट जोड़कर बना हो । २. जिसमें तीन पल्ले हों ।

तिपारा-वि० तीसरी पार ।

संज्ञा पुं० वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों ।

तिव्यत-संज्ञा पुं० एक देश जो हिमालय के उत्तर में है ।

तिव्यती-वि० तिव्यत का ।

संज्ञा स्त्री० तिव्यत की भाषा ।

संज्ञा पुं० तिव्यत का रहनेवाला ।

तिमंजिला-वि० [ स्त्री० तिमिली ] तीन खंडों का ।

तिमि-अन्व० उस प्रकार ।

तिमिर-संज्ञा पुं० अंधकार ।

तिमिरहर-संज्ञा पुं० सूर्य ।

तिमिरारि-संज्ञा पुं० सूर्य ।

तिमिरारी-संज्ञा स्त्री० अंधेरा ।

तिमिरावलि-संज्ञा स्त्री० अंधकार का समूह ।

तिमुहानी-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ तीन थोर जाने को तीन मार्ग हों ।

तिय-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

तिया-संज्ञा पुं० तिफ्फो ।

० संज्ञा स्त्री० दे० "तिय" ।

तिरखूँटा-वि० तिरकोना ।

तिरछाई-संज्ञा स्त्री० तिरछापन ।

तिरछा-वि० जो ठीक सामने की ओर न जाकर दूधर वधर हटकर गया हो ।

तिरछाई-संज्ञा स्त्री० तिरछापन ।

तिरछाना-क्रि० अ० तिरछा होना ।

तिरछापन-संज्ञा पुं० तिरछा होने का भाव ।

तिरछाई-वि० जो कुछ तिरछापन लिए हो ।

तिरछाई-क्रि० वि० तिरछापन के साथ ।

तिरना-क्रि० अ० १. उतराना । २. तैरना ।

तिरप-संज्ञा नृत्य में एक प्रकार की गति ।

तिरपटी-वि० १. तिरछा । २. मुश्किल ।

तिरपाई-संज्ञा स्त्री० तीन पायों की ऊँची चौकी ।

तिरपाल-संज्ञा पुं० फूस या सरकड़ों के लंबे पूले जो छाजन में शपटों के नीचे दिए जाते हैं ।

संज्ञा पुं० रोगान चढ़ा हुआ कनवास या टाट ।

तिरवेनी-संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी" ।

तिरमिरा-संज्ञा पुं० चकाचौंध ।

तिरमिराना-क्रि० अ० चंभियाना ।

तिरलोक-संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक" ।



भाव या मजदूरी ।

तैलाना-कि० स० तौलने का काम दूसरे से कराना ।

तैलिया-संज्ञा स्त्री०, पुं० एक विशेष प्रकार का मोटा ओगोछा ।

तैसना-कि० प्र० गरमी से बहुत व्याकुल होना ।

कि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना ।

तैहीन-संज्ञा स्त्री० प्रथमान ।

तैहीनी-संज्ञा स्त्री० दे० "तैहीन" ।

त्यक्त-वि० [वि० त्यक्तम्] त्याग हुआ ।

त्यजन-संज्ञा पुं० [वि० त्यजनाय] त्याग ।

त्याग-संज्ञा पुं० १. वरसर्ग । २. किन्

घात को छोड़ने की क्रिया ।

त्यागना-कि० स० छोड़ना ।

त्यागपत्र-संज्ञा पुं० इस्तीफा ।

त्यागी-वि० विरक्त ।

त्याज्य-वि० त्यागने योग्य ।

रयारी-वि० दे० "तैयार" ।

र्यूँ-कि० वि० दे० "र्यों" ।

र्यों-कि० वि० १. इस प्रकार । २.

उसी समय ।

र्योदसी-संज्ञा पुं० पिछला तीसरा वर्ष ।

र्योरी-संज्ञा स्त्री० रटि ।

र्योहार-संज्ञा पुं० पर्य-दिन ।

र्योहारी-संज्ञा स्त्री० वह घन जो किसी लोहार के उलप में छोटे छोटे, आध्रितों या नौकरों आदि को दिया जाता है ।

र्यों-कि० वि० दे० "र्यों" ।

र्योर-संज्ञा पुं० दे० "र्योरी" ।

प्रपा-संज्ञा स्त्री० [वि० प्रपाम्] १.

लजा । २. छिनाल स्त्री ।

वि० लज्जित ।

प्रय-वि० १. तीन । २. तीसरा प्रयी-संज्ञा स्त्री० तीन वस्तुओं का समूह ।

प्रयोदशी-संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की तेहवीं तिथि ।

प्रसन-संज्ञा पुं० भय ।

प्रसना-कि० प्र० डरना ।

प्रसाना-कि० स० डराना ।

प्रसित-वि० १. भयभीत । २.

पीड़ित ।

प्रहन-वि० १. भयभीत । २. पीड़ित ।

प्राण-संज्ञा पुं० [वि० प्रातक] रक्षा ।

प्राता-संज्ञा पुं० २४क ।

प्रास-संज्ञा पुं० १. डर । २. कष्ट ।

प्रासक-संज्ञा पुं० डरानेवाला ।

प्रासना-कि० स० डराना ।

प्रासित-वि० दे० "प्रस्त" ।

प्राहि-प्रथ० यवाघो ।

प्रि-वि० तीन ।

प्रिकंडक-वि० जिसमें तीन कांटे हैं ।

प्रिक-संज्ञा पुं० तीन का समूह ।

प्रिकांड-वि० जिसमें तीन कांड हैं ।

प्रिकाल-संज्ञा पुं० तीनों समय ।

प्रिकालक्ष-संज्ञा पुं० सर्वज्ञ ।

प्रिकालदर्शक-वि० दे० "प्रिकालक्ष" ।

प्रिकालदर्शी-संज्ञा पुं० तीनों कालों

की बातों को जाननेवाला व्यक्ति ।

प्रिकुटी-संज्ञा स्त्री० दोनों भौंहों के

बीच के कुछ ऊपर का स्थान ।

प्रिकूट-संज्ञा पुं० १. वह पर्वत जिसकी

तीन चोटियाँ हैं । २. वह पर्वत

जिस पर लंका बसी हुई मानी

जाती है ।

तिरशूल-संज्ञा पुं० दे० "त्रिशूल" ।  
 तिरस्कार-संज्ञा पुं० [ वि० तिरस्कृत ]  
 धनादर ।  
 तिरस्कृत-वि० जिसका तिरस्कार  
 किया गया हो ।  
 तिरहुत-संज्ञा पुं० मिथिला प्रदेश  
 जिसके अंतर्गत आजकल मुजफ्फर-  
 पुर और दरभंगा है ।  
 तिराना-कि० सं० १. तैराना । २.  
 उवारना ।  
 तिराहा-संज्ञा पुं० तिरमुहानी ।  
 तिरिनुं-संज्ञा पुं० दे० "वृण" ।  
 तिरिया-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।  
 तिरिछा-वि० दे० "तिरछा" ।  
 तिरोधान-संज्ञा पुं० अंतर्धान ।  
 तिरोभाव-संज्ञा पुं० १. अंतर्धान ।  
 २. गोपन ।  
 तिरोहित, तिरोभूत-वि० छिपा  
 हुआ ।  
 तिरिछा-वि० दे० "तिरछा" ।  
 तिर्यक्-वि० तिरछा ।  
 तिर्यक्-संज्ञा स्त्री० तिरछापन ।  
 तिर्यग्गति-संज्ञा स्त्री० तिरछी या टेढ़ी  
 चाल ।  
 तिलंगा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
 कनकौया ।  
 तिलंगाना-संज्ञा पुं० तैलंग देश ।  
 तिलंगी-वि० तिलंगाने का निवासी ।  
 संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पतंग ।  
 तिल-संज्ञा पुं० १. एक पौधा जिसकी  
 खेती तेलवाले बीजों के लिये होती  
 है । २. काले रंग का बहुत छोटा  
 दाग जो शरीर पर होता है । ३.  
 थास की पुतली के बीचो-बीच की  
 गोख बिंदी ।

तिलक-संज्ञा पुं० १. टीका । २.  
 राज्याभिषेक । ३. छेष्ट व्यक्ति ।  
 तिलकुट-संज्ञा पुं० कूटे हुए तिल जो  
 खाँड़ की चाशनी में पगे हों ।  
 तिलचटा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
 भाँगुर ।  
 तिलछना-कि० प्र० पिचल रहना ।  
 तिलड़ा-वि० जिसमें तीन लड़ हों ।  
 तिलड़ी-संज्ञा स्त्री० तीन लड़ों की  
 माता जिसके बीच में जुगनी  
 होती है ।  
 तिलदानी-संज्ञा स्त्री० वह यैली जिसमें  
 दरजी सूई, तारा आदि रखते हैं ।  
 तिलपट्टी-संज्ञा स्त्री० खाँड़ में पगे हुए  
 तिलों का जमाया हुआ कतरा ।  
 तिलपपड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "तिल-  
 पट्टे" ।  
 तिलपुष्प-संज्ञा पुं० १. तिल का  
 फूल । २. गघनक्षी ।  
 तिलभुग्गा-संज्ञा पुं० दे० "तिलकुट" ।  
 तिलमिल-संज्ञा स्त्री० चकाचौंध ।  
 तिलमिलाना-कि० प्र० दे० "तिर-  
 मिराना" ।  
 तिलचा-संज्ञा पुं० तिलों का खड्डू ।  
 तिलस्म-संज्ञा पुं० १. जादू । २.  
 भ्रमस्कार ।  
 तिलस्मी-वि० तिलस्म-संबंधी ।  
 तिलहन-संज्ञा पुं० वे पौधे जिनके  
 बीजों से तेल निकलता है ।  
 तिलांजलि-संज्ञा स्त्री० मृतक-सेस्कार  
 की एक क्रिया जिसमें अंजुली में  
 जल और तिल लेकर मृतक के नाम  
 छोदते हैं ।  
 तिलाक-संज्ञा पुं० पति-पत्नी के नाते  
 का दृटना ।

धू-अव्य० १. धूकने का शब्द । २. धिः ।  
 धूक-संज्ञा पुं० खसारा ।  
 धूकना-कि० अ० मुँह से धूक निकालना या फेंकना ।  
 कि० सं० १. उगलना । २. घुरा कहना ।  
 धूधन-संज्ञा पुं० संघा निकला हुआ मुँह ।  
 धूनी-संज्ञा स्त्री० धूनी ।  
 धूनी-संज्ञा स्त्री० १. धम । २. वह खंभा जो किसी योक्त को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय ।  
 धूरना-कि० सं० १. फूटना । २. मारना । ३. ठूसना ।  
 धूल-वि० १. मोटा । २. महा ।  
 धूला-वि० [ स्त्री० धूली ] मोटा ।  
 धेई धेई-वि० धिरक-धिरककर नाचने

की मुद्रा धीर ताल ।  
 धैला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० धैला ] कपड़े यादि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर बंद कर सकें ।  
 धैली-संज्ञा स्त्री० छोटा धैला ।  
 धोक-संज्ञा पुं० १. डेर । २. समूह । ३. इकट्ठी वस्तु ।  
 थोड़ा-वि० [ स्त्री० थोड़ी ] अल्प ।  
 कि० वि० तनिक ।  
 थोथरा-वि० दे० "थोथा" ।  
 थोथा-वि० [ स्त्री० थोथी ] १. पोछा । २. कुंठित । ३. निकम्मा ।  
 थोपड़ी-संज्ञा स्त्री० चपट ।  
 थोपना-कि० सं० थोपना ।  
 थोपड़ा-संज्ञा पुं० जानवरों का धूपन ।  
 थोर, थोरा-वि० दे० "थोड़ा" ।  
 थोरिका-वि० थोड़ा सा ।

## द

द-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में अठारहवाँ व्यंजन जो स-वर्ग का तीसरा वर्ण है । दंतमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है ।  
 दंग-वि० विस्मित ।  
 संज्ञा पुं० धपराहट ।  
 दंगई-वि० १. दंगा करनेवाला । २. प्रचंड ।  
 दंगल-संज्ञा पुं० १. मछयुद्ध का स्थान । २. दल ।  
 दंगा-संज्ञा पुं० झगड़ा ।  
 दंड-संज्ञा पुं० १. डंडा । २. कसरत

जो हाथ-पर के पंजों के बल झींघे होकर की जाती है । ३. सड़ा । ४. लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी । ५. धड़ी ।  
 दंडक-संज्ञा पुं० १. डंडा । २. शासक । ३. वह छंद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो ।  
 दंडकला-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मात्रिक छंद ।  
 दंडकारण्य-संज्ञा पुं० वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था ।  
 दंडदास-संज्ञा पुं० वह जो दंड का

तिलेगू-संज्ञा स्त्री० दे० "तेलगू" ।

तिलोक-संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक" ।

तिलोकपति-संज्ञा पुं० विष्णु ।

तिलोरी-संज्ञा स्त्री० वह घरी जिसमें तिल भी मिला हो ।

तिहरी-संज्ञा स्त्री० पिलहरी ।

संज्ञा स्त्री० तिल नाम का चय ।

तिवाड़ी, तियारी-संज्ञा पुं० दे० "त्रिपाठी" ।

तिशना-संज्ञा पुं० ताना ।

संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा" ।

तिष्ठना-कि० भ० ठहरना ।

तिष्ठन-वि० दे० "तीक्ष्ण" ।

तिस्ता-सर्व० 'ता' का एक रूप जो इसे विभक्ति खाने के पूर्ण प्राप्त होता है ।

तिसना-संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा" ।

तिसरायत-संज्ञा स्त्री० तीसरा या गौर होने का भाव ।

तिसरैत-संज्ञा पुं० १. तटस्थ । २.

तीसरे हिस्से का मालिक ।

तिसाना-कि० भ० व्यासा होना ।

तिहराना-कि० स० दो बार करके एक बार फिर धार करना ।

तिहवार-संज्ञा पुं० दे० "त्योहार" ।

तिहारे-संज्ञा स्त्री० तीसरा भाग या हिस्सा ।

तिहारा, तिहारो-संज्ञा पुं० दे० "तुम्हारा" ।

तिहि-सर्व० दे० "तेहि" ।

तिहूँ-वि० तीनों ।

तिहैया-संज्ञा पुं० तीसरा भाग ।

तीक्ष्ण-वि० १. तेज़ नोक या धार वाला । २. तेज़ । ३. ब्रम ।

तीक्ष्णता-संज्ञा स्त्री० तीव्रता ।

तीक्ष्णधार-संज्ञा पुं० खट्ट ।

वि० जिसकी धार बहुत तेज़ हो ।

तीख-वि० दे० "तीखा" ।

तीखन-वि० दे० "तीक्ष्ण" ।

तीखा-वि० तीक्ष्ण ।

तीखुर-संज्ञा पुं० हलदी की जाति का एक प्रकार का पौधा ।

तीछन-वि० दे० "तीक्ष्ण" ।

तीज-संज्ञा स्त्री० पंच की तीसरी तिथि ।

तीजा-वि० [ स्त्री० तीजी ] तीसरा ।

तीत-वि० दे० "तीता" ।

तीतर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध चंचल धार तेज़ दाढ़नेवाला पक्षी जो लड़काने के लिये पाला जाता है ।

तीता-वि० १. जिसका स्वाद तीखा धार चरपरा हो । २. कड़वा ।

तीन-वि० जो दो धार, एक हो ।

तीमारदारी-संज्ञा स्त्री० रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम ।

तीय-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

तीया-संज्ञा स्त्री० दे० "तीय" ।

संज्ञा पुं० दे० "तिहरी" या "तिही" ।

तीरंदाज़-संज्ञा पुं० तीर चलानेवाला ।

तीरंदाजी-संज्ञा स्त्री० तीर चलाने की विद्या या क्रिया ।

तीर-संज्ञा पुं० १. तट । २. पास ।

संज्ञा पुं० बाण ।

तीरथ-संज्ञा पुं० दे० "तीर्थ" ।

तीरघर्ती-वि० १. तट या किनारे पर रहनेवाला । २. पट्टासी ।

तीरा-संज्ञा पुं० दे० "तीर" ।

तीर्थकर-संज्ञा पुं० जैनियों के उपास्य देव जो सब देवतार्थों से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषों से रहित और मुक्तिदाता माने जाते हैं ।

रुपया न दे सऋने के कारण दास हुआ हो।

दंडधर-संज्ञा पुं० १. यमराज। २. शासनकर्त्ता। ३. सैन्यासी।

दंडधार-संज्ञा पुं० १. यमराज। २. राजा।

दंडन-संज्ञा पुं० [ वि० दंडनीय, दंडित, दण्ड ] शासन।

दंडना-क्रि० स० दंड देना।

दंडनायक-संज्ञा पुं० १. सेनापति। २. दंड-विधान करनेवाला राजा या हाकिम।

दंडनीति-संज्ञा स्त्री० दंड देकर अर्थात् पीड़ित करके शासन में रखने की राजाओं की नीति।

दंडनीय-वि० दंड देने योग्य।

दंडपाणि-संज्ञा पुं० १. यमराज। २. भैरव की एक मूर्ति।

दंडप्रणाम-संज्ञा पुं० दंडवत्।

दंडवत्-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी पर खेदकर किया हुआ नमस्कार।

दंडविधि-संज्ञा स्त्री० अपराधों के दंड से संबंध रखनेवाला नियम या व्यवस्था।

दंडायमान-वि० डंडे की तरह सीधा लड़ा।

दंडालय-संज्ञा पुं० न्यायालय।

दंडिका-संज्ञा स्त्री० भीत अचरों की वर्णवृत्ति।

दंडित-वि० पुं० जिसे दंड मिला हो।

दंडी-संज्ञा पुं० १. दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। २. यमराज। ३. राजा। ४. द्वारपाल। ५. वह सैन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे।

दंड्य-वि० दंड पाने योग्य।

दंतकथा-संज्ञा स्त्री० ऐसी बात जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों और जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो।

दंतच्छद-संज्ञा पुं० श्रोष्ठ।

दंतधावन-संज्ञा पुं० १. दातुन करने की क्रिया। २. दंतौन।

दंतिया-संज्ञा स्त्री० छोटे छोटे दांत।

दंतोष्ठ्य-वि० (वर्ण) जिसका दन्धारण दांत और श्रोष्ठ से हो।

दंत्य-वि० दंत-संबंधी।

दंद-संज्ञा स्त्री० किसी स्थान से निकलती हुई गरमी।

संज्ञा पुं० लड़ाई-झगड़ा।

दंदाना-संज्ञा पुं० [ वि० दंदानेदार ] दांत के आकार की बमरी हुई पत्तियों की पंक्ति।

दंदी-वि० झगड़ालू।

दंपति, दंपती-संज्ञा पुं० पति-पत्नी का जोड़ा।

दंपा-संज्ञा स्त्री० विजली।

दंभ-संज्ञा पुं० [ वि० दंभी ] १. महत्त्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिये झूठा आडंबर। २. झूठी ठसक।

दंभी-वि० १. पाखंडी। २. अभिमानी।

दंभोलि-संज्ञा पुं० धन।

दंघरी-संज्ञा स्त्री० अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिये उसे थैलों से रौंदवाने का काम।

दंश-संज्ञा पुं० १. वह घाव जो दांत काटने से हुआ हो। २. दांत काटने की क्रिया।

दंशक-संज्ञा पुं० दांत से काटनेवाला।

दंशन-संज्ञा पुं० [ वि० दंशित, दंशी ] दांत से काटना।

तीर्थ-संज्ञा पुं० कोई पवित्र स्थान ।  
 तीर्थपति-संज्ञा पुं० दे० "तीर्थराज" ।  
 तीर्थयात्रा-संज्ञा स्त्री० पवित्र स्थानों  
 में दर्शन, स्नानादि के लिये जाना ।  
 तीर्थराज-संज्ञा पुं० प्रयाग ।  
 तीर्थराजी-संज्ञा स्त्री० काशी ।  
 तीर्थार्जन-संज्ञा पुं० तीर्थयात्रा ।  
 तीर्थिक-संज्ञा पुं० तीर्थ का ग्राह्य, पंडा ।  
 तीली-संज्ञा स्त्री० १. बड़ा तिनका ।  
 २. धातु आदि का पतला, पर कड़ा तार ।  
 तीव्र-संज्ञा पुं० १. समुद्र । २. व्याघ्र ।  
 ३. नखुआ ।  
 तीव्र-वि० १. अतिशय । २. तीक्ष्ण ।  
 तीव्रता-संज्ञा स्त्री० तीक्ष्णता ।  
 तीस-वि० दस का तिगुना । बीस  
 और दस ।  
 तीसरा-वि० १. क्रममें तीन के स्थान  
 पर पड़नेवाला । २. गैर ।  
 तीसी-संज्ञा स्त्री० दे० "अकसी" ।  
 संज्ञा स्त्री० फल आदि गिनने का, तीस  
 गान्धियों अर्थात् एक सौ पचास का,  
 एक मान ।  
 संज्ञा पुं० दे० "तिहाई" ।  
 तुंग-वि० १. उन्नत । २. उग्र । ३.  
 प्रधान ।  
 तुंगता-संज्ञा स्त्री० ऊँचाई ।  
 तुंगनाथ-संज्ञा पुं० हिमालय पर एक  
 शिवलिंग और तीर्थस्थान ।  
 तुंगमद्रा-संज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की  
 एक नदी ।  
 तुंड-संज्ञा पुं० १. मुख । २. चौंच ।  
 ३. थूयन ।  
 तुंद-संज्ञा पुं० पेट ।

वि० तेज ।  
 तुंदिल-वि० सोंदवाला ।  
 तुंदैला-वि० सोंद या बड़े पेटवाला ।  
 तुंदी-संज्ञा स्त्री० दे० "तूँदी" ।  
 तुंगु-संज्ञा पुं० १. धनिया । २. एक  
 प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया  
 के आकार का होता है ।  
 तुफ-संज्ञा स्त्री० कढ़ी ।  
 तुफेंदी-संज्ञा स्त्री० १. केवल तुफ  
 जोड़ने या भद्दी कविता करने की  
 क्रिया । २. भद्दी कविता जिसमें  
 काव्य के गुण न हों ।  
 तुफात-संज्ञा पुं० पथ के दो चरणों  
 के अंतिम अक्षरों का सेल ।  
 तुफार-संज्ञा स्त्री० 'तू' का प्रयोग जो  
 अपमान-जनक समझा जाता है ।  
 अशिष्ट संशोधन ।  
 तुफारना-क्रि० स० तू तू करके या  
 अशिष्ट संशोधन करना ।  
 तुफल-संज्ञा स्त्री० बड़ी पतंग ।  
 तुख-संज्ञा पुं० भूमी ।  
 तुखम-संज्ञा पुं० बीज ।  
 तुच्छ-वि० १. हीन । २. नीच ।  
 तुच्छता-संज्ञा स्त्री० १. हीनता । २.  
 ओछापन ।  
 तुच्छत्व-संज्ञा पुं० दे० "तुच्छता" ।  
 तुच्छातितुच्छ-वि० छोटे से छोटा ।  
 तुम्-सर्व० 'तू' शब्द का वह रूप  
 जो उसे प्रथमा और पद्यी के अति-  
 रिक्त और विभक्तियाँ लगाने के पड़ने  
 प्राप्त होता है ।  
 तुम्मे-सर्व० तुम्हो ।  
 तुट-वि० जेश मात्र ।  
 तुटना-क्रि० स० तुट करना ।

दंष्ट्र-संज्ञा पुं० दाँत ।

दंस-संज्ञा पुं० दे० "दंश" ।

दहत-संज्ञा पुं० दे० "दह" ।

दई-संज्ञा पुं० १. ईश्वर । २. दैव-संयोग ।

दईमारा-वि० [को० दईमारी] अभागा ।

दकीका-संज्ञा पुं० १. कोई चारोंक पात । २. युक्ति ।

दक्खिन-संज्ञा पुं० [वि० दक्खिनी] वह दिशा जो सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिने हाथ की ओर पड़ती है ।

दाक्खिनी-वि० दक्खिन का ।

संज्ञा पुं० दक्षिण देश का निवासी ।

दक्ष-वि० निपुण ।

दक्षकन्या-संज्ञा स्त्री० सती, जो शिव की पत्नी थीं ।

दक्षता-संज्ञा स्त्री० निपुणता ।

दक्षिण-वि० दाहिना ।

संज्ञा पुं० उत्तर के सामने की दिशा ।

दक्षिणा-संज्ञा स्त्री० १. दक्षिण दिशा ।

२. वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय । ३. पुरस्कार ।

दक्षिणायन-वि० भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर ।

संज्ञा पुं० सूर्य की वर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति ।

दक्षिणीय-वि० १. दक्षिण का ।

२. जो दक्षिण का पात्र हो ।

दखल-संज्ञा पुं० १. अधिकार । २. हस्तक्षेप । ३. पहुँच ।

दखिन-संज्ञा पुं० दे० "दक्षिण" ।

दखिनहा-वि० दक्षिण का ।

दखोल-वि० जिसका दखल या कब्जा हो ।

दखीलकार-संज्ञा पुं० वह आसामी जिसने किसी जमींदार के खेत या जमीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दखल रखा हो ।

दगड़-संज्ञा पुं० लड़ाई में यज्ञया जानेवाला बड़ा ढोल ।

दगदगा-संज्ञा पुं० १. डर । २. संदेह ।

दगदगाना-कि० अ० दमदमाना । कि० स० चमकाना ।

दगदगी-संज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा" ।

दगधना-कि० अ० जलना ।

कि० स० जलाना ।

दगना-कि० अ० १. छटना । २. जलना ।

कि० स० दे० "दागना" ।

दगधाना-कि० स० दागने का काम दूसरे से कराना ।

दगहा-वि० १. जिसमें दाग हो । २. दाह-कर्म करनेवाला । ३. जो दागा हुआ हो ।

दगा-संज्ञा स्त्री० छल-कपट ।

दगादार-वि० दे० "दगाबाज़" ।

दगाबाज़-वि० धोखा देनेवाला ।

दगाबाज़ी-संज्ञा स्त्री० छल ।

दगैल-वि० दागादार ।

संज्ञा पुं० दगाबाज़ ।

दग्ध-वि० १. जला हुआ । २. दुःसित ।

दक्कना-कि० अ० [संज्ञा दक्का] १. ठोकर या धक्का खाना । २. दब जाना ।

कि० स० १. ठोकर या धक्का लगाना । २. दबाना ।

दचना-कि० अ० गिरना ।

कि० भ० तुष्ट होना ।  
 तुड़वाना-कि० स० दे० "तुड़ाना" ।  
 तुड़ाई-संज्ञा स्त्री० १. तुड़ाने की क्रिया या भाव । २. तोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।  
 तुड़ाना-कि० स० १. तुड़वाना । २. भुनाना ।  
 तुतराना-कि० भ० दे० "तुतलाना" ।  
 तुतलाना-कि० भ० रुक रुककर दूरे-दूरे शब्द बोलना ।  
 तुन-संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है ।  
 तुनीर-संज्ञा पुं० दे० "तूनीर" ।  
 तुमना-कि० भ० चकित रह जाना ।  
 तुम-सर्व० 'तू' शब्द का बहुवचन रूप ।  
 तुमझी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा तूँघा । २. सूखे कव्दू का बना हुआ एक वाद्य ।  
 तुमरा-सर्व० दे० "तुम्हारा" ।  
 तुमल-संज्ञा पुं०, वि० दे० "तुमुल" ।  
 तुमुर-संज्ञा पुं० दे० "तुमुख" ।  
 तुमुल-संज्ञा पुं० लड़ाई की हलचल ।  
 तुम्हा-सर्व० दे० "तुम" ।  
 तुम्हारा-सर्व० 'तुम' का संबंध-कारक का रूप ।  
 तुम्ह-सर्व० तुमको ।  
 तुरंग-संज्ञा पुं० घोड़ा ।  
 तुरंगक-संज्ञा पुं० यड़ी तोरई ।  
 तुरंगम-संज्ञा पुं० १. घोड़ा । २. चित्त ।  
 तुरंत-कि० वि० जल्दी से ।  
 तुरई-संज्ञा स्त्री० एक वेल जिसके लंबे फलों की सरकारी बनाई जाती है ।

तुरक-संज्ञा पुं० दे० "तुर्क" ।  
 तुरकटा-संज्ञा पुं० सुसलमान ।  
 तुर्काना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तुर्काना ] १. तुर्कों का सा । २. तुर्कों का देश या बस्ती ।  
 तुर्किन-संज्ञा स्त्री० १. तुर्क जाति की स्त्री । २. सुसलमान की स्त्री ।  
 तुर्की-वि० तुर्क देश का ।  
 संज्ञा स्त्री० तुर्किस्तान की भाषा ।  
 तुरग-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तुरगी ] घोड़ा ।  
 तुरस्त-प्रत्य० शीघ्र ।  
 तुरपन-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सिंहाई ।  
 तुरपना-कि० स० तुरपन की सिंवाई करना ।  
 तुर्य-संज्ञा पुं० घोड़ा ।  
 तुरहो-संज्ञा स्त्री० फूँककर प्रजाने का एक वाद्य जो मुँह की धोर पतला और पीछे की धोर चौड़ा होता है ।  
 तुरा-संज्ञा स्त्री० दे० "खुरा" ।  
 संज्ञा पुं० घोड़ा ।  
 तुराई-संज्ञा स्त्री० गद्दा ।  
 तुराना-कि० भ० घबराना ।  
 कि० स० दे० "तुड़ाना" ।  
 तुरावती-वि० स्त्री० वेगवाली ।  
 तुर्क-संज्ञा पुं० तुर्क जाति । तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य ।  
 तुर्हदी-संज्ञा स्त्री० दे० "तुरही" ।  
 तुर्क-संज्ञा पुं० तुर्किस्तान का निवासी ।  
 तुर्की-वि० तुर्किस्तान का ।  
 संज्ञा स्त्री० तुर्किस्तान की भाषा ।  
 तुर्य-संज्ञा पुं० १. छुँघराखे धालों की छट जो माथे पर हो । २. कलगी ।  
 ३. घोड़ी ।  
 वि० श्रमोत्साह ।



दृच्छ-संज्ञा पुं० दे० "दृच्छ" ।

दृच्छकुमारी-संज्ञा स्त्री० दृच्छ प्रजा-  
पति की कन्या, सती ।

दृच्छना-संज्ञा स्त्री० दे० "दृच्छिणा" ।

दृच्छसुता-संज्ञा स्त्री० दृच्छ की कन्या,  
सती ।

दृच्छिन-वि० दे० "दृच्छिण" ।

दृष्टियल-वि० दाढ़ीवाला ।

दत्तधन-संज्ञा स्त्री० दे० "दत्तधन" ।

दत्तिया-संज्ञा स्त्री० छोटा दाँत ।

दत्तग्रन, दत्तधन-संज्ञा स्त्री० १. दा-  
हण । २. दाँत साफ करने और मुँह  
धोने की क्रिया ।

दत्तान-संज्ञा स्त्री० दे० "दत्तधन" ।

दत्त-संज्ञा पुं० दत्तक ।

वि० दिया हुआ ।

दत्तक-संज्ञा पुं० गोद लिया हुआ  
लड़का ।

दत्तचित्त-वि० जिसने किसी काम में  
खूब जी लगाया हो ।

दत्तात्मा-संज्ञा पुं० वह जो स्वयं किसी  
के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने ।

दत्तोपनिषद्-संज्ञा पुं० एक उपनिषद् ।

दादा-संज्ञा पुं० दे० "दादा" ।

ददिया ससुर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ददिया  
सास ] पत्नी या पति का दादा ।

ददिहाल-संज्ञा पुं० १. दादा का कुल ।  
२. दादा का घर ।

ददोरा-संज्ञा पुं० चकत्ता ।

ददु-संज्ञा पुं० दाद रोग ।

दधि-संज्ञा पुं० दही ।

संज्ञा पुं० समुद्र ।

दधिजात-संज्ञा पुं० मक्खन ।

संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

२३

दधिसुत-संज्ञा पुं० १. कमल । २.  
मोती । ३. चंद्रमा । ४. जालंधर

दैत्य । ५. विष ।

संज्ञा पुं० मक्खन ।

दधिसुता-संज्ञा स्त्री० सीप ।

दधीचि-संज्ञा पुं० एक वैदिक ऋषि  
जो यास्क के मत से अथर्व के पुत्र  
थे और इसी लिये दधीचि कहलाते  
थे । एक बार वृत्रासुर के अपद्रव  
करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के लिये  
दधीचि से उनकी हठियाँ माँगीं ।  
दधीचि ने इसके लिये अपने प्राण  
त्याग दिए । सभी से ये बड़े भारी  
दानों प्रसिद्ध हैं ।

दनदनाना-कि० अ० दनदन शब्द  
करना ।

दनादन-कि० वि० दनदन शब्द के  
साथ ।

दनु-संज्ञा स्त्री० दृच्छ की एक कन्या जो  
करयप को ब्याही थी ।

दनुज-संज्ञा पुं० असुर ।

दनुजदलनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

दनुजराय-संज्ञा पुं० दानवों का राजा  
हिरण्यकशिपु ।

दनुजेंद्र-संज्ञा पुं० रावण ।

दन्न-संज्ञा पुं० "दक्ष" शब्द जो सौप्त  
आदि के छूटने से होता है ।

दपटना-कि० अ० [संज्ञा दपट] डटना ।

दपु-संज्ञा पुं० दर्प ।

दपेट-संज्ञा स्त्री० दे० "दपट" ।

दफतर-संज्ञा पुं० दे० "दफ्तर" ।

दफती-संज्ञा स्त्री० गचा ।

दफन-संज्ञा पुं० किसी चीज़ को, विशेष-  
तः सुरवे को, ज़मीन में गाड़ने की  
क्रिया ।

तुल-वि० दे० "तुल्य" ।  
 तुलना-क्रि० भ० १. तौलना जाना ।  
 २. तौल या मान में बराबर बतलाना ।  
 ३. सधना । ४. उद्यत होना ।  
 संज्ञा स्त्री० १. मितलान । २. उपमा ।  
 तुलघाई-संज्ञा स्त्री० तौलने की मजदूरी ।  
 तुलघाना-क्रि० स० [ संज्ञा तुलघाई ]  
 तौल कराना ।  
 तुलसी-संज्ञा स्त्री० एक छोटा काढ़  
 या पौधा जिसकी पत्तियों से एक प्रकार  
 की तीक्ष्ण रोध निकलती है ।  
 तुलसीदल-संज्ञा पुं० तुलसी के पौधे  
 का पत्ता जिसे अत्यंत पवित्र मानते हैं ।  
 तुलसीदास-संज्ञा पुं० उत्तरीय भारत  
 के सर्वप्रधान भक्त कवि ।  
 तुलसीपत्र-संज्ञा पुं० तुलसी की पत्ती ।  
 तुला-संज्ञा स्त्री० १. साक्ष्य । २. तराजू ।  
 तुलाई-संज्ञा स्त्री० तुलाई ।  
 संज्ञा स्त्री० १. तौलने का काम या  
 भाव । २. तौलने की मजदूरी ।  
 तुलाधार-संज्ञा पुं० १. तुला राशि ।  
 २. धनिय्या ।  
 तुलाना-क्रि० भ० पूरा उतरना ।  
 तुलायंत्र-संज्ञा पुं० तराजू ।  
 तुल्य-वि० समान ।  
 तुल्यता-संज्ञा स्त्री० १. बराबरी । २.  
 साक्ष्य ।  
 तुघर-संज्ञा पुं० १. कसेबा रस । २.  
 अरहर ।  
 तुष-संज्ञा पुं० भूसी ।  
 तुपानल-संज्ञा पुं० १. भूसी या घास-  
 फूस की आग । २. ऐसी आग में  
 भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त  
 के लिये की जाती है ।  
 तुषार-संज्ञा पुं० १. पाला । २. हिम ।

वि० छूने में धरक की तरह ठंडा ।  
 तुष्ट-वि० १. वृत्त । २. राजी ।  
 तुष्टता-संज्ञा स्त्री० संतोष ।  
 तुष्टना-क्रि० भ० प्रसन्न होना ।  
 तुष्टि-संज्ञा स्त्री० संतोष ।  
 तुंसी-संज्ञा स्त्री० भूसी ।  
 तुंहारा-सर्व० दे० "तुम्हारा" ।  
 तुहि-सर्व० तुम्हको ।  
 तुहिन-संज्ञा पुं० १. पाला । २. हिम ।  
 तू-सर्व० दे० "तू" ।  
 तूँचा-संज्ञा पुं० १. कडुवा गोख कह ।  
 २. कड़ू को खोखला करके बनाया  
 हुआ बरतन जिसे प्रायः साधु अपने  
 साथ रखते हैं ।  
 तूँची-संज्ञा स्त्री० १. कडुवा गोख कह ।  
 २. कड़ू को खोखला करके बनाया  
 हुआ बरतन ।  
 तू-सर्व० मध्यम पुरुष एकवचन सर्व-  
 नाम । जैसे, तू यहाँ से चला जा ।  
 यह शब्द अशिष्ट समझा जाता है ।  
 तूण-संज्ञा पुं० तीर रखने का चींगा ।  
 तूणीर-संज्ञा पुं० तूण ।  
 तूत-संज्ञा पुं० गहतूत ।  
 तूती-संज्ञा स्त्री० १. छोटी जाति का  
 तोता । २. एक छोटी चिड़िया जो  
 बहुत सुंदर बोलती है । ३. मुँह से  
 बजाने का एक छोटा घाजा ।  
 तूवा-संज्ञा पुं० ढेर ।  
 तून-संज्ञा पुं० १. तुन का पेड़ । २.  
 तूख नाम का लाल कपड़ा ।  
 ० संज्ञा पुं० दे० "तूण" ।  
 तूनीर-संज्ञा पुं० दे० "तूणीर" ।  
 तूफान-संज्ञा पुं० १. डुबानेवाली धाड़ ।  
 २. आंधी ।  
 तूफानी-वि० उपद्रवी ।

दफनाना-क्रि० स० गाढ़ना ।  
 दफा-संज्ञा स्त्री० १. चार । २. किसी कानूनी किताब का वह एक खंड जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो ।  
 धि० दूर किया हुआ ।  
 दफूना-संज्ञा पुं० गढ़ा हुआ धन ।  
 दफूर-संज्ञा पुं० आफ्रिस ।  
 दफूरी-संज्ञा पुं० जिरदसाज ।  
 दयंग-वि० प्रभावशाली ।  
 दयक-संज्ञा स्त्री० सिकुदन ।  
 दयकना-क्रि० भ० १. भय के कारण छिपना । २. लुकना ।  
 क्रि० स० धातु को हथौड़ी से पीटकर बढ़ाना ।  
 दयका-संज्ञा पुं० कामदानी का सुन-हला तार ।  
 दयकाना-क्रि० स० छिपाना ।  
 दयकैया-संज्ञा पुं० दे० "दयकगार" ।  
 दयगर-संज्ञा पुं० १. ढाल बनाने-वाला । २. चमड़े के कुप्पे बनाने-वाला ।  
 दयदया-संज्ञा पुं० रोष-दाय ।  
 दयना-क्रि० भ० १. बोझ के नीचे पड़ना । २. पीछे हटना । ३. संकोच करना ।  
 दयधाना-क्रि० स० दमाने का काम दूसरे से कराना ।  
 दयाना-क्रि० स० [ संज्ञा दाव, दवाव ]  
 १. किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचाना । २. जोर डालकर विवश करना । ३. किसी दूसरे की चीज पर अनुचित अधिकार करना ।  
 दयाव-संज्ञा पुं० १. चाप । २. रोव ।

दबल-वि० १. जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो । २. जो बहुत दबता या डरता हो ।  
 दबोचना-क्रि० स० १. धर दधाना । २. छिपाना ।  
 दबोरना-क्रि० स० दधाना ।  
 दम-संज्ञा पुं० १. साँस । २. नशे आदि के लिये साँस के साथ धूर्चा खींचने की क्रिया । ३. साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूँकने की क्रिया । ४. बतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है । ५. प्राण ।  
 दमक-संज्ञा स्त्री० चमक ।  
 दमकना-क्रि० भ० चमकना ।  
 दमकल-संज्ञा स्त्री० १. वह यंत्र जिसकी सहायता से मकानों में लगरी हुई याग बुझाई जाती है । २. वह यंत्र जिसकी सहायता से कूँ से पानी निकालते हैं ।  
 दमकला-संज्ञा पुं० वह बड़ा पात्र जिसमें लगरी हुई पिचकारी के द्वारा महफिलों में गुलाब-जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है ।  
 दमखम-संज्ञा पुं० दड़ता ।  
 दम-खुल्हा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लोहे का गोल खुल्हा ।  
 दमड़ी-संज्ञा स्त्री० पैसे का आठवाँ भाग ।  
 दमदमा-संज्ञा पुं० मेरचा ।  
 दमदार-वि० १. जिसमें जीवनी-शक्ति यथेष्ट हो । २. दृढ़ ।  
 दमन-संज्ञा पुं० १. दवाने या रोकने की क्रिया । २. दंड ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "दमपंती" ।  
 दमनशील-वि० दमन करनेवाला ।

तुमड़ी-संज्ञा स्त्री० १. तुँधी । २.

सूँधी का बना हुआ एक प्रकार का  
पाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं ।

तुम तड़ाक-संज्ञा स्त्री० १. तड़क-  
भड़क । २. ठसक ।

तुमार-संज्ञा पुं० घात का घतंगड़ ।

तुर-संज्ञा पुं० १. मगाड़ा । २. तुहड़ी ।

तुरना-कि० स० दे० "तोड़ना" ।

० संज्ञा पुं० तुहड़ी ।

तुरै-कि० वि० रीति ।

तुल-संज्ञा पुं० आकाश ।

० वि० तुल्य ।

तुलना-कि० स० पहिप की धुरी में  
तेज या विक्रम देना ।

तुला-संज्ञा स्त्री० कपास ।

तुलिका-संज्ञा स्त्री० तसवीर बनाने-  
वालों की कलम या कूँची ।

तुणी-वि० मीन ।

संज्ञा स्त्री० मीन ।

तुस-संज्ञा पुं० भूसी ।

तुखा-संज्ञा स्त्री० दे० "तुषा" ।

तुणमय-वि० घास का बना हुआ ।

तुणशय्या-संज्ञा स्त्री० चटाई ।

तुणावर्त-संज्ञा पुं० चक्कर ।

तुतीय-वि० तीसरा ।

तुतीयांश-संज्ञा पुं० तीसरा भाग ।

तुतीया-संज्ञा स्त्री० १. प्रत्येक पक्ष का  
तीसरा दिन । २. व्याकरण में करण  
कारक ।

तुन-संज्ञा पुं० दे० "तुष" ।

तुपित-वि० दे० "तुप्त" ।

तुप्त-वि० १. जिसकी हड्डी पूरी हो  
गई हो । २. प्रसन्न ।

तुप्ति-संज्ञा स्त्री० १. संतोष । २. प्रस-  
न्नता ।

तुषा-संज्ञा स्त्री० १. प्यास । २. हफ्ता ।  
३. जोम ।

तुषावन्त-वि० प्यासा ।

तुपित-वि० १. प्यासा । २. चमि-  
झापी ।

तुप्पु-संज्ञा स्त्री० १. छालच । २.  
प्यास ।

तै-प्रत्य० से ।

तैदुआ-संज्ञा पुं० बिहारी या चीते की  
जाति का एक बड़ा हिंसक पशु ।

तैदू-संज्ञा पुं० १. मझोले आकार का  
एक वृक्ष । इसकी लकड़ी आपनूस के  
नाम से विक्रती है । २. इस पेड़ का  
फल जो खाया जाता है ।

ते-प्रत्य० दे० "तै" ।

तैवं-ये ।

तेखना-वि० भ० पियाड़ना ।

तेग-संज्ञा स्त्री० तलवार ।

तेगा-संज्ञा पुं० खड्ग ।

तेज-संज्ञा पुं० १. दीप्ति । २. प्रचंडता ।

तेज-वि० १. तीक्ष्ण धार का । २.  
फुरतीका । ३. तीक्ष्ण ।

तेजपत्ता-संज्ञा पुं० दारपीनी की जाति  
का एक पेड़ । इसकी पत्तियाँ सुगं-  
धित होने के कारण दाल, तरकारी  
आदि में मसाले की तरह डाबरी  
जाती हैं ।

तेजपत्र-संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता" ।

तेजपात-संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता" ।

तेजवन्त-वि० दे० "तेजवान्" ।

तेजवान्-वि० तेजस्वी ।

तेजस्-संज्ञा पुं० दे० "तेज" ।

तेजसी-वि० तेज-युक्त ।

दमनीय-वि० जिसका दमन किया जा सके ।

दमयाज्ञ-वि० दम देनेवाला ।

दमयंती-संज्ञा स्त्री० राजा नल की स्त्री जो विदम्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी ।

दमा-संज्ञा पुं० साँस ।

दमाद-संज्ञा पुं० कन्या का पति । जवाइ ।

दमामा-संज्ञा पुं० नगाड़ा ।

दमारि-संज्ञा पुं० जंगल की आग ।

दमापति-संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती" ।

दया-संज्ञा स्त्री० करुणा । रहम ।

दयादृष्टि-संज्ञा स्त्री० मेहरबानी की नज़र ।

दयानत-संज्ञा स्त्री० ईमान ।

दयानतदार-वि० ईमानदार ।

दयाना-संज्ञा पुं० दे० "दयालु होना" ।

दयानिधान-संज्ञा पुं० बहुत दयालु ।

दयानिधि-संज्ञा पुं० बहुत दयालु पुरुष ।

दयापात्र-संज्ञा पुं० वह जो दया के योग्य हो ।

दयामय-संज्ञा पुं० १. दया से पूर्ण । २. हँस्य ।

दयार-संज्ञा पुं० प्रदेश ।

दयाद्र-वि० दयालु ।

दयाल-वि० दे० "दयालु" ।

दयालु-वि० बहुत दया करनेवाला ।

दयालुता-संज्ञा स्त्री० दयालु होने का भाव ।

दयावंत-वि० दे० "दयालु" ।

दयावना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दयावनी ] दया के योग्य ।

दयावान्-वि० [ स्त्री० दयावती ] दयालु ।

दयाशील-वि० दयालु ।

दयासागर-संज्ञा पुं० जिसके वित्त में बहुत दया हो ।

दर-संज्ञा स्त्री० भाव ।

दरकना-कि० भ० चिरना ।

दरका-संज्ञा पुं० १. दरार । २. वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय ।

दरफाना-कि० स० फाड़ना ।

कि० भ० फटना ।

दरकार-वि० आवश्यक ।

दर-किनार-कि० वि० एक ओर ।

दरकूच-कि० वि० बराबर यात्रा करता हुआ ।

दरखत-संज्ञा पुं० दे० "दरखत" ।

दरखारत-संज्ञा स्त्री० १. किसी बात के लिये प्रार्थना । २. प्रार्थनापत्र ।

दरखत-संज्ञा पुं० पेड़ ।

दरगाह-संज्ञा स्त्री० १. चौखट । २. मकबरा ।

दरत-संज्ञा स्त्री० दराज़ ।

दरजन-संज्ञा पुं० दे० "दर्जन" ।

दरजा-संज्ञा पुं० दे० "दर्जा" ।

दरजी-संज्ञा पुं० दे० "दर्जी" ।

दरख-संज्ञा पुं० १. दखने या पीसने की क्रिया । २. ध्वंस ।

दरद-संज्ञा पुं० १. पीड़ा । २. दया ।

दर दर-कि० वि० स्थान स्थान पर ।

दरदरा-वि० [ स्त्री० दरदरी ] जिसके कण स्थूल हों ।

दरदराना-कि० स० थोड़ा पीसना ।

दरदवंत, दरदवंद-वि० कृपालु ।

दरद-संज्ञा पुं० दे० "दरद" या "दर्द" ।

दरनार-कि० स० दरदरा दलना ।

दरप-संज्ञा पुं० दे० "दर्प" ।

दरपन-संज्ञा पुं० दे० "दर्पण" ।

दरपना-कि० भ० साव में धाना ।

तेजस्विता-संज्ञा स्त्री० तेजस्वी होने का भाव ।

तेजस्वी-वि० १. कांतिमान् । २. प्रतापी ।

तेजाघ-संज्ञा पुं० [वि० तेजाघ] औषध के काम के लिये विसी चार पदार्थ का तरल या रवे के रूप में तैयार किया हुआ अम्ल-सार जो द्रावक होता है ।

तेजी-संज्ञा स्त्री० १. तेज होने का भाव । २. तीव्रता । ३. मर्द्दगी ।

तेतना-वि० दे० "तितना" ।

तेता-वि० पुं० [ स्त्री० तेती ] बतना ।

तेतिक-वि० बतना ।

तेतो-वि० दे० "तेता" ।

तेरस-संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि ।

तेरही-संज्ञा स्त्री० किसी के मरने के दिन से तेरहवीं तिथि, जिसमें पिंड-दान और ब्राह्मण-भोजन करके दाह करनेवाला और श्रुतक के घर के लोग शुद्ध होते हैं ।

तेरा-सर्व० [ स्त्री० तेरी ] तू का सर्वव्यापक रूप ।

तेरसा-संज्ञा पुं० दे० "रौरस" । संज्ञा स्त्री० दे० "तेरस" ।

तेरे-अव्य० से ।

तेरो-सर्व० दे० "तेरा" ।

तेल-संज्ञा पुं० यह चिकना तरल पदार्थ जो धीजों या घनस्पतियों आदि से निकाला जाता है अथवा आप से आप निकलता है ।

तेलगू-संज्ञा पुं० तैलंग देश की भाषा ।

तेलहन-संज्ञा पुं० वे बीज जिनसे तेल निकलता है ।

तेलहा-वि० पुं० तेल-युक्त ।

तेलिन-संज्ञा स्त्री० तेली जाति की स्त्री ।

तेलिया-वि० १. तेल की तरह चिकना और चमकीला । २. तेल के से रंगवाला ।

संज्ञा पुं० काला, चिकना और चमकीला रंग ।

तेलिया कंद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कंद । यह जहाँ होता है, वहाँ भूमि तेल से लीची हुई जान पड़ती है ।

तेली-संज्ञा पुं० [ स्त्री० तेलिन ] हिंदुओं की एक जाति जिसकी गणना शुद्रों में होती है । इस जाति के लोग सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करते हैं ।

तेवर-संज्ञा पुं० १. कुपित इष्टि । २. मोह ।

तेधाना-कि० प्र० सोचना ।

तेह-संज्ञा पुं० १. क्रोध । २. अहंकार । ३. तेजी ।

तेहरा-वि० पुं० सीने परत किया हुआ ।

तेहराना-कि० प्र० किसी काम को थिलकुल ठीक करने के लिये तीसरी बार करना ।

तेहवार-संज्ञा पुं० दे० "त्योहार" ।

तेहा-संज्ञा पुं० १. क्रोध । २. अहंकार ।

तेहि-सर्व० वसको ।

तेही-संज्ञा पुं० १. गुस्सा करनेवाला । २. अशिमानी ।

ते-कि० प्र० से । वि० दे० "तू" । सर्व० तू ।

तै-कि० प्र० बतना ।

संज्ञा पुं० १. निबटोरा । २. पूर्ति ।

वि० १. जिसका निबटोरा या फौसला हो चुका हो । २. जो पूरा हो चुका हो ।

दरपनी-संज्ञा स्त्री० मुँह देखने का छोटा शीशा ।

दर-पेश-क्रि० वि० आगे ।

दरघ-संज्ञा पुं० घन ।

दरघा-संज्ञा पुं० बबूतरो, मुरगियों आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक ।

दरघान-संज्ञा पुं० द्वारपाल ।

दरघार-संज्ञा पुं० [ वि० दरवारी ] वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसा-हबों के साथ बैठते हैं ।

दरवारी-संज्ञा पुं० दरवार में बैठने वाला आदमी ।

वि० दरवार का ।

दरभ-संज्ञा पुं० दे० "दभ" ।

संज्ञा पुं० धँवर ।

दरमाहा-संज्ञा पुं० मासिक घेतन ।

दरमियान-संज्ञा पुं० मध्य ।

क्रि० वि० बीच में ।

दरमियानी-वि० बीच का ।

संज्ञा पुं० दो आदमियों के बीच के झगड़े का निपटेरा करनेवाला मनुष्य ।

दरवाजा-संज्ञा पुं० द्वार ।

दरवी-संज्ञा स्त्री० १. सॉय का फन ।

२. करछुल ।

दरवेश-संज्ञा पुं० फुकीर ।

दर्शन-संज्ञा पुं० दे० "दर्शन" ।

दर्शाना-क्रि० भ०, सं० दे० "दर-साना" ।

संज्ञा पुं० १. दर्शन । २. मेंट ।

दरसन-संज्ञा पुं० दे० "दर्शन" ।

दरसना-क्रि० भ० दिखाई पड़ना ।

क्रि० सं० देखना ।

दरशनी-संज्ञा स्त्री० दर्शन ।

दरशनी हुंडी-संज्ञा स्त्री० वह हुंडी

जिसके मुगतान की मिति को दस दिन या उससे कम बाकी हो ।

दरसाना-क्रि० भ० १. दिखलाना ।

२. प्रकट करना ।

३. क्रि० भ० दिखाई पड़ना ।

दरसाघना-क्रि० सं० दे० "दर-साना" ।

दराङ्ग-वि० बड़ा भारी ।

क्रि० वि० बहुत ।

संज्ञा स्त्री० द्वार ।

संज्ञा स्त्री० मेज़ में लगा हुआ संदूक-नुमा खाना ।

दरार-संज्ञा स्त्री० वह खाली जगह जो किसी चीज़ के फटने पर पड़ जाती है ।

दरारना-क्रि० भ० फटना ।

दरारा-संज्ञा पुं० चक्का ।

दरिद्र-वि० [ स्त्री० दरिद्रा ] निर्धन ।

दरिद्रता-संज्ञा स्त्री० कर्णाली ।

दरिद्री-वि० दे० "दरिद्र" ।

दरिया-संज्ञा पुं० नदी ।

दरियाई-वि० नदी-संबंधी ।

दरियाई घोड़ा-संज्ञा पुं० गँड़े की तरह का एक जानवर जो अफ़्रीका में नदियों के किनारे रहता है ।

दरियाई नारियल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र घनता है जिसे सेव्यासी या फुकीर अपने पास रखते हैं ।

दरियादासी-संज्ञा पुं० निर्गुण न्यासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहय नामक एक प्यक्ति ने चलाया था ।

दरियादिल-वि० [ स्त्री० दरियादिली ] उदार ।

दरियाफ्त-वि० मासूम ।

तैजस-संज्ञा पुं० १. कोई चमकीला पदार्थ । २. पराक्रमी ।

वि० तेज से, उत्पन्न ।

तैनात-वि० [ संज्ञा तैनाती ] निवृत्त ।

तैयार-वि० १. ठीक । २. उद्यत । उत्तर । ३. प्रस्तुत । ४. हृष्ट-पुष्ट ।

तैयारी-संज्ञा स्त्री० १. दुरुस्ती । २. उत्तरता । ३. शरीर की पुष्टता ।

तैरना-कि० अ० १. उतराना । २. पैरना ।

तैराई-संज्ञा स्त्री० तैरने की क्रिया या भाव ।

तैराफ-वि० जो अच्छी तरह तैरना जानता हो ।

तैराना-कि० स० दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना ।

तैलंग-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश । इस देश की भाषा तेलगू कहलाती है ।

तैलंगी-संज्ञा पुं० तैलंग देशवासी ।

संज्ञा स्त्री० तैलंग देश की भाषा ।

तैल-संज्ञा पुं० चिकना ।

तैलत्व-संज्ञा पुं० तेल का भाव या गुण ।

तैलाक्त-वि० जिसमें तेल लगा हो ।

तैश-संज्ञा पुं० आवेश ।

तैसा-वि० उस प्रकार का ।

तैसे-कि० वि० दे० "तैसे" ।

तों-कि० वि० दे० "त्यों" ।

तोंद-संज्ञा स्त्री० पेट का फुलाव ।

तोंदल-वि० तोंदवाला ।

तो-सर्व० तेरा ।

अव्य० उस दृश में ।

अव्य० एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर खोर देने के लिये

अथवा कभी कभी यों ही किया जाता है ।

० सर्व० तुम्ह ।

तोड़-संज्ञा पुं० पानी ।

तोख-संज्ञा पुं० दे० "तोप" ।

तोडका-संज्ञा पुं० दे० "टोडका" ।

तोड़-संज्ञा पुं० १. तोड़ने की क्रिया या भाव । २. कुरती में किसी दाँव से घचने के लिये किया हुआ दाँव या पेंच । ३. बार ।

तोड़ना-कि० स० टुकड़े करना ।

तोड़वाना-कि० स० दे० "गुड़वाना" ।

तोड़ा-संज्ञा पुं० १. सोने, चाँदी आदि की खण्डेदार और चौड़ी जंजीर या सिक्की जो हाथों या गले में पहनी जाती है । २. घाटा ।

तोण-संज्ञा पुं० तरकश ।

तोता-संज्ञा पुं० ढेर ।

तोतई-वि० तोते के रंग का सा ।

तोतराना-कि० अ० दे० "तुतलाना" ।

तोतला-वि० वह जो तुतलाकर बोलता हो ।

तोता-संज्ञा पुं० सुधा ।

तोताचश्म-संज्ञा पुं० मेसुरीवत ।

तोदन-संज्ञा पुं० १. चाबुक । २. ब्याघ्र ।

तोप-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बहुत बड़ा चख जो प्रायः दो या चार पहियों की गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाए जाते हैं ।

तोपखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो ।

तोपची-संज्ञा पुं० गोलेदाज ।



दरिया-धरार-संज्ञा पुं० वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले ।

दरियानुद-संज्ञा पुं० वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे ।

दरियाव-संज्ञा पुं० दे० "दरिया" ।

दरी-संज्ञा स्त्री० गुफा ।

संज्ञा स्त्री० मोटे सूनें का घुना हुआ मोटे दल का बिलौना ।

दरीखाना-संज्ञा पुं० वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों । धारहदरी ।

दरीचा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दराची ] १. लिहकी । २. लिहकी के पास बैठने की जगह ।

दरीवा-संज्ञा पुं० पान का धाजार ।

दरेग-संज्ञा पुं० कमी ।

दरेरना-कि० स० रगड़ना ।

दरैया-संज्ञा पुं० दलनेवाला ।

दरोग-संज्ञा पुं० झूठ ।

दरोगहलफ़ी-संज्ञा स्त्री० सच बोलने की कसम खाकर भी झूठ बोलना ।

दर्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "दाज" ।

वि० कागज़ पर लिखा हुआ ।

दजन-संज्ञा पुं० धारह का समूह ।

दर्जा-संज्ञा पुं० १. श्रेणी । २. पद ।

कि० वि० गुणित ।

दर्जी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दर्जिन ] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे ।

२. कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष ।

दर्द-संज्ञा पुं० १. पीड़ा । २. दुःख ।

३. क्रूरता ।

दर्दमंद-वि० १. पीड़ित । २. दया-घातु ।

दर्दी-वि० दे० "दर्दमंद" ।

ददुर-संज्ञा पुं० १. मोढ़क । २.

बादल । ३. अचरक ।

ददु-संज्ञा पुं० दाद, नामक रोग ।

दर्प-संज्ञा पुं० धर्मद ।

दर्पण-संज्ञा पुं० ग्राहना ।

दर्म-संज्ञा पुं० कुप ।

दर्मासन-संज्ञा पुं० कुर्यासन ।

दर्दा-संज्ञा पुं० घाटी ।

दर्दाना-कि० भ० घड़घड़ाना ।

दर्श-संज्ञा पुं० दर्शन ।

दर्शक-संज्ञा पुं० १. दर्शन करनेवाला ।

२. दिखानेवाला ।

दर्शन-संज्ञा पुं० भेंट ।

दर्शनी हुंडी-संज्ञा स्त्री० दे० "दर्शनी हुंडी" ।

दर्शनीय-वि० १. देखने योग्य । २. सुंदर ।

दर्शाना-कि० स० दे० "दरसाना" ।

दर्शी-वि० देखनेवाला ।

दल-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के वन दो सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः जुड़े हुए हों, पर ज़रा सा दबाव पड़ने से अलग हो जायें । २. गरोह ।

दलक-संज्ञा स्त्री० गुदड़ी ।

संज्ञा स्त्री० १. आघात से उत्पन्न कंप ।

२. चमक ।

दलकन-संज्ञा स्त्री० १. दलकने की क्रिया या भाव । २. आघात ।

दलकना-कि० भ० फट जाना ।

कि० स० डराना ।

दलगंजन-वि० भारी वीर ।

दलदल-संज्ञा स्त्री० कीचड़ ।

दलदला-वि० [ स्त्री० दलदली ] जिसमें दलदल हो ।

दलदार-वि० जिसका दल, वह या

तोपना-कि० स० टाँकना ।  
 तोफा-वि०, संज्ञा पुं० दे० "तोहफा" ।  
 तोवड़ा-संज्ञा पुं० चमड़े या टाट  
 आदि की वह थैली जिसमें दाना  
 भरकर घोड़े को खिचाते हैं ।  
 तोया-संज्ञा स्त्री० किसी अनुचित कार्य  
 को भविष्य में न करने की शपथ-  
 पूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा ।  
 तोमर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का  
 पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डुंढे में  
 आंगे की ओर लोहे का बड़ा फल  
 लगा रहता था । २. एक प्रकार  
 का छद्म ।  
 तोय-संज्ञा पुं० जल ।  
 तोयधर, तोयधार-संज्ञा पुं० मेघ ।  
 तोयधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।  
 तोयनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।  
 तोर-वि० दे० "तेरा" ।  
 तोरई-संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई" ।  
 तोरण-संज्ञा पुं० १. घर या नगर का  
 बाहरी फाटक । २. बंदनवार ।  
 तोरना-संज्ञा पुं० दे० "तोरण" ।  
 तोरना-कि० स० दे० "तोड़ना" ।  
 तोरा-संज्ञा पुं० दे० "तेरा" ।  
 तोराना-कि० स० दे० "तुहाना" ।  
 तोरी-संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई" ।  
 तोल-संज्ञा स्त्री० दे० "तौल" ।  
 तोलन-संज्ञा पुं० तौलने की क्रिया ।  
 तोलना-कि० स० दे० "तौलना" ।  
 तोला-संज्ञा पुं० १. भारह मापे की  
 तौल । २. इस तोल का घाट ।  
 तोशक-संज्ञा स्त्री० हलका गद्दा ।  
 तोशाखाना-संज्ञा पुं० वह बड़ा  
 कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और

अमीरों के पहनने के घड़िया कपड़े  
 और गहने आदि रहते हैं ।  
 तोप-संज्ञा पुं० १. वृत्ति । २. प्रसन्नता ।  
 वि० अल्प ।  
 तोपक-वि० संतुष्ट करनेवाला ।  
 तोपण-संज्ञा पुं० वृत्ति ।  
 तोपना-कि० स० वृत्त करना ।  
 कि० अ० संतुष्ट होना ।  
 तोपित-वि० तुष्ट ।  
 तोस-संज्ञा पुं० दे० "तोप" ।  
 तोहफा-संज्ञा स्त्री० वस्तुमत्ता ।  
 तोहफा-संज्ञा पुं० सौगात ।  
 वि० उत्तम ।  
 तोहमत-संज्ञा स्त्री० झूठा कलंक ।  
 तोहरी-सर्व० दे० "तुम्हारा" ।  
 तोहि-सर्व० तुम्हारे ।  
 तौसना-कि० अ० गरमी से कुंठित  
 जाना ।  
 तौसा-संज्ञा पुं० अधिक ताप ।  
 तौसि-कि० वि० दे० "तो" ।  
 कि० अ० था ।  
 तौना-सर्व० वह ।  
 तौया-संज्ञा स्त्री० दे० "तोया" ।  
 तौर-संज्ञा पुं० १. चाल-ढाल । २.  
 ढंग । ३. प्रकार ।  
 तौरि-संज्ञा स्त्री० चक्कर ।  
 तौल-संज्ञा पुं० १. तराजू । २. तुल्य  
 राशि ।  
 संज्ञा स्त्री० १. वज्रन । २. तौलने की  
 क्रिया या भाव ।  
 तौलना-कि० स० १. जोखना । २.  
 साधना । ३. मिलापना । ४. चीगना ।  
 तौलघाना-कि० स० तौलना ।  
 तौला-संज्ञा पुं० तालनेवाला मनुष्य ।  
 तौलार्ह-संज्ञा स्त्री० तौलने की क्रिया,

दरपनी-संज्ञा स्त्री० मुँह देखने का छोटा शीशा ।

दर-पेश-क्रि० वि० आगे ।

दरघ-संज्ञा पुं० धन ।

दरघा-संज्ञा पुं० बबूतरी, सुरगियों आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक ।

दरघान-संज्ञा पुं० द्वारपाल ।

दरघार-संज्ञा पुं० [ वि० दरबारी ] वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसा-हयों के साथ बैठते हैं ।

दरबारी-संज्ञा पुं० दरबार में बैठने वाला आदमी ।

वि० दरबार का ।

दरभ-संज्ञा पुं० दे० "दभ" ।

संज्ञा पुं० बंदर ।

दरमाहा-संज्ञा पुं० मासिक वेतन ।

दरमियान-संज्ञा पुं० मध्य ।

क्रि० वि० बीच में ।

दरमियानी-वि० बीच का ।

संज्ञा पुं० दो आदमियों के बीच के झगड़ का निवेटा करनेवाला मनुष्य ।

दरघाज्ञा-संज्ञा पुं० द्वार ।

दरवी-संज्ञा स्त्री० १. साँप का फन ।

२. काष्ठुल ।

दरघेश-संज्ञा पुं० फूफोर ।

दरशन-संज्ञा पुं० दे० "दर्शन" ।

दरशाना-क्रि० भ०, स० दे० "दर-साना" ।

दरस-संज्ञा पुं० १. दर्शन । २. मेंट ।

दरसन-संज्ञा पुं० दे० "दर्शन" ।

दरसना-क्रि० भ० दिखाई पड़ना ।

क्रि० स० देखना ।

दरशनी-संज्ञा स्त्री० दर्शन ।

दरशनी हुंडी-संज्ञा स्त्री० यह हुंडी

जिसके मुगलान की मिति को दस दिन या उससे कम धाकी हो ।

दरसाना-क्रि० स० १. दिखलाना । २. प्रकट करना ।

०१ क्रि० भ० दिखाई पड़ना ।

दरसावना-क्रि० स० दे० "दर-साना" ।

दराज्ञ-वि० बड़ा भारी ।

क्रि० वि० बहुत ।

संज्ञा स्त्री० दरार ।

संज्ञा स्त्री० मेज़ में लगा हुआ संदूक-नुमा खाना ।

दरार-संज्ञा स्त्री० यह खाली जगह जो किसी चीज़ के फटने पर पड़ जाती है ।

दरारना-क्रि० भ० फटना ।

दरारा-संज्ञा पुं० धक्का ।

दरिद्र-वि० [ स्त्री० दरिद्रा ] निर्धन ।

दरिद्रता-संज्ञा स्त्री० कंगाली ।

दरिद्री-वि० दे० "दरिद्र" ।

दरिया-संज्ञा पुं० नदी ।

दरियाई-वि० नदी-संबंधी ।

दरियाई घोड़ा-संज्ञा पुं० गेंड़े की तरह का एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे रहता है ।

दरियाई नारियल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र बनता है जिसे सन्यासी या फूफोर अपने पास रखते हैं ।

दरियादासी-संज्ञा पुं० निगुंण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था ।

दरियादिल-वि० [ स्त्री० दरियादिली ] बदार ।

दरियाफ्त-वि० मालूम ।

दरिया-घरार-संज्ञा पुं० वह भूमि जो किसी नदी की घारा हट जाने से निकले ।

दरियाबुद्-संज्ञा पुं० वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे ।

दरियाच-संज्ञा पुं० दे० "दरिया" ।

दरी-संज्ञा स्त्री० गुफा ।

संज्ञा स्त्री० मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दब का बिड़ना ।

दरीखाना-संज्ञा पुं० वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों । पारहदरी ।

दरीचा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दराच ] १. खिड़की । २. खिड़की के पास बैठने की जगह ।

दरीचा-संज्ञा पुं० पान का पाज़ार ।

दरंग-संज्ञा पुं० कमी ।

दररना-कि० स० रगड़ना ।

दरैया-संज्ञा पुं० दलनेवाला ।

दरोग-संज्ञा पुं० मूड ।

दरोगहलफ़ी-संज्ञा स्त्री० सब बोलने की कसम खाकर भी मूड बोलना ।

दर्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "दरज" ।

वि० कागज़ पर लिखा हुआ ।

दर्जन-संज्ञा पुं० पारह का समूह ।

दर्जा-संज्ञा पुं० १. श्रेणी । २. पद ।

कि० वि० गुणित ।

दर्जी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दर्जिन ] १. वह जो कपड़े सीने का पंचसाय करे ।

२. कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष ।

दर्द-संज्ञा पुं० १. पीड़ा । २. दुःख ।

३. कष्ट ।

दर्दमंद-वि० १. पीड़ित । २. दवा-घान् ।

दर्दी-वि० दे० "दर्दमंद" ।

ददुर-संज्ञा पुं० १. मोठक । २.

बादल । ३. धवरक ।

ददु-संज्ञा पुं० दाद नामक रोग ।

दर्प-संज्ञा पुं० धर्मंड ।

दर्पण-संज्ञा पुं० थाहना ।

दर्भ-संज्ञा पुं० कुण ।

दर्भासन-संज्ञा पुं० कुशासन ।

दरई-संज्ञा पुं० घाटी ।

दर्ना-कि० स० घड़घड़ाना ।

दर्श-संज्ञा पुं० दर्शन ।

दर्शक-संज्ञा पुं० १. दर्शन करनेवाला ।

२. दिखानेवाला ।

दर्शन-संज्ञा पुं० भेंट ।

दर्शनी हुंड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "दर्शनी हुंड़ी" ।

दर्शनीय-वि० १. देखने योग्य । २. सुंदर ।

दर्शाना-कि० स० दे० "दर्साना" ।

दर्शी-वि० देखनेवाला ।

दल-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के उन वे। सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः जुड़े हुए हों,

पर ज़रा सा दबाव पड़ने से भङ्ग हो जायें । २. गरोह ।

दलक-संज्ञा स्त्री० गुददी ।

संज्ञा स्त्री० १. आघात से टरका कर । २. चमक ।

दलकन-संज्ञा स्त्री० १. दलकने की किया या भाव । २. आघात ।

दलकना-कि० स० छट खाना ।

कि० स० डराना ।

दलगंजन-वि० नारी घोर ।

दलदल-संज्ञा स्त्री० खींच ।

दलदला-वि० [ स्त्री० दलदली ] जिसने दबदब हो ।

दलदार-वि० जिसका दब, छह या

दीवार-संज्ञा स्त्री० भीत ।

दीवारगीर-संज्ञा पुं० दीवार चादि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है ।

दीवाल-संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार" ।

दीवालो-संज्ञा स्त्री० कार्तिक की धमा-वास्या को होनेवाला एक उत्सव ।

दीसना-क्रि० प्र० दिखाई पड़ना ।

धीह-वि० लंबा ।

धुंद-संज्ञा पुं० १. दो मनुष्यों के बीच में होनेवाला युद्ध या झगड़ा । २. धापात । ३. जोड़ा ।

संज्ञा पुं० नगाड़ा ।

धुंदुभि-संज्ञा पुं० १. घण्टा । २. विप । ३. एक राक्षस जिसे बालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था ।

संज्ञा स्त्री० नगाड़ा ।

धुंदुभी-संज्ञा स्त्री० दे० "धुंदुभि" ।

धुंधुह-संज्ञा पुं० पानी का साँप ।

धुःकृत-संज्ञा पुं० दे० "दुःखंत" ।

धुःख-संज्ञा पुं० १. कष्ट । २. विपत्ति ।

धुःखद, धुःखदाता-वि० दुःख पहुँचानेवाला ।

धुःखांत-वि० १. जिसके अंत में दुःख हो । २. जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो ।

संज्ञा पुं० १. दुःख का अंत । समाप्ति । २. दुःख की पराकाष्ठा ।

धुःखित-वि० पीड़ित ।

धुःखिनी-वि० स्त्री० जिस पर दुःख पड़ा हो ।

धुःखी-वि० [ स्त्री० दुःखिनी ] जिसे दुःख हो ।

धुःशला-संज्ञा स्त्री० गांधारी के गर्भ से उत्पन्न एतहाष्ट की कन्या, जो

सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी ।

दुःशासन-वि० जिस पर शासन करना कठिन हो ।

संज्ञा पुं० एतहाष्ट के १०० लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अग्रपुत्र प्रेमपात्र और मंत्री था ।

दुःशील-वि० बुरे स्वभाव का ।

दुःशीलता-संज्ञा स्त्री० दुष्टता ।

दुःसह-वि० जिसका सहन करना कठिन हो ।

दुःसाध्य-वि० १. जिसका करना कठिन हो । २. जिसका बर्पाय कठिन हो ।

दुःसाहस-संज्ञा पुं० १. ऐसा साहस जिसका परिणाम कुछ न हो, या भ्रम हो । २. दुष्टता ।

दुःसाहसी-वि० दुःसाहस करनेवाला ।

दुःस्वप्न-संज्ञा पुं० ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता है ।

दुःस्वभाघ-संज्ञा पुं० बुरा स्वभाव । वि० दुःशील ।

दुःश्रा-संज्ञा स्त्री० १. प्रार्थना । २. आशावाद ।

दुःश्रादस-संज्ञा पुं० दे० "दुःश्राद" ।

दुःश्रावा-संज्ञा पुं० दो नदियों के बीच का प्रदेश ।

दुःश्राटी-संज्ञा पुं० द्वार ।

दुःश्राटी-संज्ञा स्त्री० छोटा दरवाजा ।

दुःश-वि० दे० "दुःश" ।

दुःशर्जा-संज्ञा स्त्री० द्वितीया ।

संज्ञा पुं० दुष्ट का चार्प ।

दुःऊ-वि० दे० "दुःखी" ।

दुकड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दुकड़ी ] १. जोड़ा । २. छद्म ।

परत मोटी हो ।

दलन-संज्ञा पुं० [वि० दलित] १. पीस-कर टुकड़े टुकड़े करना । २. संहार ।

दलना-क्रि० सं० १. रगड़ या पीस-कर टुकड़े टुकड़े करना । २. रैदना ।

दलनि-संज्ञा स्त्री० दलने की क्रिया या दंग ।

दलपति-संज्ञा पुं० १. मुखिया । २. सेनापति ।

दल-बल-संज्ञा पुं० फौज ।

दल बादल-संज्ञा पुं० १. बादलों का समूह । २. भारी सेना ।

दलमलना-क्रि० सं० १. नतथ डालना । २. रैदना ।

दलवाना-क्रि० सं० दलने का काम दूसरे से करवाना ।

दलवाल-संज्ञा पुं० सेनापति ।

दलहन-संज्ञा पुं० वह अन्न जिसकी दाख बनाई जाती है ।

दलाना-संज्ञा पुं० दे० "दाखान" ।

दलाल-संज्ञा पुं० [ संज्ञा दलाली ] मध्यस्थ ।

दलाली-संज्ञा स्त्री० १. दलाल का काम । २. वह द्रव्य जो दलाल को मिलता है ।

दलित-वि० मसला हुआ ।

दलिया-संज्ञा पुं० दलकर कई टुकड़े किया हुआ अनाज ।

दलील-संज्ञा स्त्री० १. तर्क । २. बहस ।

दलेल-संज्ञा स्त्री० सिपाहियों की वह कुवायद जो सज़ा की तरह पर हो ।

दधगरा-संज्ञा पुं० वर्षा के आरंभ में होनेवाली मूसली ।

दध-संज्ञा पुं० १. दवारि । २. अग्नि ।

दधना-संज्ञा पुं० दे० "दधाना" ।

क्रि० सं० जलना ।

दधनी-संज्ञा स्त्री० फसल के सूखे ढंढलों को बैलों से रैदवाकर दाना म्माड़ने का काम ।

दधरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "दवारि" ।

दधा-संज्ञा स्त्री० औषध ।

१. संज्ञा स्त्री० १. वनाग्नि । २. अग्नि ।

दधाखाना-संज्ञा पुं० औषधालय ।

दधागिन-संज्ञा स्त्री० दे० "दधाग्नि" ।

दधाग्नि-संज्ञा स्त्री० वन में जगनेवाली आग ।

दधात-संज्ञा स्त्री० लिखने की रपाही रखने का यस्तन ।

दधानल-संज्ञा पुं० दधाग्नि ।

दधामी-वि० स्थायी ।

दधारी-संज्ञा स्त्री० दधाग्नि ।

दशकंठ-संज्ञा पुं० रावण ।

दशकंधर-संज्ञा पुं० रावण ।

दशगात्र-संज्ञा पुं० मृतक-संबंधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है ।

दशान-संज्ञा पुं० दांत ।

दशमलघ-संज्ञा पुं० वह भिन्न जिसके दस में दस या उसका कोई घात हो ।

दशम-संज्ञा स्त्री० चांद्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि ।

दशमुख-संज्ञा पुं० रावण ।

दशरथ-संज्ञा पुं० अयोध्या के इक्ष्वाकु-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा जिनके पुत्र श्रीरामचंद्र थे ।

दशशीश-संज्ञा पुं० रावण ।

दशहरा-संज्ञा पुं० ज्येष्ठ शुक्ल दशमी तिथि जिसे गंगा-दशहरा भी कहते हैं । २. विजया दशमी ।

दशांग-संज्ञा पुं० पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस

दुकड़ी-वि० स्त्री० जिसमें कोई पस्तु  
दा दो हो ।

दुकान-संज्ञा स्त्री० सौदा विक्रेते का  
स्थान ।

दुकानदार-संज्ञा पुं० दुकान पर बैठ-  
कर सौदा बेचनेवाला ।

दुकानदारी-संज्ञा स्त्री० दुकान पर  
माल बेचने का काम ।

दुकाल-संज्ञा पुं० थकाल ।

दुकूल-संज्ञा पुं० १. सन या सीसी  
के रेशे का बना कपड़ा । २. वस्त्र ।

दुकेला-[ स्त्री० दुकेली ] जिसके साथ  
कोई दूसरा भी हो ।

दुकेले-क्रि० वि० किसी के साथ ।

दुगड़-संज्ञा पुं० १. तयजे की तरह  
का एक बाजा जो गहनाई के साथ  
बजाया जाता है । २. एक में जुड़ी  
हुई या साथ पटी हुई दो नावों का  
जोड़ा ।

दुका-वि० [ स्त्री० दुकी ] जो एक साथ  
दो हो ।

संज्ञा पुं० दे० "दुकी" ।

दुकी-संज्ञा स्त्री० ताश का वह पत्ता  
जिस पर दो घुटियाँ बनी होती ।

दुखंडा-वि० जिसमें दो खंड हों ।

दुखंत-संज्ञा पुं० दे० "दुष्पंत" ।

दुख-संज्ञा पुं० दे० "दुःख" ।

दुखड़ा-संज्ञा पुं० १. सकलीफ का  
हाल । २. कष्ट ।

दुखदार्ह, दुखदानि-वि० दे०  
"दुःखदायी" ।

दुखदुंद-संज्ञा पुं० दुःख का उप-  
द्रव ।

दुखना-क्रि० प्र० दर्द करना ।

दुखरा-संज्ञा पुं० दे० "दुःखड़ा" ।

दुखहाया-वि० दे० "दुःखित" ।

दुखाना-क्रि० सं० १. कष्ट पहुँचाना ।

२. किसी के मर्मस्थान या पके घाव  
इत्यादि को छू देना, जिससे उसमें  
पीड़ा हो ।

दुखारा, दुखारी-वि० दुखी ।

दुखारो-वि० दे० "दुखारा" ।

दुखित-वि० दे० "दुःखित" ।

दुखिया-वि० दुखी ।

दुखी-वि० जिसे दुःख हो ।

दुखीला-वि० दुःख अनुभव करने-  
वाला ।

दुखौहाँ-वि० [ स्त्री० दुखौही ]  
दुःखदायी ।

दुगई-संज्ञा स्त्री० यरामदा ।

दुगदुगी-संज्ञा स्त्री० १. धुकधुकी ।

२. गले में पहनने का एक गहना ।

दुगना-वि० [ स्त्री० दुगनी ] दूना ।

दुगुण-वि० दे० "द्विगुण" ।

दुगुनी-वि० दे० "दुगना" ।

दुग्ग-संज्ञा पुं० दे० "दुर्ग" ।

दुग्ध-वि० दुहा हुआ ।

संज्ञा पुं० दूध ।

दुग्धी-संज्ञा स्त्री० दुधिया नाम की  
घास ।

वि० दूधवाला ।

दुधडिया-वि० दो घड़ी का ।

दुधडिया मुहूर्त्त-संज्ञा पुं० दो दो  
घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ  
मुहूर्त्त ।

दुधरी-संज्ञा स्त्री० दुधिया मुहूर्त्त ।

दुचंद-वि० दूना ।

दुचित-वि० १. जिसका चित्त एक  
घात पर स्थिर न हो । २. चिंतित ।

दुचितर्ह-संज्ञा स्त्री० १. चित्त की

सुगंध द्रव्यों के मेल से बनता है।  
 दशा-संज्ञा स्त्री० अथवा ।  
 दशानन-संज्ञा पुं० रावण ।  
 दशाश्वमेध-संज्ञा पुं० १. काशी के श्रतर्गत एक तीर्थ । २. प्रयाग के श्रतर्गत त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट, जहाँ से यात्री जल भरते हैं ।  
 दशाह-संज्ञा पुं० १. दस दिन । २. मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन ।  
 दस-वि० जो गिनती में नौ से एक अधिक हो ।  
 दसखत-संज्ञा पुं० दे० "दसखत" ।  
 दसन-संज्ञा पुं० दे० "दशन" ।  
 दसना-कि० अ० फैलना ।  
 कि० स० विद्याना ।  
 संज्ञा पुं० विद्याना ।  
 दसमाथ-संज्ञा पुं० रावण ।  
 दसमी-संज्ञा स्त्री० दे० "दशमी" ।  
 दसा-संज्ञा स्त्री० दे० "दशा" ।  
 दसारन-संज्ञा पुं० दे० "दशार्थ" ।  
 दसांधी-संज्ञा पुं० भाट ।  
 दस्तदाशी-संज्ञा स्त्री० हस्तक्षेप ।  
 दस्त-संज्ञा पुं० पतला पायदान ।  
 दस्तकार-संज्ञा पुं० हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी ।  
 दस्तकारी-संज्ञा स्त्री० हाथ की कारीगरी ।  
 दस्तखत-संज्ञा पुं० हस्ताक्षर ।  
 दस्ता-संज्ञा पुं० १. वह जो हाथ में आवे या रहे । २. मूठ । ३. फूलों का गुच्छा । ४. मारद । ५. कागज के चौबीस या पचीस तावों की गद्दी ।  
 दस्ताना-संज्ञा पुं० हाथ का मोड़ा ।  
 दस्ताघर-वि० जिससे दस्त आवे ।  
 दस्तावेज-संज्ञा स्त्री० वह कागज जिसमें कुछ आदिमियों के बीच के

व्यवहार की बात लिखी हो और जिस पर व्यवहार करनेवालों के हस्तक्षर हों ।  
 दस्ती-वि० हाथ का ।  
 संज्ञा स्त्री० १. मराज । २. छोटा घंट ।  
 दस्तूर-संज्ञा पुं० १. रीति । २. नियम ।  
 ३. पारसियों का पुरोहित जो कर्मकांड करता है ।  
 दस्तूरी-संज्ञा स्त्री० वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिक का सादा लेने में काननदारों से हक के तौर पर पाते हैं ।  
 दस्तु-संज्ञा पुं० डाकू ।  
 दह-संज्ञा पुं० १. नदी में वह स्थान जहाँ पानी बहुत गहरा हो ।  
 कुंड ।  
 संज्ञा स्त्री० ज्वाल ।  
 दहक-संज्ञा स्त्री० १. धधक । २. ज्वाला ।  
 दहकना-कि० अ० १. धधकना । २. तपना ।  
 दहकाना-कि० स० १. धधकाना । २. भड़काना ।  
 दहन-संज्ञा पुं० [वि० दहनीय, दहमान] १. दाह । २. अग्नि ।  
 दहना-कि० अ० १. जलना । २. कुड़ना ।  
 कि० स० जलाना ।  
 कि० अ० धँसना ।  
 वि० दे० "दहिना" ।  
 दहनि-संज्ञा स्त्री० जलन ।  
 दहपट-वि० १. दाया हुआ । २. रींदा हुआ ।  
 दहपटना-कि० स० १. ध्वस्त करना । २. रींदना ।  
 दहर-संज्ञा पुं० १. नदी में गहरा



अस्थिरता । २. खटका ।

वुचिताई-संज्ञा स्त्री० १. चित्त की अस्थिरता । २. खटका ।

वुचिचा-वि० [ वु० वुचि ] १. जो दुबधे में हो । २. चिंतित ।

वुज-संज्ञा पुं० दे० "द्विज" ।

वुजन्मा-संज्ञा पुं० दे० "द्विजन्मा" ।

वुजपति-संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति" ।

वुजीह-संज्ञा पुं० दे० "द्विजिह्व" ।

वुजेश-संज्ञा पुं० दे० "द्विजेश" ।

वुडक-वि० दे० वुडकों में किया हुआ ।

वुत्-मध्य० १. एक शब्द जो तिरस्कारपूर्वक हटाने के समय बोला जाता है । २. घृणा या तिरस्कार-सूचक शब्द ।

वुत्कार-संज्ञा स्त्री० फटकार ।

वुत्कारना-कि० स० १. वुत् वुत् शब्द करके किसी को अपने पास ले हटाना । २. तिरस्कृत करना ।

वुत्फा-वि० [ वु० वुत्फा ] दोनों ओर का ।

वुत्तारा-संज्ञा पुं० एक धागा जिसमें दो तार होते हैं ।

वुति-संज्ञा स्त्री० दे० "वृत्ति" ।

वुतिमान-वि० दे० "वृत्तिमान" ।

वुतिय-वि० दे० "द्वितीय" ।

वुतिया-संज्ञा स्त्री० पक्ष की दूसरी तिथि ।

वुतिचंत-वि० १. आभायुक । २. सुंदर ।

वुतीय-वि० दे० "द्वितीय" ।

वुतीया-संज्ञा स्त्री० दे० "द्वितीया" ।

वुदल-संज्ञा पुं० १. ढाल । २. एक पोषा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है ।

वुदलाना-कि० स० दे० "वुत्कारना" ।

वुदामी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था । संज्ञा स्त्री० खड़िया मिट्टी ।

वुधमुख-वि० दूधमुहा ।

वुधमुहा-वि० दे० "दूधमुहा" ।

वुधहाड़ी-संज्ञा स्त्री० मिट्टी का यह छोटा बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है ।

वुधहाड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "दूधहाड़ी" ।

वुधार-वि० १. दूध देनेवाली । २. जिसमें दूध हो ।

वि० संज्ञा पुं० दे० "दुधारा" ।

वुधारा-वि० (तखवार, घुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का खाँड़ा ।

वुधारी-वि० स्त्री० दूध देनेवाली ।

वि० स्त्री० जिसमें दोनों ओर धार हो ।

वुधारी-वि० दे० "दुधारा" ।

वुधिया-वि० १. दूध मिला हुआ ।

२. जिसमें दूध होता हो । ३. दूध की तरह सफेद ।

संज्ञा स्त्री० १. दुद्धी नाम की घास ।

२. एक प्रकार की ज्वार या घरी ।

३. खड़िया मिट्टी ।

वुधिया पत्थर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं । २. एक प्रकार का नम या रत्न ।

वुधिया विष-संज्ञा पुं० कजियारी की जाति का एक विष जिसके सुंदर पौधे फारमीर और हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं । इसकी जड़ में विष होता है ।

स्थान । २. कुंड ।  
 दहरना-क्रि० भ० दे० "दहलना" ।  
 क्रि० स० दे० "दहलाना" ।  
 दहल-संज्ञा स्त्री० डर से एकवारगी  
 काँप उठने की क्रिया ।  
 दहलना-क्रि० भ० डर से एकवारगी  
 काँप उठना ।  
 दहला-संज्ञा पुं० साश या गंजीफे का  
 वह पत्ता जिसमें दस घुटियाँ हों ।  
 † संज्ञा पुं० धाजा ।  
 दहलाना-क्रि० स० डर से कंपाना ।  
 दहलीज़-संज्ञा स्त्री० देहली ।  
 दहशत-संज्ञा स्त्री० डर ।  
 दहा-संज्ञा पुं० १. सुहरम का महीना ।  
 २. सुहरम की १ से १० तारीख तक  
 का समय । ३. ताजिया ।  
 दहाई-संज्ञा स्त्री० १. दस का मान या  
 भाव । २. झंझों के स्थानों की  
 गिनती में दूसरा स्थान जिस पर जो  
 धक लिखा होता है, उससे बतने  
 ही गुने दस का बोध होता है ।  
 दहाड़-संज्ञा स्त्री० १. गरज । २.  
 चिल्लाकर रोने की ध्वनि ।  
 दहाड़ना-क्रि० भ० १. गरजना । २.  
 चिल्लाकर रोना ।  
 दहाना-संज्ञा पुं० सुहाना ।  
 दहिना-वि० [ स्त्री० दहिनी ] शरीर  
 के दो पार्श्वों में से उस पार्श्व का  
 नाम जिधर के अंगों या पेशियों में  
 अधिक बल होता है । बायाँ का  
 बलटा ।  
 दहिने-क्रि० वि० दहिनी ओर को ।  
 दही-संज्ञा पुं० खटाई के द्वारा जमाया  
 हुआ दूध ।  
 दहु-अर्थ १. अधवा । २. धदा-  
 चित् ।

दहेंडी-संज्ञा स्त्री० दही रखने का मिट्टी  
 का बरतन ।  
 दहेज-संज्ञा पुं० वह धन और सामान  
 जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की  
 ओर से वर पक्ष को दिया जाता है ।  
 दहेला-वि० [ स्त्री० दहेली ] १. दग्ध ।  
 २. दुःखी ।  
 वि० [ स्त्री० दहेली ] भीगा हुआ ।  
 दाँ-संज्ञा पुं० दफा ।  
 संज्ञा पुं० जाननेवाला ।  
 दाँक-संज्ञा स्त्री० दहाड़ ।  
 दाँकना-क्रि० भ० गरजना ।  
 दाँग-संज्ञा स्त्री० १. छः रसी की  
 सौल । २. दिशा ।  
 संज्ञा पुं० नगाड़ा ।  
 संज्ञा पुं० टीका ।  
 दाँजा-संज्ञा स्त्री० बराबरी ।  
 दाँत-संज्ञा पुं० १. दंत । दशन । २.  
 दाँत के आकार की निकली हुई  
 वस्तु ।  
 दाँत-वि० १. दयाया हुआ । २.  
 संयमी । ३. दाँत का ।  
 दाँता-संज्ञा पुं० दाँत के आकार का  
 फंगूरा ।  
 दाँताकिटकिट-संज्ञा स्त्री० १. कहा-  
 सुनी । २. गाझी-गलौज ।  
 दाँति-संज्ञा स्त्री० १. इंद्रिय-निग्रह ।  
 २. विनय ।  
 दाँती-संज्ञा स्त्री० हँसिया जिससे घास  
 या फसल काटते हैं ।  
 संज्ञा स्त्री० दाँतों की पंक्ति ।  
 दाँना-क्रि० स० पक्षी फसल के डंठलों  
 को चोंचों से इसलिये रीदवाना जिसमें  
 डंठल से दाना अलग हो जाय ।  
 दांपत्य-वि० पति-पत्नी-संयमी ।

दुधैल-वि० घट्ट दूध देनेवाली ।  
दुधघना-कि० अ० खचकर प्रायः  
दोहरा हो जाना ।

कि० स० खचाकर दोहरा करना ।  
दुनाली-वि० स्त्री० दो नलोंवाली ।  
संज्ञा स्त्री० दुनाली घट्टक ।

दुनियाँ-संज्ञा स्त्री० १. संसार । २.  
संसार के लोग । ३. संसार का  
जंजाल ।

दुनियाई-वि० सांसारिक ।  
संज्ञा स्त्री० संसार ।

दुनियादार-संज्ञा पुं० गृहस्थ ।  
वि० व्यवहार-कुशल ।

दुनियादारी-संज्ञा स्त्री० १. दुनिया  
का कारबार । २. स्वार्थसाधन ।  
३. पनाघटी व्यवहार ।

दुनी-संज्ञा स्त्री० संसार ।  
दुपट्टा-संज्ञा पुं० दो "दुपट्टा" ।  
दुपट्टा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० दुपट्टी ]  
कंधे या गले पर डालने का लंबा  
कपड़ा ।

दुपट्टी-संज्ञा स्त्री० दो "दुपट्टा" ।  
दुपहर-संज्ञा स्त्री० दो "दोपहर" ।  
दुपहरिया-संज्ञा स्त्री० १. दोपहर ।  
२. एक छोटा पीघा और फूल ।

दुपहरी-संज्ञा स्त्री० दो "दुपहरिया" ।  
दुफसली-वि० वह चीज़ जो रबी  
और खरीफ दोनों में हो ।

वि० स्त्री० दुग्धा की ।  
दुग्धा-संज्ञा स्त्री० १. चित्त की अस्थिर-  
रता । २. संशय । ३. असमंजस ।

दुधला-वि० [ स्त्री० दुधली ] चीण  
शरीर का ।

दुधलापन-संज्ञा पुं० चीणता ।  
दुधारा-कि० वि० दो "दोधारा" ।

दुविध, दुविधा-संज्ञा स्त्री० दो  
"दुवधा" ।

दुवे-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दुवाहन ] ब्राह्मणों  
का एक भेद ।

दुभाखी-संज्ञा पुं० दो "दुभापिया" ।  
दुभापिया-संज्ञा पुं० दो भापाओं का  
जाननेवाला ऐसा मनुष्य जो उन  
भापाओं के धोलनेवाले दो मनुष्यों  
को एक दूसरे का घमिप्राय समझावे ।

दुमंजिला-वि० [ स्त्री० दुमंजिली ]  
दोखंडा ।

दुम-संज्ञा स्त्री० पूँछ ।  
दुमची-संज्ञा स्त्री० घोड़े के साज में  
वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा  
रहता है ।

दुमदार-वि० पूँछवाला ।  
दुमाता-वि० १. धुरी माता । २.  
सातेजी माँ ।

दुमुह-वि० दो "दोमुह" ।  
दुरंगा-वि० [ स्त्री० डुरंगी ] दो रंगों  
का ।

दुरंगी-वि० स्त्री० दो "दुरंगा" ।  
संज्ञा स्त्री० द्विविधा ।

दुरंत-वि० १. अपार । २. दुर्गम ।  
३. घोर ।

दुर-अव्य० या उप० एक अव्यय जिसका  
प्रयोग इन अर्थों में होता है—१.  
वृषण । २. निषेध । ३. दुःख ।

दुर-अव्य० एक शब्द जिसका प्रयोग  
तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये होता  
है और जिसका अर्थ है "दूर हो" ।

दुरजन-संज्ञा पुं० दो "दुर्जन" ।  
दुरजोधन-संज्ञा पुं० दो "दुर्यो-  
धन" ।

दुरदुराना-कि० स० तिरस्कार-पूर्वक

संज्ञ पुं० स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार ।

दांभिक-वि० १. पालंढी । २. अहंकारी ।

दाँवरी-संज्ञा स्त्री० रस्सी ।

दाइ-संज्ञा पुं० दे० "दाय" और "दाँव" ।

दाई-वि० स्त्री० दाहिनी ।

संज्ञा स्त्री० धारी ।

दाई-संज्ञा स्त्री० धाय ।

क्रि० दे० "दायी" ।

दाड़-संज्ञा पुं० दे० "दाँव" ।

दाऊ-संज्ञा पुं० धड़ा भाई ।

दाक्षिणात्य-वि० दक्खिनी ।

संज्ञा पुं० भारतवर्ष का वह भाग जो विन्ध्यपर्वत के दक्षिण पड़ता है ।

दाक्षिण्य-संज्ञा पुं० अनुकूलता ।

वि० दक्षिण का ।

दाख-संज्ञा स्त्री० १. थंगूर । २. सुनका । ३. किशमिश ।

दाखिल-वि० १. प्रविष्ट । २. शरीक ।

दाखिल-खारिज-संज्ञा पुं० किसी सरकारी कागज़ पर से किसी नायब-दाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उस पर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना ।

दाखिल-दफ़्तर-वि० दफ़्तर में इस प्रकार डाल रखा हुआ (कागज़) जिस पर कुछ विचार न किया जाय ।

दाखिला-संज्ञा पुं० १. प्रवेश । २. संस्था आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य ।

दाग-संज्ञा पुं० १. दाह । २. मुर्दा जलाने की क्रिया । ३. जलन का चिह्न ।

दाग-संज्ञा पुं० [वि० दाग] १. धब्बा ।

२. फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न । ३. कलंक ।

दागदार-वि० जिस पर दाग या धब्बा लगा हो ।

दागना-क्रि० स० १. जलाना । २.

तपे लोहे से किसी के थंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड़ जाय । ३. तोप, घेंदूक आदि छोड़ना ।

क्रि० स० प्रकट करना ।

दागी-वि० १. जिस पर दाग या धब्बा हो । २. जिस पर सड़ने का चिह्न हो । ३. कलंकित ।

दाघ-संज्ञा पुं० १. गरमी । २. दाह ।

क्रि० स० जलाना ।

दामन-संज्ञा स्त्री० जलन ।

दामना-क्रि० प्र० जलना ।

क्रि० स० जलाना ।

दाड़िम-संज्ञा पुं० अनार ।

दाढ़-संज्ञा स्त्री० अयढ़ के भीतर के मोटे चौड़े दाँत ।

संज्ञा स्त्री० १. दहाड़ । २. चिल्लाहट ।

दाढ़ना-क्रि० स० १. जलाना । २. दुखी करना ।

दाढ़ा-संज्ञा पुं० दे० "दाड़" ।

संज्ञा पुं० १. बन की आग । २. आग ।

दाढ़ी-संज्ञा स्त्री० १. चिबुक । २. ठुड़ी और दाढ़ पर के धाड़ ।

दातव्य-वि० देने योग्य ।

संज्ञा पुं० १. दान । २. दानशीलता ।

दाता-संज्ञा पुं० १. दानशील । २. देनेवाला ।

दातार-संज्ञा पुं० दाता ।

दाती-संज्ञा स्त्री० देनेवाली ।

दातुन-संज्ञा स्त्री० दे० "दातुन" ।

दातृत्व-संज्ञा पुं० दानशीलता ।

दूर करना ।

दुरना-क्रि० प्र० १. शस्त्रों के आगे से दूर होना । २. क्षिपना ।

दुरपदी-संज्ञा स्त्री० दे० "द्वैपदी" ।

दुरभिसंधि-संज्ञा स्त्री० बुरे अभिप्राय से गुट पवित्र की हुई सलाह ।

दुरमेधा-संज्ञा पुं० बुरा भाव ।

दुरमुस-संज्ञा पुं० गदा के आकार का डंडा, जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर सैदाई जाती है ।

दुरयस्या-संज्ञा स्त्री० बुरी दशा ।

दुराडा-संज्ञा पुं० दे० "दुराव" ।

दुराग्रह-संज्ञा पुं० [वि० दुराग्रही] दूठ ।

दुराचरण-संज्ञा पुं० बुरा नाल-चलन ।

दुराचार-संज्ञा पुं० [वि० दुराचारी] बुरा आचार्य ।

दुराज-संज्ञा पुं० बुरा राज्य ।

संज्ञा पुं० एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन ।

दुराजी-वि० दो राजाओं का ।

दुरारमा-वि० दुष्टारमा ।

दुरादुरी-संज्ञा स्त्री० द्विपक्ष ।

दुराधर्प-वि० प्रवञ्ज ।

दुराना-क्रि० प्र० दूर होना ।

क्रि० स० दूर करना ।

दुरालभा-संज्ञा स्त्री० १. जवासा । २. कपास ।

दुराव-संज्ञा पुं० १. भेदभाव । २. कपट ।

दुराशय-संज्ञा पुं० दुष्ट आशय ।

वि० खोटा ।

दुराशा-संज्ञा स्त्री० स्वर्ण की भाशा ।

दुरित-संज्ञा पुं० पाप ।

वि० पापी ।

दुरुखा-वि० १. जिसके दोनों ओर

मुँह हों । २. जिसके दोनों ओर दो रंग हों ।

दुरुपयोग-संज्ञा पुं० बुरा उपयोग ।

दुरुस्त-वि० १. ठीक । २. जिसमें दोष या श्रुति न हो । ३. उचित ।

दुरुस्ती-संज्ञा स्त्री० सुधार ।

दुरुह-वि० गूढ़ ।

दुर्गंध-संज्ञा स्त्री० बदबू ।

दुर्ग-वि० जिसमें पहुँचना कठिन हो ।

संज्ञा पुं० क़िटा ।

दुर्गत-वि० जिसकी बुरी गति हुई हो ।

संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति" ।

दुर्गति-संज्ञा स्त्री० दुर्दशा ।

दुर्गपाल-संज्ञा पुं० क़िलेदार ।

दुर्गम-वि० १. जहाँ जाना कठिन हो । २. कठिन ।

संज्ञा पुं० १. गड़ । २. वन ।

दुर्गरक्षक-संज्ञा पुं० क़िलेदार ।

दुर्गा-संज्ञा स्त्री० देवी । इनका अनेक असुरों को मारना प्रसिद्ध है ।

दुर्गुण-संज्ञा पुं० बुरा गुण ।

दुर्घट-वि० जिसका होना कठिन हो ।

दुर्घटना-संज्ञा स्त्री० वारदात ।

दुर्जन-संज्ञा पुं० दुष्ट जन ।

दुर्जय-वि० जिसे जीतना बहुत कठिन हो ।

दुर्ज्ञेय-वि० जो जल्दी समझ में न आ सके ।

दुर्दमनीय-वि० १. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो । २. प्रचंड ।

दुर्दम्य-वि० दे० "दुर्दमनीय" ।

दुर्दशा-संज्ञा स्त्री० बुरी दशा ।

दिग्-संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्" ।

दिग्दंति-संज्ञा पुं० दे० "दिग्दन्त" ।

दिग्पाल-संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

दिग्गज-संज्ञा पुं० पुराणानुसार वे  
आठों हाथी जो आठों दिशाओं में  
पृथ्वी को दबाए रखने और उन  
दिशाओं की रक्षा करने के लिये  
स्थापित हैं ।

वि० बहुत बड़ा ।

दिग्दर्शन-संज्ञा पुं० नमूना ।

दिग्देवता-संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

दिग्पट्ट-संज्ञा पुं० १. दिशारूपी वस्त्र ।  
२. नंगा ।

दिग्पति-संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

दिग्भ्रम-संज्ञा पुं० दिशाओं का भ्रम  
होना ।

दिग्मंडल-संज्ञा पुं० संपूर्ण दिशाएँ ।

दिवराज-संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

दिग्धर-संज्ञा पुं० १. महादेव । २.  
नंगा रहनेवाला जैन यती ।

दिग्वास-संज्ञा पुं० दे० "दिग्बन्ध" ।

दिग्विजय-संज्ञा स्त्री० राजाओं का  
अपनी धीरता दिखलाने और महत्त्व  
स्थापित करने के लिये देश-देशांतरों  
में अपनी सेना के साथ जाकर युद्ध  
करना और विजय प्राप्त करना ।

दिग्घजयी-वि० पुं० [ स्त्री० दिग्विज-  
यिनी ] जिसने दिग्विजय किया हो ।

दिग्घमाग-संज्ञा पुं० दिशा ।

दिग्घ्यापी-वि० [ स्त्री० दिग्घ्यापिनी ]  
जो सब दिशाओं में व्याप्त हो ।

दिग्शूल-संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल" ।

दिङ्नाग-संज्ञा पुं० दिग्गज ।

दिङ्मंडल-संज्ञा पुं० दिशाओं का  
समूह ।

दिजराज-संज्ञा पुं० दे० "दिज-  
राज" ।

दिठादिठी-संज्ञा स्त्री० दे० "देखा-  
देखी" ।

दिठाना-कि० प्र० बुरी दृष्टि लगाना ।  
कि० स० बुरी दृष्टि लगाना ।

दिठाना-संज्ञा पुं० फाजल की चह  
चिंदी जो बालकों को नज़र से बचाने  
के लिये लगाते हैं ।

दिठ-वि० दे० "दृढ़" ।

दिठाना-कि० स० पक्का करना ।

दितिसुत-संज्ञा पुं० दैत्य ।

दिन-संज्ञा पुं० १. सूर्योदय से लेकर  
सूर्यास्त तक का समय । २. चौबीस  
घंटे का समय । ३. समय ।

कि० वि० सदा ।

दिनग्रह-संज्ञा पुं० दे० "दिनकर" ।

दिनकंठा-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनक-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनचर्या-संज्ञा स्त्री० दिन भर का  
कर्तव्य कर्म ।

दिनदानी-संज्ञा पुं० प्रति दिन  
दान करनेवाला ।

दिननाथ-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनपति-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनमणि-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनराज-संज्ञा पुं० दे० "दिनराज" ।

दिनराज-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनांघ-संज्ञा पुं० वह जिसे दिन को  
न सुके ।

दिनाही-संज्ञा पुं० दाद नामक रोग ।

दिनियर-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनी-वि० बहुत दिनों का ।

दिनेर-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दिनेश-संज्ञा पुं० सूर्य ।

दुर्दिन-संज्ञा पुं० १. बुरा दिन । २. ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हो और पानी बरसता हो ।  
 दुर्द्वेष-संज्ञा पुं० १. दुर्भाग्य । बुरी किस्मत । २. दिनों का बुरा फेर ।  
 दुर्द्धर-वि० १. जिसे कठिनता से पकड़ सकें । २. प्रबल ।  
 दुर्द्धर्प-वि० १. जिसका दमन करना कठिन हो । २. प्रबल ।  
 दुर्नाम-संज्ञा पुं० १. बदनामी । २. गाली ।  
 दुर्नीति-संज्ञा स्त्री० कुनीति ।  
 दुर्बल-वि० १. कमजोर । २. दुबला-पतला ।  
 दुर्बलता-संज्ञा स्त्री० १. कमजोरी । २. दुबलापन ।  
 दुर्वोध-वि० गूढ़ ।  
 दुर्भाग्य-संज्ञा पुं० मंद भाग्य ।  
 दुर्भिक्ष-संज्ञा पुं० अकाल ।  
 दुर्भिच्छ-संज्ञा पुं० दे० "दुर्भिक्ष" ।  
 दुर्मेति-संज्ञा स्त्री० बुरी बुद्धि ।  
 वि० १. जिसकी समझ ठीक न हो । २. खल ।  
 दुर्मुख-संज्ञा पुं० १. घोड़ा । २. राम-चंद्रजी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोका-पवाद सुना था ।  
 वि० १. जिसका मुख बुरा हो । २. कटुभाषी ।  
 दुर्योधन-संज्ञा पुं० कुरुवंशीय राजा द्रुपद का एक पुत्र जो अपने चचेरे भाई पांडवों से बहुत बुरा

मानता था । कौरवों में श्रेष्ठ ।  
 दुरांनी-संज्ञा पुं० अफ़ग़ानों की एक जाति ।  
 दुर्लभ्य-वि० जिसे जल्दी लाभ न सकें ।  
 दुर्लक्ष्य-वि० जो कठिनता से दिखाई पड़े ।  
 दुर्लभ-वि० १. जिसे पाना सहज न हो । २. अनेका ।  
 दुर्धन-संज्ञा पुं० गाली ।  
 दुर्बह-वि० जिसका बहन करना कठिन हो ।  
 दुर्धाद-संज्ञा पुं० निंदा ।  
 दुर्वासा-संज्ञा पुं० एक मुनि । ये अर्यंत कोधी थे ।  
 दुर्धृत्त-वि० दुराचारी ।  
 दुर्ग्यवस्था-संज्ञा स्त्री० कुप्रबंध ।  
 दुर्ग्यवहार-संज्ञा पुं० बुरा व्यवहार ।  
 दुर्धन-संज्ञा पुं० बुरी क्षति ।  
 दुर्लकी-संज्ञा स्त्री० घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों पैर अलग अलग बठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है ।  
 दुर्लखना-क्रि० स० धार धार कहना या घसलाना ।  
 दुर्लड़ी-संज्ञा स्त्री० दो लड़कों की माँ ।  
 दुर्लत्ती-संज्ञा स्त्री० घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को बठाकर मारना ।  
 दुर्लराना-क्रि० स० बच्चों को धड़लाकर प्यार करना ।  
 क्रि० प्र० दुलारे बच्चों की सी चेष्टा करना ।  
 दुलरी-संज्ञा स्त्री० दे० "दुलही" ।

दिनौं-श्री-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें दिन के समय सूर्य की तेज किरणों के कारण बहुत कम दिखाई देता है।  
 दिपति-श्री-संज्ञा स्त्री० दे० "दीप्ति"।  
 दिपना-कि० प्र० चमकना।  
 दिपाना-कि० प्र० दे० "दिपना"।  
 दिव्य-संज्ञा पुं० दे० "दिव्य"।  
 दिमाक-संज्ञा पुं० दे० "दिमाग"।  
 दिमाग-संज्ञा पुं० १. मस्तिष्क। २. बुद्धि। ३. अभिमान।  
 दिमागदार-वि० १. जिसकी मान-मिक शक्ति बहुत अच्छी हो। २. अभिमानी।  
 दिमागी-वि० दे० "दिमागदार"।  
 वि० दिमाग-संज्ञा स्त्री।  
 दिमाना-श्री-वि० दे० "दीवाना"।  
 वियना-संज्ञा पुं० दे० "दीपा"।  
 कि० प्र० चमकना।  
 दियरा-संज्ञा पुं० दे० "दीया"।  
 दिया-संज्ञा पुं० दे० "दीया"।  
 दियारा-संज्ञा पुं० कछार।  
 दियासलाई-संज्ञा स्त्री० दे० "दीया-सलाई"।  
 दिरम-संज्ञा पुं० १. मिस्र देश का चांदी का एक सिक्का। २. साढ़े तीन माशे की एक तौल।  
 दिरमाना-संज्ञा पुं० चिकित्सा।  
 दिरमाना-संज्ञा पुं० चिकित्सक।  
 दिरिसा-संज्ञा पुं० दे० "दर्य"।  
 दिल-संज्ञा पुं० १. कलत्रा। २. मन। ३. साहस।  
 दिलगीर-वि० [संज्ञा दिलगीरी] उदास।  
 दिलखला-वि० १. साहसी। २. धीर।  
 दिलचर-वि० [संज्ञा दिलचरी] चित्ताकर्षक।  
 दिलजमई-संज्ञा स्त्री० तसल्ली।

दिलजला-वि० जिसके चित्त को बहुत कष्ट पहुँचा हो।  
 दिलदार-वि० [संज्ञा दिलदारी] उदार।  
 दिलवर-वि० प्यारा।  
 दिलरुवा-संज्ञा पुं० प्यारा।  
 दिलवाना-कि० प्र० दे० "दिलाना"।  
 दिलहा-संज्ञा पुं० दे० "दिहो"।  
 दिलाना-कि० प्र० दिलवाना।  
 दिलावर-वि० [संज्ञा दिलावरी] १. बहादुर। २. साहसी।  
 दिलासा-संज्ञा पुं० धैर्य।  
 दिली-वि० १. हादिक। २. अत्यंत पविष्ट।  
 दिलीप-संज्ञा पुं० हस्त्राकुर्वशी एक राजा।  
 दिलीर-वि० [संज्ञा दिलीरी] १. पहा-दुर। २. साहसी।  
 दिल्ली-संज्ञा स्त्री० १. दिल लंगाने की क्रिया या भाव। २. टोहली।  
 दिल्लीयात-संज्ञा पुं० मसखरा।  
 दिघराज-संज्ञा पुं० ईश्वर।  
 दिघस-संज्ञा पुं० दिन।  
 दिघरूपति-संज्ञा पुं० सूर्य।  
 दिवांध-वि० जिसे दिन में न सुके।  
 संज्ञा पुं० १. दिनांघ्री का रोग। २. बरख।  
 दिवा-संज्ञा पुं० १. दिन। २. पाईस अक्षरों का एक पर्यवृत्त।  
 दिवाकर-संज्ञा पुं० सूर्य।  
 दिवाना-संज्ञा पुं० दे० "दीवाना"।  
 कि० प्र० दे० "दिलाना"।  
 दिवाल-वि० जो देता हो।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।  
 दिवाला-संज्ञा पुं० १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना धन



दुलहन-संज्ञा स्त्री० नवविवाहिता वधू ।

दुलहा-संज्ञा पुं० दे० "दूहा" ।

दुलहिया, दुलही-संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन" ।

दुलहेटा-संज्ञा पुं० हुलारा लड़का ।

दुलाई-संज्ञा स्त्री० छोड़ने का दोहरा कपड़ा जिसके भीतर रुई भरी हो ।

दुलाना-कि० स० दे० "हुलाना" ।

दुलार-संज्ञा पुं० लाड़-प्यार ।

दुलारना-कि० स० लाड़ करना ।

दुलारा-वि० [ ला० हुलारा ] जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो ।

दुध-वि० दे० ।

दुधन-संज्ञा पुं० १. खल । २. शत्रु । ३. राक्षस ।

दुधाज-संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा ।

दुधादस-वि० दे० "द्वादश" ।

दुधादस घानी-वि० खरा ।

दुधार-संज्ञा पुं० दे० "द्वार" ।

दुधाल-संज्ञा स्त्री० रिकाम में जगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता ।

दुधिधा-संज्ञा स्त्री० दे० "दुग्ध" ।

दुघो-वि० दानों ।

दुशवार-वि० [ संज्ञा दुश्वाण ] कठिन ।

दुशाला-संज्ञा पुं० पशमीने की चादरी का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें धनी रहती हैं ।

दुशासन-संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन" ।

दुश्चारत-वि० गुरे आचरण का ।

संज्ञा पुं० गुरा-आचरण ।

दुश्चरित्र-वि० [ स्त्री० दुश्चरित्रा ]

गुरे चरित्रवाला ।

संज्ञा पुं० गुरी चाल ।

दुश्चेष्टा-संज्ञा स्त्री० [ वि० दुश्चेष्टित ] गुण काम ।

दुश्मन-संज्ञा पुं० शत्रु ।

दुश्मनी-संज्ञा स्त्री० घैर ।

दुष्कर-वि० दुःसाध्य ।

दुष्कर्म-संज्ञा पुं० [ वि० दुष्कर्मा ] गुरा काम ।

दुष्कर्मा-वि० पापी ।

दुष्कर्मी-वि० गुरा काम करनेवाला ।

दुष्काल-संज्ञा पुं० १. गुरा पक्ष । २. दुर्भिक्ष ।

दुष्ट-वि० [ स्त्री० दुष्टा ] १. जिसमें दोष वा ऐव हो । २. दुर्जन ।

दुष्टता-संज्ञा स्त्री० १. दोष । २. बद्-भासी ।

दुष्टपना-संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता" ।

दुष्टाचार-संज्ञा पुं० कुचाल ।

दुष्टारमा-वि० खोटी प्रकृति का ।

दुष्प्राप्य-वि० जो सहज में न मिल सके ।

दुष्पंत-संज्ञा पुं० पुरुवंशी एक राजा जो ऐति नामक राजा के पुत्र थे । इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गंधर्व विवाह किया था ।

दुसराना-कि० स० दे० "दोहराना" ।

दुसारहा-वि० साथी ।

दुसह-वि० जो सह न पाय ।

दुसही-वि० जो कठिनता से सह सके ।

चुकाने के लिये कुछ न रह जाय ।  
२. किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना ।

दिवालिवा-वि० जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ न बच गया हो ।

दिवाली-संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली" ।

दिवाया-वि० देनेवाला ।

दिव्य-वि० १. स्वर्गीय । २. अलौकिक । ३. प्रकाशमान ।

दिव्यचक्षु-संज्ञा पुं० ज्ञानचक्षु ।

दिव्यता-संज्ञा स्त्री० १. दिव्यका भाव ।  
२. सुंदरता ।

दिव्यदृष्टि-संज्ञा स्त्री० ज्ञानदृष्टि ।

दिव्यरथ-संज्ञा पुं० देवताओं का विमान ।

दिव्यांगना-संज्ञा स्त्री० १. देवचभू ।  
२. अप्सरा ।

दिव्या-संज्ञा स्त्री० तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक ।

दिव्यादिव्य-संज्ञा पुं० तीन प्रकार के नायकों में से एक ।

दिव्यादिव्या-संज्ञा स्त्री० तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक ।

दिव्यास्त्र-संज्ञा पुं० १. देवताओं का दिया हुआ हथियार । २. मंत्रों द्वारा चलायेवाला हथियार ।

दिव्योदक-संज्ञा पुं० वर्षा का जल ।

दिश-संज्ञा स्त्री० दिशा ।

दिशा-संज्ञा स्त्री० तरफ ।

दिशाभ्रम-संज्ञा पुं० दिशाओं के संबंध में भ्रम होना ।

दिशाशूल-संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल" ।

दिशि-संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" ।

दिष्ट-संज्ञा पुं० भाग्य ।

दिष्ट्यंधक-संज्ञा पुं० वह रेहन जिसमें

चीज पर रुपए देनेवाले का कोई कब्जा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे ।  
दिष्टि-संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि" ।

दिसंतरा-संज्ञा पुं० देशांतर ।

कि० वि० बहुत दूर तक ।

दिसा-संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" ।

दिसना-संज्ञा स्त्री० दे० "दिखना" ।

दिसा-संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" ।

संज्ञा स्त्री० पैखाना ।

दिसावर-संज्ञा पुं० परदेस ।

दिसावरी-वि० यादगरी ।

दिसि-संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा" ।

दिसिटि-संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि" ।

दिसिदुरद-संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज" ।

दिसिनायका-संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

दिसिप-संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

दिसिराज-संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल" ।

दिसैया-वि० १. देखनेवाला ।  
२. दिखानेवाला ।

दिस्टी-संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि" ।

दिस्टीबंध-संज्ञा पुं० नज़रबंद । जादू ।

दिस्ता-संज्ञा पुं० दे० "दस्ता" ।

दिहंदा-वि० दाता ।

दिहाड़ा-संज्ञा पुं० १. हुगंत । २. दिन ।

दिहात-संज्ञा स्त्री० दे० "देहात" ।

दीआ-संज्ञा पुं० दे० "दीया" ।

दीक्षाक-संज्ञा पुं० दीक्षा देनेवाला गुरु ।

दीक्षा-संज्ञा स्त्री० १. गुरु या आचार्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश । २. उपनयन-संस्कार जिसमें आचार्य गायत्री मंत्र का उपदेश देता है । ३. गुरुमंत्र ।

दुसाध-संज्ञा पुं० हिंदुओं में एक नीच जाति जो सूअर पालती है।

दुसार-संज्ञा पुं० आर पार किया हुआ छेद।

कि० वि० एक पार से दूसरे पार तक।

दुसाल-संज्ञा पुं० आर-पार छेद।

दुसूती-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मोटी चादर।

दुसेजा-संज्ञा पुं० पलंग।

दुस्तर-वि० १. जिसे पार करना कठिन हो। २. विकट।

दुस्सह-वि० दे० "दुःसह"।

दुहत्या-वि० [ स्त्री० दुहत्वा ] दोनों हाथों से किया हुआ।

दुहना-कि० सं० १. स्नान से दूध निचोड़कर निकालना। २. निचोड़ना।

दुहनी-संज्ञा स्त्री० वह वस्तु जिसमें दूध दुहा जाता है।

दुहाई-संज्ञा स्त्री० १. घोषणा। २. शपथ।

संज्ञा स्त्री० १. गाय, भैंस आदि को दुहने का काम। २. दुहने की मजदूरी।

दुहावनी-संज्ञा स्त्री० दुहाई।

दुहिता-संज्ञा स्त्री० कन्या।

दुहिन-संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

दुहेला-वि० स्त्री० [ दुहेली ] कठिन।

संज्ञा पुं० विकट या दुःखदायक कार्य।

दुहजा-संज्ञा स्त्री० दे० "दूज"।

दुकान-संज्ञा पुं० दे० "दुकान"।

दुखना-कि० सं० ऐब लगाना।

दूज-संज्ञा स्त्री० द्वितीया।

दूजा-वि० दूसरा।

दूत-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दूती ] चर।

दूतकर्म-संज्ञा पुं० दूत का काम।

दूतिका, दूती-संज्ञा स्त्री० कुटनी।

दूध-संज्ञा पुं० पय। दुग्ध।

दूधपिलाई-संज्ञा स्त्री० १. दूध पिलानेवाली दाई। २. ब्याह की एक रसम जिसमें वरात के समय माता, वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा करती है।

दूध-पूत-संज्ञा पुं० धन और संतति।

दूधमंहा-वि० छोटा बच्चा।

दूधमुख-वि० छोटा बच्चा।

दूधिया-वि० १. जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। २. सफेद।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २. एक प्रकार का सफेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं।

दून-संज्ञा स्त्री० दूने का भाव।

दूतावास-संज्ञा पुं० दूसरे राज्य के दूत के रहने का स्थान।

दूना-वि० दुग्ना।

दूनो-वि० दे० "दोनों"।

दूच-संज्ञा स्त्री० एक बहुत प्रसिद्ध घास।

दूबे-संज्ञा पुं० द्विचोदी ब्राह्मण।

दुमर-वि० बठिन।

दुमना-वि० कि० अ० हिलना।

दूरदेश-वि० [ संज्ञा दूरदेशी ] दूरदर्शी।

दूर-कि० वि० बहुत फासले पर।

वि० जो दूर या फासले पर हो।

दूरत्व-संज्ञा पुं० दूरी।

दीक्षागुरु-संज्ञा पुं० मंत्रोपदेष्टा गुरु ।  
दीक्षित-वि० १. जिसने सोमयागादि  
का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो ।  
२. जिसने आचार्य से दीक्षाया गुरु  
से मंत्र लिया हो ।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद ।

दीखना-कि० अ० दिखाई देना ।

दीधी-संज्ञा स्त्री० घाघली ।

दीध्या-संज्ञा स्त्री० दे० "दीधा" ।

दीठ-संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि । २. नजर ।

३. निगरानी । ४. मिहरवानी की  
नजर ।

दीठयंदी-संज्ञा स्त्री० जादू ।

दीठयंत-वि० जिसे दिखाई दे ।

दीदा-संज्ञा पुं० १. दृष्टि । २. आँख ।

३. डिठाई ।

दीदार-संज्ञा पुं० दर्शन ।

दीदी-संज्ञा स्त्री० १. ध्वनि को पुकारने  
का शब्द ।

दीधिति-संज्ञा स्त्री० १. सूर्य, चंद्रमा  
आदि की किरण । २. वैगली ।

दीन-वि० १. दरिद्र । २. दुःखित ।  
३. नम्र ।

संज्ञा पुं० मत ।

दीनता-संज्ञा स्त्री० १. दरिद्रता । २.  
नम्रता ।

दीनताई-संज्ञा स्त्री० दे० "दीनता" ।

दीनत्व-संज्ञा पुं० दीनता ।

दीनदयालु-वि० दोनों पर दया  
करनेवाला ।

संज्ञा पुं० ईश्वर का एक नाम ।

दीनदार-वि० [संज्ञा दीनदारी] धार्मिक ।

दीन-दुनिया-संज्ञा स्त्री० यह लोक  
भर परलोक ।

दीनयंतु-संज्ञा पुं० १. दुखियों का  
सहायक । २. ईश्वर का एक नाम ।

दीनानाथ-संज्ञा पुं० १. दोनों का  
स्वामी या रक्षक । २. ईश्वर ।

दीनार-संज्ञा पुं० १. स्वर्ण-भूषण ।

२. निष्क की सौल । ३. स्वर्णमुद्रा ।

दीप-संज्ञा पुं० १. दीया । २. दस  
मात्रार्थों का एक छंद ।

संज्ञा पुं० दे० "दीप" ।

दीपक-संज्ञा पुं० १. दीया । २. संगीत  
में छः रागों में से दूसरा राग ।

वि० [स्त्री० दीपिका] १. प्रकाश  
करनेवाला । २. पाचन की अग्नि को  
तेज करनेवाला । ३. उरोजक ।

दीपत-संज्ञा स्त्री० १. कति । २.  
शोभा ।

दीपदान-संज्ञा पुं० किसी देवता के  
सामने दीपक जलाने का काम, जो  
पूजन का एक अंग समझा जाता है ।

दीपघज-संज्ञा पुं० काजल ।

दीपन-संज्ञा पुं० [वि० दीपनीय, दीपित,  
दीप्ति, दीप्य] १. प्रकाशन । २. भूख  
को उभारना । ३. उत्तेजन ।

वि० दीपन करनेवाला ।

संज्ञा पुं० मंत्र के वन दस संस्कारों  
में से एक जिनके बिना मंत्र सिद्ध  
नहीं होता ।

दीपना-कि० अ० प्रकाशित होना ।  
क्रि० स० प्रकाशित करना ।

दीपमाला-संज्ञा स्त्री० १. जलते हुए  
दीपों की पंक्ति । २. दीपदान या  
भारती के लिये जलाई हुई घसियों  
का समूह ।

दीपमालिका-संज्ञा स्त्री० १. दीपदान,  
भारती या शोभा के लिये दीपों की  
पंक्ति । २. दीवाली ।

दीपमाली-संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली" ।  
दीपशिखा-संज्ञा स्त्री० चिराग की शै।

दूरदर्शक-वि० दूर तक देखनेवाला ।

दूरदर्शिता-संज्ञा स्त्री० दूर की बात सोचने का गुण ।

दूरदर्शी-वि० बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला ।

दूरमीन-संज्ञा स्त्री० गोल नल के आकार का एक पंख जिससे दूर की चीज़ें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं ।

दूरधर्ती-वि० दूर का ।

दूरधीक्षण-संज्ञा पुं० दूरमीन ।

दुरी-संज्ञा स्त्री० दूरत्व ।

दूर्या-संज्ञा स्त्री० दूर नाम की घास ।

दुलह-संज्ञा पुं० १. दुल्हा । २. पति ।

दुल्हा-संज्ञा पुं० दे० "दुल्हा" ।

दूषक-संज्ञा पुं० वह जो किसी पर दोषारोपण करे ।

दूषण-संज्ञा पुं० १. दोष । २. दोष लगाना ।

दूषणीय-वि० दोष लगाने योग्य ।

दूषना-कि० स० दोष लगाना ।

दूषित-वि० जिसमें दोष हो ।

दूष्य-वि० १. दोष लगाने योग्य । २. निन्दनीय ।

दूसना-कि० स० दे० "दूषना" ।

दूसरा-वि० १. पहले के बाद का । द्वितीय । २. अन्य ।

दृक्-संज्ञा पुं० चिद्र ।

दृक्क्षेप-संज्ञा पुं० दृष्टिपात ।

दृक्पथ-संज्ञा पुं० दृष्टि का मार्ग ।

दृक्पात-संज्ञा पुं० दृष्टिपात ।

दृक्शक्ति-संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश-रूप । चैतन्य । २. आत्मा ।

दृगंचल-संज्ञा पुं० पलक ।

दृग-संज्ञा पुं० १. आँख । २. दृष्टि ।

दृगमित्राद्य-संज्ञा पुं० आँख-मित्रादी का खेल ।

दृगोच्चर-वि० जो आँख से दिखाई दे ।

दृढ़-वि० १. प्रगाढ़ । २. घलवान् ।

३. कड़े दिल का ।

दृढ़ता-संज्ञा स्त्री० १. दृढ़ होने का भाव । २. मजबूती ।

दृढ़त्व-संज्ञा पुं० दृढ़ता ।

दृढ़ान-वि० दृष्ट-पुष्ट ।

दृढ़ार्थ-संज्ञा स्त्री० दे० "दृढ़ता" ।

दृढ़ाना-कि० स० दृढ़ करना ।

कि० अ० स्थिर या पक्का होना ।

दृश्य-संज्ञा पुं० [वि० दृश्य] १. दर्शन ।

२. प्रदर्शक । ३. देखनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि । २. आँख ।

दृश्य-वि० १. जो देखने में आ सके । २. दर्शनीय ।

संज्ञा पुं० १. वह पदार्थ जो आँखों के सामने हो । २. समझा ।

दृश्यमान-वि० जो दिखाई पड़ रहा हो ।

दृष्ट-वि० १. देखा हुआ । २. जाना हुआ । ३. प्रत्यक्ष ।

संज्ञा पुं० दर्शन ।

दृष्टकूट-संज्ञा पुं० पहेली ।

दृष्टमान-वि० प्रकट ।

दृष्टवाद-संज्ञा पुं० वह दार्शनिक सिद्धांत जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है ।

दृष्टांत-संज्ञा पुं० उदाहरण ।

दृष्टार्थ-संज्ञा पुं० वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो ।

दृष्टि-संज्ञा स्त्री० १. आँख की ज्योति । २. नज़र । ३. परस् । ४. आस ।

दृष्टिगत-वि० जो दिखाई पड़ता हो ।

दीपावलि-संज्ञा स्त्री० दे० "दीप-  
मालिका" ।  
दीपिका-संज्ञा स्त्री० छोटा दीया ।  
वि० स्त्री० उजाला फैलानेवाली ।  
दीपित-वि० १. प्रकाशित । २. चम-  
कता या जगमगाता हुआ । ३.  
उत्तेजित ।  
दीपारसव-संज्ञा पुं० दीवाली ।  
दीप्त-वि० १. प्रज्वलित । २. चमकीला ।  
दीप्ति-संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश । २.  
प्रभा । ३. कांति ।  
दीप्तिमान्-वि० [ स्त्री० दीप्तिमती ] १.  
चमकता हुआ । २. कांतियुक्त ।  
दीप्य-वि० १. जो जलाने योग्य हो  
हो । २. जो जलाने योग्य हो ।  
दीप्यमान-वि० चमकता हुआ ।  
दीयो-संज्ञा पुं० दे० "देना" ।  
दीमक-संज्ञा स्त्री० धौंटी की तरह का  
एक छोटा सफ़ेद कीड़ा ।  
दीवट-संज्ञा पुं० दे० "दीवट" ।  
दीया-संज्ञा पुं० १. दीपक । २. चत्ती  
जलाने का छोटा कसौरा ।  
दीयासलाई-संज्ञा स्त्री० छकड़ी की  
छोटी सलाई या सीक जिसका एक  
सिरा गंधक आदि लगी रहने के  
कारण रगड़ने से जल उठता है ।  
दीर्घ-वि० दे० "दीर्घ" ।  
दीर्घ-वि० १. लंबा । २. बड़ा ।  
संज्ञा पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण ।  
दीर्घकाय-वि० बड़े शरीर-ढोख का ।  
दीर्घजीवी-वि० जो बहुत दिनों तक  
जीए ।  
दीर्घदर्शिता-संज्ञा स्त्री० दूरदर्शिता ।  
दीर्घदर्शी-वि० दूरदर्शी ।  
दीर्घदृष्टि-वि० दे० "दीर्घदर्शी" ।

दीर्घनिद्रा-संज्ञा स्त्री० मृत्यु ।  
दीर्घ निःश्वास-संज्ञा पुं० लंबी साँस  
जो दुःख के आवेग के कारण ली  
जाती है ।  
दीर्घबाहु-वि० जिसकी भुजाएँ लंबी  
हों ।  
दीर्घलोचन-वि० बड़ी आँखोंवाला ।  
दीर्घश्रुत-वि० १. जो दूर तक सुनाई  
पड़े । २. जिसका नाम दूर तक  
विख्यात हो ।  
दीर्घसूत्र-वि० दे० "दीर्घसूत्री" ।  
दीर्घसूत्रता-संज्ञा स्त्री० प्रत्येक कार्य  
में विलंब करने का स्वभाव ।  
दीर्घसूत्री-वि० हर एक काम में  
जरूरत से ज्यादा देर लगानेवाला ।  
दीर्घस्वर-संज्ञा पुं० द्विमात्रिक स्वर ।  
दीर्घायु-वि० चिरंजीवी ।  
दीर्घिका-संज्ञा स्त्री० छोटा ताब्या ।  
दीवट-संज्ञा स्त्री० पीतल, लकड़ी आदि  
का आधार जिस पर दीया रखा  
जाता है ।  
दीया-संज्ञा पुं० दीया ।  
दीधान-संज्ञा पुं० १. राजसभा । २.  
मंत्री ।  
दीधानग्राम-संज्ञा पुं० १. ऐसा दर-  
बार जिसमें राजा या बादशाह से  
सब लोग मिल सकते हों । २. वह  
स्थान जहाँ ग्राम दरबार लगता हो ।  
दीवानखाना-संज्ञा पुं० बैठक ।  
दीवानख़ास-संज्ञा पुं० खास दरबार ।  
दीवाना-वि० [स्त्री० दीवानी] पागल ।  
दीवानापन-संज्ञा पुं० पागलपन ।  
दीवानी-संज्ञा स्त्री० १. दीवान का  
पद । २. वह न्यायालय जो संपत्ति  
आदि संबंधी स्वत्वों का निर्णय करे ।

दृष्टिगोचर-वि० जो देखने में था  
सके ।

दृष्टिपथ-संज्ञा पुं० दृष्टि का फैलाव ।

दृष्टिपात-संज्ञा पुं० ताकना ।

दृष्टिवंध-संज्ञा पुं० १. जादू । २.

हाथ की सफाई या चालाकी ।

दृष्टिवंत-वि० १. दृष्टिवाला । २.  
ज्ञानी ।

दृष्टिवाद-संज्ञा पुं० यह सिद्धांत जिसमें  
दृष्टि या प्रापञ्च प्रमाण ही की प्रधा-  
नता हो ।

दे-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के लिये एक आदर-  
सूचक शब्द ।

देई-संज्ञा स्त्री० १. देवी । २. स्त्रियों  
के लिये एक आदरसूचक शब्द ।

देख-संज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया या  
भाव ।

देखन-संज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया,  
भाव या वंश ।

देखनहारा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० देखन-  
हारी ] देखनेवाला ।

देखना-क्रि० स० १. किसी वस्तु के  
अस्तित्व या उसके रूप, रंग आदि  
का ज्ञान नेत्रों द्वारा प्राप्त करना ।  
२. जाँच करना । ३. परीक्षा करना  
४. निगरानी रखना ।

देख-भाल-संज्ञा स्त्री० १. जाँच-पड़-  
ताल । २. देखा-देखी ।

देखरावना-क्रि० स० दे० "दिख-  
लाना" ।

देख-रेख-संज्ञा स्त्री० निगरानी ।

देखाऊ-वि० १. जो देखल देखने में  
सुंदर हो, काम का न हो । २.  
बनावटी ।

देखा देखी-संज्ञा स्त्री० साधारण ।

क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर ।

देखाना-क्रि० स० दे० "दिखाना" ।

देखाव-संज्ञा पुं० १. दृष्टि की सीमा ।

२. ठाट-बाट ।

देखावट-संज्ञा स्त्री० १. बनाव । २.  
ठाट-बाट ।

देग-संज्ञा पुं० खाना पकाने का चौड़े  
मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन ।

देगवा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भत्ता० देगवी ]  
छोटा देग ।

देदीप्यमान-वि० चमकता हुआ ।

देन-संज्ञा स्त्री० १. देने की क्रिया या  
भाव । २. दी हुई चीज ।

देनहार-संज्ञा पुं० श्रेणी ।

देनहारा-वि० देनेवाला ।

देना-क्रि० स० अपने अधिकार से  
दूसरे के अधिकार में करना ।

संज्ञा पुं० कर्ज ।

देय-वि० देने योग्य ।

देर-संज्ञा स्त्री० १. विलंब । २. समय ।

देरी-संज्ञा स्त्री० दे० "देर" ।

देव-संज्ञा पुं० [ स्त्री० देवी ] १. देवता ।  
२. माहुरों तथा बहों के लिये एक  
आदर-सूचक शब्द ।

संज्ञा पुं० दैत्य ।

देवभूषण-संज्ञा पुं० देवताओं के लिये  
कस्तूर, यज्ञादि ।

देवभूषि-संज्ञा पुं० देवताओं के लोक  
में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि,  
भरद्वाज, पुलस्त्य आदि भूषि ।

देवकन्या-संज्ञा स्त्री० देवता की पुत्री ।

देवकी-संज्ञा स्त्री० वसुदेव की स्त्री  
और श्रीकृष्ण की माता का नाम ।

देवकीनंदन-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

देवगण-संज्ञा पुं० देवताओं का वर्ग ।

देवगति-संज्ञा स्त्री० स्वर्गलोक ।

देवगिरि-संज्ञा पुं० १. रैवतक पर्वत

जो गुजरात में है। २. दक्षिण का एक प्राचीन नगर, जो आजकल दौलताबाद कहलाता है।

देवगुरु-संज्ञा पुं० बृहस्पति।

देवठान-संज्ञा पुं० कात्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् सोकर बैठते हैं।

देवता-संज्ञा पुं० स्वर्ग में रहनेवाला अमर प्राणी।

देवत्व-संज्ञा पुं० देवता होने का भाव या धर्म।

देवदत्त-वि० १. देवता का दिया हुआ। २. देवता के निमित्त दिया हुआ।

संज्ञा पुं० १. देवता के निमित्त दान की हुई संपत्ति। २. अश्विन के शंख का नाम।

देवदार-संज्ञा पुं० एक बहुत ऊँचा और सीधा पेड़।

देवदासी-संज्ञा स्त्री० एक छता जो देखने में गुरह की घेज से मिलती-जुलती होती है।

देवदासी-संज्ञा स्त्री० १. वेदया। २. मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्चकी।

देवदेव-संज्ञा पुं० ईश्वर।

देवधुनि-संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।

देवनदी-संज्ञा स्त्री० १. गंगा। २. सरस्वती और रघुनदी नदियाँ।

देवनागरी-संज्ञा स्त्री० भारतवर्ष की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिंदी, मराठी आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं।

देवपथ-संज्ञा पुं० आकाश।

देवभाषा-संज्ञा स्त्री० संस्कृत भाषा।

देवभूमि-संज्ञा स्त्री० स्वर्ग।

देवमंदिर-संज्ञा पुं० देवालय।

देवमाया-संज्ञा स्त्री० परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप होकर जीवों को धंधन में डालती है।

देवमुनि-संज्ञा पुं० नारद ऋषि।

देवयज्ञ-संज्ञा पुं० होमादि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है।

देवयानी-संज्ञा स्त्री० शुक्राचार्य की कन्या, जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर आसक्त हुई थी। पीछे राजा ययाति के साथ इसका विवाह हुआ था।

देवर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० देवराणी ] पति का छोटा भाई।

देवरानी-संज्ञा स्त्री० देवर की स्त्री।

संज्ञा स्त्री० ईश्वरणी।

देवर्षि-संज्ञा पुं० नारद, अग्नि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि जो देवताओं में ऋषि माने जाते हैं।

देवल-संज्ञा पुं० १. पुजारी। पंडा। २. एक प्रकार का चावल।

संज्ञा पुं० देवालय।

देवयधू-संज्ञा स्त्री० देवता की स्त्री।

देववाणी-संज्ञा स्त्री० १. संस्कृत भाषा। २. आकाशवाणी।

देववत-संज्ञा पुं० भीष्म पितामह।

देवसभा-संज्ञा स्त्री० देवताओं का समाज।

देवसना-संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की सेवा। २. प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

देवस्थान-संज्ञा पुं० १. देवताओं के रहने की जगह। २. देवालय।

देवांगना-संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की स्त्री। २. अप्सरा।

देवा-वि० देनेवाला।



आवश्यक ठहराया गया हो । ...

धर्मक्षेत्र-संज्ञा पुं० १. कुरुक्षेत्र । २. भारतवर्ष जो धर्म के संचय के लिये कर्म-भूमि माना गया है ।

धर्मचक्र-संज्ञा पुं० बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरंभ काशी से हुआ था ।

धर्मचर्या-संज्ञा स्त्री० धर्म का आचरण ।

धर्मधक्का-संज्ञा पुं० १. वह हानि या कठिनाई जो धर्म या परोपकार आदि के लिये सहनी पड़े । २. व्यर्थ का कष्ट ।

धर्मध्वज-संज्ञा पुं० पाखंडी ।

धर्मध्वजी-संज्ञा पुं० पाखंडी ।

धर्मनेष्ट-वि० धार्मिक ।

धर्मपत्नी-महा स्त्री० विवाहिता स्त्री ।

धर्मयुग-संज्ञा पुं० सत्ययुग ।

धर्मयुद्ध-संज्ञा पुं० वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का नियम मंग न हो ।

धर्मराज-संज्ञा पुं० १. धर्म का पावन करनेवाला राजा । २. बुधपित्र । ३. यमराज । ४. न्यायाधीश ।

धर्मशाला-संज्ञा स्त्री० वह मकान जो पथिकों या यात्रियों के ठिकने के लिये धर्मार्थ बना हो ।

धर्मशास्त्र-संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार-सर्वधी नियम हो ।

धर्मशास्त्री-संज्ञा पुं० धर्मशास्त्र जाननेवाला पंडित ।

धर्मशील-वि० [ संज्ञा धर्मशीलता ] धार्मिक ।

धर्मसभा-संज्ञा स्त्री० न्यायालय ।

धर्मोशु-संज्ञा पुं० सूर्य ।

धर्मोत्तमा-वि० धर्मशील ।

धर्माधिकरण-संज्ञा पुं० न्यायालय ।

धर्माधिकारी-संज्ञा पुं० १. न्यायाधीश । २. दानाध्यक्ष ।

धर्माध्यक्ष-संज्ञा पुं० दे० "धर्माधिकारी" ।

धर्मार्थ-क्रि० वि० परोपकार के लिये ।

धर्मोसन-संज्ञा पुं० वह आसन या चौकी जिस पर न्यायाधीश बैठता है ।

धर्मिणी-संज्ञा स्त्री० पत्नी ।

वि० धर्म करनेवाली ।

धर्मिष्ठ-वि० धार्मिक ।

धर्मी-वि० [ स्त्री० धर्मिणी ] १. जिसमें धर्म या गुण हो । २. धार्मिक ।

३. मत या धर्म को माननेवाला ।

संज्ञा पुं० १. धर्म का आधार । २.

धर्मोत्तमा मनुष्य ।

धर्मोपदेशक-संज्ञा पुं० धर्म का उपदेश देनेवाला ।

धर्मक-संज्ञा पुं० वह जो धर्म्य करे ।

धर्म्य-संज्ञा पुं० [ वि० धर्म्यता, धर्म्य ] १. अन्याय । २. दबाचना ।

धर्म्यता-संज्ञा स्त्री० १. अवज्ञा । २. दवाने या हराने का कार्य । ३.

सतीत्वहरण ।

धर्मो-वि० [ स्त्री० धर्मिणी ] धर्म्य करनेवाला ।

धव-संज्ञा पुं० १ एक जंगली पेड़ जिसके कई खंभों का ओपधि के रूप में व्यवहार होता है । २. पति । ३. पुरुष ।

धवनी-संज्ञा स्त्री० दे० "धौकनी" ।

† वि० सफेद ।

धवरा-वि० [ स्त्री धवरी ] रजला ।

धवरी-वि० स्त्री० सफेद ।

धवल-वि० १. श्वेत । २. निर्मल ।

देवाना-संज्ञा पुं० १. दरबार । २. मंत्री ।

देवारी-संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली" ।

देवार्पण-संज्ञा पुं० देवता के निमित्त किसी वस्तु का दान ।

देवालय-संज्ञा पुं० १. स्वर्ग । २. मंदिर ।

देवी-संज्ञा स्त्री० १. देवता की स्त्री ।

२. सुशीला और सदाचारिणी स्त्री ।

देवीपुराण-संज्ञा पुं० एक उपपुराण जिसमें देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है ।

देवीभागवत-संज्ञा पुं० एक पुराण जिसकी गणना बहुत से लोग उप-पुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं ।

देवेंद्र-संज्ञा पुं० इंद्र ।

देवैया-वि० देनेवाला ।

देवोत्तर-संज्ञा पुं० देवता को अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति ।

देवोत्थान-संज्ञा पुं० विष्णु का शेष की शय्या पर से उठना, जो कार्तिक शुक्ल पक्षादशी को होता है ।

देवोद्यान-संज्ञा पुं० देवताओं के बगीचे, जो चार हैं ।

देश-संज्ञा पुं० १. राष्ट्र । २. स्थान ।

देशज-वि० देश में उत्पन्न ।

संज्ञा पुं० वह शब्द जो न संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से योही उत्पन्न हो गया हो ।

देशनिकाला-संज्ञा पुं० देश से निकाल दिए जाने का दंड ।

देशांतर-संज्ञा पुं० १. विदेश । २. भूगोल में ध्रुवों से होकर उत्तर

दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्यरेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी ।  
देशाटन-संज्ञा पुं० भिन्न भिन्न देशों की यात्रा ।

देशी-वि० देश का ।

देशीय-वि० दे० "देशी" ।

देस-संज्ञा पुं० दे० "देश" ।

देसाघर-संज्ञा पुं० विदेश ।

देसी-वि० स्वदेश का ।

देह-संज्ञा स्त्री० [वि० देशी] १. शरीर ।

२. जीवन ।

संज्ञा पुं० गाँव ।

देहत्याग-संज्ञा पुं० मृत्यु ।

देहधारण-संज्ञा पुं० जन्म ।

देहधारी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० देहधारिणी ]

शरीर धारण करनेवाला ।

देहपात-संज्ञा पुं० मृत्यु ।

देहरा-संज्ञा पुं० देवालय ।

संज्ञा पुं० मनुष्य का शरीर ।

देहरी-वि०-संज्ञा स्त्री० दे० "देहली" ।

देहली-संज्ञा स्त्री० द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है ।

देहलीज ।

देहघंत-वि० जो तनुधारी हो ।

संज्ञा पुं० प्राणी ।

देहघान-वि० शरीरधारी ।

देहांत-संज्ञा पुं० मृत्यु ।

देहात-संज्ञा पुं० [ वि० देशी ] गाँव ।

देहाती-वि० १. गाँव का । २. गँवार ।

देही-संज्ञा पुं० आत्मा ।

दैत्य-संज्ञा पुं० १. राक्षस । २. लंबे सीख

या असाधारण बल का मनुष्य ।

दैत्यगुरु-संज्ञा पुं० शुक्राचार्य ।

दैनंदिन-वि० नित्य का ।

क्रि० वि० १. प्रति दिन । २. दिनों दिन ।

घघलगिरि-संज्ञा पुं० दे० "घघला-गिरि" ।

घघलता-संज्ञा स्त्री० सफेदी ।

घघलाई-संज्ञा स्त्री० सफेदी ।

घघलागिरि-संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी ।

घघाना-क्रि० स० दौड़ाना ।

घस-संज्ञा पुं० हुयकी ।

घसक-संज्ञा स्त्री० १. ठन ठन शब्द जो सूखी खाँसी में गले से निकलता है । २. सूखी खाँसी ।

संज्ञा स्त्री० १. डाढ़ । २. घसकने की क्रिया या भाव ।

घसकना-क्रि० भ० १. नीचे को धँसना या दब जाना । २. डाढ़ करना ।

घसना-क्रि० भ० नष्ट होना ।

१ क्रि० भ० दे० "धँसना" ।

घसनि-संज्ञा स्त्री० दे० "धँसनि" ।

घसान-संज्ञा स्त्री० दे० "धँसान" ।

संज्ञा स्त्री० पूरबी राजवा और बुंदेलखंड की एक छोटी नदी ।

घांगड़-संज्ञा पुं० एक अनार्य जंगली जाति ।

घांधना-क्रि० स० १. बंद करना ।

२. बहुत अधिक खा लेना ।

घांधल-संज्ञा स्त्री० १. ऊधम । २. फुरेघ ।

घाघलपन-संज्ञा पुं० १. पाजीपन ।

२. धोखेबाजी ।

घांधली-संज्ञा स्त्री० १. उपद्रवी ।

२. धोखेबाज ।

घासना-क्रि० भ० पशुओं का खासना ।

घाऊ-संज्ञा पुं० हरकारा ।

घाफ-संज्ञा स्त्री० १. रोख । २. प्रसिद्धि ।

धागा-संज्ञा पुं० डोरा ।

धाड़ा-संज्ञा स्त्री० १. दे० "डाढ़" ।

२. दे० "दहाड़" । ३. दे० "डाढ़" ।

संज्ञा स्त्री० १. डाकुओं का आक्रमण ।

२. जस्था ।

धाता-संज्ञा पुं० विधि ।

वि० पालनेवाला ।

धातु-संज्ञा स्त्री० १. वह खनिज मूल द्रव्य जो अपारदर्शक हो, जिसमें एक विशेष प्रकार की चमक और गुरुत्व हो, जिसमें से होकर ताप और विद्युत् का संचार हो सके तथा जो पीटने पर चपचा तार के रूप में खींचने से क्षणित न हो । २. शरीर को बनाये रखनेवाले पदार्थ । ३. वीर्य ।

संज्ञा पुं० १. तत्त्व । २. शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनी या बनती हैं ।

धातुधाव-संज्ञा पुं० १. रसायन बनाने का काम । २. तथे से सेना बनाना ।

धात्री-संज्ञा स्त्री० १. माता । २. धाय ।

धात्रीविद्या-संज्ञा स्त्री० खड़का जमाने और उसे पालने आदि की विद्या ।

धान-संज्ञा पुं० तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों की गिनती अच्छे अर्थों में है । इसे बूटने से चावल बनते हैं ।

धानक-संज्ञा पुं० १. धनुष चबाने-वाला । २. धुनिया ।

धानपान-वि० नाजुक ।

धाना-क्रि० भ० तेजी से चबाना । दौड़ाना ।

धानी-संज्ञा स्त्री० धान की पत्तों के

देन-वि० देनेवाला ।  
 दैनिक-वि० प्रति दिन का ।  
 दैन्य-संज्ञा पुं० दीनता ।  
 दैयता-संज्ञा पुं० दैत्य ।  
 दैया-संज्ञा पुं० दहे ।  
 दैव्य-आश्चर्य्य, अथवा दुःखसूचक  
 शब्द जिसे स्त्रियाँ बोधती हैं ।  
 दैव्य-वि० [ वि० दैव ] देवता-संबंधी ।  
 संज्ञा पुं० १. प्रारब्ध । २. ईश्वर ।  
 दैवगति-संज्ञा स्त्री० १. दैवी घटना ।  
 २. भाग्य ।  
 दैवज्ञ-संज्ञा पुं० ज्योतिषी ।  
 दैवत-वि० देवता-संबंधी ।  
 संज्ञा पुं० १. देवता की प्रतिमा आदि ।  
 २. देवता ।  
 दैवयोग-संज्ञा पुं० संयोग ।  
 दैववाणी-संज्ञा स्त्री० १. आकाश-  
 वाणी । २. संस्कृत ।  
 दैववादी-संज्ञा पुं० १. भाग्य के  
 भरोसे रहनेवाला । २. आडसी ।  
 दैवविवाह-संज्ञा पुं० आठ प्रकार के  
 विवाहों में से एक ।  
 दैवागत-वि० दैवी ।  
 दैवात्-क्रि० वि० अकस्मात् ।  
 दैविक-वि० १. देवता-संबंधी । २.  
 देवताओं का किया हुआ ।  
 दैवी-वि० १. देवताओं की की हुई ।  
 २. आकस्मिक ।  
 दैवी गति-संज्ञा स्त्री० १. ईश्वर की  
 की हुई यात । २. होनहार ।  
 दैहिक-वि० १. देह-संबंधी । २.  
 देह से उत्पन्न ।  
 दोचना-क्रि० स० दबाव में डालना ।  
 दो-वि० एक और एक ।  
 दोआब-संज्ञा पुं० किसी देश का वह

भाग जो दो नदियों के बीच में हो ।  
 दोहा-संज्ञा पुं० वि० दे० "दो" ।  
 दोउ, दोऊ-वि० दोनों ।  
 दोखा-संज्ञा पुं० दे० "दोप" ।  
 दोखना-क्रि० स० दोप लगाना ।  
 दोखी-संज्ञा पुं० दे० "दोषी" ।  
 दोगला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दोगली ] १.  
 जारज । २. वह जीव जिसके माता-  
 पिता भिन्न भिन्न जातियों के हों ।  
 दोब-संज्ञा स्त्री० १. दुबघा । २.  
 दबाव ।  
 दोचिच्छा-वि० [ स्त्री० दोचिछी ] जिसका  
 चित्त दो कामों या बातों में बँटा हो ।  
 दोचित्ती-संज्ञा स्त्री० चित्त की बँटि-  
 प्रता ।  
 दोज़ख-संज्ञा पुं० मुसलमानों के अनु-  
 सार नरक जिसके सात विभाग हैं ।  
 दोज़खी-वि० १. दोज़ख-संबंधी ।  
 २. नारकी ।  
 दोतरफ़ा-वि० दोनों तरफ़ का ।  
 क्रि० वि० दोनों तरफ़ ।  
 दोतला, दोतला-वि० दो खंड का ।  
 दोतारा-संज्ञा पुं० एकतारे की सरह  
 का एक प्रकार का बाजा ।  
 दोदना-क्रि० स० प्रत्यक्ष कही हुई  
 बात से इनकार करना ।  
 दोधारा-वि० [ स्त्री० दोधारी ] जिसके  
 दोनों ओर धार या पाद हो ।  
 दोन-संज्ञा पुं० दो पहाड़ों के बीच की  
 नीची ज़मीन ।  
 संज्ञा पुं० दोआबा ।  
 दोनला-वि० जिसमें दो नाले हों ।  
 दोना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दोनी ] पत्तों का  
 बना हुआ कटोरे के आकार का  
 छोटा गहरा पात्र ।

रंग का सा हलका हरा रंग ।  
 वि० हलके हरे रंग का ।  
 संज्ञा स्त्री० भूना हुआ जौ या गेहूँ ।  
 धान्य-संज्ञा पुं० १. चार तिल का एक तैल । २. घनिया । ३. धान । ४. अन्न मात्र ।  
 धाव-संज्ञा पुं० १. लंबा चौड़ा मैदान । २. खेत की नाप ।  
 संज्ञा स्त्री० वृत्ति ।  
 धाया-संज्ञा पुं० अटारी ।  
 धाम-संज्ञा पुं० घर ।  
 धार्य-संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ के क्षोर से गिरने का शब्द ।  
 धाय-संज्ञा स्त्री० दाई ।  
 संज्ञा पुं० घघ का पेड़ ।  
 धार-संज्ञा पुं० १. क्षोर से पानी घर-सना । २. अण्ड ।  
 संज्ञा स्त्री० १. पानी आदि के गिरने या बहने का सार । २. किनारा ।  
 धारक-वि० १. धारण करनेवाला । २. रोकनेवाला ।  
 धारण-संज्ञा पुं० १. धामना, लेना या अपने ऊपर ठहराना । २. ग्रहण करना ।  
 धारणा-संज्ञा स्त्री० १. धारण करने की क्रिया या भाव । २. बुद्धि । ३. दृढ़ निश्चय । ४. स्मृति ।  
 धारना-वि० स० धारण करना ।  
 कि० स० दे० "धारना" ।  
 धारा-संज्ञा स्त्री० १. धार । २. पानी का झरना ।  
 धाराघर-संज्ञा पुं० पादल ।  
 धाराघाटी-वि० धारा के रूप में बिना रोक-टोक बहने या चखनेवाला ।  
 धारि-संज्ञा स्त्री० १. दे० "धार" । २. समूह ।

धारिणी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।  
 वि० स्त्री० धारण करनेवाली ।  
 धारी-संज्ञा स्त्री० रेखा । लकीर ।  
 धारीदार-वि० जिसमें लंबी लंबी धारियाँ या लकीरें हों ।  
 धारोष्ण-संज्ञा पुं० धन से निकला हुआ ताज़ा दूध जो प्रायः कुछ गरम होता है और बहुत गुणकारक माना जाता है ।  
 धार्मिक-वि० १. धर्मशील । २. धर्म-संबंधी ।  
 धार्य-वि० धारण करने के योग्य ।  
 धावक-संज्ञा पुं० हरकारा ।  
 धावन-संज्ञा पुं० १. बहुत जल्दी या दौड़कर जाना । २. दूत । ३. धोने या साफ करने का काम ।  
 धावनिर्-संज्ञा स्त्री० १. जल्दी जल्दी चलने की क्रिया या भाव । २. धावा ।  
 धावा-संज्ञा पुं० आक्रमण ।  
 धाव-संज्ञा स्त्री० क्षोर से चिछाकर रोना ।  
 धिंग-संज्ञा स्त्री० ऊधम ।  
 धिंगा-संज्ञा पुं० १. बदमाश । २. बेशर्मा ।  
 धिंगाई-संज्ञा स्त्री० १. शरारत । २. बेशर्मी ।  
 धिंगाना-कि० स० धींगा-धींगी करना ।  
 धिक-अभ्य० १. ज्ञानत । २. निर्दा ।  
 धिक-अभ्य० धिक ।  
 धिकना-कि० अभ० गरम होना ।  
 धिकाना-कि० स० तपाना ।  
 धिकार-संज्ञा स्त्री० ज्ञानत ।  
 धिकारना-कि० स० ज्ञानत-मलामत करना । फटकारना ।

दोनिया, दोनी-संज्ञा स्त्री० छोटा देना ।

दोना-वि० एक और दूसरा । उभय ।  
दोपलिया-वि० संज्ञा स्त्री० दे० "दोपह्नी" ।

दोपह्नी-वि० जिसमें दो पहने हों ।  
दोपहर-संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि सूर्य मध्य आकाश में रहता है ।

दोपहरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर" ।

दोफूसली-वि० १. दोनों फूसलों के संबंध का । २. जो दोनों ओर लग सके ।

दोघारा-क्रि० वि० दूसरी बार ।

दोभापिया-संज्ञा पुं० दे० "दुभापिया" ।

दोमंजिला-वि० जिसमें दो छंड या मंजिलें हो ।

दोमहला-वि० दे० "दोमंजिला" ।

दोमुँहा-वि० १. जिसे दो मुँह हों । २. कपटी ।

दोमुँहा साँप-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का साँप जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है । २. कुटिल ।

दोरंगा-वि० १. दो रंग का । २. जो दोनों ओर लग या चल सके ।

दोरंगी-संज्ञा स्त्री० १. दोरंगे या दो-मुँहे होने का भाव । २. कपट ।

दोरदंड़ा-वि० दे० "दुर्दंड" ।

दोरसा-वि० दो प्रकार के स्वाद या रसवाला ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीने का समाकृ ।

दोराहा-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों ।

दोरखा-वि० १. जिसके दोनों ओर

समान रंग या बेल-बूटे हों । २. जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो ।

दोल-संज्ञा पुं० १. झूला । २. डोली ।

दोला-संज्ञा स्त्री० १. हिं डोला । २. डोली या चंडोला ।

दोलायंत्र-संज्ञा पुं० वैद्यों का एक यंत्र जिसकी सहायता से वे औषधियों के अर्क उतारते हैं ।

दोलायमान-वि० हिलता हुआ ।

दोशाखा-संज्ञा पुं० शमादान या दीवारगीर जिसमें दो घत्तियाँ हों ।

दोष-संज्ञा पुं० १. श्रुपण । २. कलंक । ३. अपराध ।

संज्ञा पुं० शत्रुता ।

दोषना-संज्ञा पुं० दोष ।

दोषना-क्रि० सं० दोष लगाना ।

दोषिनी-संज्ञा स्त्री० १. अपराधिनी । २. पाप करनेवाली स्त्री ।

दोषी-संज्ञा पुं० १. अपराधी । २. पापी ।

दोस-संज्ञा पुं० दे० "दोष" ।

दोसदारी-संज्ञा स्त्री० मित्रता ।

दोसाला-वि० दो वर्ष का ।

दोस्ती-संज्ञा स्त्री० दोस्तही या दुस्ती नाम की बिल्लाने की मोटी चादर ।

दोस्त-संज्ञा पुं० मित्र ।

दोस्ताना-संज्ञा पुं० १. दोस्ती । २. मित्रता का व्यवहार ।

वि० दोस्तो का ।

दोस्ती-संज्ञा स्त्री० मित्रता ।

दोहा-संज्ञा पुं० दे० "द्रोह" ।

दोहगा-संज्ञा स्त्री० रखनी ।

दोहता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दोहती ] नाती ।

धिग-अभ्य० दे० "धिक" ।  
 धिय-संज्ञा स्त्री० १. कन्या । २. लक्ष्मी ।  
 धिरवना-कि० सं० घमकाना ।  
 धिराना-कि० सं० डराना ।  
 कि० अ० धीमा होना ।  
 धीग-संज्ञा पुं० हटा-कटा ।  
 वि० १. मज्ज्वन । २. बदमाश ।  
 धीगरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० धीगरी ] १. मुसंड । २. शठ ।  
 धीगा-संज्ञा पुं० बदमाश ।  
 धीगाधीगी-संज्ञा स्त्री० शरारत ।  
 लुधरदन्ती ।  
 धीगड़, धीगड़ा-वि० [ स्त्री० धीगड़ी ] पात्री ।  
 धीवर-संज्ञा पुं० दे० "धीमर" ।  
 धी-संज्ञा स्त्री० बुद्धि ।  
 धीजना-कि० सं० ग्रहण करना ।  
 धीमा-वि० दे० "धीमा" ।  
 धीमर-संज्ञा पुं० दे० "धीवर" ।  
 धीमा-वि० [ स्त्री० धीमा ] १. जो आहिस्तः चले । २. जिसकी तेज़ी कम हो गई हो ।  
 धीमान्-संज्ञा पुं० [ स्त्री० धीमती ] १. वृद्धस्वप्ति । २. बुद्धिमान् ।  
 धीया-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।  
 धीर-वि० जिसमें धैर्य हो ।  
 ासंज्ञा पुं० १. धैर्य । २. संतोष ।  
 धीरजा-संज्ञा पुं० दे० "धैर्य" ।  
 धीरता-संज्ञा स्त्री० १. धैर्य । २. स्थिरता ।  
 धीरा-संज्ञा स्त्री० एकनायिका विशेष ।  
 वि० मंद ।  
 संज्ञा पुं० धीरज । धैर्य ।  
 धीरे-कि० वि० १. आहिस्ते से । २.

बुपके से ।  
 धीवर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० धीवरी ] मछाह ।  
 धुँकार-संज्ञा स्त्री० गरज ।  
 धुँगार-संज्ञा स्त्री० छैंक ।  
 धुँजा-वि० धुँधली ।  
 धुँध-संज्ञा स्त्री० १. वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल के कारण हो ।  
 २. हवा में उड़ती हुई धूल । ३. आँख का एक रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई देती ।  
 धुँधकार-संज्ञा पुं० १. गड़गड़ाहट ।  
 २. अंधकार ।  
 धुँधमार-संज्ञा पुं० दे० "धुँधुमार" ।  
 धुँधरा-संज्ञा स्त्री० १. हवा में उड़ती हुई धूल । २. अँधेरा ।  
 धुँधला-वि० १. धुँएँ के रंग का ।  
 २. जो अस्पष्ट हो ।  
 धुँधलापन-संज्ञा पुं० १. धुँधले या अस्पष्ट होने का भाव । २. कम दिखाई देने का भाव ।  
 धुँधुकारा-संज्ञा पुं० १. अंधकार ।  
 २. धुँधलापन ।  
 धुँधवाना-कि० अ० धूँसा देना ।  
 धुआँ-संज्ञा पुं० जलती हुई चीज़ों से निकलनेवाली भाप जो कुछ काला-पन लिए होती है ।  
 धुआँकश-संज्ञा पुं० स्टीमर ।  
 धुआँधार-वि० १. धुँएँ से भरा ।  
 धूममय । २. मचंड ।  
 कि० वि० बहुत अधिक या बहुत जोर से ।  
 धुआँना-कि० अ० अधिक धुँएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध में बिगड़ जाना ।

दोहृत्थङ्-संज्ञा पुं० दोनों हाथों से मारा हुआ धप्पड़ ।

दोहृत्था-कि० वि० दोनों हाथों से । वि० जो दोनों हाथों से हो ।

दोहृद्-संज्ञा स्त्री० १. गर्भावस्था । २. गर्भ का चिह्न ।

दोहृदपती-संज्ञा स्त्री० गर्भवती स्त्री ।

दोहन-संज्ञा पुं० दुहना ।

दोहना-कि० स० दोष खगाना ।

दोहनी-संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का घट परतन जिसमें दूध दुहते हैं । २. दूध दुहने का काम ।

दोहर-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चादर जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है ।

दोहरना-कि० प्र० १. दो बार होना । २. दोहरा होना ।

कि० स० दोहरा करना ।

दोहरा-वि० पुं० [ स्त्री० दोहरी ] दो परत या सह का ।

दोहराना-कि० स० १. किसी बात को दूसरी बार कहना या करना । २. दोहरा करना ।

दोहा-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध हिंदी छंद ।

दोहाक, दोहाग-संज्ञा पुं० दुर्भाग्य ।

दोहागा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० दोहागिन ] अभाग ।

दोही-स्वात्मा ।

दोहा-वि० दूहने योग्य ।

दो-अव्य० या ।

दोचना-कि० प्र० दे० "दमकना" ।

दोचना-कि० स० दबाव डालकर लेना ।

दोरी-संज्ञा स्त्री० १. बेलों का कुंड जो कटी हुई फसल के डंठलों पर

दाना झाड़ने के लिये फिराया जाता है । २. वह रस्सी जिससे बैल बंधे होते हैं । ३. फसल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया ।

दो-संज्ञा स्त्री० १. जंगल की आग । २. जलन ।

दोड़-संज्ञा स्त्री० १. धावा । २. प्रयत्न । ३. द्रुत गति ।

दोड़-धूप-संज्ञा स्त्री० परिश्रम ।

दोड़ना-कि० प्र० मामूली चलने से ज्यादा तेज चलना ।

दोड़ादोड़-कि० वि० [ संज्ञा दोड़ादोड़ी ] बिना कहीं रुके हुए ।

दोड़ादोड़ी-संज्ञा स्त्री० १. दौड़धूप । २. बहुत से लोगों के साथ इधर-उधर दौड़ने की क्रिया ।

दोड़ान-संज्ञा स्त्री० दौड़ने की क्रिया या भाव ।

दोड़ाना-कि० स० जल्द-जल्द चढ़ाना ।

दोत्य-संज्ञा पुं० दूत का काम ।

दौन-संज्ञा पुं० दे० "दमन" ।

दौनागिरि-संज्ञा पुं० दे० "दोण-गिरि" ।

दार-संज्ञा पुं० १. चक्कर । २. प्रताप । ३. घारी ।

दारना-कि० प्र० दे० "दौटना" ।

दौरा-संज्ञा पुं० १. चक्कर । २. गरत । ३. आवसतन ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० अत्या० दौरी ] घास की फहियी या मूँज आदि का टोकरा ।

दौरात्म्य-संज्ञा पुं० दुर्जनता ।

दौरान-संज्ञा पुं० दौरा ।

दौरी-संज्ञा स्त्री० डलिया ।

दौर्जन्य-संज्ञा पुं० दुर्जनता ।



धुआँयँध-वि० धुएँ की तरह मह-  
कनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० अन्न न पचने के कारण  
आनेवाली ढकार ।

धुकधुकी-संज्ञा स्त्री० १. पेट और  
छाती के बीच का वह भाग जो  
कुछ गहरा सा होता है । २. बलेजा ।  
३. बलेजे की धड़कन । ४. डर ।

धुकना-कि० अ० १. मुकना ।  
२. गिर पड़ना । ३. ऋपटना ।

धुकना-कि० स० १. मुकना ।  
२. गिरना । ३. पड़ावना ।

कि० स० धूनी देना ।

धुकार, धुकारी-संज्ञा स्त्री० नगाड़े  
का शब्द ।

धुज, धुजा-संज्ञा स्त्री० दे०  
“ध्वजा” ।

धुङ्गा-वि० जिसके शरीर पर  
कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो ।

धुधुकार-संज्ञा स्त्री० १. धू धू शब्द  
का शोर । २. गरज ।

धुधुकारी-संज्ञा स्त्री० दे० “धुधुकार” ।

धुन-संज्ञा स्त्री० १. लगन । २. मौज ।  
३. सोच ।

संज्ञा स्त्री० १. गीत गाने का ढंग ।  
२. दे० “ध्वनि” ।

धुनकना-कि० स० दे० “धुनना” ।

धुनकी-संज्ञा स्त्री० १. घटका । २.  
छोटा धनुष ।

धुनना-कि० स० १. धुनकी से रूई  
साफ करना । २. धुमाना, चक्का  
देना ।

धुनि-संज्ञा स्त्री० दे० “ध्वनि” ।

धुनियाँ-संज्ञा स्त्री० वह जो रूई धुनने  
का काम करता हो ।

धुर-संज्ञा पुं० १. गाड़ी या रथ आदि  
का धुरा । २. विस्वांती ।

अभ्य० १. बिलकुल ठीक । २. एक-  
दम दूर ।

वि० पक्का ।

धुरजटी-संज्ञा पुं० दे० “धूर्जटी” ।

धुरना-कि० स० पीटना ।

धुरपद-संज्ञा पुं० दे० “ध्रुपद” ।

धुरा-संज्ञा पुं० [संज्ञा स्त्री० अन्धा० धुरी]  
वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया  
रहता है और जिस पर वह  
घूमता है ।

धुरीण-वि० १. बोक सँभालनेवाला ।  
२. मुख्य । ३. धुरंधर ।

धुरेटना-कि० स० धूल से छपेटना ।

धुरा-संज्ञा पुं० कण ।

धुलना-कि० अ० पानी की सहायता  
से साफ या स्वच्छ किया जाना ।

धुलाई-संज्ञा स्त्री० १. धोने का काम  
या भाव । २. धोने की मजदूरी ।

धुलाना-कि० स० धुलवाना ।

धुर्वास-संज्ञा स्त्री० बरद का आटा  
जिससे पापद या कचैली बनती है ।

धुस्सा-संज्ञा पुं० मोटे ऊन की छोई  
जो ओढ़ने के काम में आती है ।

धूआँ-संज्ञा पुं० दे० “धुआँ” ।

धूजट-संज्ञा पुं० शिब ।

धूत-वि० १. शरयराता हुआ । २.  
जो धमकाया गया हो । ३. त्यक्त ।

कि० धूँ ।

धूतना-कि० स० धूँसा करना ।

धूधू-संज्ञा पुं० आग के दहकने या  
झोर से जलने का शब्द ।

धूनना-कि० स० धूनी देना ।

कि० स० दे० “धुनना” ।

द्विजाति-संज्ञा पुं० १. द्विज । २. माहाण ।

द्विजिह्व-वि० १. जिसे दो जीभ हों । २. चुगलखोर ।

संज्ञा पुं० साँप ।

द्विजेंद्र, द्विजेश-संज्ञा पुं० दे० "द्विज-पति" ।

द्वितीय-वि० [ स्त्री० द्वितीया ] दूसरा ।

द्वितीया-संज्ञा स्त्री० दूज ।

द्वित्व-संज्ञा पुं० दो का भाव ।

द्विदल-वि० १. जिसमें दो दल या पिंड हों । २. जिसमें दो पटल हों । संज्ञा पुं० वह अक्ष जिसमें दो दल हों ।

द्विपदी-संज्ञा स्त्री० १. वह छंद या वृत्ति जिसमें दो पद हों । २. दो पदों का गीत ।

द्विपाद-वि० १. दो पैरोंवाला (पशु) । २. जिसमें दो पद या चरण हों ।

द्विमुखी-वि० स्त्री० दो मुँहवाली ।

द्विरद-संज्ञा पुं० हाथी ।

वि० दो दाँतोंवाला ।

द्विरागमन-संज्ञा पुं० यधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना ।

द्विरैफ-संज्ञा पुं० अमर ।

द्विविध-वि० दो प्रकार का ।

क्रि० वि० दो प्रकार से ।

द्विचेदी-संज्ञा पुं० दूधे ।

द्वीप-संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो । टापू ।

द्वेप-संज्ञा पुं० चिढ़ । शत्रुता ।

द्वेपी-वि० [ स्त्री० द्वेपिणी ] विरोधी । वैरी ।

द्वेष्टा-वि० दे० "द्वेपी" ।

द्वैा-वि० दो ।

द्वैत-संज्ञा पुं० १. दो का भाव । २. भेद ।

द्वैतवाद-संज्ञा पुं० वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है ।

द्वैतवादी-वि० [ स्त्री० द्वैतवादिनी ] द्वैतवाद को माननेवाला ।

द्वैध-संज्ञा पुं० १. विरोध । २. आधुनिक राजनीति में वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों ।

द्वैपायन-संज्ञा पुं० व्यासजी का एक नाम ।

द्वैमानुर-वि० जिसकी दो माँ हों । संज्ञा पुं० १. गणेश । २. जरासेध ।

द्वौ-वि० दोनों ।

वि० दे० "द्व" ।

धूना-संज्ञा पुं० वह सुगंधित वस्तु जो आग में जलाई जाय ।

धूनी-संज्ञा स्त्री० १. धूप । २. साधुओं के तापने की आग ।

धूप-संज्ञा पुं० देवपूजन में या सुगंध के लिये गंधद्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ ।

संज्ञा स्त्री० १. गंधद्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है । २. घाम ।

धूपघड़ी-संज्ञा स्त्री० एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है ।

धूपदान-संज्ञा पुं० अगियारी ।

धूपदानी-संज्ञा स्त्री० दे० "धूपदान" ।

धूपना-संज्ञा-कि० प्र० गंध-द्रव्य जलाना ।

कि० स० गंधद्रव्य जलाकर सुगंधित धुआँ पहुँचाना ।

कि० स० दीढ़ना ।

धूपबत्ती-संज्ञा स्त्री० मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है ।

धूम-संज्ञा पुं० धुआँ ।

संज्ञा स्त्री० १. आधोलन । २. उप-द्रव ।

धूमकेतु-संज्ञा पुं० १. अग्नि । २. पुच्छल तारा ।

धूम धड़का-संज्ञा पुं० दे० "धूमधाम" ।

धूमधाम-संज्ञा स्त्री० ठाट-भाट ।

धूमपान-संज्ञा पुं० तमाकू, चुरह आदि पीने का कार्य ।

धूमपोत-संज्ञा पुं० धुआँकण ।

धूमरा-वि० दे० "धूमल" ।

धूमल, धूमला-वि० [ स्त्री० धूमली ]

१. धुएँ के रंग का । २. धुँधला ।

धूमावती-संज्ञा स्त्री० दस महाविद्याओं में से एक देवी ।

धूमिला-वि० १. धुएँ के रंग का ।

२. धुँधला ।

धूम्र-वि० धुएँ के रंग का ।

धूम्रवर्ण-वि० धुएँ के रंग का ।

धूरा-संज्ञा स्त्री० दे० "धूल" ।

धूरा-संज्ञा पुं० १. धूल । २. चूर्ण ।

धूरि-संज्ञा स्त्री० दे० "धूल" ।

धूर्जटि-संज्ञा पुं० शिव ।

धूरा-वि० छली ।

संज्ञा पुं० साहित्य में शठ नायक का एक भेद ।

धूर्ता-संज्ञा स्त्री० चालबाजी ।

धूल-संज्ञा स्त्री० गर्द ।

धूला-संज्ञा पुं० टुकड़ा ।

धूलि-संज्ञा स्त्री० धूल ।

धूवाँ-संज्ञा पुं० दे० "धुआँ" ।

धूसर-वि० १. खाकी । २. धूल लगा हुआ ।

धूसरा-वि० दे० "धूसर" ।

धूसरित-वि० १. जो धूल से मट-मटा हुआ हो । २. धूल से भरा हुआ ।

धूसला-वि० दे० "धूसर" ।

धुक, धुग-प्रत्य० दे० "धिक्" ।

धूत-वि० १. पकड़ा हुआ । २. धारण किया हुआ ।

धूतराष्ट्र-संज्ञा पुं० १. वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो । २.

एक कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य के पुत्र थे ।

धृति-संज्ञा स्त्री० १. धारण । २. धीरता ।

धृष्ट-वि० [ स्त्री० धृष्टा ] १. बिठेल । २. बीठ ।

धृष्टता-संज्ञा स्त्री० १. बिठाई । २. बेहयाई ।

## घ

घ-हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का द्वासीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दंतमूल है।

घंधक-संज्ञा पुं० बखेड़ा।

घंधकधोरी-संज्ञा पुं० हर घड़ी काम में जुता रहनेवाला।

घंधरक-संज्ञा पुं० दे० "धंधक"।

घंधला-संज्ञा पुं० १. छल-धं०। २. पहाना।

घंधलाना-कि० भ० छलधंद कराना।

घंधा-संज्ञा पुं० काम-काज।

घंधार-संज्ञा स्त्री० ज्वाला।

घंधारी-संज्ञा स्त्री० गोरखधंधा।

घंधोर-संज्ञा पुं० १. हे।लिका। २. आग की लपट।

घँसने-संज्ञा स्त्री० १. घँसने की क्रिया या ढंग। २. घुसने या पैठने का ढंग। ३. गति।

घँसना-कि० भ० १. गड़ना। २. अपने लिये जगह करते हुए घुसना।

○† ३. नीचे खसकना।

○कि० भ० नष्ट होना।

घसान-संज्ञा स्त्री० १. घँसने की क्रिया या ढंग। २. दलदल।

घसाना-कि० स० १. नरम चीज़ में घुसाना। २. पैठना।

घक-संज्ञा स्त्री० १. हृदय के जल्दी जल्दी चलने का भाव या शब्द। २. समंग।

कि० वि० अचानक।

संज्ञा स्त्री० छोटी जूँ।

अकधकाना-कि० भ० १. अथ,

अद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर जोर से या जल्दी जल्दी चलना।

† २. अभरना।

अकधकी-संज्ञा स्त्री० १. जी की घड़कन। २. धुकधुकी।

अकपक-संज्ञा स्त्री० अकधकी।

कि० वि० डरते हुए।

अकपकाना-कि० भ० डरना।

अकपेला-संज्ञा स्त्री० अकधका।

अकियाना-कि० स० धक्का देना।

अकेलना-कि० स० दे० "ढकेलना"।

अकमधका-संज्ञा पुं० १. बार बार, बहुत अधिक या बहुत से आदमियों का परस्पर धक्का देने का काम।

२. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों।

अका-संज्ञा पुं० १. कौंका। २. ढकेलने की क्रिया। ३. हानि।

अकामुकी-संज्ञा स्त्री० मार-पीट।

अज-संज्ञा स्त्री० १. सजावट। २. शोभा।

अजा-संज्ञा स्त्री० दे० "अज्जा"।

अजीला-वि० [स्त्री० अजीला] सजीजा।

अजी-संज्ञा स्त्री० १. कपड़े, कागज आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी।

२. छोड़े की चहर या छरुई के पतले तल्ले की अलग की हुई लंबी पट्टी।

अडुंग-वि० नंगा।

अड-संज्ञा पुं० १. शरीर का स्थूल मध्यभाग जिसके अंतर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं। २. पेहो।

संज्ञा स्त्री० वह शब्द जो किसी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से होता है।

घृष्ट-संज्ञा पुं० राजा मृग का पुत्र और दीपदी का भाई ।

धेनु-संज्ञा स्त्री० १. वह गाय जिसे बचा जाने बहुत दिन न हुए हों । २. गाय ।

धेय-वि० १. धारण करने योग्य । २. पोषण करने योग्य ।

धेलचा, धेला-संज्ञा पुं० दे० "धधेला" ।

धेली-संज्ञा स्त्री० अठथो ।

धैताली-वि० १. चपल । २. उग्र ।

धैना-संज्ञा स्त्री० १. आदत । २. काम-धंधा ।

धैर्य-संज्ञा पुं० धीरता ।

धैवत-संज्ञा पुं० संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जो मध्यम के बाद का है ।

धौधा-संज्ञा पुं० १. लोहा । २. भट्टा ।

धौई-संज्ञा स्त्री० छिलका निकाली हुई वरद या मूँग की दाल ।

धसंज्ञा पुं० राजगीर ।

धोकड़-वि० हटा-कटा ।

धोका-संज्ञा पुं० दे० "धोखा" ।

धोखा-संज्ञा पुं० १. छल । २. मुलावा । ३. भ्रम में डालनेवाली वस्तु । ४. वह पुतला जिसे किसान चिड़ियों को डराने के लिये खेत में खड़ा करते हैं ।

धोखेवाज-वि० धूर्त ।

धोखेवाजी-संज्ञा स्त्री० छल ।

धोती-संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो कमर से लेकर घुटनों के नीचे तक का शरीर और खियों का प्रायः सर्वांग ढकने के लिये पहना जाता है ।

धोना-क्रि० स० पानी से साफ करना ।

धोब-संज्ञा पुं० धुलावट ।

धोबिन-संज्ञा स्त्री० धोबी जाति की स्त्री ।

धोबी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० धोबिन ] धोने-वाला ।

धोर-संज्ञा पुं० १. पास । २. किनारा ।

धोरी-संज्ञा पुं० १. धुरे की ठठानेवाला बैल । २. प्रधान ।

धोरो-क्रि० वि० पास ।

धोधती-संज्ञा स्त्री० धोती ।

धोवन-संज्ञा स्त्री० १. धोने का भाव ।

२. वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो ।

धोवाना-क्रि० स० धुलाना ।

क्रि० अ० धुलना ।

धौं-अव्य० १. न जाने । २. शयवा ।

धौंक-संज्ञा स्त्री० १. आग दहकाने के लिये भाथी को दबाकर निकाला हुआ हवा का सौंका । २. ताप ।

धौंकना-क्रि० स० १. आग पर, वैसे दहकाने के लिये, भाथी दबाकर हवा का सौंका पहुँचाना ।

धौंकनी-संज्ञा स्त्री० १. धौंस या धातु की एक नली जिससे खोहार, सोमार आदि आग फूँकते हैं । २. भाथी ।

धौफा-संज्ञा स्त्री० लू ।

धौंकिया-संज्ञा पुं० आग फूँकनेवाला ।

धौंताल-वि० १. जिसे किसी बात की धुन लग जाय । २. चालाक ।

धौंस-संज्ञा स्त्री० १. धमकी । २. धाक ।

३. मुलावा ।

धौंसना-क्रि० स० १. दबाना । २.

धमकी या धुइकी देना । ३. मारना-पीटना ।

धौंस-पट्टी-संज्ञा स्त्री० मुलावा ।

घड़क-संज्ञा स्त्री० १. दिल के चलने या उछलने की क्रिया । २. खटका ।  
घड़कन-संज्ञा स्त्री० दिल का धक धक करना ।

घड़कना-क्रि० अ० १. दिल का धक धक करना । २. किसी भारी वस्तु के गिरने का सा धड़धड़ शब्द होना ।

घड़का-संज्ञा पुं० १. दिल की धड़कन । २. खटका ।

घड़काना-क्रि० स० १. दिल में धड़क पैदा करना । २. डराना ।  
३. धड़ धड़ शब्द उत्पन्न करना ।

घड़झा-संज्ञा पुं० घड़ाका ।

घड़ा-संज्ञा पुं० १. घटखरा । २. चार सेर की एक तौल । ३. तराजू ।

घड़ाका-संज्ञा पुं० 'घड़' 'घर' शब्द ।  
घड़ाधड़-क्रि० वि० १. लगातार 'घड़' 'धड़' शब्द के साथ । २. लगातार ।

घड़ाम-संज्ञा पुं० ऊपर से एकबारगी कूटने या गिरने का शब्द ।

घड़ी-संज्ञा स्त्री० चार या पाँच सेर की एक तौल ।

घत्-अर्थ० दुतकारने का शब्द ।

घत्त-संज्ञा स्त्री० क्षराब आदत ।

घत्ता-वि० हटा हुआ ।

घत्तूर-संज्ञा पुं० सुरही ।

घत्तूरा-संज्ञा पुं० दो-तीन हाथ ऊँचा एक पैघा । इसके फलों के बीज बहुत विपैके होते हैं ।

घघक-संज्ञा स्त्री० १. आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव । २. आँच ।

घघकना-क्रि० अ० अड़कना ।

घघकाना-क्रि० स० आग दहकाना ।

घनजय-संज्ञा पुं० १. अग्नि । २.

अर्जुन का एक नाम । ३. विष्णु ।  
४. शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक ।

घन-संज्ञा पुं० १. दौलत । २. गणित में जोड़ी जानेवाली संख्या या जोड़ का चिह्न । ३. मूल । ४. पूँजी ।

० संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री ।

१ वि० दे० "घन्य" ।

घनकुबेर-संज्ञा पुं० अत्यंत घनी ।

घनतेरस-संज्ञा स्त्री० कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी । इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है ।

घनद-वि० दाता ।

संज्ञा पुं० १. कुबेर । २. धनपति वायु ।

घनधान्य-संज्ञा पुं० घन और अन्न आदि ।

घनधाम-संज्ञा पुं० घर-घर और रुपया-पैसा ।

घनघत्त-वि० दे० "घनघान्" ।

घनघान्-वि० [ स्त्री० घनवती ] जिसके पास धन हो ।

घनहीन-वि० निर्धन ।

घना-संज्ञा स्त्री० युवती ।

घनाक्य-वि० घनघान् ।

घनाश्री-संज्ञा स्त्री० एक रागिनी ।

घनिक-संज्ञा स्त्री० युवती ।

वि० दे० "घन्य" ।

घनिक-वि० घनी ।

संज्ञा पुं० १. घनी मनुष्य । २. पति ।

घनिया-संज्ञा पुं० एक छोटा पैघा जिसके सुगंधित फल मसाले के काम में आते हैं ।

० संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री ।

घनिष्ठा-संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में सत्तेईसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँचतारे हैं  
घनी-वि० जिसके पास धन हो ।

धौंसा-संज्ञा पुं० १. बड़ा नगरा ।

२. सामर्थ्य ।

धौंसिया-संज्ञा पुं० १. धौंस से काम चलानेवाला । २. क्रांसा-पट्टी देने-वाला । ३. नगरा बजानेवाला ।

धौत-वि० १. धोया हुआ । २. बजला ।

संज्ञा पुं० चाँदी ।

धौति-संज्ञा स्त्री० शुद्ध ।

धौरहर-संज्ञा पुं० दे० "धौराहर" ।

धौरा-वि० [ स्त्री० धौरी ] सफेद ।

धौराहर-संज्ञा पुं० धरहरा । मीनार ।  
बुझ ।

धौल-संज्ञा स्त्री० १. धप्पड़ । २. लुकसान ।

० वि० सफेद ।

संज्ञा पुं० धरहरा ।

धौल-धक्का-संज्ञा पुं० आघात ।

धौल-धप्पड़-संज्ञा पुं० मारपीट ।

धौलहर-संज्ञा पुं० दे० "धौराहर" ।

धौला-वि० [ स्त्री० धौली ] सफेद ।

धौलाई-संज्ञा स्त्री० सफेदी ।

धौलागिरि-संज्ञा पुं० दे० "धवल-गिरि" ।

ध्यात-वि० विचारा हुआ ।

ध्याता-वि० [ स्त्री० ध्यात्री ] ध्यान करनेवाला ।

ध्यान-संज्ञा पुं० १. सोच-विचार ।

२. भावना । ३. मन । ४. ख्याल ।

५. बुद्धि । ६. चित्त को एकाग्र करके किसी शीघ्र लगाने की क्रिया ।

ध्यानयोग-संज्ञा पुं० वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो ।

ध्याना-क्रि० स० १. ध्यान करना ।

२. स्मरण करना ।

ध्यानी-वि० १. ध्यानयुक्त । २. ध्यान

करनेवाला ।

ध्येय-वि० १. ध्यान करने योग्य । २. जिसका ध्यान किया जाय ।

ध्रुपद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का गीत जिसके द्वारा देवताओं की खीला या राजाओं के यज्ञादि का वर्णन गाया जाता है ।

ध्रुव-वि० स्थिर ।

संज्ञा पुं० ध्रुव तारा ।

ध्रुवता-संज्ञा स्त्री० स्थिरता ।

ध्रुवतारा-संज्ञा पुं० वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर-उधर नहीं होता ।

ध्रुवदर्शक-संज्ञा पुं० १. सप्तर्षि-मंडल । २. कुतुबनुमा ।

ध्रुवलोक-संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अंतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित हैं ।

ध्वंस-संज्ञा पुं० विनाश ।

ध्वंसक-वि० नाश करनेवाला ।

ध्वंसन-संज्ञा पुं० [ वि० ध्वंसीय, ध्वंसित, ध्वस्त ] १. नाश करने की क्रिया । २. विनाश ।

ध्वंसी-वि० [ स्त्री० ध्वंसिनी ] विनाशक ।

ध्वज-संज्ञा पुं० १. चिह्न । २. झंडा ।

ध्वजभंग-संज्ञा पुं० नपुंसकता ।

ध्वजा-संज्ञा स्त्री० पताका ।

ध्वजिनी-संज्ञा स्त्री० सेना का एक भेद ।

ध्वजी-वि० [ स्त्री० ध्वजिनी ] जो ध्वजा-पताका लिए हो ।

ध्वनि-संज्ञा स्त्री० १. आवाज़ । २. स्वर । ३. अर्थ ।

ध्वनित-वि० १. शब्दित । २. बजाया हुआ ।

संज्ञा पुं० १. धनवान् पुरुष । २. पति ।

संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री । वधू ।

धनु-संज्ञा पुं० दे० "धनुस्" ।

धनुश्चा-संज्ञा पुं० १. कमान । २. रुई धुनने की धुनकी ।

धनुर्ही-संज्ञा स्त्री० छोटा धनुस् ।

धनुक-संज्ञा पुं० १. दे० "धनुस्" । २. दे० "हृद्गधनुप" ।

धनुर्द्वर-संज्ञा पुं० तीरंदाज ।

धनुर्द्वारी-संज्ञा पुं० दे० "धनुर्द्वर" ।

धनुषध्या-संज्ञा स्त्री० धनुस् चलाने की विद्या ।

धनुर्ध्वज-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें धनुस् चलाने की विद्या का निरूपण है । यह धनुर्ध्वज का उपवेद माना जाता है ।

धनुप-संज्ञा पुं० दे० "धनुस्" ।

धनुस्-संज्ञा पुं० १. कमान । २. ज्योतिष में धनु राशि । ३. एक लग्न । ४. चार हाथ की एक माप ।

धनुर्द्वार-संज्ञा स्त्री० धनुस् की लड़ाई ।

धनुर्ही-संज्ञा स्त्री० लड़कों के खेलने की कमान ।

धनेस-संज्ञा पुं० बगले के आकार की एक चिड़िया ।

धन्य-वि० दे० "धन्य" ।

धन्यासेठ-संज्ञा पुं० बहुत धनी आदमी ।

धन्य-वि० प्रशंसा या बड़ाई के योग्य ।

धन्यवाद-संज्ञा पुं० १. प्रशंसा । २. कृतज्ञता-सूचक शब्द ।

धन्यंतरि-संज्ञा पुं० देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्र-मंथन के समय और सच वस्तुओं के साथ

समुद्र से निकले थे । ये आयुर्वेद के सबसे प्रधान आचार्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं ।

धन्वा-संज्ञा पुं० १. कमान । २. मरुभूमि ।

धन्वाकार-वि० टेढ़ा ।

धन्वी-वि० १. धनुर्धर । २. निपुण ।

धन्वा-संज्ञा पुं० १. दाग । २. कलंक ।

धम-संज्ञा स्त्री० भारी चीज के गिरने का शब्द ।

धमक-संज्ञा स्त्री० १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द । २. पैर रखने की आवाज या आहट । ३. आघात ।

धमकना-कि० अ० १. धमाका करना । २. दर्द करना ।

धमकाना-कि० स० १. डराना । २. डटना ।

धमकी-संज्ञा स्त्री० डाँट-डपट ।

धमनी-संज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर की वह छोटी या बड़ी नली जिसमें रक्त आदि का संचार होता रहता है । इनकी संख्या सुश्रुत के अनुसार २४ हैं । २. नाड़ी ।

धमाका-संज्ञा पुं० १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द । २. आघात ।

धमाखौफड़ी-संज्ञा स्त्री० १. ऊधम । २. मार-पीट ।

धमाधम-कि० वि० लगातार कई बार 'धम', 'धम' शब्द के साथ ।

संज्ञा स्त्री० १. कई बार गिरने से उत्पन्न लगातार धमधम शब्द । २. मार-पीट ।

धमार-संज्ञा स्त्री० ठण्ठ-कूद ।

संज्ञा पुं० होली में गाने का एक गीत ।

धर-वि० धारण करनेवाला ।

संज्ञा पुं० पर्यंत ।



ध्वन्य-संज्ञा पुं० व्यंग्यार्थ ।

ध्वन्यात्मक-वि० १. ध्वनि-स्वरूप या ध्वनिमय । २. (काव्य) जिसमें व्यंग्य प्रधान हो ।

ध्वन्यार्थ-संज्ञा पुं० वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल

ध्वनि या व्यंजना से हो ।

ध्वस्त-वि० १. गिरा-पड़ा । २. टूटा-फूटा ।

ध्वांत-संज्ञा पुं० श्रृंखलार ।

ध्वांतचर-संज्ञा पुं० राक्षस ।

## न

न-एक व्यंजन जो हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का पीसर्वा और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है । इसका उच्चारण-स्थान दंत है ।

नंग-संज्ञा पुं० नंगापन ।

नंग-ध्वंग-वि० थिलकुल नंगा ।

नंग-मुनंगा-वि० दे० "नंग घड़ंग" ।

नंगा-वि० १. जो कोई कपड़ा न पहने हो । २. निर्लज्ज । ३. खुला हुआ ।

नंगा-मोली-संज्ञा स्त्री०, कपड़ों की सलारी ।

नंगालुआ, नंगालुआ-वि० जिसके पास कुछ भी न हो ।

नंगालुआ-वि० चंदमाश ।

नंगियाना-क्रि० सं० १. नंगा करना ।

२. सब कुछ छीन लेना ।

नंद-संज्ञा पुं० १. आनंद । २. लड़का ।

३. गोकुल के गोपों के मुखिया जिनके यहाँ श्रीकृष्ण रहे, उनके जन्म के समय, वसुदेव जाकर रक्ष थाप थे ।

नंदक-संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का सख ।

२. राजा नंद जिनके यहाँ कृष्ण पाण्ड्यावस्था में रहते थे ।

वि० १. आनंददायक । २. कुल-

पालक ।

नंदकिशोर-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

नंदकी-संज्ञा स्त्री० विष्णु ।

नंदकुमार-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

नंदगांध-संज्ञा पुं० वृंदावन का एक गाँव जहाँ नंद गोप रहते थे ।

नंदग्राम-संज्ञा पुं० १. नंदीग्राम ।

२. नंदीग्राम, जहाँ भरत ने राम के नयास काल में तपस्या की थी ।

नंदनंदन-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

नंदनंदिनी-संज्ञा स्त्री० योगमाया ।

नंदन-संज्ञा पुं० १. इंद्र के वपवन का नाम जो स्वर्ग में माना जाता है ।

२. लड़का ।

वि० आनंददायक ।

नंदन घन-संज्ञा पुं० इंद्र की वाटिका ।

नंदना-क्रि० प्र० आनंदित होना ।

संज्ञा स्त्री० लड़की ।

नंदनी-संज्ञा स्त्री० दे० "नंदिनी" ।

नंदरानी-संज्ञा स्त्री० नंद की स्त्री, पणोदा ।

नंदलाल-संज्ञा पुं० नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।

नंदा-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । २. ननद ।

संज्ञा श्री० धरने या पकड़ने की क्रिया।

धरका-संज्ञा श्री० दे० "धक्क"।

धरकना-कि० अ० दे० "धड़कना"।

धरण-संज्ञा पुं० दे० "धारणा"।

धरणि-संज्ञा श्री० पृथ्वी।

धरणिधर-संज्ञा पुं० १. पृथ्वी को

धारण करनेवाला। २. कच्छप।

३. पर्यंत। ४. शोपनाग।

धरणी-संज्ञा श्री० पृथ्वी।

धरणीसुता-संज्ञा श्री० सीता।

धरता-संज्ञा पुं० कुंजदार।

धरती-संज्ञा श्री० पृथ्वी।

धरधर-संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

संज्ञा श्री० दे० "धड़ धड़"।

धरधरा-संज्ञा पुं० धड़कन।

धरन-संज्ञा श्री० १. धरने की क्रिया,

भाव या दंग। २. वह लंबा जट्टा

जो दीवारों या खट्टों पर हमलिये

आड़ा रखा जाता है जिसमें उसके

ऊपर पादन (झूत आदि) या कोई

बोझ ठहर सके।

संज्ञा पुं० दे० "धरना"।

† संज्ञा श्री० धरती।

धरना-कि० स० १. पकड़ना। २.

रखना। ३. बंधक रखना।

संज्ञा पुं० कोई काम कराने के लिये

किसी के पास भड़कर बैठना और

जब तक काम न हो, तब तक अन्न

न ग्रहण करना।

धरनी-संज्ञा श्री० दे० "धरणी"।

संज्ञा श्री० इठ।

धरमा-संज्ञा पुं० दे० "धर्म"।

धरहरा-संज्ञा श्री० १. गिरफ्तारी।

२. बीच-विचाव।

धरहरना-कि० अ० धड़धड़ाना।

धरहरा-संज्ञा पुं० खंभे की तरह बहुत

ऊँचा मकान का भाग जिस पर

चढ़ने के लिये भीतर ही भीतर

सीढ़ियाँ बनी हैं।

धरहरिया-संज्ञा पुं० रचक।

धरा-संज्ञा श्री० १. पृथ्वी। २.

संसार।

धराऊ-वि० जो साधारण से अधिक

अच्छा होने के कारण कभी कभी

केवल विशेष अवसरों पर निकाला

जाय।

धराक-संज्ञा पुं० दे० "धक्का"।

धरातल-संज्ञा पुं० १. पृथ्वी। २.

केवल लंबाई-चौड़ाई का गुणन-फल

जिसमें मोटाई, गहराई या ऊँचाई

का कुछ विचार न किया जाय।

३. रक्षक।

धराधर-संज्ञा पुं० १. शोपनाग। २.

पर्यंत। ३. विष्णु।

धराधरन-संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।

धराधार-संज्ञा पुं० शोपनाग।

धराधीश-संज्ञा पुं० राजा।

धराना-कि० स० पकड़ना।

धरापुत्र-संज्ञा पुं० मंगल ग्रह।

धराहर-संज्ञा पुं० दे० "धरहरा"।

धरित्री-संज्ञा श्री० पृथ्वी।

धरैया-संज्ञा पुं० धरनेवाला।

धरोहर-संज्ञा श्री० धाती।

धर्त्ता-संज्ञा पुं० १. धारण करनेवाला

२. कोई काम ऊपर लेनेवाला।

धर्म-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु या

व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा

रहे, उससे कभी अलग न हो। २.

कर्त्तव्य। ३. सत्कर्म। ४. सत।

मज़हब। ५. नीति।

धर्म-कर्म-संज्ञा पुं० वह कर्म या विधान

जिसे करना किसी धर्म-ग्रंथ में

वि० आनंद देनेवाली ।  
 नंदि-संज्ञा पुं० आनंद ।  
 नंदिकेश्वर-संज्ञा पुं० शिव के द्वारपाल  
 बैल का नाम ।  
 नंदिघोष-संज्ञा पुं० १. अर्जुन का  
 रथ । २. घंटीजनों की घोषणा ।  
 नंदित-वि० आनंदित ।  
 ंवि० वज्रना हुआ ।  
 नंदिन-संज्ञा स्त्री० लड़की ।  
 नंदिनी-संज्ञा स्त्री० १. पुत्री । २.  
 उमा । ३. गंगा । ४. पति की बहन ।  
 नंदी-संज्ञा पुं० शिव का द्वारपाल  
 बैल ।  
 वि० आनंदयुक्त ।  
 नंदीश्वर-संज्ञा पुं० शिव ।  
 नंदेऊ-संज्ञा पुं० दे० "नंदोई" ।  
 नंदोई-संज्ञा पुं० पति का बहनेई ।  
 नंदर-वि० संख्या ।  
 संज्ञा पुं० १. गिनती । २. कपड़ा  
 भापने का ३६ इंच का एक गुंज ।  
 नंदरदार-संज्ञा पुं० गाँव का वह जमीं-  
 दार जो अपनी पट्टी के और हिस्से-  
 दारों से मालगुजारी आदि वसूल  
 करने में सहायता दे ।  
 नंदरदार-क्रि० वि० सिलसिलेवार ।  
 नंदरी-वि० १. जिस पर नंदर लगा  
 हो । २. प्रसिद्ध ।  
 नंदरी राज-संज्ञा पुं० दे० "नंदर  
 (३)" ।  
 नंदरी सेर-संज्ञा पुं० तौलने का सेर  
 जो अंगरेजी रुपये से ८० भर का  
 होता है ।  
 नंस्त्र-वि० नष्ट ।  
 न-अव्य० १. नहीं । २. या नहीं ।  
 नइ-वि० स्त्री० 'नया' का स्त्री० रूप ।

नउआ-संज्ञा पुं० दे० "नाऊ" ।  
 नउका-संज्ञा स्त्री० दे० "नौका" ।  
 नउता-वि० नीचे की ओर झुका  
 हुआ ।  
 नककटा-वि० [ स्त्री० नककटी ] १.  
 जिनकी नाक कटी हो । २. निलज्ज ।  
 नकधिसनी-संज्ञा स्त्री० १. ज़मीन पर  
 नाक रगड़ने की क्रिया । २. बहुत  
 अधिक दीनता ।  
 नकचढ़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नकचढ़ी ]  
 बड़-मिर्जाज ।  
 नकछिकनी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
 घास जिसके फूल सूँघने से छींक  
 आने लगती है ।  
 नकटा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नकटी ] १.  
 वह जिसकी नाक कट गई हो ।  
 २. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ  
 विवाह के समय गाती हैं ।  
 वि० १. जिसकी नाक कटी हो ।  
 २. निलज्ज ।  
 नकुद-संज्ञा पुं० रुपया-पैसा ।  
 वि० रुपया जो तैयार हो ।  
 नकुदी-संज्ञा स्त्री० दे० "नकुद" ।  
 नकना-क्रि० स० लाँघना ।  
 क्रि० अ० हैरान होना ।  
 क्रि० स० नाक में दम करना ।  
 नकफूल-संज्ञा पुं० नाक में पहनने का  
 लौंग या कील ।  
 नकुब-संज्ञा स्त्री० सेंध ।  
 नकयानी-संज्ञा स्त्री० हैरानी ।  
 नकवेसर-संज्ञा स्त्री० नाक में पहनने  
 की छोटी नथ ।  
 नकमोती-संज्ञा पुं० नाक में पहनने  
 का मोती ।  
 नकुल-संज्ञा स्त्री० १. अनुकृति । कापी ।  
 २. अनुकरण । ३. स्वांग ।

नकलनचीस-संज्ञ पुं० वह आदमी, विशेषतः अदालत का मुहरिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नकल करना होता है।

नकली-वि० १. घनावटी। २. जाली।

नकश-संज्ञ पुं० १. दे० "नक्श"। २. तारा से खेला जानेवाला एक जूधा।

नकशा-संज्ञ पुं० दे० "नक्शा"।

नकसीर-संज्ञ स्त्री० आप से आप नाक से रक्त बहना।

नकाश-संज्ञ स्त्री० पुं० १. वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिये सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है। २. घूँघट।

नकार-संज्ञ पुं० १. नहीं। २. इनकार।

नकारा-वि० निरुद्ध। खराब।

नकाशी-संज्ञ स्त्री० दे० "नक्काशी"।

नकीब-संज्ञ पुं० भाट।

नकुल-संज्ञ पुं० १. पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम। २. घेडा।

नकेल-संज्ञ स्त्री० ऊँट की नाक में पैथी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है।

नका-संज्ञ पुं० सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है।

नकारखाना-संज्ञ पुं० वह स्थान जहाँ पर नकारा बजता है।

नकारची-संज्ञ पुं० नगाड़ा बजानेवाला।

नकारा-संज्ञ पुं० नगाड़ा।

नकाल-संज्ञ पुं० १. नकल करनेवाला। २. भाँड़।

नक्काश-संज्ञ पुं० वह जो नक्काशी करता हो।

नक्काशी-संज्ञ स्त्री० [ वि० नक्काशीदार ]

१. धातु आदि पर खोदकर घेज-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या।

२. वे बेल-बूटे जो इस प्रकार बनाए गए हैं।

नक्कू-वि० १. जिसकी नाक बड़ी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला।

नक्त-संज्ञ पुं० रात।

नफ़ल-संज्ञ स्त्री० दे० "नफ़ल"।

नक्श-वि० बनाया या लिखा हुआ।

संज्ञ पुं० १. तसवीर। २. खोदकर या कुत्तम से बनाया हुआ घेज-बूटा।

३. मोहर। ४. ताबीज।

नक्शा-संज्ञ पुं० १. तसवीर। २. आकृति। ३. किसी धरातल पर

बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथिवी या सगोल का कोई भाग अपनी स्थिति के अनुसार अथवा और किसी विचार से चित्रित हो।

नक्षत्र-संज्ञ पुं० चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का समूह।

नक्षत्रनाथ-संज्ञ पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रपथ-संज्ञ पुं० नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्रराज-संज्ञ पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रलोक-संज्ञ पुं० पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं।

नक्षत्रवृष्टि-संज्ञ स्त्री० तारा टूटना।

नक्षत्री-संज्ञ पुं० चंद्रमा।

वि० भाग्यवान्।

नख-संज्ञ पुं० हाथ या पैर का नाखून। संज्ञ स्त्री० गुहरी बढ़ाने के लिये पतखा रेशमी या सूनी तागा।

- नाता-संज्ञा पुं० १. नातेदार । २. नाता ।
- नातरु-अव्य० श्रम्यया ।
- नाता-संज्ञा पुं० रिश्ता ।
- नाताकृत-वि० निर्वह ।
- नाती-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नतिनी, नातिन ] बेटा या बेटे का बेटा ।
- नाते-क्रि० वि० १. संबंध से । २. हेतु ।
- नातेदार-वि० [ संज्ञा नातेदारी ] रिश्तेदार ।
- नाथ-संज्ञा पुं० १. प्रभु । २. माविक । ३. पति । ४. वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उन्हें बंध करने के लिये डाल देते हैं ।
- संज्ञा स्त्री० १. नाथने की क्रिया या भाव । २. जानवरों की नकेल ।
- नाथना-क्रि० सं० १. नकेल डालना । २. नरथी करना ।
- नाथद्वारा-संज्ञा पुं० उदयपुर राज्य के अंतर्गत ब्रह्म संप्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है ।
- नाद-संज्ञा पुं० १. शब्द । २. संगीत ।
- नादना-क्रि० सं० बजाना ।
- क्रि० भ० १. बजना । २. लहलहाना ।
- नादान-वि० मूर्ख, अज्ञान ।
- नादिर-वि० घनेछा ।
- नादिरशाही-संज्ञा स्त्री० भारी अंधेर या अल्पाचार ।
- वि० बहुत बड़ोर और उग्र ।
- नादिहंद-वि० जिससे रक्त बसूल न हो ।
- नादी-वि० [ स्त्री० नादिनी ] १. शब्द करनेवाला । २. बजनेवाला ।
- नाधना-क्रि० सं० १. जोतना । २. जोड़ना । ३. गूँथना । ४. आरंभ करना ।
- नानक-संज्ञा पुं० पंजाब के एक प्रसिद्ध महारमा जो सिख संप्रदाय के आदि-गुरु थे ।
- नानकपंथी-संज्ञा पुं० गुरु नानक का अनुयायी । सिख ।
- नानकशाही-वि० १. गुरु नानक से संबंध रखनेवाला । २. नानकशाह का शिष्य या अनुयायी । सिख ।
- नानखतार्ह-संज्ञा स्त्री० टिकिया के आकार की एक सेंधी सूखा मिठाई ।
- नानघाई-संज्ञा पुं० रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला ।
- नाना-वि० १. बहुत तरह के । २. बहुत ।
- संज्ञा पुं० [ स्त्री० नानी ] माँ का घाप ।
- नानिहाल-संज्ञा पुं० नाना-नानी का स्थान या घर ।
- नानी-संज्ञा स्त्री० माँ की माँ ।
- ना-नुकर-संज्ञा पुं० इनकार ।
- नान्हा-वि० छोटा ।
- नाप-संज्ञा स्त्री० १. परिमाण । माप । २. नापने का काम । ३. नापने की वस्तु ।
- नाप-जोख, नाप-तौल-संज्ञा स्त्री० १. नापने जोखने या तौलने की क्रिया । २. परिमाण या मात्रा जो नाप या तालकर स्थिर की जाय ।
- नापना-क्रि० सं० १. मापना । २. कोई वस्तु कितनी है, इसका पता लगाना ।
- नापसंद-वि० १. जो पसंद न हो । २. अप्रिय ।
- नापाक-वि० [ संज्ञा नापाकी ] १. अशुद्ध । २. मिला-कुचला ।

वि० आनंद देनेवाली ।

नंदि-संज्ञा पुं० आनंद ।

नंदिकेश्वर-संज्ञा पुं० शिव के द्वारपाल  
बैल का नाम ।

नंदिघोष-संज्ञा पुं० १. अर्जुन का  
रथ । २. बंदीजनों की घोषणा ।

नंदित-वि० आनंदित ।

वि० वज्रता हुआ ।

नंदिन-संज्ञा स्त्री० खड़की ।

नंदिनी-संज्ञा स्त्री० १. पुत्री । २.  
उमा । ३. गंगा । ४. पति की वहन ।

नंदी-संज्ञा पुं० शिव का द्वारपाल  
बैल ।

वि० आनंदयुक्त ।

नंदीश्वर-संज्ञा पुं० शिव ।

नंदो-संज्ञा पुं० दे० "नंदोई" ।

नंदोई-संज्ञा पुं० पति का वहनोई ।

नंदर-वि० संख्या ।

संज्ञा पुं० १. गिनती । २. कपड़ा  
गापने का ३६ इंच का एक गज ।

नंदरदार-संज्ञा पुं० गाँव का वह जमीं-  
दार जो अपनी पट्टी के और हिस्से-  
दारों से मालगुजारी आदि वसूल  
करने में सहायता दे ।

नंदरघार-क्रि० वि० सिलसिलेवार ।

नंदरी-वि० १. जिस पर नंदर लगा  
हो । २. प्रसिद्ध ।

नंदरी गज-संज्ञा पुं० दे० "नंदर  
(३)" ।

नंदरी सेर-संज्ञा पुं० तौलने का सेर  
जो अंगरेजी रुपयों से ८० भर का  
होता है ।

नंस-वि० नष्ट ।

न-अव्य० १. नहीं । २. या नहीं ।

नई-वि० स्त्री० 'नया' का स्त्री० रूप ।

नउआ-संज्ञा पुं० दे० "नाऊ" ।

नउका-संज्ञा स्त्री० दे० "नौका" ।

नउता-वि० नीचे की ओर झुका  
हुआ ।

नककटा-वि० [ स्त्री० नककटी ] १.  
जिमकी नाक कटी हो । २. निलज ।

नकघिसनी-संज्ञा स्त्री० १. जमीन पर  
नाक रगड़ने की क्रिया । २. बहुत  
अधिक दीनता ।

नकचढ़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नकचढ़ी ]  
चढ़-मिज़ाज ।

नकलिकनी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
घास जिसके फूल सूँघने से छींक  
आने लगती है ।

नकटा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नकटी ] १.  
वह जिसकी नाक कट गई हो ।

२. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ  
विवाह के समय गाती हैं ।

वि० १. जिसकी नाक कटी हो ।  
२. निलज ।

नकद-संज्ञा पुं० रुपया-पैसा ।

वि० रुपया जो तैयार हो ।

नकदी-संज्ञा स्त्री० दे० "नकद" ।

नकना-क्रि० सं० लाँघना ।

क्रि० प्र० हैरान होना ।

क्रि० सं० नाक में दम करना ।

नकफूल-संज्ञा पुं० नाक में पहनने का  
लौंग या कील ।

नकच-संज्ञा स्त्री० सेंध ।

नकधानी-संज्ञा स्त्री० हैरानी ।

नकवेसर-संज्ञा स्त्री० नाक में पहनने  
की छोटी नथ ।

नकमोती-संज्ञा पुं० नाक में पहनने  
का मोती ।

नकुल-संज्ञा स्त्री० १. अनुकृति । कापी  
२. अनुकरण । ३. स्वाँग ।

नापित-संज्ञा पुं० नाई ।

नाफा-संज्ञा पुं० कस्तूरी की घैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है ।

नावदान-संज्ञा पुं० पनाळा ।

नायालिंग-वि० [ संज्ञा नायालिणो ] जो पूरा जवान न हुआ हो ।

नाभा-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध भक्त जिनका नाम नारायणदास था । इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था ।

नाभि-संज्ञा स्त्री० १. चक्रमध्य । २. तुदी । ३. कस्तूरी ।

संज्ञा पुं० प्रधान व्यक्ति या वस्तु ।

नामंजूर-वि० [ संज्ञा नामंजूरी ] जो माना न गया हो ।

नाम-संज्ञा पुं० [ वि० नामी ] १. वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का बोध हो । २. प्रसिद्ध ।

नामक-वि० नाम धारण करनेवाला ।

नामकरण-संज्ञा पुं० १. नाम रखने का काम । २. हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है ।

नामजुद-वि० १. जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चिन कर लिया गया हो । २. प्रसिद्ध ।

नामदेव-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त जिनकी कथा भक्तमाल में है । २. महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि ।

नामधराई-संज्ञा स्त्री० वदनामी ।

नाम-धाम-संज्ञा पुं० नाम और पता ।

नामधेय-संज्ञा पुं० १. नाम । २.

नामकरण ।

वि० नाम का ।

नामनिशान-संज्ञा पुं० पता ।

नामघोला-संज्ञा पुं० भक्तिपूर्ण नाम

स्मरण करनेवाला ।

नामर्द-वि० [ संज्ञा नामर्दी ] १. नपुंसक । २. दरपोक ।

नामलेवा-संज्ञा पुं० १. नाम लेनेवाला । २. उत्तराधिकारी ।

नामधर-वि० [ संज्ञा नामधरी ] प्रसिद्ध ।

नामशेष-वि० १. नष्ट । २. मृत ।

नामांकित-वि० जिस पर नाम लिखा या खुदा हो ।

नामाकल-वि० १. अयोग्य । २. अयुक्त ।

नामी-वि० १. नामधारी । २. प्रसिद्ध ।

नामुनासिय-वि० अनुचित ।

नामुमकिन-वि० असंभव ।

नामूसी-संज्ञा स्त्री० बेहज्जती ।

नाम्ना-वि० [ स्त्री० नाम्नी ] नामवाला ।

नार्थी-संज्ञा पुं० दे० "नाम" ।

अव्य० दे० "नहीं" ।

नायक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नायिका ] १.

नेता । २. मातृक । ३. साहित्य

में शृंगार का आलंबन या साधक

रूप-वैचित्र्य-संपन्न पुरुष अथवा वह

पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य

या नाटक आदि का मुख्य विषय हो ।

नायका-संज्ञा स्त्री० १. दे० "नायिका" । २. वेश्या की माँ । ३.

दूती ।

नायन-संज्ञा स्त्री० नाई की स्त्री ।

नायक-संज्ञा पुं० १. सुखतार । २. सहायक ।

नायिका-संज्ञा स्त्री० १. रूप-गुण-संपन्न स्त्री । २. वह स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो अथवा किसी काव्य, नाटक आदि में जिसके चरित्र का वर्णन हो ।

नकुलनवीस-संश पुं० वह आदमी, विशेषतः अदालत का मुहरिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नक़्त करना होता है।

नकुली-वि० १. बनावटी। २. जाली।

नकुश-संश पुं० १. दे० "नकुश"। २. ताल से खेला जानेवाला एक जुआ।

नकुशा-संश पुं० दे० "नकुशा"।

नकुसीर-संश स्त्री० भाप से भाप नाक से रक्त बहना।

नकुश-मेशा स्त्री० पुं० १. वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिये सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है। २. घूँघट।

नकुश-संश पुं० १. नहीं। २. इनकार।

नकुश-वि० निरुद्ध। खराब।

नकुशी-संश स्त्री० दे० "नकुशी"।

नकुश-संश पुं० भाट।

नकुल-संश पुं० १. पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम। २. बेटा।

नकुल-संश स्त्री० ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्ती जो लगाम का काम देती है।

नकुल-संश पुं० सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है।

नकुलखाना-संश पुं० वह स्थान जहाँ पर नकुल चबता है।

नकुलची-संश पुं० नगाड़ा बजानेवाला।

नकुल-संश पुं० नगाड़ा।

नकुल-संश पुं० १. नकुल करनेवाला। २. भाँड़।

नकुश-संश पुं० वह जो नकुशी करता हो।

नकुशी-संश स्त्री० [ वि० नकुशीशर ]

१. धातु आदि पर छोड़कर बेल-

चूटे आदि बनाने का काम या विद्या।

२. वे बेल-चूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।

नकु-वि० १. जिसकी नाक बड़ी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला।

नकु-संश पुं० रात।

नकुल-संश स्त्री० दे० "नकुल"।

नकुश-वि० बनाया या लिखा हुआ।

संश पुं० १. तसवीर। २. छोड़कर

या कुशल से बनाया हुआ बेल-चूटा।

३. मोहर। ४. तायीज़।

नकुश-संश पुं० १. तसवीर। २.

आकृति। ३. किसी घातक पर

बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथिवी

या खगोल का कोई भाग अपनी

स्थिति के अनुसार अथवा और किसी

विचार से चित्रित हो।

नकुश-संश पुं० चंद्रमा के पक्ष में

पड़नेवाले तारों का समूह।

नकुशनाथ-संश पुं० चंद्रमा।

नकुशपथ-संश पुं० नकुशों के चलने

का मार्ग।

नकुशराज-संश पुं० चंद्रमा।

नकुशलोह-संश पुं० पुराणानुसार

वह लोह जिसमें नकुश हैं।

नकुशवृष्टि-संश स्त्री० सारा दूधना।

नकुशी-संश पुं० चंद्रमा।

वि० माग्यवान्।

नकु-संश पुं० हाथ या पैर का नाखून।

संश स्त्री० मुड़ी बढ़ाने के लिये पंखा

रेशमी या सूती तागा।



नारंग-संज्ञा पुं० नारंगी ।

नारंगी-संज्ञा स्त्री० १. नींबू की जाति का एक मसोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं ।  
२. नारंगी के छिलके का सा रंग ।  
वि० पीलापन लिए हुए लाल रंग का ।

नार-संज्ञा स्त्री० १. गरदन । २. जुलाहों की डरकी ।

† संज्ञा पुं० १. नाखा । २. बहुत मोटा रस्सा । ३. नारा ।

† संज्ञा स्त्री० दे० "नारी" ।

नारकी-वि० पापी ।

नारद-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं । २. ऋग्वेदा करानेवाला आदमी ।

नारदीय-वि० नारद संबंधी ।

नारना-क्रि० स० धाह खगाना ।

नारसिंह-संज्ञा पुं० नारसिंह रूपधारी विष्णु ।

नारा-संज्ञा पुं० हजारबंद ।

नाराच-संज्ञा पुं० १. लोहे का बाण ।  
२. हुदिन ।

नाराज-वि० [ संज्ञा नापन्न, नापन्न ] अप्रमत्त ।

नारायण-संज्ञा पुं० विष्णु ।

नारायणीय-वि० नारायण-संबंधी ।

नारायण-वि० जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो ।

संज्ञा पुं० वेदों के वे मंत्र जिनमें राजाओं आदि की प्रशंसा होती है ।

नारि-संज्ञा स्त्री० दे० "नारी" ।

नारिकेल-संज्ञा पुं० नारियल ।

नारियल-संज्ञा पुं० १. खजूर की जाति का एक पेड़ । इसके बड़े गोल फलों के ऊपर एक बहुत कड़ा रेशेदार

छिलका होता है जिसके नीचे कड़ी गुठली और सफेद गिरी होती है जो खाने में मीठी होती है । २. नारियल का छुट्टा ।

नारियली-संज्ञा स्त्री० १. नारियल का खोपड़ा । २. नारियल का छुट्टा ।

नारी-संज्ञा स्त्री० औरत ।

† संज्ञा स्त्री० दे० "नारी" ।

नारु-संज्ञा पुं० डोब ।

नालंद-संज्ञा पुं० यौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध में पटने से तीस कौस दक्षिण था ।

नाल-संज्ञा स्त्री० १. डाँड़ी । २. नली ।

३. सुनारों की फुकती । ४. जुलाहों की नली । ५. नारा जो पड़ा होने-वाले बच्चों को लगा रहता है । ६. बल बहने का स्थान । ७. कुंडला-कार गढ़ा हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसके धीचाधीच पकड़कर बठाने के लिये एक दस्ता रहता है । इसे अभ्यास के लिये कसरत करने-वाले बढाते हैं ।

नालफट्टाई-संज्ञा स्त्री० तुरंत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम ।

नालकी-संज्ञा स्त्री० इधर-वधर से खुली पालकी जिस पर एक सिद्ध-राजदार सजावन होती है ।

नाला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मत्स्यां माली ] खकीर के रूप में दूर तक गया हुआ बड़ गड़दा जिससे होकर परसती पानी किसी नदी आदि में जाता है ।

नालायक-वि० [ संज्ञा नालायकी ] अयोग्य ।

नालका-संज्ञा स्त्री० १. छोटी नाल

मखक्षत-संज्ञा पुं० यह दाग या चिह्न जो नाखून के गड़ने के कारण पना हो।

मखछेलियाँ-संज्ञा पुं० दे० "नख-चत"।

मखत, मखतरा-संज्ञा पुं० दे० "मखत"।

मखना-क्रि० अ० डाँका जाना।

क्रि० स० पार करना।

क्रि० स० नष्ट करना।

मखरा-संज्ञा पुं० चोचला।

मखरा-तिष्ठा-संज्ञा पुं० मखरा।

मखरीला-वि० मखरा करनेवाला।

मखरेखा-संज्ञा स्त्री० नखचत।

मखरेखा-वि० [ संज्ञा मखरेखा ] जो बहुत मखरा करे।

मखराट-संज्ञा स्त्री० दे० "मखचत"।

मखशिख-संज्ञा पुं० १. नख से लेकर शिख तक के सभ श्रेण। २. शरीर के सभ श्रेणों का वर्णन।

मखियाना-क्रि० स० नाखून गढ़ाना।

मखी-संज्ञा पुं० यह जानवा जो नाखून से किसी पदार्थ को चीर या काट सकता हो।

संज्ञा स्त्री० नख मामक गंधद्रव्य।

मखोटना-क्रि० स० नाखून से खरेचना या नाचना।

मग-संज्ञा पुं० १. पर्यंत। २. साथ।

संज्ञा पुं० नगीना।

मगज-संज्ञा पुं० हाथी।

वि० जो पहाड़ से उत्पन्न हो।

मगाय-वि० सुष्ठु।

मगदंती-संज्ञा स्त्री० विभीषण की स्त्री।

मगद-संज्ञा पुं० दे० "नकद"।

मगधर-संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचंद्र।

मगनेदिनी-संज्ञा स्त्री० पार्वती।

मगनी-संज्ञा स्त्री० १. कन्या। २. नगी स्त्री।

मगपति-संज्ञा पुं० हिमालय पर्वत।

मगर-संज्ञा पुं० शहर।

मगरकीचैन-संज्ञा पुं० यह गाना, बजाना या कीचैन, जो मगर की गलियों और सड़कों में घूम घूम कर हो।

मगरनारि-संज्ञा स्त्री० घेरया।

मगरपाल-संज्ञा पुं० यह जिसका काम मगर की रक्षा करना हो।

मगरघासी-संज्ञा पुं० नागरिक।

मगरी-संज्ञा स्त्री० मगर।

संज्ञा पुं० शहर में रहनेवाला।

मगाड़ा-संज्ञा पुं० दे० "मगारा"।

मगाधिप-संज्ञा पुं० हिमालय पर्वत।

मगारा-संज्ञा पुं० मगाड़ा।

मगारि-संज्ञा पुं० ईद।

मगी-संज्ञा स्त्री० रस।

मगीचा-क्रि० वि० दे० "नजदीक"।

मगीना-संज्ञा पुं० रत्न।

मगेंद्र, मगेश-संज्ञा पुं० हिमालय।

मगसरि-संज्ञा पुं० दे० "नागकेशर"।

मग्न-वि० जिसके ऊपर किसी प्रकार का आचरण न हो।

मग्नता-संज्ञा स्त्री० नंगे होने का भाव।

नचना-क्रि० अ० नाचना।

वि० १. नाचनेवाला। २. बराबर इधर-उधर घूमनेवाला।

नचनि-संज्ञा स्त्री० नाच।

नचनिया-संज्ञा पुं० नाचनेवाला।

नचनी-वि० स्त्री० १. नाचनेवाली।

२. इधर-उधर घूमती रहनेवाली।

नचाना-क्रि० स० १. नृत्य कराना।

२. हैरान करना।

या डटल । २. नाली ।  
 नालिश-संज्ञा स्त्री० फुरियाद ।  
 नाली-संज्ञा स्त्री० जल बहने का पतला मार्ग ।  
 संज्ञा स्त्री० नादी ।  
 नाघा-संज्ञा पुं० दे० "नाम" ।  
 नाव-संज्ञा स्त्री० नौका ।  
 नावक-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का छोटा घाण । २. मधुमक्खी का डंक ।  
 संज्ञा पुं० केवट ।  
 नावर-संज्ञा स्त्री० १. नाव । २. नाव की एक छोड़ी जिसमें उसे बीच में ले जाकर चकर देते हैं ।  
 नाविक-संज्ञा पुं० मछाह ।  
 नाश-संज्ञा पुं० १. ध्वंस । २. गायब होना ।  
 नाशकारी-वि० नाशक ।  
 नाशपाती-संज्ञा स्त्री० मझोले डील-डौल का एक पेड़ जिसके फल प्रसिद्ध मेवों में गिने जाते हैं ।  
 नाशवान्-वि० अनित्य ।  
 नाशता-संज्ञा पुं० जलपान ।  
 नास-संज्ञा स्त्री० सुँधनी ।  
 नासमझ-वि० [ संज्ञा नासमझी ] बेवकूफ ।  
 नासा-संज्ञा स्त्री० [ वि० नास ] १. नाक । २. नाक का छेद ।  
 नासापुट-संज्ञा पुं० नयना ।  
 नासिक-संज्ञा पुं० महाराष्ट्र देश में एक तीर्थ जो उस स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी निकलती है ।  
 नासिका-संज्ञा स्त्री० नाक ।  
 नासूर-संज्ञा पुं० घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद, जिससे घराघर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा

नहीं होता ।  
 नास्तिक-संज्ञा पुं० वह जो ईश्वर या परलोक आदि को न माने ।  
 नास्तिकता-संज्ञा स्त्री० नास्तिक होने का भाव ।  
 नाह-संज्ञा पुं० दे० "नाथ" ।  
 नाहक-कि० वि० वृथा ।  
 नाह-नूह-संज्ञा स्त्री० इनकार ।  
 नाहर-संज्ञा पुं० सिंह ।  
 संज्ञा पुं० टेसू का फूल ।  
 नाहरू-संज्ञा पुं० नारु नाम का रोग ।  
 संज्ञा पुं० दे० "नाहर" ।  
 नाहिनै-वाक्य नहीं है ।  
 नाहीं-अव्य० दे० "नहीं" ।  
 नि०-कि० वि० दे० "नित्य" ।  
 नि०-वि० दे० "निश्च" ।  
 नि०-संज्ञा पुं० नि० दा करनेवाला ।  
 नि०-संज्ञा पुं० [ वि० नि० दीय, नि० दि, नि० ] नि० दा करने का काम ।  
 नि०-संज्ञा पुं० नि० दा करना ।  
 नि०-वि० १. नि० दा करने योग्य । २. घृता ।  
 नि०-संज्ञा स्त्री० १. अपघात । २. बदनामी ।  
 नि०-संज्ञा-वि० जिसे नि० दा आ रही हो ।  
 नि०-वि० बुरा ।  
 नि०-संज्ञा स्त्री० नि० दा ।  
 नि०-वि० १. नि० दा करने योग्य । २. बुरा ।  
 नि०-संज्ञा स्त्री० नीम का पेड़ ।  
 नि०-संज्ञा पुं० १. अरुणि या नि० दादिल नामक आचार्य । २. इनका जलया हुआ वैष्णव-संप्रदाय ।  
 नि०-संज्ञा पुं० नीय ।  
 निः-अव्य० एक उपसर्ग । दे० "नि" ।

नचौहाँ-वि० जो सदा नाचता या  
हृष्ट-उत्थर धूमता रहे ।

नजदीक-वि० [ संज्ञा, वि० नजदकी ]  
निजट ।

नज्जम-संज्ञा स्त्री० कविता ।

नज्जर-संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि । २. कृपा-  
दृष्टि । ३. निगरानी । ४. दृष्टि का  
बह कल्पित प्रभाव जो किसी सुंदर  
मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर  
पड़कर उसे खराब कर देनेवाला  
माना जाता है ।

संज्ञा स्त्री० १. भेंट । २. अधीनता  
सूचित करने की एक रस्म जिसमें  
होगा भक्त हाथा आदि दियेजो में  
रखकर सामने जाते हैं ।

नज्जटना-क्रि० भ० १. देखना ।  
२. नज्जर लगाना ।

नज्जरघंद्-वि० जो किसी ऐसे स्थान  
पर कहीं निगरानी में रखा जाय जहाँ  
से कहीं धा-जा न सके ।

नज्जरधागु-संज्ञा पुं० महला या बड़े  
बड़े मकानों आदि के सामने या चारों  
ओर का बाग ।

नज्जराना-क्रि० भ० नज्जर लगाना ।  
क्रि० स० नज्जर लगाना ।

संज्ञा पुं० भेंट ।

नज्जला-संज्ञा पुं० जुकाम ।

नज्जाकत-संज्ञा स्त्री० नाजुक होने का  
भाव ।

नजात-संज्ञा स्त्री० मुक्ति ।

नज्जारा-संज्ञा पुं० दृश्य ।

नज्जिकाना-क्रि० स० निजट पहुँ-  
चना ।

नज्जोफा-क्रि० वि० निजट ।

नज्जूम-संज्ञा पुं० ज्योतिष विद्या ।

नज्जमी-संज्ञा पुं० ज्योतिषी ।

नट-संज्ञा पुं० १. नाटक खेठनेवाले  
पात्र । २. एक नीच जाति जो प्रायः  
गा-बजाकर और खेड-तमासे काके  
निर्वाह करती है ।

नटई-संज्ञा स्त्री० १. गला । २. गले  
की घंटी ।

नटखट-वि० १. ऊधमी । २.  
चात्ताक ।

नटना-क्रि० भ० १. नाचना । २.  
मुहरना ।

नटनी-संज्ञा स्त्री० नृत्य ।

संज्ञा स्त्री० हुनकार ।

नटनी-संज्ञा स्त्री० १. नट की स्त्री । २.  
नट जाति की स्त्री ।

नटवर-संज्ञा पुं० १. नाट्यकला में  
प्रवीण मनुष्य । २. श्रीकृष्ण ।  
वि० चात्ताक ।

नटसारा-संज्ञा स्त्री० दे० "नाट्य-  
शाला" ।

नटसाल-संज्ञा स्त्री० १. कटि का वह  
भाग जो निष्कात लिए जाने पर भी  
टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है ।  
२. कसक ।

नटिन-संज्ञा स्त्री० नट की स्त्री ।

नट्टी-संज्ञा स्त्री० १. नट जाति की स्त्री ।  
२. मर्चकी ।

नटुशा, नटुचा-संज्ञा पुं० १. दे०  
"नट" । २. "नटई" ।

नटर, नतर्गा-क्रि० वि० नहीं तो ।

नति-संज्ञा स्त्री० १. मुहाव । २.  
नमस्कार । ३. नम्रता ।

नतिनी-संज्ञा स्त्री० खड़की की खड़की ।

नतीजा-संज्ञा पुं० परिणाम ।

नतु-क्रि० वि० नहीं तो ।

नतैत-संज्ञा पुं० संवधी ।

निःशंक-वि० निडर ।

निःशब्द-वि० जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे ।

निःशेष-वि० १. समूचा । २. समाप्त ।

निःश्रेणी-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी ।

निःश्रेयस-वि० १. मोक्ष । २. कल्याण ।

निःश्वास-संज्ञा पुं० साँस ।

निःसंकोच-कि० वि० बेधड़क ।

निःसंग-वि० १. बिना मेल या लगाव का । २. निर्दोष ।

निःसंतान-वि० लापरवह ।

निःसंदेह-वि० संदेह-रहित ।  
अर्थ० १. बिना किसी संदेह के ।  
२. वेशक ।

निःसंशय-वि० संदेह-रहित ।

निःसार-वि० जिसमें कुछ असलियत, तथ्य या सार न हो ।

निःसरण-संज्ञा पुं० १. निकलना ।  
२. निकलने का रास्ता । ३. निर्वाण ।

निःसीम-वि० १. बेहद । २. बहुत बड़ा या अधिक ।

निःसृत-वि० निकला हुआ ।

निःस्पृह-वि० १. इच्छारहित । २. निर्लोभ ।

निःस्वार्थ-वि० जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो ।

नि-अर्थ० एक वपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह, अधोभाव, अत्यंत, आदेश, नित्य, काल, बंधन, धर्मभाव, समीप, दर्शन आदि ।  
संज्ञा पुं० निपाद स्वर का संकेत ।

निश्चर-अर्थ० निकट ।  
वि० समान ।

निश्चराना-कि० स० निकट जाना ।  
कि० अ० निकट आना ।

निकटक-वि० दे० "निकटक" ।

निकटन-संज्ञा पुं० नाश ।

निकट-वि० पास का ।  
कि० वि० पास । समीप ।

निकटवर्ती-वि० [ स्त्री० निकटवर्तिनी ]  
पासवाला ।

निकटस्थ-वि० पास का ।

निकम्मा-वि० [ स्त्री० निकम्मा ] जो कोई काम-धंधा न करे ।

निकर-संज्ञा पुं० समूह ।

निकरना-कि० अ० दे० "निकलना" ।

निकलक-वि० दोपरहित ।

निकलकी-संज्ञा पुं० कविक अथवा ।

निकल-संज्ञा स्त्री० एक धातु जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है । साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है ।

निकलना-कि० अ० १. भीतर से बाहर आना । २. उत्तीर्ण होना । ३. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना । ४. प्रचलित होना । ५. मुक्त होना । ६. विकना । ७. प्रकाशित होना । ८. हिताय-किताय होने पर कोई रकम जिम्मे ठहरना । ९. पीटना । १०. घोटने, बल आदि का सवारी लेकर चलना आदि सीखना ।

निकलवाना-कि० स० निकालने का काम दूसरे से कराना ।

निकसना-कि० अ० दे० "निकलना" ।

नरथी-संज्ञा स्त्री० कागज या कपड़े आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर सबको एक ही में बाँधना या पैसाना ।

नथ-संज्ञा स्त्री० थाली की तरह का नाक का एक गहना ।

नथना-संज्ञा पुं० १. नाक का अगला भाग । २. नाक का छेद ।

कि० अ० १. किसी के साथ नथी होना । २. छिदना ।

नथनी-संज्ञा स्त्री० नाक में पहनने की छोटी नथ ।

नथिया, नधुनी-संज्ञा स्त्री० दे० "नथ" ।

नद-संज्ञा पुं० बड़ी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुलिंग-वाची हो ।

नदराज-संज्ञा पुं० समुद्र ।

नदारद-वि० गायब ।

नदिया-संज्ञा स्त्री० दे० "नदी" ।

नदी-संज्ञा स्त्री० दरिया ।

नदीश-संज्ञा पुं० समुद्र ।

नद्ध-वि० पैधा हुआ ।

नधना-कि० अ० १. जुतना । २. जुड़ना । ३. काम का ठनना ।

ननँद, ननद-संज्ञा स्त्री० पति की पत्नि ।

ननदोई-संज्ञा पुं० ननद का पति ।

ननसार-संज्ञा स्त्री० दे० "ननिहाल" ।

ननिहाल-संज्ञा पुं० नाना का घर ।

नन्हा-वि० [ स्त्री नन्ही ] छोटा ।

नन्हाई-संज्ञा स्त्री० छोटापन ।

नपाई-संज्ञा स्त्री० नापने का काम, भाव या मज़दूरी ।

नपाका-वि० अपवित्र ।

नपुंसक-संज्ञा पुं० १. वह पुरुष जिसमें

कामेच्छा बहुत ही कम हो और किसी विशेष बपाय से जाग्रत हो ।

२. हिजड़ा ।

नपुंसकता-संज्ञा स्त्री० १. नपुंसक होने का भाव । २. नामर्दी ।

नपुंसकत्व-संज्ञा पुं० नामर्दी ।

नफरत-संज्ञा स्त्री० घिन ।

नफरी-संज्ञा स्त्री० १. एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी या काम ।

२. मज़दूरी का दिन ।

नफ़ा-संज्ञा पुं० लाभ ।

नफ़ासत-संज्ञा स्त्री० बम्बापन ।

नफीस-वि० १. बमदा । २. सुंदर ।

नयी-संज्ञा पुं० रसूल ।

नवेड़ना-कि० स० तै करना ।

नवेड़ा-संज्ञा पुं० फैसला ।

नब्ज़-संज्ञा स्त्री० नाड़ी ।

नभ-संज्ञा पुं० आकाश ।

नभचर-संज्ञा पुं० दे० "नभश्चर" ।

नभश्चर-वि० आकाश में चलनेवाला ।

नभस्थल-संज्ञा पुं० आकाश ।

नभ-वि० [ संज्ञा नभी ] गीला ।

नभक-संज्ञा पुं० छावण । नेत्र ।

नभकख़ार-वि० नभक खानेवाला ।

नभकसार-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ नभक निकलता या घनता हो ।

नभकहराम-संज्ञा पुं० [ संज्ञा नभक-हरामी ] कृतघ्न ।

नभकहलाल-संज्ञा पुं० [ संज्ञा नभक-हलाली ] स्वामिमत्त ।

नभकीन-वि० जिसमें नभक का सा स्वाद हो ।

नमन-संज्ञा पुं० [ वि० नमनीय, नमित ] प्रणाम ।

नमनीय-वि० १. आदरणीय । २.

निकाई-संज्ञा पुं० दे० "निकाय" ।

संज्ञा स्त्री० १. मलाई । २. खूब-सूती ।

निकाज-वि० वेकाम ।

निकाम-वि० १. निकम्मा । २. धुरा ।  
क्रि० वि० व्यर्थ ।

निकाय-संज्ञा पुं० १. समूह । २. घर ।

निकारना-क्रि० स० दे० "निकालना" ।

निकालना-क्रि० स० १. भीतर से बाहर खाना । २. ले जाना । ३. चलाना । ४. अलग करना । ५. कम करना । ६. छुड़ाना । ७. खपाना । ८. चलाना । ९. हल करना । १०. ईजाद करना । ११. बदल करना । १२. रकम ज़िम्मे ठहराना । १३. धरामद करना ।

निकाला-संज्ञा पुं० १. निकालने का काम । २. किसी स्थान से निकाले जाने का ढ़ंड ।

निकास-संज्ञा पुं० १. निकलने की क्रिया या भाव । २. निकालने की क्रिया या भाव । ३. दरवाज़ा । ४. मैदान । ५. आमदनी ।

निकासी-संज्ञा स्त्री० १. प्रस्थान । २. मुनाफ़ा । ३. आय । ४. बिक्री ।

निकासना-क्रि० स० दे० "निकालना" ।

निकाह-संज्ञा पुं० मुसलमानों की पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह ।

निकुंज-संज्ञा पुं० जटा-गृह ।

निकुष्ट-वि० धुरा ।

निकुष्टता-संज्ञा स्त्री० धुराई ।

निकेत-संज्ञा पुं० १. घर । २. स्थान ।

निकिस-वि० १. फेंका हुआ । २.

छोड़ा हुआ ।

निकोप-संज्ञा पुं० १. फेंकने या डालने की क्रिया या भाव । २. चलाने की क्रिया या भाव । ३. त्याग । ४. घरोहर ।

निकोपण-संज्ञा पुं० [ वि० निकित, निकेय ] १. फेंकना । २. छोड़ना ।

निखंड-वि० ठीक ।

निखट्ट-वि० १. जो कुछ कमाई न करे । २. निकम्मा ।

निखरना-क्रि० भ० १. निर्मल होना । २. रंगत का खुलता होना ।

निखवख-वि० धिलकुल । बहुत से ।

निखार-संज्ञा पुं० १. निर्मलता । २. शृंगार ।

निखारना-क्रि० स० साफ़ करना ।

निखाकिसा-वि० विशुद्ध ।

निखिल-वि० संपूर्ण ।

निखोट-वि० १. निर्दोष । २. साफ़ ।  
क्रि० वि० घेघड़क ।

निगंध-वि० गंधहीन ।

निगड-संज्ञा स्त्री० मेढ़ी ।

निगम-संज्ञा पुं० मार्ग ।

निगमागम-संज्ञा पुं० वेदशास्त्र ।

निगरानी-संज्ञा स्त्री० देख-रेख ।

निगलना-क्रि० स० १. लीजलाना । २. दूसरे का धन आदि मार बैठना ।

निगहवान-संज्ञा पुं० रक्षक ।

निगहवानी-संज्ञा स्त्री० रक्षा ।

निगाली-संज्ञा स्त्री० हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं ।

निगाह-संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि । २. तकाई । ३. कृपादृष्टि । ४. परख ।

निगुरा-वि० अदीपित ।

निगूढ़-वि० अत्यंत गुप्त ।

जो झुक सके ।

नमस्कार-संज्ञा पुं० प्रणाम ।

नमस्ते-एक वाक्य जिसका अर्थ है—  
आपको नमस्कार है ।

नमाज्ञ-संज्ञा स्त्री० सुसज्जमानों की  
हेश्वर-प्रार्थना जो नित्य पाँच बार  
होती है ।

नमाज्ञी-संज्ञा पुं० १. नमाज्ञ पढ़ने-  
वाला । २. वह वस्त्र जिस पर खड़े  
होकर नमाज़ पढ़ी जाती है ।

नमाना-क्रि० स० झुकाना ।

नमित-वि० झुका हुआ ।

नमी-संज्ञा स्त्री० गीलापन ।

नमूना-संज्ञा पुं० १. यानगी । २.  
वाँचा ।

नम्र-वि० विनीत ।

नय-संज्ञा पुं० १. नीति । २. नम्रता ।  
३. संज्ञा स्त्री० नदी ।

नयकारी-संज्ञा पुं० १. नाचनेवालों  
का मुखिया । २. नाचनेवाला ।

नयन-संज्ञा पुं० नेत्र ।

नयनगोचर-वि० समष्टि ।

नयनपट-संज्ञा पुं० आँख की पलक ।

नयना-क्रि० अ० १. नम्र होना ।  
२. झुकना ।

‡ संज्ञा पुं० आँख ।

नयनी-संज्ञा स्त्री० आँख की पुतली ।

वि० स्त्री० आँखवाली ।

नयनू-संज्ञा पुं० मक्खन ।

नयर-संज्ञा पुं० नगर ।

नयशील-वि० १. नीतिज्ञ । २.  
विनीत ।

नया-वि० नवीन । हास का ।

नयापन-संज्ञा पुं० नवीनता ।

नर-संज्ञा पुं० पुरुष ।

वि० जो (प्राणी) पुरुषजाति का हो ।

नरकंत-संज्ञा पुं० राजा ।

नरक-संज्ञा पुं० १. दोऊ । जहन्नुम ।

२. बहुत ही गंधा स्थान ।

नरकगामी-वि० नरक में जानेवाला ।

नरक चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० कार्तिक  
कृष्ण चतुर्दशी जिस दिन घर का  
कूड़ा-कतवार निकालकर फेंका जाता  
है ।

नरकट-संज्ञा पुं० घेंत की तरह का  
एक प्रसिद्ध पौधा । इसके डंठल  
कुलमें, निगालियाँ, दैरियाँ तथा  
चटाहियाँ आदि बनाने के काम में  
आते हैं ।

नरकेसरी-संज्ञा पुं० नृसिंह ।

नरकेहरि-संज्ञा पुं० दे० "नरकेसरी" ।

नरगिस-संज्ञा स्त्री० प्याज़ की तरह  
का एक पौधा जिसमें कटोरी के  
आकार का सफ़ेद रंग का फूल  
लगता है ।

नरत्न-संज्ञा पुं० नर होने का भाव ।

नरदेव-संज्ञा पुं० १. राजा । २.  
ब्राह्मण ।

नरनाथ-संज्ञा पुं० राजा ।

नरनाह-संज्ञा पुं० राजा ।

नरपिशाच-संज्ञा पुं० जो मनुष्य  
होकर भी पिशाचों का माकांम करे ।

नरमन्त्री-संज्ञा पुं० राजस ।

नरमा-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कपास ।

नरमार्ही-संज्ञा स्त्री० दे० "नरमी" ।

नरमाना-क्रि० स० नरम करना ।

क्रि० अ० नरम होना ।

नरमी-संज्ञा स्त्री० कोमलता ।

नरमेघ-संज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञ  
जिसमें प्राचीन काल में मनुष्य के  
मांस की आहुति दी जाती थी ।

नरलोक-संज्ञा पुं० संसार ।



निगृहीत-वि० १. एकद्वारा हुआ । २. आक्रमित । आक्रांत । ३. पीड़ित ।

निगोड़ा-वि० [ स्त्री० निगोड़ी ] १. अभागा । २. दुष्ट ।

निग्रह-संज्ञा पुं० १. रोक । २. दमन । ३. चिकित्सा । ४. डाँट । ५. सीमा ।

निग्रही-वि० १. रोकनेवाला । २. बँड देनेवाला ।

निघंटु-संज्ञा पुं० १. वैदिक शब्दों का कोश । २. शब्द-संग्रह मात्र ।

निघटना-क्रि० भ० दे० "घटना" ।

निघर-घट्ट-वि० १. जिसका कहीं घर-घाट न हो । २. निर्लज्ज ।

निघरा-वि० निगोड़ा ।

निचय-संज्ञा पुं० निरचय ।

निचला-वि० [ स्त्री० निचली ] नीचे का । वि० स्थिर ।

निचाई-संज्ञा स्त्री० १. नीचापन । २. कमीनापन ।

निचान-संज्ञा स्त्री० १. नीचापन । २. ढाल ।

निचिंत-वि० चिंतारहित ।

निचुड़ना-क्रि० भ० गारना ।

निचोड़-संज्ञा पुं० १. निचोड़ने से निकला हुआ रस आदि । २. सार । ३. सारांश ।

निचोड़ना-क्रि० स० १. गारना । २. किसी वस्तु का सार भाग निकाल लेना ।

निचोना-क्रि० स० दे० "निचोड़ना" ।

निचोरना-क्रि० स० दे० "निचोड़ना" ।

निचोल-संज्ञा पुं० स्त्रियों की चौड़नी या चादर ।

निचौहाँ-वि० [ स्त्री० निचौहीं ] नमित ।

निचौहँ-क्रि० वि० नीचे की ओर ।

निछुका-संज्ञा पुं० निराशा ।

निछुत्र-वि० छुत्रहीन । वि० छत्रियों से हीन ।

निछुनियाँ-क्रि० वि० दे० "निछान" ।

निछाना-वि० खालिस । क्रि० वि० एकदम ।

निछावर-संज्ञा स्त्री० १. बतारा । २. यह दृश्य या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़ दी जाय ।

निछोड़, निछोड़ी-वि० १. जिसे छोड़ या प्रेम न हो । २. निर्दय ।

निज-वि० १. अपना । २. खास । ३. ठीक ।

अव्य० १. निश्चय । २. खासकर ।

निजकाना-क्रि० भ० समीप आना ।

निजाम-संज्ञा पुं० १. बंदोबस्त । २. ईदरावाद के मन्वायों का पदवी-सूचक नाम ।

निजू-वि० निज का ।

निजोरी-वि० निर्वेज ।

निठाला-वि० बेकार ।

निठालू-वि० दे० "निठाला" ।

निठाली-संज्ञा पुं० ऐसा समय जब कोई काम-धंधा न हो ।

निठुर-वि० निर्दय ।

निठुरई-संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता" ।

निठुरता-संज्ञा स्त्री० निर्दयता ।

निठुराई-संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता" ।

निठार-संज्ञा पुं० १. घुरी जगह । २. घुरा दौड़ ।

निहर-वि० १. जिसे डर न हो । २. साहसी । ३. ठीठ ।

शराब, अफीम या गांजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होता है। २. मादक द्रव्य। ३. अभिमान।  
नशाखोर-संज्ञा पुं० नशेवाज़।

नशीन-वि० बैठनेवाला।  
नशीनी-संज्ञा स्त्री० बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला-वि० नशा उत्पन्न करनेवाला।  
नशतर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत तेज़ छोटा चाक। इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरने में होता है।

नश्वर-वि० जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नष्ट-वि० १. जिसका नाश हो गया हो। २. निष्फल।

नष्टबुद्धि-वि० मूर्ख।  
नष्ट-भ्रष्ट-वि० जो बिलकुल टूट-फूट या नष्ट हो गया हो।

नष्टा-संज्ञा स्त्री० १. बेरया। २. व्यभिचारिणी।

नसंक-वि० निर्भय।  
नस-संज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर तंतुओं का वह यंत्र या लच्छा जो पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने के लिये होता है। २. वे पतले रेशे या तंतु जो पत्तों में बीच-बीच में होते हैं।

नसना-वि० १. नष्ट होना। २. बिगड़ जाना।

कि० अ० भागना।  
नसल-संज्ञा स्त्री० वंश।

नसघार-संज्ञा स्त्री० नास।

नसाना-वि० १. नष्ट हो जाना। २. बिगड़ जाना।

नसीनी-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।

नसीब-संज्ञा पुं० भाग्य।

नसीया-संज्ञा पुं० दे० "नसीब"।

नसीहत-संज्ञा स्त्री० उपदेश।

नसेनी-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।

नस्य-संज्ञा पुं० सुँधनी।

नह-संज्ञा पुं० दे० "नाखून"।

नहना-कि० स० नाधना।

नहर-संज्ञा स्त्री० वह कृत्रिम जल-मार्ग जो खेतों की सिंचाई या यात्रा आदि के लिये तैयार किया जाता है।

नहरनी-संज्ञा स्त्री० हजामे का एक अंगार जिससे नाखून काटे जाते हैं।

नहलाई-संज्ञा स्त्री० नहलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नहलाना-कि० स० नहवाना।

नहसत-कि० स० नख की रेखा।

नहान-संज्ञा पुं० नहाने की क्रिया।

नहाना-कि० अ० १. शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिये उसे जल से धोना।

२. बिलकुल तर हो जाना।

नहीं-अव्य० एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या शस्वीकृति प्रकट करने के लिये होता है।

नहुष-संज्ञा पुं० अयोध्या का एक प्राचीन हृद्वाकुवंशी राजा।

नहसत-संज्ञा स्त्री० मनहूसी।

नाँउ-संज्ञा पुं० दे० "नाम"।

नाँगा-वि० दे० "नेगा"।

संज्ञा पुं० एक प्रकार के साधु जो नंगे ही रहते हैं।

नाँघना-वि० स० लाँघना।

नाँद-संज्ञा स्त्री० हौदी।

नाँदना-कि० अ० शब्द करना।

निर्दरपन, निर्दरपना-संज्ञा पुं०  
निर्भयता ।

निढाल-वि० शिथिल ।

नितंत-क्रि० वि० दे० "नितान्त" ।

नितंद-संज्ञा पुं० चूतद ।

नितंधिनी-संज्ञा स्त्री० सुंदर नितंध-  
वाली स्त्री । सुंदरी ।

नित-अव्य० १. रोज़ । २. सदा ।

नितल-संज्ञा पुं० सात पातालों में  
से एक ।

नितान्त-वि० सर्वथा ।

निति-अव्य० दे० "नित" ।

नित्य-वि० १. जो सध दिन रहे ।  
२. प्रति दिन का ।

अव्य० १. प्रति दिन । २. सदा ।

नित्यकर्म-संज्ञा पुं० १. प्रति दिन का  
काम । २. वह धर्म-संबंधी कर्म  
जिसका प्रति दिन करना आवश्यक  
उहराया गया हो ।

नित्यक्रिया-संज्ञा स्त्री० नित्यकर्म ।

नित्यता-संज्ञा स्त्री० नित्य होने का  
भाव ।

नित्यत्व-संज्ञा पुं० नित्यता ।

नित्यनियम-संज्ञा पुं० रोज़ का कायदा ।

नित्यप्रति-अव्य० हर रोज़ ।

नित्यशः-अव्य० १. प्रति दिन । २.  
सदा ।

निधर्म-संज्ञा पुं० खेमा ।

निधरना-क्रि० भ० पानी या और  
किसी पतली चीज़ का स्थिर होना  
जिससे उसमें घुली हुई मूल आदि  
नीचे बैठ जाय ।

निधार-संज्ञा पुं० घुली हुई चीज़ के  
बैठ जाने से अलग हुआ साफ़ पानी ।

निदरना-क्रि० स० निरादर करना ।

निदर्शन-संज्ञा पुं० १. दिखाने या

प्रदर्शित करने का कार्य । २. उदा-  
हरण ।

निदहना-क्रि० स० जलाना ।

निदाघ-संज्ञा पुं० १. गरमी । २.  
भीष्म काल ।

निदान-संज्ञा पुं० १. कारण । २.  
रोगनिर्णय । ३. अंत ।

अव्य० अंत में ।

वि० विकृत ।

निदारुण-वि० १. कठिन । २. दुःसह ।

निदिध्यासन-संज्ञा पुं० फिर फिर  
स्मरण ।

निदेश-संज्ञा पुं० १. शासन । २.  
आज्ञा ।

निद्रा-संज्ञा स्त्री० नींद ।

निद्रालु-वि० सोनेवाला ।

निद्रित-वि० सोया हुआ ।

निघडक-क्रि० वि० १. घे रोक । २.  
वे-खटके ।

निघन-संज्ञा पुं० १. नाश । २.  
मरण ।

वि० घनहीन ।

निघनी-वि० निर्धन ।

निधान-संज्ञा पुं० १. आधार । २.  
निधि ।

निधि-संज्ञा स्त्री० खज़ाना ।

निधिनाथ, निधिपति-संज्ञा पुं०  
निधियों के स्वामी, कुवेर ।

निरा-वि० अलग ।

निनाद-संज्ञा पुं० शब्द ।

निनादी-वि० [स्त्री० निनादिनी] शब्द  
करनेवाला ।

निनावार्त्ता-संज्ञा पुं० मुँह के भीतरी  
भागों में निकलनेवाले महीन महीन  
खाल दाने जिनमें छरछराहट  
होती है ।

कि० ७० १. आनंदित होना । २. मंगलाचरण ।

नायँ-संज्ञा पुं० दे० "नाम" ।

नय्य० दे० "नहीं" ।

नायँ-संज्ञा पुं० दे० "नाम" ।

नाह-संज्ञा पुं० स्वामी ।

ना-अव्य० नहीं ।

नाइक-संज्ञा पुं० दे० "नायक" ।

नाइन-संज्ञा स्त्री० १. नाई जाति की स्त्री । २. नाई की स्त्री ।

नाई-संज्ञा स्त्री० समान दशा ।

वि० स्त्री० समान ।

नाई-संज्ञा पुं० नाज ।

नाई-संज्ञा पुं० दे० "नाम" ।

नाउम्मेद-वि० निराश ।

नाउम्मेदी-संज्ञा स्त्री० निराशा ।

नाऊ-संज्ञा पुं० दे० "नाई" ।

नार्कद-वि० अशिक्षित ।

नाक-संज्ञा स्त्री० १. घाँठों और आँखों के बीच की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय । २. कपाल के केशों आदि का मल जो नाक से निकलता है । ३. मान ।

नाफड़ा-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें नाक पक जाती है ।

नाकदूर-वि० [ संज्ञा नाकदूरी ] जिसकी कदं या प्रतिष्ठा न हो ।

नाकना-कि० स० लाँघना ।

नाफा-संज्ञा पुं० १. मुहाना । २. गली या रास्ते का शुरुआत स्थान ।

३. फाटक । ४. सूर्य का छेद ।

नाकायंदी-संज्ञा स्त्री० किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट ।

नाकिस-वि० बुरा ।

नाकेदार-संज्ञा पुं० नाके या फाटक

पर रहनेवाले सिपाही ।

वि० जिसमें नाका या छेद हो ।

नाकेवंदी-संज्ञा स्त्री० दे० "नाकायंदी" ।

नाखश-वि० [ संज्ञा नाखशी ] नाराज़ ।

नाखन-संज्ञा पुं० नख ।

नाग-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नागिन ] १.

साँप । २. हाथी ।

नागकेसर-संज्ञा पुं० एक सीधा सदा-बहार पेड़ ।

नागभाग-संज्ञा पुं० अफीम ।

नागपंचमी-संज्ञा स्त्री० सावन सुदी पंचमी ।

नागपति-संज्ञा पुं० १. सर्पों का राजा वासुकि । २. हाथियों का राजा ऐरावत ।

नागपाश-संज्ञा पुं० एक अस्त्र जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे ।

नागफाँस-संज्ञा पुं० दे० "नागपाश" ।

नागवला-संज्ञा स्त्री० रंगेरन ।

नागवेल-संज्ञा स्त्री० पान ।

नागर-वि० [ स्त्री० नागरी ] १. नगर-संबंधी । २. नगर में रहनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. नगर में रहनेवाला

मनुष्य । २. चतुर आदमी । ३.

गुजरात में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक जाति ।

नागरता-संज्ञा स्त्री० नागरिकता ।

नागरवेल-संज्ञा स्त्री० पान ।

नागरमोथा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का तृण या घास जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है ।

नागराज-संज्ञा पुं० १. शेषनाग । २. ऐरावत ।

नागरिक-वि० १. नगर-संबंधी ।

२. नगर में रहनेवाला । ३. चतुर

निनैना-क्रि० स० मुकाना ।

† क्रि० स० नीचे करना ।

निनानवे-वि० नन्वे और नौ ।

निपंग-वि० निरुद्ध ।

निपजना-क्रि० अ० १. उपजना ।

२. बढ़ना ।

निपजी-संज्ञा स्त्री० लाभ ।

निपज-वि० हूँटा ।

निपड-अव्य० १. निरा । २. बिल्कुल ।

निपटना-क्रि० अ० दे० "निघटना" ।

निपतन-संज्ञा पुं० [ वि० निषठित ]

अधःपतन ।

निपात-संज्ञा पुं० १. पतन । २.

मृत्यु ।

वि० घिना पत्तों का ।

निपातन-संज्ञा पुं० १. गिराने का

कार्य । २. नाश ।

निपातना-क्रि० स० १. नीचे

गिराना । २. मष्ट करना । ३. बध

करना ।

निपाती-वि० १. गिरानेवाला । २.

मारनेवाला ।

संज्ञा पुं० शिव ।

अवि० घिना पत्ते का ।

निपीड़न-संज्ञा पुं० [ वि० निपीडित ]

पीड़न करना ।

निपुण-वि० दक्ष ।

निपुत्री-वि० निपूना ।

निपूत, निपूता-वि० [ स्त्री० निपूती ]

पुत्रहीन ।

निफरना-क्रि० अ० छुमकर या घँस-

कर धार-पार होना ।

क्रि० अ० साफ होना ।

निफल-वि० निरर्थक ।

निफाक-संज्ञा पुं० १. विरोध । २.

फूट ।

नियंघ-संज्ञा पुं० १. यंपन । २. लेख ।

नियंघन-संज्ञा पुं० [ वि० नियंघ ] १.

बंधन । २. व्यवस्था ।

नियकौरी-संज्ञा स्त्री० १. नीम का

फल । २. नीम का घीज ।

नियटना-क्रि० अ० [ संज्ञा निघटा, निघ-

यव ] १. निवृत्त होना । २. समाप्त

होना । ३. खतम होना । ४. शीघ्र

आदि से निवृत्त होना ।

नियटाना-क्रि० स० १. समाप्त

करना । २. चुकाना ।

निघटेरा-संज्ञा पुं० १. छुटो । २.

समाप्ति । ३. फैलजा ।

निघटना-क्रि० अ० दे० "निघटना" ।

नियद्ध-वि० १. बँधा हुआ । २.

गुथा हुआ । ३. बँटाया या लड़ा

हुआ ।

निघर-वि० दे० "निघल" ।

निघरना-क्रि० अ० १. छटना । २.

समाप्त होना । ३. सुलझना ।

नियल-वि० दुर्बल ।

नियह-संज्ञा पुं० समूह ।

नियहना-क्रि० अ० १. छुट्टी पाना ।

२. निर्वाह होना ।

निघाह-संज्ञा पुं० १. गुजारा । २.

पालन । ३. पचाव का रास्ता ।

निघाहना-क्रि० स० १. जारी रखना ।

२. पालन करना । ३. सपराना ।

निचिड-वि० दे० "निचिद" ।

निघुआ-संज्ञा पुं० दे० "नीघ" ।

निघुकना-क्रि० अ० छुटकारा

पाना ।

निवेडना-क्रि० स० १. सुलझाना ।

२. नियंत्रण करना ।

निवेडा-संज्ञा पुं० छुटकारा ।

नागरिकता-संज्ञा स्त्री० नागरिक के अधिकारों से सम्बन्ध होने की अवस्था ।

नागरी-संज्ञा स्त्री० १. नगर की रहने-वाली स्त्री । २. चतुर स्त्री । ३. भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत और हिंदी लिखी जाती है । देवनागरी ।

नागलोक-संज्ञा पुं० पाताल ।

नागधल्ली-संज्ञा स्त्री० पान ।

नागवार-वि० १. असह्य । २. अप्रिय ।

नागा-संज्ञा पुं० उस संप्रदाय का शैव साधु जिसमें लोग नंगे रहते हैं । संज्ञा पुं० १. आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में घसनेवाली एक जंगली जाति । २. आसाम में वह पहाड़ जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है ।

संज्ञा पुं० बीच ।

नागिन-संज्ञा स्त्री० नाग की स्त्री ।

नागेंद्र-संज्ञा पुं० १. बड़ा सर्प । २. ऐरावत ।

नागैसर-संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर" ।

नागौर-संज्ञा पुं० मारवाड़ के अन्तर्गत एक नगर ।

नाच-संज्ञा पुं० अंगों की वह गति जो हृदयोल्लास के कारण मनमानी अथवा संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार और हाव-भाव-युक्त हो ।

नाच-कूद-संज्ञा स्त्री० नाच-तमाशा ।

नाचघर-संज्ञा पुं० नृत्यशाला ।

नाचना-क्रि० भ० १. चित्त की वमंग से छलना, फूदना तथा इसी प्रकार की और चेष्टा करना । २. नृत्य करना । ३. वद्योग में इधर से वधर फिरना ।

नाच-महल-संज्ञा पुं० दे० "नाचवा" ।

नाच-रंग-संज्ञा पुं० आमोद-प्रमोद ।

नाचीज़-वि० तुच्छ ।

नाजा-संज्ञा पुं० अन्न ।

नाज़-संज्ञा पुं० १. नख़रा । २. घमंड ।

नासिर-संज्ञा पुं० निरीचक ।

नाजुक-वि० कोमल ।

नाटक-संज्ञा पुं० १. नट । २. अभिनय । ३. अभिनय-ग्रंथ ।

नाटकशाला-संज्ञा स्त्री० वह घर या स्थान जहाँ नाटक होता हो ।

नाटकिया, नाटकी-वि० नाटक का अभिनय करनेवाला ।

नाटकीय-वि० नाटक-संबंधी ।

नाटना-क्रि० भ० निरुत जाना ।

क्रि० स० अस्वीकार करना ।

नाटा-वि० [ स्त्री० नाटी ] छोटे कूद का ।

नाट्य-संज्ञा पुं० १. नटों का काम । २. अभिनय ।

नाट्यमंदिर-संज्ञा पुं० नाट्यशाला ।

नाट्यशाला-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ पर अभिनय किया जाय ।

नाट्यशास्त्र-संज्ञा पुं० नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या ।

नाठ-संज्ञा पुं० १. नाश । २. शमाव ।

नाठना-क्रि० स० नष्ट करना ।

क्रि० भ० १. नष्ट होना । २. भागना ।

नाठा-संज्ञा पुं० वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न हो ।

नाड़ा-संज्ञा पुं० सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाघरा या घोती बाँधती हैं ।

नाड़ी-संज्ञा स्त्री० नली ।

निवेरना-क्रि० स० दे० "निवेदना" ।

निवेरा-संज्ञा पुं० दे० "निवेदा" ।

निवौरी, निवौली-संज्ञा स्त्री० नीम का फल ।

निभ-संज्ञा पुं० प्रकाश ।

वि० तुल्य ।

निभना-क्रि० अ० १. जारी रहना ।

२. गुज़ारा होना ।

निभागा-वि० श्रभागा ।

निभाना-क्रि० स० १. जारी रखना ।

२. पालन करना ।

निभृत-वि० १. रखा हुआ । २.

अदल । ३. गुप्त । ४. धीर । ५.

निर्जन ।

निर्मत्रण-संज्ञा पुं० [ वि० निर्मत्रित ]

न्योता ।

निर्मत्रना-क्रि० स० न्योता देना ।

निर्मत्रित-वि० जिसे न्योता दिया गया हो ।

निमग्न-वि० [ स्त्री० निमग्ना ] मग्न ।

निमज्जन-संज्ञा पुं० डूबकर किया जाने वाला स्नान ।

निमज्जना-क्रि० अ० डूबना ।

निमज्जित-वि० १. डूबा हुआ । २.

स्नात ।

निमता-वि० जो उन्मत्त न हो ।

निमि-संज्ञा पुं० १. महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे । २. राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम । इन्हीं से मिथिला का विदेह वंश चला । ३. आर्यों का सिक्का ।

निमिख-संज्ञा पुं० दे० "निमिष" ।

निमित्त-संज्ञा पुं० हेतु ।

निमिराज-संज्ञा पुं० राजा जनक ।

निमिष-संज्ञा पुं० दे० "निमेष" ।

निमेष-संज्ञा पुं० दे० "निमेष" ।

निमेष-संज्ञा पुं० १. पलक का गिरना ।

२. चण ।

निमोना-संज्ञा पुं० घने या मटर के

पिसे हुए हरे दानों का बनाया हुआ

रसेदार व्यंजन ।

निम्न-वि० नीचा ।

निम्नगा-संज्ञा स्त्री० नदी ।

नियंता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नियंत्री ] १.

व्यवस्था करनेवाला । २. शासक ।

नियंत्रण-संज्ञा पुं० नियम आदि में

बाधना या उसके अनुसार चलाना ।

नियंत्रित-वि० नियम से बाँधा हुआ ।

नियत-वि० १. नियम द्वारा स्थिर ।

२. निश्चित । ३. तैनात ।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत" ।

नियति-संज्ञा स्त्री० १. बंधन । २.

स्थिरता । ३. भाग्य ।

नियम-संज्ञा पुं० १. पाबंदी । २.

दबाव । ३. दस्तूर । ४. कानून ।

५. प्रतिज्ञा ।

नियमन-संज्ञा पुं० [ वि० नियमित,

नियम्य ] १. नियमबद्ध करने का

कार्य । २. शासन ।

नियमित-वि० बाँधा हुआ । नियम-

बद्ध ।

नियरी-अव्य० समीप ।

नियरीही-संज्ञा स्त्री० निकटता ।

नियराना-क्रि० अ० निरट पहुँचना ।

नियामक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नियामिका ]

१. नियम करनेवाला । २. व्यवस्था

या विधान करनेवाला ।

नियामत-संज्ञा स्त्री० १. दुर्लभ पदार्थ ।

२. धन-दाकत ।

नियारो-अव्य० दे० "न्यारे" ।

नियाव-संज्ञा पुं० दे० "न्याय" ।

नियुक्त-वि० १. तैनाती । २. स्थिर  
किया हुआ ।

नियुक्ति-संज्ञा स्त्री० तैनाती ।

नियुद्ध-संज्ञा पुं० कुरती ।

नियोज्जा-संज्ञा पुं० १. नियोजित करने  
वाला । २. नियोग करनेवाला ।

नियोग-संज्ञा पुं० १. तैनाती । २.  
श्राद्ध ।

नियोजक-संज्ञा पुं० काम में लगाने-  
वाला ।

नियोजन-संज्ञा पुं० [ वि० नियोजित,  
नियोज्य, नियुक्त ] किसी काम में  
लगाना ।

निरंकार-संज्ञा पुं० दे० "निरा-  
का" ।

निरंकुश-वि० बिना डर का ।

निरंग-वि० १. अंग-रहित । २.  
खाली ।

संज्ञा पुं० स्वरूप अलंकार का एक भेद ।  
वि० १. ये रंग । २. उदात्त ।

निरंजन-वि० अंजन-रहित ।

संज्ञा पुं० परमात्मा ।

निरंतर-वि० १. अविच्छिन्न । २.  
स्थायी ।

क्रि० वि० बराबर । सदा । हमेशा ।

निरंध-वि० १. भारी अंधा । २.  
महामूर्ख ।

निरंभ-वि० निर्जल ।

निरंश-वि० जिसे उसका भाग न  
मिला हो ।

निरत्नर-वि० १. अचर-शून्य । २.  
अनपढ़ ।

निरखना-क्रि० स० देखना ।

निरगुण-वि० दे० "निर्गुण" ।

निरजर-वि० जो कभी जीर्ण या

पुराना न हो ।

निरभर-संज्ञा पुं० दे० "निर्भर" ।

निरत-वि० तत्पर ।

ा-संज्ञा पुं० दे० "नृत्य" ।

निरधानु-वि० शक्तिहीन ।

निरधार-संज्ञा पुं० दे० "निर्धार" ।

निरधारना-क्रि० स० निश्चय करना ।

निरजुनासिक-वि० (वर्ण) जिसका  
उच्चारण नाक के संबंध से न हो ।

निरघ्न-वि० १. अक्षरहित । २.  
निराहार ।

निरघ्ना-वि० निराहार ।

निरपना-वि० जो अपना न हो ।

निरपराध-वि० बेकसूर ।

क्रि० वि० बिना कोई कसूर किए ।

निरपेक्ष-वि० [संज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षा]  
१. अपेक्षा । २. तटस्थ ।

निरपेक्षी-वि० जिसे बंध या संज्ञान  
न हो ।

निरपेक्ष-संज्ञा पुं० १. वैराग्य ।  
२. साध ।

निरभ-वि० बिना शब्द का ।

निरमर, निरमल-वि० दे०  
"निर्मल" ।

निरमाना-क्रि० स० बनाना ।

निरमूलना-क्रि० स० निमूल  
करना ।

निरमोल-वि० अनमोल ।

निरमोही-वि० दे० "निर्मोही" ।

निरर्थक-वि० अर्थशून्य ।

निरधयध-वि० निराकार ।

निरघलंघ-वि० बिना सहारे ।

निरधार-संज्ञा पुं० हुडकारा ।

निरवाह-संज्ञा पुं० दे० "निर्वाह" ।

निरशन-संज्ञा पुं० उपवास ।



नौकदार-वि० १. जिसमें नौक हो ।

२. चुभनेवाला ।

नौकामोफी-संज्ञा स्त्री० दे० "नौक-भौक" ।

नौखा-वि० दे० "अनौखा" ।

नौच-संज्ञा स्त्री० १. नौचने की क्रिया या भाव । २. झीनवा ।

नौच-खसोट-संज्ञा स्त्री० लूट ।

नौचना-कि० सं० उखाड़ना ।

नौट-संज्ञा पुं० १. टाँकने या लिखने का काम । २. दिपय्या । ३. सरकार की ओर से जारी किया हुआ वह कागज़ जिस पर कुछ रूपों की संख्या रहती है और यह लिखा रहता है कि सरकार से उतना ख़या मिल जायगा ।

नौदन-संज्ञा पुं० १. चलाने या हाँकने का काम । २. झौगी ।

नौना-संज्ञा पुं० दे० "नमक" ।

नौना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नौनी ] १. नमक का वह धंश जो पुरानी दीवारों तथा सीढ़ की ज़मीन में छगा मिलता है । २. लोनी मिट्टी । † वि० १. खारा । २. सुंदर ।

नौना चमारी-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी जिसकी दोहाई भंत्रों में दी जाती है ।

नौनिया-संज्ञा पुं० लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति ।

† संज्ञा स्त्री० नौनिया ।

नौनी-संज्ञा स्त्री० लोनी मिट्टी ।

नौना-वि० दे० "नौना" ।

नौचना-कि० सं० दुहते समय रस्ती से गाँव के पर घबना ।

नौ-वि० एक कम दस ।

नौकर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नौकानी ]

१. चाकर । २. वैतनिक कर्मचारी ।

नौकरशाही-संज्ञा स्त्री० वह शासन-प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है ।

नौकरानी-संज्ञा स्त्री० मज़दूरी ।

नौकरी-संज्ञा स्त्री० १. सेवा । २. कोई काम जिसके लिये तनख़्वाह मिलनी हो ।

नौका-संज्ञा स्त्री० नाव ।

नौजवान-वि० नवयुवक ।

नौजा-संज्ञा पुं० बादाम ।

नौचढ़-वि० हाक में बढ़ा हुआ ।

नौचत-संज्ञा स्त्री० १. हालत । २. शहनाई और मगाड़ा जो देवमंदिरों या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है ।

नौचतख़ाना-संज्ञा पुं० फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौचत बजाई जाती है ।

नौचती-संज्ञा पुं० १. नौचत बजानेवाला । २. पहरेदार ।

नौमी-संज्ञा स्त्री० पक्ष की नवों तिथि ।

नौरोज़-संज्ञा पुं० १. पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन । इस दिन बहुत आनंद-वसुंधा मनाया जाता था । २. त्योहार ।

नौलखा-वि० जिसका मूल्य नौ लाख हो ।

नौशा-संज्ञा पुं० दुग्धा ।

नौसत-संज्ञा पुं० सिंघार ।

नौसादर-संज्ञा पुं० एक तीक्ष्ण काल-दार खार या नमक ।

नौसिखिया, नौसिखुआ-वि० जिसने कोई काम हाल में सीखा हो ।

नौसेना-संज्ञा स्त्री० जलसेना ।

निरसंक-वि० दे० "निःशंक" ।

निरस-वि० १. जिसमें रस न हो ।

२. फीका । ३. रूखा-सूखा ।

निरसन-संज्ञा पुं० [ वि० निरसनीय, निरस्य ] १. हटाना । २. खारिज करना ।

निरस्य-वि० अस्वहीन ।

निरहंकार-वि० अमिमान-रहित ।

निरहेतु-वि० दे० "निर्हेतु" ।

निरा-वि० [ स्त्री० निरो ] १. विशुद्ध । २. कैवल्य । ३. निपट ।

निराई-संज्ञा स्त्री० १. फसल के पौधों के आसपास उगनेवाले तृण, घास आदि दूर करना । २. निराने की मजदूरी ।

निराकरण-संज्ञा पुं० [ वि० निराकरणीय, निराकृत ] १. छुटाना । २. रद्द करना । ३. खंडन ।

निराकार-वि० जिसका कोई आकार न हो ।

संज्ञा पुं० १. ईश्वर । २. आकाश ।

निराखरा-वि० १. जिसमें अक्षर न हों । २. मौन । ३. अपढ़ ।

निराट-वि० निपट ।

निरादर-संज्ञा पुं० अपमान ।

निराना-क्रि० स० फसल के पौधों के आस-पास की घास खोदकर दूर करना जिसमें पौधों की बाढ़ न रुके ।

निरापद-वि० सुरक्षित ।

निरापन-वि० पराया ।

निरामय-वि० नीरोग ।

निरामिष-वि० जो मांस न खाए ।

निरालंब-वि० १. निराधार । २. निराश्रय ।

निराला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० निराली ] एकान्त स्थान ।

वि० १. एकांत । २. विलक्षण । ३. अनूठा ।

निराश-वि० आशाहीन ।

निराशा-संज्ञा स्त्री० नावम्भेदी ।

निराश्रय-वि० आश्रय-रहित ।

निरास-वि० दे० "निराश" ।

निराहार-वि० आहार-रहित ।

निरिन्द्रिय-वि० इंद्रिय-शून्य ।

निरिच्छता-क्रि० भ० देखना ।

निरीक्षक-संज्ञा पुं० देखनेवाला ।

निरीक्षण-संज्ञा पुं० [ वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण ] १. देखना । २. देख-रेख ।

निरीक्षा-संज्ञा स्त्री० देखना ।

निरीह-वि० १. जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करे । २. उदासीन ।

निरुक्त-वि० निश्चय रूप से कहा हुआ ।

संज्ञा पुं० वेद का चौथा अंग ।

निरुत्तर-वि० १. लाजवाध । २. जो उत्तर न दे सके ।

निरुद्ध-वि० रुका या बँधा हुआ ।

निरुपद्रव-वि० जिसमें कोई उपद्रव न हो ।

निरुपद्रवी-संज्ञा पुं० शांत ।

निरुपम-वि० बेजोड़ ।

निरुपयोगी-वि० व्यर्थ ।

निरुपाधि-वि० १. बाधा-रहित । माया-रहित ।

संज्ञा पुं० ब्रह्म ।

निरुपाय-वि० १. जो कुछ उपाय न कर सके । २. जिसका कोई उपाय न हो ।

निरुधारा-संज्ञा पुं० १. छुटकारा । २. फैसला ।

नैवता-संज्ञा पुं० दे० "न्योता" ।

नैवरना-कि० प्र० समाप्त होना ।

नैवला-संज्ञा पुं० एक मांसाहारी पिंडज छोटा जंतु जो देखने में गिलहरी के आकार का पर उससे बड़ा और भूरा होता है । यह साँप को खा जाता है ।

नैवाज-वि० दे० "निवाज" ।

नैवारना-कि० सं० दे० "निवारण" ।

नैवारी-संज्ञा स्त्री० जूही की जाति का एक वैधा ।

नैसुका-वि० तनिक ।

कि० वि० थोड़ा सा ।

नैस्त-वि० जो न हो ।

नैस्ती-संज्ञा स्त्री० १. न होना । २. आलस्य ।

नैह-संज्ञा पुं० स्नेह ।

नैही-वि० प्रेमी ।

नै-संज्ञा स्त्री० दे० "नय" ।

संज्ञा स्त्री० नदी ।

नैक, नैकु-वि० दे० "नेक", "नेकु" ।

नैकट्य-संज्ञा पुं० निकटता ।

नैचा-संज्ञा पुं० हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं ।

नैतिक-वि० नीति-संबंधी ।

नैन-संज्ञा पुं० दे० "नयन" ।

नैनसुख-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा ।

नैनु-संज्ञा पुं० एक प्रकार का समरे हुए बेलबूटे का कपड़ा ।

संज्ञा पुं० मयखन ।

नैपाल-वि० १. नेपाल-संबंधी । २.

नेपाल में होनेवाला ।

संज्ञा पुं० दे० "नेपाल" ।

नैपाली-वि० १. नेपाल देश का ।

२. नेपाल में रहने या होनेवाला ।

संज्ञा पुं० नेपाल का रहनेवाला आदमी ।

नैपुण्य-संज्ञा पुं० होशियारी ।

नैमित्तिक-वि० जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो ।

नैया-संज्ञा स्त्री० नाव ।

नैयायिक-वि० न्यायशास्त्र का जानने-वाला ।

नैर-संज्ञा पुं० शहर ।

नैराश्य-संज्ञा पुं० निराशा का भाव ।

नैऋत-वि० निऋति-संबंधी ।

संज्ञा पुं० १. राक्षस । २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी ।

नैऋति-संज्ञा स्त्री० दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा ।

नैवेद्य-संज्ञा पुं० भोग ।

नैपथ-वि० निपथ-देश संबंधी । निपथ देश का ।

संज्ञा पुं० नल जो निपथ-देश के राजा थे ।

नैष्ठिक-वि० [स्त्री० नैथिक] निष्ठावान् ।

नैसर्गिक-वि० स्वाभाविक ।

नैसा-वि० बुरा ।

नैहर-संज्ञा पुं० स्रो के पिता का घर ।

नौक-संज्ञा स्त्री० [वि० नुका] १. उस घोर का सिगा जिस घोर कोई वस्तु घराघर पतली पड़ती गई । २. निकला हुआ कोना ।

नौक-भौक-संज्ञा स्त्री० १. ठाठ-घाट ।

२. तपांक । ३. चुभनेवाली घात ।

४. छेदवाड़ ।

निरुद्ध-वि० १. उत्पन्न । २. प्रसिद्ध ।

३. अविवाहित ।

निरूप-वि० रूप-रहित ।

निरूपक-वि० किसी विषय का निरूपण करनेवाला ।

निरूपण-संज्ञा पुं० १. प्रकाश । २. निदर्शन ।

निरूपित-वि० जिसका निरूपण या निर्णय हो चुका हो ।

निरोधना-क्रि० स० दे० "निरोधना" ।

निरोध, निरोधी-संज्ञा पुं० स्वल्प ।

निरोध-संज्ञा पुं० १. रोक । २. घेरा ।

निरोधक-वि० रोकनेवाला ।

निर्द्ध-संज्ञा पुं० भाव ।

निर्द्ध-वि० [संज्ञा निर्द्धता] गंधहीन ।

निर्गत-वि० [स्त्री० निर्गता] निकला हुआ ।

निर्गम-संज्ञा पुं० निकास ।

निर्गुण-संज्ञा पुं० परमेश्वर ।

वि० [संज्ञा निर्गुणता] १. जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो ।

२. दुरा ।

निर्गुणिया-वि० वह जो निर्गुण ब्रह्म की वपासना करता हो ।

निर्घट्ट-संज्ञा पुं० शब्द या ग्रंथ-सूची ।

निर्घृण-वि० १. जिसे गंदी वस्तुओं से या घुरे कामों से घृणा या छद्दा न हो । २. अति नीच ।

निर्घोष-संज्ञा पुं० [वि० निर्घोषित] शब्द ।

वि० शब्द-रहित ।

निर्जन-वि० एकान्त ।

निर्जल-वि० १. बिना जल का । २.

जिसमें जल पीने का विधान न हो ।

निर्जीव-वि० १. जीव-रहित । २. अशक्त ।

निर्मर-संज्ञा पुं० सोता ।

निर्णय-संज्ञा पुं० १. निश्चय । २. फैसला ।

निर्णीत-वि० निर्णय किया हुआ ।

निर्द्ध-वि० दे० "निर्द्ध" ।

निर्द्ध-वि० निर्द्धुर ।

निर्द्धता-संज्ञा स्त्री० निर्द्धुरता ।

निर्द्धी-वि० दे० "निर्द्ध" ।

निर्द्ध-वि० १. जिसका निर्द्ध हो चुका हो । २. ठहराया हुआ ।

निर्द्ध-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ को चतलाना । २. ठहराना या निश्चित करना । ३. आज्ञा । ४. धर्षण ।

निर्द्धोप-वि० धे-कधूर ।

निर्द्धोपी-वि० दे० "निर्द्धोप" ।

निर्द्ध, निर्द्ध-वि० १. जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो । २. स्वच्छंद ।

निर्द्धन-वि० धनहीन ।

निर्द्धनता-संज्ञा स्त्री० गरीबी ।

निर्धार, निर्धारण-संज्ञा पुं० १. ठहराना या निश्चित करना । २. निश्चय ।

निर्धारना-क्रि० स० निश्चित करना ।

निर्धारित-वि० निश्चित किया हुआ ।

निानमेष-क्रि० वि० एकटक ।

वि० जो पलक न गिरावे ।

पच्छिम-संज्ञा पुं० दे० "पश्चिम" ।

पच्छी-संज्ञा पुं० दे० "पक्षी" ।

पछुड़ना-कि० भ० १. छड़ने में पटक जाना । २. दे० "पिछड़ना" ।

पछुताना-कि० भ० पश्चात्ताप करना ।

पछुतानि-संज्ञा स्त्री० दे० "पछुतावा" ।

पछुतावना-कि० भ० दे० "पछुताना" ।

पछुतावा-संज्ञा पुं० पश्चात्ताप ।

पछुलना-संज्ञा पुं० दे० "पिछलना" ।

पछुर्चा-वि० पच्छिम का ।

पछुर्हा-संज्ञा पुं० पच्छिम की ओर का देश ।

पछुर्हिया-वि० पश्चिमी प्रदेश का ।

पछाड़-संज्ञा स्त्री० अपेत होकर गिरना ।

पछाड़ना-कि० स० गिराना ।

कि० स० धौने के लिये कपड़े को जोर जोर से पटकना ।

पछारना-कि० स० दे० "पछाड़ना" ।

पछाहीं-वि० पछाड़ का ।

पछिआना-कि० स० पीछे पीछे चलना ।

पछिताय-संज्ञा पुं० दे० "पछुतावा" ।

पछुर्चा-वि० पच्छिम की (हवा) ।

पछेली-संज्ञा स्त्री० हाथ में पहनने का खियों का एक प्रकार का कड़ा ।

पछोड़ना-कि० स० फटकना ।

पछुचापिरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सिखरन या शरपत ।

पजरना-कि० भ० जलना ।

पजारना-कि० स० जलाना ।

पजावा-संज्ञा पुं० थावा ।

पज-संज्ञा पुं० शूद्र ।

पटंबर-संज्ञा पुं० रेशमी कपड़ा ।

पट-संज्ञा पुं० बख ।

संज्ञा पुं० १. साधारण दरवाजों के किवाड़ । २. पालकी के दरवाजे के किवाड़ जो सरकाने से खुलते और बंद होते हैं ।

वि० ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो ।

पटकन-संज्ञा स्त्री० १. पटकने की क्रिया या भाव । २. छद्मी ।

पटकना-कि० स० १. मोँके के साथ नीचे की ओर गिराना । २. कुदती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना ।

कि० भ० १. सूजन घटना या पचकना । २. पट शब्द के साथ किसी चीज़ का दरक या फट जाना ।

पटका-संज्ञा पुं० कमरबंद ।

पटफान-संज्ञा स्त्री० दे० "पटकनी" ।

पटतर-संज्ञा पुं० १. समता । २. उपमा ।

† वि० चौरस ।

पटतरना-कि० भ० उपमा देना ।

पटना-कि० स० १. किसी गड्ढे या नीचे स्थान का भरकर आसे-पास की सतह के बराबर हो जाना ।

२. भकान, कूँएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनना । ३. सौँचा छाना । ४. मन मिटना । ५. तै हो जाना ।

संज्ञा पुं० दे० "पाटलिपुत्र" ।

पटपट-संज्ञा स्त्री० दखकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति ।

कि० वि० बराबर पट ध्वनि करता हुआ ।

पटपटाना-कि० भ० १. भूल-प्यास या सरदी-गरमी के मारे बहुत कट

निर्वेध-संज्ञा पुं० १. रुकावट । २. जिद ।

निर्वेध-वि० बख्शीन ।

निर्वेधता-संज्ञा स्त्री० कमजोरी ।

निर्वुद्धि-वि० मूर्ख ।

निर्वोध-वि० अज्ञान ।

निर्भय-वि० निडर ।

निर्भयता-संज्ञा स्त्री० निडरपन ।

निर्भर-वि० १. पूर्ण । २. युक्त ।

३. आश्रित ।

निर्भीक-वि० घेडर ।

निर्भ्रम-वि० भ्रम-रहित ।

कि० वि० निषङ्ग ।

निर्भ्रांत-वि० भ्रम-रहित ।

निर्मम-वि० जिसे ममता न हो ।

निर्मल-वि० १. मल-रहित । २.

शुद्ध । ३. निर्दोष ।

निर्मलता-संज्ञा स्त्री० १. सफाई । २.

निरुल्लंघता । ३. शुद्धता ।

निर्मला-संज्ञा पुं० नानकपंथी एक साधु-संप्रदाय ।

निर्मली-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का

सदायुक्त वृक्ष । २. रीठे का वृक्ष

या कल ।

निर्माण-संज्ञा पुं० १. रचना । २.

बनाने का काम ।

निर्माता-संज्ञा पुं० बनानेवाला ।

निर्मात्रिक-वि० बिना मात्रा का ।

निर्माल्य-संज्ञा पुं० वह पदार्थ जो

किसी देवता पर चढ़ चुका हो ।

निर्मित-वि० बनाया हुआ ।

निर्मूल-वि० जितमें जड़ न हो ।

निर्मूलन-संज्ञा पुं० विनाश ।

निर्मोह-वि० जिसके मन में मोह या

ममता न हो ।

निर्मोहिनी-वि० स्त्री० निर्दय ।

निर्मोही-वि० निर्दय ।

निर्यातन-संज्ञा पुं० प्रतीकार ।

निर्यास-संज्ञा पुं० १. वृक्षों या पौधों

में से चाप से चाप अथवा इनका

तना आदि धीरे से निकलनेवाला

रस । २. मोद । ३. पहना या

भरना ।

निर्लज्ज-वि० वेशर्मा ।

निर्लज्जता-संज्ञा स्त्री० वेशर्मा ।

निर्लिप्त-वि० १. जो किसी विषय में

आसक्त न हो । २. जो लिप्त न हो ।

निर्लोभ-वि० जिसे लोभ न हो ।

निर्देश-वि० [ संज्ञा निर्वराता ] जिसका

धंश नष्ट हो गया हो ।

निर्वहण-संज्ञा पुं० निषाह ।

निर्वहना-वि०-कि० भ० निभना ।

निर्वाचक-संज्ञा पुं० चुननेवाला ।

निर्वाचन-संज्ञा पुं० किसी काम के

लिए बहुतों में से एक या अधिक

को चुनना ।

निर्वाचित-वि० चुना हुआ ।

निर्वाण-वि० १. मुक्ता हुआ । २.

अस्त ।

संज्ञा पुं० १. मुक्ता । २. समाप्ति ।

३. मुक्ति ।

निर्घासन-संज्ञा पुं० १. मार डालना ।

२. देशनिकाबा । ३. निकालना ।

निर्घाह-संज्ञा पुं० १. निषाह । २.

पालन ।

निर्विकार-वि० जिसमें किसी प्रकार

का विकार या परिवर्तन न हो ।

निर्विघ्न-वि० विघ्न-वाधा-रहित ।

पख-संज्ञा स्त्री० १. ऊपर से व्यर्थ घड़ाई हुई घात । २. झगड़ा ।

पखराना-क्रि० स० धुलवाना ।

पखवाड़ा-संज्ञा पुं० दे० "पखवारा" ।

पखवारा-संज्ञा पुं० १. महीने के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक । २. पंद्रह दिन का काल ।

पखाना-संज्ञा पुं० मसल ।

पुं० दे० "पाखाना" ।

पखारना-क्रि० स० धोना ।

पखावज-संज्ञा स्त्री० एक बाजा जो मृदंग से कुछ छोटा होता है ।

पखावजी-संज्ञा पुं० पखावज बजाने वाला ।

पखुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी" ।

पखेरू-संज्ञा पुं० पखी ।

पखौटा-संज्ञा पुं० डैना ।

पग-संज्ञा पुं० १. पैर । २. डग ।

पगडंडी-संज्ञा स्त्री० जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते चलते बन गया हो ।

पगड़ी-संज्ञा स्त्री० साफा ।

पगतरी-संज्ञा स्त्री० जूता ।

पगनियाँ-संज्ञा स्त्री० जूती ।

पगरा-संज्ञा पुं० कदम ।

संज्ञा पुं० सबेरा ।

पगला-वि० पुं० दे० "पागल" ।

पगहा-संज्ञा पुं० [स्त्री० पगड़ी] गिराव ।

पगा-संज्ञा पुं० रुपैया ।

संज्ञा पुं० दे० "पघा" ।

पगाना-क्रि० स० १. पागने का काम कराना । २. मग्न करना ।

पगाह-संज्ञा स्त्री० प्रभात ।

पगिया-संज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी" ।

पगुराना-क्रि० भ० १. पागुर या जुगाली करना । २. हज़म करना ।

पचखा-संज्ञा पुं० दे० "पंचक" ।

पचगुना-वि० पाँच गुना ।

पचड़ा-संज्ञा पुं० संमट ।

पचन-संज्ञा पुं० १. पचाने की क्रिया या भाव । २. पकने की क्रिया या भाव । ३. अग्नि ।

पचना-क्रि० भ० १. हज़म होना ।

२. बहुत हीरान होना ।

पचमेल-वि० दे० "पंचमेल" ।

पचरंगा-वि० [स्त्री० पंचरंगी] १.

जिसमें भिन्न भिन्न पाँच रंग हों ।

२. कई रंगों से रंजित ।

संज्ञा पुं० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक ।

पचलड़ी-संज्ञा स्त्री० माला की तरह का एक आभूषण ।

पचहरा-वि० पाँच परसों या सड़ों-वाला ।

पचाना-क्रि० स० १. पचना का सकर्मक रूप । २. हज़म करना ।

पचास-वि० चारस और दस ।

पचीस-वि० पाँच और बीस ।

पचौर, पचौली-संज्ञा पुं० सरदार ।

पचौवर-वि० पचहरा ।

पचड़, पचर-संज्ञा पुं० काठ का पैवंद ।

पची-संज्ञा स्त्री० १. ऐसा जड़ाव जिसमें

जड़ी या जमाई जानेवाली वस्तु उस

वस्तु के विलकुल समतल हो जाय

जिसमें वह जड़ी या जमाई जाय ।

२. किसी धातु-निर्मित पदार्थ पर

किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव ।

पचीकारी-संज्ञा स्त्री० पची करने की

क्रिया या भाव ।

पच्छा-संज्ञा पुं० दे० "पच" ।

क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के विघ्न के ।

निर्विघाद-वि० बिना रुकावट का ।

निर्विशेष-संज्ञा पुं० परमात्मा ।

निर्विषी-संज्ञा स्त्री० एक घास जिसकी जड़ का व्यवहार अनेक प्रकार के विषों का नाश करने के लिये होता है ।

निर्वीज-वि० १. बीजरहित । २. जो कारण से रहित हो ।

निर्वीर्य-वि० धीर्यहीन । कमजोर ।

निर्व्यलीक-वि० निष्कपट ।

निर्व्याज-वि० निष्कपट ।

निर्वृत-वि० जिसमें कोई हेतु न हो ।

निलज्ज-वि० दे० "निलज्ज" ।

निलज्जता-संज्ञा स्त्री० निर्वाजता । बेहयाई ।

निलज्जी-वि० स्त्री० निर्वाजा ।

निलय-संज्ञा पुं० १. मकान । २. स्थान ।

निलहा-वि० मीठवाला ।

निवसन-संज्ञा पुं० १. गति । २. घर । ३. घर ।

निवसना-क्रि० भ० रहना ।

निवह-संज्ञा पुं० समूह ।

निवाई-वि० १. नवीन । २. यमोक्ता ।

निवाज-वि० कृपा करनेवाला ।

निवाजना-क्रि० सं० अनुग्रह करना ।

निवाड़ा-संज्ञा पुं० १. छोटी नाव ।

२. नाव की एक श्रेणी जिसमें उसे पीछ में ले जाकर चलाते देते हैं ।

निवार-संज्ञा स्त्री० बहुत मोटे सूत की धुनी हुई चौड़ी पट्टी जिससे पल्लव

आदि बुने जाते हैं ।

निवारक-वि० रोकनेवाला ।

निवारण-संज्ञा पुं० १. रोकने की क्रिया । २. छुटकारा ।

निवारना-क्रि० सं० १. रोकना । २. बचाना ।

निवाला-संज्ञा पुं० कौर ।

निवास-संज्ञा पुं० १. रहने की क्रिया या भाव । २. रहने का स्थान ।

३. घर ।

निवासस्थान-संज्ञा पुं० १. रहने का स्थान । २. घर ।

निवासी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० निवासिनी ] वासी ।

निविद्ध-वि० घना ।

निविष्ट-वि० एकाग्र ।

निवृत्ति-संज्ञा स्त्री० १. मुक्ति । २. मोक्ष ।

निवेद-संज्ञा पुं० दे० "नैवेद्य" ।

निवेदक-संज्ञा पुं० प्रार्थी ।

निवेदन-संज्ञा पुं० प्रार्थना ।

निवेदित-वि० १. अर्पित किया हुआ । २. निवेदन किया आ ।

निवेदना-क्रि० सं० दे० "निवेदना" ।

निवेरा-वि० १. चुना हुआ । २. नवीन ।

निवेश-संज्ञा पुं० १. विवाह । २. देस । ३. प्रवेश ।

निशंक-वि० निर्भय ।

निशांत-संज्ञा पुं० १. रात्रि का अंत । २. प्रभात ।

निशांघ-वि० जिसे रात को न सुके ।

निशा-संज्ञा स्त्री० १. रात्रि । २. हलदी ।



बलटी-सीधी घातें समझो बुझाकर  
अपने अनुकूल करना । २. ठगना ।  
पट्ट-वि० १. प्रवीण । २. चतुर ।  
पट्टा-संज्ञा पुं० दे० "पट्टा" ।  
पट्टा-संज्ञा पुं० १. दे० "पट्टा" ।  
२. चादर ।  
पट्टा-संज्ञा स्त्री० होशियारी ।  
पट्ट-संज्ञा पुं० पट्टा ।  
पट्टी-संज्ञा स्त्री० १. काठ की पट्टी  
जो सूजे के रस्मों पर रखी जाती  
है । २. चौकी ।  
पट्टा-संज्ञा पुं० १. पट्टा खेलने-  
वाला । २. अभिचारी और धूर्त ।  
पट्ट-संज्ञा पुं० १. गाँव का मुखिया ।  
२. एक प्रकार की उपाधि ।  
पट्ट-संज्ञा पुं० किवाड़ बंद करने का  
डंडा । ब्योड़ा ।  
पट्ट-संज्ञा पुं० १. पीड़ा । २. ताँवे आदि  
धातुओं की वह चिपटी पट्टी जिस  
पर राजकीय आज्ञा या दान आदि  
की सनद खोदी जाती थी । ३. पट्टा ।  
वि० मुख्य ।  
वि० अनु० दे० "पट्ट" ।  
पट्ट-संज्ञा स्त्री० पट्टानी ।  
पट्ट-संज्ञा पुं० नगर ।  
पट्ट-संज्ञा स्त्री० पट्टानी ।  
पट्टा-संज्ञा पुं० १. किसी स्थावर संपत्ति  
विशेषतः भूमि के उपयोग का अधि-  
कारपत्र जो स्वामी की ओर से  
असामी या ठेकेदार को दिया जाय ।  
२. सनद । ३. चमड़े या घनात  
आदि की पट्टी जो कुत्तों, विधियों  
के गले में पटनाई जाती है । ४.  
पीड़ा । ५. चपरास ।  
पट्टी-संज्ञा स्त्री० १. पाटी । २. पट्ट-  
कावा । ३. लकड़ी की वह पट्टी

जो साठ के ढाँचे की लुंघाई में  
लगाई जाती है । ४. कपड़े की कौर  
या किनारी । ५. हिस्सा ।  
पट्टीदार-संज्ञा पुं० हिस्सेदार ।  
पट्टीदारी-संज्ञा स्त्री० १. पट्टीदार होने  
का भाव । २. भाई-बारा ।  
पट्ट-संज्ञा पुं० एक सूख गरम ऊनी  
वस्त्र जो पट्टी के रूप में होता है ।  
पट्टमान-वि० पढ़ने योग्य ।  
पट्टा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पट्टिया ] १.  
जवान । २. कुरतीबाज ।  
पठन-संज्ञा पुं० पढ़ना ।  
पठनीय-वि० पढ़ने योग्य ।  
पठनेटा-संज्ञा पुं० पठान का लड़का ।  
पठवना-वि० स० भेजना ।  
पठवाना-वि० स० भेजवाना ।  
पठान-संज्ञा पुं० एक सुसलमान जाति  
जो अफगानिस्तान के अधिकांश  
और भारत के सीमांत प्रदेश आदि  
में बसती है ।  
पठाना-वि० स० भेजना ।  
पठानी-संज्ञा स्त्री० १. पठान जाति  
की स्त्री । २. पठान होने का भाव ।  
३. पठानपन ।  
वि० पठानों का ।  
पठानी लाय-संज्ञा स्त्री० एक जंगली  
वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल  
औषध के काम में आते हैं ।  
पठावन-संज्ञा पुं० दूत ।  
पठावनि, पठावनी-संज्ञा स्त्री० १.  
किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश  
पहुँचाने के लिये भेजना । २. इस  
प्रकार भेजने की मज़दूरी ।  
पठित-वि० १. जिसे पढ़ चुके हों ।  
२. पढ़ा-लिखा ।

निस्तब्ध-वि० १. जो हिलता-डोलता न हो । २. जड़वत् ।

निस्तब्धता-संज्ञा स्त्री० १. धामोशी । २. सन्न्यास ।

निस्तरण-संज्ञा पुं० दे० "निस्तार" ।

निस्तरना-क्रि० अ० निस्तार पाना ।

निस्तार-संज्ञा पुं० १. पार होने का भाव । २. छुटकारा ।

निस्तारण-संज्ञा पुं० १. निस्तार करना । २. पार करना ।

निस्तारना-क्रि० स० छुड़ाना ।

निस्तीर्ण-वि० १. जो तै या पार कर चुका हो । २. मुक्त ।

निस्तेज-वि० तेजरहित ।

निस्पृह-वि० [संज्ञा निस्पृहता] कामना आदि से रहित ।

निस्फ-वि० आधा ।

निस्संदेह-क्रि० वि० अवश्य ।

वि० जिसमें संदेह न हो ।

निस्सरण-संज्ञा पुं० निकलने का मार्ग ।

निस्सार-वि० सार-रहित ।

निस्सीम-वि० असीम ।

निस्स्वार्थ-वि० जिसमें स्वयं अपने लाभ या हित का कोई विचार न हो ।

निहंग-वि० १. अकेला । २. बेशरम ।

निहंग-लाडला-वि० जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत ही बड़बड़ा और लापरवाह हो गया हो ।

निहंता-वि० [स्त्री० निहंत्री] १. नाश करनेवाला । २. प्राण लेनेवाला ।

निहत-वि० १. फँका हुआ । २. नष्ट । ३. जो मार डाला गया हो ।

निहत्था-वि० १. शस्त्रहीन । २. गरीब ।

निहनना-क्रि० स० मारना ।

निहाई-संज्ञा स्त्री० सोनारों और लोहारों का लोहे का एक चौकोर औजार जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं ।

निहायत-वि० अत्यंत ।

निहार-संज्ञा पुं० १. कुहरा । २. थोस । ३. बरफ ।

निहारना-क्रि० स० ध्यानपूर्वक देखना ।

निहाल-वि० पूर्णकाम ।

निहित-वि० स्थापित ।

निहुरना-क्रि० अ० मुकना ।

निहोरना-क्रि० स० प्रार्थना करना ।

निहोरा-संज्ञा पुं० १. उपकार । २. प्रार्थना । ३. भरोसा ।

क्रि० वि० १. बढ़ाईल । २. वास्ते ।

नींद-संज्ञा स्त्री० सोने की अवस्था ।

नींदड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "नींद" ।

नीक, नीका-वि० [स्त्री० नीकी] अच्छा ।

संज्ञा पुं० अच्छाई ।

नीके-क्रि० वि० अच्छी तरह ।

नीच-वि० १. छुद्र । २. अधम ।

नीचगामी-वि० [स्त्री० नीचगामिनी] १. नीचे जानेवाला । २. ओछा ।

नीचता-संज्ञा स्त्री० १. नीच होने का भाव । २. छुद्रता ।

नीचा-वि० [स्त्री० नीची] १. गहरा । २. अधिक लटका हुआ । ३. मुका हुआ । ४. धीमा । ५. छुद्र ।

नीचाशय-वि० छुद्र ।

नीचा-क्रि० वि० दे० "नीचे" ।

नीचे-क्रि० वि० १. नीचे की ओर । २. कम । ३. अधीनता में ।

पाना । २. किसी चीज़ से पटपट ध्वनि निकलना ।

क्रि० सं० १. 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना । २. शोक करना ।

पटपर-वि० चौंस ।

संज्ञा पुं० १. नदी के घास-घास की वह भूमि जो परसात के दिनों में प्रायः सदा डूबी रहती है । २. अरपेत राजाद स्थान ।

पटमंडप-संज्ञा पुं० तंबू ।

पटरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मल्ला० पटरी ] तख्ता ।

पटरानी-संज्ञा स्त्री० यह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो ।

पटरी-संज्ञा स्त्री० १. काठ का पतला और लंबातरा तख्ता । २. लिखने की सड़ती । ३. सड़क के दोनों किनारों का वह भाग जो पैदल चलनेवालों के लिये होता है ।

पटल-संज्ञा पुं० १. छान । २. पर्दा । ३. परत । ४. पटरा । ५. टीका । ६. समूह ।

पटघा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पटघन ] १. रेशम या सूत में गहने गूथनेवाला । २. पाट ।

पटवाना-क्रि० सं० पटन या पाटने का काम दूसरे से कराना ।

पटवारगरी-संज्ञा स्त्री० पटवारी का काम या पद ।

पटवारी-संज्ञा पुं० गाँव की ज़मीन और उसके खगान का हिसाब-किताब रखनेवाला एक छोटा सरकारी कर्मचारी ।

संज्ञा स्त्री० कपड़े पहनानेवाली दासी ।

पटवास-संज्ञा पुं० शिविर ।

पटहा-संज्ञा पुं० हुंहुभी ।

पटा-संज्ञा पुं० लोहे की वह फटी जिससे सलवार की काट और घचाव सीखे जाते हैं ।

० संज्ञा पुं० १. पीड़ा । २. सनद ।

३. लेन-देन । ४. चौड़ी लकीर ।

पटाई-संज्ञा स्त्री० पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

पटाक-भनु० किसी छोटी चीज़ के गिरने का शब्द ।

पटाका-संज्ञा पुं० १. पट या पटाक शब्द । २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली एक प्रकार की आतश-बाज़ी । ३. यत्पद ।

पटाना-क्रि० सं० १. पाटने का काम कराना । २. छत को पीटकर घरा-घर कराना । ३. कण्य चुका देना । † क्रि० भ० शांत होकर बैठना ।

पटापट-क्रि० वि० लगातार बार बार 'पट' ध्वनि के साथ ।

संज्ञा स्त्री० निरंतर पटपट शब्द की आवृत्ति ।

पटाच-संज्ञा पुं० १. पाटने की क्रिया या भाव । २. पाटकर चौरस किया हुआ स्थान । ३. छत की पाटन ।

पटिया-संज्ञा स्त्री० १. परपर का प्रायः चौकोर और चौरस कटा हुआ टुकड़ा । २. खाट या पलंग की पट्टी । ३. माँग । ४. लिखने की पट्टी ।

पटी-संज्ञा स्त्री० कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा ।

पटीलना-क्रि० भ० १. किसी को

नीजन-संज्ञा पुं० निर्जन स्थान ।

नीकर-संज्ञा पुं० सोता ।

नीटि-संज्ञा स्त्री० शरदि ।

क्रि० वि० १. ज्यों त्यों करके । २. कठिनाता से ।

नीठो-वि० अनिष्ट ।

नीडू-संज्ञा पुं० चिड़ियों का घोंसला ।

नीति-संज्ञा स्त्री० १. आचार-पद्धति ।

२. सदाचार । ३. राजविद्या । ४. वपाय ।

नीतिज्ञ-वि० नीति का जाननेवाला ।

नीतिमान्-वि० [ स्त्री० नोविमनो ] सदाचारी ।

नीतिशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार चलने के नियम हों ।

नीदना-क्रि० स० निंदा करना ।

नीधना-वि० दरिद्र ।

नीधी-संज्ञा स्त्री० दे० "नीधी" ।

नीवू-संज्ञा पुं० मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसका फल गोल, छोटा और खट्टा होता है और खाया जाता है ।

नीम-संज्ञा पुं० पत्ती काढ़नेवाला एक पेड़ जिसका प्रत्येक भाग कड़ुवा होता है ।

वि० आधा ।

नीमना-वि० १. नीरोग । २. दुःख । ३. चढ़िया ।

नीमरजा-वि० १. थोड़ीब-हुत रक्षा-मंदी । २. कुछ तोप या प्रसन्नता ।

नीमा-संज्ञा पुं० एक पहनावा जो लामे के नीचे पहना जाता है ।

नीमाघत-संज्ञा पुं० निंदाकार्थी का अनुयायी वैष्णव ।

नीयत-संज्ञा स्त्री० वहेर ।

नीर-संज्ञा पुं० पानी ।

नीरज-संज्ञा पुं० १. जल में उत्पन्न वस्तु । २. कमल । ३. मोती ।

नीरद-संज्ञा पुं० बादल ।

वि० बे-दाँत का ।

नीरधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

नीरस-वि० १. सूखा । २. फीका ।

नीराजन-संज्ञा पुं० आरती ।

नीरोग-वि० बंगा ।

नील-वि० नीले रंग का ।

संज्ञा पुं० १. नीला रंग । २. कलंक ।

३. राम की सेना का एक बंदर ।

नीलकंठ-वि० जिसका कंठ नीला हो ।

संज्ञा पुं० १. मोर । २. एक प्रकार की चिड़िया जिसका कंठ और छेने नीले होते हैं । ३. महादेव ।

नीलकान्त-संज्ञा पुं० १. एक पहाड़ी चिड़िया । २. विष्णु । ३. नीलम मणि ।

नीलगाय-संज्ञा स्त्री० नीलावन लिए भूरे रंग का एक बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है ।

नीलचक्र-संज्ञा पुं० जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर माना जानेवाला चक्र ।

नीलम-संज्ञा पुं० नीलमणि ।

नीलमणि-संज्ञा पुं० नीलम ।

नीललोहित-वि० बैंगनी ।

संज्ञा पुं० शिव का एक नाम ।

वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला ।

नीलांबुज-संज्ञा पुं० नील कमल ।

नीला-वि० आकाश के रंग का ।

नीलाम-संज्ञा पुं०. बोली बोझकर बेचना ।

नीलिमा-संज्ञा स्त्री० १. नीलावन ।

२. श्यामता ।

जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ ऋतु जाती हैं । २. श्रवणति फाल ।  
 पतभार-संज्ञा स्त्री० दे० "पतभार" ।  
 पतन-संज्ञा पुं० १. गिरना । २. श्रव-  
 नति । ३. नाश ।  
 पतनशील-वि० गिरनेवाला ।  
 पतनीय-वि० गिरनेवाला ।  
 पतनोन्मुख-वि० जो गिरने की  
 ओर प्रवृत्त हो ।  
 पत-पानी-संज्ञा पुं० १. प्रतिष्ठा । २.  
 लाज ।  
 पतरा-वि० १. पतला । २. पत्ता ।  
 ३. पतल ।  
 पतरा-वि० दे० "पतला" ।  
 पतरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पतल" ।  
 पतला-वि० [ स्त्री० पतली ] १. जो  
 मोटा न हो । २. कृश । ३. अधिक  
 धरल ।  
 पतलावन-संज्ञा पुं० पतला होने का  
 भाव ।  
 पतलून-संज्ञा पुं० अँगरेजी पाजामा ।  
 पतवार, पतवारी-संज्ञा स्त्री० नाव  
 का वह त्रिकोणाकार मुख्य अंग जो  
 पीछे की ओर आधा जल में और  
 आधा बाहर होता है । इसी के  
 द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है ।  
 पता-संज्ञा पुं० १. किसी का स्थान  
 सूचित करनेवाली बात जिससे  
 उसको पा सके । २. खोज । ३. खबर ।  
 पतार्ह-संज्ञा स्त्री० ऋद्धि हुई पत्तियों  
 का ढेर ।  
 पताका-संज्ञा स्त्री० १. झंडा । २.  
 ध्वज ।  
 पताकिनी-संज्ञा स्त्री० सेना ।  
 पतार-संज्ञा पुं० १. दे० "पाताल" ।  
 २. जंगल ।

पाताल-संज्ञा पुं० दे० "पाताल" ।  
 पतिग-संज्ञा पुं० पतिग ।  
 पतिधरा-वि० स्त्री० जो अपना पति  
 स्वयं चुने ।  
 पति-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पत्नी ] १.  
 मालिक । २. दूरहा । ३. मर्यादा ।  
 पतिश्राना-वि० स्त्री० स० विश्वास या  
 पतधार करना ।  
 पतिश्रार-संज्ञा पुं० १. विश्वास ।  
 २. विश्वसनीय ।  
 पतित-वि० १. गिरा हुआ । २.  
 महापापी । ३. अधम ।  
 पतित-उधारन-वि० जो पतित  
 का बदल करे ।  
 संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार ।  
 पतितता-संज्ञा स्त्री० १. पतित होने  
 का भाव । २. नीचता ।  
 पतितपावन-वि० [ स्त्री० पतितपावनी ]  
 पतित को पवित्र करनेवाला ।  
 संज्ञा पुं० ईश्वर ।  
 पतिरत्व-संज्ञा पुं० १. स्वामित्व । २.  
 पति होने का भाव ।  
 पतिवेधा-संज्ञा स्त्री० पतिप्रता ।  
 पतिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी" ।  
 पतियाना-वि० स्त्री० स० विश्वास करना ।  
 पतियारा-संज्ञा पुं० विश्वास ।  
 पतिलोक-संज्ञा पुं० पतिप्रता स्त्री को  
 मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका  
 पति रहता है ।  
 पतिवती-वि० स्त्री० सधवा ।  
 पतिव्रत-संज्ञा पुं० पातिव्रत्य ।  
 पतिव्रता-वि० सती ।  
 पतीजन, पतीजना-वि० स्त्री० स० पत-  
 धार करना ।  
 पतीला-वि० दे० "पतला" ।  
 पतीली-संज्ञा स्त्री० तबिये या पीतल

नीलोत्पल-संज्ञा पुं० नील कमल ।

नीलोत्पल-संज्ञा पुं० १. नील कमल  
२. कुई ।

नीच-संज्ञा स्त्री० १. घर बनाने में गहरी  
नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा  
जिसके भीतर से दीवार की जोड़ोई  
आरंभ होती है । २. जड़ ।

नीच-संज्ञा स्त्री० दे० "नीच" ।

नीचि-संज्ञा स्त्री० १. कमर में छपेटी  
हुई धोती की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ  
पेट के नीचे सूत की डोरी से  
या मोड़ी धाँधती हैं । २. सूत की  
डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या जूँगे  
की गाँठ धाँधती हैं । ३. साड़ी ।

नीहा-संज्ञा स्त्री० दे० "नीच" ।

नीहार-संज्ञा पुं० १. कुहरा । २.  
पाछा ।

नीहारिका-संज्ञा स्त्री० आकाश में  
धुँप या कुहरे की तरह फैला हुआ  
चीण प्रकाश-पुञ्ज जो अँधेरी रात में  
सफेद धब्बे की तरह कहीं कहीं  
दिखाई पड़ता है ।

नुकता-संज्ञा पुं० बिंदु ।

संज्ञा पुं० १. छुटकुला । २. ऐष ।

नुकताचीनी-संज्ञा स्त्री० दोष निका-  
लने का काम ।

नुकसान-संज्ञा पुं० १. कमी । २.  
हानि ।

नुकीला-वि० [ स्त्री० नुकीली ] नोक-  
दार ।

नुकड़-संज्ञा पुं० १. नोक । २. सिरा ।

नुकस-संज्ञा पुं० १. दोष । २. छुट ।

नुचना-क्रि० अ० नोचा जाना ।

नुचवाना-क्रि० स० नोचने का काम  
दूसरे से कराना ।

नुनखरा, नुनखारा-वि० नमकीन ।

नुनेरा-संज्ञा पुं० १. नोनरी मिट्टी आदि  
से नमक निकालनेवाला । २.  
जोनिया ।

नुमाइश-संज्ञा स्त्री० १. प्रदर्शन । २.  
प्रदर्शनी ।

नुमाइशी-वि० दिखाऊ ।

नुसखा-संज्ञा पुं० १. लिखा हुआ  
कागज़ । २. कागज़ का वह चिट  
जिस पर हकीम या वैद्य रोगी के  
लिये औषध और सेवन-विधि  
लिखते हैं ।

नूत-वि० १. नया । २. अनोखा ।

नूतन-वि० १. नया । २. अनोखा ।

नून-संज्ञा पुं० नमक ।

वि० दे० "न्यून" ।

नृपु-संज्ञा पुं० नृप ।

नूर-संज्ञा पुं० १. ज्योति । २. कति ।

नूरा-वि० तेजस्वी ।

नृ-संज्ञा पुं० नर ।

नृकेशरी-संज्ञा पुं० १. नृसिंह अव-  
तार । २. श्रेष्ठ पुरुष ।

नृत्तना-क्रि० अ० नाचना ।

नृत्य-संज्ञा पुं० नाच ।

नृत्यशाला-संज्ञा स्त्री० नाचघर ।

नृदेव, नृदेवता-संज्ञा पुं० १. राजा ।  
२. ब्राह्मण ।

नृप-संज्ञा पुं० नरपति ।

नृपति, नृपाल-संज्ञा पुं० राजा ।

नृमेघ-संज्ञा पुं० नरमेघ यज्ञ ।

नृत्यज्ञ-संज्ञा पुं० अतिथि-पूजा ।

नृशंस-वि० १. क्रूर । २. जालिम ।

नृसिंह-संज्ञा पुं० १. सिंहरूपी भग-  
वान् जो विष्णु के चौथे अवतार थे ।

इन्होंने हिरण्यकशिपु को मारकर

पठिया-संज्ञा स्त्री० जवान और लम्बी स्त्री ।

पठानी-संज्ञा स्त्री० दे० "पठानी" ।

पठ्यमान-वि० पढ़ा जाने के योग्य ।

पड़छती, पड़छती-संज्ञा स्त्री० १. भीत की रक्षा के लिये लगाया जाने वाला छप्पर या टट्टी । २. फमरे आदि के पीछ की पाटन जिस पर चीज़-असबाब रखते हैं ।

पड़त-संज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता" ।

पड़ता-संज्ञा पुं० १. ज्ञात । २. दर ।

पड़ताल-संज्ञा स्त्री० अनुसंधान ।

पड़तालना-क्रि० स० जाँचना ।

पड़ती-संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिस पर कुछ काल से खेती न की गई हो ।

पड़ना-क्रि० अ० १. गिरना । २. बिछाया जाना । ३. दाखिल होना ।

४. टिकना । ५. आराम करना । ६.

थीमार होना । ७. मार्ग में मिलना ।

८. वरपन्न होना ।

पड़पड़ाना-क्रि० अ० १. पड़पड़ शब्द होना । २. चरपराना ।

पड़पोता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पड़पोती ] पुत्र का पोता ।

पड़ाव-संज्ञा पुं० १. यात्री-समूह का यात्रा के बीच में अवस्थान । २. वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हैं ।

पाढ़या-संज्ञा स्त्री० भैंस का मादा बच्चा ।

पड़ोस-संज्ञा पुं० १. किसी के घर के आस-पास के घर । २. किसी स्थान के आस-पास के स्थान ।

पड़ोसी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पड़ोसिन ] वह मनुष्य जिसका घर पड़ोस में हो ।

पढ़ना-क्रि० स० १. किसी पुस्तक,

लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी बात मालूम हो जाय । २. बचिना ।

पढ़वाना-क्रि० स० १. किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना । २. किसी के द्वारा किसी को शिक्षा दिलाना ।

पढ़ाई-संज्ञा स्त्री० १. पढ़ने का काम । विद्याभ्यास । २. पढ़ने का भाव । संज्ञा स्त्री० १. पढ़ाने का काम । २. अध्यापन शैली ।

पढ़ाना-क्रि० स० शिक्षा देना ।

पण-संज्ञा पुं० १. जूथा । २. प्रतिज्ञा

पणव-संज्ञा पुं० छोटा नगाड़ा या ढोल ।

पणव-वि० १. खुरीदने या बचने योग्य । २. प्रशंसा करने योग्य ।

पण्यशाला-संज्ञा स्त्री० दूकान ।

पतंग-संज्ञा पुं० १. पक्षी । २. गुड़िया ।

पतंगबाज़-संज्ञा पुं० वह जिसको पतंग उड़ाने का व्यसन हो ।

पतंगसुत-संज्ञा पुं० यश्विनीकुमार ।

पतंगा-संज्ञा पुं० १. पतंग । कोई उड़ने वाला कीड़ा-मकोड़ा । २. फतिंगा ।

पतंचिका-संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी ।

पतंजलि-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने योग-शास्त्र की रचना की । २. एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों और कात्यायन-कृत उनके वार्त्तिक पर 'महाभाष्य' की रचना की थी ।

पत-संज्ञा पुं० १. पति । २. मालिक ।

संज्ञा स्त्री० १. आपत् । २. प्रतिष्ठा ।

पतम्भ-संज्ञा स्त्री० १. वह ऋतु

प्रहाद की रचा की थी । २. ध्रुव पुरुष ।

नृहरि-संज्ञा पुं० नृसिंह ।

ने-प्रत्य० सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता की विशेषता ।

नेक-वि० भला ।

नेवि० थोड़ा ।

कि० वि० थोड़ा ।

नेकचलन-वि० [ संज्ञा नेकचलनी ] सदाचारी ।

नेकनाम-वि० [ संज्ञा नेकनामी ] यशस्वी ।

नेकनीयत-वि० [ संज्ञा नेकनीयती ] अच्छे संकल्प का ।

नेकी-संज्ञा स्त्री० १. भलाई । २. सज्जनता । ३. उपकार ।

नेकु-वि०, कि० वि० दे० "नेक" ।

नेग-संज्ञा पुं० १. विवाह आदि शुभ अवसरों पर संरक्षियों, आश्रितों तथा कृष्य में योग देनेवाले लोगों को कुछ दिए जाने का नियम । २. वह वस्तु या धन जो इस प्रकार दिया जाता है ।

नेगचार-संज्ञा पुं० दे० "नेगजोग" ।

नेगजोग-संज्ञा पुं० विवाह आदि मंगल अवसरों पर संरक्षियों तथा काम करनेवालों को उनके प्रसन्न-साथ कुछ दिए जाने का दस्तूर ।

नेगी-संज्ञा पुं० नेग पानेवाला ।

नेगीजोगी-संज्ञा पुं० नेग पानेवाले ।

नेजा-संज्ञा पुं० १. भाला । २. निशान ।

नेड़ी-कि० वि० निकट ।

नेत-संज्ञा पुं० १. ठहराव । २. निश्चय ।

संज्ञा पुं० मयानी की रस्ती ।

संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत" ।

नेता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० नेत्री ] १. नायक । २. स्वामी । ३. काम को चला देनेवाला ।

संज्ञा पुं० मयानी की रस्ती ।

नेति-एक संस्कृत वाक्य ( न इति ) जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् "अंत नहीं है" ।

नेती-संज्ञा स्त्री० वह रस्ती जो मयानी में लपेटी जाती है और जिसके खींचने से मयानी फिरती है ।

नेत्र-संज्ञा पुं० १. आँख । २. मयानी की रस्ती ।

नेत्रजल-संज्ञा पुं० आँसू ।

नेत्रमंडल-संज्ञा पुं० आँख का घेरा ।

नेत्रस्नाय-संज्ञा पुं० आँखों से पानी बहना ।

नेपचून-संज्ञा पुं० सूख्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह ।

नेपथ्य-संज्ञा पुं० १. सजावट । २. नृत्य, अभिनय आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट बेशर सजते हैं ।

नेपाल-संज्ञा पुं० हिंदुस्तान के उत्तर में एक प्रसिद्ध पहाड़ी देश ।

नेपाली-वि० १. नेपाल में रहने या होनेवाला । २. नेपाल-संबंधी ।

नेव-संज्ञा पुं० १. सहायक । २. मंत्री ।

नेम-संज्ञा पुं० नियम ।

नेमी-वि० १. नियम का पालन करनेवाला । २. धर्म की दृष्टि से पूजा-पाठ, दत्त आदि करनेवाला ।

नेरी-कि० वि० निकट ।

नेघ-संज्ञा पुं० दे० "नेत" ।

नेघज-संज्ञा पुं० भोग ।

नेघतना-कि० सं० निमंत्रित करना ।



जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं । २. अवनति काल ।

पतम्भार-संज्ञा स्त्री० दे० "पतम्भ" ।

पतन-संज्ञा पुं० १. गिरना । २. अवनति । ३. नाश ।

पतनशील-वि० गिरनेवाला ।

पतनीय-वि० गिरनेवाला ।

पतनोन्मुख-वि० जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो ।

पत-पानी-संज्ञा पुं० १. प्रतिष्ठा । २. क्षाज ।

पतरा-वि० १. पतला । २. पत्ता । ३. पतल ।

पतरा-वि० दे० "पतला" ।

पतरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पतल" ।

पतला-वि० [ स्त्री० पतली ] १. जो मोटा न हो । २. कृश । ३. अधिक सरल ।

पतलापन-संज्ञा पुं० पतला होने का भाव ।

पतलून-संज्ञा पुं० अँगरेज़ी पाजामा ।

पतधार, पतचारी-संज्ञा स्त्री० नाव का वह त्रिकोणाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में और आधा बाहर होता है । इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है ।

पता-संज्ञा पुं० १. किसी का स्थान सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सके । २. लोग । ३. गुप्तर ।

पताई-संज्ञा स्त्री० झड़ी हुई पत्तियों का ढेर ।

पताका-संज्ञा स्त्री० १. झंडा । २. ध्वज ।

पताकिनी-संज्ञा स्त्री० सेना ।

पतार-संज्ञा पुं० १. दे० "पाताल" । २. जंगल ।

पाताल-संज्ञा पुं० दे० "पाताल" ।

पतिग-संज्ञा पुं० पतिग ।

पतिवरा-वि० स्त्री० जो अपना पति स्वयं चुने ।

पति-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पती ] १. मालिक । २. दूतदा । ३. मर्यादा ।

पतिश्राना-वि० स्त्री० स० विश्वास या पतवार करना ।

पतिश्रार-संज्ञा पुं० १. विश्वास । २. विश्वसनीय ।

पतित-वि० १. गिरा हुआ । २. महापापी । ३. अधम ।

पतित-उधारन-वि० जो पतित का उद्धार करे ।

संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार ।

पतितता-संज्ञा स्त्री० १. पतित होने का भाव । २. मीचता ।

पतितपावन-वि० [ स्त्री० पतितपावनी ] पतित को पवित्र करनेवाला ।

संज्ञा पुं० ईश्वर ।

पतित्व-संज्ञा पुं० १. स्वामित्व । २. पति होने का भाव ।

पतिदेवा-संज्ञा स्त्री० पतिव्रता ।

पतिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "पती" ।

पतियाना-वि० स्त्री० स० विश्वास करना ।

पतियारा-संज्ञा पुं० विश्वास ।

पतिलोक-संज्ञा पुं० पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है ।

पतिव्रती-वि० स्त्री० सधवा ।

पतिव्रत-संज्ञा पुं० पातिव्रत्य ।

पतिव्रता-वि० सती ।

पतीजन, पतीजना-वि० स० पतवार करना ।

पतीला-वि० दे० "पतला" ।

पतीली-संज्ञा स्त्री० तबिये या पीतल

नेवता-संज्ञा पुं० दे० "न्योता" ।  
 नेवरना-क्रि० भ० समाप्त होना ।  
 नेवला-संज्ञा पुं० एक मांसाहारी  
 पिंडज छोटा जंतु जो देखने में  
 गिलहरी के आकार का पर उससे  
 थड़ा और भूरा होता है । यह सर्प  
 को खा जाता है ।  
 नेवाज-वि० दे० "निवाज" ।  
 नेवारना-क्रि० सं० दे० "निवा-  
 रना" ।  
 नेवारी-संज्ञा स्त्री० जूही की जाति का  
 एक पौधा ।  
 नेसुफा-वि० तनिक ।  
 क्रि० वि० थोड़ा सा ।  
 नेस्त-वि० जो न हो ।  
 नेस्ती-संज्ञा स्त्री० १. न होना । २.  
 आलस्य ।  
 नेह-संज्ञा पुं० स्नेह ।  
 नेही-वि० प्रेमी ।  
 नै-संज्ञा स्त्री० दे० "नय" ।  
 संज्ञा स्त्री० नदी ।  
 नैक, नैकु-वि० दे० "नेक", "नेकु" ।  
 नैकट्य-संज्ञा पुं० निकटता ।  
 नैचा-संज्ञा पुं० हुक के की दोहरी नली  
 जिसके एक सिरे पर चिलम रखी  
 जाती है और दूसरे का छोर मुँह में  
 रखकर धूम्राँ खींचते हैं ।  
 नैतिक-वि० नीति-संबंधी ।  
 नैन-संज्ञा पुं० दे० "नयन" ।  
 नैनसुख-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
 चिकना सूती कपड़ा ।  
 नैनू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का उभरे  
 हुए पेलबूटे का कपड़ा ।  
 संज्ञा पुं० मखन ।  
 नेपाल-वि० १. नेपाल-संबंधी । २.  
 नेपाल में होनेवाला ।

संज्ञा पुं० दे० "नेपाल" ।  
 नेपाली-वि० १. नेपाल देश का ।  
 २. नेपाल में रहने या होनेवाला ।  
 संज्ञा पुं० नेपाल का रहनेवाला  
 आदमी ।  
 नेपुण्य-संज्ञा पुं० होशियारी ।  
 नैमित्तिक-वि० जो निमित्त उपस्थित  
 होने पर या किसी विशेष प्रयोजन  
 की सिद्धि के लिये हो ।  
 नैया-संज्ञा स्त्री० नाव ।  
 नैयायिक-वि० न्यायशास्त्र का जानने-  
 वाला ।  
 नैर-संज्ञा पुं० शहर ।  
 नैराश्य-संज्ञा पुं० निराशा का भाव ।  
 नैर्ऋत-वि० निर्ऋति-संबंधी ।  
 संज्ञा पुं० १. राक्षस । २. पश्चिम-  
 दक्षिण कोण का स्वामी ।  
 नैर्ऋति-संज्ञा स्त्री० दक्षिण और पश्चिम  
 के मध्य की दिशा ।  
 नैवेद्य-संज्ञा पुं० भोग ।  
 नैपथ्य-वि० निपथ्य-देश संबंधी । निपथ्य  
 देश का ।  
 संज्ञा पुं० नल जो निपथ्य-देश के  
 राजा थे ।  
 नैष्ठिक-वि० [स्त्री० नैष्ठिकी] निष्ठावान् ।  
 नैसर्गिक-वि० स्वाभाविक ।  
 नैसा-वि० बुरा ।  
 नैहर-संज्ञा पुं० खो के पिता का घर ।  
 नोक-संज्ञा स्त्री० [वि० नुकोला] १. बस  
 और का सिगा जिस और कोई वस्तु  
 घराघर पतली पड़ती गई हो । २.  
 निकला हुआ कोना ।  
 नोक-भोंक-संज्ञा स्त्री० १. ठाठ-पाट  
 २. तपाक । ३. चुमनेवाली दात  
 ४. छेड़वाड़ ।

की एक प्रकार की घटलोई ।  
 पतुरिया-संज्ञा स्त्री० वेश्या ।  
 पतोह, पतोह्वा-संज्ञा स्त्री० घटे की  
 छी ।  
 पतौआ-संज्ञा पुं० पत्ता ।  
 पत्तन-संज्ञा पुं० नगर ।  
 पत्तर-संज्ञा पुं० धातु की चादर ।  
 पत्तल-संज्ञा स्त्री० १. पत्तों को जोड़-  
 कर बनाया हुआ एक पात्र जिससे  
 धात्री का काम लिया जाता है ।  
 २. पत्तल में परती हुई भोजन-  
 सामग्री ।  
 पत्ता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पत्ती ] १. पत्त ।  
 २. कान में पहनने का एक गहना ।  
 पत्ती-संज्ञा स्त्री० १. छोटा पत्ता । २.  
 भाग ।  
 पत्तीदार-संज्ञा पुं० सामोदार ।  
 पथ्य-संज्ञा पुं० दे० "पथ्य" ।  
 पथ्यर-संज्ञा पुं० [ वि० पथरीला, कि०  
 पथरीला ] १. पृथ्वी के कड़े स्तर का  
 पिंड या खंड । २. खोला । ३.  
 रस । ४. बिलकुल नहीं ।  
 पथ्यरचटा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार  
 की घास । २. कंजूस ।  
 पथ्यरफोड़-संज्ञा पुं० पथरों की संधि  
 में होनेवाली एक वनस्पति ।  
 पत्नी-संज्ञा स्त्री० विधिपूर्वक विवाहिता  
 स्त्री । सहधर्मिणी ।  
 पत्नीव्रत-संज्ञा पुं० अपनी विवाहिता  
 स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से  
 गमन न करने का संकल्प या नियम ।  
 पत्य-संज्ञा पुं० पति होने का भाव ।  
 पत्याना-संज्ञा पुं० [ वि० स० दे० "पति-  
 आना" ]  
 पत्यारी-संज्ञा स्त्री० पत्ति ।  
 पत्र-संज्ञा पुं० १. पत्ती । २. चिट्ठी ।

३. समाचारपत्र ।  
 पत्रकार-संज्ञा पुं० समाचारपत्र का  
 संपादक ।  
 पत्र-पुष्प-संज्ञा पुं० १. सरकार या  
 पूजा की बहुत मामूली सामग्री । २.  
 लघु उपहार ।  
 पत्रवाहक-संज्ञा पुं० चिट्ठीरस ।  
 पत्र-व्यवहार-संज्ञा पुं० खत-किताबत ।  
 पत्रा-संज्ञा पुं० १. तिथिपत्र । २.  
 पत्र ।  
 पत्रिका-संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी । २.  
 समाचारपत्र ।  
 पत्री-संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी । २. कोई  
 छोटा लेख या लिपिपत्रिका ।  
 वि० जिसमें पत्रे हों ।  
 पथ-संज्ञा पुं० १. मार्ग । २. व्यवहार  
 आदि की रीति ।  
 संज्ञा पुं० दे० "पथ्य" ।  
 पथगामी-संज्ञा पुं० पथिक ।  
 पथदर्शक, पथप्रदर्शक-संज्ञा पुं०  
 रास्ता दिखानेवाला ।  
 पथराना-कि० प्र० १. सुखकर पथर  
 की तरह कहा हो जाना । २. ताड़ती  
 न रहना ।  
 पथरी-संज्ञा स्त्री० १. कटोरे या कटोरी  
 के आकार का पथर का बना हुआ  
 कोई पात्र । २. एक प्रकार का रोग  
 जिसमें मूत्राशय में पथर के छोटे-  
 बड़े कई टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं ।  
 ३. सिखी ।  
 पथरीला-वि० [ स्त्री० पथरीली ] पथरों  
 से युक्त ।  
 पथिक-संज्ञा पुं० राहगीर ।  
 पथी-संज्ञा पुं० यात्री ।  
 पथु-संज्ञा पुं० पथ ।  
 पथ्य-संज्ञा पुं० १. वह हथका और

जल्दी पचनेवाला खाना जो रोगी के लिये लाभदायक हो । २. हित ।

पद-संज्ञा पुं० १. व्यवसाय । २. दर्जा । ३. पैर । ४. पैर का निशान । ५. श्लोकपाद । ६. अपाधि । ७. निर्वाण ।

पदक-संज्ञा पुं० १. पूजन आदि के लिये किसी देवता के पैरों के चनाप हुए चिह्न । २. तमगा ।

पदचर-संज्ञा पुं० पैदल ।

पदच्छेद-संज्ञा पुं० संधि और समास-युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग करने की क्रिया ।

पदच्युत-वि० [ संज्ञा पदच्युति ] जो अपने पद या स्थान से हट गया हो ।

पदेतल-संज्ञा पुं० पैर का तलवा ।

पदजाण-संज्ञा पुं० जूता ।

पददत्तित-वि० १. पैरों से रीढ़ हुआ । २. जो दुबारा बहुत हीन कर दिया गया हो ।

पदप्यास-संज्ञा पुं० १. चलना । २. पैर रखने की एक मुद्रा । ३. चलन ।

पदम-संज्ञा पुं० दे० "पद्म" ।

संज्ञा पुं० बादाम की जाति का एक जंगली पेड़ ।

पदरिपु-संज्ञा पुं० कटा ।

पदवी-संज्ञा स्त्री० १. पंथ । २. पदति । ३. पिताव । ४. ओहदा ।

पदाति, पदातिक-संज्ञा पुं० १. वह जो पैदल चलता हो । २. पैदल सिपाही । ३. नौकर ।

पदाधिकारी-संज्ञा पुं० ओहदेदार ।

पदाना-क्रि० स० बहुत अधिक दिक करना ।

पदार्थ-संज्ञा पुं० चीज । वस्तु ।

पदार्पण-संज्ञा पुं० किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया ।

पदावली-संज्ञा स्त्री० १. वाक्यों की श्रेणी । २. भजनों का संग्रह ।

पदिक-संज्ञा पुं० पैदल सेना ।

पद संज्ञा पुं० १. गले में पहनने का जुगनू नाम का गहना । २. हीरा ।

पदी-संज्ञा पुं० पैदल ।

पदति-संज्ञा स्त्री० १. राह । २. पंक्ति । ३. रीति । ४. विधान ।

पद्म-संज्ञा पुं० १. कमल का फूल या पौधा । २. सामुद्रिक के अनुसार पैर में का एक विशेष आकार का चिह्न जो भाग्यसूचक माना जाता है ।

३. विष्णु का एक आयुध । ४. शरीर पर के सफ़ेद दाग ।

पद्मकंद-संज्ञा पुं० कमल की जड़ ।

पद्मनाभ-संज्ञा पुं० विष्णु ।

पद्मपाणि-संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा । २. शुद्ध की एक विशेष मूर्ति । ३. सूर्य ।

पद्मयोगि-संज्ञा पुं० ब्रह्मा ।

पद्मराग-संज्ञा पुं० मानिक ।

पद्मा-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।

पद्माकर-संज्ञा पुं० पद्म तालाब या कोल जिसमें कमल पैदा होते हैं ।

पद्मास्त्र-संज्ञा पुं० दे० "पद्म" ।

पद्मालय-संज्ञा पुं० ब्रह्मा ।

पद्मालया-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।

पद्मासन-संज्ञा पुं० १. योगसाधन का एक आसन जिसमें पालथी मारकर सीधे बैठते हैं । २. ब्रह्मा । ३. शिव ।

पद्मिनी-संज्ञा स्त्री० १. कमलिनी । छोटा कमल । २. वह तालाब या जलाशय जिसमें कमल हैं । ३.

सजला होना । २. ताप ।

पली-संज्ञा स्त्री० तेरा, धी आदि द्रव-  
पदार्थों को थड़े बरतन से निकालने  
का छोटे का एक उपकरण ।

पलीता- संज्ञा पुं० [स्त्री० अन्धा० पलीतो]

१. यत्ती के आकार में छपेटा हुआ  
यह कागज जिस पर कोई यंत्र लिखा  
हो । २. वह यत्ती जिससे बंदूक  
या तोप के रंजक में आग लगाई  
जाती है । ३. कपड़े की वह यत्ती  
जिसे पनशाले पर रखकर जलाते हैं ।  
वि० बहुत क्रुद्ध । बहुत क्रुद्ध ।

पलीद-वि० १. अपवित्र । २. घृणा-  
स्पद । ३. तीव्र ।

संज्ञा पुं० भूत ।

पलुआ-संज्ञा पुं० पालतू ।

पलुहना-कि० अ० हरा-भरा  
होना ।

पलुहाना-कि० स० हरा-भरा  
करना ।

पलेधन-संज्ञा पुं० परधन ।

पलोटना-कि० स० १. पैर दवाना ।  
२. दे० "पलटना" ।

कि० अ० तद्वत्पदाना ।

पलोधन-संज्ञा पुं० दे० "पलेधन" ।

पल्लव-संज्ञा पुं० १. कोपल । २. हाथ  
में पहनने का कड़ा या कंकण । ३.  
विस्तार । ४. दक्षिण का एक प्राचीन  
राजवंश जिसका राज्य उड़ीसा से  
मुगभद्रा नदी तक था ।

पल्लवना-कि० अ० पल्लवित होना ।

पल्लवित-वि० १. जिसमें नष्ट नष्ट  
पत्ते हों । २. हरा-भरा ।

पल्ला-कि० वि० दूर ।

संज्ञा पुं० दूरी ।

संज्ञा पुं० १. कपड़े का छोर । २.

दूरी । ३. तरफ ।

संज्ञा पुं० १. दुपहरी टोपी का आधा  
भाग । २. किवाड़ । ३. पहल ।

४. तीन मन का बोझ ।

संज्ञा पुं० तराजू में एक चौर का  
टोकरा या डलिया ।

संज्ञा पुं० कैंची के दो भागों में से  
एक भाग ।

वि० दे० "परल्ला" ।

पल्ली-संज्ञा स्त्री० १. छोटा गाँव । २.  
कुटी ।

पल्ली-वि० दे० १. "परलय" । २.  
दे० "पल्ला" ।

पल्लेदार-संज्ञा पुं० १. अनाज ढोने-  
वाला मजदूर । २. गुच्छा सैलाने-  
वाला आदमी ।

पल्लेदारी-संज्ञा स्त्री० पल्लेदार का  
काम ।

पल्ली-संज्ञा पुं० पल्लव ।

संज्ञा पुं० पल्ला ।

पवन-संज्ञा पुं० १. वायु । २. जल ।  
३. ससि ।

० संज्ञा पुं० दे० "पावन" ।

पवन-कुमार-संज्ञा पुं० १. हनुमान् ।  
२. भीमसेन ।

पवन-चक्रो-संज्ञा स्त्री० वह चक्री या  
कल जो हवा के जोर से चलती हो ।

पवन-चक्र-संज्ञा पुं० घबंड़र ।

पवन-तनय-संज्ञा पुं० १. हनुमान् ।  
२. भीमसेन ।

पवनपति-संज्ञा पुं० वायु के अधि-  
ष्ठाता देवता ।

पवन-पुत्र-संज्ञा पुं० १. हनुमान् ।  
२. भीमसेन ।

पवन-सुत-संज्ञा पुं० १. हनुमान् ।

कोकशास्त्र के अनुसार छियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति।

४. लक्ष्मी।

पद्य-वि० १. जिसका संबंध पैरों से हो। २. जिसमें कविता के पद हों। संज्ञा पुं० कविता।

पद्यात्मक-वि० जो छंदोपद्ध हो।

पधरना-क्रि० अ० किसी यज्ञ, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन।

पधराना-क्रि० स० १. आदरपूर्वक ले जाना। २. प्रतिष्ठित करना।

पधरावनी-संज्ञा स्त्री० १. किसी देवता की स्थापना। २. किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने की क्रिया।

पधारना-क्रि० अ० १. जाना। २. आना।

क्रि० स० आदरपूर्वक बैठाना।

पन-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा।

प्रत्य० एक प्रत्यय जिसे नामवाचक या गुणवाचक संज्ञार्थों में लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं।

पनघट-संज्ञा पुं० वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हैं।

पनघ-संज्ञा स्त्री० धनुष का रोदा या दोरी।

पनचक्की-संज्ञा स्त्री० पानी के ज़ोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पनहुब्बा-संज्ञा पुं० १. पानी में गोता लगानेवाला। २. वह पक्षी जो पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो।

पनहुब्बी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नाव जो प्रायः पानी के अंदर डूबकर चलती है। सध-मेरीन।

पनपना-क्रि० अ० १. पानी पाने के कारण फिर से हरा हो जाना। २.

फिर से तंदुरुस्त होना।

पनवट्टा-संज्ञा पुं० पान रखने का छोटा डिब्बा।

पनभरा-संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

पनघं-संज्ञा पुं० दे० "प्रणय"।

पनघाड़ी-संज्ञा पुं० पान बेचनेवाला।

पनवारा-संज्ञा पुं० १. पत्तों की थनी हुई पत्तल। २. एक पत्तल भर भोजन जो एक मनुष्य के खाने भर को हो।

पनस-संज्ञा पुं० कटहल।

पनसारी-संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।

पनसाल-संज्ञा स्त्री० पंसरा।

पनसेरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पंसरी"।

पनहरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी] वह जो पानी भरने का काम करता हो।

पनहा-संज्ञा पुं० १. कपड़े या वीवार आदि की चौड़ाई। २. मेढ़।

संज्ञा पुं० चोरी का पत्ता लगानेवाला।

पनहारा-संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

पनहियाभट्ट-संज्ञा पुं० सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल बढ़ जायें।

पनही-संज्ञा स्त्री० जूता।

पना-संज्ञा पुं० आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का शरबत।

पनाती-संज्ञा पुं० [स्त्री० पनातिन] पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनाला-संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।

पनासना-क्रि० स० परवरिश करना।

पनाह-संज्ञा स्त्री० १. यथावत। २. शरणा।

पनियाँ-वि० दे० "पनिहा"।

पनिया सोती-वि० अत्यंत गहरा।

२. भीमसेन ।

पचनाशन-संज्ञा पुं० सर्प ।

पचनाशी-संज्ञा पुं० १. वह जो हवा खाकर रहता हो । २. सर्प ।

पघनी-संज्ञा स्त्री० गाँवों में रहने-वाली वह छोटी प्रजा जो अपने निर्याह के लिये गाँववालों से कुछ पाती है ।

पघर, पघरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पँवर" ।

पघर्ग-संज्ञा पुं० वर्षमासा का पाँचवाँ वर्ग जिसमें प, फ, य, म, म, ये पाँच ध्वनि हैं ।

पघार-संज्ञा पुं० दे० "परमार" ।

पवारना-कि० स० फँकना ।

पवाई-संज्ञा स्त्री० १. एक पैर का जूता । २. चक्की का एक पाट ।

पवाना-कि० स० खिलाना ।

पवि-संज्ञा पुं० १. वज्र । २. विजली ।

पवित्र-वि० साफ़ ।

पवित्रता-संज्ञा स्त्री० सफ़ाई ।

पवित्रात्मा-वि० जिसकी आत्मा पवित्र हो ।

पवित्रित-वि० शुद्ध या निर्मल किया हुआ ।

पवित्री-संज्ञा स्त्री० कुश का बना छुहा जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहना जाता है ।

पशम-संज्ञा स्त्री० घड़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं ।

पशमीना-संज्ञा पुं० १. पशम । २.

पशम का घना हुआ कपड़ा ।

पशु-संज्ञा पुं० १. चार पैरों से चलने-वाला कोई जंतु जिसके शरीर का

भार खड़े होने पर पैरों पर रहता हो । २. जीवमात्र ।

पशुता-संज्ञा स्त्री० १. जानवरपन ।

२. मूर्खता और औदत्य ।

पशुत्व-संज्ञा पुं० दे० "पशुता" ।

पशुधर्म-संज्ञा पुं० पशुओं का सा आचरण ।

पशुपतात्र-संज्ञा पुं० महादेव का शूलास्त्र ।

पशुपति-संज्ञा पुं० १. शिव । २. अग्नि । ३. ओषधि ।

पशुपाल-संज्ञा पुं० पशुओं को पालने-वाला ।

पशुराज-संज्ञा पुं० सिंह ।

पश्चात्-अव्य० पीछे ।

पश्चात्ताप-संज्ञा पुं० अफसोस ।

पश्चिम-संज्ञा पुं० वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है ।

पश्चिमा-संज्ञा स्त्री० पश्चिम दिशा ।

पश्चिमाचल-संज्ञा पुं० अस्ताचल ।

पश्चिमी-वि० १. पश्चिम की ओर का । २. पश्चिम-संबंधी ।

पश्चिमोत्तर-संज्ञा पुं० पश्चिम और उत्तर के बीच का कोना ।

पश्तो-संज्ञा स्त्री० पश्चिमोत्तर भारत की एक आर्य भाषा जिसमें फारसी आदि के बहुत से शब्द मिल गए हैं ।

पशम-संज्ञा स्त्री० दे० "पशम" ।

पशमीना-संज्ञा पुं० दे० "पशमीना" ।

पश्यतोदर-संज्ञा पुं० वह जो आँखों के सामने से चीज़ें सुरा ले ।

पपा-संज्ञा पुं० १. पंख । २. तरफ़ ।

३. पच ।

पपा-संज्ञा पुं० दाढ़ी ।

पनिहा-वि० १. पानी में रहनेवाला ।  
२. जिसमें पानी मिखा हो । ३.  
पानी-सेवधी ।

संज्ञा पुं० भेदिया ।

पनी-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा करनेवाला ।

पनीर-संज्ञा पुं० १. छेना । २. वह  
दही जिसका पानी निचोड़ लिया  
गया हो ।

पनीला-वि० जलयुक्त ।

पनुथी-वि० फीका ।

पन्न-वि० १. गिरा हुआ । २. नष्ट ।

पन्नग-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पन्नी ] १.  
सर्प । २. पन्ना ।

पन्नगपति-संज्ञा पुं० शेषनाग ।

पन्नगारि-संज्ञा पुं० गरुड़ ।

पन्ना-संज्ञा पुं० मरुत ।

पन्नीसाज-संज्ञा पुं० पन्नी बनाने का  
काम करनेवाला ।

पन्हाना-क्रि० भ० दे० "पिन्हाना" ।

क्रि० स० १. दे० "पिन्हाना" । २.  
दे० "पहाना" ।

पपड़ी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० पपरी ]  
१. लकड़ी का रूखा करकरा और  
पतला छिलका । २. रोटी का  
छिलका ।

पपड़ी-संज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु की  
ऊपरी परत जो नरी या चिकनाई के  
अभाव के कारण कड़ी और सिकुड़-  
कर जगह जगह से चिटक गई हो ।  
२. घाव के ऊपर मवाद के सूख  
जाने से घना हुआ आवरण या  
परत ।

पपीहा-संज्ञा पुं० चातक ।

पपीता-संज्ञा पुं० एक मसिद्ध वृक्ष  
जिसके पके फल खाए जाते हैं ।

पपोटा-संज्ञा पुं० पलक ।

पय-संज्ञा पुं० १. दूध । २. जल ।

पयद-संज्ञा पुं० दे० "पयोद" ।

पयनिधि-संज्ञा पुं० दे० "पयो-  
निधि" ।

पयस्विनी-संज्ञा स्त्री० १. दूध देने-  
वाली गाय । २. पकरी । ३. नदी ।

पयस्वी-वि० [ स्त्री० पयस्विनी ] पानी  
वाला ।

पयहारी-संज्ञा पुं० दूध पीकर रह  
जानेवाला तपस्वी या साधु ।

पयान-संज्ञा पुं० गमन ।

पयार, पयाल-संज्ञा पुं० पुराल ।

पयोज-संज्ञा पुं० कमल ।

पयोद-संज्ञा पुं० मादल ।

पयोधर-संज्ञा पुं० १. स्नान । २.  
मादल । ३. सालास । ४. पर्वत ।

पयोधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

पयोनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

परंच-अव्य० १. और भी । २.  
तो भी ।

परंतप-वि० १. चरियों को दुःख  
देनेवाला । २. जितेंद्रिय ।

परंतु-अव्य० पर ।

परंपरा-संज्ञा स्त्री० १. अनुक्रम । २.  
वंशपरंपरा ।

परंपरागत-वि० परंपरा से चला  
आता हुआ ।

पर-वि० १. गौर । २. पराया । ३.  
जुदा । ४. दूर ।

प्रायः सप्तमी या अधिकरण का  
चिह्न ।

अव्य० १. परचात् । २. परंतु ।

संज्ञा पुं० पंच ।

परई-संज्ञा स्त्री० दीप के आकार का  
पर उससे बड़ा मिट्टी का एक घरतन ।



पपान-संज्ञा पुं० दे० "पापाण" ।

पपारना-कि० स० घेना ।

पसंघा-संज्ञा पुं० वासंग ।

वि० बहुत ही थोड़ा या कम ।

पसंती-संज्ञा स्त्री० दे० "पश्यंती" ।

पसंद-वि० जो अच्छा लगे ।

संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति ।

पसनी-संज्ञा स्त्री० अन्नप्राशन नामक संस्कार ।

पसर-संज्ञा पुं० गहरी की हुई धोखी ।

† संज्ञा पुं० विस्तार ।

पसरना-कि० अ० १. फैलना । २.

विस्तृत होना । ३. पैर फैलाकर

लेटना ।

पसरहट्टा-संज्ञा पुं० वह बाजार जिसमें

पंसारियों आदि की दुकानें हों ।

पसराना-कि० स० दूसरे को पसा-  
रने में प्रयत्न करना ।

पसली-संज्ञा स्त्री० मनुष्यों और  
पशुओं आदि के शरीर में छाती  
पर के पंजा की आड़ी रीर गोलाकार  
हड्डियों में से कोई हड्डी ।

पसाउ-संज्ञा पुं० प्रसाद ।

पसाना-कि० स० भात में से माँद  
निकालना ।

† कि० अ० प्रसन्न होना ।

पसार-संज्ञा पुं० १. फैलाव । २.  
विस्तार ।

पसारना-कि० स० फैलाना ।

पसारी-संज्ञा पुं० दे० "पंसारी" ।

पसाय-संज्ञा पुं० माँद ।

पसावन-संज्ञा पुं० दे० "पसाव" ।

पसीजना-कि० अ० १. रसना । २.  
दया होना ।

पसीना-संज्ञा पुं० वह जल जो परिश्रम

करने अथवा गरमी लगने पर शरीर  
से निकलने लगता है ।

पसुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पसली" ।

पसूजना-कि० स० सीना ।

पसेउ-संज्ञा पुं० दे० "पसेव" ।

पसेरी-संज्ञा स्त्री० पाँच सेर का घाट ।

पसेव-संज्ञा पुं० १. किसी चीज़ में से  
रसकर निकला हुआ जल । २.  
पसीना ।

पसोपेश-संज्ञा पुं० १. आना-पीड़ा ।  
२. हानि-लाभ ।

पस्त-वि० १. द्वारा हुआ । २. धका  
हुआ । ३. दया हुआ ।

पस्तहिम्मत-वि० भीड़ ।

पस्ती बबूल-संज्ञा पुं० एक प्रकार  
का पदाङ्गी बबूल ।

पहँ-अव्य० १. निकट । २. से ।

पहँसुल-संज्ञा स्त्री० हँसिया के आकार  
का सरकारी काटने का एक औज़ार ।

पह-संज्ञा स्त्री० दे० "पी" ।

पहचान-संज्ञा स्त्री० १. पहचानने की  
क्रिया या भाव । २. निशानी । ३.  
परिचय ।

पहचानना-कि० स० चीन्हना ।

पहटना-कि० स० पीड़ा करना ।

पहनना-कि० स० शरीर पर धारण  
करना ।

पहनवाना-कि० स० किसी और के  
द्वारा किसी को कुछ पहनाना ।

पहनाई-संज्ञा स्त्री० १. पहनने की  
क्रिया या भाव । २. पहनाने की  
मजदूरी या उजरत ।

पहनाना-कि० स० दूसरे को कपड़े,  
आभूषण आदि धारण कराना ।

पहनावा-संज्ञा पुं० १. पोशाक । २.

परकटा-वि० जिसके पर या पंख कटे हों ।

परकना-कि० अ० १. हिलना । २. चसका लगाना ।

परकसना-कि० अ० प्रकाशित होना ।

परकाजी-रि० परोपकारी ।

परकाना-कि० स० १. परवाना । २. चसका लगाना ।

परकार-संज्ञा पुं० वृत्त या गोलाई खोचने का एक औजार ।

परकारना-कि० स० १. परकार से वृत्त बनाना । २. चारों ओर फेरना ।

परकाल-संज्ञा पुं० दे० "परकार" ।

परकाला-संज्ञा पुं० १. सीढ़ी । २. चौखट ।

संज्ञा पुं० डुकड़ा ।

परकास-संज्ञा पुं० दे० "प्रकाश" ।

परकासना-कि० स० प्रकाशित करना ।

परकिति-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रकृति" ।

परकीय-वि० पराया ।

परकीया-संज्ञा स्त्री० पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रीति-संबंध रखने-वाली स्त्री ।

परकोटा-संज्ञा पुं० १. किसी गढ़ या स्थान की रक्षा के लिये चारों ओर बड़ाई हुई दीवार । २. घाँघ ।

परख-संज्ञा स्त्री० १. जाँच । २. पहचान ।

परखना-कि० स० १. जाँच करना । २. भला और बुरा पहचानना ।

कि० स० प्रतीक्षा करना ।

परखाना-कि० स० १. जँचवाना ।

२. समझवाना ।

परग-संज्ञा पुं० पग ।

परगटना-कि० अ० प्रकट होना ।

कि० स० प्रकट या जाहिर करना ।

परगना-संज्ञा पुं० वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों ।

परचंड-वि० दे० "प्रचंड" ।

परचता-संज्ञा स्त्री० जानकारी ।

परचना-कि० अ० १. हिलना-मिलना । २. चसका लगाना ।

परचा-संज्ञा पुं० १. कागज का टुकड़ा । २. चिट्ठी । ३. परीक्षा में आनेवाला प्रश्नपत्र ।

संज्ञा पुं० १. परिचय । २. पराज ।

३. प्रमाण ।

परवाना-कि० स० १. हिलाना । २. टेव डालना ।

कि० स० जलाना ।

परवार-संज्ञा पुं० दे० "प्रचार" ।

परवारना-कि० स० दे० "प्रचारना" ।

परचून-संज्ञा पुं० आटा, दाल, मसाला आदि भोजन का सामान ।

परचूनी-संज्ञा पुं० मोड़ी ।

परछुत्ती-संज्ञा स्त्री० १. पाटा । २. फूस आदि की छाजन ।

परछन-संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमें धारात द्वार पर आने पर कन्या-पक्ष की छियाँ घर की आरती करती तथा उसके कपड़ों से भूसल, चट्टा आदि धुमाती हैं ।

परछना-कि० स० परछन की क्रिया करना ।

परछाई-संज्ञा स्त्री० १. छायाकृति । २. प्रतिविम्ब ।

परजन-संज्ञा पुं० दे० "परिजन" ।

परजरना-कि० अ० १. जलना ।

विशेष व्यवस्था, स्थान अथवा समाज में ऊपर पहने जानेवाले कपड़े । ३. कपड़े पहनने का ढंग या चाल ।

पहपट्-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ गाया करती हैं । २. शोर-गुल । ३. धोखा ।

पहपट्याङ्ग-संज्ञा पुं० [संज्ञा पहपट्याङ्गी] १. शरारती । २. ठग ।

पहपट्हाई-संज्ञा स्त्री० झगड़ा कराने या लड़ानेवाली ।

पहर-संज्ञा पुं० १. तीन घंटे का समय । २. युग ।

पहरना-कि० स० दे० "पहनना" ।

पहरा-संज्ञा पुं० १. रक्षक-नियुक्ति । चौकी । २. दिफ्फाजस । ३. तैनाती ।

पहराना-कि० स० दे० "पहनना" ।

पहरावनी-संज्ञा स्त्री० वह पोशाक जो कोई बड़ा छोटे को दे ।

पहरी-संज्ञा पुं० पहरेदार ।

पहरुआ-संज्ञा पुं० दे० "पहरू" ।

पहरू-संज्ञा पुं० पहरा देनेवाला ।

पहल-संज्ञा पुं० १. तरफ़ । २. सह । संज्ञा पुं० किसी कार्य का आरंभ ।

पहलदार-वि० पहलूदार ।

पहलवान-संज्ञा पुं० [संज्ञा पहलवानी] १. कुश्ती लड़नेवाला बली पुरुष । २. बलवान तथा डीलढीलवाला ।

पहलवानी-संज्ञा स्त्री० पहलवान होने का भाव, काम या पेशा ।

पहला-वि० [स्त्री० पहली] प्रथम ।

पहलू-संज्ञा पुं० १. पाँजर । २. बगल । ३. तरफ़ । ४. [वि० पहलूदार] पहल । ५. पक्ष ।

पहले-अव्य० १. आरंभ में । २. पेशतर ।

पहले-पहल-अव्य० पहली बार ।

पहलौठा-वि० [स्त्री० पहलौठी] पहली बार के गर्भ से उत्पन्न (लड़का) ।

पहलौठी-संज्ञा स्त्री० पहले पहल बच्चा जनना ।

पहाड़-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पहाड़ी] १. पर्वत । गिरि । २. बहुत भारी ढेर । ३. बहुत भारी चीज़ । ४. अति कठिन कार्य ।

पहाड़ा-संज्ञा पुं० गुणन-सूची ।

पहाड़ी-वि० १. जो पहाड़ पर रहता या होता हो । २. जिसका संबंध पहाड़ से हो ।

संज्ञा स्त्री० १. छोटा पहाड़ । २. पहाड़ के लोगों की-गाने की-एक धुन ।

पहिचान-संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान" ।

पहित, पहिती-संज्ञा स्त्री० पकी हुई दाढ़ ।

पहिर्पा-अव्य० दे० "पहँ" ।

पहिया-संज्ञा पुं० चक्का ।

पहिरावनी-संज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा" ।

पहिला-वि० [स्त्री० पहिली] १. दे० "पहला" । २. पहले पहल ब्याह हुई ।

पहिले-अव्य० दे० "पहले" ।

पहुँच-संज्ञा स्त्री० १. किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति । २. प्रवेश । ३. रसीद । ४. परिचय ।

पहुँचना-कि० अ० १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत या प्राप्त होना । २. किसी स्थान तक लगातार फैलना । ३. घुसना । ४. मिलना ।

२. ऋद्ध होना ।

परजो-संज्ञा स्त्री० १. प्रजा । २.

आश्रित जन । ३. आसामी ।

परजाता-संज्ञा पुं० परिजात ।

परजौट-संज्ञा पुं० घर बनाने के लिये  
साठाना किराए पर जमीन लेने-  
देने का नियम ।

परतंत्र-वि० पराधीन ।

परतंत्रता-संज्ञा स्त्री० पराधीनता ।

परतः-परधात्व ।

परत-संज्ञा स्त्री० सह ।

परतल-संज्ञा पुं० छादनवाले घोड़ों  
की पीठ पर रखने का बोरा या गून ।

परता-संज्ञा पुं० दे० "पदना" ।

परताप-संज्ञा पुं० दे० "प्रताप" ।

परती-संज्ञा स्त्री० वह खेत या जमीन  
जो बिना बोती हुई छोड़ दी गई  
है ।

परतीत-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति" ।

परतेजना-संज्ञा स्त्री० स० परित्याग  
करना ।

परतव-संज्ञा पुं० पर होने का भाव ।

परधन-संज्ञा पुं० दे० "पलेधन" ।

परद्विना-संज्ञा स्त्री० दे०  
"प्रद्विना" ।

परदा-संज्ञा पुं० १. आड़ करने के  
काम में धानेवाला कपड़ा, चिरा  
आदि । २. आड़ । ३. छिपी की  
बाहर निकलकर लोगों के सामने न  
होने देने की चाल ।

परदादा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० परदाश ]  
दादा का चाचा ।

परदानशील-वि० परदे में रहनेवाली ।

परदेश-संज्ञा पुं० विदेश ।

परदेशी-वि० विदेशी ।

परधाम-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ धाम ।

परन-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा ।

संज्ञा स्त्री० आदत्त ।

परंश पुं० दे० "पर्य" ।

परना-संज्ञा पुं० दे० "पदना" ।

परनाना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० परनानी ]  
नाना का चाप ।

परनाला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भल्पा० पर-  
नाला ] पनाला ।

परनि-संज्ञा स्त्री० धान ।

परनौत-संज्ञा स्त्री० प्रणाम ।

परपंच-संज्ञा पुं० दे० "प्रपंच" ।

परपंची-वि० १. बखेड़िया । २.  
धूर्त ।

परपट-संज्ञा पुं० समतल भूमि ।

परपटाना-संज्ञा पुं० धुनधुनाना ।

परपीड़क-संज्ञा पुं० १. दूसरे को  
पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला । २.  
पराई पीड़ा को समझनेवाला ।

परपोता-संज्ञा पुं० पोते का बेटा ।

परव-संज्ञा पुं० दे० "पर्व" ।

परवत-संज्ञा पुं० दे० "पर्वत" ।

परवृत्त-संज्ञा पुं० वृत्त जो जगत् से  
परे है । निर्गुण और निरुपाधि वृत्त ।

परम-वि० १. सबसे बढ़ा-बढ़ा । २.  
वर्तुल ।

परम गति-संज्ञा स्त्री० मोक्ष ।

परम सत्त्व-संज्ञा पुं० मूल सत्त्व  
जिससे संपूर्ण विश्व का विकास है ।

परम धाम-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ ।

परम पद-संज्ञा पुं० मोक्ष ।

परम भट्टारक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० परम  
भट्टारिका ] एकछत्र राजाओं की एक  
प्राचीन उपाधि ।

परमहंस-संज्ञा पुं० वह संन्यासी जो ज्ञान  
की परमावस्था को पहुँच गया हो ।

पहुँचा-संज्ञा पुं० कलाई ।

पहुँचाना-कि० सं० १. घुसाना । २. किसी के साथ इसलिये जाना जिसमें वह अट्टेला न पड़े । ३. किसी को विशेष अवस्था तक ले जाना ।

पहुँची-संज्ञा स्त्री० कलाई पर पहनने का एक आभूषण ।

पहुना-संज्ञा पुं० दे० "पाहुना" ।

पहुनाई-संज्ञा स्त्री० १. अतिथि-रूप में कहीं जाना या आना । २. अतिथि-संस्कार ।

पहुपा-संज्ञा पुं० दे० "पुष्प" ।

पहुमी-संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी" ।

पहुला-संज्ञा पुं० कुमुदिनी ।

पहली-संज्ञा स्त्री० १. प्रथम । २. समष्टि ।

पहुय-संज्ञा पुं० एक प्राचीन जाति । प्राचीन पारसी या ईरानी ।

पहुयी-संज्ञा स्त्री० आधुनिक फारस के मध्यवर्ती काल की फारस की भाषा ।

पाँ, पाँइ-संज्ञा पुं० पाँव ।

पाँइयाग-संज्ञा पुं० महलों के चारों ओर का छोटा घाग जिसमें राज-महल की खियाँ सँभल करती हैं ।

पाँइ-संज्ञा पुं० पैर ।

पाँक-संज्ञा पुं० कीचड़ ।

पाँख-संज्ञा पुं० पंख ।

पाँखी-संज्ञा स्त्री० पति-माँ ।

पाँखुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पँखुरी" ।

पाँच-वि० १. जो गिनती में चार और एक हो । २. पंच ।

पाँचजन्य-संज्ञा पुं० कृष्ण के यज्ञाने का शंख ।

पाँचमौलिक-संज्ञा पुं० पाँचों भूतों या तत्त्वों से बना हुआ शरीर ।

पाँचाल-संज्ञा पुं० दे० "पंचाल" ।

वि० पाँचाल देश का रहनेवाला ।

पाँचाली-संज्ञा स्त्री० पाँडवों की स्त्री द्रौपदी ।

पाँचौ-संज्ञा स्त्री० पंचमी ।

पाँजना-कि० सं० डाँका लगाना ।

पाँजर-संज्ञा पुं० १. घमेल और कसर के बीच का वह भाग जिसमें पस-खिया होती है । २. पसली ।

पाँडव-संज्ञा पुं० कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँच पुत्र ।

पाँडवनगर-संज्ञा पुं० दिल्ली ।

पाँडित्य-संज्ञा पुं० विद्वत्ता ।

पाँडु-संज्ञा पुं० १. कृष्ण खाली लिप् पीला रंग । २. एक रोग का नाम जिसमें शरीर का चमड़ा पीले रंग का हो जाता है । ३. प्राचीन काल के एक राजा का नाम जो पाँडव पंथ के आदिपुरुष थे ।

पाँडुता-संज्ञा स्त्री० पीलापन ।

पाँडुर-वि० १. पीला । २. सफेद । ३. कामका रोग । ४. सफेद कौड़ ।

पाँडुलिपि-संज्ञा स्त्री० मल्लोदा । खेल आदि का पहला रूप ।

पाँडुलेख-संज्ञा पुं० दे० "पाँडुलिपि" ।

पाँइ-संज्ञा पुं० १. प्राक्षणा की एक शाखा । २. पंडित ।

पाँडिय-संज्ञा पुं० दे० "पाँइ" ।

पाँति-संज्ञा स्त्री० कृतार ।

पाँय-वि० पथिक ।

पाँयनिवास-संज्ञा पुं० सराय । चट्टी ।

पाँयों-संज्ञा पुं० चरण । पैर ।

पाँयता-संज्ञा पुं० पहँग, छाट या विस्तर का वह भाग जिसकी धोर

परिमंडल-संज्ञा पुं० चक्कर।

परिमल-संज्ञा पुं० [ वि० परिमलित ]

१. सुवास। २. उबटना। ३. मैथुन।

परिमाण-संज्ञा पुं० [ वि० परिमित, परिमेय ] १. वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। २. घेरा।

परिमार्जक-संज्ञा पुं० धोने या मंजने-वाला।

परिमार्जन-संज्ञा पुं० [ वि० परिमार्जित, परिमृज्य, परिमृष्ट ] १. धोने या मंजने का कार्य। २. परिशोधन।

परिमार्जित-वि० धोया या मंजा हुआ।

परिमित-वि० १. सीमा, संख्या आदि से बद्ध। २. न अधिक न कम। ३. कम।

परिमिति-संज्ञा स्त्री० १. नाप, तौल, सीमा आदि। २. मर्यादा।

परिमेय-वि० १. जो नापा या तौला जा सके। २. ससीम।

परिमोक्ष-संज्ञा पुं० १. निर्वाण। २. परित्याग।

परिमोक्षण-संज्ञा पुं० १. मुक्त करना। २. परित्याग करना।

परियंक-संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

परिया-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति।

परिरंभ, परिरंभण-संज्ञा पुं० [ वि० परिरंभ्य, परिरंभी ] आलिंगन।

परिरंभना-कि० सं० आलिंगन करना।

परिलेख-संज्ञा पुं० १. ठाँचा। २. चित्र। ३. कूँची या कुलम जिससे रेखा या चित्र खींचा जाय। ४. उल्लेख।

परिलेखन-संज्ञा पुं० किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ बनाना।

परिलेखना-कि० सं० समझना।

परिघर्त-संज्ञा पुं० १. फेरा। २. घुमना।

परिघर्तक-संज्ञा पुं० १. घुमाने, फिराने या चक्कर खानेवाला। २. घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला। ३. बदलनेवाला।

परिघर्तन-संज्ञा पुं० [ वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती ] १. घुमाव। २. तथादला। ३. रूपांतर।

परिवर्तित-वि० १. बदला हुआ। २. जो बदले में मिला हुआ हो।

परिवर्ती-वि० १. परिवर्तनशील। २. बदला करनेवाला। ३. जो बराबर घूमे।

परिघर्जन-संज्ञा पुं० [ वि० परिवर्धित ] परिवृद्धि।

परिवर्द्धित-वि० बढ़ाया हुआ।

परिचा-संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पहली तिथि।

परिचाद-संज्ञा पुं० निंदा।

परिचादी-वि० निंदा करनेवाला।

परिवार-संज्ञा पुं० १. आवरण। २. कुटुंब। ३. कुल।

परिचास-संज्ञा पुं० १. ठहरना। २. घर।

परिवृत-वि० आवृत।

परिवृत्ति-संज्ञा स्त्री० ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु।

परिवृत्त-वि० १. उल्टा पलटा हुआ। २. घेरा हुआ।

परिवृत्ति-संज्ञा स्त्री० १. घुमाव। २. घेरा।

संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें एक

पैर किए जाते हैं। पैताना।  
 पिरा-वि० दे० "पामर"।  
 पांचरी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "पाँवड़ी"।  
 २. सोपान। सीढ़ी। ३. पैर रखने का स्थान।  
 पाशु-संज्ञा स्त्री० १. भूखि। रज। २. बालू। ३. गोबर की खाद।  
 पांशुल-वि० लंपट। व्यभिचारी।  
 पाँस-संज्ञा स्त्री० सड़ो-गली चीड़ों जो खेतों को उपजाऊ करने के लिये उनमें डाली जाती हैं। खाद।  
 पाँसना-क्रि० स० खेत में खाद देना।  
 पाँसा-संज्ञा पुं० चार-पाँच अंगुल लंबे बत्ती के आकार के चौपड़ल टुकड़े जिनसे चौसर का खेल खेलते हैं।  
 पाँसुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।  
 पाँही-क्रि० वि० निकट। पास। समीप।  
 पाइ-संज्ञा पुं० दे० "पाद"।  
 पाइक-संज्ञा पुं० दे० "पायक"।  
 पाइल-संज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।  
 पाई-संज्ञा स्त्री० १. एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। २. वह छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लगाने से एकई का चतुर्थींश प्रकट करती है; जैसे, ४१, अर्थात् सवा चार। पूर्ण विराम सूचित करनेवाली खड़ी रेखा। संज्ञा स्त्री० एक छोटा लंबा कीड़ा जो धान को खराब कर देता है।  
 पाउँ-संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।  
 पाक-संज्ञा पुं० १. पकाने की क्रिया। सीधना। २. पकने या पकाने की क्रिया या भाव। ३. रसोई। ४. वह औपध जो चाशनी में मिलाकर

बनाई जाय। ५. खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। पाचन। ६. वह खीर जो आद में पिंडदान के लिये पकाई जाती है।  
 वि० पवित्र। शुद्ध। निर्मल। निर्दोष।  
 पाकड़-संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।  
 पाकना-क्रि० भ० दे० "पकना"।  
 पाकर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वृक्ष जो पंचवटों में माना जाता है। पाखर। पलखन।  
 पाकशाला-संज्ञा स्त्री० रसोई बनाने का घर। श्रावरीखाना।  
 पाकशासन-संज्ञा पुं० ईद्र।  
 पाकागार-संज्ञा पुं० रसोई-घर।  
 पाक्षिक-वि० १. पक्ष या पक्षवाड़े से संबंध रखनेवाला। २. पक्षवादी। तरफदार।  
 पाखंड-संज्ञा पुं० १. वेद-विरुद्ध आचार। २. ढोंग। आडंबर। ठकोसला।  
 पाखंडी-वि० १. वेद-विरुद्ध आचार करनेवाला। २. बनावटी धार्मिकता दिखानेवाला। कपटाचारी। भगला भगत। ३. धोखेबाज़। धूर्त।  
 पाख-संज्ञा पुं० पंद्रह दिन। पखवाड़ा।  
 पाखर-संज्ञा स्त्री० लोई की वह झूल जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर डाली जाती है।  
 पाखा-संज्ञा पुं० १. कोना। छोर। २. दे० "पाख" (२)।  
 पाखाना-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय। २. मल। गू। गुलीज़। पुरीप।  
 पाग-संज्ञा स्त्री० १. पगड़ी। २. वह शीरा या चाशनी जिसमें मिठाईयाँ आदि डुबाकर रखी जाती हैं। ३.

वस्तु को देकर दूसरी के लेने या वस्तु लेन-देन या बदल-बदल का कथन होता है।

**परिवेश**-संज्ञा पुं० घेरा।

**परिवेष, परिवेषण**-संज्ञा पुं० [ वि० परिवेष्टव्य, परिवेष्य ] १. परोसना। २. घेरा। ३. मंडल। ४. ढाँट।

**परिवेष्टन**-संज्ञा पुं० [ वि० परिवेष्टित ]

१. चारों ओर से घेरना या घेरेन करना। २. आच्छादन। ३. परिधि।

**परिग्रह्या**-संज्ञा स्त्री० १. हृष-उग्र भ्रमण। २. तपस्या।

**परिव्राज, परिव्राजक**-संज्ञा पुं० १. वह संन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहे। २. संन्यासी।

**परिव्राट**-संज्ञा पुं० दे० "परिव्राज"।

**परिशिष्ट**-वि० बचा हुआ।

संज्ञा पुं० १. किसी पुस्तक या लेख का वह भाग जिसमें वे बातें दी गई हों जो किसी कारण यथास्थान न जा सकी हों और जिनके पुस्तक में न आने से वह अपूर्ण रह जाती हो। २. किसी पुस्तक का वह अतिरिक्त अंश जिसमें कुछ ऐसी बातें दी गई हों जिनसे उसकी उपयोगिता या महत्त्व बढ़ता हो।

**परिशीलन**-संज्ञा पुं० [ वि० परिशीलित ]

१. मननपूर्वक अध्ययन। २. स्पर्श।

**परिशेष**-वि० बचा हुआ।

संज्ञा पुं० १. जो कुछ बचा रहा हो।

२. परिशिष्ट। ३. समाप्ति।

**परिशोध**-संज्ञा पुं० १. पूर्ण शुद्धि।

२. शुद्धता।

**परिशोधन**-संज्ञा पुं० [ वि० परिशुद्ध, परिशोधनोय, परिशोधित ] १. पूरी तरह

साफ या शुद्ध करना। २. शुद्धता।

**पारश्रम**-संज्ञा पुं० १. मेहनत। २. थकावट।

**परिश्रमी**-वि० जो बहुत श्रम करे।

**परिधात**-वि० थका हुआ।

**परिश्रित**-वि० प्रसिद्ध।

**परिपत्**-संज्ञा स्त्री० दे० "परिपद्"।

**परिपद्**-संज्ञा स्त्री० १. सभा। २.

समूह।

**परिपद**-संज्ञा पुं० १. दे० परिपद्।

२. सदस्य। ३. मुसादफ।

**परिष्कार**-संज्ञा पुं० १. संस्कार। २.

स्वच्छता। ३. गहना।

**परिष्क्रिया**-संज्ञा स्त्री० १. शुद्ध करना।

२. मजिना धोना। ३. सँवारना।

**परिष्कृत**-वि० १. साफ या शुद्ध

किया हुआ। २. मजिना या धोया

हुआ। ३. सँवारा या सजाया हुआ।

**परिसंख्या**-संज्ञा स्त्री० गिनती।

**परिसर्प**-संज्ञा पुं० १. परिक्रमण। २.

धूमना-फिरना। ३. किसी की-छाँज

में जाना।

**परिस्तान**-संज्ञा पुं० १. वह कल्पित

लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती

हैं। २. वह स्थान जहाँ सुंदर मनुष्यों,

विशेषतः स्त्रियों, का जमघट हो।

**परिस्फुट**-वि० १. चिलकुल प्रकट

या खुला हुआ। २. प्रकाशित।

३. खूब खिला हुआ।

**परिस्थेद**-संज्ञा पुं० करना।

**परिहंस**-संज्ञा पुं० दे० "परिहस"।

**परिहत**-वि० मृत।

**परिहरण**-संज्ञा पुं० [ वि० परिहरणीय,

परिहर्त्तव्य, परिहत ] १. अघरदस्ती ले

लेना। २. तजना। ३. निवारण।

**परिहास**-संज्ञा पुं० १. हँसी। २. ईर्ष्या।

संज्ञा पुं० रंज।



चीनी के शीरे में पकाया हुआ फल आदि । ४. यह दवा या घुट्टई जो शीरे में पकाकर बनाई जाय ।

पागना-कि० स० भीठी चाशनी में सानना या लपेटना ।

पागल-वि० १. जिसका दिमाग ठीक न हो । पावला । सिद्धी । विविध । २. जिसके होश-हवास दुरुस्त न हों । आपे से बाहर ।

पागलखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पागलों का इलाज किया जाता है ।

पागलपन-संज्ञा पुं० बन्नाद । विचि-  
स्रता । चित्त-विभ्रम ।

पागुरा-संज्ञा पुं० दे० "जुगाली" ।

पाचक-वि० १. वह औषध जो पाचन-शक्ति को बढ़ाने के लिये खाई जाती है । २. रसोदया । पाचर्षी । ३. पाँच प्रकार के पित्तों में से एक पित्त । ४. पाचक पित्त में रहनेवाली अग्नि ।

पाचन-संज्ञा पुं० वह औषधि जो अपक दोष को दूर करे । हाजिम ।

पाचन-शक्ति-संज्ञा स्त्री० वह शक्ति जो भोजन को पचावे । हाजिमा ।

पाचिका-संज्ञा स्त्री० रसोईदारिन । रसोई करनेवाली ।

पावलाही-संज्ञा पुं० दे० "बादशाह" ।

पाझ-संज्ञा स्त्री० १. पोस्ते के डोहे पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा जिससे अफीम निकलती है । २. किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिये लगाया हुआ चीरा ।

‡ संज्ञा पुं० पीड़ा । पिडुला भाग ।

कि० वि० पीछे ।

पाछिल-वि० दे० "पिछला" ।

पाछी, पाछें-कि० वि० दे० "पीछे" ।

पाजामा-संज्ञा पुं० पैर में पहनने का एक प्रकार का सिंघा हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढका रहता है । इसके कई भेद हैं—सुयना, तमान, इन्गार, खूही-दार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नेपाली आदि ।

पाजी-संज्ञा पुं० १. पैदल सेना का सिपाही । प्यादा । २. रथक । चौकीदार ।

वि० दुष्ट । लुब्धा ।

पाजीपन-संज्ञा पुं० दुष्टता । कमीना-पन । नीवता ।

पासेव-संज्ञा स्त्री० झियों का एक गड़ना जो पैरों में पहना जाता है ।

पाटव-संज्ञा पुं० रेशमी वस्त्र ।

पाट-संज्ञा पुं० १. रेशम । २. राज्या-सन । सिंहासन । गद्दी । ३. चौड़ाई । फैलाव । पीड़ा । ४. वस्त्र । कपड़ा ।

पाटन-संज्ञा स्त्री० १. पाटने की क्रिया या भाव । पटाव । २. मकान की पहली मंजिल से ऊपर की मंजिल ।

पाटना-कि० स० १. किसी गहराई को मिटो, छूट्टे आदि से भर देना । २. दो दीवारों के बीच में या किसी गहरे स्थान के आर-पार घुसने आदि बिठाकर आधार बनाना । छत बनाना ।

पाटल-संज्ञा पुं० पाडर या पाटर का पेड़ ।

पाटला-संज्ञा स्त्री० १. पाडर का वृक्ष । २. लाल लोच । ३. दुर्गर । संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहिषा सेना ।

**परिहार**-संज्ञा पुं० [ वि० परिहारक ] १. दोष, अनिष्ट, खराबी आदि का निवारण या निराकरण । २. हल्लाज । ३. परित्याग । ४. तिरस्कार ।

**संज्ञा पुं०** राजपूतों का एक वंश जो अमिकुल के अंतर्गत माना जाता है ।

**परिहार्य**-वि० १. जिसका परिहार किया जा सके । २. जिसका निवारण, ह्याग या उपचार करना उचित हो ।

**परिहित**-वि० १. चारों ओर से छिपा या ढंका हुआ । २. पहना हुआ ।

**परी**-संज्ञा स्त्री० १. फारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ़ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परवाली स्त्री । २. परम सुंदरी ।

**परीक्षक**-संज्ञा पुं० [ स्त्री० परीक्षा ] हस्तहान करने या लेनेवाला ।

**परीक्षा**-संज्ञा पुं० दे० "परीचा" ।

**परीक्षा**-संज्ञा स्त्री० १. समीचा । २. हस्तहान । ३. आजमाइश । ४. निरीक्षण ।

**परीक्षित**-वि० जिसकी परीचा या जांच की गई हो ।

**संज्ञा पुं०** अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा ।

**परीक्ष्य**-वि० परीचा करने योग्य ।

**परीखना**-क्रि० सं० दे० "परखना" ।

**परीक्षित**-संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित" ।

**परीक्षा**-संज्ञा स्त्री० दे० "परीचा" ।

**परीक्षित**-क्रि० वि० अवश्य ही ।

**परीक्षा**-वि० अर्पित सुंदर ।

**परीत**-संज्ञा पुं० दे० "प्रेत" ।

**परुष**-वि० दे० "परुष" ।

**परुषार्थ**-संज्ञा स्त्री० कठोरता ।

**परुष**-वि० [ स्त्री० परुषा ] १. कठोर ।

२. बुरा लगनेवाला । ३. निष्ठुर ।

**परुषता**-संज्ञा स्त्री० १. कठोरता । २.

कंठशता । ३. निर्दयता ।

**परुषत्व**-संज्ञा पुं० परुषता ।

**परे**-अव्य० १. उस ओर । २. बाहर ।

३. ऊपर । ४. बाद ।

**परेई**-संज्ञा स्त्री० १. पंहुकी । २. मादा कबूतर ।

**परेखना**-क्रि० सं० १. परखना । २. आसरा देखना ।

**परेखा**-संज्ञा पुं० १. परीचा । २. खेद ।

**परेग**-संज्ञा स्त्री० छोटा फाँटा ।

**परेत**-संज्ञा पुं० दे० "प्रेत" ।

**परेता**-संज्ञा पुं० १. जुलाही का एक औज़ार जिस पर वे सूत लपेटते हैं । २. पतंग की डोर लपेटने का योजन ।

**परेरा**-संज्ञा पुं० आकाश ।

**परेवा**-संज्ञा पुं० [ स्त्री० परेई ] १. पंहुक पक्षी । २. कबूतर । ३. हरकारा ।

**परेश**-संज्ञा पुं० ईश्वर ।

**परेशान**-वि० व्यग्र ।

**परेशानी**-संज्ञा स्त्री० व्याकुलता ।

**परी**-क्रि० वि० दे० "परीसी" ।

**परोक्ष**-संज्ञा पुं० १. अनुपस्थिति । २. परम ज्ञानी ।

वि० १. जो देख न पड़े । २. गुप्त ।

**परोपकार**-संज्ञा पुं० घट काम जिससे दूसरों का भला हो ।

**परोपकारी**-संज्ञा पुं० [ स्त्री० परोपकारिणी ] दूसरों की भलाई करनेवाला ।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र-संज्ञा पुं०  
मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक  
नगर जो इस समय भी बिहार का  
मुख्य नगर है। पटना।

पाटघ-संज्ञा पुं० १. पटुता। कुश-  
लता। २. दृढ़ता। मज्जवृत्ति। ३.  
आरोग्य।

पाटा-संज्ञा पुं० लकड़ी का पीड़ा।

पाटी-संज्ञा स्त्री० परिपाटी। अनुक्रम।  
रीति।

संज्ञा पुं० १. लकड़ी की वह पट्टी जिस  
पर छात्र लिखने का अभ्यास करते  
हैं। सख्ती। पटिया। २. मगि के  
दोनों ओर कंपी द्वारा बँटाए हुए  
बाक। पट्टी। पटिया। ३. चार-  
पाई के हाँचे में लंबाई की ओर की  
पट्टी। ४. चटाई।

पाठ-संज्ञा पुं० १. पढ़ने की क्रिया या  
भाव। पढ़ाई। २. वह जो कुछ  
पढ़ा या पढ़ाया जाय। सधक। ३.  
परिच्छेद। अध्याय।

पाठक-संज्ञा पुं० १. पढ़नेवाला।  
वाचक। २. पढ़नेवाला। अध्यापक।

पाठदोष-संज्ञा पुं० पढ़ने का वह तंग  
जो निंद्य और वर्जित है। जैसे  
कठोर स्वर से पढ़ना, या ठहर ठहर-  
कर उच्चारण करना।

पाठन-संज्ञा पुं० पढ़ाने की क्रिया या  
भाव। पढ़ाना। अध्यापन।

पाठशाला-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ  
पढ़ाया जाय। महरसा। विद्या-  
लय। चटसाज।

पाठा-संज्ञा पुं० अवान और परिपुष्ट।  
हृष्ट-पुष्ट। मोटा-तगड़ा।

पाठी-संज्ञा पुं० १. पाठ करनेवाला।  
पाठक। पढ़नेवाला। २. धिता।

चित्रक वृक्ष।

पाठ्य-वि० १. पढ़ने योग्य। पठनीय।  
२. जो पढ़ाया जाय।

पाड़-संज्ञा पुं० १. घोती आदि का  
किनारा। २. मचान। ३. वह  
जाड़ी जो कूर्प के मुँह पर रखी  
रहती है। ४. बाँध। पुरता। ५.  
वह तद्गता जिस पर खड़ा करके  
फाँसी दी जाती है। तिकड़ी।

पाड़ा-संज्ञा पुं० महछा।

पाड़-संज्ञा पुं० १. पाटा। २. वह  
मचान जिस पर फसल की रखवाली  
के लिये खेतवाला बैठता है।

पाडर, पाडल-संज्ञा पुं० पाडर का  
पेड़।

पाणि-संज्ञा पुं० हाथ। कर।

पाणिग्रहण-संज्ञा पुं० विवाह की  
एक रीति जिसमें कन्या का पिता  
उसका हाथ वर के हाथ में देता है।

पाणिज-संज्ञा पुं० १. हँगली। २.  
नख। नाखन।

पाणिनि-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मुनि  
जो ईसा से प्रायः तीन-चार सौ  
वर्ष पूर्व हुए थे और जिन्होंने अष्टा-  
ध्यायी नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ  
की रचना की थी।

पाणी-संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पातंजल-वि० पतंजलि का बनाया  
हुआ (योगसूत्र या व्याकरण महा-  
भाष्य)।

संज्ञा पुं० १. पतंजलि-कृत योगसूत्र।  
२. पतंजलि-प्रणीत महाभाष्य।

पात-संज्ञा पुं० १. गिरने या पिराने  
की क्रिया या भाव। पतन। २.  
नाश। ध्वंस। मृत्यु। ३. खगोल  
में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ

परोरना-कि० स० मंत्र पढ़कर  
फूंकना ।

परोल-संज्ञा पुं० सैनिकों का संकेत  
का शब्द जिसके बोलने से पदों पर  
के सिपाही बोलनेवाले को आने या  
जाने से नहीं रोकते ।

परसना-कि० स० दे० "परसना" ।

परसा-संज्ञा पुं० एक मनुष्य के  
छाने भर का भोजन जो कहीं भोजा  
जाता है ।

परौहून-संज्ञा पुं० वह जिस पर कोई  
सवार हो, या कोई चीज़ छादी  
जाय ।

पर्जक-संज्ञा पुं० दे० "पर्जक" ।

पर्जन्य-संज्ञा पुं० बादल ।

पर्य-संज्ञा पुं० बड़ का पत्ता ।

पर्यकुटी-संज्ञा स्त्री० भोतपड़ी ।

पर्यशाला-संज्ञा स्त्री० दे० "पर्यकुटी" ।

पर्य-संज्ञा पुं० घृष ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की अप्सराएँ ।

पत-संज्ञा स्त्री० दे० "पात" ।

पर्दा-संज्ञा पुं० दे० "परदा" ।

पर्पट-संज्ञा पुं० १. पित्तगण्ड । २.  
पापड़ ।

पर्पटी-संज्ञा स्त्री० सौराष्ट्र देश की  
मिठी ।

पर्पटी रस-संज्ञा पुं० वैद्यक में एक  
प्रकार का रस ।

पर्यक-संज्ञा पुं० पलंग ।

पर्यंत-अव्य० तक ।

पर्यटन-संज्ञा पुं० भ्रमण ।

पर्यवसान-संज्ञा पुं० [ वि० पर्यवसित ]

१. अंत । २. शामिल हो जाना ।

३. ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना ।

पर्याप्त-वि० १. पूरा । २. प्राप्त । ३.  
समर्थ ।

पर्याय-संज्ञा पुं० १. समानार्थवाची  
शब्द । २. क्रम ।

पर्यालोचना-संज्ञा स्त्री० पूरी जांच-  
पड़ताल ।

पर्युपासक-संज्ञा पुं० सेवक ।

पर्युपासन-संज्ञा पुं० सेवा ।

पर्व-संज्ञा पुं० १. पुण्यकाल । २.  
पर्व । ३. अवसर । ४. वरसव ।  
५. हिस्सा ।

पर्वकाल-संज्ञा पुं० वह समय जब  
कि कोई पर्व हो ।

पर्वणी-संज्ञा स्त्री० पूणिमा ।

पर्वत-संज्ञा पुं० १. पहाड़ । २. किसी  
चीज़ का बहुत ऊँचा डेर ।

पर्वतनन्दिनी-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।

पर्वतराज-संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा  
पहाड़ । २. हिमालय पर्वत ।

पर्वतारि-संज्ञा पुं० ईद्र ।

पर्वती-वि० दे० "पर्वतीय" ।

पर्वतीय-वि० १. पहाड़ी । २. पहाड़  
पर रहने, होने या बसनेवाला ।

पर्वतेश्वर-संज्ञा पुं० हिमालय ।

पर्वर-संज्ञा पुं० दे० "परवल" ।

वि० दे० "परवर" ।

पर्वरिशु-संज्ञा स्त्री० पाञ्चन-पोषण ।

पर्वसंधि-संज्ञा स्त्री० १. पूणिमा  
अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के  
बीच का समय । २. सूर्य अथवा  
चंद्रमा के ग्रहण लगने का समय ।

पर्विणी-संज्ञा स्त्री० दे० "पर्व" ।

पर्वज्ञ-संज्ञा पुं० १. रोग आदि के  
समय अपथ्य वस्तु का त्याग । २.  
अलग रहना ।

पलंका-संज्ञा स्त्री० बहुत दूर का  
स्थान ।

क्रांतिवृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे आती हैं।

० संज्ञा पुं० पत्ता। पत्र।

पातक-संज्ञा पुं० वह कर्म जिसके करने से नरक जाना पड़े। पाप। गुनाह।

पातकी-वि० पातक करनेवाला। पापी। कुकर्मि।

पातरां-संज्ञा स्त्री० पत्तल।

संज्ञा स्त्री० चेरया। रंडी।

पातशाह-संज्ञा पुं० दे० "पादशाह"।

पातापा-संज्ञा पुं० पैरों में पहनने का मोटा।

पाताल-संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ। २. पृथ्वी से नीचे के लोक।

पातिमत्त, पातिमत्त-संज्ञा स्त्री० पति-प्रता होने का भाव।

पाती-संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी। पत्र। २. वृत्त के पत्रे।

पातुरा-संज्ञा स्त्री० चेरया।

पात्र-संज्ञा पुं० १. जिसमें कुछ रखा जा सके। आधार। घरतन। भाजन। २. वह जो किसी विषय का अधिकारी हो; जैसे, दानपात्र। ३. नाटक के नायक, नायिका आदि। ४. अग्निपेता।

पात्रता-संज्ञा स्त्री० पात्र होने का भाव। योग्यता।

पाथ-संज्ञा पुं० १. जल। २. सूँ। ३. अग्नि। ४. अक्ष। ५. आकाश। ६. वायु।

पाथना-कि० सं० १. सुढौल करना। २. थोप, पीट या दबाकर बड़ी बड़ी टिकिया या पट्टी बनाना।

पाथरा-संज्ञा पुं० दे० "पथर"।

पाथोज-संज्ञा पुं० कमल।

पाथोधि-संज्ञा पुं० समुद्र।

पाद-संज्ञा पुं० १. चरण। पैर। पाँव।

२. श्लोक या पद्य का चतुर्थान्न। पद। चरण। ३. चौथा भाग। चौथाई।

संज्ञा पुं० वह वायु जो शुद्धा के मार्ग से निकले। अपानवायु। अधो-वायु। गोख।

पादतल-संज्ञा पुं० पैर का तलवा।

पादत्र, पादत्राण-संज्ञा पुं० १.

खड़ाऊँ। २. जूता।

पादप-संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।

पादपीठ-संज्ञा पुं० पीठा।

पादपूरण-संज्ञा पुं० श्लोक या कविता के किसी चरण को पूरा करना।

पाद्री-संज्ञा पुं० ईसाई-धर्म का पुरोहित जो अन्य ईसाइयों का जातकर्म आदि संस्कार और उपसना कराता है।

पादशाह-संज्ञा पुं० दे० "पादशाह"।

पादाक्रांत-वि० पदद्वित। पैर से कुचला हुआ। पामाल।

पादाति, पादातिक-संज्ञा पुं० पैदल सिपाही।

पादुका-संज्ञा स्त्री० खड़ाऊँ।

पादोदक-संज्ञा पुं० १. वह जल जिसमें पैर धोया गया हो। २.

चरणामृत।

पाद्य-संज्ञा पुं० वह जल जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायें।

पाथार्थ-संज्ञा पुं० १. पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २. पूजा की सामग्री।

पलंग-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० पलंगी ]  
थरही और घड़ी चारपाई । पर्यंक ।

पलंगपोश-संज्ञा पुं० पलंग पर बिछाने  
की चादर ।

पलंगिया-संज्ञा स्त्री० छोटा पलंग ।

पल-संज्ञा पुं० १. घड़ी या दंड का  
५० वाँ भाग । २. पलक । ३. चण ।

पलक-संज्ञा स्त्री० १. चण । २. अस्त्र  
के ऊपर का चमड़े का परदा ।

पलक-दरिया-वि० बहुत थड़ा  
दानी ।

पलकनेवाजा-वि० दे० "पलक-  
दरिया" ।

पलका-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पलकी ]  
पलंग ।

पलटन-संज्ञा स्त्री० १. अंगरेजी पैदल  
सेना का एक विभाग । २. दल ।

पलटना-क्रि० अ० १. उलट जाना ।  
( कथ० ) २. परिवर्तन होना ।

३. धूमना ।  
क्रि० स० १. उलटना । २. वापस  
करना ।

पलटनिया-संज्ञा पुं० सिपाही ।

पलटा-संज्ञा पुं० १. परिवर्तन । २.  
थदला ।

पलटाना-क्रि० स० १. लौटाना ।  
२. पदलना ।

पलड़ा-संज्ञा पुं० तराजू का पछा ।

पलथी-संज्ञा स्त्री० वह आसन जिसमें  
दाहिने पैर का पंजा बाएँ और

बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्टे के  
नीचे दबाकर बैठते हैं ।

पलना-क्रि० अ० १. पाला-पोसा  
जाना । २. खा-पीकर हट-पुट होना ।  
संज्ञा पुं० दे० "पालना" ।

पलनाना-क्रि० स० घोड़े पर ज़ोन  
कसकर उसे चलने के लिये तैयार  
करना ।

पलचा-संज्ञा पुं० चुल्हा ।

पलघाना-क्रि० स० किसी से पालन  
कराना ।

पलघैया-संज्ञा पुं० पालक ।

पलस्तर-संज्ञा पुं० छेत ।

पलहना-क्रि० अ० कहलहाना ।

पलहा-संज्ञा पुं० कोपल ।

पलांडु-संज्ञा पुं० प्याज़ ।

पला-संज्ञा पुं० पल ।  
संज्ञा पुं० १. तराजू का पलड़ा ।  
२. किनारा ।

पलान-संज्ञा पुं० वह गद्दी या चार-  
जामा जो जानवरों की पीठ पर  
छादने या चढ़ने के लिये कसा  
जाता है ।

पलानना-क्रि० स० १. घोड़े आदि  
पर पलान कसना । २. चढ़ाई की  
तैयारी करना ।

पलाना-क्रि० अ० भागना ।  
क्रि० स० भगाना ।

पलायन-संज्ञा पुं० भागना ।

पलायित-वि० भागा हुआ ।

पलाश-संज्ञा पुं० १. पलास । २.  
पत्ता । ३. राचस ।

वि० मांसाहारी ।

पलाशी-वि० मांसाहारी ।  
संज्ञा पुं० राचस ।

पलास-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वृक्ष  
जो चुप, लता और वृक्ष—इन तीन  
रूपों में पाया जाता है । २. ढाक ।

पलित-वि० [ स्त्री० पलिता ] १. घृष्ट ।  
२. पका हुआ या सफेद (बाढ) ।

संज्ञा पुं० १. सिर के बालों का

हिंडोला । पिंघूरा । गहवारा ।

पाला-संज्ञा पुं० हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह जो पृथ्वी के बहुत रेंडे हो जाने पर उस पर सफेद सफेद जम जाती है । हिम ।

पालागन-संज्ञा स्त्री० प्रणाम । दंड-वत् । नमस्कार ।

पालित-वि० पाला हुआ । रक्षित ।

पाली-संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं और जिसका पठन-पाठन स्याम, यरमा, सिंदल आदि देशों में वसी प्रकार होता है जिस प्रकार भारत-वर्ष में संस्कृत का ।

पालू-वि० पाखतू ।

पाय-संज्ञा पुं० वह थंग जिससे चलते हैं । पैर ।

पायंडा-संज्ञा पुं० वह कपड़ा या बिछौना जो आदर के लिये किसी के मार्ग में बिछाया जाता है । पायें-दाज ।

पाय-संज्ञा पुं० १. चौथाई । चतुर्थ भाग । २. एक सेर का चौथाई भाग । चार छटाक का भाग ।

पायक-संज्ञा पुं० अग्नि । आग ।

पावदान-संज्ञा पुं० पैर रखने के लिये बना हुआ स्थान या वस्तु ।

पावन-वि० १. पवित्र करनेवाला । २. पवित्र । शुद्ध । पाक ।

संज्ञा पुं० १. अग्नि । २. प्रायश्चित्त । शुद्धि । ३. जल । ४. गोबर । ५. रुद्राक्ष । ६. व्यास का एक नाम । ७. विष्णु ।

पावनता-संज्ञा स्त्री० पवित्रता ।

पावना-संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक । लहना । २. वह रुपया जो दूसरे से पाना हो ।

पावसा-संज्ञा स्त्री० वर्षा-काल । धर-सात ।

पावार्-संज्ञा पुं० दे० "पाया" । संज्ञा पुं० गोरखपुर जिले का एक प्राचीन गाँव जो वैशाली से पश्चिम है ।

पाश-संज्ञा पुं० १. रस्सी, तार आदि से सरकनेवाली गाँठों आदि के द्वारा बन्धायी हुआ घेरा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और कभी कभी बंधन के अधिक कसकर बँध जाने से मर भी जाता है । फँदा । फँस । २. पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फँदा । ३. बंधन । फँसानेवाली वस्तु ।

पाशक-संज्ञा पुं० पासा । चौपड़ ।

पाशा-संज्ञा पुं० तुर्की सरदारों की उपाधि ।

पाशुपत-संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक । २. शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र । ३. अथर्व वेद का एक उपनिषद् ।

पाशुपत दर्शन-संज्ञा पुं० एक सांप्र-दायिक दर्शन जिसका ब्रह्मेल सत्त्व-दर्शन-संग्रह में है । नकुलीश पाशु-पत दर्शन ।

पाशुपतास्त्र-संज्ञा पुं० शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचंड था ।

पाश्चात्य-वि० १. पीछे का पिछला । २. पश्चिम दिशा का ।

पापंढ-संज्ञा पुं० १. वेदविरुद्ध आ-चरण करनेवाला । मूढ़ मत मानने-वाला । २. लोगों को ठगने के लिये साधुओं का सा रूप-रंग बनाने-

वाला । धर्मध्वजी । ढोंगी ।

पापंडी-वि० १. चेदविच्छेद मत और  
आचरण ग्रहण करनेवाला । २. धर्म  
आदि का झूठा आडंबर सजा करने-  
वाला । ढोंगी । धूर्त ।

पापाय-संज्ञा पुं० पर्यार । प्रखर ।

पासंग-संज्ञा पुं० तराजू की डंडी  
को घराघर करने के लिये बड़े हुए  
पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ ।  
पसंघा ।

पास-संज्ञा पुं० १. गगल । ओर ।  
तरफ़ । २. सामीप्य । निकटता ।  
समीपता । ३. अधिकार । कब्ज़ा ।  
रक्षा । पट्टा । ( केवल 'के', 'में'  
और 'से' चिह्नियों के साथ । )  
अव्य० निकट । समीप । नजदीक ।

पासनी-संज्ञा स्त्री० बच्चे को पहले  
पहल अनाज खटाने की रीति ।  
अन्नप्राशन ।

पासवर्त्ती-वि० दे० "पारवर्त्ती" ।

पासा-संज्ञा पुं० हाथीदाँत या हड्डी  
के छः पहले टुकड़े जिनके पहलों  
पर विदिमा बनी होती है और  
जिनसे चौसर खेलते हैं ।

पासी-संज्ञा पुं० १. जाल या फंदा  
छालकर चिड़िया पकड़नेवाला । २.  
एक नीच और अस्पृश्य जाति ।  
संज्ञा स्त्री० १. फंदा । फाँस । पाय ।  
फाँसी । २. घोड़े के पैर बाँधने की  
रस्ती । पिछाड़ी ।

पासुरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पसली" ।

पाहँ-अव्य० निकट । समीप । पास ।

पाहन-संज्ञा पुं० पर्यार ।

पाहुरा-संज्ञा पुं० पहरा देनेवाला ।  
पहरदार ।

पाहिँ-अव्य० १. पास । निकट ।

समीप । २. किसी के प्रति । किसी से ।

पाहि-एक संस्कृत पद जिसका अर्थ  
है "रक्षा करो" या "बचाओ" ।

पाहुना-संज्ञा पुं० १. अतिथि । मेह-  
मान । अभ्यागत । २. दामाद ।  
जामाता ।

पाहुनी-संज्ञा स्त्री० १. स्त्री-अतिथि ।  
अभ्यागत स्त्री । मेहमान औरत ।  
२. आतिथ्य । मेहमानदारी ।

पाहुरा-संज्ञा पुं० १. भेंट । नज़र ।  
२. सौगात ।

पिंग-वि० १. पीला । पीलापन लिए  
भूरा । २. भूरापन लिए जाल ।  
तामड़ा । ३. सुँघनी रंग का ।

पिंगल-वि० १. पीला । पीत । २.  
भूरापन लिए जाल । तामड़ा । ३.  
भूरापन लिए पीला । सुँघनी रंग का ।  
संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन मुनि जो  
छंदःशास्त्र के आदि आचार्यों माने  
जाते हैं । २. छंदःशास्त्र । ३. चंद्र ।  
कवि ।

पिंगला-संज्ञा स्त्री० १. हठयोग और  
तंत्र में जो तीन प्रधान नादियों मानी  
गई हैं, उनमें से एक । २. लक्ष्मी  
का नाम ।

पिंजड़ा-संज्ञा पुं० दे० "पिंजरा" ।

पिंजर-वि० १. पीला । पीतवर्ण का  
२. भूरापन लिए जाल रंग का ।

संज्ञा पुं० १. पिंजड़ा । २. शरीर  
के भीतर का हड्डियों का ठहर ।  
पंजर । ३. सेना । ४. भूरापन  
लिए जाल रंग का घोड़ा ।

पिंजरापोल-संज्ञा पुं० वह स्थान  
जहाँ पालने के लिये गाय, बैल आदि



पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगावे ।

पूआ-संज्ञा पुं० एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुद्द या चीनी के रस में घोलकर धी में छानी जाती है ।

पूग-संज्ञा पुं० सुपारी का पेड़ या फल ।

पूगी-संज्ञा स्त्री० सुपारी ।

पूगीफल-संज्ञा पुं० सुपारी ।

पूछ-संज्ञा स्त्री० १ पूछने का भाव ।  
२. खोज । ३. आदर ।

पूछ-ताछ-संज्ञा स्त्री० किसी बात का पता लगाने के लिये बार बार पूछना ।

पूछना-क्रि० स० १. जिज्ञासा करना ।  
२. खोज-ख़बर लेना । ३. आदर करना ।

पूछ-पाछ-संज्ञा स्त्री० दे० "पूछ-साछ" ।  
पूछाताछी, पूछापाछी-संज्ञा स्त्री० दे० "पूछताछ" ।

पूजन-संज्ञा पुं० [ वि० पूजक, पूजनीय, पूजितव्य, पूज्य ] १. पूजा की क्रिया ।  
आराधना । २. आदर ।

पूजना-क्रि० स० १. आराधन करना ।  
२. आदर-सत्कार करना । ३. रिश-वत देना ।

क्रि० भ० १. पूरा होना । २. समाप्त होना ।

पूजनीय-वि० १. पूजने योग्य । २. आदरणीय ।

पूजा-संज्ञा स्त्री० १. आराधन । २. आदर-सत्कार ।

पूजित-वि० [ स्त्री० पूजिता ] जिसकी पूजा की गई हो ।

पूज्य-वि० [ स्त्री० पूज्या ] १. पूजा के योग्य । २. आदर के योग्य ।

पूज्यपाद-वि० अत्यंत मान्य ।

पूड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "पूरी" ।

पूत-वि० पवित्र ।

संज्ञा पुं० बेटा ।

पूतना-संज्ञा स्त्री० एक दानवी जो कंस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल आई थी ।  
इसे कृष्ण ने मार डाला था ।

पूतरा-संज्ञा पुं० दे० "पुतरा" ।

संज्ञा पुं० पुत्र ।

पूनी-संज्ञा स्त्री० धुनी हुई रुई, की वह धसी जो चारखे पर सूत कातने के लिये सैयार की जाती है ।

पूर-वि० १. दे० "पूर्ण" । २. वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरे जाते हैं ।

पूरक-वि० पूरा करनेवाला ।

पूरण-संज्ञा पुं० [ वि० पूरणीय ] १. भरने की क्रिया । २. समाप्त या समाप्त करना । ३. धंडो का गुणा करना ।

वि० पूरा करनेवाला ।

पूरनपूरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मीठी कचौरी ।

पूरनमासी-संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी" ।

पूरना-क्रि० स० १. पूरित करना ।

२. सिद्ध करना । ३. चौक बनाना ।

क्रि० भ० भर जाना ।

पूरय-संज्ञा पुं० वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है ।

पूरवला-संज्ञा पुं० १. पुराना ज़माना । २. पूर्वजन्म ।

पूरवला-वि० पुं० [ स्त्री० पूरवली ]

१. पुराना । २. पहले जन्म का ।

पूरवी-वि० दे० "पूर्वी" ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा ।

( बिहार )

पूरा-वि० पुं० [ स्त्री० पूरी ] १. भरा ।

चौपाये रखे जाते हैं। पशुशाला।  
गोशाला।

पिंड-संज्ञा पुं० १. गोल-मटोल टुकड़ा।  
गोळा। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा।  
३. ढेर। राशि। ४. पके हुए चावल  
आदि का गोल लोटा जो आद में  
पितरों को अर्पित किया जाता है।  
५. शरीर। देह।

पिंडज-संज्ञा पुं० गर्भ से सजीव निक-  
लने वाला जंतु।

पिंडदान-संज्ञा पुं० पितरों को पिंड  
देने का कर्म जो आद में किया  
जाता है।

पिंडरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पिंडरोग-संज्ञा पुं० १. वह रोग जो  
शरीर में घर किए हो। २. कोढ़।

पिंडली-संज्ञा स्त्री० टांग का ऊपरी  
पिछला भाग जो मांसल होता है।

पिंडवाही-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
कपड़ा।

पिंडारी-संज्ञा पुं० दक्षिण की एक  
जाति जो पहले खेती करती थी,  
पीछे अक्सर पाकर छूट-मार करने  
लगी।

पिंडिया-संज्ञा स्त्री० गीली भुरभुरी  
वस्तु का मुट्ठी से बांधा हुआ लंबा-  
सरा टुकड़ा।

पिंडी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा डेला या  
लोटा। २. वेदी, जिस पर बलिदान  
किया जाता है। ३. सूत, रस्सी  
आदि का गोल बच्छा।

पिंश-वि० संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।

पिंशरई-संज्ञा स्त्री० पीलापन।

पिंशरी-संज्ञा स्त्री० पीले रंग की  
घोती जो विवाह आदि में पहनी  
जाती है।

पिउ-संज्ञा पुं० पति।

पिक-संज्ञा पुं० कोयल।

पिघलना-कि० भ० १. द्रवीभूत होना।  
२. पसीजना।

पिघलाना-कि० स० १. किसी चीज  
को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में  
लाना। २. किसी के मन में दया  
उत्पन्न करना।

पिचकना-कि० भ० किसी फूले या  
उभरे हुए तल का दथ जाना।

पिचकाना-कि० स० फूले या उभरे  
हुए तल को दथाना।

पिचकारी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल  
या किसी दूसरे तरल पदार्थ को  
ज़ोर से किसी ओर फेंकने में होता है।

पिचकी-संज्ञा स्त्री० दे० "पिच-  
कारी"।

पिच्छल-वि० चिकना। रपटनेवाला।

पिच्छल-वि० [ स्त्री० पिच्छला ] १.  
गीला और चिकना। २. किसलने-  
वाला।

पिछड़ना-कि० भ० पीछे रह जाना।

पिछलगा-संज्ञा पुं० १. वह मनुष्य  
जो किसी के पीछे चले। २. नौकर।

पिछला-वि० [ स्त्री० पिछली ] १.  
पीछे की ओर का। २. धीटा हुआ।

पिछवाड़ा-संज्ञा पुं० १. किसी मकान  
का पीछे का भाग। २. घर के  
पीछे का स्थान या ज़मीन।

पिछाड़ी-संज्ञा स्त्री० पिछला भाग।

पिछौहों-कि० वि० पीछे की ओर।

पिछौरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पिछौरी ]  
ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

पिंटत-संज्ञा स्त्री० पीटने की क्रिया

२. बहुत । ३. तुष्ट ।

पूरित-वि० १. भरा हुआ । २. तृप्त ।

३. गुणित ।

पूरी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध पकवान जिसे रोटी की तरह बेलकर लौलते घी में छान लेते हैं । २. मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मड़ा हुआ गोल चमड़ा ।

पूर्ण-वि० १. पूरा । २. परितृप्त । ३. समूचा । ४. सारा । ५. समाप्त ।

पूर्णता-संज्ञा स्त्री० पूर्ण होना ।

पूर्णमासी-संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा ।

पूर्ण विराम-संज्ञा पुं० लिपि-प्रणाली में वह चिह्न जो वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाता है ।

वि० सौ वर्ष तक जीनेवाला ।

पूर्णावतार-संज्ञा पुं० ईश्वर या किसी देवता का संपूर्ण कलाशेषों से युक्त अवतार ।

पूर्णाहुति-संज्ञा स्त्री० १. वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं ।

२. किसी कर्म की समाप्ति की क्रिया ।

पूर्णिमा-संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी ।

प्रातः-संज्ञा स्त्री० १. किसी आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति । २. पूर्णता ।

पूर्व-संज्ञा पुं० वह दिशा जिस ओर सूर्य निकलता हुआ दिखलाई देता है ।

वि० १. पहले का । २. आगे का ।

३. पुराना ।

क्रि० वि० पहले ।

पूर्वक-क्रि० वि० साथ ।

पूर्वकालिक-वि० १. जिसकी उत्पत्ति

या जन्म पूर्व काल में हुआ हो । २.

पूर्व काल-संबंधी ।

पूर्वकालिक क्रिया-संज्ञा स्त्री० वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो ।

पूर्वज-संज्ञा पुं० १. बड़ा भाई । २. पुरखा ।

पूर्वजन्म-संज्ञा पुं० वर्तमान से पहले का जन्म ।

पूर्व पक्ष-संज्ञा पुं० १. शास्त्रीय विषय के संबंध में ठाई हुई बात, प्रश्न या शंका । २. कृष्ण पक्ष । ३. सुहई का हावा ।

पूर्वपक्षी-संज्ञा पुं० १. वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे । २. वह जो दावा दायर करे ।

पूर्वफाल्गुनी-संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र ।

पूर्वभाद्रपद-संज्ञा पुं० २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वमीमांसा-संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का जैमिनि-कृत एक दर्शन जिसमें कर्म-कांड-संबंधी बातों का निर्णय किया गया है ।

पूर्वराग-संज्ञा पुं० साहित्य में नायक अथवा नायिका की एक अवस्था जो दोनों का संयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है ।

पूर्वरूप-संज्ञा पुं० १. वह आकार जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो ।

२. आगमसूचक लक्षण ।

पूर्ववत्-क्रि० वि० पहले की तरह । संज्ञा पुं० किसी कार्य का वह अनुमान जो उसके कारण को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाय ।

या भाव ।

पिटना-कि० अ० मार खाना ।

†संज्ञा पुं० धापी ।

पिटार्ह-संज्ञा स्त्री० १. पीटने का काम या भाव । २. प्रहार । ३. पीटने की मजदूरी ।

पिटारा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पिठारी] बाँस, बरत, मृत्त आदि के गरम छिन्नको से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा ढकनेदार पात्र ।

पिटू-संज्ञा पुं० १. पीछे चलनेवाला । २. सहायक ।

पिठारी-संज्ञा स्त्री० पीठी की यनी हुई शरी या पकौड़ी ।

पितम्बर-संज्ञा पुं० दे० "पीताम्बर" ।

पितर-संज्ञा पुं० मृत पूर्वपुरुष । भरे हुए पुरखे जिनका भाव किया जाता है ।

पिता-संज्ञा पुं० धाप । जनक ।

पितामह-संज्ञा पुं० [स्त्री० पितामही] १. पिता का पिता । २. गीष्म ।

पितृ-संज्ञा पुं० १. दे० "पिता" । २. किसी व्यक्ति के मृत धाप, दादा, परदादा आदि । ३. किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व मृत चुका हो ।

पितृतर्पण-संज्ञा पुं० पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जलदान ।

पितृपक्ष-संज्ञा पुं० १. कुँभार की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय । २. पिता के संबंधी ।

पितृपद-संज्ञा पुं० पितरों का शोक ।

पितृव्य-संज्ञा पुं० चाचा ।

पित्त-संज्ञा पुं० एक तरह का पदार्थ जो शरीर के अंतर्गत मूत्र में बनता है ।

पित्तज्वर-संज्ञा पुं० वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो ।

पित्ताशय-संज्ञा पुं० पित्त की थैली जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है ।

पित्ती-संज्ञा स्त्री० १. एक रोग जिसमें शरीर भर में छोटे छोटे बंदारे पड़ जाते हैं । २. खाल महीन दाने जो गरमी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं ।

पित्त-वि० पितृ संबंधी ।

पिद्दी-संज्ञा पुं० १. एक छोटी चिड़िया ।

२. बहुत ही तुच्छ और अगण्य जीव ।

पिधान-संज्ञा पुं० १. पर्दा । २. ढकना ।

पिनकना-कि० अ० १. पीतक लेना ।

२. ऊँघना ।

पिनपिना-संज्ञा स्त्री० धीमी और धानुनासिक आवाज में रोना ।

पिनपिनाना-कि० अ० १. रोते समय माँ से स्तर निकालना । २. रोपी अथवा कमजोर बच्चे का रोना ।

पिनाक-संज्ञा पुं० अनुप ।

पिनाकी-संज्ञा पुं० शिथ ।

पिशी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई, जो आटे में चीनी मिलाकर बनाई जाती है ।

पिपासा-संज्ञा स्त्री० १. व्यास । २. खालच ।

पिपीलिका-संज्ञा स्त्री० चूँटी ।

पिप्पल-संज्ञा पुं० पीपल ।

पिप्पली-संज्ञा स्त्री० पीपल ।

पियं-संज्ञा पुं० पति ।

पियरानी-संज्ञा स्त्री० पीलापन ।

पियराना-कि० अ० पीला पड़ना ।

पूर्ववर्ती-वि० पहले का ।

पूर्ववृत्त-संज्ञा पुं० इतिहास ।

पूर्वानुराग-संज्ञा पुं० वह प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होता है ।

पूर्वापर-कि० वि० आगे-पीछे ।

वि० अगला और पिछला ।

पूर्वाफालगुनी-दे० "पूर्वफालगुनी" ।

पूर्वाभाद्रपद-दे० "पूर्वभाद्रपद" ।

पूर्वाक्ष-संज्ञा पुं० पहला आधा भाग ।

पूर्वापादा-संज्ञा स्त्री० २० नक्षत्रों में चौथवां नक्षत्र जिसमें चार तारे हैं ।

पूर्वाह्न-संज्ञा पुं० सवेरे से दुपहर तक का समय ।

पूर्वी-वि० पूर्व दिशा से संबंध रखने-वाला ।

पूला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० पूरी ] मूँज आदि का रेंधा हुआ मुट्ठा ।

पूषण-संज्ञा पुं० सूर्य ।

पूषा-संज्ञा पुं० दे० "पूषण" ।

पूस्-संज्ञा पुं० वह चांद्र मास जो अगहन के बाद पड़ता है । पौष ।

पृच्छक-वि० पूछनेवाला ।

पृथक्-वि० [ संज्ञा पृथक् ] भिन्न ।

पृथक्करण-संज्ञा पुं० अलग करने का काम ।

पृथिवी-संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी" ।

पृथु-वि० १. बीड़ा । २. बड़ा ।

संज्ञा पुं० राजा वेणु के पुत्र का नाम ।

पृथुता-संज्ञा स्त्री० १. पृथु होने का भाव । २. विस्मय ।

पृथ्वी-संज्ञा स्त्री० १. भूमि । क्षमीन ।

२. मिट्टी ।

पृथ्वीतल-संज्ञा पुं० १. क्षमीन की सतह । २. संसार ।

पृष्ट-वि० पूछा हुआ ।

पृष्ट-संज्ञा पुं० १. पीठ । २. पीछे का भाग । ३. पुस्तक के पत्रों का एक ओर का तल । ४. पन्ना ।

पृष्टपोषक-संज्ञा पुं० १. पीठ ठोंकने-वाला । २. सहायक ।

पैंग-संज्ञा स्त्री० मूले का मूलतः समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना ।

पेंडुकी-संज्ञा स्त्री० १. पेंडुक, पची । २. सुनारों की कुँकनी ।

पेंदा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० पेंदी ] तला ।

पेखना-कि० सं० देखना ।

पेच-संज्ञा पुं० १. घुमाव । २. भ्रम । ३. चालाकी । ४. यंत्र । ५. मशीन का पुरजा । ६. कुरती का दाँव । ७. युक्ति ।

पेचक-संज्ञा स्त्री० बटे हुए तारों की गोली या गुच्छी ।

पेचकश-संज्ञा पुं० बड़हूयों और लोहारों आदि का वह औज़ार जिससे वे लोग पेच बढ़ते अथवा निकालते हैं ।

पेचदार-वि० १. जिसमें कोई पेच या कल हो । २. दे० "पेचीका" ।

पेचवान-संज्ञा पुं० १. बड़ी सटक जो फूलों या गुद्गुदी में छगाई जाती है । २. बड़ा हुआ ।

पेचा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पेची ] दस्त-पची ।

पेचिश-संज्ञा स्त्री० पेट की वह पीड़ा जो अथि होने के कारण होती है ।

पेचीदा-वि० [ संज्ञा पेचीदा ] १. जिसमें पेच हो । २. जो टेढ़ा-मेढ़ा और कठिन हो ।

पियरी-वि० स्त्री० दे० "पीली" ।  
 पिया-संज्ञा पुं० दे० "पिय" ।  
 पियार-संज्ञा पुं० महुए की तरह का ममोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों की गिरी चिरीजी कहलाती है ।  
 †वि० दे० "प्यारा" ।  
 † संज्ञा पुं० दे० "प्यार" ।  
 पियूख-संज्ञा पुं० दे० "पीयूष" ।  
 पिरकी-संज्ञा स्त्री० फुंसी ।  
 पिरखी-संज्ञा स्त्री० दे० "पृष्ठी" ।  
 पिराऊ-संज्ञा पुं० शोक्रिया । एक प्रकार का एकवान ।  
 पिराना-वि० अ० १. दुखना । २. दुःख समझना ।  
 पिरिता-वि० प्यारा ।  
 पिरौना-क्रि० स० १. गूथना । २. ताने आदि को छेद में डालना ।  
 पिलना-क्रि० अ० किसी थोर को एकपारगी दूट पड़ना ।  
 पिलपिला-वि० भीतर से गिला और गरम ।  
 पिलपिलाना-क्रि० स० रसदार या गूदेदार वस्तु को दबाना जिससे रस या गूदा बीजा होकर बाहर निकले ।  
 पिलाना-क्रि० स० १. पीने का काम दूसरे से कराना । २. पीने को देना ।  
 पिल्ला-संज्ञा पुं० कुत्ते का बच्चा ।  
 पिल्लू-संज्ञा पुं० एक सफेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है ।  
 पिघ-संज्ञा पुं० दे० "पिय" ।  
 पिशाच-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पिशाची ] भूत ।  
 पिशुन-संज्ञा पुं० चुगलखोर ।  
 पिष्ट-वि० पिसा हुआ ।

पिष्टपेषण-संज्ञा पुं० १. पिसे हुए को पीसना । २. कही हुई बात को फिर फिर कहना ।  
 पिसनहारी-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो ।  
 पिसना-क्रि० अ० १. घूरना होना । २. पिसकर तैयार होना । ३. दब जाना ।  
 पिसाई-संज्ञा स्त्री० १. पीसने की क्रिया या भाव । २. पीसने की मजदूरी ।  
 पिसाना-संज्ञा पुं० आटा ।  
 पिसौनी-संज्ञा स्त्री० पीसने का काम ।  
 पिस्ते-वि० पिस्ते के रंग का ।  
 पिस्ता-संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है ।  
 पिस्तौल-संज्ञा स्त्री० तमंचा ।  
 पिहकना-क्रि० अ० कोपल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना ।  
 पिहित-वि० छिपा हुआ ।  
 पीजना-क्रि० स० रुई धुनना ।  
 पी-संज्ञा पुं० दे० "पिय" ।  
 संज्ञा पुं० पपीहे की बोली ।  
 पीक-संज्ञा स्त्री० थूक से मिला हुआ पान का रस ।  
 पीकदान-संज्ञा पुं० उगालदान ।  
 पीकना-क्रि० अ० पिहकना ।  
 पीका-संज्ञा पुं० नया कोमल पत्ता ।  
 पीछा-संज्ञा पुं० १. किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग । २. पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना ।  
 पीछा-क्रि० वि० दे० "पीछे" ।  
 पीछे-अव्य० १. पीठ की ओर । पश्चात् ।

पेचीला-वि० दे० "पेचीदा" ।

पेट-संज्ञा पुं० १. शरीर में खैले के आकार का वह भाग जिसमें पहुँचकर भोजन पचता है । २. गर्भ । ३. श्रतःकरण ।

पेटक-संज्ञा पुं० १. पिटारा । २. समूह ।

पेटकैया-कि० वि० पेट के बख ।

पेटा-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ का मध्य भाग । २. ड्योरा । ३. वृत्त ।

पेटागि-संज्ञा स्त्री० भूख ।

पेटारा-संज्ञा पुं० दे० "पिटारा" ।

पेटिका-संज्ञा स्त्री० १. संदूक । २. छोटी पिटारी ।

पेटी-संज्ञा स्त्री० १. संदूकची । २. कमरबंद । ३. हज्जामों की किसमत जिसमें वे कैंची, छुरा आदि रखते हैं ।

पेटू-वि० जो बहुत अधिक खाता हो ।

पेठा-संज्ञा पुं० सफ़ेद कुम्हड़ा ।

पेड़-संज्ञा पुं० पृष्ठ ।

पेड़ा-संज्ञा पुं० छोटे की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई ।

पेड़ी-संज्ञा स्त्री० पेड़ का तना ।

पेड़-संज्ञा पुं० १. नामि और मूत्रत्रिय के बीच का स्थान । २. गर्भाशय ।

पेन्हाना-कि० स० दे० "पहनाना" ।  
कि० म० दुहते समय गाय, भैंस आदि के धन में दूध उतरना ।

पेय-वि० पीने योग्य ।

संज्ञा पुं० पीने की वस्तु ।

पेरना-कि० स० १. किसी वस्तु को इस प्रकार दवाना कि उसका रस निकल आये । २. कष्ट देना । ३. किसी काम में बहुत धैर लगाना ।

कि० स० १. भेरणा करना । २. भेजना ।

पेचना-कि० स० १. दबाकर भीतर

घुमाना । २. ढकेलना । ३. ज़र-दस्ती करना ।

कि० स० आगे बढ़ाना ।

पेला-संज्ञा पुं० १. तकरार । २. अपराध । ३. आक्रमण । ४. पेलने की क्रिया या भाव ।

पेश-कि० वि० सामने ।

पेशकार-संज्ञा पुं० हाकिम के सामने कागज़ पत्र पेश करनेवाला कर्मचारी ।

पेशगी-संज्ञा स्त्री० वह धन जो किसी को कोई काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय ।

पेशतर-कि० वि० पहले ।

पेशचंदी-संज्ञा स्त्री० पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति ।

पेशराज-संज्ञा पुं० पथर ढानेवाला मजदूर ।

पेशवा-संज्ञा पुं० १. नेता । २. महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि ।

पेशवाई-संज्ञा स्त्री० शेरगवानी ।

संज्ञा स्त्री० १. पेशवाओं की शासन-कला । २. पेशवा का पद या कार्य ।

पेशवाज-संज्ञा स्त्री० वेश्याओं या नर्तकियों का वह घाघरा जो वे नाचते समय पहनती हैं ।

पेशा-संज्ञा पुं० उद्यम । व्यवसाय ।

पेशानी-संज्ञा स्त्री० १. लज्जाट । २. किस्मत ।

पेशाव-संज्ञा पुं० मूत्र ।

पेशावर-संज्ञा पुं० किसी प्रकार का पेश करनेवाला । व्यवसायी ।

पेशी-संज्ञा स्त्री० १. हाकिम के सामने किसी मुकदमे के पेश होने की क्रिया ।

२. सामने होने की क्रिया या भाव ।

२. पीछे की ओर कुछ दूर पर । ३. अनेतर । ४. अंत में । ५. पीठ पीछे । ६. यदौलत ।

पीटना-कि० सं० मारना ।

पीठ-संज्ञा पुं० १. पीड़ा । २. तख्त । संज्ञा स्त्री० १. पीठ की दूसरी ओर का भाग । पिछाड़ो । घुछ । २. किसी वस्तु की बनावट का ऊपरी भाग ।

पीठा-संज्ञा पुं० दे० "पीड़ा" ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का पकवान ।

पीठी-संज्ञा स्त्री० पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल ।

पीड़क-संज्ञा पुं० पीड़ा देनेवाला ।

पीड़न-संज्ञा पुं० [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १. दयाना । २. पेरना । ३. दुःख देना ।

पीड़ा-संज्ञा स्त्री० वेदना ।

पीड़ित-वि० १. दुःखित । २. रोगी ।

पीड़ा-संज्ञा पुं० पाटा ।

पीड़ी-संज्ञा स्त्री० १. पुरत । २. संतान ।

संज्ञा स्त्री० छोटा पीड़ा ।

पीत-वि० पीला ।

संज्ञा पुं० पीला रंग ।

पीतता-संज्ञा स्त्री० पीलापन ।

पीतम-वि० दे० "प्रियतम" ।

पीतल-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो ताँबे और लस्ते के संयोग से बनती है ।

पीतवास-संज्ञा पुं० श्लोकृष्ण ।

पीतांबर-संज्ञा पुं० १. पीला कपड़ा । २. श्रीकृष्ण ।

पीनक-संज्ञा स्त्री० १. नशे की हालत में थाने की ओर झुक झुक पड़ना । २. ऊँचना ।

पीनता-संज्ञा स्त्री० मोटाई ।

पीनस-संज्ञा स्त्री० १. नाक का एक रोग । २. पालकी ।

पीना-कि० सं० १. पान करना । २. किसी बात को दबा देना । ३. धूस्रपान करना । ४. सोखना ।

पीप-संज्ञा स्त्री० मवाद ।

पीपर-संज्ञा पुं० दे० "पीपल" ।

पीपल-संज्ञा पुं० वरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो हिंदुओं में बहुत पवित्र माना जाता है ।

पीपलामूल-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध औषधि जो पीपलसता की जड़ है ।

पीपा-संज्ञा पुं० बड़े ढोल के आकार का काठ या लोहे का पात्र जिसमें मद्य, सेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं ।

पीप-संज्ञा पुं० दे० "पिप" ।

पीपूष-संज्ञा पुं० १. अमृत । २. दूध ।

पीर-संज्ञा स्त्री० १. पीड़ा । २. संहा-  
नुभूति ।

वि० [संज्ञा पीरो] १. वृद्ध । २. सिद्ध ।

पीरा-संज्ञा स्त्री० दे० "पीड़ा" ।

वि० दे० "पीला" ।

पीरी-संज्ञा स्त्री० १. मुड़ापा । २. गुरुवाई ।

पील-संज्ञा पुं० १. हाथी । २. शत-  
रंज का एक मोहरा । फौज ।

पीलपौध-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध रोग ।

पीलवान-संज्ञा पुं० दे० "फीलवान" ।

पीलसाज-संज्ञा पुं० दीया जलाने की दीपक ।

पीला-वि० [ स्त्री० पीली ] १. हल्दी, सोने या केसर के रंग का (पदार्थ) । २. क्रांतिहीन ।



संज्ञा स्त्री० शरीर के भीतर मांस की  
गुदयी या गठि ।

पेक्षर-क्रि० वि० पहले ।

पेयण-संज्ञा पुं० पीसना ।

पैजनी-संज्ञा स्त्री० कमर कमर बजनेवाला  
एक गहना जो पैर में पहना जाता है ।

पैठ-संज्ञा स्त्री० हाट ।

पैठारी-संज्ञा पुं० दुकान ।

पैड़-संज्ञा पुं० १. कदम । २. पंथ ।

पैड़ा-संज्ञा पुं० १. रास्ता । २. घुड़-  
साठ ।

पैता-संज्ञा स्त्री० पात्री ।

पैती-संज्ञा स्त्री० कुश का छेडा ।  
पवित्री ।

पैा-सम्य० १ पर । २. निश्चय ।  
३. पीछे । ४. पास । ५. प्रति ।

पैय-अधिकरण-सूचक एक विभक्ति ।  
पर ।

संज्ञा स्त्री० दोप ।

संज्ञा पुं० दे० "पय" ।

पैकरमा-संज्ञा स्त्री० दे० "परि-  
क्रमा" ।

पैकार-संज्ञा पुं० छोटा व्यापारी ।

पैखाना-संज्ञा पुं० दे० "पाखाना" ।

पैग'घर-संज्ञा पुं० मनुष्यों के पास  
ईश्वर का सँदेसा लेकर आनेवाला ।

पैज-संज्ञा स्त्री० प्रतिज्ञा ।

पैजामा-संज्ञा पुं० दे० "पायजामा" ।

पैजार-संज्ञा स्त्री० जूता ।

पैठ-संज्ञा स्त्री० १. प्रवेश । २. पहुँच ।

पैठना-क्रि० भ० घुसना ।

पैठारी-संज्ञा पुं० १. पैठ । २.  
फाटक ।

पैठारी-संज्ञा स्त्री० १. पैठ । २.  
पहुँच ।

पैड़ी-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी ।

पैतरा-संज्ञा पुं० चार करने का ठाट ।

पैतृक-वि० पुरखों का ।

पैदल-वि० जो पाँवों से चले ।

क्रि० वि० पैरों से ।

संज्ञा पुं० १. पार्श्व पार्श्व चलना । २.

पैदल सिपाही ।

पैदा-वि० १. उत्पन्न । २. प्रकट । ३.  
प्राप्त ।

पैसा स्त्री० आय ।

पैदाइश-संज्ञा स्त्री० उत्पत्ति ।

पैदाइशी-वि० १. जन्म का । २.  
स्वामाधिक ।

पैदाचार-संज्ञा स्त्री० उपज ।

पैना-वि० [ स्त्री० पैनी ] धारदार ।

संज्ञा पुं० १. हलवाहों की पैल हाँकने  
की छोटी लुढ़ी । २. लोहे का  
नुकीला बंद ।

पैमाइश-संज्ञा स्त्री० मापने की क्रिया  
या माप । माप ।

पैमाना-संज्ञा पुं० मापने का औज़ार  
या साधन ।

पैयाँ-संज्ञा स्त्री० पाँव ।

पैर-संज्ञा पुं० १. वह अंग जिससे  
प्राणी चलते-फिरते हैं । २. पूँछ  
आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न ।

पैर-गाड़ी-संज्ञा स्त्री० वह हलकी गाड़ी  
जो बड़े बड़े पैर दवाने से चलती है ।

पैरना-क्रि० भ० तैरना ।

पैरची-संज्ञा स्त्री० १. अनुगमन । २.  
कोशिश ।

पैरचीकार-संज्ञा पुं० पैरची करने-  
वाला ।

पैरा-संज्ञा पुं० १. पड़े हुए चरण ।

पीलापन-संज्ञा पुं० पीले होने का भाव ।

पीलिया-संज्ञा पुं० कमल रोग ।

पीलू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का काटि-दार वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग ।

पीव-संज्ञा पुं० पिय ।

पीघर-वि० [ स्त्री० पीघरा ] [ संज्ञा पीव-रता ] १. मोटा । २. भारी ।

पीघरी-संज्ञा स्त्री० १. युवती स्त्री । २. गाय ।

पीसना-क्रि० स० १. किसी वस्तु को आटे, बुकनी या धूल के रूप में करना । २. कुचल देना ।

संज्ञा पुं० पीसी जानेवाली वस्तु ।

पीहर-संज्ञा पुं० खियों का मायका ।

पुंगघ-संज्ञा पुं० बैल ।

वि० श्रेष्ठ ।

पुंगीफल-संज्ञा पुं० दे० "पूंगीफल" ।

पुछार-संज्ञा पुं० मयूर ।

पुछाछा-संज्ञा पुं० दे० "पुछछा" ।

पुंज-संज्ञा पुं० समूह ।

पुंढरीक-संज्ञा पुं० श्वेतकमल ।

पुंढरीकाक्ष-संज्ञा पुं० विष्णु ।

वि० जिसके नेत्र कमल के समान हों ।

पुंलिङ्ग-संज्ञा पुं० १. पुरुष का चिह्न ।

२. पुरुषवाचक शब्द ।

पुंश्चली-वि० स्त्री० व्यवसिचारिणी ।

पुंस्त्री-संज्ञा पुं० पुरुष ।

पुस्त्य-संज्ञा पुं० १. पुरुषत्व । २. वीर्य ।

पुत्रा-संज्ञा पुं० गीठे के रस में सवे हुए आटे की मोटी पूरी या टिकिया ।

पुत्राल-संज्ञा पुं० दे० "पयाल" ।

पुकार-संज्ञा स्त्री० १. हाँक । २. रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट । ३. नालिश ।

पुकारना-क्रि० स० १. नाम लेकर बुलाना । २. चिल्लाकर कहना ।

पुखर-संज्ञा पुं० तालाब ।

पुखराज-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीला रत्न ।

पुचकार-संज्ञा स्त्री० दे० "पुचकारी" ।

पुचकारना-क्रि० स० घुमकारना ।

पुचकारी-संज्ञा स्त्री० घुमकार । प्यार जताने के लिए घूमने का सा शब्द ।

पुचारा-संज्ञा पुं० १. भीगे कपड़े से पोंछने का काम । २. लेप करने वा पोतने के लिये पानी में घोली हुई कोई वस्तु । ३. चापलूसी । ४. बढ़ावा ।

पुच्छ-संज्ञा स्त्री० १. हुम । पूँछ । २. किसी वस्तु का पिछला भाग ।

पुच्छल-वि० हुमदार ।

पुछला-संज्ञा पुं० १. यही पूँछ । २. साथ न छोड़नेवाला । ३. चापलूस ।

पुछार-संज्ञा पुं० आदर करनेवाला ।

पुजना-क्रि० प्र० १. पूजा जाया । २. सम्मानित होना ।

पुजाना-क्रि० स० १. पूजा में प्रवृत्त वा निवृत्त करना । २. थपसी पूजा-प्रतिष्ठा कराना ।

क्रि० स० पूति करना ।

पुजाया-संज्ञा पुं० पूजा का सामान ।

पुजारी-संज्ञा पुं० वेधमूर्ति की पूजा करनेवाला ।

पुजेरी-संज्ञा पुं० दे० "पुजारी" ।

पुजैया-संज्ञा पुं० पूजा करनेवाला ।

२. किसी ऊँची जगह चढ़ने के लिये लकड़ियों के बछे आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता ।

पैराई-संज्ञा स्त्री० तैरने की क्रिया या भाव ।

पैराक-संज्ञा पुं० तैरनेवाला ।

पैराध-संज्ञा पुं० हुवाव ।

पैराकार-संज्ञा पुं० दे० "पैरवीकार" ।

पैला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भ्रूया० पैली ] मिट्टी का वह ढरतन जिससे दूध, दही ढाँकते हैं । बड़ी पैली ।

पैवंद-संज्ञा पुं० १. कपड़े आदि का छेद बंद करने का छोटा डुकड़ा ।

२. किसी पेड़ की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायें या उनमें नया स्वाद आ जाय ।

पैवंदी-वि० पैवंद लगाकर पैदा किया हुआ । ( फल आदि )

पैवस्त-वि० समाया हुआ ।

पैशाच-वि० १. पिशाच-संबंधी । २. पिशाच देश का ।

पैशाच विवाह-संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो ।

पैशाचिक-वि० पिशाचों का ।

पैशाची-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्राकृत भाषा ।

पैशुन्य-संज्ञा पुं० जुगुलबोरी ।

पैसना-वि० भ० घुसना ।

पैसरा-संज्ञा पुं० १. कंकट । २. प्रयत्न ।

पैसा-संज्ञा पुं० १. तर्बे का संघसे अधिक चलता सिक्का जो आने का चौथा भाग होता है । २. धन ।

पैसारा-संज्ञा पुं० पैठ ।

पैहारी-वि० केवल दूध पीकर रहनेवाला ।

पोंका-संज्ञा पुं० वह फसिगा जो पीछों पर बढ़ता फिरता है । बोंका ।

पोंगा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भ्रूया० पोंगी ] चोंगा ।

वि० १. पोला । २. मूख ।

पोंछन-संज्ञा स्त्री० लगी हुई वस्तु का वह घचा अंश जो पोंछने से निकले ।

पोंछना-कि० स० १. काछना । २. रगड़कर साफ करना ।

संज्ञा पुं० पोंछने का कपड़ा ।

पोई-संज्ञा स्त्री० एक बरसाती खता जिसकी पत्तियों का साग और पकौ-दियाँ बनती हैं ।

पोखरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भ्रूया० पोखरी ] तालाब ।

पोगंड-संज्ञा पुं० १. पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक । २. वह जिसका कोई अंग छोटा, बढ़ा या अधिक हो ।

पोच-वि० चुपछ ।

पोची-संज्ञा स्त्री० निचाई ।

पोट-संज्ञा स्त्री० १. गठरी । २. ढेर ।

पोटना-कि० स० १. समेटना । २. फुसलाना ।

पोटली-संज्ञा स्त्री० छोटी गठरी ।

पोढ़ा-वि० [ स्त्री० पोढ़ी ] १. पुष्ट । २. कड़ा ।

पोढ़ाना-कि० भ० १. मजबूत होना । २. पका पढ़ना ।

कि० स० हट्ट करना ।

पोत-संज्ञा पुं० १. पशु, पक्षी आदि

पुट-संज्ञा पुं० १. हल्का छिद्रकाष्ठ ।  
२. घोर ।

संज्ञा पुं० १. आच्छादन । २. औषध  
पकाने का सुहृद धरतन ।

पुटकी-संज्ञा स्त्री० पोतली ।

संज्ञा स्त्री० १. आकस्मिक मृत्यु । २.  
क्षीया आपत्ति ।

संज्ञा स्त्री० येसन या आटा जो तर-  
कारी के रसे में उसे गाढ़ा करने के  
लिये मिलाते हैं ।

पुटपाक-संज्ञा पुं० पत्ते के राने या  
सुहृद धरतन में दवा रखकर उसे  
पकाने का विधान ।

पुटीन-संज्ञा पुं० किचोड़ों में शीशे  
बैठाने या लकड़ी के जोड़ आदि भरने  
में काम आनेवाला एक मसाला ।

पुट्टा-संज्ञा पुं० १. चूतड़ का ऊपरी  
कुछ कड़ा भाग । २. औषधी का  
विशेषतः पोड़ों का चूतड़ ।

पुड़िया-संज्ञा स्त्री० १. मोड़ या लपेट-  
कर संपुट के आकार का किया हुआ  
कागज़ जिसके भीतर कोई वस्तु  
रखी जाय । २. पुड़िया में लपेटी हुई  
दवा की एक सुशक या मात्रा ।

पुण्य-वि० पवित्र ।

संज्ञा पुं० १. वह कर्म जिसका फल  
शुभ हो । २. शुभ कर्म का संचय ।

पुण्यकाल-संज्ञा पुं० दान-पुण्य करने  
का समय ।

पुण्यक्षेत्र-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ  
जाने से पुण्य हो । तीर्थ ।

पुण्यधान-वि० [ स्त्री० पुण्यवती ]  
धर्मात्मा ।

पुण्यात्मा-वि० धर्मात्मा ।

पुतली-संज्ञा स्त्री० दे० "पुतली" ।

पुतला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पुतली ] लकड़ी,

मिट्टी, कपड़े आदि का बना हुआ  
पुरुष का आकार या मूर्ति ।

पुतली-संज्ञा स्त्री० १. गुड़िया । २.  
आँख के बीच का काळा भाग । ३.  
कपड़ा बुनने की कल या मशीन ।

पुताई-संज्ञा स्त्री० पोतने की क्रिया,  
भाव या मजदूरी ।

पुत्तलिका-संज्ञा स्त्री० १. पुतली ।  
२. गुड़िया ।

पुत्र-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पुत्री ] लड़का ।

पुत्रपती-संज्ञा स्त्री० जिसके पुत्र हो ।

( स्त्री )

पुत्रधधू-संज्ञा स्त्री० पुत्र की स्त्री ।

पुत्रिका-संज्ञा स्त्री० १. लड़की । २.  
पुतली । ३. आँख की पुतली ।

पुत्री-संज्ञा स्त्री० कन्या ।

पुत्रेष्टि-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का यज्ञ  
जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है ।

पुदीना-संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा  
जिसकी पत्तियों में बहुत अच्छी गंध  
होती है । इससे खोब चटनी आदि  
बनाते हैं ।

पुनः-अव्य० १. फिर । २. वपरांत ।

पुनः-संज्ञा पुं० दे० "पुण्य" ।

पुनरावृत्ति-संज्ञा स्त्री० [ वि० पुनरावृत्त ]  
१. फिर से घूमना । २. दोहराना ।

पुनरुक्ति-संज्ञा स्त्री० [ वि० पुनरुक्त ] एक  
बार कही हुई बात को फिर कहना ।

पुनर्जन्म-संज्ञा पुं० मरने के बाद फिर  
दूसरे शरीर में उत्पत्ति ।

पुनर्वसु-संज्ञा पुं० सत्ताईस नक्षत्रों में  
से सातवाँ नक्षत्र ।

पुनिः-कि० वि० फिर ।

पुनीत-वि० पवित्र ।

पुनः-संज्ञा पुं० दे० "पुण्य" ।

का छोटा पधा । २. छोटा पीघा ।

३. नाव ।

संश की० १. माता या गुरिया का छोटा दाना । २. काँच की गुरिया ।

संश पुं० १. दंग । २. दाँव ।

संश पुं० ज़मीन का लगान ।

पोतदार-संश पुं० १. ख़ज़ानची ।

२. पारखी ।

पोतना-कि० स० गीली तह चढ़ाना ।

संश पुं० यह कपड़ा जिससे कोई

खोज़ पोती जाय ।

पोता-संश पुं० घेरे का बेठा ।

संश पुं० १. लगान । २. झंडकोप ।

पोती-संश की० पुत्र की पुत्री ।

संश की० पुतारा देने की क्रिया ।

पोथा-संश पुं० १. काग़ज़ों की गद्दी ।

२. बड़ी पोथी ।

पोथी-संश की० दुस्तक ।

पोहार-संश पुं० दे० "पोतदार" ।

पोना-कि० स० १. गीले आटे की

लोई को हाथ से दबाकर घुमाते हुए

रोटी के आकार में बढ़ाना । २.

( रोटी ) पकाना ।

कि० स० गूथना ।

पोपला-वि० १. पचका और सिकुड़ा

हुआ । २. जिसमें दाँत न हों ।

पोपलाना-कि० अ० पोपला होना ।

पोया-संश पुं० १. बूँट का नरम

पौधा । २. बच्चा ।

पोर-संश की० १. डँगली की गाँठ या

जोड़ जहाँ से वह झुक सकती है ।

२. ईँख, बाँस आदि का वह भाग

जो दो गाँठों के बीच में हो ।

पोल-संश पुं० शून्य स्थान ।

संश पुं० फाटक ।

पोला-वि० [ की० पोला ] १. जिसके

भीतर खाली जगह हो । २. पुल-

मुला ।

पोशाक-संश की० पहनने के कपड़े ।

पहनावा ।

पोशीदा-वि० गुप्त । छिपा हुआ ।

पोपक-वि० १. पालक । पालने-

वाला । २. बर्दक । बढ़ानेवाला ।

३. सहायक ।

पोपण-संश पुं० [ वि० पोपित, पुष्ट, पोष-

णीय, पोथ ] १. पालन । २. बर्द्धन ।

बढ़ती । ३. पुष्टि । ४. सहायता ।

पोप्य-वि० पालने योग्य । पालनीय ।

पोप्यपुत्र-संश पुं० १. पुत्र के समान

पाला हुआ लड़का । पालक । २.

दत्तक ।

पोस-संश पुं० पालनेवाले के साथ

प्रेम या हेतु-मेल ।

पोसना-कि० स० पालना या रचा

करना ।

पोस्त-संश पुं० १. झिलका । धकला ।

२. अफीम का पौधा । पोछा ।

पोस्ता-संश पुं० एक पौधा जिसमें से

अफीम निकलती है ।

पोस्ती-संश पुं० १. वह जो नशे के

लिये पोस्ते के डोहे पीसकर पीता

हो । २. आलसी आदमी ।

पोहना-कि० स० १. पिरोना । २.

छेदना । ३. जड़ना । घुसाना ।

घँसाना ।

वि० [ की० पोहनी ] घुसनेवाला ।

भेदनेवाला ।

पौंडा-संश पुं० एक प्रकार की बड़ी

और मोटी जाति की ईँख या गन्ना ।

पौरना-कि० अ० सीरना ।

पौरि-संश की० दे० "पौरि", "पौरी" ।

पुरंदर-संज्ञा पुं० द्वेन्द्र ।

पुरः-अव्य० १. आगे । २. पहले ।

पुर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पुरी ] १. नगर ।

२. घर । ३. भुवन ।

संज्ञा पुं० कूप से पानी निकालने का यमड़े का डोङ्गा ।

पुरइन्द्र-संज्ञा स्त्री० १. कमल का पत्ता । २. कमल ।

पुरखा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पुरखिन ] १. पूर्वज । २. घर का बड़ा-बूढ़ा ।

पुरजा-संज्ञा पुं० १. टुकड़ा । २. कागज का टुकड़ा जिसमें धनियों का हिसाब लिखा जाता है । ३. कटा टुकड़ा । ४. अंश ।

पुरबला, पुरबुला-वि० [ स्त्री० पुरबली, पुरबुली ] पहले का ।

पुरविया-वि० [ स्त्री० पुरविनी ] पूरव का ।

पुरवटा-संज्ञा पुं० चरसा । मोटा । पुर ।

पुरवना-वि० स० १. भरना । २. पूरा करना ।

क्रि० अ० पूरा होना ।

पुरवा-संज्ञा पुं० छोटा गाँव ।

संज्ञा पुं० पूर्व दिशा से चलनेवाली वायु ।

संज्ञा पुं० मिट्टी का कुलहड़ ।

पुरघाई, पुरवैया-संज्ञा स्त्री० वह वायु जो पूर्व से चलती है ।

पुरश्चरण-संज्ञा पुं० किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना ।

पुरसा-संज्ञा पुं० साढ़े चार या पाँच हाथ की एक चाप ।

पुरस्कार-संज्ञा पुं० [ वि० पुरस्कृत ] १. आदर । २. उपहार ।

पुरस्कृत-वि० १. पूजित । २. जिसे इनाम या पुरस्कार मिला हो ।

पुरा-अव्य० पुराने समय में ।

वि० प्राचीन ।

पुराकल्प-संज्ञा पुं० १. पूर्वकल्प । २. प्राचीन काल ।

पुराकृत-वि० पूर्व काल में किया हुआ ।

पुराण-वि० प्राचीन ।

संज्ञा पुं० हिंदुओं के धर्म-संबंधी व्याख्यान-ग्रंथ जिनमें सृष्टि, क्षय और प्राचीन ऋषियों आदि के वृत्तांत रहते हैं । ये अठारह हैं ।

पुरातत्व-संज्ञा पुं० प्राचीन काल-संबंधी विद्या ।

पुरातन-वि० प्राचीन ।

संज्ञा पुं० विष्णु ।

पुराना-वि० [ स्त्री० पुरानी ] १. बहुत दिनों का । २. जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो । ३. जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो ।

क्रि० स० १. पूरा कराना । २. पाखन कराना ।

पुरारि-संज्ञा पुं० शिव ।

पुरावृत्त-संज्ञा पुं० पुराना वृत्तांत । इतिहास ।

पुरी-संज्ञा स्त्री० १. नगरी । २. जगन्नाथपुरी ।

पुरीष-संज्ञा पुं० मत्त । गू ।

पुरु-संज्ञा पुं० १. देवलोका । २. पराग । ३. एक प्राचीन राजा जो नहुष के पुत्र ययाति के पुत्र थे ।

पुरुष-संज्ञा पुं० १. मनुष्य । २. आत्मा । ३. पति । ४. व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे वह निश्चय होता है कि सर्वनाम या क्रियापद वाचक

पौ-संज्ञा स्त्री० पौसाळा । पौसळा ।  
प्याऊ ।

संज्ञा स्त्री० किरण-प्रकाश की रेखा ।  
ज्योति ।

संज्ञा स्त्री० एासे की एक चाल या दावें ।

पौआ-संज्ञा पुं० दे० "पौवा" ।

पौढना-क्रि० म० मूलना । आगे-पीछे  
हिलना ।

क्रि० म० लेटना । सोना ।

पौढाना-क्रि० स० १. डुलाना ।  
मुलाना । २. लेटाना । ३. सुलाना ।

पौध-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पौध ] लड़के  
का लड़का । पोता ।

पौद-संज्ञा स्त्री० छोटा पौधा ।

पौदर-संज्ञा स्त्री० १. पैर का चिह्न ।  
२. पगडंडी ।

पौधा-संज्ञा पुं० १. नया निकलता  
हुआ पेड़ । २. छोटा पेड़ । धुप ।

पौन-संज्ञा पुं० स्त्री० हवा ।

वि० एक में से चौथाई कम । तीन  
चौथाई ।

पौना-संज्ञा पुं० पौन का पहना ।

संज्ञा पुं० काठ या लोहे की एक प्रकार  
की बड़ी करछी ।

पौनार-संज्ञा स्त्री० कमल के फूल की  
नाल या डंठल ।

पौनी-संज्ञा स्त्री० नाई, बारी, धोबी  
आदि जो विवाह आदि उत्सवों पर  
इनाम पाते हैं ।

संज्ञा स्त्री० छोटा पौना ।

पौर-वि० पुर-संबंधी । नगर का ।

संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", पौरी" ।

पौराणिक-वि० [ स्त्री० पौराणिकी ] १.  
पुराणवेत्ता । २. पुराण-संबंधी । ३.  
प्राचीन काल का ।

पौरिया-संज्ञा पुं० द्वारपाल । दरबान ।

पौरी-संज्ञा स्त्री० ज्योड़ी ।

संज्ञा स्त्री० सीढ़ी । पैड़ी ।

संज्ञा स्त्री० खड़ाऊँ ।

पौरुप-संज्ञा पुं० १. पुरुष का भाव ।

पुरुषत्व । २. पराक्रम । ३. उद्योग ।

उद्यम ।

पौरुपेय-वि० १. पुरुष-संबंधी । २.

आदमी का किया हुआ । ३. आध्या-

त्मिक ।

पौर्णमासी-संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी ।

पौलस्त्य-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पौलस्त्यी ]

१. पुलस्त्य के वंश का पुरुष । २.

कुवेर । ३. रावण, कुम्भकर्ण और

विभीषण । ४. चंद्र ।

पौला-संज्ञा पुं० एक प्रकार की खड़ाऊँ ।

पौली-संज्ञा स्त्री० पौरी । ज्योड़ी ।

पौवा-संज्ञा पुं० १. सेर का चौथाई

भाग । २. वह वस्तु जिसमें पाव

भर पानी, दूध आदि आ जाय ।

पौप-संज्ञा पुं० वह महीना जिसमें

पूर्णमासी पुष्य नक्षत्र में हो । पूष ।

पौष्टिक-वि० पुष्टिकारक । बल-वीर्य-

दायक ।

पौसरा, पौसला-संज्ञा पुं० वह स्थान

जहाँ पर लोगों को पानी पिलाया

जाता है ।

पौहारी-संज्ञा पुं० वह जो केवल दूध

ही पीकर रहे (अन्न आदि न खाय) ।

प्याऊ-संज्ञा पुं० पौसला । सखील ।

प्याङ्ग-संज्ञा पुं० गोल गाँठ के आकार

का एक प्रसिद्ध कंद । इसकी गंध

बहुत उग्र और अप्रिय होती है ।

प्यादा-संज्ञा पुं० १. दूत । २. हर-

कारा ।

प्यार-संज्ञा पुं० मुहब्बत । प्रेम ।

( कहनेवाले ) के लिये प्रयुक्त हुआ है अथवा संशोध्य ( जिससे कहा जाय ) के लिये अथवा अन्य के लिये ।  
पुरुषपत्न्य-संज्ञा पुं० पुरुष होने का भाव । मरदानगी ।

पुरुषपुर-संज्ञा पुं० गांधार की प्राचीन राजधानी । आजकल का पेशावर ।

पुरुषमेघ-संज्ञा पुं० एक वैदिक यज्ञ जिसमें नर-वलि की जाती थी ।

पुरुषसूक्त-संज्ञा पुं० ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त ।

पुरुषानुकम्प-संज्ञा पुं० पुरुषों की चली आती हुई परंपरा ।

पुरुषारथ-संज्ञा पुं० दे० "पुरुषार्थ" ।

पुरुषार्थ-संज्ञा पुं० १. पुरुष के उद्योग का विषय । २. पौरुष । ३. शक्ति ।

पुरुषार्थी-वि० १. पुरुषार्थ करने-वाला । २. नयोगी ।

पुरुषोत्तम-संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ पुरुष । २. जगन्नाथ जिनका मंदिर उड़ीसा में है । ३. कृष्णचंद्र । ४. ईश्वर ।

पुरुहूत-संज्ञा पुं० ईंद्र ।

पुरुषा-संज्ञा पुं० एक प्राचीन राजा जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है । इसकी पत्नी उर्वशी थी ।

पुरोडाश-संज्ञा पुं० १. यव आदि के आटे की धनी हुई टिकिया जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिये कपाल में पकाई जाती थी । २. वह वस्तु जिसका यज्ञ में होम किया जाय ।

पुरोधा-संज्ञा पुं० पुरोहित ।

पुरोहित-संज्ञा पुं० [ स्त्री० पुरोहितानी ] वह प्रधान याजक जो यज्ञमान के यहाँ यज्ञादि गृहकर्म और संस्कार करे कराए ।

पुरोहिताई-संज्ञा स्त्री० पुरोहित का

काम ।

पुर्चगाल-संज्ञा पुं० योरोप के दक्खिण-पश्चिम कोने का एक छोटा प्रदेश ।

पुल-संज्ञा पुं० नदी, अलाहाबाद आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय । सेतु ।

पुलक-संज्ञा पुं० रोमांच ।

पुलकालि, पुलकावलि-संज्ञा स्त्री० हृत्पं से प्रकुल रोमांचाली ।

पुलकित-वि० प्रेम या हृत्पं के वेग से जिसके रोएँ उभर आए हों ।

पुलटिस-संज्ञा स्त्री० फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिये उस पर चढ़ाया हुआ दवाओं का मोटा लेप ।

पुलपुला-वि० जो भीतर इतना ढीला और मुलायम हो कि दधाने से धँसे ।

पुलपुलाना-किं० स० किसी मुलायम चीज को दधाना ।

पुलस्त्य-संज्ञा पुं० एक आपि जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में है ।

पुलाक-संज्ञा पुं० १. भात । २. भात का माँद । ३. पुलाव ।

पुलाघ-संज्ञा पुं० एक व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है ।

पुलिदा-संज्ञा पुं० थंडल ।

पुलिन-संज्ञा पुं० १. पानी के भीतर से हाथ की निकली हुई जमीन । २. तट ।

पुलिस-संज्ञा स्त्री० प्रजा की जान और माल की हिफाजत के लिये सुकूर सिपाही या अफसर ।

पुलोमजा-संज्ञा स्त्री० ईदानी ।



चाह । स्नेह ।

प्यारा-वि० [ स्त्री० प्यारी ] १. जिसे प्यार करें । २. जो भला मालूम हो ।

प्याला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भल्या० प्यालो ] एक प्रकार का छोटा कटोरा । जाम ।

प्यास-संज्ञा स्त्री० १. जल पीने की इच्छा । तृषा । तृष्या । पिपासा ।

२. प्रयत्न कामना ।

प्यासा-वि० जिसे प्यास लगी हो । तृपित ।

प्योसर-संज्ञा पुं० हाल की ब्याई हुई रीत का दूध ।

प्योसारा-संज्ञा पुं० स्त्री के लिये पिता का गृह । पीढ़र । मायका ।

प्रकंप-संज्ञा पुं० कंपकंपी ।

प्रकट-वि० १. जो प्रत्यक्ष हुआ हो । ज़ाहिर । २. स्पष्ट । व्यक्त ।

प्रकरण-संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ के छोटे छोटे भागों में से कोई भाग । अध्याय ।

प्रकर्ष-संज्ञा पुं० १. अकर्ष । उचमता । २. अधिकता । बहुतायत ।

प्रकांड-वि० बहुत बड़ा । २. बहुत विस्तृत ।

प्रकार-संज्ञा पुं० १. भेद । किस्म । २. तरह । भस्ति ।

० संज्ञा स्त्री० परकोटा । घेरा ।

प्रकाश-संज्ञा पुं० १. आलोक । ज्योति । २. विकाश । ३. प्रकट होना ।

गोचर होना । ४. धूप । घाम ।

प्रकाशक-संज्ञा पुं० १. वह जो प्रकाश करे । २. वह जो प्रकट करे ।

प्रकाशमान-वि० चमकता हुआ । चमकीला ।

प्रकाशित-वि० १. जिस पर या जिसमें

प्रकाश हो । २. प्रकट ।

प्रकाश्य-वि० प्रकट करने योग्य ।

कि० वि० प्रकट रूप से । स्पष्टतया ।

प्रकीर्णक-संज्ञा पुं० १. अप्याय । प्रकरण । २. फुटकर ।

प्रकुपित-वि० जिसका प्रकोप बहुत बढ़ गया हो ।

प्रकृत-वि० [ संज्ञा प्रकृता, प्रकृत्य ] १. यथार्थ । असली । सच्चा । २. जिसमें

किसी प्रकार का विकार न हुआ हो ।

प्रकृति-संज्ञा स्त्री० १. मूल या प्रधान गुण । तत्सीर । स्वभाव । २. माणी

की प्रधान प्रवृत्ति । स्वभाव । ३. वह

मूल शक्ति, अनेक रूपारमक जगत्

जिसका विकाश है । कुदरत ।

प्रकृतिशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों ( जैसे, पशु,

वनस्पति, भूगर्भ आदि ) का विचार

किया जाय ।

प्रकृतिसिद्ध-वि० स्वाभाविक । प्राकृतिक । नैसर्गिक ।

प्रकृतिस्थ-वि० १. जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो । २. स्वाभाविक ।

प्रकोप-संज्ञा पुं० १. बहुत अधिक कोप । २. बीमारी का अधिक और

तेज़ होना ।

प्रकोष्ठ-संज्ञा पुं० १. सदर फाटक के पास की कोठरी । २. बड़ा अग्निक

प्रक्रम-संज्ञा पुं० १. क्रम । सिलसिला ।

२. उपक्रम ।

प्रक्रिया-संज्ञा स्त्री० १. प्रकरण । २. क्रिया । युक्ति । तरीका ।

प्रज्ञालन-संज्ञा पुं० [ वि० प्रज्ञालित ] जल से साफ करने की क्रिया ।

धोना ।

पुलोमा-संज्ञा स्त्री० भृगु की पत्नी का नाम ।

पुष्पा-संज्ञा पुं० दे० "मालपूवा" ।

पुश्त-संज्ञा स्त्री० १. पीठ । २. पीढ़ी ।

पुश्तनामा-संज्ञा पुं० दंशावली ।

पुश्ता-संज्ञा पुं० पानी की रोक या मजबूती के लिये किसी दीवार से लगातार कुछ ऊपर तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढालुर्धा टीला ।

पुश्ती-संज्ञा स्त्री० १. टेक । २. पक्ष । ३. गाव तकिया ।

पुश्तैनी-वि० १. जो कई पुश्तों से चला आता हो । २. आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला ।

पुष्कर-संज्ञा पुं० १. जल । २. जलाशय । ३. कमल ।

पुष्करमूल-संज्ञा पुं० एक ओषधि का मूल या जड़ जो आजकल नहीं मिलती ।

पुष्कल-संज्ञा पुं० १. चार प्रास की मिछा । २. अनाज नापने का एक प्राचीन मान । ३. शम के भाई भरत के दो पुत्रों में से एक ।

वि० १. बहुत । २. भरा-पूरा ।

पुष्ट-वि० १. पाठा हुआ । २. तैयार । ३. दृढ़ ।

पुष्ट-संज्ञा स्त्री० ताकत की दवा ।

पुष्टा-संज्ञा स्त्री० मजबूती ।

पुष्टि-संज्ञा स्त्री० १. पोषण । २. बलि-ष्टा । ३. मजबूती । ४. घात का समर्थन ।

पुष्टिकर, पुष्टिकारक-वि० पुष्टि करने-वाला ।

पुष्टिमार्ग-संज्ञा पुं० बल्लभ संप्रदाय ।

पुष्प-संज्ञा पुं० १. पौधों का फूल ।

२. आँख का एक रोग ।

पुष्पक-संज्ञा पुं० १. फूल । २. कुवेर का विमान जिसे बनसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुवेर को दे दिया था ।

३. आँख का एक रोग ।

पुष्पदंत-संज्ञा पुं० १. वायुकोण का दिग्गज । २. शिव का अनुचर एक गंधर्व ।

पुष्पधन्वा-संज्ञा पुं० कामदेव ।

पुष्परज-संज्ञा पुं० पराग ।

पुष्पराग-संज्ञा पुं० पुष्पराज ।

पुष्परेणु-संज्ञा पुं० पराग ।

पुष्पवती-वि० स्त्री० फूलवाली ।

पुष्पघाटिका-संज्ञा स्त्री० फूलवारी ।

पुष्पशर-संज्ञा पुं० कामदेव ।

पुष्पित-वि० फूला हुआ ।

पुष्पोद्यान-संज्ञा पुं० फूलवारी ।

पुष्य-संज्ञा पुं० १. पुष्टि । २. पूस का महीना । ३. सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवाँ ।

पुष्यमित्र-संज्ञा पुं० मौर्यों के पीछे मगध में शुंग-वंश का राज्य प्रति-ष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा ।

पुस्तक-संज्ञा स्त्री० पोथी ।

पुस्तकाकार-वि० पोथी के रूप का ।

पुस्तकालय-संज्ञा पुं० वह भवन या घर जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो ।

पुहप, पुहुप-संज्ञा पुं० फूल ।

पुहुमी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

पूँ-संज्ञा स्त्री० १. हुम । २. किसी पदार्थ के पीछे का भाग ।

पूँजी-संज्ञा स्त्री० १. संचित धन । संपत्ति । २. ढेर ।

पूँजीपति-संज्ञा पुं० वह जिसके पास

प्रक्षिप्त-संज्ञा पुं० १. फेंका हुआ ।

२. ऊपर से ढड़ाया हुआ ।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण-संज्ञा पुं० १. फेंकना ।

२. छितराना । ३. मिलाना । ढड़ाना ।

प्रखर-वि० [संज्ञा प्रखरता] १. तीक्ष्ण ।

२. धारदार । पैना ।

प्रख्यात-वि० प्रसिद्ध । मशहूर ।

प्रगट-वि० दे० "प्रकट" ।

प्रगटना-वि० प्रकट होना ।

सामने आना । जाहिर होना ।

प्रगटाना-वि० प्रकट करना ।

जाहिर करना ।

प्रगल्भ-वि० १. चतुर । २. प्रतिभा-

शाली । ३. निर्भय । निडर । ४.

बढ़त । उर्दड़ ।

प्रगाढ़-वि० बहुत गाढ़ा या गहरा ।

प्रचंड-वि० [संज्ञा प्रचंडता] बहुत

अधिक तीव्र । बहुत तेज । उग्र ।

प्रखर ।

प्रचंडा-संज्ञा स्त्री० दुर्गा । चंडी ।

प्रचलन-संज्ञा पुं० प्रचार ।

प्रचलित-वि० जारी । चलता हुआ ।

जिसका चलन हो ।

प्रचार-संज्ञा पुं० किसी वस्तु का निरं-

तर व्यवहार या उपयोग । स्वाज ।

प्रचारक-वि० [स्त्री० प्रचारिणी] फैलाने-

वाला ।

प्रचारित-वि० फैलाया हुआ । प्रचार

किया हुआ ।

प्रचुर-वि० बहुत । अधिक ।

प्रचुरता-संज्ञा स्त्री० प्रचुर होने का

भाव । ज्यादाती । अधिकता ।

प्रच्छन्न-वि० उका हुआ । लपेटा

हुआ । छिपा हुआ ।

प्रच्छादन-संज्ञा पुं० [वि० प्रच्छादित]

१. ढाँकना । २. छिपाना । ३.

थोढ़नी या दुपट्टा । ४. घर की

छाजन ।

प्रजनन-संज्ञा पुं० १. संतान उत्पन्न

करने का काम । २. दाई का काम ।

धात्री-कर्म । (सुधुत)

प्रजरना-वि० प्र० अर्द्धी तरह

जलना ।

प्रजा-संज्ञा स्त्री० वह जनसमूह जो

किसी एक राज्य में रहता हो ।

रिचाया । रैयत ।

प्रजार्तन-संज्ञा पुं० वह शासन-प्रणाली

जिसमें कोई राजा नहीं होता, प्रजा

ही समय समय पर अपना प्रधान

शासक चुन लेती है ।

प्रजापति-संज्ञा पुं० १. सृष्टि को उत्पन्न

करनेवाला । २. प्रजा ।

प्रज्ञ-संज्ञा पुं० विद्वान् । जानकार ।

प्रज्ञप्ति-संज्ञा स्त्री० १. जताने का भाव ।

२. सूचना । ३. संकेत । इशारा ।

प्रज्ञा-संज्ञा स्त्री० बुद्धि । ज्ञान ।

प्रज्ञाचक्षु-संज्ञा पुं० १. धृतराष्ट्र । २.

ज्ञानी । ३. धंधा । (व्यंग्य)

प्रज्वलन-संज्ञा पुं० [वि० प्रज्वलनीय,

प्रज्वलित] जलने की प्रिया । जलना ।

प्रज्वलित-वि० १. जलता हुआ ।

धधकता हुआ । २. बहुत स्पष्ट ।

प्रण-संज्ञा पुं० अटल निश्चय । प्रतिज्ञा ।

प्रणत-वि० १. प्रणाम करता हुआ ।

२. नम्र । दीन ।

प्रणतपाल-संज्ञा पुं० दीनों, दासों या

भक्तजनों का पालन करनेवाला ।

प्रणति-संज्ञा स्त्री० १. प्रणाम । दंड-

वत । २. नम्रता ।

प्रणमन-संज्ञा पुं० १. झुकना । २.

प्रणाम करना ।

प्रणय-संज्ञा पुं० १. प्रीतियुक्त प्रार्थना ।  
२. प्रेम ।

प्रणयन-संज्ञा पुं० रचना । बनाना ।

प्रणयिनी-संज्ञा स्त्री० १. प्रियतमा ।  
प्रेमिका । २. स्त्री । पत्नी ।

प्रणयी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रणयिनी ] १.  
प्रेम करनेवाला । प्रेमी । २. स्वामी ।  
पति ।

प्रणव-संज्ञा पुं० १. ॐकार । ओंकार  
मंत्र । २. परमेश्वर ।

प्रणाली-संज्ञा स्त्री० १. नाली । २.  
रीति । याद ।

प्रणिधान-संज्ञा पुं० १. अत्यंत भक्ति ।  
२. ध्यान । चित्त की एकाग्रता ।

प्रणीत-संज्ञा पुं० रचित । बनाया  
हुआ ।

प्रणेतृ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रणेत्री ] रच-  
यिता । बनानेवाला ।

प्रतप्त-वि० तपा हुआ ।

प्रतल-संज्ञा पुं० पाताल के सातवें  
भाग का नाम ।

प्रताप-संज्ञा पुं० १. पौरुष । २. बल,  
पराक्रम आदि का ऐसा प्रभाव जिसके  
कारण विरोधी शक्त रहें । इकबाल ।

प्रतापी-वि० इकबालमंद । जिसका  
प्रताप हो ।

प्रतारक-संज्ञा पुं० १. बंधक । ठग ।  
२. धूर्त ।

प्रतारणा-संज्ञा स्त्री० बंधना । ठगी ।

प्रतिष्ठा-संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी ।  
ज्या ।

प्रति-अव्य० एक उपसर्ग जो शब्दों के  
आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ  
देता है—विपरीत, जैसे, प्रतिकूल ।  
सामने, जैसे, प्रत्यक्ष । बदले में, जैसे,  
प्रत्युपकार । हर एक, जैसे, प्रत्येक ।

समान, जैसे, प्रतिनिधि । सुकायले  
का, जैसे, प्रतिवादी ।

अव्य० १. सामने । सुकायले में ।  
२. ओर । तरफ ।

संज्ञा स्त्री० नकूल । कापी ।

प्रतिकार-संज्ञा पुं० बदला । जवाब ।

प्रतिकूल-वि० [ संज्ञा प्रतिकूलता ] जो  
अनुकूल न हो । विरुद्ध । विपरीत ।

प्रतिकृति-संज्ञा स्त्री० १. प्रतिमा । २.  
तसवीर । ३. बदला । प्रतिकार ।

प्रतिक्रिया-संज्ञा स्त्री० बदला ।

प्रतिगृहीता-संज्ञा स्त्री० धर्मपत्नी ।

प्रतिग्रह-संज्ञा पुं० १. स्वीकार ।  
ग्रहण । २. पकड़ना । अधिकार  
में लाना । ३. पाणिग्रहण । विवाह ।

प्रतिघात-संज्ञा पुं० टकरा ।

प्रतिघाती-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रतिघातिनी ]  
१. बैरी । दुश्मन । २. सुकायला  
करनेवाला ।

प्रतिच्छाया-संज्ञा स्त्री० १. चित्र ।  
तसवीर । २. परछाई ।

प्रतिज्ञा-संज्ञा स्त्री० १. कोई काम  
करने या न करने आदि के संबंध में  
द्वंद्व निश्चय । प्रण । कसम । २.  
उस बात का कथन जिसे सिद्ध क-  
रना हो ।

प्रतिज्ञापत्र-संज्ञा पुं० वह पत्र जिस पर  
कोई प्रतिज्ञा या शपथ लिखी हो ।

प्रतिदान-संज्ञा पुं० १. लौटाना ।  
वापस करना । २. परिवर्तन ।  
बदला ।

प्रतिद्वंद्वी-संज्ञा पुं० [ भाव० प्रतिद्वंद्विता ]  
सुकायले का लड़नेवाला । शत्रु ।

प्रतिध्वनि-संज्ञा स्त्री० टकराकर सुनाई  
पड़नेवाला शब्द । गूँज ।

प्रतिनायक-संज्ञा पुं० नाटकों और

प्रसन्न-वि० १. संतुष्ट। सुष्ट। २.

प्रफुल्ल। ३. अनुकूल।

प्रसन्नता-संज्ञा स्त्री० सुष्टि। हर्ष।  
आनन्द।

प्रसरण-संज्ञा पुं० १. आगे बढ़ना।  
पिसडना। २. फैलना। ३. व्याप्ति।  
४. विस्तार।

प्रसव-संज्ञा पुं० बच्चा जनने की  
क्रिया। जनन। प्रसूति।

प्रसविनी-वि० स्त्री० प्रसव करनेवाली।  
जननेवाली।

प्रसाद-संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जो  
देवता को चढ़ाई जाय। २. वह  
पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग  
प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों  
को दे।

प्रसादी-संज्ञा स्त्री० १. देवताओं को  
चढ़ाया हुआ पदार्थ। २. नैवेद्य।

प्रसार-संज्ञा पुं० १. विस्तार। फैलाव।  
पसार। २. संचार। ३. गमन।

प्रसारण-संज्ञा पुं० १. फैलाना।  
२. पढ़ाना।

प्रसारिणी-संज्ञा स्त्री० १. गंधप्रसारिणी  
लता। २. लज्जालू। लाजवर्ती।

प्रसारित-वि० फैलाया हुआ।

प्रसिद्ध-वि० १. भूषित। अलंकृत।  
२. मशहूर।

प्रसिद्धि-संज्ञा स्त्री० १. व्याप्ति। २.  
वनाव-सिंहार।

प्रसुप्त-वि० सोया हुआ।

प्रसूति-संज्ञा स्त्री० नौद।

प्रसू-संज्ञा स्त्री० जननेवाली। उत्पन्न  
करनेवाली।

प्रसूत-वि० १. उत्पन्न। २. उत्पादक।  
संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जो  
स्त्रियों को प्रसव के पीछे होता है।

प्रसूता-संज्ञा स्त्री० बच्चा जननेवाली  
स्त्री। जन्मा।

प्रसूति-संज्ञा स्त्री० प्रसव। जनन।

प्रसूतिका-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रसूता"।

प्रसून-संज्ञा पुं० फूल।

प्रसूति-संज्ञा स्त्री० १. फैलाव। २.  
संतति। संतान।

प्रसेक-संज्ञा पुं० सेचन, सींचना।

प्रसेद-संज्ञा पुं० पसीना।

प्रस्तर-संज्ञा पुं० पत्थर।

प्रस्तार-संज्ञा पुं० १. फैलाव।  
विस्तार। २. आधिक्य। वृद्धि।

प्रस्ताव-संज्ञा पुं० १. प्रसंग। विषय  
हुई बात। २. समा के सामने  
व्यस्थित मस्य। (आधुनिक)

प्रस्तावना-संज्ञा स्त्री० १. आरंभ।  
२. प्राक्कथन।

प्रस्तावित-वि० जिसके लिये प्रस्ताव  
किया गया हो।

प्रस्तुत-वि० १. जो कहा गया हो।  
वक्त। व्यक्त। २. व्यस्थित। सामने  
आया हुआ। ३. बयत। तैयार।

प्रस्थान-संज्ञा पुं० गमन। यात्रा।  
रवानगी।

प्रस्थानी-वि० जानेवाला।

प्रस्थित-वि० १. ठहराया हुआ।  
टिका हुआ। २. गत।

प्रस्फुरण-संज्ञा पुं० निकलना।

प्रस्फोटन-संज्ञा पुं० एकधारणी ज़ोर  
से फुटना या फूटना।

प्रसवेद-संज्ञा पुं० पसीना।

प्रहर-संज्ञा पुं० दिन-रात के आठे समय  
भागों में से एक भाग। पहर।

प्रहरी-वि० १. पहर पहर परीं घंटा  
बजानेवाला। घड़ियाली। २. पहर  
देनेवाला।

काव्यों आदि में नायक का प्रति-  
हंसी पात्र ।

**प्रतिनिधि**-संज्ञा पुं० [ प्रतिनिधित्व ] वह  
व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से  
कोई काम करने के लिये नियुक्त हो ।

**प्रतिपक्षी**-संज्ञा पुं० विपक्षी । विरोधी ।  
शत्रु ।

**प्रतिपत्ति**-संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति । २.  
प्रतिपादन । निरूपण । ३. जी  
में बैठाना ।

**प्रतिपदा**-संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की  
पहली तिथि । प्रतिपद् । परिवा ।

**प्रतिपक्ष**-वि० १. जाना हुआ । २.  
अंगीकृत । स्वीकृत । ३. साक्षित ।  
निश्चित । ४. भरा-पूरा ।

**प्रतिपादन**-संज्ञा पुं० [ वि० प्रतिपादित ]  
१. अच्छी तरह समझाना । २.  
किसी बात का प्रमाणपूर्वक कथन ।

**प्रतिपाल**, **प्रतिपालक**-संज्ञा पुं०  
पालन-पोषण करनेवाला ।

**प्रतिपालन**-संज्ञा पुं० [ वि० प्रतिपालित ]  
१. पालन करने की क्रिया या भाव ।  
२. रक्षण । निर्वाह । तामील ।

**प्रतिफल**-संज्ञा पुं० १. प्रतिविम्ब ।  
छाया । २. परिणाम । नतीजा ।

**प्रतिबंध**-संज्ञा पुं० १. रोक । रुका-  
वट । अटकाव । २. विघ्न । बाधा ।

**प्रतिबंधक**-संज्ञा पुं० १. रोकनेवाला ।  
२. बाधा डालनेवाला ।

**प्रतिविम्ब**-संज्ञा पुं० [ वि० प्रतिवित ]  
१. परछाई । छाया । २. चित्र ।  
तस्वीर ।

**प्रतिविषयवाद**-संज्ञा पुं० वेदांत का  
यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में  
ईश्वर का प्रतिविम्ब है ।

**प्रतिभा**-संज्ञा स्त्री० १. वह असाधारण  
मानसिक शक्ति जिससे मनुष्य किसी  
काम में बहुत अधिक योग्यता प्राप्त  
कर लेता है । असाधारण बुद्धि-  
बल । २. दीप्ति । चमक । (क०)

**प्रतिभाधान**, **प्रतिभाशाली**-वि०  
जिसमें प्रतिभा हो ।

**प्रतिम**-अर्थ० समान । सदृश ।

**प्रतिमा**-संज्ञा स्त्री० १. किसी की आ-  
कृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति  
या चित्र आदि । २. मिट्टी, पथर  
आदि की देवताओं की मूर्ति ।

**प्रतिमान**-संज्ञा पुं० प्रतिविम्ब । परछाई ।

**प्रतियोगिता**-संज्ञा स्त्री० प्रतिद्वंद्विता ।  
चढ़ा-ऊपरी । मुकाबला । विरोध ।

**प्रतियोगी**-संज्ञा पुं० १. हिस्सेदार ।  
शरीक । २. शत्रु । विरोधी । वैरी ।  
३. सहायक । मददगार ।

**प्रतिरूप**-संज्ञा पुं० १. प्रतिमा । मूर्ति ।  
२. तस्वीर । चित्र ।

**प्रतिरोध**-संज्ञा पुं० [ वि० प्रतिरोधक ]  
१. विरोध । २. रुकावट । रोक ।  
बाधा ।

**प्रतिलिपि**-संज्ञा स्त्री० लेख की नकल ।  
किसी लिखी हुई चीज की नकल ।

**प्रतिलोम**-वि० प्रतिकूल । विपरीत ।

**प्रतिलोम विवाह**-संज्ञा पुं० वह  
विवाह जिसमें पुरुष नीच वर्ण का  
और स्त्री उच्च वर्ण की हो ।

**प्रतिवाद**-संज्ञा पुं० १. वह कथन जो  
किसी मत को मिथ्या ठहराने के  
लिये हो । विरोध । खंडन । २.  
विवाद । बहस ।

**प्रतिवादी**-संज्ञा पुं० १. प्रतिवाद या  
खंडन करनेवाला । २. प्रतिपक्षी ।

प्रहर्ष-संज्ञा पुं० हर्ष । आनन्द ।  
 प्रहर्षण-संज्ञा पुं० १. आनन्द । २.  
 एक शब्दकार जिसमें बिना उद्योग के  
 श्रनायास किसी के वाञ्छित पदार्थ  
 की प्राप्ति का वर्णन होता है ।  
 प्रहर्षणी-संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्ति ।  
 प्रहसन-संज्ञा पुं० १. हँसी । दिलजगी ।  
 परिहास । २. हास्य-रस-प्रधान एक  
 प्रकार का काव्य-मिश्र नाट्य जो  
 रूपक के दस भेदों में से है ।  
 प्रहार-संज्ञा पुं० आघात । चोट । मार ।  
 प्रहारी-वि० मारनेवाला । प्रहार  
 करनेवाला ।  
 प्रहेलिका-संज्ञा स्त्री० पहेली ।  
 प्रह्लाद-संज्ञा पुं० एक भक्त दैत्य जो  
 राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था ।  
 प्रागण-संज्ञा पुं० आगन । सहन ।  
 प्राञ्जल-वि० १. सरल । सीधा ।  
 २. सच्चा । ३. बाहर । समान ।  
 प्रांत-संज्ञा पुं० १. अंत । शेष । सीमा ।  
 २. खंड । प्रदेश ।  
 प्रांतीय, प्रांतिक-वि० किसी एक  
 प्रांत से संबंध रखनेवाला ।  
 प्राकार-संज्ञा पुं० प्राचीर ।  
 प्राकृत-वि० १. प्रकृति से उत्पन्न या  
 प्रकृति-संबंधी । २. सहज । स्वाभाविक ।  
 संज्ञा स्त्री० १. बोलचाल की भाषा  
 जिसका प्रचार किसी समय किसी  
 प्रांत में हो अथवा रहा हो । २.  
 एक प्राचीन भारतीय भाषा ।  
 प्राकृतिक-वि० १. जो प्रकृति से  
 उत्पन्न हुआ हो । २. प्रकृति-संबंधी ।  
 प्रकृति का । ३. स्वाभाविक । सहज ।  
 प्राङ्मुख-वि० जिसका मुँह पूर्व दिशा  
 की ओर हो । पूर्वामुख ।

प्राची-संज्ञा स्त्री० पूर्व दिशा । पूरव ।  
 प्राचीन-वि० १. पूरव का । २.  
 पिछले जमाने का । पुराना ।  
 संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर" ।  
 प्राचीनता-संज्ञा स्त्री० प्राचीन होने  
 का भाव । पुरानापन ।  
 प्राचीर-संज्ञा पुं० चहारदीवारी ।  
 शहरपनाह । परकोटा ।  
 प्राच्य-वि० १. पूर्व देश या दिशा  
 में उत्पन्न । २. पूर्वीय । पूर्व-संबंधी ।  
 ३. पुराना । प्राचीन ।  
 प्राज्ञ-वि० १. बुद्धिमान् । समझदार ।  
 चतुर । २. पंडित । विद्वान् ।  
 प्राड्विवाक-संज्ञा पुं० १. न्याय  
 करनेवाला । न्यायाधीश । २.  
 बकील ।  
 प्राण-संज्ञा पुं० १. शरीर की वह वायु  
 जिससे मनुष्य जीवित रहता है । २.  
 श्वास । साँस । ३. काल का वह  
 विभाग जिसमें दस दीर्घ मासों  
 का उच्चारण हो सके । ४. जीवन ।  
 ज्ञान ।  
 प्राणश्रधार-संज्ञा पुं० १. बहुत  
 प्रिय व्यक्ति । २. पति । स्वामी ।  
 प्राणघात-संज्ञा पुं० हत्या । वध ।  
 प्राणजीवन-संज्ञा पुं० १. प्राणधार ।  
 २. परम प्रिय व्यक्ति ।  
 प्राणत्याग-संज्ञा पुं० मर जाना ।  
 प्राणदंड-संज्ञा पुं० हत्या आदि अप-  
 राध के बदले में मार डालना ।  
 प्राणद-वि० १. जो प्राण दे । २.  
 प्राणों की रक्षा करनेवाला ।  
 प्राणदान-संज्ञा पुं० किसी को मरने  
 या मारे जाने से बचाना ।  
 प्राणधन-वि० अत्यंत प्रिय ।  
 प्राणधारी-वि० १. जीवित प्राण-

प्रतिवेश-संज्ञा पुं० पड़ोस ।  
प्रतिवेशी-संज्ञा पुं० पड़ोस में रहने-  
वाला । पड़ोसी ।

प्रतिशब्द-संज्ञा पुं० प्रतिध्वनि ।  
प्रतिशोध-संज्ञा पुं० वह काम जो  
किसी घात का बदला चुकाने के  
लिये किया जाय । बदला ।

प्रतिषेध-संज्ञा पुं० [ वि० प्रतिषिद्ध,  
प्रतिषेधक ] १. निषेध । मनाही ।  
२. खंडन ।

प्रतिष्ठा-संज्ञा स्त्री० १. देवता की  
प्रतिमा की स्थापना । २. मान-  
मर्यादा । गौरव । ३. आदर ।  
सत्कार । इज्जत ।

प्रतिष्ठान-संज्ञा पुं० स्थापित या प्रति-  
ष्ठित करना ।

प्रतिष्ठानपुर-संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन  
नगर जो गंगा-यमुना के संगम पर  
वर्तमान झूसी नामक स्थान के पास  
था । २. गोदावरी के तट का एक  
प्राचीन नगर ।

प्रतिष्ठित-वि० १. आदर-प्राप्त ।  
इज्जतदार । २. जो स्थापित किया  
गया हो ।

प्रतिस्पर्धा-संज्ञा स्त्री० किसी काम में  
दूसरे से बढ़ जाने का उद्योग ।  
[ वि०. डाँट । चढ़ा-ऊपरी ।

प्रतिस्पर्द्धा-संज्ञा पुं० मुकाबला या  
परापरी करनेवाला ।

प्रतिहार-संज्ञा पुं० १. द्वारपाल ।  
दरबान । व्योढ़ीदार । २. द्वार ।  
दरवाजा ।

प्रतिहारी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रतिहारिणी ]  
द्वारपाल । व्योढ़ीदार ।

प्रतीक-संज्ञा पुं० पता । चिह्न । निशान ।

प्रतीकार-संज्ञा पुं० प्रतिकार ।

प्रतीक्षा-संज्ञा स्त्री० किसी कार्य के  
होने या किसी के आने की आशा  
में रहना । आसरा । इंतजार ।  
प्रत्याशा ।

प्रतीची-संज्ञा स्त्री० पश्चिम दिशा ।

प्रतीच्य-वि० पश्चिमी ।

प्रतीत-वि० ज्ञात । विदित । जाना  
हुआ ।

प्रतीति-संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान ।  
जानकारी । २. विश्वास ।

प्रतीप-संज्ञा पुं० प्रतिपूज्य घटना ।  
आशा के विरुद्ध फल ।

प्रतीयमान-वि० जान पड़ता हुआ ।

प्रतुङ्ग-संज्ञा पुं० वे पक्षी जो अपना  
अक्ष्य चोंच से सोढ़कर खाते हैं ।

प्रतोली-संज्ञा स्त्री० १. चौड़ी सड़क ।  
शाहराह । २. गली । कूचा । ३.  
दुर्ग का द्वार ।

प्रत्यक्षा-संज्ञा स्त्री० घनप की डोरी  
जिसमें खगाकर घाव छोड़ा जाता  
है । चिह्न ।

प्रत्यक्ष-वि० [ संज्ञा प्रत्यक्षता ] १. जो  
देखा जा सके । जो आँखों के  
सामने हो । २. जिसका ज्ञान  
इंद्रियों से हो सके ।

संज्ञा पुं० चार प्रकार के प्रमाणों में  
से एक ।

कि० वि० आँखों के आगे ।  
सामने ।

प्रत्यक्षदर्शी-संज्ञा पुं० १. वह जिसने  
प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना देखी हो ।  
२. साक्षी । गवाह ।

प्रत्यक्षवादी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रत्यक्ष-  
वादिनी ] वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष  
प्रमाण माने, और कोई प्रमाण न  
माने ।



युक्त । २. जो, ससिं खेता हो ।  
चेतन ।  
संज्ञा पुं० प्राणी । जंतु । जीव ।  
प्राणनाथ-संज्ञा पुं० १. प्रिय व्यक्ति ।  
२. पति । स्वामी ।  
प्राणपति-संज्ञा पुं० १. पति ।  
स्वामी । २. प्रिय व्यक्ति ।  
प्राणप्यारा-संज्ञा पुं० १. प्रियतम ।  
अत्यंत प्रिय व्यक्ति । २. पति ।  
स्वामी ।  
प्राणप्रतिष्ठा-संज्ञा स्त्री० किसी मई  
मूर्ति के मंदिर आदि में स्थापित  
करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण  
का आरोप ।  
प्राणप्रद-वि० १. प्राणदाता । २.  
स्वास्थ्य-वर्धक ।  
प्राणप्रिय-वि० प्रियतम ।  
प्राणमय-वि० जिसमें प्राण हो ।  
प्राणमय कोश-संज्ञा पुं० वेदांत के  
अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा ।  
यह पाँच प्राणों से बना हुआ माना  
जाता है ।  
प्राणवल्लभ-संज्ञा पुं० १. अत्यंत  
प्रिय । २. स्वामी । पति ।  
प्राणवायु-संज्ञा स्त्री० प्राण ।  
प्राणशरीर-संज्ञा पुं० एक सूक्ष्म शरीर  
जो मनोमय माना गया है ।  
प्राणांत-संज्ञा पुं० मरण । मृत्यु ।  
प्राणांतक-वि० प्राण खेनेवाला ।  
प्राणाधार, प्राणाधिक-वि० अत्यंत  
प्रिय ।  
संज्ञा पुं० पति । स्वामी ।  
प्राणायाम-संज्ञा पुं० योगशास्त्रा-  
नुसार योग के आठ अंगों में चौथा ।  
प्राणी-वि० प्राणधारी ।

संज्ञा पुं० जीव । जंतु ।  
प्रातः-अव्य० प्रातःकाल ।  
प्रातः-संज्ञा पुं० सवेरा ।  
प्रातःकर्म-स्नानादि प्रातःकाल के  
कार्य ।  
प्रातःकाल-संज्ञा पुं० रात के अंत  
में सूर्योदय के पूर्व का काल । यह  
तीन सुहृत् का माना गया है ।  
प्रातःस्मरण-संज्ञा पुं० सवेरे के समय  
ईश्वर का भजन करना ।  
प्रातिपदिक-संज्ञा पुं० अग्नि ।  
प्राथमिक-वि० पहले का ।  
प्रादुर्भाव-संज्ञा पुं० आविर्भाव । प्रकट  
होना ।  
प्रादेशिक-वि० प्रदेश-संबंधी । किसी  
एक प्रदेश का । प्रांतिक ।  
प्रापति-संज्ञा स्त्री० दे० "प्राप्ति" ।  
प्राप्त-वि० पाया हुआ । जो मिला  
हो ।  
प्राप्तकाल-संज्ञा पुं० उपयुक्त काल ।  
उचित समय ।  
प्राप्तव्य-वि० दे० "प्राप्त्य" ।  
प्राप्ति-संज्ञा स्त्री० १. उपलब्धि । मिलना ।  
२. अग्निमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों  
में से एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण  
हो जाती हैं । ३. आय ।  
प्राप्य-वि० १. पाने योग्य । प्राप्त  
करने योग्य । २. जो मिला सके ।  
प्रामाणिक-वि० १. जो प्रत्यक्ष आदि  
प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो । २. मान-  
नीय । मानने योग्य ।  
प्राय-संज्ञा पुं० १. समान । तुल्य ।  
जैसे, मृतप्राय । २. लगभग । जैसे,  
प्रायद्वीप ।  
प्रायः-वि० १. विशेषकर । २. लग-  
भग ।

प्रत्यय-संज्ञा पुं० १. विश्वास । एत-  
धार । २. व्याकरण में वह अक्षर  
या अक्षर-समूह जो किसी धातु  
या मूल शब्द के अंत में, उसके  
अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने  
के उद्देश्य से, लगाया जाय । जैसे,  
मूलता में "ता" प्रत्यय है ।

प्रत्याख्यान-संज्ञा पुं० १. खंडन ।  
२. निराकरण ।

प्रत्यागत-वि० जो लौट आया हो ।

प्रत्याघर्शन-संज्ञा पुं० लौट आना ।

प्रत्याशा-संज्ञा स्त्री० आशा । उन्मेष ।

प्रत्याहार-संज्ञा पुं० इंद्रियनिग्रह ।  
योग के आठ अंगों में से एक  
अंग ।

प्रत्युत्-अर्थ० बरिष्ठ । वरन् । इसके  
विरुद्ध ।

प्रत्युत्पन्न-वि० जो ठीक समय पर  
उत्पन्न हो ।

प्रत्यूप-संज्ञा पुं० प्रभात । तड़का ।

प्रत्येक-वि० समूह अथवा बहुतों में  
से हर एक, अलग अलग ।

प्रथम-वि० १. जो गिनती में सबसे  
पहले आवे । पहला । २. सर्वश्रेष्ठ ।  
सबसे अच्छा ।

कि० वि० पहले । पेशतर । आगे ।

प्रथम पुरुष-संज्ञा पुं० दे० "उत्तम  
पुरुष" ।

प्रथमा-संज्ञा स्त्री० १. मदिरा । शराप ।  
(सांघिक) २. व्याकरण का कर्ता-  
कारक ।

प्रथा-संज्ञा स्त्री० रीति । रिवाज ।  
नियम ।

प्रद-वि० देनेवाला । जो दे । दगता ।  
(धार्मिक में) जैसे, आनंदप्रद ।

प्रदक्षिण-संज्ञा पुं० देवमूर्ति आदि  
के चारों ओर घूमना । परिक्रमा ।

प्रदत्त-वि० दिया हुआ ।

प्रदूर-संज्ञा पुं० स्त्रियों का एक रोग  
जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या  
लाल रंग का लसीदार पानी सा  
बहता है ।

प्रदर्शक-संज्ञा पुं० दिखलानेवाला ।

प्रदर्शन-संज्ञा पुं० दिखलाने का  
काम ।

प्रदर्शिनी-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ  
तरह तरह की चीजें लोगों को  
दिखलाने के लिये रखी जायें ।  
जुमाहश ।

प्रदान-संज्ञा पुं० १. देने की क्रिया ।  
२. दान ।

प्रदाह-संज्ञा पुं० ज्वर आदि के कारण  
अथवा और किसी कारण शरीर में  
होनेवाली जलन । दाह ।

प्रदीप-संज्ञा पुं० १. दीपक । दीया ।  
२. रोशनी । प्रकाश ।

प्रदीपक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रदीपिका ]  
प्रकाश में लानेवाला । प्रकाशक ।

प्रदीपन-संज्ञा पुं० १. जलाता  
करना । २. उज्ज्वल करना । चम-  
काना ।

प्रदीप्त-वि० जगमगाता हुआ । प्र-  
शवान् ।

प्रदीप्ति-संज्ञा स्त्री० रोशनी । प्रकाश ।

प्रदेश-संज्ञा पुं० १. किसी देश  
का वह घड़ा विभाग जिसकी  
भाषा, रीति-व्यवहार, शासन-पद्धति  
आदि उसी देश के अन्य विभागों  
की इन सब बातों से भिन्न हो ।  
प्रांत । सूबा । २. स्थान । जगह ।  
सुकाम ।

**प्रायश्चित्त-संज्ञा पु०** स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।  
**प्रायश्चित्त-वि०** प्रायः। बहुधा।  
**प्रायश्चित्त-संज्ञा पु०** शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।  
**प्रारंभ-संज्ञा पु०** १. शुरु। २. आदि।  
**प्रारंभिक-वि०** प्रारंभ का।  
**प्रारब्ध-वि०** १. आरंभ किया हुआ। २. भाग्य। किसमत।  
**प्रारब्धी-वि०** भाग्यवात्।  
**प्रार्थना-संज्ञा स्त्री०** किसी से कुछ माँगना। याचना। निवेदन।  
 ० **कि० स०** प्रार्थना या विनती करना।  
**प्रार्थनापत्र-संज्ञा पु०** वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदन पत्र। धर्जी।  
**प्रार्थना-समाज-संज्ञा पु०** ब्राह्म समाज की तरह का एक नवीन समाज या संप्रदाय।  
**प्रार्थनीय-वि०** प्रार्थना करने योग्य।  
**प्रार्थी-वि०** प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।  
**प्राप्तेय-संज्ञा पु०** १. हिम। तुषार। २. वफा।  
**प्रावृत्-संज्ञा पु०** वर्षा ऋतु।  
**प्राशन-संज्ञा पु०** खाना। भोजन। जैसे, अन्नप्राशन।  
**प्रासंगिक-वि०** १. प्रसंग-संबंधी। प्रसंग का। २. प्रसंग द्वारा प्राप्त।  
**प्रासाद-संज्ञा पु०** लंबा, चौड़ा, ऊँचा और पक्का या पत्थर का घर। विशाल भवन।  
**प्रियंगु-संज्ञा स्त्री०** कंगनी नामक अन्न।

**प्रियंवद-वि०** प्रिय वचन कहनेवाला। प्रियभाषी।  
**प्रिय-संज्ञा पु०** स्वामी। पति।  
 वि० १. जिससे प्रेम हो। प्यारा। २. मनोहर। सुंदर।  
**प्रयतन-वि०** प्राणों से भी अधिक प्रिय।  
 संज्ञा पु० स्वामी। पति।  
**प्रियदर्शन-वि०** जो देखने में प्रिय लगे। सुंदर।  
**प्रियदर्शी-वि०** सबको प्रिय समझने या सबसे स्नेह करनेवाला।  
**प्रियभाषी-वि०** मधुर वचन बोलनेवाला।  
**प्रियवर-वि०** अति प्रिय। सबसे प्यारा। (पत्नी आदि में संबोधन)।  
**प्रियवादी-संज्ञा पु०** दे० "प्रियभाषी"।  
**प्रिया-संज्ञा स्त्री०** १. नारी। स्त्री। २. परनी। ३. प्रेमिका स्त्री।  
**प्रीत-वि०** प्रीतियुक्त।  
 ० संज्ञा पु० दे० "प्रीति"।  
**प्रीतम-संज्ञा पु०** १. पति। भर्ता। स्वामी। २. प्यारा।  
**प्रीति-संज्ञा स्त्री०** प्रेम। प्यार।  
**प्रीतिकर, प्रीतिकारक-वि०** प्रसन्न करना उत्पन्न करनेवाला। प्रेमजनक।  
**प्रीतिपात्र-संज्ञा पु०** प्रेमभाजन।  
**प्रीतिभोज-संज्ञा पु०** वह खान-पान जिसमें मित्र, वंधु आदि प्रेमपूर्वक सम्मिलित हों।  
**प्रीत्यर्थ-अव्य०** प्रीति के कारण। प्रसन्न करने के वास्ते।  
**प्रेखण-संज्ञा पु०** अच्छी तरह दिखना। या झूलना।  
**प्रेक्षक-संज्ञा पु०** देखनेवाला। दर्शक।

प्रदोष-संज्ञा पुं० संध्याकाल । सूर्य के अस्त होने का समय ।  
 प्रद्युम्न-संज्ञा पुं० १. कामदेव । कंदर्प । २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम ।  
 प्रद्योत-संज्ञा पुं० १. किरण । रश्मि । २. दोसि । आभा । चमक ।  
 प्रधान-वि० मुख्य । खास ।  
 संज्ञा पुं० मुखिया । सरदार ।  
 प्रधानता-संज्ञा स्त्री० प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य या पद ।  
 प्रध्वंस-संज्ञा पुं० नाश । विनाश ।  
 प्रपञ्च-संज्ञा पुं० १. संसार । सृष्टि । २. हुनिया का जंजाल । ३. झगड़ा । झमेला । ४. आडंबर । ढोंग ।  
 प्रपञ्ची-वि० १. प्रपञ्च रचनेवाला । २. छत्ती । कपटी । ढोंगी ।  
 प्रपत्ति-संज्ञा स्त्री० अनन्य शरणागत होने की भावना । अनन्य भक्ति ।  
 प्रपन्न-वि० शरणागत । आश्रित ।  
 प्रपात-संज्ञा पुं० १. पहाड़ या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो । २. एक-चारगी नीचे गिरना । ३. ऊँचे से गिरती हुई जलधारा । झरना । दरी ।  
 प्रपितामह-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रपितामही ] १. परदादा । दादा का भाप । २. परमह ।  
 प्रपीडन-संज्ञा पुं० [ वि० प्रपीडित ] बहुत अधिक कष्ट देना ।  
 प्रफुल्ल-वि० १. खिलने लगा । विकसित । २. जिसमें फूल खगे हों । ३. खुला हुआ । ४. प्रसन्न । आनंदित ।

प्रबंध-संज्ञा पुं० १. बाँधने की ढोरी आदि । २. खेल या अनेक संबद्ध पदों में पूरा होनेवाला काव्य । निबंध । ३. आयोजन । उपाय । ४. व्यवस्था । बंदोबस्त । इंतजाम ।  
 प्रचल-वि० [ स्त्री० प्रचला ] चलवाना । प्रचंड ।  
 प्रचला-संज्ञा स्त्री० बहुत चलवती ।  
 प्रचुद्ध-वि० १. जागा हुआ । २. हाश में आया हुआ । ३. पंडित । ज्ञानी ।  
 प्रवोध-संज्ञा पुं० [ वि० प्रवोदक ] १. जागना । नींद का हटना । २. यथार्थ ज्ञान । ३. डारस । तसल्ली । ४. चेतावनी ।  
 प्रवोधन-संज्ञा पुं० १. जागरण । जागना । २. जगाना । नींद से उठाना । ३. यथार्थ ज्ञान । बोध । चेत । ४. जताना । ज्ञान देना । ५. सात्वना ।  
 प्रवोधना-वि० स० १. जगाना । नींद से उठाना । २. सचेत करना । होशियार करना । ३. समझाना-सुझाना । ४. पट्टी पढ़ाना । ५. डारस देना ।  
 प्रबोधिनी-संज्ञा स्त्री० देवोत्थान या कात्तिक शुद्धा एकादशी ।  
 प्रभंजन-संज्ञा पुं० प्रचंड वायु । आंधी ।  
 प्रभव-संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति-कारण । २. जन्म । उत्पत्ति । ३. सृष्टि । संसार ।  
 प्रभा-संज्ञा स्त्री० प्रकाश । चमक ।  
 प्रभाकर-संज्ञा पुं० सूर्य ।

प्रेक्षण-संज्ञा पुं० १. धातु । २. देखने की क्रिया ।

प्रेक्षा-संज्ञा स्त्री० १. देखना । २. दृष्टि । निगाह ।

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह-संज्ञा पुं० १. राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान । मंत्रणागृह । २. नाट्य-शाला ।

प्रेत-संज्ञा पुं० १. मरा हुआ मनुष्य । मृतक प्राणी । २. मरक में रहने-वाला प्राणी । ३. पिशाचों की तरह की एक कल्पित देवयोगि ।

प्रेतकर्म-संज्ञा पुं० हिंदुओं में मृतदाह आदि से लेकर सपिंही तक का कर्म । प्रेतकार्य ।

प्रेतगृह-संज्ञा पुं० १. रमरान । २. कश्मिराग ।

प्रेतत्व-संज्ञा पुं० प्रेत का भाव या धर्म ।

प्रेतदाह-संज्ञा पुं० मृतक को जलाने आदि का कार्य ।

प्रेतदेह-संज्ञा पुं० मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के समय से सपिंही तक बसकी आत्मा को प्राप्त रहता है ।

प्रेतनी-संज्ञा स्त्री० मृतनी । लुब्ध ।

प्रेतलोक-संज्ञा पुं० यमपुर ।

प्रेतविधि-संज्ञा स्त्री० मृतक का दाह आदि करना ।

प्रेताशीच-संज्ञा पुं० वह अशीच जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके संबंधियों आदि को होता है ।

प्रेती-संज्ञा पुं० प्रेत की उपासना करनेवाला । प्रेतपूजक ।

प्रेम-संज्ञा पुं० स्नेह । सुहृदत्व । अनुराग । प्रीति ।

प्रेमपात्र-संज्ञा पुं० वह जिससे प्रेम किया जाय । माशुक ।

प्रेमालाप-संज्ञा पुं० वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो ।

प्रेमालिंगन-संज्ञा पुं० प्रेमपूर्वक गले लगाना ।

प्रेमाश्रु-संज्ञा पुं० वे आँसू जो प्रेम के कारण आँखों से निकलते हैं ।

प्रेमी-संज्ञा पुं० १. प्रेम करनेवाला । २. आशिक । आसक्त ।

प्रेमसी-संज्ञा स्त्री० प्रेमिका ।

प्रेमक-संज्ञा पुं० किसी काम में प्रवृत्त या प्रेरणा करनेवाला ।

प्रेरणा-संज्ञा स्त्री० कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना । उरोजना देना ।

प्रेरणार्थक क्रिया-संज्ञा स्त्री० क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुआ है । जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिखवाना ।

प्रेरित-वि० भेजा हुआ । प्रेषित ।

प्रेषक-संज्ञा पुं० भेजनेवाला ।

प्रेषण-संज्ञा पुं० १. प्रेरणा करना । २. भेजना ।

प्रोक्षण-संज्ञा पुं० पानी छिड़कना ।

प्रोत-वि० १. किसी में अच्छी तरह मिला हुआ । २. छिपा हुआ ।

प्रोत्साह-संज्ञा पुं० बहुत अधिक उत्साह या उर्ध्व ।

प्रोत्साहने-संज्ञा पुं० [ वि० प्रोत्साहित ] खुद उत्साह बढ़ाना । हिम्मत बढ़ाना ।

प्रोपित-वि० जो विदेश में गया हो । प्रवासी ।

प्रोपित नायक या पति-संज्ञा पुं०

प्रत्यय-संज्ञा पुं० १. विश्वास । एत-  
। धार । २. व्याकरण में वह अक्षर  
या अक्षर-समूह जो किसी धातु  
या मूल शब्द के अंत में, उसके  
अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने  
के लक्ष्य से, लगाया जाय । जैसे,  
मूर्खता में "ता" प्रत्यय है ।

प्रत्याख्यान-संज्ञा पुं० १. खंडन ।  
२. निराकरण ।

प्रत्यागत-वि० जो लौट आया हो ।  
प्रत्यावर्त्तन-संज्ञा पुं० लौट आना ।  
प्रत्याशा-संज्ञा स्त्री० आशा । उम्मेद ।  
प्रत्याहार-संज्ञा पुं० इन्द्रियनिग्रह ।  
योग के आठ अंगों में से एक  
अंग ।

प्रत्युत्-अभ्य० अधिक । धन । इसके  
विरुद्ध ।

प्रत्युत्पन्न-वि० जो ठीक समय पर  
उत्पन्न हो ।

प्रत्युप-संज्ञा पुं० प्रभात । सड़का ।

प्रत्येक-वि० समूह अथवा बहुतां में  
से हर एक, अलग अलग ।

प्रथम-वि० १. जो गिनती में सबसे  
पहले आये । पहला । २. सर्वश्रेष्ठ ।  
सबसे अच्छा ।

क्रि० वि० पहले । पेशतर । आगे ।  
प्रथम पुरुष-संज्ञा पुं० दे० "उत्तम  
पुरुष" ।

प्रथमा-संज्ञा स्त्री० १. मदिरा । शराव ।  
(तांत्रिक) २. व्याकरण का कर्त्ता-  
कारक ।

प्रथा-संज्ञा स्त्री० रीति । रिवाज ।  
नियम ।

प्रद-वि० देनेवाला । जो दे । दाता ।  
(योगिक में) जैसे, आनंदप्रद ।

प्रदक्षिण-संज्ञा पुं० देवमूर्ति आदि  
के चारों ओर घूमना । परिक्रमा ।

प्रदक्ष-वि० दिया हुआ ।

प्रदूर-संज्ञा पुं० स्थियों का एक रोग  
जिसमें रंगके गर्भाशय से सफेद या  
लाल रंग का लसीदार पानी सा  
बहता है ।

प्रदर्शक-संज्ञा पुं० दिखलानेवाला ।

प्रदर्शन-संज्ञा पुं० दिखलाने का  
काम ।

प्रदर्शिनी-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ  
तरह तरह की चीज़ें लोगों को  
दिखलाने के लिये रखी जायें ।  
जुमाइश ।

प्रदान-संज्ञा पुं० १. देने की क्रिया ।  
२. दान ।

प्रदाह-संज्ञा पुं० ज्वर आदि के कारण  
अथवा और किसी कारण शरीर में  
होनेवाली जलन । दाह ।

प्रदीप-संज्ञा पुं० १. दीपक । दीप्ता ।  
२. रोशनी । प्रकाश ।

प्रदीपक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रदीपिका ]  
प्रकाश में लानेवाला । प्रकाशक ।

प्रदीपन-संज्ञा पुं० १. उजाला  
करना । २. उज्ज्वल करना । धन-  
काया ।

प्रदीप्त-वि० जलमगता हुआ । प्रज्ज-  
शयान् ।

प्रदीप्ति-संज्ञा स्त्री० रोशनी । प्रकाश ।

प्रदेश-संज्ञा पुं० १. किसी देश  
का वह बड़ा विभाग जिसकी  
भाषा, रीति-व्यवहार, शासन-पद्धति  
आदि, उसी देश के अन्य विभागों  
की इन सब बातों से भिन्न हो ।  
प्रांत । सूबा । २. स्थान । जगह ।  
मुकाम ।

वह नायक जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विरुद्ध हो। विरही नायक।

प्रोपितपतिका (नायिका)-संज्ञा स्त्री० (वह नायिका) जो अपने पति के परदेस में होने के कारण दुखी हो। प्रौढ़-वि० १. अच्छी तरह बड़ा हुआ। २. जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३. दृढ़।

प्रौढ़ता-संज्ञा स्त्री० प्रौढ़ होने का भाव। प्रौढ़त्व।

प्रौढ़ा-संज्ञा स्त्री० अधिक वयसवाली स्त्री।

प्लव-संज्ञा पुं० पाकर वृत्त। पिलखा।

प्लवंग-संज्ञा पुं० १. वानर। वंदर।

२. भृग। हिरन।

प्लवन-संज्ञा पुं० १. बड़लना। २.

तैरना।

प्लावन-संज्ञा पुं० पाढ़।

प्लावित-वि० जो जल में डूब गया हो।

प्लोहा-संज्ञा स्त्री० दे० "सिन्धु"।

प्लुत-संज्ञा पुं० १. टेढ़ी चाल।

शङ्खल। २. स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं

का होता है।

## फ

फ-हिंदी वर्णमाला में पचाईसवाँ व्यंजन। इसके उच्चारण का स्थान श्रोष्ठ है।

फंफा-संज्ञा पुं० बतनी मात्रा जितनी एक बार फाँकी जा सके।

फंफा-संज्ञा स्त्री० १. फाँकने की दवा।

२. बतनी दवा जितनी एक बार में फाँकी जाय।

फंग-संज्ञा पुं० घंघन। फंदा।

फंद-संज्ञा पुं० १. घंघन। २. फंदा।

जाल। ३. छल। धोखा।

फंदना-क्रि० अ० फंदे में पड़ना। फंसना।

फंदधार-वि० फंदा लगानेवाला।

फंदा-संज्ञा पुं० रस्सी, तारो आदि का वह घेरा जो किसी को फंसाने के लिये बनाया गया हो। फनी। फाँद।

फंसना-क्रि० स० १. घंघन या फंदे में पड़ना। २. अटकना। बलकना।

फंसाना-१. फंदे में डालना। २. बलीभूत करना।

फफ-वि० बदरंग।

फफोर-संज्ञा पुं० १. भीख माँगने-

वाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २.

साधु। संसारत्यागी। ३. निर्धन

मनुष्य।

फफोरी-संज्ञा स्त्री० १. भिखमंगापन।

२. साधुता। ३. निर्धनता।

फगुआ-संज्ञा पुं० १. होली। होलि-

कोत्सव का दिन। २. फागुन के

महीने में लोगों का आमोद-प्रमोद।

फाग।

फगुहारा-संज्ञा पुं० वह जो फाग

खेजने के लिये होली में किसी के

यहाँ जाय।

प्रदोष-संज्ञा पुं० संध्याकाल । सूर्य के अस्त होने का समय ।

प्रद्युम्न-संज्ञा पुं० १. कामदेव । कंदर्प । २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम ।

प्रद्योत-संज्ञा पुं० १. किरण । रश्मि । २. दोष । धामा । चमक ।

प्रधान-वि० मुख्य । खास ।

संज्ञा पुं० मुखिया । सरदार ।

प्रधानता-संज्ञा स्त्री० प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य या पद ।

प्रध्वंस-संज्ञा पुं० नाश । विनाश ।

प्रपंच-संज्ञा पुं० १. सत्सार । सृष्टि । २. दुनिया का जंगल । ३. झगड़ा । झमेला । ४. आडंबर । ढोंग ।

प्रपंची-वि० १. प्रपंच रचनेवाला । २. छली । कपटी । ढोंगी ।

प्रपत्ति-संज्ञा स्त्री० अनन्य शरणागत होने की भावना । अनन्य भक्ति ।

प्रपन्न-वि० शरणागत । आश्रित ।

प्रपात-संज्ञा पुं० १. पहाड़ या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो । २. पृथ्वी नीचे गिरना । ३. ऊँचे से गिरती हुई जलधारा । झरना । दरी ।

प्रपितामह-संज्ञा पुं० [ स्त्री० प्रपितामही ] १. परदादा । दादा का बाप । २. परमहंस ।

प्रपीडन-संज्ञा पुं० [ वि० प्रपीडित ] बहुत अधिक कष्ट देना ।

प्रफुल्ल-वि० १. खिलना । फूलना । विकसित । २. जिसमें फूल खगे हों । ३. खुलना । ४. प्रसन्न । आनंदित ।

प्रबंध-संज्ञा पुं० १. बंधन की होरी आदि । २. लेख या रचनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य । निबंध । ३. आयोजन । उपाय । ४. व्यवस्था । बंदोबस्त । इंतजाम ।

प्रबल-वि० [ स्त्री० प्रबला ] बलवान् । प्रचंड ।

प्रबला-संज्ञा स्त्री० बहुत बलवती ।

प्रबुद्ध-वि० १. जागृत हुआ । २. होश में आया हुआ । ३. पंडित । ज्ञानी ।

प्रबोध-संज्ञा पुं० [ वि० प्रबोधक ] १. जागना । नींद का हटना । २. यथार्थ ज्ञान । ३. डारस । तसल्ली । ४. चेतावनी ।

प्रबोधन-संज्ञा पुं० १. जागरण । जागना । २. जगाना । नींद से उठाना । ३. यथार्थ ज्ञान । बोध । चेत । ४. जताना । ज्ञान देना । ५. सात्वता ।

प्रबोधना-वि० स० १. जगाना । नींद से उठाना । २. सचेत करना । होशियार करना । ३. समझाना-बुझाना । ४. पही पढ़ाना । ५. डारस देना ।

प्रबोधिनी-संज्ञा स्त्री० देवोत्पान या कात्तिक शुद्धा एकादशी ।

प्रमंजन-संज्ञा पुं० प्रचंड वायु । आंधी ।

प्रमव-संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति-कारण । २. जन्म । उत्पत्ति । ३. सृष्टि । सत्सार ।

प्रभा-संज्ञा स्त्री० प्रकाश । चमक ।

प्रभाकर-संज्ञा पुं० सूर्य ।



फजर-संज्ञा स्त्री० सथेरा ।  
 फजल-संज्ञा पुं० अनुग्रह । कृपा ।  
 फज्जीहत-संज्ञा स्त्री० दुर्वशा । दुर्गति ।  
 फजल-वि० जो किसी काम का न हो । व्यर्थ । निरर्थक ।  
 फटफ-संज्ञा पुं० विहौर ।  
 फटफा-संज्ञा पुं० रुई धुनने की धुनकी ।  
 संज्ञा पुं० दे० "फाटक" ।  
 फटफाना-क्रि० स० १. थलम करना । फकना । २. फटकने का काम दूसरे से कराना ।  
 फटकार-संज्ञा स्त्री० फटकारने की क्रिया या भाव । फिटकी । हुतकार ।  
 फटकारना-क्रि० स० १. बहुत सी चीजों को एक साथ फटका मारना जिसमें वे छितरा जायें । २. लेना । लाना उठाना । ३. अच्छी तरह पटक पटककर धोना । ४. फटका देकर दूर फेंकना । ५. खरी धीर कड़ी बात कहकर चुप कराना ।  
 फटना-क्रि० भ० किसी पोली चीज में इस प्रकार दरार पड़ जाना जिसमें भीतर की चीजें बाहर निकल पड़ें अथवा दिखाई देने लगें ।  
 फटफटाना-क्रि० स० १. व्यर्थ बक-बाद करना । २. फटफट शब्द करना । ३. हाथ-पैर मारना । ४. इधर-उधर टकर मारना ।  
 कि० भ० फट फट शब्द होना ।  
 फटा-संज्ञा पुं० छिद्र । छेद ।  
 फटिक-संज्ञा पुं० १. विहौर । स्फटिक । २. मरमर पत्थर । संग-मरमर ।  
 फड़-संज्ञा पुं० १. जिस पर जुभासी

धात्री लगाते हैं । २. जुभासूना । जूए का अड़ा । ३. वह स्थान जहाँ दूकानदार बैठकर माल खरी-दता या बेचता हो ।  
 संज्ञा पुं० वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है । चरख ।  
 फड़क, फड़कन-संज्ञा स्त्री० फड़कने की क्रिया या भाव ।  
 फड़कना-क्रि० भ० बार बार नीचे ऊपर या इधर-उधर हिलना । फड़-फड़ाना । उछलना ।  
 फड़काना-क्रि० स० १. पंख हिलाना । २. फड़कने में प्रवृत्त करना ।  
 फड़नधीस-संज्ञा पुं० मराठों के राज्य-काल का एक राज-पद ।  
 फड़फड़ाना-क्रि० स०, भ० दे० "फटफटाना" ।  
 फड़यास-संज्ञा पुं० वह जो लोगों को अपने यहाँ जुआ खेलाता हो ।  
 फण-संज्ञा पुं० साँप का फन ।  
 फणधर-संज्ञा पुं० साँप ।  
 फणिक-संज्ञा पुं० साँप । नाग ।  
 फणिपति-संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र" ।  
 फणमुक्ता-संज्ञा स्त्री० साँप की मणि ।  
 फणींद्र-संज्ञा पुं० १. शेष । २. वासुकि । ३. बड़ा साँप ।  
 फणी-संज्ञा पुं० साँप ।  
 फणीश-संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र" ।  
 फतवा-संज्ञा पुं० मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी आदि किसी कर्म के अनु-कूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं ।  
 फतह-संज्ञा स्त्री० १. विजय । जीत । २. सफलता । कृतकार्यता ।  
 फतिंगा-संज्ञा पुं० १. किसी प्रकार

प्रभात-संज्ञा पुं० सवेरा । तड़का ।  
 प्रभाती-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है ।  
 प्रभाव-संज्ञा पुं० १. बद्भव । प्रादुर्भाव । २. असर । साख या दशाव ।  
 प्रभावती-संज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी । वि० स्त्री० प्रभाववाली ।  
 प्रभास-संज्ञा पुं० १. दीप्ति । ज्योति । २. एक प्राचीन तीर्थ । सोमतीर्थ ।  
 प्रभु-संज्ञा पुं० १. अधिपति । २. स्वामी । ३. ईश्वर । भगवान् ।  
 प्रभुता-संज्ञा स्त्री० १. बड़ाई । महत्त्व । २. वैभव । ३. साहिबी । मालिकपन ।  
 प्रभू-संज्ञा पुं० दे० "प्रभु" ।  
 प्रभूत-वि० १. निकला हुआ । २. प्रचुर । बहुत ।  
 संज्ञा पुं० पंचभूत । तत्त्व ।  
 प्रभूत-अव्य० इत्यादि । चगैरह ।  
 प्रभेद-संज्ञा पुं० भेद । विभिन्नता ।  
 प्रसक्त-वि० १. मग्न । नशे में चूर । २. पागल ।  
 प्रमथ-संज्ञा पुं० १. मथन या पीड़ित करनेवाला । २. शिव के एक प्रकार के गण या पारिपद ।  
 प्रमथन-संज्ञा पुं० १. मथना । २. दुःख पहुँचाना । ३. बध, या नाश करना ।  
 प्रमद-संज्ञा पुं० मतवालापन । वि० मत्त ।  
 प्रमदा-संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री ।  
 प्रमाण-संज्ञा पुं० १. वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो । सबूत । २. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता

है । ३. मानने की बात । ४. हयत्ता । हद ।  
 प्रमाणकोटि-संज्ञा स्त्री० प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का घेरा ।  
 प्रमाणपत्र-संज्ञा पुं० वह कागज़ जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो । सर्टिफिकेट ।  
 प्रमाणित-वि० प्रमाण द्वारा सिद्ध सावित ।  
 प्रमाद-संज्ञा पुं० १. भ्रम । भ्रांति । २. अतःकरण की दुर्बलता ।  
 प्रमादी-वि० प्रमादयुक्त । भूल-चूक करनेवाला ।  
 प्रमित-वि० १. परिमित । २. निश्चित । ३. अल्प । थोड़ा ।  
 प्रमीला-संज्ञा स्त्री० १. तंझा । २. यकायद । शैथिल्य ।  
 प्रमुख-वि० १. प्रथम । पहला । २. प्रधान । श्रेष्ठ ।  
 प्रमुदित-वि० हर्षित । प्रसन्न ।  
 प्रमेय-वि० १. जो प्रमाण का विषय हो सके । २. जिसका मान बताया जा सके । ३. जिसका निर्धारण कर सकें ।  
 संज्ञा पुं० वह जिसका बोध प्रमाण द्वारा करा सकें ।  
 प्रमेह-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें मूत्र-मार्ग से शुक्र तथा शरीर की और घातुएँ निकला करती हैं ।  
 प्रमोद-संज्ञा पुं० हर्ष । आनन्द ।  
 प्रमोदा-संज्ञा स्त्री० सांख्य में आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक ।  
 प्रयत्न-संज्ञा पुं० किसी वहेत्य की पूर्ति के लिये की जानेवाली क्रिया । प्रयास । चेष्टा । कोशिश ।

का उड़नेवाला कीड़ा । २. पतिंगा । पतंग ।

फतूही-संज्ञा स्त्री० बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती । सदरी ।

फतेही-संज्ञा स्त्री० दे० "फतह" ।

फतेह-संज्ञा स्त्री० विजय । जीत ।

फदकना-कि० अ० १. फड़ फड़ शब्द करना । २. दे० "फुदकना" ।

फन-संज्ञा पुं० साँप का सिर उस समय जब वह उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है । फण ।

फन-संज्ञा पुं० १. गुण । सूची । २. बिद्या । ३. दस्तकारी । ४. छलने का ढंग ।

फनकार-संज्ञा स्त्री० साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न फन फन शब्द ।

फनगा-संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा" ।

फना-संज्ञा स्त्री० नाश । धरादी ।

फनिंदा-संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र" ।

फनि-संज्ञा पुं० दे० १. "फणी" ।

२. दे० "फण" ।

फनराज-संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र" ।

फनी-संज्ञा पुं० दे० "फणी" ।

फनूस-संज्ञा पुं० दे० "फानूस" ।

फन्नी-संज्ञा स्त्री० लकड़ी आदि का यह टुकड़ा जो किसी ढोली चीज की जड़ में उसे फसने के लिये ठोका जाता है । पथर ।

फफूदी-संज्ञा स्त्री० खियों की साड़ी का बंधन । नीबी ।

फफोला-संज्ञा पुं० चमड़े पर का पोला समार जिसके भीतर पानी भरा रहता है । छाछा । मलका ।

फवती-संज्ञा स्त्री० हँसी की बात जो

किसी पर घटती हो । व्यंग्य । चुटकी ।

फयन-संज्ञा स्त्री० फयने का भाव ।

शोभा । छवि । सुंदरता ।

फयना-कि० अ० सुंदर या भला जान पड़ना । खिलना । सोहना ।

फवीला-वि० जो फयता हो । शोभा देनेवाला । सुंदर ।

फरफ-संज्ञा पुं० १. पार्थक्य । अलग-गाव । २. बीच का अंतर । दूरी ।

फरकन-संज्ञा स्त्री० दे० "फड़क" ।

फरकाना-कि० स० फरकने का सकर्मक रूप । हिलाना । सेचालित करना ।

फरचा-वि० १. जो जूठा न हो । शुद्ध । पवित्र । २. साफ-सुथरा ।

फरजो-संज्ञा पुं० शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या वज़ीर भी कहते हैं ।

वि० नकली । घनावटी । कल्पित ।

फरद-संज्ञा स्त्री० १. लेखा या वस्तुओं की सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी कागज पर अलग लिखी गई हो ।

२. पल्ला । ३. रज़ाई या दुखाई का ऊपरी पल्ला ।

वि० अनुपम । बेजोड़ ।

फरफंद-संज्ञा पुं० १. दाँव-पेच । छल कपट । माया । २. जलरा ।

चोचला ।

फरफर-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ के उड़ने या फड़कने से उत्पन्न शब्द ।

फरफराना-कि० स० अ० दे० "फड़फड़ाना" ।

फरमा-संज्ञा पुं० १. लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा जिस पर रखकर समार जूता बनाते हैं । काज-

प्रयाग—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-यमुना के संगम पर है। हलाहाबाद।

प्रयागवाल्—संज्ञा पुं० प्रयाग तीर्थ का पंढा।

प्रयाण—संज्ञा पुं० गमन। प्रस्थान। यात्रा।

प्रयास—संज्ञा पुं० १. प्रयत्न। उद्योग। २. श्रम। मेहनत।

प्रयुक्त—वि० अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिश्रित।

प्रयुत—संज्ञा पुं० दस लाख की संख्या।

प्रयोग—संज्ञा पुं० १. इस्तेमाल। प्रयत्न। २. क्रिया का साधन। विधान। ३. मारण, मोहन आदि सांख्यिक उपचार या साधन जो चारह कहे जाते हैं। ४. अभिनय। नाटक का खेल। ५. यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध कराने वाली विधि। पद्धति। ६. रीति। निदर्शन।

प्रयोगी, प्रयोजक—संज्ञा पुं० १. प्रयोगकर्ता। अनुष्ठान करनेवाला। प्रेरक। २. प्रदर्शक।

प्रयोजन—संज्ञा पुं० १. कार्य। काम। अर्थ। २. उद्देश्य। अभिप्राय। मतलब। आशय। ३. उपयोग। व्यवहार।

प्रयोजनीय—वि० काम का। मतलब का।

प्ररोचना—संज्ञा स्त्री० चाह या रुचि उत्पन्न करना।

प्ररोहण—संज्ञा पुं० आरोह। चढ़ाव।

प्रलंब—वि० लंबा।

प्रलंबन—संज्ञा पुं० अवलंबन। सहारा।

प्रलंबी—वि० १. दूर तक लटकने वाला। २. सहारा देनेवाला।

प्रलयकर—वि० प्रलयकारी। संहारकारी।

प्रलय—संज्ञा पुं० लय को प्राप्त होना। न रह जाना।

प्रलाप—संज्ञा पुं० व्यर्थ की बकबाद। पागलों की सी मदबुद्धि।

प्रलेप—संज्ञा पुं० श्रंग पर कोई गीली दवा छोपना या रखना। लेप।

प्रलेपन—संज्ञा पुं० लेप करने की क्रिया।

प्रलोभ, प्रलोभन—संज्ञा पुं० लोभ दिखाना। साखब दिखाना।

प्रवचना—संज्ञा स्त्री० छल। ठगपना। धूर्तता।

प्रवचन—संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह समझाकर कहना। २. व्याख्या।

प्रवण—संज्ञा पुं० क्रमशः नीची होती हुई भूमि। ढाल।

वि० ढालुवा। जो क्रमशः नीचा होता गया हो।

प्रवर—वि० श्रेष्ठ। बड़ा। मुख्य।

संज्ञा पुं० १. किसी गोत्र के अंतर्गत विशेष विशेष प्रवर्त्तक मुनि। २. सेतति।

प्रवर्त—संज्ञा पुं० कार्यारंभ।

प्रवर्त्तक—संज्ञा पुं० १. किसी काम को चला देनेवाला। संवाहक। २. ईजाद करनेवाला। ३. नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्त्तमान समय का वर्णन करता

हो और उसी का संयोज लिए पात्र का प्रवेश हो।

प्रवर्त्तन—संज्ञा पुं० १. कार्य आरंभ

रूम। २. वह साँचा जिसमें कोई चीज़ ढाली जाय।

संश पुं० कागज़ का पूरा सख्ना जो एक पार प्रेस में छापा जाता है।

तरमान-संश पुं० राजकीय आज्ञा-पत्र। अनुशासनपत्र।

तरमाना-क्रि० सं० आज्ञा देना। कहना। (आदर-सूचक)

तरवी-संश स्त्री० एक प्रकार का मूना हुआ चावल। मुरसुरा। लाई।

तरश-संश पुं० १. पिछावन। २. पक़ी बनी हुई ज़मीन। गच।

तरशी-संश स्त्री० १. गुड़गुड़ो। २. हुका।

तरसा-संश पुं० १. पैनी और चौड़ी धार की कुवड़ाइ। २. कावड़ा।

तरहद-संश पुं० एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग निकलता है।

तरहरा-संश पुं० पहाड़ा। मंडा।

तराक-संश पुं० मैदान।

वि० लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

तराकत-वि० लंबा-चौड़ा और समतल। विस्तृत।

वि० संश पुं० दे० "तरागत"।

तरागत-संश स्त्री० १. छुटकारा। छुटी। मुक्ति। २. निश्चितता।

चेष्टित्री। ३. मल-त्याग। बाख़ाना फिरना।

तरामोश-वि० भूला हुआ। विस्मृत।

तरार-वि० भागा हुआ।

तरासीस-संश पुं० १. फ्रांस देश।

२. फ्रांस का रहनेवाला। ३. एक प्रकार की खाद्य चीज़।

फरासीसी-वि० १. फ्रांस का रहने-वाला। २. फ्रांस का।

फरिया-संश स्त्री० वह लहंगा जो सामने की ओर सिला नहीं रहता।

फरियाद-संश स्त्री० १. दुःख से बचाए जाने के लिये पुकार। शिका-यत। नालिश। २. यिनती। प्रार्थना।

फरियाना-क्रि० सं० १. छुटिकर अलग करना। २. साफ़ करना। ३. निपटाना। सँ करना।

फरिस्ता-संश पुं० १. ईश्वर का वह वृत्त जो उसकी आज्ञा के अनु-सार कोई काम करता हो। (मुसल०) २. देवता।

फरी-संश स्त्री० चमड़े की मोल छोटी ढाल जिससे गतके की मार रोक्ते हैं।

फरही-संश स्त्री० छोटा कावड़ा। संश स्त्री० दे० "फरवी"।

फरदा-संश पुं० एक प्रकार की बढ़िया बामुन।

फरेय-संश पुं० छल। कपट।

फरेवी-संश पुं० कपटी।

फरेरी-संश स्त्री० जंगल के फल। जंगली मेवा।

फर्क-संश पुं० दे० "फरक"।

फर्ज-संश पुं० १. कर्त्तव्य कर्म। २. बचपना। मान लेना।

फर्ज़ी-वि० १. कल्पित। माना हुआ। २. नाम मात्र का। सचा-हीन।

संश पुं० दे० "फरज़ी"।

फर्द-संश स्त्री० १. कागज़ या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २. रज़ाई,

करना । २. काम को चलाना । ३. प्रचार करना । जारी करना ।  
 प्रवर्षण-संज्ञा पुं० १. वर्षा । बारिश । २. किष्किंधा के समीप का एक पर्वत ।  
 प्रघाद-संज्ञा पुं० १. घातघीत । २. अफवाह । ३. झूठी बदनामी । अपवाद ।  
 प्रघाल-संज्ञा पुं० झूठा । विद्रुम ।  
 प्रघास-संज्ञा पुं० १. अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना । २. विदेश ।  
 प्रघासी-वि० परदेश में रहनेवाला । परदेशी ।  
 प्रघाह-संज्ञा पुं० १. जल का झोत । बहाव । २. बहता हुआ पानी । धारा । ३. काम का जारी रहना । ४. चलता हुआ क्रम ।  
 प्रघाहित-वि० बहता हुआ ।  
 प्रघाही-वि० १. बहानेवाला । २. बहनेवाला । ३. तरल । प्रघ ।  
 प्रघिष्ट-वि० घुसा हुआ ।  
 प्रविसना-क्रि० प्र० घुसना ।  
 प्रवीण-वि० निपुण । कुशल । दक्ष । चतुर । होशियार ।  
 प्रधीर-वि० भारी बोझ । बहादुर ।  
 प्रवृत्त-वि० १. किसी बात की ओर रुका हुआ । २. तत्पर । उद्यत । तैयार ।  
 प्रवृत्ति-संज्ञा स्त्री० १. मन का लगाव । लगन । २. न्याय में एक-यत्न विशेष । ३. निवृत्ति का उल्टा ।  
 प्रवेश-संज्ञा पुं० १. भीतर जाना । घुसना । पैठना । २. गति । पहुँच ।  
 प्रवेशिका-संज्ञा स्त्री० वह पत्र या

चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने पाएँ ।  
 प्रव्रज्या-संज्ञा स्त्री० संन्यास ।  
 प्रशंसक-वि० १. प्रशंसा करनेवाला । २. खुशामदी ।  
 प्रशंसन-संज्ञा पुं० गुण-कीर्तन । स्तुति करना । तारीफ़ करना ।  
 प्रशंसनीय-वि० प्रशंसा के योग्य । बहुत अच्छा ।  
 प्रशंसा-संज्ञा स्त्री० गुण-वर्णन । स्तुति । बड़ाई । तारीफ़ ।  
 प्रशमन-संज्ञा पुं० १. शमन । शांति । २. ध्वंस करना । ३. घघ ।  
 प्रशस्त-वि० १. प्रशंसनीय । सुंदर । २. श्रेष्ठ । उत्तम । ३. भव्य ।  
 प्रशस्ति-संज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा । स्तुति । २. राजा की ओर से एक प्रकार के आज्ञापत्र ।  
 प्रशान्त-वि० चंचलता - रहित । स्थिर ।  
 संज्ञा पुं० एक महासागर जो एशिया और अमेरिका के बीच में है ।  
 प्रशाखा-संज्ञा स्त्री० शाखा की शाखा । टहनी । पतली शाखा ।  
 प्रश्न-संज्ञा पुं० १. पूछताछ । जिज्ञासा । सवाल । २. पूछने की बात ।  
 प्रश्नोत्तर-संज्ञा पुं० सवाल-जवाब ।  
 प्रश्रय-संज्ञा पुं० १. आश्रयस्थान । २. टेक । सहारा । आधार ।  
 प्रश्र्वास-संज्ञा पुं० वह वायु जो नथने से बाहर निकलती है ।  
 प्रश्रव्य-वि० पूछने योग्य ।  
 प्रसंग-संज्ञा पुं० १. संबंध । लगाव । २. विषय का लगाव । ३. स्त्री-पुरुष का संयोग । ४. अवसर । मौका ।

शाल आदि का ऊपरी पत्ता जो अलग घनता है। चढ़। पत्ता।  
**फर्नाटा-संज्ञा पुं०** १. वेग। तेज़ी। चिपटा।  
**फर्श-संज्ञा पुं०** १. बिछावन। बिछाने का कपड़ा। २. दे० "फरश"।  
**फल-संज्ञा पुं०** १. वनस्पति में होने वाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीज-कोश जो किसी विशिष्ट श्रुत में फूलों के थाने के बाद उत्पन्न होता है। २. प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। ३. धान, भाले, छुरी आदि का वह तेज़ अगला भाग जिससे आघात किया जाता है। ४. हस्त की फाल।  
**फलक-संज्ञा पुं०** १. आकाश। २. स्वर्ग।  
**फलफा-संज्ञा पुं०** फफोला। छाछ। मलका।  
**फलतः-अव्य०** फल-स्वरूप। परिणामतः। इसलिये।  
**फलदान-संज्ञा पुं०** हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति।  
**फलदार-वि०** १. जिसमें फल लगे हों। २. जिसमें फल खगे।  
**फलना-कि० भ०** १. फल से युक्त होना। २. लाभदायक होना।  
**फलहरी-संज्ञा स्त्री०** १. वन के वृक्षों के फल। मेवा। वनफल। २. फल।  
**फलहार-संज्ञा पुं०** दे० "फलाहार"।  
**फलहारी-वि०** जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, धलिक फलों से बना हो।  
**फला-वि०** अमुक। फलाना।  
**फलाग-संज्ञा स्त्री०** १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना।

कुदान। चौकड़ी। २. वह दूरी जो फलाग से तै की जाय।  
**फलागना-कि० भ०** एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कुदान। फाँदना।  
**फलागम-संज्ञा पुं०** १. फल लगाने की श्रुत या मौसम। २. शरद ऋतु।  
**फलाना-संज्ञा पुं०** अमुक। कोई अनिश्चित।  
**फालीन, फालेन-संज्ञा पुं०** एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।  
**फलाहार-संज्ञा पुं०** केवल फल खाना। फल-भोजन।  
**फलाहारी-संज्ञा पुं०** जो फल खाकर निर्वाह करता हो।  
**फलित-वि०** १. फला हुआ। २. संपन्न। पूर्ण।  
**फली-संज्ञा स्त्री०** छोटे पीछों में लगने वाले लंबे और चिपटे फल जिनमें छोटे छोटे बीज होते हैं।  
**फलीभूत-वि०** फलदायक। जिसका फल या परिणाम निकले।  
**फसल-संज्ञा स्त्री०** १. श्रुत। मौसम। २. समय। काल। ३. सस्य। खेत की उपज। धन्न।  
**फसली-वि०** श्रुत का।  
**संज्ञा पुं०** १. अकपर का चलाया हुआ एक संवत्। इसका प्रचार उत्तर भारत में खेती-बारी आदि के कामों में होता है। २. हैजा।  
**फहरान-संज्ञा स्त्री०** फहराने का भाव या क्रिया।  
**फहराना-कि० स०** कोई चीज इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह हवा में हिले और बढ़े। उड़ाना।

क्रि० भ० हवा में रह रहकर हिलना या उड़ना । फहरना ।

फाँक-संज्ञा स्त्री० १. किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा । २. खंड । टुकड़ा ।  
फाँकना-क्रि० स० दाने या चुकनी के रूप की वस्तु को दूर से मुँह में डालना ।

फाँड़ा-संज्ञा पुं० दुपट्टे या धोती का कमर में बाँधा हुआ हिस्सा ।

फाँद-संज्ञा स्त्री० उखलने या फाँदने का भाव । उखाल ।

संज्ञा पुं० फंदा । पाश ।

फाँदना-क्रि० भ० एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना । उखलना ।

क्रि० स० कूदकर लाँघना ।

फाँस-संज्ञा स्त्री० १. पाश । बंधन । फंदा । २. वह फंदा जिसमें शिकारी लोग पशु-पक्षी फँसते हैं ।

संज्ञा स्त्री० फाँस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा संतु जो शरीर में चुभ जाता है ।

फाँसना-क्रि० स० १. पाश में बाँधना । जाल में फँसाना । २. धोखा देकर अपने अधिकार में करना ।

फाँसी-संज्ञा स्त्री० वह रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है ।

फाँका-संज्ञा पुं० उपवास ।

फाँकामस्त, फाँकमस्त-वि० जो खाने-पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता न करता हो ।

फाँखता-संज्ञा स्त्री० पंडुक ।

फाग-संज्ञा पुं० १. फागुन में होने-

वाला रस्सव जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाब डालते हैं । २. वह गीत जो फाग के रस्सव में गाया जाता है ।

फागुन-संज्ञा पुं० माघ के बाद का महीना । फाल्गुन ।

फाजिल-वि० १. आवश्यकता से अधिक । २. विद्वान् ।

फाटक-संज्ञा पुं० बड़ा द्वार । बड़ा दरवाजा ।

फाड़न-संज्ञा स्त्री० कागज़, कपड़े आदि का टुकड़ा जो फाड़ने से निकले ।

फाड़ना-क्रि० स० १. चीरना । विदीर्ण करना । २. टुकड़े करना । घजियाँ उड़ाना । ३. संधि या जोड़ फैंटाकर खोलना । ४. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जायँ ।

फातिहा-संज्ञा पुं० १. प्रार्थना । २. वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय । (मुसल०)

फानूस-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बड़ी केंदीज । २. एक छंद में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें घत्तियाँ जलाई जाती हैं ।

फायदा-संज्ञा पुं० लाभ । नफ़ा ।

फायदेमंद-वि० लाभदायक ।

फारखती-संज्ञा स्त्री० वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के ज़िम्मे जो कुछ था, वह भेदा हो गया । चुकती । बेषाफी ।

फारस-संज्ञा पुं० दे० "पारस" ।

फारसी-संज्ञा स्त्री० फारस देश की भाषा ।



फौलाद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा घोर अच्छा लोहा ।

फ्रांसीसी-वि० १. फ्रांस देश का । २. फ्रांस देशवासी ।

घ

घ-हिंदी का सँहसर्वा व्यंजन । यह ओष्ठ्य वर्ण है ।

घंक-वि० १. टेढ़ा । २. पुरुषार्थी । ३. दुर्गम । जिस तक पहुँच न हो सके ।

संज्ञा पुं० वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है ।

घंका-वि० १. टेढ़ा । २. बाँका । ३. पराक्रमी ।

घंगाला-वि० घंगाल देश का । घंगाल-संज्ञा स्त्री ।

संज्ञा पुं० १. वह चारों ओर से खुला हुआ एक मंजिल का मकान जिसके चारों ओर घराबदे हों । २. घंगाल-देश का पान ।

संज्ञा स्त्री० घंगाल देश की भाषा ।

घंगाली-संज्ञा पुं० घंगाल देश का निवासी ।

घंचक-संज्ञा पुं० धूर्त । ठग ।

घंचकता, घंचकताई-संज्ञा स्त्री० छल । धूर्तता । धाजबाजी ।

घंचना-संज्ञा स्त्री० ठगी ।

कि० स० ठगना । छलना ।

घंचवाना-कि० स० पढ़वाना ।

घंछना-कि० स० अमिलापा करना । इच्छा करना । चाहना ।

घंछिता-वि० दे० "घांछित" ।

घंजर-संज्ञा पुं० ऊसर ।

घंजारा-संज्ञा पुं० दे० "घनजारा" ।

घंभा-वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "घांभ" ।

घँटना-कि० स० १ विभाग होना । २. अलग अलग हिस्सा होना ।

घँटवाना-कि० स० घाँटने का काम दूसरे से कराना ।

घँटघारा-संज्ञा पुं० घाँटने की क्रिया । विभाग । तक्सीम ।

घँटाई-संज्ञा स्त्री० १. घाँटने का काम या भाव । २. खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से मासिक को लगान के रूप में फसल का कुछ अंश मिलता है ।

घँटाना-कि० स० १. घँटवाना । २. दूसरे का धोम हलका करने के लिये शामिल होना ।

घँडा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कच्चा या अरुई ।

घँडी-संज्ञा स्त्री० १. कतुही । कुत्ती । २. घगलबंदी ।

घंद-संज्ञा पुं० १. वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय । २. पुरवा ।

१. शरीर के अंगों का कोई जोड़ ।

४. सनी । ५. बंधन । कैद ।

वि० १. जो खुला न हो । २.

जिसका कार्य रुका हुआ या स्थगित हो । ३. जो किसी तरह की कद में हो ।

घंदगी-संज्ञा स्त्री० १. भक्तिपूर्वक ईश्वर

शाल आदि का ऊपरी पछा जो  
थलग घनता है। चहर। पछा।  
फर्राटा-संज्ञ पुं० १. वेग। तेजी।  
चिप्रता।

फर्रा-संज्ञ पुं० १. विद्यावन। विद्याने  
का कपड़ा। २. दे० "फरश"।

फल-संज्ञ पुं० १. घनस्पति में होने-  
वाला वह बीज या गूदे से परि-  
पूर्ण बीज-कोश जो किसी विशिष्ट  
अणु में फलों के आने के बाद उत्पन्न  
होता है। २. प्रयत्न या क्रिया का  
परिणाम। नतीजा। ३. बाण, भाले,  
छुरी आदि का वह तेज अगला  
भाग जिससे आघात किया जाता  
है। ४. इक्षु की फाल।

फलक-संज्ञ पुं० १. आकाश। २.  
स्वर्ग।

फलका-संज्ञ पुं० फफोला। छाया।  
मलका।

फलतः-अव्य० फल-स्वरूप। परि-  
णामतः। इसलिये।

फलदान-संज्ञ पुं० हिंदुओं में विवाह  
पक्का करने की एक रीति।

फलदार-वि० १. जिसमें फल लगे  
हों। २. जिसमें फल लगें।

फलना-क्रि० भ० १. फल से युक्त  
होना। २. लाभदायक होना।

फलहरी-संज्ञ स्त्री० १. वन के वृक्षों  
के फल। मेवा। वनफल। २. फल।

फलहार-संज्ञ पुं० दे० "फलाहार"।

फलहारी-वि० जिसमें अन्न न पड़ा  
हो अथवा जो अन्न से न बना हो,  
घलिक फलों से बना हो।

फलों-वि० अमुक। फलाना।

फलांग-संज्ञ स्त्री० १. एक स्थान से  
उड़लकर दूसरे स्थान पर जाना।

कुंदान। चौकड़ी। २. वह दूरी जो  
फलांग से तै की जाय।

फलांगना-क्रि० भ० एक स्थान से  
उड़लकर दूसरे स्थान पर जाना।  
कूदना। फाँदना।

फलागम-संज्ञ पुं० १. फल लगाने  
की श्रुत या मौसम। २. शब्द अणु।

फलाना-संज्ञ पुं० अमुक। कोई  
अनिश्चित।

फलालीन, फलालेन-संज्ञ पुं० एक  
प्रकार का ऊनी वस्त्र।

फलाहार-संज्ञ पुं० केवल फल खाना।  
फल-भोजन।

फलाहारी-संज्ञ पुं० जो फल खाकर  
निर्वाह करता हो।

फलित-वि० १. फला हुआ। २.  
संपन्न। पूर्ण।

फली-संज्ञ स्त्री० छोटे पीछों में लगाने-  
वाले लंबे और चिपटे फल जिनमें  
छोटे छोटे बीज होते हैं।

फलीभूत-वि० फलदायक। जिसका  
फल या परिणाम निकले।

फसल-संज्ञ स्त्री० १. अणु। मौसम।  
२. समय। काल। ३. सत्य। खेत  
की उपज। अन्न।

फसली-वि० अणु का।

संज्ञ पुं० १. अकबर का चलाया  
हुआ एक सिक्का। इसका प्रचार  
उत्तर भारत में खेती-बारी आदि के  
कामों में होता है। २. हीजा।

फहरान-संज्ञ स्त्री० फहराने का भाव  
या क्रिया।

फहराना-क्रि० स० कोई चीज इस  
प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह  
हवा में हिले और उड़े। उड़ाना।

की वंदना । २. सेवा । ३. प्रणाम ।  
सलाम ।

धंदगोभी-संज्ञा स्त्री० करमकला ।  
पातगोभी ।

धंदन-संज्ञा पुं० दे० "धंदन" ।  
संज्ञा पुं० १. रोचन । रोली । २.  
ईशुर । सेंदुर ।

धंदनता-संज्ञा स्त्री० धंदनीयता । आदर  
या धंदना किए जाने की योग्यता ।  
धंदनचार-संज्ञा पुं० फूलों या पत्तों  
की झालर जो मंगल सूचनार्थ  
दीवारों आदि में बांधी जाती है ।  
तोरण ।

धंदना-संज्ञा स्त्री० दे० "धंदना" ।  
क्रि० सं० प्रणाम करना ।

धंदर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध स्नानपायी  
चौपाया । कपि । मकंद ।

धंदरगाह-संज्ञा पुं० समुद्र के किनारे  
का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं ।

धंदसाला-संज्ञा पुं० कैदखाना । जेल ।

धंदा-संज्ञा पुं० सेवक । दास ।

संज्ञा पुं० बंदी । कैदी ।

धंदाव-वि० १. धंदनीय । २. पूज-  
नीय । आदरणीय ।

धंदिश-संज्ञा स्त्री० १. बांधने की क्रिया  
या भाव । २. प्रबंध । रचना । योजना ।

धंदी-संज्ञा पुं० एक जाति जो राजाओं  
का कीर्तिगान करती थी । भाट ।  
चारण ।

संज्ञा पुं० कैदी ।

धंदीखाना-संज्ञा पुं० कैदखाना ।

धंदीछोर-संज्ञा पुं० कैद या धंधन  
से छुड़ानेवाला ।

धंदीवान-संज्ञा पुं० कैदी ।

धंदुक-संज्ञा स्त्री० नली के रूप का

एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें गोली रख-  
कर धारुद की सहायता से चलाई  
जाती है ।

धंदुकची-संज्ञा पुं० धंदुक चलानेवाला  
सिपाही ।

धंदेरा-संज्ञा पुं० १. बंदी । कैदी ।  
२. सेवर । दास ।

धंदोवस्त-संज्ञा पुं० १. प्रबंध । इंत-  
ज़ाम । २. सपुर्द खेतों आदि को  
मापकर उनका कर निश्चित करने  
का काम ।

धंध-संज्ञा पुं० १. धंधन । २. गाँठ ।  
गिरह । ३. पानी रोकने का धुस्स ।  
बांध । ४. कोकशास्त्र के अनुसार  
रति का आसन । ५. योगशास्त्र के  
अनुसार योग-साधन की कोई मुद्रा ।  
६. निबंध-रचना । गद्य या पद्य लेख  
तैयार करना । ७. चित्रकाव्य में धंध  
की ऐसी रचना जिससे किसी विशेष  
प्रकार की आकृति या चित्र बन  
जाय ।

धंधक-संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जो  
लिए हुए ऋण के बदले में धनी के  
यहाँ रख दी जाय । रेहन । २.  
बांधनेवाला ।

संज्ञा पुं० स्त्री-सेभोग का कोई आसन ।  
धंध ।

धंधन-संज्ञा पुं० १. बांधने की क्रिया ।  
२. वह जिससे कोई चीज़ बांधी  
जाय । ३. वह जो किसी की स्वतं-  
त्रता आदि में बाधक हो । प्रतिबंध ।  
४. रस्सी ।

धंधना-क्रि० प्र० १ धंधन में आना ।  
बद्ध होना । २. कैद होना । ३.  
प्रतिबंध में रहना । ४. प्रतिज्ञा या

क्रि० भ० हवा में रह-रहकर हिलना या उड़ना । फहरना ।

फाँक-संज्ञा स्त्री० १. किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा । २. खंड । टुकड़ा ।

फाँकना-क्रि० स० दाने या धुक्नी के रूप की वस्तु को दूर से मुँह में डालना ।

फाँड़ी-संज्ञा पुं० दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा ।

फाँद-संज्ञा स्त्री० उखलाने या फाँदने का भाव । उखाल ।

संज्ञा पुं० फंदा । पाश ।

फाँदना-क्रि० भ० एक स्थान से दूसरे स्थान पर फूँदना । उखलाना ।

क्रि० स० फूँदकर लाघना ।

फाँस-संज्ञा स्त्री० १. पाश । बंधन । फंदा । २. वह फंदा जिसमें शिकारी लोग पशु-पक्षी फँसते हैं ।

संज्ञा स्त्री० बाँस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा तंतु जो शरीर में खुभ जाता है ।

फाँसना-क्रि० स० १. पाश में बाँधना । जाल में फँसाना । २. धोखा देकर अपने अधिकार में करना ।

फाँसी-संज्ञा स्त्री० वह रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है ।

फाँका-संज्ञा पुं० उपवास ।

फाँकामस्त, फाँकमस्त-वि० जो खाने-पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिन्ता न करता हो ।

फाँखता-संज्ञा स्त्री० पंडुक ।

फाग-संज्ञा पुं० १. फागुन में होने-

वाला रस्सव जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाब डालते हैं । २. वह गीत जो फाग के रस्सव में गाया जाता है ।

फागुन-संज्ञा पुं० माघ के बाद का महीना । फाल्गुन ।

फाँजिल-वि० १. आवश्यकता से अधिक । २. विद्वान् ।

फाटक-संज्ञा पुं० बड़ा द्वार । बड़ा दरवाजा ।

फाड़न-संज्ञा स्त्री० कागज़, कपड़े आदि का टुकड़ा जो फाँदने से निकले ।

फाड़ना-क्रि० स० १. चीरना । विदीर्ण करना । २. टुकड़े करना ।

घाँजियाँ बढ़ाना । ३. संधि या जोड़ फँडाकर खोलना । ४. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जायें ।

फातिहा-संज्ञा पुं० १. प्रार्थना । २. वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय । (मुसल०)

फानूस-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बड़ा कंदील । २. एक छंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं ।

फायदा-संज्ञा पुं० लाभ । नफा ।

फायदेमंद-वि० लाभदायक ।

फारखती-संज्ञा स्त्री० वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के ज़िम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया । चुकती । चेबाकी ।

फारस-संज्ञा पुं० दे० "पारस" ।

फारसी-संज्ञा स्त्री० फारस देश की भाषा ।

बधन आदि से बद्ध होना । १. प्रेम-पाश में बद्ध या मुग्ध होना ।

संज्ञा पुं० वह वस्तु जिससे किसी चीज को बाँधें ।

बँधनि-संज्ञा स्त्री० १. बधन । जिसमें कोई चीज बँधी हुई हो । २. बल-माने या फँसानेवाली चीज ।

बँधवाना-कि० सं० बाँधने का काम दूसरे से कराना ।

बँधान-संज्ञा पुं० १. लेन-देन या व्यवहार आदि की नियत परिगटो ।

२. पानी रोकने का युक्त । बाँध ।

३. ताज का सम । ( संगीत )

बँधाना-कि० सं० १. धारणा कराना ।

२. दे० "बँधवाना" ।

बँधु-संज्ञा पुं० १. भाई । २. सहायक ।

३. मित्र । ४. एक धर्मवृत्त । ५. बंधूक पुष्प ।

बँधुआ-संज्ञा पुं० कँदो । बंदी ।

बँधुक-संज्ञा पुं० दुःखरिया का फूल ।

बँधुना-संज्ञा स्त्री० दे० "बंधुव" ।

बँधुत्व-संज्ञा पुं० १. बंधु होने का भाव । बंधुता । २. भाई-चारा ।

३. मित्रता ।

बँधुक-संज्ञा पुं० दे० "बंधुक" ।

बंधेज-संज्ञा पुं० १. नियत समय पर दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य ।

२. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति । ३. रुकावट ।

प्रतिबंध ।

बंध्या-वि० स्त्री० ( वह स्त्री ) जो संतान न पैदा कर सके । बंकि ।

बंध्यापन-संज्ञा पुं० दे० "बाँधपन" ।

बंध्यापुत्र-संज्ञा पुं० ठीक वैसा ही अश्वभाव भाव या पदार्थ जैसे बंध्या का पुत्र । कभी न होनेवाली चीज ।

बँधुलिस-संज्ञा स्त्री० मलत्याग के लिये म्यूनिस्पैलिटी आदि का बनवाया हुआ सार्वजनिक स्थान ।

बंध-संज्ञा स्त्री० धुआरंभ में धीरे-धीरे का बरसातवर्द्धक नाद । रगनाद ।

बह्ना ।

बंधा-संज्ञा पुं० १. पानी की कल ।

बंध । २. सोता ।

बंधाना-कि० सं० गैर आदि पशुओं का बाँध बाँध कराना । रँभाना ।

बंधू-संज्ञा पुं० बंधू पीने की पाँस की छोटी पतली नली ।

बँस-संज्ञा पुं० दे० "बंश" ।

बँसलोचन-संज्ञा पुं० बाँस का सार भाग जो सफ़ेद रंग के छोटे-छोटे

के रूप में पाया जाता है । बँसकपूर ।

बँसी-संज्ञा स्त्री० १. बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का वाजा ।

बाँसुगी । २. मछली फँसाने का एक योजन ।

बँसीघर-संज्ञा पुं० धीकृष्ण ।

बँहगी-संज्ञा स्त्री० भार ढोने का वह उपकरण जिसमें एक लंबे बाँस के

दोनों सिरे पर रस्सियों के बड़े बड़े

छोँके बटका दिए जाते हैं ।

बडर-संज्ञा पुं० दे० "बैर" या "मैर" ।

बडर-संज्ञा पुं० दे० "बावला" ।

बक-संज्ञा पुं० १. बगला । २. अग-

स्थ नामक पुष्प का वृक्ष ।

संज्ञा स्त्री० प्रलाप । बकवाद ।

बकतर-संज्ञा पुं० एक प्रकार की

जिरह या कवच जिसे मोटा जड़ाई

में पहनते हैं । सझाह ।

बकता-वि० दे० "बक्ता" ।

फाल-संज्ञा स्त्री० लोहे का चौकोर लंबा छद् जो हल के नीचे लगा रहता है। जमीन हसी से खुदती है। कुस। कुसी।

फालतू-वि० १. आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २. व्यर्थ। निकम्मा।

फालसाई-वि० फालसे के रंग का। लसाईं लिए हुए हलका ऊदा।

फालसा-संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।

फालगुन-संज्ञा पुं० एक चांद्रमास। दे० "फाल्गुन"।

फालगुनी-संज्ञा स्त्री० पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा-संज्ञा पुं० मिट्टी खोदने और टाकने का एक औजार। फरसा।

फाश-वि० खुला। प्रकट।

फासला-संज्ञा पुं० दूरी। अंतर।

फादा-संज्ञा पुं० तैल, घी या मरहम आदि में तर की हुई कपड़े की पट्टी या रुई। फाया।

फाहिया-वि० स्त्री० छिनाल। पुश्तली।

फिक-संज्ञा स्त्री० १. चिंता। सोच। २. ब्यान। ३. तदवीर।

फिचकुर-संज्ञा पुं० फेन जो मूच्छा या वेदोशी आने पर मुँह से निकलता है।

फिटकार-संज्ञा स्त्री० धिक्कार। लानत।

फिटकारी-संज्ञा स्त्री० एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिक के समान श्वेत होता है।

फिटन-संज्ञा स्त्री० चार पहिये की एक प्रकार की खुली गाड़ी।

फितूर-संज्ञा पुं० १. विकार। खराबी। २. फगड़ा। बखेड़ा।

फिदवी-वि० स्वामिभक्त। आज्ञाकारी। संज्ञा पुं० दास।

फिरंग-संज्ञा पुं० युरोप का एक देश। गोरों का मुल्क। फिरंगिस्तान।

फिरंगी-वि० १. फिरंग देश में रहने वाला। गोरा। २. फिरंग देश का।

संज्ञा स्त्री० विलायती तलवार।

फिरंट-वि० १. फिरा हुआ। विरुद्ध। खिलाफ। २. विरोध या लड़ाई पर तय।

फिर-कि० वि० एक बार और। दोबारा। पुनः।

फिरका-संज्ञा पुं० १. जाति। २. जगह। ३. पंथ। संप्रदाय।

फिरकी-संज्ञा स्त्री० १. यह नोल या चकाकार पदार्थ जो बीच की कीली को एक स्थान पर टिकाकर घूमता हो। २. फिरहरी।

फिरता-संज्ञा पुं० १. वापसी। २. अस्थोकार।

वि० वापस लौटाया हुआ।

फिरना-कि० भ० १. इधर वधर चलना। २. टहलना। विचरना।

३. लौटना। वापस होना। ४. सामना दूसरी तरफ हो जाना।

५. मुड़ना।

फिराक-संज्ञा पुं० खोज।

फिराना-कि० स० १. कभी इस ओर, कभी उस ओर ले जाना। २. टहलाना। ३. लौटाना। पलटाना।

फिरार-संज्ञा पुं० भाग जाना।

फिरि-कि० वि० दे० "फिर"।

धकध्यान-संज्ञा पुं० ऐसी चेष्टा या ठंग जो देखने में तो बहुत साधु जान पड़े, पर जिसका वास्तविक वदर्य दुष्ट हो। बनावटी साधु भाव।

धकना-क्रि० स० ऊटपटांग यात कहना। व्यर्थ बहुत बोलना।

धकधक-संज्ञा स्त्री० धकने की क्रिया या भाव।

धकमौन-संज्ञा पुं० दुष्ट वदर्य सिद्ध करने के लिये गल्ले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना।

वि० चुपचाप काम साधनेवाला।

धकरा-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध चतुष्पाद पशु जिसके सींग पीछे झुके हुए, पूँछ छोटी और गुर फटे होते हैं।

धकला-संज्ञा पुं० १. पेड़ की छाल।  
२. फल का छिलका।

धकवाद्-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात।  
धकधक।

धकवादी-वि० बहुत धकधक करने वाला। धकी।

धकवास-संज्ञा स्त्री० दे० "धकवाद"।

धकस-संज्ञा पुं० कपड़े आदि रखने का चौकोर संदूक।

धकसना-क्रि० स० १. कृपापूर्वक देना। २. क्षमा करना।

धकसाना-क्रि० स० क्षमा करना। माफ़ करना।

धकसी-संज्ञा पुं० दे० "धकसी"।

धकसीस-संज्ञा स्त्री० १. दान।

२. इनाम। पारितोषिक।

धकायन-संज्ञा स्त्री० नीम की जाति का एक पेड़।

धकाया-संज्ञा पुं० यचा हुआ। धकी।

धकारी-संज्ञा स्त्री० मुँह से निकलने वाला शब्द।

धकावली-संज्ञा स्त्री० दे० "गुल बकावली"।

धकासुर-संज्ञा पुं० एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

धकुचना-क्रि० म० सिमटना।  
सिकुड़ना। संकुचित होना।

धकुचा-संज्ञा पुं० छोटी गडरी।  
धकचा।

धकुची-संज्ञा स्त्री० एक पैघा जो औपध के काम में आता है।

संज्ञा स्त्री० छोटी गडरी।

धकुल-संज्ञा पुं० मौलसिरी।

धकुला-संज्ञा पुं० दे० "धगला"।

धकेन, धकेना-संज्ञा स्त्री० वह गाय या भैंस जिसे घसा दिए साज भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो।

धकैया-संज्ञा पुं० पक्षों का घुटनों के बल चलना।

धकोट-संज्ञा स्त्री० धकोटने की मुद्रा, क्रिया या भाव।

धकोटना-क्रि० स० नाखूनों से नोचना। पंजा मारना।

धकम-संज्ञा पुं० एक छोटा कँटीला पृष्ठ। इसकी छकड़ी, छिलके और फलों से लाल रंग निकलता है।

धकल-संज्ञा पुं० १. छिलका। २. छाल।

धकाल-संज्ञा पुं० धणिक। धनिया।

धकी-वि० बहुत बोलने या धकधक करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का धान।

धकस-संज्ञा पुं० दे० "धकस"।

वखरा-संज्ञा पुं० दे० "धाखर"।

फिरियाद-संज्ञा स्त्री० दे० "फिरियाद" ।

फिल्ली- संज्ञा स्त्री० पिँडली । (धंग)

फिस-वि० कुछ नहीं । (हास्य)

फिसड्डो-वि० १. जिससे कुछ करते-धरते न बने । २. जो काम में सबसे पीछे रहे ।

फिसलन-संज्ञा स्त्री० १. फिसलने की क्रिया या भाव । रपटन । २. चिकनी जगह जहाँ पैर फिसले ।

फिसलना-कि० अ० चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना । रपटना ।

फीका-वि० १. स्वादहीन । २. जो चटकीला न हो । धूमला । ३. काँतिहीन । ये-शून्य ।

फीता-संज्ञा पुं० पतली धाँजी, सूख आदि जो किसी वस्तु को छपेटने या बाँधने के काम में आता है ।

फीरोज़ा-संज्ञा पुं० हरापन लिए नीला रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर ।

फीरोज़ी-वि० हरापन लिए नीला ।

फील-संज्ञा पुं० हाथी ।

फीलपा-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें पैर या और कोई धंग फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है ।

फीलघान-संज्ञा पुं० हाथीघान ।

फीली-संज्ञा स्त्री० पिँडली ।

फुफना-कि० अ० १. फूँकने का अकर्मक रूप । २. जलना । भस्म होना ।

संज्ञा पुं० दे० "फूँकनी" ।

फुफनी-संज्ञा स्त्री० १. वह नली जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं । २. बाथी ।

फूँकरना-कि० अ० फूँकार छोड़ना ।

फूँ फूँ शब्द करना ।

फूँकवाना, फूँकाना-कि० स०

फूँकने का काम दूसरे से कराना ।

फूँकार-संज्ञा पुं० दे० "फूँकार" ।

फुदना-संज्ञा पुं० फूल के आकार की गाँठ जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बुनाते हैं । फुलारा । झुंवा ।

फुदिया-संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना" ।

फुँदी-संज्ञा स्त्री० फँदा । गाँठ ।

फुँसी-संज्ञा स्त्री० छोटी फोड़िया ।

फुकना-कि० अ० दे० "फूँकना" ।

फुचड़ा-संज्ञा पुं० कपड़े आदि की बुनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा ।

फुट-वि० १. अकेला । २. अलग ।

संज्ञा पुं० १२ इंच की एक माप ।

फुटकर, फुटकल-वि० १. अकेला ।

२. अलग । पृथक् । ३. कई प्रकार का । कई मेख को । ४. थोक का बलदा ।

फुटफा-संज्ञा पुं० फफोला ।

फुदफना-कि० अ० १. उड़ल उड़ल कर फूँदना । २. वमन में आना ।

फुदकी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।

फुनगी-संज्ञा स्त्री० शूष या पाँधे की शाखाओं का अग्रभाग । शंक्र ।

फुण्फुस-संज्ञा पुं० फेफड़ा ।

फुफकार-संज्ञा पुं० साँप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द । फुँकार ।

फुफकारना-कि० अ० साँप का मुँह से फूँक निकालना । फूँकार करना ।

फुफ्फा-संज्ञा स्त्री० दे० "फूफ़ी" ।



बखरी-संज्ञा स्त्री० मिट्टी, ईंटों आदि का बना हुआ मकान । (गाँव)

बखसीस-संज्ञा स्त्री० दे० "बकसीस" ।

बखान-संज्ञा पुं० १. बर्खान । कथन । २. प्रशंसा । स्तुति । बढ़ाई ।

बखानना-कि० स० १. बर्खान करना । कहना । २. प्रशंसा करना । सराहना ।

बखार-संज्ञा पुं० दीवार आदि से घिरा हुआ गोल घेरा जिसमें गाँवों में भक्ष रखी जाता है ।

बखिया-संज्ञा पुं० एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई ।

बखीर-संज्ञा स्त्री० भीठे रस में उबाला हुआ चावल ।

बखेड़ा-संज्ञा पुं० १. झगड़ । उलझन । २. झगड़ा । टंटा ।

बखेड़िया-वि० बखेड़ा करनेवाला । झगड़ालू ।

बखेरना-कि० स० चीखों को इधर-उधर या दूर-दूर फैलाना । छितराना ।

बखतर-संज्ञा पुं० दे० "बकतर" ।

ब. बखना-कि० स० १. देना । प्रदान करना । २. माफ़ करना ।

बखिश-संज्ञा स्त्री० १. दान । २. चमा ।

बग-संज्ञा पुं० यगुला ।

बगई-संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है । कुकुरमाछी । २. एक प्रकार की घास ।

बगलुट, बगटुट-कि० वि० सरपट । धेतड़ाशा । बढ़े वेग से ।

बगवना-कि० स० लुढ़कना ।

बगमेल-संज्ञा पुं० दूसरे के घोड़े

के साथ बाग मिलाकर चढ़ना । बराबर बराबर चढ़ना ।

कि० वि० बाग मिलाए हुए । साथ साथ ।

बगर-संज्ञा पुं० १. महल । प्रासाद ।

२. बड़ा मकान । घर । ३. सहन । थागन । ४. वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं । बगार । घाटी । संज्ञा स्त्री० दे० "बगल" ।

बगरना-कि० स० फैलना ।

बगराना-कि० स० फैलाना । छितराना । छिटकाना ।

कि० स० बगरना । फैलना । बिखरना ।

बगरी-संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी" ।

बगल-संज्ञा स्त्री० १. बाहु-मूख के भीचे की ओर का गड्ढा । काँख । २. पार्श्व । ३. समीप का स्थान । पास की जगह ।

बगलवंदी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिरजई या कुरती ।

बगला-संज्ञा पुं० सफ़ेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टांगें, चोंच और गल्ला लंबा होता है ।

बगलियाना-कि० स० बगल से होकर जाना । अलग हटकर चलना या निकलना ।

कि० स० १. अलग करना । २.

बगल में खाना या करना ।

बगलौहारी-वि० बगल की ओर मुका हुआ । तिरछा ।

बगार-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं । घाटी ।

बगारना-कि० स० फैलाना । छिटकाना । बिखेरना ।

फुफेरा-वि० फूफा से उत्पन्न। जैसे, फुफेरा भाई।

फुरा-वि० सत्य। सचा।

संज्ञा स्त्री० बड़ने में परों का शब्द।

फुरती-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। तेजी।

फुरतीला-वि० जिसमें फुरती हो।

तेज।

फुरफुराना-क्रि० स० १. "फुर फुर" करना। १. बड़कर परों का शब्द करना। २. हवा में छहराना।

क्रि० अ० किसी हलकी वस्तु का हिलाना जिससे फुरफुर शब्द हो।

फुरसत-संज्ञा स्त्री० १. अवसर। २. अवकाश। छुट्टी।

फुरहरी-संज्ञा स्त्री० १. पर को फुलाकर फड़फड़ाना। २. फड़फड़ाहट।

३. कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द। ४. कँपवैपी।

५. दे० "फुरेरी"।

फुराना-क्रि० स० १. सचा ठहराना। ठीक बतारना। २. प्रमाणित करना।

क्रि० अ० दे० "फुरना"।

फुरेरी-संज्ञा स्त्री० १. वह सीक जिसके सिरे पर हलकी रुई लपेटी हो, और जो धूप, दवा आदि में छुकाकर काम में लाई जाय। २. रोमांचयुक्त कप।

फुलका-संज्ञा पुं० १. फफोला। छाला। २. हलकी और पतली रोटी। चपाती।

फुलचुही-संज्ञा स्त्री० काले रंग की एक चमकती हुई चिड़िया।

फुलभट्टी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतशबाजी।

फुलघर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशमी नूटी का कपड़ा।

फुलवाई-संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।

फुलवारी-संज्ञा स्त्री० पुष्पवाटिका।

फुलहारा-संज्ञा पुं० भाखी।

फुलाना-क्रि० स० किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना।

फुलाव-संज्ञा पुं० फूलने की क्रिया या भाव। उभार या सूजन।

फुलंग-संज्ञा पुं० चितगारी।

फुलिया-संज्ञा स्त्री० १. किसी कील या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोल सिरा। २. एक प्रकार का लौंग। (गहना)

फुलेल-संज्ञा पुं० फूलों की महक से बासा हुआ सिर में लगाने का तेल। सुगंधयुक्त तेल।

फुलेहरा-संज्ञा पुं० सूत, रेशम आदि के बदनवार जो सरसियों में द्वार पर लगाये जाते हैं।

फुलौरी-संज्ञा स्त्री० घने या मटर आदि के बेंसल की पकौड़ी।

फुस-संज्ञा स्त्री० धीमी आवाज़।

फुसफुसा-वि० १. जो दबाने से बहुत जल्दी धूर धूर हो जाय। २. कमजोर।

फुसफुसाना-क्रि० स० बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना।

फुसलाना-क्रि० स० अनुकूल या संतुष्ट करने के लिये मीठी मीठी बातें कहना। चक्का देना। बड़काना।

फुहार-संज्ञा स्त्री० १. पानी का महीन छौटा। २. झोंसी।

फुहारा-संज्ञा पुं० १. जल का महीन छौटा। २. जल की वह टोंटी

धगावत-संज्ञा स्त्री० १. धागी होने का भाव । २. धलवा ।  
 धगिया-संज्ञा स्त्री० धागीचा ।  
 उपवन । छोटा बाग ।  
 धगीचा-संज्ञा पुं० घाटिका । छोटा बाग ।  
 धगुला-संज्ञा पुं० दे० "धगुला" ।  
 धगुला-संज्ञा पुं० वह वायु जो एक ही स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है ।  
 धगेरी-संज्ञा स्त्री० खाकी रंग की एक छोटी बिड़िया । धगेरी । भरही ।  
 धगेर-अव्य० यिना ।  
 धग्गी, धग्धी-संज्ञा स्त्री० चार पहियों की पाटनदार घोड़ा-गाड़ी ।  
 धधधर-संज्ञा पुं० धाध की खाल जिस पर साधू लोग बैठते हैं ।  
 धधनही-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० वधनही ] १. एक प्रकार का इथियार जिसमें धाध के नहें के समान चिपटे रेढ़े फटे निकले रहते हैं । २. एक आभूषण जिसमें धाध के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं ।  
 धधार-संज्ञा पुं० झोंक ।  
 धधारना-कि० सं० १. झोंकना । २. अपनी योग्यता से अधिक बोलना ।  
 धधकाना-वि० [ स्त्री० धधकानी ] १. धधों के योग्य । २. धधों का सा ।  
 धधत-संज्ञा स्त्री० १. धधने का भाव । २. शेष । ३. क्षाम ।  
 धधन-संज्ञा पुं० १. धाणी । २. धधन ।  
 धधना-कि० अ० १. रचित रहना । २. किसी घुरी पात से अलग रहना । ३. बाकी रहना ।

कि० सं० कहना ।  
 धधपन-संज्ञा पुं० १. लड़कपन । २. बच्चा होने का भाव ।  
 धधाना-कि० सं० १. रचा करना । २. खर्च न होने देना । ३. छिपाना । ४. दूर रखना ।  
 धधाध-संज्ञा पुं० रचा ।  
 धधा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० बधा ] १. किसी प्राणी का नवजात शिशु । २. लड़का ।  
 धधावान-संज्ञा पुं० गर्भाशय ।  
 धधल-संज्ञा पुं० १. धधा । २. गाय का धधा ।  
 धधला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० बधिया ] धधड़ा ।  
 धध १-संज्ञा पुं० दे० "धधड़ा" ।  
 धधड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० बधरी, बधिया ] गाय का धधा ।  
 धधनाग-संज्ञा पुं० एक स्थावर विप । सौमिया ।  
 धधचा-संज्ञा पुं० दे० "धधेड़ा" ।  
 धधेड़ा-संज्ञा पुं० घोड़े का धधा ।  
 धधधी-संज्ञा पुं० धधनियाँ ।  
 धधड़ा-संज्ञा पुं० दे० "धधरा" ।  
 धधना-कि० अ० १. बोलना । २. शब्दों का चलना ।  
 धधनियाँ-संज्ञा पुं० स्त्री० धाजा धजानेवाला ।  
 धधनी-वि० जो धजता हो ।  
 धधमारा-वि० [ स्त्री० धधमारी ] धज से मारा हुआ ।  
 धधरंगधली-संज्ञा पुं० हनुमान् ।  
 धधरवट्ट-संज्ञा पुं० एक घृच के फल का दाना या धीज जिसकी मात्रा बधों को नजर से धधाने के लिये पहनाते हैं ।

जिसमें से दबाव के कारण जड़ की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं।  
जलयंत्र।

फूँक-संज्ञा स्त्री० १. मुँह को घटोरकर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. सुसि। मुँह की हवा।

फूँकना-क्रि० स० मुँह को घटोरकर वेग के साथ हवा छोड़ना।

फूँका-संज्ञा पुं० घाँस की मली में जलन पैदा करनेवाली ओपधिर्पा भरकर और उन्हें स्तन में छगाकर फूँकना जिससे गाँवों का सारा दूध बाहर निकल आये।

फूँका-संज्ञा पुं० दे० "फुँदना"।

फूट-संज्ञा स्त्री० १. फूटने की क्रिया या भाव। २. घैर। विरोध। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटना-क्रि० भ० १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २. कली का खिलना। ३. बिलरना। ४. फूटकर दूसरे पक्ष में जाना।

फूटकार-संज्ञा पुं० मुँह से हवा छोड़ने का शब्द। फूँक। फुफकार।

फूफा-संज्ञा पुं० फूफी का पति। बाप का बहनेाई।

फूफी-संज्ञा स्त्री० बाप की बहिन। बूधा।

फूल-संज्ञा पुं० १. पुष्प। कुसुम। सुमन। २. एक मिश्र धातु जो ताम्र और रंगे के मेल से बनती है। ३. खियों का मासिक। ४. श्वेत कुण्ड।

फूलगोभी-संज्ञा स्त्री० गोभी की एक जाति जिसमें फूल का बँधा हुआ ठोम पिंड होता है।

फूलदान-संज्ञा पुं० गुब्बस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का गिलास के आकार का बरतन।

फूलदार-वि० जिस पर फूल-पत्ते और बेल-बूटे बने हों।

फूलना-क्रि० भ० फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना।

फूलमती-संज्ञा स्त्री० एक देवी का नाम।

फूलो-संज्ञा स्त्री० वह सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।

फूस-संज्ञा पुं० १. वह सूखी लंबी घास जो ऊपर आदि छाने के काम में आती है। २. सूखा तृण। तिनका।

फूहड़-वि० १. जिसे कुछ करने का हंग न हो। वेशकर। २. बेईगा।

फूँकना-क्रि० स० १. मौक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २. छोड़ना। ३. फूजल खर्च करना।

फूँट-संज्ञा स्त्री० १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। २. घोटी का वह भाग जो कमर में छपेटकर बाँधा गया हो। ३. कमरबंद।

फूँटना-क्रि० स० १. गाढ़े द्रव पदार्थ को रँगली घुमा घुमाकर दिखाना। २. गड्डी के सारों को उखट पुलटकर अच्छी तरह से मिथाना।

फूँटा-संज्ञा पुं० १. दे० "फट"। २. छोटी पगड़ी।

फेन-संज्ञा पुं० महीन बुदबुदों का समूह। झाग।

फेनी-संज्ञा स्त्री० सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई।

फेफड़ा-संज्ञा पुं० वयःस्थल के भीतर

घजरा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बड़ी और पट्टी हुई नाव। २. दे० "वाजरा"।

घजरी-संज्ञा स्त्री० १. कंकड़ी। २. ओला। ३. किले आदि की दीवारों के ऊपर छोटा जुमावशी कंगूरा।

घजचैया-वि० घजानेवाला।

घजा-वि० उचित।

घज्ञाज्ञ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घञाञिन ] कपड़े का व्यापारी।

घज्ञाज्ञा-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ घजाओं की दुकानें हैं।

घज्ञाज्ञी-संज्ञा स्त्री० कपड़ा बेचने का व्यापार।

घजाना-कि० स० किसी बाजे आदि पर आघात पहुँचाकर अथवा हवा का जोर पहुँचाकर उससे शब्द उत्पन्न करना।

कि० स० पूरा करना।

घजाय-अव्य० स्थान पर।

घजार-संज्ञा पुं० दे० "वाजरा"।

घज्ज-संज्ञा पुं० दे० "घज"।

घम्फना-कि० अ० १. घंघन में पड़ना। २. हलफना। ३. हठ करना।

घम्फना-कि० स० फँसना।

घम्फाघ-संज्ञा पुं० फँसने की क्रिया या भाव। उलम्भाव। अटकाव।

घट-संज्ञा पुं० १. दे० "वट"। २. बड़ा नाम का पकवान। ३. घाट। संज्ञा पुं० रास्ता।

घटखरा-संज्ञा पुं० पत्थर, लोहे आदि का वह टुकड़ा जो वस्तुओं को तोड़ने के काम में आता है।

घटन-संज्ञा स्त्री० घटना।

संज्ञा पुं० पहनने के कपड़ों में चिपटे आकार की बड़ी गोळ घुंठी।

घटना-कि० स० कई तागों या तारों को एक साथ मिलाकर घुमाना जिसमें वे मिलकर एक हो जायें।

कि० अ० पिसना।

संज्ञा पुं० उबटन।

घटपरा-संज्ञा पुं० दे० "घटमार"।

घटपार-संज्ञा पुं० दे० "घटमार"।

घटमार-संज्ञा पुं० ठग। डाकू।

घटला-संज्ञा पुं० बड़ी घटलोह।

घटली, घटलोई-संज्ञा स्त्री० देगुची। पत्तीली।

घटघार-संज्ञा पुं० १. पहरेदार। २. रास्ते का कर उगाहनेवाला।

घटाऊ-संज्ञा पुं० पथिक।

घटिया-संज्ञा स्त्री० १. छोटा गोला। २. छोटा घटा।

घटी-संज्ञा स्त्री० १. गोली। २. बड़ी नाम का पकवान।

० संज्ञा स्त्री० घाटिका।

घट्टा-संज्ञा पुं० दे० "बटुवा"।

संज्ञा पुं० सिल आदि पर पीसा हुआ।

घट्टरना-कि० अ० १. सिमटना। २. एकत्र होना।

घट्टा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की गोळ पैली जिसके भीतर कई स्थान होते हैं। २. बड़ी घटलोह या देग।

घटोर-संज्ञा स्त्री० तीतर या लवा की तरह की एक छोटी चिड़िया।

घटोरवाज़-संज्ञा पुं० घटोर पालने या लड़ानेवाला।

घटोर-संज्ञा पुं० १. जमावड़ा। २. वस्तुओं का ढेर।

**फुफेरा**—वि० फूफा से व्युत्पन्न । जैसे, फुफेरा भाई ।

**फुरा**—वि० सत्य । सचा ।

संज्ञा स्त्री० बड़ने में परों का शब्द ।

**फुरती**—संज्ञा स्त्री० शीघ्रता । तेजी ।

**फुरतीला**—वि० जिसमें फुरती हो । तेज ।

**फुरफुराना**—क्रि० स० १. "फुर फुर" करना । बड़कर परों का शब्द करना । २. हवा में लहराना । क्रि० प्र० किसी हलकी वस्तु का हिलाना जिससे फुरफुर शब्द हो ।

**फुरसत**—संज्ञा स्त्री० १. अवसर । २. अवकाश । छुट्टी ।

**फुरहरी**—संज्ञा स्त्री० १. पर को फुलाकर फड़फड़ाना । २. फड़फड़ाहट । ३. कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द । ४. कपकपी । ५. दे० "फुरेरी" ।

**फुराना**—क्रि० स० १. सचा ठहराना । ठीक उतारना । २. प्रमाणित करना । क्रि० प्र० दे० "फुरना" ।

**फुरेरी**—संज्ञा स्त्री० १. वह सीक जिसके सिरे पर हलकी रुई लपेटी हो, और जो इत्र, दवा आदि में हुंसाकर काम में लाई जाय । २. रोमांचयुक्त कंप ।

**फुलका**—संज्ञा पुं० १. फफोला । छाला । २. हलकी और पतली रोटी । चपाती ।

**फुलचुही**—संज्ञा स्त्री० काले रंग की एक चमकती हुई चिड़िया ।

**फुलझुड़ी**—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतशबाजी ।

**फुलघर**—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशमी नूरी का कपड़ा ।

**फुलवाई**—संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी" ।

**फुलवारी**—संज्ञा स्त्री० पुष्पवाटिका ।

**फुलहारा**—संज्ञा पुं० माला ।

**फुलाना**—क्रि० स० किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना ।

**फुलाव**—संज्ञा पुं० फूलने की क्रिया या भाव । उभार या सूजन ।

**फुलंग**—संज्ञा पुं० चिनगारी ।

**फुलिया**—संज्ञा स्त्री० १. किसी कीख या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोला सिरा । २. एक प्रकार का लौंग । (गहना)

**फुलेल**—संज्ञा पुं० फूलों की महक से यासा हुआ सिर में लगाने का तेल । सुगंधयुक्त तेल ।

**फुलेहरा**—संज्ञा पुं० सूत, रेशम आदि के बदनधार जो सरसों में द्वार पर लगाये जाते हैं ।

**फुलौरी**—संज्ञा स्त्री० चने या मटर आदि के बेंसन की पकौड़ी ।

**फुस**—संज्ञा स्त्री० धीमी आवाज़ ।

**फुसफुसा**—वि० १. जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय । २. कमजोर ।

**फुसफुसाना**—क्रि० स० बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना ।

**फुसलाना**—क्रि० स० अनुकूल या संतुष्ट करने के लिये मीठी मीठी बातें कहना । चक्का देना । बहकाना ।

**फुहार**—संज्ञा स्त्री० १. पानी का महीन छौंटा । २. झौंसी ।

**फुहारा**—संज्ञा पुं० १. जल का महीन छौंटा । २. जल की वह टोटी

घटोरना-क्रि० सं० १. समेटना । २. जुटाना ।

घटोही-संज्ञा पुं० पथिक ।

घट्टा-संज्ञा पुं० १. दलाली । दस्तूरी ।  
२. छोटे सिक्के, धातु आदि के बेचने में वह कमी जो उसके पूरे मूल्य में हो जाती है । ३. टोटा ।  
संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० बड़ी, बटिया ] लोढ़ा ।

घट्टाखाता-संज्ञा पुं० डूबी हुई रकम का लेखा या घड़ी ।

घट्टी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा घट्टा । २. कूटने पीसने का परधर ।

घड़-संज्ञा पुं० बरगद का पेड़ ।

घड़प्पन-संज्ञा पुं० श्रेष्ठ या बढ़ा होने का भाव ।

घड़बड़-संज्ञा स्त्री० बकवाद ।

घड़बड़ाना-क्रि० अ० १. बकवाद करना । २. कोई बात झुरी लगने पर मुँह में ही कुछ बोलना ।

घड़बोल, घड़बोला-वि० बड़ बड़-कर बातें करनेवाला ।

घड़भाग, घड़भागी-वि० बड़े भाग्यवाला ।

घड़रा-वि० बढ़ा ।

घड़वाग्नि-संज्ञा पुं० समुदाग्नि ।

समुद्र के भीतर की आग या ताप ।

घड़वानल-संज्ञा पुं० दे० "बड़वाग्नि" ।

घड़हना-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान ।

घड़हल-संज्ञा पुं० एक बड़ा पेड़ जिसके फल छोटे शरीफे के बराबर, पर बड़े घेड़ौल होते हैं ।

घड़हार-संज्ञा पुं० विवाह के पीछे बरातियों की ज्योनार ।

घड़ा-वि० १. विशाल । २. जिसकी

उन्न ज़्यादा हो । ३. अधिक परिमाण । ४. बुजुर्ग ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० बड़ी ] एक पकवान जो मसाला मिली हुई वड़ की पीठी की गोल टिकियों को सलकर बनाया जाता है ।

घड़ाई-संज्ञा स्त्री० १. बड़े होने का भाव । २. बड़प्पन । ३. महिमा ।

घड़ा दिन-संज्ञा पुं० २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों का त्योहार है ।

घड़ी-वि० स्त्री० "बड़ा" ।

संज्ञा स्त्री० कुम्हड़ीरा ।

घड़ी माता-संज्ञा स्त्री० चंचक ।

घड़ेरा-वि० [ स्त्री० बड़े ] १. बड़ा । २. प्रधान ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० बड़े ] छाजन में सीध की लकड़ी ।

घड़ई-संज्ञा पुं० काठ को गड़कर अनेक प्रकार के सामान बनानेवाला ।

घड़ती-संज्ञा स्त्री० [ हि० बड़ना + ती (प्रत्य०) ] १. ताल या गिंगती में अधिकता । २. उन्नति ।

बड़ना-क्रि० अ० १. विस्तार या परिमाण में अधिक होना । २. तरक्की करना । ३. किसी स्थान से आगे जाना । ४. बढ़ होना ।

घड़नी-संज्ञा स्त्री० भाड़ू ।

घड़ाना-क्रि० सं० १. विस्तृत करना । २. फैलाना । ३. उन्नत करना । ४. आगे गमन कराना । ५. दूकान आदि बंद करना । ६. चिराग बुझाना ।

क्रि० अ० बुकना ।

घड़ाव-संज्ञा पुं० बढ़ने की क्रिया या भाव ।

घड़ावा-संज्ञा पुं० १. प्रोत्साहन ।

जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं।

जुलयंत्र।

फूँक-संज्ञा स्त्री० १. मुँह को बंद कर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. साँस। मुँह की हवा।

फूँकना-कि० स० मुँह को बंद कर वेग के साथ हवा छोड़ना।

फूँका-संज्ञा पुं० साँस की नली में जलन पैदा करनेवाली ओषधियाँ भरकर और उन्हें स्नान में छगाकर फूँकना जिससे गाँधों का सारा दूध बाहर निकल आवे।

फूँकना-संज्ञा पुं० दे० "फूँदना"।

फूट-संज्ञा स्त्री० १. फूटने की क्रिया या भाव। २. चैर। विरोध। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटना-कि० भ० १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २. कली का खिलना। ३. विखरना। ४. फूटकर दूसरे पक्ष में जाना।

फूटकार-संज्ञा पुं० मुँह से हवा छोड़ने का शब्द। फूँक। फुफकार।

फूफा-संज्ञा पुं० फूफी का पति। बाप का बहनाई।

फूफी-संज्ञा स्त्री० बाप की बहिन। बूया।

फूल-संज्ञा पुं० १. पुष्प। कुसुम। सुमन। २. एक मिश्र धातु जो ताम्र और रंगे के मेल से बनती है। ३. शिथिल का मासिक। ४. रवेत कुष्ठ।

फूलगोभी-संज्ञा स्त्री० गोभी की एक जाति जिसमें फूल का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है।

फूलदान-संज्ञा पुं० गुलबस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का गिद्धास के आकार का बरतन।

फूलदार-वि० जिस पर फूल-पत्ते और बेल-चूटे बने हों।

फूलना-कि० भ० फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना।

फूलमती-संज्ञा स्त्री० एक देवी का नाम।

फुली-संज्ञा स्त्री० वह सफेद दाग जो शस्त्र की पुतलों पर पड़ जाता है।

फूस-संज्ञा पुं० १. वह सूखी लंबी घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है। २. सूखा तृण। तिनका।

फुहड़-वि० १. जिसे कुछ करने का वंग न हो। बेशक्कर। २. बेवंगा।

फूँकना-कि० स० १. झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २. छोड़ना। ३. फूँक लूँच करना।

फूँट-संज्ञा स्त्री० १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। २. धोती का वह भाग जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। ३. कमरबंद।

फूँटना-कि० स० १. गाढ़े द्रव पदार्थ को देंगली घुमा घुमाकर हिलाना। २. गाड़ों के तारों को बजट पुलटकर थकती तरह से मिलाना।

फूँटा-संज्ञा पुं० १. दे० "फट"। २. छोटी पगड़ी।

फेन-संज्ञा पुं० महीन बुदबुदे का समूह। झाग।

फेनी-संज्ञा स्त्री० सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई।

फेफड़ा-संज्ञा पुं० वयःस्थल के भीतर



वत्तेजना । २. साहस या हिम्मत  
 दिलानेवाली बात ।  
 घड़िया-वि० श्रच्छा ।  
 घड़ोतरी-संज्ञा स्त्री० १. चढ़ती । २.  
 वसति ।  
 घणिक-संज्ञा पुं० १. घनिया ।  
 सौदागर । २. बेचनेवाला ।  
 घणित-संज्ञा पुं० दे० "घणिक" ।  
 घतकही-संज्ञा स्त्री० १. घातचीत । २.  
 घाद-विवाद ।  
 घतख-संज्ञा स्त्री० हंस की जाति की  
 पानी की एक सफेद प्रसिद्ध चिकित्सा ।  
 घतचल-वि० बकवादी ।  
 घतघदाघ-संज्ञा पुं० व्यर्थ घात बढ़ाना ।  
 घतरस-संज्ञा पुं० घातचीत का आनंद ।  
 घतराना-वि० म० घातचीत करना ।  
 घतलाना-वि० स० दे० "घताना" ।  
 घताना-वि० स० १. कहना । २.  
 दिखाना ।  
 घताशा-संज्ञा पुं० दे० "घतासा" ।  
 घतास-संज्ञा स्त्री० १. गठिया । २.  
 घायु ।  
 घतासा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की  
 मिठाई जो चीनी की चाशनी को  
 टपकाकर बनाई जाती है । २. एक  
 प्रकार की आतशयात्री ।  
 घतिया-संज्ञा स्त्री० छोटा, कोमल और  
 कचा फल ।  
 घतियाना-वि० म० घातचीत करना ।  
 घतियार-संज्ञा स्त्री० घातचीत ।  
 घतार-वि० वि० १. रीति से । २.  
 समान ।  
 घत्तिस-वि० दे० "घत्तिस" ।  
 घत्ती-संज्ञा स्त्री० १. चिराग जलाने के

लिये रुई या सूत का घटा हुआ  
 लच्छा । २. दीपक ।  
 घत्तीस-वि० जो गिनती में तीस से  
 दो ज्यादा हो ।  
 घत्तीसी-संज्ञा स्त्री० १. घत्तीस का  
 समूह । २. मनुष्य के नीचे ऊपर के  
 दाँतों की पंक्ति ।  
 घथुआ-संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा  
 जिसके पत्तों का साग खाते हैं ।  
 यद-संज्ञा स्त्री० बाघी । रोग ।  
 वि० १. घुरा । २. दुष्ट ।  
 संज्ञा स्त्री० घदला ।  
 यदकार-वि० १. कुकर्मों । २. व्य-  
 भिचारी ।  
 यदचलन-वि० कुमार्गी ।  
 यदज्ञात-वि० नीच ।  
 यदतर-वि० और भी घुरा ।  
 यदन-संज्ञा पुं० शरीर ।  
 यदना-वि० स० १. कहना । २.  
 निश्चित करना । ३. बाजी लगाना ।  
 ४. कुछ समझना ।  
 यदनाम-वि० कलंकित ।  
 यदनामी-संज्ञा स्त्री० लोकनिंदा ।  
 यदवू-संज्ञा स्त्री० घुरी गंध ।  
 यदमाश-वि० १. घुरे कर्म से जीविका  
 करनेवाला । २. दुष्ट ।  
 यदमाशी-संज्ञा स्त्री० १. दुष्कर्म ।  
 २. व्यभिचार ।  
 यदरंग-वि० भद्रेरंग का ।  
 यदर-संज्ञा पुं० घेर का पेड़ या फल ।  
 वि० वि० बाहर ।  
 यदरा-संज्ञा पुं० यादल ।  
 यदराह-वि० १. कुमार्गी । २. दुष्ट ।  
 यदरि-संज्ञा पुं० घेर का पौधा या  
 फल ।

का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुफुस।

फेर-संज्ञा पुं० १. चक्र। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव। २. रद-बदल। ३. चलन। दुबधा। ४. भ्रम। ५. उपाय। ढंग। ६. अव्य० एक बार और।

फेरना-क्रि० सं० १. एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। घुमाना। २. लौटाना। वापस करना। ३. वापस लेना। लौटा लेना। ४. घुमाना।

फेरफार-संज्ञा पुं० १. परिवर्तन। उलट-फेर। २. घुमाव-फिराव। पेच। चक्र।

फेरा-संज्ञा पुं० १. कीली के चारों ओर रमन। परिक्रमण। चक्र। २. मोड़। ३. बार बार आना जाना।

फेरि-अव्य० फि। पुनः।

फेरी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "फेरा"। २. दे० "फेर"। ३. परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४. योगी या फेरीवाले फकीर का किसी बस्ती में बराबर आना।

फेरीवाला-संज्ञा पुं० घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फैला-संज्ञा पुं० १. काम। कार्य। २. क्रीड़ा। खेल। ३. मजुरा।

फैलना-क्रि० भ० १. कुछ दूर तक स्थान घेरना। २. विस्तृत होना। ३. स्थूल होना। ४. छितरना। विखरना।

फैलसूफ-वि० फूजलसूचं।

फैलसूफी-संज्ञा स्त्री० फूजलसूची। अपव्यय।

फैलाना-क्रि० सं० १. लगातार कुछ दूर तक स्थान घिरवाना। २. विस्तृत करना। ३. छा देना। ४. विले-रना। ५. प्रचलित करना। ६. इधर-उधर दूर तक पहुँचाना।

फैलाव-संज्ञा पुं० १. विस्तार। प्रसार। २. प्रचार।

फैसला-संज्ञा पुं० दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, इसका निवे-देन।

फोकट-वि० जिसका कुछ मूल्य न हो। निःसार। व्यर्थ।

फोकला-संज्ञा पुं० छिड़का।

फोड़ना-क्रि० सं० १. खरी वस्तुओं को खंड खंड करना। २. भेदभाव उत्पन्न करना। ३. फूट डालकर अलग करना।

फोड़ा-संज्ञा पुं० वह शोथ जो शरीर में कहीं पर कोई दोष संघटित होने से उत्पन्न होता है। ग्रन्थ।

फोड़िया-संज्ञा स्त्री० छोटा फोड़ा।

फोता-संज्ञा पुं० १. भूमिकर। पोत। २. थैली। कोप। थैला। ३. थंडकोप।

फोरना-क्रि० सं० दे० "फोड़ना"।

फौज-संज्ञा स्त्री० १. झुंड। जत्था। २. सेना। लश्कर।

फौजदार-संज्ञा पुं० सेनापति।

फौजदारी-संज्ञा स्त्री० १. खवाई-भगदा। मार-पीट। २. वह अदा-खत जहाँ ऐसे मुकदमों का निर्णय होता हो जिनमें अपराधी को दंड मिलता है।

फौजी-वि० फौज-संबंधी। सैनिक।

फौरन-क्रि० वि० तुरंत। चटपट।

घदरिकाश्रम-संज्ञा पुं० तीर्थ-विशेष जो हिमालय पर है।

घदरीनारायण-संज्ञा पुं० घदरिकाश्रम के प्रधान देवता।

घदरौहां-वि० कुमारी।

† संज्ञा पुं० घदली का आभास।

घदल-संज्ञा पुं० १. एक के स्थान पर दूसरा होना। २. पलटा।

घदलना-क्रि० म० १. परिवर्तित होना। २. एक जगह से दूसरी जगह सैनात होना।

क्रि० स० परिवर्तित करना।

घदला-संज्ञा पुं० १. परस्पर लेने और देने का व्यवहार। २. एवज।

घदली-संज्ञा स्त्री० फैलकर छाया हुआ बादल।

संज्ञा स्त्री० १. एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। २. तबादला।

घदा-वि० भाग्य में लिखा हुआ।

घदान-संज्ञा स्त्री० घदे जाने की क्रिया या भाव।

घदाघदी-संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट।

घदाम-संज्ञा पुं० दे० “घादाम”।

घदी-संज्ञा स्त्री० कृष्ण पक्ष।

संज्ञा स्त्री० बुराई।

घदौलत-क्रि० वि० १. द्वारा। २. कारण से।

घदुर, घदली-संज्ञा पुं० दे० “घादल”।

घद-वि० १. घँघा हुआ। २. ठहराया हुआ।

घदकोष्ठ-संज्ञा पुं० कृत्रिम्यत।

घदपरिफर-वि० कमर बाँधे हुए। तयार।

घद्री-संज्ञा स्त्री० १. डोरी। २. चार लड़ों का एक गहना।

वध-संज्ञा पुं० हत्या।

वधना-क्रि० स० मार डालना।

संज्ञा पुं० मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

वधाई-संज्ञा स्त्री० १, वृद्धि। २.

मंगल अवसर का गाना। यजाना।

३. सुचारकवाद।

वधाया-संज्ञा पुं० दे० “वधाई”।

वधावा-संज्ञा पुं० १. वधाई। २. वह उपहार जो संबंधियों या इष्ट-मित्रों के यहाँ से मंगल अवसरों पर आता है।

वधिक-संज्ञा पुं० १. वध करनेवाला।

२. जहाद। ३. व्याध। यहेलिया।

वधिया-संज्ञा पुं० वह पैल या पशु जो थंडकोप निकालकर पंढ कर दिया गया हो।

वधिर-संज्ञा पुं० बहरा।

वधूरी-संज्ञा स्त्री० १. पुत्र की स्त्री। २.

सुहागिन स्त्री। नई आई हुई बहू।

वध्य-वि० मार डालने के योग्य।

वन-संज्ञा पुं० जंगल।

वनक-संज्ञा स्त्री० सजधज।

वनकर-संज्ञा पुं० जंगल में होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी या घास आदि की आमदनी।

वनखंड-संज्ञा पुं० जंगली प्रदेश।

वनखंडी-संज्ञा स्त्री० १. वन का कोई भाग। २. छोटा सा वन।

संज्ञा पुं० वन में रहनेवाला।

वनचर-संज्ञा पुं० १. जंगल में रहनेवाला पशु। २. जंगली आदमी।

वनचारी-वि० १. वन में घूमनेवाला। २. वन में रहनेवाला।

वनज-संज्ञा पुं० १. कमल। २. जल में होनेवाले पदार्थ।

संज्ञ पु० घाण्ड्य ।

घनजारा-संज्ञ पु० व्यापारी ।

घनज्योत्स्ना-संज्ञ श्री० माधवी खता ।

घनत-संज्ञ श्री० १. रचना । २.

अनुकृता ।

घनताई-संज्ञ श्री० घन की सघ-  
नता या भण्णकरता ।

घनतुलसी-संज्ञ श्री० यवई नाम का  
पौधा ।

घनदेवी-संज्ञ श्री० किसी घन की  
अधिष्ठात्री देवी ।

घनधातु-संज्ञ श्री० गेरू या और  
कोई रंगीन मिट्टी ।

घनना-कि० घ० १. तैयार होना ।

२. काम में आने के योग्य होना । ३.

अधिकार प्राप्त करना । ४. अच्छी

या उन्नत दशा में पहुँचना । ५.

पटना । ६. स्वादिष्ट होना । ७.

मुख ठहरना । ८ अपने आपको

अधिक योग्य या गभीर प्रमाणित

करना । ९. सजना ।

घननि-संज्ञ श्री० १. घनावट ।

२. घनाव-सिंघार ।

घनपट-संज्ञ पु० घुड़ों की छाल

आदि से बनाया हुआ कपड़ा ।

घनपाती-संज्ञ श्री० दे० "घन-

स्पति" ।

घनपशु-संज्ञ पु० एक प्रकार की

घनस्पति जिसकी जड़, फूल और

पत्तियाँ आपस के काम में आती हैं ।

घनघास-संज्ञ पु० १. घन में घसने

की क्रिया या अवस्था । २. प्राचीन

काल का देशनिकाले का दंड ।

घनघासी-संज्ञ पु० १. वह जो घन

में घसे । २. जंगली ।

घनविलाव-संज्ञ पु० विली की जाति  
का, पर उससे कुछ बड़ा, एक जंगली  
जंतु ।

घनमानुस-संज्ञ पु० मनुष्य से  
मिळता-गुलता कोई जंगली जंतु ।

घनमाला-संज्ञ श्री० गुलसी, कुंद,  
मंदार, परजाता और कमल इन  
पाँच चीजों की घनी हुई माला ।

घनमाली-संज्ञ पु० १. घनमाला  
धारण करनेवाला । २. कृष्ण । ३.  
मेघ ।

घनरखा-संज्ञ पु० १. घन-रक्षक ।

२. यहेलियों की एक जाति ।

घनरा-संज्ञ पु० दे० "वंदर" ।

संज्ञ पु० १. घर । २. विवाह समय

का एक प्रकार का गीत ।

घनराज, घनराय-संज्ञ पु० १.

सिंह । २. बहुत बड़ा पेड़ ।

घनरी-संज्ञ श्री० नववधू ।

घनरह-संज्ञ पु० १. जंगली पेड़ । २.

कमल ।

घनयसन-संज्ञ पु० वृक्षों की छाल

का बना हुआ कपड़ा ।

घनघाना-कि० स० दूसरे को घनाने

में प्रवृत्त करना ।

घनघाती-संज्ञ पु० श्रीकृष्ण ।

घनस्थली-संज्ञ श्री० जंगल का कोई

भाग ।

घना-संज्ञ पु० [ श्री० वनी ] दूरे हो ।

संज्ञ पु० 'टंडकला' नामक छंद ।

घनाइ (य)-कि० वि० १. अत्यंत ।

२. अजो भाँति ।

घनाग्नि-संज्ञ श्री० दावानल ।

घनात-संज्ञ श्री० एक प्रकार का

घड़िया जनी कपड़ा ।

घनाना-कि० स० १. देना । रचना ।

घहाना-कि० सं० १. प्रवाहित करना।

२. डालना। ३. चञ्चलना। ४.

गँवाना। ५. फँकना।

संज्ञा पुं० १. मिस। हीला। २.

निमित्त।

यह्वाह-संज्ञा स्त्री० १. यसेत वस्तु। २.

सौभाग्य। ३. विकास। ४. सुख-

वनायन। रैनक। ५. प्रफुल्लता।

६. मजा। समाशा।

यह्वाल-वि० १. ज्यों का त्यों। २.

भला-चंगा। ३. प्रयत्न। श्रुश।

यह्वालो-संज्ञा स्त्री० पुनर्निधुक्ति। फिर

वही जगह पर मुकररी।

यह्वाय-संज्ञा पुं० घहने का भाव या

क्रिया।

यह्वाह-प्रत्य० बाहर।

यह्वाह-संज्ञा पुं० नाथ।

यह्वाह-संज्ञा स्त्री० माता की कन्या।

भगिनी।

यह्वाह-वि० बाहरी। बाहरवाला।

यह्वाह-वि० बाहर आया या नि-

कला हुआ।

यह्वाह-संज्ञा पुं० [ वि० बहिष्कृत ]

१. बाहर करना। निहालना। २.

हटाना।

यह्वाह-वि० बाहर किया हुआ।

यह्वाह-संज्ञा स्त्री० हिसाब-किताब खिलने

की पुस्तक।

यह्वाह-वि० बहुत। अनेक।

यह्वाह-संज्ञा पुं० चौड़े मुँह का एक

गहरा परतम।

यह्वाह-वि० बहुत याते जाननेवाला।

अच्छा जानकार।

यह्वाह-वि० १. एक दो से अधिक।

अनेक। २. यथेष्ट। काफी।

यह्वाह, यह्वाह-संज्ञा स्त्री० अधि-  
कता। ज्यादाती।

यह्वाह-वि० [ स्त्री० बहुतेरी ] बहुत सा।

कि० वि० बहुत प्रकार से।

यह्वाह-वि० [ हि० बहुतेरा ] संख्या

में अधिक। बहुत से।

यह्वाह-वि० वि० १. अनेक प्रकार से।

२. बहुत करके। थकसर।

यह्वाह-संज्ञा पुं० रावण।

यह्वाह-संज्ञा पुं० १. बहुत से लोगों

की अलग अलग राय। २. बहुत

से लोगों की मिलकर एक राय।

यह्वाह-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें

रोगी का मूत्र बहुत उतरता है।

यह्वाह-वि० कामती। दामी।

यह्वाह-वि० कई रंगों का। चित्र-

विचित्र।

यह्वाह-वि० १. बहुरूपिया। २.

अनेक प्रकार के करतम या खाल

दिखानेवाला।

यह्वाह-वि० अ० लौटना। वापस

आना।

यह्वाह-वि० वि० १. पुनः। फिर

२. इसके उपरांत। पीछे।

यह्वाह-संज्ञा स्त्री० नई यह्वाह।

यह्वाह-संज्ञा स्त्री० भुना हुआ खड़ा

अन्न। चर्वण। चबना।

यह्वाह-संज्ञा पुं० यह जो तरह

तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका

चलाता हो।

यह्वाह-वि० अधिक। ज्यादा।

यह्वाह-संज्ञा स्त्री० अधिकता।

यह्वाह-संज्ञा पुं० व्याकरण में यह

शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओं

के होने का बोध होता है। जमा।

२. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना। ३. कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ४. अच्छी या बख्त दशा में पहुँचाना। ५. मरम्मत करना। ६. मूर्ख ठहराना।

धनाफर-संज्ञा पुं० चत्रियों की एक जाति।

धनायत, धनायनत-संज्ञा पुं० विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

धनाय-क्रि० वि० १. बिलकुल। २. अच्छी तरह से।

धनाय-संज्ञा पुं० १. धनायत। २. शृंगार। ३. तरकीब।

धनायट-संज्ञा स्त्री० १. रचना। २. आडंबर।

धनायटी-वि० धनाय हुआ।

धनासपती-संज्ञा स्त्री० १. जड़ी, घूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि। २. घास, साग-पात इत्यादि।

धनिज-संज्ञा पुं० १. व्यापार। २. व्यापार की वस्तु।

धनिजारिन, धनिजारी-संज्ञा स्त्री० धनजारा जाति की स्त्री।

धनित-संज्ञा स्त्री० धनक। वेप।

धनिता-संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २. पत्नी।

धनिया-संज्ञा पुं० [ स्त्री० धनियाहन ] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति। २. आटा, दास आदि बेचनेवाला।

धनियाहन-संज्ञा स्त्री० मंजी।

धनिस्थत-अर्थ० अपेक्षा।

धनी-संज्ञा स्त्री० १. धनस्थली। २.

घाटिका।

संज्ञा स्त्री० [ हि० घना ] दुलहिन।

संज्ञा पुं० धनिया।

धनीनी-संज्ञा स्त्री० धनिये की स्त्री।

धनीर-संज्ञा पुं० धेत।

धनेठी-संज्ञा स्त्री० पटेवाजों की वह लंबी छाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू खगे रहते हैं।

धनेला-वि० जंगली।

धनेरी-वि० कपासी।

धपा-संज्ञा पुं० बाप।

धपमार-वि० १. वह जो अपने पिता की हत्या करे। २. सयके साथ धोखा करनेवाला।

धपतिस्मा-संज्ञा पुं० ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य सेहकार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है।

धपु-संज्ञा पुं० १. शरीर। २. अवतार।

धपुख-संज्ञा पुं० शरीर। देह।

धपुरा-वि० बेचारा।

धपौतो-संज्ञा स्त्री० बाप से पाई हुई जायदाद।

धप्रा-संज्ञा पुं० पिता।

धफारा-संज्ञा पुं० औषध-मिश्रित जल की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना।

धवर-संज्ञा पुं० सिंह।

धया-संज्ञा पुं० दे० "घाया"।

धनुआ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० धनुर ] १.

घेरे या दामाद के लिये प्यार का संवाधन शब्द। २. रईस, जमींदार आदि।

बहुव्रीहि-संज्ञा पु० व्याकरण : में छः प्रकार के समासों में से एक जिसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है, वह एक अन्य पद का विशेषण होता है।

बहुश्रुत-वि० जिसने बहुत सी बातें सुनी हों।

बहुसंख्यक-वि० गिनती में बहुत। अधिक।

बहु-संज्ञा स्त्री० १. पुत्रवधू। पतोहू। २. पत्नी।

बहेड़ा-संज्ञा पुं० एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

बहेतू-वि० इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला।

बहेलिया-संज्ञा पुं० व्याध। चिदीमार।

बहोरि-वि० पुनः। फिर।

बाँ-संज्ञा पुं० गाय के बोलने का शब्द।

बाँक-संज्ञा स्त्री० १. भुजवृद्ध पर पहनने का एक आभूषण। २. एक प्रकार का बाँदी का गहना जो पैरों में पहना जाता है। ३. हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी।

संज्ञा पुं० टेढ़ापन। यकता।

वि० १. टेढ़ा। घुमावदार। २. बाँका। तिरछा।

बाँकपन-संज्ञा पुं० १. टेढ़ापन। तिरछापन। २. छैलापन।

बाँका-वि० १. टेढ़ा। तिरछा। २. बहादुर। ३. सुंदर और बना-ठना।

बाँग-संज्ञा स्त्री० १. पुकार। चिल्लाहट। २. वह ऊँचा शब्द या मंत्रोच्चारण

जो नमाज़ का समय घटाने के लिये सुझा मसजिद में करता है। घजान।

बाँगड़-संज्ञा पुं० हिसार, रोहतक और करनाल का प्रांत। हरियाना।

बाँगड़-संज्ञा स्त्री० बाँगड़ प्रांत के जाटों की भाषा। हरियानी।

बाँगुर-संज्ञा पुं० पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल। फंदा।

बाँचना-वि० स० पढ़ना।

बाँछा-संज्ञा स्त्री० इच्छा।

बाँछित-वि० इच्छित। जिसकी इच्छा की जाय।

बाँछी-संज्ञा पुं० अभिलाषा करनेवाला। चाहनेवाला।

बाँझ-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री या मादा जिसे संतान होती ही न हो।

बंघ्या।

बाँझपन, बाँझपनी-संज्ञा पुं० बाँझ होने का भाव।

बाँट-संज्ञा स्त्री० १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग।

बाँटना-क्रि० स० किसी चीज़ के कई भाग करके अलग अलग रखना। वितरण करना।

बाँटा-संज्ञा पुं० १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग। हिस्सा।

बाँदर-संज्ञा पुं० बंदर।

बाँदा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की घनस्पति जो अन्य घुँचों की शाखाओं पर लगकर पुष्ट होती है।

बाँदी-संज्ञा स्त्री० लौंडी। दासी।

बाँघ-संज्ञा पुं० नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना घुस्स। बँद।

बाँघना-क्रि० स० १. कसने या जकड़ने के लिये किसी चीज़ के घेरे में

घबूल-संज्ञ पुं० मम्बोले कद का एक  
प्रसिद्ध कटिदार पेड़।

घबूला-संज्ञ पुं० १. दे० "बगूला"।

२. दे० "बुलबुला"।

घभूत-संज्ञ स्त्री० दे० "भभूत" या  
"विभूत"।

घम-संज्ञ पुं० विस्फोटक पदार्थों से  
भरा हुआ छोड़े का घना वह गोला  
जो रात्रियों पर फेंकने के लिये  
बनाया जाता है।

संज्ञ पुं० शिव के उपासकों का  
"घम", "बम" शब्द।

संज्ञ पुं० घग्गी, कितन आदि में आगे  
की ओर लगा हुआ वह लंबा याँस  
जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

घमकना-कि० अ० बहुत शोखी होकना।

घमपुलिस-संज्ञ पुं० दे० "बेपुलिस"।

वयस-संज्ञ स्त्री० दे० "वय"।

वयस-सिरोमनि-संज्ञ पुं० युवा-  
वस्था।

वया-संज्ञ पुं० गौरैया के आकार और  
रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।

संज्ञ पुं० वह जो अपना जीतने का  
काम करता हो।

वयान-संज्ञ पुं० १. यज्ञान। २.  
हाल।

वयाना-संज्ञ पुं० पेशगी।

कि० अ० बकना। ऊटपटांग बातें  
करना।

वयार, वयारि-संज्ञ स्त्री० हवा।

वर-संज्ञ पुं० १. दूल्हा। दे० "वर"।

२. आशीर्वाद-सूचक वचन।

वि० श्रेष्ठ।

संज्ञ पुं० बल।

संज्ञ पुं० बट वृक्ष।

संज्ञ पुं० रेखा।

अर्थ० ऊपर।

वि० श्रेष्ठ।

० अर्थ० बलिक।

वरई-संज्ञ पुं० [ स्त्री० वरन ] पान  
पैदा करने या बेचनेवाला तमोली।

वरकत-संज्ञ स्त्री० १. बड़ती। २.  
लाम। ३. घन-दौलत। ४. प्रसाद।

वरकना-कि० अ० १. निवारण  
होना। २. हटना।

वरकरार-वि० १. कायम। २.  
व्यस्थित।

वरकाज-संज्ञ पुं० विवाह।

वरकाना-कि० अ० १. कोई बुरी  
बात न होने देना। २. बहलाना।

वरखा-संज्ञ स्त्री० दे० "वर्षा"।

वरखास-वि० दे० "वर्षास"।

वरखास्त-वि० १. जिसका विसर्जन  
कर दिया गया हो। २. मौजूद।

वरगद-संज्ञ पुं० घड़ का पैर।

वरछा-संज्ञ पुं० [ स्त्री० वरछी ] माँका  
नामक हथियार।

वरछैत-संज्ञ पुं० वरछा खेचनेवाला।

वरजन-कि० अ० मना करना।

वरजनि-संज्ञ स्त्री० १. मनाही।  
२. हकावट।

वरज्यान-वि० कंठस्थ।

वरजोर-वि० १. बलवान्। २.  
असाचारी।

कि० वि० ज़वरदस्ती।

वरजोरी-संज्ञ स्त्री० ज़वरदस्ती।

कि० वि० ज़वरदस्ती से।

वरत-संज्ञ पुं० दे० "व्रत"।

संज्ञ स्त्री० रस्ती।

वरतन-संज्ञ पुं० पात्र। भाँड़ा।

वरतना-कि० अ० व्यवहार करना।



लाकर गाँठ देना । २. कैद करना ।  
परुद्धकर वेष्ट करना । ३. पानी का  
घहाव रोकने के लिये घाँघ आदि  
थगाना ।

घाँघनूँ-संज्ञा पुं० मंजूषा ।

घाँघघ-संज्ञा पुं० १. भाई । बंधु । २.  
नातेदार । रिश्तेदार । ३. मित्र ।  
दोस्त ।

घाँची-संज्ञा स्त्री० १. दीमकों का  
घनापा हुआ मिट्टी का भीटा । २  
साँप का बिल ।

घाँस-संज्ञा पुं० १. वृण जाति की एक  
प्रसिद्ध घनरूपति जिसके काँड़ों में  
थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं और  
गाँठों के बीच का स्थान प्रायः कुछ  
पोला होता है । २. एक नाप जो  
सया तीन गज की होती है । लाठा ।

घाँसली-संज्ञा स्त्री० १. बाँसुरी ।  
मुरली । २. जाँकीदार लंबी पतली  
धली जिसमें रुपया पैसा रखकर  
कमर में घाँधते हैं ।

घाँसुरी-संज्ञा स्त्री० घाँस का घना हुआ  
प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँककर  
बजाया जाता है ।

घाँह-संज्ञा स्त्री० १. भुजा । हाथ ।  
बाहु । २. कुरते, कोट आदि में वह  
मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली  
जाती है । आस्तीन ।

घाँह-संज्ञा स्त्री० विदोषों में से बात  
दोष । दे० "वात" ।

संज्ञा स्त्री० १. ग्रियों के लिये एक  
आदरसूचक शब्द । २. एक शब्द  
जो वचनी प्रीतों में प्रायः वेद्व्यामों  
के नाम के साथ लगाया जाता है ।

घाँस-संज्ञा पुं० घाँस और दो की  
संख्या या श्रृंखला ।

घाउ-संज्ञा पुं० हवा । पवन ।

घाउर-वि० [स्त्री० वाउरी] १. घावला ।  
पागल । २. मूर्ख । अज्ञान ।

घाएँ-कि० वि० घाई और । घाई  
तरफ़ ।

वाकचाला-वि० बहुत अधिक बोलने-  
वाला । बक्की । बातूनी ।

वाकना-कि० भ० बकना ।

वाकला-संज्ञा पुं० दे० "बकल" ।

वाकला-संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी  
मटर ।

वाकी-वि० जो बच रहा हो । अव-  
शिष्ट । शेष ।

वाग-संज्ञा पुं० उद्यान । उपवन ।  
वाटिका ।

संज्ञा स्त्री० लगाम ।

वागडोर-संज्ञा स्त्री० लगाम ।

वागवान-संज्ञा पुं० माली ।

वागवानी-संज्ञा स्त्री० माली का काम ।

वाग-संज्ञा पुं० नदी किनारे की वह  
ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी  
कभी पहुँचता ही नहीं ।

वागी-संज्ञा पुं० वह जो राज्य के विरुद्ध  
विद्रोह करे । रानद्रोही ।

वागोसरी-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती ।

२. एक प्रकार की रागिनी ।

वाघवर-संज्ञा पुं० वाघ की खाल जिसे  
छोग धिछाने आदि के काम में  
छाते हैं ।

वाघ-संज्ञा पुं० शेर नाम का प्रसिद्ध  
हिंसक जंतु ।

वाघी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
गिलटी जो अधिकतर गरमी के रा-  
गियों के पेड़ और बाँध की संधि में  
होती है ।

वाचा-संज्ञा स्त्री० १. बोलने की शक्ति ।

२. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना । ३. कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना । ४. अच्छी या बुरत दशा में पहुँचाना । ५. मरम्मत करना । ६. मूर्ख ठहराना ।

घनाफर-संज्ञा पुं० घम्रियों की एक जाति ।

घनाघंत, घनाघनता-संज्ञा पुं० विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान ।

घनाया-क्रि० वि० १. मिलकुल । २. अच्छी तरह से ।

घनाघ-संज्ञा पुं० १. घनाघट । २. शृंगार । ३. तरकीब ।

घनाघट-संज्ञा स्त्री० १. रचना । २. धाड़वर ।

घनाघटी-वि० घनाया हुआ ।

घनासपत्नी-संज्ञा स्त्री० १. जड़ी, घूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि । २. घास, साग-पात इत्यादि ।

घनिज-संज्ञा पुं० १. व्यापार । २. व्यापार की वस्तु ।

घनिजारिन, घनिजारी-संज्ञा स्त्री० घनजारा जाति की स्त्री ।

घनित-संज्ञा स्त्री० घनक । जेप ।

घनिता-संज्ञा स्त्री० १. स्त्री । २. पत्नी ।

घनिया-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घनियाहन ] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति । २. धाटा, दाख आदि बेचनेवाला ।

घनियाहन-संज्ञा स्त्री० गंजी ।

घनिस्थित-अव्य० अपेक्षा ।

घनी-संज्ञा स्त्री० १. घनस्थली । २.

घाटिका ।

संज्ञा स्त्री० [ हि० घना ] दुलहिन ।

संज्ञा पुं० घनिया ।

घनीनी-संज्ञा स्त्री० घनिये की स्त्री ।

घनीर-संज्ञा पुं० वेंत ।

घनेठी-संज्ञा स्त्री० पटेपाजों की वह लंबी छाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं ।

घनैला-वि० जंगली ।

घनैली-वि० कपासी ।

घपा-संज्ञा पुं० चाप ।

घपमार-वि० १. वह जो अपने पिता की हत्या करे । २. सचके साथ धोखा करनेवाला ।

घपतिस्मा-संज्ञा पुं० ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य संस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है ।

घपु-संज्ञा पुं० १. शरीर । २. अवतार ।

घपुख-संज्ञा पुं० शरीर । देह ।

घपुरा-वि० बेचारा ।

घपैली-संज्ञा स्त्री० चाप से पाई हुई जायदाद ।

घप्पा-संज्ञा पुं० पिता ।

घकारा-संज्ञा पुं० औषध-मिश्रित । जल की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना ।

घवर-संज्ञा पुं० सिंह ।

घघा-संज्ञा पुं० दे० "घाघा" ।

घघुआ-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घघुरे ] १.

बेटे या दामाद के लिये प्यार का संबोधन शब्द । २. रहस्य, जमींदार आदि ।

घानिक-संज्ञा स्त्री० बनाव-सिं गार ।

घानिन-संज्ञा स्त्री० बनिये की स्त्री ।

घानिया-संज्ञा पुं० दे० "बनिया" ।

घानी-संज्ञा स्त्री० १. वचन । मुँह से निकला हुआ शब्द । २. मनोती । प्रतिज्ञा । ३. सरस्वती ।

घानैत-संज्ञा पुं० १. घाना फेरनेवाला ।

२. घाण चलानेवाला । ३. घोड़ा ।

घाप-संज्ञा पुं० पिता । जनक ।

घापिका-संज्ञा स्त्री० दे० "घापिका" ।

घापुरा-वि० १. जिसकी कोई गिनती न हो । तुच्छ । २. दीन ।

घापू-संज्ञा पुं० १. दे० "घाप" । २. दे० "घाव" ।

घाफा-संज्ञा स्त्री० दे० "भाप" ।

घाफता-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा ।

घाय-संज्ञा पुं० परिच्छेद । अप्याय ।

घायत-संज्ञा स्त्री० १. संघर्ष । २. विषय ।

घाया-संज्ञा पुं० १. पिता । २. पिता-मह । दादा । ३. साधु-सन्या-सियों के लिये आदर-सूचक शब्द ।

४. बड़ा पुरुष ।

घावू-संज्ञा पुं० १. राजा के नीचे उनके धधु-बांधवी या श्रौर शत्रिय जमींदारों के लिये प्रयुक्त शब्द । २. एक आदर-सूचक शब्द । भलामानुस ।

† ३. पिता का संशोधन ।

घावूना-संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेज घनता है ।

घाभन-संज्ञा पुं० दे० "प्राक्षण" ।

घायक-संज्ञा पुं० १. कहनेवाला । बतलानेवाला । २. पढ़नेवाला ।

आचनेवाला । ३. दूत ।

घायन-संज्ञा पुं० १. वह मिठाई आदि जो बरसवादि के उपलक्ष में इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजते हैं । २. भट ।

संज्ञा पुं० घयाना । अगाऊ ।

घायविडंग-संज्ञा पुं० एक लता जिसमें मटर के बराबर गोल फल लगते हैं जो औषध के काम आते हैं ।

घायवी-वि० बाहरी । अपरिचित ।

घायी-वि० किसी प्राणी के शरीर के उस पार्श्व में पड़नेवाला जो उसके पूर्वाभिमुख छड़े होने पर उस की ओर हो । 'दहिना' का बलदा ।

घायै-कि० वि० १. घाई ओर । २. विपरीत । विरुद्ध ।

घारंवार-कि० वि० बारवार । पुनः पुनः । लगातार ।

घारगह-संज्ञा स्त्री० १. डेवड़ी । २. डेरा । खेमा । तंधू ।

घारजा-संज्ञा पुं० मकान के सामने दरवाजों के ऊपर पाटकर बड़ाया हुआ घरामदा ।

घारतिय-संज्ञा स्त्री० दे० "वार-स्त्री" ।

घारदाना-संज्ञा पुं० १. व्यापार की चीजों के रखने का यत्न या बैठन ।

२. फौज के खाने-पीने का सामान । रसद ।

घारन-संज्ञा पुं० दे० "वारण" ।

घारना-कि० अ० निवारण करना । मना करना । रोकना ।

कि० सं० बाधना । जलाना ।

कि० सं० दे० "वारना" ।

घारवधू-संज्ञा स्त्री० वेरिया ।

घारवरदार-संज्ञा पुं० वह जो सामान देता हो । बोन देनेवाला ।

घारवरदारी-संज्ञा स्त्री० सामान देने

घवूल-संज्ञा पुं० मम्बोले कद का एक प्रसिद्ध कटिदार पेड़।

घवूला-संज्ञा पुं० १. दे० "वगूला"।

२. दे० "बुलबुला"।

घभूत-संज्ञा स्त्री० दे० "भभूत" या "विभूत"।

घम-संज्ञा पुं० विस्फोटक पदार्थों से भाा हुआ लोहे का घना बड़ गोला जो शस्त्रों पर फेंकने के लिये बनाया जाता है।

संज्ञा पुं० शिव के उपासकों का "घम", "घम" शब्द।

संज्ञा पुं० घग्गी, फिटन आदि में आगे की घोर लगा हुआ बड़ लंबा घाँस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।

घमफना-कि० भ० बहुत शेरूही होना।

घमपुलिस-संज्ञा पुं० दे० "घंपुलिस"।

घयस-संज्ञा स्त्री० दे० "घय"।

घयस-सिरोमनि-संज्ञा पुं० युवा-वस्था।

घया-संज्ञा पुं० गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।

संज्ञा पुं० वह जो अनाज तोड़ने का काम करता हो।

घयान-संज्ञा पुं० १. बखान। २. हाल।

घयाना-संज्ञा पुं० पेशगी।

कि० भ० बकना। कटपटाव घाँते करना।

घयार, घयारि-संज्ञा स्त्री० हवा।

घर-संज्ञा पुं० १. देवर्हा। दे० "घर"।

२. आशीर्वाद-सूचक वचन।

वि० ध्येष्ट।

संज्ञा पुं० बल।

संज्ञा पुं० घट वृक्ष।

संज्ञा पुं० रेखा।

भय० ऊपर।

वि० ध्येष्ट।

० भय० बलिक।

घरई-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घरन ] पान पैदा करने या बेचनेवाला तमोजी।

घरकत-संज्ञा स्त्री० १. बढ़ती। २. लाभ। ३. घन-दीलत। ४. प्रसाद।

घरकना-कि० भ० १. निवारण होना। २. हटना।

घरफार-वि० १. फायम। २. उपस्थित।

घरकाज-संज्ञा पुं० विवाह।

घरकाना-कि० भ० १. कोई बुरी बात न होने देना। २. बहलाना।

घरखा-संज्ञा स्त्री० दे० "घर्षा"।

घरखास-वि० दे० "घरखास्त"।

घरखास्त-वि० १. जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। २. मौजूद।

घरगद-संज्ञा पुं० घड़ का पेड़।

घरछा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घरछी ] भाला नामक हथियार।

घरछैत-संज्ञा पुं० घरछा चबानेवाला।

घरजन-कि० भ० मना करना।

घरजनि-संज्ञा स्त्री० १. मनाही। २. रुकावट।

घरजवान-वि० कंठस्थ।

घरसोर-वि० १. धक्कान। २. अत्याचारी।

कि० वि० ज़बरदस्ती।

घरज़ोरी-संज्ञा स्त्री० ज़बरदस्ती।

कि० वि० ज़बरदस्ती से।

घरत-संज्ञा पुं० दे० "घत"।

संज्ञा स्त्री० रस्ती।

घरतन-संज्ञा पुं० पात्र। भाँड़ा।

घरतना-कि० भ० व्यवहार करना।

का काम या मङ्गदूरी ।

धारमुखी-संज्ञा स्त्री० वेश्या ।

धारह-वि० जो संख्या में दस और दो हो । धारह की संख्या या श्रंक। १२ ।

धारहखड़ी-संज्ञा स्त्री० वर्षा-माला का वह श्रंग जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अ और अः इन धारह स्वरों का, मात्रा के रूप में लगाकर, घोड़ते या लिखते हैं ।

धारहदूरी-संज्ञा स्त्री० चारों ओर से लुकी वह हवादार बैठक जिसमें धारह द्वार हैं ।

धारहवान-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना ।

धारहमासा-संज्ञा पुं० वह पद्य या गीत जिसमें धारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन विरही के मुँह से कराया गया हो ।

धारहमासी-वि० सब श्रवणों में फलने या फूलनेवाला ।

धारहसिंगा-संज्ञा पुं० हिरण की जाति का एक प्रसिद्ध पशु ।

धारही-संज्ञा स्त्री० बच्चे के जन्म से धारहवाँ दिन, जिसमें वरसव किया जाता है । धरही ।

धारा-वि० बालक ।

संज्ञा पुं० बालक । लड़का ।

धारात-संज्ञा स्त्री० किसी के विवाह में उसके घर के लोगों और इष्ट-मित्रों का मिलकर पधू के घर जाना । धरयात्रा ।

धारानी-वि० धरसाती ।

संज्ञा स्त्री० १. वह भूमि जिसमें केवल धरसात के पानी से फसल उत्पन्न

होती हो । २. वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिये धरसात में पहना या ओढ़ा जाता हो ।

वारिगर-संज्ञा पुं० हथियारों पर बाढ़ रखनेवाला । सिकलीगर ।

वारिधर-संज्ञा पुं० १. बादल । वारिद । मेघ । २. एक वर्णवृत्त ।

वारिश-संज्ञा स्त्री० १. वर्षा । घृष्टि । २. वर्षा श्रव ।

वारी-संज्ञा स्त्री० १. किनारा । तट ।

२. छोर पर का भाग । हाशिया ।

३. बगीचे, खेत आदि के चारों ओर रोकने के लिये बनाया हुआ घेरा ।

बाढ़ । ४. बरतन के मुँह का घेरा ।

झाँठ । ५. पानी वस्तु का किनारा ।

धार । बाढ़ ।

संज्ञा स्त्री० १. वह स्थान जहाँ-

पेड़ लगाए गए हों । बगीचा ।

२. मेढ़ आदि से घिरा स्थान ।

ब्यारी । ३. घर । मकान । ४.

सिड़की । झरोखा । ५. जहाजों के

ठहरने का स्थान । बंदरगाह ।

संज्ञा पुं० एक जाति जो अथ पत्तल,

दाने बनाती और सेवा करती है ।

संज्ञा स्त्री० आगे पीछे के सिखसिखे

के मुताबिक आनेवाला मौका ।

अवसर । पारी ।

धारीक-वि० १. महीन । पतला ।

२. सूक्ष्म । ३. जो पिता अच्छी

तरह ध्यान से सोच-समझ में न

धावे ।

धारीकी-संज्ञा स्त्री० १. महीनपन ।

पतलापन । २. गुण । विशेषता ।

लुथी ।

धाकी-संज्ञा पुं० दे० "धाकू" ।

धारुद-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का

क्रि० स० काम में जाना ।

घरतरफ-वि० १. किनारे । २. परापूर्व ।

घरताना-क्रि० स० घाटना ।

घरताव-संज्ञा पुं० घरतने का टंग ।

घरती-वि० जिसने उपवास किया या ग्रत रखा हो ।

घरतोरा-संज्ञा पुं० यह कुंसी या कोड़ा जो बाह्य बरतने से हो ।

घरदाना-क्रि० स० जोड़ा खिलाना ।

घरदाश्त-संज्ञा स्त्री० सहन ।

घरधा-संज्ञा पुं० धूल ।

घरन-संज्ञा पुं० दे० "घर्ण" ।

घरनन-संज्ञा पुं० दे० "घर्णन" ।

घरना-क्रि० स० १. व्याहना । २.

कौड़ी काम करने के लिये किसी का

धुनना या नियुक्त करना । ३.

दान देना ।

१ क्रि० स० दे० "जलना" ।

घरप-संज्ञा स्त्री० दे० "घर्ष" ।

घरफी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की

प्रसिद्ध चौकदार मिटाई ।

घरघंडा-वि० १. दलघान् । २.

प्रतापशाली ।

घरघट-क्रि० वि० दे० "घरषट" ।

घरघरा-संज्ञा स्त्री० बबक ।

संज्ञा पुं० दे० "घर्ष" ।

घरघस-क्रि० वि० १. बलपूर्वक । २.

व्यर्थ ।

घरघाद-वि० भट ।

घरघादी-संज्ञा स्त्री० नाश ।

घरम-संज्ञा पुं० कवच ।

घरमा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० कन्या० घरमी ]

रुबड़ी आदि में छेद करने का, छोटे

का, एक प्रसिद्ध औजार ।

घरमी-संज्ञा पुं० बरमा देश का निवासी ।

संज्ञा स्त्री० बरमा देश की भाषा ।

वि० घरमा-संबंधी ।

घरम्हा-संज्ञा पुं० १. दे० "घरमा" ।

२. दे० "घरमा" ।

घरवै-संज्ञा पुं० १३ साधारणों का एक

छंद ।

घरपा-संज्ञा स्त्री० १. घृष्टि । २.

घर्षाकाल ।

घरपासना-संज्ञा पुं० एक वर्ष की

भोजन-सामग्री ।

घरस-संज्ञा पुं० वर्ष । साल ।

घरसगाँठ-संज्ञा स्त्री० वह दिन जिसमें

बिस्ती का जन्म हुआ हो । जन्मदिन ।

घरसना-क्रि० स० वर्षा का जल

गिरना ।

घरसाइती-संज्ञा स्त्री० जेठ बड़ी अमा-

वस, जिस दिन भिन्नया घट-सावित्री

का पूजन करती हैं ।

घरसात-संज्ञा स्त्री० वर्षा ऋतु ।

घरसाती-वि० घरसात या ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का बीजा कपड़ा

जिसमें वर्षा के समय पहन देने से

शरीर नहीं भीगता ।

घरसाना-क्रि० स० वर्षा करना ।

घरसी-संज्ञा स्त्री० मृतक के उद्देश से

विया जानेवाला वार्षिक श्राद्ध ।

घरसौहाँ-वि० घरसनेवाला ।

घरहा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० घरही ]

कंठों में सिंचाई के लिये बनी हुई

छोटी नाली ।

संज्ञा पुं० मोटा रस्सा ।

संज्ञा पुं० मोर ।

घरही-संज्ञा पुं० १. मयूर । २.

मुरगा ।

चूर्ण या चुकनी जिसमें आग लगने से तोप-बंदूक चलती हैं। दारु। २. एक प्रकार का धान।  
 घारे में-अर्थ० प्रसंग में। विषय में।  
 घाल-संज्ञा पुं० बालक।  
 ० संज्ञा स्त्री० दे० "बाला"।  
 वि०० जो सयाना न हो।  
 संज्ञा पुं० सूत की सी वह वस्तु जो जंतुओं के चमड़े के ऊपर निटली रहती है और जो अधिकतर जंतुओं में इसी अधिक होती है कि उनका चमड़ा ढका रहता है। काम और केश।  
 संज्ञा स्त्री० कुछ अनाजों के पौधों के डंठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुड़े रहते हैं।  
 घालक-संज्ञा पुं० १. लड़का। पुत्र।  
 २. थोड़ी वस्त्र का चप्पा। शिशु।  
 घालकता-संज्ञा स्त्री० लड़कपन।  
 घालकताई-संज्ञा स्त्री० १. घाल्या-धसा। २. नासमझी।  
 घालकपनी-संज्ञा पुं० १. घालक होने का भाव। २. लड़कपन।  
 घालखिल्य-संज्ञा पुं० पुराणानुसार आपिना का एक समूह जिसका प्रत्येक अपि ऋग्वेदे के धाराश्र माना गया है।  
 घालगोविन्द-संज्ञा पुं० दे० "घाल-कृष्ण"।  
 घालग्रह-संज्ञा पुं० बालकों के प्राण-घातक नौ ग्रह।  
 घालछुड़-संज्ञा स्त्री० जटामासी।  
 घालटी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की डोलची जिसमें इशाने के लिये एक दस्त लगा रहता है।  
 घालतंत्र-संज्ञा पुं० बालकों के लाक्षण-पालन आदि की विद्या। कामार-

भूत। दायागिरी।  
 घालतोड़-संज्ञा पुं० बाल टूटने के कारण होनेवाला फोड़ा।  
 घालना-कि० सं० जलाना।  
 घालपन-संज्ञा पुं० बालक होने का भाव।  
 घाल घरचे-संज्ञा पुं० लड़के-बाले। संतान। आलाद।  
 घालबोध-संज्ञा स्त्री० देवनागरी लिपि।  
 घालभोग-संज्ञा पुं० वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषतः बालकृष्ण आदि की मूर्तियों के सामने प्रातःकाल रखा जाता है।  
 घालम-संज्ञा पुं० १. पति। स्वामी। २. प्रियी। प्रेमी। जार।  
 घालम खीरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा खीरा।  
 घाललीला-संज्ञा स्त्री० बालकों के खेल। बालकों की मीठा।  
 घालविधु-संज्ञा पुं० शुक्लपत्र की द्वि-ताया का चंद्रमा।  
 घालसूर्य-संज्ञा पुं० प्रातःकाल के उगते हुए सूर्य।  
 घाला-संज्ञा स्त्री० १. जवान स्त्री। बाह-तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २. दो वर्ष तक की अवस्था की लड़की। ३. बन्धा। ४. दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या का नाम। ५. एक वर्णवृत्त।  
 संज्ञा पुं० जो बालकों के समान हो। अज्ञान। सरल। निरक्षर।  
 घालाई-संज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।  
 घालाखाना-संज्ञा पुं० कोठे के ऊपर की बैठक। मकान के ऊपर का कमरा।

संज्ञा स्त्री० प्रसूता का वह स्नान तथा अन्यान्य क्रियाएँ जो संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होती हैं।

संज्ञा स्त्री० परपर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा।

घरहीमुख—संज्ञा पुं० देवता।

संज्ञा पुं० भुवदंड पर पहनने का एक आभूषण।

घराक—संज्ञा पुं० १. शिव। २. युद्ध।

वि० १. शोचनीय। २. नीच।

घराट—संज्ञा स्त्री० कौड़ी।

घरात—संज्ञा स्त्री० घर पक्ष के लोग जो विवाह के समय घर के साथ कन्यावालों के यहाँ जाते हैं।

घराती—पञ्च पुं० घरात में घर के साथ कन्या के घर तक जानेवाला।

घराना—कि० अ० १. बचाना। २. रक्षा करना।

कि० स० छुटना।

† कि० स० दे० "बालना"। (जलाना)।

घरावर—वि० १. तुल्य। एक सा। २. समतल।

कि० वि० १. लगातार। २. एक साथ। ३. हमेशा।

घरावरी—संज्ञा स्त्री० १. समानता। २. सादृश्य। ३. मुकाबला।

घरामद—वि० खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय।

घरामदा—संज्ञा पुं० १. छुआ। २. दाखान।

घरायन—संज्ञा पुं० लोहे का वह छुछा जो ब्याह के समय दूल्हे के हाथ में पहनाया जाता है।

घराघ—संज्ञा पुं० घघाव।

घरास—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपूर।

घरियाही—कि० वि० चल-पर्व।

संज्ञा स्त्री० चलवान् होने का भाव।

घरियारा—संज्ञा पुं० एक छोटा साह-दार छुनारा पैधा।

घरिवंड—वि० दे० "वरवंड"।

घरी—पञ्च स्त्री० १. गोल टिकिया।

२. उर्द या मूँग की पीठी के सुछाप हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े।

वि० मुक्त।

घराँ—अव्य० भजे ही।

संज्ञा पुं० दे० "घर"।

घरघ्राँ—संज्ञा पुं० १. घट्ट। प्रक्ष-चारी। २. माक्षणकुमार।

घरुनी—संज्ञा स्त्री० पलक के किनारे पर के बाज।

घरेखी—संज्ञा स्त्री० छियों का मुता पर पहनने का एक गहना।

संज्ञा स्त्री० विवाह-समय के छिये वर या कन्या देखना। विवाह की ठरौनी।

घरोक—संज्ञा पुं० वह द्रव्य जो कन्या-पक्ष से वरपक्ष को संप्रथ, पक्का करने के लिये दिया जाता है।

०पञ्च पुं० सेना।

घरोठा—संज्ञा पुं० १. व्योढ़ी। २. बीरक।

घरोह—संज्ञा स्त्री० बरागद के पेड़ के ऊपर की डालियों में टँगी हुई वह शाखा जो छमीन पर जाकर जम जाती है।

घरोठा—संज्ञा पुं० दे० "घरोठा"।

घरोनी—संज्ञा स्त्री० दे० "घरनी"।

वर्क—संज्ञा स्त्री० विज्वली।

वि० तेज।

वर्जना—कि० स० दे० "वरजना"।



बालापन-संज्ञा पुं० दे० "बालपन"।

बालार्क-संज्ञा पुं० १. प्रातःकाल का सूर्य । २. कन्या राशि में स्थित सूर्य ।

बालि-संज्ञा पुं० बंषा, किष्किंषा का वानर राजा जो श्रगद का पिता और सुग्रीव का बड़ा भाई था ।

बालिका-संज्ञा स्त्री० १. छोटी लड़की । कन्या । २. पुत्री ।

बालिग-संज्ञा पुं० वह जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो । जवान । प्रातःवयस्क ।

बालिश-संज्ञा स्त्री० तक्रिया ।

बालिशत-संज्ञा पुं० दे० "वित्त" ।

बाली-संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण ।

संज्ञा स्त्री० जौ, गेहूँ आदि के पौधों की पाल ।

संज्ञा पुं० दे० "बालि" ।

बालुका-संज्ञा स्त्री० रेत । बालू ।

बालू-संज्ञा पुं० चट्टानों आदि का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षों के जल के साथ पहाड़ों पर से वह आता है और नदियों के किनारों पर, अथवा ऊसर जमीन या रेगिस्तानों में बहुत पाया जाता है । रेखुका । रेत ।

बालुदानी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मकलीदार डिबिया जिसमें लोग बालू रखते हैं । इस बालू से स्याही सुखाने का काम लेते हैं ।

बालुसाही-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

बाल्य-संज्ञा पुं० १. लड़कपन । २. बालक होने की अवस्था ।

बाल्यावस्था-संज्ञा स्त्री० प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था । लड़कपन ।

बाध-संज्ञा पुं० १. बाधु । हवा । २. बाई । ३. अपान वायु ।

बावली-संज्ञा स्त्री० दे० "बावली" ।

बाधन-संज्ञा पुं० दे० "वामन" ।

संज्ञा पुं० पचास और दो की संख्या । ५२ ।

बाधरघी-संज्ञा पुं० भोजन पकाने-वाला । रसोइया । (मुसल०)

बाधरघीखाना-संज्ञा पुं० भोजन पकाने का स्थान । रसोइघर । (मुसल०)

बाधर-वि० दे० "बाधला" ।

बाधला-वि० १. पागल । विचित्र । सनकी । २. मूर्ख ।

बाधलापन-संज्ञा पुं० पागलपन । सिद्धीपन । झूठ ।

बावली-संज्ञा स्त्री० १. चौड़े मुँह का कुर्या जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों । २. छोटा गहरा तालाब ।

बाशिदा-संज्ञा पुं० निवासी ।

बाष्प-संज्ञा पुं० १. भाप । २. छोटा । ३. अश्रु । आँसू ।

बासंतिक-वि० बसंत ऋतु संबंधी ।

बास-संज्ञा पुं० १. रहने की क्रिया या भाव । निवास । २. बू । गंध । महक । ३. एक छंद का नाम ।

संज्ञा स्त्री० बासना । इच्छा ।

संज्ञा पुं० छोटा कपड़ा ।

संज्ञा स्त्री० १. अग्नि । आग । २. एक प्रकार का अन्न । ३. तेज धार-वाली छुरी, चाकू, कैची इत्यादि

वर्तना-कि० सं० दे० "वर्तना" ।  
 वर्फा-संज्ञा स्त्री० १. हवा में मिछी हुई  
 भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की  
 तह जो वातावरण की ठंडक के  
 कारण क्षमीन पर गिरती है । २.  
 बहुत अधिक ठंडक के कारण जमा  
 हुआ पानी जो ठोस और पारदर्शी  
 होता है । ३. मशीनों आदि अथवा  
 कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी  
 जिससे पीने का जल आदि ठंडा करते हैं ।  
 वफिस्तान-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ  
 बर्फ ही बर्फ हो ।  
 वर्फी-संज्ञा स्त्री० दे० "वर्फी" ।  
 वर्वर-संज्ञा पुं० जंगली आदमी ।  
 वि० जंगली ।  
 वर्वरी-संज्ञा स्त्री० घनतुलसी ।  
 वर्वाक-वि० १. चमकीला । २.  
 तेज । ३. चाखाक । ४. सफेद ।  
 वर्ना-कि० अ० १. व्यर्थ बोलना ।  
 २. नौद या बेहोशी में बचना ।  
 वर्न-संज्ञा पुं० तितैया । हड्डा ।  
 वलद-वि० ऊँचा ।  
 वल-संज्ञा पुं० १. शक्ति । २. सहारा ।  
 ३. सेना । ४. पहलू ।  
 संज्ञा पुं० १. घुँठन । २. फेरा ।  
 ३. सिकुड़न । ४. लचक ।  
 वलकना-कि० अ० १. उबलना ।  
 २. चमकना ।  
 वलकारक-वि० वलजनक ।  
 वलकला-संज्ञा पुं० दे० "वलकल" ।  
 वलगम-संज्ञा पुं० कफ ।  
 वलदाऊ, वलदेव-संज्ञा पुं० दे०  
 "वलराम" ।  
 वलना-कि० अ० जलना ।  
 वलवलना-कि० अ० १. ऊँट का

बोलना । २. व्यर्थ बचना ।  
 वलवलाहट-संज्ञा स्त्री० १. ऊँट की  
 बोली । २. व्यर्थ अहंकार ।  
 वलवीर-संज्ञा पुं० वलराम के भाई  
 श्रीकृष्ण ।  
 वलमद्र-संज्ञा पुं० वलदेवजी ।  
 वलभी-संज्ञा स्त्री० मकान में सप्रसे  
 ऊपरवाली कोठरी ।  
 वलम-संज्ञा पुं० पति ।  
 वलय-संज्ञा पुं० दे० "वल्लय" ।  
 वलराम-संज्ञा पुं० कृष्णचंद्र के बड़े  
 भाई जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे ।  
 वलवड-वि० बली ।  
 वलवत-वि० वलवान् ।  
 वलवा-संज्ञा पुं० दंगा ।  
 वलवाई-संज्ञा पुं० चिट्ठीही ।  
 वलवान्-वि० [स्त्री० वलवती] मजबूत ।  
 वलशाली-वि० दे० "वलवान्" ।  
 वलशील-वि० बली ।  
 वला-संज्ञा स्त्री० १. आपात । २.  
 दुःख । ३. व्याधि ।  
 वलाइ-संज्ञा स्त्री० दे० "वलाय" ।  
 वलाक-संज्ञा पुं० बक ।  
 वलाका-संज्ञा स्त्री० बगली ।  
 वलाप्र-संज्ञा पुं० १. सेनापति । २.  
 सेना का अगला भाग ।  
 वि० वलशाली ।  
 वलाह्य-वि० वलवान् ।  
 वलात्-कि० वि० १. वलपूर्वक ।  
 २. हठात् ।  
 वलात्कार-संज्ञा पुं० १. जुधरदस्ती  
 कोई काम करना । २. किसी स्त्री  
 के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध  
 संयोग करना ।  
 वलाध्यक्ष-संज्ञा पुं० सेनापति ।  
 वलाय-संज्ञा स्त्री० दे० "वला" ।

छोटे शस्त्र जो तोपों में भरकर फेंके जाते हैं ।

वासकसज्जा-संज्ञा स्त्री० वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि-सामग्री सजित करे ।

वासन-संज्ञा पुं० वस्त्रन ।

वासना-संज्ञा स्त्री० १. दे० "वासना" ।

२. गंध । महक । घृ ।

कि० सं० सुगंधित करना ।

वासमती-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान । इसका चावल पकने पर सुगंध देता है ।

वासर-संज्ञा पुं० १. दिन । २. प्रातः-काल । सुबह । ३. वह राग जो सधरे गाया जाता है ।

वास्व-संज्ञा पुं० ईश्वर ।

वासा-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी हुई रसोई मिलती है । संज्ञा पुं० दे० "वास" ।

वासी-वि० देर का घना हुआ । जो साज़ा न हो । ( खाद्य पदार्थ )

वाहकी-संज्ञा स्त्री० पालकी जो चलने-वाली स्त्री । कहारिन ।

वाहनी-संज्ञा स्त्री० सेना ।

वाहम-कि० वि० आपस में ।

वाहर-कि० वि० किसी निश्चित अवधि कल्पित सीमा या मर्यादा से हटकर, अलग या निकला हुआ ।

वाहरी-वि० १. बाहरवाला । २. पराया । गैर । ३. ऊपरी ।

वाहिज-संज्ञा पुं० ऊपर से । देखने में ।

वाहिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी" ।

वाहु-संज्ञा स्त्री० भुजा । बांह ।

वाहुक-संज्ञा पुं० १. राजा नख का उस समय का नाम जब वे अयोध्या

के राजा के सारथी बने थे । २. नकुल ।

वाहुवाण-संज्ञा पुं० वह दस्त्राना जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है ।

वाहुवल-संज्ञा पुं० पराक्रम । बहादुरी ।

वाहुमल-संज्ञा पुं० कंधे और बांह का जोड़ ।

वाहुयुद्ध-संज्ञा पुं० कुरती ।

वाहुल्य-संज्ञा पुं० बहुतायत । अधिकता ।

वाहुहार-संज्ञा पुं० दे० "सहस्रवाहु" ।

वाह्य-वि० बाहरी । बाहर का । संज्ञा पुं० १. भार डोनेवाला पशु ।

२. सवारी । यान ।

वाहीक-संज्ञा पुं० कांयोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम । पल्लव ।

विं०-संज्ञा पुं० दे० "व्यंग्य" ।

विंजन-संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन" ।

विं०-संज्ञा पुं० १. पानी की बूँद ।

२. बिंदी । माथे का गोख तिलक ।

विं०-संज्ञा स्त्री० एक गोपी का नाम ।

संज्ञा पुं० माथे पर का गोख और

बड़ा टीका । चंद । हुंदा ।

विंदी-संज्ञा स्त्री० सुन्ना । शून्य ।

सिफर । बिंदु ।

विं०-संज्ञा पुं० दे० "विंध्याचल" ।

विंघना-कि० व० रोंचा जाना । छेदा जाना ।

विं०-संज्ञा पुं० १. प्रतिविंब । छाया ।

अकस । २. कमंडलु । ३. प्रति-

मूर्त्ति । ४. कुंदरु नामक फल ।

५. सूर्य या चंद्रमा का मंडल । ६.

कोई मंडल । ७. आभास । ८.

एक प्रकार का छंद ।

घलाहक-संज्ञा पुं० मेव ।

घलि-संज्ञा पुं० १. फर । २. उपहार ।

३. चढ़ाया । ४. वह पशु जो

किसी देवता के वहेय से मारा

जाय । ५. प्रह्लाद का पौत्र जो

दैत्यों का राजा था ।

संज्ञा स्त्री० सली ।

घलिदत्त-वि० १. घलिदान चढ़ाया

हुआ । २. मारा हुआ ।

घलिदान-संज्ञा पुं० १ देवता के

वहेय से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री

चढ़ाना । २. यकरे आदि पशु

देवता के वहेय से मारना ।

घलिपशु-संज्ञा पुं० वह पशु जो किसी

देवता के वहेय से मारा जाय ।

घलिप्रदान-संज्ञा पुं० घलिदान ।

घलिवर्द-संज्ञा पुं० १. सौंद । २. धैल ।

घलिष्ठ-वि० अधिक बलवान् ।

घलिहारी-संज्ञा स्त्री० निष्ठावर ।

घलो-वि० घलवान् ।

घलीमुख-संज्ञा पुं० बंदर ।

घलुआ-वि० [ स्त्री० घलू ] जिसमें

बालू मिला हो ।

घलूची-संज्ञा पुं० बलूचिस्तान का

निवासी ।

घलूत-संज्ञा पुं० माजूफत की जाति

का एक पेड़ ।

घलैया-संज्ञा स्त्री० बला ।

घलिक-अव्य० १. अन्यथा । २.

बेहतर ।

घल्लम-संज्ञा पुं० बरदा ।

घल्लमटेर-संज्ञा पुं० स्वयंसेवक ।

घल्लमवर्दार-संज्ञा पुं० वह जो सवारी

या बरात के साथ घल्लम लेकर

चलता है ।

घल्ला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्ला० बली ]

१. डंडे के आकार का लंबा

मोटा डुकड़ा । २. मोटा डंडा ।

३. डाँड़ा ।

वल्ली-संज्ञा स्त्री० छोटा बछा ।

संज्ञा स्त्री० दे० "बली" ।

वचंडना-कि० अ० हथर-हथर

धूमना ।

वचंडर-संज्ञा पुं० १. बगूला । २.

काफी ।

वचना-कि० स० १. दे० "वैना" ।

२. छितराना ।

कि० अ० छितराना ।

संज्ञा पुं० दे० "वामन" ।

वयासीर-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें

गुर्देद्वय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं ।

वसंतो-वि० १. वसंत का । ऋतु-

संबंधी । २. खुलते हुए पीले

रंग का ।

वसंदर-संज्ञा पुं० आग ।

वस-वि० भरपूर । काफी ।

अव्य० १. पर्याप्त । २. सिफ़ ।

संज्ञा पुं० दे० "वश" ।

वसना-कि० अ० १. निवास करना ।

२. निवासियों से भरा पूरा होना ।

३. टिकना ।

कि० अ० महक से भर जाना ।

संज्ञा पुं० १. वह कपड़ा जिसमें कोई

वस्तु छपेटकर रखी जाय । २. धैली ।

वसवार-संज्ञा पुं० चौक ।

वसर-संज्ञा पुं० गुजर ।

वसह-संज्ञा पुं० बैल ।

वसानो-कि० स० १. वसने के लिये

जगह देना । २. आवाह करना ।

कि० अ० १. वसना । २. दुर्गंध देना ।

कि० स० १. बैठना । २. रखना ।

संज्ञा पुं० दे० "शान्ति" ।  
विधा-संज्ञा पुं० कुंदरु ।

विविस्तर-संज्ञा पुं० एक प्राचीन राजा  
जो अजातशत्रु के पिता और गौतम  
बुद्ध के समकालीन थे ।

विश्राधि-संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि" ।

विश्राधु-संज्ञा पुं० दे० "व्याध" ।

विश्राना-कि० स० यथा देना। जनना।  
(पशुओं के संबंध में)

विकना-कि० भ० मूल्य लेकर दिया  
जाना। बेचा जाना। विक्री होना।

विकरमा-संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादिस" ।

विकरार-वि० व्याकुल ।

वि० भयानक । डरावना ।

विकला-वि० १. व्याकुल । घबरामा  
हुआ । २. बेचैनी ।

विकलाई-संज्ञा स्त्री० व्याकुलता ।  
बेचैनी ।

विक्रयाना-कि० स० बेचने का काम  
दूसरे से कराना ।

विकसना-कि० भ० १. खिलना ।  
फूलना । २. बहुत प्रसन्न होना ।

विकसाना-कि० भ० दे० "विक-  
सना" ।

कि० स० १. विकसित करना ।  
खिलाना । २. प्रसन्न करना ।

विकाऊ-वि० जो विकने के लिये हो।  
बिकनेवाला ।

विकाना-कि० भ० दे० "विकना" ।

विकार-संज्ञा पुं० दे० "विकार" ।

विकारी-वि० १. जिसका रूप  
बिगड़कर और का और हो गया हो।

२. घुरा । हानिकारक ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टेढ़ी पाई  
जो अंकों आदि के आगे संख्या या

मान सूचित करने के लिये लगाते हैं ।

विक्री-संज्ञा स्त्री० १. किसी पदार्थ के  
बेचे जाने की क्रिया या भाव ।

विक्रय । २. बेचने से मिलनेवाला  
धन ।

विखा-संज्ञा पुं० दे० "विप" ।

बिखम-वि० दे० "विपन्न" ।

बिखरना-कि० भ० छितराना । तितर-  
वितर हो जाना ।

बिखराना-कि० स० दे० "बिखरना" ।

बिखरना-कि० स० इधर-उधर फै-  
लाना । छितराना ।

विगाड़ना-कि० भ० १. किसी पदार्थ  
के गुण या रूप आदि में विकार

होना । खराब हो जाना । २.

खराब दशा में आना । ३. नीति-

पथ से भट्ट होना । बदचलन होना ।

४. क्रुद्ध होना । ५. विरोधी होना ।

विगाड़ल-वि० १. हर बात में बिगड़ने

या कोप करनेवाला । २. हठी ।

जिद्दी ।

विगार-कि० वि० दे० "वर्गार" ।

विगारना-कि० भ० दे० "बिगड़ना" ।

विगाराइला-वि० दे० "बिगड़ल" ।

विगसना-कि० भ० दे० "विक-  
सना" ।

विगाहा-संज्ञा पुं० दे० "धीघा" ।

विगाह-संज्ञा पुं० १. बिगड़ने की

क्रिया या भाव । २. खराबी । दोष ।

३. वैमनस्य । अगद । लड़ाई ।

विगाड़ना-कि० स० १. किसी वस्तु

के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट

कर देना । २. किसी पदार्थ को

बनाते समय उसमें ऐसा विकार

उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न

उठे । ३. नीति या कुमार्ग में

कि० अ० बस या ज़ोर चलना ।

कि० अ० पास देना ।

पसिऔरा-संज्ञा पु० १. वर्ष की कुछ तिथियाँ जिनमें खिरिया बासी भोजन खानी हैं । २. बासी भोजन ।

पसीकत, पसीगत-संज्ञा स्त्री० १. पगती । २. रहन ।

पसीकर-वि० बस में करनेवाला ।

पसीकरन-संज्ञा पुं० दे० "पसीकरण" ।

पसीठ-संज्ञा पुं० सँदेसा ले जानेवाला दूत ।

पसीठी-संज्ञा स्त्री० दूताव ।

पसीना-संज्ञा पुं० रहन ।

पसूला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० वसूली ] एक आँखार जिसमें बड़ई लकड़ी धीलते और गड़ते हैं ।

पसेरा-वि० पसनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ रहकर यात्री रात बिनाते हैं । २. वह स्थान जहाँ चिड़ियाँ ठहरकर रात बिताती हैं । ३. टिकने या पसने का भाव ।

पसेरी-वि० निवासी ।

पसौंधी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सुगंधित और लच्छेदार रमड़ी ।

पस्ता-संज्ञा पुं० कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें कागज़, वही या पुस्तकादि बाँधकर रखते हैं ।

पस्ती-संज्ञा स्त्री० आघादी ।

पहँगी-संज्ञा स्त्री० कविर । पोस ले चलने का एक ढाँचा ।

पहकना-कि० अ० १. भटकना । २. घूकना । ३. किसी की बात या मुलावे में आ जाना । ४. आपे में

न रहना ।

पहकाना-कि० सं० १. भटकाना । २. लक्ष्यभ्रष्ट करना । ३. मुलावा देना । ४. बहलाना ।

पहकावट-संज्ञा स्त्री० बहकाने की क्रिया या भाव ।

पहन-संज्ञा स्त्री० दे० "बहिन" ।

पहना-कि० अ० १. प्रवाहित होना । २. हवा का चलना ।

पहनापा-संज्ञा पुं० पहिन का संयध ।

पहनी-संज्ञा स्त्री० अग्नि ।

पहनेली-संज्ञा स्त्री० वह जिसके साथ पहन का संयध स्थापित हो । पहनापा ।

पहनोई-संज्ञा पुं० पहिन का पति ।

पहरा-वि० [ स्त्री० बहरी ] जो कान से सुन न सके या कम सुने ।

पहराना-कि० सं० फुपलाना ।

पहरियाना-कि० सं० १. निकासना । २. अलग करना ।

कि० अ० १. बाहर की ओर होना । २. अलग होना ।

पहरी-संज्ञा स्त्री० बाज़ की तरह की एक शिकारी चिड़िया ।

पहल-संज्ञा स्त्री० दे० "बहली" ।

पहलना-कि० अ० मनोरंजन होना ।

पहलाना-कि० सं० १. मनोरंजन करना । २. मुलावा देना ।

पहलाव-संज्ञा पुं० मनोरंजन ।

पहली-संज्ञा स्त्री० रथ के आकार की बैलगाड़ी ।

पहस-संज्ञा स्त्री० दलीज ।

पहसना-कि० अ० १. बहस करना । २. खर्त लगाना ।

बहादुर-वि० [ संज्ञा बहादुरी ] १. साहसी । २. शूरवीर ।

लगाना । ४. स्त्री का सतीत्य नष्ट करना । ५. व्यर्थ व्यय करना ।  
 दिगारि-संज्ञा पुं० दे० "विगाद" ।  
 दिगारि-संज्ञा स्त्री० दे० "वेगार" ।  
 दिगारी-संज्ञा स्त्री० दे० "वेगारी" ।  
 दिगासना-क्रि० सं० विषसित करना ।  
 दिगुन-वि० जिसमें कोई गुण न हो । गुण-रहित ।  
 दिगुर-वि० जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो । निगुरा ।  
 दिगुरदा-संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का हथियार ।  
 दिगल-संज्ञा पुं० अंगरेजी ढंग की एक प्रकार की तुरही जो प्रायः सैनिकों को एकत्र करने के लिये बजाई जाती है ।  
 दिगुलर-संज्ञा पुं० फ़ौज में दिगुल बजानेवाला ।  
 दिगोना-क्रि० सं० १. नष्ट करना । विगादना । २. छिपाना । दुराना ।  
 दिग्गाहा-संज्ञा पुं० आर्या छंद का एक भेद । उद्गीति ।  
 दिग्ग्रह-संज्ञा पुं० दे० "दिग्रह" ।  
 दिघटना-क्रि० सं० विनाश करना । विगादना । सोदना फोड़ना ।  
 दिघन-संज्ञा पुं० दे० "विघ्न" ।  
 दिघनहरन-वि० विघ्न का बाधा को हटानेवाला ।  
 संज्ञा पुं० गणेश । गजानन ।  
 दिच्छ-क्रि० वि० दे० "धीच" ।  
 दिच्छकाना-क्रि० अ० १. विराना । चिड़ाना । (सुँह) २. बनाना । (सुँह)  
 दिच्छन-वि० दे० "विच्छन" ।  
 दिच्छरना-क्रि० अ० १. इधर-उधर घूमना । चलना-फिरना । २. यात्रा करना । सफ़र करना ।

विचलना-क्रि० अ० १. विचलित होना । इधर-उधर हटना । २. हिम्मत हारना । ३. कहकर सुकरना ।  
 विचला-वि० जो धोच में हो । धीच का ।  
 विचलाना-क्रि० सं० १. विचलित करना । डिगाना । २. हिला देना । ३. तिसर-वितर करना ।  
 विचधान, विचधानी-संज्ञा पुं० धीच-बधाव करनेवाला । मध्यस्थ ।  
 विचारना-क्रि० अ० १. विचार करना । सोचना । गौर करना । २. पूछना । प्रश्न करना ।  
 विचारमान-वि० १. विचार करनेवाला । २. विचारने के योग्य ।  
 विचारा-वि० दे० "वेचारा" ।  
 विचारी-संज्ञा पुं० विचार करनेवाला ।  
 विचाल-संज्ञा पुं० १. अलग करना । २. अंतर । फूट ।  
 विचेत-वि० मूर्च्छित । बेहोश ।  
 विच्छ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा जहरीला जानवर ।  
 दिछना-क्रि० अ० विछाना का अष्ट-भेद रूप । विछाया जाना ।  
 विछधाना-क्रि० सं० विछाने का काम दूर से कराना ।  
 विछाना-क्रि० सं० १. (दिखा या कपड़े आदि को) ज़मीन पर रतनी दूर तक फैलाना, जितनी दूर तक फैल सके । २. किसी चीज़ को ज़मीन पर कुछ दूर तक फैला देना । बिखेरना । बिखराना ।  
 विछाधन-संज्ञा पुं० दे० "विछौना" ।  
 विछिआ-संज्ञा स्त्री० पैर की हँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छछा ।  
 विछिस्त-वि० दे० "विचिस्त" ।

विद्युत्—संज्ञा पुं० १. पैर में पहनने का एक गहना । २. एक प्रकार की छुरी । ३. एक प्रकार की करघनी ।

विद्युद्धना—संज्ञा स्त्री० विद्युद्धने या अलग होने का भाव ।

विद्युद्धना—क्रि० प्र० १. अलग होना । जुदा होना । २. प्रेमियों का एक दूसरे से अलग होना । विप्रेषण होना ।

विद्युद्धना—क्रि० प्र० दे० "विद्युद्धना" ।

विद्युद्धना—संज्ञा पुं० विद्युद्ध हुन्ना । जो विद्युद्ध गया हो ।

विद्युद्धा—संज्ञा पुं० १. विद्युद्धने की क्रिया या भाव । २. विरह ।

विद्युद्धय, विद्युद्ध—संज्ञा पुं० विद्युद्धा । जुदाई । विरह । विप्रेषण ।

विद्युद्धीना—संज्ञा पुं० वह कपड़ा जो बिछाया जाता हो । बिछावन । विस्तर ।

विजना—संज्ञा पुं० छोटा पंखा । घेता ।

वि० एकांत स्थान ।

वि० जिसके साथ कोई न हो ।

विजयसार—संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली पेड़ ।

विजली—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है । विद्युत् । २. आकाश में सहसा उत्पन्न होने-वाला वह प्रकाश जो एक पादल से दूसरे पादल में जानेवाली वातावरण की विजली के कारण उत्पन्न होता है । चपला । ३. आम की गुठली

के अंदर की गिरी ।

वि० बहुत अधिक चंचल या तेज ।

विजाती—वि० दूसरी जाति का ।

विजायठ—संज्ञा पुं० पाँह पर पहनने का गजबंद । बाजू ।

विजूका, विजूखा—संज्ञा पुं० खेतों में पक्षियों आदि को डराकर दूर रखने के उद्देश्य से लकड़ी के ऊपर बल्टी रखी हुई काली धाँदी ।

विजोगा—संज्ञा पुं० दे० "विदेग" ।

विजोरा—संज्ञा पुं० नीबू की जाति का एक वृक्ष । इसके फल बड़ी मारंगी के बराबर होते हैं ।

विजु—संज्ञा स्त्री० दे० "विजली" ।

विजुपात—संज्ञा पुं० विजली गिरना । चपलापत ।

विजुला—संज्ञा पुं० खया । झिलका । संज्ञा स्त्री० विजली । दामिनी ।

विजु—संज्ञा पुं० शिखी के आकार-प्रकार का एक जंगली जानवर ।

विजुहा—संज्ञा पुं० एक धार्मिक वृक्ष । विमोहा ।

विमुकना—क्रि० प्र० १. भड़कना । २. डरना ।

विमुकाना—क्रि० प्र० भड़काना ।

विट—संज्ञा पुं० १. साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में निपुण हो । २. वैश्य । ३. नीच । खल ।

विटारना—क्रि० प्र० १. घँघोलना । २. गंदा करना ।

विटिया—संज्ञा स्त्री० दे० "वेटी" ।

विटल—संज्ञा पुं० १. विष्णु का एक नाम । २. बंबई प्रांत में शोला-पुर के अर्थात् पंढरपुर की एक देवमूर्ति ।



यह महात्मा जिनका जन्म ईसा से २२० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महाभाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंविनी नामक स्थान में हुआ था।

**बुद्धि-संज्ञा** स्त्री० विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अङ्गु। समझ।

**बुद्धिमत्ता-संज्ञा** स्त्री० बुद्धिमान होने का भाव। समझदारी। अङ्गुमंदि।

**बुद्धिमान्-वि०** वह जो बहुत समझदार हो।

**बुद्धिमान्नी-संज्ञा** स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता"।

**बुध-संज्ञा** पुं० १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

**बुधवार-संज्ञा** पुं० सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बुधस्पतिवार से पहले पड़ता है।

**बुद्धि-संज्ञा** स्त्री० दे० "बुद्धि"।

**बुनना-कि०** स० जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं।

**बुनाई-संज्ञा** स्त्री० १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २. बुनने की मजदूरी।

**बुनावट-संज्ञा** स्त्री० बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग।

**बुनियाद-संज्ञा** स्त्री० १. जड़। मूल। २. असलियत। वास्तविकता।

**बुबुकारी-संज्ञा** स्त्री० बुद्धा काढ़कर रोना। जोर जोर से रोना।

**बुभुक्षा-संज्ञा** स्त्री० बुद्धा। सूख।

**बुभुक्षित-वि०** भूखा। क्षुधित।

**बुरका-संज्ञा** पुं० मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

**बुरा-वि०** जो अच्छा या उत्तम न हो। बुराब।

**बुराई-संज्ञा** स्त्री० १. बुरे होने का भाव। बुराई। २. अधगुण। दोष। दुर्गुण।

**बुरावा-संज्ञा** पुं० वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। कुनाई।

**बुर्जा-संज्ञा** पुं० किले आदि की दीवारों में बड़ा हुआ गोठ या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है।

**बुलंद-वि०** १. उन्नत। २. बहुत ऊँचा।

**बुलबुल-संज्ञा** स्त्री० एक प्रसिद्ध गाने-वाली काली छोटी चिड़िया।

**बुलबुला-संज्ञा** पुं० पानी का बुझा। बुदबुदा।

**बुलबाना-कि०** स० बुलाने का काम दूसरे से कराना।

**बुलाफ-संज्ञा** पुं०, स्त्री० बुराहीवार मोती जिसे खिया प्रायः नय में पहनती हैं।

**बुलाकी-संज्ञा** पुं० घोड़े की एक जाति।

**बुलाना-कि०** स० आवाज देना। पुकारना।

**बुलावा-संज्ञा** पुं० बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

**बुलाह-संज्ञा** पुं० वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ के बाल पीले हों।

**बुल्ला-संज्ञा** पुं० दे० "बुलबुल्ला"।

विठाना-कि० स० दे० "वैठाना" ।  
 विडंब-संज्ञ पुं० आडंबर ।  
 विडंबना-कि० अ० १. नकल ।  
 स्वरूप बनाना । २. उपहास ।  
 हँसी । निंदा ।  
 विड-संज्ञ पुं० दे० "विट्" ।  
 विडरना-कि० अ० इधर-उधर होना ।  
 विडराना-कि० स० १. इधर-उधर  
 या तितर-बितर करना । २. भगाना ।  
 विडारना-कि० स० १. भयभीत करके  
 भगाना । २. नष्ट करना ।  
 विडाल-संज्ञ पुं० १. बिछी । बिलाव ।  
 २. विडालाच नामक दैत्य जिसे  
 दुर्गा ने मारा था । ३. दोहे का  
 भीसर्वा भेद ।  
 विडौजा-संज्ञ पुं० इन्द्र ।  
 विद्वधना-कि० स० १. कमाना ।  
 २. संचय करना । इकट्ठा करना ।  
 वितना-संज्ञ पुं० दे० "वित्ता" ।  
 वितरना-कि० स० बाँटना ।  
 विताना-कि० स० ( समय ) व्यतीत  
 करना ।  
 वित्त-संज्ञ पुं० धन । दौलत ।  
 वित्ता-संज्ञ पुं० हाथ की सध रँगलियाँ  
 फैलाने पर रँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका  
 के सिरे तक की दूरी । बालिरत ।  
 विथरना, विथुरना-कि० अ० १.  
 छितराना । बिखरना । २. अलग  
 अलग होना । बिछ जाना ।  
 विथा-संज्ञ स्त्री० दे० "व्यथा" ।  
 विथारना-कि० स० छितराना । छिट-  
 काना । बिखेरना ।  
 विथित-वि० दे० "व्यथित" ।  
 विद्वकाना-कि० स० १. फाड़ना ।  
 विदीर्ण करना । २. घायल करना ।  
 विदर-संज्ञ पुं० १. विदर्भ देश ।

धरार । २. एक प्रकार की उपधातु  
 जो तबिये और जस्ते के मेल से  
 बनती है ।  
 विदरना-संज्ञ स्त्री० दरार । दरज ।  
 शिगाफ ।  
 विदा-संज्ञ स्त्री० १. प्रस्थान । गमन ।  
 २. रुखसत ।  
 विदाई-संज्ञ स्त्री० १. विदा होने की  
 क्रिया या भाव । २. विदा होने की  
 आज्ञा । ३. वह धन जो किसी को  
 विदा होने के समय दिया जाय ।  
 विदारना-कि० स० १. चीरना ।  
 फाड़ना । २. नष्ट करना ।  
 विदारीकंद-संज्ञ पुं० एक प्रकार का  
 लाज कंद । बिलाई कंद ।  
 विदुपना-कि० अ० दोष खगाना ।  
 कलंक खगाना ।  
 विदेश-संज्ञ पुं० परदेश ।  
 विध-संज्ञ स्त्री० प्रकार । तरह ।  
 भाँति ।  
 विधना-संज्ञ पुं० प्रज्ञा । विधि ।  
 विधाता ।  
 कि० अ० दे० "विधना" ।  
 विधाना-कि० अ० दे० "विधाना" ।  
 विधानी-संज्ञ पुं० विधान करने-  
 वाला । बनानेवाला । रचनेवाला ।  
 विना-अव्य० दे० "विना" ।  
 विनई-संज्ञ पुं० दे० "विनी" ।  
 विनति, विनती-संज्ञ स्त्री० प्रार्थना ।  
 निवेदन । अर्ज ।  
 विनन-संज्ञ स्त्री० १. विनने या चुनने  
 की क्रिया या भाव । २. वह कूड़ा  
 बकंद आदि जो किसी चीज़ में से  
 चुनकर निकाला जाय । चुनन ।  
 विनना-कि० स० छोटी छोटी वस्तुओं  
 को एक एक करके उठाना ।

वीहड़-वि० १. ऊँचा-नीचा । २. विपरीत । ऊबड़-खाबड़ ।

बुंद-संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद" ।

बुँदकी-संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोल चिंदी । २. छोटा गोल दाग या धब्बा ।

बुँदा-संज्ञा पुं० १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना । लोलक । २. माथे पर लगाने की टिकली ।

बुँदिया-संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी" ।

बुँदीदार-वि० जिसमें छोटी छोटी चिंदियाँ हों ।

बुँदेलखंड-संज्ञा पुं० संयुक्त प्रांत का वह देश जिसमें जालौन, भूँसी, हमीरपुर और बाँदा के जिले पड़ते हैं ।

बुँदेलखंडी-वि० बुँदेलखंड-संबंधी ।  
बुँदेलखंड का ।

संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा ।

बुँदेल-संज्ञा पुं० चम्रियों का एक घंश जो गहरा घंश की एक शाखा माना जाता है ।

बुँदोरी-संज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई ।

बुझा-संज्ञा स्त्री० दे० "बूझा" ।

बुझ-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कलक किया हुआ महीन कपड़ा ।

बुझनी-संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण ।

बुझा-संज्ञा पुं० कूटे हुए अन्नक का चूर्ण ।

बुझा-संज्ञा पुं० ज्वार । ताप ।

बुझदिल-वि० कायर । डरपोक ।

बुझुर्ग-वि० बृद्ध ।

संज्ञा पुं० बाप-दादा । पूर्वज ।  
पुरखा ।

बुझना-कि० अ० १. अग्नि या अग्नि-शिखा का शांत होना । २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंडा होना ।

बुझाना-कि० स० १. जलते हुए पदार्थ को ठंडा करना या अधिक जलने से रोक देना । अग्नि शांत करना । २. तपी हुई चीज़ को पानी में डालकर ठंडा करना । ३. समझाना ।

बुझना-कि० अ० भागना ।

बुझबुझाना-कि० अ० मन ही मन कुड़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना ।  
बड़बड़ करना ।

बुझाना-कि० स० दे० "बुझाना" ।  
बुझना-वि० २०-३० वर्ष से अधिक अवस्थावाला । बृद्ध ।

बुझाई-संज्ञा स्त्री० दे० "बुझापा" ।

बुझाना-कि० अ० बुझावस्था को प्राप्त होना । बुझा होना ।

बुझापा-संज्ञा पुं० बृद्धावस्था ।

बुझोती-संज्ञा स्त्री० दे० "बुझापा" ।

बुत्त-संज्ञा पुं० १. मूर्ति । २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय ।

बुत्तना-कि० अ० दे० "बुझना" ।

बुत्तपरस्त-संज्ञा पुं० मूर्तिपूजक ।

बुत्ताना-कि० स० दे० "बुझाना" ।

बुत्ता-संज्ञा पुं० धोखा । पट्टी ।

बुदबुद-संज्ञा पुं० बुलबुला । बुल्ला ।

बुद्ध-वि० १. जो जागा हुआ हो । जागरित । २. ज्ञानवान् । ज्ञानी ।

संज्ञा पुं० बौद्ध-धर्म के प्रवर्तक एक

क्रि० स० दे० "वृत्तना"।  
 विनयना-क्रि० अ० विनय करना।  
 मिश्रत करना।  
 विनयना-क्रि० अ० नष्ट होना।  
 यरबाद होना।  
 विनयना-क्रि० स० विनाश करना।  
 विगाड़ डालना।  
 विना-अन्व० छोड़कर। बगैर।  
 विनार्ह-संज्ञा स्त्री० चीनने या चुनने  
 की क्रिया या भाव। चुनाघट।  
 विनाघट-संज्ञा स्त्री० दे० "वृत्तनाघट"।  
 विनासना-क्रि० स० विनष्ट करना।  
 संहार करना। धरबाद करना।  
 पिनि, विनु-अन्व० दे० "विना"।  
 विनूठा-वि० अनास्ता।  
 विनै-संज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।  
 विनैला-संज्ञा पुं० कपास का धीज।  
 बनार कुकरी।  
 विपच्छी-संज्ञा पुं० १. प्रतिकूल।  
 २. विमुख। विरुद्ध।  
 विपच्छी-संज्ञा पुं० १. विरोधी।  
 २. शत्रु। दुरमन।  
 विपत्, विपद-संज्ञा स्त्री० दे०  
 "विपत्ति"।  
 विफर-वि० दे० "विकल"।  
 विवरण-वि० जिसका रंग खराब हो  
 गया हो। बदरंग।  
 संज्ञा पुं० दे० "विवरण"।  
 विवस-वि० १. मजबूर। २. पर-  
 संज्ञा। पराधीन।  
 विवाई-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें पैरों  
 के तलुए का चमड़ा फट जाता है।  
 विवाक-वि० दे० "वेवाक"।  
 विमना-वि० उदास। सुख।  
 विमानी-वि० मान-रहित। निर-

भिमान।  
 विमोहना-क्रि० स० मोहित करना।  
 लुभाना।  
 क्रि० अ० मोहित होना। लुभाना।  
 विव-वि० दे०। युग्म।  
 विव्या-संज्ञा पुं० दे० "वीज"।  
 विव्याधा-संज्ञा पुं० दे० "व्याधा"।  
 विव्याधि-संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।  
 विव्यापना-क्रि० स० दे० "व्या-  
 पना"।  
 विव्यायान-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा  
 स्थान या जंगल।  
 विव्यारी, विव्याल-संज्ञा स्त्री० दे०  
 "व्याल"।  
 विव्याह-संज्ञा पुं० दे० "विवाह"।  
 विव्याहता-वि० स्त्री० जिसके साथ  
 विवाह हुआ हो।  
 विरंग-वि० १. कई रंगों का। २.  
 विना रंग का।  
 विरछी-संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।  
 विरक्तना-क्रि० अ० रक्तवृत्त।  
 विरक्तता-संज्ञा पुं० दे० "वृत्तता"।  
 विरथा-वि० दे० "व्यर्थ"।  
 विरद-संज्ञा पुं० दे० "विरद"।  
 विरदैत-संज्ञा पुं० बहुत अधिक प्रसिद्ध  
 वीर या योद्धा।  
 वि० नामी। प्रसिद्ध।  
 विरघ-वि० दे० "वृद्ध"।  
 विरमना-क्रि० अ० १. ठहरना।  
 रुकना। २. मोहित होकर फँस  
 रहना।  
 विरमाना-क्रि० स० १. ठहराना।  
 रोक रखना। २. मोहित करके  
 फँसा रखना।  
 विरला-वि० बहुतों में से कोई  
 एक। इच्छा-दुष्का।

वहे महात्मा जिनका जन्म ईसा से २५० वर्ष पूर्व माक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंदिनी नामक स्थान में हुआ था।

**बुद्धि-संज्ञा** स्त्री० विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अङ्गु। समझ।

**बुद्धिमत्ता-संज्ञा** स्त्री० बुद्धिमान होने का भाव। समझदारी। अङ्गुमंदि।

**बुद्धिमान्-वि०** वह जो बहुत समझदार हो।

**बुद्धिमानी-संज्ञा** स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता"।

**बुध-संज्ञा** पुं० १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

**बुधवार-संज्ञा** पुं० सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार से पहले पड़ता है।

**बुधि-संज्ञा** स्त्री० दे० "बुद्धि"।

**बुनना-कि०** स० बुनाई की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं। धिनना।

**बुनाई-संज्ञा** स्त्री० १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २. बुनने की मशीन।

**बुनावट-संज्ञा** स्त्री० बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग।

**बुनियाद-संज्ञा** स्त्री० १. जड़। मूल। २. असलियत। वास्तविकता।

**बुबुकारी-संज्ञा** स्त्री० बुका फाड़कर रोना। जोर जोर से रोना।

**बुभुत्ता-संज्ञा** स्त्री० बुधा। मूख।

**बुभुत्तित-वि०** मूखा। बुधित।

**बुरका-संज्ञा** पुं० मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

**बुरा-वि०** जो अच्छा या उत्तम न हो। खराब।

**बुराई-संज्ञा** स्त्री० १. बुरे होने का भाव। खराबी। २. अधगुण। दोष। दुर्गुण।

**बुरावा-संज्ञा** पुं० वह चूर्ण जो लकड़ी पीरने से निकलता है। कुनाई।

**बुर्जा-संज्ञा** पुं० किले आदि की दीवारों में बड़ा हुआ गोल या पटल-दार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये घोड़ा सा स्थान होता है।

**बुलंद-वि०** १. उंचा। २. बहुत ऊँचा।

**बुलबुल-संज्ञा** स्त्री० एक प्रसिद्ध गाने-वाली काली छोटी चिड़िया।

**बुलबुला-संज्ञा** पुं० पानी का बुछा। बुदबुदा।

**बुलवाना-कि०** स० बुलाने का काम दूसरे से कराना।

**बुलाफ-संज्ञा** पुं०, स्त्री० सुराहीदार भोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।

**बुलाकी-संज्ञा** पुं० घोड़े की एक जाति।

**बुलाना-कि०** स० आवाज देना। पुकारना।

**बुलावा-संज्ञा** पुं० बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

**बुलाह-संज्ञा** पुं० वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूंछ के पाल पीले हों।

**बुल्ला-संज्ञा** पुं० दे० "बुलबुला"।

• विरही-संज्ञा पुं० वह पुरुष जो अपनी प्रेमिका के विरह से दुःखित हो।  
विरही।

विराजना-कि० अ० १. शोभित होना। २. बैठना।

विरादर-संज्ञा पुं० भाई। भ्राता।

विरादरी-संज्ञा स्त्री० भाईचारा।

विरान, विराना-वि० दे० "वे-गाना"।

विराना, विराचना-कि० स० किसी को चिढ़ाने के हेतु मुँह की कोई विलक्षण मुद्रा धनाना।

विरिया-संज्ञा स्त्री० समय।

संज्ञा स्त्री० यार। वफा।

विरुझना-कि० अ० झगड़ना।

विलंद-वि० ऊँचा। पड़ा।

विलंघना-कि० अ० विलंघन करना।

विल-संज्ञा पुं० छेद। दरज। विधर।

विलकुल-कि० वि० पूरा पूरा। सय।

विलखना-कि० अ० विस्फाप करना।  
रेना।

विलखाना-कि० स० विलखना का सकर्मक रूप।

कि० अ० दे० "विलखना"।

विलग-वि० अलग। पृथक्। जुदा।

संज्ञा पुं० १. पार्थक्य। अलग होने का भाव। २. द्वेष या और कोई बुरा भाव। रंज।

विलगाना-कि० अ० अलग होना। पृथक् होना। दूर होना।

कि० स० १. अलग करना। २. पृथक् करना।

विलट्टी-संज्ञा स्त्री० रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रस्सीद।

विलनी-संज्ञा स्त्री० काली भौरी जो

दीवारों पर मिट्टी की चौथी घनाती है। अमरी।

संज्ञा स्त्री० आँख की पलक पर होने-वाली एक छोटी फुंसी।

विलपना-कि० अ० रोना।

विलफेल-कि० वि० इस समय।

विलविलाना-कि० अ० १. छेदे छेदे कीड़ा का इधर-उधर रेंगना। २.

व्याकुल होकर इधर-उधर चिड़ाना।

विलमना-कि० अ० १. विलंब करना। २. ठहर जाना। रुकना।

विलमाना-कि० स० प्रेम के कारण रोना या ठहरा रखना।

विललाना-कि० अ० दे० "विलखना"।

विलघाना-कि० स० खो देना।  
घरबाद करना।

विलसना-कि० अ० शोभा देना।  
भला जान पड़ना।

कि० स० भोग करना। भोगना।

विलसाना-कि० स० भोग करना।  
बरतना।

विला-अव्य० विना। धरौंर।

विलाई-संज्ञा स्त्री० विलो। पिखारी।

विलाहा-कि० अ० नष्ट होना।

विलारी-संज्ञा स्त्री० दे० "विलो"।

विलावल-संज्ञा पुं० एक राग।

विलासना-कि० स० भोगना।

विलैया-संज्ञा स्त्री० १. विलो। २.  
कद्दूकश।

विलोकना-कि० स० देखना।

विलोकनि-संज्ञा स्त्री० १. देखने की क्रिया। २. दृष्टिपात। कटाव।

विलोडना-कि० स० १. दूध आदि मथना। २. अस्त्र-स्यस्त करना।

विलोना-कि० स० दूध आदि मथना।

बुहारना-कि० स० झाड़ू से जगह साफ करना। झाड़ना।

बुहारी-संज्ञा स्त्री० झाड़ू। बड़नी। साहनी।

बूँद-संज्ञा स्त्री० जल आदि का वह बहुत ही थोड़ा अंश जो गिरने आदि के समय प्रायः छोटी सी गोली का रूप धारण कर लेता है। कूतरा।

बूँदावादी-संज्ञा स्त्री० हलकी या थोड़ी वर्षा।

बूँदी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई। बुँदिया। २. वर्षा के जल की बूँद।

बू-संज्ञा स्त्री० १. वास। महक। २. दुर्गंध। बदबू।

बूआ-संज्ञा स्त्री० पिता की बहन। फूफी।

बूकना-कि० स० १. महीन पीसना। २. गड़कर धातें करना। जैसे, रँग-रेजी बूकना।

बूचड़-संज्ञा पुं० फसाई।

बूचड़खाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या होती है। फसाई-बाड़ा।

बूचा-वि० जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा।

बूझ-संज्ञा स्त्री० समझ। बुद्धि।

बूझना-संज्ञा स्त्री० दे० "बूझ"।

बूझना-कि० स० १. समझना। जानना। २. पूछना।

बूट-संज्ञा पुं० १. घने का हरा पौधा। २. घने का हरा दाना।

बूटनी-संज्ञा स्त्री० घोर-बहुटी नाम का कीड़ा।

बूटा-संज्ञा पुं० १. छोटा वृक्ष। पौधा।

२. बड़ी बूटी।

बूटी-संज्ञा स्त्री० १. वनस्पति। २. भाँग। ३. फूलों के छोटे चिह्न जो कपड़ों आदि पर बनाए जाते हैं। छोटा वृक्ष।

बूड़ना-कि० स० १. हूचना। निमज्जित होना। २. लीन होना। निमग्न होना।

बूड़ा-संज्ञा पुं० वर्षा आदि के कारण जल की बाढ़।

बूड़ा-वि० दे० "बुड़वा"। संज्ञा पुं० घोरबहुटी।

बूढ़ा-संज्ञा पुं० दे० "बुड़वा"।

बूता-संज्ञा पुं० बख। शक्ति।

बूरा-संज्ञा पुं० १. कच्ची चीनी जो सूरें रंग की होती है। शक्कर। २. साफ की हुई चीनी।

बूइत्-वि० १. बहुत यदा। विशाख। २. बख। कैषा।

बूहद्वय-संज्ञा पुं० १. ईद। २. शतधन्वा के पुत्र का नाम।

बूहल-संज्ञा पुं० अर्जुन का एक नाम।

बूहल-संज्ञा स्त्री० अर्जुन का उस समय का नाम जिस समय वे अज्ञात-वास में स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट की कन्या को नाच-गाना सिखाते थे।

बूहस्पति-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अगिरस् के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते हैं। २. सौर जगत् का पंचवीं ग्रह।

बेंग-संज्ञा पुं० मेंढक।

बट, बठ-संज्ञा स्त्री० औजारों में लगा हुआ काठ का टुकड़ा। मूठ।

किसी वस्तु विशेषतः पानी की सी वस्तु को खूब हिलाना ।

विलोलना-क्रि० स० हिलाना ।

विल्ला-संज्ञा पुं० माजारा । विल्ली का नर ।

संज्ञा पुं० चपरास की तरह की पीतल की पतली पट्टी ।

विल्ली-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु जो सिंह, व्याघ्र, चीते आदि की जाति का, पर इन सबसे छोटा होता है । २. एक प्रकार की कियाद की सितकिनी । विल्लीषा ।

विल्लोर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर । स्फटिक ।

विल्लौरी-वि० विल्लौर का ।

विघरना-क्रि० अ० दे० "व्योरना" ।

विघराना-क्रि० स० बालों को खुलवाकर खुलकथाना ।

विसंच-संज्ञा पुं० संचय का अभाव । वस्तुओं की सँभाल न रखना । बेपरवाई ।

विसंभर-संज्ञा पुं० दे० "विरयंभर" ।

विस-संज्ञा पुं० दे० "विप" ।

विसखपरा-संज्ञा पुं० १. गोह की जाति का एक विपैज्ञा सरीसृप जंतु । २. एक प्रकार की जंगली बूटी ।

विसद-वि० दे० "विशद" ।

विसन-संज्ञा पुं० दे० "व्यसन" ।

विसनी-वि० १. जिसे किसी बात का व्यसन या शौक हो । २. वैद्या ।

विसमञ्ज-संज्ञा पुं० दे० "विस्मय" ।

विसमिल-वि० घापल ।

विसयक-संज्ञा पुं० देश । प्रदेश ।

विसरना-क्रि० स० भूलना ।

विसराना-क्रि० स० भुलाना । ध्यान में न रखना ।

विसराम-संज्ञा पुं० दे० "विश्राम" ।

विसवासी-वि० १. जो विश्वास करे । २. जिस पर विश्वास हो ।

वि० जिस पर विश्वास न किया जा सके । बेपुतवार ।

विसहना-क्रि० स० मोल लेना । खरीदना ।

विसहर-संज्ञा पुं० सर्प ।

विसाख-संज्ञा स्त्री० दे० "विशाखा" ।

विसात-संज्ञा स्त्री० १. हैसियत । आकाश । २. शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा जिस पर खाने पने होते हैं ।

विसाती-संज्ञा पुं० सुई, तागा, चूड़ी, लिखीने इत्यादि वस्तुओं का बेचने-वाला ।

विसारद-संज्ञा पुं० दे० "विशारद" ।

विसारना-क्रि० स० भुलाना । स्मरण न रखना । ध्यान में न रखना ।

विसारा-वि० विप भरा । विपाक । विपैला ।

विसासिन-संज्ञा स्त्री० (स्त्री०) जिस पर विश्वास न किया जा सके ।

विसाहना-क्रि० स० खरीदना । मोल लेना ।

संज्ञा पुं० १. काम की चीज़ जिसे खरीदे । सौदा । २. मोल लेने की क्रिया । खरीद ।

विसिख-संज्ञा पुं० दे० "विशिख" ।

विसरना-क्रि० अ० खेद काना ।



घेंड़ा-वि० आढ़ा । तिरछा ।

घेंत-संज्ञ पु० एक प्रसिद्ध लता जिसके डंडल से छुड़िया और टोकरिया आदि घनती हैं ।

घेंदा-संज्ञ पु० १. माथे पर खगाने का गोल तिलक । ठोका । २. एक आभूषण ।

घेंदी-संज्ञ स्त्री० १. टिकली । २. शून्य । सुधा । ३. दावनी या घेंदी नाम का गहना ।

वेअंत-वि० वि० जिसका कोई अंत न हो । अनंत । येहद ।

वेअकल-वि० मूर्ख ।

वेअदध-वि० जो बड़ों का आदर-सम्मान न करे ।

वेआय-वि० जिसमें आस (चमक) न हो ।

वेआयर-वि० येहज्जत ।

वेहज्जत-वि० १. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो । अप्रतिष्ठित । २. अपमानित ।

वेईमान-वि० १. जिसे धर्म का विचार न हो । अधर्मी । २. जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करता हो ।

वेउअ-वि० जो आशा-पालन करने में कोई आपत्ति न करे ।

वेकदर-वि० येहज्जत । अप्रतिष्ठित ।

वेकरार-वि० जिसे शांति या चैन न हो । व्याकुल ।

वेकला-वि० व्याकुल ।

वेकली-संज्ञ स्त्री० घघराहट । घेचैनी ।

वेकसूर-वि० जिसका कोई दोष या कसूर न हो । निरपराध ।

वेकाम-वि० १. जिसे कोई काम न हो । निरुम्मा । २. जो किसी

काम में न आ सके ।

वेकायदा-वि० कायदे के बिनाफ । नियमविरुद्ध ।

वेकार-वि० १. निरुम्मा । निठल्ला । २. निरर्थक ।

वेकुसूर-वि० जिसका कोई कुसूर न हो ।

वेखटके-कि० वि० बिना किसी प्रकार की सहायत या असमंजस के । निस्स-कोच ।

वेखवर-वि० येहोश । येसुध ।

वेग-संज्ञ पु० दे० "वेग" ।

वेगम-संज्ञ स्त्री० रानी । राजपत्नी ।

वेगरज-वि० जिसे कोई गरज या परवा न हो ।

वेगाना-वि० १. गैर । दूसरा । २. नावाकफ । अनजान ।

वेगार-संज्ञ स्त्री० १. पिना मजदूरी का जवरदस्ती लिया हुआ काम ।

२. वह काम जो चित्त खगाकर न किया जाय ।

वेगारी-संज्ञ स्त्री० वेगार में काम करनेवाला आदमी ।

वेगि-वि० वि० १. जल्दी से । शीघ्रतापूर्वक । २. चटपट । तुरंत ।

वेगुनाह-वि० जिसने कोई गुनाह या अपराध न किया हो । बेकसूर ।

निर्दोष ।

वेचना-कि० स० मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना । विक्रय करना ।

वेचारा-वि० दीन और निस्सहाय । गरीब ।

वेचैन-वि० जिसे चैन न पड़ता हो । व्याकुल ।

वेजड़-वि० जिसकी कोई जड़ या

मन में दुःख मानना ।

संज्ञा स्त्री० चिन्ता । फ़िक्र ।

विसेस-वि० दे० "विशेष" ।

विसेखना-कि० अ० विशेष प्रकार से या व्योरेवार वर्णन करना ।

विसेन-संज्ञा पुं० चित्रियों की एक शाखा ।

विसेसर-संज्ञा पुं० दे० "विश्वेश्वर" ।

विस्तर-संज्ञा पुं० १. विछौना । २. विस्तार ।

विस्तारना-कि० स० विस्तार करना । फैलाना ।

विस्तुइया-संज्ञा स्त्री० छिपकली । गृहगोधा ।

विस्था-संज्ञा पुं० एक बीघे का बीसवाँ भाग ।

विस्थास-संज्ञा पुं० दे० "विश्वास" ।

विहंग-संज्ञा पुं० दे० "विहंग" ।

विहसना-कि० अ० मुस्कराना ।

विहगा-संज्ञा पुं० दे० "विहंग" ।

विहरना-कि० अ० घूमना-फिरना । सैर करना ।

विहाग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग ।

विहान-संज्ञा पुं० १. सवेरा । २. आनेवाला दूसरा दिन ।

विहाना-कि० स० छोड़ना । त्यागना ।

विहारना-कि० अ० विहार करना । केलि या मीठा करना ।

विहाल-वि० व्याकुल । बेचैन ।

विहिष्ट-संज्ञा पुं० स्वर्ग । वैकुण्ठ ।

विही-संज्ञा स्त्री० एक पेड़ जिसके फल अमरुद से मिलते-जुलते होते हैं ।

विहीदाना-संज्ञा पुं० विही नामक फल का बीज जो दवा के काम में आता है ।

विहीन-वि० रहित ।

वींड़ा-संज्ञा पुं० १. टहनियों से बनाया हुआ लंबा नाख जो कच्चे कुएँ में इसलिये दिया जाता है कि बसका भगाड़ न गिरे । २. घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी ।

वींघना-कि० अ० फँसना ।

कि० स० विद्ध करना । छेदना । बेघना ।

वींघा-संज्ञा पुं० खेत नापने का बीस बिस्वे का एक वर्गमान ।

वींचा-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ का मध्य भाग । मध्य ।

वींचा-संज्ञा पुं० अवसर । मौका ।

वींचावींच-कि० वि० बिलकुल बीच में । ठीक मध्य में ।

वीछी-संज्ञा स्त्री० धिरछ ।

वीज-संज्ञा पुं० १. फूलवाले घुँघों का गर्भाड जिससे वृष अंकुरित होकर उत्पन्न होता है । बीया । तुलम । दाना । २. शुक्र । वीर्य ।

वीजक-संज्ञा पुं० १. सूची । फेहरिस्त । २. वह सूची जिसमें माल का व्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो । ३. कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक ।

वीजगणित-संज्ञा पुं० गणित का वह भेद जिसके अक्षरों को संख्याओं का धोतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं ।

वीजदर्शक-संज्ञा पुं० वह जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो ।

वीजन-संज्ञा पुं० बेना । पंखा ।

वीजपूर, वीजपूरक-संज्ञा पुं० १. विजौरा नीच । २. थकोतरा ।

बुनियाद न हो।

वेज्ञवान-वि० जिसमें वास्तविक करने की शक्ति न हो। गूँगा।

वेजा-वि० अनुचित। नामुनासिब।

वेजान-वि० १. मुरदा। मृतक। २.

जिसमें कुछ भी दम न हो।

वेजाब्ता-वि० फ़ानून या नियम आदि के विरुद्ध।

वेजोद्ध-वि० १. जिसमें जोड़ न हो। खखेड़। २. जिसकी समता न हो सके।

वेटा-संज्ञा पुं० पुत्र। सुत। लड़का।

वेठन-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जो किसी चीज़ को लपेटने के काम में आवे। बँधना।

वेठिकाने-वि० जो अपने वचित स्थान पर न हो। स्थान-च्युत।

वेड़-संज्ञा पुं० वृष के चारों ओर लगाई हुई घाड़। मँड़।

वेड़ना-क्रि० स० दे० "वेदना"।

वेड़ा-संज्ञा पुं० बड़े बड़े लट्टों या तख्तों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं।

वेड़िन, वेड़िनी-संज्ञा स्त्री० नट जाति की वह स्त्री जो नाचती-गाती हो।

वेड़ी-संज्ञा स्त्री० लोहे के कर्षों की जोड़ी या जंजीर जो कैदियों को इसलिये पहनाई जाती है, जिसमें वे भाग न सकें।

वेड़ील-वि० १. जिसका डील या रूप अच्छा न हो। भद्दा। २. दे० "वेढंगा"।

वेढंगा-वि० जिसका ढंग ठीक न हो।

वेढ़ई-संज्ञा स्त्री० कचौड़ी।

वेढ़ना-क्रि० स० वृषों या खेतों आदि

को, उनकी रक्षा के लिये, चारों ओर से किसी प्रकार घेरना।

वेढव-वि० १. जिसका ढग अच्छा न हो। २. वेढंगा। भद्दा।

क्रि० वि० बुरी तरह से। बेतरह।

वेढ़ा-संज्ञा पुं० घर के आसपास घड़ छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें सरकारियाँ आदि बोई जाती हैं।

वेणीफूल-संज्ञा पुं० फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना। साँसफूल।

वेतकल्लुफ-वि० जिसे तकल्लुफ की कोई परवा न हो।

क्रि० वि० १. बेधड़क। २. निस्संकोच।

वेतमीज़-वि० जिसे शजर या समीज न हो। बेहूदा।

वेतरह-क्रि० वि० बुरी तरह से। अनुचित रूप से।

वि० बहुत अधिक। बहुत उपादा।

वेतरीफा-वि०, क्रि० वि० तरीके या नियम के विरुद्ध। अनुचित।

वेतहाशा-क्रि० वि० १. बहुत अधिक तेज़ी से। २. बहुत घबराकर।

वेताय-वि० १. दुर्बल। कमज़ोर। २. विकल।

वेतार-वि० बिना तार का। जिसमें तार न हो।

वेताल-संज्ञा पुं० दे० "वेताल"। संज्ञा पुं० भाट। चंदी।

वेतुका-वि० १. जिसमें सामंजस्य न हो। बेमेज। २. वेढंगा।

वेदखल-वि० जिसका दखल, कब्ज़ा या अधिकार न हो। अधिकार-च्युत।

वेदखली-संज्ञा स्त्री० संपत्ति पर से

बीजवंद-संज्ञ पुं० खिरौटी या धरियारे के बीज ।

बीजमंत्र-संज्ञ पुं० १. किसी देवता के रहस्य से निश्चित मूल-मंत्र ।  
२. गुरु ।

बीजा-वि० दूसरा ।

बीजाक्षर-संज्ञ पुं० किसी बीज-मंत्र का पहला अक्षर ।

बीजी-संज्ञ स्त्री० गिरी । मींगी ।

बीजू, बीजुरी-संज्ञ स्त्री० दे० "बिजली" ।

बीजू-वि० जो बीज घोलने से उत्पन्न हो । कलमी का बट्टा ।

संज्ञ पुं० दे० "बिजु" ।

बीट-संज्ञ स्त्री० पणियों की चिष्टा ।

बीड़ा-संज्ञ पुं० पान की सादी गिलौरी । खोली ।

बीड़ी-संज्ञ स्त्री० १. दे० "बीड़ा" ।

२. गहरी । दे० "बीड़" । ३. मिस्ती जिसे छियाँ दाँत रँगने के लिये मुँह में मलती हैं । ४. पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग सिगरेट या चुट्ट आदि की तरह सुलगाकर पीते हैं ।

बीतना-कि० अ० समय का विगत होना । बक्त कटना ।

बीघना-कि० अ० फँसना ।

कि० स० दे० "बीघना" ।

बीन-संज्ञ स्त्री० सितार की तरह का पर उससे बड़ा एक प्रसिद्ध बाजा । वीणा ।

बीनना-कि० स० १. छोटी छोटी चीजों को उठाना । चुनना । २. छाँटकर अलग करना । छानना ।

कि० स० दे० "बीघना" ।

कि० स० दे० "चुनना" ।

बीफै-संज्ञ पुं० बृहस्पतिवार ।

बीवी-संज्ञ स्त्री० १. कुलधू । कुलीन स्त्री । २. पत्नी । स्त्री ।

बीमत्स-वि० जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो । घृणित ।

संज्ञ पुं० काम्य के नौ रसों के अंतर्गत सातवाँ रस । इसमें रक्त-मांस आदि ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है ।

बीमार-संज्ञ पुं० किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक हानि पूरी करने की जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है ।

बीमार-वि० यह जिसे कोई बीमारी हुई हो । रोगग्रस्त । रोगी ।

बीमारी-संज्ञ स्त्री० रोग । व्याधि ।

बीर-वि० दे० "वीर" ।

बीरज-संज्ञ पुं० दे० "वीर्य" ।

बीरन-संज्ञ पुं० भाई ।

बीरचहूटी-संज्ञ स्त्री० गहरे खाँख रंग का एक छोटा रँगनेवाला बरसाती कीड़ा । ईंठवधू ।

बीरा-संज्ञ पुं० १. पान का बीड़ा ।

२. यह फूल, फल आदि जो देवता के प्रसाद-स्वरूप भक्तों आदि को मिलता है ।

बीरी-संज्ञ स्त्री० १. पान का बीड़ा ।

२. बान में पहनने का एक गहना । तरना ।

बीस-वि० जो सँख्या में उन्नीस से एक अधिक हो ।

संज्ञ स्त्री० बीस की सँख्या या अंक—  
२० ।

बीसी-संज्ञ स्त्री० बीस चीजों का समूह । कोड़ी ।

दखल या दखने का हटाया जाना  
अथवा न होना ।

घेदम-वि० १. मृतक । मुरदा । २.  
मृतप्राय । ३. जर्जर ।

घेदमुष्क-संज्ञा पुं० एक वृष जिसमें  
कोमल और सुगन्धित फूल लगते हैं ।

घेददे-वि० जो किसी की ब्यथा को न  
समझे । कटोरहृदय ।

घेदाग-वि० १. जिसमें कोई दाग या  
घम्मा न हो । साफ़ । २. निर्दोष ।

घेदाना-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का  
मढ़िया फावली बनार । २. बिही-  
दाना नामक फल का बीज । दाह-  
हण्डी । चित्रा ।

घेदझुक-क्रि० वि० १. बिना किसी  
प्रकार के संकोच के । निःसंकोच ।

२. बे-झोफ़ । ३. बिना आगा-  
पीछर किए ।

वि० १. निर्द्वंद्व । २. निर्भय ।

घेदना-क्रि० सं० चुकीली चीज़ की  
सहायता से छेद करना ।

घेधर्म-वि० जिसे अपने धर्म का  
ध्यान न हो ।

घेधीर-वि० अधीर ।

घेनी-संज्ञा पुं० १. पंथी । मुरली ।  
२. महुपर ।

घेनसीय-वि० अभागा । अदक्षिमत ।

घेनी-संज्ञा पुं० घाँस का बना हुआ  
छोटा पंखा ।

घेनी-संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों की चोटी ।  
२. गंगा, सरस्वती और यमुना का  
संगम ।

घेनु-संज्ञा पुं० दे० "बेणु" ।

घेपरद-वि० नंगा । मग्न ।

घेपरवा, घेपरवाह-वि० [ संज्ञा बेपर-

वाही ] १. बेफ़िक्र । २. मन-मौजी ।

घेपाई-वि० जिसे कोई उपाय न  
समझे । भौचक ।

घेपीर-वि० दूसरों के बट को कुछ न  
समझनेवाला ।

घेपेदी-वि० जिसमें पेंदा न हो ।

घेफ़िक-वि० निश्चित । घेपरवा ।

घेवस-वि० [ संज्ञा देवती ] जिसका  
कुछ बरा न चले । छाचार ।

घेवाक-वि० चुकता किया हुआ ।  
चुकाया हुआ । ( ऋण )

घेमाध-क्रि० वि० जिसकी कोई गिनती  
न हो । बेहद ।

घेमालूम-क्रि० वि० बिना किसी को  
पता लगे ।

वि० जो मालूम न पड़ता हो ।

घेर-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध कँटीला  
वृक्ष जिसके कई भेद होते हैं । २.  
इस वृक्ष का फल ।

संज्ञा स्त्री० १. बार । दफ़ा । २.  
विकल्प ।

घेरहूम-वि० [ संज्ञा बेरहमी ] निर्दय ।  
निष्ठुर ।

घेरा-संज्ञा पुं० समय । वक्त ।

घेरिया-संज्ञा स्त्री० समय । वक्त ।

घेरी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "घेर" । २.  
दे० "बेदी" ।

घेरख-वि० [ संज्ञा बेरखी ] जो समय  
पड़ने पर खड़ा ( सुँद ) फेर ले ।  
बेसुरबुत ।

घेल-संज्ञा पुं० मँकोखे आकार का एक  
प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष । इसमें गोख  
फल लगते हैं । श्रीफल ।

संज्ञा स्त्री० १. बहरी । छता । छतर ।  
२. कपड़े या दीवार आदि पर बनी

वीहड़-वि० १. ऊँचा-नीचा। २. विपम। ऊबड़-खाबड़।

बुँद-संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।

बुँदकी-संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोल पिंड़ी। २. छोटा गोल दाग या धब्बा।

बुँदा-संज्ञा पुं० १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। कोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।

बुँदिया-संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।

बुँदीवार-वि० जिसमें छोटी छोटी पिंड़ियाँ हों।

बुँदेलखंड-संज्ञा पुं० संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के जिले पड़ते हैं।

बुँदेलखंडी-वि० बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेल-खंड का।

संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।

बुँदेल-संज्ञा पुं० चत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है।

बुँदोरी-संज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।

बुझा-संज्ञा स्त्री० दे० "बूझा"।

बुझ-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कलक किया हुआ महीन कपड़ा।

बुझनी-संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण।

बुझा-संज्ञा पुं० कूटे हुए अन्नक का चूर्ण।

बुझा-संज्ञा पुं० ज्वर। ताप।

बुझदिल-वि० कायर। डरपोक।

बुजुर्ग-वि० वृद्ध।

संज्ञा पुं० चाप-दादा। पृथ्वी। पुरखा।

बुझना-कि० अ० १. अग्नि या अग्नि-शिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंडा होना।

बुझाना-कि० स० १. जलते हुए पदार्थ को ठंडा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज़ को पानी में डालकर ठंडा करना। ३. समझाना।

बुटना-कि० अ० भागना।

बुड़बुड़ाना-कि० अ० मन ही मन कुंकर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। धड़धड़ करना।

बुड़ाना-कि० स० दे० "बुझाना"। बुड़ना-वि० २०-३० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।

बुड़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "बुड़ापा"।

बुड़ाना-कि० अ० बुढ़ावस्था को प्राप्त होना। बुड़ना होना।

बुड़ापा-संज्ञा पुं० बुढ़ावस्था।

बुढ़ोती-संज्ञा स्त्री० दे० "बुड़ापा"।

बुत्त-संज्ञा पुं० १. मूर्ति। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय।

बुत्तना-कि० अ० दे० "बुझना"।

बुत्तपरस्त-संज्ञा पुं० मूर्तिपूजक।

बुत्ताना-कि० स० दे० "बुझाना"।

बुत्ता-संज्ञा पुं० धोखा। पट्टी।

बुदबुद-संज्ञा पुं० बुलबुला। बुल्ला।

बुद्ध-वि० १. जो जाना हुआ हो। जागरित। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी।

संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म के प्रवर्तक एक

हुई, फूल-पत्तियाँ आदि ।  
 घेलचा-संज्ञा पुं० कुदाल । कुदारी ।  
 घेलदार-संज्ञा पुं० वह मजदूर जो  
 फावड़ा चलाने का काम करता हो ।  
 घेलन-संज्ञा पुं० १. रोलर । २. किसी  
 यंत्र आदि में लगा हुआ इस आकार  
 का कोई बड़ा पुरजा । ३. कोरूह  
 का जाठ । ४. रूई धुनकने की  
 सुठिया या हत्था । ५. दे० "घेलना" ।  
 घेलना-संज्ञा पुं० फाठ का एक प्रकार  
 का खाँसा दस्त जो रोटी, पूरी आदि  
 की लोई घेलने के काम आता है ।  
 कि० सं० चकले पर रखकर रोटी,  
 पूरी आदि थड़ाकर पतला करना ।  
 घेलपत्र-संज्ञा पुं० घेल के पृष्ठ की  
 पत्तियाँ जो शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं ।  
 घेला-संज्ञा पुं० चमेली आदि की  
 जाति का एक छोटा पौधा जिसमें  
 सुगंधित सफेद फूल लगते हैं ।  
 संज्ञा पुं० १. कहार । २. समय ।  
 घेलाग-वि० बिखकुल अलग ।  
 घेचकूफ-वि० मूर्ख ।  
 घेचक-कि० वि० कुसमय में ।  
 घेचपारा-संज्ञा पुं० दे० "व्यापार" ।  
 घेचफा-वि० [ संज्ञा घेचफाई ] जो  
 मित्रता आदि का निर्वाह न करे ।  
 घेचपा-संज्ञा पुं० विचारण ।  
 घेचरेचार-वि० तफसीलवार ।  
 घेचसाया-संज्ञा पुं० दे० "व्यवसाय" ।  
 घेचहरना-कि० भ० व्यवहार  
 करना । धरताव करना ।  
 घेचहरिया-संज्ञा पुं० लेन-देन करने-  
 वाला ।  
 घेघा-संज्ञा स्त्री० विधवा । रंदि ।

घेशक-कि० वि० अवश्य । निःसंदेह ।  
 घेशरम-वि० निलज्ज । वेदया ।  
 घेशी-संज्ञा स्त्री० अधिकता ।  
 घशुमार-वि० अगणित ।  
 घेसंदरा-संज्ञा पुं० अग्नि ।  
 घेसन-संज्ञा पुं० चने की दाख का  
 आटा ।  
 घेसनी-संज्ञा स्त्री० घेसन की बनी या  
 भरी हुई पूरी ।  
 घेसवरा-वि० जिसे सत्र या संतोष  
 न हो ।  
 घेसर-संज्ञा पुं० नाक में पहनने की  
 नथ ।  
 घेसवा-संज्ञा स्त्री० रंघी ।  
 घेसाहना-कि० भ० मोख लेना ।  
 घेसाहा-संज्ञा पुं० खरीदी हुई चीज ।  
 घेसुध-वि० अचेत ।  
 घेसुर, घेसुरा-वि० जो अपने नियत  
 स्वर से हटा हुआ हो ।  
 घेहंगम-वि० १. भद्दा । २. पेठब ।  
 घेहंसना-कि० भ० ठाकर हँसना ।  
 घेहा-संज्ञा पुं० छेद ।  
 घेहड़-वि०, संज्ञा पुं० दे० "वीहड़" ।  
 घेहतर-वि० किसी से बढ़कर ।  
 अन्य० अच्छा ।  
 घेहतरी-संज्ञा स्त्री० भलाई ।  
 घेहद-वि० असीम ।  
 घेहना-संज्ञा पुं० १. जुलाहों की एक  
 जाति । २. धुनिया ।  
 घेहया-वि० [ संज्ञा घेहयाई ] निलज्ज ।  
 घेहला-संज्ञा पुं० सारंगी के आकार  
 का एक प्रकार का श्रौंगरेझी वाजा ।  
 घेहाल-वि० [ संज्ञा वेहाली ] व्याकुल ।  
 घेहिसाय-कि० वि० बहुत अधिक ।  
 वेहुनरा-वि० मूर्ख ।

बड़े महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंथिनी नामक स्थान में हुआ था।

**बुद्धि-संज्ञा** स्त्री० विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अकू। समकू।  
**बुद्धिमत्ता-संज्ञा** स्त्री० बुद्धिमान् होने का भाव। समकूदारी। अकूमेंदी।  
**बुद्धिमान्-वि०** वह जो बहुत समकूदार हो।

**बुद्धिमानी-संज्ञा** स्त्री० दे० "बुद्धि-मत्ता"।

**बुध-संज्ञा** पुं० १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

**बुधवार-संज्ञा** पुं० सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और वृहस्पतिवार से पहले पड़ता है।

**बुधि-संज्ञा** स्त्री० दे० "बुद्धि"।

**बुनना-क्रि०** स० जुलाही की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं।  
 बिनना।

**बुनाई-संज्ञा** स्त्री० १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २. बुनने की मजदूरी।

**बुनावट-संज्ञा** स्त्री० बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग।

**बुनियाद-संज्ञा** स्त्री० १. जड़। मूल। २. असलियत। वास्तविकता।

**बुबुकारी-संज्ञा** स्त्री० बुका फाड़कर रोना। ज़ोर ज़ोर से रोना।

**बुभुक्षा-संज्ञा** स्त्री० बुधा। मूख।

**बुभुक्षित-वि०** मूखा। बुधित।

**बुरका-संज्ञा** पुं० मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

**बुरा-वि०** जो अच्छा या उत्तम न हो। खराब।

**बुराई-संज्ञा** स्त्री० १. बुरे होने का भाव। खराबी। २. अवगुण। दोष। दुर्गुण।

**बुरादा-संज्ञा** पुं० वह पूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। कुनाई।

**बुर्जा-संज्ञा** पुं० किले यादि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पट्टा-दार भाग जिसके बीच में घड़ने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है।

**बुलंद-वि०** १. उंचा। २. बहुत ऊँचा।

**बुलबुल-संज्ञा** स्त्री० एक प्रसिद्ध गाने-वाली काली छोटी चिड़िया।

**बुलबुला-संज्ञा** पुं० पानी का बुछा। बुदबुदा।

**बुलवाना-क्रि०** स० बुलाने का काम दूसरे से कराना।

**बुलाक-संज्ञा** पुं०, स्त्री० सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।

**बुलाकी-संज्ञा** पुं० घोड़े की एक जाति।

**बुलाना-क्रि०** स० आवाज़ देना। पुकारना।

**बुलाघा-संज्ञा** पुं० बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

**बुलाह-संज्ञा** पुं० वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ के पाल पीले हों।

**बुल्ला-संज्ञा** पुं० दे० "बुलबुल्ला"।



बेहूदा-वि० [ संज्ञा बेहूदगी ] १. जो  
सिद्धता या सभ्यता न जानता हो ।

२. अशिष्टतापूर्ण ।

बेहूदापन-संज्ञा पुं० असभ्यता ।

बेहोश-वि० मूर्च्छित ।

बेहोशी-संज्ञा स्त्री० मूर्च्छा । अचेत-  
नता ।

बैंगन-संज्ञा पुं० एक वार्षिक पौधा  
जिसके फल की तरकारी बनाई जाती  
है । भंडा ।

बैंगनी, बैजनी-वि० जो लालाई लिए  
नीले रंग का हो ।

बैकुंठ-संज्ञा पुं० दे० "बैकुंठ" ।

बैजनाथ-संज्ञा पुं० दे० "बैजनाथ" ।

बैठक-संज्ञा स्त्री० १. बैठने का स्थान ।

२. चौपाल । ३. बैठने का आसन ।

४. अधिवेशन । ५. संग ।

बैठका-संज्ञा पुं० वह कमरा जहाँ लोग  
बैठते हैं ।

बैठकी-संज्ञा स्त्री० बार बार बैठने और  
उठने की कसरत ।

बैठन-संज्ञा स्त्री० बैठक ।

बैठना-कि० प्र० १. स्थित होना ।

२. पक्क जमाना । ३. विगड़ना ।

४. जगना । ५. बेरोजगार रहना ।

बैठवाना-कि० प्र० बैठाने का काम  
दूसरे से कराना ।

बैठाना-कि० प्र० १. स्थित करना ।

२. नियत करना । ३. विगाड़ना ।

बैठारना-कि० प्र० दे० "बैठाना" ।

बैठना-कि० प्र० बैठ करना ।

बैत-संज्ञा स्त्री० पथ ।

बैतरनी-संज्ञा स्त्री० दे० "बैतरणी" ।

बैताल-संज्ञा पुं० दे० "बैताल" ।

बैद-संज्ञा पुं० [ स्त्री० बैदिन ] वैद्य ।

बैदगी-संज्ञा स्त्री० वैद्य का काम ।

बैदेही-संज्ञा स्त्री० दे० "बैदेही" ।

बैना-संज्ञा पुं० बचन ।

बैना-संज्ञा पुं० वह मिठाई आदि जो  
विवाहादि में हट मित्रों के यहाँ  
भेजी जाती है ।

कि० प्र० घोना ।

बैपार-संज्ञा पुं० व्यवसाय ।

बैपारी-संज्ञा पुं० रोजगारी ।

बैपारी-संज्ञा स्त्री० औरत ।

बैया-संज्ञा पुं० पति ।

बैर-संज्ञा पुं० शत्रुता ।

संज्ञा पुं० बैर का फल ।

बैरख-संज्ञा पुं० सेना का भंडा ।  
ध्वजा ।

बैराग-संज्ञा पुं० दे० "बैराग्य" ।

बैरागी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० बैरागिनी ] वैष्णव  
मत के साधुओं का एक भेद ।

बैराना-कि० प्र० वायु के प्रकोप  
से विगड़ना ।

बैरी-वि० [ स्त्री० बैरिन ] शत्रु ।

बैल-संज्ञा पुं० [ स्त्री० गाय ] १. एक  
चोपाया जिसकी मादा को गाय कहते  
हैं । २. मूर्ख ।

बैसदर-संज्ञा पुं० अग्नि ।

बैस-संज्ञा स्त्री० १. आयु । २. पैवन ।  
संज्ञा पुं० पत्रियों की एक प्रसिद्ध  
शाखा ।

बैसना-कि० प्र० बैठना ।

बैसर-संज्ञा स्त्री० जुवाड़ों का एक  
औजार जिससे वे कपड़ा बुनते  
समय धागे को बैठते हैं ।

बैसवारा-संज्ञा पुं० [ वि० बैसवारी ]  
अवध का पश्चिमी प्रांत ।

बीहड़-वि० १. ऊँचा-नीचा। २. विषम। ऊबड़-खाबड़।

बुँद-संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।

बुँदकी-संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग या घन्टा।

बुँदा-संज्ञा पुं० १. बुलाक के आकार का फान में पहनने का एक गहना। लोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।

बुँदिया-संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।

बुँदीदार-वि० जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।

बुँदेलखंड-संज्ञा पुं० संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के जिले पड़ते हैं।

बुँदेलखंडी-वि० बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेलखंड का।

संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।

बुँदेल्ला-संज्ञा पुं० चत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है।

बुँदोरी-संज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।

बुआ-संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।

बुक-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का फलफू किया हुआ महीन कपड़ा।

बुकनी-संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण।

बुका-संज्ञा पुं० कूटे हुए अन्नक का चूर्ण।

बुखा-संज्ञा पुं० ज्वर। ताप।

बुझदिल-वि० कायर। डरपोक।

बुजुर्ग-वि० वृद्ध।

संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा।

बुझना-कि० अ० १. अग्नि या अग्नि-शिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंडा होना।

बुझाना-कि० स० १. जलते हुए पदार्थ को ठंडा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज़ को पानी में डालकर ठंडा करना। ३. समझाना।

बुटना-कि० अ० भागना।

बुड़बुड़ाना-कि० अ० मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।

बुड़ाना-कि० स० दे० "बुढ़ाना"। बुड़हाना-वि० ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।

बुढ़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

बुढ़ाना-कि० अ० बुढ़ापे का प्राप्त होना। बुढ़ा होना।

बुढ़ापा-संज्ञा पुं० बुढ़ावस्था।

बुढ़ौती-संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

बुत-संज्ञा पुं० १. मूर्ति। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय।

बुतना-कि० अ० दे० "बुझना"।

बुतपरस्त-संज्ञा पुं० मूर्तिपूजक।

बुताना-कि० स० दे० "बुझाना"।

बुत्ता-संज्ञा पुं० धोखा। पट्टी।

बुदबुद-संज्ञा पुं० बुलबुल। बुल्ला।

बुद्ध-वि० १. जो ज्ञान हुआ हो।

जागरित। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी।

संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म के प्रवर्तक एक

वैसाख-संज्ञा पुं० दे० "वैशाख"।

वैसाखी-संज्ञा स्त्री० वह लाठी जिसके सिरे को कंधे के नीचे घगल में रख कर लंगड़े लगा टेकते हुए चलते हैं।

वैसाना-क्रि० सं० बैठाना।

वैसिका-संज्ञा पुं० वेश्या से प्रीति करनेवाला। नायक।

वैहरा-वि० मयानक।

ॐ संज्ञा स्त्री० वायु।

वोआई-संज्ञा स्त्री० १. बाने का काम।

२. बाने की मजदूरी।

वोभ-संज्ञा पुं० ऐसी राशि, गह्वर या वस्तु जो बढाने या खेचलने में भारी जान पड़े।

वोभना-क्रि० सं० वोभ लादना।

वोभल, वोभिल-वि० बड़नी। भारी।

वोभ्ना-संज्ञा पुं० दे० "वोभ"।

वोटी-संज्ञा स्त्री० मांस का छोटा टुकड़ा।

वोड़ा-संज्ञा पुं० अजगर।

संज्ञा पुं० एक प्रकार की पतली लंबी फली जिसकी तरकारी होती है। लोबिया।

घातल-संज्ञा स्त्री० काँच का लंबी गरदन का एक गहरा परतन।

घोदा-वि० १. मूर्ख। २. सुस्त।

घोध-संज्ञा पुं० १. ज्ञान। जानकारी। २. तसल्ली।

घोधक-संज्ञा पुं० ज्ञान करानेवाला। जतानेवाला।

घोधगम्य-वि० समझ में आने योग्य।

घोधितरु, घोधिद्रुम-संज्ञा पुं० गया में स्थित पीपल का वह पेड़ जिसके नीचे बुद्ध भगवान् ने संघोधि (बुद्धत्व) प्राप्त की थी।

घोधिसत्त्व-संज्ञा पुं० वह जो बुद्धत्व

प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हो।

वोना-क्रि० सं० बीज को जमाने के लिये जुते हुए खेत या सुरसुरी की हुई जमीन में छितराना।

वोया-संज्ञा स्त्री० गंध। घास।

वोर-संज्ञा पुं० डुबाने की क्रिया। डुबाव।

वोरना-क्रि० सं० जल या किसी और द्रव पदार्थ में निमग्न कर देना।

वोरसी-संज्ञा स्त्री० अंगीठी।

वोरा-संज्ञा पुं० टाट का बना हुआ थैला जिसमें अनाज आदि रखते हैं।

वोरिया-संज्ञा पुं० चटाई। बिस्तर।

वोरी-संज्ञा स्त्री० टाट की छोटी थैली। छोटा वोरा।

वोरो-संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा धान।

वोल-संज्ञा पुं० १. वचन। वाणी।

२. ताना। ३. अंतरा। (संगीत)

वोल-वाल-संज्ञा स्त्री० १. बात-चीत।

२. चलती भाषा। निरु के व्यवहार की थोड़ी।

वोलता-संज्ञा पुं० १. ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्त्व। २. जीवन तत्त्व।

वोलना-क्रि० भ० मुख से शब्द बहा-रना करना।

क्रि० सं० कुछ कहना। कथन करना।

वोलवाना-क्रि० सं० दे० "बुलवाना"।

वोलाचाली-संज्ञा स्त्री० दे० "घोड़-चाल"।

वोली-संज्ञा स्त्री० १. मुँह से निकली हुई आवाज़। वाणी। २. नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना। ३. भाषा। ४. व्यंग्य।

वोवाना-क्रि० सं० योने का काम

दूसरे से कराना ।  
 घोह-संज्ञा स्त्री० दुबकी । गौता ।  
 घोहनी-संज्ञा स्त्री० किसी सौदे या दिन  
 की पहली बिक्री ।

घोहित-संज्ञा पुं० घड़ी नाव ।  
 घौड़-संज्ञा स्त्री० लता ।  
 घौड़ना-कि० प्र० लता की तरह  
 घटना । टहनी फटना ।

घौड़ी-संज्ञा स्त्री० १ पैघों या लताओं  
 के करवे फल । २, फली । छीमी ।

घौखल-वि० पागल ।

घौखलाना-कि० प्र० कुछ कुछ सनक  
 जाना ।

घौछाड़-संज्ञा स्त्री० १ छूँड़ों की झड़ी  
 जो हवा के झोंके के साथ कहीं जा  
 पड़े । २, झड़ी ।

घौछार-संज्ञा स्त्री० दे० "घौछाड़" ।

घौछ-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का अनु-  
 यायी ।

घौछ धर्म-संज्ञा पुं० बुद्ध द्वारा  
 प्रवर्तित धर्म ।

घौना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घैनी ] अत्यंत  
 ठिगना या नाटा मनुष्य ।

घौर-संज्ञा पुं० आम की मंजरी ।

घौरना-कि० प्र० आम के पेड़ में  
 मंजरी निकलना ।

घौरहा-वि० दे० "घावला" ।

घौरा-वि० [ स्त्री० घैरी ] १, पागल ।  
 २, नादान ।

घौराना-कि० प्र० १, पागल हो  
 जाना । २, विवेक या बुद्धि से  
 रहित हो जाना ।

घौरी-संज्ञा स्त्री० घावली स्त्री ।

व्यवहृ-संज्ञा पुं० व्यापार ।

व्यवहरिया-संज्ञा पुं० रूप का खेन-

देन करनेवाला । महाजन ।

व्यवहार-संज्ञा पुं० १, दे० "व्यवहार" ।

२, रूप का खेन-देन । ३, सुख-दुःख  
 में परस्पर सम्मिश्रित होने का संबंध ।

व्यवहारी-संज्ञा पुं० १, कार्यकर्ता ।

२, खेन-देन करनेवाला । व्यापारी ।

व्याज-संज्ञा पुं० १, दे० "व्याज" ।

२, सूद ।

व्याना-कि० प्र० जनना । सपन्न  
 करना ।

व्यापना-कि० प्र० १, श्रोतप्रोक्त  
 होना । २, फैलना । ३, घेरना ।

व्यापी-संज्ञा स्त्री० दे० "व्यालू" ।

व्याल-संज्ञा पुं० दे० "व्याल" ।

व्याली-संज्ञा स्त्री० सपिंथी ।

वि० सर्प धारण करनेवाला ।

व्यालू-संज्ञा पुं० रात का भोजन ।

व्याह-संज्ञा पुं० वह रीति या रस्म  
 जिससे स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी  
 का संबंध स्थापित होता है । विवाह ।

व्याहता-वि० जिसके साथ विवाह  
 हुआ हो ।

व्याहना-कि० प्र० [ वि०, व्याहता ]  
 किसी का किसी के साथ विवाह-  
 संबंध कर देना ।

व्याहुला-वि० विवाह का ।

व्यात-संज्ञा स्त्री० १, व्यवस्था ।

मामला । २, उब । तरीका । ३,  
 युक्ति । ४, सैयारी । ५, संयोग ।

६, प्रवेच । हुंताम । ७, पहनावा  
 बनाने के लिये कपड़े की काट-छांट ।

व्यातना-कि० प्र० स० कोई पहनावा  
 बनाने के लिये कपड़े को नापकर  
 काटना-छांटना ।

व्याताना-कि० प्र० शरीर की नाप  
 के अनुसार कपड़ा कटाना ।

श्रेष्ठ से भाग दिया जाता है ।।  
 भाट-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भाटिन ] १.  
 राजाओं का यश वर्णन करनेवाला ।  
 २. सुशामदी ।  
 भाट-संज्ञा पुं० १. पानी का उतार की  
 ओर जाना । २. समुद्र के चढ़ाव का  
 उतरना ।  
 भाटी-संज्ञा स्त्री० दे० "भट्टी" ।  
 भाई-संज्ञा पुं० भइभूजों की भट्टी  
 जिसमें ये अनाज भूनते हैं ।  
 भाड़ा-संज्ञा पुं० किराया ।  
 भात-संज्ञा पुं० १. पानी में उबाला  
 हुआ चावल । २. विवाह की एक  
 रसम । इसमें कन्यावाला समधी  
 को भात सिखाता है ।  
 भाथा-संज्ञा पुं० तरकश ।  
 भाथी-संज्ञा स्त्री० वह धाँकनी जिससे  
 भट्टी की आग सुलगाते हैं ।  
 भादो-संज्ञा पुं० सावन के बाद और  
 कार के पहले का महीना ।  
 भाद्र, भाद्रपद-संज्ञा पुं० दे० "भादो" ।  
 भाद्रपदा-संज्ञा स्त्री० एक नक्षत्र-पुंज  
 जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा  
 और उत्तरा भाद्रपदा ।  
 भान-संज्ञा पुं० १. प्रकाश । २.  
 चमक । ३. ज्ञान । ४. प्रतीति ।  
 भानजा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भानजी ]  
 बहिन का छद्मक । भाग्येय ।  
 भानमती-संज्ञा स्त्री० जादूगरनी ।  
 भानवी-संज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 भाना-संज्ञा-कि० अ० १. अच्छा लगना ।  
 पसंद आना । २. शोभा देना ।  
 भानु-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 भानुजा-संज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 भानुतनया-संज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 भाप-संज्ञा स्त्री० पानी के बहुत छोटे-

छोटे कण जो उसके खालने की दशा  
 में ऊपर को उठते दिखाई पड़ते हैं ।  
 भाभी-संज्ञा स्त्री० भौजाई ।  
 भामा-संज्ञा स्त्री० स्त्री । औरत ।  
 भामिनी-संज्ञा स्त्री० स्त्री । औरत ।  
 भाया-संज्ञा पुं० भाई ।  
 भावप-संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा" ।  
 भाया-वि० प्रिय । प्यारा ।  
 भार-संज्ञा पुं० १. बोझ । २. यह  
 बोझ जिसे बहंगी पर रखकर ले  
 जाते हैं । ३. किसी कर्त्तव्य के  
 पालन का उत्तरदायित्व ।  
 भारत-संज्ञा पुं० १. महाभारत का  
 पूर्ण रूप या मूल जो २४०००  
 श्लोकों का था । २. दे० "भारत-  
 वर्ष" । ३. लंबी कथा । ४. घोर  
 युद्ध ।  
 भारतखंड-संज्ञा पुं० दे० "भारतवर्ष" ।  
 भारतवर्ष-संज्ञा पुं० वह देश जो  
 हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्या-  
 कुमारी तक और सिंधु नदी से  
 मल्लप्रुय तक फैला हुआ है । आर्या-  
 वत् । हिंदुस्थान ।  
 भारती-संज्ञा स्त्री० १. वाणी । २.  
 सरस्वती ।  
 भारतीय-वि० भारत-संबंधी ।  
 संज्ञा पुं० भारत का निवासी ।  
 भारद्वाज-संज्ञा पुं० १. भरद्वाज के  
 कुल में उत्पन्न पुरुष । २. द्रोणा-  
 चार्य्य । ३. एक ऋषि ।  
 भारवाहक-वि० बोझ ढोनेवाला ।  
 भारवि-संज्ञा पुं० एक प्राचीन कवि  
 जो किरातार्जुनीय महाकाव्य के  
 रचयिता थे ।

व्योपार-संज्ञा पुं० दे० "व्यापार" ।  
 व्योरन-संज्ञा स्त्री० घालों के सँवारने की क्रिया या उंग ।  
 व्योरना-क्रि० सं० गुथे या उलझे हुए घालों आदि को सुलझाना ।  
 व्योरा-संज्ञा पुं० १. विवरण । तफ्तीसी । २. समाचार ।  
 व्योहर-संज्ञा पुं० लेन-देन का व्यापार । रुपया ऋण देना ।  
 व्योहरिया-संज्ञा पुं० सूद पर रुपए के लेन-देन का व्यापार करनेवाला ।  
 व्योहार-संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार" ।  
 व्रज-संज्ञा पुं० दे० "व्रज" ।  
 व्रह्म-संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड" ।  
 व्रह्म-संज्ञा पुं० १. एक मात्र नित्य चेतन सत्ता जो जगत् का कारण और स्वतः, चित्, आनन्द-स्वरूप है । २. ब्राह्मण जो मरकर भ्रत हुआ हो ।  
 व्रह्मराक्षस ।  
 व्रह्मचर्य्य-संज्ञा पुं० १. धीर्य का रक्षित रखने का प्रतिबंध । २. चार आश्रमों में पहला आश्रम ।  
 व्रह्मचारिणी-संज्ञा स्त्री० व्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री ।  
 व्रह्मचारी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० व्रह्मचारिणी ] व्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाला ।  
 व्रह्मज्ञान-संज्ञा पुं० ब्रह्म, पारमार्थिक सत्ता या अद्वैत सिद्धांत का बोध ।  
 व्रह्मज्ञानी-वि० परमार्थ तत्त्व का बोध रखनेवाला ।  
 व्रह्मद्रोही-वि० ब्राह्मणों से घृण रखनेवाला ।  
 व्रह्मद्वार-संज्ञा पुं० व्रह्मरंध्र ।  
 व्रह्मपुत्र-संज्ञा पुं० एक नदी जो मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है ।

ब्रह्मभोज-संज्ञा पुं० ब्राह्मण-भोजन ।  
 ब्रह्ममुहूर्त्त-संज्ञा पुं० प्रभात । तड़का ।  
 ब्रह्मरंध्र-संज्ञा पुं० मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है ।  
 ब्रह्मराक्षस-संज्ञा पुं० वह ब्राह्मण जो मरकर भूत हुआ हो ।  
 ब्रह्मलेख-संज्ञा पुं० भाग्य का लेख जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं ।  
 ब्रह्मर्षि-संज्ञा पुं० ब्राह्मण ऋषि ।  
 ब्रह्मयाद-संज्ञा पुं० १. वेद का पढ़ना-पढ़ाना । २. अद्वैतवाद ।  
 ब्रह्मविद्या-संज्ञा स्त्री० ब्रह्म को जानने की विद्या । उपनिषद् विद्या ।  
 ब्रह्मसमाज-संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्म-समाज" ।  
 ब्रह्महत्या-संज्ञा स्त्री० ब्राह्मण-घट । ब्राह्मण को मार डालना । ( महापाप )  
 ब्रह्मांड-संज्ञा पुं० १. बौद्यों भुवनों का समूह । २. खोपड़ी । कपाल ।  
 ब्रह्मा-संज्ञा पुं० ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप । विधाता ।  
 ब्रह्माणी-संज्ञा स्त्री० ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति ।  
 ब्रह्मानंद-संज्ञा पुं० ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनंद ।  
 ब्रह्मावर्त्त-संज्ञा पुं० सरस्वती और दशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश ।  
 ब्रह्मास्त्र-संज्ञा पुं० एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से चलाया जाता था ।  
 ब्राह्मण-संज्ञा पुं० [ स्त्री० ब्राह्मणी ]

भारी-वि० १. जिसमें बोझ हो । २. कठिन । ३. विशाल । बड़ा ।

भारीपन-संज्ञा पुं० भारी होने का भाव । गुरुत्व ।

भाग्य-संज्ञा पुं० १. भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष । २. एक जाति जो संयुक्त-प्रदेश के पश्चिम में पाई जाती है ।

वि० भृगु-संबन्धी । भृगु का ।

भार्गवेश-संज्ञा पुं० परशुराम ।

भार्या-संज्ञा स्त्री० पत्नी । स्त्री ।

भाल-संज्ञा पुं० कपाल । ललाट ।

भालचन्द्र-संज्ञा पुं० १. महादेव । २. गणेश ।

भालना-कि० स० अच्छी तरह देखना ।

भाललोचन-संज्ञा पुं० शिव ।

भाला-संज्ञा पुं० शरणा । नेत्रा ।

भालावरदार-संज्ञा पुं० शरणा चलाने वाला ।

भाली-संज्ञा स्त्री० भाले की गांसी या नोक ।

भालुक-संज्ञा पुं० भालू । रीछ ।

भालू-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध स्तनपायी भीषण चौपाया जो कई प्रकार का होता है । मढ़ारी इसे पकड़कर नाचना और खेल करना सिखाते हैं । रीछ ।

भाव-संज्ञा पुं० १. सत्ता । अस्तित्व ।

२. मन में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति । विचार । ३. अभिप्राय । ४. सुख की आकृति या चेष्टा । ५. ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति ।

भावइ०+अर्थ० जी चाहे । इच्छा हो तो ।

भावक०-कि० वि० किंचित् । थोड़ा सा । ज़रा सा ।

संज्ञा पुं० १. भावना करनेवाला । २. भक्त । प्रेमी ।

भावगति-संज्ञा स्त्री० इरादा । इच्छा । भावगम्य-वि० भक्ति-भाव से जानने योग्य ।

भावग्राह्य-वि० भक्ति से ग्रहण करने योग्य ।

भावज-संज्ञा स्त्री० भाई की स्त्री । भानी ।

भावता-वि० [ स्त्री० भावती ] जो भला लगे । प्रिय ।

संज्ञा पुं० प्रियतम ।

भाव-ताव-संज्ञा पुं० किसी चीज़ का मूल्य या भाव आदि ।

भावन-वि० अच्छा या प्रिय लगनेवाला ।

भावना-संज्ञा स्त्री० १. ध्यान । २. इच्छा । चाह । ३. पुट (वैद्यक) ।

भावनी-संज्ञा स्त्री० जो कुछ जी में आवे ।

भावनीय-वि० भावना करने योग्य ।

भावभक्ति-संज्ञा स्त्री० १. भक्ति-भाव । २. सरकार ।

भाववाचक-संज्ञा पुं० व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित हो ।

भाववाच्य-संज्ञा पुं० व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है । इसमें, तृतीया विभक्ति ( करण कारक ) रहती है ।

१. चार वर्षों में सयसे-शेष्ठ वर्ष या जाति जिसके प्रधान कर्म पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं। २. वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता।

ब्राह्मसूक्त-संज्ञ पु० सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय।

ब्राह्मसमाज-संज्ञ पु० एक नया संप्र-

दाय जिसमें एक मात्र महा की ही उपासना की जाती है। १. दुर्गा। २. भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। ३. एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण-शक्ति और बुद्धि बढ़ानेवाली है।

## भ

भ-हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पचासवाँ चौथा वर्ण।

भंग-संज्ञ पु० १. तरंग। लहर। २. पराजय। ३. टुकड़ा।

संज्ञा स्त्री० दे० "भंग"।

भंगड़-वि० बहुत भंग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगी-संज्ञा पु० [ स्त्री० भंगिन ] एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मलमूत्र आदि उठाना है।

भंगुर-वि० १. भंग होनेवाला। २. आशयान्।

भंगेड़ी-वि० दे० "भंगड़"।

भंजन-संज्ञा पु० १. तोड़ना। २. भंग करना।

भंजना-क्रि० भ० १. टुकड़े-टुकड़े होना। २. किसी बड़े सिक्के का छोटे-छोटे सिक्कों से बदला जाना।

क्रि० भ० १. पटा जाना। २. भँजा जाना।

भंजाना-क्रि० स० तोड़ना।

भंजाना-क्रि० स० १. पड़ा सिक्का

आदि देकर बतने ही मूल्य के छोटे सिक्के लेना। २. मुनाना।

क्रि० स० दूसरे को भँजने के लिये प्रेरणा करना या नियुक्त करना।

भंटा-संज्ञा पु० बैगन।

भँट-संज्ञा पु० दे० "भँड़"।

वि० १. अस्लीख या गंदी घाते बकनेवाला। २. पाखंडी।

भँड़फोड़ी-संज्ञा पु० १. मिट्टी के घर्तनों को गिराना या तोड़ना-फोड़ना। २. रहस्योद्घाटन। ३. भँड़ाफोड़।

भँडरिया-संज्ञा पु० एक जाति का नाम। इस जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों को भविष्य बतकर निर्वाह करते हैं। भडुर।

वि० पाखंडी।

संज्ञा स्त्री० दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताल।

भँडसार, भँडसाला-संज्ञा स्त्री० वह गोदाम जहाँ अन्न इकट्ठा



भावार्थ-संज्ञ पुं० वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव था जाय ।

भाविक-वि० जाननेवाला । मर्मज्ञ ।

भावी-संज्ञ स्त्री० १. भविष्यत् काल । आनेवाला समय । २. भाग्य ।

भावुक-वि० १. भावना करनेवाला । २. जिस पर भावों का ज़रूरी प्रभाव पड़े ।

भाषण-संज्ञ पुं० १. कथन । बात-चीत । २. व्याख्यान ।

भाषांतर-संज्ञ पुं० अनुवाद । उद्धरण ।

भाषा-संज्ञ स्त्री० १. बोली । ज्ञान । वाणी । २. किसी विशेष जन-समुदाय में प्रचलित बात-चीत करने का ढंग । आधुनिक हिंदी ।

भाषावद्ध-वि० साधारण देशभाषा में बना हुआ ।

भाषित-वि० कहा हुआ ।

भाषी-संज्ञ पुं० बोलनेवाला ।

भाष्य-संज्ञ पुं० सूत्रों की की हुई व्याख्या या टीका ।

भाष्यकार-संज्ञ पुं० सूत्रों की व्याख्या करनेवाला ।

भास-संज्ञ पुं० १. दीप्ति । प्रकाश । २. किरण ।

भासना-कि० भ० १. प्रकाशित होना । २. मालूम होना । ३. देख पड़ना ।

भासमान-वि० जान पड़ता हुआ । भासता हुआ ।

भासित-वि० चमकीला । प्रकाशित ।

भास्कर-संज्ञ पुं० १. सूर्य । २. पत्थर पर चित्र और खेच-बूटे आदि बनाना ।

भास्वर-संज्ञ पुं० १. दिन । २. सूर्य ।

वि० चमकदार ।

भिंगाना-कि० स० दे० "भिगोना" ।

भिजाना-कि० स० दे० "भिगोना" ।

भिड़ी-संज्ञ स्त्री० एक प्रकार की कली जिसकी तरकारी बनती है ।

भिद्या-संज्ञ स्त्री० १. याचना । २. मील । ३. इस प्रकार माँगने से मिली हुई वस्तु ।

भिजु-संज्ञ पुं० १. भीख माँगनेवाला । गिहारी । २. सेन्यासी ।

भिजुक-संज्ञ पुं० भिखमंगा ।

भिखमंगा-संज्ञ पुं० जो भीख माँगे ।

भिखारिणी-संज्ञ स्त्री० वह स्त्री जो भिक्षा माँगे ।

भिखारिन-संज्ञ स्त्री० दे० "भिखारिणी" ।

भिखारी-संज्ञ पुं० [ स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी ] भिक्षुक । भिखमंगा ।

भिगोना-कि० स० किसी चीज़ को पानी से तर करना ।

भिजवाना-कि० स० किसी को भेजने में प्रवृत्त करना ।

भिजाना-कि० स० भिगोना ।

भिह-वि० जानकार । वाक्कुं ।

भिह-संज्ञ स्त्री० धरें । तत्पेया ।

भिड़ना-कि० भ० १. टकराना । २. लड़ाई करना ।

भितछा-संज्ञ पुं० दोहरे कपड़े में भीतरी छोर का पछा ।

भिताना-कि० स० धरना ।

भित्ति-संज्ञ स्त्री० १. दीवार । २. वह पदार्थ जिस पर चित्र बनाया जाय ।

भिदना-कि० भ० १. पैदा होना । घुस जाना । २. छेदा जाना ।

भिनकना-कि० भ० भिन भिन शब्द करना । ( मक्खियों का )

किया जाता है। खत्ती।

भंडा-संज्ञ पुं० वर्तन। पात्र।

भंडार-संज्ञ पुं० १. खज़ाना। २. अन्न आदि रखने का स्थान। ३. पाकशाला।

भंडारा-संज्ञ पुं० १. दे० "भंडार"। २. साधुओं का भोज।

भंडारी-संज्ञ स्त्री० छोटी कोठरी। संज्ञ पुं० १. खज़ानची। कोषाध्यक्ष। २. रसोइया। रसोईदार।

भँडौआ-संज्ञ पुं० १. भाँड़ों के गाने का गीत। २. हास्यवादि रसों की साधारण अथवा निम्न कोटि की कविता।

भँवर-संज्ञ पुं० १. भौरा। २. बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्राकार घूमती है।

भँवरफलो-संज्ञ स्त्री० छोड़े या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे, उधर सहज में घूम सकती है।

भँवरजाल-संज्ञ पुं० सांसारिक मगड़े बखेड़े। भ्रमजाल।

भँवरी-संज्ञ स्त्री० पानी का चक्कर। संज्ञ स्त्री० दे० "भाँवर"।

भइया-संज्ञ पुं० १. भाई। २. बराबर-वालों के लिये आदर-सूचक शब्द।

भक-संज्ञ स्त्री० सहसा अथवा रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।

भकुआ-वि० मूर्ख। मूढ़।

भकुआना-कि० प्र० चकपका जाना। धररा जाना।

कि० सं० १. चकपका देना। २. मूर्ख धनाना।

भकोसना-कि० सं० जल्दी या भड़े-पन से खाना।

भक्त-वि० सेवा करनेवाला। भक्ति करनेवाला।

भक्तघत्सल-वि० जो भक्तों पर क्रुधा करता हो।

भक्ति-संज्ञ स्त्री० १. पूजा। २. अर्चन।

२. ईश्वर में अर्पित अनुराग। इसके नौ प्रकार ये हैं—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।

भक्तिसूत्र-संज्ञ पुं० शांतिरूप मुनि-कृत वैष्णवसंप्रदाय का एक सूत्र-ग्रंथ।

भक्तक-वि० [ स्त्री० भक्तिका ] खाने-वाला।

भक्त्य-संज्ञ पुं० [ वि० भक्त्य, भक्ति, भक्त्यणीय ] भोजन करना। किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना।

भक्तना-कि० सं० खाना।

भक्ती-वि० [ स्त्री० भक्तिणी ] खाने-वाला। भक्तक।

भक्ष्य-वि० खाने के योग्य।

संज्ञ पुं० खाद्य। अन्न। आहार।

भक्ष्य-संज्ञ पुं० आहार। भोजन।

भखना-कि० सं० खाना।

भगंदर-संज्ञ पुं० एक प्रकार का फोड़ा जो गुदावर्त के किनारे होता है।

भग-संज्ञ पुं० १. योगि। २. ऐश्वर्य। ३. सौभाग्य।

भगत-वि० [ स्त्री० भगतिन ] सेवक। उपासक।

संज्ञ पुं० वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो।

भगतिया-संज्ञ पुं० [ स्त्री० भगतिन ] राजपूताने की एक जाति जो गाने-

भिनभिनाना-कि० अ० भिन भिन शब्द करना ।

भिनसारा-संज्ञा पुं० सवेरा ।

भिन्न-वि० १. अलग । पृथक् । २. दूसर ।

संज्ञा पुं० वह संख्या जो पचाई से कम हो । (गणित)

भिन्नता-संज्ञा स्त्री० भिन्न होने का भाव ।

भिन्ननी-संज्ञा स्त्री० भिन्न जाति की स्त्री ।

भिलाघाँ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष । इसका फल औषध के काम में आता है ।

भिस्ती-संज्ञा पुं० मशक द्वारा पानी डोनेवाला व्यक्ति । सफ़ा ।

भिषक्-संज्ञा पुं० वैद्य ।

भींगना-कि० अ० दे० "भीगना" ।

भीङना-कि० अ० गीखा होना । पानी पड़ना ।

भी-अव्य० तक । किसी अन्य वस्तु के साथ ।

भीख-संज्ञा स्त्री० दे० "भिखा" ।

भीगना-कि० अ० पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग के कारण तर होना ।

भीटा-संज्ञा पुं० ऊँची या दीलेदार जमीन ।

भीड़-संज्ञा स्त्री० आदमियों का जमाव ।

भीड़भड़का-संज्ञा पुं० दे० "भीड़भाड़" ।

भीड़भाड़-संज्ञा स्त्री० मनुष्यों का जमाव ।

भीत-संज्ञा स्त्री० दीवार ।

वि० [ स्त्री० भीता ] डरा हुआ ।

भीतर-कि० वि० अंदर ।

संज्ञा पुं० रनिवास । अनाथाना ।

भीतरी-वि० १. अंदर का । २. गुप्त ।

भीति-संज्ञा स्त्री० डर । भय ।

संज्ञा स्त्री० दीवार ।

भीती-संज्ञा स्त्री० दीवार ।

संज्ञा स्त्री० डर । भय ।

भीनना-कि० अ० भर जाना । समा जाना ।

भीम-संज्ञा पुं० १. भयानक रस ।

२. पाँचों पाँडवों में से एक । ये बहुत बड़े वीर और बलवान् थे ।

वि० १. भयानक । २. बहुत बड़ा ।

भीमता-संज्ञा स्त्री० भयंकरता ।

भीमसेन-संज्ञा पुं० युधिष्ठिर के छोटे भाई । भीम ।

भीमसेनी कपूर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़िया कपूर ।

भीर-संज्ञा स्त्री० १. दे० "भीड़" ।

२. कष्ट । दुःख । तकलीफ़ ।

वि० डरा हुआ । भयभीत ।

भीरु-वि० डरपोक । कायर ।

भीरुता-संज्ञा स्त्री० डरपोकपन ।

भीरुताई-संज्ञा स्त्री० दे० "भीरुता" ।

भीरे-कि० वि० समीप । नजदीक ।

भील-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भीलनी ] एक प्रसिद्ध जंगली जाति ।

भीष-संज्ञा स्त्री० भीख ।

भीषण-वि० देखने में बहुत भयानक । डरावना ।

भीषणता-संज्ञा स्त्री० भीषण होने का भाव । भयंकरता ।

मजाने का काम करती है ।  
 भगदर-संज्ञा स्त्री० भागने की क्रिया या भाव ।  
 भगना-कि० अ० दे० भागना ।  
 संज्ञा पुं० दे० भागना ।  
 भगवत्-संज्ञा पुं० दे० "भगवत्" ।  
 भगवती-संज्ञा स्त्री० १. देवी । २. गौरी । ३. सरस्वती । दुर्गा ।  
 भगवत्-संज्ञा पुं० ईश्वर ।  
 भगवद्गीता-संज्ञा स्त्री० महाभारत के भीष्मपर्व के अन्तर्गत एक प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ प्रकरण जिसमें भगवान् कृष्ण और अर्जुन का संवाद है ।  
 भगवान्, भगवान्-संज्ञा पुं० १. ईश्वर । परमेश्वर । २. कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति ।  
 भगाना-कि० स० १. किसी को भागने में प्रवृत्त करना । २. हरण करना । ३. छी-हरण ।  
 भगिनी-संज्ञा स्त्री० बहन ।  
 भगीरथ-संज्ञा पुं० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो गंगा को पृथ्वी पर लाए थे ।  
 वि० भगीरथ की तपस्या के समान भारी । बहुत बड़ा ।  
 भगौड़ा-वि० १. भागा हुआ । २. कायर ।  
 भगौड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "भगवती" ।  
 भगौड़ा-वि० १. भागने को वयत । २. कायर । ३. भगवा । गेहवा ।  
 भगू-वि० जो विपत्ति देखकर भागता हो । कायर ।  
 भग-वि० दृष्टा हुआ ।  
 भगवशेष-संज्ञा पुं० १. रूँडहर ।

२. किसी दृष्टे हुए पदार्थ के पचे हुए टुकड़े ।  
 भचक-संज्ञा स्त्री० भचककर चलने का भाव । लँगड़ापन ।  
 भचकना-कि० अ० आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना ।  
 कि० अ० चलने के समय पैरों का इस प्रकार टेढ़ा पड़ना कि देखने में लँगड़ापन मालूम हो ।  
 भजन-संज्ञा पुं० १. बार-बार किसी पूज्य या देवता आदि का नाम लेना । स्मरण । जप । २. वह गीत जिसमें देवता आदि के गुणों का कीर्तन हो ।  
 भजना-कि० स० देवता आदि का नाम रटना । जपना ।  
 कि० अ० भागना । भाग जाना ।  
 भजनानन्द-संज्ञा पुं० भजन से मिलने-वाला आनन्द ।  
 भजनानन्दी-संज्ञा पुं० भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला ।  
 भजनी-संज्ञा पुं० भजन गानेवाला ।  
 भट-संज्ञा पुं० १. युद्ध करनेवाला । योद्धा । २. सिपाही ।  
 भटकटार, भटकटैया-संज्ञा स्त्री० एक छोटा और काटेदार छुर ।  
 भटकना-कि० अ० १. स्वर्ध ध्वर-वधर घूमते फिरना । २. भ्रम में पड़ना ।  
 भटकाना-कि० स० १. गुल्लत रास्ता चलाना । २. भ्रम में डालना ।  
 भटमेरा-संज्ञा पुं० दो धीरों का मुकाबला । भिड़ंत ।  
 भट्टा-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के सपोवन

भीष्म-संज्ञा पुं० १. भयानक रस ।  
 ( साहित्य ) २. राजा शांतनु के पुत्र  
 जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे ।  
 देवव्रत । गोपीय ।  
 भीष्मक-संज्ञा पुं० विदर्भ देश के एक  
 राजा जो रुक्मिणी के पिता थे ।  
 भीष्मपितामह-संज्ञा पुं० दे० "भीष्म" ।  
 भुइ-संज्ञा स्त्री० पृथिवी । भूमि ।  
 भुइफोर-संज्ञा पुं० एक प्रकार की  
 बरसाती खुभी ।  
 भुइहरा-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जो  
 भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया  
 हो । २. सहखाना ।  
 भुजना-किं० भ० दे० "भुजना" ।  
 भुजंगा-संज्ञा पुं० सर्प ।  
 भुजंगम-संज्ञा पुं० सर्प ।  
 भुजन-संज्ञा पुं० दे० "भुवन" ।  
 भुजाल-संज्ञा पुं० राजा ।  
 भुइ-संज्ञा स्त्री० भूमि । पृथ्वी ।  
 भुइडोल-संज्ञा पुं० दे० "भूकंप" ।  
 भुइहार-संज्ञा पुं० दे० "भूमिहार" ।  
 भुक-संज्ञा पुं० १. भोजन । २.  
 भस्मि ।  
 भुखड़-वि० १. जिसे भूख लगी हो ।  
 भूखा । २. वह जो बहुत खाता हो ।  
 भुक-वि० १. जो खाया गया हो ।  
 २. भोगा हुआ ।  
 भुक्ति-संज्ञा स्त्री० १. भोजन । २.  
 लौकिक सुख ।  
 भुखमरा-वि० १. जो भूखों मरता  
 हो । २. पेट ।  
 भुखाना-किं० भ० भूख से पीड़ित  
 होना ।  
 भुगतना-किं० स० सहना । केलना ।

भोगना ।  
 भुगतान-संज्ञा पुं० १. निपटारा । २.  
 मूल्य या देन चुकाना ।  
 भुगताना-किं० स० भुगतने का सक-  
 र्मक रूप । पूरा करना ।  
 भुजंग-संज्ञा पुं० सर्प ।  
 भुजंगा-संज्ञा पुं० काबो रंग का एक  
 पक्षी । भुजैटा ।  
 भुजंगिनी-संज्ञा स्त्री० सर्पिन ।  
 भुजंगी-संज्ञा स्त्री० १. सर्पिन । २.  
 नागिन ।  
 भुज-संज्ञा पुं० १. बाहु । बांह ।  
 २. ज्यामिति में किसी क्षेत्र का कि-  
 नारा या किनारे की रेखा । ३.  
 त्रिभुज का आधार ।  
 भुजग-संज्ञा पुं० सर्प ।  
 भुजदंड-संज्ञा पुं० बाहुदंड ।  
 भुजवाश-संज्ञा पुं० गलचाही । गले  
 में हाथ डालना ।  
 भुजवंद-संज्ञा पुं० बाजुपद ।  
 भुजमूल-संज्ञा पुं० १. मोड़ा । २.  
 काँख ।  
 भुजा-संज्ञा स्त्री० बांह । हाथ ।  
 भुजाली-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार  
 की बड़ी टेढ़ी छुरी । २. छोटी  
 बरछी ।  
 भुजिया-संज्ञा पुं० १. उपाते हुए  
 धान का चावल । २. सूखी मूनी  
 हुई तरकारी ।  
 भुजैल-संज्ञा पुं० भुजंगा पक्षी ।  
 भुजीना-संज्ञा पुं० भुना हुआ घद्य ।  
 भुट्टा-संज्ञा पुं० मक्के या ज्वार या जरे  
 की हरी बाल ।  
 भुन-संज्ञा पुं० मक्खी आदि का शब्द ।  
 धर्यक्त भुंजार का शब्द ।

के लिये एक आधारसूचक शब्द ।

भट्ट-संज्ञा पुं० १. धातुओं की एक उपाधि । २. भाट ।

भट्टा-संज्ञा पुं० १. पट्टी भट्टी । २. ईंटें या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा ।

भट्टी-संज्ञा स्त्री० १. ईंटों आदि का पना हुआ पटा चूल्हा जिस पर हलवाई, लोहार और वैद्य आदि अनेक प्रकार के काम करते हैं । २. वह स्थान जहाँ बेरी शराब बनती है ।

भट्टियारपन-संज्ञा पुं० १. भट्टियारे का काम । २. भट्टियारों की तरह लड़ना और गालियाँ धकना ।

भट्टियारा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भट्टियारी या भट्टियारिन ] सराय का प्रबंध करने वाला पारख ।

भट्टक-संज्ञा स्त्री० १. दिखाऊ चमक-दमक । चमकीलापन । भट्टकीले होने का भाव । २. उत्तेजित होने का भाव ।

भट्टकदार-वि० १. चमकीला । भट्टकीला । २. रोमदार ।

भट्टकना-कि० भ० १. तेज़ी से जल बठना । २. झिझकना । चींकना । डरकर पीछे हटना । ( पशुओं के लिये ) ३. क्रुद्ध होना ।

भट्टकाना-कि० स० १. प्रज्वलित करना । जलाना । २. भारना ।

भट्टकीला-वि० दे० "भट्टकदार" ।

भट्टभट्ट-संज्ञा स्त्री० १. भट्टभट्ट शब्द जो प्रायः आघातों से होता है ।

२. भीड़ । भट्टभट्ट । ३. व्यर्थ की और बहुत अधिक बातचीत ।

भट्टभट्टिया-वि० बहुत अधिक और व्यर्थ की बातें करनेवाला ।

भट्टभूजा-संज्ञा पुं० एक जाति जो भाट में अन्न भूनती है ।

भोड़हाई-कि० वि० चोरों की तरह । लुक छिप या दूधकर ।

भट्टी-संज्ञा स्त्री० झूठा बड़ावा ।

भट्टआ-संज्ञा पुं० वह जो बैरियाओं की दखाली करता हो ।

भणना-कि० भ० कहना ।

भणित-वि० कहा हुआ ।

भतार-संज्ञा पुं० पति । खसम ।

भतीजा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भतीजी ] भाई का पुत्र । भाई का लड़का ।

भत्ता-संज्ञा पुं० दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा के समय मिलता है ।

भट्टई-संज्ञा स्त्री० वह फुसल जो भादों में तैयार होती है ।

भदावर-संज्ञा पुं० एक प्रांत जो आजकल ग्वाखियर राज्य में है ।

भदेसिल-वि० भट्ट । भोड़ा ।

भदैदा-वि० भादों मास में होने वाला ।

भदैरिया-वि० भदावर प्रांत का । भदावर-संबंधी ।

भट्टा-वि० पुं० [ स्त्री० भट्टी ] जो देखने में मनोहर न हो । कुरूप ।

भट्टापन-संज्ञा पुं० भट्ट होने का भाव ।

भट्ट-वि० सम्य । सुशिक्षित ।

भुनगा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भुनगी ] एक छोटा सड़नेवाला कीड़ा ।

भुनना-क्रि० प्र० भूने का अर्थमक रूप । भूना जाना ।

भुनभुनाना-क्रि० प्र० भुन भुन शब्द करना ।

भुनाना-क्रि० स० बड़े सिके आदि को छोटे सिकों आदि से बदलना ।

भुरकना-क्रि० प्र० खूबकर भुरभुरा हो जाना ।

क्रि० स० भुरभुराना । भुरकना ।

भुरकुस-संज्ञा पुं० पृथ्वी ।

भुरता-संज्ञा पुं० १. दबकर विकृता-वस्था को प्राप्त पदार्थ । २. चोखा या भरता नाम का सालन ।

भुरभुरा-वि० [ स्त्री० भुरभुरी ] जिसके कण घोड़ा आघात लगने पर भी अलग हो जायें । चलुआ ।

भुलझड़-वि० जो घरावर भूल जाता हो । जिसका स्वभाव भूलने का हो ।

भुलघाना-क्रि० स० १ भूलना का प्रेरणार्थक रूप । २. भ्रम में डालना ।

भुलाना-क्रि० स० १. भूलने का प्रेरणार्थक रूप । २. भूलना ।

क्रि० प्र० १. भ्रम में पड़ना । २. भटकना ।

भुलावा-संज्ञा पुं० घोखा ।

भुवंग-संज्ञा पुं० सर्प ।

भुवंगम-संज्ञा पुं० सर्प ।

भुघः-संज्ञा पुं० वह आकाश या लोक जो भूमि और सूर्य के अंतर्गत है ।

भुव-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

\* संज्ञा स्त्री० भौह । भ्र ।

भुवन-संज्ञा पुं० १. जगत् । २. लोक । पुराणानुसार लोक चौदह हैं ।

भुवनपति-संज्ञा पुं० भूपति । राजा ।

भुवा-संज्ञा पुं० धूम्रा । रुई ।

भुवाल-संज्ञा पुं० राजा ।

भुवि-संज्ञा स्त्री० भूमि । पृथिवी ।

भुशुडी-संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुडी" ।

भुस-संज्ञा पुं० भूसा ।

भुसी-संज्ञा स्त्री० भूसी ।

भूकना-क्रि० प्र० भू भू या भी भी शब्द करना ( कुत्तों का ) । ( कुत्तों की बोली )

भूचाल-संज्ञा पुं० दे० "भूकंप" ।

भूजना-क्रि० स० १. दे० "भूतना" । २. दुःख देना ।

भूजा-संज्ञा पुं० भूना हुआ । चबेना ।

भूडोल-संज्ञा पुं० दे० "भूकंप" ।

भू-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी । २. स्थान ।

भूकंप-संज्ञा पुं० पृथ्वी के ऊपरी भाग का सहसा कुछ प्राकृतिक कारणों से हिल उठना ।

भूख-संज्ञा स्त्री० १. खाने की इच्छा । २. जुधा ।

भूखना-क्रि० स० सजाना ।

भूखा-वि० पुं० [ स्त्री० भूखी ] १. जिसे भूख लगी हो । २. गरीब, दरिद्र ।

भूगर्भ-संज्ञा पुं० पृथ्वी का भीतरी भाग ।

भूगर्भशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन-किन तत्वों का बना है और उसका वर्तमान रूप किन कारणों से हुआ है ।

भूगोल-संज्ञा पुं० १. पृथ्वी । २. वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों आदि का ज्ञान होता है ।

भद्रक-संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन देश ।

२. एक वर्षावृत्त का नाम ।

भद्रकाली-संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी की एक मूर्ति ।

भद्रता-संज्ञा स्त्री० शिष्टता । सम्यक्ता । भलमनसी ।

भद्रा-संज्ञा स्त्री० १. कलित ज्योतिष के अनुसार एक आरंभ योग । २. बाधा । (योद्धावात्)

भनक-संज्ञा स्त्री० १. भीमा शब्द । ध्वनि । २. उड़ती हुई स्त्रिया ।

भनकना-कि० स० कहना ।

भनना-कि० स० कहना ।

भनमनाना-कि० भ० भनभन शब्द करना । गुंजारना ।

भनमनाहट-संज्ञा स्त्री० भनमनाने का शब्द ।

भयका-संज्ञा पुं० धर्म आदि उतारने का एक प्रकार का यद् यद्वा घड़ा ।

भयकना-कि० भ० १. डबलना । २. डोर से जलना । भडकना ।

भयकी-संज्ञा स्त्री० घुड़की ।

भयभड़, भयभड़-संज्ञा स्त्री० भीड़-भाड़ । अश्वस्थित जन-समुदाय ।

भयभरना-कि० भ० भयभीत होना । डरना ।

भयका-संज्ञा पुं० उवाचा ।

भयूत-संज्ञा स्त्री० मय्य जिसे शैव लोग भुजाओं आदि पर लगाते हैं ।

भयंकर-वि० जिसे देखने से भय लगता हो ।

भयंकरता-संज्ञा स्त्री० भयंकर होने का भाव । डरावनापन । भीषणता ।

भय-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मनोविकार जो किसी अनेकाली भीषण आपत्ति

की आशंका से उत्पन्न होता है । डर । खौफ ।

भयप्रद-वि० दे० "भयानक" ।

भयभीत-वि० डरा हुआ ।

भयहारी-वि० डर छुड़ानेवाला । डर दूर करनेवाला ।

भयान-वि० डरावना ।

भयानक-वि० जिसे देखने से भय लगता हो ।

भयाना-कि० भ० डरना ।

कि० स० भयभीत करना । डराना ।

भयाघना-वि० डरावना ।

भयायह-वि० भयंकर । डरावना ।

भर-वि० पूरा । सय ।

भरकना-कि० भ० दे० "भडकना" ।

भरण-संज्ञा पुं० पालन । पोषण ।

भरणी-संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र ।

भरत-संज्ञा पुं० १. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचंद्र के छोटे भाई जिनका विवाह माण्डवी के साथ हुआ था ।

२. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र जिनका जन्म कश्यप ऋषि के आश्रम में हुआ था । इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है । ३. एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य माने जाते हैं । ४. संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम ।

भरतखंड-संज्ञा पुं० राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड । भारतवर्ष । हिंदुस्तान ।

भरता-संज्ञा पुं० एक प्रकार का नम-



भूचर-संज्ञा पुं० भूमि पर रहनेवाला प्राणी ।

भूचाल-संज्ञा पुं० दे० "भूकम्प" ।

भूटान-संज्ञा पुं० हिमालय का एक प्रदेश जो नेपाल के पूर्व में है ।

भूटानी-वि० भूटान देश का । भूटान संबंधी ।

संज्ञा पुं० १. भूटान देश का निवासी ।

२. भूटान देश का घोड़ा ।

संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा ।

भूडोल-संज्ञा पुं० दे० "भूकम्प" ।

भूत-संज्ञा पुं० १. वे मूल द्रव्य जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है । २. सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, अचर या चर पदार्थ या प्राणी । ३. प्राणी । ४. धीता हुआ समय । ५. व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप जिससे वह सूचित होता है कि क्रिया का काल-पर समाप्त हो चुका । ६. प्रेत । जिन । शैतान ।

वि० गत । धीता हुआ ।

भूतच्यविद्या-संज्ञा स्त्री० दे० "भूगर्भ-शास्त्र" ।

भूतनाथ-संज्ञा पुं० दिव ।

भूतपूर्व-वि० वर्तमान से पहले का । इससे पहले का ।

भूतभावन-संज्ञा पुं० महादेव ।

भूतभाषा-संज्ञा स्त्री० पेशाची भाषा ।

भूतल-संज्ञा पुं० १. पृथ्वी का ऊपरी तल । २. संसार । दुनिया ।

भूतात्मा-संज्ञा पुं० १. शरीर । २. जीवात्मा ।

भूति-संज्ञा स्त्री० १. चैमव । धन-संपत्ति । २. मरम ।

भूतिनी-संज्ञा स्त्री० भूत योनि में

प्राप्त स्त्री ।

भूतृण-संज्ञा पुं० रुखा घास ।

भूतेश्वर-संज्ञा पुं० महादेव ।

भूतोन्माद-संज्ञा पुं० वह उन्माद जो पेशाचों के आक्रमण के कारण हो ।

भूदेव-संज्ञा पुं० ब्राह्मण ।

भूधर-संज्ञा पुं० पहाड़ ।

भूनना-क्रि० सं० १. आग पर रख-कर या गरम चालू में डालकर पकाना । २. तलना ।

भूप, भूपति-संज्ञा पुं० राजा ।

भूपाल-संज्ञा पुं० राजा ।

भूमल-संज्ञा स्त्री० गर्म रेत ।

भूमुरि-संज्ञा स्त्री० दे० "भूमल" ।

भूमंडल-संज्ञा पुं० पृथ्वी ।

भूमि-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी । जमीन ।

भूमिका-संज्ञा स्त्री० १. रचना । २. किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले ।

भूमिज-वि० भूमि से उत्पन्न ।

भूमिजा-संज्ञा स्त्री० सीताजी ।

भूमिपुत्र-संज्ञा पुं० मंगल ग्रह ।

भूमिहार-संज्ञा पुं० एक जाति जो बिहार और संयुक्त प्रांत में पाई जाती है ।

भूरपूरा-वि०, क्रि० वि० दे० "भर-पूर" ।

भूरसी दक्षिणा-संज्ञा स्त्री० वह दक्षिणा जो किसी धर्मकृत्य के अंत में उप-स्थित ब्राह्मणों को दी जाती है ।

भूरा-संज्ञा पुं० मिट्टी का सा रंग ।

खाकी रंग ।

कीन सालन जो घँगन, आलू आदि  
को भूनकर बनाया जाता है। चोखा।  
भरतार-संज्ञा पुं० पति। खुसम।  
भरती-संज्ञा स्त्री० १. किसी चीज़ में  
भरे जाने का भाव। भरा जाना।  
२. दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव।  
भरथरी-संज्ञा पुं० दे० "भरु हरि"।  
भरद्वाज-संज्ञा पुं० १. एक वैदिक  
ऋषि जो गोत्र-प्रवक्तक और मंत्र-  
कार थे। २. इन ऋषि के वंशज।  
भरना-क्रि० स० खाकी जगह को  
पूरा करने के लिये कोई चीज़  
डालना।  
संज्ञा पुं० भरने की क्रिया या भाव।  
भरनी-संज्ञा स्त्री० करघे में की ठरकी।  
भार।  
भरपार्ह-क्रि० वि० पूर्ण रूप से।  
भली भाँति।  
संज्ञा स्त्री० जो कुछ चाकी हो, वह  
पूरा पूरा पा जाना।  
भरपूर-वि० १. पूरी तरह से भरा  
हुआ। २. परिपूर्ण।  
क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।  
भरमो-संज्ञा पुं० १. संशय। संदेह।  
२. रहस्य।  
भरमाना-क्रि० स० भ्रम में डालना।  
पहकाना।  
भरमार-संज्ञा स्त्री० बहुत ज्यादा।  
अत्यंत अधिकता।  
भरराना-क्रि० भ० १. भर शब्द के  
साथ गिरना। २. टूट पड़ना।  
भरघाना-क्रि० स० भरने का काम  
दूसरे से कराना।  
भरसक-क्रि० वि० यथाशक्ति। जहाँ  
तक हो सके।

भरसार्ह-संज्ञा पुं० दे० "भाह"।  
भरार्ह-संज्ञा स्त्री० भरने की क्रिया,  
भाव या मजदूरी।  
भरपय-संज्ञा पुं० भरने का काम या  
भाव।  
भरित-वि० भरा हुआ।  
भरी-संज्ञा स्त्री० दस मासे या एक  
रूप के बराबर एक तौल।  
भरहाना-क्रि० भ० घमंड करना।  
अभिमान करना।  
भरिया-वि० पाखन करनेवाला।  
रचक।  
भरोसा-संज्ञा पुं० १. आसरा। २.  
सहारा।  
भर्ग-संज्ञा पुं० शिव। महादेव।  
भर्ता-संज्ञा पुं० १. अधिपति। स्वामी।  
२. मात्तिक। खाविंद।  
भर्तार-संज्ञा पुं० पति। स्वामी।  
भर्तृ हरि-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैष्णव  
कव्य और कवि जो ब्रजपिनी के  
राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई थे।  
भरसना-संज्ञा स्त्री० १. निंदा।  
शिकायत। २. फटकार।  
भलमनसत, भलमनसी-संज्ञा स्त्री०  
भलेमानस होने का भाव। शराफत।  
भला-वि० १. अच्छा। उत्तम। २.  
बढ़िया।  
संज्ञा पुं० फसयाण।  
भलार्ह-संज्ञा स्त्री० १. भले होने का  
भाव। भलागन। २. उपकार।  
नेकी।  
भले-क्रि० वि० भली भाँति। अच्छी  
तरह। पूर्ण रूप से।  
भय-संज्ञा पुं० १. डरपति। जन्म। २.  
शिव। ३. संसार। जगत्।  
भवदीय-सर्व० आपका। तुम्हारा।

वि० मटमैले रंग का । खाकी ।  
 भूरि-वि० अधिक । बहुत ।  
 भूजपत्र-संज्ञा पुं० भोजपत्र ।  
 भूल-संज्ञा स्त्री० १. भूलने का भाव ।  
 २. गलती । चूक ।  
 भूलना-क्रि० सं० १. विस्मरण करना ।  
 याद न रखना । २. गलती करना ।  
 भूलभुलैया-संज्ञा स्त्री० १. वह घुमाव-  
 दार और चकर में डालनेवाली  
 हमारत जिसमें जाकर आदमी इस  
 प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर  
 नहीं निकल सकता । २. चकावू ।  
 भूलोक-संज्ञा पुं० संसार । जगत् ।  
 भूषा-संज्ञा पुं० रूई ।  
 भूषायी-वि० १. पृथ्वी पर सोने-  
 वाला । २. पृथ्वी पर गिरा हुआ ।  
 भूषण-संज्ञा पुं० १. अलंकार । गहना ।  
 जेवर । २. वह जिससे किसी चीज  
 की शोभा बढ़ती हो ।  
 भूषण-संज्ञा पुं० दे० "भूषण" ।  
 भूषा-संज्ञा स्त्री० १. गहना । जेवर ।  
 २. सजाने की क्रिया ।  
 भूषित-वि० १. गहना पहने हुआ ।  
 अलंकृत । २. सजाया हुआ ।  
 सँवारा हुआ ।  
 भूसा-संज्ञा पुं० गेहूँ, जौ आदि की  
 धालों का महीन और टुकड़े टुकड़े  
 किया हुआ छिलका ।  
 भूसी-संज्ञा स्त्री० १. भूसा । २. किसी  
 अन्न या दाने के ऊपर का छिलका ।  
 भूसुता-संज्ञा स्त्री० सीता ।  
 भूसुर-संज्ञा पुं० माधुर्य ।  
 भृंग-संज्ञा पुं० १. भौंरा । २. एक  
 प्रकार का कीड़ा ।  
 भृंगराज-संज्ञा पुं० १. भौंरा नामक

वनस्पति । भौंरैया । २. कासे रंग  
 का एक पक्षी ।  
 भृंगी-संज्ञा पुं० शिवजी का एक पारि-  
 पद या गण ।  
 संज्ञा स्त्री० भौरी ।  
 भृकुटी-संज्ञा स्त्री० भौह ।  
 भृगु-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध मुनि ।  
 २. शुक्राचार्य । ३. शुक्रवार । ४.  
 शिव ।  
 भृगुकच्छ-संज्ञा पुं० आधुनिक भदौच  
 जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था ।  
 भृगुनाथ-संज्ञा पुं० पाशुराम ।  
 भृगुरेखा-संज्ञा स्त्री० विष्णु की छाती  
 पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के  
 जात मारने से हुआ था ।  
 भृत्य-संज्ञा पुं० नौकर ।  
 भेंट-संज्ञा स्त्री० १. मिलना । मुला-  
 कात । २. वपहार । नज़राना ।  
 भेंटना-क्रि० सं० १. मुलाकात  
 करना । २. गले लगाना ।  
 भेड़-संज्ञा पुं० भेड़ । रहस्य ।  
 भेक-संज्ञा पुं० दे० "भेड़क" ।  
 भेख-संज्ञा पुं० दे० "वेप" ।  
 भेजना-क्रि० सं० किसी वस्तु या  
 व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान  
 के लिये रवाना करना ।  
 भेजवाना-क्रि० सं० भेजने का काम  
 दूसरे से कराना ।  
 भेजा-संज्ञा पुं० सोपड़ी के भीतर का  
 गूदा । मग्न ।  
 भेड़-संज्ञा स्त्री० बकरी की जाति का  
 एक चौपाया । गाड़र ।  
 भेड़ा-संज्ञा पुं० भेड़ जाति का नर ।  
 मेड़ा । मेय ।  
 मेड़िया-संज्ञा पुं० कुत्ते की तरह का

भवन-संज्ञा पुं० मकान ।

भवबंधन-संज्ञा पुं० संसार की बँधन ।

सांसारिक दुःख और कष्ट ।

भवमंजन-संज्ञा पुं० परमेस्वर ।

भवभय-संज्ञा पुं० संसार में धार धार

जन्म लेने और मरने का भय ।

भवमोचन-वि० संसार के बंधनों से

छुड़ानेवाले, भगवान् ।

भर्घा-संज्ञा स्त्री० फेरी । चकर ।

भर्घाना-वि० स० घुमाना । फिराना ।

भर्घानी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

भवितव्य-संज्ञा पुं० होनहार ।

भवितव्यता-संज्ञा स्त्री० १. होनी ।

२. किस्मत ।

भविष्य-वि० वर्तमान काल के उप-

रांत आनेवाला काल ।

भविष्यत्-संज्ञा पुं० भविष्य ।

भविष्यद्वाणी-संज्ञा पुं० भविष्यद्वाणी

करनेवाला ।

भविष्यद्वाणी-संज्ञा स्त्री० भविष्य में

होनेवाली वह बात जो पहले से ही

कह दी गई हो ।

भवेश-संज्ञा पुं० महादेव । शिव ।

भव्य-वि० देखने में भारी और

सुंदर । शानदार ।

भव्यता-संज्ञा स्त्री० भव्य होने का

भाव ।

भस्ना-वि० स० १. पानी के ऊपर

तरना । २. पानी में डूबना ।

भस्म-संज्ञा पुं० दे० "भस्म" ।

भस्मा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

खिलाव ।

भस्ना-संज्ञा पुं० काली आदि की

मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना ।

भस्नाना-वि० स० १. किसी चीज़

को पानी में तरने के लिये छोड़ना ।

२. पानी में डालना ।

भसुँड-संज्ञा पुं० हाथी । गज ।

भसुर-संज्ञा पुं० पति का बड़ा भाई ।

जेठ ।

भस्म-संज्ञा पुं० लकड़ी आदि के जलने

पर बची हुई राख ।

वि० जो जलकर राख हो गया हो ।

भस्मक-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें

भोजन तुरंत पच जाता है ।

भस्मासुर-संज्ञा पुं० पुराणानुसार

एक प्रसिद्ध दैत्य ।

भस्मीभूत-वि० जो जलकर राख हो

गया हो ।

भहराना-वि० स० १. दृढ़ पड़ना ।

२. एकाएक गिरना ।

भांग-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध पौधा

जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं ।

भांग । विजया । यूदी ।

भाँज-संज्ञा स्त्री० १. भाँजने या घुमाने

की क्रिया या भाव । २. वह घन

जो रुपया, नोट आदि मुनाने के

बदले में दिया जाय ।

भाँजना-वि० स० १. तह करना । २.

मुगदर आदि घुमाना । (व्यायाम)

भाँजी-संज्ञा स्त्री० वह घात जो किसी

के होते हुए काम में पाधा डालने

के लिये कही जाय । चुगली ।

भाँटा-संज्ञा पुं० दे० "पैगन" ।

भाँड़-संज्ञा पुं० १. विदूषक । मसखरा ।

२. एक प्रकार के पेशेवर जो भद-

फिलों आदि में जाकर नाचते गाते

और हास्यपूर्ण नक़्क़े उतारते हैं ।

भाँड़ा-संज्ञा पुं० धरतन । पात्र ।

: एक प्रसिद्ध जंगली मांसाहारी जंतु ।  
सियार । शृगाल ।

भेड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "भेड़" ।

भेद-संज्ञा पुं० १. भेदने या छेदने की क्रिया । २. शत्रु-पक्ष के लोगों के बहकाकर अपनी ओर मिलावना अथवा उनमें द्वेष उत्पन्न करना । ३. नीतरी छिपा हुआ हाल ।

भेदक-वि० १. छेदनेवाला । २. रेषक । हस्तावर । (वेद्यक)

भेदन-संज्ञा पुं० भेदने की क्रिया । छेदना । वेधना ।

भेदभाघ-संज्ञा पुं० अंतर । फरक ।

भेदिषा-संज्ञा पुं० जासूस । गुप्तचर ।

भेद्य-वि० जो भेदा या छेदा जा सके ।

भेन-संज्ञा स्त्री० बहिन ।

भेरी-संज्ञा स्त्री० बड़ा डोल या मगाड़ा ।

भेरीकार-संज्ञा पुं० भेरी बजानेवाला ।

भेरी-संज्ञा स्त्री० गुड़ या और किसी चीज की गोल, बड़ी या पिंड़ी ।

भेव-संज्ञा पुं० मर्म की बात । भेद । रहस्य ।

भेव-संज्ञा पुं० दे० "वेप" ।

भेवज-संज्ञा पुं० औषध । दवा ।

भेस-संज्ञा पुं० १. बाहरी रूपरंग और पहनावा आदि । वेप । २. कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि ।

भेस-संज्ञा स्त्री० १. गाय की जाति और आकार-प्रकार का, पर उसमें बड़ा, चौपाया (मादा) जिसे लोग वृष के लिये पालते हैं । २. एक प्रकार की मछली ।

भेसा-संज्ञा पुं० भेस का नर ।

भेसासुर-संज्ञा पुं० दे० "महिषासुर" ।

भे-संज्ञा पुं० दे० "भय" ।

भेना-संज्ञा स्त्री० बहिन ।

भैर्यस-संज्ञा पुं० संपत्ति में भाइयों का हिस्सा या अंश ।

भैया-संज्ञा पुं० भाई । भाता ।

भैयाचारी-संज्ञा स्त्री० दे० "भाई-चारा" ।

भैया दूज-संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ल द्वितीया । इस दिन बहनें भाइयों को टीका लगाती हैं ।

भैरव-वि० १. देखने में भयंकर । भयानक । २. भीषण शब्दवाला ।

संज्ञा पुं० १. शिव के एक प्रकार के गण जो रन्हीं के अवतार माने जाते हैं । २. एक राग जो छः रागों में से मुख्य है ।

भैरवी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की एक मूर्ति मानी जाती है । चामुंडा । (तंत्र) २. एक रागिनी जो सपेरे गाई जाती है ।

भैरवी चक्र-संज्ञा पुं० तंत्रिकों या वामनागियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट समयों में देवी का पूजन करने के लिये एकत्र होता है ।

भोक्ता-वि० स० बरछी, तलवार आदि लुकीली चीजों से घेरा हुआ । घुसेदना ।

भोडा-वि० भहा । बदसूरत ।

भोडापन-संज्ञा पुं० १. भहापन । २. बेहदगी ।

भोद-वि० बेवकूफ । मूर्ख ।

भोप-संज्ञा पुं० एक प्रकार का वाता जो फूँककर बजाते हैं ।

भोसले-संज्ञा पुं० महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपाधि ।

भोका-वि० १. भोग करनेवाला । २. ऐसा ।

भांडागार-संज्ञा पुं० भंडार । कोश ।  
 भांडागारिक-संज्ञा पुं० भंडारी ।  
 भांडार-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ काम में आनेवाली बहुत सी चीजें रखी जाती हों । २. खज़ाना । कोश ।  
 भांत, भांति-संज्ञा स्त्री० तरह । किस प्रकार । रीति ।  
 भाँपना-कि० स० ताड़ना ।  
 भाँयँ भाँयँ-संज्ञा पुं० नितांत एकांत स्थान या सप्ताटे में होनेवाला शब्द ।  
 भाँव-संज्ञा स्त्री० १. चारों ओर घूमना । परिक्रमा करना । २. अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय घर और वधू करते हैं ।  
 भा-संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति । चमक । २. शोभा । ३. किरण । ४. बिजली । ५. अग्न्य० चाहे । यदि इच्छा हो । वा ।  
 भाई-संज्ञा पुं० प्रेम । प्रीति ।  
 संज्ञा स्त्री० चाल-ढाल । रंग-ढंग ।  
 भाईप-संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा" ।  
 भाई-संज्ञा पुं० १. बंधु । सहोदर । २. बराबरवालों के लिये एक प्रकार का संबोधन ।  
 भाईचारा-संज्ञा पुं० भाई के समान परम मित्र होने का भाव ।  
 भाई दूज-संज्ञा स्त्री० यमद्वितीया । भैया दूज ।  
 भाईवंद-संज्ञा पुं० भाई और मित्र-बंधु आदि ।  
 भाई विरादरी-संज्ञा स्त्री० जाति या समाज के लोग ।  
 भाउ-संज्ञा पुं० १. चित्तवृत्ति । २. प्रेम ।  
 भाखना-कि० स० कहना ।

भाखा-संज्ञा स्त्री० दे० "भापा" ।  
 भाग-संज्ञा पुं० १. हिस्सा । अंश । २. नसीब । भाग्य । ३. सौभाग्य । ४. गणित में किसी राशि को घनेक अंशों या भागों में घाटने की क्रिया ।  
 भागड़-संज्ञा स्त्री० बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना ।  
 भागना-कि० भ० दौड़कर निकल जाना ।  
 भागनेय-संज्ञा पुं० भागजा ।  
 भागफल-संज्ञा पुं० वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो । लब्धि ।  
 भागवत-संज्ञा पुं० १. अठारह पुराणों में से एक जिसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं । यह वेदांत का तिलक-स्वरूप माना जाता है । श्रीमद्भागवत । २. देवी भागवत । ३. ईश्वर का भक्त । वि० भगवत्-संबंधी ।  
 भागिनेय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भागिनेयी ] वहन का लड़का । भागजा ।  
 भागी-संज्ञा पुं० १. हिस्सेदार । २. हकदार ।  
 भागीरथ-संज्ञा पुं० दे० "भागीरथ" ।  
 भागीरथी-संज्ञा स्त्री० गंगा नदी ।  
 भाग्य-संज्ञा पुं० तकदीर । फिस्मत । नसीब ।  
 भाजक-वि० विभाग करनेवाला ।  
 संज्ञा पुं० वह अंक जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय ।  
 भाजन-संज्ञा पुं० १. धरतन । २. योग्य । पात्र ।  
 भाजी-संज्ञा स्त्री० १. मीठा । पीच । २. तरकारी, साग आदि ।  
 भाज्य-संज्ञा पुं० वह अंक जिसे भाजक

भोग-संज्ञा पुं० १. सुख या दुःख  
आदि का अनुभव करना । २.  
विलास । ३. प्रारब्ध । ४. नैवेद्य ।

भोगना-क्रि० अ० सुख-दुःख या  
शुभाशुभ कर्मफलों का अनुभव  
करना ।

भोगबंधक-संज्ञा पुं० बंधक या रेहन  
रखने का वह प्रकार जिसमें ध्याज  
के बदले में रेहन रखी हुई भूमि  
या मकान आदि भोगने का अधिकार  
होता है ।

भोग-विलास-संज्ञा पुं० आनंद-  
प्रमोद । सुख-चैन ।

भोगी-संज्ञा पुं० भोगनेवाला ।

वि० १. सुखी । २. इंद्रियों का सुख  
चाहनेवाला । ३. विपयासक्त ।

भोग्य-वि० भोगने योग्य । काम में  
लाने योग्य ।

भोग्यमान-वि० जो भोगा जाने को  
हो, अभी भोगा न गया हो ।

भोज-संज्ञा पुं० बहुत से लोगों का  
एक साथ बैठकर खाना-पीना ।  
जवनार ।

संज्ञा पुं० १. कान्यकुब्ज के एक  
प्रसिद्ध राजा जो महाराज रामभद्र  
देव के पुत्र थे । २. मालवे के परमार  
वंशी एक प्रसिद्ध राजा जो संस्कृत  
के बहुत बड़े विद्वान् कवि थे ।

भोजदेव-संज्ञा पुं० १. कान्यकुब्ज के  
महाराज भोज । २. दे० "भोज"  
( २ ) ।

भोजन-संज्ञा पुं० १. खाना । २.  
खाने की सामग्री ।

भोजनालय-संज्ञा पुं० रसोद्धार ।

भोजपत्र-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

मैकाले आकार का वृक्ष । इसकी  
छाज प्राचीन काल में ग्रंथ और  
लेख आदि लिखने में बहुत काम  
आती थी ।

भोजपुरी-संज्ञा स्त्री० भोजपुर की  
भाषा ।

संज्ञा पुं० भोजपुर का निवासी ।

भोजराज-संज्ञा पुं० दे० "भोज"  
( २ ) ।

भोजविद्या-संज्ञा स्त्री० ईशनाल  
बाजीगरी ।

भोज्य-संज्ञा पुं० खाद्य पदार्थ ।  
वि० खाने योग्य । जो खाया जा सके ।

भोटिया-संज्ञा पुं० भोट या भूटान  
देश का निवासी ।

संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा ।  
वि० भूटान देश-संबंधी । भूटान का ।

भोपा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की सुरही ।  
भोपू ।

भोर-संज्ञा पुं० तड़का ।

भोला-वि० सीधा-सादा । सरल ।

भोलानाथ-संज्ञा पुं० महादेव । शिव ।

भोलापन-संज्ञा पुं० १. सिधाई । २.  
सरलता । मूर्खता ।

भोला-भाला-वि० सीधा-सादा ।  
सरल चित्त का ।

भौं-संज्ञा स्त्री० दे० "भौह" ।

भौकना-क्रि० अ० कुत्तों का घोजना ।  
भूंकना ।

भौंवाला-संज्ञा पुं० दे० "भूंकप" ।

भौतुवा-संज्ञा पुं० १. काले रंग का  
एक कीड़ा जो प्रायः वर्षा ऋतु में  
जलशयों आदि में जल-तल के  
ऊपर चकर काटता हुआ चक्कता है ।  
२. एक प्रकार का रोग जिसमें

बाहुदंड के नीचे एक गिलटी निकल आती है। १. तेली का बैल जो सधरे से ही कोरहू में जाता जाता है और दिन भर घूमा करता है।

भौर-संज्ञ पु० तेज़ बहते हुए पानी में पड़नेवाला चक्र। आवत्त।

भौरा-संज्ञ पु० १. काले रंग का उड़नेवाला एक पतंग जो देखने में बहुत डकांग प्रतीत होता है। २. पक्षी मधुमक्खी। सारंग। ३. एक प्रकार का खिलौना।

भौराना-कि० सं० १. घुमाना। परिक्रमा कराना। २. विवाह की भाँवर दिखाना।

कि० अ० घूमना। चकर काटना।

भौरी-संज्ञ स्त्री० १. पशुओं के शरीर में चाली के घुमाव से बना हुआ वह चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण-दोष का निर्यय होता है। २. विवाह के समय बर-बधू का भ्रमि की परिक्रमा करना। ३. तेज़ बहते हुए जल में पड़ने-वाला चक्र।

भौह-संज्ञ स्त्री० आँख के ऊपर की हड्डी पर के रेश्मे या बाल। भृकुटी। भौ।

भौगोलिक-वि० भूगोल का।

भौचक-वि० हक्काबक्का। चकपकाया हुआ। स्तंभित।

भौजार्ह-संज्ञ स्त्री० भावज्ञ। भाभी।

भौतिक-वि० १. पंच-भूत संबंधी। २. पाँचों भूतों से बना हुआ। पार्थिव।

भौतिक विद्या-संज्ञ स्त्री० भूतों-प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

भौतिक सृष्टि-संज्ञ स्त्री० आठ प्रकार की देव-योनि, पाँच प्रकार की तिर्पग योनि और मनुष्य योनि, इन सबकी समष्टि।

भौन-संज्ञ पु० घर। मकान।

भौम-वि० १. भूमि-संबंधी। भूमि का। २. भूमि से उत्पन्न। पृथ्वी से उत्पन्न।

संज्ञ पु० मंगल ग्रह।

भौमचार-संज्ञ पु० मंगलवार।

भौमिक-संज्ञ पु० भूमिदार।

वि० भूमि-संबंधी। भूमि का।

भौर-संज्ञ पु० १. दे० "भौरा"।

२. घोड़ी का एक भेद। ३. दे० "भैर"।

भ्रंश-संज्ञ पु० अधःपतन। नीचे गिरना।

वि० भ्रष्ट। खराब।

भ्रुकुटि-संज्ञ स्त्री० भृकुटी। भौह।

भ्रम-संज्ञ पु० किसी चीज़ या बात को कुछ का कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति।

भ्रमण-संज्ञ पु० १. घूमना-फिरना।

विचारण। २. चक्र। फेरी।

भ्रमना-कि० अ० १. घूमना। २. भटकना।

भ्रममूलक-वि० जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

भ्रमर-संज्ञ पु० भौर।

भ्रमरावली-संज्ञ स्त्री० १. भैरों की श्रेणी। २. मनहरण मृत्त। नलिनी।

भ्रमात्मक-वि० जिससे अथवा जिसके संबंध में भ्रम होता हो। संदिग्ध।

भ्रमाना-कि० सं० १. घुमाना।

२. बहकाना।

भ्रमी-वि० १. जिसे भ्रम हुआ हो।



वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण,  
विंध्य पर्वत के उत्तर, कुन्चेन्न के  
पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।

मध्यम-वि० धीच का।

संज्ञा पुं० संगीत के सात स्वरों में से  
चौथा स्वर।

मध्यम पुरुष-संज्ञा पुं० वह पुरुष  
जिसे बात की जाय। (व्या०)

मध्यमा-संज्ञा स्त्री० १. धीच की  
रैंगली। २. वह नायिका जो अपने  
प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार  
उसका आदर-मान या अपमान करे।

मध्यवर्ती-वि० धीच का।

मध्यस्थ-संज्ञा पुं० १. धीच में पड़कर  
विवाद मिटानेवाला। २. तटस्थ।

मध्यस्थता-संज्ञा स्त्री० मध्यस्थ होने  
का भाव या धर्म।

मध्याह्न-संज्ञा पुं० दे० "मध्याह्न"।

मध्याह्न-संज्ञा पुं० ठीक दोपहर।

मध्याचार्य-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध  
वैष्णव आचार्य और माध्व या  
माध्वाचारि नामक संप्रदाय के प्रवर्तक  
जो चारहवीं शताब्दी में हुए थे।

मन-संज्ञा पुं० १. चित्त। २. हृच्छा।

० संज्ञा पुं० चालिससेर की एक तौल।

मनका-संज्ञा पुं० पत्थर, लकड़ी आदि  
का वेधा हुआ दाना जिसे पित्तोर  
माला बनाई जाती है।

मनकामना-संज्ञा स्त्री० इच्छा।

मनकूला-वि० स्त्री० स्थिर या स्थावर  
का श्लेष।

मनगदत-वि० कपोल-कक्षितः।

संज्ञा स्त्री० कोरी कदरना।

मनचला-वि० रसिक।

मनचाहा-वि० इच्छित।

मनवीता-वि० [ स्त्री० मनवीती ] मन-

चाहा।

मनजात-संज्ञा पुं० कामदेव।

मनन-संज्ञा पुं० चिंतन।

मननशील-वि० विचारशील।

मनवांछित-वि० दे० "मनोवांछित"।

मनभाया-वि० [ स्त्री० मनभाई ] जो  
मन को भावे।

मनभावन-वि० मन को अच्छा  
लगनेवाला।

मनमति-वि० स्वेच्छाचारी।

मनमथ-संज्ञा पुं० दे० "मन्मथ"।

मनमाना-वि० [ स्त्री० मनमानी ] जो  
मन को अच्छा खरे।

मनमुदाय-संज्ञा पुं० चैमनस्य होना।

मनमोदक-संज्ञा पुं० मन का कड़ू।

मनमोहन-वि० [ स्त्री० मनमोहनी ] मन  
को मोहनेवाला।

मनमौजी-वि० मन की मौज के  
अनुसार काम करनेवाला।

मनयाना-क्रि० सं० मनाना।

क्रि० सं० दूसरे को मनाने में प्रवृत्त  
करना।

मनशा-संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २.  
मत्तत्व।

मनसब-संज्ञा पुं० घोहदा।

मनसबदार-संज्ञा पुं० घोहदेदार।

मनसा-संज्ञा स्त्री० १. कामना। २.  
अभिज्ञाया। ३. सारथी।

वि० जन से उत्पन्न।

क्रि० वि० मन से।

मनसाना-क्रि० प्र० समझ में आना।

मनसिज-संज्ञा पुं० कामदेव।

मनसूया-संज्ञा पुं० हराश।

मनस्ताप-संज्ञा पुं० मनःपीडा।

मनस्वी-वि० [ स्त्री० मनस्वीनी ] बुद्धि-  
मान्।

२. भौंचक ।  
 अष्ट-वि० १. गिरा हुआ । पतित ।  
 २. जो खराब हो गया हो ।  
 अष्टा-संज्ञा स्त्री० कुलटा ।  
 अंति-संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक ।  
 अंति-संज्ञा स्त्री० १. अम । घोखा ।  
 २. संदेह । शक । ३. मोह । प्रमाद ।  
 आजना-कि० भ० १. शोभा पाना ।  
 २. शोभायमान होना ।  
 आजमान-वि० शोभायमान ।  
 आव-संज्ञा पुं० दे० "आता" ।  
 आता-संज्ञा पुं० सगा भाई ।

आवृत्त-संज्ञा पुं० भाई होने का भाव या धर्म । भाईपन ।  
 आवृत्ति-संज्ञा स्त्री० कात्तिक शुक्ल द्वितीया । यमद्वितीया ।  
 आमक-वि० अम में डालनेवाला । चहकानेवाला ।  
 आमर-संज्ञा पुं० १. मधु । शहद ।  
 २. दोहे का दूसरा भेद ।  
 अ-संज्ञा स्त्री० भौं । भौह ।  
 अण-संज्ञा पुं० स्त्री का गर्भ ।  
 अणहत्या-संज्ञा स्त्री० गर्भ के यालक की हत्या ।  
 अभंग-संज्ञा पुं० स्त्री चढ़ाना ।

## म

म-हिंदी वर्षामाला का पचीसवाँ वर्षजन और पवर्ग का अंतिम वर्ष ।  
 मंगता-संज्ञा पुं० मिष्टमंगा । मिष्ठक ।  
 मंगन-संज्ञा पुं० मिष्ठक ।  
 मंगनी-संज्ञा स्त्री० १. वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँगकर लिया जाय कि कुछ समय के उपरांत लौटा दिया जायगा । २. इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव ।  
 मंगल-संज्ञा पुं० १. अमीष्ट की सिद्धि । मनोकामना का पूर्ण होना । २. कल्याण । कुशल । ३. सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पृथ्वी के उपरांत पहले-पहल पड़ता है । भौम । कुज । ४. मंगलवार ।  
 मंगलकलश (घट)-संज्ञा पुं० जल

से भरा हुआ वह घड़ा जो मंगल अवसरों पर पूजा के लिये रखा जाता है ।  
 मंगलवार-संज्ञा पुं० वह वार जो सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़ता है । भौमवार ।  
 मंगलसूत्र-संज्ञा पुं० वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद रूप में कढ़ाई में बाँधा जाता है ।  
 मंगलस्नान-संज्ञा पुं० वह स्नान जो मंगल की कामना से किया जाता है ।  
 मंगला-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।  
 मंगलाचरण-संज्ञा पुं० वह श्लोक या पद आदि जो किसी शुभ कार्य के आरंभ में मंगल की कामना से पढ़ा, लिखा या कहा जाय ।  
 मंगलामुखी-संज्ञा स्त्री० वेश्या । रंडी ।

मनहर-वि० दे० "मनोहर" ।

संज्ञा पुं० घनाधरी छंद का एक नाम ।

मनहरण-संज्ञा पुं० मन हरने की क्रिया या भाव ।

वि० मनोहर ।

मनहुँ-अव्य० जैसे ।

मनहुँस-वि० १. अशुभ । २. देखने में बेरोनक ।

मना-वि० १. वर्जित । २. नामुनासिध ।

मनाना-क्रि० सं० १. स्वीकार करना । २. प्रार्थना करना ।

मनाही-संज्ञा स्त्री० निषेध ।

मनिहार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मनिहारिनी ]  
धुड़ी बजानेवाला ।

मनी-संज्ञा स्त्री० अहंकार ।

० संज्ञा स्त्री० १. दे० "मणि" । २. धीर्य ।

मनीषा-संज्ञा स्त्री० बुद्धि ।

मनीषि-वि० पंडित ।

मनु-संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं ।

० अव्य० मानो ।

मनुज-संज्ञा पुं० मनुष्य ।

मनुष्य-संज्ञा पुं० आदमी ।

मनुष्यता-संज्ञा स्त्री० १. मनुष्य का भाव । २. शिष्टता ।

मनुष्यत्व-संज्ञा पुं० मनुष्यता ।

मनुष्यलोक-संज्ञा पुं० मर्त्यलोक ।

मनुसाई-संज्ञा स्त्री० पुरुषार्थ ।

मनुस्मृति-संज्ञा स्त्री० धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ ।

मनुहार-संज्ञा स्त्री० १. खुशामद ।

२. विनय । ३. सत्कार ।

मनो-अव्य० मानो ।

मनोकामना-संज्ञा स्त्री० इच्छा ।

मनोगत-वि० जो मन में हो ।

संज्ञा पुं० कामदेव ।

मनोगति-संज्ञा स्त्री० मन की गति ।

मनोज-संज्ञा पुं० कामदेव ।

मनोद्य-वि० मनोहर ।

मनोनिग्रह-संज्ञा पुं० मन को बश में रखना ।

मनोनीत-वि० १. पसंद । २. चुना हुआ ।

मनोभूत-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

मनोमय कोश-संज्ञा पुं० पाँच कोशों में से तीसरा । ( घेदांत )

मनोयोग-संज्ञा पुं० मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना ।

मनोरंजक-वि० चित्त को प्रसन्न करनेवाला ।

मनोरंजन-संज्ञा पुं० [ वि० मनोरंजक ]  
मनोविनोद ।

मनोरथ-संज्ञा पुं० अभिलाषा ।

मनोरम-वि० [ स्त्री० मनोरमा ] सुंदर ।

मनोराज-संज्ञा पुं० मानसिक कल्पना ।

मनोवांछित-वि० इच्छित ।

मनोविकार-संज्ञा पुं० मन की वह अवस्था जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है ।

मनोविज्ञान-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है ।

मनोवृत्ति-संज्ञा स्त्री० मनोविकार ।

मनोवेग-संज्ञा पुं० मनोविकार ।

मनोव्यापार-संज्ञा पुं० विचार ।

मनोहर-वि० [ संज्ञा मनोहरता ]  
सुंदर ।

मनोहारी-वि० [ स्त्री० मनोहारिणी ]  
दे० "मनोहर" ।

मनोती-संज्ञा स्त्री० दे० "मन्त्र" ।

मन्त्र-संज्ञा स्त्री० मनीषी ।

मंगली-वि० जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, छठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो। (अशुभ.)

मँगवाना-क्रि० स० १. मँगने का काम दूसरे से कराना। २. किसी को कोई चीज़ मोल खरीदकर या किसी से मँगकर खाने में प्रवृत्त करना।

मँगवाना-क्रि० स० १. दे० "मँगवाना"। २. मँगनी का संबंध कराना।

मंगोल-संज्ञा पुं० मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर (तातार, चीन, जापान में) बसनेवाली एक जाति।

मंच, मंचक-संज्ञा पुं० ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय।

मंजन-संज्ञा पुं० दाँत साफ करने का चूर्ण।

मंजना-क्रि० अ० १. मंजा जाना। २. अभ्यास होना।

मंजरी-संज्ञा स्त्री० १. नवानिकला हुआ कढ़ा। कौपक। २. कुछ विशिष्ट पौधों में फूलों या फलों के स्थान पर एक सीके में बने हुए घट्टत से दानों का समूह।

मंजाना-क्रि० स० १. मंजने का काम दूसरे से कराना। २. दे० "मंजना"।

मंजार-संज्ञा स्त्री० बिल्ली।

मंजिष्टा-संज्ञा स्त्री० मजीठ।

मंजिल-संज्ञा स्त्री० १. यात्रा में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. मकान का खंड।

मंजीर-संज्ञा पुं० नूपुर। घुंघरू।

मंजु-वि० सुंदर। मनोहर।  
मंजुघोष-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पीछ भाचार्य्य। मंजुश्री।

मंजुल-वि० सुंदर। मनोहर।

मंजुश्री-संज्ञा पुं० दे० "मंजुघोष"।

मंजूर-वि० स्वीकृत।

मंजूरी-संज्ञा स्त्री० मंजूर होने का भाव। स्वीकृति।

मंजूपा-संज्ञा स्त्री० छोटा पिठारा या डिब्बा।

मँझारा-क्रि० वि० पीच में।

मंडन-संज्ञा पुं० १. शृंगार करना। २. प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध करना।

क्रि० स० दखित करना।

मंडप-संज्ञा पुं० १. किसी उत्सव या समारोह के लिये बाँस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। २. देवमंदिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा।

मँहराना-क्रि० अ० १. किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए बटना। २. किसी के चारों ओर घूमना।

मंडल-संज्ञा पुं० १. परिधि। चक्र। गोलाई। २. चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़नेवाला घेरा। ३. समुदाय।

मंडलकार-वि० गोल।

मंडली-संज्ञा स्त्री० समूह। समाज।

मंडलीक-संज्ञा पुं० एक मंडल या १२ राजाओं का अधिपति।

मंडलेश्वर-संज्ञा पुं० दे० "मंडलीक"।

मंड्या-संज्ञा पुं० मंडप।

मंडित-वि० १. सजाया हुआ। २. छाया हुआ। ३. भरा हुआ।

मन्वंतर-संज्ञा पुं० ग्रहा के एक दिन का चौदहवाँ भाग ।  
 मम-सर्वे० मेरां या मेरी ।  
 ममता-संज्ञा स्त्री० १. अपनापन । २. स्नेह । ३. मोह ।  
 ममत्व-संज्ञा पुं० दे० "ममता" ।  
 ममीरा-संज्ञा पुं० एक पाँधे की जड़ जिसमें अश्वि का सुरमा धनता है ।  
 मयंक-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
 मयंद-संज्ञा पुं० सिंह ।  
 मय-प्रत्य० [ स्त्री० मयो ] एक प्रत्यय जो तद्वृत्, विकार और प्राचुर्य के धर्म में शब्दों के साथ लगाया जाता है ।  
 संज्ञा स्त्री०, प्रत्य० दे० "मै" ।  
 मयगल-संज्ञा पुं० मत्त हाथी ।  
 मयन-संज्ञा पुं० कामदेव ।  
 मयमंत, मयमत्त-वि० मत्त ।  
 मयलुता-संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी" ।  
 मयस्सर-वि० सुलभ ।  
 मया-संज्ञा स्त्री० दे० "माया" ।  
 मयार-वि० [ स्त्री० मया ] दयालु ।  
 मयूख-संज्ञा पुं० १. किरण । २. दीप्ति ।  
 मयूर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मयूरी ] मेर ।  
 मरंद-संज्ञा पुं० मकरंद ।  
 मरकट-संज्ञा पुं० दे० "मर्कट" ।  
 मरकत-संज्ञा पुं० पद्मा । (रत्न)  
 मरघट-संज्ञा पुं० रमरान ।  
 मरु-संज्ञा पुं० १. रोग । २. बुरी छत ।  
 मरजाद, मरजादा-संज्ञा स्त्री० १. सीमा । २. प्रतिष्ठा । ३. नियम ।  
 मरुजी-संज्ञा स्त्री० १. इच्छा । २. प्रसन्नता ।

मरण-संज्ञा पुं० मृत्यु ।  
 मरतवा-संज्ञा पुं० १. पद । २. पार ।  
 मरद-संज्ञा पुं० दे० "मर्द" ।  
 मरदई-संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यत्व । २. साहस ।  
 मरदन-संज्ञा पुं० दे० "मर्दन" ।  
 मरदना-संज्ञा पुं० स० मसलना ।  
 मरदनिया-संज्ञा पुं० शरीर में तेज मलनेवाला सेवक ।  
 मरदानगी-संज्ञा स्त्री० १. वीरता । २. साहस ।  
 मरदाना-वि० १. पुरुष-संघर्षी । २. वीरोचित ।  
 मरदूद-वि० नीच ।  
 मरना-कि० अ० १. मृत्यु को प्राप्त होना । २. सुखना । ३. दबना ।  
 मरनी-संज्ञा स्त्री० १. मृत्यु । २. हेरानी ।  
 मरभुख-वि० १. भुखल । २. कंगाल ।  
 मरम-संज्ञा पुं० दे० "मर्म" ।  
 मरमट-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर ।  
 मरमराना-कि० अ० मरमर शब्द करना ।  
 मरममत-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के टूटे-फूटे अंगों को ठीक करना । जीर्णोद्धार ।  
 मरमाना-कि० अ० किसी को मारने के लिये प्रेरणा करना ।  
 मरसा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग ।  
 मरसिया-संज्ञा पुं० उर्दू भाषा में शोकसूचक कविता जो किसी की मृत्यु के संबंध में बनाई जाती है ।  
 मरहटा-संज्ञा पुं० मसान ।  
 मरहटा-संज्ञा पुं० मरहटा ।

मंडी-संज्ञा स्त्री० बहुत भारी बाज़ार जहाँ व्यापार की चीज़ें बहुत आती हैं।

मँडुआ-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कदन्न।

मँडूक-संज्ञा पुं० १. मँडक। २. एक ऋषि।

मंत-संज्ञा पुं० सखाह।

मंतव्य-संज्ञा पुं० विचार। मत।

मंत्र-संज्ञा पुं० १. गोप्य या रहस्यपूर्ण बात। २. देवाधिसाधन गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो।

मंत्रकार-संज्ञा पुं० मंत्र रचनेवाला ऋषि।

मंत्रणा-संज्ञा स्त्री० १. परामर्श। मशविरा। २. कई आदमियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य।

मंत्रविद्या-संज्ञा स्त्री० मंत्रविद्या। भोजविद्या। मंत्रशास्त्र। मंत्र।

मंत्रित-वि० मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित।

मंत्रित्व-संज्ञा पुं० मंत्री का कार्य या पद। मंत्री-पन।

मंत्री-संज्ञा पुं० १. परामर्श देनेवाला। २. सचिव। अमात्य।

मंथन-संज्ञा पुं० १. मथना। विलोना। २. खूब दूध दूबकर सत्त्वों का पता लगाना।

मंथर-संज्ञा पुं० मंथर। मंद। सुस्त।

मंथरा-संज्ञा स्त्री० कँकेयी की एक दासी।

मंद-वि० १. धीमा। २. मूर्ख।

कुबुद्धि। ३. खल। दुष्ट।

मंदभाग्य-वि० दुर्भाग्य। अभाग्य।

मंदार-संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था। २. मंदार।

मंदरगिरि-संज्ञा पुं० मंदरावल।

मंदरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का घाता।

मंदा-वि० धीमा।

मंदाकिनी-संज्ञा स्त्री० १. पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। २. चित्रकूट के पास की पयस्विनी नामक नदी।

मंदागि-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें अक्ष नहीं पचता।

मंदार-संज्ञा पुं० १. स्वर्ग का एक देववृक्ष। २. आक। मंदार।

मंदिर-संज्ञा पुं० १. वासस्थान। २. घर। ३. देवालय।

मंदा-संज्ञा स्त्री० भाव का उतरना। सखी।

मंदोदरी-संज्ञा स्त्री० रावण की पटरानी का नाम।

मंद्-संज्ञा पुं० गंभीर ध्वनि।

वि० १. मनोहर। सुंदर। २. गंभीर। (शब्द आदि)

मंशा-संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. आशय। अभिप्राय। मतलब।

मंसा-संज्ञा स्त्री० दे० "मंशा"।

मंख-वि० खारिज किया हुआ। रद्द।

मकड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वार"। (अन्न)

मकड़ा-संज्ञा पुं० बड़ी मकड़ी।

मफड़ी-संज्ञा स्त्री० आठ पैरों और आठ आँखोंवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा

मरहटा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मरहटिन ]  
 महाराष्ट्र देश का रहनेवाला ।  
 मरहट्टी-वि० मरहट्टों का ।  
 संज्ञा स्त्री० मरहट्टों की बोली ।  
 मरहूम-संज्ञा पुं० श्रापधियों का वह  
 गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या  
 पीड़ित स्थानों पर लगाया जाता है ।  
 मरहूम-वि० मृत ।  
 मरातिय-संज्ञा पुं० १. दरजा । २.  
 तछा ।  
 मराना-कि० स० मरवाना ।  
 मराल-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मराली ] ईस ।  
 मरिच-संज्ञा पुं० मिर्च ।  
 मरियम-संज्ञा स्त्री० १. कुमारी । २.  
 ईसा मसीह की माता का नाम ।  
 मरियल-वि० बहुत दुर्बल ।  
 मरी-संज्ञा स्त्री० महामारी ।  
 मरीचि-संज्ञा पुं० एक व्यक्ति जो भ्रू  
 के पुत्र और कश्यप के पिता थे ।  
 संज्ञा स्त्री० किरण ।  
 मरीची-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २.  
 चंद्रमा ।  
 मरीज़-वि० रोगी ।  
 मरीना-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
 मुजायम जनी पतला कपड़ा ।  
 मरु-संज्ञा पुं० मरुस्थल ।  
 मरुत्-संज्ञा पुं० १. वायु । २. प्राण ।  
 मरुत्स्थान्-संज्ञा पुं० १. ईश्वर । २.  
 हनुमान् ।  
 मरुथल-संज्ञा पुं० दे० "मरुस्थल" ।  
 मरुभूमि-संज्ञा स्त्री० रेगिस्तान ।  
 मरुना-कि० स० छेंटना ।  
 मरुस्थल-संज्ञा पुं० दे० "मरुभूमि" ।  
 मरोड़-संज्ञा पुं० १. मरोड़ने का भाव  
 या किया । २. घुमाव ।  
 मरोड़ना-कि० स० १. छेंटना । २.

मसखाना ।  
 मरोड़-संज्ञा पुं० १. छेंटना । २. पेट  
 की वह पीड़ा जिसमें कुछ छेंटना सी  
 जान पड़ती हो ।  
 मर्कट-संज्ञा पुं० बंदर ।  
 मर्कटी-संज्ञा स्त्री० बानरी ।  
 मर्कत-संज्ञा पुं० दे० "मरकत" ।  
 मर्तयान-संज्ञा पुं० रोगनी वर्तन ।  
 श्मृतयान ।  
 मर्त्य-संज्ञा पुं० १. मनुष्य । २.  
 भूलोक ।  
 मर्त्यलोक-संज्ञा पुं० पृथ्वी ।  
 मर्द-संज्ञा पुं० १. मनुष्य । २. साहसी  
 पुरुष । ३. मर्ता ।  
 मर्दना-कि० स० १. मालिश  
 करना । २. रौंदना ।  
 मर्दुम-संज्ञा पुं० मनुष्य ।  
 मर्दुमशुमारी-संज्ञा स्त्री० १. किसी  
 देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना ।  
 २. जनसंख्या ।  
 मर्दुमी-संज्ञा स्त्री० मरदानगी ।  
 मर्दन-संज्ञा पुं० [ वि० मर्दित ] १.  
 कुचलना । २. रगड़ना ।  
 वि० नाशक ।  
 मर्दल-संज्ञा पुं० मृदेण की तरह का  
 एक धाजा । इसका प्रचार बंगाल  
 में है ।  
 मर्दित-वि० जो मर्दन किया गया  
 हो ।  
 मर्म-संज्ञा पुं० १. स्वरूप । २. प्रा-  
 णियों के शरीर में वह स्थान जहाँ  
 आघात पहुँचने से अधिक वेदना  
 होती है ।  
 मर्मज्ञ-वि० तत्त्वज्ञ ।

जिसकी सैकड़ों हज़ारों बातियाँ होती हैं।

मकतब-संज्ञा पुं० पाठशाला। मदरसा।

मकवर-संज्ञा पुं० वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ो गई हो। शंखा। मजार।

मकरन्द-संज्ञा पुं० १. फूलों का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौरे आदि चूसते हैं। २. फूल का केसर।

मकर-संज्ञा पुं० १. बारह राशियों में से दसवें राशि। २. माघ मास। संज्ञा पुं० नखुरा।

मकरध्वज-संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. चंद्रोदय रस।

मकरसंक्रांति-संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है।

मकरा-संज्ञा पुं० मड्डवा नामक छद्म। संज्ञा पुं० एक प्रकार का कीड़ा।

मकराकृत-वि० मकर या मछली के आकारवाला।

मकान-संज्ञा पुं० १. गृह। घर। २. रहने की जगह।

मकु-अव्य० चाहे। शायद।

मकुना-संज्ञा पुं० वह नर हाथी जिसके दाँत न हों।

मकुनी, मकुनी-संज्ञा स्त्री० आटे के भीतर घेसन भरकर बनाई हुई कचौरी। घेसनी रोटी।

मकोई-संज्ञा स्त्री० जंगली मकोय।

मकोड़ा-संज्ञा पुं० कोई छोटा कीड़ा।

मकोय-संज्ञा स्त्री० १. एक छुप। २. रसभरी।

मक़ा-संज्ञा पुं० अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान है।

संज्ञा पुं० मकई।

मक़ार-वि० फुरेबी। कपटी।

मक्खन-संज्ञा पुं० दूध में का वह सार भाग जो दही या मठे को मधने पर निकलता है और जिसको तपाने से घी बनता है। गवनीत। नैनू।

मक्खी-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा। मचिका।

मक्खीचूस-संज्ञा पुं० बहुत अधिक रूपण। भारी कंजूस।

मक्षिका-संज्ञा स्त्री० मक्खी।

मख-संज्ञा पुं० यज्ञ।

मखतूल-संज्ञा पुं० काला रेशम।

मखतूली-वि० काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

मखन-संज्ञा पुं० दे० 'मक्खन'।

मखनियाँ-संज्ञा पुं० मक्खन बनाने या बेचनेवाला।

वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मखमल-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बहुत बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।

मखशाला-संज्ञा स्त्री० यज्ञशाला।

मखाना-संज्ञा पुं० दे० 'खाल मखाना'।

मखाल-संज्ञा पुं० हँसी-ठट्टा।

मग-संज्ञा पुं० रास्ता। राह।

संज्ञा पुं० मगध देश। मगह।

मगज़-संज्ञा पुं० दिमाग़। मस्तिष्क।

मगज़ी-संज्ञा स्त्री० कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोठ।

मगदल-संज्ञा पुं० मूँग या बड़द का एक प्रकार का लड्डू।

मगध-संज्ञा पुं० १. दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम। कीकट। २. बंदिनन।

मगन-वि० १. प्रसन्न। २. जीन



मर्मभेदक-वि० दे० "मर्मभेदी" ।

मर्मभेदी-वि० हृदय पर आघात पहुँचानेवाला ।

मर्मर-संज्ञा पुं० दे० "मरमर" ।

मर्मवचन-संज्ञा पुं० वह वात जिससे सुननेवाले को आंतरिक कष्ट हो ।

मर्मवाक्य-संज्ञा पुं० रहस्य की बात । भेद की या गूढ़ बात ।

मर्मचिद्-वि० मर्मज्ञ ।

मर्मा-वि० मर्मज्ञ ।

मर्याद-संज्ञा स्त्री० १. दे० "मर्यादा" । २. रीति ।

मर्यादा-संज्ञा स्त्री० १. सीमा । २. सदाचार । ३. मात्र ।

मलंग-संज्ञा पुं० एक प्रकार के सुसज्ज-मान साधु ।

मल-संज्ञा पुं० १. मैल । २. विकार ।

मलका-संज्ञा स्त्री० महारानी ।

मलखम-संज्ञा पुं० लकड़ी का एक प्रकार का खंभा जिस पर फुत्तों से पड़ और उतरकर कसरत करते हैं ।

मलखाना-संज्ञा पुं० पश्चिमी संयुक्त प्रांत में बसनेवाले एक प्रकार के राजपूत जो शब सुसज्जमान से हिंदू बन गए हैं ।

मलहार-संज्ञा पुं० १. शरीर की वे इंद्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं । २. गुदा ।

मलना-कि० स० १. मसलना । २. मालिश करना ।

मलमल-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा ।

मलमलाना-कि० स० बार बार स्पर्श कराना ।

मलमास-संज्ञा पुं० वह अर्मांत मास

जिसमें संक्रांति न पड़ती हो ।

मलय-संज्ञा पुं० १. पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावकोर के पूर्व में है । २. सफेद चंदन ।

मलयगिरि-संज्ञा पुं० १. मलय नामक पर्वत जो दक्षिण में है । २. मलय-गिरि में उत्पन्न चंदन ।

मलयज-संज्ञा पुं० चंदन ।

मलयागिरि-संज्ञा पुं० दे० "मलय-गिरि" ।

मलयाचल-संज्ञा पुं० मलय पर्वत ।

मलयानिल-संज्ञा पुं० १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु । २. सुगंधित वायु ।

मलघाना-कि० स० मलने का काम दूसरे से कराना ।

मलहम-संज्ञा पुं० दे० "मरहम" ।

मलाई-संज्ञा स्त्री० १. बहुत गरम किए हुए दूध का ऊपरी सार भाग । २. सार ।

संज्ञा स्त्री० मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

मलान-वि० दे० "म्लान" ।

मलानि-संज्ञा स्त्री० दे० "म्लानि" ।

मलामत-संज्ञा स्त्री० छानत ।

मलार-संज्ञा पुं० एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है ।

मलाल-संज्ञा पुं० १. दुःख । २. उदासीनता ।

मलाह-संज्ञा पुं० दे० "मलाह" ।

मलिद्-संज्ञा पुं० भौरा ।

मलिक-संज्ञा पुं० [स्त्री० मलिका] राजा ।

मलिक, मलिच्छ-संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ" ।

मगर-संज्ञा पुं० घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलजंतु ।

संज्ञा पुं० अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति घसती है ।

अव्य० लेकिन । परंतु । पर ।

मगरमच्छ-संज्ञा पुं० १. मगर या घड़ियाल नामक जल-जंतु । २. बड़ी मछली ।

मगरूर-वि० घमंडी । अभिमानी ।

मगरूरी-संज्ञा स्त्री० घमंड । अभिमान ।

मगही-संज्ञा पुं० मगध देश ।

मगहरा-संज्ञा पुं० मगध देश ।

मगही-वि० मगध-संबंधी । मगध देश का ।

मगु, मगा-संज्ञा पुं० रास्ता ।

मग्न-संज्ञा पुं० १. मस्तिष्क । दिमाग । २. गिरी ।

मग्न-वि० १. हूषा हुआ । २. तन्मय । जीन । लिस । ३. प्रसन्न । हर्षित । सुख ।

मगधा-संज्ञा पुं० इन्द्र ।

मघा-संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं ।

मचक-संज्ञा स्त्री० दूधाव ।

मचकना-क्रि० स० किसी पदार्थ को इस प्रकार जोर से दबाना कि मच मच शब्द निकले ।

मचना-क्रि० अ० किसी ऐसे कार्य का आरंभ होना जिसमें शोर-गुल हो ।

मचलना-क्रि० अ० किसी चीज़ के लिये जिद बाँधना । हठ करना ।

मचला-वि० १. जो बोलने के अवसर पर जान-बूझकर चुप रहे । २. मचलनेवाला ।

मचलाना-क्रि० अ० कैमालूम होना ।

जी मतलाना ।

क्रि० स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना ।

क्रि० अ० दे० "मचलना" ।

मचान-संज्ञा स्त्री० १. घाँस का टट्टा घाँधकर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठकर शिकार खेलते या ऐत की रखवाली करते हैं । २. मंच । कोई ऊँची बैठक ।

मचाना-क्रि० स० कोई ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो ।

मचिया-संज्ञा स्त्री० छोटी चारपाई ।

मचिलई-संज्ञा स्त्री० १. मचलने का भाव । २. मचलापन ।

मच्छ-संज्ञा पुं० बड़ी मछली ।

मच्छड़, मच्छूर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा घरसाती पतंगा । इसकी मादा काटती, और डंक से रस चूसती है ।

मच्छी-संज्ञा स्त्री० दे० "मछली" ।

मच्छोदरी-संज्ञा स्त्री० व्यास जी की माता और शततनु की माया सख-बती ।

मछरंगा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का जलपक्षी । रामचंद्रिया ।

मछली-संज्ञा स्त्री० जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव जिसकी छोटी बड़ी असंख्य जातियाँ होती हैं । मीन ।

मछुआ, मछुवा-संज्ञा पुं० मछली मारनेवाला । मछाह ।

मजदूर-संज्ञा पुं० १. कुली । २. कल-कारखानों में छोटा-मोटा काम करनेवाला आदमी ।

मजदूरी-संज्ञा स्त्री० १. मजदूर का काम । २. उसकी वजरत ।

मजनू-संज्ञा पुं० १. पागल । २. थरथ

मलिन-वि० [ स्त्री० मलिना, मलिनी ]

१. मैला । २. पापी । ३. धीमा ।

मलिनता-संज्ञा स्त्री० मैलापन ।

मलीदा-संज्ञा पुं० १. घूरमा । २.

एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी  
वस्त्र ।

मलीन-वि० १. मैला । २. उदास ।

मलीनता-संज्ञा स्त्री० दे० "मजिनता" ।

मलूक-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पक्षी ।

मलेच्छ-संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ" ।

मलोला-संज्ञा पुं० १. दुःख । २.  
थरमान ।

मल्ल-संज्ञा पुं० पहलवान ।

मल्लभूमि-संज्ञा स्त्री० अखाड़ा ।

मल्लयुद्ध-संज्ञा पुं० कुरती ।

मल्लविद्या-संज्ञा स्त्री० कुरती की विद्या ।

मल्लशाला-संज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि" ।

मल्लाह-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मल्लाहिन ]  
केवट । मक्की ।

मल्लिका-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
बेला ।

मल्लिनाथ-संज्ञा पुं० जैनियों के उन्नीसवें  
तीर्थंकर का नाम ।

मल्लू-संज्ञा पुं० बंदर ।

मलहाना, मलहारना-क्रि० स०  
चुमकारना ।

मघफिल-संज्ञा पुं० मुकदमे में अपनी  
ओर से कचहरी में काम करने के  
लिये घकीज नियत कानेवाला पुरुष ।

मघाद-संज्ञा पुं० पीष ।

मघास-संज्ञा पुं० १. रचा का स्थान ।  
२. किला ।

मघासी-संज्ञा स्त्री० छोटा गढ़ ।

संज्ञा पुं० १. गढ़पति । २. प्रधान ।

मवेशी-संज्ञा पुं० पशु ।

मवेशीखाना-संज्ञा पुं० वह घाड़ा  
जिसमें मवेशी रखे जाते हैं ।

मशक-संज्ञा पुं० मच्छद ।

संज्ञा स्त्री० चमड़े का घना हुआ वह  
पैला जिसमें पानी भरकर ले जाते  
हैं ।

मशककृत-संज्ञा स्त्री० परिश्रम ।

मशगूल-वि० काम में लगा हुआ ।

मशविरा-संज्ञा पुं० सलाह ।

मशहर-वि० प्रख्यात ।

मशाल-संज्ञा स्त्री० डंडे में लगी हुई  
एक प्रकार की बहुत मोटी घसी ।

मशालची-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मशालचिन ]  
मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला ।

मश्क-संज्ञा पुं० शम्भास ।

मस-संज्ञा स्त्री० रोशनाई ।

संज्ञा स्त्री० मोछ निकलने से पहले  
वसके स्थान पर की रोमावली ।

मसफ-संज्ञा पुं० मसा ।

संज्ञा स्त्री० मसकने की क्रिया ।

मसकना-क्रि० स० १. कपड़े को  
इस प्रकार दबाना कि घुनावट के  
सब तंतु टूटकर अलग हो जायें ।

२. जोर से दबाना या मलना ।

मसकरा-संज्ञा पुं० दे० "मसखरा" ।

मसखरा-संज्ञा पुं० हँसोड़ ।

मसखरापन-संज्ञा पुं० दिछगी ।

मसखरी-संज्ञा स्त्री० दिछगी ।

मसखंधा-संज्ञा पुं० वह जो मांस  
खाता हो ।

मसजिद-संज्ञा स्त्री० मुसलमानों के  
एकत्र होकर नमाज़ पढ़ने तथा ईश्वर-  
बंदना करने का स्थान या घर ।

मसनद-संज्ञा स्त्री० थड़ा तकिया ।

मसमुंदी-वि० धक्कमधक्का ।

का लड़का जो लैला नाम की कन्या पर आसक्त होकर बसके लिये पागल हो गया था। ३. प्रेमी। ४. एक प्रकार का वृक्ष।

मज्झवूत-वि० दृढ़। पुष्ट।

मज्झवूर-वि० विवश। लाचार।

मज्झवूरी-संज्ञा स्त्री० असमर्थता। बे-यत्ती।

मज्जमा-संज्ञा पुं० बहुत से लोगों का जमाव। जमघट।

मज्जमून-संज्ञा पुं० १. विषय, जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। २. लेख।

मज्जलिस-संज्ञा स्त्री० १. सभा। जलसा। २. महफिल। नाच-रंग का स्थान।

मज्जहय-संज्ञा पुं० धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।

मज्जा-संज्ञा पुं० १. स्वाद। लज्जत। २. आनंद।

मज्जाक-संज्ञा पुं० हँसी। ठट्ठा।

मज्जार-संज्ञा पुं० १. समाधि। भक्-वरा। २. कृप।

मज्जारी-संज्ञा स्त्री० बिल्ली।

मज्जाल-संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य। शक्ति।

मज्जीठ-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता। इसकी जड़ और डंठलों से छाल रंग निकलता है।

मज्जीठी-संज्ञा पुं० मज्जीठ के रंग का। लाल। सुख।

मज्जीरा-संज्ञा पुं० घजने के लिये कसि की छोटी कटोरियों की जोड़ी।

मज्जीरी-संज्ञा स्त्री० दे० "मज्जदूरी"।

मज्जेदार-वि० १. स्वादिष्ट। जायके-दार। २. बढ़िया।

मज्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "मज्जा"।

मज्जन-संज्ञा पुं० स्नान। नहाना।

मज्जा-संज्ञा स्त्री० नली की दृष्टी के भीतर का गूदा।

मज्जधार-संज्ञा स्त्री० नदी के मध्य की धारा।

मज्जला-वि० बीच का।

मज्जार-वि० कि० वि० बीच में।

मज्जियाना-वि० कि० म० नाव खेता। मछाही करना।

कि० म० बीच से होकर निकलना।

मज्जीला-वि० १. मज्जला। बीच का।

२. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा।

मज्जीली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बेलगाड़ी।

मटक-संज्ञा स्त्री० १. गति। चाल। २. मटकने की क्रिया या भाव।

मटकना-वि० म० श्रंग हिलाते हुए चलना। लचककर नखरे से चलना।

मटकनि-संज्ञा स्त्री० १. दे० "मटक"।

२. नाचना। मृत्त। ३. नखरा।

मटका-संज्ञा पुं० मिट्टी का बड़ा बड़ा मट। माट।

मटकाना-वि० स० नखरे के साथ श्रंगों का संचालन करना। चमकाना। कि० स० दूसरे को मटकने में प्रवृत्त करना।

मटकी-संज्ञा स्त्री० छोटा मटका।

संज्ञा स्त्री० मटकने या मटकाने का भाव।

मटकीला-वि० मटकनेवाला।

मटकीअल-संज्ञा स्त्री० मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।

मटमैला-वि० मिट्टी के रंग का। खाकी। धूलिया।

मसयारा-संज्ञा पुं० १. मशाल ।

२. मशालची ।

मसरफू-संज्ञा पुं० उपयोग ।

मसल-संज्ञा स्त्री० कहावत ।

मसलन्-वि० उदाहरणार्थ ।

मसलना-कि० स० मलना ।

मसलहत-संज्ञा स्त्री० अप्रकट शुभ हेतु ।

मसला-संज्ञा पुं० कहावत ।

मसविदा-संज्ञा पुं० दे० "मसौदा" ।

मसहरी-संज्ञा स्त्री० पलंग के ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपड़ा जिसका उपयोग मच्छरों आदि से बचने के लिये होता है ।

मसा-संज्ञा पुं० शरीर पर फाले रंग का समरा हुआ मांस का छोटा दाना । संज्ञा पुं० मच्छर ।

मसान-संज्ञा पुं० मरघट ।

मसाला-संज्ञा पुं० वे चीजें जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो ।

मसालेदार-वि० जिसमें किसी प्रकार का मसाला हो ।

मसि-संज्ञा स्त्री० १. रेशमनाई । २. काजल । ३. काखिल ।

मसिदानी-संज्ञा स्त्री० दावात ।

मसिपात्र-संज्ञा पुं० दावात ।

मसिमुख-वि० जिसके मुँह में स्याही लगी हो । दुष्कर्म करनेवाला ।

मसियारा-संज्ञा पुं० दे० "मशालची" ।

मसिघिंटु-संज्ञा पुं० काजल का घुंदा जो नज़र से बचने के लिये पक्षों को लगाया जाता है ।

मसी-संज्ञा स्त्री० दे० "मसि" ।

मसीह, मसीहा-संज्ञा पुं० [वि० मसीही]

ईसाइयों के धर्मगुरु हज़रत ईसा ।

मसूड़ा-संज्ञा पुं० मुँह के अंदर का वह मांस जिस पर दाँत जमे होते हैं ।

मसूर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का द्विदल और चिपटा अन्न ।

मसूर-संज्ञा स्त्री० १. मसूर की दाढ़ ।

२. मसूर की बनी हुई बरी ।

मसूरिका-संज्ञा स्त्री० १. शीतला । २. छोटी माता ।

मसूसना-कि० अ० किसी मनोवेग को रोकना ।

मसेवरा-संज्ञा पुं० मांस की बनी हुई खाने की चीज़ ।

मसोसना-कि० अ० दे० "मसूसना" ।

मसौदा-संज्ञा पुं० १. मसविदा । खर्चा । २. बयाय ।

मसौदेयाज्ञ-संज्ञा पुं० १. अच्छी युक्ति सोचनेवाला । २. धूर्त ।

मस्करा-संज्ञा पुं० दे० "मसखरा" ।

मस्त-वि० १. जो नशे आदि के कारण मत्त हो । २. प्रसन्न ।

मस्तक-संज्ञा पुं० सिर ।

मस्तगी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का धड़िया गोंद ।

मस्ताना-वि० १. मत्तों का सा । २. मस्त ।

कि० अ० मस्त होना ।

कि० स० मस्ती पर खाना ।

मस्तिष्क-संज्ञा पुं० १. मग़ज़ । २. दिमाग़ ।

मस्ती-संज्ञा स्त्री० मतवालापन ।

मस्तूल-संज्ञा पुं० बड़ी नावों आदि के बीच का वह बड़ा गड़तीर जिसमें पाल बाँधते हैं ।

मटर-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मोटा  
शुद्ध । इसकी लंबी फलियों को  
छीमी या छुंघी कहते हैं, जिनमें  
गोख दाने रहते हैं ।

मटरगश्त-संज्ञा पुं० १. टहलना ।  
२. सैर-सपाटा ।

मटिआना-किं० स० मिट्टी खगाकर  
माँजना ।

मटिया भसान-वि० गया-धीता ।  
नष्टप्राय ।

मटियाला-वि० दे० "मटमला" ।

मटुका-संज्ञा पुं० दे० "मटका" ।

मटुकी-संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी" ।

मट्टी-संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी" ।

मट्टर-वि० सुस्त । काहिल ।

मट्टा-संज्ञा पुं० मया हुआ दही जिसमें  
से नैनू निकाल लिया गया हो ।

मही । छाछ । तक्र ।

मठ-संज्ञा पुं० वह मकान जिसमें साधु  
आदि रहते हों ।

मठधारी-संज्ञा पुं० वह साधु या महंत  
जिसके अधिकार में कोई मठ हो ।

मठा-संज्ञा पुं० दे० "मट्टा" ।

मठाधीश-संज्ञा पुं० दे० "मठधारी" ।

मठिया-संज्ञा स्त्री० छोटी कुट्टी या मठ ।

मठी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा मठ । २.

मठ का महंत । मठधारी ।

मट्टई-संज्ञा स्त्री० १. छोटा मंडप ।  
२. कुटिया ।

मट्टा-संज्ञा पुं० दे० "मंडप" ।

मट्ट्या-संज्ञा पुं० धाजरे की जाति  
का एक प्रकार का कदम ।

मट्ट-वि० थड़कर बैठनेवाला ।

मट्टना-किं० स० १. आवेष्टित करना ।

२. किसी के गले लगाना ।

मट्टवाना-किं० स० मट्टने का काम  
दूसरे से कराना ।

मट्टाई-संज्ञा स्त्री० मट्टने का भाव, काम  
या मजदूरी ।

मट्टाना-किं० स० दे० "मट्टवाना" ।

मट्टी-संज्ञा स्त्री० छोटा मठ ।

मणि-संज्ञा स्त्री० १. बहुमूल्य रत्न ।

२. जवाहिर ।

मणिघर-संज्ञा पुं० सर्प । साँप ।

मणिपुर-संज्ञा पुं० एक चक्र जो नामि  
के पास माना जाता है । (तंत्र)

मणिर्यध-संज्ञा पुं० कलाई । गह्रा ।

मणिमाला-संज्ञा स्त्री० मणियों की  
माला ।

मणी-संज्ञा पुं० सर्प ।

संज्ञा स्त्री० दे० "मणि" ।

मतंग-संज्ञा पुं० हाथी ।

मतंगी-संज्ञा पुं० हाथी का सवार ।

मत-संज्ञा पुं० १. निश्चित सिद्धांत ।

२. सम्मति ।

किं० वि० न । नहीं । (निषेध)

मतलब-संज्ञा पुं० १. सारथी । अभि-  
प्राय । २. स्वार्थ ।

मतलबी-वि० स्वार्थी ।

मतली-संज्ञा स्त्री० दे० "मिचली" ।

मतवार, मतवारा-वि० दे० "मत-  
वाला" ।

मतवाली-वि० पुं० [ स्त्री० मतवाली ]  
जशे आदि के कारण मत्त ।

मता-संज्ञा पुं० दे० "मत" ।

मताधिकार-संज्ञा पुं० मत या चोट  
देने का अधिकार ।

मतानुयायी-संज्ञा पुं० किसी के मत  
को माननेवाला । मतावलंबी ।

मस्सा-संज्ञा पुं० दे० "मसा" ।

महँ-अव्य० में ।

महंगा-वि० जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो ।

महंगी-संज्ञा स्त्री० १. महंगापन । २. अकाल ।

महंत-संज्ञा पुं० साधुमंडली या गठ का अधिष्ठाता ।

वि० श्रेष्ठ ।

महंती-संज्ञा स्त्री० १. महंत का भाव ।

२. महंत का पद ।

मह-अव्य० दे० "मह" ।

वि० १. महा । २. श्रेष्ठ ।

महक-संज्ञा स्त्री० गंध ।

महकना-क्रि० भ० गंध देना ।

महकसा-संज्ञा पुं० किसी विशिष्ट कार्य के लिये अलग किया हुआ विभाग ।

महकान-संज्ञा स्त्री० दे० "महक" ।

महज-वि० १. शुद्ध । २. केवल ।

महत-वि० १. महान् । २. सर्वश्रेष्ठ ।

महता-संज्ञा पुं० गाँव का मुखिया ।

० संज्ञा स्त्री० अभिमान ।

महताव-संज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

संज्ञा पुं० चाँद ।

महतावी-संज्ञा स्त्री० १. मोटी बस्ती के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी । २. बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चयुनरा ।

महतारी-संज्ञा स्त्री० माँ ।

महत्तम-वि० सबसे अधिक श्रेष्ठ ।

महत्तर-वि० दो पदार्थों में से बड़ा या श्रेष्ठ ।

महत्त्व-संज्ञा पुं० १. बड़ाई । २. श्रेष्ठता ।

महफिल-संज्ञा स्त्री० १. सभा । जलसा । २. नाच-गाना होने का स्थान ।

महवृच-संज्ञा पुं० [जी० महवृच] प्रिय ।

महमंत-वि० मस्त ।

महमद-संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद" ।

मह मह-क्रि० वि० खुशबू के साथ ।

महमहा-वि० सुगंधित ।

महमहाना-क्रि० भ० सुगंध देना ।

महमा-संज्ञा स्त्री० दे० "महिमा" ।

महम्मद-संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद" ।

महरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० महरा ] १. कहार । २. सरदार ।

महराई-संज्ञा स्त्री० प्रधानता ।

महराज-संज्ञा पुं० दे० "महाराज" ।

महराय-संज्ञा स्त्री० दे० "मेहराय" ।

महरुम-वि० जिसे न मिले ।

महर्षि-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि ।

महल-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा और बढ़िया मकान ।

महल्ला-संज्ञा पुं० शहर का कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुत से मकान हों ।

महसूल-संज्ञा पुं० १. कर । २. भाड़ा ।

महा-वि० १. अत्यंत । २. भारी ।

महाशरम-वि० बहुत शोर ।

महाई-संज्ञा स्त्री० मथने का काम या मजदूरी ।

महाजल-संज्ञा पुं० दे० "महावत" ।

महासर-संज्ञा पुं० दे० "महावर" ।

महाकल्प-संज्ञा पुं० पुराणानुसार कतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है ।

मतावलंबी-संज्ञा पुं० किसी एक मत या संप्रदाय का अवलंबन करनेवाला ।

मति-संज्ञा स्त्री० बुद्धि । समझ ।

०१ कि० वि० दे० "मत" ।

मन्य० समान । सरस ।

मतिमंत-वि० बुद्धिमान् ।

मतिमान-वि० बुद्धिमान् ।

मतीरा-संज्ञा पुं० तरघूँज । कलिंदा ।

मतीस-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा ।

मतेई-संज्ञा स्त्री० विमाता ।

मत्कुण-संज्ञा पुं० खटमल ।

मत्त-वि० १. मस्त । २. पागल ।

मत्तता-संज्ञा स्त्री० मत्तवालापन ।

मत्था-संज्ञा पुं० दे० "माथा" ।

मत्सर-संज्ञा पुं० १. डाह । जलन ।

२. क्रोध ।

मत्सरता-संज्ञा स्त्री० डाह । इसद ।

मत्सरी-संज्ञा पुं० मत्सरपूर्ण व्यक्ति ।

मत्स्य-संज्ञा पुं० १. मछली । २.

प्राचीन विराट् देश का नाम । ३.

विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार ।

मत्स्य पुराण-संज्ञा पुं० चट्ठारह पुराणों में से एक महापुराण ।

मत्स्यप्रनाथ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध साधु और हठ-योगी जो गोरखनाथ के गुरु थे ।

मथन-संज्ञा पुं० मथने का भाव या क्रिया । बिलोना ।

मथनी-क्रि० सं० तरल पदार्थ को लकड़ा आदि से छिलाना या चलाना । बिलोना ।

मथनियाँ-संज्ञा स्त्री० दे० "मथनी" ।

मथनी-संज्ञा स्त्री० वह मटका जिसमें दही मया जाता है ।

मथानी-संज्ञा स्त्री० काठ का एक

प्रकार का ढंड जिससे दही से मयकर मक्खन निकाला जाता है ।

मथुरा-संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार सात पुरियों में से एक पुरी जो व्रज में यमुना के किनारे पर है ।

मथुरिया-वि० मथुरा से संबंध रखनेवाला । मथुरा का ।

मदंघ-वि० दे० "मदांघ" ।

मद-संज्ञा पुं० १. हर्ष । आनंद ।

२. वह गंधयुक्त द्रव जो मत्तवाले हाथियों की कनपटियों से यहता है ।

३. वीर्य । ४. कस्तूरी । ५. मद्य ।

६. गर्व । अहंकार ।

संज्ञा स्त्री० विभाग । सीगा । सरिस्ता ।

मदक-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत से बनता है । इसे चिलम पर रखकर पीते हैं ।

मदकची-वि० जो मदक पीता हो ।

मदक पीनेवाला ।

मदकल-वि० मत्त । मत्तवाला ।

मदद-संज्ञा स्त्री० १. सहायता । २.

मजदूर और राज आदि जो किसी काम के ऊपर खयाए जाते हैं ।

मददगार-वि० मदद करनेवाला ।

मदन-संज्ञा पुं० कामदेव ।

मदनकदन-संज्ञा पुं० शिव ।

मदनगोपाल-संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम ।

मदनवान-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेला । ( फूल )

मदनमस्त-संज्ञा पुं० चंप्पे की जाति का एक प्रकार का फूल ।

मदन-महोत्सव-संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक वरसव जो चैत्र शुद्ध द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था ।



महाकाल-मंश पु० महादेव ।  
 महाकाली-संश स्त्री० १. महाकाल (शिव) की पत्नी । २. दुर्गा की एक मूर्ति ।  
 महाकाव्य-संश पु० वह बहुत बड़ा सर्गद्वय काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, श्रुतियों और प्राकृत द्रव्यों तथा सामाजिक कृत्यों आदि का वर्णन हो ।  
 महाखर्व-संश पु० सौ खर्व की संख्या या एक ।  
 महागौरी-संश स्त्री० दुर्गा ।  
 महाजन-संश पु० १. धनवान् । २. धनिया ।  
 महाजनी-संश स्त्री० १. रूप के खेने-देने का व्यवसाय । २. मुद्रिणी ।  
 महाजल-संश पु० समुद्र ।  
 महातत्त्व-संश पु० दे० "महत्तत्त्व" ।  
 महातम-संश पु० दे० "माहात्म्य" ।  
 महातल-संश पु० चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पंचिमा भुवन या तल ।  
 महात्मा-संश पु० १. महानुभाव । २. बहुत बड़ा साधु या संन्यासी ।  
 महादंडधारी-संश पु० यमराज ।  
 महादान-संश पु० १. वे बहुत बड़े दान जिनसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है । २. वह दान जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है ।  
 महादेव-संश पु० शिव ।  
 महादेवी-संश स्त्री० १. दुर्गा । २. राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी ।  
 महाद्वीप-संश पु० पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें अनेक देश हों ।  
 महाधन-वि० १. बहुमूल्य । २. बहुत धनी ।

महान-वि० विशाल ।  
 महानंद-संश पु० मगध देश का एक प्राचीन प्रतापी राजा ।  
 महानिद्रा-संश स्त्री० मृत्यु ।  
 महानिशा-संश स्त्री० १. आधी रात । २. कर्पास या प्रलय की रात्रि ।  
 महानुभाव-संश पु० महापुरुष ।  
 महानुभावता-संश स्त्री० बड़पन ।  
 महापथ-संश पु० १. लंघा और चौड़ा रास्ता । २. मृत्यु ।  
 महापद्म-संश पु० १. नी निधियों में से एक । २. सफेद कमल ।  
 महापातकी-संश पु० वह जिसने महापातक किया हो ।  
 महापात्र-संश पु० १. श्रेष्ठ ब्राह्मण । (प्राचीन) २. महाप्राह्मण या कट्टा ब्राह्मण जो मृतक-वर्म का दान लेता है ।  
 महापुरुष-संश पु० १. नारायण । २. श्रेष्ठ पुरुष ।  
 महाप्रभु-संश पु० ईश्वर ।  
 महाप्रलय-संश पु० वह काल, जब संपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता है ।  
 महाप्रसाद-संश पु० १. ईश्वर या देवताओं का प्रसाद । २. मांस । (व्यंग्य)  
 महाप्रस्थान-संश पु० १. शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना । २. देहांत ।  
 महाप्राण-संश पु० व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण में प्राण वायु का विशेष व्यवहार करना पड़ता है ।  
 महायल-वि० अत्यंत बलवान् ।

मदनमोहन-संज्ञा पुं० कृष्णचंद्र ।  
 मदनोत्सव-संज्ञा पुं० मदन-महोत्सव ।  
 मदसत्त-वि० मस्त ।  
 मदरसा-संज्ञा पुं० पाठशाला ।  
 मदांघ-वि० मदमत्त ।  
 मदार-संज्ञा पुं० आक ।  
 मदारी-संज्ञा पुं० १. वह जो मदर, भालू आदि नचाते और छान के तमारे दिखाते हैं । २. यात्रीगर ।  
 मदालसा-संज्ञा स्त्री० एक राक्षस-कन्या जिसे पातालकेतु दानव पाताल ले गया था । ( पुराण )  
 मदिया-संज्ञा स्त्री० दे० "मादा" ।  
 मदिरा-संज्ञा स्त्री० शराब ।  
 मदीला-वि० नशीला ।  
 मदीन्मत्त-वि० मद में पागल ।  
 मादम-वि० १. मध्यम । २. मंदा ।  
 मद्-अव्य० १. बीच में । २. विषय में ।  
 मद्य-संज्ञा पुं० मदिरा ।  
 मद्यप-वि० शराबी ।  
 मद्र-संज्ञा पुं० राखी और खेलम के बीच का प्राचीन येश ।  
 मधिम-वि० दे० "मध्यम" ।  
 मधु-संज्ञा पुं० १. शहद । २. वसंत ऋतु ।  
 वि० १. मीठा । २. स्वादिष्ट ।  
 मधुकर-संज्ञा पुं० मीठा ।  
 मधुकरी-संज्ञा स्त्री० वह मिठा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता हो ।  
 मधुकैटभ-संज्ञा पुं० दो दैत्य जिन्हें विष्णु ने मारा था । ( पुराण )  
 मधुचक्र-संज्ञा पुं० शहद की मक्खी का छत्ता ।

मधुजा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।  
 मधुप-संज्ञा पुं० मीठा ।  
 मधुपति-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 मधुपर्क-संज्ञा पुं० दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह जो देवताओं को चढ़ाया जाता है ।  
 मधुपुरी-संज्ञा स्त्री० मधुरा नगरी ।  
 मधुप्रमेह-संज्ञा पुं० दे० "मधुमेह" ।  
 मधुमखली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खली जो फूलों का रस चूसकर शहद एकत्र करती है ।  
 मधुमत्तिका-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी" ।  
 मधुमालती-संज्ञा स्त्री० मालती वृक्ष ।  
 मधुमेह-संज्ञा पुं० प्रमेह का पड़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है ।  
 मधुर-वि० मीठा ।  
 मधुरता-संज्ञा स्त्री० मधुर होने का भाव ।  
 मधुराई-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता" ।  
 मधुराज-संज्ञा पुं० मीठा ।  
 मधुराज-संज्ञा पुं० मीठाई ।  
 मधुरिमा-संज्ञा स्त्री० १. मिठास । २. सुंदरता ।  
 मधुवन-संज्ञा पुं० मधुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन ।  
 मधुशर्करा-संज्ञा स्त्री० शहद से पनाई हुई चीनी ।  
 मधुसखा-संज्ञा पुं० कामदेव ।  
 मधुसूदन-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 मधूक-संज्ञा पुं० मधु ।  
 मध्य-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ के बीच का भाग ।  
 मध्यता-संज्ञा स्त्री० मध्य का भाव ।  
 मध्य देश-संज्ञा पुं० भारतवर्ष का

महाबाहु-वि० १. लंबी भुजावाला ।  
२. बली ।

महाब्राह्मण-संज्ञा पुं० दे० "महापात्र" ।

महाभारत-संज्ञा पुं० १. अठारह पर्वों का एक परम प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है ।  
२. कोई बड़ा युद्ध ।

महाभाष्य-संज्ञा पुं० पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का लिखा भाष्य ।  
महामंत्र-संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा और प्रभावशाली मंत्र । २. अच्छी सलाह ।

महामंत्री-संज्ञा पुं० प्रधान मंत्री ।

महामति-वि० बड़ा बुद्धिमान् ।

महामहोपाध्याय-संज्ञा पुं० १. गुरुओं का गुरु । २. एक प्रकार की उपाधि जो भारत में संस्कृत के विद्वानों को सरकार की ओर से मिलती है ।

महामास-संज्ञा पुं० १. गोमास । २. मनुष्य का मास ।

महामात्य-संज्ञा पुं० महामंत्री ।

महामाया-संज्ञा स्त्री० १. प्रकृति ।  
२. दुर्गा ।

महामाथी-संज्ञा स्त्री० वह संकामक भीषण रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें ।

महामृत्युंजय-संज्ञा पुं० शिव ।

महायज्ञ-संज्ञा पुं० धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किए जानेवाले कर्म ।

महायाना-संज्ञा स्त्री० मृत्यु ।

महायान-संज्ञा पुं० बौद्धों के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक संप्रदाय ।

महायुग-संज्ञा पुं० चारों युगों का समूह ।

महारथ-संज्ञा पुं० भारी योद्धा ।

महारथी-संज्ञा पुं० दे० "महारथ" ।

महाराज-संज्ञा पुं० [ स्त्री० महारानी ] बहुत बड़ा राजा ।

महाराजाधिराज-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा राजा ।

महाराणा-संज्ञा पुं० मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि ।

महारात्रि-संज्ञा स्त्री० महाप्रलयवाली रात ।

महारावण-संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं ।

महाराष्ट्र-संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश । २. इस देश के निवासी । ३. बहुत बड़ा राष्ट्र ।

महाराष्ट्री-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की प्राकृत भाषा । २. दे० "मराठी" ।

महारुद्र-संज्ञा पुं० शिव ।

महारौरव-संज्ञा पुं० एक नरक ।

महार्घ-वि० १. बहुमूल्य । २. महंगा ।

महाल-संज्ञा पुं० १. मुहल्ला । २. पट्टी ।

महालक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति ।

महावत-संज्ञा पुं० हाथी हाँकनेवाला ।

महावर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पर्वों को चित्रित कराती हैं ।

महावरी-संज्ञा पुं० महावर की बनी हुई गोली या टिकिया ।

महावार्हणी-संज्ञा स्त्री० गंगा-स्नान का एक योग ।

महाविद्या-संज्ञा स्त्री० तंत्र में मानी

हुई दस देवियाँ ।  
महावीर-संज्ञा पुं० १. हनुमानजी ।  
२. जैनियों के चौबीसवें और अंतिम  
जिन या तीर्थंकर ।

वि० बहुत बड़ा बहादुर ।  
महाशय-संज्ञा पुं० महानुभाव ।  
सज्जन ।

महाश्वेता-संज्ञा स्त्री० सरस्वती ।  
महि-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

महिदेव-संज्ञा पुं० ब्राह्मण ।  
महिपाल-संज्ञा पुं० दे० "महीप" ।  
महिमा-संज्ञा स्त्री० महत्त्व ।  
महिम्न-संज्ञा पुं० शिव का एक प्रधान  
स्तोत्र ।

महिरावण-संज्ञा पुं० एक राक्षस जो  
रावण का लड़का था ।

महिला-संज्ञा स्त्री० भली स्त्री ।  
महिष-संज्ञा पुं० [ स्त्री० महिषे ] १.  
भैंसा । २. एक राक्षस का नाम  
जिसे दुर्गाजी ने मारा था ।

महिषमादनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।  
महिषासुर-संज्ञा पुं० एक असुर जिसे  
दुर्गाजी ने मारा था ।

महिषी-संज्ञा स्त्री० रानी । पटरानी ।  
मही-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी । २.  
देश ।

महीतल-संज्ञा पुं० पृथ्वी ।  
महीधर-संज्ञा पुं० १. पर्यंत । २.  
शेषनाग ।

महीन-वि० १. पतला । २. धीमा ।  
मंद । ( शब्द या स्वर )

महीना-संज्ञा पुं० १. काल का एक  
परिमाण जो प्रायः साधारणतया  
तीस दिन का होता है । २. मासिक  
वेतन । ३. स्त्रियों का मासिक धर्म ।

महीप, महीपति-संज्ञा पुं० राजा ।  
महीसुर-संज्ञा पुं० ब्राह्मण ।

महुअर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
धान ।

महुआ-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पृष्ठ  
जिसके छोटे, मीठे, गोल फलों से  
शराब बनती है ।

महुरत-संज्ञा पुं० दे० "मुहूर्त" ।  
महेंद्र-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २.  
इंद्र ।

महेश-संज्ञा पुं० १. शिव । २. ईश्वर ।  
महेशी-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।

महेश्वर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० महेश्वरी ]  
ईश्वर ।

महेश-संज्ञा पुं० दे० "महेश" ।  
महोखा-संज्ञा पुं० एक पक्षी जो तेज  
दाता है, पर बड़ नहीं सकता ।

महोगनी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
घृत बड़ा पेड़ ।

महोत्सव-संज्ञा पुं० बड़ा उत्सव ।  
महोदधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।

महोदय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० महोदया ]  
महाशय ।

माँ-संज्ञा स्त्री० जन्म देनेवाली माता ।  
+ अन्य० में ।

माँखी-संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी" ।  
माँग-संज्ञा स्त्री० १. माँगने की क्रिया

या भाव । २. विज्ञेय या स्वपत आदि-  
के कारण किसी पदार्थ के लिये होने-  
वाली आवश्यकता या चाह ।

संज्ञा स्त्री० सिर के बालों को धोच की-  
रेखा जो बालों को विभक्त करके  
बनाई जाती है ।

माँग-टीका-संज्ञा पुं० स्त्रियों का माँग  
पर का एक गहना ।

मुजुफ़ार-वि० पुष्टि।

मुजरा-संज्ञा पु० चेर्या का बैठकर गाना।

मुजरिम-संज्ञा पु० जिस पर अभियोग लगाया गया हो।

मुक्त-सर्व० मैं का वह रूप जो उसे कर्त्ता और सेवेय कारक हो छोड़कर शेष कारकों में, विभक्ति लगाने से पहले, प्राप्त होता है। जैसे—मुक्तको, मुक्तसे।

मुक्ते-सर्व० 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्म और सम्प्रदान कारक में प्राप्त होता है।

मुटार्ह-संज्ञा स्त्री० १. मोटापन। स्थूलता। २. घर्मड। शोषी।

मुटाना-क्रि० प्र० मोटा हो जाना।

मुटासा-वि० वह जो कुछ धन कमा लेने से बेपरवा और घर्मडी हो गया हो।

मुटिया-संज्ञा पु० योक्त होनेवाला। मज्जूर।

मुट्टा-संज्ञा पु० चंगुल भर वस्तु।

मुट्टी-संज्ञा स्त्री० १. घँघी हुई हथेली। २. वतनी वस्तु जितनी हथेली बंद करने से हाथ में आ सके।

मुठमैड़-संज्ञा स्त्री० १. टकर। २. मेट।

मुठिया-संज्ञा स्त्री० बीजारों का दस्ता। घँट।

मुड़ना-क्रि० प्र० सीधी वस्तु का कहीं से घल खाकर दूसरी ओर फिरना। घुमाव लेना।

क्रि० प्र० दे० "मुड़ना"।

मुड़ला-वि० [स्त्री० मुड़ली] जिसके सिर पर पाल न हो।

मुड़पायी-संज्ञा स्त्री० अटारी की

दीवार का सिरा।

मुड़हरा-संज्ञा पु० स्त्रियों की साड़ी या चादर का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है।

मुतश्लिक-वि० संबंध में। विषय में।

मुतबन्ना-संज्ञा पु० दत्तक पुत्र।

मुँतलक-क्रि० वि० ज़रा भी। तनिक भी।

वि० बिजकुल।

मुतायिक-क्रि० वि० अनुसार।

वि० अनुकूल।

मुतालवा-संज्ञा पु० उतना धन जितना पाना वाजिब हो। याकी रुपया।

मुद-संज्ञा पु० हर्ष। आनंद।

मुदगर-संज्ञा पु० दे० "मुगदर"।

मुदरिस-संज्ञा पु० अध्यापक।

मुदा-वि० प्रत्यय १. तात्पर्य यह कि। २. मगर। लेकिन।

संज्ञा स्त्री० हर्ष। आनंद।

मुदाम-क्रि० वि० १. सदा। हमेशा। २. हः-हः-हू।

मुदामी-वि० जो सदा होता रहे।

मुदित-वि० प्रसन्न। खुश।

मुदिर-संज्ञा पु० पादल। मेघ।

मुदई-संज्ञा पु० १. दावा करनेवाला। २. दुरमन।

मुदत-संज्ञा स्त्री० [वि० मुदती] १. अवधि। २. बहुत दिन।

मुदाअलेह, मुदालेह-संज्ञा पु० वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय। प्रतिवादी।

मुद्रक-संज्ञा पु० छापनेवाला।

मुद्रण-संज्ञा पु० किसी चीज़ पर अक्षर आदि अंकित करना। छपाई।

मुद्रांकित-वि० मोहर किया हुआ।

माँगना-संज्ञा पुं० माँगने की क्रिया या भाव ।

माँगना-क्रि० स० याचना करना ।

मांगलिक-वि० मंगल करनेवाला ।

संज्ञा पुं० नाटक का वह पात्र जो मंगलपाठ करता है ।

मागल्य-वि० शुभ ।

संज्ञा पुं० मंगल का भाव ।

माँचा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० माँची ]

१. पलंग । २. मचान ।

माँछी-संज्ञा पुं० मछली ।

माँजना-क्रि० स० १. किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना । २. सरेस और शीशे की मुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को दृढ़ करना ।

क्रि० प्र० अभ्यास करना ।

माँजा-संज्ञा पुं० पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिये मादक होता है ।

माँझा-मध्य० भीतर ।

माँझा-संज्ञा पुं० अंतर ।

माँझा-संज्ञा पुं० १. नदी में का टापू ।

२. पतंग या गुड्डे के डोरे या नेछ पर चढ़ाया जानेवाला कलफ । ३. दे० "मंझा" ।

माँझिल-क्रि० वि० बीच का ।

माँझी-संज्ञा पुं० भाव खेनेवाला । केवट ।

माँटा-संज्ञा पुं० १. मटका । २. अटारी ।

माँठ-संज्ञा पुं० मटका ।

माँड-संज्ञा पुं० पकाए हुए चावलों में से निकला हुआ खसदार पानी ।

माँड़ना-क्रि० स० १. मलना । २. धन की बाल में से दाने काटना ।

माँडलिक-संज्ञा पुं० मंडल या छोटे

प्रदेश का मालिक ।

माँदव-संज्ञा पुं० विवाह आदि शुभ कृत्यों के लिये छाया हुआ मंडप ।

माँदवी-संज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत को व्याही थी ।

माँड़ा-संज्ञा पुं० आँख का एक रोग जिसमें उसके अंदर महीन फिली सी पड़ जाती है ।

संज्ञा पुं० मंडप ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार की रोटी ।

माँड़ी-संज्ञा स्त्री० १. भात का पसावन । २. कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ ।

माँड़ौ-संज्ञा पुं० दे० "माँदव" ।

माँत-वि० १. मल । २. उदास ।

माँतना-क्रि० प्र० पागल होना ।

माँत्रिक-संज्ञा पुं० वह जो तंत्र-मंत्र का काम करता हो ।

माँद-संज्ञा स्त्री० गुफा ।

माँदगी-संज्ञा स्त्री० बीमारी ।

माँदर-संज्ञा पुं० मदेख । ( याज्ञा )

माँदा-वि० १. यका हुआ । २. रोगी ।

माँद्य-संज्ञा पुं० मंद होने का भाव ।

माँपना-क्रि० प्र० नशे में चूर होना ।

माँप-मध्य० में ।

माँस-संज्ञा पुं० १. शरीर का वह प्रसिद्ध, मुखायम, लचीला, लाल पदार्थ जो रेशेदार तथा चरबी मिठा हुआ होता है । २. गोश्त ।

माँसभक्षी-संज्ञा पुं० दे० "माँसाहारी" ।

माँसल-वि० [ संज्ञा माँसलता ] १. माँस से भरा हुआ । २. मोटा-ताजा ।

मुद्रा- संज्ञा स्त्री० १. किसी के नाम की छाप । मोहर । २. रुपया, अशरफी आदि । सिक्का ।

मुद्रातत्त्व-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं ।

मुद्रायंत्र-संज्ञा पुं० छापने या मुद्रण करने का यंत्र । छापे आदि की कल ।

मुद्रिक-संज्ञा स्त्री० दे० "मुद्रिका" ।

मुद्रिका-संज्ञा स्त्री० अँगूठी ।

मुद्रित-वि० १. मुद्रण या अंकित किया हुआ । २. मुँदा हुआ । यंद ।

मुधा-क्रि० वि० व्यर्थ । व्यथा ।

संज्ञा पुं० असत्य । मिथ्या ।

मुनक्का-संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी किशमिश ।

मुनादी-संज्ञा स्त्री० टिंडोरा । हुग्री ।

मुनाफा-संज्ञा पुं० छान । नफा ।

मुनासिब-वि० उचित । पाजिब ।

मुनि-संज्ञा पुं० १. ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य आदि का सूक्ष्म विचार करनेवाला व्यक्ति । २. तपस्वी । त्यागी ।

मुनिर्या-संज्ञा स्त्री० जाल नामक पत्ती की मादा ।

मुनीय, मुनीम-संज्ञा पुं० साहूकारों का हिसाब-किताब लिखनेवाला ।

मुनीश, मुनीश्वर-संज्ञा पुं० मुनियों में श्रेष्ठ ।

मुन्ना-संज्ञा पुं० छोटी के लिये प्रेम-सूचक शब्द ।

मुफलिस-वि० निर्धन । दरिद्र ।

मुफ़स्सल-वि० धोरेवार । विस्तृत ।

संज्ञा पुं० किसी केंद्रस्थ नगर के चारों

थोर के कुछ दूर के स्थान ।

मुफीद-वि० फायदेमंद । लाभकारी ।

मुफ्त-वि० बिना दाम का । सेंट का ।

मुस्ती-संज्ञा पुं० धर्म-शास्त्रों । (मुस०)

वि० मुफ्त का ।

मुयारक-वि० १. जिसके कारण बर-कत हो । २. शुभ ।

मुमकिन-वि० संभव ।

मुमुक्षु-वि० मुक्ति पाने का इच्छुक ।

मुमूर्षा-संज्ञा स्त्री० मरने की इच्छा ।

मुमूर्षु-वि० जो मरने के समीप हो ।

मुर-संज्ञा पुं० घेठन ।

अव्य० फिर । दोबारा ।

मुरक-संज्ञा स्त्री० मुरकने की क्रिया या भाव ।

मुरकना-क्रि० प्र० १. खचककर किसी और मुकना । २. मोच खाना ।

मुरगा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मुरी ] एक प्रसिद्ध पक्षी ।

मुरगाघी-संज्ञा स्त्री० मुरगे की जाति का एक पक्षी ।

मुरचंग-संज्ञा पुं० मुँह से घनाने का एक प्रकार का पात्र ।

मुरछना, मुरछाना-क्रि० प्र० १. शिथिल होना । २. अचेत होना ।

मुरज-संज्ञा पुं० सृदंग । पखावज ।

मुरझाना-क्रि० प्र० १. फूल या पत्ती आदि का कुम्हलाना । २. सुख या उदास होना ।

मुरदा-संज्ञा पुं० मरा हुआ प्राणी । मृत ।

वि० १. मरा हुआ । २. मुरझाया हुआ ।

मुरदार-वि० मरा हुआ ।

मांसाहारी-संज्ञा पुं० मांस भोजन करनेवाला ।

माँहा-अव्य० में । बीच । अंदर ।

माँहा-अव्य० दे० "माँह" ।

मा-संज्ञा स्त्री० माता ।

माइ-संज्ञा स्त्री० दे० "माई" ।

माइका-संज्ञा पुं० दे० "मायका" ।

माई-संज्ञा स्त्री० १. माता । २. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिये संबोधन ।

माकूल-वि० १. उचित । वाजिब । २. योग्य ।

माख-संज्ञा पुं० १. अमरसज्जता । २. अभिमान ।

माखन-संज्ञा पुं० दे० "मखन" ।

माखना-कि० अ० माराज होना ।

माखी-संज्ञा स्त्री० मक्खी ।

मागध-संज्ञा पुं० एक प्राचीन जाति । वि० मगध देश का ।

मागधी-संज्ञा स्त्री० मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा ।

माघ-संज्ञा पुं० वह चाँद मास जो पूष के बाद और फागुन से पहले पड़ता है ।

माघी-संज्ञा स्त्री० माघ मास की पूर्णिमा ।

वि० माघ का ।

माचा-संज्ञा पुं० बड़ी मछिया ।

माची-संज्ञा स्त्री० छोटा माचा ।

माछी-संज्ञा पुं० मछली ।

माछी-संज्ञा स्त्री० मक्खी ।

माजरा-संज्ञा पुं० हाज ।

माट-संज्ञा पुं० १. मिट्टी का वह परतन जिसमें रंगरेज रंग बनाते हैं ।

२. बड़ी मटकी ।

माटी-संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी" ।

माठ-संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई ।

माढ़ना-कि० स० पैर या हाथ से मसबना ।

माणिक-संज्ञा पुं० दे० "माणिक्य" ।

माणिक्य-संज्ञा पुं० जाल रंग का एक रत्न ।

वि० सर्वघेष्ट ।

मातंग-संज्ञा पुं० हाथी ।

मात-संज्ञा स्त्री० दे० "माता" ।

संज्ञा स्त्री० पराजय ।

वि० पराजित ।

मातदिल-वि० जो गुण के विचार से न बहुत ठंडा हो, न बहुत गरम ।

मातना-कि० अ० मल होना ।

मातवर-वि० विश्वसनीय ।

मातयरी-संज्ञा स्त्री० विश्वसनीयता ।

मातम-संज्ञा पुं० वह रेशा-पीटना आदि जो किसी के मरने पर होता है ।

मातमपुखी-संज्ञा स्त्री० मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना ।

मातलि-संज्ञा पुं० इंद्र का सारथी ।

मातहत-वि० [ संज्ञा मातहती ] किसी की अधीनता में काम करनेवाला ।

माता-संज्ञा स्त्री० १. जन्म देनेवाली स्त्री । २. कोई पूज्य या आदरणीय स्त्री । ३. चेचक ।

वि० [ स्त्री० माती ] मतवाला ।

मातामह-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मातामही ] नाना ।

मातृ-संज्ञा स्त्री० माता ।

मातुल-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मातुला, मातुलानी ] मामा ।

मातुली-संज्ञा स्त्री० मामा की स्त्री ।

मातृ-संज्ञा स्त्री० दे० "माता" ।

मातृका-संज्ञा स्त्री० १. दाई । घाय ।

२. माता । जननी ।

मातृपूजा-संज्ञा स्त्री० विवाह की एक



मुरदासंख-संज्ञ पुं० एक प्रकार का औषध जो कूँके हुए सीसे और सिंदूर से बनता है।

मुरब्बा-संज्ञ पुं० चीनी या मिसरी आदि की चायनी में रचित किया हुआ फलों या मेवों आदि का पाक।

मुरमुराना-क्रि० भ० घुरघुर होना।

मुरलिका-संज्ञ स्त्री० मुरली। घंटी।

मुरलियाँ-संज्ञ स्त्री० दे० "मुरली"।

मुरली-संज्ञ स्त्री० घाँसुरी। घंटी।

मुरलीधर-संज्ञ पुं० श्रीकृष्ण।

मुरघा-संज्ञ पुं० पृथ्वी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा।

† संज्ञ पुं० दे० "मेर"।

मुरघी०-संज्ञ स्त्री० घनुष की छोटी।

मुरशिद-संज्ञ पुं० गुरु।

मुरहाँ-वि० [स्त्री० मुरही] १. (बालक) जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो।

२. नटखट। उपद्रवी।

मुराड़ा-संज्ञ पुं० जलती लकड़ी।

मुराद-संज्ञ स्त्री० १. अभिलाषा।

२. अभिप्राय।

मुरारि-संज्ञ पुं० श्रीकृष्ण।

मुरारी-संज्ञ पुं० दे० "मुरारि"।

मुरासाँ-संज्ञ पुं० कर्णफूल।

मुरीद-संज्ञ पुं० शिष्य। चेला।

मुरम्भना०-क्रि० भ० दे० "मुरम्भाना"।

मुरैठा-संज्ञ पुं० पगड़ी। साफा।

मुरीवत-संज्ञ स्त्री० शील। संकोच।

मुरी-संज्ञ पुं० दे० "मुरगा"।

मुरदनी-संज्ञ स्त्री० मुख पर प्रकट होने वाले मृत्यु के चिह्न।

मुराँ-संज्ञ पुं० पेट में पेंठन होकर बार

बार दस्त होना।

मुराँ-संज्ञ स्त्री० दो छोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया जिसमें दोनों सिरों को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं।

मुराँदार-वि० जिसमें मुराँ पड़ी हो। पेंठनदार।

मुरशिद-संज्ञ पुं० मार्गदर्शक। गुरु।

मुरली-वि० १. शासन या व्यवस्था सेवेधी। २. देशी।

मुरजिम-वि० जिस पर कोई अभियोग हो।

मुरतवी-वि० जिसका समय टाक दिया गया हो। स्थगित।

मुरतानी-संज्ञ स्त्री० १. एक रागिनी। २. एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी।

मुरम्मा-संज्ञ पुं० किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह। गिलट। फुलई।

मुरहाँ-वि० जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो।

मुराकात-संज्ञ स्त्री० आपस में मिलना। भेंट।

मुराकाती-संज्ञ पुं० वह जिससे जान-पहचान हो।

मुराजिम-संज्ञ पुं० नौकर। सेवक।

मुरायम-वि० 'सह' का उलटा। जो कड़ा न हो।

मुरायमियत-संज्ञ स्त्री० मुलायम होने का भाव। नमी।

मुराहजा-संज्ञ पुं० १. देख-भाज। २. रिवाजत।

रीति जिसमें पूर्वों से पितरों का पूजन किया जाता है।

मातृभाषा-संज्ञा स्त्री० वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए बोझना सीखता है।

मात्र-अन्व० केवल। सिर्फ।

मात्रा-संज्ञा स्त्री० १. परिमाण। २. उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर के उच्चारण में लगता है।

मात्रिक-वि० १. मात्रा-संबंधी। २. जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

मात्सर्य-संज्ञा पुं० ईर्ष्या। डाह।

माथा-संज्ञा पुं० सिर का ऊपरी भाग। मस्तक।

माथुर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० माथुरानी ] १. मथुरा का निवासी। २. माथुरों की एक जाति। ३. कायस्थों की एक जाति।

माथे-क्रि० वि० १. मस्तक पर। २. भरोसे।

मादक-वि० नशा उत्पन्न करनेवाला।

मादकता-संज्ञा स्त्री० मादक होने का भाव। नशीलापन।

मादर-संज्ञा स्त्री० माँ। माता।

मादरजाद-वि० १. जन्म का। पैदा-हुशी। २. बिलकुल नंगा।

मादा-संज्ञा स्त्री० स्त्री जाति का प्राणी। नर का उलटा। (जीव-जंतु)

मादा-संज्ञा पुं० १. मूल तत्त्व। २. योग्यता।

माद्री-संज्ञा स्त्री० पांडु राजा की पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।

माघ-संज्ञा पुं० १. चिन्धु। २. वैशाख मास। ३. वसंत ऋतु।

माघवी-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल खगते हैं।

माधुरी-संज्ञा स्त्री० १. मिठास। २.

शोभा।

माधुर्य-संज्ञा पुं० १. मधुरता। २. सुंदरता।

माघी-संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. श्री रामचंद्रजी।

माध्यम-वि० मध्य का। बीचवाला। संज्ञा पुं० कार्यसिद्धि का उपाय या साधन।

माध्यमिक-संज्ञा पुं० १. बौद्धों का एक भेद। २. मध्य देश।

माध्याकर्षण-संज्ञा पुं० पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है।

माध्व-संज्ञा पुं० वैष्णवों के चार मुख्य संप्रदायों में से एक जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

माघी-संज्ञा स्त्री० मदिरा। शराब।

मान-संज्ञा पुं० १. भार, तौल या नाप आदि। २. पैमाना। ३. अभिमान। ४. प्रतिष्ठा।

मानगृह-संज्ञा पुं० कोप-भवन।

मानचित्र-संज्ञा पुं० किसी स्थान का चित्रा हुआ नक्शा।

मानता-संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

मानना-क्रि० अ० १. धीमीकार करना। स्वीकार करना। २. कल्पना करना। ३. ध्यान में लाना।

क्रि० स० १. स्वीकृत करना। २. आदर करना। ३. देवता आदि की भेंट करने का प्रण करना।

माननीय-वि० [ स्त्री० माननीया ] जो मान करने के योग्य हो। पूजनीय।

मान-मनौती-संज्ञा स्त्री० १. मन्नत। मनौती। २. रुदन और मानने की क्रिया।

मुलेठी-संज्ञा स्त्री० घुँघची नाम की लता की जड़ जो शोष के काम में आती है। जेठी मधु। मुलट्टी। मुल्क-संज्ञा पुं० [वि० मुल्की] १. देश। २. प्रांत। प्रदेश।

मुल्ता-संज्ञा पुं० दे० "मैलवी"। मुधकिल-संज्ञा पुं० वह जो अपने किसी काम के लिये कोई वकील नियुक्त करे।

मुश्क-संज्ञा पुं० कस्तूरी। मृगमद। संज्ञा स्त्री० कंधे और कोहनी के बीच का भाग।

मुश्कदाना-संज्ञा पुं० एक प्रकार की लता का बीज जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है।

मुश्किल-वि० कठिन। मुश्कर। संज्ञा स्त्री० कठिनाता। दिक्कत।

मुश्की-वि० कस्तूरी के रंग का। काला।

मुश्त-संज्ञा पुं० मुट्ठी।

मुष्टि-संज्ञा स्त्री० १. मुट्ठी। २. मुक्का।

मुष्टिक-संज्ञा पुं० मुक्का। धूँसा।

मुष्टिका-संज्ञा स्त्री० मुट्ठी।

मुष्टियुद्ध-संज्ञा पुं० धूँसेजड़ी।

मुसकराना-क्रि० अ० बहुत ही मंद रूप से हँसना। मृदु हास।

मुसकराहट-संज्ञा स्त्री० मुसकराने की क्रिया या भाव। मंद हास।

मुसकान-संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

मुसफ्यान-संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

मुसना-क्रि० अ० मूसा जाना। चुराया जाना। (धन आदि)

मुसग्वर-संज्ञा पुं० जमाया हुआ धी-

कुर्बान का रस जिसका व्यवहार शोषधि के रूप में होता है।

मुसम्मात-संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत। मुसलधार-क्रि० वि० दे० "मुसलधार"।

मुसलमान-संज्ञा पुं० [स्त्री० मुसलमानी] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय में हो।

मुसलमानी-वि० मुसलमान संबंधी।

संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रस जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।

मुसल्लम-वि० जिसके खंड न किए गए हों।

मुसल्ला-संज्ञा पुं० नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई।

संज्ञा पुं० दे० "मुसलमान"।

मुसग्वर-संज्ञा पुं० चित्रकार।

मुसहर-संज्ञा पुं० एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जंगली जड़ी-बूटी आदि बेचना है।

मुसाफिर-संज्ञा पुं० यात्री। पथिक।

मुसाफिरखाना-संज्ञा पुं० यात्रियों के, विशेषतः रेल के यात्रियों के, ठहरने का स्थान।

मुसाफिरी-संज्ञा स्त्री० यात्रा। प्रवास।

मुसाहय-संज्ञा पुं० धनवान् या राना आदि का दरबारी।

मुसाहवी-संज्ञा स्त्री० मुसाहय का पद या काम।

मुसीयत-संज्ञा स्त्री० १. तकलीफ़। २. विपत्ति।

मानमरोर-संज्ञा स्त्री० दे० "मन-मुदाय" ।

मानमोचन-संज्ञा पुं० रुठे हुए प्रिय को मनाता ।

मानव-संज्ञा पुं० मनुष्य । आदमी ।

मानवशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें मानव-जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है ।

मानवी-संज्ञा स्त्री० स्त्री । भारी ।

वि० मानव-सम्बन्धी ।

मानस-संज्ञा पुं० १. मन । २. मान-सरोवर ।

वि० १. मन से उत्पन्न । २. मन का विचारा हुआ ।

क्रि० वि० मन के द्वारा ।

मानसपुत्र-संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हो ।

मानसर-संज्ञा पुं० दे० "मानसरोवर" ।

मानसरोवर-संज्ञा पुं० हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध यही झील ।

मानस शास्त्र-संज्ञा पुं० मनोविज्ञान ।

मानसिक-वि० मन की कल्पना से उत्पन्न ।

मानसी-संज्ञा स्त्री० वह पूजा जो मन ही मन की जाय ।

वि० मन का ।

मानहानि-संज्ञा स्त्री० अप्रतिष्ठा । अपमान । येड़उझसी । हतक इज्जत ।

मानहुँ-अन्व० दे० "माने" ।

मानिद-वि० समान । तुल्य ।

मानिक-संज्ञा पुं० लाल रंग का एक मणि । पद्मराग ।

मानिकचंदी-संज्ञा स्त्री० साधारण छोटी सुपारी ।

मानित-वि० सम्मानित । प्रतिष्ठित ।

मानिनी-वि० स्त्री० मानवती ।

संज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रुठ गई हो ।

मानी-वि० [ स्त्री० मानिनी ] १. अहं-कारी । २. सम्मानित ।

संज्ञा स्त्री० अर्थ । मतलब । सारपर्य्य ।

मानुषिक-वि० मनुष्य का ।

मानुषी-वि० मनुष्य-सम्बन्धी ।

माने-संज्ञा पुं० अर्थ । मतलब ।

माने-अन्व० जैसे । गोया ।

मान्य-वि० [ स्त्री० मान्या ] १. मानने योग्य । २. पूजनीय ।

माप-संज्ञा स्त्री० मापने की क्रिया या भाव ।

मापक-संज्ञा पुं० १. पैमाना । २. वह जो मापता हो ।

मापना-क्रि० स० किसी पदार्थ के विस्तार या घनत्व आदि का किसी नियत मान से परिमाण करना । नापना ।

माफ़-वि० जो क्षमा कर दिया गया हो । क्षमिता ।

माफ़कत-संज्ञा स्त्री० १. अनुकूलता । २. मेल । मैत्री ।

माफ़िकां-वि० अनुकूल । अनुसार ।

माफ़ी-संज्ञा स्त्री० क्षमा ।

मापता-संज्ञा स्त्री० अपनापन । आत्मीयता ।

मामलत, मामलती-संज्ञा स्त्री० मामला । व्यवहार की बात ।

मामला-संज्ञा पुं० १. झगदा । विवाद । २. मुकदमा ।

मामा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मामा ] माता

मुख्यान-संज्ञा स्त्री० दे० "मुख-  
कराहट"।

मुस्टंडा-वि० १. मोटा-साड़ा। २.  
गुंडा।

मुस्तकिल-वि० अटल। स्थिर।

मुस्तैद-वि० तत्पर।

मुस्तैदी-संज्ञा स्त्री० १. तत्परता। २.  
कुरती।

मुहकमा-संज्ञा पुं० सरिरता। वि-  
भाग।

मुहताज-वि० १. दरिद्र। कंगाल।  
२. आकांक्षी।

मुहब्बत-संज्ञा स्त्री० १. प्रीति। प्रेम।  
२. दोस्ती। ३. हश्क।

मुहम्मद-संज्ञा पुं० अरब के एक  
प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने इस्लाम  
या मुसलमानी धर्म का प्रवर्तन  
किया था।

मुहम्मदी-संज्ञा पुं० मुसलमान।

मुहर-संज्ञा स्त्री० दे० "मोहर"।

मुहरा-संज्ञा पुं० १. सामने का भाग।  
आगा। २. शतरंज की गोटी।

मुहरम-संज्ञा पुं० अरबी वर्ष का  
पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन  
शहीद हुए थे।

मुहरमी-वि० १. मुह'म-संबंधी।  
२. शोक-व्यंजक। ३. मनहूस।

मुहरिर-संज्ञा पुं० लेखक। मुंशी।

मुहरिरी-संज्ञा स्त्री० मुहरिर का काम।

मुहाफिज-वि० १. दिफाजत करने-  
वाला। २. अदायत का एक कर्म-  
चारी।

मुहाल-वि० १. असंभव। नामुमकिन।  
२. कठिन।

मुहाधरा-संज्ञा पुं० १. रोकमर्रा।

बोलचाल। २. अग्यास। आदत।

मुहासिय-संज्ञा पुं० १. गणितज्ञ।

२. जांचने या हिसाब लेनेवाला।

मुहिम-संज्ञा स्त्री० कठिन या बड़ा  
काम।

मुहुः-अव्य० पार पार।

महत्त-संज्ञा पुं० १. दिन-रात का  
सोसर्वा भाग। २. शुभ समय।

मूंग-संज्ञा स्त्री० पुं० एक अन्न जिसकी  
दाढ़ बनती है।

मूंगफली-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार  
का चुप जिसकी खेती फलों के लिये  
की जाती है। २. चिनिया बादाम।

मूंगा-संज्ञा पुं० समुद्र में रहनेवाले  
एक प्रकार के कृमियों की लाढ़  
ठठी जिसकी गिनती रत्नों में की  
जाती है।

मूँछ-संज्ञा स्त्री० ऊपरी आँठ के ऊपर के  
बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं।

मूँज-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पृथ  
जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और  
बहुत पतली लंबी पत्तियाँ चारों ओर  
रहती हैं।

मूँड़ी-संज्ञा पुं० सिर।

मूँड़न-संज्ञा पुं० चूड़ाकरण सेत्कार।  
मुंडन।

मूँड़ना-क्रि० स० १. सिर के बाल  
घनाना। २. धोखा देकर माल  
वदाना।

मूँड़ी-संज्ञा स्त्री० सिर।

मूँड़ना-क्रि० स० ऊपर से कोई वस्तु  
फेंकाकर छिपाना।

मूक-वि० १. गूंगा। अवाक्। २.  
विवश।

का भाई । माँ का भाई ।  
संज्ञा स्त्री० १. माता । माँ । २. नौक-  
रानी ।

मामूल-संज्ञा पुं० रीति । रवाज ।  
मामूली-वि० १. नियमित । नियत ।  
२. सामान्य ।

माय०-संज्ञा स्त्री० माता ।  
मायका-संज्ञा पुं० स्त्री के लिये उसके  
माता-पिता का घर । नैहर । पीहर ।  
मायना-संज्ञा पुं० वह दिन या तिथि  
जिसमें विवाह में मातृका-पूजन और  
पितृ-निर्मश्रण होता है ।

मायल-वि० झुका हुआ । रुजू ।

माया-संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी । २.  
दौलत । ३. धविद्या । ४. ईश्वर की  
वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा  
से सब काम करती हुई मानी गई है ।

मायादेवी-संज्ञा स्त्री० बुद्ध की माता  
का नाम ।

मायावाद-संज्ञा पुं० ईश्वर के अति-  
रिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को  
अनित्य और असत्य मानने का  
सिद्धांत ।

मायावादी-संज्ञा पुं० वह जो सारी  
सृष्टि का माया या भ्रम समझे ।

मायाविनी-संज्ञा स्त्री० छल या कपट  
करनेवाली स्त्री । ठगिनी ।

मायावी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मायाविनी ]  
१. बहुत बड़ा चालाक । २. जादू-  
गर । ३. एक दानव जो मय का  
पुत्र था ।

मायिक-वि० माया से घना हुआ ।  
घनावटी ।

मार-संज्ञा पुं० १. कामदेव । २.  
विष । जहर । ३. धतूरा ।  
संज्ञा स्त्री० १. मारने की क्रिया या

भाव । २. चोट ।

मारकंडेय-संज्ञा पुं० दे० "मार्कंडेय" ।

मारक-वि० मार डालनेवाला ।

मारका-संज्ञा पुं० चिह्न । निशान ।

मारकाट-संज्ञा स्त्री० १. युद्ध । २.

मारने काटने का काम या भाव ।

मारफीन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
मोटा कंरा कपड़ा ।

मारग-संज्ञा पुं० रास्ता ।

मारगन-संज्ञा पुं० धाण । तीर ।

मारण-संज्ञा पुं० १. मार डालना ।  
हत्या करना । २. एक सांख्यिक  
प्रयोग ।

मारतंड-संज्ञा पुं० दे० "मार्तंड" ।

मारना-क्रि० सं० १. बध करना ।

हथन करना । प्राण लेना । २.

कुरती या मलयुद्ध में विपक्षी को

पछाड़ देना । ३. किसी शारीरिक

आवेग या मनोविकार आदि को

रोकना । ४. धातु आदि को जला-

कर उसकी अस्म तैयार करना ।

मारपेच-संज्ञा पुं० धूर्तता । चाल-  
बाजी ।

मारफत-अव्य० द्वारा । जरिये से ।

मारवाड़-संज्ञा पुं० मारवाड़ राज्य ।

मारवाड़ी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मारवादिनी ]

मारवाड़ देश का निवासी ।

संज्ञा स्त्री० मारवाड़ देश की भाषा ।

मारा-वि० जो मार डाला गया हो ।

मारामार-क्रि० वि० अत्यंत शीघ्रता  
से । बहुत जल्दी ।

मारी-संज्ञा स्त्री० महामारी ।

मारीच-संज्ञा पुं० वह राक्षस जिसने  
सेने का हिरन बनकर रामचंद्र को  
धोखा दिया था ।

मूकता-संज्ञा स्त्री० गूँगापन ।

मूका-संज्ञा पुं० १. छोटा गोल करोखा । मोखा । २. दे० "मुक्का" ।

मूजी-संज्ञा पुं० १. कट पहुँचाने-वाला । २. दुष्ट । खल ।

मूठ-संज्ञा स्त्री० १. मुष्टि । २. किसी थोड़ा या हथियार का वह भाग जो हाथ में रहता है ।

मूठी-संज्ञा स्त्री० दे० "मुठी" ।

मूड़-संज्ञा पुं० दे० "मूँड़" ।

मूढ़-वि० मूर्ख । जड़बुद्धि ।

मूढ़गर्भ-संज्ञा पुं० गर्भ का विगड़ना जिससे गर्भ-स्त्राव आवि होता है ।

मूढ़ता-संज्ञा स्त्री० मूर्खता ।

मूत-संज्ञा पुं० दे० "मूत्र" ।

मूतना-क्रि० भ० पेशाब करना ।

मूत्र-संज्ञा पुं० शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर वपस्थ-मार्ग से निकलने-वाला जल । पेशाब ।

मूत्रकुच्छ-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें पेशाब बहुत कट से या रुक-रुककर होता है ।

मूत्राघात-संज्ञा पुं० पेशाब बंद होने का रोग ।

मूत्राशय-संज्ञा पुं० नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है ।

मूरा-संज्ञा पुं० १. मूल । जड़ । २. मूलधन ।

मुख-वि० दे० "मूर्ख" ।

मूरत-संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति" ।

मूरतिवंत-वि० मूर्तिमान् । सशरीर ।

मूरि, मूरी-संज्ञा स्त्री० १. मूल । २. जड़ी ।

मूर्ख-वि० दे० "मूर्ख" ।

मूर्ख-वि० बेवकूफ । अज्ञ ।

मूर्खता-संज्ञा स्त्री० मूढ़ता । नासमझी ।

मूर्च्छन-संज्ञा पुं० वेदोऽश करना ।

मूर्च्छना-संज्ञा स्त्री० संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह-अवरोह ।

मूर्च्छा-संज्ञा स्त्री० वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है ।

मूर्च्छित, मूर्च्छित-वि० जिसे मूर्च्छा आये हो । अचेत ।

मूर्त्त-वि० जिसका कुछ रूप या आकार हो ।

मात्त-संज्ञा स्त्री० १. शरीर । देह । २. प्रतिमा ।

मात्तकार-संज्ञा पुं० मूर्त्ति बनाने-वाला ।

मूर्त्तिपूजक-संज्ञा पुं० वह जो मूर्त्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो ।

मूर्त्तिपूजा-संज्ञा स्त्री० मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना ।

मूर्त्तिमान्-वि० [ स्त्री० मूर्त्तिमती ] १. जो रूप धारण किए हो । २. साक्षात् । प्रत्यक्ष ।

मूर्द्ध-संज्ञा पुं० सिर ।

मूर्द्धन्य-वि० मूर्द्धा से संबंध रखने-वाला ।

मूर्द्धन्यघर्ण-संज्ञा पुं० वे घर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है । यथा—अ, ऊ, इ, उ, ऋ, ए, र और य ।

मूर्द्धा-संज्ञा पुं० सिर ।

मूर्द्धाभिषेक-संज्ञा पुं० [ वि० मूर्द्धा-

मासत-संज्ञा पुं० पायु । हवा ।  
 मासति-संज्ञा पुं० १. हलुमान । २. भीम ।  
 मारु-संज्ञा पुं० एक राग जो युद्ध के समय बजाया और गाया जाता है ।  
 मारि-अव्य० घबड़ा से ।  
 मार्कंडेय-संज्ञा पुं० शृङ्गड ऋषि के पुत्र । कहते हैं कि ये अपने तपो-बल से सदा जीवित रहते हैं और रहेंगे ।  
 मार्का-संज्ञा पुं० दे० "मारका" ।  
 मार्ग-संज्ञा पुं० रास्ता ।  
 मार्गण-संज्ञा पुं० अन्येषण । डूँढ़ना ।  
 मार्गशीर्ष-संज्ञा पुं० अग्रहण मास । कात्तिक के बाद का महीना ।  
 मार्गो-संज्ञा पुं० मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति । यात्री ।  
 मार्जन-संज्ञा पुं० १. सफाई । २. चमा ।  
 मार्जनी-संज्ञा स्त्री० काजू ।  
 मार्जार-संज्ञा पुं० [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली ।  
 मार्जित-वि० साफ किया हुआ ।  
 मार्तण्ड-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 मार्दव-संज्ञा पुं० अहंकार का त्याग ।  
 मार्फत-अव्य० द्वारा । जरिए से ।  
 मार्मिक-वि० जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े ।  
 मार्मिकता-संज्ञा स्त्री० मार्मिक होने का भाव ।  
 माल-संज्ञा पुं० पहलवान । कुरती खड़गवाला ।  
 † संज्ञा स्त्री० माला ।  
 संज्ञा पुं० १. संपत्ति । धन । २. सामग्री । ३. अय-विक्रय का पदार्थ । ४.

वस्त्र और सुखादु भोजन ।  
 मालकोश-संज्ञा पुं० संपूर्ण जाति का एक राग ।  
 मालखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ माल-असबाब रहता हो । भंडार ।  
 मालगाड़ी-संज्ञा स्त्री० रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल लादा जाता है ।  
 मालगुज्जार-संज्ञा पुं० मालगुजारी देनेवाला पुरुष ।  
 मालगुजारी-संज्ञा स्त्री० वह भूमि-कर जो जमींदार से सरकार लेती है ।  
 माल-गोदाम-संज्ञा पुं० स्टेशन पर वह स्थान जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है ।  
 मालती-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जो बड़े वृक्षों पर घटाटोप फैलती है ।  
 मालदार-वि० धनी ।  
 मालद्वीप-संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पश्चिम और का एक द्वीपसमूह ।  
 मालपुत्रा-संज्ञा पुं० पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान ।  
 मालव-संज्ञा पुं० १. मालवा देश । २. एक राग जिसे भैरव भी कहते हैं । ३. मालव देश-वासी या मालव का पुरुष ।  
 वि० मालव देश-संबंधी । मालवे का ।  
 मालवा-संज्ञा पुं० एक प्राचीन देश जो पश्चिम मध्य भारत में है ।  
 मालवीय-वि० मालव देश का निवासी ।  
 माला-संज्ञा स्त्री० फूलों का हार । गजरा ।  
 मालामाल-वि० बहुत संपन्न ।  
 मालिक-संज्ञा पुं० १. ईश्वर । अधिपति । २. स्वामी । ३. पति । शोहर ।



मिषिक ] सिर पर अभिषेक या जल-  
सिंघन ।

मूर्धा-संज्ञा स्त्री० मरोड़फली ।

मूल-संज्ञा पुं० १. पेड़ों का वह भाग  
जो पृथ्वी के नीचे रहता है । २.  
पूँजी ।

मूलक-संज्ञा पुं० १. मूली । २. मूल  
स्वरूप ।

मूलद्रव्य-संज्ञा पुं० आदिम द्रव्य या  
भूत जिससे और द्रव्य बने हों ।

मूलधन-संज्ञा पुं० वह असल धन  
जो किसी व्यापार में लगाया जाय ।  
पूँजी ।

मूलपुरुष-संज्ञा पुं० किसी वंश का  
आदि-पुरुष जिससे वंश चला हो ।

मूलस्थली-संज्ञा स्त्री० घाला । घाल-  
घाल ।

मूलस्थान-संज्ञा पुं० बाप-दादा की  
जगह ।

मूलाधार-संज्ञा पुं० मानव शरीर के  
भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र ।  
(योग)

मूली-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी  
जड़ मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती  
और खाई जाती है ।

मूल्य-संज्ञा पुं० किसी वस्तु के बदले  
में मिलनेवाला धन । कीमत ।

मूल्यवान्-वि० जिसका दाम अधिक  
हो । कीमती ।

मूप, मूपक-संज्ञा पुं० चूड़ा ।

मूस-संज्ञा पुं० चूड़ा ।

मूसदानी-संज्ञा स्त्री० चूड़ा फँसाने का  
पिंजड़ा ।

मसना-क्रि० स० घुंराकर खे जाना ।

मसर, मसल-संज्ञा पुं० १. धान  
कूटने का लंबा मोटा डंडा । २.

एक चक्र जिसे बलराम धारण  
करते थे ।

मूसलधार-क्रि० वि० मूसल के समान  
मोटी धार से । ( वृष्टि )

मूसला-संज्ञा पुं० मोटी और सीधी  
जड़ जिसमें इधर-उधर सूत या शा-  
खाएँ न फूटो हों ।

मसली-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी  
जड़ औषध के काम में आती है ।

मूसा-संज्ञा पुं० १. चूड़ा । २.  
यहदियों के एक पैगंबर जिनको  
चुदा का नूर दिखाई पड़ा था ।

मृग-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मृगी ] १. पशु-  
मात्र, विशेषतः वन्य-पशु । २.  
हिरन ।

मृगचर्म-संज्ञा पुं० हिरन का चमड़ा  
जो पवित्र माना जाता है ।

मृगलाला-संज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म" ।

मृगजल-संज्ञा पुं० मृगतृष्णा की लहर ।

मृगतृषा, मृगतृष्णा-संज्ञा स्त्री० जल  
की लहरों की यह मिथ्या प्रतीति जो  
कभी कभी ऊसर मैदानों में, कदा  
धूप पड़ने के समय होती है ।

मृगदाय-संज्ञा पुं० कारी के पास  
'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन  
नाम ।

मृगनाथ-संज्ञा पुं० सिंह ।

मृगनाभि-संज्ञा पुं० कस्तूरी ।

मृगनेत्री-संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचना" ।

मृगमद-संज्ञा पुं० कस्तूरी ।

मृगमरीचिका-संज्ञा स्त्री० मृगतृष्णा ।

मृगया-संज्ञा पुं० शिकार । आखेट ।

मृगरोचन-संज्ञा पुं० कस्तूरी ।

मृगलोचना-वि० स्त्री० हरिण के  
समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री) ।

का प्राचीन नाम ।  
 मिथुन-संज्ञा पुं० १. स्त्री और पुरुष का जोड़ा । २. संयोग ।  
 मिथ्या-वि० असत्य । झूठ ।  
 मिथ्यात्व-संज्ञा पुं० मिथ्या होने का भाव ।  
 मिथ्याहार-संज्ञा पुं० अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना ।  
 मनेती-संज्ञा स्त्री० दे० "विनति" ।  
 मिनहा-वि० जो काट या घटा लिया गया हो ।  
 मिन्नत-संज्ञा स्त्री० प्रार्थना । निवेदन ।  
 मिमियाना-कि० अ० भेड़ या चकरी का घोलना ।  
 मियाँ-संज्ञा पुं० १. सुसलमान । २. पति । ३. महाशय ।  
 मियाँ मिट्ठू-संज्ञा पुं० १. भीठी बोली बोझनेवाला । मधुर-भाषी । २. सौचा ।  
 मियान-संज्ञा स्त्री० दे० "म्यान" ।  
 मियाना-संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी ।  
 मिरगी-संज्ञा स्त्री० अपस्मार रोग ।  
 मिरचा-संज्ञा पुं० लाल मिर्च ।  
 मिरज़ई-संज्ञा स्त्री० कमर तक का एक प्रकार का बंददार धंगा ।  
 मिरजा-संज्ञा पुं० १. मीर या अमीर का खड़का । २. मुगलों की एक वंशधि ।  
 मिर्च-संज्ञा स्त्री० कुछ प्रसिद्ध तिष्ठ फलों और फलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत काली मिर्च, लाल मिर्च आदि हैं ।  
 मिलफा-संज्ञा स्त्री० ज़मीन-जायदाद ।  
 मिलन-संज्ञा पुं० मिलने की क्रिया या

भाव । मिश्राप ।  
 मिलनसार-वि० [ संज्ञा मिलनसारी ] सद्ब्यवहार रखनेवाला और सुशील ।  
 मिलना-कि० स० १. सम्मिलित होना । २. भेंट होना । मुलाकात होना । ३. प्राप्त होना ।  
 मिलनी-संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रस्म । इसमें धन्या-पक्ष के लोग घर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नकद देते हैं ।  
 मिलवाना-कि० स० मिलने का काम दूसरे से कराना ।  
 संज्ञा स्त्री० मिलाने की क्रिया या भाव ।  
 मिलान-संज्ञा पुं० १. मिलाने की क्रिया या भाव । २. तुलना ।  
 मिलाना-कि० स० १. भिन्न भिन्न पदार्थों को एक करना । २. ठीक होने की जाँच करना । ३. भेंट या परिचय कराना ।  
 मिलाप-संज्ञा पुं० मिलने की क्रिया या भाव ।  
 मिलाघट-संज्ञा स्त्री० १. मिछाप आने का भाव । २. खोट ।  
 मिलिक-संज्ञा स्त्री० ज़मींदारी ।  
 मिलित-वि० मिछा हुआ । युक्त ।  
 मिलोना-कि० स० १. दे० "मिलाना" । २. गौ का दूध दुहना ।  
 मिलिकयत-संज्ञा स्त्री० १. ज़मींदारी । २. जायदाद ।  
 मिन्नत-संज्ञा स्त्री० भेल-जोड़ । धन-धृता ।  
 मिश्र-वि० १. मिला या मिलाया हुआ । २. जिसमें कई भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुओं की संख्या हो । ( गणित )

मृगलोचना-संज्ञा स्त्री० दे० "मृग-लोचना" ।

मृगवारि-संज्ञा पुं० मृगतृष्णा का जल ।

मृगशिरा-संज्ञा पुं० सत्ताइस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र ।

मृगांक-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

मृगाशन-संज्ञा पुं० सिंह ।

मृगिनी-संज्ञा स्त्री० हरिणी ।

मृगी-संज्ञा स्त्री० १. हरिणी । हिरनी ।  
२. अपसार नामक रोग ।

मृगेंद्र-संज्ञा पुं० सिंह ।

मृडा, मृडानी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

मृणाल-संज्ञा स्त्री० कमल का डंठल ।

मृणालिका-संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल" ।

मृणालिनी-संज्ञा स्त्री० कमलिनी ।

मृत-वि० मरा हुआ । मुर्दा ।

मृतक-संज्ञा पुं० मरा हुआ प्राणी ।

मृतक कर्म-संज्ञा पुं० अत्येष्टि ।

मृतकधूम-संज्ञा पुं० राख । भस्म ।

मृतसंजीवनी-संज्ञा स्त्री० एक घूटी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है ।

मृत्तिका-संज्ञा स्त्री० मिट्टी । खाक ।

मृत्युजय-संज्ञा पुं० शिव का एक रूप ।

मृत्यु-संज्ञा स्त्री० प्राण छूटना । मरण ।

मृत्युलोक-संज्ञा पुं० १. यमलोक ।

२. मर्यालोक ।

मृदंग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ बड़ा होता है ।

मृदु-वि० [ स्त्री० मृदु ] १. कोमल ।

२. सुकुमार । ३. धीमा ।

मृदुता-संज्ञा स्त्री० सुलाभमयता ।

मृदुल-वि० कोमल । नरम ।

मृन्मय-वि० मिट्टी का बना हुआ ।

मृषा-अव्य० झूठमूठ ।

वि० असत्य । झूठ ।

मै-अव्य० अधिकरणकारक का चिह्न । आधार या अवस्थान-सूचक शब्द ।

मेकल-संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत का एक भाग जिसमें भ्रमरकंठक है ।

मेख-संज्ञा पुं० दे० "मेघ" ।

संज्ञा स्त्री० गाढ़ने के लिये एक ओर मुकीली गढ़ी हुई कील । खूँदी ।

मेखल-संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला" ।

मेखला-संज्ञा स्त्री० १. वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य के भाग में इसे चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो । २. करघनी ।

मेखली-संज्ञा स्त्री० एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं ।

मेघ-संज्ञा पुं० आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है । बादल ।

मेघहंवर-संज्ञा पुं० १. मेघगर्जन ।  
२. बड़ा शमियाना ।

मेघनाद-संज्ञा पुं० १. मेघ का गर्जन ।  
२. रावण का पुत्र इंद्रजित् ।

मेघमाला-संज्ञा स्त्री० बादलों की घटा । कादंयिनी ।

मेघराज-संज्ञा पुं० इंद्र ।

मेघा-संज्ञा पुं० मेढक ।

मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित-वि० बादलों से ढका या छाया हुआ ।

मेचकता-संज्ञा स्त्री० कालापन ।

मेचकताई-संज्ञा स्त्री० दे० "मेचकता" ।

संज्ञा पुं० सरयूपारीय, कान्यकुब्ज और साखत-आदि आक्षेपों के एक वर्ग की श्रेणी ।

मिश्रण-संज्ञा पुं०-दे० या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया ।

मिश्रित-वि० एक में मिलाया हुआ ।

मिष-संज्ञा पुं० १. छल । कपट । २. बहाना ।

मिष्ट-वि० मीठा । मधुर ।

मिष्टभाषी-संज्ञा पुं० वह जो मीठा बोलता हो ।

मिष्टान्न-संज्ञा पुं० मिठाई ।

मिस-संज्ञा पुं० बहाना ।

मिसकीन-वि० श्रेयशाली । दीन ।

मिसना-कि० प्र० मीठा या मिला जाना ।

मिसरा-संज्ञा पुं० बर्तन या फारसी आदि की कविता का एक चरण ।

मिसरी-संज्ञा स्त्री० १. दोयारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी । २. मिस्र देश का निवासी ।

मिसाल-संज्ञा स्त्री० उपमा ।

मिसिल-संज्ञा स्त्री० किसी एक मुक-दमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल कागज-पत्र ।

मिस्तर-संज्ञा पुं० काठ का वह औजार जिससे राज लोग छत पीटते हैं ।

पिटना ।

संज्ञा पुं०-दे० "मेहतर" ।

मिस्तर-संज्ञा पुं० वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो ।

मिस्तरखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ लोहार, मजदूर आदि काम करते हैं ।

मिस्र-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध देश जो अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है ।

मिस्री-संज्ञा स्त्री० दे० "मिसरी" ।

मिस्ल-वि० समान । तुल्य ।

मिस्सी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो सघवा छियाँ दलों में लगाती है ।

मिहिर-संज्ञा पुं० सूर्य ।

मौजना-कि० प्र० स० हाथों से मलना ।

मौड़-संज्ञा स्त्री० संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का थरा हम सुंदरता से कहना जिसमें दोनों स्वरों का संयोजन स्पष्ट हो जाय । गमक ।

मौड़ना-कि० प्र० स० हाथों से मलना ।

मीआद-संज्ञा स्त्री० अवधि ।

मीआदी-वि० जिसके लिये कोई अवधि नियत हो ।

मीचना-कि० प्र० स० ( भाँसे ) बंद करना । मूँदना ।

मीजान-संज्ञा स्त्री० कुल संबंधियों का योग । जोड़ । ( गणित ) ।

मीठा-वि० १. चीनी या शहद आदि के स्वादवाला । मधुर । २. स्वादिष्ट ।

संज्ञा पुं० १. मिठाई । २. शुद्ध ।

मीठा तेल-संज्ञा पुं० तिल का तेल ।

मीठा नीच-संज्ञा पुं० जमीरी नीच ।

मीठा पानी-संज्ञा पुं० नीच का अंगरेजी सत मिला हुआ पानी । लेमनेड ।

मीठी छुरी-संज्ञा स्त्री० वह जो देखने में मिय, पर वास्तव में शत्रु हो ।

मीन-संज्ञा पुं० मछली ।

मीनकेतन-संज्ञा पुं० कामदेव ।

मेज़-संज्ञा स्त्री० लंबी-चौड़ी जैसी चौकी। टेबल।

मेज़वान-संज्ञा पुं० आतिथ्य करने वाला। मेहमानदार।

मेड़-संज्ञा पुं० मज़दूरों का अफसर या सरदार। टंडेल। जमादार।

मेड़नहारा-संज्ञा पुं० मिटानेवाला। मेड़ना-क्रि० स० दे० "मिटाना"।

मेड़-संज्ञा पुं० मिटो डालकर बनाया हुआ खेत या ज़मीन का घेरा।

मेड़िया-संज्ञा स्त्री० मढ़ी।

मेड़क-संज्ञा पुं० एक जलस्थलचारी जंतु। मंड़क। दड़ुर।

मेड़ा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मेड़ ] सोंगवाला एक चौपाया जो घने रोपों से ढका होता है।

मेढ़ी-संज्ञा स्त्री० तीन छड़ियों में गुंथी हुई चौड़ी।

मेथी-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ साग की तरह खाई जाती हैं।

मेथौरी-संज्ञा स्त्री० मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई घरी।

मेढ़-संज्ञा पुं० शरीर के अंदर की बसा नामक धातु। चरबी।

मेढ़ा-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध औषधि। संज्ञा पुं० पाकाशय। पेट।

मेदिनी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरती।

मेघ-संज्ञा पुं० यज्ञ।

मेघा-संज्ञा स्त्री० पात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति।

मेघावी-वि० [ स्त्री० मेघविनी ] १. जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। २. बुद्धिमान्।

मेनका-संज्ञा स्त्री० स्वर्ग की एक

चप्तरा।

मेना-क्रि० स० पकवान में मोयन डालना।

मेम-संज्ञा स्त्री० १. युरोप या अमेरिका आदि की स्त्री। २. तार का एक पत्ता।

मेमना-संज्ञा पुं० भेद का यज्ञ।

मेमार-संज्ञा पुं० हमारत बनानेवाला। यवई। राजगीर।

मेव-वि० जो नापा जा सके।

मेखना-क्रि० स० मिश्रित करना। मिलाना।

मेरा-सर्व० [ स्त्री० मेरे ] "मैं" के संबंधकारक का रूप।

मेराउ, मेरावा-संज्ञा पुं० मेड़। मिलाप।

मेरु-संज्ञा पुं० एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है।

मेरुदंड-संज्ञा पुं० रीढ़।

मेरे-सर्व० 'मेरा' का बहुवचन।

मेल-संज्ञा पुं० १. मिलने की क्रिया या भाव। २. एकता। सुलह। ३. दोस्ती।

मेलना-क्रि० स० मिलाना।

मैला-संज्ञा पुं० मीड़-भाड़। जमावड़ा।

मैली-संज्ञा पुं० मुलाकाती।

वि० जल्दी हिल-मिल जानेवाला।

मेव-संज्ञा पुं० राजपूताने की घोर घसनेवाली एक छुटेरी जाति।

मेघा-संज्ञा पुं० किशमिय, पादाम, अखरोट आदि सुप्ताप हुए फल।

मेवाटी-संज्ञा स्त्री० एक पकवान जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं।

मेवाड़-संज्ञा पुं० राजपूताने का एक

(कली) ३. आघा खुला, आघा बंद । ४. कपकता हुआ । (नेत्र)  
 मुक्ता-संज्ञा पुं० घँधी, मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय या जिससे मारा जाय ।  
 मुक्ती-संज्ञा पुं० १. मुक्ता । घूँसा । २. शरीर की शिथिलता दूर करने के लिये मुट्ठियाँ घाँघकर धीरे धीरे आघात ।  
 मुक्तेबाजी-संज्ञा स्त्री० मुक्कों की लड़ाई । घूँसेबाजी ।  
 मुक्त-वि० जिसे मुक्ति मिल गई हो ।  
 मुक्तकंठ-वि० जिसे कहने में आगा-पीछा न हो ।  
 मुक्तक-संज्ञा पुं० वह कविता जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग कुछ दूर तक न पड़े । फुटकर कविता ।  
 मुक्तहस्त-वि० [ संज्ञा मुक्तहस्ता ] जो खुले हाथों दान करता हो ।  
 मुक्ता-संज्ञा स्त्री० मोती ।  
 मुक्ताफल-संज्ञा पुं० मोती ।  
 मुख-संज्ञा पुं० मुँह ।  
 मुखड़ा-संज्ञा पुं० मुख । चेहरा ।  
 मुखतार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और काम करने-वाला ।  
 मुखतारी-संज्ञा स्त्री० मुखतार होकर दूसरे के मुकदमे खदमे का काम या पेशा ।  
 मुखबंध-संज्ञा पुं० ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका ।  
 मुखधिर-संज्ञा पुं० जासूस । गोईदा ।  
 मुखधिरी-संज्ञा स्त्री० खूबर देने का काम । मुखधिर का काम ।  
 मुखर-वि० १. जो अप्रिय बोलता हो । २. बकवादी ।

मुखशुद्धि-संज्ञा स्त्री० भोजन के उप-  
 रांत पान, सुपारी यादि खाकर मुँह  
 शुद्ध करना ।  
 मुखस्थ-वि० दे० "मुखाग्र" ।  
 मुखाग्र-वि० जो ज़बानी याद हो ।  
 कंडस्थ ।  
 मुखापेक्षा-संज्ञा स्त्री० दूसरों का मुँह  
 ताकना । दूसरों के आश्रित रहना ।  
 मुखापेक्षी-संज्ञा पुं० वह जो दूसरों  
 का मुँह ताकता हो ।  
 मुखालिफ-वि० जो खिलाफ हो ।  
 विरोधी ।  
 मुखिया-संज्ञा पुं० १. नेता । २.  
 अगुया ।  
 मुख्तसर-वि० संक्षिप्त ।  
 मुख्य-वि० [ संज्ञा मुख्यता ] सब में  
 बड़ा । प्रधान ।  
 मुगदर-संज्ञा पुं० एक प्रकार की गाव-  
 दुमी, भारी मुँगरी जिसका प्रायः  
 जोड़ा होता है और जिसका उपयोग  
 व्यायाम के लिये किया जाता है ।  
 मुगल-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मुगलानी ] १.  
 मंगोल देश का निवासी । २.  
 मुसलमानों का एक वर्ग ।  
 मुग्ध-वि० (घात) जो बहुत खोल-  
 कर या स्पष्ट करके न कही जाय ।  
 मुग्ध-वि० [ संज्ञा मुग्धता ] आसक्त ।  
 मोहित ।  
 मुचकुंद-संज्ञा पुं० एक बड़ा पेड़ ।  
 मुचलका-संज्ञा पुं० वह प्रतिज्ञापत्र  
 जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनु-  
 चित काम न करने अथवा किसी  
 नियत समय पर अदालत में उप-  
 स्थित होने की प्रतिज्ञा हो ।  
 मुञ्जदर-संज्ञा पुं० जिसकी मूँछें घड़ी  
 घड़ी हों ।

प्रांत जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौर थी ।

मेघात-संज्ञा पुं० राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम ।

मेघाती-संज्ञा पुं० मेघात का रहने वाला ।

मेघाफुरोश-संज्ञा पुं० मेघे घेचने वाला ।

मेघासा-संज्ञा पुं० क़िला । गढ़ ।

मेघासी-संज्ञा पुं० घर का मालिक ।

मेघ-संज्ञा पुं० भेड़ ।

मेघ संक्रांति-संज्ञा स्त्री० मेघ राशि पर सूर्य के आने का योग या काल । ( पर्व )

मेहदी-संज्ञा स्त्री० एक झाड़ी । इसकी पत्तियों को पीसकर जगाने से लाल रंग आता है । इसी से खिया इसे हाथ-पैर में लगाती हैं ।

मेह-संज्ञा पुं० १. प्रघाव । २. प्रमेह रोग ।

संज्ञा पुं० १. मेघ । २. वर्षा ।

मेहतार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मेहतानी ] सुसज्जमान भंगी ।

मेहनत-संज्ञा स्त्री० श्रम । प्रयास ।

मेहनताना-संज्ञा पुं० किसी काम का पारिश्रमिक या मज़दूरी ।

मेहनती-वि० मेहनत करनेवाला ।

मेहमान-संज्ञा पुं० अतिथि । पाहुना ।

मेहमानदारी-संज्ञा स्त्री० अतिथि-संस्कार ।

मेहमानी-संज्ञा स्त्री० आतिथ्य । पहुनाई ।

मेहर-संज्ञा स्त्री० कृपा । दया ।

मेहरवान-वि० कृपाशु । दयालु ।

मेहरवानी-संज्ञा स्त्री० दया । कृपा ।

मेहरा-संज्ञा पुं० खियों की सी चेष्टा-वाला ।

मेहराव-संज्ञा स्त्री० द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग ।

मेहरी-संज्ञा स्त्री० १. स्त्री । २. पत्नी ।

मै-सर्व० सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप ।

मै-अभ्य० दे० "मय" ।

मैका-संज्ञा पुं० दे० "मायका" ।

मैगल-संज्ञा पुं० मस्त हाथी ।

वि० मस्त । ( हाथी के लिये )

मैजल-संज्ञा स्त्री० १. पड़ाव । २. मफ़र ।

मैत्रो-संज्ञा स्त्री० मित्रवा । दोस्ती ।

मैत्रेयी-संज्ञा स्त्री० १. याज्ञवल्क्य की स्त्री । २. अहल्या ।

मैथिल-वि० मिथिला देश का । संज्ञा पुं० मिथिला देश का निवासी ।

मैथिली-संज्ञा स्त्री० जानकी । सीता ।

मैथुन-संज्ञा पुं० स्त्री के साथ पुरुष का समागम ।

मैदा-संज्ञा पुं० बहुत महीन आटा ।

मैदान-संज्ञा पुं० १. लंबा-चौड़ा सम-तल स्थान । सपाट भूमि । २. कोई लंबी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय । ३. युद्धक्षेत्र ।

मैत-संज्ञा पुं० कामदेव ।

मैनफल-संज्ञा पुं० ममोले, आकार का एक कँटीला वृक्ष ।

मैनसिल-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीनी पातु ।

मैना-संज्ञा स्त्री० काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की सी बोली बोलने लगता है ।

मैनाक-संज्ञा पुं० एक पर्वत जो हिमा-

लय का पुत्र माना जाता है ।  
 मैमंत-वि० मदेन्मत्त ।  
 मैया-संज्ञा स्त्री० माता । माँ ।  
 मैरा-संज्ञा स्त्री० सर्प के विष की लहर ।  
 मैल-संज्ञा स्त्री० गर्द, धूल आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक-दमक नष्ट हो जाती है ।  
 मैलखोरा-वि० ( रंग आदि ) जिस पर जमी हुई मैल जख्मों दिखाई न दे ।  
 मैला-वि० १. मलिन । अस्वच्छ । २. विकार-युक्त ।  
 संज्ञा पुं० गलीज ।  
 मैला-कुचैला-वि० जो बहुत मैले कपड़े पहने हुए हो ।  
 मैलापन-संज्ञा पुं० मलिनता ।  
 मो०-अर्थ० दे० "मै" ।  
 मोछ-संज्ञा स्त्री० दे० "मूछ" ।  
 मोढ़ा-संज्ञा पुं० घास आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन ।  
 मो०-सर्व० १. मेग । २. श्वधी और प्रजभाषा में "मै" का वह रूप जो इसे कर्त्ता कारक के अतिरिक्त और किसी कारक-चिह्न खगने के पहले प्राप्त होता है ।  
 मोक्ष-संज्ञा पुं० १. बंधन से छूट जाना । २. शास्त्रों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना ।  
 मोक्षद-संज्ञा पुं० मोक्ष देनेवाला ।  
 मोखा-संज्ञा पुं० बहुत छोटी खिड़की । झरोखा ।  
 मोगरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

चड़िया बड़ा बेला । ( पुष्प )  
 मोगल-संज्ञा पुं० दे० "मुगल" ।  
 मोघ-वि० निष्फल । धुनेवाला ।  
 मोच-संज्ञा स्त्री० शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से झधर-झधर खिसक जाना ।  
 मोचन-संज्ञा पुं० बंधन आदि से छुड़ाना ।  
 मोचना-कि० सं० १. छेड़ना । २. छुड़ाना ।  
 मोची-संज्ञा पुं० वह जो जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो ।  
 वि० [ स्त्री० मोचिनी ] छुड़ानेवाला ।  
 मोछ-संज्ञा स्त्री० दे० "मूछ" ।  
 मोझा-संज्ञा पुं० पिरों में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा ।  
 मोड़-संज्ञा स्त्री० गठरी । मोटरी ।  
 संज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा घेला जिससे रोते सींचने के लिये कूर्प से पानी निकालते हैं ।  
 वि० दे० "मोटा" ।  
 मोटरी-संज्ञा स्त्री० गठरी ।  
 मोटा-वि० [ स्त्री० मोटी ] जिसका शरीर चरबी आदि के कारण बहुत फूल गया हो ।  
 मोटाई-संज्ञा स्त्री० १. मोटे होने का भाव । २. शरीररत । पाजीपन ।  
 मोटाना-कि० अ० १. मोटा होना । २. अभिमान होना ।  
 मोटिया-संज्ञा पुं० १. मोटा और घुर-घुरा देशी कपड़ा । खरद । खादी । २. बोकल होनेवाला ।  
 मोठ-संज्ञा स्त्री० मूँग की तरह का एक मोटा घब ।  
 मोड़-संज्ञा पुं० रास्ते आदि में घूम जाने का स्थान ।



का भाव । स्वामिर्भव ।  
 रउरे-संज्ञा ० आप । जनाप ।  
 रकुषा-संज्ञा पुं० चेशफत्र ।  
 रकुम-संज्ञा स्त्री० १. घन । संपत्ति ।  
 २. प्रकार । तरह ।  
 रकाय-संज्ञा स्त्री० घोड़ों की काठी का पावदान जिससे बैठने में सहारा लेते हैं ।  
 रकावी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की द्विदली छोटी घाली । सरसरी ।  
 रकोथ-संज्ञा पुं० प्रेमिका का दूसरा प्रेमी ।  
 रक्त-संज्ञा पुं० जहू । रुधिर । खून ।  
 वि० १. रंगा हुआ । २. लाल ।  
 रक्तकंठ-संज्ञा पुं० कोयल ।  
 रक्तकमल-संज्ञा पुं० लाल कमल ।  
 रक्तचंदन-संज्ञा पुं० लाल चंदन ।  
 रक्तता-संज्ञा स्त्री० लाली । सुर्खी ।  
 रक्तपात-संज्ञा पुं० ऐसा खड़ाई-झगड़ा जिसमें लोग ज़ख्मी हों । खून-पराधी ।  
 रक्तपित्त-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है । २. नकसीर ।  
 रक्तधीज-संज्ञा पुं० एक राक्षस जो शुभ और निशुभ का सेनापति था ।  
 रक्तस्नाय-संज्ञा पुं० किसी अंग से रक्त का बहना या निकलना ।  
 रक्तातिसार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का अतिसार जिसमें खून के दस्त आते हैं ।  
 राक्तफा-संज्ञा स्त्री० घुंघरी । रत्ती ।  
 रक्ष-संज्ञा पुं० रक्षक । रक्षवाला ।  
 संज्ञा पुं० राक्षस ।  
 रक्षक-संज्ञा पुं० रक्षा करनेवाला ।  
 रक्षण-संज्ञा पुं० रक्षा करना ।  
 रक्षा-संज्ञा स्त्री० आपत्ति, कष्ट या नाश

आदि से बचाना ।  
 रक्षागृह-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ प्रसूता प्रसव करे । सुत्तिकागृह ।  
 रक्षाबंधन-संज्ञा पुं० हिंदुओं का एक त्यौहार जो श्रावण शुक्ल पौर्णिमा को होता है ।  
 रक्षित-वि० १. जिसकी रक्षा की गई हो । २. पाखा-पोखा ।  
 रक्ष्य-वि० रक्षा करने के योग्य ।  
 रक्षना-क्रि० स० १. एक वस्तु पर या दूसरी वस्तु में स्थित करना । बहराना । २. रहन करना । ३. स्त्री से संबंध करना ।  
 रक्षनी-संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री । उपपत्नी । रखेली ।  
 रखवाई-संज्ञा स्त्री० [ हिं० रखना, या रक्षाना ] खेतों की रखवाली ।  
 रखवाना-क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना ।  
 रखवाला-संज्ञा पुं० १. रक्षक । २. पहरेदार ।  
 रखवाली-संज्ञा स्त्री० रक्षा करने की क्रिया या भाव । हिफाजत ।  
 रक्षाई-संज्ञा स्त्री० रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी ।  
 रखाना-क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना ।  
 रखेली-संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी" ।  
 रखैया-संज्ञा पुं० दे० "रखरू" ।  
 रग-संज्ञा स्त्री० शरीर में की नस या नाड़ी ।  
 रगड़-संज्ञा स्त्री० १. रगड़ने की क्रिया या भाव । घर्षण । २. भारी श्रम ।  
 रगड़ना-क्रि० स० घर्षण करना ।  
 क्रि० भ० बहुत मेहनत करना ।  
 रगड़वाना-क्रि० स० रगड़ने का काम

मोड़ना-क्रि० सं० १. फेरना । २. सह लगाना ।

मोतिया-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का धेला । २. एक प्रकार का सलमा ।  
वि० १. हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का ( रंग ) ।  
२. छोटे गोल दानों का ।

मोतियाविंद-संज्ञा पुं० साँख का एक रोग जिसमें उसके एक परदे में मोल फिँसो सी पड़ जाती है ।

मोती-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में सीपी में से निकलता है ।

संज्ञा स्त्री० बाली जिसमें मोती पड़े रहते हैं ।

मोतीचूर-संज्ञा पुं० छोटी बुंदियों का लड्डू ।

मोतीफिरा-संज्ञा पुं० छोटी शीतला का रोग ।

मोती-बेल-संज्ञा स्त्री० मोतिया धेला । ( फूल )

मोथा-संज्ञा पुं० नागरमोथा नामक घास या बसकी जड़ ।

मोद-संज्ञा पुं० १. आनंद । २. सुगंध । महक ।

मोदक-संज्ञा पुं० खट्टू नामकी मिठाई ।

मोदी-संज्ञा पुं० आटा, दाल, चावल आदि घेबनेवाला धनिया । पर-चूनिया ।

मोदीखाना-संज्ञा पुं० अन्न आदि रखने का घर । मंदिर ।

मोनी-क्रि० सं० भिगोना । संज्ञा पुं० भावा । पिटारा ।

मोम-संज्ञा पुं० वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ

छुत्ता बनाती हैं ।

मोमजामा-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिस पर माम का रोगन चढ़ाया गया हो ।

मोमयत्ती-संज्ञा स्त्री० मोम या ऐसे ही किसी और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है ।

मोमियाई-संज्ञा स्त्री० नकली शिक्का-जीत ।

मोयन-संज्ञा पुं० मंड़े हुए आटे में घी या चिकना देना जिसमें बससे घनी वस्तु खसखसी और मुलायम हो ।

मोरंग-संज्ञा पुं० नैपाल का पूर्वी भाग ।

मोर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मोरनी ] एक अत्यंत सुंदर प्रसिद्ध पक्षी ।  
१. सब दे० "मेरा" ।

मोरचंद्रिका-संज्ञा स्त्री० मोरपंख पर की चंद्राकार बूटी ।

मोरचा-संज्ञा पुं० १. जोहे की सतह पर खदनेवाली छाल या पीले रंग की बुकनी । जंग । २. वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है ।

मोरछल-संज्ञा पुं० मोर के परों से बनाया हुआ चँवर जो देवताओं और राजाओं आदि के मस्तक के पास डुलाया जाता है ।

मोरन-संज्ञा स्त्री० चिल्लोया हुआ दही जिसमें मिठाई आर सुगंधित वस्तुएँ डाली गई हों । शिक्करन ।

मोरनी-संज्ञा स्त्री० मोरपंखी की मादा ।

मोरपंख-संज्ञा पुं० मोर का पर ।

मोरपंखा-संज्ञा पुं० मोर का पर ।

मोरपंखी-संज्ञा स्त्री० वह नाय जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना

दूसरे से कराना ।

रगड़ा-संज्ञा पुं० रगड़ने-की-क्रिया या भाव ।

रगरा-संज्ञा स्त्री० दे० "रगड़" ।

रग-रेशा-संज्ञा पुं० पत्तियों की नस ।

रगेदना-क्रि० सं० भगाना । दौड़ाना ।

रघु-संज्ञा पुं० सूर्यवंशी राजा । दिल्ली के पुर जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा हो गए हैं ।

रघुकुल-संज्ञा पुं० राजा रघु का वंश ।

रघुनन्दन-संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र ।

रघुनाथ-संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र ।

रघुपति-संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र ।

रघुराई-संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र ।

रघुवंश-संज्ञा पुं० १. महाराज रघु का वंश या खानदान । २. महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य ।

रघुवंशी-संज्ञा पुं० वह जो रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो ।

रघुवीर-संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्रजी ।

रचक-संज्ञा पुं० रचना करनेवाला ।

रचना-संज्ञा स्त्री० १. रचने या बनाने की क्रिया या भाव । २. निर्मित वस्तु ।

क्रि० सं० १. बनाना । २. विधान करना । ३. ग्रंथ आदि लिखना ।

रचयिता-संज्ञा पुं० रचनेवाला ।

रचवाना-क्रि० सं० १. रचना कराना ।

२. मेहंदी या महावर लगवाना ।

रचाना-क्रि० अ० मेहंदी, महावर आदि से हाथ-पैर रंगाना ।

रचित-वि० बनाया हुआ । रचा हुआ ।

रज-संज्ञा पुं० १. वह रक्त जो स्त्रियों और स्तनपायी जाति के मादा प्राणियों

के योनि-मार्ग से प्रति मास तीन-चार दिन तक निकलता है । आर्तव ।

२. फूलों का पराग ।

संज्ञा स्त्री० धूल । गर्द ।

संज्ञा पुं० रजक । घोड़ी ।

रजक-संज्ञा पुं० [स्त्री० रजकी] घोड़ी ।

रजत-संज्ञा स्त्री० चाँदी । रूपा ।

वि० सफेद । शुद्ध ।

रजताई-संज्ञा स्त्री० सफेदी ।

रजना-क्रि० अ० रंगा जाना ।

रजनी-संज्ञा स्त्री० १. रात । २. हल्दी ।

रजनीकर-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

रजनीचर-संज्ञा पुं० राक्षस ।

रजनीमुख-संज्ञा पुं० संध्या ।

रजनीश-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

रजपूना-संज्ञा पुं० दे० "राजपूत" ।

रजपूती-संज्ञा स्त्री० १. वस्त्रपख । २. धीरता ।

रजवाड़ा-संज्ञा पुं० राज्य । देशी रियासत ।

रजस्वला-वि० स्त्री० जिसका रज प्रवाहित होता हो । श्रुतमती ।

रजा-संज्ञा स्त्री० मरजी । हफ्ता ।

रजाह, रजाइय-संज्ञा स्त्री० आज्ञा । हुक्म ।

रजाई-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना । लिहाफ़ ।

संज्ञा स्त्री० राजा होने का भाव ।

संज्ञा स्त्री० दे० "रजाह" ।

रजामंद-वि० [संज्ञा रजामंदी] जो किसी बात पर राजी हो गया हो ।

रजाय, रजायसी-संज्ञा स्त्री० आज्ञा ।

रजौल-वि० छोटी जाति का । नीच ।

रजोगुण-संज्ञा पुं० प्रकृति का वह

और रंगा हुआ हो ।  
 मोरमुकुट-संज्ञा पुं० मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट ।  
 मोरघाँ-संज्ञा पुं० दे० "मोर" ।  
 मोराना-कि० सं० चारों ओर घुमाना । फिराना ।  
 मोरी-संज्ञा स्त्री० वह नाली जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो । पनाली ।  
 मोल-संज्ञा पुं० कीमत । दाम । मूल्य ।  
 मोह-संज्ञा पुं० १. भ्रम । भ्रम । २. प्रेम । मुहब्बत ।  
 मोहक-वि० १. मोह उत्पन्न करने वाला । २. मनोहर ।  
 मोहड़ा-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ का झगला या ऊपरी भाग ।  
 मोहन-संज्ञा पुं० जिसे देखकर जी लुभा जाय ।  
 मोहनभोग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलुआ ।  
 मोहनमाला-संज्ञा स्त्री० सोने की गुरियों या दानों की बनी हुई माला ।  
 मोहना-कि० प्र० मोहित होना । रीकना ।  
 कि० प्र० मोहित करना । लुभा लेना ।  
 मोहनी-संज्ञा स्त्री० १. भगवान् का वह स्त्री-रूप जो बन्दोने समुद्र-मंथन के उपरान्त अमृत घाटते समय धारण किया था । २. माया ।  
 वि० स्त्री० मोहित करनेवाली । अत्यंत सुंदरी ।  
 मोहर-संज्ञा स्त्री० अक्षर, चिह्न आदि द्वाकर अंकित करने का ठप्पा या ससकी छाप ।  
 मोहरा-संज्ञा पुं० १. कोई छेद या द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले ।

२. शतरंज की कोई गोटी ।  
 मोहरी-संज्ञा स्त्री० १. वरतन आदि का छोटा मुँह । २. पाजामे का वह भाग जिसमें टांगें रहती हैं ।  
 मोहरि-संज्ञा पुं० लेखक । मुंशी ।  
 मोहलत-संज्ञा स्त्री० फुरसत । अवकाश । छुट्टी ।  
 मोहारा-संज्ञा पुं० १. द्वार । २. मुहड़ा ।  
 मोहि-संज्ञा पुं० सुकको । मुके ।  
 मोहित-वि० १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ । २. मोह्य हुआ । घासक ।  
 मोहिनी-वि० स्त्री० मोहनेवाली ।  
 मोही-वि० १. मोहित करनेवाला । २. मोह करनेवाला । ३. लोभी । लासली ।  
 मौड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० मौड़ी] लड़का । बालक ।  
 मौका-संज्ञा पुं० १. घटनास्थल । २. अवसर । समय ।  
 मौकूफ-वि० [संज्ञा मौकूफी] मौकरी से अलग किया गया । परेशान ।  
 मौखिक-वि० ज़बानी ।  
 मौज-संज्ञा स्त्री० १. लहर । २. मन की उमंग । ३. सुख । आनंद । मजा ।  
 मौज़ा-संज्ञा पुं० गाँव । ग्राम ।  
 मौजी-वि० जो जी में आवे, घड़ी करनेवाला ।  
 मौजूद-वि० उपस्थित । दाज़िर ।  
 मौजूदगी-संज्ञा स्त्री० उपस्थिति ।  
 मौजूदा-वि० वर्तमान काल का । प्रस्तुत ।  
 मौड़ा-संज्ञा पुं० दे० "मौड़ा" ।

स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोग-  
विहास तथा दिखावे की रुचि होती  
है। राजस।

रजोदर्शन-संज्ञा पुं० स्त्रियों का  
मासिक धर्म।

रजोधर्म-संज्ञा पुं० स्त्रियों का मासिक  
धर्म।

रज्जु-संज्ञा स्त्री० रस्सी। जेवरी।

रट-संज्ञा स्त्री० किसी शब्द को धार  
धार उच्चारण करने की क्रिया।

रटना-कि० सं० १. किसी शब्द को धार  
धार कहना। २. जुयानी याद करना।

रण-संज्ञा पुं० खड़ाई। जंग।

रणक्षेत्र-संज्ञा पुं० खड़ाई का मैदान।

रणरंग-संज्ञा पुं० खड़ाई का रसाव।

रणलक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० दे० "विजय-  
लक्ष्मी"।

रणसिंघा-संज्ञा पुं० तरही। नरसिंघा।

रणस्तंभ-संज्ञा पुं० विजय के स्मारक  
में बनवाया हुआ स्तंभ।

रणगण-संज्ञा पुं० युद्ध-क्षेत्र।

रत-संज्ञा पुं० मैथुन।

वि० १. अनुरक्त। २. लिप्त।

रतजगा-संज्ञा पुं० बरसव या विहार  
आदि के दिये सारी रात जागना।

रतन-संज्ञा पुं० दे० "रत्न"।

रतनजोत-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
मणि।

रतनार, रतनारा-वि० कुछ साब।

सुप्रीं लिए हुए।

रतनारी-संज्ञा स्त्री० खाली। लाजिमा।

रतना-कि० सं० रत होना।

कि० सं० किसी को अपनी ओर रत  
करना।

रति-संज्ञा स्त्री० १. कामदेव की पत्नी

जो दक्ष, प्रजापति की कन्या और  
सौंदर्य की साक्षात् मूर्ति मानी जाती  
है। २. प्रीति। प्रेम। ३. संभोग।

रतिक-कि० वि० बहुत थोड़ा।

रतिदान-संज्ञा पुं० संभोग। मैथुन।

रतिनायक-संज्ञा पुं० कामदेव।

रतिपति-संज्ञा पुं० कामदेव।

रतिप्रयत्न-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ

प्रेमी और प्रेमिका रतिक्रीड़ा करते हैं।

रतिराज-संज्ञा पुं० कामदेव।

रतिशास्त्र-संज्ञा पुं० काम शास्त्र।

रतीधी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का

रोग जिसमें रोगी को रात के समय

बिल्कुल दिखाई नहीं देता।

रत्ती-संज्ञा स्त्री० १. आठ चावळ का

मान या शट। २. गुंथा। ३.

बहुत थोड़ा।

रत्थी-संज्ञा स्त्री० वह ढाँचा या सेतूक

आदि जिसमें शव को रखकर अंतिम

संस्कार के लिये ले जाते हैं।

टिकटी।

रत्न-संज्ञा पुं० १. मणि। जवाहिर।

२. मानिक।

रत्नगर्मा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। भूमि।

रत्ननिधि-संज्ञा पुं० समुद्र।

रत्नपारखी-संज्ञा पुं० जौहरी।

रत्नाकर-संज्ञा पुं० १. समुद्र। २.

स्थान।

रत्नावली-संज्ञा स्त्री० मणियों की

थेथी या माला।

रथ-संज्ञा पुं० एक प्रकार की पुरानी

सवारी जिसमें चार या दो पहिए

हुआ करते थे।

रथयात्रा-संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का

एक पर्यं जो आपाड़ शुद्ध द्वितीया

को होता है।

मौत-संज्ञा स्त्री० मरण । मृत्यु ।

मौन-संज्ञा पुं० चुप रहना । न. योला-  
ना । चुप्पी ।

वि० जो न बोले । चुप ।

मौनद्वय-संज्ञा पुं० मौन धारण करने  
का व्रत ।

मौनी-वि० चुप रहनेवाला ।

मौर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मूला० मौरी ]  
विवाह के समय का एक शिरोभूषण  
जो ताड़पत्र या खुलड़ी आदि का  
बनाया जाता है ।

संज्ञा पुं० मंजरी । चौर ।

मौरना-कि० स० घृषों पर मंजरी  
लगाना । चौर लगाना ।

मौरूसी-वि० बाप-दादा के समय से  
चला आया हुआ । पितृक ।

मौर्य-संज्ञा पुं० चत्रियों के एक वंश  
का नाम । सम्राट् चंद्रगुप्त और  
अशोक इसी वंश में हुए थे ।

मौलवी-संज्ञा पुं० मुसलमान धर्म  
का आचार्य जो अरबी, फारसी आदि  
का पंडित होता है ।

मौलसिरी-संज्ञा स्त्री० एक बड़ा सदा-

बहार पेड़ जिसमें छोटे छोटे सुगं-  
धित फूल खगते हैं । धकुल ।

मौलि-संज्ञा पुं० १. चोटी । २.  
मस्तक ।

मौसा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० मौसी ] माता  
की बहिन का पति ।

मौसिम-संज्ञा पुं० [ वि० मौसमी ]  
ऋतु ।

मौसी-संज्ञा स्त्री० [ वि० मौसेय ] माता  
की बहिन । मासी ।

म्यौचै-संज्ञा स्त्री० बिल्ली की बोली ।

म्यान-संज्ञा पुं० तलवार, कटार आदि  
का फल रखने का स्थान ।

म्यौ-संज्ञा स्त्री० बिल्ली की बोली ।

म्यौड़ी-संज्ञा स्त्री० एक सदाबहार  
फूल जिसमें पीले छोटे फूलों की  
मंजरियाँ लगती हैं ।

म्लान-वि० [ भाव० संज्ञा-म्लानता ] १.  
मलिन । २. मैला ।

म्लेच्छ-संज्ञा पुं० मनुष्यों की वे  
जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो ।  
वि० नीच ।

य

य-हिंदी वर्णमाला का २६ वाँ अक्षर ।  
यंत्र-संज्ञा पुं० १. अंतर । २. योजनार ।  
३. वाद्य ।

यंत्रणा-संज्ञा स्त्री० प्रवेश । तकलीफ ।

यंत्र मंत्र-संज्ञा पुं० जादू-टोना ।

यंत्रविद्या-संज्ञा स्त्री० कला के चलाने  
और बनाने की विद्या ।

यंत्रालय-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ

कलें हों । २. छापाखाना ।

यंत्रित-वि० १. यंत्र आदि की सहा-  
यता से रोका या बंद किया हुआ ।

२. ताले में बंद ।

यंत्री-संज्ञा पुं० यंत्र-मंत्र करनेवाला ।  
तांत्रिक ।

यकता-वि० जो अपनी विद्या या  
विषय में एक ही हो । अद्वितीय ।

रथवाह-संज्ञा पुं० रथ चलानेवाला ।  
 सारथी ।  
 रथिक-संज्ञा पुं० रथी ।  
 रथी-संज्ञा पुं० १. रथ पर चढ़कर  
 चढ़नेवाला । २. एक दृष्टार, यो-  
 द्धाओं से घकेला युद्ध करनेवाला ।  
 वि० रथ पर चढ़ा हुआ ।  
 रथ-संज्ञा पुं० दंत । दति ।  
 रथच्छद-संज्ञा पुं० छौंठ ।  
 संज्ञा पुं० रति आदि के समय दंतों  
 के लगने का चिह्न ।  
 रथन-संज्ञा पुं० दशन । दति ।  
 रथपट-संज्ञा पुं० थोड़ा । छौंठ ।  
 रथ-वि० जो फाट, छूट, तोड़ या  
 चढ़ा दिया गया हो ।  
 संज्ञा स्त्री० फी । वमन ।  
 रथा-संज्ञा पुं० १. हूँटों की एक पंक्ति  
 जो दीवार पर खुनी जाती है ।  
 २. नीचे-ऊपर रखी हुई वस्तुओं की  
 एक तह ।  
 रथी-वि० निकम्मा । बेकार ।  
 रथफना-कि० अ० घुंघुंरु आदि  
 का मंद शब्द होना ।  
 रथयंका, रथयंकुरा-संज्ञा पुं० शूर-  
 धीर ।  
 रथवादी-संज्ञा पुं० योद्धा ।  
 रथवास-संज्ञा पुं० रानियों के रहने  
 का महल ।  
 रथित-वि० धजता हुआ ।  
 रथिवास-संज्ञा पुं० दे० "रथवास" ।  
 रथट-संज्ञा स्त्री० रथटने की क्रिया या  
 भाव ।  
 संज्ञा स्त्री० सूचना । हतला ।  
 रथटना-कि० अ० नीचे या आगे  
 की ओर फिसलना ।  
 रथट्टा-संज्ञा पुं० १. फिसलने की

क्रिया । २. कपड़ा ।  
 रथल-संज्ञा पुं० जाड़े में थोढ़ने की  
 मोटी गरम चादर ।  
 रथा-वि० दूर किया हुआ ।  
 रथा दफा-वि० दे० "रफा" ।  
 रथ-संज्ञा पुं० कटे हुए कपड़े के छेद  
 में तागे भरकर उसे बराबर करना ।  
 रथगर-संज्ञा पुं० रथ बनानेवाला ।  
 रथचक्र-वि० चपत । गायब ।  
 रथनी-संज्ञा स्त्री० माछ का बाहर  
 जाना ।  
 रथा रथा-कि० वि० धीरे धीरे ।  
 रथ-संज्ञा पुं० ईश्वर । परमेश्वर ।  
 रथड़-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध लघुलीला  
 पदार्थ जो अनेक घुत्तों के दूध से  
 बनता है ।  
 रथड़ी-संज्ञा स्त्री० झटाकर गाढ़ा और  
 लच्छेदार किया हुआ दूध ।  
 रथर-संज्ञा पुं० दे० "रथड़" ।  
 रथी-संज्ञा स्त्री० १. वसेत शत्रु । २.  
 वह फसल जो वसेत शत्रु में काटी  
 जाती है ।  
 रथ-संज्ञा पुं० १. अभ्यास । २.  
 संबंध ।  
 रथक-संज्ञा स्त्री० मूले की पैग ।  
 रथकना-कि० अ० १. हिंडोले पर  
 झूलना । २. झूमते या इतराते  
 हुए चलना ।  
 रथकाम-संज्ञा पुं० एक अरथी महीना  
 जिसमें सुसहमान राजा रहते हैं ।  
 रथण-संज्ञा पुं० चिन्तास । कोड़ा ।  
 वि० १. मनोहर । २. प्रिय ।  
 रथणी-संज्ञा स्त्री० नारी ।  
 रथणीक-वि० सुंदर ।

यक-धयक, यकधारणी-कि० वि०  
अचानक । एकाएक ।

यकसा-वि० एक समान । सारस ।

यकीन-संज्ञा पुं० विश्वास ।

यकुत्-संज्ञा पुं० १. पैठ में दाहिनी  
थोर की एक पैली जिसकी क्रिया से  
भोजन पचता है । २. वह रोग  
जिसमें यह अंग दूषित होकर पड़  
जाता है ।

यक्ष-संज्ञा पुं० एक प्रकार के देवता  
जो कुपेर की निधियों के रक्षक माने  
जाते हैं ।

यक्षपति-संज्ञा पुं० कुपेर ।

यक्षिणी-संज्ञा स्त्री० यक्ष की पत्नी ।

यक्ष्मा-संज्ञा पुं० चर्बी रोग । तपेदिक ।

यजन-संज्ञा पुं० यज्ञ करना ।

यजमान-संज्ञा पुं० वह जो यज्ञ क-  
रता हो ।

यजमानी-संज्ञा स्त्री० यजमान के प्रति  
पुरोहित की वृत्ति ।

यजु-संज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद" ।

यजुर्वेद-संज्ञा पुं० चार प्रसिद्ध वेदों में  
से एक वेद जिसमें विशेषतः यज्ञ-  
कर्मों का विस्तृत विवरण है ।

यजुर्वेदी-संज्ञा पुं० यजुर्वेद का ज्ञाता  
या यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य  
करनेवाला ।

यज्ञ-संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय आर्यों  
का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य-जिसमें  
प्रायः हवन और पूजन होना था ।

यज्ञकुंड-संज्ञा पुं० हवन करने की वेदी  
या कुंड ।

यज्ञपशु-संज्ञा पुं० वह पशु जिसका  
यज्ञ में बलिदान किया जाय ।

यज्ञपात्र-संज्ञा पुं० यज्ञ में काम आने-

वाले काठ के बने हुए घरतन ।

यज्ञपुरुष-संज्ञा स्त्री० विष्णु ।

यज्ञभूमि-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ  
यज्ञ होता हो ।

यज्ञशाला-संज्ञा पुं० यज्ञमंडप ।

यज्ञसूत्र-संज्ञा पुं० यज्ञोपवीत ।

यज्ञेश्वर-संज्ञा पुं० विष्णु ।

यज्ञोपवीत-संज्ञा पुं० १. जनेऊ । २.  
उपवन-संस्कार ।

यति-संज्ञा पुं० संन्यासी ।

संज्ञा स्त्री० लुंनों के चरणों में वह  
स्थान जहाँ पड़ते समय, लय ठीक  
रखने के लिये, थोड़ा विश्राम हो ।

यतिधर्म-संज्ञा पुं० संन्यास ।

यतिमंग-संज्ञा पुं० काव्य का वह दोष  
जिसमें यति अपने वचित स्थान पर  
न पढ़कर कुछ आगे या पीछे प-  
ड़ती है ।

यनीम-संज्ञा पुं० अनाम ।

यत्किञ्चित्-कि० वि० थोड़ा । कुछ ।

यत्न-संज्ञा पुं० १. श्रम । कोशिश ।  
२. उपाय ।

यत्नवान्-वि० यत्न करनेवाला ।

यत्रतत्र-कि० वि० जहाँ-तहाँ ।

यथा-अव्य० जिस प्रकार । जैसे ।

यथाक्रम-कि० वि० सरतीवहार ।

यथातथ्य-अव्य० ज्यों का त्यों । ह-  
थ-ह ।

यथापूर्व-अव्य० जैसा पहले था,  
वैसा ही ।

यथायोग्य-अव्य० जैसा चाहिए, वैसा ।  
उपयुक्त ।

यथार्थ-अव्य० ठीक । माजिब ।

यथार्थता-संज्ञा स्त्री० सचाई । सत्यता ।

यथालाम-वि० जो कुछ प्राप्त हो,  
वही पर निर्भर ।



रमणीय-वि० सुंदर ।  
 रमणीयता-संज्ञा स्त्री० सुंदरता ।  
 रमता-वि० एक जगह जमकर न  
 रहनेवाला ।  
 रमता-क्रि० भ० चलता होना ।  
 चल देना ।  
 रमल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का फलित  
 ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभा-  
 शुभ फल जाना जाता है ।  
 रमा-संज्ञा स्त्री० खट्वा ।  
 रमाना-क्रि० स० मोहित करना ।  
 रमानिवास-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 रमित-वि० लुभाया हुआ । मुरझा ।  
 रमैनी-संज्ञा स्त्री० कधीरवास के पीजक  
 का एक भाग ।  
 रमैया-संज्ञा पुं० १. राम । २. ईश्वर ।  
 रम्माल-संज्ञा पुं० रमल फेंकनेवाला ।  
 रम्य-वि० [ स्त्री० रम्या ] मनोहर ।  
 सुंदर ।  
 रयना-संज्ञा स्त्री० रात ।  
 रय्यता-संज्ञा स्त्री० प्रजा ।  
 ररकार-संज्ञा पुं० रकार की ध्वनि ।  
 ररकना-क्रि० भ० [ संज्ञा ररक ]  
 कसकना । पीड़ा देना ।  
 ररना-क्रि० भ० लगातार एक ही  
 बात कहना । रटना ।  
 ररा-संज्ञा पुं० १. बहुत गिरगिराकर  
 मींगनेवाला । २. अधम ।  
 रलना-क्रि० भ० एक में मिलना ।  
 रलाना-क्रि० स० एक में मिलाना ।  
 रली-संज्ञा स्त्री० १. विहार । २.  
 आनंद ।  
 रध-संज्ञा पुं० १. गुजार । २.  
 आवाज ।  
 रधकना-क्रि० भ० १. दौड़ना । २.  
 रमना ।

रवताई-संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व । स्वामित्व ।  
 रवा-संज्ञा पुं० बहुत छोटी डकड़ा ।  
 कण ।  
 वि० प्रचलित ।  
 रवाज-संज्ञा स्त्री० परिपाटी । प्रथा ।  
 रवादार-वि० १. संवेध या लगाव  
 रखनेवाला । २. जिसमें कण-या  
 धाने हों ।  
 रवानगी-संज्ञा स्त्री० रवाना होने की  
 क्रिया या भाव । प्रस्थान ।  
 रवाना-वि० जो कहीं से चल पड़ा हो ।  
 रवा-रवी-संज्ञा स्त्री० जल्दी । शीघ्रता ।  
 रवि-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 रविकुल-संज्ञा पुं० सूर्यवंश ।  
 रचितनया-संज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 रचिनेदिनी-संज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 रचिमंडल-संज्ञा पुं० सूर्य के चारों  
 ओर का लाल मंडल या गोला ।  
 रविवार-संज्ञा पुं० एक बार जो शनि-  
 वार के बाद तथा सोमवार के पहले  
 पड़ता है ।  
 रविश-संज्ञा स्त्री० गति । चाल ।  
 रवेया-संज्ञा पुं० १. चञ्चल । २. वंग ।  
 ररक-संज्ञा पुं० ईश्या । डाह ।  
 ररिम-संज्ञा पुं० किरण ।  
 रस-संज्ञा पुं० १. खाने की चीज का  
 स्वाद । हमारे यहाँ वैद्यक में मधुर,  
 अम्ल, कषण, कटु, तिक्त और कषाप  
 ये छः रस माने गए हैं । २. साहित्य  
 का आनंद । ३. आनंद । ४. जल ।  
 पानी । ५. शरवत ।  
 रसकपूर-संज्ञा पुं० सफेद रंग की  
 एक प्रसिद्ध वपधातु ।  
 रसकोलि-संज्ञा स्त्री० विहार ।  
 रसगुनी-संज्ञा पुं० काव्य या संगीत  
 शास्त्र का ज्ञाता ।

यथावत्-अव्य० ज्यों का त्यों ।  
 यथाशक्ति-अव्य० सामर्थ्य के अनुसार ।  
 यथासंभव-अव्य० जहाँ तक हो सके ।  
 यथेच्छ-अव्य० इच्छा के अनुसार ।  
 यथेच्छाचार-संज्ञा पुं० जो जी में थावे, वही करना ।  
 यथेष्ट-वि० जितना इष्ट हो । जितना चाहिए, उतना ।  
 यथोक्त-अव्य० जैसा कहा गया हो ।  
 यथोचित-वि० मुनासिब । ठीक ।  
 यदाकदा-अव्य० कभी कभी ।  
 यदि-अव्य० अगर । जो ।  
 यदुपति-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 यदुराई-संज्ञा पुं० दे० "यदुराज" ।  
 यदुराज-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 यदुर्घशी-संज्ञा पुं० यदुकुल में उत्पन्न ।  
 यादव ।  
 यद्यपि-अव्य० अगरचे । हरचंद ।  
 यदृच्छा-संज्ञा स्त्री० १. स्वेच्छाचार ।  
 २. आकस्मिक संयोग ।  
 यम-संज्ञा पुं० १. भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता जो मृत्यु के देवता माने जाते हैं । २. मम, इन्द्रिय आदि का घश या रोक में रखना । निग्रह ।  
 यमज-संज्ञा पुं० १. एक साथ जन्म लेनेवाले दो बच्चों का जोड़ा । २. अश्विनीकुमार ।  
 यमदग्नि-संज्ञा पुं० दे० "जमदग्नि" ।  
 यम-यातना-संज्ञा स्त्री० नरक की पीड़ा ।  
 यमराज-संज्ञा पुं० यमों के राजा यम-राज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे दंड या उतम फल देते हैं ।

यमल-संज्ञा पुं० युगम । जोड़ा ।  
 यमलार्जुन-संज्ञा पुं० कुवेर के पुत्र नलकृषर और मणिग्रीव जो नारद के साथ से पैदा हो गए थे । श्रीकृष्ण ने इनका बहार किया था ।  
 यमलोक-संज्ञा पुं० वह लोक जहाँ मरने पर मनुष्य जाते हैं । यमपुरी ।  
 यमी-संज्ञा स्त्री० यम की बहन, जो पीछे यमुना नदी होकर बही ।  
 यमुना-संज्ञा स्त्री० उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी ।  
 ययाति-संज्ञा पुं० राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था ।  
 यव-संज्ञा पुं० १. जो नामक अन्न ।  
 २. एक नाप ।  
 यवद्वीप-संज्ञा पुं० जावा द्वीप ।  
 यवन-संज्ञा पुं० [ स्त्री० यवनी ] १. यूनान देश का निवासी । २. मुसलमान ।  
 यवनाल-संज्ञा स्त्री० जुधार ।  
 यवनिका-संज्ञा स्त्री० नाटक का परदा ।  
 यश-संज्ञा पुं० नेकनामी । कीर्ति ।  
 यशस्वी-वि० [ स्त्री० यशस्विनी ] जिसका खूब यश हो ।  
 यशी-वि० यशस्वी ।  
 यशुमति-संज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा" ।  
 यशोदा-संज्ञा स्त्री० नंद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था ।  
 यशोधरा-संज्ञा स्त्री० गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता ।  
 यष्टि-संज्ञा स्त्री० लाठी । छड़ी ।  
 यष्टिका-संज्ञा स्त्री० छड़ी । लकड़ी ।  
 यह-सर्व० एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग निकट के सब मनुष्यों तथा पदार्थों के लिये होता है ।

रथवाह-संज्ञ पुं० रथ चलानेवाला ।  
 सारथी ।  
 रथिक-संज्ञा पुं० रथी ।  
 रथी-संज्ञा पुं० १. रथ पर चढ़कर  
 छड़नेवाला । २. एक हजार यो-  
 द्धों से अकेला युद्ध करनेवाला ।  
 वि० रथ पर चढ़ा हुआ ।  
 रथ-संज्ञा पुं० दंत । दांत ।  
 रथच्छद्-संज्ञा पुं० ओंठ ।  
 संज्ञा पुं० रति आदि के समय दांतों  
 के लगने का चिह्न ।  
 रथन-संज्ञा पुं० दशन । दांत ।  
 रथपट-संज्ञा पुं० ओष्ठ । ओंठ ।  
 रथ-वि० जो काट, छांट, तोड़ या  
 चढ़ा दिया गया हो ।  
 संज्ञा स्त्री० कै । घमन ।  
 रथा-संज्ञा पुं० १. ईंटों की एक पंक्ति  
 जो दीवार पर खुनी जाती है ।  
 २. नीचे-ऊपर रखी हुई वस्तुओं की  
 एक तह ।  
 रथी-वि० निकम्मा । बेकार ।  
 रथकना-कि० अ० घुंघुरू आदि  
 का मंद शब्द होना ।  
 रथका, रथका-संज्ञा पुं० शूर-  
 धीर ।  
 रथ्यादी-संज्ञा पुं० घोड़ा ।  
 रथवास-संज्ञा पुं० रानियों के रहने  
 का महल ।  
 रथित-वि० धजता हुआ ।  
 रथवास-संज्ञा पुं० दे० "रथवास" ।  
 रथ-संज्ञा स्त्री० रथने की क्रिया या  
 भाव ।  
 संज्ञा स्त्री० सूचना । इत्तला ।  
 रथना-कि० अ० नीचे या आगे  
 की ओर फिसलना ।  
 रथ-संज्ञा पुं० १. फिसलने की

क्रिया । २. कपड़ा ।  
 रथल-संज्ञा पुं० जाड़े में ओढ़ने की  
 मोटी गरम चादर ।  
 रफा-वि० दूर किया हुआ ।  
 रफा दफा-वि० दे० "रफा" ।  
 रफ-संज्ञा पुं० फटे हुए कपड़े के छेद  
 में तागे भरकर उसे घरावर करना ।  
 रफगर-संज्ञा पुं० रफ बनानेवाला ।  
 रफचकार-वि० चंपत । गायब ।  
 रफनी-संज्ञा स्त्री० माछ का बाहर  
 जाना ।  
 रफा रफा-कि० वि० धीरे धीरे ।  
 रघ-संज्ञा पुं० ईश्वर । परमेश्वर ।  
 रघ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध खचीला  
 पदार्थ जो अनेक धूर्तों के वृथ से  
 घनता है ।  
 रघड़ी-संज्ञा स्त्री० घौंटाकर गाढ़ा और  
 लज्जेदार किया हुआ वृथ ।  
 रघर-संज्ञा पुं० दे० "रघ" ।  
 रघी-संज्ञा स्त्री० १. वसंत ऋतु । २.  
 वह फसल जो वसंत ऋतु में काटी  
 जाती है ।  
 रघ-संज्ञा पुं० १. अभ्यास । २.  
 संवध ।  
 रमक-संज्ञा स्त्री० मूले की पैंग ।  
 रमकना-कि० अ० १. हिंडोले पर  
 झूलना । २. झूमते या इतराते  
 हुए चलना ।  
 रमकान-संज्ञा पुं० एक घरधी महीना  
 जिसमें मुसलमान रोज़ा रखते हैं ।  
 रमण-संज्ञा पुं० विद्यास । क्रोड़ा ।  
 वि० १. मनोहर । २. प्रिय ।  
 रमणी-संज्ञा स्त्री० नारी ।  
 रमणीक-वि० सुंदर ।

यहाँ-क्रि० वि० इस स्थान में । इस जगह पर ।

यही-अव्य० निश्चित रूप से यह । यह ही ।

यहूद-संज्ञा पुं० यह देश जहाँ-हज़रत ईसा पैदा हुए थे ।

यहूदी-संज्ञा पुं० [बी० यहूदिन] यहूद देश का निवासी ।

यौ-क्रि० वि० दे० "यहाँ" ।

या-अव्य० अथवा । या ।

सर्व०, वि० 'यह' का वह रूप जो उसे प्रजमापा में कारक-विद्ध लगने के पहले प्राप्त होता है ।

याग-संज्ञा पुं० यज्ञ ।

याचक-संज्ञा पुं० १. जो माँगता हो । २. भिक्षुक ।

याचना-क्रि० सं० [वि० याच्य, याचक] पाने के लिये विनती करना ।

संज्ञा स्त्री० माँगने की क्रिया ।

याजक-संज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला ।

याजन-संज्ञा पुं० यज्ञ की क्रिया ।

याज्ञवल्क्य-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ऋषि ।

याज्ञिक-संज्ञा पुं० यज्ञ करने या करानेवाला ।

याचना-संज्ञा स्त्री० सकलीफ ।

याता-संज्ञा स्त्री० पति के भाई की स्त्री । जेठानी या देवरानी ।

यातायात-संज्ञा पुं० गमनागमन ।

यातुधान-संज्ञा पुं० राक्षस ।

यात्रा-संज्ञा स्त्री० एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया ।

यात्री-संज्ञा पुं० यात्रा करनेवाला । मुसाफिर ।

याद-संज्ञा स्त्री० स्मरण-शक्ति । स्मृति ।

यादगार-संज्ञा स्त्री० स्मृति-चिह्न ।

याददाश्त-संज्ञा स्त्री० स्मरण-शक्ति । स्मृति ।

यादव-संज्ञा पुं० [ स्त्री० यादवी ] १. यदु के वंशज । २. श्रीकृष्ण ।

यान-संज्ञा पुं० गाड़ी, रथ आदि सवारी ।

यानी, याने-अव्य० अर्थात् ।

यापन-संज्ञा पुं० [ वि० यापित, याप्य ] व्यतीत करना । खिताना ।

याम-संज्ञा पुं० तीन घंटे का समय । पहर ।

यामल-संज्ञा पुं० यमज संतान । जोड़ा ।

यामिनी-संज्ञा स्त्री० रात । रात्रि ।

यार-संज्ञा पुं० १. मित्र । दोस्त । २. उपपत्ति । जार ।

याराना-संज्ञा पुं० मित्रता । मैत्री । वि० मित्र का सा ।

यारी-संज्ञा स्त्री० १. मित्रता । २. स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध ।

यावनी-वि० यवन-संबन्धी ।

यासु-सर्व० दे० "जासु" ।

यास्क-संज्ञा पुं० वैदिक निदाक के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि ।

याहि-सर्व० इसको । इसे ।

युक्त-वि० १. जुड़ा हुआ । २. मिलित । ३. शान्ति ।

युक्ति-संज्ञा स्त्री० १. उपाय । ढंग । २. चातुरी । ३. चाल । रीति ।

युक्तियुक्त-वि० उपयुक्त तर्क के अनुकूल ।

युग-संज्ञा पुं० १. जोड़ा । युग्म । २. युद्ध । ३. बारह वर्ष का काल ।

४ पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिणाम, जैसे-सत्य युग । कलियुग ।

रमणीय-वि० सुंदर ।  
 रमणीयता-संज्ञा स्त्री० सुंदरता ।  
 रमता-वि० एक जगह जमकर न  
 रहनेवाला ।  
 रमना-क्रि० भ० चलता होना ।  
 चल देना ।  
 रमल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का फलित  
 ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभा-  
 शुभ फल जाना जाता है ।  
 रमा-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।  
 रमाना-क्रि० स० मोहित करना ।  
 रमानिवास-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 रमित-वि० लुमाया हुआ । मुग्ध ।  
 रमैनी-संज्ञा स्त्री० कबीरदास के शिष्य  
 का एक भाग ।  
 रमैया-संज्ञा पुं० १. राम । २. ईश्वर ।  
 रम्माल-संज्ञा पुं० रमल फेंकनेवाला ।  
 रम्य-वि० [ स्त्री० रम्या ] मनोहर ।  
 सुंदर ।  
 रयन-संज्ञा स्त्री० रात ।  
 रय्यता-संज्ञा स्त्री० प्रज्ञा ।  
 ररकार-संज्ञा पुं० रकार की ध्वनि ।  
 ररकना-क्रि० भ० [ संज्ञा ररक ]  
 कसकना । पीड़ा देना ।  
 ररना-क्रि० भ० लगातार एक ही  
 बात कहना । रटना ।  
 ररा-संज्ञा पुं० १. बहुत गिड़गिड़ाकर  
 मारनेवाला । २. अधम ।  
 रलना-क्रि० भ० एक में मिलना ।  
 रलाना-क्रि० स० एक में मिलाना ।  
 रली-संज्ञा स्त्री० १. विहार । २.  
 आनंद ।  
 रघ-संज्ञा पुं० १. गुंजार । २.  
 आवाज ।  
 रघकना-क्रि० भ० १. दौड़ना । २.  
 रमेगना ।

रघताई-संज्ञा स्त्री० प्रमुख । स्वामिन् ।  
 रघा-संज्ञा पुं० बहुत छोटा डुकड़ा ।  
 कण ।  
 रघि-प्रचलित ।  
 रवाज-संज्ञा स्त्री० परिपाटी । प्रथा ।  
 रवादार-वि० १. संवेध या लगाव  
 रखनेवाला । २. जिसमें कण-या  
 दाने हों ।  
 रवानगी-संज्ञा स्त्री० रवाना होने की  
 क्रिया या भाव । प्रस्थान ।  
 रवाना-वि० जो कहीं से चल पड़ा हो ।  
 रघा-रघी-संज्ञा स्त्री० जलदी । शीघ्रता ।  
 रघि-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 रघिकुल-संज्ञा पुं० सूर्यवंश ।  
 रघितनया-संज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 रघिनेदिनी-संज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 रघिमंडल-संज्ञा पुं० सूर्य के चारों  
 ओर का काक मंडल या गोळा ।  
 रघिघार-संज्ञा पुं० एक घार जो शनि-  
 वार के बाद तथा सोमवार के पहले  
 पड़ता है ।  
 रघिश-संज्ञा स्त्री० गति । चाल ।  
 रघैया-संज्ञा पुं० १. चञ्चल । २. दंग ।  
 रघक-संज्ञा पुं० डेप्या । डाह ।  
 रघिम-संज्ञा पुं० किरण ।  
 रस-संज्ञा पुं० १. खाने की चीज का  
 स्वाद । हमारे यहाँ वैद्यक में मधुर,  
 अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय  
 ये छः रस माने गए हैं । २. साहित्य  
 का आनंद । ३. आनंद । ४. जल ।  
 पानी । ५. शरबत ।  
 रसकपूर-संज्ञा पुं० सफेद रंग की  
 एक प्रसिद्ध वपघात ।  
 रसकेलि-संज्ञा स्त्री० विहार ।  
 रसगुनी-संज्ञा पुं० काव्य या संगीत  
 शास्त्र का ज्ञाता ।

युगपत्-अव्य० साथ साथ ।  
 युगल-संज्ञा पुं० युग्म । जोड़ा ।  
 युगांतर-संज्ञा पुं० दूसरा युग ।  
 युगाद्या-संज्ञा स्त्री० वह तिथि जिससे  
 किसी युग का आरंभ हुआ हो ।

युग्म-संज्ञा पुं० जोड़ा ।  
 युत-वि० युक्त । सहित ।  
 युद्ध-संज्ञा पुं० लड़ाई । संग्राम । रण ।  
 युधिष्ठिर-संज्ञा पुं० पाँच पांडवों में  
 एक जो सबसे बड़े और बहुत धर्म-  
 परायण थे ।

युयुत्सा-संज्ञा स्त्री० युद्ध करने की  
 इच्छा ।

युयुत्सु-वि० लड़ने की इच्छा रखने-  
 वाला ।

युयुधान-संज्ञा पुं० इंद्र ।

युवक-संज्ञा पुं० जवान । युवा ।

युवति, युवती-संज्ञा स्त्री० जवान स्त्री ।

युवराई-संज्ञा स्त्री० युवराज का पद ।

युवराज-संज्ञा पुं० [ स्त्री० युवराज्ञी ]  
 राजा का वह सबसे बड़ा लड़का  
 जिसे आगे चलकर राज्य मिलने-  
 वाला हो ।

युवा-वि० [ स्त्री० युवती ] जवान । युवक ।

यु०-अव्य० दे० “यो” ।

यूथ-संज्ञा पुं० समूह । भुंड ।

यूथप, यूथपति-संज्ञा पुं० सेनापति ।

यूथिका-संज्ञा स्त्री० जूही का फूल ।

यूनान-संज्ञा पुं० यूरोप का एक प्रदेश  
 जो प्राचीन काल में अपनी मम्यता,  
 साहित्य आदि के लिये प्रसिद्ध था ।

यूनानी-वि० यूनान देश-संबंधी ।

यूप-संज्ञा पुं० यज्ञ में वह खेभा जिसमें  
 बलि का पशु बाँधा जाता है ।

ये-सर्व० यह सब ।

येई-सर्व० यही ।

येऊँ-सर्व० यह भी ।

येहूँ-अव्य० यह भी ।

यों-अव्य० इस तरह पर । इस भाँति ।

योंही-अव्य० १. इसी प्रकार से । २.

बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के ।

योग-संज्ञा पुं० १. मिलना । संयोग ।

२ जोड़ (गणित) । ३ छः दर्शनों

में से एक । ४. इस दर्शन की

साधना ।

योगक्षेम-संज्ञा पुं० कुशल मंगल ।

हैरियत ।

योगतत्त्व-संज्ञा पुं० एक उपनिषद् ।

योगनिद्रा-संज्ञा स्त्री० युग के अंत में

होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो दुर्गा

मानी जाती है ।

योगफल-संज्ञा पुं० देा या अधिक

संख्याओं के जोड़ने से प्राप्त संख्या ।

योगशल-संज्ञा पुं० वह शक्ति जो योग

की साधना से प्राप्त हो ।

योगमाया-संज्ञा स्त्री० १. भगवती ।

२. वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से

उपपन्न हुई थी और जिसे कंस ने

मार डाला था ।

योगरुद्धि-संज्ञा स्त्री० देा शब्दों के योग

से बना हुआ वह शब्द जो अपना

सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष

अर्थ बतावे ।

योगशास्त्र-संज्ञा पुं० पतंजलि ऋषि-

कृत योग-साधन पर एक दर्शन जि-

समें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय

बतलाए हैं ।

योगसूत्र-संज्ञा पुं० महर्षि पतंजलि

के बनाए हुए योग-संबंधी सूत्रों का

संग्रह ।

योगात्मा-संज्ञा पुं० योगी ।

रसगुहा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की छेने की मिठाई ।  
 रसज्ञ-वि० [ भाव० रसज्ञता ] १. वह जो रस का ज्ञाता हो । २. काव्य-मर्मज्ञ ।  
 रसता-संज्ञा स्त्री० रस का भाव या धर्म ।  
 रसद-वि० आनंददायक ।  
 संज्ञा स्त्री० बाँट । घखरा ।  
 रसदार-वि० जिसमें किसी प्रकार का रस हो ।  
 रसन-संज्ञा पुं० स्वाद खेना ।  
 रसना-संज्ञा स्त्री० जिह्वा । जीभ ।  
 क्रि० भ० १. धीरे धीरे बहना या टपकना । २. रस में मग्न होना ।  
 ३. तन्मय होना ।  
 रसनेद्रिय-संज्ञा स्त्री० रसना । जीभ ।  
 रसमयी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का स्वादिष्ट फल ।  
 रसमसा-वि० [ स्त्री० रसमसी ] १. आनंदमग्न । २. तर । गीला ।  
 रसरस-संज्ञा पुं० १. पारद । पारा ।  
 २. शृंगार रस ।  
 रसरी-संज्ञा स्त्री० दे० "रस्सी" ।  
 रसचंत-संज्ञा पुं० रसिक । प्रेमी ।  
 रसवाद-संज्ञा पुं० १. प्रेम या आनंद की यात-चीत । २. छेड़छाड़ ।  
 रसा-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी । २. जीभ ।  
 संज्ञा पुं० तरकारी आदि का मसाला ।  
 रसाई-संज्ञा स्त्री० पहुँचने की क्रिया या भाव । पहुँच ।  
 रसातल-संज्ञा पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से छठा लोक ।  
 रसायन-संज्ञा पुं० वैद्यक के अनुसार

वह औषध जिसके खाने से आदमी बुढ़ा या बीमार न हो ।  
 रसायनशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें यह विवेचन हो कि पदार्थों में कौन कौन से तत्त्व होते हैं और उनके परमाणुओं में परिवर्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्तन होता है ।  
 रसाल-संज्ञा पुं० १. ऊख । गन्ना ।  
 २. आम ।  
 वि० [ स्त्री० रसाला ] मधुर । मीठा ।  
 रसाव-संज्ञा पुं० रसने की क्रिया या भाव ।  
 रसिक-संज्ञा पुं० १. वह जो रस या स्वाद खेता हो । २. काव्य-मर्मज्ञ ।  
 रसिकता-संज्ञा स्त्री० रसिक होने का भाव या धर्म ।  
 रसिकचिह्नारी-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 रसित-संज्ञा पुं० ध्वनि । शब्द ।  
 रसिया-संज्ञा पुं० रसिक ।  
 रसीद-संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ के पहुँचने या मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पत्र ।  
 रसील-वि० दे० "रसीला" ।  
 रसीला-वि० [ स्त्री० रसीली ] रस में भरा हुआ ।  
 रसम-संज्ञा पुं० रस का बहुवचन ।  
 रसुल-संज्ञा पुं० ईश्वर का दूत । पैगंबर ।  
 रसेस-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 रसोइया-संज्ञा पुं० रसोई बनानेवाला ।  
 रसोई, रसोई-संज्ञा स्त्री० १. पका हुआ खाद्य पदार्थ । २. चाँका ।  
 रसोईघर-संज्ञा पुं० खाना बनाने की जगह ।  
 रसीत-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध औषध

योगाभ्यास-संज्ञा पुं० योग शास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान ।

योगाभ्यासी-संज्ञा पुं० योगी ।

योगासन-संज्ञा पुं० योग साधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढंग ।

योगिनी-संज्ञा स्त्री० रत्न-पिशाचिनी ।

योगिराज, योगीन्द्र-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योगी ।

योगी-संज्ञा पुं० आरमभजानी ।

योगीश, योगीश्वर-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योगी ।

योगीश्वरी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

योगेश्वर-संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण । २. शिव ।

योगेश्वरी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

योग्य-वि० ठीक (पात्र) । फ़ाविल ।

योग्यता-संज्ञा स्त्री० १. समता । छा-यकी । २. सामर्थ्य ।

योजक-वि० मिलाने या जोड़नेवाला ।

योजन-संज्ञा पुं० दूरी की एक माप जो किसी के मत से दो कोस की, किसी के मत से चार कोस की और

किसी के मत से आठ कोस की होती है ।

योजना-संज्ञा स्त्री० [ वि० योजनाय, योजित ] १. नियुक्त करने की क्रिया ।

२. भावी कार्यों की व्यवस्था, आयोजन ।

योद्धा-संज्ञा पुं० सिपाही ।

यौनि-संज्ञा स्त्री० १. आकर । खानि ।

२. स्त्रियों की जननेंद्रिय । ३. प्राणियों के विभाग, जातियाँ या वर्ग जिनकी संख्या षड् ब्राह्म कही गई है ।

यौना-अव्य० दे० "यो" ।

यौगिक-संज्ञा पुं० १. मिला हुआ ।

२. दो शब्दों से मिलकर बना हुआ शब्द ।

यौतक, यौतुक-संज्ञा पुं० दाहना ।

जरेज । बहज ।

यौधेय-संज्ञा पुं० योद्धा ।

यौवन-संज्ञा पुं० १. अवस्था का वह

मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उप-रान्त और वृद्धावस्था के पहले होता है । २. जवानी ।

र

र-हिंदी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन ।

र-वि० घनहीन । गरीब ।

रंग-संज्ञा पुं० १. नृत्य-गीत आदि ।

नाचना-गाना । २. आकार से भिन्न किसी द्रव्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखों से ही होता है । धर्म । जैसे—लाल, काला ।

रंगत-संज्ञा स्त्री० १. रंग का भाव ।

२. मजा । आनंद । ३. हालत ।

रंगना-क्रि० स० रंग में, हुवाकर

किसी चीज़ को रंगीन करना ।

रंगधिरंगा-वि० अनेक रंगों का ।

रंगमचन-संज्ञा पुं० दे० "रंगमहल" ।

रंगभूमि-संज्ञा स्त्री० १. वह स्थान

जहाँ कोई जलसा हो । २. नाट्य-



जो दाह हृदी की जड़ और धकड़ों को पानी में छोटाकर तैयार की जाती है।

रसौर-संज्ञा पुं० कल के रस में पके हुए चावल।

रसौली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में गिल्लटी निकल आती है।

रस्ता-संज्ञा पुं० दे० "रास्ता"।

रस्तोगी-संज्ञा पुं० पैरों की एक जाति।

रसम-संज्ञा स्त्री० १. मेख-जोख। २. रवाज।

रससा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० भस्मा० रस्सी ] बहुत मोटी रस्ती।

रस्ती-संज्ञा स्त्री० डोटी। गुणः रज्जु।

रहकला-संज्ञा पुं० एक प्रकार की हलकी गाढ़ी।

रहचटा-संज्ञा पुं० प्रीति की चाह। लिप्ता।

रहँट-संज्ञा पुं० फूँट से पानी बिका-छने का एक प्रकार का यंत्र।

रहटा-संज्ञा पुं० सूत कातने का चक्का।

रहचह-संज्ञा स्त्री० चिड़ियों का बोलना।

रहने-संज्ञा स्त्री० रहने की क्रिया या भाव।

रहन-सहन-संज्ञा स्त्री० जीवन-निर्वाह का 'ग' तौर।

रहना-क्रि० भ० १. स्थित होना। २. रहना। समना।

रहनि-संज्ञा स्त्री० १. दे० "रहन"। २. प्रेम।

रहम-संज्ञा पुं० करुणा। दया।

रहमत-संज्ञा स्त्री० कृपा। दया।

रहस-संज्ञा पुं० १. गुप्त भेद। २. आनन्दमय लीला।

रहसना-क्रि० भ० आनंदित होना।

रहसि-संज्ञा स्त्री० गुप्त स्थान। एकांत स्थान।

रहस्य-संज्ञा पुं० १. गुप्त भेद। गोप्य विषय। २. वह जिसका तत्त्व सहज में समझ में न आ सके।

रहाई-संज्ञा स्त्री० १. दे० "रहन"। २. कल। चैन।

रहाघना-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ गाँव भर के सब पशु एकत्र होकर खड़े हों।

रहित-वि० बिना। शून्य।

रहिला-संज्ञा पुं० चना।

रहीम-वि० कृपाळु। संज्ञा पुं० रहीम खाँ खानखाना का उपनाम।

रंका-वि० दे० "रंक"।

रंगा-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और रंग में मधुर होती है।

रंचना-क्रि० भ० अनुरक्त होना। क्रि० स० रंग बढ़ाना। रंगना।

रंजना-क्रि० भ० काजल लगावना। क्रि० स० रंजित करना। रंगना।

रंटा-संज्ञा पुं० टिटिहरी चिड़िया।

रंठ-वि० स्त्री० विधवा।

रंघ-संज्ञा पुं० निकट। पास।

रंघना-क्रि० स० (भोजन आदि) पकाना।

रंमना-क्रि० भ० (गायिका) बोलना या चिहाना।

राह-संज्ञा पुं० छोटा राता।

राई-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों। २. बहुत थोड़ी

शाला । ३. रणभूमि ।

रंगमहल-संज्ञा पुं० भोग-विलास करने का स्थान ।

रंग-रली-संज्ञा स्त्री० आमोद-प्रमोद ।

रंगरस-संज्ञा पुं० दे० "रंगरली" ।

रंगरसिया-संज्ञा पुं० भोग-विलास करनेवाला ।

रंगराता-वि० अनुरागपूर्ण ।

रंगरूट-संज्ञा पुं० सेना या पुलिस आदि में नया भर्ता होनेवाला सिपाही ।

रंगरेझ-संज्ञा पुं० [स्त्री० रंगरेखिन] वह जो कपड़े रंगने का काम करता हो ।

रंगरेली-संज्ञा स्त्री० दे० "रंगरली" ।

रंगधाना-क्रि० स० रंगने का काम दूसरे से कराना ।

रंगशाला-संज्ञा स्त्री० नाटक खेलने का स्थान ।

रंगसाज-संज्ञा पुं० वह जो चीजों पर रंग चढ़ाता हो ।

रंगाई-संज्ञा स्त्री० रंगने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

रंगी-वि० आनंदी । मौजी ।

रंगीन-वि० [ भाव० संज्ञा रंगीने ]  
१. रंगा हुआ । २. आमोद-प्रिय ।

रंगीला-वि० [ स्त्री० रंगीली ] १. रसिया । रसिक । २. सुंदर ।

रंच, रंचक-वि० थोड़ा । अल्प ।

रंज-संज्ञा पुं० [वि० रंजोदा] १. दुःख ।

खेद । २. शोक ।

रंजक-वि० प्रसन्न करनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० थोड़ी सी बारूद जो चत्ती लगाने के वास्ते थेंदूक की प्याली पर रखी जाती है ।

रंजन-संज्ञा पुं० चित्त प्रसन्न करने की

क्रिया ।

रंजित-वि० रंगा हुआ ।

रंजिश-संज्ञा स्त्री० रंज होने का भाव ।

रंजीदा-वि० [ भाव० संज्ञा रंजीदगी ]

१. दुःखित । २. नाराज़ ।

रंहापा-संज्ञा पुं० विधवा की दशा । धर्वापन ।

रंडी-संज्ञा स्त्री० घेरया ।

रंडुआ, रंडुघा-संज्ञा पुं० वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो ।

रंदना-क्रि० स० रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना ।

रंदा-संज्ञा पुं० एक औज़ार जिससे लकड़ी की सतह छीलकर चिकनी की जाती है ।

रंधन-संज्ञा पुं० रसोई बनाना ।

रंध-संज्ञा पुं० छेद । सुराख ।

रंभा-संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अस्त्र ।

संज्ञा पुं० छोहे का वह मोटा भारी डंडा जिससे दीवारों आदि को खोदते हैं ।

रंभाना-क्रि० भ० गाय का योक्तना ।

रंहचटा-संज्ञा पुं० मनोरथ-सिद्धि की लालसा ।

रश्म्यत-संज्ञा स्त्री० प्रज्ञा । रिश्ता ।

रहकौ-क्रि० वि० जरा भी । कुछ भी ।

रहनि-संज्ञा स्त्री० रात ।

रई-संज्ञा स्त्री० मधानी ।

वि० स्त्री० १. डूबी हुई । २. अनुरक्त ।

रईस-संज्ञा पुं० १. जिसके पास रियासत या हलका हो । २. बड़ा

आदमी ।

रउताई-संज्ञा स्त्री० मालिक होने

मात्रा या परिमाण ।  
 राज-संज्ञा पुं० राजा । नरेश ।  
 राजती-संज्ञा पुं० राजवंश का कोई व्यक्ति ।  
 राजर्षि-वि० श्रीमान् का । आपका ।  
 राक्षस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राक्षसि ] राक्षस ।  
 राका-संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा की रात ।  
 राकेश-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
 राक्षस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राक्षसी ] १. निशिचर । २. कोई दुष्ट प्राणी ।  
 राख-संज्ञा स्त्री० भरम । खाक ।  
 राखना-क्रि० स० रक्षा करना ।  
 राखी-संज्ञा स्त्री० रक्षाबंधन का डोरा । संज्ञा स्त्री० दे० "राख" ।  
 राग-संज्ञा पुं० १. सांसारिक सुखों की चाह । २. अनुराग । ३. अंगराग । ४. किसी खास धुन में बैठे हुए स्वर । ( संगीत )  
 रागिनी-संज्ञा स्त्री० संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री । प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गई हैं ।  
 रागी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० रागिनी ] प्रेमी । वि० १. रँगा हुआ । २. खाज । ३. विषय-वासना में फँसा हुआ ।  
 राघव-संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र ।  
 राचना-क्रि० स० दे० "रचना" ।  
 क्रि० अ० रचा जाना । बनना ।  
 क्रि० अ० १. रँगा जाना । रंजित होना । २. अनुरक्त होना । प्रेम करना । ३. प्रसन्न होना ।  
 राज-संज्ञा पुं० १. हुकूमत । शासन । २. एक राजा द्वारा शासित देश । राज्य ।  
 राज-संज्ञा पुं० रहस्य । भेद ।  
 राजकर-संज्ञा पुं० वह कर जो प्रजा

से राजा लेता है ।  
 राजकीय-वि० राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला ।  
 राजकुमारी-संज्ञा पुं० दे० "राजकुमार" ।  
 राजकुमार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राजकुमारी ] राजा का पुत्र ।  
 राजगद्दी-संज्ञा स्त्री० १. राजसिंहासन । २. अभिषेक ।  
 राजगिरि-संज्ञा पुं० १. मगध देश के एक पर्वत का नाम । २. दे० "राजगृह" ।  
 राजगीर-संज्ञा पुं० मकान बनाने-वाला कारीगर । राज ।  
 राजगृह-संज्ञा पुं० १. राजा का महल । २. एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है ।  
 राजतरंगिणी-संज्ञा स्त्री० फरहण-कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास ।  
 राजस्य-संज्ञा पुं० राजा का भाव या धर्म ।  
 राजदंड-संज्ञा पुं० वह दंड जो राजा की आज्ञा से दिया जाय ।  
 राजद्रोह-संज्ञा पुं० [ वि० राजद्रोही ] राजा या राज्य के प्रति द्रोह । बगावत ।  
 राजद्वार-संज्ञा पुं० १. राजा की हथोड़ी । २. न्यायालय ।  
 राजधानी-संज्ञा स्त्री० किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो ।  
 राजना-क्रि० अ० १. उपस्थित होना । २. शोभित होना ।  
 राजनीति-संज्ञा स्त्री० वह नीति जिसका अवलंबन करके राजा अपने

राज्य की रक्षा और शासन दब करता है।

राजनीतिक-वि० राजनीति-संबंधी।

राजन्य-संज्ञा पुं० चरित्र।

राजपंखी-संज्ञा पुं० दे० "राजहंस"।

राजपथ-संज्ञा पुं० यही सड़क।

राजपुत्र-संज्ञा पुं० १. राजकुमार।

२. एक जाति।

राजपूत-संज्ञा पुं० राजपूताने में रहने-

वाले चरित्रों के कुछ विशिष्ट वंश।

राजवाहा-संज्ञा पुं० वह बड़ी नहर

जिसमें से अनेक छोटी छोटी नहरें

निकासी जाती हैं।

राजमोग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

महीन धान।

राजमहल-संज्ञा पुं० राजा का महल।

राजमार्ग-संज्ञा पुं० चौड़ी सड़क।

राजयक्ष्मा-संज्ञा पुं० चय रोग। तपे-

दिक।

राजयोग-संज्ञा पुं० वह प्राचीन योग

जिसका उपदेश परतंजलि ने योगशास्त्र

में किया है।

राजरोग-संज्ञा पुं० चय रोग।

राजपि-संज्ञा पुं० वह अपि जो राज-

वंश या चरित्र कुल का हो।

राजलक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० १. राजभी।

२. राजा की शोभा।

राजवंश-संज्ञा पुं० राजा का कुल

या वंश।

राजस-वि० [ स्त्री० राजसी ] रजोगुण

से वरपन्न। रजोगुणी।

राजसभा-संज्ञा स्त्री० दरबार।

राजसमाज-संज्ञा पुं० राजाओं का

दरबार या समाज।

राजसिंहासन-संज्ञा पुं० राजा के

बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।

राजसी-वि० राजा के योग्य।

वि० स्त्री० जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो।

राजसूय-संज्ञा पुं० एक यज्ञ जिसके

करने का अधिकार केवल ऐसे राजा

को होता है, जो सम्राट् पद का

अधिकारी हो।

राजस्थान-संज्ञा पुं० दे० "राज-

पूताना"।

राजस्व-संज्ञा पुं० दे० "राजकर"।

राजहंस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राजहंसी ]

एक प्रकार का हंस।

राजा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राणी, रानी ]

१. किसी देश या जाति का प्रधान

कासक जो उस देश या जाति की,

बुझों के आक्रमण से, रक्षा करता

है। बादशाह। २. एक उपाधि।

राजाधिराज-संज्ञा पुं० राजाओं का

राजा। शाहशाह।

राजि-संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार।

२. रेखा।

राजिका-संज्ञा स्त्री० राई।

राजित-वि० शोभित।

राजिव-संज्ञा पुं० कमल।

राजी-संज्ञा स्त्री० पंक्ति। श्रेणी।

राजी-वि० १. कही हुई बात मानने

को तैयार। २. प्रसन्न।

राजीनामा-संज्ञा पुं० वह लेख जिसके

द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर

मेल कर लें।

राजीव-संज्ञा पुं० कमल।

राशो-संज्ञा स्त्री० रानी। राजमहिषी।

राज्य-संज्ञा पुं० १. राजा का काम।

शासन। २. वह देश जिसमें एक

राजा का शासन हो।

कनुककुनुक-संज्ञा स्त्री० दे० "कन-कुन" ।

रूपना-क्रि० भ० १. रोना खाना । २. डटना । अड़ना ।

रूपया-संज्ञा पुं० १. भारत में प्रचलित चाँदी का सबसे बड़ा सोनाह्र धाने का सिक्का । २. संपत्ति ।

रूपहला-वि० [ स्त्री० रूपवती ] चाँदी के रंग का । चाँदी का सा ।

रुमाली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का लँगोटा ।

रुवाई-संज्ञा स्त्री० सुन्दरता ।

रुखआ-संज्ञा पुं० बड़ी जाति का वृक्ष ।

रुलना-क्रि० भ० हथर-हथर मारा फिरना ।

रुलाई-संज्ञा स्त्री० रोने की किया या भाव ।

रुलाना-क्रि० स० दूसरे को रोने में प्रयुक्त करना ।

रुघा-संज्ञा पुं० सेमल के फूल में का धूआ ।

रुष्ट-वि० क्रुद्ध ।

रुष्टता-संज्ञा स्त्री० अप्रसन्नता ।

रुसना-क्रि० भ० दे० "रुसना" ।

रुसघा-वि० [ म० रुसवाई ] जिसकी बहुत बदनामी हो ।

रुस्तम-संज्ञा पुं० १. फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पदखवान । २. घीर ।

रुहठि-संज्ञा स्त्री० रुठने की किया या भाव ।

रुहेलखंड-संज्ञा पुं० अवध के उत्तर पश्चिम पड़नेवाला एक प्रदेश ।

रुहेला-संज्ञा पुं० पठानों की एक जाति जो प्रायः रुहेलखंड में बसी है ।

रुध-वि० रुका हुआ । अवरुद्ध ।

रुधना-क्रि० स० १. कंठ से घेरना । २. चारों ओर से

रु-संज्ञा पुं० मुँह । चेहरा ।

रुई-संज्ञा स्त्री० कपास के डोंडे या कोप के अंदर का धूआ जिसे बट या

कातकर सूत बनाते अथवा जिसे गद्दे, रुझाई या जाड़े के पहनने के

कपड़ों में भरते हैं ।

रुईदार-वि० जिसमें रुई भरी गई हो ।

रुख-संज्ञा पुं० पेड़ । वृक्ष ।

वि० दे० "रुखा" ।

रुखा-वि० १. जो चिकना न हो ।

२. सूखा । ३. नीरस । बदासीन ।

रुखापन-संज्ञा पुं० रुखे होने का भाव ।

रुमना-क्रि० भ० दे० "रुलना" ।

रुठ, रुठन-संज्ञा स्त्री० रुठने की किया या भाव ।

रुठना-क्रि० भ० नाराज होना ।

रुढ़, रुढ़ा-वि० भेड़ । उत्तम ।

रुढ़-वि० [ स्त्री० रुढ़ा ] बड़ा हुआ ।

रुढ़ि-संज्ञा स्त्री० १. बड़ाई । बड़ाव ।

२. प्रथा । आद ।

रूप-संज्ञा पुं० १. शक्ति । सूरत ।

२. सौंदर्य ।

वि० रूपवान् । रूपसूरत ।

रूपक-संज्ञा पुं० १. मूर्ति । प्रति-

कृति । २. दृश्य काव्य । ३. एक

प्रसिद्ध काव्य-चलंकार ।

रूपगर्विता-संज्ञा स्त्री० वह गविता

नायिका जिसे अपने रूप का अभि-

मान हो ।

रूपमंजरी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार

का फूल । २. एक प्रकार का धान ।

रूपमनी-वि० रूपवती ।

मात्रा या परिमाण ।

राज-संज्ञा पुं० राजा । नरेश ।

राजता-संज्ञा पुं० राजवंश का कोई व्यक्ति ।

राजरा-वि० श्रीमान् का । आपका ।

राकस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राकसिन ] राक्षस ।

राफा-संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा की रात ।

राकेश-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

राक्षस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राक्षसी ] १. निशिचर । २. कोई दुष्ट प्राणी ।

राख-संज्ञा स्त्री० भरम । स्वाक ।

राखना-कि० स० रक्षा करना ।

राखी-संज्ञा स्त्री० रक्षाबंधन का डोरा । संज्ञा स्त्री० दे० "राख" ।

राग-संज्ञा पुं० १. सांसारिक सुखों की चाह । २. अनुराग । ३. श्रृंगाराग । ४. किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर । ( संगीत )

रागिनी-संज्ञा स्त्री० संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री । प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गई हैं ।

रागी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० रागिनी ] प्रेमी । वि० १. रंगा हुआ । २. खाख । ३.

विषय-वासना में फँसा हुआ ।

राघव-संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र ।

राखना-कि० स० दे० "रचना" ।

कि० अ० रचा जाना । बनना ।

कि० अ० १. रंगा जाना । रंजित होना । २. अनुरक्त होना । प्रेम करना । ३. प्रसन्न होना ।

राज-संज्ञा पुं० १. हुकूमत । शासन ।

२. एक राजा द्वारा शासित देश । राज्य ।

राज-संज्ञा पुं० रहस्य । भेद ।

राजकर-संज्ञा पुं० वह कर जो प्रजा

से राजा लेता है ।

राजकीय-वि० राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला ।

राजकुविरा-संज्ञा पुं० दे० "राज-कुमार" ।

राजकुमार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राजकुमारी ] राजा का पुत्र ।

राजगद्दी-संज्ञा स्त्री० १. राजसिंहासन । २. अभिषेक ।

राजगिरि-संज्ञा पुं० १. मगध देश के एक पर्वत का नाम । २. दे० "राजगृह" ।

राजगीर-संज्ञा पुं० मकान बनाने-वाला कारीगर । राज ।

राजगृह-संज्ञा पुं० १. राजा का महल । २. एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है ।

राजतरंगिणी-संज्ञा स्त्री० कण्वण-कृत कारमीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास ।

राजत्व-संज्ञा पुं० राजा का भाव या धर्म ।

राजदंड-संज्ञा पुं० वह दंड जो राजा की आज्ञा से दिया जाय ।

राजद्रोह-संज्ञा पुं० [ वि० राजद्रोही ] राजा या राज्य के प्रति द्रोह । घमावत ।

राजद्वार-संज्ञा पुं० १. राजा की ल्योड़ी । २. न्यायालय ।

राजधानी-संज्ञा स्त्री० किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो ।

राजना-कि० अ० १. उपस्थित होना । २. शोभित होना ।

राजनीति-संज्ञा स्त्री० वह नीति जिसका अवलंबन करके राजा अपने

रख-संज्ञा पुं० १. कपोल । माल ।  
२. मुख । ३. शतरंज का एक मोहरा ।

कि० वि० तरफ़ । धोर ।

रखसत-संज्ञा स्त्री० रवानगी । कूच ।  
रखसती-संज्ञा स्त्री० विवाह, विशेषतः दुल्हन की विवाह ।

रखाई-संज्ञा स्त्री० १. रूखापन । २. शुष्कता । ३. चेसुरीवती ।

रखानी-संज्ञा स्त्री० चढ़ाई का लोहे का एक औज़ार ।

रखाई-वि० [ स्त्री० खोई ] रखाई लिए हुए । रूखा सा ।

रुझ-वि० रोगी । घीमार ।

रचना-कि० प्र० रुचि के अनुकूल होना ।

रुचि-संज्ञा स्त्री० १. प्रवृत्ति । २. अनुराग । ३. शोभा । ४. स्वाद ।  
वि० कपता हुआ । योग्य ।

रुचिकर-वि० अच्छा लगनेवाला ।

रुचिर-वि० सुंदर ।

रुचिराई-संज्ञा स्त्री० सुंदरता । मनोहरता ।

रुचिधर्षक-वि० भूख बढ़ानेवाला ।

रुज-संज्ञा पुं० १. घेदना । २. घाव ।

रुजाली-संज्ञा स्त्री० कपों का समूह ।

रुजी-वि० अस्वस्थ । घीमार ।

रुजू-वि० जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो ।

रुठ-संज्ञा पुं० क्रोध । गुस्सा ।

रुठाना-कि० प्र० नाराज़ करना ।

रुणित-वि० अनकारता या यज्ञता हुआ ।

रुतथा-संज्ञा पुं० १. ओहदा । २. प्रतिष्ठा ।

रुदन-संज्ञा पुं० रोना ।

रुदित-वि० जो रो रहा हो ।

रुद्ध-वि० १. घेरा हुआ । २. जिसकी गति रोक ली गई हो ।

रुद्र-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के गण-देवता जो कुल मिलाकर ग्यारह हैं ।

२. शिव का एक रूप ।

वि० भयंकर ।

रुद्रका-संज्ञा पुं० रुद्राक्ष ।

रुद्रगण-संज्ञा पुं० पुराणानुसार शिव के बहुत से परिपद ।

रुद्रट-संज्ञा पुं० साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका बनाया हुआ 'काम्यालंकार' ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है ।

रुद्रतेज-संज्ञा पुं० कार्तिकेय ।

रुद्रपति-संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

रुद्रपत्नी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

रुद्रलोक-संज्ञा पुं० वह लोक जिसमें शिव का निवास माना जाता है ।

रुद्रयंती-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध वन-पथि जो दिव्यौषधि-वर्ग में है ।

रुद्रविंशति-संज्ञा स्त्री० रुद्र-बीसी ।

रुद्राक्ष-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वृक्ष । २. इस वृक्ष का गोख बीज । प्रायः शैव लोग जिनकी मालाएं पहनते हैं ।

रुद्राणी-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।

रुद्री-संज्ञा स्त्री० वेद के रुद्रानुवाक या अथमपण्य सूक्त की ग्यारह आठ-तिथियाँ ।

रुधिर-संज्ञा पुं० शरीर में का रक्त । शोणित । लहू ।

रुधिराशी-वि० लहू पीनेवाला ।

रुनमुन-संज्ञा स्त्री० नूपुर, किंकिणी आदि का शब्द । कलरव । कनकार ।

रुनित-वि० यज्ञता हुआ ।

राज्य की रक्षा और शासन इष्ट करता है।

राजनीतिक-वि० राजनीति-संबंधी।

राजन्य-संज्ञा पुं० पण्डित।

राजपंखी-संज्ञा पुं० दे० "राजहंस"।

राजपथ-संज्ञा पुं० पड़ी सड़क।

राजपुत्र-संज्ञा पुं० १. राजकुमार।

२. एक जाति।

राजपूत-संज्ञा पुं० राजपूताने में रहने-

वाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।

राजवाहा-संज्ञा पुं० वह बड़ी नहर

जिसमें से बनेक छोटी छोटी नहरें

निकासी जाती हैं।

राजमोग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

महीन धान।

राजमहल-संज्ञा पुं० राजा का महल।

राजमार्ग-संज्ञा पुं० चौकी सड़क।

राजयक्ष्मा-संज्ञा पुं० चय रोग। तपे-

दिक।

राजयोग-संज्ञा पुं० वह प्राचीन योग

जिसका उपदेश परतजलि ने योगशास्त्र

में किया है।

राजरोग-संज्ञा पुं० चय रोग।

राजवि-संज्ञा पुं० वह अवि जो राज-

वंश या क्षत्रिय कुल का हो।

राजलक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० १. राजश्री।

२. राजा की शोभा।

राजवंश-संज्ञा पुं० राजा का कुल

या वंश।

राजस-वि० [ स्त्री० राजसी ] रजोगुण

से वरपड़। रजोगुणी।

राजसमा-संज्ञा स्त्री० दरबार।

राजसमाज-संज्ञा पुं० राजाओं का

दरबार या समाज।

राजसिंहासन-संज्ञा पुं० राजा के

बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।

राजसी-वि० राजा के योग्य।

वि० स्त्री० जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो।

राजसूय-संज्ञा पुं० एक यज्ञ जिसके

करने का अधिकार केवल ऐसे राजा

को होता है, जो सम्राट् पद का

अधिकारी हो।

राजस्थान-संज्ञा पुं० दे० "राज-

पूताना"।

राजस्व-संज्ञा पुं० दे० "राजकर"।

राजहंस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राजहंसी ]

एक प्रकार का हंस।

राजा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राणी, रानी ]

१. किसी देश या जाति का प्रधान

शासक जो उस देश या जाति की,

दूसरों के शासकण से, रक्षा करता

है। बादशाह। २. एक उपाधि।

राजाधिराज-संज्ञा पुं० राजाओं का

राजा। शार्हशाह।

राजि-संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार।

२. रेखा।

राजिका-संज्ञा स्त्री० राई।

राजित-वि० शोभित।

राजिव-संज्ञा पुं० कमल।

राजी-संज्ञा स्त्री० पंक्ति। श्रेणी।

राजी-वि० १. कही हुई बात मानने

का तैयार। २. प्रसन्न।

राजीनामा-संज्ञा पुं० वह लेख जिसके

द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर

मेल कर लें।

राजीव-संज्ञा पुं० कमल।

राशो-संज्ञा स्त्री० रानी। राजमहिषी।

राज्य-संज्ञा पुं० १. राजा का काम।

शासन। २. वह देश जिसमें एक

राजा का शासन हो।



रुनुकरुनुक-संज्ञा स्त्री० दे० "रुनु-  
कुन" ।

रुपना-कि० प्र० १. रोपा जाना ।  
२. डटना । अड़ना ।

रुपया-संज्ञा पुं० १. भारत में प्रच-  
लित चाँदी का सबसे बड़ा सोनाह  
घाने का सिक्का । २. संपत्ति ।

रुपहला-वि० [ स्त्री० रुपहली ] चाँदी  
के रंग का । चाँदी का सा ।

रुमाली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
लंगोठ ।

रुवाई-संज्ञा स्त्री० सुंदरता ।

रुहया-संज्ञा पुं० पक्षी जाति का  
बल्लू ।

रुलना-कि० प्र० इधर-उधर मारा  
फिरना ।

रुलाई-संज्ञा स्त्री० रोने की किया या  
भाव ।

रुलाना-कि० प्र० दूसरे को रोने में  
प्रवृत्त करना ।

रुघा-संज्ञा पुं० सेमल के फूल में का  
घुसा ।

रुष्ट-वि० क्रुद्ध ।

रुष्टता-संज्ञा स्त्री० अप्रसन्नता ।

रुसना-कि० प्र० दे० "रुसना" ।

रुसया-वि० [ भाव० रुसवाई ] जिसकी  
बहुत बदनामी हो ।

रुस्तम-संज्ञा पुं० १. फारस का एक  
प्रसिद्ध प्राचीन पक्षवान । २. चीर ।

रुहति-संज्ञा स्त्री० रुठने की किया  
या भाव ।

रुहेलखंड-संज्ञा पुं० अवध के उत्तर  
पश्चिम पड़नेवाला एक प्रदेश ।

रुहेला-संज्ञा पुं० पठानों की एक जाति  
जो प्रायः रुहेलखंड में बसी है ।

रुध-वि० रुका हुआ । अवरुद्ध ।

रुधना-कि० प्र० १. कटो

से घेरना । २. चारों ओर से

रु-संज्ञा पुं० सुँह । चेहरा ।

रुई-संज्ञा स्त्री० कपास के डोंडे या  
कोप के चंदर का घुसा जिसे घट या  
कातकर सूत बनाते थथवा जिसे  
गद्दे, रुड़ाई या जाड़े के पहनने के  
कपड़ों में भरते हैं ।

रुईदार-वि० जिसमें रुई भरी गई हो ।

रुख-संज्ञा पुं० पेड़ । वृक्ष ।

वि० दे० "रुखा" ।

रुखा-वि० १. जो चिकना न हो ।

२. सूखा । ३. नीरस । बहासीन ।

रुखापन-संज्ञा पुं० रुखे होने का  
भाव ।

रुमना-कि० प्र० दे० "बलमना" ।

रुठ, रुठन-संज्ञा स्त्री० रुठने की किया  
या भाव ।

रुठना-कि० प्र० माराजु होना ।

रुड़, रुड़ा-वि० श्रेष्ठ । उत्तम ।

रुढ़-वि० [ स्त्री० रुढ़ा ] बढ़ा हुआ ।

रुढ़ि-संज्ञा स्त्री० १. चढ़ाई । चढ़ाव ।

२. प्रया । चाख ।

रुप-संज्ञा पुं० १. शकल । सूरत ।

२. सौंदर्य ।

वि० रूपवान् । खूबसूरत ।

रुपक-संज्ञा पुं० १. मूर्ति । प्रति-  
कृति । २. दृश्य काव्य । ३. एक  
प्रसिद्ध काव्य-शैली ।

रुपगर्विता-संज्ञा स्त्री० वह गर्विता  
नायिका जिसे अपने रूप का अभि-  
मान हो ।

रुपमंजरी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार  
का फूल । २. एक प्रकार का घान ।

रुपमनी-वि० रूपवती ।

राज्यतंत्र-संज्ञा पुं० राज्य की शासन-प्रणाली ।

राज्यव्यवस्था-संज्ञा स्त्री० राज्य-नियम । नीति । कानून ।

राट-संज्ञा पुं० राजा । बादशाह ।

राठौर-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश ।

राह-वि० नीच ।

राहू-संज्ञा स्त्री० राह । ऋगदा ।

राहड़ि-संज्ञा पुं० वेग के उत्तरी भाग का नाम ।

राणा-संज्ञा पुं० राजा ।

रात-संज्ञा स्त्री० संध्या से प्रातःकाल तक का समय । रजनी ।

रातना-कि० भ० १. लाल रंग से रंग जाना । २. अनुरक्त होना ।

राता-वि० [ स्त्री० राती ] १. लाल । सुख । २. रंगा हुआ ।

रातिथ-संज्ञा पुं० पशुधर्म का भोजन ।

रात्रि-संज्ञा स्त्री० रात ।

रात्रिचारी-संज्ञा पुं० रातस ।

राधन-संज्ञा पुं० साधने की क्रिया ।

राधना-कि० भ० आराधना करना । पूजा करना ।

राधा-संज्ञा स्त्री० वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी ।

राधावल्लभी-संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय ।

राधिका-संज्ञा स्त्री० वृषभानु गोप की कन्या, राधा ।

रान-संज्ञा स्त्री० जंघा । जाँघ ।

राना-संज्ञा पुं० दे० "राणा" ।

रानी-संज्ञा स्त्री० १. राजा की स्त्री । २. स्वामिनी ।

रानी-काजर-संज्ञा पुं० एक प्रकार

का धान ।

राय-संज्ञा स्त्री० थोड़ाकर-खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस ।

राम-संज्ञा पुं० १. परशुराम । २. बलराम । ३. श्रीरामचंद्र । ४. ईश्वर ।

रामगिरि-संज्ञा पुं० नागपुर जिले की एक पहाड़ी ।

रामचंद्र-संज्ञा पुं० अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं ।

रामजना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० रामजनी ] एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति करती हैं ।

रामटेक-संज्ञा पुं० नागपुर जिले की एक पहाड़ी । रामगिरि ।

रामतरोई-संज्ञा स्त्री० दे० "मिंदी" ।

रामदल-संज्ञा पुं० रामचंद्रजी की बंदरोंवाली सेना ।

रामदाना-संज्ञा पुं० मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा ।

रामदास-संज्ञा पुं० १. बलुमान् । २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे ।

रामधाम-संज्ञा पुं० साकेत लोक ।

रामनवमी-संज्ञा स्त्री० चैत्र सुदी नवमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था ।

रामनामी-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिस पर "राम राम" छपा रहता है ।

रामरज-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं ।

रामरस-संज्ञा पुं० नमक ।

रामराज्य-संज्ञा पुं० अर्यंत सुख-दायक शासन ।

रसभय

रूपमय-वि० [ स्त्री० रूपमयी ] अति सुंदर ।

रूपवंत-वि० [ स्त्री० रूपवंती ] खूबसूरत । सुंदर ।

रूपवती-संज्ञा स्त्री० सुंदरी । खूबसूरत । (स्त्री०)

रूपवान्, रूपवान-वि० [ स्त्री० रूपवती ] सुंदर ।

रूपा-संज्ञा पुं० १. चांदी । २. घटिया चांदी ।

रूपी-वि० [ स्त्री० रूपिणी ] १. रूपधारी । २. तुल्य ।

रूपोश-वि० [ संज्ञा रूपोशी ] छिपा हुआ । गुप्त ।

रूप्यक-संज्ञा पुं० रूपया ।

रुचक-क्रि० वि० सम्मुख । सामने ।

रुम-संज्ञा पुं० टर्की या तुर्की देश का एक नाम ।

रुमाल-संज्ञा पुं० कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ-मुँह पोछते हैं ।

रुमी-वि० रुम देश-संबंधी ।

रुटना-क्रि० भ० चिछाना ।

रुरा-वि० [ स्त्री० रुरी ] १. श्रेष्ठ । २. सुंदर ।

रुसना-क्रि० भ० दे० "रुठना" ।

रुसा-संज्ञा पुं० एक सुगंधित घास जिसका तेल निकाला जाता है ।

रुसी-वि० रुस देश का निवासी ।

संज्ञा स्त्री० १. रुस देश की भाषा ।

२. सिर के चमड़े पर जमा हुआ मूसी के समान छिलका ।

रुह-संज्ञा स्त्री० १. आत्मा । जीवात्मा । २. सार ।

रुंकना-क्रि० भ० गंदे का धोखना ।

रेंगना-क्रि० भ० च्यूटी आदि कीड़ों का चलना ।

रेंड-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके बीजों का तेल दस्तावर होता है ।

रेंडी-संज्ञा स्त्री० रेंड के बीज ।

रे-अव्य० एक तुच्छ संवोधन शब्द ।

रेख-संज्ञा स्त्री० १. लकीर । २. चिह्न । ३. नई निकलती हुई मूर्छ ।

रेखता-संज्ञा पुं० एक प्रकार की गुज़ल ।

रेखा-संज्ञा स्त्री० लकीर ।

रेखागणित-संज्ञा पुं० गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं ।

रेगिस्तान-संज्ञा पुं० बालू का मैदान ।

मरु देश ।

रेचक-वि० जिसके खाने से दस्त आवे ।

संज्ञा पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया जिसमें खींचे हुए स्वास को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है ।

रेचन-संज्ञा पुं० १. दस्त लाना ।

जुछाव ।

रेचना-क्रि० स० वायु या मल बाहर निकालना ।

रेज़ा-संज्ञा पुं० बहुत छोटा टुकड़ा ।

रेगु-संज्ञा स्त्री० १. धूल । २. कण ।

रेगुका-संज्ञा स्त्री० १. बालू । २. परशुराम की माता नाम ।

रेत-संज्ञा स्त्री० १. बालू । २. भूमि ।

रेतना-क्रि० स० रेत से किसी वस्तु में से छोटे छोटे गिराना ।

रामलीला—संज्ञा स्त्री० राम के चरित्रों का अभिनय ।

रामयाण—वि० तुरंत प्रभाव दिखाने वाला । (श्रीपथ)

रामसनेही—संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक संप्रदाय ।

रामसेतु—संज्ञा पुं० रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह ।

रामा—संज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री । २. सीता ।

रामानंद—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य । वे विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे ।

रामानंदी—वि० रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी ।

रामानुज—संज्ञा पुं० श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवक्तृ का एक प्रसिद्ध आचार्य ।

रामायण—संज्ञा पुं० धार्मिक-कृत रामायण जो आदिकाम्य भी कहलाता है ।

रामायणी—संज्ञा पुं० वह जो रामायण की कथा कहता हो ।

रामायत—संज्ञा पुं० वैष्णव आचार्य रामानंद का खलाया हुआ एक संप्रदाय ।

रामेश्वर—संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के समुद्र-तट का एक शिखर ।

राय—संज्ञा पुं० १. राजा । २. भाट । संज्ञा स्त्री० सम्मति ।

रायज—वि० जिसका रवाज हो । चलनसार ।

रायता—संज्ञा पुं० दही में पड़ा हुआ नमकीन साग या सुदिया आदि ।

रायसा—संज्ञा पुं० दे० "रासो" ।

राट—संज्ञा पुं० मगड़ा । रंटा ।

राठ—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा पेड़ । घना । घूष ।

राव—संज्ञा पुं० दे० "राय" ।

रावटी—संज्ञा स्त्री० १. छोटीदारी । २. कोई छोटा घर । ३. चारहदरी ।

रावण—संज्ञा पुं० लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचंद्र ने मारा था । दशानन ।

राघव—संज्ञा पुं० १. छोटा राजा । २. रामचंद्र । सरदार ।

राघल—संज्ञा पुं० शंतपुर । राजमहल । निवास ।

संज्ञा पुं० { स्त्री० रावति, रावली } १. राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि । २. प्रधान ।

राशि—संज्ञा स्त्री० १. ढेर । पुंज । २. क्रांतिकृत्त के विशिष्ट तारासमूह ।

राशिचक्र—संज्ञा पुं० नेप, घूष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल ।

राशिनाम—संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म-समय की राशि के अनुसार होता है ।

राष्ट्र—संज्ञा पुं० १. राज्य । २. देश । ३. एक देश या राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय ।

राष्ट्रकूट—संज्ञा पुं० दे० "राठौर" ।

राष्ट्रतंत्र—संज्ञा पुं० राज्य का शासन करने की प्रणाली ।

राष्ट्रपति—संज्ञा पुं० आधुनिक प्रजातंत्र शासन-प्रणाली में वह व्यक्ति जो शासन करने के लिये चुना जाता है ।

राष्ट्रीय—वि० राष्ट्र-संबंधी । राष्ट्र का ।

रास—संज्ञा स्त्री० गोपों की प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें वे सब घेरा घाँघर नाचते थे ।

रेता-संज्ञा पुं० १. बालू । २. बालू का मैदान ।

रेती-संज्ञा स्त्री० १. एक औजार जिसे किसी वस्तु पर रगड़ने से उसके महीन कण लूटकर गिरते हैं । २. नदी या समुद्र के किनारे पड़ी हुई बलुई ज़मीन ।

रेतीला-वि० [स्त्री० रेतीली] बलुआ ।

रेफ-संज्ञा पुं० हलन्त रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके मूलक पर रहता है ।

रेल-संज्ञा स्त्री० १. दो लोहे की लाइन जिसपर रेलगाड़ी चलती है । २. रेलगाड़ी । ३. भरमार ।

रेलना-क्रि० स० आगे की ओर रुकें-लना ।

क्रि० अ० ठसंठस मरा होना ।

रेलपेल-संज्ञा स्त्री० भारी भीड़ ।

रेला-संज्ञा पुं० १. जल का प्रवाह । यहाय । २. अधिकता । बहुतायत ।

रेवड़ी-संज्ञा स्त्री० तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई ।

रेवती-संज्ञा स्त्री० बछराम की पत्नी जो राजा रेवत की कन्या थीं ।

रेवतीरमण-संज्ञा पुं० बछराम ।

रेवा-संज्ञा स्त्री० नर्मदा नदी ।

रेशम-संज्ञा पुं० एक प्रकार का महीन, चमकीला और हल्के रंग का तंतु जिससे कपड़े बुने जाते हैं । कैशेय ।

रेशमी-वि० रेशम का बना हुआ ।

रेशा-संज्ञा पुं० तंतु या महीन सूत जो पोथी की छाली आदि से निकलता है ।

रेह-संज्ञा स्त्री० खार मिछी हुई चूने मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई

जाती है ।

रेहन-संज्ञा पुं० बंधक । गिरवी ।

रेहनदार-संज्ञा पुं० वह जिसके पास कोई धन्यदाद रेहन रखी हो ।

रेहननामा-संज्ञा पुं० वह कागज़ जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों ।

रैवास-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध चमार भक्त जो रामानंद का शिष्य और कबीर का समकालीन था । २. चमार ।

रैन, रैनि-संज्ञा स्त्री० रात्रि ।

रैयत-संज्ञा स्त्री० प्रजा । रिवाया ।

रैयाराव-संज्ञा पुं० छोटा राजा ।

रैवतक-संज्ञा पुं० गुजरात का एक पर्वत जो अब गिरना कहलाता है ।

रौंगटा-संज्ञा पुं० सारे शरीर पर के घाल ।

रौंगटी-संज्ञा स्त्री० खेल में धुरा मानना या येईमानी करना ।

रौच-संज्ञा पुं० रोमाँ । लोम ।

रोआया-संज्ञा पुं० रोष । घातक ।

रोक-संज्ञा स्त्री० १. गति में बाधा । २. मनाही । ३. रोकनेवाली वस्तु ।

संज्ञा पुं० दे० "रोकड़" ।

रोक-टोक-संज्ञा स्त्री० बाधा ।

रोकड़-संज्ञा स्त्री० १. नगद रुपया पैसा आदि । २. जमा ।

रोकड़िया-संज्ञा पुं० पञ्जानची ।

रोकना-क्रि० स० १. चलने या बढ़ने न देना । २. रोक जाने से मना करना ।

रोग-संज्ञा पुं० [ वि० रोगी, रोग ] व्याधि । मर्ज ।

रोगन-संज्ञा पुं० १. रोग । २. पालिश ।

रोगनी-वि० रोगन किया हुआ ।

राज्यतंत्र-संज्ञा पुं० राज्य की शासन-प्रणाली ।

राज्यव्यवस्था-संज्ञा स्त्री० राज्य-नियम । नीति । कानून ।

राट-संज्ञा पुं० राजा । बादशाह ।

राठौर-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश ।

राह-वि० नीच ।

राह-संज्ञा स्त्री० राह । मगढ़ ।

राह-संज्ञा पुं० धर्म के उत्तरी भाग का नाम ।

राणा-संज्ञा पुं० राजा ।

रात-संज्ञा स्त्री० संध्या से प्रातःकाल तक का समय । रजनी ।

रातना-संज्ञा पुं० १. लाल रंग से रंग जाना । २. अनुरक्त होना ।

राता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० राती ] १. लाल । २. रंगा हुआ ।

रातिव-संज्ञा पुं० पशुआ का भोजन ।

रात्रि-संज्ञा स्त्री० रात ।

रात्रिचारी-संज्ञा पुं० राचस ।

राधन-संज्ञा पुं० साधने की क्रिया ।

राधना-संज्ञा पुं० १. आराधना करना । पूजा करना ।

राधा-संज्ञा स्त्री० कृष्णभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी ।

राधावल्लभी-संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय ।

राधिका-संज्ञा स्त्री० कृष्णभानु गोप की कन्या, राधा ।

रान-संज्ञा स्त्री० जंघा । जाँघ ।

राना-संज्ञा पुं० दे० "राणा" ।

रानी-संज्ञा स्त्री० १. राजा की स्त्री । २. स्वामिनी ।

रानी-काजर-संज्ञा पुं० एक प्रकार

का धान ।

राय-संज्ञा स्त्री० थोड़ाकर-खूब गाढ़ा किया हुआ मक्खे का रस ।

राम-संज्ञा पुं० १. परशुराम । २. बलराम । ३. श्रीरामचंद्र । ४. ईश्वर ।

रामगिरि-संज्ञा पुं० नागपुर जिले की एक पहाड़ी ।

रामचंद्र-संज्ञा पुं० अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं ।

रामजना-संज्ञा पुं० [ स्त्री० रामजनी ] एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति करती हैं ।

रामटेक-संज्ञा पुं० नागपुर जिले की एक पहाड़ी । रामगिरि ।

रामतरोई-संज्ञा स्त्री० दे० "मिंदी" ।

रामदल-संज्ञा पुं० रामचंद्रजी की धरोवाली सेना ।

रामदाना-संज्ञा पुं० मारसे या पैलाई की जाति का एक पैधा ।

रामदास-संज्ञा पुं० १. हनुमान् । २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे ।

रामधाम-संज्ञा पुं० साकेत लोक ।

रामनवमी-संज्ञा स्त्री० चैत्र सुदी नवमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था ।

रामनामी-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिस पर "राम राम" छपा रहता है ।

रामरज-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं ।

रामरस-संज्ञा पुं० नमक ।

रामराज्य-संज्ञा पुं० अत्यंत सुख-दायक शासन ।

विभीषण ।

लंगड़-वि० दे० "लंगड़ा" ।

लंगड़ा-वि० जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो ।

लंगड़ाना-कि० अ० लंग करते हुए चलना ।

लंगर-संज्ञा पुं० लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जिसका व्यवहार यही यही नावों या जहाजों को एक ही स्थान पर ठहराए रखने के लिये होता है ।

लंगूर-संज्ञा पुं० १. बंदर । २. पूछ । हुम । (बंदर की)

लंगूल-संज्ञा पुं० पूँछ ।

लंगोटा, लंगोटा-संज्ञा पुं० [ क० लंगोटी ] कमर पर बाँधने का एक प्रकार का घना हुआ घुँघु जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है ।

लंगोटी-संज्ञा स्त्री० कौपीन ।

लंघन-संज्ञा पुं० १. उपवास । २. डाँकना ।

लंठ-वि० मूर्ख । बजड़ ।

लंठरा-वि० जिसकी सब पूँछ कट गई हो ।

लंतरानी-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बड़ी बड़ी बातें । शोखी ।

लंपट-वि० व्यभिचारी । कामी ।

लंपटता-संज्ञा स्त्री० दुराचार ।

लंघ-संज्ञा पुं० वह रेखा जो किसी दूसरी रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण घनावे ।

वि० लंघा ।

लंघकर्ण-वि० जिसके कान लंबे हों ।

लंबतलंग-वि० ताड़ के समान लंबा ।

बहुत लंबा ।

लंघा-वि० [ स्त्री० लंघा ] जो किसी एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो ।

लंघाई-संज्ञा स्त्री० लंघा होने का भाव ।

लंघान-संज्ञा स्त्री० लंघाई ।

लंघी-वि० स्त्री० लंघा का स्त्रीलिंग रूप ।

लंघोदर-संज्ञा पुं० गणेश ।

लकड़वरघा-संज्ञा पुं० एक मांसाहारी जंगली जंतु जो भेड़िए से कुछ बड़ा होता है ।

लकड़हारा-संज्ञा पुं० जंगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला ।

लकड़ा-संज्ञा पुं० लकड़ी का मोटा कुंदा ।

लकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर उससे भलग हो गया हो । २. गलका । ३. छड़ी ।

लकड़ा-संज्ञा पुं० एक घातरोग जिसमें प्रायः चेहरा टेढ़ा हो जाता है ।

लकीर-संज्ञा स्त्री० वह सीधी आकृति जो बहुत दूर तक एक ही सीध में चली गई हो ।

लकुच-संज्ञा पुं० बड़हर ।

लकुट-संज्ञा स्त्री० लाठी । छड़ी ।

लकुटी-संज्ञा स्त्री० लाठी । छड़ी ।

लकड़-संज्ञा पुं० काठ का बड़ा कुंदा ।

लका-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कटु तर जिसकी पूँछ पंखे सी होती है ।

लक्ष्मी-वि० लाल के रंग का । साखी ।

लक्ष-वि० एक लाख । सै हज़ार ।

लक्ष्ण-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय । चिह्न । निशान ।

आसार ।

रामलीला-संज्ञा स्त्री० राम के चरित्रों का अभिनय ।

रामयाण-वि० तुरंत प्रभाव दिखाने वाला । (श्लेष)

रामसनेही-संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक संप्रदाय ।

रामसेतु-संज्ञा पुं० रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह ।

रामा-संज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री । २. सीता ।

रामानंद-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य । ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे ।

रामानंदी-वि० रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी ।

रामानुज-संज्ञा पुं० श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवक्तृ एक प्रसिद्ध आचार्य ।

रामायण-संज्ञा पुं० धार्मिक-कृत रामायण जो आदिकाव्य भी कहा जाता है ।

रामायणी-संज्ञा पुं० वह जो रामायण की कथा कहता हो ।

रामायत-संज्ञा पुं० वैष्णव आचार्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय ।

रामेश्वर-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के समुद्र-तट का एक शिखर ।

राय-संज्ञा पुं० १. राजा । २. भाट । संज्ञा स्त्री० सम्मति ।

रायज-वि० जिसका स्वाज हो । चलनसार ।

रायता-संज्ञा पुं० दही में पड़ा हुआ नमकीन साग या पुंदिआ आदि ।

रायसा-संज्ञा पुं० दे० "रासी" ।

रार-संज्ञा पुं० मगदा । टंटा ।

राल-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा पेड़ । धूना । धूप ।

राव-संज्ञा पुं० दे० "राय" ।

रावटी-संज्ञा स्त्री० १. छालदारी । २. कोई छोटा घर । ३. बारहदरी ।

रावण-संज्ञा पुं० लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचन्द्र ने मारा था । दशानन ।

रावत-संज्ञा पुं० १. छोटा राजा । २. सामंत । सरदार ।

रावल-संज्ञा पुं० भंतापुर । राजमहल । रनिवास ।

संज्ञा पुं० [ स्त्री० रावलि, रावली ] १. राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि । २. प्रधान ।

राशि-संज्ञा स्त्री० १. डेर । पुंज । २. कतिवृत्त के विशिष्ट तारासमूह ।

राशिचक्र-संज्ञा पुं० मेप, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल ।

राशिनाम-संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म-समय की राशि के अनुसार होता है ।

राष्ट्र-संज्ञा पुं० १. राज्य । २. देश । ३. एक देश या राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय ।

राष्ट्रकूट-संज्ञा पुं० दे० "राठौर" ।

राष्ट्रतंत्र-संज्ञा पुं० राज्य का शासन करने की प्रणाली ।

राष्ट्रपति-संज्ञा पुं० आधुनिक प्रजातंत्र शासन-प्रणाली में वह व्यक्ति जो शासन करने के लिये चुना जाता है ।

राष्ट्रीय-वि० राष्ट्र-संबंधी । राष्ट्र का ।

रासे-संज्ञा स्त्री० गोरो की प्राचीन काष्ठ की एक क्रीड़ा जिसमें वे क्रीड़ा वीर वाचकर नाचते थे ।



लक्षणा-संज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है।

लक्षि-संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लक्षित-वि० घटलाया हुआ। निर्दिष्ट।

लक्ष्मण-संज्ञा पुं० राजा दशरथ के दूसरे पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

लक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० १. हिंदुओं की एक प्रसिद्ध देवी जो विष्णु की पत्नी और धन की अधिष्ठात्री मानी जाती है। कमला। २. धन-संपत्ति।

३. गृहस्वामिनी।

लक्ष्मीधर-संज्ञा पुं० विष्णु।

लक्ष्य-संज्ञा पुं० वह वस्तु जिस पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना।

लक्ष्यभेद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का निशाना जिसमें चलते या बढ़ते हुए लक्ष्य को भेदते हैं।

लखना-संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।

लखना-कि० स० लक्ष्य देखकर अनुमान कर लेना। ताड़ना।

लखपत्नी-संज्ञा पुं० जिसके पास लाखों रुपये की संपत्ति हो।

लखलखा-संज्ञा पुं० मूर्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।

लखाऊ-संज्ञा पुं० १. लक्ष्य। पहचान। २. चिह्न के रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।

लखाना-कि० भ० दिखाई पड़ना।

लखी-संज्ञा पुं० लाख के रंग का घोड़ा। लाखी।

लखेरा-संज्ञा पुं० वह जो लाख की चूड़ी आदि बनाता हो।

लखौटी-संज्ञा स्त्री० लाख की चूड़ी जो खियाँ हाथों में पहनती हैं।

लखौरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। नौ-तेरही ईंट। कागदी ईंट।

लग-कि० वि० तक। पर्यंत।

संज्ञा स्त्री० लगन।

अभ्य० वास्ते। लिपे।

लगन-संज्ञा स्त्री० १. किसी और ध्यान लगाने की क्रिया। २. लगान। संबंध।

संज्ञा पुं० ब्याह का मुहूर्त या साइत।

लगनपत्री-संज्ञा स्त्री० विवाह-समय के निर्णय की विधि जो कन्या का पिता घर के पिता को भेंटता है।

लगनघट-संज्ञा स्त्री० प्रेम।

लगना-कि० भ० १. दो पदार्थों के तब आपस में मिलना। २. मिलना। जुड़ना।

लगानि-संज्ञा स्त्री० दे० "लगन"।

लगनी-संज्ञा स्त्री० छोटी घाली।

लगमगी-कि० वि० माया।

लगवा-वि० मूढ़। मिथ्या।

लगवाना-कि० स० लगाने का काम दूसरे से कराना।

लगवारी-संज्ञा पुं० वरपत्ति। धार।

लगातार-कि० वि० एक के बाद एक।

लगान-संज्ञा पुं० भूमि पर लगनेवाला कर। पोत।

लगाना-कि० स० १. सतह पर सतह रखना। २. बूझ आदि आरोपित करना। ३. गाय आदि को दुहना। ४. नियुक्त करना।

लगाम-संज्ञा स्त्री० घाम। रास।

लगालगी-संज्ञा स्त्री० १. लग।

संज्ञा स्त्री० लगाम ।  
 रासधारी-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है ।  
 रासम-संज्ञा पुं० [ स्त्री० रासमी ] १. गधा । २. खूँचर ।  
 रासमंडल-संज्ञा पुं० रास क्रीड़ा करने-वालों का समूह या मंडली ।  
 रासमंडली-संज्ञा स्त्री० रासधारियों का समाज या टोली ।  
 रासलीला-संज्ञा स्त्री० रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय ।  
 रासायनिक-वि० रसायनशास्त्र का ज्ञाता ।  
 रासो-संज्ञा पुं० किसी राजा का वह पथमय जीवन-चरित्र जिसमें उसके युद्धों और वीरता आदि का वर्णन हो ।  
 रास्ता-संज्ञा पुं० मार्ग । राह ।  
 राह-संज्ञा स्त्री० रास्ता ।  
 राहगीर-संज्ञा पुं० मुसाफिर । पथिक ।  
 राहचलता-संज्ञा पुं० १. पथिक । २. अजनबी । गैर ।  
 राहचौरंगी-संज्ञा स्त्री० दे० "चौ-मुहानी" ।  
 राहत-संज्ञा स्त्री० आराम । सुख ।  
 राहदारी-संज्ञा स्त्री० सड़क का कर ।  
 राही-संज्ञा पुं० मुसाफिर । यात्री ।  
 राहु-संज्ञा पुं० पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक ।  
 राहुल-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम ।  
 रिंगन-संज्ञा स्त्री० घुटनों के पछ-चलना । रेंगना ।  
 रिंद-संज्ञा पुं० १. धार्मिक बंधनों

को, न माननेवाला पुरुष । २. मनमौजी आदमी ।  
 रिंदा-वि० निरंकुश । उद्दंड ।  
 रिश्तायत-संज्ञा स्त्री० १. नरमी । २. खूपाव । विचार ।  
 रिश्ताया-संज्ञा स्त्री० प्रजा ।  
 रिकवेल-संज्ञा स्त्री० एक भोज्य पदार्थ जो उर्द की पीठी और अरई के पत्तों से बनता है ।  
 रिक्त-वि० खाली । शून्य ।  
 रक्त-संज्ञा पुं० दे० "शुद्ध" ।  
 रिच्छा-संज्ञा पुं० भालू ।  
 रिजाली-संज्ञा स्त्री० निलज्जता । बेहयाई ।  
 रिजु-वि० दे० "शुद्ध" ।  
 रिक्तकवार, रिक्तवार-संज्ञा पुं० १. किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला । २. प्रेमी ।  
 रिक्ताना-क्रि० स० किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना ।  
 रिक्ता-संज्ञा पुं० प्रसन्न होने या रीझने का भाव ।  
 रितघना-क्रि० स० खाली करना ।  
 रिद्धि-संज्ञा स्त्री० दे० "शुद्धि" ।  
 रिनिश्चा, रिनी-वि० जिसने श्रम लिया हो ।  
 रिपु-संज्ञा पुं० शत्रु ।  
 रिपुता-संज्ञा स्त्री० वैर । दुरमनी ।  
 रिमक्तिम-संज्ञा स्त्री० चर्पा की छोटी छोटी बूँदों का लगातार गिरना ।  
 रियासत-संज्ञा स्त्री० राज्य । थमल-दारी ।  
 रिवाज-संज्ञा पुं० प्रथा । रस्म ।  
 रिश्ता-संज्ञा पुं० नाता । संबंध ।  
 रिश्तेदार-संज्ञा पुं० संबंधी ।  
 रिश्वत-संज्ञा स्त्री० घूस ।

लगन । २. संबंध । मेख-जोल ।  
 लगाव-संज्ञा पुं० संबंध । वास्ता ।  
 लगावट-संज्ञा स्त्री० १. संबंध ।  
 वास्ता । २. प्रेम । प्रीति ।  
 लगि-अव्य० दे० "लग" ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "लगनी" ।  
 लगड़-संज्ञा पुं० डंढा । लाठी ।  
 लगंगा-संज्ञा पुं० १. लंबा घाँस ।  
 २. लकड़ी ।  
 संज्ञा पुं० कार्य आरंभ करना ।  
 लगनी-संज्ञा स्त्री० दे० "लगना" ।  
 लगड़-संज्ञा पुं० बाजू । श्चान ।  
 लग्न-संज्ञा पुं० १. कोई शुभ कार्य  
 करने का सुहृत् । २. विवाह का  
 समय ।  
 वि० लगा हुआ । मिछा हुआ ।  
 लघिमा-संज्ञा स्त्री० एक सिद्धि जिसे  
 प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत  
 छोटा या हलका बन सकता है ।  
 लघु-वि० १. छोटा । २. थोड़ा ।  
 कम ।  
 संज्ञा पुं० व्याकरण में वह स्वर जो  
 एक ही मात्रा का होता है । जैसे—  
 अ, इ ।  
 लघुचेता-संज्ञा पुं० वह जिसके विचार  
 तुच्छ और बुरे हों ।  
 लघुता-संज्ञा स्त्री० लघु होने का भाव ।  
 लघुपाक-संज्ञा पुं० वह खाद्य पदार्थ  
 जो सहज में पच जाय ।  
 लघुमति-वि० कम-समझ । भूर्ख ।  
 लघुशंका-संज्ञा स्त्री० पेशाव करना ।  
 लचक-संज्ञा स्त्री० लचकने की क्रिया  
 या भाव ।  
 लचकना-क्रि० भ० लंबे पदार्थ का  
 दबने आदि के कारण बीच से  
 मुकना । लचना ।

लचकनि-संज्ञा स्त्री० १. लची-  
 लापन । २. लचक ।  
 लचना-क्रि० भ० दे० "लचकना" ।  
 लच्छु-संज्ञा पुं० सौ हज़ार की  
 संख्या । लाख ।  
 लच्छुन-संज्ञा पुं० दे० "लच्छण" ।  
 लच्छा-संज्ञा पुं० १. गुच्छे या मुष्पे  
 आदि के रूप में लगाए हुए तार ।  
 २. हाथ या पैर का एक प्रकार का  
 गहना ।  
 लच्छु-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।  
 लच्छुत-वि० आलोचित ।  
 लच्छी-संज्ञा स्त्री० छोटा लच्छा ।  
 थरी ।  
 लच्छेदार-वि० १. ( खाद्य पदार्थ )  
 जिसमें लच्छे पड़े हों । २. ( घात-  
 चीत ) मज़ेदार या श्रुतिमधुर ।  
 ललुमन-संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण" ।  
 ललुमन भूला-संज्ञा पुं० रस्सी या  
 तारों आदि से बना पुल ।  
 लज्जा-क्रि० भ० दे० "लज्जाना" ।  
 लज्जाधुरा-वि० जो बहुत लज्जा करे ।  
 शर्माता ।  
 लज्जाना-क्रि० भ० लज्जित होना ।  
 क्रि० स० लज्जित करना ।  
 लज्जालू-संज्ञा पुं० दे० "लज्जालू" ।  
 लज्जालू-संज्ञा पुं० एक काँटेदार छोटा  
 फाँधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़-  
 कर बंद हो जाती हैं । लज्जायती ।  
 लजीला-वि० दे० "लज्जाशील" ।  
 लज्जुरी-संज्ञा स्त्री० कूप से पानी  
 भाने की डोरी । रस्सी ।  
 लजोहा, लजोर्हा-वि० [ स्त्री० लजोर्हा ]  
 जिसमें लज्जा हो । लज्जाशील ।  
 लज्जत-संज्ञा स्त्री० स्वाद ।  
 लज्जा-संज्ञा स्त्री० [ वि० लज्जित ] १.

रिच्यमूक-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक पर्यंत ।

रिस-संज्ञा स्त्री० क्रोध । गुस्सा ।

रिसना-कि० स० छुन-छुनकर बाहर निकल जाना । रसना ।

रिसना-वि० क्रोधी ।

रिसना-कि० भ० क्रुद्ध होना ।

रिसाला-संज्ञा पुं० राज्यकर ।

रिसालदार-संज्ञा पुं० घुड़सवार सेना का एक अधिकारी ।

रिसाला-संज्ञा पुं० घुड़सवारों की सेना ।

रिसिधना, रिसियाना-कि० भ० क्रुद्ध या कुपित होना ।

रिसोई-वि० १. क्रुद्ध सा । २. क्रोध से भरा ।

रिहल-संज्ञा स्त्री० काठ की चौकी जिस पर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं ।

रिहा-वि० [ संज्ञा रिहा ] ( देवन या बाधा आदि से ) मुक्त । छूटा हुआ ।

रीघना-कि० स० दे० "रीघना" ।

री-मय्य० सखियों के लिये संयोजन । धरी । पूरी ।

रीछ-संज्ञा पुं० भालू ।

रीछराज-संज्ञा पुं० जामवंत ।

रीम्-संज्ञा स्त्री० किसी की किसी बात पर प्रसन्नता ।

रीम्ना-कि० भ० १. किसी बात पर प्रसन्न होना । २. मोहित होना ।

रीठा-संज्ञा पुं० १. एक बड़ा लंगली वृक्ष । २. इस वृक्ष का फल जो घेर के बराबर होता है ।

रीढ़-संज्ञा स्त्री० पीठ के बीचोबीच की लंबी खड़ी हड्डी जिससे पसलियाँ मिली रहती हैं । मेरुदंड ।

रीत-संज्ञा स्त्री० दे० "रीत" ।

रीतना-कि० भ० खाली रिक्त होना ।

रीता-वि० खाली । रिक्त । शुन्य ।

रीति-संज्ञा स्त्री० १. ढंग । प्रकार । २. परिपाटी ।

रीस-संज्ञा स्त्री० दे० "रिसि" ।

संज्ञा स्त्री० १. डाढ़ । २. स्पर्धा । बराबरी ।

रंज-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा ।

रंड-संज्ञा पुं० बिना सिर का घड़ ।

रंदवाना-कि० स० पैरों से कुचल-पाना ।

रंधती-संज्ञा स्त्री० दे० "अरंधती" ।

रंधना-कि० भ० १. डकभना । फँस जाना । २. घेरा जाना ।

रघ्राय-संज्ञा पुं० दे० "रघु" ।

रकना-कि० भ० १. मार्ग आदि न मिलने के कारण ठहर जाना । अटकना । २. अपनी इच्छा से ठहर जाना ।

रकमिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "रुक्मिणी" ।

रकधाना-कि० स० रोकने का काम दूसरे से कराना ।

रक्षा-संज्ञा पुं० छोटा पत्र या चिट्ठी । पुरजा ।

रक्म-संज्ञा पुं० स्वर्ण । सोना ।

रुक्मिणी-संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की यक्षी पटरानी जो विदुर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी ।

रुक्मी-संज्ञा पुं० राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई ।

रुग्-वि० १. जिसमें चिकनाहट न हो । २. सूखा । शुष्क ।

रुक्षता-संज्ञा स्त्री० रुखाई ।

लाज । २. मान-मर्त्यादा ।

लज्जावती-वि० श्री० शर्माजी ।

लज्जावान्-वि० [ श्री० लज्जावती ] दे०  
"लज्जारीव" ।

ललित-वि० शर्म में पड़ा हुआ ।  
शर्माया हुआ ।

लट-संज्ञा श्री० घालों का गुच्छा ।  
केशपाश ।

लटक-संज्ञा श्री० १. लटकने की क्रिया  
या भाव । २. धंगों की मनोहर  
चेष्टा ।

लटकन-संज्ञा पुं० नाक में पहनने का  
एक गहना ।

लटकना-कि० प्र० ऊँचे स्थान से  
खगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक  
फैला रहना ।

लटका-संज्ञा पुं० घातचीत का बना-  
वटी हंग ।

लटकाना-कि० प्र० किसी को लट-  
कने में प्रयुक्त करना ।

लटकीला-वि० [ श्री० लटकीली ] लट-  
कता या झूमता हुआ ।

लटना-कि० प्र० १. घककर गिर  
जाना । २. दुबला और कमजोर  
होना ।

लटपट्टा-वि० [ श्री० लटपट्टी ] गिरता-  
पड़ता । लड़खड़ाता हुआ ।

लटपटाना-कि० प्र० १. गिरना-  
पड़ना । २. ढिगमा । ३. लुभाना ।  
मोहित होना ।

लट्ठी-वि० [ श्री० लटी ] १. खोलुप ।  
२. लंपट ।

लट्ठापट्टी-संज्ञा श्री० लटपटाने की  
क्रिया या भाव ।

लट्ठापोट्टी-वि० मोहित ।

लटी-संज्ञा श्री० १. साधुनी । भक्तिन ।

२. वेश्या । रंडी ।

लट्ट-संज्ञा पुं० दे० "लट्ट" ।

लट्टरी-संज्ञा श्री० सिर के घालों का  
लटकता हुआ गुच्छा । केश ।

लट्ट-संज्ञा पुं० एक मोल खिलौना  
जिसे सूत के द्वारा ज़मीन पर फेंक-  
कर नचाते हैं ।

लट्ट-संज्ञा पुं० यड़ी खाठी ।

लट्टाशूत-वि० खाठी लड़नेवाला ।  
खरैत ।

लट्टमार-वि० शत्रिय और कठोर ।  
कंकरा । कड़वा ।

लट्टा-संज्ञा पुं० लकड़ी का बहुत लंबा  
टुकड़ा । खड़ा । शहतीर ।

लठैत-संज्ञा पुं० दे० "लट्टयाज्ञ" ।

लड़ंत-संज्ञा श्री० लड़ाई । भिड़ंत ।

लड़-संज्ञा श्री० एक ही प्रकार की  
वस्तुओं की पंक्ति । माला ।

लड़कई-संज्ञा श्री० दे० "लड़कपन" ।

लड़कखेल-संज्ञा पुं० बालकों का  
खेल ।

लड़कपन-संज्ञा पुं० १. वह अवस्था  
जिसमें मनुष्य बालक हो । २. चप-  
लता । चंचलता ।

लड़कयुद्धि-संज्ञा श्री० नासमझी ।

लड़का-संज्ञा पुं० [ श्री० लड़की ] १.  
बालक । २. पुत्र ।

लड़का-याला-संज्ञा पुं० संतान ।

लड़कीरी-वि० श्री० जिसकी गोद में  
बढ़का हो ।

लड़खड़ाना-कि० प्र० पूर्ण रूप से  
स्थित न रहने के कारण इधर-उधर  
झुक पड़ना ।

लड़ना-कि० प्र० १. भिड़ना । २.  
मछ-मुद्द करना । ३. झुजत करना ।

संज्ञा स्त्री०-लगाम ।  
 रासधारी-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है ।  
 रासम-संज्ञा पुं० [ स्त्री० रासमी ] १. गधा । २. खचर ।  
 रासमंडल-संज्ञा पुं० रास क्रीड़ा करने-वालों का समूह या मंडली ।  
 रासमंडली-संज्ञा स्त्री० रासधारियों का समाज या टोली ।  
 रासलीला-संज्ञा स्त्री० रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय ।  
 रासायनिक-वि० रसायनशास्त्र का ज्ञाता ।  
 रासो-संज्ञा पुं० किसी राजा का वह पद्यमय जीवन-चरित्र जिसमें उसके युद्धों और धीरता आदि का वर्णन हो ।  
 रास्ता-संज्ञा पुं० मार्ग । राह ।  
 राह-संज्ञा स्त्री० रास्ता ।  
 राहगीर-संज्ञा पुं० मुसाफिर । पथिक ।  
 राहचलता-संज्ञा पुं० १. पथिक । २. अजनबी । गैर ।  
 राहचौरंगी-संज्ञा स्त्री० दे० "चौ-मुहानी" ।  
 राहत-संज्ञा स्त्री० आराम । सुख ।  
 राहदारी-संज्ञा स्त्री० सड़क का कर ।  
 राही-संज्ञा पुं० मुसाफिर । यात्री ।  
 राहु-संज्ञा पुं० पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक ।  
 राहुल-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम ।  
 रिंगन-संज्ञा स्त्री० घुटनों के घबघबाना । रेंगना ।  
 रिद-संज्ञा पुं० १. धार्मिक संघर्षों

को, न माननेवाला पुरुष । २. मनमौजी आदमी ।  
 रिदा-वि० निरंकुश । बड़बड़ ।  
 रिश्रायत-संज्ञा स्त्री० १. नरमी । २. खयाल । विचार ।  
 रिश्राया-संज्ञा स्त्री० प्रजा ।  
 रिक्क-संज्ञा स्त्री० एक भोज्य पदार्थ जो बंद की पीठी और आरुई के पत्तों से धनता है ।  
 रिक्क-वि० खाली । शून्य ।  
 रिक्क-संज्ञा पुं० दे० "श्चक्क" ।  
 रिक्क-संज्ञा पुं० भालू ।  
 रिजाली-संज्ञा स्त्री० निर्लज्जता । बेहयाई ।  
 रिजु-वि० दे० "श्चजु" ।  
 रिक्कधार, रिक्कचार-संज्ञा पुं० १. किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला । २. प्रेमी ।  
 रिक्काना-क्रि० स० किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना ।  
 रिक्क-संज्ञा पुं० प्रसन्न होने या रीझने का भाव ।  
 रिक्क-क्रि० स० खाली करना ।  
 रिक्क-संज्ञा स्त्री० दे० "श्चदि" ।  
 रिनिश्रा, रिनी-वि० जिसने श्रम लिया हो ।  
 रिपु-संज्ञा पुं० शत्रु ।  
 रिपुता-संज्ञा स्त्री० घैर । दुरमनी ।  
 रिमझिम-संज्ञा स्त्री० वर्षा की छोटी छोटी बूंदों का लगातार गिरना ।  
 रियासत-संज्ञा स्त्री० राज्य । धर्म-दारी ।  
 रिवाज-संज्ञा पुं० प्रथा । रस्म ।  
 रिश्ता-संज्ञा पुं० नाता । संबंध ।  
 रिश्तेदार-संज्ञा पुं० संबंधी ।  
 रिश्वत-संज्ञा स्त्री० घूस ।

लड़ाई-संज्ञा स्त्री० १. एक दूसरे पर वार । २. संग्राम । ३. अनघन । विरोध । वैर ।

लड़ाका-वि० १. योद्धा । २. झगड़ा करनेवाला । झगड़ालू ।

लड़ाना-क्रि० स० १. दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना । २. लाड़-प्यार करना । दुस्तर करना ।

लड़ायता-वि० दे० "लड़ैता" ।

लड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़" ।

लड़ुआ-संज्ञा पुं० दे० "लड़ू" ।

लड़ैता-वि० [स्त्री० लड़ैती] लाडला ।

लड़ू-संज्ञा पुं० गोख बनी हुई मि-ठाई । मोदक ।

लड़ियाँ-संज्ञा स्त्री० बैलगाड़ी ।

लत-संज्ञा स्त्री० घुरी आदत । दुर्व्यसन ।

लतर-संज्ञा स्त्री० खेल ।

लतरी-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियों से दाख निकलती है ।

लता-संज्ञा स्त्री० वह पौधा जो डोरी के रूप में जमीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े । बल्ली ।

लताकुंज, लतागृह-संज्ञा पुं० लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान ।

लताड़ना-क्रि० स० पैरों से कुचलना ।

लता-पता-संज्ञा पुं० पेड़-पत्ते ।

लता-मंडप-संज्ञा पुं० लतागृह ।

लतिका-संज्ञा स्त्री० छोटी लता । बेल ।

लतियाना-क्रि० स० खूब खाते मारना ।

लत्ता-संज्ञा पुं० फटा-पुराना कपड़ा । चीपड़ा ।

लत्ती-संज्ञा स्त्री० १. पशुओं का पाद-प्रहार । खात । २. कपड़े की कंबी

घड़ी ।

लथपथ-वि० भीगा हुआ ।

लथाड़-संज्ञा स्त्री० जमीन पर पटक-कर सोटाने या घसीटने की क्रिया । चपेट ।

लथेड़ना-क्रि० स० १. कीचड़ आदि से लपेटकर गंदा करना । २. डाँटना-ढपटना ।

लदना-क्रि० प्र० सामान होनेवाली सवारी पर घोस भरा जाना ।

लदाघ-संज्ञा पुं० १. लादने की क्रिया या भाव । २. भार ।

लदुघा, लदुदु-वि० घोस होने-वाला । जिस पर घोस लादा जाय ।

लदड़-वि० सुस्त । आलसी ।

लप-संज्ञा स्त्री० १. लचीली चीज़ को पकड़कर हिलाने का व्यापार । २. घुरी, ललवार आदि की चमक की गति ।

लपक-संज्ञा स्त्री० १. लपट । लौ । २. चमक । ३. तेज़ी ।

लपकना-क्रि० प्र० लपट पड़ना ।

लपट-संज्ञा स्त्री० अग्नि । शिखा ।

लपटना-क्रि० प्र० दे० "लिपटना" ।

लपटाना-क्रि० स० १. दे० "लिप-टाना" । २. चलाना । फेंकना ।

लपना-क्रि० प्र० मोँक के साथ हथर-वधर लपना ।

लपलपाना-क्रि० प्र० १. लपना । २. लंघी कोमल वस्तु का हथर-वधर हिलना-ढोलना ।

लपसी-संज्ञा स्त्री० थोड़े घी का हलुआ ।

लपाना-क्रि० स० लचीली छड़ी आदि को हथर-वधर लपाना ।

लपेट-संज्ञा स्त्री० १. लपेटने की क्रिया

या भाव । २. घेरा । ३. घुमाव ।  
 लपेटना-कि० स० घुमाव या फेरे के  
 साथ चारों ओर फैसाना ।  
 लफंगा-वि० १. लंपट । २. शोहदा ।  
 लफड़ा-संज्ञा पु० शब्द ।  
 लवङ्ग-धोर्धो-संज्ञा स्त्री० १. मूठमूठ  
 का हवा । २. गड़बड़ी ।  
 लपादा-संज्ञा पु० रुईदार चोगा ।  
 लपारा-वि० मूठा । मिथ्यावादी ।  
 लपारी-संज्ञा स्त्री० मूठ धोखे का  
 काम ।  
 लघालय-कि० वि० मुँह या किनारे  
 तक । छलकता हुआ ।  
 लवेदा-संज्ञा पु० [स्त्री० लवण० लवेदी]  
 मोटा चटा डंडा ।  
 लब्ध-वि० १. मिला हुआ । २.  
 भाग करने से आया हुआ फल ।  
 (गणित)  
 लब्धप्रतिष्ठ-वि० प्रतिष्ठित ।  
 लभ्य-वि० पाने योग्य ।  
 लभकना-कि० भ० उत्कृष्ट होना ।  
 लमतङ्ग-वि० [स्त्री० लमतङ्गी] बहुत  
 लंघा या ऊँचा ।  
 लमधी-संज्ञा पु० समधी का भाग ।  
 लमाना-कि० स० लंघा करना ।  
 लय-संज्ञा पु० १. एक पदार्थ का  
 दूसरे में मिलना । २. विलीन  
 होना । ३. संगीत में नृत्य, गीत  
 और वाद्य की समता ।  
 संज्ञा स्त्री० १. गीत गाने का ढंग या  
 तर्ज । धुन । २. संगीत में समय ।  
 लरकई-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन" ।  
 लरकिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़की" ।  
 लरजना-कि० भ० १. काँपना । २.  
 डरना ।  
 लरकरा-वि० बहुत अधिक ।

लरकई-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़क-  
 पन" ।  
 लरिक-सलोरी-संज्ञा स्त्री० लड़कों  
 का खेल । खेलवाड़ ।  
 लरिका-संज्ञा पु० दे० "लड़का" ।  
 लरी-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ो" ।  
 ललक-संज्ञा स्त्री० प्रमत्त अभिशाप ।  
 ललकना-कि० भ० पाने की गहरी  
 इच्छा करना ।  
 ललकार-संज्ञा स्त्री० ललकारने की  
 क्रिया या भाव ।  
 ललकारना-कि० स० युद्ध या प्रति-  
 इंदिता के लिये रथ स्वर से आह्वान  
 करना ।  
 ललचना-कि० भ० लालच करना ।  
 ललचाना-कि० स० किसी के मन में  
 लालच उत्पन्न करना ।  
 ललचौही-वि० लालच से भरा ।  
 ललचाया हुआ ।  
 ललन-संज्ञा पु० १. प्यारा बालक ।  
 २. प्रिय नायक या पति ।  
 ललना-संज्ञा स्त्री० स्त्री । कामिनी ।  
 लला-संज्ञा पु० [स्त्री० लली] १. प्यारा  
 या दुखारा लड़का । २. प्रिय नायक  
 या पति ।  
 ललाई-संज्ञा स्त्री० दे० "लाली" ।  
 ललाट-संज्ञा पु० भाल । मस्तक ।  
 ललाट-रेखा-संज्ञा स्त्री० कपाल का  
 लेख ।  
 ललाना-कि० भ० लोभ करना ।  
 ललचना ।  
 ललाम-वि० रमणीय । सुंदर ।  
 ललित-वि० सुंदर । मनोहर ।  
 ललित कला-संज्ञा स्त्री० वे कलाएँ  
 जिनके ध्यस्त करने में किसी प्रकार  
 के सौंदर्य की अपेक्षा हो । जैसे—



लुरकी-संज्ञा स्त्री० कान में पहनने की चाली । लुरकी ।

लुरना-क्रि० प्र० १. मूखना । लहराना । २. मुक पड़ना ।

लुरी-संज्ञा स्त्री० वह गाय जिसे यथा दिग्गोदे ही दिन हुए हों ।

लुहार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० लुहारिन, लुहारी ] १. लोहे की चीजें बनाने-वाला । २. वह जाति जो लोहे की चीजें बनाती है ।

लुहारी-संज्ञा स्त्री० लुहार जाति की स्त्री ।

लू-संज्ञा स्त्री० गरमी के दिनों की तपी हुई हवा ।

लूक-संज्ञा स्त्री० १. आग की लपट । २. लू । गर्म हवा ।

लूकना-क्रि० प्र० आग लगाना । जलाना ।

लूका-संज्ञा पुं० [ स्त्री० लूका, लूकी ] आग की लौ या लपट ।

लूकी-संज्ञा स्त्री० आग की चिनगारी । स्फुलिंग ।

लूगा-संज्ञा पुं० १. वस्त्र । कपड़ा । २. धोती ।

लूट-संज्ञा स्त्री० किसी के माल का जबरदस्ती छीना जाना ।

लूटना-क्रि० प्र० मार-पीटकर या छीन-झपटकर ले लेना ।

लूत-संज्ञा स्त्री० मकड़ी ।

लूता-संज्ञा स्त्री० मकड़ी ।

लूमना-क्रि० प्र० लटकना ।

लूरना-क्रि० प्र० दे० "लूरना" ।

लूला-वि० [ स्त्री० लूली ] जिसका हाथ कट गया हो । लूला ।

लुङ-संज्ञा पुं० दे० "लुङ्गी" ।

लुङ्गी-संज्ञा स्त्री० १. मल की बत्ती ।

२. धकरी या जैट की मँगनी ।

लुँहड़, लुँहड़ा-संज्ञा पुं० मुँह डल । समूह । (बोपायों के लिये)

ले-प्रत्यय० आरंभ होकर ।

१. प्रत्यय० तत् । पर्यंत ।

लेई-संज्ञा स्त्री० किसी चूर्ण को गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ ।

लेख-संज्ञा पुं० १. लिखे हुए अक्षर । २. निबंध ।

लेखक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० लेखिका ] १. लिखनेवाला । २. प्रबंधकार ।

लेखन-संज्ञा पुं० [ वि० लेखनीय, लेख्य ] लिखने का कार्य ।

लेखना-क्रि० प्र० १. अक्षर या चित्र बनाना । लिखना । २. गिनना ।

लेखनी-संज्ञा स्त्री० कलम ।

लेखा-संज्ञा पुं० १. गणना । गिनती ।

२. ठीक ठीक अंदाज़ । ३. आय-व्यय का विवरण ।

लेखिका-संज्ञा स्त्री० १. लिखनेवाली । २. ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली ।

लेख्य-वि० लिखने योग्य ।

लेज़म-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान ।

लेज़ुर, लेज़ुरी-संज्ञा स्त्री० १. डोरी ।

२. कूँ से पानी खींचने की रस्ती ।

लेटना-क्रि० प्र० पौढ़ना । सोना ।

लेटाना-क्रि० प्र० दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना ।

लेन-संज्ञा पुं० लेने की क्रिया या भाव ।

लेनदार-संज्ञा पुं० जिसका कुछ वाकी हो । महाजन ।

लेन-देन-संज्ञा पुं० १. लेने और देने

लड़ाई-संज्ञा स्त्री० १. एक दूसरे पर वार। २. संग्राम। ३. अनघन। विरोध। वैर।

लड़ाका-वि० १. योद्धा। २. झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।

लड़ाना-क्रि० स० १. दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। २. जाड़-प्यार करना। दुखार करना।

लड़ायता-वि० दे० "लड़ैता"।

लड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।

लड़ुआ-संज्ञा पुं० दे० "लड़ू"।

लड़ैता-वि० [की० लड़ैती] खाडला।

लड़ू-संज्ञा पुं० गोज बनी हुई मि-ठाई। मोदक।

लड़िया-संज्ञा स्त्री० बैलगाड़ी।

लत-संज्ञा स्त्री० बुरी आदत। दुर्व्यसन।

लतर-संज्ञा स्त्री० खेल।

लतरी-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियों से दाज निकलती है।

लता-संज्ञा स्त्री० वह पौधा जो डोरी के रूप में जमीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े। बल्ली।

लताकुंज, लतागृह-संज्ञा पुं० लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।

लताड़ना-क्रि० स० पैरों से कुचलना।

लता-पता-संज्ञा पुं० पेड़-पत्ते।

लता-मंडप-संज्ञा पुं० लतागृह।

लतिका-संज्ञा स्त्री० छोटी लता। बेल।

लतियाना-क्रि० स० खूब खाते मारना।

लत्ता-संज्ञा पुं० कटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा।

लत्ती-संज्ञा स्त्री० १. पशुओं का पाद-प्रहार। कात। २. कपड़े की कंबी

धजी।

लथपथ-वि० भौंगा हुआ।

लथाड़-संज्ञा स्त्री० जमीन पर पटक-कर लोटाने या घसीटने की क्रिया। छपेट।

लथेड़ना-क्रि० स० १. कीचड़ आदि से छपेटकर गंदा करना। २. डांटना-डपटना।

लदना-क्रि० प्र० सामान होनेवाली सवारी पर योक्त भरा जाना।

लदाघ-संज्ञा पुं० १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार।

लदुधा, लदुद-वि० योक्त होने-वाला। जिस पर योक्त लादा जाय।

लदड़-वि० सुस्त। आलसी।

लप-संज्ञा स्त्री० १. लचीली चीज को पकड़कर हिलाने का व्यापार। २. छुरी, तलवार आदि की चमक की गति।

लपक-संज्ञा स्त्री० १. लपट। लौ। २. चमक। ३. तेज़ी।

लपकना-क्रि० प्र० लपट पड़ना।

लपट-संज्ञा स्त्री० अग्नि। शिला।

लपटना-क्रि० प्र० दे० "लिपटना"।

लपटाना-क्रि० स० १. दे० "लिप-टाना"। २. रकमना। फँसना।

लपना-क्रि० प्र० सोंक के साथ इधर-उधर लपटना।

लपलपाना-क्रि० प्र० १. लपना। २. लंबी कोमल धस्तु का इधर-उधर हिलना-डोलना।

लपसी-संज्ञा स्त्री० मोढ़े घी का हलुआ।

लपाना-क्रि० स० लचीली छद्म आदि को इधर-उधर लपाना।

लपेट-संज्ञा स्त्री० १. लपेटने की क्रिया

का व्यवहार । २. ऋण देने और लेने का व्यवहार ।

लेनहार-वि० लेनेवाला ।

लेना-क्रि० सं० १. दूसरे के हाथ से अपने हाथ में करना । २. धामना । ३. मोल लेना । ४. अगवानी करना ।

लेप-संज्ञा पुं० लेई के समान पोतने, छापने या चुपड़ने की चीज़ ।

लेपना-क्रि० सं० गाढ़ी गीली वस्तु की तरह चढ़ाना ।

ले-पालक-संज्ञा पुं० गोद लिया हुआ पुत्र । दत्तक ।

लेरुघा-संज्ञा पुं० यक्षुदा ।

लेव-संज्ञा पुं० लेप ।

लेघा-संज्ञा पुं० १. गिलावा । २. मिट्टी का गिलावा ।

वि० लेनेवाला ।

लेवाल-संज्ञा पुं० लेने या खरीदने-वाला ।

लेश-संज्ञा पुं० अणु ।

वि० अल्प । थोड़ा ।

लेसना-क्रि० सं० १. जलाना । २. किसी चीज़ पर लेस लगाना ।

लेहन-संज्ञा पुं० चाटना ।

लेहाज़ा-क्रि० वि० इसलिये । इस वास्ते ।

लेह्य-वि० चाटने के योग्य ।

लै-अव्य० सक । पर्यंत ।

लैस-वि० धर्ती और हथियारों से सज़ा हुआ ।

संज्ञा पुं० कपड़े पर चढ़ाने का फीता ।

लो-अव्य० दे० "लौ" ।

लोदा-संज्ञा पुं० किसी गीले पदार्थ का ढले की तरह धँसा अंश ।

लोई-संज्ञा स्त्री० १. गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं । २. एक प्रकार का कम्मल ।

लोकंजन-संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन" ।

लोकंदा-संज्ञा पुं० विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना ।

लोकंदी-संज्ञा स्त्री० वह दासी जो कन्या के संसुराल जाते समय उसके साथ भेजी जाती है ।

लोक-संज्ञा पुं० १. स्थान-विशेष जिसका बोध प्राची को हो । २. संसार ।

लोकधुनि-संज्ञा स्त्री० अफवाह ।

लोकना-क्रि० सं० ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना ।

लोकप, लोकपति-संज्ञा पुं० १. प्रह्ला । २. लोकपाल ।

लोकपाल-संज्ञा पुं० १. दसों दिशाओं के स्वामी । २. राजा ।

लोकलीक-संज्ञा स्त्री० लोक की मर्यादा ।

लोकसंग्रह-संज्ञा पुं० संसार के लोगों को प्रसन्न करना ।

लोफहार-वि० लोक या संसार को नष्ट करनेवाला ।

लोफांतर-संज्ञा पुं० वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है ।

लोफांतरित-वि० मरा हुआ । मृत ।

लोकाचार-संज्ञा पुं० संसार में घरता जानेवाला व्यवहार ।

लोकोक्ति-संज्ञा स्त्री० कहावत । मसल ।

लोकोत्तर-वि० बहुत ही अद्भुत और विचित्र ।

लोखर-संज्ञा स्त्री० १. नाई के



झोझार । २. छोहारों या बड़हों  
चादि के झोझार ।

लोग-संज्ञा पुं० बड़० [ ली० छुगरे ]  
जन्म । मनुष्य ।

लोच-संज्ञा ली० १. छचक । २.  
कोमलता ।

लोचन-संज्ञा पुं० आँख ।

लोह-संज्ञा ली० लोहने का भाव ।

संज्ञा पुं० उतार ।

लोहन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
कचूर ।

लोहना-कि० प्र० १. सीधे और उलटे  
घेरे हुए किसी घेरे को जाना ।

२. विधाम करना ।

लोहा-संज्ञा पुं० [ ली० अल्पा० लुटिया ]  
धातु का एक गोल पात्र जो पानी  
रखने के काम में आता है ।

लोहिया-संज्ञा ली० छोटा छोटा ।

लोहना-कि० प्र० चुनना । छुटना ।

लोढ़ा-संज्ञा पुं० [ ली० अल्पा० लोहिया ]  
परपर का वह टुकड़ा जिससे सिख  
पर किसी चीज़ को रखकर पीसते  
हैं । बट्टा ।

लोहिया-संज्ञा ली० छोटा छोटा ।

लोथ, लोथि-संज्ञा ली० मृत शरीर ।  
शाश ।

लोथड़ा-संज्ञा पुं० मांसपिंड ।

लोथ-संज्ञा ली० एक प्रकार का वृक्ष  
जिसकी छाल और छबड़ी दवा के  
काम में आती है ।

लोन-संज्ञा पुं० लघण । नमक ।

लोना-वि० [ भाव० लोनाई ] १. नम-  
कीन । सलोना । २. सुंदर ।

संज्ञा पुं० दीवारों का एक प्रकार का  
रोग जिसमें वे झड़ने लगती और

कमजोर हो जाती हैं ।

लोनाई-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ  
नमक होता है ।

लोनिया-संज्ञा पुं० एक जाति जो  
लोन या नमक बनाने का व्यवसाय  
करती है । मोनिर्या ।

लोनी-संज्ञा ली० कुत्रके की जाति  
का एक प्रकार का साग ।

लोप-संज्ञा पुं० [ संज्ञा लोपन ] [ कि०  
लुप, लोपक, लोप्ता, लोप्य ] १. नाश ।  
पुष । २. छिपना । छतछान होना ।

लोपन-संज्ञा पुं० लुप्त करना । तिरो-  
हित करना ।

लोपना-कि० प्र० १. लुप्त करना ।  
२. छिपाना ।

कि० प्र० लुप्त होना । मिटना ।

लोपांजन-संज्ञा पुं० वह कल्पित अंजन  
जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि  
इसके लगाने से लगानेवाला अदरक  
हो जाता है ।

लोथान-संज्ञा पुं० एक वृक्ष का सुगं-  
धित गोद जो जलाने और दवा के  
काम में लाया जाता है ।

लोथिया-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
बड़ा थोड़ा । ( फली )

लोभ-संज्ञा पुं० [ वि० लुब्ध, लोभी ]  
खालख । दिप्ता ।

लोभना, लोभाना-कि० प्र० मो-  
हित करना । मुग्ध करना ।

कि० प्र० मोहित होना । मुग्ध  
होना ।

लोभित-वि० लुब्ध । मुग्ध ।

लोभी-वि० जिसे किसी बात का  
लोभ हो । खालखी ।

लोभ-संज्ञा पुं० शरीर पर के छेदे

संगीत, चित्रकला, वास्तुकला आदि।  
 ललिता-संज्ञा स्त्री० राधिका की प्र-  
 धान आठ सखियों में से एक।  
 लली-संज्ञा स्त्री० १. जड़की के लिये  
 प्यार का शब्द। २. नायिका।  
 ललौहार्-वि० [ स्त्री० ललौही ] खलाई  
 लिए हुए।  
 लल्ला-संज्ञा पुं० दे० "लला"।  
 लल्लो-चप्पो-संज्ञा स्त्री० चिकनी-धुपड़ी  
 धात। ठकुरसोहाती।  
 लल्लोपत्तो-संज्ञा स्त्री० दे० "लल्लो-  
 चप्पो"।  
 ललंग-संज्ञा पुं० लौंग।  
 लघ-संज्ञा पुं० १. बहुत थोड़ी मात्रा।  
 २. श्री रामचंद्र के दो यमज पुत्रों में  
 से एक।  
 लवण-संज्ञा पुं० नमक। नोन।  
 लवणासुर-संज्ञा पुं० मधु नामक अ-  
 सुर का पुत्र जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।  
 लवन-संज्ञा पुं० १. फाटना। २.  
 खेत की कटाई। लुनाई।  
 लवनाई-संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।  
 लवनि, लवनी-संज्ञा स्त्री० खेत में  
 अनाज की पकी फसल की कटाई।  
 लुनाई।  
 लवरी-संज्ञा स्त्री० अग्नि की लपट।  
 लघलीन-वि० सन्मय। तदलीन।  
 मम।  
 लवलेश-संज्ञा पुं० अत्यंत अल्प मात्रा।  
 लघा-संज्ञा पुं० मुने हुए धान या  
 ज्वार की खीख।  
 संज्ञा पुं० तीतर की जाति का एक  
 पक्षी।  
 लवाई-वि० वह गाय जिसका बच्चा  
 अभी बहुत ही छोटा हो।  
 लवारा-संज्ञा पुं० गौ का बच्चा।

लघासी-वि० १. गुप्ती। २.  
 लपट।  
 लशकर-संज्ञा पुं० सेना। फौज।  
 लशकरी-वि० १. फौज का। २.  
 जहाज पर काम करनेवाला।  
 संज्ञा स्त्री० जहाजियों या खलासियों  
 की भाषा।  
 लपन-संज्ञा पुं० दे० "लखन"।  
 लस-संज्ञा पुं० १. चिपकने या चिप-  
 काने का गुण। २. वह जिसके  
 लगाव से एक वस्तु दूसरी वस्तु से  
 चिरक जाय।  
 लसदार-वि० लसीका।  
 लसना-कि० स० एक वस्तु को दूसरी  
 वस्तु के साथ सटाना।  
 ० कि० अ० शोभित होना।  
 लसलसा-वि० दे० "लसदार"।  
 लसी-संज्ञा स्त्री० दूध और पानी मिला  
 शरबत।  
 लसीला-वि० [ स्त्री० लसीली ] १. लस-  
 दार। २. सुंदर।  
 लसोड़ा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़  
 जिसके फल औषध के काम में  
 आते हैं।  
 लस्टम-पस्टम-कि० वि० किसी न  
 किसी तरह से। ज्यों-त्यों।  
 लस्त-वि० थका हुआ।  
 लस्ती-संज्ञा स्त्री० चिपचिपाहट।  
 लुत्ती।  
 लहंगा-संज्ञा पुं० कमर के नीचे का  
 सारा अंग ढाँकने के लिये स्त्रियों का  
 एक घेरदार पहनावा।  
 लहक-संज्ञा स्त्री० १. खदकने की क्रिया  
 या भाव। २. आग की लपट।

वकास की परीक्षा पास की हो  
और जो अदालतों में मुद्दई या  
मुद्दाख्त की ओर से बहस करे।

वकुल-संज्ञा पुं० अगस्त का पेड़ या  
फूल।

वक्त-संज्ञा पुं० १. समय। २. अवसर।  
वक्तव्य-वि० कहने योग्य।

संज्ञा पुं० कथन। वचन।

वक्ता-वि० वार्ता। बोलनेवाला।  
संज्ञा पुं० कथा कहनेवाला पुरुष।  
व्यास।

वक्तृता-संज्ञा स्त्री० १. व्याख्यान।  
२. भाष्य।

वक्तृत्व-संज्ञा पुं० वक्तृता। वाग्मिता।

वक्त्र-संज्ञा पुं० मुख।

वक्त्र-संज्ञा पुं० वह संपत्ति जो धर्मादि  
दान कर दी गई हो।

वक्त्र-वि० १. टेढ़ा। घाँका। २.  
तिरछा।

वक्त्रागामी-वि० १. टेढ़ी वास्त चलने-  
वाला। २. शठ।

वक्त्रतुंड-संज्ञा पुं० गण्ड।

वक्त्रदृष्टि-संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ी दृष्टि।  
२. क्रोध की दृष्टि।

वक्त्री-संज्ञा पुं० १. वह प्राणी जिसके  
शरीर जन्म से टेढ़े हों। २. बुद्धदेव।

वक्ष-संज्ञा पुं० छाती। वरस्थल।

वक्षःस्थल-संज्ञा पुं० वर। छाती।

वक्षरह-कव्य० इत्यादि। आदि।

वक्ष-संज्ञा पुं० वाक्य।

वचन-संज्ञा पुं० मनुष्य के मुँह से  
निकला हुआ सार्थक शब्द।

वक्षन-संज्ञा पुं० १. भार। २. सौल।

वक्षनी-वि० जिसका बहुत बोझ हो।  
भारी।

वज्रह-संज्ञा स्त्री० कारण। हेतु।

वज्रा-संज्ञा स्त्री० घनावट। रचना।

वज्रादार-वि० जिसकी घनावट आदि  
बहुत अच्छी हो।

वज्रीका-संज्ञा पुं० वह वृत्ति या धा-  
र्यिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों  
और सेन्यासियों आदि को दी जाती है।

वज्रीर-संज्ञा पुं० मंत्री। दीवान।

वज्रीरी-संज्ञा स्त्री० वज्रीर का काम  
या पद।

वज्र-संज्ञा पुं० ममाङ्ग पढ़ने के पूर्व  
शौचके लिये हाथ-पाँव आदि धोना।

वज्र-संज्ञा पुं० पुराणानुसार भाले के  
फल के समान एक शस्त्र जो ईश्वर का  
प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश।

वि० बहुत कड़ा या मजबूत।

वज्रलेप-संज्ञा पुं० एक मसाका जि-  
सका लेप करने से दीवार, मूर्ति  
आदि मजबूत हो जाती हैं।

वज्रसार-संज्ञा पुं० हीरा।

वज्रासन-संज्ञा पुं० हठयोग के चौरासी  
आसनों में से एक।

वज्री-संज्ञा पुं० ईश्वर।

वट-संज्ञा पुं० वरगढ़ का पेड़।

वटसावित्री-संज्ञा स्त्री० एक प्रत का  
नाम जिसमें छियाँ वट का पूजन  
करती हैं।

वटिका, वटी-संज्ञा स्त्री० गोली या  
टिकिया। वटी।

वटुक-संज्ञा पुं० १. घालक। २.  
प्रहाचारी।

वटुक-संज्ञा पुं० १. घालक। २.  
प्रहाचारी।

वणिक-संज्ञा पुं० १. रोजगार करने-  
वाला। २. वैश्य।

वतन-संज्ञा पुं० जन्मभूमि।

लहकना-कि० अ० १. लहराना ।

२. दहकना ।

लहकौर, लहकौरि-संज्ञा स्त्री० वि-  
वाह की एक रीति जिसमें दूल्हा  
और दुल्हिन एक दूसरे के मुँह में  
कौर ( ग्रास ) डालते हैं ।

लहजा-संज्ञा पुं० गाने या बोलने का  
शृंग ।

लहनदार-संज्ञा पुं० अणु देनेवाला ।  
महाजन ।

लहना-कि० स० प्राप्त करना ।

संज्ञा पुं० बघार दिया हुआ रुपया-  
पैसा ।

लहनी-संज्ञा स्त्री० प्राप्ति ।

लहयर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लंबा  
पहनावा । लबाड़ा । चागा ।

लहर-संज्ञा स्त्री० ऊँची उठती हुई जल  
की राशि ।

लहरदार-वि० जो सीधा न जाकर  
बल खाता हुआ गया हो ।

लहर पटोर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
घारीदार रेशमी कपड़ा ।

लहरा-संज्ञा पुं० लहर । तरंग ।

लहराना-कि० अ० हवा के झोंके से  
इधर-वधर हिलना-डोलना ।

कि० स० हवा के झोंके में इधर-  
वधर हिलाना ।

लहरिया-संज्ञा पुं० १. लहरदार चिह्न ।

२. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें  
रंग-विरंगी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनी  
होती हैं ।

लहरी-संज्ञा स्त्री० लहर । तरंग ।

लहलहा-वि० [ स्त्री० लहलही ] १.

हरा-भरा । २. आनंद से पूर्ण ।

लहलहाना-कि० अ० १. हरी पत्तियों  
से भरना । २. प्रफुल्लित होना ।

लहसुन-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसकी  
जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और  
मसाले के काम में आती है ।

लहाछेह-संज्ञा पुं० १. नाच की एक  
गति । २. नाचने में तेज़ी और  
कपट ।

लहालहा-वि० दे० "लहलहा" ।

लहालोट-वि० १. हँसी से लोटता  
हुआ । २. लट्टू । मोहित ।

लहुरा-वि० [ स्त्री० लहुरी ] छोटा ।

लहू-संज्ञा पुं० रक्त । खून ।

लहेरा-संज्ञा पुं० लाह का पक्का रंग  
चढ़ानेवाला ।

लाँका-संज्ञा स्त्री० कमर । कटि ।

लाँग-संज्ञा स्त्री० धोती का वह भाग  
जो पीछे की ओर कमर में खोस  
लिया जाता है । काढ़ ।

लाँगल-संज्ञा पुं० खेत जोतने का  
हथ ।

लाँगलो-संज्ञा पुं० बलराम ।

लाँगूली-संज्ञा पुं० पैदर ।

लाँघना-कि० स० इस पार से उस  
पार जाना ।

लाँघन-संज्ञा पुं० १. चिह्न । निशान ।

२. कलंक ।

लाँघा-वि० दे० "लँघा" ।

लाइ-संज्ञा पुं० अग्नि ।

लाई-संज्ञा स्त्री० धान का छावा ।

लाक्षणिक-वि० जिससे लक्षण प्रकट  
हो ।

लाक्षा-संज्ञा स्त्री० लाख । छाह ।

लाक्षागृह-संज्ञा पुं० लाख का वह घर  
जिसे दुर्योधन ने पांडवों को जला  
 देने की इच्छा से बनवाया था ।

लाक्षारस-संज्ञा पुं० महावर ।



घत्-संज्ञा पुं० समान ।

घत्स-संज्ञा पुं० १. गाय का घघा ।

२. बालक ।

घत्सनाभ-संज्ञा पुं० एक विष जिससे 'बङ्गनाग' या 'बङ्गुनाग' भी कहते हैं ।

घत्सर्-संज्ञा पुं० वर्ष । साक्ष ।

घत्सल-वि० [ स्त्री० घत्सला ] बच्चे के प्रेम से मरा हुआ ।

घदत्तेऽप्याघात-संज्ञा पुं० कथन का एक दोष जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात फड़ी जाती है ।

घदन्त-संज्ञा पुं० मुँह । मुँह ।

घदान्य-वि० अतिशय दाता । उदार ।

घदि-संज्ञा पुं० कृष्ण पक्ष । जैसे—जेठ घदि ४ ।

घघ-संज्ञा पुं० जान से मार डालना । हत्या ।

घधिक-संज्ञा पुं० घातक । हिंसक ।

घधू-संज्ञा स्त्री० १. नव-विवाहिता स्त्री । २. पुत्र की बहू ।

घधूटी-संज्ञा स्त्री० दे० "वधू" ।

घघ्य-वि० मार डालने योग्य ।

घन-संज्ञा पुं० १. वन । जंगल । २. घाटिका ।

घनचर-वि० वन में अमण करने या रहनेवाला ।

घनज-संज्ञा पुं० १. वह जो घन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो । २. कमल ।

घनदेय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० घनदेवी ] वन का अधिष्ठाता देवता ।

घनमाला-संज्ञा स्त्री० वन के फूलों की माला ।

घनमाली-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

घनलक्ष्मी-संज्ञा स्त्री० वन की शोभा ।

वनक्षी ।

घनघास-संज्ञा पुं० जंगल में रहना ।

घनघासी-वि० [ स्त्री० वनघासिनी ] बस्ती छोड़कर जंगल में निवास करनेवाला ।

घनस्थली-संज्ञा स्त्री० वनभूमि ।

घनस्पति-संज्ञा स्त्री० वृक्षमात्र । पेड़-पौधे ।

घनस्पतिशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपों, जातियों और भिन्न भिन्न भागों का विवेचन होता है ।

घनितार-संज्ञा स्त्री० १. प्रिया । प्रिय-समा । २. स्त्री ।

घनौषध-संज्ञा स्त्री० जंगली जड़ी-बूटी ।

घन्य-वि० १. वन में उत्पन्न होने-वाला । २. जंगली ।

घपन-संज्ञा पुं० धीझ घोना ।

घपु-संज्ञा पुं० शरीर । देह ।

घफा-संज्ञा स्त्री० १. वादा पूरा करना । २. सुशीलता ।

घफादार-वि० [ संज्ञा बफादारी ] पक्षन या कर्तव्य का पालन करनेवाला ।

घवाल-संज्ञा पुं० १. शोक । भार । २. आपत्ति । कठिनाई ।

घमन-संज्ञा पुं० कै करना । बलही करना ।

घमि-संज्ञा स्त्री० घमन का रोग ।

घयःकम-संज्ञा पुं० अवस्था । उन्न ।

घयःसंधि-संज्ञा स्त्री० पाल्पावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति ।

घय-संज्ञा स्त्री० अवस्था । उन्न ।

घयस्क-वि० [ स्त्री० घयस्क ] पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ । सयाना ।

घयोवृक्ष-वि० बड़ा-बूढ़ा ।

घरंच-अर्थ १. ऐसा न होकर

लाख-वि० सौ हजार ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध खाल पदार्थ जो अनेक प्रकार के वृक्षों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से बनता है । लाह ।

लाखना-क्रि० अ० लाख लगाकर कोई छेद बंद करता ।

लाखी-वि० लाख के रंग का । मटमैला लाख ।

लाग-संज्ञा स्त्री० १. संबंध । लगाव । २. प्रेम । प्रीति । ३. चढ़ा-ऊपरी ।

लाग-डॉट-संज्ञा स्त्री० १. मनुष्य । २. चढ़ा-ऊपरी ।

लागत-संज्ञा स्त्री० वह खर्च जो किसी चीज़ की तैयारी या मनाने में लगे ।

लागि-अव्य० १. कारण । हेतु । २. निमित्त ।

लागू-वि० जो लगने योग्य हो । प्रयुक्त या चरितार्थ होनेवाला ।

लागू-अव्य० वास्ते । लिये ।

लाघव-संज्ञा पुं० लघु होने का भाव । अव्य० फुर्ती से । सहज में ।

लाचार-वि० जिसका कुछ धन न चलता हो । मजबूर ।

क्रि० वि० विपश या मजबूर होकर ।

लाचारी-संज्ञा स्त्री० मजबूरी ।

लाज-संज्ञा स्त्री० दे० "लजा" ।

लाजना-क्रि० अ० लजित होना । शरमाना ।

लाजवंती-संज्ञा स्त्री० खजालू नाम का पौधा । छुई-सुई ।

लाजवाव-वि० १. अनुपम । बेजोड़ । २. चुप ।

लाजिम-वि० अवश्य । मुनासिब ।

याजिम ।

लाजिमी-वि० जरूरी । आवश्यक ।

लाट-संज्ञा स्त्री० मोटा घोर ऊँचा खंभा ।

संज्ञा पुं० एक प्राचीन देश जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं ।

लाठ-संज्ञा स्त्री० दे० "लाट" ।

लाठी-संज्ञा स्त्री० डंडा । लकड़ी ।

लाड़-संज्ञा पुं० बच्चों का लाजल । प्यार । दुलार ।

लाड़लड़ता-वि० दे० "लाडला" ।

लाड़ला-वि० [स्त्री० लाडली] प्यारा । दुलारा ।

लात-संज्ञा स्त्री० १. पैर । २. पैर से किया हुआ आघात ।

लावना-क्रि० स० किसी चीज़ पर बहुत सी वस्तुएँ रखना ।

लादी-संज्ञा स्त्री० वह गडरी जो किसी पशु पर लादी जाती है ।

लानत-संज्ञा स्त्री० धिक्कार ।

लाना-क्रि० अ० कोई चीज़ गड़ाकर या अपने साथ लेकर आना ।

लाने-अव्य० वास्ते । लिये ।

लापता-वि० १. जिसका पता न लगे । २. गुप्त ।

लापरवा, लापरवाह-वि० १. जिसे किसी बात की परवा न हो । २. असावधान ।

लापरवाही-संज्ञा स्त्री० १. बेफ़िक्री । २. असावधानी ।

लाम-संज्ञा पुं० १. मिलना । प्राप्ति । २. नफ़ा ।

लामकारी, लामदायक-वि० गुण-कारक ।

लाम-संज्ञा पुं० सेना । फौज ।

लामा-संज्ञा पुं० तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य ।

ऐसा । चत्कि । २. परंतु ।  
चर-संज्ञा पुं० १. किसी देवता या वड़े से मांगा हुआ मनोरथ । २. पति या दूल्हा ।

वि० श्रेष्ठ । उत्तम । जैसे—प्रियवर ।  
चरक-संज्ञा पुं० १. पुस्तकों का पत्रा ।  
२. सोने, चांदी आदि के पतले पत्तर ।  
चरण-संज्ञा पुं० १. किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकुर्र करना । २. कन्या के विवाह में घर को श्रेणीकार करने की रीति ।

चरद-वि० [खी० बरदा] घर देनेवाला ।  
चरदान-संज्ञा पुं० किसी देवता या वड़े का प्रसन्न होकर कोई अभि-  
षिक्त वस्तु या सिद्धि देना ।

चरदानी-संज्ञा पुं० घर देनेवाला ।

चरही-संज्ञा स्त्री० वह पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरों और नौकरों के लिये मुकुर्र हो ।

चरन्-अव्य० ऐसा नहीं । चत्कि ।

चरना-अव्य० नहीं तो । यदि ऐसा न होगा तो ।

चरम-संज्ञा पुं० दे० "वर्म" ।

चरयात्रा-संज्ञा स्त्री० दूहरे का घाजे-  
गाजे के साथ दुल्हिन के घर विवाह के लिये जाना ।

चरुचि-संज्ञा पुं० एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि ।

चराटिका-संज्ञा स्त्री० कौड़ी ।

चरानना-संज्ञा स्त्री० सुंदर स्त्री ।

चराह-संज्ञा पुं० शूकर । खर ।

चराहमिहिर-संज्ञा पुं० ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य ।

चरिष्ठ-वि० श्रेष्ठ । पूजनीय ।

चरुण-संज्ञा पुं० १. एक वैदिक देवता

जो जल का अधिपति कहा गया है । २. जल ।

चरुणानी-संज्ञा स्त्री० चरुण की स्त्री ।

चरुणालय-संज्ञा पुं० समुद्र ।

चरुथिनी-संज्ञा स्त्री० सेना ।

चर्ग-संज्ञा पुं० एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह । जाति । कोटि । श्रेणी ।

चर्गफल-संज्ञा पुं० वह गुणन-फल जो दो समान शशियों के घात से प्राप्त हो ।

चर्गमूल-संज्ञा पुं० किसी वर्गक का वह शंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन वही वर्गक हो । जैसे—२५ का वर्गमूल ५ होगा ।

चर्गलाना-कि० स० बहकाना । फुसलाना ।

चर्जन-संज्ञा पुं० [ वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित ] मनाही । मुमानियत ।

चर्जित-वि० १. त्यागा हुआ । त्यक्त । २. निषिद्ध ।

चर्ज्य-वि० छोड़ने योग्य । त्याज्य ।

चर्ण-संज्ञा पुं० १. पदार्थों के काज, पीले आदि भेदों का नाम । रंग ।

२. जन-समुदाय के चार विभाग—  
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—  
जो प्राचीन आर्यों ने किए थे ।  
जाति । ३. अक्षर ।

चर्णन-संज्ञा पुं० [ वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित ] १. चित्रण । २. कथन ।

चर्णमाला-संज्ञा स्त्री० अक्षरों के रूपों की यथा-श्रेणी लिखित सूची ।

चर्णविचार-संज्ञा पुं० प्राधुनिक व्याकरण का वह श्रेण जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि

वि० दे० "लंघा" ।

लामे—कि० वि० बुर ।

लाय—संज्ञा स्त्री० लपट ।

लायक—वि० १. सचित । ठीक । २.

सुयोग्य । गुणवान् ।

लायकी—संज्ञा स्त्री० लायक होने का भाव या धर्म ।

लार—संज्ञा स्त्री० वह पतला लसदार थूक जो मुँह में से तार के रूप में निकलता है ।

लाल—संज्ञा पुं० १. छोटा और प्रिय बालक । २. एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया ।

संज्ञा पुं० दे० "मानिक" ।

वि० १. रक्तवर्ण । २. बहुत अधिक प्रद ।

लालच—संज्ञा पुं० [वि० लालच] कोई चीज़ पाने की बहुत बुरी तरह इच्छा करना ।

लालची—वि० लोभी ।

लालटेन—संज्ञा स्त्री० किसी प्रकार का वह षाना आदि जिसमें तेल का खजाना और जलाने के लिये धीली लगी रहती है, और जिसके चारों ओर शीशा या कोई पारदर्शी पदार्थ लगा रहता है । कंदील ।

लालड़ी—संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल मगीना ।

लालन—संज्ञा पुं० प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना ।

मंश पुं० प्रिय पुत्र । प्यारा बच्चा ।

लालना—कि० सं० दुबार करना । प्यार करना ।

लाल-बुभुक्षु—संज्ञा पुं० बातों का, भटकलपट्टू मतलब लगानेवाला ।

लालमिर्च—संज्ञा स्त्री० दे० "मिर्च" ।

लालसा—संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक इच्छा या चाह ।

लाल सागर—संज्ञा पुं० भारतीय महा-सागर का वह अंश जो अरब और अफ्रिका के मध्य में पड़ता है ।

लालसिखी—संज्ञा पुं० सुर्मा ।

लालसी—वि० अभिलाषा या इच्छा करनेवाला ।

लाला—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का संशोधन । महाशय । २. कायस्थ जाति का सूचक एक शब्द । ३.

छोटे प्रिय बच्चे के लिये संशोधन ।

संज्ञा पुं० पोख का लाल रंग का फूल ।

लालायित—वि० ललचाया हुआ ।

लालित—वि० दुबारा । प्यारा ।

लालित्य—संज्ञा पुं० ललित का भाव । सौन्दर्य ।

लालिमा—संज्ञा स्त्री० लाली ।

लाली—संज्ञा स्त्री० १. लाल होने का भाव । सुर्मा । २. इज्जत ।

लावर्—संज्ञा स्त्री० आग ।

लावक—संज्ञा पुं० लवा पत्थी ।

लावण्य—संज्ञा पुं० १. खटव का भाव या धर्म । २. अत्यंत सुंदरता ।

लावदार—वि० (तोप) जो छोड़ी जाने या रंजक देने के लिये तैयार हो ।

लावनी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद । खाल ।

लावल्ड—वि० निरस्तान ।

लावर्—संज्ञा पुं० मूला हुआ घान, या रामदाना आदि जो मुनने के कारण फूटकर फूल जाता है । खीज ।

लाघा-परछुन—संज्ञा पुं० विवाह के समय की एक रीति ।

लावारिस—संज्ञा पुं० [वि० लावारिस] वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या

के नियमों का वर्णन हो।

घण्टवृत्त-संज्ञा पुं० वह पद्य जिसके चरणों में चणों की संख्या और लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।

घण्टसंकर-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो।  
दोगला।

घाण्ट-वि० १. कथित। २. जिसका वर्णन हो चुका हो।

घार्य-वि० वर्णन के योग्य।

घसन्न-संज्ञा पुं० [ वि० वसित ] बर-ताब। व्यवहार।

घर्त्तमान-वि० १. चलता हुआ।  
२. मौजूद।

संज्ञा पुं० व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है।

घत्तिका-संज्ञा स्त्री० १. घसी। २. शलाका।

घत्तित-वि० १. संपादित किया हुआ।  
२. चलाया हुआ।

घर्त्ती-वि० [ स्त्री० वत्तिनी ] बरतने-वाला।

घर्त्तल-वि० मोल। घृताकार।

घर्मे-संज्ञा पुं० मार्ग। पथ।

घर्दी-संज्ञा स्त्री० दे० "बरदी"।

घर्द्धन-संज्ञा पुं० [ वि० वर्द्धित ] १. बढ़ाना। २. वृद्धि।

घर्द्धमान-वि० जो बढ़ता जा रहा हो।  
संज्ञा पुं० जैनियों के २३वें जिन, महावीर।

घर्द्धित-वि० बढ़ा हुआ।

घर्मे-संज्ञा पुं० कवच। घकतर।

घर्मा-संज्ञा पुं० चित्रियों आदि की उपाधि जो उनके नाम के अंत में लगाई जाती है।

घर्ग्य-वि० श्रेष्ठ। जैसे—विद्वद्घर्ग्य।

घर्वर-वि० १. असभ्य। २. नीच।

घर्व-संज्ञा पुं० काल का एक मान जिसमें बारह महीने होते हैं।

घर्षगांठ-संज्ञा स्त्री० दे० "घरस गांठ"।

घर्षण-संज्ञा पुं० [ वि० घर्षित ] घृष्टि। घरसना।

घर्षफल-संज्ञा पुं० फलित ज्योतिष में वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है।

घर्षा-संज्ञा स्त्री० १. वह पदार्थ जिसमें पानी बरसता है। २. पानी बरसने की क्रिया या भाव।

घर्षाकाल-संज्ञा पुं० बरसात।

घर्ही-संज्ञा पुं० मयूर। मोर।

घलय-संज्ञा पुं० १. मंडल। २. घड़ी।

घलवला-संज्ञा पुं० वसंग। आवेश।

घलाहक-संज्ञा पुं० मेघ। बादल।

घालि-संज्ञा पुं० १. देवता को चढ़ाने की वस्तु। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था।

घालत-वि० १. बल शायी हुआ।  
२. जिसमें सुरियाँ पड़ी हों।

घली-संज्ञा स्त्री० कुर्ती। शिकन।

संज्ञा पुं० माखिक। खामी।

घल्कल-संज्ञा पुं० घृष की छाल।

घल्ह-संज्ञा पुं० पुत्र।

जैसे—"गोकुल बल्ह बल्ह देव"  
अर्थात् "गोकुल, बेटा बलदेव का।"

वारिस न हो।

लाश-संज्ञा स्त्री० किसी प्राणी का मृतक देह। शव।

लासा-संज्ञा पुं० कोई लसदार चीज। लुआय।

लासानी-वि० अद्वितीय। बेजोड़।

लास्य-संज्ञा पुं० १. नृत्य। नाच।

२. वह नृत्य जो कोमल अंगों के द्वारा हो और जिससे शृंगार आदि कोमल रसों का उद्घोषण होता हो।

लाह-संज्ञा स्त्री० लाख। चपड़ा।

संज्ञा पुं० लाम। नफ़ा।

लाहु-संज्ञा पुं० नफ़ा। लाम।

लाहौल-संज्ञा पुं० एक अरबी वाक्य का पहला शब्द जिसका व्यवहार प्रायः भूत-प्रेत आदि को भगाने या घृणा प्रकट करने के लिये किया जाता है।

लिंग-संज्ञा पुं० १. चिह्न। लक्षण।

निशान। २. गुप्त इंद्रिय। ३. शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति। ४. व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है।

लिंगदेह-संज्ञा पुं० वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों के फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है। (अध्यात्म)

लिगायत-संज्ञा पुं० एक शैव संप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिण में बहुत है।

लिंगेन्द्रिय-संज्ञा पुं० पुरुषों की मूर्धेन्द्रिय।

लिप-हिंदी का एक कारक-चिह्न जो संप्रदान में आता है।

लिखलाइ-संज्ञा पुं० बहुत लिखने-वाला। भारी लेखक। (व्यंग्य)

लिखधार-संज्ञा पुं० लिखनेवाला। मुहरिंर या मुंशी।

लिखना-क्रि० स० १. चिह्न करना। २. स्याही में हूषी हुई फलम से अक्षरों की आकृति बनाना।

लिखाई-संज्ञा स्त्री० १. लेख। २. लिखने का ढंग। ३. लिखने की मजदूरी।

लिखाना-क्रि० स० दूसरे के द्वारा लिखने का काम कराना।

लिखापटो-संज्ञा स्त्री० १. लिखने-पढ़ने का काम। २. पत्र-व्यवहार। ३. किसी विषय को कागज़ पर लिखकर निश्चित या पक्का करना।

लिखाघट-संज्ञा स्त्री० लिखने का ढंग।

लिखित-वि० लिखा हुआ। अंकित।

लिच्छवि-संज्ञा पुं० एक इतिहास-प्रसिद्ध राजवंश जिसका राज्य नेपाल, मगध और कोशल में था।

लिटाना-क्रि० स० दूसरे को सेटने में प्रवृत्त करना।

लिट्ट-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा० लिट्टी ] मोटी रोटी। चाटी।

लिपटना-क्रि० प्र० एक वस्तु का दूसरी को घेरकर उससे खूब सट जाना। चिपटना।

लिपटाना-क्रि० स० १. चिपटाना। २. आलिंगन करना।

लिपना-क्रि० प्र० लीपा या पोता जाना।

लिपाई-संज्ञा स्त्री० लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपाना-क्रि० स० रंग या किसी

घलिद्यत-संज्ञा स्त्री० पिता के नाम का परिचय ।

घल्मीक-संज्ञा पुं० १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर । २. घावमीकि मुनि ।

घल्लभ-वि० प्रियतम । प्यारा ।  
संज्ञा पुं० १. पति । २. वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य ।

घल्लभा-संज्ञा स्त्री० प्रिय स्त्री ।  
घल्लभाचार्य-संज्ञा पुं० दे० "घल्लभ" २. ।

घल्लरि, घल्लरी-संज्ञा स्त्री० १. बहो । २. छता ।

घल्ली-संज्ञा स्त्री० छता । घेल ।  
घश-संज्ञा पुं० काव । अधिकार ।  
घशघर्ती-वि० जो दूसरे के घश में रहे ।

घशिता-संज्ञा स्त्री० १. अधीनता । २. ताबेदारी ।

घशित्व-संज्ञा पुं० घशता ।  
घशिष्ठ-संज्ञा पुं० दे० "वसिष्ठ" ।

घशा-वि० [ स्त्री० वशिनी ] १. अपने को घश में रखनेवाला । २. अधीन ।

घशीकरण-संज्ञा पुं० [ वि० वशीकृत ] १. घश में खाने की क्रिया । २. मणि, मंत्र आदि के द्वारा किसी को घश में करना ।

घशीभूत-वि० दूसरे की इच्छा के अधीन ।

घश्य-वि० घश में खानेवाला ।  
घश्यता-संज्ञा स्त्री० अधीनता ।

घसंत-संज्ञा पुं० [ वि० वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती ] १. वर्ष की छः ऋतुओं में से प्रधान । २. बहार का मौसम । ३. शीतला रोग ।

घसंतदूत-संज्ञा पुं० १. ग्राम का दूत । २. कोयल ।

घसंतदूती-संज्ञा स्त्री० कोकिला । कोयल ।

घसंत पंचमी-संज्ञा स्त्री० माघ महीने की शुक्लपंचमी ।

घसंती-संज्ञा पुं० दे० "वसंती" ।

घसंतोत्सव-संज्ञा पुं० एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था । मदनोत्सव ।  
घसन-संज्ञा पुं० घब ।

वसवास-संज्ञा पुं० [ वि० वसवासी ] १. भ्रम । संदेह । २. प्रलोभन या मोह ।

वसह-संज्ञा पुं० बैल ।

वसिष्ठ-संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि जिनका बल्लभ वेदों से लेकर रामायण, महाभारत और पुराणों आदि तक में है ।

वसीका-संज्ञा पुं० वह धन जो इस वहेय से सरकारी खजाने में जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करे ।

वसीयत-संज्ञा स्त्री० अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है ।

वसीयतनामा-संज्ञा पुं० वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस प्रकार हो ।

वसीला-संज्ञा पुं० ज़रिया । द्वार ।

घसुंघरा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

घसु-संज्ञा पुं० १. देवताओं का एक

गीली वस्तु की तरह चढ़वाना ।  
पुताना ।

लिपि-संज्ञा स्त्री० १. अक्षर या वर्णों के अंकित चिह्न । २. अक्षर लिखने की प्रणाली । जैसे—माझी लिपि, धरयी लिपि ।

लिपिबद्ध-वि० लिखा हुआ । लिखित ।

लित-वि० १. लिपा हुआ । २. खूब तरफ़ से । अनुरक्त ।

लिप्ता-संज्ञा स्त्री० लालच । लोभ ।

लिफाफा-संज्ञा पुं० कागज़ की पत्ती हुई यह चौकोर धाँगी जिसके अंदर कागज़-पत्र रखकर भेजे जाते हैं ।

लियड़ी-संज्ञा स्त्री० १. पुलिसवालों का सामान । २. असबाब ।

लियास-संज्ञा पुं० पहनने का कपड़ा । पोशाक ।

लियाकत-संज्ञा स्त्री० योग्यता ।

लिहाट, लिहार-संज्ञा पुं० दे० "खलाट" ।

लिहाना-क्रि० स० लेने या लाने का काम दूसरे से कराना ।

लिसोड़ी-संज्ञा पुं० एक मँफोला पेड़ जिसके फल छोटे बेल के परावर होते हैं ।

लिहाड़-संज्ञा पुं० १. व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान । २. सुरक्षित ।

लिहाड़ा-वि० १. चाहियात । गिरा-हुआ । २. खराब ।

लिहाड़ी-संज्ञा स्त्री० उपहास । निंदा ।

लिहाफ-संज्ञा पुं० रात को सोते समय ओढ़ने का रुईदार कपड़ा ।

लिहित-वि० चाटता हुआ ।

लीफ-संज्ञा स्त्री० लफ़ीर । रेखा ।

लीख-संज्ञा स्त्री० जूँ का खंडा ।

लीचड़-वि० सुख । फाहिल ।

लोची-संज्ञा स्त्री० एक सदाबहार पद्म जिसका फल मीठा होता है ।

लोभी-संज्ञा स्त्री० सीठी ।

वि० १. नीरस । निस्तार । २. निकम्मा ।

लीद-संज्ञा स्त्री० घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल ।

लोन-वि० [ भाव० लौनता ] १. जो किसी वस्तु में समा गया हो । २. तन्मय ।

लीपना-क्रि० स० किसी गीली वस्तु की पतली तरह चढ़ाना ।

लीला-संज्ञा पुं० नील ।

वि० नीला ।

लीलना-क्रि० स० गले के नीचे पेट में उतारना ।

लीला-संज्ञा स्त्री० १. वह व्यापार जो केवल मनोरंजन के लिये किया जाय । २. मनुष्यों के मनोरंजन के लिये किए हुए ईश्वरावतारों का अभिनय ।

वि० नीला ।

लीलापुरुषोत्तम-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

लीलावती-संज्ञा स्त्री० प्रसिद्ध ज्योतिष-विद भास्कराचार्य की पत्नी जिसने खिलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी ।

लुंगाड़ा-संज्ञा पुं० शोहदा । लुंचा ।

लुंगी-संज्ञा स्त्री० धोती के स्थान पर कमर में खपेटने का छोटा टुकड़ा ।

तहमत ।

लुंचन-संज्ञा पुं० चुटकी से पकड़कर



गण जिसके अंतर्गत याठ देवता हैं ।

२. रत्न ।

घसुदा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

घसुदेव-संज्ञा पुं० यदुयशियों के शूर-कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे ।

घसुधा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

घसुधारा-संज्ञा स्त्री० जैनों की एक देवी ।

घसुमती-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

घसूल-वि० १. मिला हुआ । २. जो चुका लिया गया हो ।

घसूली-संज्ञा स्त्री० दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम ।

घस्ति-संज्ञा स्त्री० १. पेड़ । २. मृगशय ।

घस्तिकर्म-संज्ञा पुं० रिगेंद्रिय, गुरेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देना ।

घस्तु-संज्ञा स्त्री० [ वि० वास्तव, वास्तविक ] १. वह जिसका अस्तित्व या मत्ता हो । २. गोचर पदार्थ । चीज ।

घस्तुतः-अव्य० यथार्थतः । सचमुच ।

घस्त्र-संज्ञा पुं० कपड़ा ।

घस्त्र-संज्ञा पुं० दो चीजों का मेल । मिलन ।

घह-अव्य० एक शब्द जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाना है ।

घहान-संज्ञा पुं० [ वि० बहनाय, बहमान, बहिन ] सींचकर अथवा सिर-या कंधे पर छादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना ।

घहम-संज्ञा पुं० मिथ्या धारणा । झूठा सुपात्र ।

घहमी-वि० घहम करनेवाला ।

घहशत-संज्ञा स्त्री० जंगलीपन । अस-

म्यता ।

घहशी-वि० जंगल में रहनेवाला ।

घह्रा-अव्य० उस जगह ।

घहायी-संज्ञा पुं० अशुद्ध बहाव भग्नी का बहाया हुआ सुसज्जमानों का एक संप्रदाय ।

घहिः-अव्य० जो अंदर न हो । बाहर ।

घहिर-संज्ञा पुं० जहाज ।

घहिरंग-संज्ञा पुं० १. शरीर का बाहरी भाग । २. बाहरी भाग ।

घहिरांत-वि० जो बाहर गया हो । निकला हुआ ।

घहिरुत-वि० १. बाहर निकला हुआ । २. त्यागा हुआ ।

घह्री-अव्य० वही जगह ।

घही-सर्व० उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो ।

घहि-संज्ञा पुं० अग्नि ।

घांछनीय-वि० चाहने योग्य ।

घांछा-संज्ञा स्त्री० [ वि० बांछित, बांछनाय ] इच्छा । अभिलाषा । चाह ।

घांछित-वि० इच्छित । चाहा हुआ ।

घा-अव्य० विकल्प या संदेहवाचक शब्द । या । अथवा ।

० सर्व० वज्रमापा में प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारक-विह्वलन के पहले उसे प्राप्त होता है । जैसे—याको, यासो ।

घाक-संज्ञा पुं० १. वाणी । २. सरस्वती ।

घाकर-वि० सच । वास्तव ।

अव्य० सचमुच । यथार्थ में ।

घाकफियत-संज्ञा स्त्री० १. जानकारी । २. परिचय ।

वखाड़ना । नोचना ।  
 लुंज-वि० बिना हाथ-पर का ।  
 लुंठन-कि० स० [ वि० लुंठित ]  
 लुंठकना ।  
 लुंठ-संज्ञा पुं० बिना सिर का घड़ ।  
 रुंठ ।  
 लुंठ-मुंठ-वि० जिसका सिर, हाथ,  
 पैर आदि कटे हो; केवल घड़ का  
 जोधड़ा रह गया हो ।  
 लुंविनी-संज्ञा स्त्री० कपिलवस्तु के पास  
 का एक वन जहाँ गौतम बुद्ध जन्म  
 हुए थे ।  
 लुआठा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० अल्पा०  
 लुआठी ] सुलगती हुई छकड़ी ।  
 लुआव-संज्ञा पुं० छसदार गूदा ।  
 लुक-संज्ञा पुं० चमकदार रंग ।  
 वानिश ।  
 लुकठी-संज्ञा स्त्री० लुआठा ।  
 लुकना-कि० अ० आड़ में होना ।  
 छिपना ।  
 लुकमा-संज्ञा पुं० आस । कैर ।  
 लुकाना-कि० स० आड़ में करना ।  
 छिपाना ।  
 † कि० अ० लुकना । छिपना ।  
 लुकेठा-संज्ञा पुं० दे० "लुआठा" ।  
 लुगदी-संज्ञा स्त्री० गीली वस्तु का  
 पिंड या गोला ।  
 लुगरा-संज्ञा पुं० १. कपड़ा । २.  
 श्रोतनी ।  
 लुगरी-संज्ञा स्त्री० फटी पुरानी घोती ।  
 लुगाई-संज्ञा स्त्री० स्त्री । औरत ।  
 लुग्गा-संज्ञा पुं० दे० "लूगा" ।  
 लुचई-संज्ञा स्त्री० मैदे की पतली  
 पूरी । लूची ।  
 लुच्चा-वि० [ स्त्री० लूची ] १. दुरा-  
 चारी । २. शोहदा ।

लुंठ-संज्ञा स्त्री० लूट ।  
 लुटना-कि० अ० दूसरे के द्वारा  
 लूटा जाना ।  
 † कि० अ० दे० "लुठना" ।  
 लुटाना-कि० स० १. दूसरे को लूटने  
 देना । २. बहुतायत से बांटना ।  
 अंधापुंघ दान करना ।  
 लुटिया-संज्ञा स्त्री० छोटा लोटा ।  
 लुटेरा-संज्ञा पुं० लूटनेवाला । डाकू ।  
 लुठना-कि० अ० भूमि पर पड़ना ।  
 लोटना ।  
 लुठाना-कि० स० भूमि पर डालना ।  
 लुढ़कना-कि० अ० गेंद की तरह  
 नीचे-ऊपर चक्कर खाते हुए गमन  
 करना ।  
 लुढ़काना-कि० स० इस प्रकार फेंक-  
 ना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए  
 कुछ दूर चला जाय ।  
 लुत्थ-संज्ञा स्त्री० दे० "लोथ" ।  
 लुत्फ-संज्ञा पुं० १. मज़ा । आनंद ।  
 २. रोचकता ।  
 लुनना-कि० स० खेत की तैयार  
 फसल काटना ।  
 लुनाई-संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य" ।  
 लुनेरा-संज्ञा पुं० खेत की फसल का-  
 टनेवाला । लुननेवाला ।  
 लुस-वि० १. छिपा हुआ । २.  
 थड़थड़ा ।  
 लुब्ध-वि० १. लुभाया हुआ । लल-  
 चाया हुआ । २. मोहित ।  
 लुब्धक-संज्ञा पुं० व्याध । घहेलिया ।  
 लुब्धना-कि० अ० दे० "लुबुधना" ।  
 लुब्धलुवाध-संज्ञा पुं० किसी बात का  
 तत्त्व । सारांश ।  
 लुभाना-कि० अ० लुब्ध होना ।  
 कि० स० मोहित करना । रिम्भाना ।

घाक्या-संज्ञा पुं० १. घटना । २. समाचार ।

घाकिक-वि० १. जानकार । ज्ञाता । २. जानकारी रखनेवाला । अनुभवी ।

घाकिल-संज्ञा पुं० न्यायशास्त्र के अनेमार छल के तीन भेदों में से एक ।

घाकपट्ट-वि० घात करने में चतुर ।

घाकफियत-संज्ञा स्त्री० जानकारी ।

घाक्ये-संज्ञा पुं० वह पद समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो । जुमला ।

घाकसिद्धि-संज्ञा स्त्री० इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे ।

घागीश-संज्ञा पुं० १. गृहस्पति । २. कवि ।

वि० अच्छा बोलनेवाला ।

घागीश्वरी-संज्ञा स्त्री० सरस्वती ।

घाग्दत्त-वि० जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हों ।

घाग्दत्ता-संज्ञा स्त्री० वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो ।

घाग्दान-संज्ञा पुं० कन्या के पिता का किसी से जाकर वह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें द्याऊँगा ।

घाग्मी-संज्ञा पुं० १. अच्छा वक्ता । २. पंडित ।

घाग्मिलास-संज्ञा पुं० आनंदपूर्वक परस्पर बात-चीत करना ।

घाटमय-वि० वचन द्वारा किया हुआ ।

संज्ञा पुं० साहित्य ।

घाव-संज्ञा स्त्री० घावा । घापी ।

घावे-संज्ञा स्त्री० दे० "घाव" ।

घावक-वि० बतानेवाला ।

घाचन-संज्ञा पुं० पढ़ना ।

घाचनालय-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचार पत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों ।

घाचस्पति-संज्ञा पुं० गृहस्पति ।

घाचा-संज्ञा स्त्री० १. वाणी । २. वचन ।

घाचाबंध-वि० प्रतिज्ञाबद्ध ।

घाचाल-वि० १. बोलने में तेज़ । २. चकवादी ।

घाची-वि० प्रकट करनेवाला । सूचक ।

घाच्च-वि० कहने योग्य ।

संज्ञा पुं० १. अभिप्रेतार्थ । २. दे० "वाच्यार्थ" ।

घाच्यार्थ-संज्ञा पुं० वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो । मूलशब्दार्थ ।

घाच्यवाच्य-संज्ञा पुं० भली-बुरी या कहने में कहने योग्य बात ।

घाजपेई-संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी" ।

घाजपेय-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो यात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है ।

घाजपेयी-संज्ञा पुं० १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो ।

२. ब्राह्मणों की एक उपाधि । ३. आर्यन कुलीन पुरुष ।

वाजसनेय-संज्ञा पुं० यजुर्वेद की एक शाखा ।

घाजिय-वि० उचित । ठीक ।

घाजिवी-वि० उचित । ठीक ।

घाजी-संज्ञा पुं० घोड़ा ।

घाजीकरण-संज्ञा पुं० वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य की वृद्धि हो ।

घाट-संज्ञा पुं० मार्ग । रास्ता ।

वाटिका-संज्ञा स्त्री० बाग। बगीचा।  
वाडघासि-संज्ञा स्त्री० समुद्र के अंदर  
की राग।

वाण-संज्ञा पुं० धारदार फल लगा  
हुआ एक छोटा वृक्ष जो धनुष की  
होरी पर लींचकर छोड़ा जाता है।  
तीर।

वाणिय्य-संज्ञा पुं० दे० "वाणिय्य"।

वाणी-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २.  
वचन।

वात-संज्ञा पुं० १. वायु। २. वैद्यक  
के अनुसार शरीर के अंदर पकाशय  
में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित  
होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातज-वि० वायु द्वारा उत्पन्न।

वातजात-संज्ञा पुं० हनुमान्।

वात-प्रकोप-संज्ञा पुं० वायु का बढ़  
जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग  
होते हैं।

वातापि-संज्ञा पुं० एक असुर का नाम  
जो वातापि का भाई था और जिसे  
धर्मराज ऋषि ने खा डाला था।

वातायन-संज्ञा पुं० भरोसा। छोटी  
चिड़की।

वातुल-संज्ञा पुं० बाबला। उन्मत्त।

वात्सल्य-संज्ञा पुं० माता-पिता का  
संतति के प्रति प्रेम।

वात्स्यायन-संज्ञा पुं० १. न्यायशास्त्र  
के प्रसिद्ध भाष्यकार। २. कामसूत्र-  
प्रणेतृ एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाद्-संज्ञा पुं० १. वह वात-चीत जो  
किसी तत्त्व के निर्णय के लिये हो।

२. कोई निश्चित सिद्धांत।

वादक-संज्ञा पुं० वाज्रा बजानेवाला।

वादन-संज्ञा पुं० वाजा बजाना।

वाद्-प्रतिवाद-संज्ञा पुं० बहस।

वादरायण-संज्ञा पुं० वेदव्यास।

वाद्-चिवाद-संज्ञा पुं० बहस।

वादा-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा। इक़रार।

वादी-संज्ञा पुं० १. वक्ता। २. फ़रि-  
यादी। मुद्दई। ३. पक्ष या प्रस्ताव  
व्यपस्थित करनेवाला।

वाद्य-संज्ञा पुं० वाजा।

वानप्रस्थ-संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय  
आर्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन के  
चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।

वानर-संज्ञा पुं० बंदर।

वापस-वि० लौटा हुआ। फिरता।

वापसी-वि० लौटा हुआ या फेरा  
हुआ।

वापिका, वापी-संज्ञा स्त्री० छोटा  
जलाशय। बाधली।

वाम-वि० १. बायाँ। २. टेढ़ा।  
कुटिल।

वामदेव-संज्ञा पुं० १. शिव। महा-  
देव। २. एक ऋषि।

वामन-वि० बौना। छोटे डीङ्ग का।  
संज्ञा पुं० विष्णु भगवान् का पंचवर्षी  
अवतार जो बलि को छलने के लिये  
हुआ था।

वाम-मार्ग-संज्ञा पुं० सांख्यिक मत  
जिसमें मय, मांस आदि का वि-  
घान है।

वामा-संज्ञा स्त्री० स्त्री।

वायव्य-संज्ञा पुं० उत्तर-पश्चिम का  
कोना। पश्चिमोत्तर दिशा।

वायस-संज्ञा पुं० कौशा। काक।

वायु-संज्ञा स्त्री० हवा। वात।

वायुकोण-संज्ञा पुं० पश्चिमोत्तर दिशा।

वायुमंडल-संज्ञा पुं० आकाश।

घारंघार-अण्य० दे० "वारंवार"।

नय देवताओं के गण ।  
 विश्वेश्वर-संज्ञा पुं० ईश्वर ।  
 विष-संज्ञा पुं० जहर ।  
 विषण-वि० दुखी ।  
 विषधर-संज्ञा पुं० साँप ।  
 विषमंत्र-संज्ञा पुं० १. वह जो विष  
 हटाने का मंत्र जानता हो । २.  
 सँपरा ।  
 विषम-वि० १. असमान । २. बहुत  
 कठिन ।  
 विषम उदर-संज्ञा पुं० आड़ा देकर  
 खानेवाला उदर ।  
 विषमता-संज्ञा स्त्री० १. विषम होने  
 का भाव । २. वैर ।  
 विषमवाण-संज्ञा पुं० कामदेव ।  
 विषय-संज्ञा पुं० १. वह जिस पर कुछ  
 विचार किया जाय । २. स्त्री संभोग ।  
 विषयक-अन्व० विषय का ।  
 विषयी-संज्ञा पुं० कामी ।  
 विषाक्त-वि० जिसमें विष मिला हो ।  
 ज़हरीला ।  
 विषाण-संज्ञा पुं० पशु का सींग ।  
 विषाद-संज्ञा पुं० [ वि० विषादी ] खेद ।  
 विषुवतरेखा-संज्ञा स्त्री० ज्योतिष के  
 कार्य के लिये कल्पित एक रेखा जो  
 पृथ्वी-तल पर उसके ठीक मध्य भाग  
 में पूर्व-पश्चिम पृथ्वी के चारों ओर  
 मानी जाती है ।  
 विष्ट-संज्ञा पुं० धागा ।  
 विष्टा-संज्ञा स्त्री० मल ।  
 विष्णु-संज्ञा पुं० दिग्दुर्गों के एक प्रधान  
 और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का  
 भरण-पोषण और पालन करनेवाले  
 माने जाते हैं ।  
 विष्णुगुप्त-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ऋषि  
 और वैद्याकरण जो कौटिल्य नाम से

प्रसिद्ध थे ।  
 विष्णुपदी-संज्ञा स्त्री० गंगा नदी ।  
 विष्णुलोक-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ ।  
 विसदृश-वि० विपरीत ।  
 विसर्ग-संज्ञा पुं० १. दान । २.  
 त्याग । ३. व्याकरण में एक वर्ण  
 जिसमें ऊपर नीचे दो बिंदु होते हैं  
 और जिनका उच्चारण प्रायः अर्घ्य ह  
 के समान होता है ।  
 विसर्जन-संज्ञा पुं० १. परित्याग । २.  
 विदा होना ।  
 विसर्पी-वि० फैलनेवाला ।  
 विसाल-संज्ञा पुं० १. संयोग । २.  
 सत्यु ।  
 विसूचिका-संज्ञा स्त्री० वैद्यक के अनु-  
 सार एक रोग जिसे कुछ लोग  
 “हैजा” मानते हैं ।  
 विस्तार-संज्ञा पुं० फैलाव ।  
 विस्तीर्ण-वि० १. विस्तृत । २. वि-  
 शाल ।  
 विस्तृत-वि० [ संज्ञा विस्तार, विस्तृति ]  
 १. लंबा-चौड़ा । २. विशाल ।  
 विस्फोट-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ  
 का गरमी आदि के कारण बल या  
 फूट पड़ना । २. ज़हरीला और  
 खराब फोड़ा ।  
 विस्फोटक-संज्ञा पुं० १. ज़हरीला  
 फोड़ा । २. भभकनेवाला पदार्थ ।  
 विस्मय-संज्ञा पुं० आश्चर्य ।  
 विस्मरण-संज्ञा पुं० भूल जाना ।  
 विस्मित-वि० चकित ।  
 विस्मृत-वि० भूला हुआ ।  
 विस्मृति-संज्ञा स्त्री० विस्मरण ।  
 विहंग-संज्ञा पुं० १. पक्षी । २. प्राण ।  
 विहग-संज्ञा पुं० दे० “विहंग” ।  
 विहार-संज्ञा पुं० १. टहलना । २.

वाक्या-संज्ञा पुं० १. घटना । २. समाचार ।

वाक्कि-वि० १. जानकार । ज्ञाता । २. जानकारी रखनेवाला । अनुभवी ।

वाक्छल-संज्ञा पुं० न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक ।

वाक्पटु-वि० बात करने में चतुर ।

वाक्फियत-संज्ञा स्त्री० जानकारी ।

वाक्य-संज्ञा पुं० वह पद समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो । जुमला ।

वाक्सिद्धि-संज्ञा स्त्री० इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात सुँह से निकले, वह ठीक घटे ।

वागीश-संज्ञा पुं० १. गृहस्पति । २. कवि ।

वि० अच्छा बोलनेवाला ।

वागीश्वरी-संज्ञा स्त्री० सरस्वती ।

वाग्दत्त-वि० जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हों ।

वाग्दत्ता-संज्ञा स्त्री० वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो ।

वाग्दान-संज्ञा पुं० कन्या के पिता का किसी से जाकर वह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें द्याऊँगा ।

वाग्मी-संज्ञा पुं० १. अच्छा वक्ता । २. पंडित ।

वाग्बलास-संज्ञा पुं० आनंदपूर्वक परस्पर बात-चीत करना ।

वाङ्मय-वि० वचन द्वारा किया हुआ ।

संज्ञा पुं० साहित्य ।

वाच-संज्ञा स्त्री० वाचा । वाणी ।

वाचे-संज्ञा स्त्री० दे० "वाच" ।

वाचक-वि० बतानेवाला ।

वाचन-संज्ञा पुं० पढ़ना ।

वाचनालय-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचार पत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों ।

वाचस्पति-संज्ञा पुं० गृहस्पति ।

वाचा-संज्ञा स्त्री० १. वाणी । २. वचन ।

वाचावध-वि० प्रतिज्ञाबद्ध ।

वाचाल-वि० १. बोलने में तेज । २. बकवादी ।

वाची-वि० प्रकट करनेवाला । सूचक ।

वाच्य-वि० कहने योग्य ।

संज्ञा पुं० १. अभिधेयार्थ । २. दे० "वाच्यार्थ" ।

वाच्यार्थ-संज्ञा पुं० वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो । मूल शब्दार्थ ।

वाच्यावाच्य-संज्ञा पुं० भली-दुरी या कहने न कहने योग्य बात ।

वाजपेई-संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी" ।

वाजपेय-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो मात औरत यज्ञों में पविर्वा है ।

वाजपेयी-संज्ञा पुं० १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो ।

२. ब्राह्मणों की एक उपाधि । ३. अर्यन कुलीन पुरुष ।

वाजसनेय-संज्ञा पुं० यजुर्वेद की एक शाखा ।

वाजिय-वि० वचित । ठीक ।

वाजिबी-वि० वचित । ठीक ।

वाजी-संज्ञा पुं० घोड़ा ।

वाजीकरण-संज्ञा पुं० वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य की वृद्धि हो ।

वाट-संज्ञा पुं० मार्ग । रास्ता ।

व्यवसाय-संज्ञा पुं० १. जीविका ।  
 २. रोज़गार ।  
 व्यवसायी-संज्ञा पुं० १. व्यवसाय करनेवाला । २. रोज़गारी ।  
 व्यवस्था-संज्ञा स्त्री० १. किसी कार्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो । २. प्रबंध ।  
 व्यवस्थापक-संज्ञा पुं० १. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला । २. प्रबंधकर्त्ता । ईतजामकार ।  
 व्यवस्थापत्र-संज्ञा पुं० वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था हो ।  
 व्यवहार-संज्ञा पुं० चरताव ।  
 व्यष्टि-संज्ञा स्त्री० एक अंश । समाज की एकाई ।  
 व्यसन-संज्ञा पुं० १. विपत्ति । २. किसी प्रकार का शौक ।  
 व्यसनी-संज्ञा पुं० वह जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो ।  
 व्यस्त-वि० १. घबराया हुआ । २. काम में लगा या फँसा हुआ ।  
 व्याकरण-संज्ञा पुं० वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है ।  
 व्याकुल-संज्ञा पुं० [ भाव० व्याकुलता ] घबराया हुआ ।  
 व्याक्रोश-संज्ञा पुं० तिरस्कार करते हुए कटाव करना ।  
 व्याख्या-संज्ञा स्त्री० टीका ।  
 व्याख्याता-संज्ञा पुं० १. व्याख्या करनेवाला । २. भाष्य करनेवाला ।  
 व्याख्यान-संज्ञा पुं० १. किसी विषय

की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण यत्न करने का काम । २. वक्तृता ।

व्याघात-संज्ञा पुं० १. विघ्न । २. आघात ।

व्याघ्र-संज्ञा पुं० बाघ ।

व्याघ्रचर्म-संज्ञा पुं० बाघ या शेर की त्वचा जिस पर प्रायः लोग बैठते हैं ।

व्याघ्रनख-संज्ञा पुं० शेर का नाखून ।

व्याज-संज्ञा पुं० १. कपट । २. देर । संज्ञा पुं० दे० "व्याज" ।

व्याजनिंदा-संज्ञा स्त्री० ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े ।

व्याजोक्ति-संज्ञा स्त्री० कपट भरी बात ।

व्याघ्र-संज्ञा पुं० वह जो जंगली पशुओं आदि का शिकार करता हो ।

व्याधि-संज्ञा स्त्री० १. रोग । २. आफ़त ।

व्यापक-वि० १. चारों ओर फैला हुआ । २. घेरने या ढकनेवाला ।

व्यापना-कि० प्र० किसी चीज़ के अंदर फैलना ।

व्यापार-संज्ञा पुं० १. कर्म । २. रोज़गार ।

व्यापारी-संज्ञा पुं० रोज़गारी । वि० व्यापार-संबंधी ।

व्याप्ति-संज्ञा स्त्री० १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव । २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना ।

व्यामोह-संज्ञा पुं० मोह ।

वाटिका-संज्ञा स्त्री० वायु । बगोचा ।  
 वाङ्मासि-संज्ञा स्त्री० समुद्र के अंदर  
 की आग ।  
 वाण-संज्ञा पुं० घारंघार फल लगा  
 हुआ एक छोटा अन्न जो धनुष की  
 डोरी पर लीचकर छोड़ा जाता है ।  
 सीर ।  
 वाणिज्य-संज्ञा पुं० दे० "वाणिज्य" ।  
 वाणी-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती । २.  
 वचन ।  
 वात-संज्ञा पुं० १. वायु । २. वैद्यक  
 के अनुसार शरीर के अंदर पैकाशय  
 में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित  
 होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं ।  
 वातज-वि० वायु द्वारा उत्पन्न ।  
 वातजात-संज्ञा पुं० इनुमान् ।  
 वात-प्रकोप-संज्ञा पुं० वायु का बढ़  
 जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग  
 होते हैं ।  
 वातापि-संज्ञा पुं० एक असुर का नाम  
 जो वातापि का भाई था और जिसे  
 अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था ।  
 वातायन-संज्ञा पुं० करोला । छोटी  
 खिड़की ।  
 वातुल-संज्ञा पुं० बापला । उन्मत्त ।  
 वात्सल्य-संज्ञा पुं० माता-पिता का  
 संतति के प्रति प्रेम ।  
 वात्स्यायन-संज्ञा पुं० १. व्यायशास्त्र  
 के प्रसिद्ध भाष्यकार । २. कामसूत्र-  
 प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि ।  
 वाद-संज्ञा पुं० १. वह वात-चीत जो  
 किसी तत्त्व के निर्णय के लिये हो ।  
 १. कोई निश्चित सिद्धांत ।  
 वादक-संज्ञा पुं० यात्रा बजानेवाला ।  
 वादन-संज्ञा पुं० यात्रा बजाना ।  
 वाद-प्रतिवाद-संज्ञा पुं० बहस ।

वादरायण-संज्ञा पुं० वेदव्यास ।  
 वाद-विवाद-संज्ञा पुं० बहस ।  
 वादा-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा । इफरार ।  
 वादी-संज्ञा पुं० १. वक्ता । २. फुरि-  
 यादी । मुद्दई । ३. पक्ष या प्रस्ताव  
 उपस्थित करनेवाला ।  
 वाद्य-संज्ञा पुं० वाजा ।  
 वानप्रस्थ-संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय  
 आर्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन के  
 चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम ।  
 वानर-संज्ञा पुं० बंदर ।  
 वापस-वि० लौटा हुआ । फिरता ।  
 वापसी-वि० लौटा हुआ या फेरा  
 हुआ ।  
 वापिका, वापी-संज्ञा स्त्री० छोटा  
 जलाशय । बावली ।  
 वाम-वि० १. बायाँ । २. टेढ़ा ।  
 कुटिल ।  
 वामदेव-संज्ञा पुं० १. शिव । महा-  
 देव । २. एक ऋषि ।  
 वामन-वि० बौना । छोटे डीख का ।  
 संज्ञा पुं० विष्णु भगवान् का पाँचवाँ  
 अवतार जो बलि को चलने के लिये  
 हुआ था ।  
 वाम-मार्ग-संज्ञा पुं० सांघ्रिक मत  
 जिसमें मद्य, मांस आदि का वि-  
 घान है ।  
 वामा-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।  
 वायव्य-संज्ञा पुं० उत्तर-पश्चिम का  
 कोना । पश्चिमोत्तर दिशा ।  
 वायस-संज्ञा पुं० कौशा । काक ।  
 वायु-संज्ञा स्त्री० हवा । वात ।  
 वायुकोण-संज्ञा पुं० पश्चिमोत्तर दिशा ।  
 वायुमंडल-संज्ञा पुं० आकाश ।  
 वारंवार-अव्य० दे० "वारंवार" ।



व्यायाम-संज्ञा पुं० १. कसरत । २. परिधम ।  
 व्याल-संज्ञा पुं० १. साँप । २. बाघ ।  
 ३. राजा ।  
 व्यालू-संज्ञा स्त्री०, रात के समय का भोजन ।  
 व्याघहारिक-वि० व्यवहार-संबंधी ।  
 व्यासंग-संज्ञा पुं० बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग ।  
 व्यास-संज्ञा पुं० १. पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया था । २. कथावाचक । ३. दूत के मध्य में एक सिरे से दूसरे सिरे तक खींची गई सरल रेखा ।  
 व्याहार-संज्ञा पुं० वाक्य ।  
 व्यावृत्ति-संज्ञा स्त्री० कथन ।  
 व्यूह-संज्ञा पुं० १. समूह । २. निर्माण । ३. शरीर । ४. सेना ।  
 व्योम-संज्ञा पुं० १. आकाश । २. जल । ३. बादल ।

व्योमचारी-संज्ञा पुं० १. देवता । २. पक्षी ।  
 व्योमयान-संज्ञा पुं० हवाई जहाज़ ।  
 व्रज-संज्ञा पुं० १. गमन । २. समूह ।  
 व्रजन-संज्ञा पुं० चलना ।  
 व्रजभाषा-संज्ञा स्त्री० मथुरा, आगरा और इसके आस-पास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा ।  
 व्रज-मंडल-संज्ञा पुं० व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश ।  
 व्रजराज-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।  
 व्रज्या-संज्ञा स्त्री० १. घूमना । २. गमन ।  
 व्रत-संज्ञा पुं० संकल्प ।  
 व्रती-संज्ञा पुं० वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो ।  
 व्रात्य-संज्ञा पुं० १. वह जिसके दंत संस्कार न हुए हों । २. दोगला ।  
 व्रीडा-संज्ञा स्त्री० लड़ा ।  
 व्रीहि-संज्ञा पुं० घान । चावड़ा ।

## श

श-हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसरा वर्ण ।  
 श-संज्ञा पुं० कल्याण । मंगल ।  
 शक-संज्ञा पुं० भय ।  
 शकना-कि० प्र० शंका करना ।  
 शंकर-वि० १. मंगल करनेवाला । २. शुभ ।  
 संज्ञा पुं० शिव ।  
 शंकर-शैल-संज्ञा पुं० कैलास ।  
 शंकरस्वामी-संज्ञा पुं० दे० "शंकराचार्य" ।

शंकराचार्य-संज्ञा पुं० अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य ।  
 शंका-संज्ञा स्त्री० १. डर । २. संदेह ।  
 शंकित-वि० [ स्त्री० शंकिता ] १. डरा हुआ । २. जिसे संदेह हुआ हो ।  
 शंकु-संज्ञा पुं० १. कोई नुकीली वस्तु । २. मेख ।  
 शंख-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पक्षी जो समुद्र में पाया जाता है । इसका कोप बहुत पवित्र समझा जाता और देवताओं के आगे बाजे

घार-संज्ञा पुं० १. द्वार । दरवाजा ।  
 २. रोक । रुकावट । ३. दफा ।  
 मरतवा । ४. सप्ताह का दिन ।  
 संज्ञा पुं० चोट । आक्रमण ।  
 घारण-संज्ञा पुं० किसी बात को न  
 करने की आज्ञा । मनाही ।  
 घारतिय-संज्ञा स्त्री० वेश्या ।  
 घारदात-संज्ञा स्त्री० कोई भीषण  
 कांड । दुर्घटना ।  
 घारन-संज्ञा स्त्री० निजावर । बलि ।  
 घारना-क्रि० स० निजावर करना ।  
 घार-पार-संज्ञा पुं० (नदी आदि का)  
 वह किनारा और वह किनारा ।  
 भयं० इस किनारे से उस किनारे  
 तक ।  
 घारफेर-संज्ञा पुं० निजावर । बलि ।  
 घारमुखी-संज्ञा स्त्री० वेश्या ।  
 घारांगना-संज्ञा स्त्री० वेश्या । रंछी ।  
 घाराणसी-संज्ञा स्त्री० काशी नगरी ।  
 घारा-न्यारा-संज्ञा पुं० फ्रैमला ।  
 घाराह-संज्ञा पुं० दे० "वराह" ।  
 घारि-संज्ञा पुं० जल । पानी ।  
 घारिज-संज्ञा पुं० १. कमल । २.  
 शंख ।  
 घारिद-संज्ञा पुं० मेष । बादल ।  
 घारिधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।  
 घारियाँ-संज्ञा स्त्री० निजावर । बलि ।  
 घारिस-संज्ञा पुं० वह पुरुष जो किसी  
 के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि  
 का स्वामी हो ।  
 घारिद्र-संज्ञा पुं० समुद्र ।  
 घारणी-संज्ञा स्त्री० १. भदिरा । शराब ।  
 २. पश्चिम दिशा । ३. एक वर्ष  
 जिसमें गंगा-स्नान करते हैं ।  
 घार्त्ता-संज्ञा स्त्री० १. जनश्रुति । अफ-  
 वाह । २. संवाद ।

घार्त्तालाप-संज्ञा पुं० बात-चीत ।  
 घात्तिक-संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ के रक्त,  
 अनुक्त और दुर्लभ अर्थों को स्पष्ट  
 करनेवाला वाक्य या ग्रंथ ।  
 घात्तक्य-संज्ञा पुं० बुढ़ापा ।  
 घार्पिक-वि० सालाना ।  
 घार्णाय-संज्ञा पुं० कृष्णचंद्र ।  
 घाला-प्रत्य० [स्त्री० वाली] एक संयोज-  
 सूचक प्रत्यय । जैसे—मकानवाला ।  
 घालिद-संज्ञा पुं० पिता । बाप ।  
 घालिदा-संज्ञा स्त्री० माता । माँ ।  
 घालमीकि-संज्ञा पुं० एक भृगुवंशी  
 मुनि जो रामायण के रचयिता और  
 आदिकवि कहे जाते हैं ।  
 घावैठा-संज्ञा पुं० १. बिछाव । रोना-  
 पीटना । २. हछा ।  
 घाप्प-संज्ञा पुं० १. घास । २. भाप ।  
 घासंतिक-वि० वसंत-संबंधी ।  
 घासंती-संज्ञा स्त्री० १. माघवी जता ।  
 २. मदनेरसव ।  
 घास-संज्ञा पुं० १. रहना । २. गृह ।  
 ३. सुगंध ।  
 घासकसज्जा-संज्ञा स्त्री० वह नायिका  
 जो नायक से मिलने की तैयारी  
 किए हुए घर आदि सजाकर और  
 भाप भी सजकर बैठी हो ।  
 घासन-संज्ञा पुं० १. सुगंधित करना ।  
 २. वस ।  
 घासना-संज्ञा स्त्री० १. भावना ।  
 संस्कार । २. इच्छा । कामना ।  
 घासर-संज्ञा पुं० दिन । दिवस ।  
 घासव-संज्ञा पुं० ईद्र ।  
 घासित-वि० सुगंधित किया हुआ ।  
 घासी-संज्ञा पुं० रहनेवाला ।  
 घासुकी-संज्ञा पुं० आठ नागों में से

की भाँति बनाया जाता है ।

शंखधर-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. श्रीकृष्ण ।

शंखपाणि-संज्ञा पुं० विष्णु ।

शंखिनी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की वनोपधि । २. स्त्रियों के चार कल्पित भेदों में से एक भेद ।

शंठ-संज्ञा पुं० १. नपुंसक । २. मूख ।

शंढ-संज्ञा पुं० १. नपुंसक । २. सौद ।

शंतनु-संज्ञा पुं० दे० "शान्तनु" ।

शान्तनु-सुत-संज्ञा पुं० दे० "भीष्म पितामह" ।

शायर-संज्ञा पुं० युद्ध ।

शायरारि-संज्ञा पुं० कामदेव । मदन ।

शायुक-संज्ञा पुं० घोघा ।

शायुक-संज्ञा पुं० १. घोघा । २. शंख ।

शंभु-संज्ञा पुं० शिव ।

शंभुगिरि-संज्ञा पुं० कैलास ।

शंभुबीज-संज्ञा पुं० पारा ।

शंभुभूषण-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

शंभुलोक-संज्ञा पुं० कैलास ।

शऊर-संज्ञा पुं० १. काम करने की योग्यता । २. बुद्धि ।

शऊरदार-संज्ञा पुं० जिसमें शऊर हो ।

शक-संज्ञा पुं० एक प्राचीन जाति । संज्ञा पुं० शंका ।

शकट-संज्ञा पुं० १. बैलगाड़ी । २. भार ।

शकठ-संज्ञा पुं० मचाने ।

शकर-संज्ञा स्त्री० दे० "शकर" ।

शकरकंद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद ।

शकरपारा-संज्ञा पुं० चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान ।

शकल-संज्ञा स्त्री० १. हाँचा । २.

चाकृति ।

शकाब्द-संज्ञा पुं० राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् ।

शकार-संज्ञा पुं० शक-वंशीय व्यक्ति ।

शकारि-संज्ञा पुं० विक्रमादित्य ।

शकुंत-संज्ञा पुं० पत्नी ।

शकुंतला-संज्ञा स्त्री० -राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका की कन्या थी ।

शकुन-संज्ञा पुं० १. किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबंध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं । २. पक्षी ।

शकुनि-संज्ञा पुं० १. पक्षी । २. कौरवों के मामा । दुर्योधन के मंत्री ।

शकर-संज्ञा स्त्री० चीनी ।

शकी-वि० जिसे हर घात में संदेह हो ।

शक्त-संज्ञा पुं० शक्तिसंपन्न ।

शक्ति-संज्ञा स्त्री० १. बल । २. दुर्गा । ३. एक प्रकार का शस्त्र । ४. वश ।

शक्तिधर-संज्ञा पुं० कात्ति केय ।

शक्तिपूजक-संज्ञा पुं० १. शाक्त । २. सांत्रिक ।

शक्तिमान्-वि० [ स्त्री० शक्तिमती ] बलवान् ।

शक्तिहीन-वि० १. बलहीन । २. नामदे ।

शक-संज्ञा पुं० इन्द्र ।

शकप्रस्थ-संज्ञा पुं० इन्द्रप्रस्थ ।

शक-संज्ञा स्त्री० दे० "शकल" ।

शखस-संज्ञा पुं० व्यक्ति ।

शगुल-संज्ञा पुं० १. व्यापार । २. मनोविनोद ।

शगुन-संज्ञा पुं० दे० "शकुन" ।

दूसरा नागराज ।

वासुदेव-संज्ञा पुं० वसुदेव के पुत्र,  
श्रीकृष्णचंद्र ।

वास्तव-वि० यथार्थ ।

वास्तविक-वि० यथार्थ । ठीक ।

वास्तव्य-वि० रहने या बसने योग्य ।

वास्ता-संज्ञा पुं० संबंध । लगाव ।

वास्तु-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जिस

पर घर उठाया जाय । २. इमारत ।

वास्तुविद्या-संज्ञा स्त्री० वह विद्या  
जिससे इमारत के संबंध की मारी  
घातों का ज्ञान होता है ।

वास्ते-अर्थ० १. लिये । २. हेतु ।  
सबब ।

वाह-अर्थ० १. प्रशंसासूचक शब्द ।

२. आश्चर्यसूचक शब्द ।

वाहक-संज्ञा पुं० १. बोझ ढोने या  
खींचनेवाला । २. सारथी ।

वाहन-संज्ञा पुं० सवारी ।

वाह-वाही-संज्ञा स्त्री० लोगों की  
प्रशंसा ।

वाहिनी-संज्ञा स्त्री० सेना ।

वाहियात-वि० १. व्यर्थ । २. खराब ।

वाही-तवाही-वि० १. पेहूदा । २.  
अंडर्यंड ।

संज्ञा स्त्री० अंडर्यंड घातें । गाली-  
गलीज ।

वाह्य-कि० वि० बाहर । अलग ।

वाह्यांतर-वि० भीतर और बाहर का ।

वाह्यद्रिय-संज्ञा स्त्री० आँख, कान,  
नाक, जिह्वा और त्वचा ।

विदु-संज्ञा पुं० १. जलकण । बुँद ।

२. रेखा-गणित के अनुसार वह  
जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग  
न हो सके ।

विदुमाधय-संज्ञा पुं० काशी की एक

प्रसिद्ध विष्णुमूर्ति का नाम ।

विध्य-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पर्यंत-  
श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व  
से पश्चिम को फैली है ।

विध्यकूट-संज्ञा पुं० विध्य पर्यंत ।

विध्यवासिनी-संज्ञा स्त्री० देवी की  
एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जापुर  
ज़िले में है ।

विध्याचल-संज्ञा पुं० विध्य पर्यंत ।

वि-उप० एक उपसर्ग जो शब्दों के  
पहले लगकर अर्थ में विशेषता  
उत्पन्न करता है ।

विकट-वि० १. भयंकर । भीषण ।  
२. कठिन । ३. दुर्गम ।

विकराल-वि० भीषण । डरावना ।

विकर्षण-संज्ञा पुं० आकर्षण ।

विकल-वि० विद्वल । व्याकुल ।

विकलांग-वि० जिसका कोई अंग  
टूटा या खराब हो ।

विकल्प-संज्ञा पुं० १. भ्रम । धोखा ।

२. एक बात मन में बैठाकर फिर  
उसके विरुद्ध सोच-विचार । ३.  
दो में से एक ।

विकसन-संज्ञा पुं० प्रस्फुटन । फूटना ।  
खिलना ।

विकसना-कि० भ० दे० "विकसना" ।

विकार-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु का  
रूप, रंग आदि बदल जाना । २.  
विगड़ना । खराबी ।

विकाश-संज्ञा पुं० १. प्रकाश । २.  
प्रसार । फैलाव ।

विकास-संज्ञा पुं० १. प्रसार । २.  
खिलना ।

विकीर्ण-वि० चारों ओर फैला या  
क्षितराया हुआ ।

विकृत-वि० जिसमें किसी प्रकार का

श.गूफा-संज्ञा पुं० १. विना खिला हुआ फूल । कली । २. पुष्प ।  
 शचि, शची-संज्ञा स्त्री० इंद्र की पत्नी, इंद्राणी जो पुलोमा की कन्या थी ।  
 शचीपति-संज्ञा पुं० इंद्र ।  
 शठ-वि० धूर्त ।  
 शठता-संज्ञा स्त्री० धूर्तता ।  
 शत-वि० दस का दस गुना ।  
 संज्ञा पुं० सौ की संख्या ।  
 शतक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० शतिका ] १. सौ का समूह । २. शताब्दी ।  
 शतग्री-संज्ञा स्त्री० प्राचीन काल का एक नाशक शस्त्र ।  
 शतदल-संज्ञा पुं० पद्म ।  
 शतद्रु-संज्ञा स्त्री० सतस्रज नदी ।  
 शतपत्र-संज्ञा पुं० कमल ।  
 शतरंज-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की विसात पर खेला जाता है ।  
 शतरंजी-संज्ञा स्त्री० १. वह दरी जो कई प्रकार के रंग-विरंगे सूतों से बनी हो । २. शतरंज खेलने की विसात । ३. वह जो शतरंज का प्रपञ्च खिलाड़ी हो ।  
 शतानीक-संज्ञा पुं० १. बृद्ध पुरुष । २. सौ सिपाहियों का नायक ।  
 शताब्दी-संज्ञा स्त्री० १. सौ वर्षों का समय । २. किसी संवत् के सैकड़ों के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय ।  
 शतायु-संज्ञा पुं० वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो ।  
 शतायुधान-संज्ञा पुं० वह अनुरूप जिसकी स्मरणशक्ति प्रखर हो ।  
 शती-संज्ञा स्त्री० सौ का समूह । सैकड़ा ।

शत्रु-संज्ञा पुं० दुश्मन ।  
 शत्रुघ्न-संज्ञा पुं० राम के एक भाई ।  
 शत्रुता-संज्ञा स्त्री० वैरभाव ।  
 शत्रुदमन-संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न" ।  
 शत्रुसाल-वि० शत्रु के हृदय में शत्रु उत्पन्न करनेवाला ।  
 शनि-संज्ञा पुं० १. सौर जगत् का सातवां ग्रह । २. दुर्भाग्य ।  
 शनिवार-संज्ञा पुं० रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का वार ।  
 शनिश्चर-संज्ञा पुं० दे० "शनि" ।  
 शनैः-अव्य० धीरे ।  
 शपथ-संज्ञा स्त्री० कसम ।  
 शफ़तालू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा आड़ू ।  
 शफ़ा-संज्ञा स्त्री० आरोग्य ।  
 शफ़ाखाना-संज्ञा पुं० चिकित्सालय ।  
 शय-संज्ञा स्त्री० रात ।  
 शयनम-संज्ञा स्त्री० १. सोस । २. एक प्रकार का बहुत घाटीक कपड़ा ।  
 शयाय-संज्ञा पुं० १. शयन-काल । २. बहुत अधिक सोई ।  
 शयीह-संज्ञा स्त्री० चित्र ।  
 शब्द-संज्ञा पुं० १. ध्वनि । २. लफ़्ज़ ।  
 शब्द-प्रमाण-संज्ञा पुं० वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के ही आधार पर हो ।  
 शब्दग्रह-संज्ञा पुं० वेद ।  
 शब्दवेधी-संज्ञा पुं० वह जो चित्त देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को भाष्य से मारता हो ।  
 शब्दशक्ति-संज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है ।  
 शब्दशास्त्र-संज्ञा पुं० व्याकरण ।

- विनसाना-कि० सं० १. नष्ट करना । २. विगाड़ना ।
- विना-अर्थ १. बगैर । २. छोड़कर ।
- विनाती-संज्ञा स्त्री० विनय ।
- विनायक-संज्ञा पुं० गणेश ।
- विनाश-संज्ञा पुं० [ वि० विनाशक ] नाश । बरबादी ।
- विनाशन-संज्ञा पुं० नष्ट करना ।
- विनासना-कि० सं० नष्ट करना ।
- विनिमय-संज्ञा पुं० परिवर्तन ।
- विनियोग-संज्ञा पुं० प्रयोग । इस्ते-माल ।
- विनीत-वि० नम्र ।
- विनु-अर्थ १. "विना" ।
- विनोद-संज्ञा पुं० १. कुतूहल । २. खेल-कूद । ३. हँसी-दिल्लीगी ।
- विनोदी-वि० [ स्त्री० विनोदिनी ] १. आनन्द-प्रमोद करनेवाला । २. खुदलवाज ।
- विन्यास-संज्ञा पुं० १. स्थापना । २. यथास्थान स्थापन ।
- विपंची-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की वीणा ।
- विपक्ष-संज्ञा पुं० १. विरुद्ध पक्ष । २. विरोधी ।
- विपक्षी-संज्ञा पुं० विरुद्ध पक्ष का ।
- विपत्ति-संज्ञा स्त्री० १. आफत । २. संकट की अवस्था ।
- विपद्-संज्ञा स्त्री० विपत्ति ।
- विपदा-संज्ञा स्त्री० विपत्ति ।
- विपन्न-वि० १. जिस पर विपत्ति पड़ी हो । २. दुःखी ।
- विपरीत-वि० वल्लटा ।
- विपर्यय-संज्ञा पुं० १. उलट-पलट । २. गद्गदी ।
- विपर्यस्त-वि० १. जिसका विपर्यय हुआ हो । २. अस्त-व्यस्त ।
- विपल-संज्ञा पुं० एक पल का साठवां भाग ।
- विपाक-संज्ञा पुं० पकना ।
- विपादिका-संज्ञा स्त्री० विवाह नामक रोग ।
- विपिन-संज्ञा पुं० १. वन । २. उपवन ।
- विपिनपति-संज्ञा पुं० सिंह ।
- विपिनविहारी-संज्ञा पुं० १. वन में विहार करनेवाला । २. श्रीकृष्ण ।
- विपुल-वि० बृहत् ।
- विपुलता-संज्ञा स्त्री० आधिक्य ।
- विपुला-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।
- विप्र-संज्ञा पुं० १. मातङ्ग्य । २. पुरोहित ।
- विप्रराम-संज्ञा पुं० परशुराम ।
- विप्रलम्भ-संज्ञा पुं० १. चाही हुई वस्तु का न मिलना । २. विप्रेता ।
- विप्रव-संज्ञा पुं० १. उपद्रव । २. विद्रोह ।
- विफल-वि० १. जिसमें फल न लगा हो । २. निष्फल । ३. नाकामयाब ।
- विबुध-संज्ञा पुं० १. पंडित । २. देवता । ३. चंद्रमा ।
- विबुधविलासिनी-संज्ञा स्त्री० १. देवांगना । २. अप्सरा ।
- विबुधवेलि-संज्ञा स्त्री० कल्पवृक्षा ।
- विबोध-संज्ञा पुं० जागरण ।
- विभक्त-वि० बँटा हुआ ।
- विभक्ति-संज्ञा स्त्री० १. विभाग । २. शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या संबंध है । ( व्याकरण )
- विभव-संज्ञा पुं० १. धन । २. ऐश्वर्य्य ।
- विभवशाली-वि० १. विभववाला । २. प्रतापवाला ।
- विर्भाति-संज्ञा स्त्री० प्रकार ।

शब्दाङ्घर-संज्ञा पुं० शब्दजाल ।  
 शब्दानुशासन-संज्ञा पुं० व्याकरण ।  
 शब्दालंकार-संज्ञा पुं० वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से खालित सपन्न किया जाय ।  
 शम-संज्ञा पुं० [ भाव० शमता ] १. शांति । २. चमा ।  
 शमन-संज्ञा पुं० १. यज्ञ में पशुओं का बलिदान । २. यम ।  
 शमशेर-संज्ञा स्त्री० सलवार ।  
 शमा-संज्ञा स्त्री० मोमयत्ती ।  
 शमादान-संज्ञा पुं० वह आधार जिसमें मोम की घत्ती लगाकर जलाते हैं ।  
 शमित-वि० १. जिसका शमन किया गया हो । २. शांत ।  
 शयन-संज्ञा पुं० १. सोना । २. शय्या ।  
 शयन आरती-संज्ञा स्त्री० देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है ।  
 शयनगृह-संज्ञा पुं० दे० "शयनागार" ।  
 शयनागार-संज्ञा पुं० सोने का स्थान ।  
 शयनगृह ।  
 शय्या-संज्ञा स्त्री० १. बिस्तर । २. पर्लंग ।  
 शय्यादान-संज्ञा पुं० मृतक के उद्देश्य से महापात्र को चारपाई, विद्यावन आदि दान देना ।  
 शर-संज्ञा पुं० १. बाण । २. सरकंडा ।  
 शरश्च-संज्ञा स्त्री० [ वि० शरश्च ] १. कुरान में दी हुई आज्ञा । २. मजहब । ३. मुसलमानों का धर्मशास्त्र ।  
 शरण-संज्ञा स्त्री० १. रक्षा । २. घर ।  
 शरणागत-संज्ञा पुं० १. शरण में आया हुआ व्यक्ति । २. शिष्य ।

शरणी-वि० शरण देनेवाली ।  
 शरण्य-वि० शरण में आया हुआ की रक्षा करनेवाला ।  
 शरत्-संज्ञा स्त्री० एक ऋतु जो आज-कल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है ।  
 शरत्काल-संज्ञा पुं० दे० "शरत्" ।  
 शरद्-संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्" ।  
 शरदपूर्णिमा-संज्ञा स्त्री० कुम्भार मास की पूर्णमासी ।  
 शरदचंद्र-संज्ञा पुं० शरद् ऋतु का चंद्रमा ।  
 शरवत-संज्ञा पुं० १. पीने की मीठी वस्तु । रस । २. पानी में घोली हुई शकर या खाद्य ।  
 शरयती-संज्ञा पुं० एक प्रकार का हल्का पीछा रंग ।  
 शरम-संज्ञा पुं० टिड्डी ।  
 शरम-संज्ञा स्त्री० १. लज्जा । २. विहाज । ३. प्रतिष्ठा ।  
 शरमाना-क्रि० प्र० लजित होना ।  
 क्रि० स० शर्मिदा करना ।  
 शरमिदगी-संज्ञा स्त्री० लाज ।  
 शरमिदा-वि० लजित ।  
 शरमीला-वि० [ स्त्री० शरमीली ] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे ।  
 शरह-संज्ञा स्त्री० १. टीका । २. दर ।  
 शराकत-संज्ञा स्त्री० १. शरीर होने का भाव । २. साफा ।  
 शराफत-संज्ञा स्त्री० भलमनसी ।  
 शराय-संज्ञा स्त्री० मदिरा ।  
 शराबखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो ।  
 शराबखोरी-संज्ञा स्त्री० मदिरा-पान ।  
 शरावी-संज्ञा पुं० वह जो शराब पीता हो ।

वि० अनेक प्रकार का ।  
 अर्थ० अनेक प्रकार से ।  
 विभाग-संज्ञा पुं० १. बँटवारा । २. भाग । ३. सुहकमा ।  
 विभाजित-वि० जिसका विभाग किया गया हो ।  
 विभाज्य-वि० १. विभाग करने योग्य । २. जिसका विभाग करना हो ।  
 विभाति-संज्ञा स्त्री० शोभा ।  
 विभावरी-संज्ञा स्त्री० रात्रि ।  
 विभासना-कि० अ० चमकना ।  
 विभिन्न-वि० १. विपकुल भक्षण । २. अनेक प्रकार का ।  
 विभीति-संज्ञा स्त्री० १. डर । २. शंका ।  
 विभीषण-संज्ञा पुं० रावण का भाई ।  
 विभीषिका-संज्ञा स्त्री० डर दिखाना ।  
 विभु-वि० जो सर्वत्र वर्तमान हो ।  
 विभूति-संज्ञा स्त्री० १. बहुतायत । २. विभव । ३. संरति ।  
 विभूषना-कि० स० १. गहने आदि से सजाना । २. सुशोभित करना ।  
 विभूषित-वि० गहनों आदि से सजाया हुआ ।  
 विभेद-संज्ञा पुं० १. विभिन्नता । २. अनेक भेद ।  
 विभेदना-कि० स० १. छेदना । २. घुसना ।  
 विघ्न-संज्ञा पुं० १. अग्रण । २. अति ।  
 विघ्नाट-संज्ञा पुं० १. आपत्ति । २. उपद्रव ।  
 विमंडन-संज्ञा पुं० सजाना ।  
 विमंडित-वि० १. अलंकृत । २. सुशोभित ।  
 विमत्त-संज्ञा पुं० विरुद्ध मत ।

विमत्सर-संज्ञा पुं० अधिक अहंकार ।  
 विमन-वि० अनमना ।  
 विमर्दन-संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह मलना-दलना । २. नष्ट करना ।  
 विमर्श-संज्ञा पुं० १. आलोचना । २. परामर्श ।  
 विमल-वि० [स्त्री० विमला] १. निर्मल । २. निर्दोष ।  
 विमलापति-संज्ञा पुं० प्रह्लाद ।  
 विमाता-संज्ञा स्त्री० सौतेली माँ ।  
 विमान-संज्ञा पुं० वायुयान ।  
 विमुक्त-वि० १. अच्छी तरह मुक्त । २. स्वतंत्र ।  
 विमुक्ति-संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा । २. मुक्ति ।  
 विमुख-वि० [भाव० विमुखता] १. मुख-रहित । २. विरुद्ध ।  
 विमुद-वि० उदास ।  
 विमूढ़-वि० [स्त्री० विमूढ़ा] नासमर्थ ।  
 विमोचन-संज्ञा पुं० [वि० विमोचनीय, विमोक्षित, विमोच्य] १. बंधन से छुड़ाना । २. छोड़ना ।  
 विमोचना-कि० स० १. बंधन आदि छोड़ना । २. निकालना ।  
 विमोह-संज्ञा पुं० मोह ।  
 विमोहन-संज्ञा पुं० मोहित करना ।  
 विमोहना-कि० अ० मोहित होना । कि० स० मोहित करना ।  
 विमोहित-वि० लुभाया हुआ ।  
 विमोही-वि० १. मोहित करनेवाला । २. कठोर-हृदय ।  
 विय-वि० दे ।  
 वियुक्त-वि० वियुक्त हुआ ।  
 वियो-वि० दूसरा ।  
 वियोग-संज्ञा पुं० १. विच्छेद । २. विरह ।



शरायोर-वि० जल आदि से बिसकुल  
भीगा हुआ ।

शरास्त-संज्ञा स्त्री० पाजीपन ।

शरासन-संज्ञा पुं० धनुष ।

शरीश्रत-संज्ञा स्त्री० सुसज्जमानों का  
धर्म-शास्त्र ।

शरीक-वि० शामिल ।

संज्ञा पुं० १. साथी । २. साझी ।

३. सहायक ।

शरीफ-संज्ञा पुं० १. कुलीन मनुष्य ।

२. सम्यक्पुरुष ।

वि० पवित्र ।

शरीफा-संज्ञा पुं० १. मझोले आकार  
का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष । २.

इस वृक्ष का ख़ाकी रंग का फल जो  
गोल होता है ।

शरीर-संज्ञा पुं० देह ।

वि० [ संज्ञा शरीर ] दृष्ट ।

शरीरपात-संज्ञा पुं० मृत्यु ।

शरीररत्नक-संज्ञा पुं० शरीररत्नक ।

शरीरशास्त्र-संज्ञा पुं० शरीर-विज्ञान ।

शरीरांत-संज्ञा पुं० मृत्यु ।

शरीरी-संज्ञा पुं० १. शरीरवाला ।

२. आत्मा ।

शकीरा-संज्ञा स्त्री० १. शकर । २.  
बालू का कण ।

शक्त-संज्ञा स्त्री० दारि ।

शक्ति या-क्रि० वि० शक्त बढकर ।

वि० बिलकुल ठीक ।

शर्म-संज्ञा स्त्री० दे० "शर्म" ।

शर्मे-संज्ञा पुं० १. सुख । २. गृह ।

शर्मद-वि० [ स्त्री० शर्मदा ] आनंद  
देनेवाला ।

शर्मा-संज्ञा पुं० मादर्यों की उपाधि ।

शर्मिष्ठा-संज्ञा स्त्री० देवों के राजा  
वृषपर्वा की कन्या जो देवयानी की

सखी थी ।

शर्वरी-संज्ञा स्त्री० १. रात । २. संध्या ।

३. स्त्री ।

शलज्जम-संज्ञा पुं० गाजर की तरह  
का एक कंद ।

शलभ-संज्ञा पुं० १. टिड्डी । २. पतंग ।

शलाका-संज्ञा स्त्री० १. लोहे आदि की  
खंथी सखाई । २. पाय । तीर ।

शलुका-संज्ञा पुं० भाभी माँह की एक  
प्रकार की कुरती ।

शल्य-संज्ञा पुं० १. भस्त्र-चिकित्सा ।

२. एक भस्त्र ।

शल्यक्रिया-संज्ञा स्त्री० चीर-फाड़ का  
इलाज ।

शय-संज्ञा पुं० मृत शरीर ।

शयदाह-संज्ञा पुं० मनुष्य के मृत  
शरीर को जलाने की क्रिया या

भाष ।

शयमस्म-संज्ञा पुं० चिता की भस्म ।

शयरी-संज्ञा स्त्री० १. शबर जाति की  
धमया नाम की एक तपस्विनी ।

२. शबर जाति की स्त्री ।

शश-संज्ञा पुं० खरहर ।

शशक-संज्ञा पुं० खरगोश ।

शशधर-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

शशांक-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

शशा-संज्ञा पुं० दे० "शश" ।

शशि-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

शशिकला-संज्ञा स्त्री० चंद्रमा की कला ।

शशिधर-संज्ञा पुं० शिव ।

शशिभाल-संज्ञा पुं० शिव ।

शशिमंडल-संज्ञा पुं० चंद्रमंडल ।

शशिमुख-वि० [ स्त्री० शशिमुखी ] जिसका

मुख चंद्रमा के सदृश सुंदर हो ।

शशिवदना-वि० स्त्री० शशिमुखी ।

शशिशाला-संज्ञा स्त्री० वह घर जिसमें

घियोगिनी-वि० स्त्री० जो अपने पति या प्रिय से अलग हो ।

घियोगी-वि० [ स्त्री० वियोगिनी ] जो प्रिया से दूर या वियुक्त हो ।

घियोजक-संज्ञा पुं० दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला ।

घिरंग-वि० १. घुरे रंग का । २. अनेक रंगों का ।

घिरंछि-संज्ञा पुं० ध्वजा ।

घिरंचिसुत-संज्ञा पुं० नारद ।

घिरक्त-वि० १. जिसका जी हटा हो । २. उदासीन ।

घिरक्ति-संज्ञा स्त्री० १. अनुराग का अभाव । २. उदासीनता ।

घिरचन-क्रि० स० रचना ।

घिरचित्त-वि० १. घनाया हुआ । २. रचा हुआ ।

घिरत-वि० १. जो अनुरक्त न हो । २. वैरागी ।

घिरति-संज्ञा स्त्री० चाह का न होना ।

घिरद-संज्ञा पुं० १. ख्याति । २. यश ।

घिरदाघली-संज्ञा स्त्री० यश की कथा ।

घिरल-वि० १. जो घना न हो । २. थोड़ा ।

घिरल-वि० [ संज्ञा घिरलता ] रसहीन ।

घिरह-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु से रहित होने का भाव । २. वियोग ।

घिरहिणी-वि० स्त्री० दे० "वियोगिनी" ।

घिरहित-वि० रहित ।

घिरही-वि० [ स्त्री० घिरहिणी ] वियोगी ।

घिराग-संज्ञा पुं० [ वि० घिरागी ] १. चाह का न होना । २. वैराग्य ।

घिराजना-क्रि० प्र० १. शोभित होना । २. मौजूद रहना । ३.

बैठना ।

घिराजमान-वि० १. चमकता हुआ । २. उपस्थित ।

घिराट-वि० बहुत बड़ा । बहुत भारी ।

घिराटे-संज्ञा पुं० मत्स्य देश ।

घिराघ-संज्ञा पुं० पीड़ा ।

घिराम-संज्ञा पुं० १. एकना या यमना । २. वाक्य के अंतर्गत वह स्थान जहाँ थोड़े समय ठहरना पड़ता हो ।

घिराघ-संज्ञा पुं० १. शब्द । २. हल्ला-गुल्ला ।

घिरुद-संज्ञा पुं० यश ।

घिरुदाघली-संज्ञा स्त्री० यश-वर्णन । प्रशंसा ।

घिरुद-वि० प्रतिकूल ।

क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में ।

घिरुदता-संज्ञा स्त्री० १. विरुद्ध होने का भाव । २. प्रतिकूलता ।

घिरूप-वि० [ स्त्री० घिरुपा ] १. कुरूप । २. शोभाहीन ।

घिरुपाक्ष-संज्ञा पुं० शिव ।

घिरेचक-वि० दुस्सावर ।

घिरेचन-संज्ञा पुं० १. छुलाव । २. दस्त खाना ।

घिरोत्तन-संज्ञा पुं० चमकना ।

घिरोध-संज्ञा पुं० [ वि० घिरोषक ] १. मेल में न होना । २. वैर ।

घिरोधन-संज्ञा पुं० [ वि० घिरोधी, विरोधित, विरोध्य ] १. विरोध करना । २. नाश ।

घिरोधी-वि० [ स्त्री० घिरोधिनी ] १. विरोध करनेवाला । २. वैरी ।

चिलंब-वि० देर ।

चिलंबना-क्रि० प्र० देर करना ।

चिलंबित-वि० १. खटकता हुआ ।

- शब्दाङ्घर-संज्ञा पुं० शब्दजाल ।  
 शब्दानुशासन-संज्ञा पुं० व्याकरण ।  
 शब्दालंकार-संज्ञा पुं० वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से खालिल उत्पन्न किया जाय ।  
 शम-संज्ञा पुं० [ भाव० शमता ] १. शांति । २. यम ।  
 शमन-संज्ञा पुं० १. यज्ञ में पशुओं का बलिदान । २. यम ।  
 शमशेर-संज्ञा स्त्री० तलवार ।  
 शमा-संज्ञा स्त्री० मोमपत्ती ।  
 शमादान-संज्ञा पुं० वह आघार जिसमें मोम की पत्ती खगाकर लकड़ाते हैं ।  
 शमित-वि० १. जिसका शमन किया गया हो । २. शांत ।  
 शयन-संज्ञा पुं० १. सोना । २. शय्या ।  
 शयन आरती-संज्ञा स्त्री० देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है ।  
 शयनगृह-संज्ञा पुं० दे० "शयनागार" ।  
 शयनागार-संज्ञा पुं० सोने का स्थान । शयनगृह ।  
 शय्या-संज्ञा स्त्री० १. बिस्तर । २. पलंग ।  
 शय्यादान-संज्ञा पुं० मृतक के वधेश्य से महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना ।  
 शर-संज्ञा पुं० १. बाण । २. सरकंडा ।  
 शरशू-संज्ञा स्त्री० [ वि० शरै ] १. कुरान में दी हुई आज्ञा । २. मज्ज-हय । ३. मुसलमानों का धर्मशास्त्र ।  
 शरण-संज्ञा स्त्री० १. रक्षा । २. घर ।  
 शरणागत-संज्ञा पुं० १. शरण में आया हुआ व्यक्ति । २. शिष्य ।  
 शरणी-वि० शरण देनेवाली ।  
 शरण्य-वि० शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला ।  
 शरत्-संज्ञा स्त्री० एक ऋतु जो आज-कल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है ।  
 शरत्काल-संज्ञा पुं० दे० "शरत्" ।  
 शरद्-संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्" ।  
 शरदपूर्णिमा-संज्ञा स्त्री० कुम्भार मास की पूर्णमासी ।  
 शरदचंद्र-संज्ञा पुं० शरद् ऋतु का चंद्रमा ।  
 शरवत-संज्ञा पुं० १. पीने की मीठी वस्तु । रस । २. पानी में घोली हुई शकर या खाद ।  
 शरवती-संज्ञा पुं० एक प्रकार का हल्का पीछा रंग ।  
 शरम-संज्ञा पुं० डिड्डी ।  
 शरम-संज्ञा स्त्री० १. लज्जा । २. बिहाड़ । ३. प्रतिष्ठा ।  
 शरमाना-क्रि० भ० लजित होना ।  
 क्रि० स० शर्मिदा करना ।  
 शरमिदगी-संज्ञा स्त्री० लज्जा ।  
 शरमिदा-वि० लजित ।  
 शरमीला-वि० [ स्त्री० शरमीली ] जिसे अल्दी शरम या लज्जा आवे ।  
 शरह-संज्ञा स्त्री० १. टीका । २. दर ।  
 शराकत-संज्ञा स्त्री० १. शरीक होने का भाव । २. साम्ना ।  
 शराफत-संज्ञा स्त्री० भलमनसी ।  
 शराय-संज्ञा स्त्री० मदिरा ।  
 शराबखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो ।  
 शराबखोरी-संज्ञा स्त्री० मदिरा-पान ।  
 शराबी-संज्ञा पुं० वह जो शराब पीता हो ।

२. जिसमें देर हुई हो ।  
 विलक्षण-वि० [ संज्ञा विलक्षण ]  
 अनायास ।  
 विलसना-कि० प्र० दे० "विलसना"  
 ० कि० प्र० ताड़ना ।  
 विलग-वि० अलग ।  
 विलगाना-कि० प्र० अलग होना ।  
 कि० प्र० छूट कराना ।  
 विलच्छन्न-वि० दे० "विलक्षण" ।  
 विलपना-कि० प्र० रोना ।  
 विलपाना-कि० प्र० रुठाना ।  
 विलम-संज्ञा पुं० देर ।  
 विलाप-संज्ञा पुं० प्रंदन ।  
 विलापना-कि० प्र० शोक करना ।  
 विलायत-संज्ञा पुं० पराया देश ।  
 विलायती-वि० विलायत का ।  
 विलास-संज्ञा पुं० १. मनोविनोद ।  
 २. आनंद । ३. अतिशय सुख-भोग ।  
 विलासिनी-संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री ।  
 २. घेरया ।  
 विलासी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० विलासिनी ]  
 १. कामी । २. आराम-तज्जव ।  
 विलीन-वि० १. छुस । २. क्षिप्त  
 हुआ ।  
 विलेशय-संज्ञा पुं० १. विल या दरार  
 में रहनेवाले जीव । २. सर्प ।  
 विलोकना-कि० प्र० देखना ।  
 विलोचन-संज्ञा पुं० नेत्र ।  
 विलोम-वि० विपरीत ।  
 संज्ञा पुं० ऊँचे से नीचे की ओर आना ।  
 विलोल-वि० चंचल ।  
 विल्व-संज्ञा पुं० बेल का पेड़ ।  
 विल्वपत्र-संज्ञा पुं० बेलपत्र ।  
 विल्वमंगल-संज्ञा पुं० महाकवि सूर-  
 दास का ग्रंथ होने से पूर्व का नाम ।  
 विघट्टा-संज्ञा स्त्री० कोई बात कहने

की हच्छा ।  
 विघटित-वि० अपेक्षित । जिसकी  
 आवश्यकता हो ।  
 विघट-संज्ञा पुं० १. छिद्र । २. कंदरा ।  
 विवरण-संज्ञा पुं० १. विवेचन । २.  
 वृत्तान्त ।  
 विवर्ण-वि० १. नीच । २. घुरे रंग  
 का । ३. कांतिहीन ।  
 विवत-संज्ञा पुं० १. समुदाय । २.  
 आकाश ।  
 विवर्तन-संज्ञा पुं० घूमना ।  
 विवश-वि० १. जिसका कुछ यश न  
 चले । २. पराधीन ।  
 विवस्त्र-वि० नग्न ।  
 विवाद-संज्ञा पुं० १. किसी बात पर  
 ज़ुबानी झगड़ा । २. झगड़ा ।  
 विवादास्पद-वि० विवाद योग्य ।  
 विवादी-संज्ञा पुं० १. कहा-सुनी या  
 झगड़ा करनेवाला । २. मुकद्दमा  
 खड़नेवालों में से कोई एक पक्ष ।  
 विवाह-संज्ञा पुं० शादी ।  
 विवाहना-कि० प्र० दे० "विवाहना" ।  
 विवाहित-वि० पुं० [ स्त्री० विवाहिता ]  
 जिसका विवाह हो गया हो ।  
 विवाही-वि० स्त्री० जिसका विवाह  
 हो चुका हो ।  
 विविचार-वि० १. विचार-रहित ।  
 २. आचार-रहित ।  
 विविध-वि० बहुत प्रकार का ।  
 विविर-संज्ञा पुं० १. खोह । २. बिल ।  
 विवृत-वि० विस्तृत ।  
 विवेक-संज्ञा पुं० १. मल्ली-सुरी वस्तु  
 का ज्ञान । २. बुद्धि ।  
 विवेकी-संज्ञा पुं० १. वह जिसे विवेक  
 हो । २. बुद्धिमान् ।  
 विवेचन-संज्ञा पुं० १. जाँचना । २.

शिक्षागुरु-संज्ञा पुं० विद्या पढ़ाने वाला गुरु।

शिक्षार्थी-संज्ञा पुं० विद्यार्थी।

शिक्षाळय-संज्ञा पुं० विद्यालय।

शिक्षा-विभाग-संज्ञा पुं० वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है।

शिक्षित-वि० पुं० १. जिसने शिक्षा पाई हो। २. विद्वान्।

शिक्षेड-संज्ञा पुं० १. मोर की पूँछ। २. चोटी। शिक्षा। ३. काकरव।

शिक्षेडिनी-संज्ञा स्त्री० मोरनी।

शिक्षेडी-संज्ञा पुं० मोर।

शिखर-संज्ञा पुं० १. शिखर। चोटी। २. पहाड़ की चोटी। ३. जैनियों का एक तीर्थ।

शिखरन-संज्ञा स्त्री० दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।

शिखरिणी-संज्ञा स्त्री० १. छिरी में शेर। २. संस्कृत की एक वर्ष-वृत्ति।

शिखा-संज्ञा स्त्री० १. चोटी। चुरैया। २. पवित्रों के सिर पर बड़ी हुई चोटी।

शिखि-संज्ञा पुं० १. मोर। भयूर। २. अग्नि।

शिखी-वि० शिक्षावाला।

संज्ञा पुं० मोर। भयूर।

शिगाफ-संज्ञा पुं० १. चीता। नरतर। २. सूरज।

शिगुता-संज्ञा पुं० दे० "शगुता"।

शिताय-वि० वि० ज्वर। शीघ्र।

शितिकंड-संज्ञा पुं० शिव।

शिथिल-वि० १. ढीला। २. थका हुआ।

शिथिलता-संज्ञा स्त्री० १. ढीलापन। २. थकावट।

शिनायत-संज्ञा स्त्री० १. पहचान। २. परख।

शिया-संज्ञा पुं० हज़रत अली को पैगम्बर का ठीक उत्तराधिकारी मानने वाला एक मुसलमान संप्रदाय।

शिर-संज्ञा पुं० सिर।

शिरकत-संज्ञा स्त्री० साम्रा। हिस्सा।

शिरनेत-संज्ञा पुं० १. गड़वाल या ओनार के आस-पास का प्रदेश। २. उत्तरी की एक शाखा।

शिरमौर-संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. प्रचान।

शिरछाण-संज्ञा पुं० युद्ध में पहनी जानेवाली छोटे की टोपी।

शिरहनडा-संज्ञा पुं० हत्तीसा।

शिरा-संज्ञा स्त्री० रक्त की छोटी नाड़ी।

शिरीष-संज्ञा पुं० सिर। (पेड़)

शिरोधार्य-वि० सिर पर धारण या आदरपूर्वक मानने के योग्य।

शिरोभूषण-संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोमणि-संज्ञा पुं० श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिला-संज्ञा स्त्री० पत्थर का बड़ा बड़ा टुकड़ा।

शिलाजीत-संज्ञा पुं०, स्त्री० काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक औषधि जो शिक्षार्थी का रस है।

शिलादित्य-संज्ञा पुं० दे० "हर्षवर्धन"।

शिलाखेल-संज्ञा पुं० पत्थर पर खिलवा या खोदा हुआ कोई प्राचीन खेल।

शिशीमुख-संज्ञा पुं० अमर।

शिवर-संज्ञा पुं० १. हाथ से कोई चीज़ बनाकर तैयार करने का काम। दलकारी। २. कला-संयोजी व्यवसाय।

शिल्पकला-संज्ञा स्त्री० हाथ से चीज़ें

भीमांसा ।  
 विचेचनीय-वि० विचेचन करने योग्य ।  
 विशद-वि० १. स्वच्छ । साफ़ । २. लघुसूत ।  
 विशाखा-संज्ञा स्त्री० सचाईस नवग्रहों में से एक ।  
 विशारद-संज्ञा पुं० १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो । २. कुशल ।  
 विशाल-वि० [ संज्ञा विशालता ] बहुत बड़ा और विस्तृत ।  
 विशालाक्ष-संज्ञा पुं० महादेव ।  
 विशिष्ट-संज्ञा पुं० याग ।  
 विशिष्ट-वि० [ संज्ञा विशिष्टता ] १. मिला हुआ । २. मिलपण ।  
 विशुद्ध-वि० [ भाव० विशुद्धता ] १. जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो । २. सत्य ।  
 विशुद्धि-संज्ञा स्त्री० शुद्धता ।  
 विशुद्धल-वि० जिसमें कम या भ्रष्ट स्वभाव न हो ।  
 विशेष-संज्ञा पुं० १. भेद । २. ज्यादती ।  
 विशेषज्ञ-संज्ञा पुं० वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो ।  
 विशेषण-संज्ञा पुं० व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी संज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है ।  
 विशेषता-संज्ञा स्त्री० विशेष का भाव या धर्म ।  
 विशेष्य-संज्ञा पुं० व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता हो ।  
 विश-संज्ञा स्त्री० प्रजा ।  
 विशेषेति-संज्ञा पुं० राजा ।

विद्यांति-संज्ञा स्त्री० विद्याम ।  
 विद्याम-संज्ञा पुं० धर्म मिटाना ।  
 विद्युत-वि० प्रसिद्ध ।  
 विशिल-वि० १. जिसका विश्लेषण हो चुका हो । २. विकसित ।  
 विश्वंभर-संज्ञा पुं० परमेश्वर ।  
 विश्वंभरा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।  
 विश्व-संज्ञा पुं० १. समस्त प्राणादि । २. संसार ।  
 वि० १. समस्त । २. बहुत ।  
 विश्वकर्मा-संज्ञा पुं० १. ईश्वर । २. बर्द्ध ।  
 विश्वकोश-संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो ।  
 विश्वनाथ-संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।  
 विश्वविद्यालय-संज्ञा पुं० वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की सब कोटि की शिक्षा दी जाती हो ।  
 यूनिवर्सिटी ।  
 विश्वव्यापी-संज्ञा पुं० ईश्वर ।  
 वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो ।  
 विश्वसनीय-वि० जिसका पतवार किया जा सके ।  
 विश्वस्त-वि० विश्वसनीय ।  
 विश्वाधार-संज्ञा पुं० परमेश्वर ।  
 विश्वामित्र-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि ।  
 विश्वास-संज्ञा पुं० पतवार ।  
 विश्वासघात-संज्ञा पुं० [ वि० विश्वासाघातक ] धोखा ।  
 विश्वासपात्र-संज्ञा पुं० विश्वसनीय ।  
 विश्वासी-संज्ञा पुं० १. विश्वास करने वाला । २. विश्वसनीय ।  
 विश्वेदेव-संज्ञा पुं० १. अग्नि । २.

शादूल-संज्ञा पुं० १. चीता । २. सिंह ।

वि० सर्वश्रेष्ठ ।

शादूल-संज्ञा पुं० साखू ।

संज्ञा स्त्री० दुशाला ।

शादूलग्राम-संज्ञा पुं० विष्णु की पत्थर की मूर्ति ।

शादूल-संज्ञा स्त्री० १. घर । २. जगह ।

शालि-संज्ञा पुं० जड़हन धान ।

शालिधान-संज्ञा पुं० वासमती खादक ।

शालिहोत्र-संज्ञा पुं० घोड़ा ।

शालीन-वि० [ याव० शलीनता ] १. विनीत । २. चतुर ।

शाल्य-संज्ञा पुं० १. सौमराज्य के एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारे गए थे । २. एक प्राचीन देश का नाम ।

शाल्यक-संज्ञा पुं० यक्षा, विशेषतः पशु या पक्षी का बच्चा ।

शाल्वत-वि० निम्न ।

शाल्यक-संज्ञा पुं० [ स्त्री० शालिका ] १. वह जो शासन करता हो । २. हाकिम ।

शाल्यन-संज्ञा पुं० १. आज्ञा । २. हुक्म ।

शालित-वि० [ स्त्री० शालिका ] १. जिसका शासन किया जाय । २. जिसे दंड दिया जाय ।

शालित-संज्ञा स्त्री० १. शासन । २. दंड ।

शाल्य-संज्ञा पुं० वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं ।

शाल्यकार-संज्ञा पुं० वह जिसने शास्त्रों की रचना की हो ।

शाल्य-संज्ञा पुं० शास्त्रवेत्ता ।

शास्त्री-संज्ञा पुं० शास्त्रज्ञ ।

शास्त्रीय-वि० शास्त्र-संबंधी ।

शाहशाह-संज्ञा पुं० बादशाहों का बादशाह ।

शाहशाही-संज्ञा स्त्री० शाहशाह का कार्य या भाव ।

शाह-संज्ञा पुं० १. महाराज । २. मुसलमान पक्षीरों की उपाधि ।

शाहजादा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० शाहजादी ] बादशाह का लड़का ।

शाहाना-वि० राजसी ।

शाही-वि० शाही या बादशाही का ।

शिशुपा-संज्ञा स्त्री० १. शिशुम का पेड़ । २. अशोक वृक्ष ।

शिशुपा-संज्ञा स्त्री० दे० "शिशुपा" ।

शिकंजा-संज्ञा पुं० दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र ।

शिकन-संज्ञा स्त्री० सिकुड़ने से पक्षी हुई घारी ।

शिकम-संज्ञा पुं० पेट । उदर ।

शिकमी कारतकार-संज्ञा पुं० वह कारतकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे कारतकार से मिला हो ।

शिकायत-संज्ञा स्त्री० १. शिकाई करना ।

शुगली । २. बलाहना ।

शिकार-संज्ञा पुं० १. जंगली पशुओं को मारने का कार्य या प्रीड़ा ।

अहेर । २. वह जानवर जो मारा गया हो ।

शिकारगाह-संज्ञा स्त्री० शिकार खेलने का स्थान ।

शिकारी-वि० शिकार करनेवाला ।

शिक्षक-संज्ञा पुं० शिक्षा देनेवाला ।

सिखानेवाला । गुरु ।

शिक्षण-संज्ञा पुं० ताजीम । शिक्षा ।

शिक्षा-संज्ञा स्त्री० सीख । ताजीम ।

शिक्षागुरु-संज्ञ पुं० विद्या पढ़ाने-  
वाला गुरु ।

शिक्षार्थी-संज्ञ पुं० विद्यार्थी ।

शिक्षालय-संज्ञ पुं० विद्यालय ।

शिक्षा-विभाग-संज्ञ पुं० वह सरकारी  
विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का  
प्रवेश होता है ।

शिक्षित-वि० पुं० १. जिसने शिक्षा  
पाई हो । २. विद्वान् ।

शिक्षित-संज्ञ पुं० १. मोर की पूँछ ।  
२. चेदी । शिक्षा । ३. काकावट ।

शिक्षिणी-संज्ञ स्त्री० मोरनी ।

शिक्षिणी-संज्ञ पुं० मोर ।

शिखर-संज्ञ पुं० १. शिख । चेदी ।  
२. पहाड़ की चेदी । ३. जैनियों  
का एक तीर्थ ।

शिखर-संज्ञ स्त्री० दही और चीनी  
का बनाया हुआ शरबत ।

शिखरिणी-संज्ञ स्त्री० १. स्त्रियों में  
श्रेष्ठ । २. संस्कृत की एक वर्ष-वृत्ति ।

शिक्षा-संज्ञ स्त्री० १. चेदी । चुट्टा ।  
२. पक्षियों के सिर पर डठी हुई चेदी ।

शिखि-संज्ञ पुं० १. मोर । मयूर ।  
२. अग्नि ।

शिखी-वि० शिक्षावाला ।

संज्ञ पुं० मोर । मयूर ।

शिगाफ-संज्ञ पुं० १. चीत । नरतर ।  
२. सुताख ।

शिमूला-संज्ञ पुं० दे० "शमूला" ।

शिताय-वि० वि० अवद । शीघ्र ।

शितिकंठ-संज्ञ पुं० शिव ।

शिथिल-वि० १. ढीला । २. पका  
हुआ ।

शिथिलता-संज्ञ स्त्री० १. ढीलापन ।

२. पकावट ।

शिनाखत-संज्ञ स्त्री० १. पहचान ।  
२. परख ।

शिया-संज्ञ पुं० हज़रत अली को पैगं-  
बर का ठीक उतराधिकारी मानने-  
वाला एक मुसलमान सनदाय ।

शिर-संज्ञ पुं० सिर ।

शिरकत-संज्ञ स्त्री० साफ़ा । हिरसा ।

शिखेत-संज्ञ पुं० १. गढ़वाल या  
ओनार के घास-पास का प्रदेश ।  
२. पत्रियों की एक शाखा ।

शिरमैर-संज्ञ पुं० १. मुकुट । २.  
प्रधान ।

शिरलाण-संज्ञ पुं० मुकुट में पहनी  
जानेवाली छोटे की टोपी ।

शिरहन-संज्ञ पुं० हसीता ।

शिरा-संज्ञ स्त्री० रक्त की छोटी नाड़ी ।

शिरिय-संज्ञ पुं० सिरस । (पेड़)

शिरोधार्य-वि० सिर पर धारण या  
आदरपूर्वक मानने के योग्य ।

शिरोभूषण-संज्ञ पुं० १. मुकुट ।  
२. श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोमणि-संज्ञ पुं० श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिला-संज्ञ स्त्री० परवर का बड़ा  
बोका डुब्बा ।

शिलाजीत-संज्ञ पुं०, स्त्री० काले रंग  
की एक प्रसिद्ध पौष्टिक औषधि जो  
शिक्षार्थी का रस है ।

शिलादित्य-संज्ञ पुं० दे० "दयवर्धन" ।

शिलालेख-संज्ञ पुं० पत्थर पर लिखा  
या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख ।

शिखीमुख-संज्ञ पुं० अमर ।

शिखर-संज्ञ पुं० १. "हाथ" से कोई  
चीज़ बनाकर तैयार करने का काम ।  
दस्तकारी । २. कला-संबंधी व्यव-  
साय ।

शिल्पकला-संज्ञ स्त्री० हाथ से चीज़ें



श्रीधर-संज्ञा पुं० वेदज्ञान ।  
 श्रीधर-संज्ञा पुं० १. वेद-वेदांग में  
 पारंगत । २. ब्राह्मणों का एक भेद ।  
 श्रीत-वि० १. श्रवण-संबंधी । २. जो  
 वेद के अनुसार हो ।  
 श्रीतसूत्र-संज्ञा पुं० वक्ष्य ग्रंथ का वह  
 अंश जिसमें यज्ञों का विधान है ।  
 श्लथ-वि० १. शिथिल । २. अशक्त ।  
 श्लाघनीय-वि० प्रशंसनीय । तारीफ  
 के लायक ।  
 श्लाघा-संज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा ।  
 तारीफ । २. सुशामद । चापलूसी ।  
 श्लाघ्य-वि० १. प्रशंसनीय । २.  
 श्रेष्ठ । अच्छा ।  
 श्लिष्ट-वि० मिला हुआ । एक में  
 जुड़ा हुआ ।  
 श्लील-वि० वृत्तम । नफीस ।  
 श्लेष-संज्ञा पुं० मिलना । जुड़ना ।  
 श्लेषक-वि० जोड़नेवाला ।  
 संज्ञा पुं० दे० "श्लेष" ।  
 श्लेषण-संज्ञा पुं० आच्छिन्न ।  
 श्लेषमा-संज्ञा पुं० १. बलग्रम । २.  
 जिसोढ़े का फल ।  
 श्लोक-संज्ञा पुं० १. शब्द । आवाज़ ।  
 २. संस्कृत का कोई पद्य ।  
 श्लोच-संज्ञा पुं० चाँडाल । डोम ।  
 श्वफलक-संज्ञा पुं० यादव वृष्णि के  
 पुत्र और अमर के पिता ।  
 श्वशुर-संज्ञा पुं० ससुर ।

श्वश्र-संज्ञा स्त्री० सास ।  
 श्वान-संज्ञा पुं० कुत्ता ।  
 श्वास-संज्ञा पुं० १. नाक से हवा  
 खींचने और बाहर निकालने का  
 व्यापार । साँस । २. दम फूलने का  
 रोग । दमा ।  
 श्वासा-संज्ञा स्त्री० प्राण । प्राणवायु ।  
 श्वासोच्छ्वास-संज्ञा पुं० वेग से साँस  
 खींचना और निकालना ।  
 श्वेत-वि० १. सफेद । २. उज्ज्वल ।  
 साफ़ ।  
 संज्ञा पुं० १. सफेद रंग । २. चाँदी ।  
 श्वेत-कृष्ण-संज्ञा पुं० सफेद और  
 काला । एक बात और दूसरी बात ।  
 श्वेतगज-संज्ञा पुं० देरावत हाथी ।  
 श्वेतता-संज्ञा स्त्री० सफेदी ।  
 श्वेतद्वीप-संज्ञा पुं० एक उज्ज्वल द्वीप  
 जहाँ विष्णु रहते हैं ।  
 श्वेतधाराह-संज्ञा पुं० बराह भगवान्  
 की एक मूर्ति ।  
 श्वेताश्वतर-संज्ञा पुं० जैनों के दो प्रधान  
 संप्रदायों में से एक ।  
 श्वेता-संज्ञा स्त्री० १. अग्नि की सात  
 जिह्वाओं में से एक । २. चाँदी ।  
 ३. शंखिनी ।  
 श्वेताश्वतर-संज्ञा स्त्री० १. कृष्ण यजु-  
 वेद की एक शाखा । २. कृष्ण यजु-  
 वेद का एक उपनिषद् ।

बनाने की कला । कारीगरी । ...  
 शिल्पकार-संज्ञा पुं० १. शिल्पी ।  
 कारीगर । २. राजा ।  
 शिल्पशास्त्र-संज्ञा पुं० गृह-निर्माण  
 का शास्त्र ।  
 गृहपी-संज्ञा पुं० राजा । यवई ।  
 श्व-संज्ञा पुं० १. मंगल । दस्ताण ।  
 २. हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता ।  
 शिष-निर्माल्य-संज्ञा पुं० वह पदार्थ  
 जो शिवजी को अर्पित किया गया  
 हो । ( ऐसी चीजों के ग्रहण करने  
 का निषेध है । )  
 शिषपुराण-संज्ञा पुं० अठारह पुराणों  
 में से एक ।  
 शिषपुरी-संज्ञा स्त्री० काशी ।  
 शिघराग्नि-संज्ञा स्त्री० फावगुम बंदी  
 चतुर्दशी ।  
 शिघलिंग-संज्ञा पुं० महादेव का लिंग  
 या पिंडी जिसका पूजन होता है ।  
 शिघलोक्त-संज्ञा पुं० कैलास ।  
 शिघा-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । २. शर्वसी ।  
 ३. शृगाली । सियारिन ।  
 शिवालय-संज्ञा पुं० १. शिवजी का  
 मंदिर । २. कोई देव-मंदिर ।  
 शिवाल्ला-संज्ञा पुं० देव-मंदिर ।  
 शिवि-संज्ञा पुं० राजा दशमर के पुत्र  
 तथा ययाति के दौहित्र एक राजा  
 जो अपनी क्षमशीलता के विषे  
 प्रसिद्ध हैं ।  
 शिविका-संज्ञा स्त्री० पाखकी । दोली ।  
 शिविर-संज्ञा पुं० डेरा । छाँमा ।  
 शिशिर-संज्ञा पुं० १. एक ऋतु जो  
 माघ और फावगुम मास में होती  
 है । २. हिम ।  
 शिशु-संज्ञा पुं० छोटा बच्चा; विशेषतः

आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा ।  
 शिशुता-संज्ञा स्त्री० बचपन ।  
 शिशुनाम-संज्ञा पुं० दे० "शिशुनाम" ।  
 शिशुपाल-संज्ञा पुं० चेदि देश का  
 एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने  
 मारा था ।  
 शिष्ट-वि० पुं० १. अच्छे स्वभाव और  
 आचरणवाला । २. सम्य । सज्जन ।  
 ३. भला ।  
 शिष्टता-संज्ञा स्त्री० १. सम्यता ।  
 सज्जनता । २. उत्तमता । श्रेष्ठता ।  
 शिष्टाचार-संज्ञा पुं० १. दिखावटी  
 सम्य व्यवहार । २. आव-भगत ।  
 शिष्य-संज्ञा पुं० [ स्त्री० शिष्या ] १.  
 विद्यार्थी । २. शगिर्द । चेला ।  
 शिस्त-संज्ञा स्त्री० मछली पकड़ने का  
 कौशल ।  
 शीघ्र-वि० वि० बिना विलंब । चट-  
 पट । जल्द ।  
 शीघ्रता-संज्ञा स्त्री० जल्दी । पुरती ।  
 शीत-वि० ठंडा । सर्द ।  
 संज्ञा पुं० १. जाड़ा । ठंड । २.  
 सुधार । ३. जाड़े का मौसम ।  
 शीत कटिबंध-संज्ञा पुं० पृथ्वी के  
 उत्तर और दक्षिण के भूमि-खंड के दो  
 कक्षित विभाग जो मूमध्य रेखा से  
 २३½ अंश उत्तर के घाट और २३½  
 अंश दक्षिण के घाट माने गए हैं ।  
 शीतल-वि० ठंडा । सर्द ।  
 शीतल, चिनी-संज्ञा स्त्री० कषाक  
 चीनी ।  
 शीतलता-संज्ञा स्त्री० ठंडापन ।  
 शीतला-संज्ञा स्त्री० १. विरकोटक  
 रोग । चेचक । २. एक देवी जो इस  
 रोग की अधिष्ठात्री मानी जाती है ।  
 शीरा-संज्ञा पुं० चाशनी ।

संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक सम्प्रदाय ।  
 श्रीकण्ठ-संज्ञा पुं० शिव ।  
 श्रीकांत-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 श्रीकृष्ण-संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण" (१) ।  
 श्रीक्षेत्र-संज्ञा पुं० जगन्नाथ पुरी ।  
 श्रीखंड-संज्ञा पुं० हरि-चंदन । मलय-  
 गिरि चंदन ।  
 श्रीखंड शील-संज्ञा पुं० मलय पर्वत ।  
 श्रीदाम-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक  
 बाल-सखा का नाम । सुदामा ।  
 श्रीधर-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 श्रीनिकेतन-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ ।  
 श्रीनिवास-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २.  
 वैकुण्ठ ।  
 श्रीपंचमी-संज्ञा स्त्री० वसंत-पंचमी ।  
 श्रीपति-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 श्रीपाद-संज्ञा पुं० पूज्य । श्रेष्ठ ।  
 श्रीफल-संज्ञा पुं० १. फल । २.  
 नारियल । ३. खिरनी । ४. भाँवला ।  
 श्रीमंत-वि० श्रीमान् । धनवान् ।  
 धनी ।  
 श्रीमत-वि० १. धनवान् । अमीर ।  
 २. जिसमें श्री या शोभा हो । ३.  
 सुंदर ।  
 श्रीमती-संज्ञा स्त्री० १. "श्रीमान्"  
 का स्त्रीलिङ्ग । २. लक्ष्मी । ३.  
 राधा ।  
 श्रीमान्-संज्ञा पुं० १. आदर-सूचक  
 शब्द जो नाम के आदि में रखा  
 जाता है । श्रीयुत । २. धनवान् ।  
 अमीर ।  
 श्रीमुख-संज्ञा पुं० शोभित्र या सुंदर  
 मुख ।  
 श्रीयुक्त-वि० १. जिसमें श्री या शोभा  
 हो । २. बड़े आदमियों के लिये एक

आदरसूचक विशेषण ।  
 श्रीयुत-वि० दे० "श्रीयुक्त" ।  
 श्रीरंग-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 श्रीरमण-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 श्रीवत्स-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २.  
 विष्णु के वचःस्थल पर का एक चिह्न ।  
 श्रीहृत-वि० शोभा-रहित ।  
 श्रीहर्ष-संज्ञा पुं० १. नैपथ्य काव्य के  
 रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित  
 और कवि । २. रक्षावली, नागार्जुन  
 और प्रियदर्शि का नाटकों के रचयिता  
 जो संभवतः काव्यकुब्ज के प्रसिद्ध  
 सत्राट हर्षवर्द्धन थे ।  
 श्रुत-वि० सुना हुआ ।  
 श्रुतकीर्ति-संज्ञा स्त्री० राजा जनक  
 के भाई कुशावज की कन्या, जो  
 शत्रुघ्न को ब्याही थी ।  
 श्रुति-संज्ञा स्त्री० १. सुनने की इंद्रिय ।  
 कान । २. वेद ।  
 श्रुतिपथ-संज्ञा पुं० १. अवण-मार्ग ।  
 २. वेद-विहित मार्ग ।  
 श्रुवा-संज्ञा पुं० दे० "स्रुवा" ।  
 श्रेणी-संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति । कतार ।  
 २. सेना ।  
 श्रेणीबद्ध-वि० पंक्ति के रूप में स्थित ।  
 कतार बंधे हुए ।  
 श्रेय-वि० १. अधिक अच्छा । २.  
 मंगलदायक । शुभ ।  
 संज्ञा पुं० १. अच्छापन । २. करघाण ।  
 श्रेयस्कर-वि० शुभदायक ।  
 श्रेष्ठ-वि० १. सर्वोत्तम । बहुत अच्छा ।  
 २. प्रधान ।  
 श्रेष्ठता-संज्ञा स्त्री० उत्तमता ।  
 श्रेष्ठी-संज्ञा पुं० महाजन । सेठ ।  
 श्रोता-संज्ञा पुं० सुननेवाला ।

शीर्ष-वि० मीठा ।

शीर्षीनी-संज्ञा स्त्री० १. मिठास । २. मिठाई ।

शीर्ष-वि० १. दूटा-फूटा हुआ । २. शीर्ष । फटा पुराना । ३. दुबला । पतला ।

शीर्ष-संज्ञा पुं० १. सिर । २. सिरा । खोटी ।

शीर्षक-संज्ञा पुं० १. दे० "शीर्ष" । २. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर हो ।

शीर्षविन्दु-संज्ञा पुं० सिर के ऊपर ओर ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान ।

शील-संज्ञा पुं० १. स्वभाव । प्रवृत्ति । २. संकोच का स्वभाव । सुरोच ।

शीलवान्-वि० १. अच्छे आचरण का । २. सुशील ।

शीशम-संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है ।

शीशमहल-संज्ञा पुं० वह कोठरी जिसकी दीवारों में शीशे लगे हों ।

शीशा-संज्ञा पुं० १. काँच । २. दर्पण । चाहुना ।

शीशी-संज्ञा स्त्री० शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं ।

शुभ-संज्ञा पुं० एक, पवित्र वंश जो मौर्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था ।

शुंठि, शुंठी-संज्ञा स्त्री० सेन्डा ।

शुंठ-संज्ञा पुं० हाथी की सूँठ ।

शुंठी-संज्ञा पुं० १. हाथी । २. कल-वार ।

शुभ-संज्ञा पुं० एक असुर जिसे दुर्गा

ने मारा था ।

शुक-संज्ञा पुं० १. तोता । सुग्गा । २. शुकदेव ।

शुकदेव-संज्ञा पुं० कृष्णदेवायन के पुत्र जो पुराणों के रचका और ज्ञानी थे ।

शुक्ति-संज्ञा स्त्री० सीप । सीपी ।

शुक-संज्ञा पुं० १. वीर्य । २. सप्ताह का छठा दिन जो गृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पड़ता है ।

संज्ञा पुं० धन्यवाद ।

शुकगुजार-वि० आमारी । कुतश्च ।

शुक्राचार्य-संज्ञा पुं० एक ऋषि जो दैत्यों के गुरु थे ।

शुक्रिया-संज्ञा पुं० धन्यवाद ।

शुक्र-वि० सफेद । वजला ।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक पदवी ।

शुक्र पक्ष-संज्ञा पुं० अमावास्या के उपरान्त प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष ।

शुचि-वि० १. शुद्ध । पवित्र । २. साफ ।

शुचरसुर्ग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी शरदम बँद की तरह बहुत खंकी होती है ।

शुद्ध-वि० १. पवित्र । साफ । २. जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न हो । ठीक । ३. स्वास्थि ।

शुद्धि-संज्ञा स्त्री० वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है ।

शुद्धिपत्र-संज्ञा पुं० वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहीं क्या अशुद्धि है ।

शुशोदन-संज्ञा पुं० एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो शुद्धदेव के पिता थे ।

श्रोत्र-संज्ञा पुं० वेदज्ञान ।  
 श्रोत्रिय-संज्ञा पुं० १. वेद-वेदांग में पारंगत । २. ब्राह्मणों का एक भेद ।  
 श्रोत-वि० १. श्रवण-संबंधी । २. जो वेद के अनुसार हो ।  
 श्रोतसूत्र-संज्ञा पुं० कल्प ग्रंथ का वह अंश जिसमें यज्ञों का विधान है ।  
 श्लथ-वि० १. शिथिल । २. अशक्त ।  
 श्लाघनीय-वि० प्रशंसनीय । सारीफ़ के लायक ।  
 श्लाघा-संज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा । सारीफ़ । २. सुशामद । चापलूसी ।  
 श्लाघ्य-वि० १. प्रशंसनीय । २. श्रेष्ठ । अच्छा ।  
 श्लिष्ट-वि० मिला हुआ । एक में जुड़ा हुआ ।  
 श्लील-वि० इत्तम । नफ़ीस ।  
 श्लेष-संज्ञा पुं० मिश्रण । जुड़ना ।  
 श्लेषक-वि० जोड़नेवाला ।  
 संज्ञा पुं० दे० "श्लेष" ।  
 श्लेषण-संज्ञा पुं० आक्षिप्तन ।  
 श्लेष्मा-संज्ञा पुं० १. क्लृप्तगुण । २. लिसाड़े का फल ।  
 श्लोक-संज्ञा पुं० १. शब्द । आवाज़ । २. संस्कृत का कोई पद्य ।  
 श्लोच-संज्ञा पुं० चाँडाल । डोम ।  
 श्वफलक-संज्ञा पुं० यादव वृष्णि के पुत्र और अक्षर के पिता ।  
 श्वशुर-संज्ञा पुं० ससुर ।

श्वश्र-संज्ञा स्त्री० सास ।  
 श्वान-संज्ञा पुं० कुत्ता ।  
 श्वास-संज्ञा पुं० १. नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार । साँस । २. दम फूलने का रोग । दमा ।  
 श्वासा-संज्ञा स्त्री० प्राण । प्राणवायु ।  
 श्वासाकलुषास-संज्ञा पुं० वेग से साँस खींचना और निकालना ।  
 श्वेत-वि० १. सफ़ेद । २. उज्ज्वल । साफ़ ।  
 संज्ञा पुं० १. सफ़ेद रंग । २. चाँदी ।  
 श्वेत-कृष्ण-संज्ञा पुं० सफ़ेद और काला । एक बात और दूसरी बात ।  
 श्वेतगज-संज्ञा पुं० पेरारत हाथी ।  
 श्वेतता-संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी ।  
 श्वेतद्वीप-संज्ञा पुं० एक उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं ।  
 श्वेतघाराह-संज्ञा पुं० बराह भगवान् की एक मूर्ति ।  
 श्वेतांबर-संज्ञा पुं० जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक ।  
 श्वेता-संज्ञा स्त्री० १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक । २. कौड़ी । ३. शंखिनी ।  
 श्वेताश्वतर-संज्ञा स्त्री० १. कृष्ण यजु-वेद की एक शाखा । २. कृष्ण यजु-वेद का एक उपनिषद् ।

शुनःशेफ-संज्ञा पुं० वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे ।

शुनासीर-संज्ञा पुं० इंद्र ।

शुबहा-संज्ञा पुं० संदेह । शक ।

शुभ-वि० १. अच्छा । भला । २. कल्याणकारी । मंगलप्रद ।

संज्ञा पुं० मंगल । कल्याण ।

शुभचितक-वि० हितैषी । खैरछाह ।

शुभ्र-वि० सफेद । श्वेत ।

शुरू-संज्ञा पुं० आरंभ ।

शूलक-संज्ञा पुं० फीस ।

शुभ्रपा-संज्ञा स्त्री० सेवा । परिचर्या ।

शुष्क-वि० १. सूखा । पुरक । २. नीरस ।

शूकर-संज्ञा पुं० सूअर । चाराह ।

शूकरक्षेत्र-संज्ञा पुं० एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है । ( आज-कल का सोरो । )

शूद्र-संज्ञा पुं० १. आर्यों के चार वर्गों में से चौथा और अंतिम वर्ग । २.

शूद्र जाति का पुरुष ।

शूद्री-संज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री ।

शून्य-संज्ञा पुं० १. आकाश । २. सिफर । ३. कुछ न होना ।

वि० १. खाली । २. निराकार ।

शून्यवाद-संज्ञा पुं० बौद्धों का एक सिद्धांत ।

शून्यवादी-संज्ञा पुं० १. बौद्ध । २. नास्तिक ।

शूष-संज्ञा पुं० सूष जिसमें अन्न आदि पछेरा जाता है । फटकनी ।

शूर-संज्ञा पुं० वीर । बहादुर ।

शूरता-संज्ञा स्त्री० बहादुरी । वीरता ।

शूरवीर-संज्ञा पुं० सूरमा ।

शूरसेन-संज्ञा पुं० मथुरा के एक

प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे शूर्पणखा-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी ।

शूर्पणखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा" ।

शूल-संज्ञा पुं० १. सूली, जिससे प्राचीन काल में प्राण-दंड दिया जाता था । २. दे० "त्रिशूल" । ३. पीड़ा । दर्द ।

शूलधारी-संज्ञा पुं० महादेव ।

शूलपाणि-संज्ञा पुं० महादेव ।

शूलि-संज्ञा पुं० महादेव ।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूली" ।

शूली-संज्ञा पुं० शिय ।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूली" ।

शृंखल-संज्ञा पुं० १. मेखला । २.

साँकल । सिकड़ । ३. हथकड़ी-येड़ी ।

शृंखलता-संज्ञा स्त्री० सिद्धसिलेवार या कमबद्ध होने का भाव ।

शृंखला-संज्ञा स्त्री० १. क्रम । २. जंजीर । ३. कटिवल । मेखला ।

४. श्रेणी । कृतार ।

शृंखलाघट्ट-वि० सिद्धसिलेवार ।

शृंग-संज्ञा पुं० १. पर्वत का ऊपरी भाग । शिखर । २. गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग ।

शृंगवेरपुर-संज्ञा पुं० एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निपाद राजा गुह की राजधानी थी ।

शृंगार-संज्ञा पुं० १. नौ रसों में से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है । २. सजावट । घनाव-सुनाव । ३. वह जिससे किसी चीज़ की शोभा हो ।

शृंगारना-क्रि० स० सजाना । सँवारना ।

प

प-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में २१वाँ वर्ण या अक्षर।  
 पंड-संज्ञा पुं० १. नामदे। २. शिव का एक नाम।  
 पट-वि० गिनती में ६। छः।  
 संज्ञा पुं० छः की संख्या।  
 पटक-संज्ञा पुं० ६ वस्तुओं का समूह।  
 पटकर्म-संज्ञा पुं० ब्राह्मणों के छः कर्मे-यजन, याजन, अज्ययन, अध्यापन, दान देना और दान लेना।  
 पटचक्र-संज्ञा पुं० पट्यंत्र।  
 पटपेद-वि० छः पैरोंवाला।  
 संज्ञा पुं० भ्रमर। भौरा।  
 पटपदी-संज्ञा स्त्री० भ्रमरी।  
 पटमुख-संज्ञा पुं० कार्तिकेय।  
 पटराग-संज्ञा पुं० १. संगीत के छः रागें-मैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २. पखेड़ा।  
 पटरिपु-संज्ञा पुं० दे० "पट्टिपु"।  
 पटशस्त्र-संज्ञा पुं० हिंदुओं के छः दर्शन।  
 पटवांग-संज्ञा पुं० पटवांग नामक राजपि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।  
 पटंग-संज्ञा पुं० वेद के छः अंग।  
 वि० जिसके छः अंग या अवयव हों।  
 पहानन-वि० जिसे छः मुँह हों।  
 संज्ञा पुं० कार्तिकेय।  
 पटगुण-संज्ञा पुं० छः गुणों का समूह।  
 पटदर्शन-संज्ञा पुं० न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छः दर्शन।  
 पटदर्शनी-संज्ञा पुं० दर्शनों को

जाननेवाला। ज्ञानी।  
 पट्यंत्र-संज्ञा पुं० १. किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कारवाही। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।  
 पट्टरस-संज्ञा पुं० छः प्रकार के रस या स्वाद-मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।  
 पट्टिपु-संज्ञा पुं० काम, क्रोध आदि मनुष्य के छः विकार।  
 पट्ट-वि० जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छटा।  
 पट्टी-संज्ञा स्त्री० १. शुद्ध या कृष्ण पद की छठी तिथि। २. कात्यायनी। दुर्गा।  
 पोडश-वि० १. सोलहवाँ। २. जो गिनती में दस से छः अधिक हो। सोलह।  
 संज्ञा पुं० सोलह की संख्या।  
 पोडशा कला-संज्ञा स्त्री० चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निवृत्ते और क्षीण होते हैं।  
 पोडश पूजन-संज्ञा पुं० दे० "पोडशोपचार"।  
 पोडश शृंगार-संज्ञा पुं० पूर्ण शृंगार जो सोलह प्रकार का है।  
 पोडशी-वि० स्त्री० सोलह वर्ष की (लड़की या स्त्री)।  
 संज्ञा स्त्री० दस महाविद्याओं में से एक।

पोडशोपचार-संज्ञा पुं० पूजन के पूर्ण अंग-आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प,

शृंगारित-वि० सत्राया हुआ ।  
 शृंगि-संज्ञा पुं० १. सिंही मछली ।  
 २. सींगवाला जानवर ।  
 शृंगी-संज्ञा पुं० १. हाथी । २. एक  
 ऋषि जो शमीक के पुत्र थे । ३. सींग  
 का घना हुआ एक प्रकार का बाजा ।  
 शृंगाल-संज्ञा पुं० गीदड़ । सिंघार ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. पैर्गवर मुहम्मद के  
 धर्मियों की उपाधि । २. इस्लाम  
 धर्म का आचार्य ।  
 श्रेष्ठ चिह्नी-संज्ञा पुं० बड़े बड़े मंसूबे  
 की धनेवाजा ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. सिर । २. मुकुट ।  
 ३. ( पर्वत आदि का ) शिखर ।  
 श्रेष्ठावत-संज्ञा पुं० कछवाहे राजपूतों  
 की एक शाखा ।  
 श्रेष्ठी-संज्ञा स्त्री० १. गध । अहंकार ।  
 २. डोंग ।  
 श्रेष्ठीयाङ्ग-वि० १. अभिमानी । २.  
 डोंग मारनेवाला व्यक्ति ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. व्याघ्र । नाहर । २.  
 बद्ध कविता के दो चरण ।  
 श्रेष्ठ-पंजा-संज्ञा पुं० बघनहा ।  
 श्रेष्ठ घघर-संज्ञा पुं० सिंह । केसरी ।  
 श्रेष्ठानी-संज्ञा स्त्री० जोगरेओं डंग की  
 ढाट का एक प्रकार का रीगा ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. बाकी । २. समाप्ति ।  
 ३. पुराणानुसार सद्यस्त्र फनों के सर्प-  
 राजा जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है ।  
 वि० १. बचा हुआ । २. समाप्त ।  
 श्रेष्ठघर-संज्ञा पुं० शिवजी ।  
 श्रेष्ठनाग-संज्ञा पुं० दे० "श्रेष्ठ" (३) ।  
 श्रेष्ठशायी-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 श्रेष्ठचल-संज्ञा पुं० दक्षिण का एक  
 पर्वत ।  
 श्रेष्ठान-संज्ञा पुं० १. तमोगुण-मय

देवता जो मनुष्यों को बहकाकर  
 धर्म-मार्ग से अष्ट करता है । २. दुष्ट  
 देवयोगि ।  
 शैतानी-संज्ञा स्त्री० दुष्टता । शरासत ।  
 वि० नटखटी से भरा । दुष्टतापूर्ण ।  
 शैथिल्य-संज्ञा पुं० शिथिलता ।  
 शैल-संज्ञा पुं० पर्वत । पहाड़ ।  
 शैलकुमारी-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।  
 शैलजा-संज्ञा स्त्री० १. पार्वती । २. दुर्गा ।  
 शैलतटी-संज्ञा स्त्री० पहाड़ की तराई ।  
 शैलसूता-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।  
 शैली-संज्ञा स्त्री० १. प्रणाली । तर्क ।  
 तरीका । २. रीति ।  
 शैलेन्द्र-संज्ञा पुं० हिमालय ।  
 शैलेय-वि० पहाड़ी । पर्वतीय ।  
 शैव-संज्ञा पुं० शिव का अनन्य उपासक ।  
 शैवलिनी-संज्ञा स्त्री० नदी ।  
 शैवाल-संज्ञा पुं० सिंघार ।  
 शैव्या-संज्ञा स्त्री० राजा हरिश्चंद्र की  
 रानी का नाम ।  
 शैशव-संज्ञा पुं० १. बचपन । २.  
 लड़कपन ।  
 शैक-संज्ञा पुं० रंज । गुम ।  
 शैख-वि० १. दीठ । २. चंचल ।  
 शैच-संज्ञा पुं० १. दुःख । अफ़सोस ।  
 २. चिंता ।  
 शैचनीय-वि० जिसकी दशा देखकर  
 दुःख हो ।  
 शैण-संज्ञा पुं० १. खाल रंग । २.  
 रक्त । ३. एक नद का नाम ।  
 शैणित-वि० खाल ।  
 संज्ञा पुं० खून ।  
 शैय-संज्ञा पुं० किसी रोग का फूलना ।  
 सूजन ।  
 शैध-संज्ञा पुं० १. जाँघ । २. खोज ।



पूष, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा  
और ध्वजा ।

पोडश संस्कार-संज्ञा पुं० गर्माधान

से लेकर मृतक कर्म तक के १६  
संस्कार ।

स

स-हिंदी वर्षमासा का बचोसर्वा  
व्यंजन ।

सह्यता-कि० स० १. संचय करना ।

२. सहजना ।

सउपना-कि० स० दे० "सोपना" ।

संकट-संज्ञा पुं० विपत्ति । आफत ।

सुसीयत ।

संकटा-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध  
देवी । २. उपोसिध में एक योगिनी  
। दशा ।

संकर-संज्ञा पुं० १. दो चीजों का  
आपस में मिलना । २. दोगला ।

संज्ञा पुं० दे० "शंकर" ।

संकरा-वि० पतला और तंग ।

संज्ञा पुं० कष्ट । दुःख । विपत्ति ।

संकरण-संज्ञा पुं० १. धोचने की  
क्रिया । २. हल से जोतने की क्रिया ।

३. कृष्ण के भाई पञ्चराम ।

संकला-संज्ञा स्त्री० सिकड़ी । जंजीर ।

संकलन-संज्ञा पुं० १. संग्रह करना ।

जमा करना । २. अनेक प्रश्नों से  
परस्पर विषय चुनने की क्रिया ।

संकल्पना-कि० स० किसी धा-  
र्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान  
देना । संकल्प करना ।

कि० अ० विचार करना ।

संक्षिप्त-वि० १. चुना हुआ । २.

इफटा किया हुआ ।

संकरप-संज्ञा पुं० १. कोई देवकार्य  
करने से पहले एक मिश्रित मंत्र का  
व्यचारण करते हुए अपना हृदय  
निश्चय करना । २. ऐसे समय पढ़ा जाने-  
वाला मंत्र । ३. हृदय निश्चय । पक्का  
विचार ।

संकाना-कि० अ० डरना ।

संकीर्ण-वि० १. संकुचित । संकरा ।

२. चुद्र ।

संज्ञा पुं० संकट । विपत्ति ।

संकीर्तन-संज्ञा पुं० किसी की कीर्ति  
को वर्णन करना ।

संकुचन-कि० अ० दे० "संकुचन" ।

संकुचित-वि० १. संकोचयुक्त ।

लजित । २. सिकुड़ा हुआ ।

संकुल-वि० १. संकीर्ण । घना । २.

परिपूर्ण ।

संकेत-संज्ञा पुं० १. भाव प्रकट करने

के लिये कायिक चेष्टा । इशारा ।

ईंगित । २. चिह्न । निशान । ३.

पते की यातें ।

संकेता-वि० दे० "संकरा" ।

संकेतना-कि० स० संकट में डालना ।

कष्ट में डालना ।

संकोच-संज्ञा पुं० १. सिकुचने की

क्रिया । संघात । २. खजा । ३.

आगा पीछा । हिचकिचाहट ।

शुनःशेफ-संज्ञा पुं० वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि अचीक के पुत्र थे ।

शुनासीर-संज्ञा पुं० इन्द्र ।

शुबहा-संज्ञा पुं० संदेह । शक ।

शुभ-वि० १. अच्छा । भला । २. कल्याणकारी । मंगलप्रद ।

संज्ञा पुं० मंगल । कल्याण ।

शुभचिंतक-वि० हितैषी । खैरछाह ।

शुभ्र-वि० सफेद । श्वेत ।

शुरू-संज्ञा पुं० आरंभ ।

शुल्क-संज्ञा पुं० फीस ।

शुश्रूषा-संज्ञा स्त्री० सेवा । परिचर्या ।

शुष्क-वि० १. सूखा । खुरक । २. नीरस ।

शूकर-संज्ञा पुं० सूअर । घाराह ।

शूकरक्षेत्र-संज्ञा पुं० एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है । ( आज-कल का सोरो । )

शूद्र-संज्ञा पुं० १. आर्यों के चार वर्गों में से चौथा और अंतिम वर्ग । २. शूद्र जाति का पुरुष ।

शूद्र-संज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री ।

शून्य-संज्ञा पुं० १. आकाश । २. सिफर । ३. कुछ न होना ।

वि० १. खाली । २. निराकार ।

शून्यवाद-संज्ञा पुं० बौद्धों का एक सिद्धांत ।

शून्यवादी-संज्ञा पुं० १. बौद्ध । २. नास्तिक ।

शूप-संज्ञा पुं० सुप जिसमें अन्न आदि पछोरा जाता है । फटकनी ।

शूर-संज्ञा पुं० धीर । बहादुर ।

शूरता-संज्ञा स्त्री० बहादुरी । धीरता ।

शूरवीर-संज्ञा पुं० सुरमा ।

शूरसेन-संज्ञा पुं० मथुरा के एक

प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे शूर्पणखा-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी ।

शूर्पणखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा" ।

शूल-संज्ञा पुं० १. सूजी, जिससे प्राचीन काल में प्राण-दंड दिया जाता था । २. दे० "त्रिशूल" । ३. पीड़ा । दर्द ।

शूलधारी-संज्ञा पुं० महादेव ।

शूलपाणि-संज्ञा पुं० महादेव ।

शूलि-संज्ञा पुं० महादेव ।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूती" ।

शूली-संज्ञा पुं० शिव ।

संज्ञा स्त्री० दे० "सूती" ।

शृंखल-संज्ञा पुं० १. मेखला । २. साँकल । सिक्कड़ । ३. हथकड़ी-येदी ।

शृंखलता-संज्ञा स्त्री० सिक्कड़िलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव ।

शृंखला-संज्ञा स्त्री० १. क्रम । २. जंजीर । ३. कंटिवल । मेखला । ४. श्रेणी । कतार ।

शृंखलावद्ध-वि० सिक्कड़िलेवार ।

शृंग-संज्ञा पुं० १. पर्वत का ऊपरी भाग । शिखर । २. गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग ।

शृंगधरपुर-संज्ञा पुं० एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निपाद राजा गुह की राजधानी थी ।

शृंगार-संज्ञा पुं० १. नौरसों में से एक रस जो सभसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है । २. सजावट । घनाव-सुनाव । ३. वह जिससे किसी चीज़ की शोभा हो ।

शृंगारना-क्रि० सं० सजाना । सँवारना ।

संकोचित-संज्ञा पुं० सज्जवार चखाने का एक ढंग या प्रकार ।

संकोची-संज्ञा पुं० १. सिकुड़नेवाला । २. शर्म करनेवाला ।

संक्रमण-संज्ञा पुं० गमन । चलना ।

संक्रांति-संज्ञा स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना या प्रवेश करने का समय ।

संक्रामक-वि० जो संसर्ग या दूत आदि के कारण फैलता हो ।

संक्षिप्त-वि० १. जो संक्षेप में हो । २. थोड़ा । अल्प ।

संक्षिप्त लिपि-संज्ञा स्त्री० एक खेलन-प्रणाली जिसमें थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं ।

संक्षेप-संज्ञा पुं० १. थोड़े में कोई बात कहना । २. कम करना ।

संक्षेपतः-अव्य० संक्षेप में । थोड़े में ।

संखिया-संज्ञा पुं० एक बहुत ज़हरीली प्रसिद्ध सफ़ेद उपधातु या पत्थर ।

संययक-वि० संख्यावाला ।

संख्या-संज्ञा स्त्री० १. तादात्म्य । शुमार । २. अदद ।

संग-संज्ञा पुं० १. मिलन । २. सहवास । सोहबत ।

कि० वि० साथ । हमराह ।

संग जराहत-संज्ञा पुं० एक सफ़ेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है ।

संगठन-संज्ञा पुं० दिखरी हुई शक्तियों या लोगों आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमें नवीन बल आ जाय ।

संगठित-वि० जो भली भाँति व्यव-

स्था करके एक में मिलाया हुआ हो ।

संगत-संज्ञा स्त्री० १. संग रहना ।

संगति । २. वह मठ जहाँ उदासी या निर्मलते साधु रहते हैं । ३. संसर्ग ।

संग-तराश-संज्ञा पुं० पत्थर काटने या गढ़नेवाला मज़दूर ।

संगति-संज्ञा स्त्री० १. मिलने की क्रिया । मेल । २. संग । साथ ।

३. प्रसंग ।

संगदिल-वि० कठोरहृदय । निर्दय । दयाहीन ।

संगम-संज्ञा पुं० १. मिलाप । सम्मेलन । संयोग । २. दो नदियों के मिलने का स्थान ।

संग-मर्मर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफ़ेद प्रसिद्ध कीमती पत्थर ।

संग-मूसा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का काला चिकना, कीमती पत्थर ।

संगाती-संज्ञा पुं० १. साथी । २. दोस्त ।

संगी-संज्ञा पुं० संग रहनेवाला । संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा ।

वि० संगीन ।

संगीत-संज्ञा पुं० वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों ।

संगीन-संज्ञा पुं० लोहे का एक चुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है ।

वि० १. पत्थर का बना हुआ । २. मोटा ।

संगृहीत-वि० एकत्र किया हुआ । सङ्गृहित ।

संग्रह-संज्ञा पुं० १. एकत्र करना । संचय । २. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बात एकत्र की गई हों ।

शृंगारित-वि० सत्राया हुआ ।  
 शृंगि-संज्ञा पुं० १. सिंगी मछली ।  
 २. सोंगवाला जानवर ।  
 शृंगी-संज्ञा पुं० १. हाथी । २. एक  
 अधि जो शमीक के पुत्र थे । ३. सोंग  
 का घना हुआ एक प्रकार का घाता ।  
 शृंगाल-संज्ञा पुं० गीदड़ । सिंघार ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. पैगंबर मुहम्मद के  
 वंशजों की उपाधि । २. इस्लाम  
 धर्म का आचार्य ।  
 श्रेष्ठ चित्ती-संज्ञा पुं० पड़े पड़े मंसूवे  
 धींधनेवाला ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. सिर । २. मुकुट ।  
 ३. ( पर्वत आदि का ) शिखर ।  
 श्रेष्ठावत-संज्ञा पुं० कबूधाहे राजपूतों  
 की एक शाखा ।  
 श्रेष्ठी-संज्ञा स्त्री० १. गर्व । अहंकार ।  
 २. डोंग ।  
 श्रेष्ठीवाज-वि० १. अभिमानी । २.  
 डोंग मारनेवाला व्यक्ति ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. व्याघ्र । नाहर । २.  
 बद्ध कविता के दो चरण ।  
 श्रेष्ठ-पंजा-संज्ञा पुं० घघनहा ।  
 श्रेष्ठ धयर-संज्ञा पुं० सिंह । केसरी ।  
 श्रेष्ठानी-संज्ञा स्त्री० शैंगरेखा वंग की  
 षाट का एक प्रकार का रंग ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. पाकी । २. ममासि ।  
 ३. पुराणानुसार सदस्र फनों के संप-  
 राज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है ।  
 वि० १. बचा हुआ । २. समाप्ता स्तम्भ ।  
 श्रेष्ठ-संज्ञा पुं० शिष्य ।  
 श्रेष्ठनाग-संज्ञा पुं० दे० "शेष" (३) ।  
 श्रेष्ठशायी-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 श्रेष्ठचल-संज्ञा पुं० दक्षिण का एक  
 पर्वत ।  
 श्रेष्ठान-संज्ञा पुं० १. समेगुण-मय

देवता जो मनुष्यों को बहकाकर  
 धर्म-मार्ग से अट करता है । २. दुष्ट  
 देवयोगि ।

शैतानी-संज्ञा स्त्री० दुष्टता । शरारत ।  
 वि० नटखटी से भरा । दुष्टतापूर्ण ।

शैथिल्य-संज्ञा पुं० शिथिलता ।

शैल-संज्ञा पुं० पर्वत । पहाड़ ।

शैलकुमारी-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।

शैलजा-संज्ञा स्त्री० १. पार्वती । २. दुर्गा ।

शैलतटी-संज्ञा स्त्री० पहाड़ की तराई ।

शैलसूता-संज्ञा स्त्री० पार्वती ।

शैली-संज्ञा स्त्री० १. प्रणाली । तर्क ।  
 तरीका । २. रीति ।

शैलेंद्र-संज्ञा पुं० हिमालय ।

शैलेय-वि० पहाड़ी । पपरीला ।

शैव-संज्ञा पुं० शिव का अनन्य उपासक ।

शैवलिनी-संज्ञा स्त्री० नदी ।

शैवाल-संज्ञा पुं० सिंघार ।

शैव्या-संज्ञा स्त्री० राजा हरिश्चंद्र की  
 रानी का नाम ।

शैशव-संज्ञा पुं० १. बचपन । २.  
 लड़कपन ।

शोक-संज्ञा पुं० रंज । गुम ।

शोख-वि० १. दीठ । २. चंचल ।

शोच-संज्ञा पुं० १. दुःख । अफसोस ।  
 २. चिंता ।

शोचनीय-वि० जिसकी दशा देखकर  
 दुःख हो ।

शोण-संज्ञा पुं० १. छाछ रंग । २.  
 रक्त । ३. एक नद का नाम ।

शोणित-वि० लाल ।

शोण पुं० खून ।

शोध-संज्ञा पुं० किसी रोग का कूटना ।  
 सूजन ।

शोध-संज्ञा पुं० १. जाँच । २. खोज ।

संग्रहणी-संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें खाद्य पदार्थ बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है।

संग्राम-संज्ञा पुं० युद्ध। लड़ाई।

संग्राह्य-वि० संग्रह करने योग्य।

संघ-संज्ञा पुं० १. समूह। समुदाय। दल। २. समाज। ३. प्राचीन

भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। ४. बौद्ध धर्मियों आदि का धार्मिक समाज। संगत।

संघट-संज्ञा पुं० १. संघटन। २. युद्ध। ३. समूह। ढेर। राशि।

संघटन-संज्ञा पुं० १. मेल। संयोग। २. रचना।

संघट्ट, संघट्टन-संज्ञा पुं० १. घनावट। २. मिश्रण।

संघर्ष, संघर्षण-संज्ञा पुं० १. रगड़ खाना। रगड़। घिसा। २. प्रति-योगिता। स्पर्धा। ३. रगड़ना। घिसना।

संघात-संज्ञा पुं० १. समूह। समष्टि। २. आघात। ३. हत्या।

संघाती-संज्ञा पुं० १. साथी। सह-चर। २. मित्र।

संघार-संज्ञा पुं० दे० "संहार"।

संघारना-वि० सं० १. नाश करना। २. मार डालना।

संघाराम-संज्ञा पुं० बौद्ध भिक्षुओं आदि के रहने का मठ। विहार।

संचक-संज्ञा पुं० १. संचय करने-वाला। २. कैजूस।

संचना-वि० सं० संग्रह करना। संचय करना।

संचय-संज्ञा पुं० १. समूह। २. एकत्र या संग्रह करना। जमा करना।

संचरण-संज्ञा पुं० संचार करने की

क्रिया। चलना।

संचरना-वि० सं० प्रसारित होना।

संचार-संज्ञा पुं० १. गमन। २. फैलना।

संचारना-वि० सं० १. किसी वस्तु का संचार करना। २. प्रचार करना। ३. जन्म देना।

संचारिका-संज्ञा स्त्री० दूती। कुटनी

संचारी-वि० गतिशील।

संचालक-संज्ञा पुं० चलाने या गति देनेवाला। परिचालक।

संचालन-संज्ञा पुं० १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २. काम जारी रखना।

संचित-वि० संचय या जमा किया हुआ।

संजय-संज्ञा पुं० छतराढ़ का मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय छतराढ़ को उस युद्ध का विवरण सुनाता था।

संजात-वि० १. उत्पन्न। २. प्राप्त।

संजाफ़-संज्ञा स्त्री० १. भाकर। कि-नारा। २. गोट। मगड़ी।

संजाफ़ी-संज्ञा पुं० भाषा लाक और भाषा हरा घोड़ा।

संजाय-संज्ञा पुं० दे० "संजाफ़"।

संजीदा-वि० १. गंभीर। २. समझ-दार।

संजीवन-संज्ञा पुं० १. भली भाँति जीवन व्यतीत करना। २. जीवन देनेवाला।

संजीवनी-वि० स्त्री० जीवन देनेवाली।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित औषधि।

संजीवनी विद्या-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित विद्या। कहते हैं कि मरे हुए व्यक्ति को इस विद्या के

तलाश ।

शोधक-संज्ञा पुं० १. शोधनेवाला ।

२. खोजनेवाला ।

शोधन-संज्ञा पुं० १. छान-बीन । २.

जाँच । तलाश करना । ३. विरेचन ।

शोधना-क्रि० स० १. शुद्ध करना ।

२. दुरुस्त करना । ३. औषध के

लिये धातु का संस्कार करना ।

शोभन-वि० सुंदर ।

शोभना-संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री ।

२. हलदी ।

० क्रि० स० शोभित होना ।

शोभाजन-संज्ञा पुं० सहजजन ।

शोभा-संज्ञा स्त्री० छवि । सुंदरता ।

छटा ।

शोभायमान-वि० सोहता हुआ ।

सुंदर ।

शोभित-वि० १. सुंदर । २. अच्छा

लगता हुआ ।

शोर-संज्ञा पुं० जोर की आवाज ।

शोरया-संज्ञा पुं० किसी उधाली हुई

वस्तु का पानी । जूस । रसा ।

शोरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चार

जो मिट्टी में निकलता है ।

शोला-संज्ञा पुं० आग की लपट ।

शोध-संज्ञा पुं० १. सूखने का भाव ।

सुरक्ष होना । २. राजयक्ष्मा का भेद ।

चयी ।

शोषक-संज्ञा पुं० १. जल, रस या

तरी खींचनेवाला । २. क्षीय करने

वाला ।

शोषण-संज्ञा पुं० सोखना । सुरक्ष

करना ।

शोहदा-संज्ञा पुं० १. व्यभिचारी । २.

गुंदा ।

शोहरत-संज्ञा स्त्री० नामवरी ।

व्याप्ति । जनरत ।

शोहरा-संज्ञा पुं० दे० "शोहरत" ।

शौक-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु की

प्राप्ति या भोग की तीव्र अभिलाषा ।

२. व्यसन । चसका ।

शौकत-संज्ञा स्त्री० दे० "शान" ।

शौकीन-संज्ञा पुं० १. शौक करनेवाला ।

२. सदा बना-ठना रहनेवाला ।

शौकीनी-संज्ञा स्त्री० शौकीन होने का

भाव या काम ।

शौच-संज्ञा पुं० १. शुद्धता । पवित्रता ।

२. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर

सयसे पहले किए जाते हैं । ३.

पाखाने जाना ।

शौत-संज्ञा स्त्री० दे० "सौत" ।

शौनक-संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि ।

शौर्य-संज्ञा पुं० वीरता । बहादुरी ।

शौहर-संज्ञा पुं० स्त्री का पति । स्वामी ।

खादिद ।

श्मशान-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ

मुरदे जलाए जाते हैं । मरघट ।

श्मशानपति-संज्ञा पुं० शिव ।

श्याम-संज्ञा पुं० १. शीकृष्ण का एक

नाम । २. मेघ । ३. श्याम नामक

वैद्य ।

वि० १. बाया और नीला मिखा

हुआ, (रंग) । २. काळा । साँवला ।

श्यामकर्ण-संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका

सारा शरीर सफेद और एक कान

काला हो ।

श्याम-जीरा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार

का घान । २. काला जीरा ।

श्यामता-संज्ञा स्त्री० १. श्याम का भाव

या धर्म । साँवलापन । २. उदासी ।

श्यामल-वि० जिसका वर्ण कृष्ण हो ।

काला ।

द्वारा जिलाया जा सकता है।  
 संज्ञक०-वि० दे० "संयुक्त"।  
 संज्ञा०-संज्ञा पुं० संग्राम। युद्ध।  
 संज्ञुत०-वि० दे० "संयुक्त"।  
 संज्ञोद्-वि० साय में।  
 संज्ञोद्-वि० अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित।  
 संज्ञोग-संज्ञा पुं० दे० "संयोग"।  
 संज्ञोगी-संज्ञा पुं० दे० "संयोगी"।  
 संज्ञोना-वि० स० सजाना।  
 संज्ञोवला-वि० १. सुसज्जित। २. सेना सहित। ३. सावधान।  
 संज्ञक-वि० संज्ञावाला। जिसकी संज्ञा हो। (यौगिक में)  
 संज्ञा-संज्ञा स्त्री० १. चेतना। २. बुद्धि। ३. व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी वस्तु या भाव आदि का बोध होता है।  
 संज्ञाहीन-वि० बेहोश। बेसुध।  
 संज्ञाला-वि० संज्ञा का।  
 संज्ञावाती-संज्ञा स्त्री० १. संज्ञा के समय ज्ञाया जानेवाला दीनक। २. वह गीत, जो संज्ञा समय गाया जाता है।  
 संज्ञा-संज्ञा स्त्री० संज्ञा। शाम।  
 संज्ञ मुसंज्ञ-वि० हट्टा-कट्टा। बहुत मोटा।  
 संज्ञसा-संज्ञा पुं० लोहे का एक औज़ार।  
 संज्ञा-वि० मोटा-ताज़ा। हट्ट-पुट्ट।  
 संज्ञास-संज्ञा पुं० कूँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० १. साधु, संन्यासी या स्थायी पुरुष। २. ईश्वर-भक्त।

धार्मिक पुरुष।  
 संज्ञ-अर्थ० सदा। निरंतर। धार।  
 संज्ञ-संज्ञा स्त्री० घाल-बच्चे।  
 संज्ञपन-संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह तपना। २. बहुत दुःख देना।  
 संज्ञ-वि० १. जला हुआ। दग्ध। २. दुखी। पीड़ित।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० अच्छी तरह से तैरना या पार होना।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा और मीठा मीठ।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० १. पहरेदार। २. द्वारपाल।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० बाल-बच्चे। संज्ञ।  
 संज्ञा-वि० दे० "संज्ञ"।  
 संज्ञाप-संज्ञा पुं० १. साप। जलन। २. दुःख। कष्ट।  
 संज्ञापन-संज्ञा पुं० संज्ञाप देना।  
 संज्ञापना-वि० स० दुःख देना। कष्ट पहुँचाना।  
 संज्ञापित-वि० दे० "संज्ञ"।  
 संज्ञापी-संज्ञा पुं० संज्ञाप देनेवाला।  
 संज्ञा-अर्थ० १. बदले में। एवज में। २. द्वारा।  
 संज्ञ-वि० १. रुस। २. जो मान गया हो।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० दे० "संज्ञाप"।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० १. सत्र। २. रुस। ३. प्रसन्नता। सुख।  
 संज्ञापत-वि० दे० "संज्ञ"।  
 संज्ञापी-संज्ञा पुं० वह जो सदा संज्ञाप रखता हो। सत्र करनेवाला।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० १. रचना। रचना। २. निबंध। लेख।  
 संज्ञ-संज्ञा पुं० श्रीसद। चंदन।

श्यामसुंदर-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम ।

श्यामा-संज्ञा स्त्री० १. राधा । २. एक गोपी का नाम । ३. कोयल नामक पक्षी ।

वि० श्याम रंगवाली । काली ।

श्याल-संज्ञा पुं० पक्षी का आई साजा ।

संज्ञा पुं० गींदड़ । सियार ।

श्येन-संज्ञा पुं० शिकरा या घाड़ पक्षी ।

श्येनी-संज्ञा स्त्री० कश्यप की एक कन्या जो पक्षियों की जननी थी ।

श्रद्धा-संज्ञा स्त्री० १. बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव । २. वेदादि शास्त्रों और आस पुरुषों के वचनों पर विश्वास । आस्था ।

श्रद्धालु-वि० जिसके मन में श्रद्धा हो । श्रद्धायुक्त ।

श्रद्धावान्-संज्ञा पुं० १. श्रद्धालु पुरुष । २. धर्मनिष्ठ ।

श्रद्धास्पद-वि० जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके । पूजनीय ।

श्रद्धेय-वि० श्रद्धास्पद ।

श्रम-संज्ञा पुं० १. परिश्रम । मेहनत । २. थकावट ।

श्रमकण्ठ-संज्ञा पुं० पर्सिने की बूँद ।

श्रमजल-संज्ञा पुं० पर्सिना । स्पेद ।

श्रमजित-वि० जो बहुत परिश्रम करने पर भी न थके ।

श्रमजीवी-वि० मेहनत करके पेट पालनेवाला ।

श्रमण-संज्ञा पुं० ; बौद्ध मतावलंबी संन्यासी ।

श्रमस्तीकर-संज्ञा पुं० पर्सिना ।

श्रमित-वि० थका हुआ । श्रान्त ।

श्रमी-संज्ञा पुं० १. मेहनती । २.

श्रमजीवी ।

श्रवण-संज्ञा पुं० १. वह इंद्रिय जिससे

शब्द का ज्ञान होता है । कान ।

२. देवताओं आदि के चरित्र सुनना ।

३. वैश्य संपत्ती अधिक मुनि के पुत्र का नाम । ४. बाहसर्वा नक्षत्र ।

श्रवण-संज्ञा पुं० श्रवण । कान ।

श्रवित-वि० गूँसा हुआ ।

श्रव्य-वि० जो सुना जा सके ।

श्रांत-वि० १. त्रित्तन्द्रिय । २. परिश्रम से थका हुआ ।

श्रांति-संज्ञा स्त्री० १. थकावट । २. विश्राम ।

श्राद्ध-संज्ञा पुं० १. वह कार्य जो श्राद्धपूर्वक किया जाय । २. वह कृत्य जो पितरों के वक्ष्य से किया जाता है ।

आप-संज्ञा पुं० दे० "शाप" ।

आघक-संज्ञा पुं० १. यौद्ध साधु या संन्यासी । २. नास्तिक ।

वि० सुननेवाला ।

आघग-संज्ञा पुं० दे० "आघक" ।

आघगी-संज्ञा पुं० जैनी ।

आघण-संज्ञा पुं० आपाड़ के बाद और आदों के पहले का महीना । सावन ।

आचली-संज्ञा स्त्री० सावन मास की पूर्णमासी । 'रक्षा-अचन' ।

आचस्ती-संज्ञा स्त्री० उत्तर कोशल में गंगा के तट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत-महेत कहलाती है ।

आव्य-वि० सुनने के योग्य ।

अश्व-संज्ञा स्त्री० मंगल । कल्याण ।

अश्री-संज्ञा स्त्री० १. विष्णु की पत्नी । लक्ष्मी । २. सरस्वती । ३. प्रमा । ४. कान्ति ।



संदली-वि० १. संदल के रंग का हलका पीला ( 'ग' ) । २. चंदन का ।

संदिग्ध-वि० १. जिसमें संदेह हो । संदेहपूर्ण । २. जिस पर संदेह हो ।

संदीपन-संज्ञा पुं० १. उद्गोष करने की क्रिया । उद्दीपन । २. कृष्ण के गुरु का नाम । ३. कामदेव के पाँच धार्यों में से एक ।

वि० उद्दीपन या उत्तेजन करनेवाला ।

संदूक-संज्ञा पुं० पेटी । बक्स ।

संदूकड़ी-संज्ञा स्त्री० छोटा संदूक ।

संदूर-संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर" ।

संदृश-संज्ञा पुं० १. समाचार । हाल ।

खबर । २. एक प्रकार की घोंगड़ा मिठाई ।

संदेसा-संज्ञा पुं० खबर । हाल ।

संदेसी-संज्ञा पुं० संदेसा से जाने-वाला । दूत । बसीठ ।

संदेह-संज्ञा पुं० संशय । शंका । शक ।

संध-संज्ञा स्त्री० दे० "संधि" ।

संधान-संज्ञा पुं० १. लक्ष्य करने का व्यापार । निराना लगावा । २. अन्वेषण । खोज ।

संधानना-कि० सं० १. विद्यमाना लगाना । २. धाण छोड़ना ।

संधि-संज्ञा स्त्री० १. मेल । संयोग । २. जोड़ । ३. राजाओं आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनु-

सार युद्ध बंद किया जाता है । ४.

सुलह । ५. गाँठ । ६. चोरी आदि

करने के लिये दीवार में किया हुआ

पद । संध । ७. बीच की छाती

जगह । अवकाश ।

संध्या-संज्ञा स्त्री० १. दिन और रात दोनों के मिलने का समय । संधि-काळ । २. शाम । ३. आर्यों की एक विशिष्ट उपासना ।

संन्यास-संज्ञा पुं० भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम ।

संन्यासी-संज्ञा पुं० संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला ।

संपत्ति-संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति" ।

संपत्ति-संज्ञा स्त्री० १. ऐश्वर्य । वैभव ।

२. धन । दौलत । जायदाद ।

संपद-संज्ञा स्त्री० १. सिद्धि । पूर्णता ।

२. ऐश्वर्य । वैभव । गौरव । ३.

सौभाग्य ।

संपदा-संज्ञा स्त्री० १. धन । दौलत ।

२. ऐश्वर्य । वैभव ।

संपन्न-वि० १. पूरा किया हुआ । पूर्ण ।

सिद्ध । २. सहित । ३. दौलतमंद ।

संपर्क-संज्ञा पुं० १. मिश्रण । २.

लगाव । ससर्ग । यात्रा ।

संपा-संज्ञा स्त्री० विघ्न । विजली ।

संपात-संज्ञा पुं० एक समय गिरना या पड़ना ।

संपाति-संज्ञा पुं० १. एक गीब जो गरुड का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था । २. माली नामक राक्षस का एक पुत्र ।

संपाती-संज्ञा पुं० दे० "संपाति" ।

संपादक-संज्ञा पुं० १. कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला । २. संपाद करनेवाला ।

संपादकीय-वि० संपादक का ।

संपादन-संज्ञा पुं० १. काम को पूरा करना । २. किसी पुस्तक या संपाद-पत्र आदि को मस, पाठ आदि लगा-

तलाश ।  
 शोधक-संज्ञा पुं० १. शोधनेवाला ।  
 २. खोजनेवाला ।  
 शोधन-संज्ञा पुं० १. छान-बीन । २. जाँच । तलाश करना । ३. विरंचन ।  
 शोधना-क्रि० स० १. शुद्ध करना ।  
 २. दुरुस्त करना । ३. औषध के लिये धातु का संस्कार करना ।  
 शोभन-वि० सुंदर ।  
 शोभना-संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री ।  
 २. हलदी ।  
 ० क्रि० स० शोभित होना ।  
 शोभांजन-संज्ञा पुं० सहिंजन ।  
 शोभा-संज्ञा स्त्री० छवि । सुंदरता ।  
 छटा ।  
 शोभायमान-वि० सोहता हुआ ।  
 सुंदर ।  
 शोभित-वि० १. सुंदर । २. अच्छा लगता हुआ ।  
 शोर-संज्ञा पुं० जोर की आवाज़ ।  
 शोरषा-संज्ञा पुं० किसी उधाली हुई वस्तु का पानी । जूस । रसा ।  
 शोरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चार जो मिट्टी में निकलता है ।  
 शोला-संज्ञा पुं० आग की छपट ।  
 शोष-संज्ञा पुं० १. सुखने का भाव ।  
 सुश्क होना । २. राजयक्ष्मा का भेद ।  
 चयी ।  
 शोषक-संज्ञा पुं० १. जल, रस या तरी खींचनेवाला । २. छीन करनेवाला ।  
 शोषण-संज्ञा पुं० सोखना । सुश्क करना ।  
 शोहवा-संज्ञा पुं० १. व्यभिचारी । २. गुंडा ।  
 शोहरत-संज्ञा स्त्री० नामवरी ।

ख्याति । जनरव ।  
 शोहरा-संज्ञा पुं० दे० "शोहरत" ।  
 शोफ-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग की तीव्र अभिलाषा ।  
 २. व्यसन । चसका ।  
 शोफत-संज्ञा स्त्री० दे० "शान" ।  
 शोफीन-संज्ञा पुं० १. शोक करनेवाला ।  
 २. सदा बना-ठना रहनेवाला ।  
 शोफीनी-संज्ञा स्त्री० शोफीन होने का भाव या काम ।  
 शोच-संज्ञा पुं० १. शुद्धता । पवित्रता ।  
 २. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सत्रसे-पहले किए जाते हैं । ३. पाखाने जाना ।  
 शौत-संज्ञा स्त्री० दे० "सौत" ।  
 शौनक-संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि ।  
 शौर्य-संज्ञा पुं० वीरता । बहादुरी ।  
 शौहर-संज्ञा पुं० स्त्री का पति । स्वामी ।  
 छाविंद ।  
 श्मशान-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों । मगध ।  
 श्मशानपति-संज्ञा पुं० शिव ।  
 श्याम-संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का एक नाम । २. मेघ । ३. श्याम नामक देश ।  
 वि० १. काळा और नीला-मिखा हुआ (रंग) । २. काळा । संधिषा ।  
 श्यामकर्ण-संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काळा हो ।  
 श्याम-जीरा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का धान । २. काळा जीरा ।  
 श्यामता-संज्ञा स्त्री० १. श्याम का भाव या धर्म । संधिषा । २. उदासी ।  
 श्यामल-वि० जिसका चर्ण कृष्ण हो ।  
 काळा ।

कर प्रकाशित करना ।

संपादित-वि० पूरा किया हुआ ।

संपुट-संज्ञा पुं० १. पात्र के आकार की कोई वस्तु । २. टिप्पणी । ३. थंजली । ४. कपड़े और गीली मिट्टी से छपेटा हुआ वह धरतन जिसके भीतर कोई रस या चोपधि फूँकते हैं ।

संपूर्ण-वि० १. खूब भरा हुआ । २. सब ।

संपूर्णतः-क्रि० वि० पूरी तरह से ।

संपूर्णतया-क्रि० वि० पूरी तरह से ।

संपूर्णता-संज्ञा स्त्री० १. संपूर्ण होने का भाव । २. समाप्ति ।

सपेरा-संज्ञा पुं० साँप पालनेवाला । मंदारी ।

संपोला-संज्ञा पुं० साँप का बच्चा ।

संप्रति-अव्य० इस समय । अभी ।

संप्रदान-संज्ञा पुं० १. दान देने की क्रिया या भाव । २. दीक्षा । संप्रोप-देश ।

संप्रदाय-संज्ञा पुं० १. कोई विशेष धर्म-संबंधी मत । २. किसी मत के अनुयायियों की मंडली ।

संप्राप्त-वि० १. पहुँचा हुआ । २. पाया हुआ ।

संबंध-संज्ञा पुं० १. एक साथ घँघना । २. लगाव । ३. माता । रिश्ता । ४. विषाद ।

संबंधी-वि० १. संबंध या लगाव रखनेवाला । २. विषयक ।

संज्ञा पुं० १. रिश्तेदार । २.

दे० "संबंध"  
का हुआ

का

सफ़्त-सुब ।

संबुद्ध-संज्ञा पुं० ज्ञानी ।

संबोधन-संज्ञा पुं० १. जगाना । २. पुकारना । ३. विदित कराना ।

संबोधन-क्रि० स० समझाना-बुझाना ।

संभरना-क्रि० भ० दे० "संभलना" ।

संभलना-क्रि० भ० १. किसी सहारे पर रुका रह सकना । २. होशियार होना । सावधान होना ।

संभव-संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति । जन्म । २. होना । ३. हो सकने के योग्य होना ।

संभवतः-अव्य० हो सकता है । मुमकिन है । गालिबन् ।

संभार-संज्ञा पुं० १. संचय । २. तैयारी । ३. धन । संपत्ति । ४. पालन ।

संभार-संज्ञा पुं० देख-रेख । खपरदारी ।

संभारना-क्रि० स० दे० "हंभा-जना" ।

संभाल-संज्ञा स्त्री० १. रक्षा । हिफाजत । २. देख-रेख । निगरानी । ३. तन-बदन की सुध ।

संभालना-क्रि० स० १. भार ऊपर से सकना । २. रक्षा करना । ३. निर्याद करना । ४. कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना ।

—संज्ञा स्त्री० १. कल्पना । हो सकना ।

वि० १. कल्पित । मन में —चा । २. संभव ।

संभाषण-संज्ञ पु० कथोपकथन ।  
घातचीत ।

संभाषी-वि० कहनेवाला । बोलने-  
वाला ।

संभाष्य-वि० जिससे घातचीत करना  
वचित हो ।

संभूत-वि० १. एक साथ उपपन्न ।  
२. उत्पन्न । उद्भूत ।

संभोग-संज्ञ पु० १. सुलपूर्वक व्य-  
वहार । २. रति-क्रीड़ा । ३. संयोग  
गन्धार । मिलाप की दशा ।

संभ्रम-संज्ञ पु० १. धराहट । २.  
सिद्धिपिडाना । ३. आदर । गौरव ।

संभ्रांत-वि० १. धराया हुआ ।  
उद्विग्न । २. सम्मानित । प्रतिष्ठित ।

संभ्राजना-कि० भ० पूर्णतः सुशो-  
भित होना ।

संभ्रत-वि० दे० "सम्प्रत" ।

संयत-वि० १. र्धषा हुआ । २. र्ध  
किया हुआ । ३. जिसने इंद्रियों और  
मन को धर में किया हो । निमग्न ।

संयम-संज्ञ पु० १. रोक । दाय । २.  
इंद्रियनिग्रह । चित्तवृत्ति का निरोध ।  
३. घुरी वस्तुओं से धरने की क्रिया ।  
परहेज । ४. योग में ध्यान, धारणा  
और समाधि का साधन ।

संयमी-वि० १. आत्मनिग्रही । योगी ।  
२. परहेजगार ।

संयुक्त-वि० १. जुड़ा हुआ । २.  
मिश्र हुआ । ३. संबद्ध । ४. सहित ।

संयुत-वि० १. जुड़ा हुआ । मिला  
हुआ । २. सहित ।

संयोग-संज्ञ पु० १. वृत्तफाक । २. मेढ ।  
संयोगी-संज्ञ पु० संयोग करनेवाला ।

संयोजक-संज्ञ पु० मिलावनेवाला ।

संयोजन-संज्ञ पु० जोड़ने का मित्राने

की क्रिया ।

संयोजना-कि० सं० दे० "संज्ञेना" ।

संरक्षक-संज्ञ पु० १. रक्षा करने-  
वाला । २. देख-रेख और पालन-  
पोषण करनेवाला । ३. आश्रय  
देनेवाला ।

संरक्षण-संज्ञ पु० १. हिफाजत । २.  
देख-रेख । ३. अधिकार । कब्जा ।

संरक्षित-वि० अच्छी तरह से रखा  
हुआ ।

संलव्य-वि० जो छला जाय ।

संलग्न-वि० सटा हुआ ।

संलाप-संज्ञ पु० वार्त्ताबाप । बात-  
चीत ।

संवत्-संज्ञ पु० १. वर्ष । साल । २.  
सन् । ३. महाराज विक्रमादित्य के  
काल से चली हुई मानी जानेवाली  
वर्ष-गणना ।

संवत्सर-संज्ञ पु० वर्ष ।

संवत्सर-संज्ञ स्त्री० स्मरण । याद ।

संवत्सर-संज्ञ पु० १. हटाना । २.  
वन्द करना । ३. आच्छादित करना ।  
४. क्षिपाना । ५. निग्रह । ६. पसंद  
करना । ७. कन्या का विवाह-के  
द्विजे घर या पति चुनना ।

संवत्सरना-कि० भ० समना । बराबर  
होना ।

० कि० सं० स्मरण करना ।

संवत्सिया-वि० दे० "संवत्स" ।

संवत्सक-संज्ञ पु० बढ़ानेवाला ।

संवत्सन-संज्ञ पु० १. बढ़ना । २.  
बढ़ाना ।

संवाद-संज्ञ पु० १. बात-चीत ।  
कथोपकथन । २. खबर । समाचार ।

संवादी-वि० संवाद या बात-चीत

कश्यप और अग्नि । २. उत्तर दिशा के सात तारे जो भ्रू के चारों ओर फिरते हुए दिखाई पड़ते हैं ।

सप्तशती-संज्ञा स्त्री० १. सात सौ का समूह । २. सप्तसह ।

सप्ताह-संज्ञा पुं० १. सात दिनों का काल । हफ्ता । २. भागवत की कथा जो सात ही दिनों में सब पढ़ी या सुनी जाय ।

सफुर-संज्ञा पुं० प्रस्थान । यात्रा ।

सफुरमैना-संज्ञा स्त्री० सेना के घे सिपाही जो खाई आदि खोदने को आगे चलते हैं ।

सफुरी-वि० सफुर में काम आनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. राह-खर्च । २. भ्रमरुद ।

सफुरी-संज्ञा स्त्री० सैरी मछली ।

सफल-वि० १. जिसमें फल लगा हो । २. सार्थक ।

सफलता-संज्ञा स्त्री० सफल होने का भाव । कामयाबी ।

सफलीभूत-वि० जो सफल हुआ हो । जो सिद्ध या पूरा हुआ हो ।

सफुहा-संज्ञा पुं० घुड़ । पहा ।

सफा-वि० १. साफ । २. पाक । ३. चिकना ।

सफाई-संज्ञा स्त्री० १. स्वच्छता । २. मैस्य या कूड़ा-करकट आदि हटाने की क्रिया ।

सफाचट-वि० एकदम स्वच्छ । बिड़-कुल साफ या चिकना ।

सफुना-संज्ञा पुं० परवाना ।

सफुर-संज्ञा पुं० पक्षी । राजकुत ।

सफेद-वि० चूने के रंग का । धौला । रम्य ।

सफेदपोश-संज्ञा पुं० साफ कपड़े

पहननेवाला ।

सफेदा-संज्ञा पुं० १. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रंगाई के काम में आता है । २. आम का एक भेद । ३. खरबूजे का एक भेद ।

सफेदी-संज्ञा स्त्री० सफेद होने का भाव । धवजता ।

सय-वि० १. जितने हों, कुल । २. सारा ।

सयक-संज्ञा पुं० पाठ ।

सयज-वि० दे० "सज्ज" ।

सयद-संज्ञा पुं० १. दे० "शब्द" । २. किसी महारमा के वचन ।

सश्य-संज्ञा पुं० कारण । घन ।

सथर-संज्ञा पुं० दे० "सम" ।

सथल-वि० १. बलवान् । २. जिसके साथ सेना हो ।

सज्ज-वि० १. कथा और ताज्जा (कनक-कूल आदि) । २. हरा ।

सज्जी-संज्ञा स्त्री० १. हरियाली । २. हरी तरकारी । ३. भांग ।

सद्य-संज्ञा पुं० संतोष । धैर्य ।

समा-संज्ञा स्त्री० १. परिपद । सन्न-लिस । २. वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिये संगठित हो ।

समागा-वि० भाग्यवान् ।

समागृह-संज्ञा पुं० बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान ।

समापति-संज्ञा पुं० समा का सुविधा ।

समासद-संज्ञा पुं० वह जो किसी समा में सम्मिलित हो । सदस्य ।

सम्य-संज्ञा पुं० वह जिसका आचार-व्यवहार उत्तम हो । भट्टा आदमी ।

सम्यता-संज्ञा स्त्री० १. सम्य होने का भाव । २. सदस्यता । ३.

करनेवाला ।

संघार-संज्ञा स्त्री० संघारने की क्रिया या भाव ।

संघारना-क्रि० घ० १. सजाना । अलंकृत करना । २. ठीक करना ।

३. क्रम से रखना ।

संघाहन-संज्ञा पुं० बटाकर छे चखना । होना ।

संघेद-संज्ञा पुं० १. अनुभव । वेदना । २. बोध ।

संघेदन-संज्ञा पुं० १. अनुभव करना । २. जताना ।

संघेद्य-वि० १. अनुभव करने योग्य । २. यत्नाने लायक ।

संशय-संज्ञा पुं० १. संदेह । शक । २. आशंका ।

संशयात्मक-वि० जिसमें संदेह हो । संशयात्मा-संज्ञा पुं० जो किसी बात पर विश्वास न करे ।

संशयी-वि० शकी ।

संशोधक-संज्ञा पुं० सुधारनेवाला ।

संशोधन-संज्ञा पुं० शुद्ध करना ।

संशोधित-वि० सुधारा हुआ ।

संश्रय-संज्ञा पुं० १. संयोग । २. संबंध । ३. अवलंब । ४. भ्रम ।

संश्लिष्ट-वि० १. मिला हुआ । २. आलिंगित । परिभ्रित ।

संस, संसद्-संज्ञा पुं० आशंका ।

संसर्ग-संज्ञा पुं० संबंध । लगाव ।

संसर्ग-दोष-संज्ञा पुं० वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे ।

संसर्गी-वि० संसर्ग या लगाव रखनेवाला ।

संसार-संज्ञा पुं० १. जगत् । सृष्टि । २. मर्त्यलोक । ३. गृहस्थी ।

संसारी-वि० १. संसार-संबंधी । लौकिक । २. संसार की माया में फँसा हुआ ।

संसृति-संज्ञा स्त्री० १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा । आवागमन । २. संसार ।

संसृष्ट-वि० १. मिश्रित । २. शामिल ।

संसृष्टि-संज्ञा स्त्री० १. मिलावट । २. घनिष्टता ।

संस्करण-संज्ञा पुं० १. सुधारना । २. द्विजातियों के लिये विहित संस्कार करना । ३. पुस्तकों की एक बार की छपाई । आवृत्ति । (आधुनिक)

संस्कार-संज्ञा पुं० १. संगत आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव । २. धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना ।

संस्कारहीन-वि० जिसका संस्कार न हुआ हो । प्राप्य ।

संस्कृत-वि० १. शुद्ध किया हुआ । २. परिमार्जित । ३. साफ किया हुआ । ४. सुधारा हुआ । ५. जिसका उपनयन आदि संस्कार हुआ हो ।

संज्ञा स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा जिसमें इनके धर्मग्रंथ आदि हैं । देववाणी ।

संस्कृति-संज्ञा स्त्री० १. शुद्धि । २. सुधार । ३. सम्यक्ता । शास्त्रमयी ।

संस्था-संज्ञा स्त्री० संघटित समुदाय । मंडल । सभा ।

संस्थान-संज्ञा पुं० १. जीवन । २. डेरा । घर । ३. पत्नी ।

संस्थापक-संज्ञा पुं० संस्थापन करनेवाला ।

संस्थापन-संज्ञा पुं० १. रूढ़ करना ।

सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ४. शराफत।

समंत-संज्ञा पुं० सीमा।

समंद-संज्ञा पुं० घोड़ा।

सम-वि० समान। मुख्य।

समकालीन-वि० जो एक ही समय में हों।

समकोण-वि० (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके सामने सामने के दो कोण समान हों।

समक्ष-अव्य० सामने।

समग्र-वि० कुल।

समग्र-वि० समान आचरण करने वाला।

समझ-संज्ञा स्त्री० बुद्धि। अयुक्त।

समझदार-वि० बुद्धिमान्।

समझना-क्रि० प्र० किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना।

समझाना-क्रि० प्र० दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।

समझौता-संज्ञा पुं० थापस का निपटारा।

समतल-वि० जिसकी सतह बराबर हो।

समता-संज्ञा स्त्री० सम या समान होने का भाव। बराबरी।

समदर्शी-संज्ञा पुं० सबको एक साथ देखनेवाला।

समधियाना-संज्ञा पुं० संमधी का घर।

संमधी-संज्ञा पुं० पुत्र या पुत्री का ससुर।

समन्वय-संज्ञा पुं० संयोग। मिलाप।

समन्वित-वि० मिला हुआ। संयुक्त।

समय-संज्ञा पुं० १. वक्त। २. अवसर।

समर-संज्ञा पुं० युद्ध। जड़ाई।

समर्थ-वि० दे० "समर्थ"।

समरभूमि-संज्ञा स्त्री० लड़ाई का मैदान।

समरांगण-संज्ञा पुं० दे० "समरभूमि"।

समर्थ-वि० जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। योग्य।

समर्थक-वि० जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला।

समर्थता-संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य। शक्ति।

समर्थन-संज्ञा पुं० यह कहना कि शमुक बात ठीक है। किसी के मत का पोषण करना।

समर्पक-वि० समर्पण करनेवाला।

समर्पण-संज्ञा पुं० १. आदरपूर्वक भेंट करना। २. दान देना।

समर्पित-वि० समर्पण किया हुआ।

समल-वि० मलीन। गंदा।

समवर्ती-वि० जो समान रूप से स्थित हो।

समवेत-वि० एकट्ठा किया हुआ।

समष्टि-संज्ञा स्त्री० सब का समूह।

समस्त-वि० सब। कुल।

समस्थली-संज्ञा स्त्री० गंगा और यमुना के बीच का देश। यत्तर्वेद।

समस्या-संज्ञा स्त्री० १. मिलाने की क्रिया। मिश्रण। २. कठिन अवसर या प्रसंग।

समस्यापूर्ति-संज्ञा स्त्री० किसी समस्या के आधार पर छंद आदि बनाना।

समागत-वि० आया हुआ।

समागम-संज्ञा पुं० मिलना।

समाचार-संज्ञा पुं० संवाद। खबर।

समाचारपत्र-संज्ञा पुं० वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहें हैं। अखबार।

बठाना । ( भवन आदि ) २.  
छमाना । बैठाना ।  
संस्मरण-संज्ञा पुं० पूर्ण स्मरण ।  
स्मरण याद ।  
संहारना-कि० भ० मष्ट होना ।  
कि० स० संहार करना ।  
संहार-संज्ञा पुं० १. नाश । ध्वंस ।  
२. समाप्ति । अंत ।  
संहारक-संज्ञा पुं० संहार करनेवाला ।  
नाशक ।  
संहार-फाल-संज्ञा पुं० प्रलय-काल ।  
संहारना-कि० स० मार डालना ।  
संहिता-संज्ञा स्त्री० यह ग्रंथ जिसमें  
पद, पाठ आदि का क्रम नियमा-  
नुसार चला जाता हो । जैसे—  
धर्म-संहिताएँ या स्मृतिर्षा ।  
सह-संज्ञा स्त्री० वृद्धि । बढ़ती ।  
सह-संज्ञा पुं० दे० "सो" ।  
सफट-संज्ञा पुं० गाढ़ी । छक्का ।  
सकता-संज्ञा स्त्री० बल । शक्ति ।  
सकता-संज्ञा स्त्री० शक्ति । ताकत ।  
सकपकाना-कि० भ० १. आश्चर्य-  
युक्त होना । २. हिचकना । ३.  
हिलना-डोलना ।  
सकरपाळा-संज्ञा पुं० दे० "शकर-  
पारा" ।  
सकल-वि० सब । समस्त । कुल ।  
संज्ञा पुं० निर्गुण मध्य और सगुण  
प्रकृति ।  
सकाना-कि० भ० १. शंका  
करना । २. भय के कारण संकोच  
करना ।  
सकाम-संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जिसे  
कोई कामना या इच्छा हो । २.  
वह जो कोई कार्य फल मिचने की

इच्छा से करे ।  
सकारना-कि० भ० स्वीकार करना ।  
मंजूर करना ।  
सकारो-कि० वि० सवेरे ।  
सकिलना-कि० भ० किसलना ।  
सरकना ।  
सकुच-संज्ञा स्त्री० लाज । शर्म ।  
सकुचना-कि० भ० १. लज्जा करना ।  
२. ( फूलों का ) संकुचित होना ।  
बंध होना ।  
सकुचाई-संज्ञा स्त्री० लज्जा ।  
सकुचाना-कि० भ० संकोच करना ।  
कि० स० १. सिकोड़ना । २. किसी  
को संकुचित या लजित करना ।  
सकुची-संज्ञा स्त्री० कछुप के आकार  
का एक प्रकार की मछली ।  
सकुन-संज्ञा पुं० पक्षी । चिड़िया ।  
संज्ञा पुं० दे० "शकुन" ।  
सकुनी-संज्ञा स्त्री० चिड़िया ।  
सकुनत-संज्ञा स्त्री० निवास-स्थान ।  
सकेलना-कि० स० एकत्र करना ।  
इकट्ठा करना ।  
सकेला-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
तलवार ।  
सकोरा-संज्ञा पुं० दे० "कसेरा" ।  
सक्ता-संज्ञा पुं० निरती ।  
सक्ति-संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति" ।  
सखरी-संज्ञा स्त्री० कच्ची रसोई ।  
जैसे—दाढ भात ।  
सखा-संज्ञा पुं० १. साथी । २. मित्र ।  
सखाघत-संज्ञा स्त्री० दानशीलता ।  
सखी-संज्ञा स्त्री० १. सहेली । सह-  
चरी । २. सगिनी ।  
वि० दाता । दानी । दानशील ।  
सखुआ-संज्ञा पुं० दे० "शाख" ।  
( वृक्ष )



समाज-संज्ञा पुं० १. समूह । गरोह ।

२. समा । ३. समुदाय ।

समादर-संज्ञा पुं० आदर । सम्मान ।

समाधान-संज्ञा पुं० १. किसी प्रकार का विरोध दूर करना । २. निराकरण ।

समाधि-संज्ञा स्त्री० १. योग का चरम फल । २. किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव ज़मीन में गाड़ना ।

३. दे० "समाधान" ।

समाधि-क्षेत्र-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत-शरीर गाड़े जाते हैं । २. कर्मस्थान ।

समाधित-वि० जिसने समाधि लगाई या ली हो ।

समाधिस्थ-वि० जो समाधि लगाए हुए हो ।

समान-वि० जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्त्व आदि में एक से हों ।

बराबर ।

समानता-संज्ञा स्त्री० समान होने का भाव । तुल्यता ।

समाना-कि० भ० छंदर आना । अटना ।

कि० सं० छंदर करना ।

समानार्थ-संज्ञा पुं० वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो । पर्याय ।

समापक-संज्ञा पुं० पूरा करनेवाला ।

समापन-संज्ञा पुं० समाप्त करना ।

समापित-वि० खतम या पूरा किया हुआ ।

समाप्त-वि० जो खतम या पूरा हो गया हो ।

समाप्ति-संज्ञा स्त्री० किसी कार्य या बात आदि का खतम या पूरा होना ।

समारंभ-संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह

आरंभ होना । २. समारोह ।

(वच०)

समारोह-संज्ञा पुं० कोई ऐसा कार्य या उत्सव जिसमें बहुत धूमधाम हो ।

समालोचक-संज्ञा पुं० समालोचना करनेवाला ।

समालोचन-संज्ञा पुं० दे० "समालोचना" ।

समालोचना-संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना ।

समाधर्चन-संज्ञा पुं० वापस आना । लौटना ।

समाधि-वि० समाधा हुआ ।

समावेश-संज्ञा पुं० एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना ।

समास-संज्ञा पुं० संक्षेप ।

समाहार-संज्ञा पुं० १. संग्रह । २. राशि । ढेर । ३. मिश्रता ।

समिति-संज्ञा स्त्री० समा । समाज ।

समिध-संज्ञा पुं० अग्नि ।

समिधा-संज्ञा स्त्री० हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी ।

समीकरण-संज्ञा पुं० समान या बराबर करना ।

समीक्षा-संज्ञा स्त्री० १. अच्छी तरह देखना । २. आलोचना । समा-

लोचना । ३. बुद्धि । ४. यत्न ।

कोशिश । ५. मीमांसा शास्त्र ।

समीचीन-वि० यथार्थ । वाजिब ।

समीप-वि० पास । नज़दीक ।

समीपवर्ती-वि० पास का ।

समीर-संज्ञा पुं० वायु । हवा ।

समीरण-संज्ञा पुं० वायु । हवा ।

समुंदर-संज्ञा पुं० दे० "समुद्र" ।

स.खुन-संज्ञा पुं० १. कौल । वचन ।

२. कथन । उक्ति ।

स.खुन-तकिया-संज्ञा पुं० तकिया कलाम ।

सग-पहती-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दाढ़ जो साग मिलाकर बनाई जाती है ।

सगवगाना-कि० भ० १. भीगना या सराबोर होना । २. सकपकाना । शंकित होना ।

सगर-संज्ञा पुं० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बड़े धर्मात्मा तथा प्रजा-रंजक थे ।

सगर्-वि० सय । कुल ।

सगल-वि० दे० "सकल" ।

सगा-वि० १. एक माता से वरपक्ष । सहोदर । २. जो संबंध में अपने ही-कुल का हो ।

सगई-संज्ञा स्त्री० १. विवाह संबंधी-निश्चय । मंगनी । २. संबंध । नाता । रिश्ता ।

सगापन-संज्ञा पुं० सगा होने का भाव । संबंध की आत्मीयता ।

सगुण-संज्ञा पुं० परमात्मा का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है । साकार मय ।

सगुन-संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन" । २. दे० "सगुण" ।

सगुनिया-संज्ञा पुं० शकुन विचारने और घतलानेवाला ।

सगोज-संज्ञा पुं० १. एक गोज के लोग । २. कुत्र । जाति ।

सघन-वि० घना । गहिन । अविरल ।

सच-वि० जो यथार्थ हो । सत्य । वास्तविक । दे० "सत्य" ।

सचमुच-अव्य० यथार्थतः । ठीक

ठीक ।

सचरना-कि० भ० १. फैलना ।

२. बहुत प्रचलित होना ।

सचराचर-संज्ञा पुं० संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ ।

सचाई-संज्ञा स्त्री० १. सत्यता । २. वास्तविकता ।

सचान-संज्ञा पुं० रथेन पड़ी । बाजू ।

सचारना-कि० स० फैलाना ।

संचित-वि० जिसमें चिंता हो ।

सचिक्कण-वि० अत्यंत चिक्कना ।

सचिध-संज्ञा पुं० मंत्री । वजीर ।

सची-संज्ञा स्त्री० दे० "शची" ।

सचेत-वि० दे० "सचेतन" ।

सचेतन-संज्ञा पुं० वह जिसमें चेतना हो । चेतन ।

वि० १. चेतनायुक्त । २. सावधान । होशियार ।

सचेष्ट-वि० १. जिसमें चेष्टा हो । २. जो चेष्टा करे ।

सच्चा-वि० १. सच बोलनेवाला । सत्यवादी । २. असली । विशुद्ध ।

सच्चाई-संज्ञा स्त्री० सचा होने का भाव । सत्यता ।

सच्चापन-संज्ञा पुं० दे० "सच्चाई" ।

सच्चिदानंद-संज्ञा पुं० ( सत्, चिद् और आनंद से युक्त ) परमात्मा । ईश्वर ।

सज-संज्ञा स्त्री० शोभा ।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का वृक्ष ।

सजग-वि० सावधान । होशियार ।

सज्जार-वि० सुंदर ।

सज-धज-संज्ञा स्त्री० वनाव-सिंगार । सजावट ।

सजन-संज्ञा पुं० १. पति । २. प्रिय-तम । यार ।

समुंदरफूल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का विधारा ।

समुचित-वि० १. उचित । २. जैसा चाहिए, वैसा । उपयुक्त ।

समुच्चय-संज्ञा पुं० १. मिश्रण । २. समूह । राशि ।

समुभो-संज्ञा स्त्री० दे० "समभू" ।

समुत्थान-संज्ञा पुं० १. उठने की क्रिया । २. उत्पत्ति । ३. आरंभ ।

समुदाय-संज्ञा पुं० १. समूह । २. मुंड ।

समुद्र-संज्ञा पुं० वह जल-राशि जो पृथ्वी के चारों ओर है । सागर । अंधुधि । उदधि ।

समुद्रफेन-संज्ञा पुं० समुद्र के पानी का फेन या झाग जिसका व्यवहार औषधि के रूप में होता है । समुंदर-फेन ।

समुद्रयात्रा-संज्ञा स्त्री० समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा ।

समुद्रयान-संज्ञा पुं० जहाज ।

समुद्रलवण-संज्ञा पुं० करकच लवण जो समुद्र के जल से बनता है ।

समुन्नति-संज्ञा स्त्री० काफी तरक्की ।

समुत्थास-संज्ञा पुं० १. उछास । खुशी । २. अंग का प्रकरण या परिच्छेद ।

समुहाना-क्रि० भ० सामने आना ।

समूल-वि० १. जिसमें मूल या जड़ हो । २. कारण सहित ।

क्रि० वि० जड़ से । मूल सहित ।

समूह-संज्ञा पुं० बहुत सी चीजों का ढेर ।

समृद्ध-वि० संपन्न । घनवान् ।

समृद्धि-संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक संपन्नता । अमीरी ।

समेटना-क्रि० स० बिलखी हुई चीजों

को इकट्ठा करना ।

समेत-अव्य० सहित । साथ ।

सम्मत-वि० जिसकी राय मिलती हो । अनुमत ।

सम्मति-संज्ञा स्त्री० सलाह । राय ।

सम्मन-संज्ञा पुं० अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाज़िर होने का हुक्म दिया जाता है ।

सम्मान-संज्ञा पुं० इज्जत । मान । गौरव । प्रतिष्ठा ।

सम्मानित-वि० प्रतिष्ठित । इज्जत-दार ।

सम्मिलन-संज्ञा पुं० मिलाप । मेल ।

सम्मिलित-वि० मिला हुआ । मिश्रित ।

सम्मिश्रण-संज्ञा पुं० १. मिलाने की क्रिया । २. मिलावट ।

सम्मुख-अव्य० सामने । समच ।

सम्मेलन-संज्ञा पुं० १. मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज । २. जमावड़ा । ३. मिलाप ।

सम्मोहन-संज्ञा पुं० १. मोहित या भ्रम करना । २. एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे ।

सम्राज्ञी-संज्ञा स्त्री० १. सम्राट् की पत्नी । २. साम्राज्य की अधीश्वरी ।

सम्राट्-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा राजा ।

सयन-संज्ञा पुं० दे० "शयन" ।

सयानपन-संज्ञा पुं० चालाकी ।

सयाना-संज्ञा पुं० १. अधिक अवस्था-वाला । २. बुद्धिमान् । ३. धूर्त ।

सर-संज्ञा पुं० ताल । तालाव ।

संज्ञा स्त्री० चिता ।

संज्ञा पुं० सिर ।

वि० जीता हुआ ।

सजना-कि० स० शृंगार करना ।

कि० अ० सुसजित होना ।

सजल-वि० १. जल से युक्त या पूर्ण । २. आसुओं से पूर्ण । (आँख)

सज्जवाई-संज्ञा स्त्री० सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

सज्जवाना-कि० स० किसी के द्वारा सुसजित कराना ।

सज्जा-संज्ञा स्त्री० दंड ।

सज्जाई-संज्ञा स्त्री० सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

सत्तातीय-वि० एक जाति या गोत्र का ।

सज्जाना-कि० स० १. वस्तुओं को यथास्थान रखना । तत्तीव लगाना । २. अलंकृत करना ।

सज्जाय-संज्ञा स्त्री० दे० "सज्जा" ।

सज्जायाफता, सज्जायाच-संज्ञा पुं० वह जो फौद की सज्जा भोग चुका हो ।

सज्जाय-संज्ञा पुं० एक प्रकार का दही ।

सज्जायद-संज्ञा स्त्री० सजित होने का भाव या धर्म ।

सज्जीला-वि० १. सज्जब के साथ रहनेवाला । २. सुंदर । मनोहर ।

सज्जीय-वि० १. जिसमें प्राण हों । २. शीघ्रयुक्त ।

सज्जीवन-संज्ञा पुं० दे० "सज्जीवनी" ।

सज्जीवनमूल-संज्ञा पुं० दे० "सज्जीवनी" ।

सज्जीवनी मंत्र-संज्ञा पुं० वह कल्पित मंत्र जिसके संवध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए को जिंदा करने की शक्ति रखता है ।

सज्जरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

सज्जाना-कि० स० दे० "सज्जाना" ।

सज्ज-संज्ञा पुं० दे० "साज" ।

सज्जन-संज्ञा पुं० भला आदमी । शरीफ ।

सज्जनता-संज्ञा स्त्री० सज्जन होने का भाव । भलमसाहत । सौजन्य ।

सज्जनताई-संज्ञा स्त्री० दे० "सज्जनता" ।

सज्जा-संज्ञा स्त्री० १. पेप-भूषा । २. मोने की चारपाई । शय्या । ३. दे० "शय्यादान" ।

सज्जित-वि० १. सज्जा हुआ । २. आवश्यक वस्तुओं से युक्त ।

सज्जी-संज्ञा स्त्री० भूरे रंग का एक प्रसिद्ध चार ।

सज्जीखार-संज्ञा पुं० दे० "सज्जी" ।

सज्जान-वि० १. ज्ञान-युक्त । २. चतुर ।

सज्जक-संज्ञा स्त्री० तंबाकू पीने का लंबा खचीखा नैचा ।

सज्जकना-कि० अ० धीरे से खिसक जाना । चंपत होना ।

सज्जकाना-कि० स० धड़ी, कोड़े आदि से मारना ।

सज्जकारी-संज्ञा स्त्री० पसली धड़ी ।

सज्जना-कि० अ० चिपकना ।

सज्जपटाना-कि० अ० दे० "सिटपिटाना" ।

सज्ज पज्ज-वि० तुच्छ । मामूली । संज्ञा स्त्री० बखेड़े का या तुच्छ काम ।

सज्जाना-कि० स० दो चीजों के पायों को आपस में मिलाना ।

सज्जीक-वि० १. व्याख्या सहित । २. विव्रकुट्ट टीक ।

सज्जा-संज्ञा पुं० इकरारनामा ।

सज्जी-संज्ञा स्त्री० वह चाक़ार जिसमें एक ही मेल की चीज़ें जोग जाकर बेचते हैं । हाट ।

सरस्वती नाम-संज्ञा पुं० सामग्री ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० सरस्वती की जाति का एक पौधा ।  
 सरस्वती-कि० भ० सिसुवृक्षा ।  
 सरस्वती-वि० वृद्ध । बृद्ध ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० १. माखिल । २. राज्य-संस्था ।  
 सरस्वती-वि० राज्य का । राजकीय ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० १. वह दृष्टावेष्ट जिते पर महान आदि किंवा पर दिष्ट जाने की शक्ति देती है । २. दिष्ट और लुप्त हुए अथवा आदि का बोध । ३. आज्ञाप्रदा । परवाना ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग" ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० सरदार । अगुवा ।  
 सरस्वती-वि० जोशीला । आवेशपूर्ण ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० मधुमक्खी ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० १. सरदार । २. सिंह ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० मार्ग । रास्ता ।  
 सरस्वती-वि० दे० "सर्व" ।  
 सरस्वती-वि० सरस्वती के रंग का । हरा-पन बिष्ट पीला ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बढ़िया सुगन्ध ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० नायक । अगुवा ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० सरदार का पद या भाव ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० दे० "शरण" ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० दे० "सिंहल द्वीप" ।  
 सरस्वती-वि० प्रसिद्ध । मशहूर ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० १. शीर्षक । २. पत्र का आरंभ या संबोधन । ३. पत्र पर लिखा जानेवाला पता ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० पंथों में बड़ा व्यक्ति ।

पंचायत का समापति ।  
 सरस्वती-वि० बहुत तेज़ दौड़ ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० कुश की तरह की एक घास जो सुप्तर आदि स्थानों के काम में आती है ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० अभिभावक । संरक्षक ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० पगड़ी के ऊपर लगाने का एक लड़ाऊ गहना ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० थाल या तरतरी ठकने का कपड़ा ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० तीरंदाज । धनुर्धर ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० प्रयत्नकर्ता । कारिदा ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० किसी कार्य का प्रयत्न करनेवाला । कारिदा ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व" ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया । ( वैदिक ) २. कुतिया ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० बचर भारत की एक प्रसिद्ध नदी ।  
 सरस्वती-वि० भ० हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना ।  
 सरस्वती-वि० १. सीधा । २. निःकपट । ३. आसान ।  
 सरस्वती-संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ा न होने का भाव । सीधापन । २. सुगमता ।  
 सरस्वती-निर्यास-संज्ञा पुं० १. गंधा-विरोधा । २. तारपीन का तेल ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० सूर्य के पुत्र जो अपने पिता को एक चढ़ाई में बैठाकर डोया करते थे ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० दे० "श्रवण" ।  
 सरस्वती-संज्ञा पुं० दे० "सरोवर" ।

सठ-संज्ञा पुं० दे० "शठ" ।  
 सठता-संज्ञा स्त्री० १. शठ होने का भाव । शठता । २. मूर्खता ।  
 सठियाना-क्रि० भ० १. साठ बरस का होना । २. बुढ़ा होना ।  
 सड़क-संज्ञा स्त्री० थाने-जाने का चौड़ा रास्ता । राजमार्ग । राजपथ ।  
 सड़ना-क्रि० भ० किसी पदार्थ में ऐसा विकार हो जाय जिससे उसमें दुर्गंध आने लगे ।  
 सड़ाना-क्रि० स० किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना ।  
 सड़ायँध-संज्ञा स्त्री० सड़ी हुई चीज़ की गंध ।  
 सड़ासड़-अव्य० सड़ शब्द के साथ । जिसमें सड़ शब्द हो ।  
 सत-संज्ञा पुं० १. प्रज्ञा । २. मूल-सत्त्व । ३. जीवन्ती शक्ति । ताकत ।  
 वि० १. शुद्ध । २. दे० "सत्" ।  
 ३. दे० "शत" ।  
 सतगुरु-संज्ञा पुं० १. अच्छा गुरु । २. परमात्मा । परमेश्वर ।  
 सतजुग-संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग" ।  
 सतत-अव्य० सदा । हमेशा ।  
 सतफेरा-संज्ञा पुं० विवाह के समझ का सतपदी कर्म ।  
 सतमासा-संज्ञा पुं० वह वक्ता जो गर्भ के सातवें महीने उत्पन्न हो ।  
 सतयुग-संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग" ।  
 सतर-संज्ञा स्त्री० १. लकीर । रेखा । २. पंक्ति । थवली । कृतार ।  
 वि० देढ़ा । चक्र ।  
 सतराना-क्रि० भ० १. क्रोध करना । २. चिढ़ना ।

सतर्क-वि० १. युक्ति से युक्त । २. सावधान ।  
 सतलंज-संज्ञा स्त्री० पंजाब की पाँच नदियों में से एक । शतद्रु नदी ।  
 सतर्चती-वि० स्त्री० सतवाली । सती । पतिव्रता ।  
 सतसई-संज्ञा स्त्री० सप्तशती ।  
 सतह-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु का ऊपरी भाग ।  
 सतानंद-संज्ञा पुं० गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे ।  
 सताना-क्रि० स० सताप देना । दुःख देना ।  
 सतालू-संज्ञा पुं० श. फतालू ।  
 सतावर-संज्ञा स्त्री० एक घेल जिसकी छद्म और बीज औषध के काम में आते हैं । शतमूली ।  
 सतिधन-संज्ञा पुं० क्षतिधन ।  
 सती-वि० स्त्री० साध्वी । पतिव्रता ।  
 संज्ञा स्त्री० १. दण्ड प्रजापति की कन्या जो शिव की व्याही थी । २. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले ।  
 सतीत्व-संज्ञा पुं० सती होने का भाव । पातिव्रत्य ।  
 सतीत्व-हरण-संज्ञा पुं० पर-स्त्री के साथ बलात्कार । सतीत्व दिगाङ्गना ।  
 सतुआ-संज्ञा पुं० दे० "सत्" ।  
 सतून-संज्ञा पुं० स्तंभ । खंभा ।  
 सतोगुण-संज्ञा पुं० दे० "सत्त्वगुण" ।  
 सतोगुणी-संज्ञा पुं० सत्त्वगुणवाला । सात्त्विक ।  
 सत्कर्म-संज्ञा पुं० १. अच्छा काम । २. धर्म का काम । पुण्य ।

सरघरि-संज्ञा स्त्री० घाघरी ।

सरघाफ-संज्ञा पुं० १. संपुट । प्याला ।

२. दीया । कसोरा ।

सरघान-संज्ञा पुं० तंबू । खेमा ।

सरस-वि० १. रसयुक्त । रसीला ।

२. गीला । ३. सुंदर । ४. जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो । भावपूर्ण ।

५. बढ़कर ।

सरसई-संज्ञा स्त्री० सरस्वती नदी या देवी ।

संज्ञा स्त्री० १. सरसता । रसपूर्णता ।

२. हरापन । ताज़ापन ।

सरसना-क्रि० भ० १. हरा होना । पनपना । २. बढ़ना । ३. भाव की वमंग से भरना ।

सरसझ-वि० हरा-भरा । छह-छहाता हुआ ।

सर-सर-संज्ञा पुं० १. ज़मीन पर रेंगने का शब्द । २. वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि ।

सरसराना-क्रि० भ० वायु की ध्वनि । सनसनाना ।

सरसराहट-संज्ञा स्त्री० १. सर्प आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि । २. वायु बहने का शब्द ।

सरसरी-वि० १. जलदी में । २. मोटे तौर पर ।

सरसाई-संज्ञा स्त्री० १. सरसता । २. शोभा । सुंदरता । ३. अधिकता ।

सरसाना-क्रि० स० १. रसपूर्ण करना । २. हरा-भरा करना ।

क्रि० भ० दे० १. "सरसना" । २. शोभा देना । सजना ।

सरसार-वि० १. मग्न । २. चूर । मदमग्न । (नयों में)

सरसिज-संज्ञा पुं० १. वह जो ताल

में होता हो । २. कमल ।

सरसिरुह-संज्ञा पुं० कमल ।

सरसी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा सरोवर ।

तलैया । २. पुष्करिणी । घावली ।

सरसीरुह-संज्ञा पुं० कमल ।

सरसेटना-क्रि० स० खरी-खोटी सुनाना । फटकारना ।

सरसों-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकलता है ।

सरस्वती-संज्ञा स्त्री० १. पंजाब की एक प्राचीन नदी । २. विद्या या वाणी की देवी । वाग्देवी । भारती ।

शारदा । ३. विद्या । इक्ष्म ।

सरस्वती-पूजा-संज्ञा स्त्री० सरस्वती का उसव जो कहीं वसंतपंचमी को धर धर कहीं आश्विन में होता है ।

सरह-संज्ञा पुं० १. पतंग । २. टिड्डी ।

सरहज-संज्ञा स्त्री० साँसे की छी ।

सरहटी-संज्ञा स्त्री० सर्पाची नाम का पौधा । मकुलकंद ।

सरहद-संज्ञा स्त्री० सीमा ।

सरहदी-वि० सीमा-संबंधी ।

सरहरी-संज्ञा स्त्री० मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा ।

सरा-संज्ञा स्त्री० १. चिता । २. दे० "सराय" ।

सराई-संज्ञा स्त्री० शलाका ।

सराध-संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध" ।

सराप-संज्ञा पुं० दे० "शाप" ।

सरापना-क्रि० स० घद दुआ देना ।

सराफ-संज्ञा पुं० १. सोने-चाँदी का व्यापारी । २. रुपय पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार ।

सराफा-संज्ञा पुं० १. रुपय-पैसे या सोने-चाँदी के खेन-देन का काम ।

सत्कार-संज्ञा पुं० आदर । सम्मान ।  
जातिरदारी ।

सत्कार्य-संज्ञा पुं० उत्तम कार्य ।  
अष्टा काम ।

सत्कीर्ति-संज्ञा स्त्री० यश । नेकनामी ।  
सत्कुल-संज्ञा पुं० उत्तम कुल । अच्छा  
या बड़ा खानदान ।

सत्त-संज्ञा पुं० १. सार भाग । असली  
हुड़ । २. तत्त्व ।  
१० संज्ञा पुं० १. सत्य । सच बात ।  
२. सतीत्य ।

सत्ता-संज्ञा स्त्री० १. होने का भाव ।  
हस्ती । २. शक्ति । ३. अधिकार ।  
प्रभुत्व । हुकूमत ।  
संज्ञा पुं० तारा या गंजीफे का वह  
पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों ।

सत्ताधारी-संज्ञा पुं० अधिकारी ।  
अफसर ।

सत्त-संज्ञा पुं० मुने हुए जौ और चने  
का चूर्ण । सतुआ ।

सत्पथ-संज्ञा पुं० १. उत्तम मार्ग ।  
२. सदाचार । अच्छी चाल ।

सत्पात्र-संज्ञा पुं० १. दान आदि देने  
के योग्य उत्तम व्यक्ति । २. देव  
और सदाचारी ।

सत्पुरुष-संज्ञा पुं० भला आदमी ।  
सत्य-वि० १. यथार्थ । सही । २.  
असल ।

संज्ञा पुं० ठीक बात । यथार्थ तत्त्व ।  
सत्यकाम-वि० सत्य का प्रेमी ।

सत्यतः-अव्य० वास्तव में । सचमुच ।  
सत्यता-संज्ञा स्त्री० सत्य होने का  
भाव । सचाई ।

सत्यनारायण-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
सत्यमामा-संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की

आठ पटरानियों में से एक ।  
सत्ययुग-संज्ञा पुं० चार युगों में से  
पहला जो सबसे उत्तम माना  
जाता है ।

सत्यवती-संज्ञा स्त्री० मास्यगंधा नामक  
धीवर-कन्या जिसके गर्भ से कृष्ण  
द्वैपायन या व्यासकी उत्पत्ति हुई थी ।

सत्यवादी-वि० सत्य कहनेवाला ।  
सत्यवान-संज्ञा पुं० शादव देश के  
राजा धर्मसेन का पुत्र जिसकी  
पत्नी सौमित्री के पातिमाय की  
कथा प्रसिद्ध है ।

सत्यमत-संज्ञा पुं० सत्य धोखे की  
प्रतिज्ञा या नियम ।

सत्यसंघ-वि० सत्य-प्रतिज्ञ । वचन  
को पूरा करनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. रामचंद्र । २. जगन्नेश्वर ।  
सत्याग्रह-संज्ञा पुं० किसी सत्य या  
व्यापपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये  
शांतिपूर्वक निरंतर हठ करना ।

सत्यानास-संज्ञा पुं० सभं नाश ।  
मटियाभेट ।

सत्यानासी-वि० सत्यानास करने-  
वाला ।

संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पैया ।  
सत्र-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ अल-  
हायों को भोजन पौटा जाता है ।  
क्षेत्र । सदावर्त ।

सत्रहन-संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न" ।  
सत्त्व-संज्ञा पुं० १. सत्ता । २. सार ।  
तत्त्व ।

सत्यगुण-संज्ञा पुं० अच्छे कर्मों की  
और प्रवृत्त करनेवाला गुण ।

सत्संग-संज्ञा पुं० माधुर्घों या सज्जनों  
के साथ बैठना-बैठना । भली संगत ।  
सत्संगति-संज्ञा स्त्री० दे० "सत्संग" ।



२. सराफों का बाज़ार ।  
 सराफी-संज्ञा स्त्री० चाँदी-सोने या  
 रुपए-पैसे के लेन देन का रोज़गार ।  
 सरावोर-वि० तरयतर । आधुनिक ।  
 सराय-संज्ञा स्त्री० यात्रियों के ठहरने  
 का स्थान । मुसाफिरखाना ।  
 सराचा-संज्ञा पुं० १. मधुपात्र ।  
 २. दीया ।  
 सरावग, सरावगी-संज्ञा पुं० जैन-  
 धर्म में माननेवाला । जैन ।  
 सरासन-संज्ञा पुं० दे० "शरासन" ।  
 सरासर-अव्य० १. एक सिरे से दूसरे  
 सिरे तक । २. साक्षात् । प्रत्यक्ष ।  
 सरासरी-संज्ञा स्त्री० १. आसानी ।  
 २. शीघ्रता । ३. मोटा अंदाज़ ।  
 कि० वि० १. अवदों में । हड़बड़ी में ।  
 २. मोटे तौर पर ।  
 सराह-संज्ञा स्त्री० प्रशंसा ।  
 सराहना-कि० स० तारीफ़ करना ।  
 संज्ञा स्त्री० प्रशंसा ।  
 सराहनीय-वि० १. प्रशंसा के  
 योग्य । २. अच्छा ।  
 सरि-संज्ञा स्त्री० १. नदी । २. धरा-  
 धरी । समता ।  
 सरित्-संज्ञा स्त्री० नदी ।  
 सरिता-संज्ञा स्त्री० १. धारा । २.  
 नदी । दरिया ।  
 सरियाना-कि० स० तालीब से  
 लगाकर हकट्टा करना ।  
 सरिवन-संज्ञा पुं० शालपत्र नाम का  
 पेधा । त्रिपर्णी ।  
 सरिवरि-संज्ञा स्त्री० घराबरी ।  
 सरिश्ता-संज्ञा पुं० १. अदालत । २.  
 काय्यालय का विभाग । महकमा ।  
 सरिश्तेदार-संज्ञा पुं० १. किसी  
 विभाग का प्रधान कर्मचारी । २.

अदालतों में देखी भाषार्थी में मुकद-  
 मों की मिसलों रखनेवाला कर्मचारी ।  
 सरिस-वि० सद्यः ।  
 सरीखा-वि० तुल्य ।  
 सरीफा-संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़  
 जिसके गोख फल खाए जाते हैं ।  
 सरीर-संज्ञा पुं० दे० "शरीर" ।  
 सखज-वि० रोगी ।  
 सख-वि० क्रोध-युक्त ।  
 सरुहाना-कि० स० रोमयुक्त करना ।  
 सरुप-वि० १. आकारवाला । २.  
 समान । ३. रूपवान् । सुंदर ।  
 संज्ञा पुं० दे० "सरूप" ।  
 सरुर-संज्ञा पुं० १. खुशी । २. हलका  
 नशा ।  
 सरेखा-वि० चालाक । सपाना ।  
 सरेखना-कि० स० दे० "सहेजना" ।  
 सरे दस्त-कि० वि० इस समय ।  
 अभी ।  
 सरे-बाज़ार-कि० वि० १. जनता के  
 सामने । २. सबके सामने ।  
 सरो-संज्ञा पुं० एक सीधा पेड़ जो  
 बगीचों में शोभा के लिये लगाया  
 जाता है । बनझाड़ ।  
 सरोकार-संज्ञा पुं० १. परस्पर व्यव-  
 हार का संबंध । २. लगाव ।  
 सरोज-संज्ञा पुं० कमल ।  
 सरोजना-कि० स० पाना ।  
 सरोजिनी-संज्ञा स्त्री० १. कमलों से  
 भरा हुआ ताल । २. कमलों का  
 समूह । ३. कमल का फूल ।  
 सरोद-संज्ञा पुं० धीन की तरह का  
 एक प्रकार का बाजा ।  
 सरोरुह-संज्ञा पुं० कमल ।  
 सरोवर-संज्ञा पुं० १. तालाब । २.  
 झील ।

सत्संगी-वि० अच्छी सोहयत में रहनेवाला ।

सधिया-संज्ञा पुं० एक प्रकार का मंगल-सूचक या सिद्धिदायक चिह्न ।

स्वस्तिक चिह्न 卐 ।

सदन-संज्ञा पुं० घर । मकान ।

सदमा-संज्ञा पुं० आघात । धक्का ।

सदय-वि० दयायुक्त । दयालु ।

सदर-वि० प्रधान । मुख्य ।

संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ कोई बड़ा हाकिम रहता हो ।

सदर-आला-संज्ञा पुं० अदाबत का वह हाकिम जो जज के नीचे का हो । छोटा जज ।

सदरी-संज्ञा स्त्री० बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती ।

सदसद्विवेक-संज्ञा पुं० अच्छे और बुरे की पहचान । भले-बुरे का ज्ञान ।

सदस्य-संज्ञा पुं० सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति । सभासद । मेंबर ।

सदा-अव्य० नित्य । हमेशा ।

सदाचरण, सदाचार-संज्ञा पुं० १. अच्छा आचरण । २. भलमनसाहता ।

सदाचारी-संज्ञा पुं० १. अच्छे आचरणवाला पुरुष । २. धर्मात्मा ।

सदाफल-वि० सदा फलनेवाला ।

संज्ञा पुं० १. गूजर । २. श्रीफल । बेल । ३. नारियल । ४. एक प्रकार का लीनू ।

सदाचर्त-संज्ञा पुं० नित्य भूखों और दीनों को भोजन बांटना ।

सदा-व्यहार-वि० १. जो सदा फूले । २. जो सदा हरा रहे । ( वृक्ष )

सदाशय-वि० जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो ।

सदाशिव-संज्ञा पुं० महादेव ।

सदा-सुहागिन-संज्ञा स्त्री० वेश्या । रंडी । ( विनोद )

सदिशा-संज्ञा स्त्री० वह लाज पत्नी जिसका शरीर भूरे रंग का होता है ।

लाज पत्नी की मादा ।

सदी-संज्ञा स्त्री० सौ वर्षों का समूह । शताब्दी ।

सदुपदेश-संज्ञा पुं० अच्छा उपदेश ।

सदृश-वि० समान । अनुरूप ।

सदेह-कि० वि० बिना शरीर-स्नान किए ।

सदैव-अव्य० सदा । हमेशा ।

सद्गति-संज्ञा स्त्री० मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति ।

सद्गुण-संज्ञा पुं० अच्छा गुण ।

सद्गुद-संज्ञा पुं० १. अच्छा गुद । २. परमात्मा ।

सद्ग्रंथ-संज्ञा पुं० अच्छा ग्रंथ ।

सद्भाव-संज्ञा पुं० १. प्रेम और हित का भाव । २. सच्चा भाव ।

सधना-कि० अ० १. सिद्ध होना । २. निशाना ठीक होना ।

सधवा-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो । सुहागिन ।

सन-संज्ञा पुं० १. वर्ष । २. संवत् ।

सन-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशों से रस्तियाँ आदि बनती हैं ।

संज्ञा स्त्री० वेग से निकलने का शब्द ।

सनई-संज्ञा स्त्री० छोटी जाति का सन ।

सनक-संज्ञा स्त्री० किसी बात की धुन ।

संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक ।

सनकना-कि० अ० पागल हो जाना । पगलाना ।

सरोप-वि० क्रोधयुक्त ।

सरो-सामान-संज्ञा पुं० सामग्री ।

रूपकरण । असबाब ।

सरोता-संज्ञा पुं० सुपारी काटने का

एक प्रसिद्ध औजार ।

सर्ग-संज्ञा पुं० १. गमन । गति । २.

विहीन द्रव्य ( विशेषतः काव्य ) का

अध्याय । प्रकरण ।

सर्गबंध-वि० जो कई अध्यायों में

विभक्त हो ।

सर्गुनी-वि० दे० "सगुण" ।

सर्ज-संज्ञा पुं० १. बड़ा जाति का

शाल वृक्ष । २. राज । ३. सज्ज

का पेड़ ।

सज्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "सयू" ।

सर्द-वि० टंडा ।

सर्दी-संज्ञा स्त्री० सर्द होने का भाव ।

शीतलता ।

सर्प-संज्ञा पुं० १. सर्प । २. एक

श्लेष्म जाति ।

सर्पकाल-संज्ञा पुं० गरुड़ ।

सर्पराज-संज्ञा पुं० १. शेषनाग । २.

वासुकि ।

सर्पविद्या-संज्ञा स्त्री० सर्प को पकड़ने

या वश में करने की विद्या ।

सांपणी-संज्ञा स्त्री० १. सापिन । २.

मुजगी लता ।

सर्फ-संज्ञा पुं० सूर्च किया हुआ ।

सर्फी-संज्ञा पुं० व्यय ।

सर्वस-संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व" ।

सर्पाफ-संज्ञा पुं० दे० "सराफ" ।

सर्व-वि० सब । कुल ।

सर्वकाम-संज्ञा पुं० शिव ।

सर्वगत-वि० सर्वव्यापक ।

सर्वप्राप्त-संज्ञा पुं० चंद्र या सूर्य का

पूर्ण ग्रहण ।

सर्वज्ञ-वि० सब कुछ जाननेवाला ।

संज्ञा पुं० ईश्वर ।

सर्वज्ञता-संज्ञा स्त्री० 'सर्वज्ञ' का

भाव ।

सर्वतंत्र-संज्ञा पुं० सब प्रकार के शास्त्र-

सिद्धांत ।

सर्वतः-अव्य० १. सब ओर । २.

सब प्रकार से ।

सर्वतोभद्र-वि० १. सब ओर से

रंगल । २. जिसके तिर, दाढ़ी,

मुँह आदि सबके बाज मुँहें हों ।

सर्वतोभाव-अव्य० अच्छी तरह ।

भली भाँति ।

सर्वतोमुख-वि० १. जिसका मुँह

चारों ओर हो । २. व्यापक ।

सर्वत्र-अव्य० सब कहीं ।

सर्वथा-अव्य० सब प्रकार से ।

सर्वदर्शी-संज्ञा पुं० सब कुछ देखने-

वाला ।

सर्वदा-अव्य० हमेशा । सदा ।

सर्वनाश-संज्ञा पुं० सत्त्वनाश ।

सर्वप्रिय-वि० जो सबको अच्छा लगे ।

सर्वमन्त्री-संज्ञा पुं० १. सब कुछ

खानेवाला । २. अग्नि ।

सर्वमोक्षी-वि० सबका मोक्ष देने-

वाला ।

सर्वमंगला-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । २.

लक्ष्मी ।

सर्वरी०-संज्ञा स्त्री० दे० "शर्मरी" ।

सर्वव्यापक-संज्ञा पुं० दे० "सर्व-

व्यापी" ।

सर्वव्यापी-वि० सब में रहनेवाला ।

**सनकारना**—कि० स० संकेत करना । इशारा करना ।

**सनत्-संज्ञा** पुं० ब्रह्मा ।

**सनत्कुमार-संज्ञा** पुं० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक । वैधात्र ।

**सनद्-संज्ञा** स्त्री० १. प्रमाण । सबूत ।

२. प्रमाण-पत्र । सर्टिफिकेट ।

**सनदया-फता-वि०** जिसे किसी बात की सनद मिली हो ।

**सनना-कि०** भ० १. गीला होकर खेई के रूप में मिलना । २. छीन होना ।

**सनम-संज्ञा** पुं० प्रिय । प्यारा ।

**सनमान-संज्ञा** पुं० दे० "सम्मान" ।

**सनमानना-कि०** स० स्थातिर करना ।

**सनमुख-अभ्य०** दे० "संमुख" ।

**सनसनी-संज्ञा** स्त्री० १. कनकनाइट । २. धमराइट ।

**सनहकी-संज्ञा** स्त्री० मिट्टी का एक भस्म । ( मुसलमान )

**सनाख्य-संज्ञा** पुं० यादवों की एक शाखा जो गौड़ों के अवर्गत है ।

**सनातन-संज्ञा** पुं० प्राचीन परंपरा । बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम ।

वि० आर्यत प्राचीन ।

**सनातन धर्म-संज्ञा** पुं० १. प्राचीन या परंपरागत धर्म । २. वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमें पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-साहारभ्य आदि सब समान रूप से माननीय हैं ।

**सनातन पुरुष-संज्ञा** पुं० विष्णु भगवान् ।

**सनातनी-संज्ञा** पुं० सनातन धर्म का

अनुयायी ।

**सनाथ-वि०** जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो ।

**सनाथ-संज्ञा** स्त्री० एक पैधा जिसकी पत्थियाँ दस्तावर होती हैं । सोनामुखी ।

**सनाह-संज्ञा** पुं० कवच । बकतर ।

**सनीचर-संज्ञा** पुं० दे० "शनैश्चर" ।

**सनेह-संज्ञा** पुं० दे० "स्नेह" ।

**सनेहिया-संज्ञा** पुं० दे० "सनेही" ।

**सनेही-वि०** स्नेह या प्रेम रखनेवाला ।

**सनावर-संज्ञा** पुं० बीड़ । ( पेड़ )

**सन्न-वि०** १. संज्ञा-शून्य । स्वच्छ ।

२. डर से चुप ।

**सन्नद्ध-वि०** १. बैधा हुआ । २. उद्यत । ३. लगा हुआ ।

**सन्नाटा-संज्ञा** पुं० १. निःशब्दता । नीरवता । निःस्वच्छता । २. निर्जनता ।

**सन्निकट-अभ्य०** समीप । पास ।

**सन्निकर्ष-संज्ञा** पुं० १. संघर्ष । २. समीपता ।

**सन्निधान-संज्ञा** पुं० १. निकटता । २. स्थापित करना ।

**सन्निधि-संज्ञा** स्त्री० १. समीपता । २. आमने-सामने की स्थिति ।

**सन्निपात-संज्ञा** पुं० कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ विगड़ना ।

त्रिदोष ।

**सन्निविष्ट-वि०** एक साथ पैदा हुआ । जमा हुआ ।

**सन्निवेश-संज्ञा** पुं० १. एक साथ बैठना । २. बैठना । समाना ।

**सन्निहित-वि०** एक साथ या पास रखा हुआ ।

**सम्मान-संज्ञा** पुं० दे० "सम्मान" ।

**संमुख-अभ्य०** दे० "संमुख" ।

सर्वशक्तिमान्-वि० सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला ।

संज्ञा पुं० ईश्वर ।

सर्वश्रेष्ठ-वि० सब से उत्तम ।

सर्वसाधारण-संज्ञा पुं० जनता । आम लोग ।

वि० जो सब में पाया जाय ।

सर्वसामान्य-वि० जो सब में एक सा पाया जाय । सामूहिक ।

सर्वस्व-संज्ञा पुं० सब कुछ ।

सर्वहृत्-संज्ञा पुं० १. महादेव । २. यमराज ।

सर्वांग-संज्ञा पुं० १. सारा बदन । २. सब अवयव या अंग ।

सर्वात्मा-संज्ञा पुं० शिव ।

सर्वाधिकार-संज्ञा पुं० पूरा हकित्यार ।

सर्वाधिकारी-संज्ञा पुं० १. वह जिसके हाथ में पूरा हकित्यार हो । २. हाकिम ।

सर्वांगी-वि० सर्वभंगी ।

सर्वेश, सर्वेश्वर-संज्ञा पुं० १. सब का स्वामी । २. ईश्वर । ३. चक्रवर्ती राजा ।

सर्वोपधि-संज्ञा स्त्री० शोपधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं ।

सलई-संज्ञा स्त्री० १. चीड़ । २. कुंदुर ।

सलगम-संज्ञा पुं० दे० "शलगम" ।

सलज्ज-वि० जिसे लज्जा हो ।

सलतनत-संज्ञा स्त्री० राज्य । बादशाहत ।

सलमा-संज्ञा पुं० सोने या चाँदी का गोला छपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे

बनाने के काम में आता है । बादला । सलहज्ज-संज्ञा स्त्री० सरहज ।

सलई-संज्ञा स्त्री० १. घातु का बना हुआ बोंई पतला छोटा छड़ । २. सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

सलाक-संज्ञा पुं० तीर ।

सलाख-संज्ञा स्त्री० घातु का बना हुआ छड़ । शलाका ।

सलाद-संज्ञा पुं० मूली, प्याज आदि के पत्तों का खँगरेजी हंग से ढाका हुआ अचार ।

सलाम-संज्ञा पुं० प्रणाम करने की क्रिया । बंदगी । आदाब ।

सलामत-वि० १. सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ । २. परकार ।

क्रि० वि० कुराखपूर्वक ।

सलामती-संज्ञा स्त्री० १. तंदुस्तती । २. कुराख । रोम ।

सलामी-संज्ञा स्त्री० १. प्रणाम करने की क्रिया । सलाम करना । २. सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली । ३. तोपों या बन्दूकों की बाड़ जो किसी अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है ।

सलार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पत्ती ।

सलाह-संज्ञा स्त्री० सम्मति । सलाह ।

सलाहकार-संज्ञा पुं० राय देनेवाला ।

सलाही-संज्ञा पुं० दे० "सलाहकार" ।

सलिल-संज्ञा पुं० जल । पानी ।

सलिलपति-संज्ञा पुं० १. परुष । २. समुद्र ।

सलीका-संज्ञा पुं० १. शऊर । घमीड़ा ।

सन्यास-संज्ञ पुं० १. त्याग । २. दुनिया के जंजाल से अलग की अवस्था । वैराग्य । ३. चतुर्थ आश्रम । यति-धर्म ।

सन्यासी-संज्ञ पुं० १. वह पुरुष जिसने सन्यास धारण किया हो । २. विरागी ।

सपक्ष-वि० जो अपने पक्ष में हो । तरफदार ।

संज्ञ पुं० १. मित्र । सहायक । २. न्याय में वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो ।

सपत्नी-संज्ञ स्त्री० एक ही पति की दूसरी स्त्री । सौत ।

सपत्नीक-वि० पत्नी के सहित ।

सपना-संज्ञ पुं० यह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े । स्वप्न ।

सपरदाई-संज्ञ पुं० तवायक के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला । भंडूआ । समाजी ।

सपरैना-कि० अ० १. काम का पूरा होना । २. हो सकना ।

सपरिकर-वि० अनुचर-वर्ग के साथ । हाट-घाट के साथ ।

सपाट-वि० १. बराबर । समतल । २. चिकना ।

सपाटा-संज्ञ पुं० १. चलने या दौड़ने का घेग । २. तीव्र गति । झरट ।

सापड-संज्ञ पुं० एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंड-दान करता हो ।

सपिंडी-संज्ञ स्त्री० मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों के साथ मिलाया जाता है ।

सपूत-संज्ञ पुं० वह पुत्र जो अपने कर्तव्य का पालन करे । अच्छा पुत्र ।

सपूती-संज्ञ स्त्री० १. सपूत होने का भाव । लायकी । २. योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता ।

सपेदा-वि० दे० "सफेद" ।

सपोला-संज्ञ पुं० साँप का छोटा बच्चा ।

सप्त-वि० गिनती में सात ।

सप्तऋषि-संज्ञ पुं० दे० "सप्तर्षि" ।

सप्तक-संज्ञ पुं० १. सात वस्तुओं का समूह । २. सात स्वरों का समूह ।

सप्तद्वीप-संज्ञ पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग । जम्बू, कुश, भुव, शालमलि, क्रीच, शाक और पुष्कर द्वीप ।

सप्तपदी-संज्ञ स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर ७ परिक्रमाएँ करते हैं । भाँवर ।

सप्तपर्ण-संज्ञ पुं० छतिवन । (पेड़)

सप्तपर्णी-संज्ञ स्त्री० खजावंती लता ।

सप्त-पाताल-संज्ञ पुं० पृथ्वी के नीचे के ये सातों लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।

सप्तपुरी-संज्ञ स्त्री० ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं—अयोध्या, मथुरा, भाया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवन्तिका (वज्रिनी) और द्वारका ।

सप्तम-वि० सातवाँ ।

सप्तमी-संज्ञ स्त्री० किसी पक्ष की सातवीं तिथि ।

सप्तर्षि-संज्ञ पुं० १. सात ऋषियों का समूह या मंडल । गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ,

२. सहजीव ।-सम्यता ।  
 सलीकामंद-वि० शरद्वार । तमीज-  
 वार ।  
 सलोता-संज्ञ पु० एक प्रकार का  
 बहुत मोटा कपड़ा ।  
 सलूक-संज्ञ पु० १. धरताव । २.  
 भलाई । नेकी । उपकार ।  
 सलोना-वि० १. जिसमें नमक पड़ा  
 हो । नमकीन । २. रसीला ।  
 सुंदर ।  
 सलोनापन-संज्ञ पु० सलोना होने  
 का भाव ।  
 सल्लम-संज्ञ स्त्री० एक प्रकार का मोटा  
 कपड़ा । गाभी । गाढ़ा ।  
 सवत-संज्ञ स्त्री० दे० "सैत" ।  
 सघरस-वि० बघे के सहित ।  
 सवर्ण-वि० १. समान । सदृश । २.  
 समान वर्ण या जाति का ।  
 सर्वांग-संज्ञ पु० दे० "स्वांग" ।  
 सघा-संज्ञ स्त्री० चौपाई सहित ।  
 सवाई-संज्ञ स्त्री० [ वि० सवा ] १.  
 श्राव्य का एक प्रकार जिसमें मूज घन  
 का चतुर्धातु व्याज में देना पड़ता  
 है । २. जयपुर के महाराजाओं की  
 एक उपाधि ।  
 सवाद-संज्ञ पु० दे० "खाद" ।  
 सवादिक-वि० स्वादिष्ट ।  
 सवाब-संज्ञ पु० नेकी ।  
 सवार-संज्ञ पु० वह जो घोड़े पर  
 चढ़ा हो । श्रवरोहरी ।  
 वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा  
 हुआ ।  
 सवारी-संज्ञ स्त्री० १. किसी चीज  
 पर विशेषतः चलने के लिये चढ़ने  
 की क्रिया । २. चढ़ने की चीज ।  
 ३. जलूस ।

सवाल-संज्ञ पु० १. प्रश्न । २. माँग ।  
 सवाल-जवाब-संज्ञ पु० यहस । वाद-  
 विवाद ।  
 सविकल्प-वि० संशय-युक्त ।  
 सविता-संज्ञ पु० सूर्य ।  
 सवितापुत्र-संज्ञ पु० सूर्य के पुत्र,  
 हिरण्यवाणि ।  
 सवितासुत-संज्ञ पु० शनैश्वर ।  
 सधिनय अवज्ञा-संज्ञ स्त्री० राज्य  
 की किसी आज्ञा या कानून को न  
 मानना ।  
 सवेरा-संज्ञ पु० प्रातःकाल । सुबह ।  
 सवैया-संज्ञ पु० सौख्यने का सवा सेर  
 का घाट ।  
 सव्य-वि० धार्य ।  
 संज्ञ पु० यज्ञोपवीत ।  
 सव्यसाची-संज्ञ पु० अर्जुन ।  
 सशंक-वि० जिसे शंका हो । भय-  
 भीत ।  
 ससिधर-संज्ञ पु० चंद्रमा ।  
 सची-संज्ञ स्त्री० दे० "शची" ।  
 ससुर-संज्ञ पु० पति या पत्नी का पिता ।  
 ससुराल-संज्ञ स्त्री० पति या पत्नी के  
 पिता का घर ।  
 सस्ता-वि० थोड़े मूल्य का ।  
 सस्ताना-वि० कि० म० किसी वस्तु का  
 कम दाम पर बिकना ।  
 सस्ती-संज्ञ स्त्री० १. सस्ता होने का  
 भाव । २. वह समय जब कि सब  
 चीजें सस्ती मिलें ।  
 सह-संज्ञ सहित ।  
 सहकार-संज्ञ पु० सहायक ।  
 सहकारता-संज्ञ स्त्री० सहायता ।  
 सहकारिता-संज्ञ स्त्री० सहायता ।  
 सहकारी-संज्ञ पु० सहायक । मदद-  
 गार ।

सहगमन-संज्ञा पुं० पति के शव के साथ पत्नी का सती होना ।

सहगामिनी-संज्ञा स्त्री० स्त्री ।

सहगामी-संज्ञा पुं० साथी ।

सहगोन-संज्ञा पुं० दे० "सहगमन" ।

सहचर-संज्ञा पुं० सेवक । नौकर ।

सहचरी-संज्ञा स्त्री० १. सहचर का स्त्री० रूप । २. पत्नी । जोरु । ३. सखी ।

सहचार-संज्ञा पुं० संग । सोहबत ।

सहचारिणी-संज्ञा स्त्री० साथ में रहनेवाली ।

सहचारिता-संज्ञा स्त्री० सहचारी होन का भाव ।

सहचारी-संज्ञा पुं० १. संगी । २. सेवक ।

सहज-वि० १. साधारण । २. सरल । आसान ।

सहज पंथ-संज्ञा पुं० गौड़ीय वैष्णव . संप्रदाय का एक निम्न वर्ग ।

सहजात-वि० सहोदर ।

सहजाना-कि० प्र० दे० "सुखाना" ।

सहजानी-संज्ञा स्त्री० नियानी । पहचान ।

सहदेई-संज्ञा स्त्री० कुप जाति की एक पहाड़ी वनौपधि ।

सहदेव-संज्ञा पुं० राजा पांडु के सबसे छोटे पुत्र ।

सहधर्मचारिणी-संज्ञा स्त्री० पत्नी ।

सहन-संज्ञा पुं० सहने की क्रिया । बरदाश्त करना ।

संज्ञा पुं० १. मकान के बीच में या सामने का खुला छोटा हुआ भाग । शींगल । २. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा ।

सहनभंडार-संज्ञा पुं० १. कोष । खजाना । २. धन-राशि ।

सहनशील-वि० बरदाश्त करनेवाला । सहिष्णु ।

सहना-कि० प्र० स० बरदाश्त करना । खेलना । भोगना ।

सहनीय-वि० सहन करने योग्य ।

सहपाठी-संज्ञा पुं० वह जो साथ में पढ़ा हो । सहाध्यायी ।

सहभोज, सहभोजन-संज्ञा पुं० एक साथ बैठकर भोजन करना ।

सहभोजी-संज्ञा पुं० वे जो एक साथ बैठकर खाते हों ।

सहम-संज्ञा पुं० १. डर । भय । २. संकोच ।

सहमत-वि० एक मत का ।

सहमना-कि० प्र० भयभीत होना । डरना ।

सहमरण-संज्ञा पुं० स्त्री का मृत पति के शव के साथ सती होना ।

सहमृता-संज्ञा स्त्री० सती ।

सहयोग-संज्ञा पुं० १. साथ मिलकर काम करने का भाव । २. सहायता ।

सहयोगी-संज्ञा पुं० सहायक । मददगार ।

सहराना-कि० प्र० दे० "सहजाना" ।

कि० प्र० डर से कांपना ।

सहरी-संज्ञा स्त्री० १. सफरी मकली । २. दे० "सहरगही" ।

सहल-वि० जो कठिन न हो ।

सहछाना-कि० प्र० धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना । सुहराना ।

कि० प्र० सुदुगुदी होना । सुखाना ।

सहवास-संज्ञा पुं० १. संग । साथ । २. संभोग ।



हो। हिम्मती।

साहाय्य-संज्ञा ० अ०, यत्ता।

साहिब-संज्ञा ० राजा।

साहिबाना-संज्ञा ० १. एकत्र होना।

सिमिट-संज्ञा ० २. गद्य और पद्य सध

द्वार के वन ग्रंथों का समूह जिनमें

सिँवनीन हित-संबंधी स्थायी विचार

सिद्ध रहते हैं। वाङ्मय।

सिद्धि-संज्ञा ० साहित्य-संबंधी।

संज्ञा पु० साहित्य-सेवी।

साहिव-संज्ञा पु० दे० "साहब"।

साही-संज्ञा ० एक प्रसिद्ध जंतु

जिसकी पीठ पर लुकीले कटे

होते हैं।

साहु-संज्ञा पु० १. सज्जन। २. महा-

जन। साहूकार।

साहूकार-संज्ञा पु० बड़ा महाजन

या व्यापारी।

साहूकारा-संज्ञा पु० उग्रों का खेन-

देन। महाजती।

साहूकारी-संज्ञा ० साहूकार होने

का भाव।

साहिव-संज्ञा पु० दे० "साहब"।

सिँव-संज्ञा ० दे० "स्यो"।

सिकना-क्रि० अ० आँच पर गरम

होना या पकना।

सिंगा-संज्ञा पु० गुरही। रणसिंगा।

(बाघ)

सिंगार-संज्ञा पु० १. सजावट। २.

शोभा।

सिंगारदान-संज्ञा पु० वह छोटा

सदृक जिसमें शीशा, कंघी आदि

शृंगार की सामग्री रखी जाती है।

सिंगारना-क्रि० स० सुसजित करना।

सिंगारहाट-संज्ञा ० घेरवाओं के

रहने का स्थान। चकला।

सिंगारहार-संज्ञा पु० हरसिंगार

नामक फूल। परजाता।

सिंगारिया-वि० देवमूर्ति का सिंगार

करनेवाला पुजारी।

सिंगारी-वि० पु० शृंगार करनेवाला।

सज्जानेवाला।

सिगिया-संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध स्थावर

विष।

सिगी-संज्ञा पु० फूँककर घटाया जाने-

वाला सोंग का एक वाजा।

संज्ञा ० १. एक प्रकार की मछली।

२. सोंग की नली जिससे देहाती

जुआँद शरीर का रक्त चूमकर निका-

खते हैं।

सिमौटी-संज्ञा ० १. पैल के सोंग

पर पहनाने का एक आभूषण। २.

सिंदूर, कंघी आदि रखने की छियों

की पिश्टी।

सिंधी-संज्ञा पु० दे० "सिंह"।

सिंदल-संज्ञा पु० दे० "सिंदल"।

सिंघाड़ा-संज्ञा पु० १. पानी में फैलने-

वाली एक जलता जिसके तिकोने फल

खाए जाते हैं। २. एक नमकीन

पकवान।

सिंघासन-संज्ञा पु० दे० "सिंहासन"।

सिंधी-संज्ञा ० १. एक प्रकार की

छोटी मछली। २. सोठ।

सिंघेला-संज्ञा पु० शेर का पच्चा।

सिंचन-संज्ञा पु० [ वि० सिंचित ] जल

छिड़कना। सोंचना।

सिंचना-क्रि० अ० सोंचना।

सिँचाई-संज्ञा ० १. सोंचने का

काम। २. सींचने का कर या

मजदूरी।

सहस-वि० दे० "सहस" ।  
 सहसकिरण-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 सहसा-अव्य० एकाएक । अचानक ।  
 सहसास्त्री-संज्ञा पुं० इंद्र ।  
 सहसासन-संज्ञा पुं० शेषनाग ।  
 सहस्र-वि० जो गिनती में दस सौ हो ।  
 सहस्रकर-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 सहस्रकिरण-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 सहस्रदल-संज्ञा पुं० पद्म । कमल ।  
 सहस्रनाम-संज्ञा पुं० वह स्तोत्र जिस-  
 में किसी देवता के हजार नाम हों ।  
 सहस्रनेत्र-संज्ञा पुं० इंद्र ।  
 सहस्रपाद-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २.  
 विष्णु । ३. सारस पक्षी ।  
 सहस्रपाद्-संज्ञा पुं० १. शिव । २.  
 कार्तवीर्यार्जुन । राजा कृतवीर्य का  
 पुत्र ।  
 सहस्रभुजा-संज्ञा स्त्री० देवी का एक  
 रूप ।  
 सहस्ररश्मि-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 सहस्रशीर्ष-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 सहस्राक्ष-संज्ञा पुं० १. इंद्र । २.  
 विष्णु ।  
 सहाइ, सहाई-संज्ञा पुं० सहायक ।  
 मददगार ।  
 संज्ञा स्त्री० सहायता । मदद ।  
 सहाभ्यायी-संज्ञा पुं० दे० "सहपाठी" ।  
 सहानुभूति-संज्ञा स्त्री० हमदर्दी ।  
 सहाय-संज्ञा पुं० मदद ।  
 सहायक-वि० सहायता करनेवाला ।  
 मददगार ।  
 सहायता-संज्ञा स्त्री० किसी के कार्य  
 में शारीरिक या और किसी प्रकार  
 का योग देना । मदद ।  
 सहायी-संज्ञा पुं० मददगार ।

सहारा-संज्ञा पुं० मदद ।  
 सहिजन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का  
 बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की  
 तरकारी होती है । रोमांजन ।  
 मुनगा ।  
 सहित-अव्य० समेत । संग ।  
 सहिदान-संज्ञा पुं० दे० "सहि-  
 दानी" ।  
 सहिदानी-संज्ञा स्त्री० चिह्न । पह-  
 चान ।  
 सहिष्णु-वि० सहनशील ।  
 सहिष्णुता-संज्ञा स्त्री० सहनशीलता ।  
 सही-वि० १. सत्य । सच । २.  
 प्रामाणिक ।  
 सही-सलामत-वि० १. आरोग्य ।  
 २. जिसमें कोई दोष या न्यूनता न  
 आई हो ।  
 सहूलियत-संज्ञा स्त्री० १. आसानी ।  
 २. अदब ।  
 सहृदय-वि० १. जो दूसरे के दुःख-  
 सुख आदि समझता हो । २.  
 दयालु । ३. रसिक ।  
 सहेजना-कि० स० अच्छी तरह कह-  
 सुनकर सपुर्द करना ।  
 सहेजवाना-कि० स० सहेजने का  
 काम दूसरे से कराना ।  
 सहेतुक-वि० जिसका कुछ हेतु,  
 उद्देश्य या मसलब हो ।  
 सहेली-संज्ञा स्त्री० १. साथ में रहने-  
 वाली स्त्री । सगिनी । २. दासी ।  
 सहैया-वि० सहन करनेवाला ।  
 सहादर-संज्ञा पुं० १. एक ही माता  
 के उर से उत्पन्न सेतान । २. सगा ।  
 सहा-संज्ञा पुं० दे० "सहाय" ।

सिँ चाना-क्रि० स० सींचने का काम दूसरे से कराना ।

सिजित-संज्ञा स्त्री० शब्द । ध्वनि । मृनक ।

सिंदूर-संज्ञा पुं० ईश्वर को पीतद्वर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का धूलो जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माँग में भरती हैं ।

सिंदूरदान-संज्ञा पुं० विवाह में दूर का कन्या की माँग में सिंदूर देना ।

सिंदूरपुष्पी-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं । वीर-पुष्पी ।

सिंदूरिया-वि० १. सिंदूर के रंग का । २. लाल लाल ।

सिंदुरी-वि० सिंदूर के रंग का ।

सिंध-संज्ञा पुं० भारत के पश्चिम का एक प्रदेश ।

संज्ञा स्त्री० पंजाब की एक प्रधान नदी ।

सिंधी-संज्ञा स्त्री० सिंध देश की बोली । संज्ञा पुं० सिंध देश का निवासी ।

सिंधु-संज्ञा पुं० १. नद । नदी । २. एक प्रसिद्ध नदी जो पंजाब के पश्चिमी भाग में है । ३. समुद्र । ४. चार की संख्या । ५. सात की संख्या । ६. सिंध प्रदेश । ७. एक राग ।

सिंधुजा-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।

सिंधुपुत्र-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सिंधुर-संज्ञा पुं० [स्त्री० सिंधु] हाथी ।

सिंधुरमणि-संज्ञा पुं० गजमुक्ता ।

सिंधुरघदन-संज्ञा पुं० गणेश ।

सिंधुविष-संज्ञा पुं० हलाहल विष ।

सिँ घोरा-संज्ञा पुं० सिंदूर रखने का लकड़ी का पात्र ।

सिंह-संज्ञा शिकार किया जाय ।

की जाति स्त्री० मवेत । होशियार ।

प्रमी और भयान स्त्री० सतर्कता ।

नरवर की गरदन पंखा के धाद

होते हैं । शेर घघर । मुँ महीना ।

सिंहद्वार-संज्ञा पुं० सदर फाटसावन

सिंहनाद-संज्ञा पुं० १. सिंह

गरज । २. युद्ध में घोर की ललक

सिंहनी-संज्ञा स्त्री० सिंह की माँ शेरनी ।

सिंहपौर-संज्ञा पुं० दे० "सिंहद्वार" ।

सिंहल-संज्ञा पुं० एक द्वीप जो भारत-द्वीप के दक्षिण में है ।

सिंहलद्वीप-संज्ञा पुं० दे० "सिंहल" ।

सिंहला-वि० १. सिंहल द्वीप का ।

२. सिंहल द्वीप का निवासी ।

सिंहधादिनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी ।

सिंहावलोकन-संज्ञा पुं० १. सिंह

के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना । २. आगे बढ़ने के पहले

पिछली बातों का संक्षेप में कहना ।

सिंहासन-संज्ञा पुं० राजा या देवता

के बैठने का आसन या चौकी ।

सिंही-संज्ञा स्त्री० सिंह की माँ ।

शेरनी ।

सिंहोदरी-वि० स्त्री० सिंह के समान

पत्नी धरमवाली ।

सिंहरा-वि० रंदा ।

संज्ञा पुं० छाया । छाह ।

सिंथाना-क्रि० स० दे० "सिलाना" ।

सिंथार-संज्ञा पुं० [ स्त्री० सिंथारी ]

शृगाल । गीरह ।

सिकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. किवाड़ की

कुंड़ी । सिकल । २. एक सोने का

आभूषण ।

सिकता-संज्ञा स्त्री० घाल । रेत ।

वि० सहने योग्य । प्रदर्शित करने लायक ।

सहायि-संज्ञा पुं० बंबई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत ।

साई-संज्ञा पुं० १. स्वामी । २. ईश्वर । ३. पति । ४. सुसज्जमान फूफों की एक रूपाधि ।

साकड़ा-संज्ञा पुं० पैरों में पहनने का एक आभूषण ।

साकरा-संज्ञा स्त्री० शूलका । जूँजीर । स्त्रिकड़ ।

संज्ञा पुं० संकट । कष्ट ।

वि० १. संकीर्ण । संज्ञा । २. दुःखमय ।

साकरा-वि० दे० "संकरा" ।

सांग-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घाछी जो फेंककर मारी जाती है । शक्ति ।

सांगी-संज्ञा स्त्री० घाछी । संगि ।

सांगोपांग-अव्य० धर्मों और रूपांगों सहित । संपूर्ण ।

साँवला-वि० पुं० सल । यथार्थ । ठीक ।

साँचा-संज्ञा पुं० फरसा ।

साँची-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पान जो खाने में रंडा होता है ।

२. पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पंक्तिवाँ बेटे पक्ष में होती हैं ।

साँझा-संज्ञा स्त्री० संध्या ।

साँझी-संज्ञा स्त्री० देव मंदिरों में ज़मीन पर की हुई फूल-पत्तों आदि की सजावट जो प्रायः सावन में होती है ।

साँटा-संज्ञा पुं० १. कोड़ा । २. ईला । गाला ।

साँटिया-संज्ञा पुं० डुंगी पीटनेवाला ।

साँटी-संज्ञा स्त्री० पतली छोटी लुदी ।

साँड़-संज्ञा पुं० १. वह बैल ( या घोड़ा ) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं । २. वह बैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं ।

साँड़नी-संज्ञा स्त्री० ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज़ चलता है ।

साँड़िया-संज्ञा पुं० बहुत तेज़ चलने-वाला एक प्रकार का ऊँट ।

साँवना-संज्ञा स्त्री० दारस । आश्वासन ।

साँदीपनि-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने धीकृष्ण तथा पद्मराम को धनुर्बंद की शिक्षा दी थी ।

साँध्य-वि० संध्या-संबंधी । संध्या का ।

साँप-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंघा कीड़ा । मुजंग ।

साँपच्छिक-वि० आर्थिक ।

साँपिन-संज्ञा स्त्री० साँप की मादा ।

साँप्रत-अव्य० इसी समय । तत्काल ।

साँप्रदायिक-वि० किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला । संप्रदाय का ।

साँव-संज्ञा पुं० जाँववती के गर्भ से उत्पन्न धीकृष्ण के एक पुत्र ।

साँभर-संज्ञा पुं० १. राजपूताने की एक स्त्री जिसके पानी से साँभर नमक बनता है । २. उक्त स्त्री के जल से बना हुआ नमक । ३. भारतीय मृगों की एक जाति ।

साँमुहो-अव्य० सामने ।

साँवता-संज्ञा पुं० दे० "सामंत" ।

साँवर-वि० दे० "साँवला" ।

साँवलताई-संज्ञा स्त्री० साँवला होने का भाव । श्यामता ।

साँवला-वि० जिसका रंग कृष्ण

हो। हिम्मती।

संस्था या

साधारण-संज्ञा ० भ०

साहि-संज्ञा होना। धीका।

साभिमाना-संज्ञा ० संकोच। शिकन।

सिमिटन-कि० भ० १. सिमटकर

रुन स्थान में होना। २. बल

सिना। शिकन पड़ना।

सिकुरना-कि० भ० दे० "सिकु-

रना"।

सिकुरना-कि० स० संकुचित करना।

सिकोरा-संज्ञा पुं० दे० "कमोरा"।

सिकोला-संज्ञा स्त्री० कास, मूँज,

थंन आदि की बनी दुस्मिया।

सिकोहो-व० अग्र-धानवाला।

सिकड़-संज्ञा पुं० दे० "सीकड़"।

सिका-संज्ञा पुं० १. मुहर। २. टरु-

साज में डला हुआ घातु का टुकड़ा।

कपरा, पैसा आदि। मुद्रा।

सिकल-संज्ञा पुं० दे० "सिल"।

सिक-वि० सोंचा हुआ। तर। गीजा।

सिखंड-संज्ञा पुं० दे० "शिखंड"।

सिख-संज्ञा स्त्री० मील।

संज्ञा पुं० गुरु धानक आदि दस गुरुध्रां

का अनुयायी। नानकपंथी।

सिखना-कि० स० दे० "सीखना"।

सिखरन-संज्ञा स्त्री० दही मिला हुआ

चीनी का शरपत।

सिखलाना-कि० स० दे० "सिलाना"।

सिखाना-कि० स० सिखा देना।

सिखावन-संज्ञा पुं० वरदेय।

सिखी-संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।

सिगरा, सिगरो-वि० [ स्त्री०

विभक्त ] सब। सारा।

सिचान-संज्ञा पुं० बाजु पक्षी।

सिजदा-संज्ञा पुं० प्रणाम। दंडवत।

सिम्हना-कि० भ० आँच पर पकाना।

सिम्हाना-कि० स० आँच पर पकाकर

गठाना।

सिटकिनी-संज्ञा स्त्री० किवाड़ी के बंद

करन के लिये छोड़े या पीतल का

पद। चटकनी।

सिटपिटाना-कि० भ० दूध डाना।

मंद पद डाना।

सिटो-संज्ञा स्त्री० बहुत बड़-बड़कर

बोलना। पाकपटुना।

सिडाई-संज्ञा स्त्री० फीकापन। नीरवता।

सिड-संज्ञा स्त्री० १. पागलपन। २.

सनक।

सिडो-वि० [ स्त्री० सिडिन ] १. पागल।

२. सनकी।

सित-वि० १. रवेत। २. उज्ज्वल।

संज्ञा पुं० शुद्ध पद।

सितकंठ-वि० सफेद गर्दनवाला।

संज्ञा पुं० महादेव।

सिनता-संज्ञा स्त्री० सफेदी।

सितपत्र-संज्ञा पुं० हंस।

सिनभानु-संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सिनम-संज्ञा पुं० गुग्गुलु। अमर्य।

सिनमगर-संज्ञा पुं० आळिम। अ-

न्यायी।

सिनसागर-संज्ञा पुं० खीरसागर।

सिना-संज्ञा स्त्री० चीनी। शकर।

सिताखंड-संज्ञा पुं० शहद से बनाई

हुई शकर।

सिनाव-कि० वि० जलदी। छटपट।

सितार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

प्रसिद्ध वाद्य जो तारों को बँगती

से ऊनकरने से बजता है।

सितारा-संज्ञा पुं० १. तारा। नक्षत्र।

२. आभूषण। ३. चाँदी या सोने के

पत्तर की बनी हुई छोटी गोठ

विंदी जो शोभा के लिये चीजों पर

कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम। (गीते में)

साँवलापन-संज्ञा पुं० साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवा-संज्ञा पुं० कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न।

साँस-संज्ञा स्त्री० १. नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर धँदर फेकने तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम। २. अक्काश। फुरसत। ३. दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

साँसत-संज्ञा स्त्री० १. दम घुटने का सा दृष्ट। २. झंझट। घबरेला।

साँसना-कि० स० शासन करना। दंड देना।

साँसारिक-वि० इस संसार का। लौकिक। ऐहिक।

सा-अन्व० १. समान। तुल्य। २. एक मानसूचक शब्द। जैसे—थोड़ा सा।

साइत-संज्ञा स्त्री० मुहूर्त। शुभ खण्ड।

साइया-संज्ञा पुं० दे० "साई"।

साइरा-संज्ञा पुं० दे० "सायर"।

साई-संज्ञा स्त्री० घयाना।

साईस-संज्ञा पुं० वह नोकर जो घोड़े की खबरदारी और सेवा करता है।

साईसी-संज्ञा स्त्री० साईस का काम, भाव या पद।

साकंभरी-संज्ञा पुं० साँभर मीठ या उसके आसपास का प्रांत।

साकचेरि-संज्ञा स्त्री० मेहँदी।

साका-संज्ञा पुं० १. संवत्। शाका। २. श्याति।

साकार-वि० मूर्तिमान्। साक्षात्। संज्ञा पुं० ईश्वर का साकार रूप।

साकारोपासना-संज्ञा स्त्री० ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकिन-वि० निवासी। रहनेवाला।

साकी-संज्ञा पुं० १. शराय पिजाने-वाला। २. मायूक।

साकेत-संज्ञा पुं० अयोध्या नगरी।

साक्षर-वि० शिक्षित।

साक्षात्-अन्व० सामने। सम्मुख। वि० मूर्तिमान्। साकार।

संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा-देखी।

साक्षारकार-संज्ञा पुं० १. भेंट। मुलाकात। २. पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षी-संज्ञा पुं० १. चरमवीद गवाह। २. देखनेवाला। दर्शक।

संज्ञा स्त्री० गवाही। शहादत।

साख-संज्ञा पुं० १. मर्यादा। २. खेन-देन की प्रामाणिकता।

साखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शाखा"।

साखी-संज्ञा पुं० गवाह।

संज्ञा स्त्री० साची।

साखू-संज्ञा पुं० शाल वृक्ष।

साग-संज्ञा पुं० १. पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी।

२. पकाई हुई भाजी। तरकारी।

सागर-संज्ञा पुं० १. समुद्र। वदधि।

२. बड़ा ताजाव। मीठ। ३. संन्यासियों का एक भेद।

सागू-संज्ञा पुं० १. ताड़ की जाति का एक पेड़। २. दे० "सागूवाना"।

लगाई जाती है। चमकी।  
 सितारिया-संज्ञा पुं० सितार बजाने-  
 वाला।  
 सितारोद्भिद्-संज्ञा पुं० एक अपाधि  
 जो सरकार की ओर से दी जाती है।  
 सितासित-संज्ञा पुं० श्वेत और  
 श्याम। सफेद और काला।  
 सितिकंठ-संज्ञा पुं० महादेव।  
 सिदिक-वि० सच्चा। सत्य।  
 सिद्ध-वि० १. जिसका साधन हो  
 चुका हो। २. कृतकार्य। ३.  
 जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक  
 लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो।  
 सिद्धकाम-वि० जिसकी कामना पूरी  
 हुई हो।  
 सिद्धता-संज्ञा स्त्री० सिद्ध होने की  
 अवस्था।  
 सिद्धपीठ-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ  
 योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने  
 से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो।  
 सिद्धरस-संज्ञा पुं० पारा।  
 सिद्धहस्त-वि० १. जिसका हाथ  
 किसी काम में मँजा हो। २. निपुण।  
 सिद्धांजन-संज्ञा पुं० वह अंजन जिसे  
 आँख में लगा लेने से भूमि में गड़ी  
 वस्तु भी दिखाई देती है।  
 सिद्धांत-संज्ञा पुं० भली भाँति सोच-  
 विचारकर स्थिर किया हुआ मत।  
 सिद्धा-संज्ञा स्त्री० सिद्ध की स्त्री।  
 सिद्धार्थ-संज्ञा स्त्री० सिद्ध होने की  
 अवस्था।  
 सिद्धार्थ-वि० जिसकी कामनाएँ पूर्ण  
 हो गई हो।  
 संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २. जैनों  
 के २४वें अर्हत् महावीर के पिता  
 का नाम।

सिद्धि-संज्ञा स्त्री० शिष्टार किया जाय।  
 होना। २. हि० सचेत। होशियार।  
 होना। ३. कोणा स्त्री० सतर्कता।  
 सिद्धिदाता-संज्ञा पुं० गुणाद के बाद  
 सिद्धेश्वर-संज्ञा पुं० [कोण महीना।  
 १. बड़ा सिद्ध। २. महादेव सावन  
 सिद्धार्थ-संज्ञा स्त्री० लीलापन।  
 सिधारना-क्रि० प्र० १. जाना।  
 मरना। स्वर्गवास होना।  
 सिन-संज्ञा पुं० उन्न। अवस्था।  
 सिन्ध्री-संज्ञा स्त्री० वह मिठाई जो  
 किसी पीर या देवता को चढ़ाकर  
 प्रसाद की तरह खाटी जाय।  
 सिपर-संज्ञा स्त्री० डाल।  
 सिपहगरी-संज्ञा स्त्री० सिपाही का  
 काम।  
 सिपहसालार-संज्ञा पुं० सेनापति।  
 सिपाह-संज्ञा स्त्री० फौज। सेना।  
 सिपाहियाना-वि० सिपाहियों या  
 सैनिकों का सा।  
 सिपाही-संज्ञा पुं० सैनिक। शूर।  
 सिपुर्द-संज्ञा पुं० दे० "सुपुर्द"।  
 सिप्पा-संज्ञा पुं० १. निशाने पर किया  
 हुआ धार। २. तदवीर।  
 सिप्पा-संज्ञा स्त्री० माछवा की एक  
 नदी जिसके किनारे राजें बसा है।  
 सिफत-संज्ञा स्त्री० विशेषता। गुण।  
 सिफर-संज्ञा पुं० शून्य। सुदा।  
 सिफारिश-संज्ञा स्त्री० किसी के होप  
 चमा करने के लिये या किसी के  
 पक्ष में कुछ कहना सुनना। अनुरोध।  
 सिफारिशी-वि० जिसमें सिफारिश  
 हो।  
 सिफारिशी टट्ट-संज्ञा पुं० वह जो  
 देवख सिफारिश से किसी पद पर

सागौन-संज्ञा पुं० दे० "शाल" ।

साझ-संज्ञा पुं० १. सजावट का काम ।

१. सजावट का सामान । उपकरण । सामग्री ।

साजन-संज्ञा पुं० १. पति । २. प्रेमी ।

३. ईश्वर । ४. भला आदमी ।

साजना-कि० सं० दे० "सजाना" ।

संज्ञा पुं० दे० "साजन" ।

साज-याज-संज्ञा पुं० सँपारी ।

साज-सामान-संज्ञा पुं० १. सामग्री ।

उपकरण । यस्त्रवाय । २. ठाट-पाट ।

साझिश-संज्ञा स्त्री० किसी के विरुद्ध

कोई काम करने में सहायक होना । पड़पड़ ।

साझा-संज्ञा पुं० शराकत । हिस्सेदारी ।

साझी-संज्ञा पुं० दे० "साझेदार" ।

साझेदार-संज्ञा पुं० शरीक होनेवाला ।

हिस्सेदार ।

साटन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का

घड़िया रेशमी कपड़ा ।

साटना-कि० सं० दे० "सटाना" ।

साठ-वि० पचास और दस ।

संज्ञा पुं० पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१० ।

साठा-संज्ञा पुं० ईंख । गल्ला । ऊख ।

वि० साठ वर्ष की उम्रवाला ।

साठी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान ।

साड़ी-संज्ञा स्त्री० छियों के पहनने

की चौड़े किनारे की या बेलदार धोती । सारी ।

संज्ञा स्त्री० दे० "साड़ी" ।

साढ़साती-संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़े-

साती" ।

साड़ी-संज्ञा स्त्री० १. वह फसल जो

असाढ़ में बोई जाती है । असाढ़ी ।

२. दूध के ऊपर जमनेवाली थालाई । मलाई । ३. दे० "साढ़ी" ।

साढ़ू-संज्ञा पुं० साली का पति ।

साढ़ेसाती-संज्ञा स्त्री० शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा ।

( अशुभ )

सात-वि० पाँच और दो ।

संज्ञा पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७ ।

सातला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का थूहर । ससला । स्वर्णपुष्पी ।

सात्मक-वि० आत्मा के सहित ।

सात्म्य-संज्ञा पुं० सारूप्य । सरूपता ।

सात्यकि-संज्ञा पुं० एक यादव जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया था । युयुधान ।

सात्वत-संज्ञा पुं० १. बलराम । २.

श्रीकृष्ण । ३. विष्णु । ४. यदुवंशी ।

सात्वती-संज्ञा स्त्री० १. शिशुपाल

की माता का नाम । २. सुभद्रा ।

सात्विक-वि० १. सत्वगुणी । २.

सत्त्वगुण से उत्पन्न ।

साथ-संज्ञा पुं० १. मिलकर या संग

रहने का भाव । २. बराबर पास

रहनेवाला । साथी ।

साथी-संज्ञा पुं० १. साथ रहनेवाला ।

हमराही । २. दोस्त । मित्र ।

सादगी-संज्ञा स्त्री० १. सादापन ।

सरलता । २. सीधापन । निष्कपटता ।

सादा-वि० १. जिसकी सजावट

आदि बहुत संक्षिप्त हो । २. जिसके

ऊपर कोई अतिरिक्त कामनधना हो ।



हो । हिममती ।

साहाय्य-संज्ञा पुं० अ० १. सिकुटना ।

साहि-संज्ञा पुं० होना । घटुरना ।

साहिना-संज्ञा पुं० सिवाना । हृद ।

सिमिटना-संज्ञा पुं० अ० दे० "सिमिटना" ।

सिय-संज्ञा स्त्री० जानकी ।

सियरा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० सियरी ] टंडा ।

शीतल ।

सियराना-संज्ञा पुं० अ० टंडा होना ।

सिया-संज्ञा स्त्री० जानकी ।

सियापा-संज्ञा पुं० अरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति ।

सियारा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० सियारी, मियारिन ] गीदद । जंबुक ।

सियाल-संज्ञा पुं० गीदद ।

सियाहा-संज्ञा पुं० १. आय-व्यय की

बही । २. सरकारी खजाने का यह

रजिस्टर जिसमें जमींदारों से प्राप्त

मातृगुजारी लिखी जाती है ।

सियाहानवीस-संज्ञा पुं० सरकारी

खजाने में सियाहा लिखनेवाला ।

सियाही-संज्ञा स्त्री० दे० "स्याही" ।

सिर-संज्ञा पुं० शरीर के सबसे अगले

या ऊपरी भाग का गोल तल ।

कपाल । सिरपही ।

सिरकटा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० सिरकटी ] १.

जिसका सिर कट गया हो । २.

दूसरों का अनिष्ट करनेवाला ।

सिरका-संज्ञा पुं० धूप में पकाकर

खटा किया हुआ ईख आदि वारस ।

सिरकी-संज्ञा स्त्री० १. सरकंडा ।

सरई । २. सरकंडे की घनी हुई टट्टी ।

सिरजनहार-संज्ञा पुं० १. रखने-

वाला । २. परमेश्वर ।

सिरजना-संज्ञा पुं० अ० स० रखना । उत्पन्न करना ।

सिरताज-संज्ञा पुं० १. मुकुट । २.

शिरोमणि ।

सिरनामा-संज्ञा पुं० १. लिफाफे पर

लिखा जानेवाला पता । २. शीर्षक ।

सिरनेत-संज्ञा पुं० १. पगड़ी । २.

चश्मियों की एक शाखा ।

सिरपेछ-संज्ञा पुं० पगड़ी ।

सिरपोश-संज्ञा पुं० सिर पर का आ-

वरण ।

सिरफूल-संज्ञा पुं० सिर पर पहना

जानेवाला एक आभूषण ।

सिरबंद-संज्ञा पुं० साफ़ ।

सिरमौर-संज्ञा पुं० १. सिर का

मुकुट । २. शिरोमणि ।

सिरस-संज्ञा पुं० शीशम की तरह का

लंबा एक प्रकार का लंबा पेड़ ।

सिरहाना-संज्ञा पुं० चारपाई में सिर

की ओर का भाग ।

सिरा-संज्ञा पुं० लंबाई का अंत ।

झोर ।

सिराना-संज्ञा पुं० अ० टंडा होना ।

शीतल होना ।

कि० स० १. टंडा करना । २. जल

में प्रवाहित करना । (प्रतिभा)

सिरिश्ता-संज्ञा पुं० विभाग ।

सिरिश्तेदार-संज्ञा पुं० अदायत का

एक कर्मचारी ।

सिरोमनि-संज्ञा पुं० दे० "शिरो-

मणि" ।

सिरोरुह-संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह" ।

सिरोही-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की

काली चिड़िया ।

संज्ञा पुं० १. राजपूताने में एक स्थान

सादापन-संज्ञा पुं० सादा होने का भाव । सादगी । सरलता ।

सादी-संज्ञा स्त्री० १. बाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया । २. सदिया ।

संज्ञा पुं० १. शिकारी । २. घोड़ा ।

सादृश्य-संज्ञा पुं० १. समानता । एकरूपता । २. बराबरी । तुलना । संज्ञा स्त्री० इच्छा ।

साधक-संज्ञा पुं० १. साधना करने वाला । २. योगी । तपस्वी । ३. वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो ।

साधन-संज्ञा पुं० १. काम को सिद्ध करने की क्रिया । सिद्धि । विधान । २. सामग्री । उपकरण । ३. उपाय । ४. उपासना ।

साधनद्वार-संज्ञा पुं० १. साधने-वाला । २. जो साधा जा सके ।

साधना-संज्ञा स्त्री० १. कोई कार्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया । सिद्धि । २. देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना । ३. दे० "साधन" ।

कि० सं० १. कोई कार्य सिद्ध करना । पूरा करना । २. निशाना लगाना । ३. अभ्यास करना । ४. वश में करना ।

साधारण-वि० सामूली ।

साधारणतः-प्रत्य० बहुधा । प्रायः । साधित-वि० जो सिद्ध किया या साधा गया हो ।

साधु-संज्ञा पुं० १. कुलीन । आर्य्य । २. धार्मिक पुरुष । महात्मा । संत । ३. भला आदमी । सज्जन । वि० १. अच्छा । भला । २. सच्चा ।

साधुता-संज्ञा स्त्री० १. साधु होने का भाव या धर्म । २. सज्जनता । भलमनसाहत ।

साधुवाद-संज्ञा पुं० किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशंसा करना ।

साधु साधु-प्रत्य० धन्य धन्य । वाह वाह । बहुत खूब ।

साधू-संज्ञा पुं० दे० "साधु" ।

साधो-संज्ञा पुं० संत । साधु ।

साध्य-वि० १. सिद्ध करने योग्य । २. जो सिद्ध हो सके । ३. सहज । आसान ।

संज्ञा पुं० १. देवता । २. न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय । ३. शक्ति । सामर्थ्य ।

साध्वी-वि० स्त्री० १. पतिव्रता । (स्त्री) २. शुद्ध चरित्रवाली । (स्त्री)

सानंद-वि० आनंद के साथ । आनंद-पूर्ण ।

सान-संज्ञा पुं० वह पत्थर जिस पर अक्ष आदि तेज़ किए जाते हैं । कुर्द ।

सानना-कि० सं० १. चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना । २. उत्तरदायी बनाना । ३. मिलाना ।

सानी-संज्ञा स्त्री० वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को देते हैं ।

वि० १. दूसरा । द्वितीय । २. बराबरी का । मुकाबले का ।

सानु-संज्ञा पुं० १. पर्वत की चोटी । शिखर । २. श्वेत । सिरा ।

सान्निध्य-संज्ञा पुं० १. समीपता । २. एक प्रकार की मुक्ति । मोक्ष ।

साप-संज्ञा पुं० दे० "शाप" ।

जहाँ की तलवार घड़त बढ़िया होती है । २. तलवार ।

सिफ-कि० वि० केवल । मात्र ।  
वि० एकमात्र ।

सिल-मंशा श्री० पर्यार । घटान ।

सिलकी-मंशा पुं० खेल ।

सिलखड़ो-संशा श्री० एक प्रकार का चिना मुचायम पर्यार ।

सिलपट-वि० १. सैरास । २. घिसा हुआ । ३. सैपट ।

सिलपोहनी-संशा श्री० विवाह की एक रीति ।

सिलघट-संशा श्री० पर्यार की सिल जिस पर मसाला आदि घांटा जाना है ।

सिलसिला-संशा पुं० पैदा हुआ क्रम ।

सिलसिलेदार-वि० तरतीबदार । क्रमानुसार ।

सिलहारा-संशा पुं० खेत में गिरा हुआ बनाज बीननेवाला ।

सिलहिला-वि० [ श्री० सिलहिला ] जिस पर पैर फिसले ।

सिला-मंशा श्री० दे० "शिला" ।  
संशा पुं० कटे खेत में से चुना हुआ दाना ।

सिलाई-संशा श्री० १. सीने का काम या ढंग । २. सीने की मजदूरी ।

सिलाजीत-संशा पुं० दे० "शिला-जतु" ।

सिलाना-कि० स० सीने का काम दूसरे से कराना ।

सिलारस-संशा पुं० सिलहक घृष्ट धार उमका रोड़ ।

सिलाघट-संशा पुं० पर्यार काटने और गड़नेवाला । संगतगश ।

सिलाह-संशा पुं० जिरह-धकतर ।

कवच ।

सिलाहयंद-वि० सशस्त्र ।

सिलादी-मंशा पुं० सैनिक ।

सिलीमुख-संशा पुं० दे० "भरी मुख" ।

सिलोट, सिलौटा-मंशा पुं० [ श्री० अल्पा० सिलोट ] १. सिल । २. सिल तथा घटा ।

सिली-मंशा श्री० १. हथियार की धार चाँगी करने का पर्यार । २. सात ।

सिलहक-संशा पुं० सिलारस ।

सिव-मंशा पुं० दे० "शिव" ।

सिवई-संशा श्री० गुँधे हुए घाटे के-सूत से-सूले लगे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं ।

सिवा-अभ्य० अतिरिक्त । अज्ञात ।  
वि० अधिक । ज्यादा । फालतु ।

सिवाइ-अभ्य० दे० "सिवा", "सि-चाप" ।

सिधान-संशा पुं० हद । सीमा ।

सिवाय-कि० वि० अतिरिक्त । अज्ञात ।

वि० अधिक । ज्यादा ।

सिवार-संशा श्री० पानी में लकड़ों की तरह फैलनेवाली एक वृक्ष ।

सिवाल-संशा श्री० पुं० दे० "सिवार" ।

सिवाला-संशा पुं० दे० "सिवाल" ।

सिविर-संशा पुं० दे० "शिविर" ।

सिसकना-कि० अ० भीतर ही भीतर रोना ।

सिसकारना-कि० अ० सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना ।

सिसकारी-संशा श्री० सिसकारने का शब्द ।

सिसकी-संशा श्री० खुलकर न रोने

सापना-कि० सं० १. शाप देना ।  
पददुःखा देना । २. कोसला ।

साफ-वि० १. जिसमें किसी प्रकार  
की मैल आदि न हो । स्वच्छ । २.  
शुद्ध । ३. स्पष्ट । ४. वज्रवज्र ।

साफल्य-संज्ञा पुं० दे० "सफलता" ।

साफा-संज्ञा पुं० १. पगड़ी । २. सुरेठा ।

साफी-संज्ञा स्त्री० १. रुमाख । दुस्ती ।

२. वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले  
चिल्लम के नीचे लपेटते हैं । ३.  
भग्न खानने का कपड़ा । छनना ।

सावर-संज्ञा पुं० १. दे० "सभिर" ।

२. सभिर मृग का चमड़ा । ३.

मिट्टी खोदने का एक औज़ार ।

सयरी । ४. शिव-हृत एक प्रकार  
का सिद्ध मंत्र ।

सावसा-संज्ञा पुं० दे० "शापाश" ।

साविक-वि० पूर्व का । पहले का ।

साविका-संज्ञा पुं० १. मुलाकात ।

२. सरोकार ।

सावित-वि० जिसका सवृत दिया  
गया हो । प्रमाणित । सिद्ध ।

वि० १. सामृत । पुरा । २. दुःख ।  
ठीक ।

सावुन-संज्ञा पुं० रासायनिक क्रिया  
में प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे  
शरीर और वस्त्र आदि साफ किए  
जाते हैं ।

सावूदाना-संज्ञा पुं० दे० "सागूदाना" ।

सामंजस्य-संज्ञा पुं० १. औचित्य ।

२. उपयुक्तता । ३. अनुकूलता ।

सामंत-संज्ञा पुं० १. वीर । योद्धा ।

२. बड़ा जमींदार या सरदार ।

साम-संज्ञा पुं० १. ये वेद-मंत्र जो

प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय

गाए जाते थे । २. दे० "सामवेद" ।

३. मधुर भाषण । ४. राजनीति में  
अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें  
करके अपनी ओर मिला लेना ।

संज्ञा पुं० दे० "ह्याम" और "श्याम" ।

सामग्री-संज्ञा स्त्री० १. वे पदार्थ जिन-

का किसी विशेष कार्य में उपयोग

होता हो । २. असबाब । सामान ।

३. आवश्यक द्रव्य । ज़रूरी चीज़ ।

४. साधन ।

सामना-संज्ञा पुं० किसी के समक्ष

होने की क्रिया या भाव ।

सामने-कि० वि० १. सम्मुख । समक्ष ।

२. आगे ।

सामयिक-वि० १. समय-संबंधी ।

२. समय के अनुसार ।

सामर्थ-संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य" ।

सामरिक-वि० समर-संबंधी ।

सामर्थ-संज्ञा स्त्री० दे० "सामर्थ्य" ।

सामर्थी-संज्ञा पुं० सामर्थ्य रखने-

वाला ।

सामर्थ्य-संज्ञा पुं०, स्त्री० १. शक्ति ।

२. योग्यता ।

सामवायिक-वि० समूह या कुंड-

संबंधी ।

सामवेद-संज्ञा पुं० भारतीय धार्मिक

के चार वेदों में से तीसरा ।

सामसाली-संज्ञा पुं० राजनीतिज्ञ ।

सामहि-अव्य० सामने ।

सामाजिक-वि० समाज से संबंध

रखनेवाला ।

सामान-संज्ञा पुं० माल । असबाब ।

सामान्य-वि० जिसमें कोई विशेषता

न हो । साधारण । मामूली ।

का शब्द ।  
 सिसिर-संज्ञा पुं० दे० "शिशिर" ।  
 सिसोदिया-संज्ञा पुं० शुद्धजैत राज-  
 पूरा का एक शाखा ।  
 सिहरना-कि० प्र० १. टंड से का-  
 पना । २. कापना ।  
 सिहरी-मश आ० कँपकँगी । कंफ ।  
 सिहाना-कि० प्र० ईर्ष्या करना ।  
 कि० स० अभिरूपा की दृष्टि से  
 देखना । छलचना ।  
 सिहाना-कि० स० तलाश करना ।  
 छँटना ।  
 सौंर-संज्ञा आ० १. निनका । २. नाक  
 का एक गहना । लौंग । कीठ ।  
 सौंका-मंज्ञा पुं० पेड़-पौधों की बहुत  
 पतली डरशाखा या टहनी ।  
 सोंग-संज्ञा पुं० सुखाके कुछ पशुओं  
 के मिर के दोनों ओर निकले हुए  
 कड़े नुकीले अवयव ।  
 सोंगरी-संज्ञा आ० एक प्रकार का  
 लोखिया या फनी ।  
 सोंगो-मश आ० हिरन के सोंग का  
 बना बाजा ।  
 सौंखना-कि० स० १. आपराधी  
 करना । २. पानी छिड़ककर तर  
 करना ।  
 सीवँ-संज्ञा पुं० सीमा । हद्द ।  
 सी-वि० आ० समान । मुख्य । सदृश ।  
 सीउ-संज्ञा पुं० शीत । ठंड ।  
 सीर-संज्ञा पुं० जल-कण । पानी की  
 धूँद ।  
 ी-संज्ञा आ० जंजीर ।  
 सीकल-संज्ञा आ० इथिपारों का मो-  
 रवा छुड़ाने की क्रिया ।  
 सीकुर-संज्ञा पुं० गेहूँ, जौ आदि की  
 बाल के ऊपर के कड़े सूत ।

सीख-मंज्ञा आ० १. शिक्षा । तालीम ।  
 २. वह बात जो सिखाई जाय ।  
 सीखवा-संज्ञा पुं० जोड़े का छद्म ।  
 सीखना-कि० स० १. ज्ञान प्राप्त करना ।  
 २. काम करने का ढंग आदि जानना ।  
 सीम्न-संज्ञा आ० सीकने की क्रिया या  
 भाव । गरमी से गलाव ।  
 सीम्नना-कि० प्र० आँच या गरमी  
 पाकर गलना । पकना ।  
 सीटना-कि० म० डोंग मारना ।  
 सीटी-मश आ० वह महीन शब्द जो  
 छोटा को मिकोड़कर नीचे की ओर  
 आघात के साथ वायु निकालने से  
 होता है ।  
 सीठा-वि० सीरम । फीका ।  
 सीटी-मंज्ञा आ० किसी फल, पत्ते  
 आदि का रस निकल जाने पर बचा  
 हुआ निरुम्रा अंश ।  
 सीड-मंज्ञा आ० तनी । नमी ।  
 सीढ़ी-मश आ० ऊँचे स्थान पर चढ़ने  
 के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ  
 पैर रखने का म्यान । ज़ोना ।  
 सीन-संज्ञा पुं० दे० "शीत" ।  
 सीनल-वि० दे० "शीतल" ।  
 सीतलपाटी-संज्ञा आ० एक प्रकार  
 की बाँधवा चराई ।  
 सीता-संज्ञा आ० मिथिला के राजा  
 जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्रजी  
 की पत्नी थीं । चैदेही ।  
 सीताभ्यक्ष-संज्ञा पुं० वह राज-कर्म-  
 चारी जो राजा की विजय की भूमि में  
 खेती-पारी आदि का प्रयोजन करता हो ।  
 सीतापति-मंज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र ।  
 सीताफल-संज्ञा पुं० शरीफा ।  
 सीत्कार-संज्ञा पुं० सिसकारी ।

सादापन-संज्ञा पुं० सादा होने का भाव । सादगी । सरलता ।  
 सादी-संज्ञा स्त्री० १. झाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया । २. सदिया ।  
 संज्ञा पुं० १. शिकारी । २. घोड़ा ।  
 सादृश्य-संज्ञा पुं० १. समानता । पुरुरूपता । २. घरायसी । तुलना ।  
 संज्ञा स्त्री० इच्छा ।  
 साधक-संज्ञा पुं० १. साधना करने वाला । २. योगी । तपस्वी । ३. वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो ।  
 साधन-संज्ञा पुं० १. काम को सिद्ध करने की क्रिया । सिद्धि । विधान । २. सामग्री । उपकरण । ३. उपाय । ४. उपासना ।  
 साधनद्वार-संज्ञा पुं० १. साधने वाला । २. जो साधा जा सके ।  
 साधना-संज्ञा स्त्री० १. कोई कार्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया । सिद्धि । २. देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना । ३. दे० "साधन" ।  
 कि० सं० १. कोई कार्य सिद्ध करना । पूरा करना । २. निशाना लगाना । ३. धम्यास करना । ४. धर में करना ।  
 साधारण-वि० मामूली ।  
 साधारणतः-अव्य० बहुधा । प्रायः ।  
 साधित-वि० जो सिद्ध किया या साधा गया हो ।  
 साधु-संज्ञा पुं० १. कुलीन । आर्य । २. धार्मिक पुरुष । महात्मा । संत । ३. भला आदमी । सज्जन ।  
 वि० १. अच्छा । भला । २. सच्चा ।

साधुता-संज्ञा स्त्री० १. साधु का भाव या धर्म । २. सज्जन भलमनसादत ।  
 साधुवाद-संज्ञा पुं० किसी के उत्तम कार्य करने पर "साधु सा कहकर उसकी प्रशंसा करना ।  
 साधु साधु-अव्य० धन्य धन्य । वाह । बहुत खूब ।  
 साधू-संज्ञा पुं० दे० "साधु" ।  
 साधो-संज्ञा पुं० संत । साधु ।  
 साध्य-वि० १. सिद्ध करने योग्य । २. जो सिद्ध हो सके । ३. सह आसान ।  
 संज्ञा पुं० १. देवता । २. न्याय वह पदार्थ जिसका अनुमान जाय । ३. शक्ति । सामर्थ्य ।  
 साध्वी-वि० स्त्री० १. पतिव्रता । २. शुद्ध चरित्रवाली ।  
 सानंद-वि० आनंद के साथ । सह पूर्वक ।  
 सान-संज्ञा पुं० वह पत्थर जिस अक्ष आदि वेष्ट किए जाते हैं ।  
 सानना-कि० सं० १. चूर्ण को तरल पदार्थ में मिलाकर करना । २. उत्तरदायी बनाना । मिलाना ।  
 सानी-संज्ञा स्त्री० वह भोजन के में सानकर पशुओं को देते हैं ।  
 वि० १. दूसरा । द्वितीय । बरी का । मुकाबले का ।  
 सानु-संज्ञा पुं० १. पर्वत शिखर । २. श्रंत । सिरा ।  
 साभिध्य-संज्ञा पुं० १. २. एक प्रकार की सु ।  
 साप-संज्ञा पुं० दे०

सीथ-संज्ञ पुं० पके हुए अन्न का दाना ।

सीदना-कि० अ० दुःख पाना ।

सीध-संज्ञ स्त्री० वह लंबाई जो बिना इधर-उधर मुड़े एक-तार चली गई हो ।

सीधा-वि० [ स्त्री० सोपो ] १. जो टेढ़ा न हो । २. सरल प्रकृति का । भोला-मोला । ३. आसान ।

सीधापन-संज्ञ पुं० सीधा होने का भाव । सिधाई ।

सीधे-कि० वि० परावर सामने की ओर । सम्मुख ।

सीना-कि० स० कपड़े, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई तारों से जोड़ना ।

संज्ञ पुं० छाती । वक्षःस्थल ।

सीनायंद-संज्ञ पुं० अंगिया । चोली ।

सीप-संज्ञ पुं० कड़े आवरण के भीतर रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजंतु ।

सीपसुत-संज्ञ पुं० मोती ।

सीपिज-संज्ञ पुं० मोती ।

सीपी-संज्ञ स्त्री० दे० "सीप" ।

सीमंत-संज्ञ पुं० १. स्त्रियों की मणि । २. इट्टियों का संधि-स्थान ।

सीमंतिनी-संज्ञ स्त्री० स्त्री । नारी ।

सीम-संज्ञ पुं० सीमा । हृद् ।

सीमांत-संज्ञ पुं० वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो । सरहद । सीमा-संज्ञ स्त्री० किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान । हृद् ।

सीमावद्ध-संज्ञ पुं० हृद् के भीतर किया हुआ ।

सीमोल्लंघन-संज्ञ पुं० सीमा का उल्लंघन करना ।

सीय-संज्ञ स्त्री० जानकी ।

सीर-संज्ञ स्त्री० वह जमीन जिसे भू-स्वामी या ज़मींदार स्वयं जोतता था रहा हो ।

० वि० ठंढा । शीतल ।

सीरख-संज्ञ पुं० दे० "शीर्ष" ।

सीरध्वज-संज्ञ पुं० राजा जनक ।

सीरनी-संज्ञ स्त्री० मिठाई ।

सीरा-संज्ञ पुं० पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस ।

सील-संज्ञ स्त्री० भूमि में जल की आवृत्ता । सीढ़ ।

० संज्ञ पुं० दे० "शील" ।

सीला-संज्ञ पुं० अनाज के घे दाने जो खेत में से सपस्ती या गरीब चुनते हैं ।

सीवन-संज्ञ पुं०, स्त्री० १. सीने का काम । २. सीने से पड़ी हुई खकीर ।

सीस-संज्ञ पुं० सिर । माथा ।

सीसक-संज्ञ पुं० सीसा ( धातु ) ।

सीसताज-संज्ञ पुं० वह टोपी जो शिकारी जानवरों के सिर पर रहती और शिकार के समय खोली जाती है ।

सीसफूल-संज्ञ पुं० सिर पर पहनने का फूल । ( गहना ) ।

सीसमहल-संज्ञ पुं० वह मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों ।

सीसा-संज्ञ पुं० नीलापन लिए काले रंग की एक मूल धातु ।

सीसी-संज्ञ स्त्री० शीत, पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकला हुआ शब्द ।

० संज्ञ स्त्री० दे० "शीशी" ।

सीसौदिया-संज्ञ पुं० दे० "सिसौदिया" ।

अमर । १८. विष्णु का घनुष ।  
१९. कपूर । २०. आकृष्ण । २१.  
चंद्रमा । २२. समुद्र । २३. पानी ।  
२४. पाण । तीर । २५. दीपक ।  
दीया । २६. मृग । २७. मेघ । २८.  
खंजन पक्षी । २९. मेंढक ।

सारंगपाणि-संज्ञा पुं० विष्णु ।

सारंगिया-संज्ञा पुं० सारंगी यजाने-  
वाला ।

सारंगी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
बहुन प्रसिद्ध तारवाला बाजा ।

सार-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ में का  
मूल या असली भाग । तत्व । २  
निष्कर्ष । ३. रस । ४. जूभा खेलने  
का पासा । ५. तलवार ।

†संज्ञा पुं० पसो का भाई । साला ।

सारगभित्त-वि० जिसमें तथ्य भरा  
हो ।

सारथि-संज्ञा पुं० [ भाव० सारथ्य ]  
रथादि का चालानेवाला ।

सारद-संज्ञा स्त्री० सारस्वती ।

संज्ञा पुं० शब्द ऋषि ।

सारदा-संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा" ।

सारना-क्रि० सं० पूर्ण करना ।  
समाप्त करना ।

सारभाटा-संज्ञा पुं० ग्यारभाटा का  
बजता । समुद्र की यह याद जिसमें  
पानी पड़ते समुद्र के तट से आगे  
निकल जाता है और फिर कुछ दूर  
बाद पीछे लौटता है ।

सारमेय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० सारमेयी ]

१. सरमा की सेतान । २. कुत्ता ।

सारहय-संज्ञा पुं० सरसता ।

सारस-संज्ञा पुं० [ स्त्री० सारसी ] १.

एक प्रकार का प्रसिद्ध सुंदर पक्षी

पक्षी । २. हंस ।

सारस्वत-संज्ञा पुं० १. दिल्ली के  
उत्तर पश्चिम प्रदेश के प्रांत । २.  
एक प्रसिद्ध व्याकरण ।

सारंश-संज्ञा पुं० १. खुलासा ।  
संदर्भ । २. तात्पर्य ।

साग-वि० [ स्त्री० सागे ] समस्त ।  
संपूर्ण ।

सारि-संज्ञा पुं० १. पासा या चौपड़  
खेलनेवाला । २. जूभा खेलने का  
पासा ।

सारिका-संज्ञा स्त्री० मैना पक्षी ।

सारिका-वि० दे० "सरीसा" ।

सारी-संज्ञा स्त्री० १. सारिका पक्षी ।  
मैना । २. पासा ।

संज्ञा पुं० अनुकरण करनेवाला ।

सारूप्य-संज्ञा पुं० [ भाव० सारूप्यता ]

१. एक प्रकार की मुक्ति जिसमें  
व्यासक अपने व्यास्य द्रव्य का रूप  
प्राप्त कर लेता है । २. एकरूपता ।

सारो-संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका" ।

सार्थ-वि० अर्थ सहित ।

सार्थक-वि० [ भाव० सार्थकता ] १.  
अर्थ सहित । २. सफल ।

सादूल-संज्ञा पुं० दे० "शादूल" ।

सादे-वि० जिसमें घरे के साथ आधा  
भा मिला हो । देवड़ा ।

सार्वकालिक-वि० जो सध कालों  
में हो ।

सार्वजनिक, सार्वजनीन-वि० सब  
लोगों से संबंध रखनेवाला ।

सार्वत्रिक-वि० सर्वत्र-व्यापी ।

सार्वभौम-संज्ञा पुं० चन्द्रवर्त्ता राजा ।

सार्वराष्ट्रीय-वि० जिसका संबंध सब  
राष्ट्रों में हो ।



सु०-प्रत्य० दे० "से" ।

सुधनी-संज्ञा स्त्री० तंवाक् के पत्ते की शरीरक धुन्नी जो सूँधी जाती है ।

सुधाना-क्रि० स० आग्राण करना ।

सुंढ भुसुंढ-संज्ञा पुं० हाथी जिसका शरीर सुँढ है ।

सुंदाल-संज्ञा पुं० हाथी ।

सुंदर-वि० [ स्त्री० सुंदरी ] जो देखने में अच्छा लगे । रूपवान् ।

सुंदरता-संज्ञा स्त्री० सुंदर होने का भाव ।

सुंदरी-संज्ञा स्त्री० सुंदर स्त्री ।

सु-उप० एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर, बढ़िया आदि का अर्थ देता है ।

सर्व० सो । यह ।

सुश्रद्धा-संज्ञा पुं० सुगन्ध ।

सुश्रुत-संज्ञा पुं० पुत्र । बेटा ।

सुश्रा-संज्ञा पुं० दे० "सूया" ।

सुश्राग्-संज्ञा पुं० रसोद्वेष ।

सुश्रासिनी-संज्ञा स्त्री० सौभाग्य-वती स्त्री ।

सुकंठ-वि० १. जिसका कंठ सुंदर हो । २. सुरीला ।

संज्ञा पुं० सुमीव ।

सुक-संज्ञा पुं० दे० "शुक" ।

सुकनासा-वि० जिसकी नाक शुक पक्षी की ठोर के समान सुंदर हो ।

सुकर-वि० सहज ।

सुकरता-संज्ञा स्त्री० सहज में होने का भाव ।

सुकर्म-संज्ञा पुं० अच्छा काम ।

सुकर्मी-वि० १. अच्छा काम करने वाला । २. धार्मिक ।

सुकाना-क्रि० स० दे० "सुखाना" ।

सुकाल-संज्ञा पुं० १. उत्तम समय ।

२. अकाल का बलटा ।

सुकी-संज्ञा स्त्री० तोते की मादा ।

सुगी ।

सुकुआर-वि० दे० "सुकुमार" ।

सुकुति-संज्ञा स्त्री० सीप ।

सुकुमार-वि० जिसके श्रंग बहुत कामल हो । माजक ।

संज्ञा पुं० कामलानि शालक ।

सुकुमारता-संज्ञा स्त्री० कामलता ।

सुसुमारी-वि० कामल श्रंगोंवाली । कामलानी ।

सुकुल-संज्ञा पुं० १. उत्तम कुल । २. दे० "शुक" ।

सुश्रुत-वि० १. उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला । २. धार्मिक ।

सुकृत-संज्ञा पुं० १. पुण्य । २. दान ।

सुकृतात्मा-वि० धर्मात्मा ।

सुकृति-संज्ञा स्त्री० [ भाव० सुकृतिव ] शुभ कार्य ।

सुकृती-वि० धार्मिक ।

सुकृत्य-संज्ञा पुं० पुण्य । धर्मकार्य ।

सुकेशी-संज्ञा स्त्री० उत्तम केशोंवाली स्त्री ।

सुखंडी-संज्ञा स्त्री० बच्चों का एक रोग जिसमें शरीर सूख जाता है ।

वि० बहुत दुपला-पतला ।

सुख-संज्ञा पुं० वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सबको अभिलाषा रहती है । आराम ।

सुखकंद-वि० सुखद ।

सुखकंदर-वि० सुख का घर ।

सुखकर-वि० सुख देनेवाला ।

सुखद-वि० सुख देनेवाला । सुखदायी ।

सुखद-गीत-वि० प्रशंसनीय ।

साल-संज्ञा स्त्री० १. सालने या सलने की क्रिया या भाव । २. छेद । ३. दुःख । पीड़ा ।  
मश पुं० पर्य । घरस ।  
सालक-वि० दुःख देनेवाला ।  
सालगिरह-संज्ञा स्त्री० घरस-गाँठ । जन्म-दिन ।  
सालग्रामी-संज्ञा स्त्री० गंडक नदी ।  
सालन-संज्ञा पुं० मांस, मछली या साग-सब्जी की मसालेदार तरकारी ।  
सालना-क्रि० भ० १. दुःख देना । २. चुभना ।  
सालममित्रो-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष जिसका फेड़ पौष्टिक होता है । धीकड़ा ।  
सालस-संज्ञा पुं० वह जो दो पक्षों के झगड़े का निपटारा करे । पंच ।  
सालसा-संज्ञा पुं० खून साफ करने का एक प्रकार का अंगरेजी रंग का कादा ।  
सालसी-संज्ञा स्त्री० पंचायत ।  
साला-संज्ञा पुं० [ स्त्री० साला ] १. पक्षी का भाई । २. एक प्रकार की गाली । संज्ञा स्त्री० दे० "शाला" ।  
सालाना-वि० वार्षिक ।  
सालिम-वि० संपूर्ण । पूरा ।  
सालियाना-वि० दे० "सालाना" ।  
सालु-संज्ञा पुं० १. ईर्ष्या । २. कष्ट ।  
सालु-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल कपड़ा । ( मांगलिक )  
साधंत-संज्ञा पुं० दे० "सामंत" ।  
साध-संज्ञा पुं० दे० "साहु" ।  
सावकाश-संज्ञा पुं० अवकाश । फुर्सत ।  
सावज-संज्ञा पुं० वह जंगली जान-

वर जिसका शिकार किया जाय ।  
साधधान-वि० सचेत । होशियार ।  
साधधानता-संज्ञा स्त्री० सतर्कता ।  
साधन-संज्ञा पुं० आपाढ़ के धाद और भाद्रपद के पड़ने का महीना ।  
साधनी-वि० साधन संबंधी । साधन का ।  
साधर-संज्ञा पुं० शिव-कृत एक प्रसिद्ध तंत्र ।  
सावित्र-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. यज्ञपत्रीत ।  
सावित्री-संज्ञा स्त्री० १. मद्र देश के राजा अश्वरति की कन्या और सत्यवान की सती पत्नी । २. सधवा स्त्री ।  
साष्टांग-वि० आठों अंग सहित ।  
सास-संज्ञा स्त्री० पत्नी या पत्नी की माँ ।  
सासा-संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "खास" या "सास" ।  
सासुरा-संज्ञा पुं० १. ससुरा । २. ससुराल ।  
साह-संज्ञा पुं० १. भक्ता आदमी । २. व्यापारी ।  
साहचर्य-संज्ञा पुं० संग । साथ ।  
साहनी-संज्ञा स्त्री० सेना । फौज ।  
साहब-संज्ञा पुं० [ स्त्री० साहिबा ] १. एक सम्मानसूचक शब्द । महाशय । २. गौरी जाति का कोई व्यक्ति ।  
साहबजादा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० साहब-जादा ] पुत्र । बेटा ।  
साहब-सलामत-संज्ञा स्त्री० परस्पर अभिवादन । वंदगी ।  
साहवी-संज्ञा स्त्री० मासिकपन । बद्ध-पन ।  
साहस-संज्ञा पुं० हिम्मत । हियाब ।  
साहसिक-संज्ञा पुं० डाकू । चोर ।  
साहसी-वि० वह जो साहस करता

वि० जो देखने में सुंदर हो ।  
मनोरम ।

सुदामा-संज्ञा पुं० एक दरिद्र ब्राह्मण  
जिन पर कृष्ण ने कृपा की थी ।

सुदिन-संज्ञा पुं० शुभ दिन ।

सुदी-संज्ञा स्त्री० किसी मास का  
संज्ञा पक्ष । शुक्ल पक्ष ।

सुदीपति-संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति" ।

सुदीप्ति-संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक  
प्रकाश ।

सुदूर-वि० बहुत दूर ।

सुदृढ़-वि० बहुत दृढ़ । खू० मजबूत ।

सुदेश-संज्ञा पुं० १. सुंदर देश । २.  
उपयुक्त स्थान ।

वि० सुंदर । खूबसूरत ।

सुदेह-वि० सुंदर । कमनीय ।

सुख-वि० दे० "शुद्ध" ।

सुखा-अव्य० सहित । समेत ।

सुद्धि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुध" ।

सुध-संज्ञा स्त्री० स्मृति । याद । चेत ।

सुधरना-कि० अ० बिगड़े हुए का  
बनना ।

सुधराई-संज्ञा स्त्री० सुधरने की क्रिया ।

सुधर्म-संज्ञा पुं० उत्तम धर्म । पुण्य  
कर्तव्य ।

सुधर्मी-वि० धर्मनिष्ठ ।

सुधवाना-कि० स० दीप या श्रुति  
दूर कराना । शोधन कराना ।

सुधांशु-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सुधा-संज्ञा स्त्री० अमृत । पीयूष ।

सुधाई-संज्ञा स्त्री० सीधापन । सर-  
लता ।

सुधाकर-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सुधाघट-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सुधाधर-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सुधाधार-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सुधाधी-वि० सुधा के समान ।  
सुधानिधि-संज्ञा पुं० १. चंद्रमा ।  
२. समुद्र ।

सधापाणि-संज्ञा पुं० धन्वंतरि ।

सुधा-संज्ञा पुं० सुधारने की क्रिया  
या भाव । संशोधन ।

सुधारक-संज्ञा पुं० १. वह जो दोषों  
या त्रुटियों का सुधार करता हो ।

२. वह जो धार्मिक, या सामाजिक  
सुधार के लिये प्रयत्न करता हो ।

सुधारना-कि० स० दोष या बुराई  
दूर करना । संशोधन करना ।

सधि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुध" ।

संधी-संज्ञा पुं० विद्वान् । पंडित ।

वि० बुद्धिमान् ।

सुन-गुन-संज्ञा स्त्री० १. भेद । टोह ।

२. कानाकूपी ।

सुनत, सुनती-संज्ञा स्त्री० दे०  
"सुनत" ।

सुनना-कि० स० कानों के द्वारा  
शब्द का ज्ञान प्राप्त करना ।

सुनहरी-संज्ञा स्त्री० फीजपा । (रंग)

सुनय-संज्ञा पुं० उत्तम नीति ।

सुनवाई-संज्ञा स्त्री० सुनने की क्रिया  
या भाव ।

सुनवाई-वि० १. सुननेवाला । २.  
सुनानेवाला ।

सुनसान-वि० १. जहाँ कोई न  
हो । निवेन । २. रजाड़ ।

संज्ञा पुं० सड़ाटा ।

सुनहरा-वि० दे० "सुनहला" ।

सुनहला-वि० सोने के रंग का ।

सुनाना-कि० स० १. दूसरे को  
सुनने में प्रवृत्त करना । २. खरी-  
खोटी कहना ।

सुनाम-संज्ञा पुं० यशः। कीर्ति।  
 सुनार-संज्ञा पुं० सोने, चाँदी के गहने  
 आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।  
 सुनारी-संज्ञा स्त्री० १. सुनार का  
 काम। २. सुनार की स्त्री।  
 सुनीति-संज्ञा स्त्री० उत्तम नीति।  
 सुनैया-वि० सुमनेवाला।  
 सुभ-वि० निर्दोष। स्पन्दहीन।  
 निःस्तब्ध।  
 संज्ञा पुं० शून्य। सिकर।  
 सुभत-संज्ञा स्त्री० खूतना। मुसल-  
 मानी।  
 सुभ्रा-संज्ञा पुं० बिंदी। सिकर।  
 सुश्री-संज्ञा पुं० सुखमानों का एक  
 भेद जो चारों खूबीकाओं को प्रधान  
 मानता है।  
 सुपक्ष-वि० अच्छी तरह पका हुआ।  
 सुपक्ष-संज्ञा पुं० चाँडाल। डोम।  
 सुपथ-संज्ञा पुं० उत्तम पथ। सदा-  
 चरण।  
 वि० ममत्तल। हमवार।  
 सुपन, सुपना-संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।  
 सुपर्ण-संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. पक्षी।  
 सुपर्णी-संज्ञा स्त्री० १. गरुड़ की  
 माता। २. कमलिनी।  
 सुपात्र-संज्ञा पुं० वह जो किसी कार्य  
 के लिये योग्य या उपयुक्त हो।  
 सुपारी-संज्ञा स्त्री० भारियल की जाति  
 का एक पेड़। इसके फल टुकड़े  
 करके पान के साथ खाए जाते हैं।  
 पूग।  
 सुपार्श्व-संज्ञा पुं० जैनियों के २४  
 तीर्थहरों में ११ सातवें तीर्थहर।  
 सुपात-संज्ञा पुं० सुख। आराम।  
 सुपुर्द-संज्ञा पुं० दे० "सपुर्द"।

सुपूत-संज्ञा पुं० दे० "सपूत"।  
 सुपूती-संज्ञा स्त्री० सुपूत होने का  
 भाव।  
 सुपेती-संज्ञा स्त्री० दे० "सफेदी"।  
 सुपेदी-वि० दे० "सफेद"।  
 सुपेदी-संज्ञा स्त्री० १. सफेदी।  
 २. उज्ज्वलता।  
 सुपेली-संज्ञा स्त्री० छोटा सूय।  
 सुस-वि० सोया हुआ। निद्रित।  
 सुसि-संज्ञा स्त्री० निद्रा। मोह।  
 सुप्रज्ञ-वि० बहुत बुद्धिमान्।  
 सुप्रसिद्ध-वि० बहुत प्रसिद्ध।  
 सुबह-संज्ञा स्त्री० प्रातःकाल। सवेरा।  
 सुबहान अस्त्रा-अर्थ० अरथी का एक  
 पद जिसका प्रयोग किसी बात पर  
 हर्ष या आश्चर्य होने पर होता है।  
 सुवास-संज्ञा स्त्री० अच्छी महक।  
 सुगंध।  
 संज्ञा पुं० एक प्रकार का घास।  
 सुवासना-संज्ञा स्त्री० सुगंध।  
 कि० सं० सुगंधित करना। महकाना।  
 सुशक्त-वि० सुगंधित।  
 सुविस्ता, सवीठा-संज्ञा पुं० दे०  
 "सुभीठा"।  
 सुवृक-वि० १. हलका। २. सुंदर।  
 खूबसूरत।  
 सुबुद्धि-संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि। अच्छी  
 अह।  
 सुबू-संज्ञा पुं० दे० "सुबह"।  
 सुवृत्त-संज्ञा पुं० १. दे० "सचूत"।  
 २. वह जिससे कोई बात साबित  
 हो। प्रमाण।  
 सुबोध-वि० जो कोई बात सहज में  
 समझ सके।  
 सुग्रहाण्य-संज्ञा पुं० १. शिव। २.

सूतक-संज्ञा पुं० १. जन्म । २. वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है ।

सूतकी-वि० परिचार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो ।

सूतना-वि० भ० दे० "सेना" ।

सूतपुत्र-संज्ञा पुं० १. सारथि । २. कर्ण ।

सूता-संज्ञा पुं० संतु । सूत ।

सूति-संज्ञा स्त्री० १. जन्म । २. प्रसव । जनन ।

सूतिका-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो । कुशा ।

सूतिकागार, सूतिकागृह-संज्ञा पुं० सौरी । प्रसव-गृह ।

सूती-संज्ञा स्त्री० सौपी ।

सूत्र-संज्ञा पुं० १. सूत । तागा । डोरी । २. यज्ञोपवीत । जनेऊ । ३. थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत-थथे प्रकट करे ।

सूत्रकार-संज्ञा पुं० १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो । सूत्र-रचयिता । २. बड़ई । ३. जुलाहा ।

सूत्रग्रंथ-संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो; जैसे—सांख्यसूत्र ।

सूत्रधार-संज्ञा पुं० नाट्यशास्त्र का व्यवस्थापक ।

सूत्रपात-संज्ञा पुं० प्रारंभ । शुरु ।

सूथनी-संज्ञा स्त्री० पायजामा ।

सूद-संज्ञा पुं० १. बाम । २. व्याज ।

सूदन-वि० विनाश करनेवाला ।

सूधा-वि० दे० "सीधा" ।

सूधे-क्रि० वि० सीधे से ।

सून-संज्ञा पुं० १. प्रसव । जनन ।

२. कर्ला । कलिका । ३. फूल ।

४. पुत्र ।

सूसा-संज्ञा पुं० वि० दे० "शून्य" ।

सूना-वि० सुनसान ।

सूना पुं० एकान्त । निर्जन स्थान ।

सूना स्त्री० पुत्री । बेटी ।

सूनापन-संज्ञा पुं० सदाटा ।

सनु-संज्ञा पुं० पुत्र । संतान ।

सप-संज्ञा पुं० रसोद्भवा ।

संज्ञा पुं० धनज फटकने का सरई या सीक का साज ।

सपकार-संज्ञा पुं० रसोद्भवा । पाचक ।

सपनखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा" ।

सपशास्त्र-संज्ञा पुं० पाचशास्त्र ।

सफ-संज्ञा पुं० परम । ऊन ।

सूफो-संज्ञा पुं० मुसलमानों का एक धार्मिक दवार सन्दाप ।

सुधा-संज्ञा पुं० किसी देश का कोई भाग । प्रांत ।

सुवेदार-संज्ञा पुं० १. किसी सूबे या प्रांत का शासक । २. एक छोटा फौजी मोहदा ।

सुवेदारी-संज्ञा स्त्री० सुवेदार का मोहदा या पद ।

सुम-वि० कंजूस ।

सुर-संज्ञा पुं० संघा ।

संज्ञा पुं० वीर । यद्वाहुर ।

संज्ञा पुं० दे० "शूल" ।

सरकुमार-संज्ञा पुं० वसुदेव ।

सुरेज-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. दे० "सूरदास" ।

विष्णु ।

सुभग-वि० १. सुंदर । मनोहर ।  
२. सुखद ।

सुभगा-वि० १. सुंदरी । खूबसूरत  
(स्त्री) । २. (स्त्री) सौभाग्यवती ।

सुभद्र-संज्ञ पु० भारी योद्धा ।

सुभद्र-संज्ञ पु० १. श्रीकृष्ण के एक  
पुत्र । २. सौभाग्य । ३. कल्याण ।  
मंगल ।

वि० १. भाग्यवान् । २. सज्जन ।

सुभद्रा-महा स्त्री० श्रीकृष्ण की पहन  
और अर्जुन की पत्नी ।

सुभाइ, सुभाडा-संज्ञ पु० दे०  
"स्वभाय" ।

कि० वि० सहज भाव से ।

सुभागा-संज्ञ पु० दे० "सौभाग्य" ।

सुभागी-वि० भाग्यवान् ।

सुभाया-संज्ञ पु० दे० "स्वभाय" ।

सुभाया-संज्ञ पु० दे० "स्वभाय" ।

सुभाषित-वि० सुंदर रूप से कहा  
हुआ । अच्छी तरह कहा हुआ ।

सुभाषी-वि० उत्तम रूप से बोलने-  
वाला । मिष्टभाषी ।

सुभिन्न-संज्ञ पु० ऐसा समय जिसमें  
अन्न खूब हो । सुकाल ।

सुभीता-संज्ञ पु० १. सुगमता ।  
महूलियत । २. सुअवसर ।

सुभ्र-वि० दे० "शुभ्र" ।

सुभंत्र-संज्ञ पु० दे० "सुमंत्र" ।

सुभंत्र-संज्ञ पु० राजा दशरथ का  
मन्त्री और सायि ।

सुभ-संज्ञ पु० घोड़े या दूसरे चौपायों  
के खुर । टाप ।

समति-संज्ञ स्त्री० १. सुंदर मति ।

अच्छी बुद्धि । २. मेल-जोड़ ।

वि० अच्छी बुद्धिवाला । बुद्धिमान् ।

सुमन-महा पुं० पुष्प । फूल ।

सुमनचाप-संज्ञ पुं० कामदेव ।

सुमनस-संज्ञ पुं० १. देवता । २.  
पुष्प ।

सुमरन-संज्ञ पुं० दे० "स्मरण" ।

सुमरना-कि० स० स्मरण करना  
ध्यान करना ।

सुमरनी-संज्ञ स्त्री० नाम जपने की  
संज्ञाहम दानों की छोटी माला ।

सुमार्ग-संज्ञ पुं० उत्तम मार्ग । अच्छा  
रास्ता ।

सुमाली-संज्ञ पुं० एक राक्षस,  
जिसकी कन्या कैकसी के गम से  
रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और  
विभीषण हुए थे ।

सुमित्रा-संज्ञ स्त्री० दशरथ की एक  
पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की  
माता थीं ।

सुमिनी-संज्ञ स्त्री० दे० "सुमंगी" ।

सुमुख-वि० १. सुंदर मुखवाला ।  
२. प्रमद ।

सुमुखी-संज्ञ स्त्री० सुंदर मुखवाली  
स्त्री ।

समृत, समृति-संज्ञ स्त्री० दे०  
"स्मृति" ।

सुमेधा-वि० बुद्धिमान् ।

सुमेर-संज्ञ पुं० सुमेरु पर्वत ।

सुमेरु-संज्ञ पुं० १. एक पुराणोक्त पर्वत  
जो सब पर्वतों का राजा और सोने  
का कहा गया है । २. जड़-माला के  
बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना ।  
वि० बहुत ऊँचा ।

सुमेरुवृत्त-संज्ञ पुं० वह रेखा जो

सूरजमुखी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पौधा जिसका पीले रंग का फूल दिन के समय ऊपर की ओर रहता और सूर्यास्त के बाद झुक जाता है।

सूरजसुत-संज्ञा पुं० सुग्रीव।

सूरजसुता-संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्य-सुता"।

सूरत-संज्ञा स्त्री० रूप। आकृति। शक्ति।

सूरता, सूरताई-संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।

सूरति-संज्ञा स्त्री० १. दे० "सूरत"।  
२. सुघ। स्मरण।

सूरदास-संज्ञा पुं० उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त महाकवि और महात्मा जो ग्रंथे ये। ये हिन्दी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं।

सूरन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कंद। जैमीकव। ओल।

सूपनखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्प-शखा"।

सूरपुत्र-संज्ञा पुं० सुग्रीव।

सूरमा-संज्ञा पुं० योद्धा। वीर।

सूरमापन-संज्ञा पुं० वीरत्व। शूरता।

सूरमुखीमणि-संज्ञा पुं० दे० "सूर्य-कांतमणि"।

सूरर्षा-संज्ञा पुं० दे० "सूरमा"।

सूर-सावंत-संज्ञा पुं० १. युद्धमंत्री।  
२. नायक। सरदार।

सूरसुत-संज्ञा पुं० शनि ग्रह।

सूरसुता-संज्ञा स्त्री० यमुना।

सूरसेन-संज्ञा पुं० दे० "शूरसेन"।

सूरसेनपुर-संज्ञा पुं० दे० "मथुरा"।

सूराख-संज्ञा पुं० छेद। छिद्र।

सूरि-संज्ञा पुं० १. यज्ञ करानेवाला।  
धैरिज। २. पंडित। ३. कृष्ण का एक नाम।

सूरपेनखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्प-शखा"।

सूर्य-संज्ञा पुं० सूरज। आपताप।

सूर्यकांत-संज्ञा पुं० एक प्रकार का स्फटिक या विछौर।

सूर्यग्रहण-संज्ञा पुं० सूर्य का ग्रहण या चंद्रमा की छाया में आना।

सूर्यतनया-संज्ञा स्त्री० यमुना।

सूर्यपुत्र-संज्ञा पुं० १. शनि। २. सुग्रीव। ३. कर्ण।

सूर्यपुत्री-संज्ञा स्त्री० यमुना।

सूर्यप्रभ-वि० सूर्य के समान दीप्तिमान्।

सूर्यमणि-संज्ञा पुं० दे० "सूर्यकांत मणि"।

सूर्यमुखी-संज्ञा पुं० दे० "सूरजमुखी"।

सूर्यवंश-संज्ञा पुं० चन्द्रियों के दो भ्राता और प्रधान कुलों में से एक।

सूर्यवंशी-वि० सूर्यवंश का। जो सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।

सूर्यसंक्रांति-संज्ञा स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

सूर्यसुत-संज्ञा पुं० दे० "सूर्यपुत्र"।

सूर्या-संज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी संज्ञा।

सूर्यावर्त-संज्ञा पुं० १. हुलहुल का पौधा। २. एक प्रकार की सिर की पीड़ा। आघासीसी।

सूर्यास्त-संज्ञा पुं० १. सूर्य का क्षिपना या डूबना। २. सायंकाल।

सूर्योदय-संज्ञा पुं० १. सूर्य का उदय या निकलना। २. प्रातःकाल।

वत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुयश-संज्ञा पुं० चप्पड़ी की चिंत्ति। सुख्याति।

वि० यशस्वी। कीर्त्तिमान्।

सुयोग-संज्ञा पुं० सुंदर योग। संयोग।

सुयोधन-संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।

सुरंग-संज्ञा स्त्री० १. जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २. किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ चढ़ा-रास्ता जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३. सेंप।

सुर-संज्ञा पुं० १. देवता। २. स्वर। ध्वनि।

सुरकना-कि० स० हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना।

सुरकारी-संज्ञा पुं० देवताओं का हाथी।

सुरफेतु-संज्ञा पुं० देवताओं या ईश्वर का ध्वजा।

सुरक्षित-वि० जिसकी भली भविष्यता की गई हो।

सुरक्ष, सुरक्षा-वि० दे० "सुख"।

सुरखाय-संज्ञा पुं० चकवा।

सुरखी-संज्ञा स्त्री० १. ईंटों का महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २. दे० "सुखी"।

सुरखुरु-वि० दे० "सुखरू"।

सुरगिरि-संज्ञा पुं० सुमेरु।

सुरगुरु-संज्ञा पुं० गृहस्पति।

सुरगैया-संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।

सुरचाप-संज्ञा पुं० ईंद्रधनुष।

सुरजन-संज्ञा पुं० देव-समूह।

सुरम्भना-कि० म० दे० "सुलम्भना"।

सुरम्भाना-कि० स० दे० "सुलम्भाना"।

सुरत-संज्ञा पुं० संभोग।

संज्ञा स्त्री० ध्यान।

सुरतरंगिणी-संज्ञा स्त्री० गंगा।

सुरतरु-संज्ञा पुं० वक्ष्यवृक्ष।

सुरति-संज्ञा स्त्री० १. कामकेलि। २. स्मरण। सुधि। ३. दे० "सुरत"।

सुरतिघंत-वि० कामातुर।

सुरती-संज्ञा स्त्री० तंवाकू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ या यों ही खाया जाता है। खैनी।

सुरभाता-संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. ईश्वर।

सुरदार-वि० जिसके गले का स्वर सुंदर हो। सुस्वर।

सुरदीर्घिका-संज्ञा स्त्री० आकाश-गंगा।

सुरद्रुम-संज्ञा पुं० वक्ष्यवृक्ष।

सुरधाम-संज्ञा पुं० स्वर्ग।

सुरधुनी-संज्ञा स्त्री० गंगा।

सुरधेनु-संज्ञा स्त्री० कामधेनु।

सुरनदी-संज्ञा स्त्री० १. गंगा। २. आकाश-गंगा।

सुरनारी-संज्ञा स्त्री० देवयधू।

सुरनिलय-संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।

सुरपति-संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. विष्णु।

सुरपय-संज्ञा पुं० आकाश।

सुरपुर-संज्ञा पुं० स्वर्ग।

सुरचहार-संज्ञा पुं० सितार की तरह का एक वाद्य।

सुरचाला-संज्ञा स्त्री० देवांगना।

सुरचेल-संज्ञा स्त्री० वक्ष्यवृक्ष।

सुरमवन-संज्ञा पुं० १. मंदिर। २.



सुल-संज्ञा पुं० १. धारणा । २. दर्द । पीड़ा ।

सुलना-कि० स० १. भावों से छेदना । २. पीड़ित करना ।

सुलपानि०-संज्ञा पुं० दे० "शूल-पाणि" ।

सुली-संज्ञा स्त्री० १. प्राणदंड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमें दंडित मनुष्य एक चुकीले लोहे के डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगा मारा जाता था । २. फाँसी । ३. संज्ञा पुं० महादेव ।

सुस-संज्ञा पुं० मगर की तरह का एक बड़ा जलजंतु । सुईस ।

सुसि०-संज्ञा पुं० दे० "सुस" ।

सुखला०-संज्ञा स्त्री० दे० "शुखला" ।

सुग०-संज्ञा पुं० दे० "शुग" ।

सुगंधेपुर०-संज्ञा पुं० दे० "शुग-धेपुर" ।

सुगी-संज्ञा पुं० दे० "शुगी" ।

सुक-संज्ञा पुं० १. शुद्ध । २. बाण ।

सुजक०-संज्ञा पुं० सृष्टि करनेवाला । वरपक्ष करनेवाला ।

सुजन०-संज्ञा पुं० सृष्टि करने की क्रिया । वरादन ।

सुजनहार०-संज्ञा पुं० सृष्टिकर्ता ।

सुष्ट-वि० वरपक्ष । पैदा ।

सुष्टि-संज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति । पैदाइश । २. निर्माण । रचना । ३. दुनिया की पैदाइश । ४. संसार ।

सृष्टिकर्ता-संज्ञा पुं० ईश्वर ।

सृष्टिचिन्तन-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार हो ।

सँक-संज्ञा स्त्री० सँकने की क्रिया या

भाव ।

सँकना-कि० स० १. आँच के पास या आग पर रखकर भूनना । २. आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना ।

सँगर-संज्ञा पुं० १. एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है । २. एक प्रकार का अगहन घात । ३. चत्रियों की एक जाति ।

सँत-संज्ञा स्त्री० कुछ खर्च न होना ।

सँत-मँत-कि० वि० १. बिना दाम दिए । मुफ्त में । २. व्यर्थ ।

सँदुरा-संज्ञा पुं० ईश्वर की चुकनी । सिंदूर ।

सँदुरिया-संज्ञा पुं० एक सदायहार पौधा जिसमें छाछ फूल लगते हैं । वि० सिंदूर के रंग का । खूब छाछ ।

संध-संज्ञा स्त्री० चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद । सुरंग ।

सँधा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का खनिज नमक । संध ।

सँधिया-वि० दीवार में संध लगाकर चोरी करनेवाला ।

संज्ञा पुं० ग्यालियर के प्रसिद्ध मराठा राजवंश की वंशधि ।

सँधुरा-संज्ञा पुं० दे० "सँदुर" ।

सँधई-संज्ञा स्त्री० मँदे के सुखाए हुए सूत के से खूँछे जो दूध में एकाकर खाए जाते हैं ।

सँवर०-संज्ञा पुं० दे० "सेमल" ।

सँड्ड-संज्ञा पुं० दे० "शूडा" ।

से-प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न ।

सेउ०-संज्ञा पुं० दे० "सेव" ।

सेख०-संज्ञा पुं० १. दे० "शेप" । २. दे० "शेल्" ।

सुरपुरी । अमरावती ।  
 सुरभान-संज्ञा पुं० सूर्य ।  
 सुरभि-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी । २. गंगा । ३. सुगंधि ।  
 सुरभित-वि० सुगंधित ।  
 सुरभी-संज्ञा स्त्री० गाय ।  
 सुरभोग-संज्ञा पुं० अमृत ।  
 सुरमंडल-संज्ञा पुं० १. देवताओं का मंडल । २. एक प्रकार का यात्रा ।  
 सुरमई-वि० सुरमे के रंग का । हलका नीला ।  
 संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका नीला रंग ।  
 सुरमणि-संज्ञा पुं० चिंतामणि ।  
 सुरमा-संज्ञा पुं० नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण छियाँ आँखों में लगाती हैं ।  
 सुरमादानी-संज्ञा स्त्री० वह शीशी-नुमा पात्र जिसमें सुरमा रखते हैं ।  
 सुरम्य-वि० अत्यंत मनोरम । सुंदर ।  
 सुरराज-संज्ञा पुं० इंद्र ।  
 सुररिपु-संज्ञा पुं० असुर । राक्षस ।  
 सुरध्रु-संज्ञा पुं० १. देवताओं में श्रेष्ठ । २. विष्णु । ३. इंद्र ।  
 सुरस-वि० स्वादिष्ट । मधुर ।  
 सुरसती-संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती" ।  
 सुरसर-संज्ञा पुं० मानसरोवर ।  
 संज्ञा स्त्री० दे० "सुरमरि" ।  
 सुरसरसुता-संज्ञा स्त्री० सरयू नदी ।  
 सुरसरि, सुरसरी-संज्ञा स्त्री० १. गंगा । २. गोदावरी ।  
 सुरसरिता-संज्ञा स्त्री० दे० "गंगा" ।  
 सुरसा-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध नाग-

माता जिसने हनुमानजी को समुद्र पार करने के समय रोका था ।  
 सुरसाई-संज्ञा पुं० इंद्र ।  
 सुरसालु-वि० देवताओं को सत्ताने-वाला ।  
 सुरसंदरी-संज्ञा स्त्री० अप्सरा ।  
 सुरसुंभी-संज्ञा स्त्री० कामधेनु ।  
 सरसराना-क्रि० प्र० १. काँड़ा आदि का रेंगना । २. छुन्ननी होना ।  
 सुरही-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूधा खेलते हैं । २. इन कौड़ियों से होनेवाला जूधा ।  
 सरांगना-संज्ञा स्त्री० १. देवपत्नी । २. अप्सरा ।  
 सुरा-संज्ञा स्त्री० मदिरा । शराय ।  
 सुराई-संज्ञा स्त्री० वीरता । यहा-दुरी ।  
 सुराख-संज्ञा पुं० छेद ।  
 सराग-संज्ञा पुं० १. सुंदर राग । २. दोह । पता ।  
 सुरागाय-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की हो-नस्ती गाय जिसकी पूँछ से चैवर बनता है ।  
 सुराज-संज्ञा पुं० १. दे० "सुराज्य" । २. दे० "स्वराज्य" ।  
 सुराज्य-संज्ञा पुं० १. वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शांति विराजती हो । २. दे० "स्वराज्य" ।  
 सुराधिप-संज्ञा पुं० इंद्र ।  
 सुरानीक-संज्ञा पुं० देवताओं की सेना ।  
 सुरापगा-संज्ञा स्त्री० गंगा ।  
 सुरारि-संज्ञा पुं० राक्षस । असुर ।  
 सुरालय-संज्ञा पुं० १. स्वर्ग । २. सुरमेक

सेखर-संज्ञा पुं० दे० "शेखर" ।

सेज-मंश की० शय्या । पलंग ।

सेजपाल-संज्ञा पुं० राजा की सेज पर पड़ा देनेवाला । शयनागार-रक्षक ।

सेजरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "सेज" ।

सेज्या-संज्ञा स्त्री० दे० "शय्या" ।

सेठ-संज्ञा पुं० १. बड़ा साहूकार ।

महाजन । कोठीवाल । २. मालदार आदमी ।

सेतदुति-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सेतिका-संज्ञा स्त्री० अयोध्या ।

सेतु-संज्ञा पुं० १. बाँध । २. नदी आदि के आर-पार जाने का रास्ता ।

सेतुबंध-संज्ञा पुं० १. पुल की बँधाई ।

२. वह पुल जो लंका पर बँधाई के समय रामचंद्रजी ने समुद्र पर पँध-वाया था ।

सेतुधा-संज्ञा पुं० दे० "सूत" ।

सेद-संज्ञा पुं० दे० "स्वेद" ।

सेदज-वि० दे० "स्वेदज" ।

सेन-संज्ञा पुं० १. एक भक्त नाई । २. बाहु पंथा ।

० संज्ञा स्त्री० दे० "सेना" ।

सेनजित्-वि० सेना को जीतनेवाला ।

संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

सेनप, सेनपति-संज्ञा पुं० दे० "सेनापति" ।

सेनवंश-संज्ञा पुं० सेनाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था ।

सेना-संज्ञा स्त्री० युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए मनुष्यों का बड़ा समूह । फौज । पकटन ।

कि० सं० सेवा करना । खिदमत करना ।

सेनानी-संज्ञा पुं० १. सेनापति । २. कासिकेय ।

सेनापति-संज्ञा पुं० १. सेना का नायक । फौज का अफसर । २. कासिकेय ।

सेनामुख-संज्ञा पुं० सेना का अग्रभाग ।

सेनावास-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ सेना रहती हो । छावनी ।

सेनाव्यूह-संज्ञा पुं० युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति । सैन्य-विन्यास ।

सेनी-संज्ञा स्त्री० १. तरतरी । २. सीढ़ी ।

सेव-संज्ञा पुं० नाशपाती की जाति का, मफोले आकार का, एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है ।

सेम-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है ।

सेमई-संज्ञा स्त्री० दे० "सेवई" ।

सेमल-संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं और जिसके फलों में कैयल रुई होती है ।

सेर-संज्ञा पुं० १. सोलह छटाक या अस्सी तोले की एक ताल । २. एक प्रकार का धान । ३. दे० "शेर" ।

सेरसाहि-संज्ञा पुं० दिछी का बाद-शाह शेरशाह ।

सेराना-वि० अ० टंडा होना । कि० सं० मूर्ति आदि जल में प्रवाह करना ।

सुरावती-मंश स्त्री० करवण की पत्नी  
और देवनाग्रों की माता, अविधि ।

सुराष्ट्र-संज्ञ पुं० एक प्राचीन देश ।  
किन्ती के मत से यह सूरत और  
किपी के मत से काठियावाड़ है ।

सुरासुर-संज्ञ पुं० सुर और असुर ।  
देवता और दानव ।

सुराही-संज्ञ स्त्री० जल रखने का  
एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र ।

सुराहीदार-वि० सुराही की तरह  
का गोल और लंबोन्नत ।

सुरी-मंश स्त्री० देवांगना ।

सुरीला-वि० मीठे सुरवाला । सुखर ।  
सुकुंड ।

सुख-वि० १. अनुकूल । २. दे०  
"सुखं" ।

सुखमुखी-संज्ञ पुं० दे० "सुख-  
मुखी" ।

सुरूप-वि० सुंदर रूपवाला ।

सुरूपता-मंश स्त्री० सुंदरता ।

सुरूपा-वि० स्त्री० सुंदरी ।

सुरेन्द्र-संज्ञ पुं० इंद्र ।

सुरेन्द्रचाप-मंश पुं० इंद्रचक्र ।

सुरेय-संज्ञ पुं० सूर्य । शिशुमार ।

सुरेश्वरी-मंश स्त्री० १. दुर्गा । २.  
लक्ष्मी ।

सुरेत-संज्ञ स्त्री० खेली । उपपत्नी ।

सुरेतिन-संज्ञ स्त्री० खेली ।

सुख-वि० रक्त वर्ण का । छाछ ।

सुख-वि० १. तेजस्वी । २. सफ-  
लता प्राप्त करने के कारण जिसके  
मुँह की छाली रह गई हो ।

सुखी-संज्ञ स्त्री० लाली । अरुणता ।

सुलक्षण-वि० १. अच्छे लक्षणों-  
वाला । २. भाग्यवान् ।

संज्ञ पुं० शुभ लक्षण । शुभ चिह्न ।

सुलक्षणा-वि० स्त्री० अच्छे लक्षणों-  
वाली ।

सुलगना-कि० म० ( लकड़ों आदि  
का ) जड़ना । दहकना ।

सुलगाना-कि० स० जड़ाना । प्रज्व-  
लित करना ।

सुलच्छन-वि० दे० "सुलक्षण" ।

सुलच्छनी-वि० दे० "सुलक्षणा" ।

सुलक्ष-वि० सुंदर ।

सुलभन-संज्ञ स्त्री० सुलभने की क्रिया  
या भाव । सुलभाव ।

सुलभना-कि० म० वज्रभी हुई वस्तु  
की वज्रभन दूर होना या सुलभना ।

सुलभाना-कि० स० वलभन या  
गुरपी खोजना । जटिलताओं को दूर  
करना ।

सुलभाव-संज्ञ पुं० दे० "सुलभन" ।

सुलतान-मंश पुं० बादशाह ।

सुलतानी-संज्ञ स्त्री० १. बादशाहन ।  
२. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

वि० आल रंग का ।

सुलप-वि० दे० "सुलक्ष" ।

सुलफ-वि० १. लचीला । २. ना-  
जुष्ट । कोमल ।

सुलफा-संज्ञ पुं० १. वह तमाकू जो  
चिठम में बिना तवा रखे भरकर  
पिशा जाता है । २. चरस ।

सुलफवाज़-वि० गाँजा या चरस  
पीनेवाला ।

सुलभ-वि० १. सहज में मिलने-  
वाला । २. सहज ।

सुलह-संज्ञ स्त्री० मेह । मित्राप ।

सुलहनामा-संज्ञ पुं० वह कागज़  
जिस पर परस्पर लड़नेवाले राजाओं  
या राज्यों की ओर से मेह की शर्तें

सेल-संज्ञा पुं० वरदा । भाखा ।

सेलखड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "सदिया" ।

सेलना-क्रि० प्र० मर जाना ।

सेला-संज्ञा पुं० रेशमी चादर ।

सेली-संज्ञा स्त्री० १. छोटा भाखा ।

२. छोटा दुपट्टा ।

सेल्हा-संज्ञा पुं० दे० "सेला" ।

सेवई-संज्ञा स्त्री० गुंघे हुए मँदे के सूत के से लच्छ जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं ।

सेवई-संज्ञा पुं० दे० "सेमल" ।

सेव-संज्ञा पुं० सूत या डोरी के रूप में घेसना या एक एकवान ।

० संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा" ।

संज्ञा पुं० दे० "सेव" ।

सेवक-संज्ञा पुं० १. सेवा करनेवाला । नौकर । २. भक्त ।

सेवकाई-संज्ञा स्त्री० सेवा । टहल ।

सेवड़ा-संज्ञा पुं० १. जैन साधुओं का एक भेद । २. मदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान ।

सेवती-संज्ञा स्त्री० सर्वदे गुलाब ।

सेवन-संज्ञा पुं० १. परिचर्या । खिदमत । २. नियमित व्यवहार ।

सेवनीय-वि० १. सेवा योग्य । २. व्यवहार के योग्य ।

सेवरा-संज्ञा पुं० दे० "सेवड़ा" ।

सेवरी-संज्ञा स्त्री० दे० "शवरी" ।

सेवा-संज्ञा स्त्री० दूसरे को आश्रय पहुँचाने की क्रिया । खिदमत । परिचर्या ।

सेवा-टहल-संज्ञा स्त्री० परिचर्या । सेवा शुश्रूषा ।

सेवा-चंदगी-संज्ञा स्त्री० आराधना । पूजा ।

सेवार, सेवाल-संज्ञा स्त्री० पानी में फलनेवाली एक घास ।

सेवावृत्ति-संज्ञा स्त्री० नौकरी । चादरी की जीविका ।

सेविका-संज्ञा स्त्री० सेवा करनेवाली । दासी । नौकरानी ।

सेवित-वि० १. जिसकी सेवा की गई हो । २. जिसका प्रयोग किया गया हो । व्यवहृत ।

सेवी-वि० १. सेवा करनेवाला । २. संभोग करनेवाला ।

सेव्य-वि० १ जिसकी सेवा करना उचित हो । २ जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय । ३. काम में खाने लायक ।

सेव्य-सेवक-संज्ञा पुं० स्वामी और सेवक ।

सेप-संज्ञा पुं० १. दे० "शेप" । २. दे० "शेख" ।

सेस-संज्ञा पुं०, वि० दे० "शेप" ।

सेपनाग-संज्ञा पुं० दे० "शेपनाग" ।

सेहत-संज्ञा स्त्री० १. सुख । चैन । २. रोग से छुटकारा ।

सेहतखाना-संज्ञा पुं० पाखाने-पेशाब आदि की कोठरी ।

सेहरा-संज्ञा पुं० १. फूल की या तार और गोठों की घनी मालाओं की पंक्ति जो दूध के मीर के नीचे रहती है । २. चियाह का मुकुट । मीर । ३. वे माँगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर घर के यहाँ गाए जाते हैं ।

सेहुड़ा-संज्ञा पुं० यूर ।

सेहुआ-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चर्म-रोग ।

सैंतना-क्रि० प्र० संचित करना । बटोरना ।

लिखी रहती हैं। संधिपत्र।

सुलाना-कि० स० सेने में प्रवृत्त करना। शयन कराना।

सलेमान-संज्ञा पुं० १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह। २. एक पहाड़ जो यलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है।

सुलेमानी-संज्ञा पुं० १. वह घोड़ा जिसकी आँखें सफेद हों। २. एक प्रकार का दोरंगा पर्यर।

सलोचना-संज्ञा स्त्री० १. एक अप्सरा। २. मेघनाद की पत्नी।

सुलतान-संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।

सुधका-वि० उत्तम व्याख्यान देने वाला। चाग्मी।

सुधचन-वि० सुंदर घोलनेवाला।

सधन-संज्ञा पुं० दे० "सुधन"।

सुधर्ण-संज्ञा पुं० सोना। स्वर्ण।

वि० १. सुंदर वर्ण या रंग का। वज्रवस्त्र। २. सेने के रंग का। पीला।

सुधर्णरेखा-संज्ञा स्त्री० एक नदी जो बिहार के राँची जिले से निकलकर बंगाळ की खाड़ी में गिरती है।

सुधा-संज्ञा पुं० दे० "सुधा"।

सुवार-संज्ञा पुं० १. रसेइया। २. अच्छा दिन।

सुवास-संज्ञा पुं० १. सुगंध। २. सुंदर घर।

सुवासिका-वि० स्त्री० सुवास करनेवाली। सुगंध करनेवाली।

सुवासिनी-संज्ञा स्त्री० १. युवावस्था में भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री।

२. सधवा स्त्री।

सुविज्ञ-वि० बहुत चतुर।

सुधिधा-संज्ञा स्त्री० दे० "सुमीता"।

सुवेश-वि० धन्यादि से सुसज्जित।

सुशील-वि० उत्तम शील या स्वभाव वाला।

सुशोभन-वि० अत्यंत शोभायुक्त।

सुशोभित-वि० उत्तम रूप से शोभित।

सुधाव्य-वि० जो सुनने में अच्छा लगे।

सुध्री-वि० बहुत सुंदर। शोभायुक्त।

सुश्रुत-संज्ञा पुं० आयुर्वेदीय चिकित्साशास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य।

सुपमना-संज्ञा स्त्री० दे० "सुपुष्पा"।

सुपमनि-संज्ञा स्त्री० दे० "सुपुष्पा"।

सुपमा-संज्ञा स्त्री० परमशोभा। अत्यंत सुंदरता।

सुपिर-संज्ञा पुं० १. घाँस। २. धेत।

सुपुस-वि० गहरी नींद में सोया हुआ। घोर निद्रित।

संज्ञा स्त्री० दे० "सुपुप्ति"।

सुपुप्ति-संज्ञा स्त्री० १. घोर निद्रा। गहरी नींद। २. अज्ञान। (वेदांत)

सपुष्पा-संज्ञा स्त्री० हठयोग में शरीर का तीन प्रधान नाड़ियों में से एक।

सुपेण-संज्ञा पुं० १. परीक्षित के एक पुत्र का नाम। २. एक धानर जो

वरुण का पुत्र, घालि का ससुर और सुग्रीव का धैय था।

सुष्ट-वि० अच्छा। भला।

सुष्ट-कि० वि० अच्छी तरह।

वि० सुंदर। उत्तम।

सुसंगति-संज्ञा स्त्री० अच्छी सोहयत। ससंग।

सुसकना-कि० अ० दे० "सिसकना"।

सुसताना-कि० अ० यथावत दूर करना। विश्राम करना।

सुसमा-संज्ञा स्त्री० दे० "सुपमा"।

सैधव-संज्ञ पुं० १. सेंधा नमक ।

२. सिंध देश का घोड़ा ।

सैधवी-संज्ञा स्त्री० संपूर्ण जाति की एक रागिनी ।

सैवर-संज्ञा पुं० दे० "सौमर" ।

सैह-संज्ञा-कि० वि० दे० "सैह" ।

सै-वि०, संज्ञा पुं० सै ।

संज्ञा स्त्री० १. सख । २. वीर्य ।

शक्ति । ३. बढ़ती । धरकत ।

सैकड़ा-संज्ञा पुं० सै का समूह । शत-समष्टि ।

सैकड़े-कि० वि० प्रति सै के हिसाब से । प्रतिशत । फी सदी ।

सैकड़ों-वि० १. कई सै । २. बहु-संख्यक ।

सैकत-वि० रेतीला । बलुया ।

सैकल-संज्ञा पुं० हथियारों को साफ करने और वन पर सान चढ़ाने का काम ।

सैकलगर-संज्ञा पुं० तखवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला ।

सैधी-संज्ञा स्त्री० धरछी ।

सैद-संज्ञा पुं० दे० "सैपद" ।

सैध्यांतिक-संज्ञा पुं० सिद्धांत को जाननेवाला ।

वि० सिद्धांत-संबंधी । सख-संबंधी ।

सैन-संज्ञा स्त्री० संकेत । इशारा ।

सैन-संज्ञा पुं० १. दे० "शयन" । २. दे० "श्येन" ।

सैन-संज्ञा स्त्री० दे० "सेना" ।

सैना-संज्ञा स्त्री० दे० "सेना" ।

सैनापत्य-संज्ञा पुं० सेनापति का पद या कार्य । सेनापतित्व ।

वि० सेनापति-संबंधी ।

सैनिक-संज्ञा पुं० १. सेना या फौज

का आदमी । सिपाही । २. संतरी ।

वि० सेना-संबंधी ।

सैनी-संज्ञा पुं० हज्जाम ।

सैन-संज्ञा स्त्री० दे० "सेना" ।

सैनू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बूरेदार कपड़ा । जैनु ।

सैनेश-संज्ञा पुं० सेनापति ।

सैन्य-संज्ञा पुं० सेना । फौज ।

सैफ-संज्ञा स्त्री० तखवार ।

सैमंतिक-संज्ञा पुं० सिंदूर । सेंदुर ।

सैयद-संज्ञा पुं० १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी । २. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग ।

सैय-संज्ञा पुं० पति ।

सैरंध्रो-संज्ञा स्त्री० १. सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री । २. व्रीपदी ।

सैर-संज्ञा स्त्री० मन बहलाने के लिये घूमना-फिरना ।

सैल-संज्ञा पुं० दे० "शैल" ।

संज्ञा स्त्री० बाढ़ । जल-प्लावन ।

सैलजा-संज्ञा स्त्री० दे० "शैलजा" ।

सैलानी-वि० सैर करनेवाला । मन-

माना घूमनेवाला ।

सैलू-संज्ञा पुं० दे० "शैलू" ।

सैव-संज्ञा पुं० दे० "शैव" ।

सैवलिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "शैवलिनी" ।

सौ-प्रत्यय० करण और अपादान कारक का चिह्न । द्वारा । से ।

सौचर नमक-संज्ञा पुं० दे० "कांजा नमक" ।

सौंटा-संज्ञा पुं० मोटी छड़ी । डंडा ।

सौंठ-संज्ञा स्त्री० सुखाया हुआ अद-रक । शूठि ।

सु.सर, सु.सरा-संज्ञा पुं० दे० "ससुर"।  
सु.सरा-संज्ञा स्त्री० ससुर का घर।  
ससुराक्ष।

सु.सुकना-कि० भ० दे० "सिसकना"।  
सु.स्त-वि० १. चिंता आदि के कारण  
निम्नेज। उदास। हतप्रभ। २.  
धीमी चाखवाला।

सु.स्तना-संज्ञा स्त्री० सुंदर स्तनों से  
युक्त स्त्री।

सु.स्ताना-कि० भ० दे० "सुसवाना"।  
सु.स्ती-संज्ञा स्त्री० १. सुस्त होने का  
भाव। २. आलस्य।

स.स्थ-वि० १. भला-चंगा। बीरोग।  
तंदुरुस्त। २. भली भाँति स्थिर।

स.स्थिर-वि० अत्यंत स्थिर या दृढ़।  
अविचल।

स.स्वर-वि० जिसका सुर मधुर हो।  
सुकंठ। सुरीला।

स.स्यादु-वि० अत्यंत स्वाद-युक्त।  
बहुत स्वादिष्ट।

सु.हराना-कि० स० दे० "सहजाना"।  
सु.हाग-संज्ञा पुं० स्त्री की सवैया रहने  
की अवस्था। अदिवात। शोभाय।

सु.हागा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चार  
जो गरम गंधकी सोती से निकलता है।

सु.हागिन-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसका  
पति जीवित हो। सधवा स्त्री।

सु.हागिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिनी"।  
सु.हाना-कि० भ० शोभायमान होना।  
शोभा देना।

सु.हाया-वि० दे० "सुहावना"।

सु.हारी-संज्ञा स्त्री० सादी पूरी।

सु.हाल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का नम-  
कीन पकवान।

सु.हायना-वि० देखने में भला।

सुंदर। श्रियदर्शन।

कि० भ० दे० "सुहाना"।

सु.हासी-वि० मधुर मुसकानवाला।  
चाह्लासी।

सु.हृत्-संज्ञा पुं० १. अच्छे हृदयवाला।  
२. मित्र।

सु.हृत्-संज्ञा पुं० दे० "सुहृत्"।

सु.हैला-वि० सुहावना। सुंदर।

सु.घना-कि० स० नाक द्वारा गंध का  
अनुभव करना। घास घेना।

सु.ङ-संज्ञा स्त्री० हाथी की लंबी नाक  
जो प्रायः ज़मीन तक खटकती है।  
शुंड।

सु.स-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध वड़ा  
जल-जंतु। सुस। सुसमार।

सु.अर-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध स्तम्भ-  
पायी अंतु जो मुख्यतः दो प्रकार का  
होता है—जंगली और पालतू। २.  
एक प्रकार की गाली।

सु.आ-संज्ञा पुं० १. सुरगा। तोता।  
२. यड़ी सूई। सूआ।

सु.ई-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पतला तार  
जिनके छेद में तागा पिरोकर कपड़ा  
सिया जाता है।

सु.का-संज्ञा पुं० दे० "शुक"। (नवन्न)  
सु.कर-संज्ञा पुं० सूकर। शूकर।

सु.करक्षेत्र-संज्ञा पुं० एक प्राचीन तीर्थ  
जो मथुरा जिले में है। सोरों।

सु.करी-संज्ञा स्त्री० मादा सूकर।

सु.का-संज्ञा पुं० चार आने के मूल्य  
का सिक्का। चवड़ी।

सु.क-संज्ञा पुं० १. वेदमंत्रों या श्रवाणों  
का समूह। २. उत्तम कपन।

वि० भली भाँति कहा हुआ।

सु.क्ति-संज्ञा स्त्री० उत्तम वक्ति या



सोठारा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का छड्डू जिसमें मेवों के सिवा सोठ भी पड़ती है। (प्रसूति स्त्री के लिये)

सोधा-अव्य० दे० "सोह"।

सोधा-वि० १. सुगंधित। २. मिट्टी के नए घरतन में पानी पड़ने या चना, येसन आदि भुनने से निकलने-वाली सुगंध के समान।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं।

२. सुगंध।

सोहा-संज्ञा स्त्री० अव्य० दे० "सोह"।

सोही-अव्य० दे० "सोह"।

सो-सर्व० वह।

० वि० दे० "सा"।

अव्य० अतः। इसलिये। निदान।

सोआ-संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग।

सोई-सर्व० दे० "वही"।

अव्य० दे० "सो"।

सोकित-वि० शोकयुक्त।

सोखक-वि० शोषण करनेवाला।

सोखता-वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोखता"।

सोखन्-संज्ञा पुं० एक प्रकार का जंगली धान।

सोखना-क्रि० स० शोषण करना। घुस खेना।

सोखता-संज्ञा पुं० एक प्रकार का खुर-दुरा कागज जो स्याही सोख खेता है।

वि० जला हुआ।

सोग-संज्ञा पुं० दुःख। रंज।

सोगिनी-वि० स्त्री० शोक करने-वाली। शोकाकुला।

सोगी-वि० दुःखित।

सोच-संज्ञा पुं० १. सोचने की क्रिया या भाव। २. चिंता। प्रिक्र। ३. पड़तावा।

सोचना-क्रि० प्र० १. मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना।

२. चिंता करना।

सोच-विचार-संज्ञा पुं० समझ-बूझ। गौर।

सोचु-संज्ञा पुं० दे० "सोच"।

सोजन-संज्ञा पुं० सूई।

सोजिश-संज्ञा स्त्री० सूजन।

सोझ, सोझा-वि० [ स्त्री० सोझी ] सीधा।

सोत-संज्ञा पुं० दे० "स्रोत" या "सोता"।

सोता-संज्ञा पुं० करना।

सोति-संज्ञा स्त्री० स्रोत।

सोदर-संज्ञा पुं० [ स्त्री० सोदरी ] सगा भाई।

वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

सोधा-संज्ञा पुं० १. खोज। २. चुकता होना।

सोधन-संज्ञा पुं० हूँड़।

सोधना-क्रि० स० १. हूँड़ करना। २. खोजना। ३. अढ़ा करना।

सोधाना-क्रि० स० सोधने का काम दूसरे से कराना।

सोन-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिलता है। २. दे० "सोना"। ३. एक प्रकार का जलपथी।

सोनकीकर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

सोनकेला-संज्ञा पुं० पीला केला।

सोनचिरी-संज्ञा स्त्री० नटी।

सानजूही-संज्ञा स्त्री० पीली जूही।

सोनमद्र-संज्ञा पुं० दे० "सोन"।

सोनहार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का समुद्री पत्थी।

कथन ।

सूक्ष्म-वि० १. बहुत छोटा । २. भारीक या महीन ।

संज्ञ पुं० १. परमाणु । २. पराग्रह ।  
सूक्ष्मता-संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म होने का भाव । बारीकी । महीनपन ।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र-संज्ञा पुं० एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं । सुदेधीन ।

सूक्ष्मदर्शिता-संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म या भारीक बात सोचने-समझने का गुण ।

सूक्ष्मदर्शी-वि० भारीक बात को सोचने-समझनेवाला । कुशाग्रबुद्धि ।

सूक्ष्मदृष्टि-संज्ञा स्त्री० वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायें ।

संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्मदर्शी" ।

सूक्ष्म शरीर-संज्ञा पुं० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्त्वों का समूह ।

सूखा-वि० दे० "सूखा" ।

सूखना-क्रि० प्र० १. नमी या तरी का निकल जाना । रसहीन होना । २. जल का न रहना या कम हो जाना । ३. दुबला होना ।

सूखा-वि० १. जिसका पानी निकल, रुक या जल गया हो । २. तेज-रहित ।

संज्ञा पुं० पानी न घरसना । शनावृष्टि ।

सूचक-वि० सूचना देनेवाला । बताने-वाला ।

संज्ञा पुं० १. सूई । २. सीनेवाला ।

सूचना-संज्ञा स्त्री० १. वह बात जो

विली को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय ।

विज्ञापन । २. इशतहार ।

सूचनापत्र-संज्ञा पुं० विज्ञापन ।

सूचिका-संज्ञा स्त्री० सूई ।

सूचिकामरुण-संज्ञा पुं० एक प्रकार की रोगध जो सन्निपात आदि प्राणनाशक रोगों की अंतिम रोगध मानी गई है ।

सूचित-वि० जितकी सूचना दी गई हो । अज्ञात हुआ ।

सूचीकर्म-संज्ञा पुं० सिलाई का काम ।

सूचीपत्र-संज्ञा पुं० तालिका । फेहरिस्त । सूची ।

सूक्ष्म-वि० दे० "सूक्ष्म" ।

सूजन-संज्ञा स्त्री० सूजने का क्रिया या भाव ।

सूजना-क्रि० प्र० रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना । शोथ होना ।

सूजा-संज्ञा पुं० बड़ी मोटी सूई । सूया ।

सूजाक-संज्ञा पुं० मूर्धेन्द्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग ।

सूजी-संज्ञा स्त्री० १. गेहूँ का दरदरा भाग जिससे पकवान बनाते हैं ।

२. सूई ।

सूक्त-संज्ञा स्त्री० १. सूक्तों का भाव । २. दृष्टि ।

सूक्तना-क्रि० प्र० दिखाई देना । नजर आना ।

सूत-संज्ञा पुं० १. सूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है । सूता । २. तारा । डोरा । सूत्र । ३. दे० "सूत" ।

सोना-संज्ञा पुं० १. स्वर्ण । कनक ।  
 २. बहुत सुंदर वस्तु ।  
 कि० च० १ नौद खना । २. शरीर  
 के किसी अंग का सुख होना ।  
 सोनारो-संज्ञा पुं० गेरू का एक भेद ।  
 सोनार-संज्ञा पुं० दे० "सुनार" ।  
 सोनित-संज्ञा पुं० दे० "शोणित" ।  
 सोनी-संज्ञा पुं० सुनार ।  
 सोपान-संज्ञा पुं० सीढ़ी ।  
 सोपानित-वि० सोपान से युक्त ।  
 सोफियाना-वि० १. सुकियों का ।  
 २. जो देखने में सादा, पर बहुत  
 भला लगे ।  
 सोम-संज्ञा स्त्री० दे० "शोमा" ।  
 सोमना-वि० १. शोभित होना ।  
 सोमाकारी-वि० सुंदर ।  
 सोमित-वि० दे० "शोभित" ।  
 सोम-संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल की  
 एक लता जिसका रस-मादक होता  
 था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि  
 पान करते थे । २. चंद्रमा । ३.  
 सोमवार ।  
 सोमनाथ-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध  
 द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक । २.  
 काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित  
 एक प्राचीन नगर जहाँ ब्रह्म ज्योति-  
 र्लिंग है ।  
 सोमपान-संज्ञा पुं० सोम पीना ।  
 सोमपायी-वि० [स्त्री० सोमपायिनी] सोम  
 पीनवाला ।  
 सोमयाजी-संज्ञा पुं० सोम यज्ञ करने-  
 वाला ।  
 सोमरस-संज्ञा पुं० सोमरस का रस ।  
 सोमराज-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
 सोमवंश-संज्ञा पुं० चंद्रवंश ।  
 सोमवंशीय-वि० चंद्रवंश में उत्पन्न ।

सोमघटी अमावस्या-संज्ञा स्त्री०  
 सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या  
 जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी  
 जाती है ।  
 सोमघण्टी-संज्ञा स्त्री० १. बाहो  
 २. चामर ।  
 सोमवार-संज्ञा पुं० एक बार जो रवि-  
 वार के बाद पड़ता है ।  
 सोमवारी-संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती  
 अमावस्या" ।  
 वि० सोमवार-संबंधी ।  
 सोमसुत-संज्ञा पुं० बुध ।  
 सोमेश्वर-संज्ञा पुं० दे० "सोमनाथ" ।  
 सोय-सर्व० बही ।  
 सर्व० दे० "सो" ।  
 सोर-संज्ञा पुं० १. शोर । २. प्रसिद्धि ।  
 संज्ञा स्त्री० जड़ ।  
 सोरठ-संज्ञा पुं० १. गुजरात और  
 काठियावाड़ का प्राचीन नाम ।  
 २. गोरठ देश की राजधानी । सूरत ।  
 सोरठा-संज्ञा पुं० अड़तालीस मात्राओं  
 का एक छंद ।  
 सोरनी-संज्ञा स्त्री० झाड़ू ।  
 सोरही-वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह" ।  
 सोरही-संज्ञा स्त्री० जूया खेलने के  
 लिये सोलह चिन्ती कीड़ियाँ ।  
 सोलंकी-संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक  
 प्राचीन राजवंश ।  
 सोलह-वि० जो गिनती में दस से  
 दस अधिक हो । सोलह ।  
 सोवन-संज्ञा पुं० सोने की क्रिया  
 या भाव ।  
 सोवा-संज्ञा पुं० दे० "सोमा" ।  
 सासन-संज्ञा पुं० फारस की और का  
 एक प्रसिद्ध फूल का पौधा ।  
 सोसनी-वि० सोसन के फूल के

सूतक-संज्ञा पुं० १. जन्म । २. वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है ।

सूतकी-वि० परिवार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो ।

सूतना-वि० अ० दे० "सेना" ।

सूतपुत्र-संज्ञा पुं० १. सारथि । २. कर्ण ।

सूता-संज्ञा पुं० तंतु । सूत ।

सूति-संज्ञा स्त्री० १. जन्म । २. प्रसव । जनन ।

सूतिका-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जन्मा हो । जुच्चा ।

सूतिकागार, सूतिकागृह-संज्ञा पुं० सौरी । प्रसव-गृह ।

सूती-संज्ञा स्त्री० सीपी ।

सूत्र-संज्ञा पुं० १. सूत । ताना । होना । २. यज्ञोपवीत । जनेऊ । ३. घोड़े अथवा या शस्त्रों में कड़ा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे ।

सूत्रकार-संज्ञा पुं० १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो । सूत्र-रचयिता । २. बड़ई । ३. जुजाहा ।

सूत्रग्रंथ-संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो, जैसे—सांख्यसूत्र ।

सूत्रधार-संज्ञा पुं० नाट्यशास्त्र का व्यवस्थापक ।

सूत्रपात-संज्ञा पुं० प्रारंभ । शुरू ।

सूथनी-संज्ञा स्त्री० पायजामा ।

सूय-संज्ञा पुं० १. खास । २. व्याज ।

सूदन-वि० विनाश करनेवाला ।

सूधा-वि० दे० "सीधा" ।

सूधे-वि० दे० "सीधे से" ।

सूनु-संज्ञा पुं० १. प्रसव । जनन ।

२. कली । कलिका । ३. फूल ।

४. पुत्र ।

सूसा-संज्ञा पुं० दे० "शून्य" ।

सूना-वि० सुनसान ।

सूना पुं० एकांत । निर्जन स्थान ।

संज्ञा स्त्री० पुत्री । बेटी ।

सूनापन-संज्ञा पुं० सद्याटा ।

सूनु-संज्ञा पुं० पुत्र । संतान ।

सप-संज्ञा पुं० रमोहया ।

संज्ञा पुं० अनास फटकने का सरई या सौंक का छत्र ।

सपकार-संज्ञा पुं० रमोहया । पाचक ।

सपेनखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा" ।

सपशास्त्र-संज्ञा पुं० पाकशास्त्र ।

सफ-संज्ञा पुं० परम । ऊन ।

सूफो-संज्ञा पुं० सुगन्धमानों का एक धार्मिक वदार संस्कार ।

सूधा-संज्ञा पुं० किसी देश का कोई भाग । प्रांत ।

सूवेदार-संज्ञा पुं० १. किसी सूवे या प्रांत का शासक । २. एक छोटा फौजी चौहदा ।

सूवेदारी-संज्ञा स्त्री० सूवेदार का चौहदा या पद ।

सम-वि० कंजूम ।

सुर-संज्ञा पुं० अंधा ।

संज्ञा पुं० घीर । महादुर ।

संज्ञा पुं० दे० "शुल" ।

सरकुमार-संज्ञा पुं० वसुदेव ।

सुरेज-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. दे० "सूरदास" ।

रंग का ।

सोहगी-संज्ञा स्त्री० तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं ।

सोहन-वि० [ स्त्री० सोहनी ] अच्छा लगनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया ।

सोहन पपड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

सोहन हल्ला-संज्ञा पुं० एक प्रकार की खादिष्ट मिठाई ।

सोहना-कि० भ० १. शोभित होना ।

२. अच्छा लगना ।

+वि० सुंदर ।

सोहनी-संज्ञा स्त्री० झाड़ ।

वि० प्रा० सुंदर ।

सोहयत-संज्ञा स्त्री० संग-साथ ।

सोहगना-कि० स० दे० "सहजाना" ।

सोहला-संज्ञा पुं० १. वह गीत जो घर में पचा पैदा होने पर बिया गायी है । २. मौलिक गीत ।

सोहागा-संज्ञा पुं० दे० "सुहाग" ।

सोहागिन-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन" ।

सोहागिल-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन" ।

सोहाता-वि० [ स्त्री० सोहाती ] सुहावना ।

सोहाना-कि० भ० १. शोभित होना ।

२. रुचिकर होना ।

सोहाया-वि० [ स्त्री० सोहाय ] शोभित ।

सोहारी-संज्ञा स्त्री० पूरी ।

सोहावना-वि० दे० "सुहावना" ।

कि० भ० दे० "सोहाना" ।

सोहिनी-वि० स्त्री० सुहावनी ।

संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी ।

सोहिल-संज्ञा पुं० शमस्य तारा ।

सोही-कि० वि० सामने ।

सोहें-कि० वि० सामने ।

सौचना-कि० स० भल-त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर धोना ।

सौचाना-कि० स० सौच कराना ।

सौदन-संज्ञा स्त्री० धोवियों का कपड़े को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना ।

सौदना-कि० स० घ्रापस में मिलावना ।

सौदर्य-संज्ञा पुं० सुंदरता ।

सौध-संज्ञा स्त्री० सुगंध ।

सौधना-कि० स० सुगंधित करना ।

सौपना-कि० स० १. सपुर्द करना ।

२. सहेजना ।

सौर-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पैधा जिसके बीजों का औषध के भक्ति-रिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं ।

सौफिया, सौफी-संज्ञा स्त्री० सौफ की बनी हुई शराब ।

सौरदा-संज्ञा स्त्री० सावदापन ।

सौहा-संज्ञा स्त्री० शपथ ।

संज्ञा पुं०, कि० वि० सामने ।

सौ-वि० नब्बे और दस ।

सौकर्य-संज्ञा पुं० सुभीता ।

सौकुमाय-संज्ञा पुं० सुकुमारता ।

सौख्य-संज्ञा पुं० १. सुखत्व । २. सुख ।

सौगंद-संज्ञा स्त्री० शपथ ।

सौगंध-संज्ञा पुं० सुगंध ।

संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद" ।

सौगात-संज्ञा स्त्री० भेंट । उपहार ।

सौघा-वि० कम दाम का ।

सौव-संज्ञा पुं० दे० "सौव" ।

सौज-संज्ञा स्त्री० सामग्री ।

सौजना-कि० भ० दे० "सजना" ।

सौजन्य-संज्ञा पुं० सुजनता ।

सौजन्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य" ।

कथन ।

सूक्ष्म-वि० १. बहुत छोटा । २.

भारीक या महीन ।

संज्ञ पु० १. परमाणु । २. परमदा ।

सूक्ष्मता-संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म होने का भाव । भारीकी । महीनपन ।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र-संज्ञा पु० एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं । सुदर्शीन ।

सूक्ष्मदर्शिता-संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म या भारीक बात सोचने-समझने का गुण ।

सूक्ष्मदर्शी-वि० भारीक बात को सोचने-समझनेवाला । कुशाग्रबुद्धि ।

सूक्ष्मदृष्टि-संज्ञा स्त्री० वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायें ।

संज्ञा पु० दे० "सूक्ष्मदर्शी" ।

सूक्ष्म शरीर-संज्ञा पु० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्त्वों का समूह ।

सूखा-वि० दे० "सूखा" ।

सूखना-क्रि० प्र० १. नमी या तरी का निकल जाना । रसहीन होना । २. जल का न रहना या कम हो जाना । ३. दुबला होना ।

सूखा-वि० १. जिसका पानी निकल, बढ़ या जल गया हो । २. तीव्र रहित ।

संज्ञा पु० पानी न धरसना । अनावृष्टि ।

सूचक-वि० सूचना देनेवाला । बतानेवाला ।

संज्ञा पु० १. सूई । २. सीनेवाला ।

सूचना-संज्ञा स्त्री० १. वह बात जो

बिस्ती को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय ।

विज्ञापन । २. इस्तहार ।

सूचनापत्र-संज्ञा पु० विज्ञापन ।

सूचिका-संज्ञा स्त्री० सूई ।

सूचिकाभरण-संज्ञा पु० एक प्रकार की थापण जो सन्निपात आदि प्राणनाशक रोगों की प्रतिक थापण मानी गई है ।

सूचित-वि० जिसकी सूचना दी गई हो । अताया हुआ ।

सूचीकर्म-संज्ञा पु० सिट्ठाई का काम ।

सूचीपत्र-संज्ञा पु० तालिका । पेंहरिखा सूची ।

सूक्ष्म-वि० दे० "सूक्ष्म" ।

सूजन-संज्ञा स्त्री० सूजने की क्रिया या भाव ।

सूजना-क्रि० प्र० रोगों चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना । शोथ होना ।

सूजा-संज्ञा पु० घड़ी मोटी सूई । सूया ।

सूजाक-संज्ञा पु० सूत्रेन्द्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग ।

सूजी-संज्ञा स्त्री० १. गेहूँ का रसदरा आटा जिससे एकघान बनाते हैं । २. सूई ।

सूक्त-संज्ञा स्त्री० १. सूक्त का भाव । २. दृष्टि ।

सूक्तना-क्रि० प्र० दिखाई देना । नज़र आना ।

सुत-संज्ञा पु० १. रुई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है । सूता । २. तामा । डोरा । सूत्र । ३. दे० "सुत" ।

सोना-संज्ञा पुं० १. स्वर्ण । कनक ।  
 २. बहुत सुंदर वस्तु ।  
 कि० भ० १ नौद तना । २. शरीर  
 के किसी अंग का सुन्न होना ।  
 सोनागेरू-संज्ञा पुं० गेरू का एक भेद ।  
 सोनार-पेशा पुं० दे० "सुनार" ।  
 सोनित-संज्ञा पुं० दे० "शोणित" ।  
 सोनी-संज्ञा पुं० सुनार ।  
 सोपान-संज्ञा पुं० सीढ़ी ।  
 सोपानित-वि० सोपान से युक्त ।  
 सोफियाना-वि० १. सूफियों का ।  
 २. जो देखने में सादा, पर बहुत  
 मज़ा लगे ।  
 सोभ-संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा" ।  
 सोभना-कि० भ० शोभित होना ।  
 सोभाकारी-वि० सुंदर ।  
 सोभित-वि० दे० "शोभित" ।  
 सोम-संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल की  
 एक खता जिसका रस मादक होता  
 था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि  
 पान करते थे । २. चंद्रमा । ३.  
 सोमवार ।  
 सोमनाथ-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध  
 द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक । २.  
 काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित  
 एक प्राचीन नगर जहाँ वक्त्र ज्योति-  
 र्लिंग है ।  
 सोमपान-संज्ञा पुं० सोम पीना ।  
 सोमपायी-वि० (स्त्री० सोमपायिनी) सोम  
 पीनवाला ।  
 सोमयाजी-संज्ञा पुं० सोम यज्ञ करने-  
 वाला ।  
 सोमरस-संज्ञा पुं० सोमरस का रस ।  
 सोमराज-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
 सोमवंश-संज्ञा पुं० चंद्रवंश ।  
 सोमवंशीय-वि० चंद्रवंश में उत्पन्न ।

सोमघटी अमावस्या-संज्ञा स्त्री०  
 सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या  
 जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी  
 जाती है ।  
 सोमघञ्जरी-संज्ञा स्त्री० १. बाह्यो ।  
 २. चामर ।  
 सोमवार-संज्ञा पुं० एक बार जो रवि-  
 वार के बाद पड़ता है ।  
 सोमवारी-संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती  
 अमावस्या" ।  
 वि० सोमवार-संबंधी ।  
 सोमसुत-संज्ञा पुं० बुध ।  
 सोमेश्वर-पेशा पुं० दे० "सोमनाथ" ।  
 सोय-सर्व० वही ।  
 सर्व० दे० "सो" ।  
 सोर-संज्ञा पुं० १. शेर । २. प्रसिद्धि ।  
 मज्ञा स्त्री० अड़ ।  
 सोरठ-संज्ञा पुं० १. गुजरात और  
 दादरा काठियावाड़ का प्राचीन नाम ।  
 २. सोरठ देश की राजधानी । सूरत ।  
 सोरठा-संज्ञा पुं० अड़तालीस मात्राओं  
 का एक छंद ।  
 सोरनी-संज्ञा स्त्री० झाड़ ।  
 सोरही-वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोखह" ।  
 सोरही-संज्ञा स्त्री० जूआ खेलने के  
 लिये सोलह चिन्ती कीदियाँ ।  
 सोलंकी-संज्ञा पुं० चंद्रियों का एक  
 प्राचीन राजवंश ।  
 सोलह-वि० जो गिनती में दस से  
 छः अधिक हो । सोलह ।  
 सोधन-संज्ञा पुं० सोने की क्रिया  
 या माप ।  
 सोचा-संज्ञा पुं० दे० "सोचा" ।  
 सासन-संज्ञा पुं० फारस की और का  
 एक प्रसिद्ध फूल का पेड़ा ।  
 सोसनी-वि० सोसन के फूल के

रंग का ।

सोहगी-संज्ञा स्त्री० तिलक चढ़ने के बाद की एक रस जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं ।

सोहन-वि० [ स्त्री० सोहनी ] अच्छा लगनेवाला ।

मंश स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया ।

सोहन पपड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

सोहन हलवा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई ।

सोहना-कि० प्र० १. शोभित होना । २. अच्छा लगना ।

वि० सुंदर ।

सोहनी-मंश स्त्री० झाड़ ।

वि० स्त्री० सुंदर ।

सोहयत-संज्ञा स्त्री० संग-साथ ।

सोहराना-कि० प्र० दे० "सहलाना" ।

सोहला-संज्ञा पुं० १. वह गीत जो घर में प्रथा पैदा होने पर बियाँ गाती हैं । २. मांगलिक गीत ।

सोहागा-संज्ञा पुं० दे० "सुहाग" ।

सोहागिन-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन" ।

सोहागिल-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन" ।

सोहाता-वि० [ स्त्री० सोहाती ] सुहावना ।

सोहाना-कि० प्र० १. शोभित होना । २. रुचिकर होना ।

सोहाया-वि० [ स्त्री० सोहाई ] शोभित ।

सोहारी-संज्ञा स्त्री० पूरी ।

सोहावना-वि० दे० "सुहावना" ।

कि० प्र० दे० "सोहाना" ।

सोहिनी-वि० स्त्री० सुहावनी ।

संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी ।

सोहिल-संज्ञा पुं० आरस्य तारा ।

सोही-कि० वि० सामने ।

सोही-कि० वि० सामने ।

सौचना-कि० प्र० स० मल-त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर धोना ।

सौचाना-कि० प्र० स० सौच कराना ।

सौदन-संज्ञा स्त्री० धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में मिगोना ।

सौदना-कि० प्र० स० आपस में मिलाना ।

सौदर्य-संज्ञा पुं० सुंदरता ।

सौध-संज्ञा स्त्री० सुगंध ।

सौधना-कि० प्र० स० सुगंधित करना ।

सौपना-कि० प्र० स० सपुर्द करना । २. सहजना ।

सौरु-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पैया जिसके बीजों का औषध के घति-रिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं ।

सौंकिया, सौंकी-संज्ञा स्त्री० सौंक की बनी हुई शराब ।

सौंई-संज्ञा स्त्री० सौंकापन ।

सौंही-संज्ञा स्त्री० शपथ ।

मंश पुं०, कि० वि० सामने ।

सौ-वि० नब्बे और दस ।

सौकर्य-संज्ञा पुं० सुमीना ।

सौकुमाय-मंश पुं० सुकुमारता ।

सौख्य-मंश पुं० १. सुखत्व । २. सुख ।

सौगंद-संज्ञा स्त्री० शपथ ।

सौगंध-मंश पुं० सुशब्द ।

मंश स्त्री० दे० "सौगंद" ।

सौगात-संज्ञा स्त्री० अँट । उपहार ।

सौघा-वि० कम नाम का ।

सौध-संज्ञा पुं० दे० "सौध" ।

सौज-मंश स्त्री० माममी ।

सौजना-कि० प्र० दे० "सजना" ।

सौजन्य-मंश पुं० सुजनता ।

सौजन्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य" ।



२. सावधान ।

स्वाँग-संज्ञा पुं० मज़ाक का खेल, या तमाशा । नक़ल ।

स्वाँगना-क्रि० सं० स्वाँग बनाना ।

स्वाँगी-संज्ञा पुं० १. वह जो स्वाँग सजकर जीविका उपार्जन करता हो ।

२. षट्पुत्रिया ।

स्वाँत-संज्ञा पुं० धतःकरण ।

स्वाँस-संज्ञा स्त्री० दे० "साँस" ।

स्वाँसा-संज्ञा पुं० दे० "साँस" ।

स्वाक्षर-संज्ञा पुं० हस्ताक्षर । दस्तखत ।

स्वाक्षरित-वि० अपने हस्ताक्षर से युक्त ।

स्वागत-संज्ञा पुं० अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनेदन करना । अगमनी । अभ्यर्थना ।

स्वागतकारिणी सभा-संज्ञा स्त्री० यह सभा जो किसी विराट् सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिये संघटित हो ।

स्वातंत्र्य-संज्ञा पुं० दे० "स्वतंत्रता" ।

स्वाति-संज्ञा स्त्री० पंद्रहवाँ नक्षत्र जो फलित में शुभ माना गया है ।

स्वातिपंथ-संज्ञा पुं० आकाश-मार्ग ।

स्वातिसुत-संज्ञा पुं० मौती ।

स्वाती-संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति" ।

स्वाद-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव ।

स्वादन-संज्ञा पुं० १. चखना । स्वाद लेना । २. मज़ा लेना ।

स्वादित्, स्वादिष्ठ-वि० आयकेश्वर । सुखादु ।

स्वादु-संज्ञा पुं० मीठा रस । मधुरता । वि० १. मीठा । २. स्वादिष्ठ ।

स्वाद्य-वि० स्वाद लेने योग्य ।

स्वाधीन-वि० १. जो किसी के आधीन न हो । स्वतंत्र । २. निरंकुश ।

स्वाधीनता-संज्ञा स्त्री० स्वाधीन होने का भाव । आज़ादी ।

स्वाध्याय-संज्ञा पुं० १. वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास करना ।

२. अनुशीलन । अध्ययन ।

स्वान-संज्ञा पुं० दे० "श्वान" ।

स्वापन-संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे ।

वि० मूर्द खानेवाला ।

स्वाभाविक-वि० १. जो आप ही आप हो । २. नैसर्गिक ।

स्वाभाविकी-वि० दे० "स्वाभाविक" ।

स्वामि-संज्ञा पुं० दे० "स्वामी" ।

स्वामिकार्त्तिक-संज्ञा पुं० शिव के पुत्र कार्तिकेय ।

स्वामित्व-संज्ञा पुं० स्वामी होने का भाव । प्रभुत्व ।

स्वामिनी-संज्ञा स्त्री० १. मातृकिम । २. गृहिणी ।

स्वामी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० स्वामिनी ] १. मातृकिम । २. घर का प्रधान पुरुष ।

३. पति । ४. मगवान् । ५. साधु-संन्यासी आदि की उपाधि ।

स्वायत्त-वि० जो अपने अधीन हो । जिस पर अपना ही अधिकार हो ।

स्वायत्त शासन-संज्ञा पुं० वह शासन जो अपने अधिकार में हो ।

स्वारथी-संज्ञा पुं० दे० "स्वार्थ" । वि० सफल ।

स्वारथी-वि० दे० "स्वार्थी" ।

स्वारस्य-वि० १. सरसता । २.

सोना-संज्ञा पुं० १. स्वर्ण । कनक ।  
२. बहुत सुंदर वस्तु ।

कि० भ० १. मींद लना । २. शरीर  
के किसी अंग का सुझा देना ।

सोनागेरू-संज्ञा पुं० गेरू का एक भेद ।  
सोनार-संज्ञा पुं० दे० "सुनार" ।

सोनिता-संज्ञा पुं० दे० "शोणित" ।  
सोनी-संज्ञा पुं० सुनार ।

सोपान-संज्ञा पुं० सीढ़ी ।  
सोपानित-वि० सोपान से युक्त ।

सोफियाना-वि० १. सुकियों का ।  
२. जो देवने में सादा, पर बहुत  
मला लगे ।

सोभ-संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा" ।  
सोभना-वि० भ० शोभित होना ।

सोभाकारी-वि० सुंदर ।  
सोभित-वि० दे० "शोभित" ।

सोम-संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल की  
एक घटा जिसका रस मादक होता  
था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि  
पान करते थे । २. चंद्रमा । ३.  
सोमवार ।

सोमनाथ-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध  
द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक । २.  
काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित  
एक प्राचीन नगर जहाँ बक ज्योति-  
र्लिंग है ।

सोमपान-संज्ञा पुं० सोम पीना ।  
सोमपायी-वि० (स्त्री० सोमपायिनी) सोम  
पीनवाला ।

सोमयाजी-संज्ञा पुं० सोम यज्ञ करने-  
वाला ।

सोमरस-संज्ञा पुं० सोमरस का रस ।  
सोमराज-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

सोमधंश-संज्ञा पुं० चंद्रधंश ।  
सोमधंशीय-वि० चंद्रधंश में उपज ।

सोमघटी अमावस्या-संज्ञा स्त्री०  
सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या  
जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी  
जाती है ।

सोमघड़ी-संज्ञा स्त्री० १. माहो ।  
२. घामर ।

सोमघार-संज्ञा पुं० एक घार जो रवि-  
वार के बाद पड़ता है ।

सोमघारी-संज्ञा स्त्री० दे० "सोमघटी  
अमावस्या" ।

वि० सोमवार-संबंधी ।  
सोमसुत-संज्ञा पुं० बुध ।

सोमेश्वर-संज्ञा पुं० दे० "सोमनाथ" ।  
सोय-सर्व० बही ।

सर्व० दे० "सो" ।  
सोर-संज्ञा पुं० १. शोर । २. प्रसिद्धि ।

महा स्त्री० जड़ ।  
सोरठ-संज्ञा पुं० १. गुजरात और

दाण्डी काठियावाड़ का प्राचीन नाम ।  
२. सोरठ देश की राजधानी । सूरत ।

सोरठा-संज्ञा पुं० अड़तालीस मात्राओं  
का एक छंद ।

सोरनी-संज्ञा स्त्री० झाड़ू ।  
सोराही-वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह" ।

सोरही-संज्ञा स्त्री० जूधा खेलने के  
लिये सोलह चिन्ती की दिया ।

सोलंकी-संज्ञा पुं० चमियों का एक  
प्राचीन राजवंश ।

सोलह-वि० जो गिनती में दस से  
छः अधिक हो । सोलह ।

सोवन-संज्ञा पुं० सोने की किया  
या भाव ।

सोवा-संज्ञा पुं० दे० "सोचा" ।  
सासन-संज्ञा पुं० फारस की ओर का

एक प्रसिद्ध फूल का पौधा ।  
सोसनी-वि० सोसन के फूल के

स्वाभाविकता ।

स्वाराज्य-संज्ञा पुं० स्वाधीन राज्य ।

स्वार्थ-संज्ञा पुं० अपना वह स्व या मतलब ।

वि० सार्थक । सफल ।

स्वार्थत्याग-संज्ञा पुं० किसी मले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना ।

स्वार्थपर-वि० स्वार्थी ।

स्वार्थपरता-संज्ञा स्त्री० स्वार्थपर होने का भाव ।

स्वार्थपरायण-वि० [ संज्ञा स्वार्थता-परायण ] स्वार्थपर । सुदुर्गुण ।

स्वार्थाध-वि० जो अपने स्वार्थ के चय होकर सब कुछ भूल जाय ।

स्वार्थी-वि० अपना ही मतलब देखने वाला ।

स्वास-संज्ञा पुं० साँस । श्वास ।

स्वासा-संज्ञा स्त्री० साँस । श्वास ।

स्वास्थ्य-संज्ञा पुं० नीरोग या स्वस्थ होने की अवस्था ।

स्वास्थ्यकर-वि० तंदुरुस्त करने वाला ।

स्वाहा-अन्त्य० एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है ।

स्वीकरण-संज्ञा पुं० अपनाना । स्वीकार करना ।

स्वीकारोक्ति-संज्ञा स्त्री० वह बयान जिसमें अभियुक्त अपना अपराध

स्वयं ही स्वीकृत कर ले ।

स्वीकार-संज्ञा पुं० अपनाने की क्रिया । स्वीगीकार ।

स्वीकार्य-वि० स्वीकार करने के मानने के योग्य ।

स्वीकृत-वि० स्वीकार किया हुआ । मंजूर ।

स्वीकृति-संज्ञा स्त्री० स्वीकार का भाव । सम्मति ।

स्वीय-वि० अपना ।

संज्ञा पुं० स्वप्न ।

स्वेच्छा-संज्ञा स्त्री० अपनी इच्छा ।

स्वेच्छाचार-संज्ञा पुं० [ भाव० स्वेच्छा-चारिता ] जो जी में आवे, वही करना ।

स्वेच्छाचारी-वि० [ स्त्री० स्वेच्छा-चारिणी ] निरंकुश ।

स्वेच्छासेवक-संज्ञा पुं० दे० "स्वयं-सेवक" ।

स्वेत-वि० दे० "स्वेत" ।

स्वेद-संज्ञा पुं० १. पसीना । २. भाप । वाष्प ।

स्वेदज-वि० पसीने से उत्पन्न होने वाला । ( जू, खटमल, मच्छर आदि )

स्वेदन-संज्ञा पुं० पसीना निकलना ।

स्वेदित-वि० १. पसीने से युक्त । २. सेंका हुआ ।

स्वैर-वि० मनमाना काम करने वाला ।

स्वैरचारी-वि० [ स्त्री० स्वैरचारिणी ] १. निरंकुश । २. व्यभिचारी ।

स्वैरता-संज्ञा स्त्री० यथेच्छाचारिता ।

स्वैरिणी-संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री ।

रंग का ।

सोहगी-संज्ञा स्त्री० तिलक चढ़ने के बाद की एक रस जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं ।

सोहन-वि० [ स्त्री० सोहनी ] अच्छा लगनेवाला ।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया ।

सोहन पपड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

सोहन हलवा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई ।

सोहना-कि० भ० १. शोभित होना ।

२. अच्छा लगना ।

+वि० सुंदर ।

सोहनी-संज्ञा स्त्री० झाड़ू ।

वि० स्त्री० सुंदर ।

सोहयत-संज्ञा स्त्री० संग-साथ ।

सोहगना-कि० भ० दे० "सहजाना" ।

सोहला-संज्ञा पुं० १. वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर धिया गाती है । २. मांगलिक गीत ।

सोहागा-संज्ञा पुं० दे० "सुहाग" ।

सोहागिन-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन" ।

सोहागिल-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन" ।

सोहावा-वि० [ स्त्री० सोहानी ] सुहावना ।

सोहाना-कि० भ० १. शोभित होना ।

२. रुचिर होना ।

सोहाया-वि० [ स्त्री० सोहारी ] शोभित ।

सोहागी-संज्ञा स्त्री० पूती ।

सोहावना-वि० ने० "सुहावना" ।

कि० भ० दे० "सोहाना" ।

सोहिनी-वि० स्त्री० सुहावनी ।

संज्ञा स्त्री० कण्ठ रस की एक रागिनी ।

सोहिल-संज्ञा पुं० शमस्य तारा ।

सोही-कि० वि० सामने ।

सोही-कि० वि० सामने ।

सौचना-कि० स० मूल-त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर घेरना ।

सौचाना-कि० स० सौच कराना ।

सौदन-संज्ञा स्त्री० धोवियों का कपड़े का घेने से पहले रेह मिले पानी में मिंगोना ।

सौदना-कि० स० आपस में मिथाना ।

सौदर्य-संज्ञा पुं० सुंदरता ।

सौध-संज्ञा स्त्री० सुगंध ।

सौधना-कि० स० सुगंधित करना ।

सौपना-कि० स० १. सपुर्द करना ।

२. सदेजना ।

सौर-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पैसा जिसके धोत्री का बाएँ धके धति-रिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं ।

सौफिया, सौफी-संज्ञा स्त्री० सीक की बनी हुई शराब ।

सौरही-संज्ञा स्त्री० सौदनापन ।

सौहा-संज्ञा स्त्री० शपथ ।

संग पुं०, कि० वि० सामने ।

सी-वि० नन्हे और दस ।

सीकर्ये-संज्ञा पुं० सुमीश ।

सीकुमार्य-संज्ञा पुं० सुकुमारता ।

सीलप-संज्ञा पुं० १. सुलव । २. सुप्र ।

सौमेद-संज्ञा स्त्री० शपथ ।

सौमध-संज्ञा पुं० सुशब्द ।

संज्ञा स्त्री० दे० "सौमंद" ।

सौगात-संज्ञा स्त्री० भेंट । बपहार ।

सीघ्रा-वि० कम दाम का ।

सौख्य-संज्ञा पुं० दे० "शौख" ।

सौज-संज्ञा स्त्री० सामग्री ।

सौजना-कि० भ० दे० "सजना" ।

सौजन्य-संज्ञा पुं० सुजनता ।

सौजन्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य" ।

ह

ह-संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का तैत्तीसवाँ और अंतिम व्यंजन।

हँकड़ना-कि० प्र० दर्प के साथ खोजना। खलकारना।

हँकारना-कि० सं० १. हाँक देकर बुलाना। २. पुकारना।

हँकवा-संज्ञा पुं० शेर के शिकार का एक हंग जिसमें बहुत से खोग शेर को हाँककर शिकारी की ओर ले जाते हैं।

हँकवाना-कि० सं० १. हाँक खगवाना। २. हाँकने का काम दूसरे से कराना।

हँकवाँ-संज्ञा पुं० हाँकनेवाला।

हँकाई-संज्ञा स्त्री० हाँकने की क्रिया, भाव या मजबूरी।

हँकाना-कि० सं० पुकारना। बुलाना।

हँकार-संज्ञा स्त्री० १. आवाज लगाकर बुलाना। २. पुकार।

हँकारा-संज्ञा पुं० दे० १. "ग्रह-कार"। २. ललकार।

हँफारना-कि० सं० १. जोर से पुकारना। २. ललकारना।

हँफारी-संज्ञा पुं० दूत।

हँगामा-संज्ञा पुं० १. उपद्रव। खड़ाई-मगड़ा। २. हल्ला।

हँडा-संज्ञा पुं० पीतल या तंबू के बहुत बड़ा घरतन जिसमें पानी रखते हैं।

हँडिया-संज्ञा स्त्री० बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का घरतन। हाँडी।

हँडी-संज्ञा स्त्री० दे० "हँडिया", "हाँडी"।

हँत-प्रत्य० खेद या शोकसूचक शब्द।

हँता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० हँती ] वध करनेवाला।

हँफानि-संज्ञा स्त्री० हाँफने की क्रिया या भाव।

हँस-संज्ञा पुं० १. घत्तघ के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी बड़ी झीलों में रहता है। २. जीवारमा।

हँसक-संज्ञा पुं० १. हँस पक्षी। २. पैर की हँगावियों में पहनने का बिलुआ।

हँसगति-संज्ञा स्त्री० हँस के समान सुंदर धीमी चाल।

हँसगामिनी-वि० स्त्री० हँस के समान सुंदर मंद गति से चलनेवाली।

हँसता-मुखी-संज्ञा पुं० हँसते चेहरेवाला। प्रसन्नमुख।

हँसन-संज्ञा स्त्री० हँसने की क्रिया।

हँसना-कि० प्र० खुशी के मारे मुँह फैलाकर आवाज करना। खिल-खिलाना।

कि० सं० किसी का उपहास करना। मनादर करना।

हँसनी-संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।

हँसनी-संज्ञा स्त्री० दे० "हँसनी"।

हँसपदी-संज्ञा स्त्री० एक जता।

हँसमुख-वि० १. प्रसन्नवदन। २. विनोदशील।

हँसराज-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की पहाड़ी घटी। २. एक प्रकार का अगहनी घान।

हँसली-संज्ञा स्त्री० गले में पहनने का, स्त्रियों का, एक मंडलाकार गहना।

सौजा-संज्ञा पुं० वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।

सौत-संज्ञा स्त्री० सपत्नी । सवत ।

सौतन, सौतिन-संज्ञा स्त्री० । दे० "सौत" ।

सौतेला-वि० [ स्त्री० सौतेली ] १. सौत से सम्बन्ध । २. जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो ।

सौदा-संज्ञा पुं० १. चीज । २. खेन-देन । ३. क्रय-विक्रय ।

सौदाई-संज्ञा पुं० पागल । दीवाना ।

सौदागर-संज्ञा पुं० व्यापारी ।

सौदागरी-संज्ञा स्त्री० व्यापार ।

सौदामनी-संज्ञा स्त्री० विजली ।

सौध-संज्ञा पुं० १. भवन । २. चाँदी ।

सौधना-क्रि० सं० दे० "सोधना" ।

सौन-क्रि० वि० सामने ।

सौभग-संज्ञा पुं० १. सौभाग्य । २. सुख ।

सौभद्र-संज्ञा पुं० सुभद्रा के पुत्र, धनिमन्यु ।

वि० सुभद्रा-संबन्धी ।

सौभागिनी-संज्ञा स्त्री० सधवा स्त्री । सौहागिन ।

सौभाग्य-संज्ञा पुं० १. अच्छा भाग्य । २. अहिवात । ३. वैभव ।

सौभाग्यवती-वि० स्त्री० सुहागिन ।

सौभाग्यवान्-वि० [ स्त्री० सौभाग्यवती ] १. अच्छे भाग्यवाला । २. सुखी और संपन्न ।

सौम-वि० दे० "सौम्य" ।

सौमित्र-संज्ञा पुं० १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण । २. मित्रता ।

सौम्य-वि० [ स्त्री० सौम्या ] शांत ।

सौम्यता-संज्ञा स्त्री० १. सौम्य होने का भाव या धर्म । २. सुशीलता ।

सौम्यदर्शन-वि० सुंदर ।

सौर-वि० सूर्य का ।

सौर दिवस-संज्ञा पुं० एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय ।

सौरम-संज्ञा पुं० सुगंध ।

सौर मास-संज्ञा पुं० एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय ।

सौराष्ट्र-संज्ञा पुं० गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम ।

सौरी-संज्ञा स्त्री० १. वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने । २. एक प्रकार की मछली ।

सौर्य-वि० सूर्य-संबन्धी ।

सौष्ठव-संज्ञा पुं० १. उपयुक्तता । २. सुंदरता ।

सौह-संज्ञा स्त्री० शपथ ।

क्रि० वि० सामने ।

सौहार्द, सौहार्थ-संज्ञा पुं० मित्रता ।

सौहार्द-क्रि० वि० सामने ।

सौहृद-संज्ञा पुं० [ भाव० सौहृद ]

मित्रता ।

स्कंद-संज्ञा पुं० कालिकादेव, जो शिवजी के पुत्र थे ।

स्कंदगुप्त-संज्ञा पुं० गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध सम्राट् ।

स्कंध-संज्ञा पुं० १. कंधा । २. शाखा ।

स्कंधाधार-संज्ञा पुं० १. छावनी । सेनानिवास । २. सेना ।

स्कंभ-संज्ञा पुं० संभा ।

स्खलित-वि० गिरा हुआ । पतित ।

स्तंभ-संज्ञा पुं० खंभा ।

स्तंभक-वि० रोकनेवाला ।

स्तंभन-संज्ञा पुं० रुकावट ।

स्तंभित-वि० १. सुन्न । २. अवरुद्ध ।

स्तन-संज्ञा पुं० स्त्रियों या मादा पशुओं

हंसवंश-संज्ञा पुं० सूर्यवंश ।  
 हंसवाहन-संज्ञा पुं० ब्रह्मा ।  
 हंसवाहिनी-संज्ञा स्त्री० सरस्वती ।  
 हंससुता-संज्ञा स्त्री० यमुना नदी ।  
 हँसाई-संज्ञा स्त्री० १. हँसने की क्रिया या भाव । २. निंदा ।  
 हँसाना-क्रि० स० दूसरे को हँसने में प्रयुक्त करना ।  
 हँसालि-संज्ञा स्त्री० ३० माघाश्वि का एक छंद ।  
 हँसिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "हँसी" ।  
 हँसिया-संज्ञा स्त्री० एक औजार जिससे धेत की कुसल या तरकारी आदि काटी जाती है ।  
 हँसी-संज्ञा स्त्री० हंस की मादा ।  
 हँसी-संज्ञा स्त्री० १. हँसने की क्रिया या भाव । २. मज़ाक । दिखगी । ३. उपहास । ४. घटनामी ।  
 हँसुआ, हँसुआ-संज्ञा पुं० दे० "हँसिया" ।  
 हँसोड़-वि० हँसी-ठट्टा करनेवाला । दिखगीबाज़ ।  
 हँसोहँस-वि० [ स्त्री० हँसोहँस ] १. कुछ हँसी लिए । २. हँसने का स्वभाव रखनेवाला ।  
 हँउं-क्रि० भ०, सर्व० दे० "हँ" ।  
 हक-वि० १. सत्य । २. उचित । संज्ञा पुं० १. स्वत्व । २. वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम में लाने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो । ३. खुदा । ईश्वर । (मुसलमान)  
 हकदार-संज्ञा पुं० स्वत्व या अधिकार रखनेवाला ।  
 हक-नाहक-अर्थ० १. ज़बरदस्ती ।

धौगा-धौगी से । २. व्यर्थ ।  
 हकवकाना-क्रि० भ० घबरा जाना ।  
 हकला-वि० रुक-रुक कर बोलनेवाला ।  
 हकलाना-क्रि० भ० बोलने में थट-कना । रुक-रुककर बोलना ।  
 हकसफा-संज्ञा पुं० किसी ज़मीन को खरीदने का औरों से ऊपर या अधिक वह हक जो गाँव के हिस्से-दारों अथवा पट्टोसियों को प्राप्त होता है ।  
 हकीकत-संज्ञा स्त्री० १. सत्य । सचाई । २. असल हाल ।  
 हकीम-संज्ञा पुं० यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला । वैद्य ।  
 हकीमी-संज्ञा स्त्री० १. यूनानी चिकित्सा-शास्त्र । २. हकीम का पेशा या काम ।  
 हक्का-बक्का-वि० भौचक । ठक ।  
 हगना-क्रि० भ० मलत्याग करना । पाखाना फिरना ।  
 हगाना-क्रि० स० हगने की क्रिया कराना ।  
 हगास-संज्ञा स्त्री० मलत्याग का वेग या इच्छा ।  
 हघकोला-संज्ञा पुं० यह घक्का जो गाढ़ी, चारपाई आदि पर दिखने-बोलने से सगे ।  
 हज-संज्ञा पुं० मुसलमानों का काये के दर्शन के लिये मक़े जाना ।  
 हजम-संज्ञा पुं० पाचन । वि० पेट में पचा हुआ ।  
 हज़रत-संज्ञा पुं० १. महात्मा । महा-पुरुष । २. नटखट या खोटा आदमी । (व्यंग्य)  
 हजामत-संज्ञा स्त्री० १. हजाम का काम । २. सिर या दाढ़ी के बड़े हुए

की छाती जिसमें दूध रहता है।

स्तनपान-संज्ञा पुं० स्तन में के दूध का पीना।

स्तनपायी-वि० जो माता के स्तन से दूध पीता हो।

स्तब्ध-वि० जो जड़ या अप्रवृत्त हो गया हो।

स्तब्धता-संज्ञा स्त्री० स्तब्ध का भाव।

स्तर-संज्ञा पुं० तह।

स्तरण-संज्ञा पुं० फैलाने या बिखेरने की क्रिया।

स्तव-संज्ञा पुं० स्तुति।

स्तयन-संज्ञा पुं० स्तुति।

स्तीर्ण-वि० विस्तृत।

स्तुत-वि० जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो।

स्तुति-संज्ञा स्त्री० प्रशंसा।

स्तुतिवाचक-संज्ञा पुं०, खुशामदी।

स्तुत्य-वि० प्रशंसनीय।

स्तूप-संज्ञा पुं० १. ऊँचा द्रव या टीला। २. वह द्रव या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महारामा के स्मृति-चिह्न संरक्षित हैं।

स्तैय-संज्ञा पुं० चोरी।

स्तोता-वि० स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र-संज्ञा पुं० स्तुति।

स्तोम-संज्ञा पुं० स्तुति।

स्त्री-संज्ञा स्त्री० १. नारी। २. पत्नी।

स्त्रीत्व-संज्ञा पुं० स्त्रीपन। जनानपन।

स्त्रीघन-संज्ञा पुं० वह घन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधि-कार हो।

स्त्रीधर्म-संज्ञा पुं० रजोदर्शन।

स्त्रीप्रसंग-संज्ञा पुं० मैथुन।

स्त्रीलिङ्ग-संज्ञा पुं० हिंदी व्याकरण के अनुसार दो लिंगों में से एक जो

स्त्री-वाचक होता है।

स्त्रीघत-संज्ञा पुं० पत्नीघत।

स्त्रीसमागम-संज्ञा पुं० मैथुन।

स्थ-प्रत्य० एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगता है।

स्थगित-वि० १. बका हुआ। २. रोका हुआ। ३. जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो।

स्थल-संज्ञा पुं० १. भूमि। २. मैका।

स्थलचर, स्थलचारी-वि० स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलज-वि० स्थल या भूमि में उत्पन्न।

स्थलयुद्ध-संज्ञा पुं० वह युद्ध या संग्राम जो स्थल या भूभाग पर होता है।

स्थविर-संज्ञा पुं० १. बृद्ध। २. बौद्ध भिक्षु।

स्थार्ह-वि० दे० “स्थायी”।

स्थारु-संज्ञा पुं० १. स्तंभ। २. शिवा।

स्थान-संज्ञा पुं० १. ठहराव। २. भूमिभाग। ३. जगह। ४. मैका।

स्थानच्युत-वि० जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।

स्थानम्रष्ट-वि० दे० “स्थानच्युत”।

स्थानापन्न-वि० प्यज़ी।

स्थानीय-वि० स्थानिक।

स्थापक-वि० स्थापनकर्त्ता।

स्थापत्य-संज्ञा पुं० १. भवन-निर्माण।

राजगीरी। २. वह विद्या जिसमें भवन-निर्माण-संबंधी सिद्धांतों आदि का विवेचन होता है।

स्थापन-संज्ञा पुं० [ वि० स्थापनीय ] १.

खड़ा करना। २. रखना।

स्थापना-संज्ञा स्त्री० प्रतिष्ठित या स्थित

करना।

स्थापित-वि० जिसकी स्थापना की

गई हो।

स्थापित-वि० जिसकी स्थापना की

गई हो।

स्थापित-वि० जिसकी स्थापना की



बाळ जिन्हें फटाना या सुझाना हो ।  
हज़ार-वि० जो गिनती में दस सौ  
हो । सहस्र ।

संज्ञ पु० दस सौ की संख्या या थंफ ।  
हज़ारा-वि० (कूळ) जिसमें हज़ार या  
बहुत अधिक पंखड़ियाँ हो । सहस्र-  
दण्ड ।

संज्ञ पु० फुहारा ।  
हज़ारी-संज्ञा पु० एक हज़ार सिपा-  
हियों का सरदार ।

हज़ूरी-संज्ञा पु० बादशाह या राजा  
के पास सदा रहनेवाला सेवक ।

हज़ो-संज्ञा स्त्री० निंदा । बुराई ।

हज़-संज्ञा पु० दे० "हज" ।

हज़ाम-संज्ञा पु० हजामत बनाने-  
वाला । नाई ।

हड़का-संज्ञा स्त्री० चारण । मना  
करने की क्रिया ।

हड़कन-संज्ञा स्त्री० १. दे० "हड़क" । २.  
चीपायों को हड़कने की छड़ी या लाठी ।

हड़कना-वि० स० मना करना । निषेध  
करना ।

हड़ना-क्रि० भ० १. एक जगह से  
दूसरी जगह पर जा रहना । २.  
सामने से दूर होना ।

हड़चा-संज्ञा पु० दूकानदार ।

हड़चाई-संज्ञा स्त्री० सौदा लेना या  
बेचना ।

हड़चाना-क्रि० स० हड़ाने का काम  
दूसरे से कराना ।

हड़चारा-संज्ञा पु० हाट में सौदा  
बेचनेवाला । दूकानदार ।

हड़ाना-क्रि० स० एक स्थान से दूसरे  
स्थान पर करना ।

हड़-संज्ञा पु० पाज़ार ।

हड़ा-फट्टा-वि० [स्त्री० हड़ी-वड़ी] हट-

पुट । मोटा-साज़ा ।

हड़ी-संज्ञा स्त्री० दूकान ।

हठ-संज्ञा पु० [ वि० हठी, हठीला ] १.

किसी बात के लिये अड़ना । जिद ।

२. ज़बरदस्ती ।

हठधर्म-संज्ञा पु० अपने मत पर, सत्य-  
असत्य का विचार छोड़कर, जमा  
रहना । दुराग्रह ।

हठधर्मी-संज्ञा स्त्री० अचित-अनुचित का  
विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे  
रहना । कट्टरपन ।

हठना-क्रि० भ० हठ करना । जिद  
पकड़ना ।

हठयोग-संज्ञा पु० वह योग जिसमें  
शरीर को साधने के लिये बड़ी  
कठिन कठिन सुझावों और आसनों  
आदि का विधान है ।

हठात्-प्रत्य० १. हठपूर्वक । दुराग्रह  
के साथ । २. अवश्य ।

हठी-वि० जिद्दी । टेकी ।

हठीला-वि० [स्त्री० हठीली] १. हठी ।  
२. हड़-प्रतिज्ञ । ३. धीर ।

हड़-संज्ञा स्त्री० एक बड़ा पेड़ जिसका  
फल औषध के रूप में काम में लाया  
जाता है ।

हड़कप-संज्ञा पु० भारी हड़खल ।  
तहलका ।

हड़फ-संज्ञा स्त्री० १. पागल कुत्ते के  
काटने पर पानी के लिये गहरी  
आकुलता । २. रट । धुन ।

हड़कना-क्रि० भ० किसी पसतु के  
अभाव से दुःखी होना । तरसना ।

हड़काना-क्रि० स० १. आक्रमण  
करने या तंग करने आदि के लिये  
पीड़े खगा देना । २. सरसाना ।

हड़काया-वि० पागल । (कुत्ता)

गई हो।

स्थायित्व-संज्ञा पुं० १. स्थायी होने का भाव। २. स्थिरता।

स्थायी-वि० १. ठहरनेवाला। २. बहुत दिन चलनेवाला।

स्थायी समिति-संज्ञा स्त्री० वह समिति जो किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के मध्य के काल में उसके कार्यों का संचालन करती है।

स्थावर-वि० [ भाव० संज्ञा, स्थावरण ] अचल।

संज्ञा पुं० पहाड़।

स्थावर चिप-संज्ञा पुं० स्थावर पदार्थों में होनेवाला जड़र।

स्थित-वि० अपने स्थान पर ठहरा हुआ।

स्थितता-संज्ञा स्त्री० ठहराव।

स्थितप्रज्ञ-वि० १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. समस्त मनो-विकारों से रहित।

स्थिति-संज्ञा स्त्री० १. टिकाव। २. निवास। ३. अवस्था।

स्थिर-वि० १. निश्चल। २. निश्चित। ३. शांत।

स्थिरचित्त-वि० दृढ़चित्त।

स्थिरता-संज्ञा स्त्री० स्थिर होने का भाव।

स्थिरबुद्धि-वि० जिसकी बुद्धि स्थिर हो।

स्थूल-वि० मोटा।

स्थूलता-संज्ञा स्त्री० १. स्थूल होने का भाव। २. मोटापन।

स्थैर्य-संज्ञा पुं० १. स्थिरता। २. दृढ़ता।

स्नात-वि० नहाया हुआ।

स्नातक-संज्ञा पुं० वह जिसने ब्रह्म-

चर्य ग्रन्थ की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो।

स्नान-संज्ञा पुं० शरीर को स्वच्छ करने के लिये उसे जल में धोना। नहाना।

स्नानागार-संज्ञा पुं० वह कमरा जिसमें स्नान किया जाता है।

स्नायविक-वि० स्नायु-संबंधी।

स्नायु-संज्ञा स्त्री० शरीर के अंदर की वे नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है।

स्निग्ध-वि० जिसमें स्नेह या तेज हो।

स्निग्धता-संज्ञा स्त्री० चिकनापन।

स्नेह-संज्ञा पुं० प्रेम।

स्नेहपात्र-संज्ञा पुं० प्रेमपात्र।

स्नेही-संज्ञा पुं० प्रेमी। मित्र।

स्पंदन-संज्ञा पुं० धीरे धीरे हिलना। कंपना।

स्पर्श-संज्ञा स्त्री० [ वि० स्पर्श ] १. संवर्प। २. साहस।

स्पर्शी-वि० स्पर्श करनेवाला।

स्पर्श-संज्ञा पुं० छूना।

स्पर्शजन्य-वि० संक्रामक।

स्पर्शनैन्द्रिय-संज्ञा स्त्री० स्पर्श।

स्पर्शी-वि० छूनेवाला।

स्पष्ट-वि० साफ दिखाई देने या समझ में आनेवाला।

स्पष्ट कथन-संज्ञा पुं० वह कथन जिसमें किसी की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हुई होती है।

स्पष्टतया-क्रि० वि० स्पष्ट रूप से।

स्पष्टता-संज्ञा स्त्री० स्पष्ट होने का भाव।

स्पष्टीकरण-संज्ञा पुं० स्पष्ट करने की

हड़ताल-संज्ञा स्त्री० किसी घात से असंतोष प्रकट करने के लिये दुकान-दारों का दुकानें बंद कर देना ।

संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल" ।

हड़प-वि० १. निगलना हुआ । २. गायब किया हुआ ।

हड़पना-कि० स० १. मुँह में डाल लेना । २. अनुचित रीति से ले लेना ।

हड़यड़-संज्ञा स्त्री० जलदयात्री प्रकट करनेवाली गति-विधि ।

हड़यड़ाना-कि० अ० जल्दी करना । आतुर होना ।

कि० स० किसी को जल्दी करने के लिये कहना ।

हड़यड़िया-वि० हड़यड़ी करनेवाला । जलदयाज ।

हड़यड़ी-संज्ञा स्त्री० उतावली ।

हड़ाचारे, हड़ाचल-संज्ञा स्त्री० हड़ियों का ढाँचा । ठठरी ।

हड़ुरा-संज्ञा पुं० मधुमक्खियों की तरह का एक कीड़ा । बरे ।

हड़ुरी-संज्ञा स्त्री० शरीर के अंदर की वह कठोर वस्तु जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है । अस्थि ।

हत-वि० १. घब किया हुआ । २. विहीन ।

हतक-संज्ञा स्त्री० हेठी । बेहज़ती ।

हतक हज़्ज़ती-संज्ञा स्त्री० अप्रतिष्ठा । मानहानि ।

हतदैध-वि० अभागा ।

हतना-कि० स० १. घब करना । २. मारना । पीटना ।

हतवुद्धि-वि० मूर्ख ।

हतभागा, हतभागी-वि० [स्त्री० हत-भागिन, हतभागिनी] अभागा ।

हतभाग्य-वि० भाग्यहीन ।

हता-कि० स० था ।

हताश-वि० निराश । नाउम्मीद ।

हताहत-वि० मारे गए और घायल ।

हतोत्साह-वि० जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो ।

हथ-संज्ञा पुं० दे० "हाथ" ।

हथ्या-संज्ञा पुं० औजार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है । दस्ता ।

हथ्यी-संज्ञा स्त्री० औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है ।

हथ्ये-कि० वि० हाथ में ।

हथ्या-संज्ञा स्त्री० १. मार डालने की क्रिया । घब । २. भ्रम ।

हथ्यारा-संज्ञा पुं० [स्त्री० हथ्यारिन, हथ्यारि] हथ्या करनेवाला ।

हथ्यारी-संज्ञा स्त्री० प्राणवध का दोष ।

हथ-संज्ञा पुं० 'हाथ' का संक्षिप्त रूप ।

हथकंड़ा-संज्ञा पुं० १. हाथ की मफाई । २. चाब्राकी का ढंग ।

हथकड़ी-संज्ञा स्त्री० लोहे का वह कड़ा जो कैदी के हाथ में पहनाया जाता है ।

हथनाल-संज्ञा पुं० वह तोप जो हाथी पर चढ़ती थी । गजनाल ।

हथनी-संज्ञा स्त्री० हाथी की मादा ।

हथफूल-संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक लड़ाऊ गहना ।

हथफेर-संज्ञा पुं० थोड़े दिनों के लिये लिया या दिया हुआ कर्ज ।

हथलेवा-संज्ञा पुं० विवाह में वर का कन्या का हाथ अपने हाथ में लेने की रीति । पाणिग्रहण ।

हथघास-संज्ञा पुं० नाच चबाने के सामान; जैसे—पतवार, डाँड़ा ।

क्रिया ।

स्पृश-वि० स्पर्श करनेवाला ।

स्पृश्य-वि० जो स्पर्श करने के योग्य हो ।

स्पृष्ट-वि० छूआ हुआ ।

स्पृहणीय-वि० चाँदनीय ।

स्पृहा-संज्ञा स्त्री० इच्छा ।

स्पृही-वि० इच्छा करनेवाला ।

स्फटिक-संज्ञा पुं० एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर जो काँच के समान पारदर्शी होता है ।

स्फार-वि० प्रचुर ।

स्फीत-वि० १. वर्धित । २. फूला हुआ ।

स्फुट-वि० १. प्रकाशित । २. खिळा हुआ । ३. फुटकर ।

स्फुटित-वि० विकसित ।

स्फुरण-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ का जरा जरा हिलना ।

स्फुरित-वि० जिसमें स्फुरण हो ।

स्फुलिंग-संज्ञा पुं० चिनगारी ।

स्फूर्ति-संज्ञा स्त्री० तेजी ।

स्फोट-संज्ञा पुं० १. फूटना । २. धड़ाका ।

स्फोटक-संज्ञा पुं० फोड़ा ।

स्फोटन-संज्ञा पुं० १. ध्वज से फोड़ना । २. विदारण ।

स्मर-संज्ञा पुं० कामदेव ।

स्मरण-संज्ञा पुं० याद आना ।

स्मरणशक्ति-संज्ञा स्त्री० याददाश्त ।

स्मरणीय-वि० स्मरण रखने योग्य ।

स्मरारि-संज्ञा पुं० महादेव ।

स्मशान-संज्ञा पुं० दे० "श्मशान" ।

स्मारक-वि० स्मरण करानेवाला ।

संज्ञा पुं० यादगार ।

स्मित-संज्ञा पुं० धीमी हँसी ।

वि० खिळा हुआ ।

स्मृत-वि० याद किया हुआ ।

स्मृति-संज्ञा स्त्री० १. स्मरण । २.

हिंदुओं के धर्मशास्त्र ।

स्मृतिकार-संज्ञा पुं० स्मृति या धर्म-शास्त्र बनानेवाला ।

स्यन्दन-संज्ञा पुं० १. रथ । २. पुद्गल में काम आनेवाला रथ ।

स्यमतक-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा था । (पुराण)

स्यात्-अव्य० कदाचित् ।

स्याद्वाद-संज्ञा पुं० जैन दर्शन । अने-कांतवाद ।

स्यानप-संज्ञा पुं० दे० "स्यानपन" ।

स्यानपन-संज्ञा पुं० चतुरता । बुद्धि-मानी ।

स्याना-वि० [स्त्री० स्थानी] १. चतुर । २. चालाक । ३. वयस्क ।

स्यापा-संज्ञा पुं० मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काख तक स्त्रियों के प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति ।

स्यावास-अव्य० दे० "शाबाश" ।

स्याम-संज्ञा पुं०, वि० दे० "स्थान" । संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पूर्व का एक देश ।

स्यामल-वि० दे० "श्यामल" ।

स्यामा-संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामा" ।

स्यार-संज्ञा पुं० [स्त्री० स्यारनी] गीदद । शृगाल ।

स्यारी-संज्ञा स्त्री० सियार की मादा । गीदड़ी ।

स्याल-संज्ञा पुं० पक्षी का भाई । साज्जा । संज्ञा पुं० दे० "सियार" या "स्यार" ।

स्यालिया-संज्ञा पुं० गीदद ।

स्याह-वि० काजा । कृष्ण वर्ण का ।

हथसार-संज्ञा स्त्री० वह घर जिसमें हाथी रहते जाते हैं। फीछखाना।

हथाहथी०-अव्य० १. हाथो-हाथ।

२. शीघ्र।

हथिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।

हथिया-संज्ञा पुं० इस्त नघन्न।

हथियाना-क्रि० स० १. हाथ में करना। २. धोखा देकर ले लेना।

हथियार-संज्ञा पुं० १. हाथ से पकड़कर काम में लाने की साधन-वस्तु।

श्रीजार। २. यन्त्र-राज।

हथियारघट्ट-वि० जो हथियार बांधे हो। सशस्त्र।

हथेरी०-संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

हथेली-संज्ञा स्त्री० हाथ की कलाई का चौड़ा सिरा जिसमें डँगलियाँ लगी होती हैं। करतल।

हथौड़ी-संज्ञा स्त्री० किसी काम में हाथ लगाने का ढंग।

हथौड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अत्पा० हथौड़ी] वह औजार जिससे कारीगर किसी धातुखंड को तोड़ते, पीटते या गड़ते हैं। मारतल।

हथौड़ी-संज्ञा स्त्री० छोटा हथौड़ा।

हथ्यार०-संज्ञा पुं० दे० "हथियार"।

हट्ट-संज्ञा स्त्री० १. सीमा। मर्यादा।

२. किसी वस्तु या बात का सबसे अधिक परिणाम जो उद्घराया गया हो।

हदीस-संज्ञा स्त्री० मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है।

हनन-संज्ञा पुं० [वि० हननीय, हनित]

१. मार डालना। २. आघात करना।

हनना०-क्रि० स० १. बघ करना।

२. प्रहार करना।

हनुघन्त०-संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुघ-संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनु-संज्ञा स्त्री० १. दाढ़ की हड्डी।

जघदा। ०२. टुट्टी। चिबुक।

हनुमंत-संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुमान्-संज्ञा पुं० पंथा के एक वीर जिन्होंने सीता-हरण के उपरांत रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी। महावीर।

हनुमान्-संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हप-संज्ञा पुं० मुँह में चट से लेकर आँठ बंद करने का शब्द।

हस्ता-संज्ञा पुं० सहाइ।

हथफना०-क्रि० अ० लाने या दाँत काटने के लिये फट से मुँह खोलना।

हथर हथर-क्रि० वि० जगदी जगदी। उतावली से।

हथराना०-क्रि० अ० दे० "हट्ट-बढ़ाना"।

हथशी-संज्ञा पुं० हथश देश का निवासी जो बहुत काला होता है।

हथूँ-संज्ञा पुं० पानी का बधूँ। बुछा।

हथ्या-डथ्या-संज्ञा पुं० जोर जोर से सँस या पसली चलने की धीमारी जो बच्चों को होती है।

हथ्स-संज्ञा पुं० कैद।

हम-सर्व० "मैं" का बहुवचन।

हमजोली-संज्ञा पुं० साथी। संगी।

हमता०-संज्ञा स्त्री० यह भाव। अहंकार।

हमदुर्द-संज्ञा पुं० दुःख में सहायभूति रखनेवाला।

हमदुर्वी-संज्ञा स्त्री० सहायभूति।

हमराह-अव्य० साथ। संग में।

हमल-संज्ञा पुं० स्त्री के पेट में बच्चे

स्याहा-संज्ञा पुं० दे० "सिपाहा" ।  
 स्याही-संज्ञा स्त्री० १. रेशनाई । २.  
 फालापन । फालिमा ।  
 संज्ञा स्त्री० साही । ( जंतु )  
 स्यौ, स्यो-अव्य० १. सहित । २.  
 पास ।  
 स्रक्-संज्ञा स्त्री०, पुं० फूलों की माला ।  
 स्रग-संज्ञा स्त्री०, पुं० दे० "स्रक्" ।  
 स्रज-संज्ञा स्त्री० माला ।  
 स्रमित-वि० दे० "अमित" ।  
 स्रवण-संज्ञा पुं० १. बहाव । प्रवाह ।  
 २. कच्चे गर्भ का गिरना ।  
 स्रवना-वि० अ० बहना । घूना ।  
 क्रि० स० बहाना । टपकाना ।  
 स्रष्टा-संज्ञा पुं० सृष्टि या विश्व की  
 रचना करनेवाले, प्रधा ।  
 वि० सृष्टि रचनेवाला ।  
 स्राप-संज्ञा पुं० दे० "शाप" ।  
 स्रापित-वि० दे० "शापित" ।  
 स्राघ-संज्ञा पुं० बहना । करना । धरण ।  
 स्राघक-वि० बहाने, चुभाने या टप-  
 कानेवाला ।  
 स्राधी-वि० बहानेवाला ।  
 स्रुत-वि० दे० "श्रुत" ।  
 स्रुतिमाथ-संज्ञा पुं० विष्णु ।  
 स्रुधा-संज्ञा स्त्री० लकड़ी की एक  
 प्रकार की छोटी करछी जिससे हव-  
 नादि में घी की आहुति देते हैं ।  
 स्रोनी-संज्ञा स्त्री० दे० "अग्नी" ।  
 स्रोत-संज्ञा पुं० पानी का बहाव या  
 करना । धारा ।  
 स्रोतस्विनी-संज्ञा स्त्री० नदी ।  
 स्रोत-संज्ञा पुं० दे० "अवेषण" ।  
 स्व-संज्ञा पुं० स्वर्ग ।  
 स्व-वि० अपना ।

स्वकीया-संज्ञा स्त्री० अपने ही पति में  
 अनुराग रखनेवाली स्त्री ।  
 स्वगत-क्रि० वि० आप ही आप ।  
 अपने आप से । (कहना या बोलना)  
 स्वगत-कथन-संज्ञा पुं० नाटक में  
 पात्र का आप ही आप इस प्रकार  
 बोलना कि मानें वह किसी को  
 सुनाना नहीं चाहता और न कोई  
 उसकी बात सुनता ही है ।  
 स्वच्छंद-वि० १. जो अपनी इच्छा के  
 अनुसार सब कार्य करे । २.  
 निरंकुश ।  
 स्वच्छंदता-संज्ञा स्त्री० स्वतंत्रता ।  
 स्वच्छ-वि० जिसमें किसी प्रकार की  
 गंदगी न हो । निर्मल ।  
 स्वच्छता-संज्ञा स्त्री० स्वच्छ होने का  
 भाव । विशुद्धता ।  
 स्वजन-संज्ञा पुं० १. अपने परिवार के  
 लोग । २. रिश्तेदार ।  
 स्वजन्मा-वि० अपने आप से उत्पन्न ।  
 ( ईश्वर )  
 स्वजात-वि० अपने से उत्पन्न ।  
 संज्ञा पुं० पुत्र ।  
 स्वजाति-संज्ञा स्त्री० अपनी जाति ।  
 स्वजातीय-वि० अपनी जाति का ।  
 स्वतंत्र-वि० १. जो किसी के अधीन  
 न हो । स्वाधीन । २. मनमानी  
 करनेवाला ।  
 स्वतंत्रता-संज्ञा स्त्री० स्वतंत्र होने का  
 भाव । आज़ादी ।  
 स्वतः-अव्य० अपने आप ।  
 स्वत्व-संज्ञा पुं० १. अधिकार । हक ।  
 २. "स्व" या अपने होने का भाव ।  
 स्वत्वाधिकारी-संज्ञा पुं० स्वामी ।  
 मालिक ।

का होना । गर्भ ।  
 हमला-संज्ञा पुं० १. लड़ाई करने के लिये चढ़ दौड़ना । धावा । २. आक्रमण ।  
 हमवार-वि० जिसकी सतह बराबर हो । समतल ।  
 हमसर-संज्ञा पुं० गुण, बल या पद में समान व्यक्ति ।  
 हमसरी-संज्ञा स्त्री० बराबरी ।  
 हमाम-संज्ञा पुं० दे० "हम्माम" ।  
 हमारा-सर्व० [ स्त्री० हमारी ] 'हम' का सर्वप्रथम कारक रूप ।  
 हमाल-संज्ञा पुं० १. षोफ़ ठठानेवाला । २. मजदूर । कुली ।  
 हमाममी-संज्ञा स्त्री० अपने अपने लाभ का आतुर प्रयत्न ।  
 हमीर-संज्ञा पुं० दे० "हम्मौर" ।  
 हमें-सर्व० 'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप । हमको ।  
 हमेल-संज्ञा स्त्री० सिकों आदि की माखा जो गले में पहनी जाती है ।  
 हमेष्-संज्ञा पुं० अहंकार ।  
 हमेशा-अव्य० सब दिन या सब समय । सदा । सर्वदा ।  
 हमेश-अव्य० दे० "हमेशा" ।  
 हम्माम-संज्ञा पुं० नहाने की वह कोठरी जिसमें गरम पानी रखा रहता है । स्नानागार ।  
 हम्मौर-संज्ञा पुं० रणथंभौरगढ़ का एक अत्यंत घोर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० में अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था ।  
 हय-संज्ञा पुं० [ स्त्री० हया, हयी ] घोड़ा ।  
 अश्व ।  
 हयना-कि० स० बध करना । मार डालना ।

हयनाल-संज्ञा स्त्री० वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं ।  
 हयमेध-संज्ञा पुं० अश्वमेध यज्ञ ।  
 हया-संज्ञा स्त्री० लज्जा । शर्म ।  
 हयात-संज्ञा स्त्री० जिंदगी । जीवन ।  
 हयादार-संज्ञा पुं० [ भाष० हयादारी ] लज्जाशील । शर्मदार ।  
 हर-वि० हरण करनेवाला ।  
 संज्ञा पुं० १. शिव । महादेव । २. वह संख्या जिसमें भाग दें । (गणित) ।  
 † संज्ञा पुं० हल ।  
 वि० प्रत्येक ।  
 हरकत-संज्ञा स्त्री० १. गति । चाल । २. चेष्टा । ३. दुष्ट व्यवहार ।  
 हरकना-कि० स० दे० "हटकना" ।  
 हरकारा-संज्ञा पुं० १. चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला । २. डाकिया ।  
 हरखा-संज्ञा पुं० दे० "हर्ष" ।  
 हरखना-कि० अ० हर्षित होना ।  
 हरखाना-कि० अ० दे० "हरखना" ।  
 कि० स० प्रसन्न करना ।  
 हरगिज़-अव्य० किसी दशा में भी । कदापि ।  
 हरचंड-अव्य० कितना ही । बहुत या बहुत बार ।  
 हरज-संज्ञा पुं० दे० "हर्ज" ।  
 हरजा-संज्ञा पुं० दे० "हर्ज" व "हरजाना" ।  
 हरजार्ड-संज्ञा पुं० १. हर जगह घूमनेवाला । २. आचारा ।  
 संज्ञा स्त्री० व्यवहारिणी स्त्री ।  
 हरजाना-संज्ञा पुं० दानि का बदला । क्षतिपूर्ति ।  
 हरट्ट-वि० हट्ट-पुष्ट । मजबूत ।  
 हरण-संज्ञा पुं० छीनना, लूटना या चुराना ।

स्वदेश-संज्ञा पुं० मातृभूमि । धन ।

स्वदेशी-वि० अपने देश का ।

स्वधर्म-संज्ञा पुं० अपना धर्म ।

स्वधा-अर्थ० एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को इवि देने के समय किया जाता है ।

स्वन-संज्ञा पुं० शब्द । आवाज़ ।

स्वपच-संज्ञा पुं० दे० "स्वपच" ।

स्वपन, स्वपना-संज्ञा पुं० दे० "स्वपन" ।

स्वप्न-संज्ञा पुं० १. निद्रा । २. निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना ।

स्वप्नग्रह-संज्ञा पुं० शब्दनागार ।

स्वप्नक्षय-संज्ञा पुं० निद्रावस्था में दीर्घपात होना, जो एक प्रकार का रोग है ।

स्वभाउ-संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव" ।

स्वभाव-संज्ञा पुं० १. सदा रहनेवाला मूल या प्रधान गुण । तारीर । २. प्रकृति ।

स्वभावज-वि० प्राकृतिक । स्वाभाविक ।

स्वभावतः-अर्थ० स्वभाव से । सहज ही ।

स्वभावसिद्ध-वि० सहज ।

स्वभू-संज्ञा पुं० प्रज्ञा ।

स्वयं-अर्थ० १. आप । २. आप से आप ।

स्वयंप्रकाश-संज्ञा पुं० १. वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता के प्रकाशित हो । २. परमात्मा ।

स्वयंभू-संज्ञा पुं० प्रज्ञा ।

वि० जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो ।

स्वयंवर-संज्ञा पुं० प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध विधान जिसमें कन्या

कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिये स्वयं वर चुनती थी ।

स्वयंवरण-संज्ञा पुं० दे० "स्वयंवर" ।

स्वयंवरा-संज्ञा स्त्री० अपने इच्छानुसार अपना पति नियत करनेवाली स्त्री । पतिवरा ।

स्वयंसिद्ध-वि० ( वात ) जिसकी सिद्धि के लिये किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो ।

स्वयंसेवक-संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वयंसेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे । स्वच्छासेवक ।

स्वयमेव-कि० वि० स्वयं ही ।

स्वर-संज्ञा पुं० १. स्वरग । २. आकाश ।

स्वर-संज्ञा पुं० १. प्राणी के कंठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द । २. संगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो; यह सात प्रकार का माना गया है । सुर । ३. वह अक्षर जिसमें व्यंजन का मेल न हो । (व्या०) । ४. आकाश ।

स्वरभंग-संज्ञा पुं० आवाज़ का पैठना जो एक रोग माना गया है ।

स्वरमंडल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का वाद्य जिसमें तार लगे होते हैं ।

स्वरशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें स्वर-संबंधी बातों का विवेचन हो ।

स्वरस-संज्ञा पुं० पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस ।

स्वरांत-वि० (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो; जैसे—मांझा, टोपी ।

स्वराज्य-संज्ञा पुं० वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी स्वयं ही अपने



हरता धरता-संज्ञा पुं० सब बातों का अधिकार रखनेवाला ।  
 हरताल-संज्ञा स्त्री० पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो लिखे अक्षर मिटाने और दवा आदि के काम में आता है ।  
 हरद-संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी" ।  
 हरद्वान-संज्ञा पुं० एक प्राचीन स्थान जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी ।  
 हरद्वार-संज्ञा पुं० दे० "हरिद्वार" ।  
 हरना-कि० स० १. छीनना । २. उठाकर ले जाना ।  
 ०संज्ञा पुं० दे० "हिरन" ।  
 हरनाकस-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु" ।  
 हरनाच्छा-संज्ञा पुं० "हिरण्यक" ।  
 हरनी-संज्ञा स्त्री० हिरन की मादा ।  
 सुगी ।  
 हरनौटा-संज्ञा पुं० हिरन का घसा ।  
 हरफ-संज्ञा पुं० अक्षर । वर्ण ।  
 हरफा रेंचड़ी-संज्ञा स्त्री० कमरख की जाति का एक पेड़ और उसका फल ।  
 हरवराना-संज्ञा पुं० दे० "हड़बढ़ाना" ।  
 हरधा-संज्ञा पुं० हथियार ।  
 हरधौग-वि० १. रौंवार । अथर्व ।  
 २. मूर्ख ।  
 हरम-संज्ञा पुं० अंतःपुर । कनानखाना ।  
 हरमज्जदगी-संज्ञा स्त्री० शरारत । मट-घटी ।  
 हरवल-संज्ञा पुं० दे० "हरावल" ।  
 हरवली-संज्ञा स्त्री० सेना की अप्य-पता । फौज की अफसरी ।  
 हरवा-संज्ञा पुं० दे० "हार" ।  
 हरवाना-कि० भ० जल्दी करना ।  
 कि० स० 'हारना' का प्रेरणार्थक रूप ।  
 हरवाहा-संज्ञा पुं० दे० "हलवादी" ।

हरपा-संज्ञा पुं० दे० "हर्ष" ।  
 हरखना-कि० भ० १. हर्षित होना ।  
 २. पुलकित होना ।  
 हरधाना-कि० भ० १. प्रसन्न होना ।  
 २. रोमांच से प्रफुल्ल होना ।  
 कि० स० हर्षित करना ।  
 हरसिंगार-संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके फूल में उत्तम भीनी महक और नारंगी रंग की डब्डी होती है ।  
 परजाता ।  
 हरहाई-वि० स्त्री० नटखट ( गाय ) ।  
 हरहार-संज्ञा पुं० १. (विष का हार) सर्प । सर्पि । २. शेषनाग ।  
 हरा-वि० [ स्त्री० हरी ] १. घास या पत्ती के रंग का । हरित । २. प्रफुल्ल ।  
 ०संज्ञा पुं० हार । माळा ।  
 हराई-संज्ञा स्त्री० हारने की क्रिया या भाव ।  
 हराना-कि० स० १. युद्ध में मतिद्वंद्वी को पीछे हटाना । २. धकाना ।  
 हराम-वि० निषिद्ध । विधि-विरुद्ध ।  
 बुरा ।  
 संज्ञा पुं० १. वह वस्तु या बात जिसका धर्म-शास्त्र में निषेध हो । २. अधर्म ।  
 हरामखोर-संज्ञा पुं० पाप की कमाई खानेवाला । मुफ़्फ़ोर ।  
 हरामजादा-संज्ञा पुं० १. दोगला ।  
 २. छूट ।  
 हरामी-वि० १. ध्यमिचार से उत्पन्न ।  
 २. पाजी ।  
 हारत-संज्ञा स्त्री० १. गर्मी । २. हलका ज्वर ।  
 हरावल-संज्ञा पुं० सिपाहियों का वह दल जो सबके आगे रहता है ।  
 हरास-संज्ञा पुं० १. भय । डर । २.

देश का सध प्रबंध करते हैं ।

स्वरित-संज्ञा पुं० वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोर से हो और न बहुत धीरे से हो ।

वि० १. स्वर से युक्त । २. गूँजता हुआ ।

स्वरूप-संज्ञा पुं० १. आकार । २. मूर्ति या चित्र आदि ।

वि० खूबसूरत ।

अव्य० तौर पर ।

स्वरूपज्ञ-संज्ञा पुं० तत्त्वज्ञ ।

स्वरूपधान-वि० [ स्त्री० स्वरूपवती ] जिसका स्वरूप अच्छा हो । सुंदर ।

स्वरोद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धाजा जिसमें तार लगे होते हैं ।

स्वरोदय-संज्ञा पुं० वह शाखा जिसमें प्लासे के द्वारा सध प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं ।

स्वर्गगा-संज्ञा स्त्री० मंदाकिनी ।

स्वर्ग-संज्ञा पुं० नाक । देवलोक ।

स्वर्गगमन-संज्ञा पुं० मरना ।

स्वर्गगामी-वि० १. स्वर्ग जानेवाला । २. मृत ।

स्वर्गतक-संज्ञा पुं० कवपवृक्ष ।

स्वर्गनदी-संज्ञा स्त्री० आकाशगंगा ।

स्वर्गपुरी-संज्ञा स्त्री० अमरावती ।

स्वर्गधू-संज्ञा स्त्री० अप्सरा ।

स्वर्गधास-संज्ञा पुं० स्वर्ग को प्रस्थान करना ।

स्वर्गधासी-वि० [ स्त्री० स्वर्गवासिनी ] जो मर गया हो । मृत ।

स्वर्गरोहण-संज्ञा पुं० १. स्वर्ग की ओर जाना । २. मरना ।

स्वर्गीय-वि० [ स्त्री० स्वर्गीया ] १.

स्वर्ग-संबंधी । स्वर्ग का । २. जो मर गया हो । मृत ।

स्वर्ण-संज्ञा पुं० सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु ।

स्वर्णकमल-संज्ञा पुं० लाल कमल ।

स्वर्णकार-संज्ञा पुं० सुनार ।

स्वर्णगिरि-संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत ।

स्वर्णमय-वि० जो बिलकुल सोने का हो ।

स्वर्णमालिक-संज्ञा पुं० दे० "सोना-मवला" ।

स्वर्णमुद्रा-संज्ञा स्त्री० अशरफी ।

स्वर्णयुधिका-संज्ञा स्त्री० पीली जूही ।

स्वर्धूनी-संज्ञा स्त्री० गंगा ।

स्वर्नदी-संज्ञा स्त्री० स्वर्गगा ।

स्वर्ध-संज्ञा पुं० अश्विनीकुमार ।

स्वल्प-वि० बहुत थोड़ा ।

स्ववचन-संज्ञा पुं० दे० "सुपण्य" ।

स्वसा-संज्ञा स्त्री० बहिन ।

स्वस्ति-अव्य० कल्याण हो । मंगल हो । ( आशीर्वाद )

संज्ञा स्त्री० वक्ष्याण ।

स्वस्तिक-संज्ञा पुं० प्राचीन काज का एक मंगल-चिह्न जो शुभ अवसरों पर मांगलिक द्रव्यों से अंकित किया जाता था । आज-कल इसका मुख्य आकार यह प्रचलित है卐 ।

स्वस्तिघाचन-संज्ञा पुं० [ वि० स्वस्ति-वाचक ] कर्मकांड के अनुसार पूजन और मंगल-सूचक मंत्रों का पाठ ।

स्वस्त्ययन-संज्ञा पुं० एक धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य में शुभ की स्थापना के विचार से किया जाता है ।

स्वस्थ-वि० १. नीरोग । तंदुरुस्त ।

नैराश्य । नाठमेदी ।

हरि-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. घोड़ा ।

३. वंदर । ४. विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण ।

हरिअर-वि० हरा । सज्ज ।

हरिअरी-संज्ञा स्त्री० दे० "हरि-आली" ।

हरिआली-संज्ञा स्त्री० घास और पेड़-पौधों का फैला हुआ समूह ।

हरिकीर्त्तन-संज्ञा पुं० भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान ।

हरिचंद्र-संज्ञा पुं० दे० "हरिचंद्र" ।

हरिजन-संज्ञा पुं० १. ईश्वर का भक्त । २. अंत्यज । (आधुनिक)

हरिण-संज्ञा पुं० [स्त्री० हरिणी] मृग । हिरन ।

हरिणाली-वि० स्त्री० हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखोंवाली । सुंदरी ।

हरिणी-संज्ञा स्त्री० हिरन की मादा ।

हरित्, हरित-वि० हरा । सज्ज ।

हरितमणि-संज्ञा पुं० भरकत । पत्थर ।

हरितालिका-संज्ञा स्त्री० भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया । तीज । (स्त्रियों का व्रत)

हरिद्रा-संज्ञा स्त्री० हलदी ।

हरिद्वार-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है ।

हरिधाम-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ ।

हरिन-संज्ञा पुं० [स्त्री० हरिनी] खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्रायः सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाड़ों में रहता है । मृग ।

हरिनग-संज्ञा पुं० सूर्य का मणि ।

हरिनाक्ष-संज्ञा पुं० दे० "हरिण्याक्ष" ।

हरिनाम-संज्ञा पुं० भगवान् का नाम ।

हरिनी-संज्ञा स्त्री० स्त्री जाति का मृग ।

हरिपद-संज्ञा पुं० विष्णु का लोक । वैकुण्ठ ।

हरिपुर-संज्ञा पुं० वैकुण्ठ ।

हरिप्रिया-संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी । २. तुलसी ।

हरिप्रीता-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का शुभ मुहूर्त । (अंगीतिष)

हरिमक्त-संज्ञा पुं० ईश्वर का प्रेमी ।

हरिमक्ति-संज्ञा स्त्री० ईश्वर-प्रेम ।

हरियर-वि० दे० "हरा" ।

हरियाई-संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली" ।

हरियाना-संज्ञा पुं० हिसार और रोह-तक के आस-पास का प्रांत ।

हरियाली-संज्ञा स्त्री० १. हरे रंग का फैलाव । २. हरे हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार । ३. दूध ।

हरिचंश-संज्ञा पुं० एक ग्रंथ जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वृत्तान्त है ।

हरिवासर-संज्ञा पुं० १. रविवार । २. विष्णु का दिन, एकादशी ।

हरिशयनी-संज्ञा स्त्री० आपाढ़ शुक्ल एकादशी ।

हरिश्चंद्र-संज्ञा पुं० सूर्यवंश का प्रसिद्ध दानी और सत्यव्रती राजा ।

हरिस-संज्ञा स्त्री० हल का वह छद्दा जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी और दूसरे छोर पर जूवा रहता है । हुंया ।

हरिहर क्षेत्र-संज्ञा पुं० विहार में एक तीर्थस्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को भारी मेला होता है ।

हरीतकी-संज्ञा स्त्री० हड़ । हरे ।

हरीरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेय

पदार्थ जो दूध में मसाखे और मेवे  
डाबकर छोटाने से बनता है।

हलुआ-वि० हलका।

हलुआ-वि० दे० "हलका"।

हलुआई-संज्ञा स्त्री० १. हलकापन।

२. फुरती।

हलुआना-कि० प्र० १. हलका  
होना। २. फुरती करना।

हलुआ-कि० वि० धीरे धीरे। आ-  
हिस्ता से।

हलुफ-संज्ञा पुं० अक्षर।

हरी-कि० वि० धीरे से। आहिस्ता से।  
मंद।

हरेव-संज्ञा पुं० मंगोखे का देश।

हरेवा-संज्ञा पुं० हरे रंग की एक  
चिड़िया। हरी बुलबुल।

हरौल-संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हर्ज-संज्ञा पुं० काम में रुकावट।  
बाधा। अशुचन।

हर्त्ता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० हर्ती ] हरण  
करनेवाला।

हर्फ-संज्ञा पुं० दे० "हरफ"।

हर-संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।

हर-संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।

हर्प-संज्ञा पुं० १. प्रफुल्लता या भय के  
कारण रोंगटों का खड़ा होना। २.  
खुरी।

हर्पण-संज्ञा पुं० प्रफुल्लता या भय से  
रोंगटों का खड़ा होना।

हर्षवर्द्धन-संज्ञा पुं० भारत का वैस  
चतुर्युध-वंशी एक बौद्ध सम्राट जि-  
सकी समा में पाण कवि रहते थे।

हर्षाना-कि० प्र० ध्यानित होना।  
प्रसन्न होना।

कि० सं० हर्षित करना।

हर्षित-वि० ध्यानित।

हल-संज्ञा पुं० शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर  
न मिला हो।

हलंत-संज्ञा पुं० दे० "हल"।

हल-संज्ञा पुं० १. वह बीज जो जिससे  
जमीन जोती जाती है। सीर। २.  
गणित करना। ३. किसी समस्या  
का समाधान।

हलकप-संज्ञा पुं० १. हलचल। २.  
चांग और फैली हुई घबराहट।

हलक-संज्ञा पुं० गले की नली। कंठ।

हलकई-संज्ञा स्त्री० १. हलकापन।  
२. हंसी।

हलकना-कि० प्र० १. हलकना।  
२. हिकारें सोना।

हलका-वि० [ स्त्री० हलकी ] १. जो  
ताक में भारी न हो। २. जो गहरा  
या घटकीला न हो। ३. घटिया।

हलका-संज्ञा पुं० १. मंडल। गोखड़ी।  
२. वेरा। ३. कई गाँवों या कस्बों  
का समूह जो किसी काम के लिये  
नियत हो।

हलकान-वि० दे० "हैरान"।

हलकाना-कि० प्र० हलका होना।  
थोका कम होना।

कि० सं० हिलोरा देना।

हलकापन-संज्ञा पुं० हलका होने का  
भाव। लघुता।

हलकारा-संज्ञा पुं० दे० "हरकारा"।

हलकोरा-संज्ञा पुं० तरंग। खहर।

हलचल-संज्ञा स्त्री० लोगों के बीच  
फैली हुई अधीरता, घबराहट, दौड़-  
धूप, शोर-मुल आदि। खलबली।  
धम।

संज्ञा पुं० १. हिमालय । २. कैलाश पर्वत ।

हिमांशु-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

हिमाकृत-संज्ञा स्त्री० १. बेवकूफी । २. दुस्साहस ।

हिमाचल-संज्ञा पुं० हिमालय ।

हिमाद्रि-संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़ ।

हिमामदस्ता-संज्ञा पुं० खरब और बहा ।

हिमायत-संज्ञा स्त्री० पक्षपात ।

हिमायती-वि० १. समर्थन या मंडन करनेवाला । २. मददगार ।

हिमालय-संज्ञा पुं० भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है ।

हिम्मत-संज्ञा स्त्री० कठिन या कष्ट-साध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता । साहस ।

हिम्मती-वि० साहसी ।

हिय-संज्ञा पुं० हृदय । मन ।

हियरा-संज्ञा पुं० हृदय ।

हियाँ-अन्व० दे० "यहाँ" ।

हिया-संज्ञा पुं० हृदय । मन ।

हियाव-संज्ञा पुं० साहस । हिम्मत ।

हिरकना-कि० अ० पास होना । निकट जाना ।

हिरण-संज्ञा पुं० दे० "हिरण" ।

हिरण्य-संज्ञा पुं० सोना । स्वर्ण ।

हिरण्यकशिपु-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद का पिता था । भगवान् ने नृसिंहा-वतार धारण करके इसे मारा था ।

हिरण्यकश्यप-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु" ।

हिरण्यगर्भ-संज्ञा पुं० १. वह ज्योति-

मय अंड जिससे ब्रह्मा धीरे धीरे सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है । २. विष्णु ।

हिरण्यनाम-संज्ञा पुं० १. विष्णु ।

२. मृनाक पर्वत ।

हिरण्यपरेता-संज्ञा पुं० १. अग्नि । २. सूर्य । ३. शिव ।

हिरण्याक्ष-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था ।

हिरण-संज्ञा पुं० हरिण । मृग ।

हिरणाकुस-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु" ।

हिरफत-संज्ञा स्त्री० १. हाथ की कारी-गरी । २. चाखवाजी । धूर्तता ।

हिरमजो-संज्ञा स्त्री० खाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी ।

हिरस-संज्ञा स्त्री० दे० "हिरस" ।

हिराना-कि० अ० १. खो जाना । २. न रह जाना ।

कि० स० भूल जाना । ध्यान में न रहना ।

हिरासत-संज्ञा स्त्री० १. पहरा । चौकी । २. कैद । नज़रबंदी ।

हिरस-संज्ञा स्त्री० १. साजसज्जा । लुग्णा । लोभ । २. स्पर्धा ।

हिलकी-संज्ञा स्त्री० हिलकी ।

हिलकोर, हिलकोरा-संज्ञा पुं० हि-लोहर । लहर ।

हिलग-संज्ञा स्त्री० खगाव । संवध ।

हिलगना-कि० अ० १. अटकना । २. फँसना । ३. पास होना । सटना ।

हिलगाना-कि० स० १. अटकना । २. चपकाना ।

हिलना-कि० अ० १. चलापमान होना । २. फँसना । ३. परिचित और अनुरक्त होना ।

हलदी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़, जो गाँठ के रूप में होती है, मसाले के रूप में और रँगई के काम में भी आती है। २. वह पौधे की गाँठ जो मसाले आदि के काम में आती है।

हलधर-संज्ञा पुं० बलरामजी।

हलना-क्रि० प्र० १. हिलना डोलना। २. पानी में बैठना। (पूर्व)

हलफ-संज्ञा पुं० किसी पवित्र वस्तु की शपथ। फुसम।

हलबल-संज्ञा पुं० खलबली। हल-चल।

हलवी, हलवी-वि० हलधर देश का (शीशा)। बड़िया (शीशा)।

हलराना-क्रि० प्र० (घों के) हाथ पर लेकर धर-धर हिलाना।

हलवा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा भोजन। मोहनभोग।

हलवाई-संज्ञा पुं० [ स्त्री० हलवाई ] मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हलवाह, हलवाहा-संज्ञा पुं० वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो।

हलहलाना-क्रि० प्र० खूब जोर से हिलाना-डोलाना। झुककोरना।

हलकान-वि० [संज्ञा हलकानी] परेशान। हैरान।

हला-भला-संज्ञा पुं० १. निबटारा। २. परिणाम।

हलायुध-संज्ञा पुं० बलराम।

हलाल-संज्ञा पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानों की धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।

हलालखोर-संज्ञा पुं० १. मिहनत

करके जीविका करनेवाला। २. भंगी।

हलाहल-संज्ञा पुं० १. वह प्रचंड विष जो समुद्र-मथन के समय निकला था। २. एक जहरीला पौधा।

हलुका-वि० दे० "हलका"।

हलोरना-क्रि० प्र० १. पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना-डोलाना। २. मथना। ३. थनाज फटकना।

हलोरना-संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हलदी-संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

हल्ला-संज्ञा पुं० १. चिछाहट। शोर-गुल। २. आक्रमण। हमला।

हलन-संज्ञा पुं० किसी देवता के निमित्त मंत्र पढ़कर धी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य। होम।

हवलदार-संज्ञा पुं० १. बादशाही जमाने का वह अफसर जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिये तनात रहता था। २. फौज में एक सभसे छोटा अफसर।

हवस-संज्ञा स्त्री० लालसा। कामना।

हवा-संज्ञा स्त्री० वायु। पवन।

हवाई-वि० १. हवा का। वायु-संबंधी। २. हवा में चलनेवाला। ३. कल्पित या झूठ। निर्मूल।

संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशपाजी हवाचक्की-संज्ञा स्त्री० आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के जोर से चलती हो।

हवादार-वि० जिसमें हवा आने-जाने के लिये खिड़कियाँ या दरवाजे हों। संज्ञा पुं० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हलका सवत।

हवाल-संज्ञा पुं० १. हाल। दशा। २. समाचार।

हुलहुल-संज्ञा पुं० एक छोटा पैघा ।  
 हुलास-संज्ञा पुं० आनंद की समंग ।  
 हुलिया-संज्ञा पुं० शकल । आकृति ।  
 हुल्लड़-संज्ञा पुं० शोरगल । हल्ला ।  
 हुश-अव्य० अनुचित बात सुँह से  
 निकालने पर रोकने का शब्द ।  
 हुसियार-वि० दे० "होशियार" ।  
 हुसैन-संज्ञा पुं० मुहम्मद साहब के  
 दामाद अली के बेटे जो कबला के  
 मैदान में मारे गए थे ।  
 हुँ-संज्ञा पुं० सौंदर्य । लावण्य ।  
 हुँ-अव्य० स्वीकार-सूचक शब्द ।  
 अव्य० दे० "हूँ" ।  
 सर्व० वर्तमान-कालिक क्रिया "हूँ"  
 का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप ।  
 हुँकना-क्रि० भ० गाय का दुःख  
 सूचित करने के लिये धीरे धीरे  
 बोलना ।  
 हुँठा-संज्ञा पुं० साढ़े तीन का पहाड़ा ।  
 हुँ-अव्य० एक अतिरेक-पोषक शब्द ।  
 भी ।  
 हुक-संज्ञा स्त्री० १. छाती या कलेजे  
 का दर्द । २. कसक ।  
 हुकना-क्रि० भ० सालाना । दर्द  
 करना ।  
 हुटना-क्रि० भ० मुड़ना । पीठ  
 फेरना ।  
 हुठा-संज्ञा पुं० अँगूठा दिखाने की  
 अश्लिष्ट मुद्रा ।  
 हुण-संज्ञा पुं० एक प्राचीन मंगोल  
 जाति जो प्रबल होकर एशिया और  
 योरोप के सभ्य देशों पर आक्रमण  
 करती हुई फैली थी ।  
 हु-बहु-वि० ज्यों का त्यों । ठीक  
 वसा ही ।

हूर-संज्ञा स्त्री० मुसलमानों के स्वर्ग की  
 अप्सरा ।  
 हुल-संज्ञा स्त्री० भाले, डंडे आदि की  
 नोक को ज़ोर से ठेकना अथवा भोंकना ।  
 हुलना-क्रि० सं० खादी, भाले आदि  
 की नोक को ज़ोर से ठेकना या  
 घुमाना ।  
 हुला-संज्ञा पुं० हुलने की क्रिया या  
 भाव ।  
 हुश-वि० असभ्य । सज्जु ।  
 हुह-संज्ञा स्त्री० हुंकार । फोलाहल ।  
 युद्धानाद ।  
 हुह-संज्ञा पुं० अग्नि के जलने का शब्द ।  
 धाय धाय ।  
 हुत-वि० १. पहुँचाया हुआ । २.  
 हरण किया हुआ ।  
 हुति-संज्ञा स्त्री० खे जाना । हरण ।  
 हुकंप-संज्ञा पुं० हृदय की कपकपी ।  
 हुरिपह-संज्ञा पुं० कलेजा ।  
 हृद-संज्ञा पुं० हृदय ।  
 हृदयंगम-वि० मन में घँटा हुआ ।  
 हृदय-संज्ञा पुं० १. दिल । कलेजा ।  
 २. अंतःकरण ।  
 हृदयग्राही-संज्ञा पुं० [स्त्री० हृदयग्राहिणी]  
 मन को मोहित करनेवाला ।  
 हृदयनिकेत-संज्ञा पुं० कामदेव ।  
 हृदयवेधी-वि० [स्त्री० हृदयवेधिनी]  
 अत्यंत शोक करनेवाला ।  
 हृदयरुपशी-वि० [स्त्री० हृदयरुपशीणी]  
 हृदय पर प्रभाव डालनेवाला ।  
 हृदयहारी-वि० [स्त्री० हृदयहारिणी]  
 मन को लुभानेवाला ।  
 हृदयेश, हृदयेश्वर-संज्ञा पुं० [स्त्री०  
 हृदयेश्वरी] १. प्यारा । २. पति ।  
 हृदगत-वि० हृदय का । आंतरिक ।  
 हृद्य-वि० १. हृदय का । २. सुंदर ।

हवालदार-संज्ञा पुं० दे० "हवलदार" ।  
हवाला-संज्ञा पुं० १. प्रमाण का उल्लेख । २. मिसाल । ३. झिम्मेदारी ।  
हवालात-संज्ञा स्त्री० पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव ।  
भञ्जरचंदी ।

हवास-संज्ञा पुं० चेतना । संज्ञा ।  
होश ।

हवि-संज्ञा पुं० वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय । हवन की यस्तु ।

हविष्य-वि० हवन करने योग्य ।  
संज्ञा पुं० वह यस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय ।  
बलि । हवि ।

हविष्यान्न-संज्ञा पुं० वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय ।

हवेली-संज्ञा स्त्री० पक्का पड़ा मकान ।  
प्रासाद ।

हव्य-संज्ञा पुं० हवन की सामग्री ।  
हशमत-संज्ञा स्त्री० १. गौरव । बढ़ाई ।  
२. वैभव ।

हसन-संज्ञा पुं० १. हँसना । २. परिहास । दिछगी । ३. विनोद ।

हसदत्त-संज्ञा स्त्री० १. रंज । अकृन्तास । २. हार्दिक कामना ।

हसित-वि० १. जिस पर लोग हँसते हैं । २. जो हँसा हो ।

संज्ञा पुं० १. हँसना । २. हँसी-उठ्ठा ।  
हसीन-वि० सुंदर । खूबसूरत ।

हस्त-संज्ञा पुं० १. हाथ । २. एक नाप जो २४ अंगुल की होती है ।  
३. एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है ।

हस्तकौशल-संज्ञा पुं० किसी काम में हाथ चलाने की निपुणता ।

हस्तक्रिया-संज्ञा स्त्री० हाथ का काम ।  
दस्तकारी ।

हस्तक्षेप-संज्ञा पुं० किसी होते हुए काम में कुछ कारंवाई कर बैठना ।  
दखल देना ।

हस्तगत-वि० हाथ में आया हुआ ।  
प्राप्त । हासिल ।

हस्तत्राण-संज्ञा पुं० अश्वों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जाने-वाला दस्ताना ।

हस्तरेंखा-संज्ञा स्त्री० हथेली में पड़ी हुई लकीरें जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है ।

हस्तलाघव-संज्ञा पुं० हाथ की फुरती ।  
हाथ की सफाई ।

हस्तलिपि-संज्ञा स्त्री० हाथ की लिखा-वट ।

हस्ताक्षर-संज्ञा पुं० धपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे धपने हाथ से लिखा जाय । दस्तखत ।

हस्तामलक-संज्ञा पुं० वह चीज़ या बात जिसका हर एक पहलू साफ़ साफ़ झलिर हो गया हो ।

हस्ति-संज्ञा पुं० दे० "हस्ती" ।

हस्तिनापुर-संज्ञा पुं० फौरवों की राजधानी जो वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूरी पर थी ।

हस्तिनी-संज्ञा स्त्री० १. मादा हाथी ।  
२. काम-शास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से सभसे निकट भेद ।

हस्ती-संज्ञा पुं० हाथी ।

संज्ञा स्त्री० अस्तित्व ।

हस्ते-अभ्य० मारफ़्त ।

हहर-संज्ञा स्त्री० १. धराहट । कँप-कँपी । २. भय । डर ।



हृषीकेश-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. श्रीकृष्ण ।

हृष्ट-वि० अत्यन्त प्रसन्न ।

हृष्ट-पुष्ट-वि० मोटा-ताजा । तगड़ा ।

हूँ-हूँ-संज्ञा पुं० गिद्धगिद्गाने का शब्द ।

हूँगाँ-संज्ञा पुं० जुते हुए खेत की

मिट्टी घरावर करने का पाटा । पहाटा ।

हूँ-अव्य० संघोधन का शब्द ।

‡क्रि० भ० प्रजभाषा के 'हो' (= या) का बहुवचन । ये ।

हेफड़-वि० १. हृष्ट-पुष्ट । मोटा-ताजा ।

२. ज्वरदस्त ।

हेफड़ी-संज्ञा स्त्री० १. अकलङ्कन ।

२. ज्वरदस्ती ।

हेच-वि० तुच्छ । नाचीज़ ।

हेठा-वि० १. नीचा । २. घटकर ।

हेठापन-संज्ञा पुं० तुच्छता ।

हेठी-संज्ञा स्त्री० प्रतिष्ठा में कमी । मानहानि ।

हेतु-संज्ञा पुं० कारण या उत्पादक विषय । कारण ।

हेतुघाद-संज्ञा पुं० १. तर्कविद्या । २. नास्तिकता ।

हेतुशास्त्र-संज्ञा पुं० तर्कशास्त्र ।

हेतुहेतुमद्भाष-संज्ञा पुं० कार्य-कारण भाष ।

हेतुहेतुमद्भूत काल-संज्ञा पुं० क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिनमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है । (व्या०)

हेत्याभास-संज्ञा पुं० किसी बात को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक न हो ।

हेमन्त-संज्ञा पुं० ऋतु ऋतुओं में से एक । अगहन और पूस ।

हेम-संज्ञा पुं० १. हिम । २. सेना ।

हेमकूट-संज्ञा पुं० हिमालय के उत्तर का एक पर्वत । (पुराण)

हेमगिरि-संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत ।

हेमचन्द्र-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध जैन आचार्य जो ईसवी सन् १०८६ और ११७३ के बीच हुए थे और गुजरात के राजा कुमारपाल के गुरु थे । इन्होंने व्याकरण और कोश के कई ग्रंथ लिखे हैं ।

हेमपर्वत-संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत ।

हेमाद्रि-संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत ।

हेय-वि० १. त्याग्य । २. निकृष्ट ।

हेरंय-संज्ञा पुं० गणेश ।

हेरा-संज्ञा स्त्री० हूँड़ । तालाश ।

हेरना-संज्ञा पुं० १. हूँड़ना । २. देखना । ताकना ।

हेरना-फेरना-क्रि० स० १. इधर का इधर करना । २. बदलना ।

हेर-फेर-संज्ञा पुं० १. घुमाव । २. बदल-बदल ।

हेरघाना-क्रि० स० गँवाना ।

क्रि० स० हूँड़वाना ।

हेराना-क्रि० भ० खोजना ।

क्रि० स० तलाश करना ।

हेराफेरी-संज्ञा स्त्री० हेर-फेर । बदल-बदल ।

हेलना-क्रि० भ० १. झीड़ा करना । २. हँसी-ठट्टा करना ।

‡क्रि० भ० प्रवेश करना । घुसना ।

हेल-मेल-संज्ञा पुं० मिलने जुलने आदि का संबंध । मिश्रता ।

हेला-संज्ञा स्त्री० १. तुच्छ समझना । तिरस्कार । २. झीड़ा । ३. प्रेस की

हहरना-क्रि० अ० १. कापना । २. डर के मारे काँप उठना । दहखना ।  
३. डाढ़ करना । सिहाना ।

हहराना-क्रि० अ० कापना । थर-धराना ।

क्रि० स० दहखाना । भयभीत करना ।

हहा-संज्ञा स्त्री० हँसने का शब्द ।

हर्ष-अभ्य० १. स्वीकृति-सूचक शब्द ।

२. एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि वह बात जो पूछी जा रही है, ठीक है ।

हर्ष-संज्ञा स्त्री० १. किसी को बुलाने के लिये जोर से निकाला हुआ शब्द ।

२. छलकार । ३. सहायता के लिये की हुई पुकार । हुहाई ।

हर्षना-क्रि० स० १. एक चढ़कर बोलना । २. मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना । ३. जानवरों को चखाना । ४. मारकर या बोलकर चौपायों को भगाना । ५. पंखे से हवा पहुँचाना ।

हर्षी-संज्ञा स्त्री० हामी । स्वीकृति ।

हर्षी-संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का मँथोला परतन जो घटलोई के आकार का हो । हँडिया । २. इसी आकार का शीशे का वह पात्र जो सजावट के लिये कमरे में टांगा जाता है ।

हर्षना, हर्षना-क्रि० अ० कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण जोर जोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना । तीव्र श्वास लेना ।

हर्षा-संज्ञा पुं० हर्षने की क्रिया या भाव । तीव्र और चिप्र श्वास ।

हर्षना-क्रि० अ० दे० "हँसना" ।

हर्षल-संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका

रंग मेहँदी सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों । कुम्भेत हिनाई ।

हर्षी-संज्ञा स्त्री० १. हँसी । हँसने की क्रिया या भाव । २. परिहास । हँसी-ठट्टा । दिहगी । मज़ाक । ३. उपहास । निंदा ।

हर्ष-अभ्य० निषेध या वारण करने का शब्द ।

हर्ष-अभ्य० १. शोक या दुःखसूचक शब्द । २. आश्चर्य या आश्चर्यसूचक शब्द । ३. भयसूचक शब्द ।

हर्ष-अभ्य० दे० "हर्ष" ।

हर्ष-संज्ञा पुं० हँसा । भफाई ।

हर्ष-संज्ञा पुं० १. हुकूमत करने वाला । शासक । २. पदा अफसर ।

हर्ष-संज्ञा स्त्री० हर्षना का काम । हुकूमत । प्रभुत्व ।

वि० हर्ष का । हर्ष-संबंधी ।

हर्ष-संज्ञा स्त्री० १. ज़रूरत । २. पहर के भीतर रखा जाना । हिरासत ।

हर्ष-संज्ञा पुं० भोजन पचने की क्रिया ।

हर्ष-वि० पाचक ।

हर्ष-वि० १. सम्मुख । २. मौजूद । विद्यमान ।

हर्ष-अवयव-वि० बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार । प्रत्युत्पन्न-मति ।

हर्ष-संज्ञा पुं० वह जो हज कर आया हो । ( मुसल्ल० )

हर्ष-संज्ञा स्त्री० याज़ार ।

हर्ष-संज्ञा पुं० सोना । स्वर्ण ।

हर्ष-संज्ञा पुं० संका ।

हर्ष-संज्ञा पुं० हर्षी । अस्थि ।

हाता-संज्ञा पुं० १. घेरा हुआ स्थान । बाढ़ा । २. देश-विभाग ।

छोड़ा । फेंका ।  
 हेली-अव्य० हे सखी !  
 संज्ञा स्त्री० सहेली । सखी ।  
 हेमंत-संज्ञा पुं० दे० "हेमंत" ।  
 हैं-क्रि० भ० सत्तार्थक क्रिया 'होना'  
 के वर्तमान रूप "है" का बहुवचन ।  
 है-क्रि० भ० हिं० क्रि० 'होना' का  
 वर्तमानकालिक एकवचन रूप ।  
 ह० संज्ञा पुं० दे० "हय" ।  
 हैकाड़-वि० दे० "हैकड़" ।  
 हैजा-संज्ञा पुं० दस्त और कै की  
 बीमारी । विशूचिष्ठा ।  
 हैफ-अव्य० प्रफुसोस । हाय ।  
 हैयर-संज्ञा पुं० अफ्ला पोड़ा ।  
 हैम-वि० सोने का । स्वर्णमय ।  
 वि० हिम-संबंधी ।  
 हैमचत-वि० [ स्त्री० हैमचती ] हिमा-  
 लय का ।  
 संज्ञा पुं० हिमालय का निवासी ।  
 हैमचती-संज्ञा स्त्री० १. पार्वती ।  
 २. गंगा ।  
 हैरत-संज्ञा स्त्री० आश्चर्य्य । अचंभा ।  
 हैरान-वि० [ संज्ञा हैरानी ] १. आश्चर्य्य  
 से खट्प । २. परेशान ।  
 हैवान-संज्ञा पुं० १. पशु । जानवर ।  
 २. रजवार ।  
 हैवानी-वि० पशु के करने के योग्य ।  
 हैसियत-संज्ञा स्त्री० योग्यता । सा-  
 मर्थ्य ।  
 हैहय-संज्ञा पुं० एक क्षत्रियवंश जो  
 यदु से उत्पन्न कहा गया है और  
 कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है ।  
 है है-अव्य० शोक या दुःख-सूचक  
 शब्द ।  
 हो-क्रि० भ० सत्तार्थक क्रिया 'होना'

का बहुवचन समाप्य-काल का रूप ।  
 होठ-संज्ञा पुं० मुख-पिबर का उभरा  
 हुआ किनारा जिससे दाँत टँके रहते  
 हैं । ओष्ठ । रदच्छद ।  
 हो-संज्ञा पुं० पुकारने का शब्द या  
 संवाधन ।  
 ० यज्ञ की वर्तमान-कालिक-क्रिया  
 'है' का सामान्य भूत का रूप । था ।  
 होड़-संज्ञा स्त्री० १. शर्त । बाज़ी ।  
 २. एक दूसरे से यदु जाने का प्रयत्न ।  
 होड़ावादी-संज्ञा स्त्री० दे० "होड़ा-  
 वादी" ।  
 होड़ाहोड़ी-संज्ञा स्त्री० साग-डॉट ।  
 होतध, होतव्य-संज्ञा पुं० दे० "होत-  
 हार" ।  
 होतव्यता-संज्ञा स्त्री० दे० "होतहार" ।  
 होता-संज्ञा पुं० [ स्त्री० होती ] यज्ञ में  
 शाहुति देनेवाला ।  
 होतहार-वि० जिसके चढ़ने या भेंट  
 देने की आशा हो ।  
 संज्ञा पुं० १. वह घात जो होने को हो ।  
 २. वह घात जो अवश्य हो । होनी ।  
 होना-क्रि० भ० प्रधान सत्तार्थक  
 क्रिया । अस्तित्व रखना ।  
 होनी-संज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति । २.  
 होनेवाली घात या घटना । भावी ।  
 होम-संज्ञा पुं० देवतार्थों के उद्देश्य से  
 अग्नि में श्रुत, जो आदि डालना ।  
 हवन ।  
 होमकुंड-संज्ञा पुं० होम की अग्नि  
 रखने का गड्ढा ।  
 होमना-क्रि० से० १. देवता के उद्देश्य  
 से अग्नि में डालना । हवन करना ।  
 २. उरसग करना ।  
 होरसा-संज्ञा पुं० पत्थर की गोख  
 छोटी चौकी जिस पर चंदन घिसते

हातिम-संज्ञा पुं० १. निपुण । चतुर ।  
२. किसी काम में पक्का आदमी ।  
उदा० । ३. एक प्राचीन अरब  
साधार जो बड़ा दानी, परोपकारी  
और उदार प्रसिद्ध है ।

हाथ-संज्ञा पुं० १. बाहु से लेकर  
पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई  
और हथेली या पंजा । कर । हस्त ।  
२. लंबाई की एक नाप जो मनुष्य  
की कुहनी से लेकर पंजे के छोर तक  
की मानी जाती है । ३. तारा, जूए  
आदि के खेल में एक एक आदमी  
के खेलने की घाटी । हाँव ।

हाथपान-संज्ञा पुं० हथेली की पीठ  
पर पहनने का एक गहना ।

हाथफूल-संज्ञा पुं० हथेली की पीठ  
पर पहनने का एक गहना ।

हाथा-संज्ञा पुं० मुठिया ।

हाथाजोड़ी-संज्ञा स्त्री० एक पैसा जो  
शेष के काम में आता है ।

हाथापाई, हाथापाई-संज्ञा स्त्री० वह  
लड़ाई जिसमें हाथ-पैर चलाए जायें ।  
भिड़ंत । धौल-धपपड़ ।

हाथी-संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा स्तन-  
पायी पशु जो सूँढ़ के रूप में बड़ी  
हुई नाक के कारण और सम जान-  
घरे से विखण्डित दिखाई पड़ता है ।

हाथीखाना-संज्ञा पुं० वह घर जिसमें  
हाथी रखा जाय । फ़ौजखाना ।

हाथीदाँत-संज्ञा पुं० हाथी के मुँह के  
दोनों छोरों पर निकले हुए सफ़ेद  
दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं ।

हाथीनाल-संज्ञा स्त्री० हाथी पर चढ़ने-  
वाली सीढ़ी । हथनाल । गजनाल ।

हाथीवान-संज्ञा पुं० महावत । फ़ौज-  
वान ।

हादसा-संज्ञा पुं० दुर्घटना ।

हान-संज्ञा स्त्री० दे० "हानि" ।

हानि-संज्ञा स्त्री० १. नाश । २. नुक-  
सान । क्षति । घाटा ।

हानिकर-वि० १. हानि करनेवाला ।  
जिससे नुकसान पहुँचे । २. घुरा  
परिणाम उपस्थित करनेवाला ।

हानिकारक-वि० दे० "हानिकर" ।

हानिकारी-वि० दे० "हानिकर" ।

हाफिज़-संज्ञा पुं० वह धार्मिक सुसज्ज-  
मान जिससे कुरान कंठ हो ।

हामी-संज्ञा स्त्री० "ह्रीं" करने की  
क्रिया या भाव । स्वीकृति ।

हाय-अव्य० शोक, दुःख या कष्ट  
सूचित करनेवाला शब्द ।

भग स्त्री० कष्ट । पीड़ा । दुःख ।

हाय हाय-अव्य० शोक, दुःख या  
शारीरिक कष्टसूचक शब्द । दे०  
"हाय" ।

संज्ञा स्त्री० १. कष्ट । दुःख । शोक ।  
२. घयराहट ।

हार-संज्ञा स्त्री० लड़ाई, खेल, याज्ञी  
या चक्र-कपरी में जोड़ या प्रतिद्वंद्वी  
के सामने न जीत सकने का भाव ।  
पराजय । शिकस्त ।

संज्ञा पुं० सोने, चाँदी या मोतियों  
आदि की भाँखा जो गले में पहनी  
जाय ।

प्रत्य० दे० "हारा" ।

हारक-संज्ञा पुं० १. हरण करनेवाला ।  
२. मनाहर । सुंदर । ३. चोर ।  
लुटेरा ।

हारक-वि० दे० "हार्क" ।

हारना-क्रि० भ० १. प्रतिद्वंद्विता  
आदि में शत्रु के सामने विफल  
होना । पराजित होना । शिकस्त

या रोटी घेइते हैं।

होरहा-संज्ञ पुं० चने का पौधा।

होरा-संज्ञ पुं० दे० "होला"।

संज्ञ श्री० एक अहोरात्र का २४वाँ भाग। घंटा।

होरिल-संज्ञ पुं० नवजात बालक।

होरिहार-संज्ञ पुं० होली खेलने-वाला।

होरी-संज्ञ श्री० दे० "होली"।

होला-संज्ञ श्री० होली का त्योहार।

संज्ञ पुं० सितों की होली जो होजी के दूसरे दिन होती है।

होलाएक-संज्ञ पुं० होली के पहले के आठ दिन जिनमें विवाह-कृत्य नहीं किया जाता।

होलिका-संज्ञ श्री० होली का त्योहार।

होली-संज्ञ श्री० हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार जो फाल्गुन के अंत में मनाया जाता है और जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग-भरीर आदि डालते हैं और होलिकादहन करते हैं।

होश-संज्ञ पुं० बोध या ज्ञान की वृत्ति। चेतना। चेत।

होशियार-वि० १. चतुर। समझदार। २. कुशल।

होशियारी-संज्ञ श्री० १. समझदारी।

२. निपुणता। ३. सावधानी।

होस-संज्ञ पुं० दे० "होश" व "होस"।

हो-सर्व० प्रजमाया का उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम। मैं।

कि० भ० 'होना' क्रिया का वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एकवचन रूप। हूँ।

होस-संज्ञ श्री० दे० "होस"।

हो-कि० भ० १. होना क्रिया का मध्यम पुरुष एकवचन का वर्तमान-कालिक रूप। हो। २. होना का भूत काल। था।

होआ-संज्ञ पुं० छद्मों को डराने के लिये एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाज।

संज्ञ श्री० दे० "होआ"।

होआ-संज्ञ पुं० पानी जमा रहने का पहलवा।

होआ-संज्ञ पुं० दे० "होआ"।

होआ-संज्ञ पुं० हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला भासन।

होआ-संज्ञ पुं० शोर। हल्ला। को-लाहल।

होआ-संज्ञ पुं० डर। भय।

होआदिल-संज्ञ पुं० १. कलेजा धड़कना। २. दिल धड़कने का रोग। वि० जिसका दिल धड़कता हो।

होआदिला-वि० डरपोक।

होली-संज्ञ श्री० वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और विकता है। भावकारी।

होआ-वि० जिसके मन में अएदी होल या भय उत्पन्न हो।

होआ-कि० वि० १. धीरे। आहिन्ता। २. हलके हाथ से।

होआ-संज्ञ श्री० पैगंबरी मतों के अनुसार सबसे पहली स्त्री जो मनुष्य-जाति की आदि माता मानी जाती है।

संज्ञ पुं० दे० "होआ"।

होआ-संज्ञ श्री० १. चाह। लाहसा। कामना। २. उमंग।

होआ-संज्ञ पुं० किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा। सरकटा।

होआ-भय० दे० "यही"।

खाना । २. थक जाना ।

क्रि० स० लड़ाई, घाड़ी आदि को सफलता के साथ न पूरा करना ।

हारसिगार-संज्ञा पुं० दे० "परजाता."

हारा-प्रत्य० एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्त्तव्य, धारण या संयोग आदि सूचित करता है । घाला ।

हारिल-संज्ञा पुं० एक प्रकार की चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में कोई लकड़ी या तिनका लिए रहती है ।

हारी-वि० १. हरण करनेवाला । २. ले जानेवाला । ३. चुरानेवाला ।

हारीत-संज्ञा पुं० १. चौर । लुटेरा । २. लुटेरापन । ३. कण्य अपि के एक शिष्य ।

हादि क-वि० १. हृदय संबंधी । २. सखा ।

हाल-संज्ञा पुं० १. दशा । २. संवाद । समाचार । ३. व्येरा । कैफियत । वि० वर्तमान ।

अव्य० १. इस समय । अभी । २. तुरंत ।

संज्ञा स्त्री० १. हिलने की क्रिया या भाव । कंप । २. लोह वा वह वस्तु जो पहिए के चारों ओर घेरे में चढ़ाया जाता है ।

हालगोला-संज्ञा पुं० गेंद ।

हालडोल-संज्ञा पुं० हिलने की क्रिया या भाव । गति ।

हालत-संज्ञा स्त्री० दशा

हालना-क्रि० अ० हिलाना । डोलना ।

हालांकि-अव्य० यद्यपि । गो कि ।

हालाहल-संज्ञा पुं० दे० "हलाहल" ।

हाली-अव्य० जल्दी । शीघ्र ।

हाव-संज्ञा पुं० संयोग समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं ।

हावभाव-संज्ञा पुं० स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है । नाज़-नखुरा ।

हाशिया-संज्ञा पुं० १. किनारा । कोर । पाद । २. मोटा । मगजी । ३. हाशिए या किनारे पर का लेटा । नाट ।

हास-संज्ञा पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव । हँसी । २. दिलगी ।

हासिल-वि० प्राप्त । पाया हुआ । मिला हुआ ।

संज्ञा पुं० १. गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के वही रहने जाने पर बच रहे । २. उपज । ३. लाभ । ४. गणित की क्रिया का फल ।

हासी-वि० हँसनेवाला ।

हास्य-वि० १. जिस पर लोग हँसें । २. उपहास के योग्य ।

संज्ञा पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव । हँसी । २. नौ स्थायी भावों और रसों में से एक । ३. निंदा-पूर्ण हँसी । ४. दिलगी । मजाक ।

हास्यारपद-संज्ञा पुं० वह जिसके चेहरेपन पर लोग हँसी उड़ावें ।

हा हंत-अव्य० अत्यंत शोधसूचक शब्द ।

हा हा-संज्ञा पुं० १. हँसने का शब्द । २. बहुत विनती की पुकार । दुहाई ।

हाहाकार-संज्ञा पुं० घबराहट की चिल्लाहट । कुहराम ।

हाहा-संज्ञा पुं० हलायला ।

- छोः-संज्ञ पुं० दे० "हियो", "हिया"। ह्रस्वता-संज्ञ स्त्री० छोटाई । छपुता ।  
 ह्रद्-संज्ञ पुं० पदा साछ । मील । हास-संज्ञ पुं० १. कमी । घटती ।  
 ह्रदिनी-संज्ञ स्त्री० नदी । २. शक्ति, वैभव, गुण आदि की  
 ह्रस्व-पि० १. छोटा । २. कम । कमी ।  
 थोड़ा । ह्री-संज्ञ स्त्री० १. लज्जा । २. कृप  
 संज्ञ पुं० दीर्घ की अपेक्षा कम खींच- प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी  
 कर धोखा जानेवाला स्वर । मानी जाती है ।

हाहवेर-संज्ञा पुं० जंगली घेर । ऋक्ष-  
पक्षी ।

हिकरना-कि० अ० दे० "हिन-  
हिनाना" ।

हिकार-संज्ञा पुं० गाय के रँमाने का  
शब्द ।

हिगलाज-संज्ञा स्त्री० दुर्गा या देवी  
की एक मूर्ति जो सिंध में है ।

हिगु-संज्ञा पुं० हाँग ।

हिछा-संज्ञा स्त्री० दे० "हच्छा" ।

हिडोरा-संज्ञा पुं० दे० "हिडोला" ।

हिडोल-संज्ञा पुं० १. हिडोला । २.  
एक प्रकार का राग ।

हिडोलना-संज्ञा पुं० दे० "हि-  
डोला" ।

हिडोला-संज्ञा पुं० १. पाखना । २.  
कूला ।

हिद-संज्ञा पुं० हिंदोस्तान । भारतवर्ष ।

हिदयाना-संज्ञा पुं० तरवूज । कलौदा ।

हिदवी-संज्ञा स्त्री० हिंदी भाषा ।

हिंदी-वि० हिंदुस्तान के उत्तरी या  
प्रधान भाग की भाषा जिसके अंत-  
र्गत कई योलियाँ हैं और जो बहुत  
से अंशों में सारे देश की एक सा-  
मान्य भाषा मानी जाती है ।

हिंदुस्तान-संज्ञा पुं० भारतवर्ष ।

हिंदुस्तानी-वि० हिंदुस्तान का ।

संज्ञा पुं० हिंदुस्तान का निवासी ।  
भारतवासी ।

संज्ञा स्त्री० हिंदुस्तान की भाषा ।

हिंदुस्थान-संज्ञा पुं० दे० "हिंदु-  
स्तान" ।

हिंदू-संज्ञा पुं० भारतवर्ष में घसने-  
वाली आर्य जाति के वंशज ।

हिंदूपन-संज्ञा पुं० हिंदू होने का भाव

या गुण ।

हिंदोस्तान-संज्ञा पुं० दे० "हिंदु-  
स्तान" ।

हिर्या-संज्ञा पुं० दे० "यर्दा" ।

हिघ-संज्ञा पुं० दे० "हिम" ।

हिघार-संज्ञा पुं० हिम । पर्फ । पाला ।

हिस-संज्ञा स्त्री० घोड़ों के योलने का  
शब्द । हिनहिनाहट ।

हिसक-संज्ञा पुं० १. हिंसा करने-  
वाला । हयारा । २. जीवों को

मारनेवाला पशु ।

हिंसा-संज्ञा स्त्री० प्राण लेना या कट  
देना ।

हिसारमक-वि० जिसमें हिंसा हो ।

हिसालु-वि० हिंसा करनेवाला ।

हिम्न-वि० खँझार ।

हिश्न, हिश्ना-संज्ञा पुं० दे० "हृदय" ।

हिश्नाय-संज्ञा पुं० दे० "हियाव" ।

हिकमत-संज्ञा स्त्री० १. युक्ति । तद-  
वीर । उपाय । २. चतुराई का ढंग ।

हिकमती-वि० १. कार्य-साधन की  
युक्ति निकालनेवाला । कार्य-पटु ।

२. किरायती ।

हिकायत-संज्ञा स्त्री० कथा । कहानी ।

हिक्का-संज्ञा स्त्री० १. हिचकी । २.  
बहुत हिचकी आने का रोग ।

हिचक-संज्ञा स्त्री० किसी काम के  
करने में यह रुकावट जो मन में  
मालूम हो । आगा-पीछा ।

हिचकना-कि० अ० १. हिचकी लेना ।

२. किसी काम के करने में कुछ  
अनिच्छा, भय या संकोच के कारण

प्रवृत्त न होना । आगा-पीछा करना ।

हिचकिचाना-कि० अ० दे० "हिच-  
कना" ।





हिचकी-संज्ञा स्त्री० १. पेट की वायु का भोंक के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना । २. रह रहकर सिसकने का शब्द ।

हिजडा-संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा" ।

हिजरी-संज्ञा पुं० मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक़े से मदीने भागने की तारीख ( १५ जुलाई सन् ६२२ ई० ) ।

हिज्जे-संज्ञा पुं० किसी शब्द में शायद हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना ।

हिज्र-संज्ञा पुं० जुदाई । वियोग ।

हिडिब-संज्ञा पुं० एक राक्षस जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था ।

हिडिया-संज्ञा स्त्री० हिडिब राक्षस की बहिन जिसके साथ भीम ने विवाह किया था ।

हित-वि० भलाई करने या चाहने-वाला ।

संज्ञा पुं० १. लाभ । २. कल्याण । ३. प्रेम ।

अर्थ० ( किसी के ) लाभ के हेतु ।

हितकर, हितकारक-संज्ञा पुं० भलाई करनेवाला ।

हितकारी-वि० दे० "हितकर" ।

हितचितक-संज्ञा पुं० भला चाहने-वाला । खैरखाह ।

हितचिंतन-संज्ञा पुं० किसी की भलाई की कामना या इच्छा ।

हितवादी-वि० हित की बात कहने-वाला ।

हिताई-संज्ञा स्त्री० नाता । रिश्ता ।

हिताना-क्रि० अ० १. हितकारी

होना । २. प्रेमयुक्त होना । ३. प्यारा या अच्छा लगना ।

हिताहित-संज्ञा पुं० भलाई-बुराई । लाभ-हानि । नफा-नुकसान ।

हिती, हितू-संज्ञा पुं० १. भलाई करने या चाहनेवाला । खैरखाह । २. संयधी । ३. स्नेही ।

हितैयिता-संज्ञा स्त्री० भलाई चाहने की वृत्ति ।

हितैयी-वि० भला चाहनेवाला ।

हिदायत-संज्ञा स्त्री० अधिकारी की शिक्षा । आदेश । निर्देश ।

हिनहिनाना-क्रि० अ० धोड़े का खेलना । हँसना ।

हिना-संज्ञा स्त्री० मेंदरी ।

हिफाजत-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे । रक्षा ।

हिमंचली-संज्ञा पुं० दे० "हिमाचल" ।

हिमंत-संज्ञा पुं० दे० "हेमंत" ।

हिम-संज्ञा पुं० १. पाला । बर्फ । २. जाड़ा । ३. जाड़े की ऋतु ।

वि० ठंडा । सर्द ।

हिम-उपल-संज्ञा पुं० श्रोता । पत्थर ।

हिमकण-संज्ञा पुं० बर्फ या पाछे के महीन टुकड़े ।

हिमकर-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

हिमकिरण-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

हिमयानी-संज्ञा स्त्री० रुपया पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बांधी जाती है ।

हिमघत्-संज्ञा पुं० दे० "हिमवान्" ।

हिमवान्-वि० बर्फवाला । जिसमें बर्फ या पाला हो ।

संज्ञा पुं० १. हिमालय । २. कैलाश पर्वत ।

हिमांशु-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

हिमाकृत-संज्ञा स्त्री० १. घेवकूफी । २. दुस्साहस ।

हिमाचल-संज्ञा पुं० हिमालय ।

हिमाद्रि-संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़ ।

हिमामदस्ता-संज्ञा पुं० खरल और घटा ।

हिमायत-संज्ञा स्त्री० पक्षपात ।

हिमायती-वि० १. समर्थन या मंडन करनेवाला । २. मददगार ।

हिमालय-संज्ञा पुं० भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है ।

हिम्मत-संज्ञा स्त्री० कठिन या कष्ट-साध्य कर्म करने की मानसिक शक्ति । साहस ।

हिम्मती-वि० साहसी ।

हिय-संज्ञा पुं० हृदय । मन ।

हियरा-संज्ञा पुं० हृदय ।

हियाँ-अव्य० दे० "यहाँ" ।

हिया-संज्ञा पुं० हृदय । मन ।

हियाव-संज्ञा पुं० साहस । हिम्मत ।

हिरकना-वि०-क्रि० अ० पास होना । निकट जाना ।

हिरण्य-संज्ञा पुं० दे० "हिरन" ।

हिरण्य-संज्ञा पुं० सोना । स्वर्ण ।

हिरण्यकशिपु-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद का पिता था । भगवान् ने वृषिहस्तार धारण करके इसे मारा था ।

हिरण्यकश्यप-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु" ।

हिरण्यगर्भ-संज्ञा पुं० १. वह ज्योति-

र्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है । २. विष्णु ।

हिरण्यनाभ-संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. मैनाक पर्वत ।

हिरण्यरेता-संज्ञा पुं० १. यमि । २. सूर्य । ३. शिव ।

हिरण्याक्ष-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था ।

हिरन-संज्ञा पुं० हरिन । गृध्र ।

हिरनाकुस-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु" ।

हिरफत-संज्ञा स्त्री० १. हाथ की कारीगरी । २. चाखपाजी । धूसता ।

हिरमजी-संज्ञा स्त्री० छाख रंग की एक प्रकार की मिट्टी ।

हिरसई-संज्ञा स्त्री० दे० "हिसई" ।

हिराना-क्रि० अ० १. छो जाना । २. न रह जाना ।

क्रि० स० भूल जाना । ध्यान में न रहना ।

हिरासत-संज्ञा स्त्री० १. पहरा । चौकी । २. कैद । नज़रबंदी ।

हिसै-संज्ञा स्त्री० १. लाजब । लुण्णा । जोम । २. स्पर्धा ।

हिलकी-संज्ञा स्त्री० हिलकी ।

हिलकोर, हिलकोरा-संज्ञा पुं० हि-लोर । खहर ।

हिलग-संज्ञा स्त्री० लगाव । संबंध ।

हिलगना-क्रि० अ० १. घटकना । २. फँसना । ३. पास होना । सटना ।

हिलगाना-क्रि० स० १. अटकना । २. घक्कना ।

हिलना-क्रि० अ० १. चलायमान होना । २. कपना । ३. परिवर्तित और अनुरक्त होना ।

हिचकी-संज्ञा स्त्री० १. पेट की वायु का भोंक के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना । २. रइ रइकर सिमकने का शब्द ।

हिजडा-संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा" ।

हिजरी-संज्ञा पुं० मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक़ौ से मदीने आगने की तारीख ( १२ जुलाई सन् ६२२ ई० ) ।

हिज्जे-संज्ञा पुं० किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना ।

हिज्र-संज्ञा पुं० जुदाई । विभाग ।

हिडिब-संज्ञा पुं० एक राक्षस जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था ।

हिडिबा-संज्ञा स्त्री० हिडिब राक्षस की बहिन जिसके साथ भीम ने विवाह किया था ।

हित-वि० भलाई करने या चाहने-वाला ।

संज्ञा पुं० १. लाभ । २. कल्याण । ३. प्रेम ।

अर्थ० ( किसी के ) लाभ के हेतु ।

हितकर, हितकारक-संज्ञा पुं० भलाई करनेवाला ।

हितकारी-वि० दे० "हितकर" ।

हितचितक-संज्ञा पुं० भला चाहने-वाला । खैरखाह ।

हितचितन-संज्ञा पुं० किसी की भलाई की कामना या इच्छा ।

हितवादी-वि० हित की बात कहने-वाला ।

हितार्ह-संज्ञा स्त्री० नाता । रिश्ता ।

हिताना-कि० अ० १. हितकारी

होना । २. प्रेमयुक्त होना । ३. प्यारा या अच्छा लगना ।

हिताहित-संज्ञा पुं० भलाई-बुराई । लाभ-हानि । नफ़ा-नुक़सान ।

हिती, हित-संज्ञा पुं० १. भलाई करने या चाहनेवाला । खैरखाह । २. संबंधी । ३. स्नेही ।

हितैषिता-संज्ञा स्त्री० भलाई चाहने की वृत्ति ।

हितैषी-वि० भला चाहनेवाला ।

हिदायत-संज्ञा स्त्री० अधिकारी की शिक्षा । आदेश । निर्देश ।

हिनहिनाना-कि० अ० धोड़े का बोलना । हँसना ।

हिना-संज्ञा स्त्री० मेंहदी ।

हिफाजत-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि यह नष्ट न होने पावे । रक्षा ।

हिमंचल-संज्ञा पुं० दे० "हिमांचल" ।

हिमंत-संज्ञा पुं० दे० "हिमंत" ।

हिम-संज्ञा पुं० १. पाला । बर्फ़ । २. जाड़ा । ३. जाड़े की ऋतु ।

वि० ठंडा । सर्द ।

हिम-उपल-संज्ञा पुं० ओला । पत्थर ।

हिमकण-संज्ञा पुं० बर्फ़ या पाले के महीन टुकड़े ।

हिमकर-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

हिमकिरण-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

हिमयानी-संज्ञा स्त्री० रुपया-पैसा रखने की जालीदार लंबी धैली जो कमर में घाँधी जाती है ।

हिमवत्-संज्ञा पुं० दे० "हिमवान्" ।

हिमवान्-वि० बर्फ़ वाला । जिसमें बर्फ़ या पाला हो ।